Contents of Udyog Parv

॥ श्रीः ॥

महाभारतम्

उद्योगपर्व ।

नारायणंनमस्कृत्य नरञ्चैवनरोत्तमम् ।
देवींसरस्वतीञ्चैव ततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ कृत्वाविवाहन्तु कुरुप्रवीरास्तदाऽभि मन्योर्हृदिताः स्वप क्षा । विश्रम्य रात्रावुषसि प्रतीताः सभां विराटस्यततोऽभिजग्मुः ॥ १ ॥ सभातु सामत्स्यपतेः समृद्धामणिप्रवेकोत्तमरत्नचित्रा । न्यस्तासनामाल्यवतीसुगन्धातामभ्य युस्तेनरराजवृद्धाः ॥ २ ॥ अथासनान्याविशतां पुरस्तादुभौविराड्द्रुपदौनरेन्द्रौ ।

श्री नारायण व नरोंमें उत्तम नर देवी व सरस्वतीजी को नमस्कार कर तदनन्तर जय उच्चारण करै ।१। वैशंपायनजी जनमेजय महाराजसे बोले कि अभिमन्युजीके पक्ष वाले यादव पांडव वीर अभिमन्युजीका विवाह विराटकी कन्या उत्तराके संग कराय अति हर्षितहुये व चारदिन अच्छीतरह विश्रामकर प्रातःकाल उठकर राजाविराट्की सभामेंगये वह मत्स्यराज की सभा मोती मूंगा हीरा पद्मरागादि उत्तम २ मणियोंसे चित्र विचित्र व जिसमें सर्वत्र उत्तम २ आसन धरे फूलोंकीमाला ठौर ठौर लटकी चंदन अगरु आदि सुगन्धित वस्तुओं से सुगन्धितथी ऐसी सभामें नराजोंके वृद्धलोग पहुँचे वहां राजा विराट व द्रुपदराज ये दोनों सबराजाओंमें वृद्धहोनेके कारण मान्यथे प्रथमही जा आसनों

CHAPTER I

Having bowed down to Narayan, the best of male beings and the goddess of Wisdom, let us say Jaya! Vaishampayan said to Janmejaya that the party of Abhimanyu—the Pandavas and the Yadavas—was overjoyed at the marriage of Abhimanyu with the daughter of king Virat, and after four days of rest they went one morning to Virat's court which was decked with pearl, coral, diamonds, rubies and other precious jewels, and which abounded in fine seats and flower garlands and perfumed with the incense of

वृद्धौचमान्यौपृथिवीपतीनां पित्रासमंरामजनार्दनौच ॥ ३ ॥ पाञ्चालराजस्यसमीपतस्तु शिनिप्रवीरः सहरौहिणेयः । मत्स्यस्यराज्ञस्तुसुसन्निकृष्टौ जनार्दनश्चैव युधिष्ठिरश्च ॥ ४ ॥ सुताश्चसर्वेद्रुपदस्यराज्ञो भीमार्जुनौ माद्रसुतौच । प्रद्युम्नशाम्बौचयुधिप्रवीरौविराटपुत्रैश्चसहाभिमन्युः ॥ ५ ॥ सर्वेचशूराः पितृभिः समानाः वीर्येणरूपेणबलेनचैव । उपाविशन् द्रौपदेयाः कुमाराः सुवर्णचित्रेषुवरासनेषु ॥ ६ ॥ तथोपविष्टेषुमहारथेषु विराजमानाभरणाम्बरेषु । रराजसाराजवतीसमृद्धा ग्रहैरिव द्यौर्विमलैरुपेता ॥ ७ ॥ ततःकथास्तेसमवायपयुक्ताः कृत्वाविचित्राःपुरुषप्रवीराः । तस्थुर्मुहूर्त्तंपरिचिन्तयन्तः कृष्णंनृपास्ते समुदीक्षमाणाः ॥ ८ ॥ कथान्तिमासाद्यचमाधवेन संघट्टिताःपाण्डवकार्यहेतोः । तेराजसिंहाःसहिताह्यशृण्वन्वाक्यं महार्थंसुमहोदयञ्च ॥ ९ ॥ श्री

पर बैठकेपीछे वसुदेवजी तथा बलभद्रजी व श्रीकृष्णचन्द्रजीभी जाय विराजमानहुये ३ उनमें बलभद्रजी व सात्यकितो पांचालदेशके राजाद्रुपदजीके समीपबैठे, व श्रीकृष्णचन्द्रजी व युधिष्ठिरजी मत्स्यदेशके महाराजविराटजीके समीपबैठे । ४ । व सबराजाद्रुपदकेपुत्र भीमसेन, अर्जुन नकुल सहदेव युद्ध करनेमें बड़ेवीर, प्रद्युम्न, साम्ब, राजाविराटकेसबपुत्र व अभिमन्यु ये सब एकस्थानपरबैठे । ५ । व सबशूरवीर वीर्यरूप बल से अपने पिता के समान, द्रौपदीकुमार सुवर्ण के चित्र विचित्र आसनोंपर आबैठे । ६ । उन नानाप्रकार के वसन भूषण धारणकर ये सब महारथलोग आसनोंपर विराजमानहुये तोउससमय वह सभा राजाओंके बैठनेसे ग्रहोंसे शोभित आकाशके समान शोभितहुई ७ तिसकेपीछे समयके व समाजके उचित नानाप्रकारकी चित्र विचित्र कथा कह सब पुरुष वीर श्रीकृष्णचन्द्रजीकी ओरदेखतेहुये व चिन्तना करतेहुये मुहूर्तभर बैठेरहे । ८ । जब सबलोग नानाप्रकारकी कथा कहचुकेतो सबको अपनी ओर चिताय पाण्डवोंके कार्यके हेतु श्रीकृष्णचन्द्रजीने सारार्थ युक्त व महाफलदायक वचनकहे उनको सबराजसिंहोंने

sandal and aloe wood. Kings Virat and Drupad, respected by all for their old age, occupied the first seat; Baldev and Satyaki sat near Drupad the king of Panchal, Shree Krishna and Yudhishthir sat near king Virat, and all the other kings with the sons of Drupad, Bhimsen, Arjun, Nakul, Sahadev—great warriors of renown—Pradyumna, Samva, the sons of king Virat and Abhimanyu sat together. 5: Draupadi's sons, resembling their father in bravery, prowess, form and strength, sat on golden seats of fine workmanship. All these warriors, occuppying different seats in the court, looked like stars in the sky. All sorts of gossipping, fit for the occasion and the place, went on for some time and then all the present looked towards Shree Krishna in silence and meditation When all men had finished their talk, Shree Krishna thus addressed the assembly

कृष्ण उवाच । सर्वैर्भवद्भिर्विदितंयथाऽयं युधिष्ठिरःसौबलेनाक्षवत्याम् । जितोनिकृत्याऽपहृतञ्चराज्यं वनप्रवासेसमयःकृतश्च ॥ १० ॥ शक्तैर्विजेतुंतरसामहींच सत्ये स्थितैःसत्यरथैर्यथावत् । पाण्डोःसुतैस्तद्व्रतमुग्ररूपं वर्षाणिषड्सप्तचचीर्णमग्र्यैः ११। त्रयोदशश्चैव सुदुस्तरोऽयमज्ञायमानैर्भवतांसमीपे । क्लेशानसह्यान् विविधान सहद्भिर्महात्मभिश्चापिवनेनिविष्टम् ॥ १२ ॥ एतैः परप्रेष्यनियोगयुक्तैरिच्छद्भिराप्तंस्वकुलेनराज्यम् । एवंगतेधर्मसुतस्यराज्ञो दुर्योधनस्यापिच यद्धितंस्यात् ॥ १३ ॥ तच्चिन्तयध्वंकुरुपुंगवानां धर्म्यंचयुक्तञ्च यशस्करंच । अधर्मयुक्तनचकामयेत राज्यंसुराणामपि धर्मराजः ॥ १४ ॥ धर्मार्थयुक्तन्तुमहीपतित्वं ग्रामेऽपिकस्मिंश्चिदयंबुभूषेत् । पित्र्यंहि

सुना । ९ । वे ये हैं श्रीकृष्णचन्द्रजीने कहा कि आप सबलोग जानतेहैं कि जिसप्रकार महाराजयुधिष्ठिरजीको सुबलके पुत्रने द्यूतखेलनेके समय छलसेहरा राज्यहरलिया व तेरह वर्षवनमें रहनेके लिये इनसे प्रतिज्ञा कराली । १० । येसबपांडुके पुत्र पृथ्वीभर जीतसक्ते थे परन्तुसाकरें सत्यरथहोनेके कारण अपने सत्यपरटिकेरहे तेरहवर्षतक महाउग्र वनवासका व्रतधारणकिये बिताया । ११ । उनवर्षोंमें जानो तेरहवां यहवर्ष बड़ाही दुस्तरथा जिसमें गुप्तहोकर आपके समीप नानाप्रकारके क्लेशसहतेहुये ये महात्मालोग रहे व वनके दुःखतो यथानहीं भोगचुकेथे । १२ । अब येलोग इसपराधीनताकी विपत्तिसे छूटेहैं इस अपने कुलकाराज्य लियाचाहतेहैं , हमारेमतसे जिसमें महाराजयुधिष्ठिरजी तथा दुर्योधन काभी हितहो । १३ । वही आपलोग विचारें पर वह विचार धर्मयुक्त व यशकरनेवाला हो क्योंकि पूर्वके कुरुवंशीभी धर्मयुक्त वयशकारीही कार्य करतेरहे फिर येधर्मराजतो अधर्मयुक्त देवताओंकाभी राज्य नहीं चाहते । १४ । परन्तु धर्मार्थयुक्तहो चाहेएकही ग्रामकाराज्यहो येउसीकी इच्छाकरतेहैं सोतोइनके पितृ पितामहादिकोंकाही राज्यइनकेलिये

of those lions among men, in words full of significance and pregnant with great result wh'ch he had in view, regarding the Pandavas:—"It is known to all," said he "how the son of Subal cheated king Yudhishthir at game and made him promise to live thirteen years in exile. 10. All these sons of Pandu could conquer the whole world but being truthful men they suffered the hardships of exile for thirteen years, of which this thirteenth year was the most ted'ous after twelve years of forest life, during which they lived here with you surrounded with all sorts of troubles. They are now released from the calamity of bondage and wish to regain their paternal kingdom. Let us consider the course beneficial to Yudhishthir as well as to Duryodhan. Let it at the same time be the right one worthy of these warriors, because the Kurus of o'd have been men of right dealings and full of prowess. Yudhishthir would not like, by unfair means, to be king over gods; he would rather possess a single vil'age if it could

राज्यविदितंनृपाणां यथाऽपकृष्टधृतराष्ट्रपुत्रैः ॥ १५ ॥ मिथ्योपचारेणयथाह्यनेन कृच्छ्रमहत प्राप्तमसह्यरूपम् । नचापिपार्थोविजितोरणेतैः स्वतेजसाधृतराष्ट्रस्यपुत्रैः॥१६ तथाऽपिराजासहितः सुहृद्भिरभीप्सतेऽनामयमेवतेषाम् । यत्तुस्वयंपाण्डुसुतैर्विजित्य समाहृतंभूमिपतीन् प्रपीड्य ॥ १७ ॥ तत्पार्थयन्तेपुरुषप्रवीराः कुन्तीसुतामाद्रवती-सुतौच । बालास्त्विमेतैर्विविधैरुपायैः संप्रार्थिताहन्तुममित्रसंघैः ॥ १८ ॥ राज्यंजि-हीर्षद्भिरसद्भिरुग्रैः सर्वेञ्चतद्वोविदितंयथावत् । तेषाञ्चलोभंप्रसमीक्ष्यवृद्धं धर्मज्ञतां-चापियुधिष्ठिरस्य ॥ १९ ॥ सम्बन्धितांचापि समीक्ष्यतेषां मतिंकुरुध्वंसहिताः पृथक्‌ च । इमेचसत्येऽभिरताः सदैव तपालयित्वासमयंयथावत् ॥ २० ॥ अतोऽन्यथातैह

देखाहै, उसकोतो जानतहीहो कि जैसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंने छीनलिया । १५ । व यहभी जानतेहो कि जैसे इन्हों ने झूठीबातकेलिये असह्यरूप इतनाभारी कष्टपाया कुरुधृतराष्ट्रके पुत्रोंने अपने तेजसे संग्राममें इनको नहीं जीतलिया केवलकपटके जुआसेही जीताहै १६ तथापि महाराज युधिष्ठिरजी अपने सुहृदों सहित धृतराष्ट्रके पुत्रोंका कुशलही चाहते हैं व नानादेशके राजाओंकोपीड़ितकर इन पाण्डवोंने जितनाराज्य धनादि अपने आप इकट्ठा कियाहै ॥ १७ ॥ उतनाही ये कुन्तीकेपुत्र व माद्रीजीके पुत्रचाहतेहैं और नहीं जब ये लोग बालकथे तब इन दुर्योधनादिकोंने इनके मारनेके लिये विविधप्रकारके उपाय किये व करायेथे । १८ ॥ क्योंकि उनको इनकाराज्य लेलेनेकीइच्छाथी इससे इनको मारडा-लना चाहतेथे यह वृत्तान्तभी आपलोगोंको विदितहीहै इससे अबकौरवोंका लोभ व युधि-ष्ठिरकी धर्मज्ञतादेख ॥ १९ ॥ व उनलोगोंकी सम्बन्धताभी देख आपलोग मिलकर व अलग अलगभी अपना सम्मत इसविषयमें कहैं येलोग अपने सत्यहीमें टिकेरहे इसीसे अपनी प्रतिज्ञाके तेरहवर्ष दुःखसे बिताये । २० । जो सत्यपर न रहते उन्हींकासा उप

be had by fair means. You all know how he has been cheated of all his kingdom by the sons of Dhritrashtra as well as of all his sufferings which he bore on account of their falsehood They defeated him at an unfair game and not in a battle. 16 Yet Yudhishthir and his friends seek to do no ill to them and want to regain only as much of the country and wealth as they themselves had got from the different kings whom they subdued. The sons of Kunti and Madri want this much and no more Duryodhan and others tried much to make away with the sons of Pandu in boyhood as they wanted to deprive them of their kingdom and this too is not hidden from you Having regard for the avarice of the Kauravas and the honest dealings of Yudhishthir as well as for the relationship which they bear towards each other, you should give your opinion collectively and separately The Pandavas remained firm on their truth and for that they passed thirteen years of misery

पचर्य्यमाणा हन्युःसमेतान्धृतराष्ट्रपुत्रान् । तैर्विप्रकारञ्चनिशम्यकार्ये सुहृज्जनास्तानपरिवारयेयुः ॥ २१ ॥ युद्धेनवाधेयुरिमांस्तथैवं तैर्वाध्यमानायुधितांश्चहन्युः । तथापिनेमेऽल्पतयासमर्थास्तेषां जयायेतिभवेन्मतंवः ॥ २२ ॥ समेत्यसर्वेसहिताः सुहृद्भिस्तेषां विनाशाययतेयुरेव । दुर्य्योधनस्यापिमतंयथावन्न ज्ञायतेकिन्नुकरिष्यतीति २३ अज्ञायमानेचमतेपरस्य किंस्यात्समारभ्यतमंमतंवः । तस्मादितोगच्छतु धर्मशीलः शुचिःकुलीनःपुरुषोऽप्रमत्तः ॥ २४ ॥ दूतःसमर्थःप्रशमायतेषां राज्यार्द्धदानाय युधिष्ठिरस्य । निशम्यवाक्यंतुजनार्दनस्य धर्मार्थयुक्तंमधुरंसमञ्च ॥ २५ ॥ समाददेवाक्यमथाग्रजोऽस्य सम्पूज्यवाक्यं तदतीवराजन् ॥ २६ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

चाहैयेभी करते तोसब धृतरा के पुत्रोंको मारडालते धृतराष्ट्रके पुत्र जबइनका अपकार करते थे तोसुहृद्लोग उनको रोकतेभीथे ॥ २१ ॥ कि तुम इनके संगक्यों अपकार करतेहो यदिये युद्धकरेंगे तो तुमको मारडालेंगे तथापि इनलोगोंने लघुताकेकारण उनको नहींमारा व उन्होंने इनके मारनेके लिये अपनेसुहृदों सहित उपाय किये और येअब उन्हें अपनेसुहृदोंको संगले मारसक्तेहैं इसविषयमें दुर्य्योधनकामत नहीं विदितहोता कि क्याहै वे क्याकरेंगे २३ व बिना किसीका मतजाने उसके विषयका कोईकाम न करनाचाहिये यह सबका मतहै इसलियेएक धर्मशील, पवित्र चित्त कुलीन अप्रमत्त दूत यहांसे जाय २४ कि यह उनको समझानेमें समर्थहो कि वे युधिष्ठिरजीको आधा राज्य देदें इसप्रकार श्रीकृष्णचन्द्रजीके धर्मार्थयुक्त मधुर व समभाव के वचन सुन उन वचनोंकी बड़ी बड़ाईकर बलदेवजीने कहा । २६ ।

20. They might have killed all the sons of Dhritrashtra, if they had chosen to be wicked and untruthful like them. The sons of Dhritrashtra when they did ill to Pandavas were checked by their friends and repeatedby warned that they would be killed if they fought with the Pandavas. The Pandavas did not kill them and overlooked the wrongs. The Kauravas and their friends often attempted to destroy the Pandavas although the latter could destroy the former with the help of their friends. Duryodhan's intentions are not known to us and it would be improper to do anything against him without ascertaining them. For this purpose we should send to him an ambassador who should be a man of virtuous habits, pure mind, noble birth and sound judgment and who should reason with him and advise him to restore half the kingdom to the Pandavas." Balder praised the justice, sweetness and equity of Krishna's speech and said:— 26.

बलदेव उवाच । श्रुतंभवद्भिर्गदपूर्वजस्य-वाक्यंयथाधर्मवदर्थवच्च । अजातशत्रोश्चहितंहितञ्च दुर्योधनस्यापि तथैवराज्ञः ॥ १ ॥ अर्द्धंहिराज्यस्य विसृज्यवीराः कुन्तीसुतास्तस्यकृतेयतन्ते । प्रदायचार्द्धंधृतराष्ट्रपुत्रः सुखीसहास्माभिरतीवमोदेत् २ ॥ लब्ध्वाहिराज्यंपुरुषप्रवीराः सम्यक्प्रवृत्तेषुपरेषुचैव । ध्रुवंप्रशान्ताः सुखमाविशेयुस्तेषां प्रशान्तिश्चहितंप्रजानाम् ॥ ३ ॥ दुर्योधनस्यापि मतञ्चवेत्तु वक्तुंचवाक्यानियुधिष्ठिरस्य । प्रियंचमेस्याद्यदितत्रकश्चिद् व्रजेच्छमार्थंकुरुपाण्डवानाम् ॥ ४ ॥ सभीष्ममामन्त्र्यकुरुप्रवीरं वैचित्रवीर्यंञ्चमहानुभावम् । द्रोणंसपुत्रंविदुरंकृपञ्च गान्धारराजञ्च ससूतपुत्रम् ॥ ५ ॥ सर्वेचयेऽन्येधृतराष्ट्रपुत्रा बलप्रधानानिगमप्रधानाः । स्थिताश्चधर्मेषुतथास्वधर्मेषु लोकप्रवीराः श्रुतकालवृद्धाः ॥ ६ ॥ एतेषुसर्वेषु समागतेषु पौरेषु

अध्याय २ ॥

बलदेवजीने कहा कि आपलोगोंने सुना जो श्रीकृष्णचन्द्रने धर्मयुक्त व अर्थसहित वचनकहे, वेवचन कैसे युधिष्ठिरजीके व दुर्योधनके हितकारीहैं । १ । इसमें देखो आधा राज्यछोड़कर पाण्डववीर वनको आयेथे उतनाहीलेना चाहतेहैं अबदुर्योधन इनको आधा राज्यदे अपने लोगोंसहित सुखीरहै । २ । व येपुरुष प्रवीर पांडवभी अपना आधाराज्य पावें व इनके शत्रुदुर्योधनादिभी अच्छी रीतिसे बर्ताव करेंतो इसमें इनकोभी सुखहो व वेभी शान्तरहैं व इनदोनोंके शान्तहोनेमें प्रजाओंकोभी सुखहोगा । ३ । व जो कोई दुर्योधनकामत जानने तथा युधिष्ठिरका वचन उनसे कहनेके लिये पाण्डवों व कौरवोंका मेल होजानेके लिये जायतो वह हमकोभी परम प्रियहो । ४ । परन्तु जो जाताहो वह इससमय युधिष्ठिरजीका सन्देह कहे जब कि भीष्मपितामह, दुर्योधन, विदुर, धृतराष्ट्र, महानुभाव द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य, गान्धारराज संजय । ५ । व अन्य बलादि धृतराष्ट्रके सबपुत्र महाजनलोग, बैठेहों व अपने हितकारीलोग पुरानेकुछ वृद्धलोग जिन्होंने बहुतपुराने समयकीबातें सुनीहों, वेभीबैठेहों । ६ । औरभी सबनगरनिवासी छोटेबड़े यहां

CHAPTER II.

"You have heard the wise words of Shree Krishna," said Baldev, addressing the assembly, "how beneficial they are for both Yudhishthir and Duryodhan! He says that the brave Pandavas require only half the kingdom which they had left before exile. Duryodhan should give it back to them and live peacefully with his people. Let the Pandavas regain their half of the kingdom and let their enemies, Duryodhan and others, behave with them honestly so that both parties may be happy. The happiness of their people lies in peace. I would like to send some one to Duryodhan to carry the peaceful message of Yudhishthir and to settle the matter amicably. The messenger should render the message of Yudhishthir in

वृद्धेषु च सङ्गतेषु । प्रणीपत्य प्रणिपात्य युक्तं कुन्तीसुतस्यार्थकरं यथा स्यात् ॥ ७ ॥ सर्वास्त्वस्याद्य वचनं न कोपात् प्रस्तोहि सोऽर्थो बलमाश्रितैस्तैः । प्रिया प्रियेषस्य युधिष्ठिरस्य द्यूते प्रसक्तस्य हृतं च राज्यम् ॥ ८ ॥ निवार्यमाणः कुरुभिः सर्वैः सुहृद्भिर्ह्ययं गत्वतज्ज्ञः । स दीव्यमानः प्रतिदीव्य चैनं गान्धारराजस्य सुतं मताक्षं ॥ ९ ॥ हित्वा हि कर्णं च सुयोधनं च समाह्वयद्देवितुमाजमीढः । दुरोदरास्तत्र सहस्रशोऽन्ये युधिष्ठिरो यान् विषहेत जेतुम् ॥१०॥ उत्सृज्य तान् सौबलमेव चायं समाह्वयत्तेन जितोऽक्षवत्याम् । स दीव्यमानः प्रतिदेवनेन अक्षेषु नित्यं तु पराङ्मुखेषु ॥ ११ ॥ संरम्भमाणो विजितः प्रसह्य

बैठेहों नहीं तो सब उससमय बुलायेजाय जिससे कि युधिष्ठिरजीका हितहो । ७। वहां कहना चाहिये कि अब किसीप्रकारसे किसी अवस्थामें पाण्डवोंको कुपित न कराना चाहिये और वे लोग नियतसमयतक वनवासभी करचुके प्रथम कुपितकरायेगये सोकरायेगये अब न कराना चाहिये क्योंकि उनके सत्यही बलहै व सेनाभी है, फिर सत्यवादी युधिष्ठिरजीका राज्य तुमलोगोंने जुआखिलाकर हरलियाहै कुछ बलसे नहीं लिया ॥ ८ ॥ देखो जब जुआहोनेलगाथा तबसबोंने युधिष्ठिरजीको रोकाथा कि तुम न खेलो परन्तु ये उस विषय को अच्छीतरह नहीं जानतेथे खेलनेहीलगे सोगांधारराजका पुत्रभी आया जो कि द्यूतविद्यामें बड़ा निपुणहै । ९ । वहां कर्ण, दुर्योधन, को छोड़ युधिष्ठिरजीने कहा चाहे जो खेले, क्योंकि वहां सहस्रों द्यूत प्रवीणथे जिनको युधिष्ठिरजी जीतसक्तेथे । १० । परन्तु उन सबोंको छोड़ इन्होंने शकुनि कोही खेलनेके लिये बुलाया, उसने इनको द्यूत खेलने में जीतलिया, क्योंकि ये सदाहारेहुओं सेही जीतेथे उससे नहीं जीतसके थे। ११ ॥

---

the presence of Bhishm, Duryodhan, Vidar, Dhritrashtra, Dronachary the great, Ashwathama, Kripacharya, the king of Kandhar, Sanjaya, the sons of Dhritrashtra, great men and old men of the family who know the old history and of the citizens young and old. All these may be assembled together for the good of Yudhishthir. The messenger should say that the Pandavas should no longer be enraged that they have been in exile for the appointed time and that the former ill-feeling should not be renewed; for truth as well as army is strength, that they have usurped Yudhisthir's throne through gambling and not through fight, when gambling began, every one prohibited Yudhishthira to play, the latter not coming to know the deceitfulness, began to play; the son of Gandhar, expert in play, was there, and there were thousands of great players, whom Yudhisthir could win, and so he challenged all of them, except Karan and

तत्रापराधः शकुनेर्नैकश्चित् । तस्मात्प्रणम्यैव वचोब्रवीतु वैचित्रवीर्यं बहुसामयुक्तम् १२ तथाहिशक्योधृतराष्ट्रपुत्रः स्वार्थेनियोक्तुं पुरुषेणतेन । अयुद्धमाकांक्षतकौरवाणां साम्नै व दुर्योधनमाह्वयध्वम् ॥ १३ ॥ साम्नाजितोऽर्थोऽर्थकरोभवेत युद्धेऽनयोभवितानेह सोऽर्थः ॥ १४ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंब्रुवत्येवमधुप्रवीरेशिनिप्रवीरः सहसोत्पपात । तथापिवाक्यंपरिनिन्द्यतस्य समाददेवाक्य मिदंसमन्युः ॥ १५ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि बलदेववाक्ये द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

जब हठसे हारगये तो इन्होंने क्रोधकिया इसमें शकुनिका कुछभी अपराध नहीं है क्योंकि इन्होंने बुलाया तो वह खेला तिस धृतराष्ट्रजीसे जो वचन कहाजाय प्रणामकरके वह समझायकर कहाजाय ॥ १२ ॥ व उसीप्रकार दुर्योधनभेभी बहुत समझाय बुझाय विनयपूर्वक कहाजाय जिसमें वे इस ओर ध्यानदें, क्योंकि कौरवोंसे युद्धकरना न चाह सेहो तोदुरयोधनसे समझबूझ वार्त्ताकरना । १३ । क्योंकि जो प्रयोजन समझाने बुझानेसे चलताहै वह युद्धकरनेसे नहीं चलता । १४ । वैशम्पायनने कहा कि बलदेव जीके यह वचन सुनकर सात्यकि चुप न रहसका और अर्थयुक्त वचन बोला । १५ ।

Duryodhan; but among all Shakuni was selected, who won Yudhisthir, as the latter, being accustomed to play with those less expert, could not stand against the former, when defeated Yudhisthir was angry, but Shakuni could not be find fault with, because he did not came by himself. Every thing should be said to Yudhisthir gently. Duryodhan should be addressed likewise, to draw his attention. They should be addressed humbly to avoid fight as fighting cannot produce so good a result as a good counsel." Vaishampayan said that Shakuni, hearing it from Baldeo, could not control himself and said the following words.— 15.



सात्यकिरुवाच । यादृशःपुरुषस्यात्मा तादृशंसम्प्रभाषते । यथारूपोऽन्तरात्मा ते तथारूपंप्रभाषसे १ सन्तिवैपुरुषाःशूराः सन्तिकापुरुषास्तथा । उभावेतौदृढौपक्षौदृश्येते पुरुषान्प्रति ॥२॥ एकस्मिन्नेवजायेते कुलेक्लीबमहारथौ । फलाफलवतीशाखे यथैकस्मिन्वनस्पतौ ॥ ३ ॥ नाभ्यसूयामितेवाक्यं ब्रुवतोलाङ्गलध्वज । येतुशृण्वन्ति ते वाक्यं तानसूयामिमाधव ॥ ४ ॥ कथंहिधर्मराजस्य दोषमल्पमपिब्रुवन् । लभतेपरिषन्मध्ये व्याहर्तुमकुतोभयः ॥ ५ ॥ समाहूयमहात्मानं जितवन्तोऽक्षकोविदाः । अनक्षज्ञं यथाश्रद्धं तेषुधर्मजयःकुतः । यदिकुन्तीसुतंगेहे क्रीडन्तंभ्रातृभिः सह ॥ ६ ॥ अभिगम्यजयेयुस्ते तत्तेषांधर्मतोभवेत् । समाहूयतुराजानं क्षत्रधर्मरतंसदा ॥७॥ निकृत्याजितवन्तस्ते किन्नुतेषांपरंशुभम् । कथंप्रणिपतेच्चायमिहकृत्वापणं परम् ॥८॥

अध्याय ३ ॥

सात्यकि ने कहा कि जिसप्रकारका पुरुषका अन्तरात्माहोताहै उसीप्रकार वह कहताहै, जिसप्रकारका आपका अन्तरात्माहै उसीप्रकार कहतेहो । १ । इस संसारमें शूरपुरुष भी हैं, व कायरपुरुषभी, येदोनों पक्षपुरुषोंमें बहुतदृढ़ दिखाईदेतेहैं । २ । एकही कुल में नपुंसक व महाबलवान् दोनों उत्पन्नहोतेहैं, जैसे एकही वृक्षमें एकफलनेवाली शाखा होती व एक विनाफलनेवाली । ३ । हे बलभद्रभी हम आपके वचनोंका दूषण नहीं करते परन जो लोग ऐसे तुम्हारे वचन सुनतेहैं उनका दूषण करतेहैं । ४ । युधिष्ठिर का थोड़ाभी दोष निर्भयहो सभा के बीचमें कोई कैसेकहसक्ताहै । ५ । भला जिन्होंने इन जुआ न खेलना जाननेवाले युधिष्ठिरको अपनी सभामें बुलाकर आप स्वयं उस विद्यामें कुशलहो छलसे जीतलिया फिर उनको धर्मसे जय कैसेहुई ॥ ६ ॥ जो वे युधिष्ठिर महाराजके यहां आकर घरमें जुआखेलते व जीतलेते तो अलबत्ता क्षत्रियोंके धर्मके अनुकूलहोता ॥ ७ ॥ उनलोगोंने छलसे इनको जीता तो उन्होंने कौन धर्मकी बातकी, व

CHAPTER III

"A man's words are but the reflections of his soul," said Satyaki, "and you are not an exception to this rule. There are brave people in this world as well as cowards and these two sides are very prominent among the people. The same family often produces brave men and cowards as the same tree has branches that bear fruits as well as those that do not. I donot blame you, Balbhadra, though all the people who have heard you, are finding fault with your words. None of those who are present here can find the least fault with Yudhishthir. They being themselves expert in gambling challenged Yudhishthir who was a novice and won the game deceitfully and therefore none can say that they have won rightly. It would have been a fair play if they had come to Yudhishthir and

वनवासाद्विमुक्तस्तु प्राप्तं पैतामहं पदम् । यद्यनपापविचारानि कामयेतयुधिष्ठिरः ॥ ९ ॥
एवमप्ययमत्यन्तं राज्ञार्हतियाचितुम् कथञ्चधर्मयुक्तास्ते नवराज्यं जिहीर्षवः १० ॥
निवृत्तवासान् कौन्तेयान्य आहुर्विदिताइति । अनुनीताहिभीष्मेण द्रोणेनविदुरेणच
॥११॥ नददत्यन्तिपाण्डूनां मदात्पैतृकंवसु । अहन्तुनां [illegible]र्बाणैरनुनीय रणेबलात्
॥१२॥ पादयोःपातयिष्यामि कौन्तेयस्यमहात्मनः । अथतेनव्यवस्यन्ति प्रणिपाताय
धीमतः ॥ १३ ॥ गमिष्यन्तिसहामात्या यमस्यसदनंप्रति । नहितेयुयुधानस्य संरब्ध-
स्ययुयुत्सतः ॥ १४ ॥ वेगंसमर्थाःसंसोढुं वज्रस्यवमहीधराः । कोहिगाण्डीवधन्वानं

इन्होंने जो धोखेमें आकर बाजी लगाई तो ये कैसे उनकी शरणमें आवें व निन्दितहों ८
फिर जब ये वनवाससेभी निवृत्तहुये तो अपने पितृकाभी राज्य न लें, यदि युधिष्ठिर
दूसरेका धनचाहैं तो अवश्य निन्दितहों । ९ । अब ये इतना थोड़ा मांगाभी राज्यमां-
गनेकेयोग्य नहींहैं, ये धर्मयुक्त कैसे ठहरे क्योंकिइन्होंने छलसे इनकाराज्य नहीं हरलिया
। १० । फिर ये लोग अन्छीतरह वनवासकरभी आये तोभी वे कहतेहैं कि जो समय
तुम्हारेनेठाया वर्षोंमें ये दिदितहोगये गुप्त नहींरहे इस विषयमें भीष्मजीने व विदुरजीने
व द्रोणाचार्यजीनेकहाभी कि ये लोग अपना पूरा कालबिताय आयेहैं विदित नहींहुये ११
तबभी इनपाण्डवों को इनकाराज्य नहीं दियाचाहते, इससे तीक्ष्ण बाणोंसे उनको
मारिके पराजित कराकर जबरदस्ती । १२ । इनके पैरोंपर गिरवावेंगे, जो वे इन बुद्धि-
मान् युधिष्ठिरजीके पैरोंपर हाथजोड़ न गिरेंगे ॥ १३ ॥ तो अपने मन्त्रियों सहित यम
राजके स्थानको जावेंगे, क्योंकि जब क्रोधकर हम युद्धकरनेकी इच्छाकरेंगे तो १४ वे
हमारा वेग न सहसकेंगे जैसे वज्रकावेग पर्वत नहीं सहसके उनमें अर्जुनभीको जिनके

played like kshatryas. It was not right to have won Yudhishthir deceitfully and the latter cannot be bound or blamed for their deceitful winning. Is he not on the right to claim his paternal inheritance after undergoing the severe exile. Yudhishthir could be blamed if he wanted to take another's property. Has he no right to claim back the kingdom and how can they who have won Yudhishthir's kingdom be called rightful owners? 10. Even at the lapse of the period of exile, they say that the Pandavas showed themselves before the expiry of the term of concealment. Although, Bhishma, Vidura and Dronacharya assert that the time of concealment is over, yet they don't wish to give back the kingdom. Having vanquished them with our sharp arrows in battle, we shall make them fall on Yudhishthir's feet and if they and their ministers will not humiliate themselves before Yudhishthir, they will be despatched to the regions of Yama. For, they will not be able to bear our superior

कश्चक्रायुधंयुधि ॥ १५ ॥ गान्धापि विषहेत्क्रुद्धं कश्चभीमंदुरासदम् । यमौचदृढध-न्वानौ यमकालोपमद्युती । विराटद्रुपदौवीरौ यमक लोपमद्युती ॥ १६ ॥ कोजिजी-विषुरासादेद्धृष्टद्युम्नञ्च पार्षतम् । पञ्चैतान्पाण्डवेयांस्तु द्रौपद्याःकीर्तिवर्धनान् ॥ १७ ॥ समप्रमाणान् पाण्डूनां समवीर्यान्मदोत्कटान् । सौभद्रञ्च महेष्वासममरैरपि दुःसहम् ॥ १८ ॥ गदप्रद्युम्नसाम्बांश्च कालसूर्यानलोपमान् । तेवयंधृतराष्ट्रस्य पुत्रंशकुनि नामह ॥ १९ ॥ कर्णं चैव निहत्याजावभिषेक्ष्याम पाण्डवम् । नाधर्मोविद्यते कश्चिच्छ-त्रून्हत्वाततायिनः ॥२०॥ अधर्म्यमयशस्यञ्च शात्रवाणांप्रयाचनम् । हृद्गतस्तस्य.

गाण्डीव धन्वा है, व श्री कृष्णचन्द्रजी को जिनके चक्र आयुध है, व हमको तथा क्रोधकिये महादुरासद भीमसेनजीको समरमें कौन सहसकेगा । १५ । फिर प्रलय समयके यम राजके समान दीप्तिमान् अतिदृढधन्वा धारणकिये नकुल व सहदेव; व वैसेही प्रलय कालके यम व कालके समान दीप्तिमान् महावीर रणधीर विराट व राजाद्रुपद । १६ । इनलोगोंके सामने जिसको जीनेकी इच्छा होगी कौन आवेगा व धृष्टद्युम्नकेभी संम्मुख कौन खड़ाहोगा, व द्रौपदीकी कीर्तिबढ़ानेवाले ये उनके पांचपुत्र । १७ । जोकि अपने अपने पिताहीकेसमान वीर्यवान् व उत्कट मदवाले हैं, फिर महाधनुर्द्धर अभिमन्युभी अति दुस्सह हैं इनके सन्मुख कौन खड़ाहोगा ॥ १८ ॥ व काल, सूर्य तथा अग्निके समान प्रज्वलित, गद, प्रद्युम्न, व साम्बको के सन्मुख कौन ठिक सकेगा, हम ये सबलोग शकुनि सहित दुर्योधनको । १९ । व कर्णको संग्राममें मार युधिष्ठिरजीको राज्याभिषेक करेंगे क्योंकि आततायी शत्रुओंको मारडालनेमें अधर्म नहींहोता २० आततायियोंके ये लक्षण हैं, जो किसीके घरमें अग्नि लगावे, व भोजनमें किसीको विषदे व धनसे किसीका देन. राज्य व स्त्री हरले व किसीका धनछीनले व जो बिना शस्त्र लियेहुयेके आप शस्त्र रग

force in battle as a mountain is unable to bear the velocity of vajra Who can with stand in fight Arjun the wielder of gandiva, Krishna the wielder of chakra, myself and Bhimsen of great prowess? Who can come against Nakul and Sahadev glorious like Yamraj and having hard bows? None caring for life will encounter the great warriors Virat Drupad, Dhrishtadyumna, Draupadi's five sons who are as valliant as their fathers Who can stand against Abhimanyu of unbearable strength? Who will stand before Gada, Pradyumna and Samv of great glory like that of Death the sun and fire! Having killed Duryodhan, Shakuni and Karan we will instal Yudhishthir on the throne, for their is no sin in kiling deceitful foes. 20. The incendiary, the giver of poison, the deceiver, the cheater and the one armed with weapons fighting with unarmed men are all equally sinful. Many if not all of these qualities are

क्षामस्तं कुरुध्वमतन्द्रिताः ॥ २१ ॥ निसृष्टं धृतराष्ट्रेण राज्यं माप्नोतु पाण्डवः । अथ पाण्डुसुतो राज्यं लभतां वा युधिष्ठिरः ॥ २२ ॥ निहता वा रणे सर्वे स्वप्स्यन्ति वसुधातले ॥ २३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि सात्यकिक्रोधवाक्ये तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

द्रुपद उवाच । एवमेतन्महाबाहो भविष्यति न संशयः । न हि दुर्योधनो राज्यं मधुरेण प्रदास्यति ॥ १ ॥ अनुवर्त्स्यति तं चापि धृतराष्ट्रः सुतप्रियः । भीष्मद्रोणौ च कार्पण्यात् मौर्ख्याद्राधेयसौबलौ ॥ २ ॥ बलदेवस्य वाक्यं तु मम ज्ञाने न युज्यते । एतद्धि पुरुषेणाग्रे कार्यं सुनयमिच्छता ॥ ३ ॥ न तु वाच्यो मृदु वचो धार्तराष्ट्रः कथञ्चन । न

करना, ये ६ आततायी कहाते हैं इनमें के सब नहीं तो बहुत से लक्षण दुर्योधनादिकों में हैं इससे इनका मारना ही ठीक है । २१ । ऐसा कार्य करना योग्य है जो धर्मयुक्त हो यदि धृतराष्ट्र कुशलपूर्वक युधिष्ठिर को आधा राज दे तो अच्छा है नहीं तो वीरों से कौरवों को यम के धाम पहुँचावेंगे २३ ॥

अध्याय ४ ॥

सात्यकि जी के ऐसे वचन सुन राजा द्रुपद जी बोले कि हे महाबाहो, यह ऐसा ही होगा दुर्योधन सम्मान से राज्य न देंगे । १ । व धृतराष्ट्र भी अपने पुत्र के अनुकूल ही काम करेंगे क्योंकि उनको पुत्र बहुत प्रिय है, भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य्य भी उन्हीं के अनुकूल करेंगे क्योंकि ये उनका अन्न खाते हैं उसका लोभ करेंगे, व कर्ण तथा शकुनि मूर्खता के मारे उनकीसी कहेंगे । २ । बलदेवजी का वचन हमारे मनमें नहीं आता, व नम्र नियों के समाजों में कहने के योग्य है, हां जो हम कहते हैं नीतिमान् को उसमें आप वैसा कहना चाहिये । ३ । दुर्योधन से नम्रता के साथ वार्त्तालाप किसी प्रकार न करना

found in Duryodhan and others and therefore the killing of them is but proper. We should act according to dharm. It is good if Dhritrashtra gives half the kingdom to Yudhishthir, if not, we shall put all the Kauravas to death 23

CHAPTER IV

"It will be as you say" said Drupad to Satyaki, "Duryodhan will never listen to reason and will not give half the kingdom peacefully. Dhritrashtra will follow his son whom he loves to excess and Bhishm and Dronacharya will also do as they are told, because they eat their bread Karan and Shakuni will follow them out of their blindness. I do not agree with Baldeo for his words are not worthy of being uttered in an assembly of the wise. A politician w agree with me in saying that Duryodhan is unworthy of being

हि मार्दवसाध्योऽसौ पापबुद्धिर्मतो मम ॥ ४ ॥ गर्दभे मार्दवं कुर्याद्गोषु तीक्ष्णं समाचरेत् । मृदु दुर्योधने वाक्यं यो ब्रूयात्पापचेतसि ॥ ५ ॥ मृदु वै मन्यते पापो भाष्यमाणमशक्तिजम् । जितमर्थं विजानीयादबुधो मार्दवे सति ॥ ६ ॥ एतच्चैव करिष्यामो यत्नश्च क्रियतामिह । प्रस्थापयाम मित्रेभ्यो बलान्युद्योजयन्तु नः ॥ ७ ॥ शल्यस्य धृष्टकेतोश्च जयत्सेनस्य चाविभो । केकयानाञ्च सर्वेषां दूता गच्छन्तु शीघ्रगाः ॥ ८ ॥ स च दुर्योधनो नूनं प्रेषयिष्यति सर्वशः । पूर्वाभिपन्नाः सन्तश्च भजन्ते पूर्वचोदनम् ॥ ९ ॥ तत्त्वरध्वं नरेन्द्राणां पूर्वमेव प्रचोदने । महद्धि कार्यं वोढव्यमिति मे वर्तते मतिः ॥ १० ॥ शल्यस्य प्रेष्यतां शीघ्रं ये च तस्यानुगा नृपाः । भगदत्ताय राज्ञे च पूर्वसागरवासिने ॥ ११ ॥ अमितौजसे तथोग्राय हार्दिक्यायान्धकाय च । दीर्घप्रज्ञाय शूराय रोचमानाय वा विभो

चाहिये क्योंकि वह कोमलता से साध्य नहीं है हमारे मतमें वे बड़ा पापबुद्धि है । ४ । जो पुरुष पापी दुर्योधन से मृदुवचन कहे, वह जानों गधेके साथ नम्रता करे व गाय के साथ तीक्ष्णता । ५ । क्योंकि वह पापी मृदुकहने से यह मानेगा कि इनके कुछ शक्ति हीनहीं है, जो उस के संग मृदुताकीगई तो वह समझेगा कि वह अब हम जीतगये ।६। अब हमलोग यह करेंगे इस विषय में यत्न करनाचाहिये, वह यहहै कि मित्रोंके यहांदूत भेजेजायँ वे लोग अपनी २ सेना ले आवें । ७ । उन में शल्य धृष्टकेतु, जयत्सेन, व केकयदेशके राजा इन सबोंके यहां शीघ्रगामी दूतजायँ । ८ । नहीं तो दुर्योधन इनलोगों के यहां अवश्य दूत भेजेगा फिर जिसका सन्देश प्रथम पहुँचेगा वेलोग उसीकी ओर आवेंगे ९ इससे राजाओंके बुलानेके लिये बहुतही शीघ्र युक्तिकरनी चाहिये हमारे विचारसे यह सब से बड़ाभारी कार्यहै । १० । पहिले शल्यके यहां शीघ्रताके साथ भेजो व जो शल्यके अनुयायीहों उनके यहांभी, व पूर्व समुद्रके तटपर रहनेवाले राजा भगदत्तके यहां दूत भेजो । ११ । अमितौजा, उग्र, हार्दिक्य, अन्तक, दीर्घप्रज्ञ, शूर,

---

spoken to with gentleness as he is very bad-natured. He who speaks gently with Duryodhan does humanity with an ass and cruelty to a cow. Gentleness to him will give an idea of the weakness of the speaker; he will be elated with pride, if you are gentle with him. We shall send ambassadors to our friends so that they may bring their armies here. Send swift messengers to Shalya, Dhrishtketu, Jayatsen and the king of Kaikaya; for, Duryodhan too will send his messengers to them and they will help him who reaches them first. Greater care should be taken to inform those kings at an early. This, in my opinion is our first duty. 10. First of all, send a messenger to Shalya and his allies and to king Bhagdatta who resides at the sea coast. Let us send messengers to Amitanja, Ugra, Hardikya, Antak, Dirghpragya, Shur, Rochman, Vrihant, Senavindu, Senajit,

॥ १२ ॥ अनीगर्भं बृहन्तश्च सनापि-दुश्च रथैरः । सेनजित् प्रतापि-श्यथ चित्रवर्मा-सुवास्तुक ॥ १३ ॥ बाह्लिकं मुञ्जकेशश्च चैद्याधिपतिरेव च । सुपार्श्वश सुबाहुश पौरवश्च महारथः ॥ १४ ॥ शकानां पह्लवानां च दरदानां नयेनृपा । सुरारिश्च नदीजश्च कर्णवेष्टश्च पार्थिवः ॥ १५ ॥ नील वीरधर्मा च भूमिपालश्च वीर्यवान । दुर्जयो दन्तवक्त्र रुक्मी च जनमेजय ॥ १६ ॥ आषाढो वायुवेगश्च पूर्वपाली च पार्थिवः । भूरितेजा देवक एकलव्यःसहात्मजैः ॥ १७ ॥ कारूषकाश्च राजान क्षेमधूर्तिश्च वीर्यवान् । काम्बोजा ऋषिकापेव पश्चिम नूपकाश्च ये ॥ १८ ॥ जयत्सेनश्च काश्यश तथा पञ्चनद नृपा । क्राथपुत्रश्च दुर्द्धर्षः पार्वतीयाश्च नृपा ॥ १९ ॥ जानकिश्च सुशर्मा च मणिमान्पोतिमत्सक । पांशुराष्ट्राधिपश्चैव धृष्टकेतुश्च वीर्यवान् ॥ २० ॥ तुण्डश्च दण्डधारश्च बृहत्सेनश्च वीर्यवान । अपराजिता निषादश्च श्रेणिमान्वसुमानपि ॥ २१ ॥ बृहद्बलो महौजाश्च बाहुः परपुरञ्जयः । समुद्रसेनो राजा च सहपुत्रेण वीर्यवान ॥ २२ ॥ उद्भवः क्षेमकश्चैव वाटधानश्च पार्थिव । श्रुतायुश्च दृढायुश्च शाल्वपुत्रश्च वीर्यवान ।

गोचगान इनके पश्च।१२।बृहन्त व सेनापति द ये दोगजा बुलाये जायँ, तथा सेनजित्, प्रति नि ध्य,चित्रवर्मा ,व वास्तुक।१३ व ह्र क मुञ्जकश,चैद्य निपति, सुप र्श्व, सुबाहु, महारथी पौरव राजा १४ शकदरा, पह्लवदरा, न द देशके राजालोग, सुर रि, नदीज, कर्णवेष्ट १५ नील, वीरधर्म्मा, अतिशक्तिमान् भू पाल दुर्जय दन्तवक्र रुक्मी जनमेजय । १६। आषाढ़ वायुवेग पूर्वपाली भूरितेजा देवक अपने पुत्रों सहित एकलव्य १७ कारूषक, वीर्यमान क्षेमधूर्ति, काम्बोज, ऋषिक, अनूपक ये पश्चिम देशके राजा १८ जयत्सेन, काश्य, तथा पञ्चनद देशके राजा, क थपुत्र, दुर्द्धर्ष, व ओ राजा पर्व्वतों परहैं १९ जानकि, सुशर्म्मा, मणिमान्, अतिमत्सयक, पांशुराज्यका राजा, अतिवीर्य्यवान धृष्टकेतु २० तुण्ड, दण्डधार वीर्यवान बृहत्सेन, अपराजित, निषाद, श्रेणिमान्, वसुमान् २१ बृहद्बल, महौजा, बाहु, पर पुरञ्जय, समुद्रसेन राजा अपने पुत्रों सहित २२ उद्भव, क्षेमक

Pratimndhya, Chittavarma, Vastuk, Vahlik, Munjkesh, the king of Chedi, Suparashwa, Suvahu, valliant Paurav, the kings of Shak, Pahlav and Darad, Surari, Nadij, Karanvesht, Nil, Virdharm, Bhumipal of great strength, Durjaya, Dantvaktra, Rukmi Janmojaya, Asharh, Vayuveg, Purvapali, Bhuriteja, Devak, Eklavya with his sons, Karushak, valliant Kshemdhurti, Kamboj, Rishik and Anupak the kings of West, Jayatsen, Kashya, the king of Panchnad, Krath's son, Durdharsh, the king of hill tribes, Jalaki, Susharma, Manimaa, Atimatsyak, the king of Paushu, Dhrishtketu, Tound, Dand-dhar, Vrihatsen of great strength, Apajit, Nishad, Shrenimnn, Vasuman, Vrahadval, Mahanja, Vahu, Parpunjaya,

॥ २३ ॥ कुमारश्च कलिङ्गानामीश्वरो युद्धदुर्मदः। एतेषांप्रेष्यतां शीघ्र मेतद्धिममरोचते ॥ २४ ॥ अयञ्चब्राह्मणो विद्वान ममराजनपुरोहितः। प्रेष्यतांधृतराष्ट्राय वाक्यमस्मै प्रदीयताम् ॥ २५ ॥ यथादुर्य्योधनोवाच्यो यथाशान्तनवोनृपः। धृतराष्ट्रो यथा वाच्यो द्रोणश्च रथिनांवरः ॥ २६ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि द्रुपदवाक्ये चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

वासुदेव उवाच। उपपन्नमिदंवाक्यं सोमकानांधुरन्धरे। अर्थसिद्धिकरं राज्ञः पाण्डवस्यामितौजसः ॥ १ ॥ एतच्च पूर्वकार्य्यंनः सुनीतमभिकांक्षताम्। अन्यथाह्याचरन्कर्म पुरुषः स्यात्सुबालिशः ॥ २ ॥ किन्तुसम्बन्धकं तुल्यमस्माकं कुरुपाण्डुषु।

वाटधान, श्रुतायु, दृढ़ायु, वीर्यवान् शाल्वका पुत्र २३ कुमार राजा, व कलिंगदेशका बड़ा दुर्मदराजा, इनसबोंके यहां दूत भेजेजावें यह बात हमको रुचतीहै, ये महाविद्वान् ब्राह्मण हमारे पुरोहितहैं। २५। इनको भेजिये धृतराष्ट्रजीसे सबवार्त्ता कहैं व जैसे २ दुर्य्योधन भीष्मसे कहनाहै सब समझावैं २६ व जिसप्रकार धृतराष्ट्रजीसे व रथियोंमें श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजीसे कहनाहै कहैं २७ ॥

अध्याय ५ ॥

श्रीभगवान् कृष्णचन्द्रजी राजाद्रुपदके वचनसुन बोले कि सोमक वंशके धुरन्धर राजाद्रुपदने जो वचन कहा वह बहुतही उत्तम कहा, क्योंकि अमितपराक्रमी राजायुधिष्ठिरजीके अर्थकी सिद्धि करनेवालाहै। १। व यह कार्य्य सुन्दरनीतिकी इच्छा किये हुये हमलोगोंको सबसे प्रथम करना चाहिये, क्योंकि इसके विपरीत जो पुरुषकरै वह बड़ा अनारीहो। २। व हमको कहोतो कुरुवंशियों व पांडवोंसे बराबर सम्बन्धहै, व

Samudrasen with sons, Udbhav, Kshemak, Vatdhan, Shrutayu, Dribayu, valliant son of Shalwa, Kumar and the king of Kaling. This learned Brahman is my priest, send him to Dhritrashtra. He will render our messages to Duryodhan, Bhishma, Dhritrashtra and valliant Dronachara. 27.

CHAPTER V

"*The words of valliant king Drupad of the Somak dynasty are good,*" said Krishn, " Because they are beneficial to the cause of Yudhishthir of immense prowess. Politicians like us should consider it their foremost duty to do the thing mentioned above, for he who neglects it must be a fool. As for myself, I have 'equal affection' for both the Kauravas and the Pandavas and my treatment with them is similar. All of us were invited as guests at the marriage and will return to

यथेष्टंवर्त्तमानेषु पाण्डवेषुचतेषुच ॥ ३ ॥ तेविवाहार्थमानीता वयंसर्वेतथाभवान् । कृतेविवाहेमुदिता गमिष्यामोगृहानप्रति ॥ ४ ॥ भवानवृद्धतमोराज्ञां वयसाचश्रुतेनच । शिष्यवत्तेवयंसर्वे भवामेहनसंशयः ॥ ५ ॥ भवन्तंधृतराष्ट्रश्च सततंबहुमन्यते । आचार्ययोःसखाचासि द्रोणस्यचकृपस्यच ॥ ६ ॥ सभवान्प्रेषयत्वद्य पाण्डवार्थकरं वचः । सर्वेषां निश्चितंतन्नः प्रेषयिष्यतियद्भवान् ॥ ७ ॥ यदितावच्छमंकुर्यान्न्यायेनकुरुपुङ्गवः । नभवेत्कुरुपाण्डूनां सौभ्रात्रेणमहान्क्षयः ॥ ८ ॥ अथदर्पान्वितोमोहान्नकुर्याद्धृतराष्ट्रजः । अन्येषांप्रेषयित्वाच पश्चादस्मान्समाह्वयेः ॥ ९ ॥ ततोदुर्योधनोमन्दः सहामात्यःसबान्धवः । निष्ठामापत्स्यते मूढः क्रुद्धेगाण्डीवधन्वनि ॥ १० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततःसत्कृत्यवार्ष्णेयं विराटः पृथिवीपतिः । गृहान्प्रस्थापयामास

इसीसे पाण्डवों कौरवोंमें हमारा वर्त्तावभी बराबरहै । ३ । अब हमलग विवाहके लिये यहां बुलायेगयेथे व आपभी इसी के लिये बुलायेगयेथे, अब विवाहहोगया है राजी प्रसन्न अपने २ घरको जायँगे । ४ । आपअवस्था व शास्त्र दोनों में हमलोगोंसे वृद्धतरहैं, इससे हम सब आपके शिष्यके समानहैं इसमें कुछ संशय नहीं । ५ । आपको धृतराष्ट्र निरन्तर बहुत मानते हैं, द्रोणाचार्य्य व कृपाचार्यके आप सखाहीहो । ६ । इससे आप पाण्डवोंके अर्थकारक संदेश आजहीभेजें जो आप सन्देश भेजेंगे उसमें हम सबलोगोंको निश्चयहै कि उत्तमही होगा । ७ । यदि कुरुराज धृतराष्ट्रजी बहुधाशांति करें तो अच्छाहै इन कौरवों पांडवोंमें भाईपन बनारहे नाशको न प्राप्तहों । ८ । कदाचित् मारे मोह व अहंकारके दुर्योधन इनसे मेल न करें तो दूतोंको भेज पीछेसे हमेंभी बुलाना जब अर्जुन क्रोधकरेंगे तब मन्दबुद्धि दुर्योधन मूढ़ अपने मन्त्रियों सहित नष्टभ्रष्टहो जायगा । १० । वैशम्पायनने कहा कि जब कृष्णचन्द्रजीने ऐसा कहा तो राजा विराटने बड़ा सत्कारकर सैन्य व बान्धव सहित कृष्णचन्द्रजी को अपने यहांसे बिदा

our respective homes for the present. You are older than all of us in age and learning and therefore, we are all undoubtedly like your disciples. Dhritrashtra has great regard for you while Dronacharya and Kripacharya are your friends. You may send messengers for the sake of the Pandavas and we give our full consent to these proceedings. It will be well if Dhritrashtra the king of the Kurus inclines towards peace so that the Kauravas and the Pandavas may continue to be brothers and may not ruin themselves. But if Duryodhan foolishly disregards the offer of peace, you may send [illegible] too through messengers and foolish Duryodhan with his [illegible] will be ruined and destroyed by Arjun's anger." 10. Vaishampayan said to Janmejaya that at these words of Shree Krishna, king Virat bade farewell to Shree Krishna and his armies

सगणंसहबान्धवम् ॥ ११ ॥ द्वारकान्तुगतेकृष्णे युधिष्ठिरपुरोगमाः । चक्रुःसांग्रामिकं सर्वविराटश्चमहीपतिः ॥ १२ ॥ ततः सम्प्रेषयामास विराटःसहबान्धवैः । सर्वेषांभूमिपालानांद्रुपदश्चमहीपतिः ॥ १३ ॥ वचनात्कुरुसिंहानां मत्स्यपाञ्चालयोश्चते । समाजग्मुर्महीपालाः सम्प्रहृष्टामहाबलाः ॥१४॥ तच्छ्रुत्वापांडुपुत्राणां समागच्छन्महद्बलम् । धृतराष्ट्रसुताश्चापि समानिन्युर्महीपतीन् ॥ १५ ॥ समाकुलामहीराजन्कुरुपाण्डवकारणात् । तदासमभवत्कृत्स्नासम्प्रयाणेमहीक्षिताम् ॥१६॥ संकुलाचतदाभूमिश्चतुरङ्गबलान्विता । बलानितेषांवीराणामागच्छन्तिततस्ततः ॥ १७ ॥ चालयन्तीवगांदेवीं सपर्वतवनामिमाम् । ततःप्रज्ञावयोवृद्धं पाञ्चाल्यः स्वपुरोहितम् । कुरुभ्यःप्रेषयामासयुधिष्ठिरमतेस्थितः ॥ १८ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि पुरोहितयाने पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

किया । ११ । जब कृष्णचन्द्रजी द्वारकाको चलेगये तो सब पाण्डवोंने व राजा विराटने क्रोधकर सब संग्रामकी तैयारी की । १२ । तदनन्तर अपने भाई बन्धुओं समेत आनेके लिये राजाद्रुपदने व विराटने सब राजाओंको बुलाया १३ व पाण्डवोंके वचनसे तथा विराट व द्रुपदके सन्देशपर बड़े २ बलवान् राजालोग सब दिशाओंसे आये १४ पाण्डवोंके यहां बड़ी भारी सेना एकत्रहुईहै यह सुन कौरवोंने भी बहुतसे राजाओंको बुलाया १५ हेराजन् कुरुवंशियों व पाण्डवोंके कारण सब पृथ्वी सेनासे भरगई जहां देखो सब राजाही राजादिखाई देतेथे १६ सब वीरोंकी चतुरङ्गिणी सेना इधरउधर से आकर भरगई मानो पर्वत वन सहित इस पृथ्वीको चलादेगी १७ तदनंतर पाञ्चाल राजाने जो बुद्धि और अवस्थामें वृद्धथा अपने पुरोहित को बुलाकर पांडवों के हित कौरवोंके पासभेजा १८।

and kinsmen with great respect. On the departure of Shree Krishna to Dwarka, the Pandavas and king Virat were much enraged and began to make preparations for war. King Virat and Drupad invited all the kings to come with their allies for the help of the Pandavas and powerful kings began to come down from all sides till there was a great gathering of armies there. On hearing this, the Kauravas too sent their messengers to invite the kings. All the land was filled with the armies of several kings on the side of the Kauravas as well as the Pandavas. The four sorts of armies from all sides were gathered together as if they would move the Earth with its mountains and forests. Then the king of Panchal, wise in age and council, sent his own priest to the Kauravas on the cause of the Pandavas. 18.

द्रुपदउवाच । भूतानांप्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनांबुद्धिजीविनः । बुद्धिमत्सुनराः श्रेष्ठानरेष्वपिद्विजातय ॥१॥ द्विजेषुवैद्याःश्रेयांसो वैद्येषुकृतबुद्धय । कृतबुद्धिषुकर्त्तार कर्तृषुब्रह्मवादिन ॥ २ ॥ सभवान्कृतबुद्धीनांप्रधानइति मे मतिः । कुलेनचविशिष्टोऽसिवयसाचश्रुतेनच ॥ ३ ॥ प्रज्ञयासदृशश्चासिशुक्रेणांगिरसेनच । विदितञ्चापितेसर्वयथावृत्तःसकौरव ॥ ४ ॥ पाण्डवश्चयथावृत्त कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिर । धृतराष्ट्रस्य विदितेवञ्चिताःपाण्डवाःपरैः ॥ ५ ॥ विदुरेणानुनीतापि पुत्रमेवानुवर्त्तते । शकुनिर्बुद्धिपूर्वंहि कुन्तीपुत्रंसमाह्वयत् ॥ ६ ॥ अनक्षज्ञमताक्षःसनक्षत्रवृत्तेस्थितंशुचिम् । तेतथावञ्चयित्वातुधर्मराजयुधिष्ठिरम् ॥ ७ ॥ नकस्यांचिदवस्थायां राज्यदास्य

अध्याय ६ ॥

महाराज द्रुपदजीने कहा कि स्थावर जंगम सब भूतोंमें जिनके प्राणहोतेहैं वे श्रेष्ठ होतेहैं, व प्राणवालोंमें बुद्धिमान्, बुद्धिमानोंमें मनुष्य श्रेष्ठहैं व मनुष्योंमेंभी ब्राह्मण ।१। ब्राह्मणोंमें विद्यावान्, विद्यावानोंमेंभी सिद्धान्तजाननेवाले, सिद्धान्तजाननेवालोंमें ग्रंथकर्त्ता ग्रंथबनानेवालोंमेंभी ब्रह्मवादी श्रेष्ठहोतेहैं । २ । सो आप सिद्धान्त जानने वालोंमें प्रधानहैं हमारे विचारसे यह आताहै, व कुलमें भी आप विशेषहैं अवस्था व शास्त्र पढ़ने सुननेमें भी । ३ । व बुद्धिमें तो आप शुक्राचार्य व बृहस्पतिके तुल्यहैं, इससे आपको विदितहै कि दुर्योधन किसप्रकार का मनुष्यहै । ४ । व कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरजीकाभी स्वभाव आपको विदित है, व धृतराष्ट्रका भी वृत्त विदितहै, व यहभी कि ये पाण्डवलोग कैसे शत्रुओंसे छलेगये । ५ । विदुरजीने धृतराष्ट्रको समझायाभी परन्तु वे अपने पुत्रहीके अनुयायी रहे, व शकुनिने इस युधिष्ठिरजी को जानकर जुआ खेलने के लिये बुलायाथा । ६ । कि युधिष्ठिर जी जुआखेलना नहीं जानते व हम खेलनेमें चतुर है यह ठीकही है, क्योंकि वे बेचारे क्षत्रियों के वृत्तमें टिके अपने सहज स्वभावकेबल क्याजानें, ऐसे धर्मराजजीको छलसे जुआ खिलाकर

CHAPTER VI

"Among moveables and immoveables" said king Drupad to his priest, "things having life are the best, those endowed with wisdom are the best among living beings human beings are the best among those that have wisdom, Brahmans are the best among men, among Brahmans those that are learned, of the learned men those are best who know the reasons of things, of the latter those are best who write books and of the writers thos who write on theology You are the best of those that know the reasons of things You are learned and old and are as wise as Vrihaspti or Shukracharya You are acquainted with Duryodhan's conduct as well as with that of the sons of Kunti. You know likewise how the sons of Kunti were cheated by the enemies In spite of Vidur's warnings, Dhritrashtra takes the side

न्तिवैस्वयम् । भवांस्तुधर्मसंयुक्तंधृतराष्ट्रंब्रुवन्वचः ॥ ८ ॥ मनांसितस्ययोधानांध्रुव मावर्तयिष्यति । विदुरश्चापि तद्वाक्यं साधयिष्यतितावकम् ॥ ९ ॥ भीष्मद्रोणकृपा दीनांभेदंसंजनयिष्यति । अमात्येषुचभिन्नेषुयोधेषुविमुखेषुच ॥१०॥ पुनरेकत्रकरणं तेषांकर्मभविष्यति । एतस्मिन्नन्तरेपार्थाः सुखमेकाग्रबुद्धयः॥११॥ सेनाकर्मकरिष्यंति द्रव्याणांचैवसञ्चयम् । भिद्यमानेषुचस्वेषु लम्बमानेतथात्वयि ॥१२॥ नतथातेकरि ष्यन्तिसेनाकर्मनसंशयः । एतत्प्रयोजनं चात्रप्राधान्येनोपलभ्यते ॥ १३ ॥ सङ्गत्या धृतराष्ट्रश्चकुर्याद्धर्म्यं वचस्तव । सभवान्धर्मयुक्तश्चधर्म्यंतेषु समाचरन् ॥ १४ ॥ कृपालुषुपरिक्लेशान् पाण्डवीयान्प्रकीर्तयन् । वृद्धेषुकुलधर्मंचब्रुवन् पूर्वैरनुष्ठितम् १५

जीतलिया । ७ । इससे वे लोग किसी प्रकारसे भी अपने आप इनका राज्य न देंगे, इस से आप धृतराष्ट्र से धर्मयुक्त वचन कहते हुये उन के योधाओं के मन अवश्य लौटा देंगे व विदुरजी भी तुम्हारे वचनोंके सहायक होंगे । ९ । भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य कृपाचार्यादिकों के मतोंमें भेदउत्पन्न करादेंगे, जब मन्त्री व योधाओं में भेद अर्थात तोड़ फोड़ होजायगी । १० । तो फिर दुर्योधनादि उन मन्त्रियादिकों के इकट्ठा करनेमें लगजायँगे, उसी अवसरमें पाण्डवलोग एकाग्र बुद्धिहो । ११ । सुख पूर्वकसेना एकत्र करलेंगे व धनभी एकत्र करलेंगे, जब उनके लोगों में भेद पड़जायगा तुमभी कार्यकरनेमें विलम्ब करते रहोगेतो । १२ । फिर वे यहांके समान सेना आदि न इकट्ठीकर पावैंगे इसमें कुछभी सन्देहनहीं, यह प्रयोजन यहां उतने समय में अच्छी तरह से होजायगा । १३ । जो वहां बहुत दिनोंतक रहोगे तोमेल होजाने से धृतराष्ट्र भी तुम्हारे वचनको अच्छा समझने लगेंगे व प्रमाण मानेंगे, इससे आप धर्मयुक्तरहकर उनलोगोंके संग धर्मसंयुक्त वार्त्ता करतेहुये । १४ । कृपालुहो पाण्डवों के क्लेश उन

of his son. Yudhishthir was purposely challenged by Shakuni to the gambling match as he knew the weakness of Yudhishthir as well as his own cleverness. Yudhishthir is firm on virtue and free from deceit and they took advantage of this in deceitfully winning the game. They will never give back the kingdom of the Pandavas of their own accord but you will be able to turn the minds of their warriors in giving advice to Dhritrashtra. Vidur will help you in this matter and will create difference of opinion among Bhishm, Dronacharya and Kripacharya. Thus the ministers and warriors will be divided in opinion. 10. While Duryodhan and others will be engaged in the reconciliation, the Pandavas will have time to collect armies and wealth. While they are divided in opinion, you will be throwing difficulties in their way and they will not be able to collect armies and materials equal to our own. Dhritrashtra will

विभेतृष्यतितेनास्यपा मितिमेनात्रसंशयः। नचतेभ्योभयं तेऽस्तिब्राह्मणोह्यसिवेदवित् १६ ॥ दूतकर्मणियुक्तश्च स्थविरश्चविशेषतः । सभवान्पुष्ययोगेन मुहूर्तेनजयेनच १७॥ कौरवेयानप्रयात्वाशु कौन्तेयस्यार्थसिद्धये। वैशम्पायनउवाच ॥ तथाऽनुशिष्टः प्रययौद्रुपदेनमहात्मना । पुरोधावृत्तसम्पन्नोनगरंनागसाह्वयम् ॥ १८ ॥ शिष्यैःपरिवृतोविद्वान् नीतिशास्त्रार्थकोविदः । पाण्डवानांहितार्थाय कौरवान्प्रतिजग्मिवान् १९

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि पुरोहितयाने

षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

लोगों से कहतेहुये व वृद्धलोगों से उन के पूर्व्वजों के कियेहुए कुलधर्म कहते कहाते ।१५। उन लोगोंके मनों में भय उत्पन्न करादोगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है आपको उनसे कुछ भय होही नहीं सकती क्योंकि एकतो आप ब्राह्मण दूसरे सब शास्त्र पढे लिखेहो ।१६। व दूत कर्म में युक्त हो फिर बड़ेबूढ़ेहो इससे आप प्रातःकाल पुष्यनक्षत्र और विजय मुहूर्त में कौरवों के निकट युधिष्ठिरजी के कार्य के लिये जायँ । १७। वैशंपायनजी बोले कि महाराज द्रुपद राजकी पूर्व्वी शिक्षा या समाचार जानने में बड़े चतुर पुरोहितजी हस्तिनापुर को पाण्डवोंके हितके अर्थ शिष्यके समेतगये १८ ॥

hear you the more attentively the longer you will stay with him. While you will be leading a virtuous life among them and during your religious discourses will be depicting the grievances of the Pandavas, you will produce awe within the minds of the elder people by telling of the family greatness and deeds of their predecessors. Undoubtedly you can have no fear of them; for firstly, you are a Brahman learned in all the shastras and secondly, you are going there as an ambassador and are an elderly man. You will go to the Kauravas early tomorrow during *pushya nakshatra* and lucky time of victory for the good of the Pandavas." Vaishampayan said to Janmejaya that having received the above mentioned advice of king Drupad, the wise priest went to Hasthinapur.



वैशम्पायनउवाच । पुरोहितंतेप्रस्थाप्य नगरंनागसाह्वयम् । दूतान्प्रस्थापयामासुः पार्थिवेभ्यस्ततस्ततः ॥ १ ॥ प्रस्थाप्यदूतानन्यत्र द्वारकांपुरुषर्षभः । स्वयंजगाम कौरव्यः कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः ॥ २ ॥ गतेद्वारवतींकृष्णे बलदेवेचमाधवे । सहवृष्ण्यन्धकैःसर्वैर्भोजैश्चशतशस्तदा ॥ ३ ॥ सर्वमागमयामासपाण्डवानांविचेष्टितम् । धृतराष्ट्रात्मजोराजा गूढैःप्रणिहितैश्चरैः ॥ ४ ॥ सश्रुत्वामाधवंयान्तं सदश्वैरनिलोपमैः । बलेननातिमहता द्वारकामभ्ययात्पुरीम् ॥ ५ ॥ तमेवदिवसंचापि कौन्तेयःपाण्डुनन्दनः । आनर्तनगरींरम्यां जगामाशुधनञ्जयः ॥ ६ ॥ तौयात्वापुरुषव्याघ्रौ द्वारकांकुरुनन्दनौ । सुप्तंददृशतुःकृष्णं शयानंचाभिजग्मतुः ॥ ७ ॥ ततः शयानेगोविन्दे प्रविवेशसुयोधनः । उच्छीर्षतश्चकृष्णस्य निषसादवरासने ॥ ८ ॥ ततःकिरीटीतस्यानु प्रविवेशमहामनाः । पश्चाच्चैवकृष्णस्य प्रह्वोऽतिष्ठत्कृताञ्जलिः ॥ ९ ॥

अध्याय ७ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि महाराज हस्तिनापुरको पुरोहित भेज राजाओं के पास पाण्डवों ने दूत भेजे । १ । अन्यत्र सबकहीं दूतों को भेज कुन्ती का पुत्र पुरुषों में बड़ा श्रेष्ठ अर्जुन आप द्वारकापुरी कोगया । २ । जब वृष्णि अन्धक व भोजवंशियों सहित कृष्णचन्द्रजी व बलरामजी द्वारकापुरी को चलेगयेथे । ३ । दुर्योधन ने गुप्त दूतों को भेज पाण्डवों के सब समाचार मँगा लिये जो वे लोग युद्धकी तैयारी कररहे थे । ४ । व जब सुना कि कृष्णचन्द्र जी द्वारकाजी को चले गये, तो पवन के समान चलने वाले घोड़ों पर सवारहो थोड़ी सारी सेना ले दुर्योधन द्वारकापुरी को गया । ५ । उसी दिन कुन्तीपुत्र अर्जुनभी अतिरम्य द्वारकापुरी में बड़ी शीघ्रता के साथ पहुँचा । ६ । व दोनों पुरुष सिंहों ने आ कृष्णचन्द्र जीको शयन करते हुए देखा । ७ । इस लिये दुर्योधन शिरहाने की ओर एक बड़े सुन्दर आसन पर बैठगये । ८ । उसके पीछे अर्जुन वहां पहुँचे और श्रीकृष्णचन्द्रजी

CHAPTER VII

Vaishampayan said to Janmejaya that having sent the priest to Hasthinapur, the Pandavas sent messengers to the kings, while Arjun the son of Kunti himself went to Dwaraka. After the departure of Shree Krishna and Baldev with the Vrishnis, Andhaks and Bhojes, Duryodhan was informed by his spies of all the proceedings of the Pandavas about the preparations of war. And when he heard that Shree Krishna had gone to Dwarka, he proceeded thither with a large army over horses fleet as the wind. On the same day Arjun too reached the beautiful city of Dwaraka and both the warriors saw Krishna sleeping. Duryodhan sat on a fine bed towards the head of Shree Krishna, while Arjun sat by his side with his hands clasped together. When Shree Krishna awoke from sleep

प्रतिबुद्धःसवार्ष्णेयो ददर्शाग्रे किरीटिनम् । सतयोः स्वागतंकृत्वा यथावत्प्रतिपूज्यतौ । १० । तदागमनजंहेतुं पप्रच्छ मधुसूदनः । ततोदुर्योधनःकृष्ण मुवाचप्रहसन्निव । ११ । विग्रहेऽस्मिन्भवान्साह्यं ममदातुमिहार्हति । समंहिभवतःसख्यं मयिचैवार्जुनेऽपिच । १२ । तथासम्बन्धकंतुल्य मस्माकंत्वयिमाधव । अहंचाभिगतः पूर्वं त्वामध्येमधुसूदन । १३ । पूर्वंचाभिगतंसन्तो भजन्तेपूर्वसारिणः । त्वञ्च श्रेष्ठतमोलोके सतामद्यजनार्दन । १४ । सततंसम्मतश्चैव सद्वृत्तमनुपालय । कृष्ण उवाच । भवानभिगतःपूर्वं मत्रमेनास्तिसंशयः । दृष्टस्तुप्रथमंराजन् मयापार्थोधनञ्जयः । १५ । तवपूर्वाभिगमनात् पूर्वंचाप्यस्यदर्शनात् । साहाय्यमुभयोरेव करिष्यामि सुयोधन । १६ । प्रवारणन्तुबालानां पूर्वकार्य्यमितिश्रुतिः । तस्मात्प्रवारणंपूर्व

की जगह में हाथ जोड़ शिर झुका बैठगये । ९ । इतने में कृष्णचन्द्रजी जागे व नेत्र खोलतेही पहिले अर्जुन को देखा फिर उधर मुख किया तो दुर्योधन को देखा इस लिये दोनों जनोंका यथावत् सत्कार व पूजाकर । १० । दोनों जनों के आनेका प्रयोजन पूछा तब पहिले दुर्योधन ने हँसकर कृष्णचन्द्रजी से कहा । ११ । कि इस हमारे व पाण्डवों के विग्रह में आप हमारे सहायकहों, क्योंकि हम में व अर्जुन में आपकी सख्य बराबरहै । १२ । व सम्बन्धभी जैसा अर्जुन से है वैसाही हमसेभी, हम आपके पास पहिले आये हैं । १३ । महात्माओं की यह रीति है कि उनके समीप जो प्रथम आता है, उसको प्रथम भजते हैं फिर यह महात्माओंकी रीति है आपतो सब महात्मा व सज्जनों में श्रेष्ठहैं ॥ १४ ॥ व निरन्तर सज्जनों में ही गिनेजाते हैं इससे अपने सज्जनों के वृत्तका पालन करो । १५ । यह सुन कृष्णचन्द्रजी बोले कि हां आप हमारे यहां प्रथमही आये इसमें कुछ सन्देह नहीं परन्तु हे राजन् हमने पहले अर्जुनही को देखा है । १६ । इसलिये तुम्हारे प्रथम

---

his eyes fell on Arjun and then turning his head he saw Duryodhan and greeted both. 10. On being asked the purpose of their visit, Duryodhan spoke first, " I ask your help," said he with a smile " In the quarrel between us and the Pandavas. You have equal affection towards both sides and Arjun and I are both equally related to you. But I was the first to come to you. It is the practice of great men to attend to the wants of him who applies first. You are the best and greatest of men and therefore you should act as such." " It is true that you came first," replied Shree Krishna, " but it happened that I saw Arjun first, I am therefore bound to help both. The Vedas say that the want of the younger folk should be looked to first, I should therefore comply with the wishes of Arjun before

मर्हःपार्थोधनञ्जयः । १७ । मत्संहननतुल्यानां गोपानामर्बुदंमहत् । नारायणाइ-
तिख्याताः सर्वेसंग्रामयोधिनः । १८ । तेवायुधिदुराधर्षा भवन्त्वेकस्यसैनिकाः ।
अयुध्यमानःसंग्रामे न्यस्तशस्त्रोऽहमेकतः ॥ १९ ॥ आभ्यामन्यतरंपार्थ यत्तेहृद्यतरं
मतम् । तद्वृणीतां भवानग्रे प्रवार्यस्त्वंहिधर्मतः ॥ २० ॥ वैशम्पायनउवाच ।
एवमुक्तस्तुकृष्णेन कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः । अयुध्यमानंसंग्रामे वरयामासकेशवम् ॥२१
नारायणममित्रघ्नं कामाज्जातमजंनृषु । सर्वक्षत्रस्यपुरतो देवदानवयोरपि ॥ २२ ॥
दुर्योधनस्तुतत्सैन्यं सर्वमावरयत्तदा । सहस्राणांसहस्रन्तु योधानांप्राप्यभारत
॥ २३ ॥ कृष्णंचापहृतंज्ञात्वा सम्प्रापपरमांमुदम् । दुर्योधनस्तुतत्सैन्यं सर्वमा-

---

मानेसे ॥ अर्जुनको प्रथम देखनेसे इन दोनों जनोंकी सहायता ऐसे १७ बालकोंका मनो-
रथ प्रथम पूर्णकरना चाहिये यह वेदवचन है, इससे प्रथम अर्जुनहीका मनोरथ पूर्ण करना
चाहिये क्योंकि ये तुमसे छोटे हैं १८ हमारे तुल्यबलवान् व मोटेताजे अर्बुदों गोपहैं
जिनका नारायण नाम है वे सबसंग्राम में बड़ा युद्ध करते हैं । १९ । वे लोग लड़नेमें
बड़ेही दुर्द्धर्षहैं तुमदोनोंमें से एककी ओर लड़ते हुये ये नारायण होंगे व दूसरेकी ओर
बिनालड़ते हुये व अस्त्र शस्त्र धरेहुये खाली हाथ हम होंगे । २० । हे अर्जुन इन
हमदोनों में प्रथम तुम जिसको चाहो लेलो क्योंकि दुर्योधन से छोटेहोने के कारण
धर्मसे तुम्हारी रोकनहीं है ऐसे स्थानपर छोटाही प्रथमभागलेनाहै । २१ । वैशंपायनजी
बोले कि जब श्रीकृष्णचन्द्रजी ने ऐसा कहातो अर्जुनने शस्त्रादि रहित संग्राम में न
लड़तेहुये श्रीकृष्णचन्द्रजीकोही अपनी ओरलिया २२ व शत्रुओंके नाशकरनेवाले नारायण
जो कि अज अद्वैत हैं पर मनुष्यों में क्षत्रियों के मध्यमें व देवता दानवोंमें भी उत्पन्नहोते
हैं २३ दुर्योधन ने वह सब नारायणरूपिणी राजाओंकी सेना अपनी ओरली उस में

---

yours, as he is younger than you. I have millions of stout and lusty cowherds like myself. They are known as Narayans and are very dexterous in battle. They are very hard fighters. One of you will have those Narayans on his side and other will have in me a non-fighting, ally bearing no weapons. 20. You may choose, Arjun, whichever of the two you like; for, being younger than Duryodhan you have the prior claim" Vaishampayan said to Janmejaya that on hearing the above words, Arjun expressed his desire to have non-fighting Shree Krishna on his side and the army of Narayans, matchless destroyers of enemies born among kshatryas, gods and danavas, fell to the lot of Duryodhan. There were hundreds of thousands of warriors in that army. Knowing that Krishna would not use weapons, Duryodhan was much pleased and went to Baldeo of great prowess and told him the purpose of

यपार्थिव ॥ २४ ॥ ततोऽभ्ययाद्धीमबलो रौहिणेयंमहाबलम् । सर्वंचागमनेहेतु सतस्मैसंन्यवेदयत् । प्रत्युवाचततः शौरिर्दुर्योधनमिदंवच ॥ २५ ॥ बलदेवउवाच विदितंतेनरव्याघ्र सर्वंभवितुमर्हति । यन्मयोक्तंविराटस्य पुरावैवाहिकेतदा ॥ २६ ॥ निगृह्योक्तो हृषीकेशस्त्वदर्थंकुरुनन्दन । मयासम्बन्धकंतुल्यं क्षितिराजन् पुनःपुनः ॥ २७ ॥ नचतद्वाक्यमुक्तंवै केशवःप्रत्यपद्यत । नचाहमुत्सहेकृष्णं विनास्थातुमपि क्षणम् ॥ २८ ॥ नाहंसहायःपार्थस्य नापिदुर्योधनस्यवै । इतिमेनिश्चितावुद्धिर्वासुदेवमवेक्ष्यह ॥ २[illegible] ॥ जातोऽसिभारतेवंशे सर्वपार्थिवपूजिते । गच्छयुध्यस्वधर्मेण क्षात्रेणभरतर्षभ । ३० । वैशम्पायनउवाच । इत्येवमुक्तस्तुतदा परिष्वज्यहलायुधम् । कृष्णंचापहृतंज्ञात्वा युद्धान्मेनेजितंजयम् । ३१ । सोऽभ्ययात्कृतवर्माणं धृतराष्ट्रसुतो नृप । कृतवर्माददौतस्य सेनामक्षौहिणींतदा ३२ सतेनसर्वसैन्येन भीमेनकुरुनन्दन

दुर्योधन ने हजारोंडाधों में दाभाये २४ व कृष्णचन्द्रजीको अस्त्र शस्त्र रहित जान परम आनन्दको प्राप्तहुआ फिर सब बड़ सैन्यके महाबली बलभद्रजी के स्थानको गया २५ व अपने यहां आनेका सबहेतु उनसे कहा वह सुन बलदेवजी दुर्योधनसेबोले २६ हेनरव्याघ्र जो हमने विवाहमें कहाथा वह तुमको विदितहोगा वही अब होगा २७ तुम्हारे लिये हमने श्रीकृष्णजीको बहुत दबाकरकहा कि हम लोगोंसे दुर्योधन तथा अर्जुनसे समान सम्बन्धहै २८ परन्तु हमारा कहना उन्होंने नहीं अंगीकार किया व हम कृष्णको छोड़ [illegible]भर नहीं रहसक्ते २९ इससे न हम अर्जुनहीके सहायकहैं न दुर्योधनहीके वासुदेव के साथ हमने यही निश्चयकरलियाहै । ३० । व तुम सब राजाओंसे पूजित भारत वंशमें उत्पन्न हुयेहो जाओ क्षत्रियों के धर्मसे युद्धकरो । ३१ । वैशंपायनने कहा कि जब बल-देवजी ने ऐसा कहा तो उनको छाती से मिलाय कृष्णचन्द्रजी को युद्धकरने से अलग जान दुर्योधन ने जाना कि बस अब हमारीही विजय होगी । ३२ । इसके पीछे दुर्यो

[illegible] "You know, valiant king," said Baldev, "all that I said in the court of Virat. For your sake, I reasoned much with Sri Krishna and told him that the Kauravas and the Pandavas are alike to us but he would not hear me and I cannot live without him even for a moment. I have therefore settled with Vasudev that I shall neither be on the side of Arjun nor on Duryodhan's. 30. You are born in the family of Bharat much respected [illegible]. You [illegible] go and fight according to the custom of the [illegible]." Vaishampayan said to Janmejaya that hearing the words of Baldev, Duryodhan embraced him, and knowing that Sri Krishna would be [illegible] from fighting he thought that the victory was his own. Duryodhan then went to Kritavarma and got an Akshauhini of army from him. He was much pleased to get that

हृत.परियपौहृष्टः सुहृद्-सम्प्रहर्षयन् । ३३ । तत.पीताम्बरधरोजगत्स्रष्टाजनार्दनः । गतेदुर्योधनेकृष्णः किरीटिनमथाब्रवीत् ३४ अयुध्यमानःकां बुद्धिमास्थायाहं वृतस्त्व या । अर्जुन उवाच । भवान् समर्थस्तान् सर्वान्निहन्तुंनात्रसंशयः । निहन्तुमहमप्येकः समर्थःपुरुषर्षभ ॥ ३५ ॥ भवांस्तुकीर्तिमाल्लोके तद्यशस्त्वांगमिष्यति । यशसांचाहं पप्यर्थी तस्मादसिमयावृतः ॥ ३६ ॥ सारथ्यन्तुत्वयाकार्यमिति मेमानसंसदा । चि रराात्रेप्सितं कामं तद्भवान् कर्त्तुमर्हति॥ ३७ ॥ वासुदेव उवाच । उपपन्नमिदंपार्थ यद् स्पर्द्धसिमयासह । सारथ्यंतेकरिष्यामि कामःसम्पद्यतांतव ॥३८॥ वैशम्पायनउवाच एवंप्रमुदितःपार्थः कृष्णेनसहितस्तदा । वृतोदाशार्हप्रवरैः पुनरायाद्युधिष्ठिरम् ॥३९॥ इतिमहाभारते उद्योगपर्वाणि सेनोद्योगपर्वाणि कृष्णसारथ्यस्वीकारेसप्तमोऽध्यायः७।

धन कृतवर्मा के पासगया उन्हों ने एक अक्षौहिणी सेना उसकोदी ३३ इस सेनाको पा दुर्योधन परम हर्षितहो व सुहृदोंको हर्षित कराताहुआ अपने स्थानको गया।३४। इसके पीछे पीताम्बरधारी जगत के उत्पन्न करनेवाले श्रीकृष्णचन्द्र जी दुर्योधन के चले जानेपर अर्जुन से बोले । ३५ । कि तुमने क्या विचारकर बिना लड़ते हुवे भी हमको अपनी सहायता के लिये अङ्गीकार किया अर्जुन ने कहा कि हम जानते हैं कि आप इन सबों को मारने में समर्थ हैं व आपकी कृपासे हमभी अकेले सबोंके मारडालने में समर्थ हैं, ३६ परन्तु आपलोक में कीर्तिमान हैं इससे हमारा यश आपमें जायगा व हम भी यशकी चाहनाकरते हैं इसीसे आपको हमने अंगीकार किया है ३७ अबमेरी यह इच्छा है कि आपमेरे सारथिहों और शीघ्र मेरे साथ चलें यह सुनकर श्रीकृष्णने कहा कि हम निस्संदेह तुम्हारे सारथि बनेंगे और यद्यपि यह निन्दित कर्महै परन्तु तुम्हारे हितके लिये यह करेंगे यह सुनकर अविलंबित अर्जुन श्रीकृष्ण सहित धर्मराज युधिष्ठिर के पास पहुँचा । ३९ ।

---

large army and pleasing the hearts of his friends he returned home On Duryodhan's departure, the wearer of yellow clothes, Shree Krishna, the creator of the world, asked of Arjun, "Why did you choose me while you knew that I would not fight for you." "I know," said Arjun "that you can destroy all of them as well as I can with your grace. You are famous throughout the world and therefore my fame will be united with yours. I am ambitious for fame and have therefore chosen you to be on my side. I request you to become my chariot-driver and to accompany me at once." "I shall be your driver," said Shree Krishna, "and although it is a mean office I shall do it for your sake." Having said this, Shree Krishna accompanied Arjun and they both reached where Yudhishthir was. 40.

वैशम्पायन उवाच । शल्यःश्रुत्वातुदूतानां सैन्येनमहतावृतः । अभ्ययात्पाण्डवान्राजन् सहपुत्रैर्महारथैः ॥ १ ॥ तस्यसेनानिवेशोऽभूदध्यर्द्धमिव योजनम् । तथाहि विपुलांसेनां विभर्तिसनरर्षभः ॥ २ ॥ अक्षौहिणीपतीराजन् महावीर्यपराक्रमः । विचित्रकवचाः शूरा विचित्रध्वजकार्मुकाः ॥ ३ ॥ विचित्राभरणाः सर्वे विचित्ररथवाहनाः । विचित्रस्रग्धराः सर्वे विचित्राम्बरभूषणाः ॥ ४ ॥ स्वदेशवेषाभरणावीराः शतसहस्रशः । तस्यसेनाप्रणेतारो बभूवुः क्षत्रियर्षभाः ॥ ५ ॥ व्यथयन्निवभूतानि कम्पयन्निवमेदिनीम् । शनैर्विश्रामयन्सेनां सययौयेनपाण्डवः ॥ ६ ॥ ततोदुर्योधनःश्रुत्वा महासेनंमहारथम् । उपायान्तमभिद्रुत्य स्वयमानर्चभारत ॥ ७ ॥ कारयामासपूजार्थं

अध्याय ८ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि दूतोंके वचन सुन मद्रदेशका राजा शल्य महारथी अपने पुत्रोंके संगबड़ीभारी सेनाले पाण्डवोंके निकटचला १ व उसकी सेना दोदो कोशपर प्रति दिन टिकती हुई चली क्योंकि उसराजाके संग बड़ी भारी सेनाथी २ वह एक अक्षौहिणी सेनाका महावीर्य पराक्रमी स्वामीथा उसके शूर चित्र विचित्र कवच धारणकिये विचित्रही उनके ध्वज व धनुष ३ सब विचित्र भूषण धारणकिये विचित्रही उनके रथ व वाहन विचित्रही मालापहिने वस्त्र भूषणभी विचित्रही धारण कियेथे । ४ । व सब अपने अपने देशके वेष बनाये भूषणभी अपनेही देशके पहिने ऐसे सैकड़ों हजारों शूरवीर क्षत्रिय श्रेष्ठ उसकी सेनाके पतिथे ५ उसकी सेना सब प्राणियों को व्यथित करती हुई व पृथ्वीको कंपातीहुई धीरे धीरे टिकती हुई जहां पाण्डव थे वहांको चली आतीथी ६ उसी समय में दुर्योधनने सुना कि महारथी महात्मा शल्यजी आतेहैं इससे उनके समीप जा बड़ी पूजाकी ७ व उनकी सेवाके लिये रमणीय देशोंमें रत्नोंसे अच्छीतरह भूषित

CHAPTER VIII

Vaishampayan said to Janmejaya that on receiving the message of the Pandavas, Shalya marched towards them with his sons and a large army stopping at short distances on the way. He was the most valiant and powerful leader of an Akshauhini of army. His soldiers, wearing armour of different colours, bearing all sorts of bows and banners, decked with ornaments and clothes of sorts according to the fashion of their country and seated over chariots and carriages, amounted to hundreds and thousands of brave Kshatryas. Such was the great army that was coming by slow marches to the help of the Pandavas, terrifying the people and shaking the Earth. In the meantime, Duryodhan heard of the coming of great Shalya and paid him a visit with great respect. He caused spacious tents, decked with gems, to be erected in various charming

तस्य दुर्योधनः सभाः । रमणीयेषु देशेषु रत्नचित्राः स्वलंकृताः ॥ ८ ॥ शिल्पिभिर्विविधैश्चैव क्रीडास्तत्र प्रयोजिताः । तत्र माल्यानि मांसानि भक्ष्यं पेयञ्च सत्कृतम् ॥ ९ ॥ कूपाश्च विविधाकारा मनोहर्षविवर्द्धनाः । वाप्यश्च विविधाकारा ओदकानि गृहाणि च । ॥ १० ॥ स ताः सभाः समासाद्य पूज्यमानो यथामरः । दुर्य्योधनस्य सचिवैर्देशे देशे यथार्हतः ॥ ११ ॥ आजगाम सभामन्यां देवावसथवर्चसम् । स तत्र विषयैर्युक्तैः कल्याणैरतिमानुषैः ॥ १२ ॥ मेनेऽभ्यधिकमात्मानमवमेने पुरन्दरम् । पप्रच्छ स ततः प्रेष्यान् प्रहृष्टः क्षत्रियर्षभः ॥ १३ ॥ युधिष्ठिरस्य पुरुषाः केऽत्र चक्रुः सभा इमाः । आनीयन्तां सभाकारा प्रदेयार्हा हि मे मताः ॥ १४ ॥ प्रसादमेषां दास्यामि कुन्तीपुत्रोऽनुमन्यताम्

चित्र विचित्र सभा दुर्योधनने बनवाई ८ उन सभाओंमें राजा को ठहराकर उनसे नाना प्रकारके चित्र विचित्र क्रीड़ा के स्थान बनवाये व उन स्थानों में मांस और भोजन करने पीनेकी वस्तु एकत्रकरादीं ९ व मनके हर्ष बढ़ानेवाले विविध प्रकार के कुआं बनवाये तथा विविध प्रकारकी वापियां भोजन बहुत प्रकारके मन्दिर नानाप्रकारके बनवादिये १० राजा शल्य उन सभाओंको बड़ी दूरसे देश देशमें देखतेहुये व टिकते हुये दुर्योधनके सेवकोंसे पूजित देवताओंके समान शोभितहुये ११ फिर आते आते एकदूसरी सभा में आये वह सभा देवताओंके स्थान के समानथी उस में जितने पदार्थ दिखाई देतेथे वे मनुष्यों केसे बनाये नहीं थे किन्तु देवताओं केथे । १२ । वहां पहुँच राजा शल्यने अपनेको इन्द्रसेभी अधिक समझा इससे बहुत प्रसन्नहो उस क्षत्रियश्रेष्ठ ने सेवकों से पूछा कि । १३ । युधिष्ठिरजी के किन पुरुषों ने यहां ऐसी सभायें बनाई हैं उनको बुलाओ तो बनानेवालोंको हम कुछ पारितोषिक दिया चाहते हैं । १४ । इस बातसे कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरजी भी प्रसन्न होंगे इस बातको सुन लोगोंने जाय दुर्योधन से

places to entertain king Shalya. He appointed masons to build places there for recreation and provided him with meats and other articles of food and drink. Wells, tanks and beautiful buildings were built for him in the way by Duryodhan's order. 10. Staying at those places, day ofter day, for a long distance and attended by Duryodhan's servants, king Shalya was much pleased and looked like a god At last he came to a place, charming like the dwelling of gods, containing things which looked as if they were made by gods and not by human hands. On reaching there he thought that even Indra's palace could not be better than that and in the excess of joy he said that he would give some reward to Yudhishthir's men who had built the place and that Yudhishthir would also approve it. He was so pleased as to form a resolution to give up his own life for the sake of the man who had got the building

दुर्योधनायतत्सर्वं कथयन्तिस्मचिरस्मिताः ॥ १५ ॥ संप्रहृष्टोयदाशल्यो दिदित्सुरपि जीवितम् । गूढोदुर्योधनस्तत्र दर्शयामासमातुलम् ॥ १६ ॥ तंदृष्ट्वामद्रराजश्च ज्ञात्वा यत्नमृतस्यतम् । परिष्वज्याब्रवीत् प्रीतइष्टार्थोगृह्यतामिति ॥ १७ ॥ दुर्योधन उवाच सत्यवाग्भवकल्याण वरोवैममदीयताम् । सर्वसेनाप्रणेतावै भवान्भवितुमर्हति ॥१८। वैशम्पायन उवाच । कृतमित्यब्रवीच्छल्यः किमन्यत्क्रियतामिति । कृतमित्येवगान्धारिः प्रत्युवाचपुनःपुनः ॥ १९ ॥ शल्य उवाच । गच्छदुर्योधनपुरं स्वकमेवनरर्षभ । अहंगमिष्येद्रष्टुंवै युधिष्ठिरमरिन्दमम् ॥ २० । दृष्ट्वायुधिष्ठिरंराजन् क्षिप्रमेष्येनराधिप अवश्यंचापिद्रष्टव्यः पाण्डवः पुरुषर्षभः ॥ २१ ॥ दुर्योधन उवाच । क्षिप्रमागम्यतां राजन् पाण्डवंवीक्ष्यपार्थिव । त्वय्यधीनास्मराजेन्द्र वरदानंस्मरस्वनः ॥ २२ ॥ शल्य

सब समाचार कहा १५ व प्रसन्नहो शल्य अपनाप्राणभी देनेको तैयारहुआ कि जिसने ऐसी सभा बनवाई उसके संग अपने प्राणतक देदूंगा, तब गुप्तहो युधिष्ठिरजीका रूपबनाय अपनेमातुल अर्थात् नकुल सहदेवजी के माता शल्यजी के समीप आये । १६ । जब मद्रदेश के राजाने उनको देखा व उनका सब यत्न जान मिलभेंट प्रसन्नहो उनसे कहा कि हमसे जो चाहो मांगो १७ यह सुन दुर्योधनबोले कि हे कल्याण आप सत्यवादी हो हमको यही वरदानदें कि हमारी सब सेनाके पति आप हों । १८ । राजा शल्य ने कहा अच्छा यह कामतो हमने अंगीकार किया अब बतावो और क्या करना चाहिये तब दुर्योधन ने बार बार कहा कि बस होचुका इतनाही कार्य करना है । १९ । शल्य बोले, कि पुरुष श्रेष्ठ दुर्योधन अपने स्थानपर जाव, हम शत्रुओं के नाशक युधिष्ठिरजीको देखन जावेंगे, । २० । व उनको देख बहुतशीघ्र तुम्हारे पास आजावेंगे, परंतु पुरुषों में श्रेष्ठ युधिष्ठिरजीको अवश्य देखनाहै २१ दुर्योधनबोले कि महाराजपाण्डवजीको देख शीघ्रही हमारे यहांही आजाना क्योंकि हम सब आपही के आधीन हैं जो वचन

---

made for his sake. On hearing that resolution Duryodhan disguised himself as Yudhishthir and came to Shalya the maternal uncle of Nakul and Sahadev. The king received him with great respect and when the mutual greetings were over he asked him to name his desire. Duryodhan, thereupon, asked him to become the commander of his army. He granted Duryodhan's request and enquired of him if he could do anything else for him, but Duryodhan said that he had no other desire. Shalya then bade farewell to Duryodhan and expressed a desire to see Yudhishthir, promising to return to Duryodhan after seeing Yudhishthir. 21. Duryodhan requested him to come back soon after seeing Yudhishthir and to remember the promise he had just made. The king told Duryodhan to return to his tent and promised to return soon. After

उवाच । क्षिप्रमेष्यामि भद्रन्ते गच्छस्व स्वपुरं नृप । परिष्वज्य तथान्योऽन्यं शल्यदुर्योधनावुभौ ॥ २३ ॥ स तथा शल्यमामन्त्र्य पुनरायात् स्वकं पुरम् । शल्यो जगाम कौन्तेयानाख्यातुं कर्म तस्य तत् ॥ २४ ॥ उपप्लव्यं स गत्वा तु स्कन्धावारं प्रविश्य च । पाण्डवानथ तान् सर्वान् शल्यस्तत्र ददर्श ह ॥ २५ ॥ समेत्य च महाबाहुः शल्यः पाण्डुसुतैस्तदा । पाद्यमर्घ्यञ्च गाञ्चैव प्रत्यगृह्णाद्यथाविधि ॥ २६ ॥ ततः कुशलपूर्वं हि मद्रराजोऽरिसूदनः । प्रीत्या परमया युक्तः समाश्लिष्य युधिष्ठिरम् ॥ २७ ॥ तथा भीमार्जुनौ कृष्णौ स्वस्रीयौ च यमावुभौ । आसने चोपविष्टस्तु शल्यः पार्थमुवाच ह ॥ २८ ॥ कुशलं राजशार्दूल कच्चित्ते कुरुनन्दन । अरण्यवासाद्दिष्ट्याऽसि विमुक्तो जयतां वर ॥ २९ ॥ सुदुष्करं कृतं राजन्निर्जने वसता त्वया । भ्रातृभिः सह राजेन्द्र कृष्णया चानया मह ॥ ३० ॥ अज्ञातवासं

आपने कहाहै उसका स्मरण कीजिये २२ यह सुन राजा शल्यने कहा कि तुम अपने राज्यको जाव हम बहुतशीघ्र आवेंगे तुम्हारा कल्याणहो यह कह शल्य व दुर्योधन दोनों परस्पर मिले भेंटे । २३ । व शल्यसे पूंछ दुर्योधन अपने स्थानपर चलेआये, व राजाहो शल्य दुर्योधनका वह धोखे का कर्म पाण्डवों से कहनेको चले । २४ । जाते जाते विराटके नगर के समीप पहुँच बाहर जहां सेना निवासथा वहां उतरे, व वहां सब पांडवों को शल्यने देखा । २५ । व सब पाण्डवों के संग बैठ पाद्य अर्घ व सुन्दर वचनों को पाण्डवोंकी ओरसे ग्रहण किया । २६ । तदनन्तर शत्रुओं का मारनेवाला राजाशल्य कुशल पूर्वक परमहर्ष से युधिष्ठिरजी से मिला । २७ । उसी प्रकार भीमसेन व अर्जुन से मिल भेंट अपने भानजे माद्री के पुत्र नकुल सहदेवसे मिल भेंट आसन पर बैठ युधिष्ठिर से बोला । २८ । हे कुरुनन्दन राज शार्दूल आपके यहां सबकुशलहै, बड़ेभाग्य की बातहै कि आपवनवास से छूटे । २९ । हे राजन् आपने भाइयों व द्रौपदी के साथ इतने दिन वनमें बिताये यह महादुष्कर कर्म किया । ३० । फिर उसमेंभी जो अज्ञात

---

this both Duryodhan and Shalya separated. Duryodhan went away to his own capital and Shalya proceeded on his way to the place where Yudhishthir was to be told of the deception practiced on him by Duryodhan. At last the army of king Shalya reached near the capital of king Virat and encamped outside the city. ' The Pandavas came and offered him *padya* and *arghya* and (water to wash the feet and rinse the mouth). Shalya the destroyer of enemies was much delighted to see Yudhishthir, After exchange of greetings with Bhim, Arjun and his nephews Nakul and Sahadev, he seated himself and thus addressed Yudhishthir, " Prince of Kurus ! is all your household safe and sound ? By good fortune you have completed the period of exile. It was very hard for you, your brothers and Draupadi to pass such a long time in

यारञ्च वसनं दुष्करङ्कृतम् । दुःखेयत्कुन्तसौख्यं अप्राप्तराज्यस्यभारत ३१ दुःखस्यैतस्यनष्टो धार्तराष्ट्रकृतस्यवै । अप्राप्स्यसिसुखंराजन हत्वाशत्रून्परन्तप ॥ ३२ ॥ विदितेनमहाराज लोकतन्त्रंनराधिप । तस्माल्लोभकृतं किञ्चित्तवतात नविद्यते ३३ ॥ राजर्षीणांपुराणानां मार्गमन्विच्छभारत । दानेतपसिसत्येच भवतातयुधिष्ठिर ३४॥ क्षमादमश्चसत्यञ्च अहिंसाचयुधिष्ठिर । अद्भुतश्चपुनर्लोकस्त्वयिराजन्प्रतिष्ठित ३५॥ मृदुर्वदान्योब्रह्मण्यो दाताधर्मपरायणः । धर्मास्तेविदिताराजन बहवोलोकसाक्षिकाः ॥ ३६ ॥ सर्वंजगदिदंतात विदितंतेपरन्तप । दिष्ट्याकृच्छ्रमिदंराजन पारितंभरतर्षभ ॥ ३७ ॥ दिष्ट्यापश्यामिराजेन्द्र धर्मात्मानंसहानुगम् । निस्तीर्णदुष्करंराजंस्त्वां धर्मनिश्चयंप्रभो ॥ ३८ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोऽस्याकथयद्राजा दुर्योधनसमा

तक अज्ञातवास अपलगों ने किया वह बहुतही दुष्कर किया फिर अवभी राज्यके तो भ्रष्टहीहो दुःखहीहै सुखकहां है । ३१ । अब दुर्योधनादिकों के कराये हुये इस बड़े भारी दुःखके शत्रुओंको मारहीकर सुखपावोगे ३२ हे महाराज लोकका सिद्धांत आपको विदित है इसी से लोभका किया हुआ तुम्हारे कुछनहीं है ३३ हे भरत, पुराने राजर्षियों के मार्गकी इच्छा आप करें, दान, तपस्या, व सत्यमें तत्पर रहें ३४ व क्षमा, इन्द्रियों की जीतना सत्य बोलना, किसीभी जीवको न मारना, ये सबकामकरने से राजन् अद्भुत लोक आप को मिलेगा । ३५ । कोमल स्वभाव, दानदेना, ब्राह्मणकोही देवता समझना अति दानमें स्वभाव रखना, धर्म में परायण रहना, इत्यादि धर्म जो लोक के साक्षीहैं सब आपको विदितहैं इसी से आप इनकी रीतिपर चलतेहैं । ३६ । हे तात जगत्‌की सब वृत्ति आपको विदित है, बड़े भाग्य की बात है कि आपके ऊपर ऐसा कष्ट पड़ा उसकेभी निवृत्तहो आये ३७ व यहभी बड़े भाग्यकी बातहै जो धर्मात्मा आप को भाइयों सहित देखतेहैं कि बड़े दुष्कर कर्मसे निवृत्तहोकर धर्महीं करने में उद्यतहैं ३८

exile 80. It was more difficult to pass the thirteenth year unknown. And still you have not got your kingdom back. This is very painful. You will get peace of mind after killing Duryodhan and other enemies of yours. You are fully acquainted with the ways of the world and it is therefore that you are free from avarice. You must try to walk on the path of the royal sages of old and must continue to be firm on charity, asceticism, truth, forgiveness, control of organs, truthfulness, abstenance from doing injury and such others which lead to the better world. You walk on the path of virtue because you are familiar with the facts that such dharms as good temper, charity, putting Brahmans on a level with gods and being firm in dharm, b[illegible] stances to the actions of men. You know all the ways of the world. It is on account of your good fortune that

गमम् । तच्चशुश्रूषितेसर्वं वरदानञ्चभारत ॥ ३९ ॥ युधिष्ठिर उवाच । सुकृतंतेकृतं राजन् प्रहृष्टेनान्तरात्मना । दुर्योधनस्यवद्वीर त्वयावाचाप्रतिश्रुतम् ॥ ४० ॥ एकं त्विच्छामिभद्रन्ते क्रियमाणंमहीपते । राजन्नकर्त्तव्यमपि कर्त्तुमर्हसिसत्तम ॥ ४१ ॥ ममत्ववेक्षयावीर शृणुविज्ञापयामिते । भवानिहमहाराज वासुदेवसमोयुधि ॥ ४२ ॥ कर्णार्जुनाभ्यांसम्प्राप्ते द्वैरथेराजसत्तम । कर्णस्यभवताकार्यं सारथ्यंनात्रसंशयः ४३ तत्रपाल्योऽर्जुनोराजन् यदिमत्प्रियमिच्छसि । तेजोवधश्चतेकार्यः सौतेरस्मज्जयावहः अकर्त्तव्यमपिह्येतत् कर्त्तुमर्हसिमातुल ॥ ४४ ॥ शल्य उवाच । शृणुपाण्डव भद्रन्ते यद्ब्रवीषिमहात्मनः । तेजोवधनिमित्तंमां सूतपुत्रस्यसंगमे ॥ ४५ ॥ अहंतस्यभवि-

---

इसके पीछे राजा शल्यने मार्ग में अपना व दुर्योधनका समागम बताया व जिस प्रकारसे उनको वरदान दिया वहभी सब सुनाया ३९ तो युधिष्ठिरजी बोले कि राजन् तुमने प्रसन्न मनहो जो दुर्योधन को वरदान दिया वहाही पुण्यका कार्य्य किया । ४० । परंतु एक काम हमभी आपसे कराया चाहते हैं वह करने के योग्यभी नहीं तो आपको करना उचित है । ४१ । हे वीर दुर्योधन की अपेक्षा हमसे आपसे अधिक सम्बन्ध है इससे ममत्वभी अधिकमान आपसे कहते हैं आप आज कल बड़ेभारी राजा होने के कारण युद्धमें श्रीकृष्णजी के समान हैं । ४२ । इस से जब कर्ण व अर्जुनका युद्ध होनेलगै तो आप कर्णके सारथि बनैं । ४३ । व जो हमारा प्रिय चाहते हैं तो आप वहां अर्जुनकी पालना करते रहैं, व कर्णके तेजका नाशभी आप करते रहैं क्योंकि उस के करने से हमारी जय होगी । ४४ । हे मातुल यह कार्य्य करने के योग्यभी नहीं तौभी आपको करना चाहिये । ४५ । यह सुन राजा शल्य बोले कि हे पाण्डव तुम्हारा

---

you are now free from the great calamity and that you and your brothers are still firm on the path of virtue after undergoing so much trouble." Having said this, Shalya related about his meeting Duryodhan in the way and of his own promise." You have done well in giving the promise to Duryodhan," said Yudhishthir, "but I beg of you one thing which I hope you will grant me although the doing of it may be below your dignity. Considering your relation and love towards us to be greater than what you bear towards Duryodhan and also considering you to be a great warrior like Shree Krishna, I ask you to drive the chariot of Karan when he is fighting with Arjun and to be kind to him for my sake. We shall win victory if you will contrive to lessen the zeal of Karan and you will be

ध्यामि संग्रामे सारथित्वम् । वासुदेवेन हि समं नित्यं मां हि मन्यते ॥ ४६ ॥ तस्याहं कुरुशार्दूल प्रतीपमहितं वचः । ध्रुवं संकथयिष्यामि योद्धुकामस्य संयुगे ॥ ४७ ॥ यथा स हृतदर्पश्च हृततेजाश्च पाण्डव । भविष्यति सुखं हन्तुं सत्यमेतद्ब्रवीमि ते ॥ ४८ ॥ एवमेतत्करिष्यामि यथा तात त्वमात्थ माम् । यच्चान्यदपि शक्ष्यामि तत्करिष्यामि ते प्रियम् ॥ ४९ ॥ यच्च दुःखं त्वया प्राप्तं द्यूते वै कृष्णया सह । परुषाणि च वाक्यानि सूतपुत्रकृतानि वै ॥ ५० ॥ जटासुरात्परिक्लेशः कीचकाच्च महाद्युते । द्रौपद्याधिगतं सर्वं दमयन्त्या यथाऽशुभम् ॥ ५१ ॥ सर्वं दुःखमिदं वीर सुखोदर्कं भविष्यति । नात्र मन्युस्त्वया कार्यो विधिर्हि बलवत्तरः ॥ ५२ ॥ दुःखानि हि महात्मानः प्राप्नुवन्ति युधिष्ठिर । दैव-

---

कल्याणहो, जो प्रसन्न चित्तहो कर्ण के समागम में उनका तेज नाशनेके लिये आपने हमसे कहा । ४६ । तो हम अवश्य संग्राममें कर्ण के सारथि होंगे, क्योंकि कर्ण हमको नित्य वासुदेवही के समान मानते हैं । ४७ । उसका उपाय यह है कि युद्धके समय हम उनको अहित व निन्दाही वचन कहा करेंगे जिससे उनका तेज व अहङ्कार दोनों नष्ट होजायँगे और उनको तुम सुख पूर्वक मारलोगे यह हम आप से सत्यही कहते हैं इसमें अन्तर न पड़ेगा । ४८ । व इसके अतिरिक्त उस समय जो कुछ और भी हमारे करने के योग्य तुम्हारा प्रिय होगा, हम करते रहेंगे । ४९ । व जो दुःख द्रौपदी सहित आपने द्यूत खेलने में पाया व कर्णके कहेहुये कठोर वाक्य सहे । ५० । व जटासुर से बड़ा क्लेशपाया तथा कीचक से भी, ये सब द्रौपदी को हुये जैसे दमयन्ती नलकी रानी ने पड़े अशुभसहे वैसेही द्रौपदीको पड़े । ५१ । हे वीर अब सबदुःख सुख समूहहो जायँगे इस विषयमें आप उदास न हों क्योंकि भाग्य बड़ी बलवतीहै चाहे जो करावे ५२

---

pleased to do this although it is below your dignity, uncle " " May you be blessed ! " said Shalya in reply, " I shall drive Karan's chariot, if you want me to do so to lessen his glory, for he respects me like Shree Krishna. To destroy his glory and self control at the time of battle I shall continually give him bad advice and shall dispraise him, so that he will fall an easy prey I shall do this, you may rely on my word. I shall do besides this other things which be in my power for your sake 19. Your sufferings and those of Draupadi at the gambling match, the harsh words of Karan, the wrongs done by Jatasura and Kichak which Draupadi bore like Damayanti the queen of Nal, will be changed into happiness. You must feel no anxiety on that account. Fate is very powerful and will

रयिांइदु खानि मातानिजगतीपते ॥ ५३ ॥ इन्द्रेणशूयतेराजन सभार्य्येण महात्मना अनुभूतंमहद्दुःखं देवराजेनभारत ॥ ५४ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्व्वणि सेनोद्योगपर्व्वणि शल्यवाक्ये अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

युधिष्ठिर उवाच । कथमिन्द्रेणराजेन्द्र सभार्य्येणमहात्मना । दुःखंप्राप्तंपरं घोरमेतदिच्छामिवेदितुम् ॥ १ ॥ शल्य उवाच । शृणुराजन् पुराट्टत्तमितिहासं पुरातनम् । सभार्य्येणयथाप्राप्तं दुःखमिन्द्रेणभारत ॥२॥ त्वष्टाप्रजापतिर्ह्यासीद्देवश्रेष्ठो महातपाः । सपुत्रंवै त्रिशिरसमिन्द्रद्रोहात् किलाऽसृजत् ॥ ३ ॥ ऐन्द्रंमप्रार्थयत्स्थानं विश्वरूपोमहाद्युतिः । तैस्त्रिभिर्वदनैर्घोरैः सूर्य्येन्दुज्वलनोपमैः ॥ ४ ॥ वेदानेकेनसोऽधीते सुरामेकेनचापिवत् । एकेनचदिशःसर्व्वाः पिबन्निवनिरीक्षते ॥ ५ ॥ सतपस्वी मृदुर्दान्तो

हे महाराज महात्माओं और देवताओं कोभी दुःखहोता है औरोंकी क्या गिनती है । हे युधिष्ठिर शचिसहित इन्द्रने भी महा दुःख उठाया है । ५४ ।

अध्याय ९ ॥

यहसुन युधिष्ठिरजी बोले कि इन्द्राणी सहित महात्मा इन्द्रजीने कैसे घोरदुःख पाया यह हमारे जानने की इच्छा है । १ । राजाशल्य बोले, हे राजन् सुनिये पूर्व समयका एक पुराना इतिहास है जिसमें इन्द्राणी समेत इन्द्रके घोर दुःख पानेके समाचार प्रसिद्धहैं।२। एक महातपस्वी देवताओं में श्रेष्ठ त्वष्टानाम प्रजापति हुये उन्होंने इन्द्रके मारनेकी इच्छा से एक पुत्र उत्पन्न किया उसके तीन शिरथे व विश्वरूप उसका नाम था ।३। उस महा-तेजस्वी विश्वरूप ने इन्द्रका स्थान लेनाचाहा, व उनके सूर्य्य चन्द्रमा अग्निके समान घोर जो तीन मुखथे। ४ । उनमें से एक मुख से तो वे वेदपढ़ते थे, एकसे मदिरापान करते एकसे सब दिशाओं को पीतेही से देखा करते थे । ५ । वे कोमल स्वभाव इन्द्रियों को

have her sway. Even gods and great men have suffered wrongs, what to say of the common people. Even Indra and his queen have undergone many hardships." 54.

CHAPTER IX

"I wish to know," said Yudhishthir, "how Indra and his queen fell into difficulties." "The account of the troubles of Indra and Indrani which I am about to relate to you," said Shalya, "is an old historical fact. Twoshta the *prajapati* was a great ascetic among gods. To destroy Indra, he produced a son named Vishwarup having three heads. Vishwarup of great glory wanted to become Indra. With one of his three mouths, glorious like the sun, the moon and fire, he used to read the Vedas, he drank with the second and with the third he gazed in all directions as if he would swallow

धर्मे तपसि चोद्यतः । तपश्चचार परमं सुदुश्चरमरिन्दम ॥ ६ ॥ तस्य दृष्ट्वा तपोवीर्यं सत्त्वं चामिततेजसः । विषादमगमच्छक्र इन्द्रोऽयं मा भवेदिति ॥ ७ ॥ कथं सज्जेच्च भोगेषु न च तप्येन्महत्तपः । विवर्द्धमानस्त्रिशिराः सर्वं हि भुवनं ग्रसेत् ॥ ८ ॥ इति सञ्चिन्त्य बहुधा बुद्धिमान्भरतर्षभ । आज्ञापयत् सोऽप्सरसस्त्वष्टृपुत्रप्रलोभने ॥ ९ ॥ यथा स सज्जेत्त्रिशिराः कामभोगेषु वै भृशम् । क्षिप्रं कुरुत गच्छध्वं प्रलोभयत माचिरम् ॥ १० ॥ शृङ्गारवेषाः सुश्रोण्यो हारैर्युक्ता मनोहरैः । हावभावसमायुक्ताः सर्वाः सौन्दर्यशोभिताः ॥ ११ ॥ प्रलोभयत भद्रं वः शमयध्वं भयं मम । अस्वस्थं ह्यात्मनात्मानं लक्षयामि वराङ्गनाः । भयं तन्मे महाघोरं क्षिप्रं नाशयताबलाः ॥ १२ ॥ अप्सरस ऊचुः । तथा यत्नं करिष्यामः शक्र तस्य प्रलोभने । यथा नावाप्स्यसि भयं तस्माद्बलनिषूदन ॥ १३ ॥ निर्दहन्निव चक्षुर्भ्यां योऽसावास्ते तपोनिधिः । तं प्रलोभयितुं देव गच्छामः सहिता वयम् ॥ १४ ॥ यतिष्या

दमन किये महातपस्वी धर्म व तपस्या करने में उद्यत हो अति दुष्कर व महातीव्र तपस्या करनेलगे । ६ । उन अमित तेजस्वी विश्वरूपजी का तपोबल सत्त्व देख इन्द्र को बड़ा विषाद हुआ कि कहीं ये इन्द्र न होजावें । ७ । अब कौन उपाय कियाजाय जिससे ये भोग विलास करनेलगें व महातपस्या न करें क्योंकि जो ये बढ़ेंगे तो तीनों भुवनों को भक्षलेंगे । ८ । यह बात बहुत प्रकार से विचार बुद्धिमान् जो थे इन्द्र उन्होंने विश्वरूप के लुभाने के लिये अप्सराओं को आज्ञादी ९ कि जिससे विश्वरूप काम भोगों में लगें वह शीघ्रही करो अभी जाकर उनको लुभाओ विलम्ब न हो । १० । मोती हीरादि मणियों के हार धारण किये व नानाप्रकार कि उत्तम वेष बना शृंगारकर अपने सब अंग दिखाओ । ११ । व हावभावादि जो तुम लोगों के कटाक्षादि हैं उन से व अपनी सुंदरताई से जा लोग लुभाओ करो व हमारा भय मिटाओ । १२ । हे प्रियो, हम अपने को बहुत घबराये हुये देखते हैं इस से यह महाघोरभय बहुतही शीघ्र नाश करो १३ यह सुन अप्सराओं ने इन्द्रजी उन के लुभाने में हमलोग ऐसा यत्नकरेंगी जिससे

them all. The great ascetic having control over his delicate organs and engaged in doing asceticism and dharm, began to perform very severe penance. Indra was much afraid to see the power of the penances of exceedingly glorious Vishwarup and was afraid for his post. He thought of how to turn his mind from asceticism to worldly enjoyments Indra was afraid on the probability of his becoming ruler of all the directions. After much thinking he ordered the Apsaras to entice Vishwarup into worldly enjoyments and enjoined them to go to him at once and to do all that lay in their power. 10. He ordered them to decorate themselves with garlands of diamonds and other precious stones and valuable clothes and to show him all the parts of their body with coquetry and bewitching manners. He

मोक्षं कर्तुं व्यपनेतुं च ते भयम् । इन्द्रेणाप्सरसस्त्वनुज्ञाता जग्मुस्त्रिशिरसोऽन्तिकम् । तत्र ता विविधैर्भावैर्लोभयन्त्यो वराङ्गनाः ॥ १५ ॥ नित्यं संदर्शयामासुस्तथैवाङ्गेषु सौष्ठवम् । नाभ्यगच्छत् प्रहर्षं ताः स पश्यन् सुमहातपाः ॥ १६ ॥ इन्द्रियाणि वशे कृत्वा पूर्वसागरसन्निभः । तास्तु यत्नं परं कृत्वा पुनः शक्रमुपस्थिताः ॥ १७ ॥ कृताञ्जलिपुटाः सर्वा देवराजमथाब्रुवन् । न स शक्यः सुदुर्धर्षो धैर्याच्चालयितुं प्रभो ॥ १८ ॥ यत्ते कार्यं महाभाग क्रियतां तदनन्तरम् । सम्पूज्याप्सरसः शक्रो विसृज्य च महामतिः ॥ १९ ॥ चिन्तयामास तस्यैव वधोपायं युधिष्ठिर । स तूष्णीं चिन्तयन् वीरो देवराजः प्रतापवान् ॥ २० ॥ विनिश्चितमतिः श्रीमान् वधे त्रिशिरसोऽभवत् । वज्रमस्य क्षिपाम्यद्य स क्षिप्रं न भविष्यति ॥ २१ ॥ शत्रुः प्रवृद्धो नोपेक्ष्यो दुर्बलोऽपि बलीयसा । शास्त्रबुद्ध्या

उन से कुछभी आपभय न पावेंगे । १४ । यद्यपि वे तपस्वी जानों नेत्रोंसे भस्मही करते से रहते हैं तथापि उनको लोभाने के लिये हमसब मिलकर जावेंगी । १५ । व अपने वशमें करनेका यत्न करेंगी तथा आपका भय दूर करने में भी यत्न करेंगी, इस प्रकार इन्द्रजी की आज्ञापाय वे विश्वरूपजी के समीप गईं व वहां अप्सराओं ने विविध प्रकार के भावों से प्रलोभित किया । १६ । प्रथम जाकर नाचने गाने व अपने अंगों की सुन्दरता दिखानेलगीं, परन्तु उन महा तपस्वीने हर्षपूर्वक उनकी ओर देखाही नहीं । १७ । अपनी इन्द्रियों को वशमें कर पूर्व देशा के समुद्र के समान निश्चल बैठेरहे, जबकि वे बेचारी बड़ेयत्नकर जब थकगईं तो फिर इन्द्रके पासआईं ।१८। व हाथजोड़ सबकी सब देवराज से बोलीं, कि हे महाराज, वे ऐसे दुर्द्धर्ष हैं कि हमलोग उनको धैर्य से नहीं डिगासकीं । १९ । अब इसके पीछे आपको जो करनाहो कीजिये, इतना सुन अप्सराओंको तो बड़ाईकर विदाकिया । २० । व आप उनके मारनेका उपाय विचारनेलगे उस समय महाप्रतापी इन्द्रजी चुपचाप बैठे चिंतवन करतेरहे । २१ । इस त-

said that he was much excited and afraid and requested them to relieve him from the great danger. The apsaras promised to entrap Vishwarup by all means to remove Indra's fear and to go there together in spite of the fact that the rishi's eyes looked as though they would burn all. Thus ordered by Indra they went near Vishwarup and tempted him with their coquetry. They danced, sang and displayed the beauty of their persons before him, but he paid no heed and keeping his organs under control he remained steady like the eastern sea. When the apsaras had tried their best, they came back to Indra and with clasped hands said, "He is too resolute to be moved by our efforts, you may do what you like." At this Indra sent away the apsaras with praises. *20. Sitting silently for some time Indra thought of various ways to make away with Vishwarup*

रिनाशंप्रतिबुद्धिंचक्रेदृढाम् ॥ २२ ॥ अथवैश्वानरनिभं घोररूपंभयावहम्। मुमोचवज्रंसंक्रुद्धःशक्रस्त्रिशिरसंप्रति ॥ २३ ॥ सपपातहतस्तेनवज्रेणदृढमाहतः। पर्वतस्येवशिखरं प्रणुन्नंमेदिनीतले ॥ २४ ॥ तन्तुवज्रहतंदृष्ट्वाशयानमचलोपमम्। नशर्मलेभेदेवेन्द्रोदीपितस्तस्यतेजसा ॥ २५ ॥ हतोऽपिदीप्ततेजाः सजीवन्निवहिदृश्यते। घातितस्यशिरांस्याजौ जीवन्तीवाद्भुतानिवै ॥ २६ ॥ ततोऽतिभीतगात्रस्तुशक्र आस्तेविचारयन्। अथाजगामपरशुंस्कन्धेनादायवर्द्धकिः ॥ २७ ॥ तदरण्यं महाराज यत्रास्तेऽसौनिपातितः। सभीतस्तत्रतक्षाणं घटमानंशचीपतिः ॥ २८ ॥ अपश्यद ब्रवीच्चैनं सत्वरंपाकशासनः। क्षिप्रंछिन्धिशिरांस्यस्य कुरुष्ववचनंमम ॥ २९ ॥ तक्षोवाच। महास्कन्धोभृशंह्येष परशुर्नभविष्यति। कर्तुंचाहंनशक्ष्यामि कर्मसद्भिर्विगर्हि-

---

यह विचार यह निश्चयकिया कि अब हम विश्वरूप के ऊपर वज्र चलावें बस ये मरजावेंगे और कोईउपाय नहीं है। २२। और शास्त्रमें लिखाहै कि आपचाहे बड़ाही बलवान्हो ॥ शत्रुबहुतही दुर्बलहो पर उसकीभी उपेक्षा न करनी चाहिये इससे मरही डालना ठीकहै, बस इन्द्रने यही दृढ़ करलिया। २३। फिर अग्नि समान घोररूप अति भयंकर वज्रको विश्वरूपके ऊपर चलाया। २४। उसके लगनेसे वज्रसे भिन्न पर्वत के शृंगोंके समान विश्वरूपके शिर पृथ्वीपर गिरपड़े। २५। वज्रसे मारेहुये पर्वताकार उनको पृथ्वीपर पड़ेदेख उनके तेजसे दीपित इन्द्रको कल्याण न मिला। २६। क्योंकि वे महातेजस्वी वज्रसे मारेभी गये तिसपरभी जीतेहीसे दिखाई देतेथे, व रणमें पड़ेहुये उनके शिरभी जीतेहीसे अद्भुत दिखाई देते थे इससे अति भयभीत इन्द्र उसी स्थानपर विचार करतेहुये खड़ेथे कि। २७। उसी समय कन्धेपर कुल्हाड़ी धरे एक बढ़ई वहां आया जहां कि वनमें विश्वरूपजी मारेपड़ेथे। २८। उसे देख डरतेहुये इन्द्रने बड़ी शीघ्रतासे उस से कहा कि हमारा वचन मानो इनके शिरकाटडालो। २९।

---

and at last resolved to kill him with his *vajra* for he remembered that one ought not to spare even the weakest enemy. He hurled in anger the dreadful vajra at Vishwarup whose heads fell down on earth by the blow like mountain peaks displaced by lightning. Indra gained no peace of mind even after seeing that body huge as a mountain had fallen on ground; for the glorious rishi looked like one living even after the blow and his head were wonderful to behold. Indra was transfixed with astonishment when he saw a carpenter coming that way with his ax on the shoulder and eagerly requested him to dissever his heads. "My ax," said the carpenter, "will be broken in cutting his broad shoulder and besides, I donot like to murder a Brahman, a deed much despised by the good." "Do without fear what I tell you, said Indra." "your weapon will become

तम् ॥ ३० ॥ इन्द्र उवाच । माभैस्त्वं शीघ्रमेतद्वै कुरुष्व वचनं मम । मत्प्रसादाद्धि ते शस्त्रं वज्रकल्पं भविष्यति ॥ ३१ ॥ तक्षोवाच । कं भवन्तमहं विद्यां घोरकर्माणमद्य वै । एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं तत्त्वेन कथयस्व मे ॥ ३२ ॥ इन्द्र उवाच । अहमिन्द्रो देवराजस्तक्षन्विदितमस्तु ते । कुरुष्वैवं यथोक्तं मे तक्षन्मा त्वं विचारय ॥ ३३ ॥ तक्षोवाच । क्रूरेण नापत्रपसे कथं शक्रेह कर्मणा । ऋषिपुत्रमिमं हत्वा ब्रह्महत्याभयं न ते ॥ ३४ ॥ शक्र उवाच । पश्चाद्धर्मं चरिष्यामि पावनार्थं सुदुश्चरम् । शत्रुरेष महावीर्यो वज्रेण निहतो मया ॥ ३५ ॥ अद्यापि चाहमुद्विग्नस्तक्षन्नस्माद्बिभेमि वै । क्षिप्रं छिन्धि शिरांसि त्वं करिष्येऽनुग्रहं तव ॥ ३६ ॥ शिरः पशोस्ते दास्यन्ति भागं यज्ञेषु मानवाः । एष तेऽनुग्रहस्तक्षन् क्षि

यह सुनकर वह बोला, कि इनका बड़ाभारी कन्धा है इसके ऊपर चलाने से कुल्हाड़ी टूट-जायगी, इसके सिवाय यह महात्माओं से निन्दित ब्राह्मणका मारना कर्मभी हम नहीं करसके । ३० । ऐसा सुन इन्द्रने कहा कि तुम न डरो हमारा वचनकरो हमारे प्रसादसे तुम्हारा शस्त्र वज्रके तुल्य होजायगा टूटेगा नहीं । ३१ । तब फिर वह बढ़ई बोला, कि ऐसा घोरकर्म कराते हुये आपको हम कौन समझें यह हमसुना चाहते हैं आप निश्चय पूर्वक कहिये । ३२ । इन्द्रने कहा कि हम देवताओंके राजा इन्द्र हैं हमको तुमभी जानतेहोगे, इससे जो हम कहतेहैं करो इसमें कुछ विचार न करो । ३३ । यह सुन वह बढ़ई फिर बोला कि इन्द्र इस क्रूरकर्म के करनेसे तुमक्यों नहीं लज्जितहोते ऋषिके पुत्र को मार तुमको ब्रह्महत्या का भय क्या नहींहै । ३४ । इन्द्रने कहा कि ब्रह्महत्याका भय क्यों नहींहै हम पवित्र होनेके लिये पीछेसे बड़ादुष्कर धर्मकरेंगे, इसीसे इस महापराक्रमी शत्रुको हमने वज्रसे माराहै । ३५ । परन्तु अबभी हम उद्विग्नहैं इससे बहुत डरतेहैं, शीघ्र इस के शिर काटडालो हम तुम्हारे ऊपर अनुग्रह करेंगे । ३६ । आज से यज्ञों लोग पशुका शिर तुमको भागदेंगे यह हमने तुम्हारे ऊपर अनुग्रह किया

---

like vajra by my grace and will not break." I wish to know," said the carpenter again, "the personage intent on doing this dreadful deed." "I am Indra the king of gods," replied Indra, "known perhaps to you also. You must therefore do what I tell you." "Why are you not ashamed of doing this cruel deed, Indra !" said the carpenter, "are you not afraid of the sin of Brahmicide which you will be liable to after killing this son of the rishi?" "I am certainly afraid of the sin of killing a Brahman," replied Indra, "but I shall do severe penances afterwards and for this reason I have killed this greatest enemy of mine with vajra: I am still in doubt about his death and stand in great fear of him. Cut off his head at once and I shall do you good: people will give you the heads of animals slaughtered at sacrifices, I promise you this. Do my

मंकुरुमगमिगम् ॥ ३७ ॥ शल्य उवाच । एतच्छ्रुत्वातुतक्षास महेन्द्रवचनात्तदा । शिरांस्यथत्रिशिरसः कुठारेणाच्छिनत्तदा ॥ ३८ ॥ निकृत्तेषुततस्तेषु निष्क्रामन्नण्डजास्त्वथ । कपिञ्जलास्तित्तिराश्च कलविंकाश्चसर्वशः ॥ ३९ ॥ येनवेदानधीतेस्म पिबते सोममेवच । तस्माद्वक्त्राद्विनिश्चेरु क्षिप्रंतस्यकपिञ्जलाः ॥ ४० ॥ येनसर्वादिशो राजन् पिबन्निवनिरीक्षते । तस्माद्वक्त्राद्विनिश्चेरुस्तित्तिरास्तस्यपाण्डव ॥ ४१ ॥ यत्सुरापन्तुतस्यासीद्वक्त्रं त्रिशिरसस्तदा । कलविंकाःसमुत्पेतुः श्येनाश्चभरतर्षभ ४२ ततस्तेषुनिकृत्तेषु विज्वरोमघवानथ । जगामत्रिदिवं हृष्टस्तक्षापिस्वगृहानयौ ॥४३॥ मेनेकृतार्थमात्मान हत्वाशत्रुंसुरारिहा । त्वष्टाप्रजापतिः श्रुत्वा शक्रेणाथहतंसुतम् ।४४। क्रोधसंरक्तनयन इदंवचनमब्रवीत् । त्वष्टोवाच ॥ तप्यमानंतपोनित्यं क्षान्तंदान्तंजितेन्द्रियम् । विनापराधेनयतः पुत्रंहिंसितवान्मम ॥ ४५ ॥ तस्माच्छक्रविनाशाय

अब हमारा यह काम शीघ्रहीकरो । ३७ । शल्यजी ने युधिष्ठिरजीसे कहा कि यह सुन इन्द्रके कहनेसे विश्वरूपके शिर उस ने कुल्हाड़ीसे काटडाले । ३८ । जब वे शिर काटेगये तो उनतीनों शिरोंसे तीनप्रकारके पक्षी निकले, एक कपिञ्जल दूसरे तित्तिर तीसरे कलविंक:अर्थात् गौरेया । ३९ । जिस मुखसे विश्वरूपजी वेदपढ़ते व यज्ञकी औषधीपीते थे उस मुखसे शीघ्रही कपिञ्जलनाम पक्षी निकले । ४० । व जिस मुखसे वे सब दिशोंके पीतेहीसे देखतेथे उनके उस मुखसे तित्तिर निकले ॥ ४१ ॥ व जिस मुखसे वे मदिरा पानकरते थे उस मुखसे कलविंक व बाज निकले ॥ ४२ ॥ जब इस तरह विश्वरूपजीके शिर काटेगये तो इन्द्र विज्वरहुये व हर्षितहो स्वर्गको चलेगये और वह बढ़ईभी अपने घरको चलागया ॥ ४३ ॥ व शत्रुकोमार इन्द्रने अपनेको कृतार्थ समझा, वहां अपने पुत्रको इन्द्रसे माराहुआ सुन प्रजापति त्वष्टाने क्रोधसे नेत्रलालकर ऐसे वचनकहे कि । ४४ । नित्यतपस्या करतेहुये, सहनशील, इन्द्रियोंको दमनकिये व जितेन्द्रिय मेरे पुत्रको विना अपराध इन्द्रने मारा ॥ ४५ ॥ इस इन्द्रके मारनेके लिये

work soon" Shalya said to Yudhishthir that on hearing this he cut off the heads of Vishwarup with his ax. Three sorts of birds came out of the heads thus cut down: kapinjals came out of the mouth with which the rishi used to read the Vedas and to drink the juice at sacrifices. 40. Partridges came out of the mouth with which he looked as if he would swallow the directions and hawks came out of that mouth of his with which he used to drink wine Indra became fearless when the heads of Vishwarup were cut down and went away to paradise well pleased. The carpenter too went away to his own house. Indra was happy at the killing of the enemy On hearing of the death of his son, Twashta the Prajapati uttered these words — "Indra has killed my son who was engaged

वृत्रमुत्पादयाम्यद्य। लोका पश्यन्तुमेवीर्यं तपसश्चबलंमहत् ॥४६॥ सचपश्यतुदेवेंद्रो दुरात्मापापचेतनः। उपस्पृश्यततः क्रुद्धस्तपस्वीसुमहायशाः ४७ अग्नौहुत्वासमुत्पा द्यघोरंवृत्रमुवाचह। इंद्रशत्रोविवर्द्धस्वप्रभावात्तपसोमम ॥४८॥ सोऽवर्द्धतदिवंस्तब्ध्वा सूर्यवैश्वानरोपमः। किंकरोमीतिचोवाचकालसूर्यइवोदितः ॥४९॥ शक्रंजहीतिचाप्युक्तो जगामत्रिदिवंततः। ततोयुद्धंसमभवद्वृत्रवासवयोर्महत् ॥५०॥ संक्रुद्धयोर्महाघोरंप्रस क्तंकुरुसत्तम। ततोजग्राहदेवेन्द्रंवृत्रोवीरःशतक्रतुम् ॥५१॥ अपावृत्याक्षिपद्वक्त्रेशक्रं कोपसमन्वितः। ग्रस्तेवृत्रेणशक्रेतुसम्भ्रान्तास्त्रिदिवेश्वराः ॥५२॥ असृजंस्तेमहासत्त्वा जृम्भिकांवृत्रनाशिनीम्। विजृम्भमाणस्य ततोवृत्रस्यास्यादपावृतात् ॥५३॥ स्वान्य

हम वृत्रासुरको उत्पन्न करतेहैं, सबलोग हमारेवीर्य व तपस्याका फलदेखें ॥ ४६ ॥ और वह दुष्टात्मा पापी इन्द्रभी देखे इतनाकह आचमनकर तपस्वियों में महायशस्वी त्वष्टा क्रुद्धहो । ४७ । अग्नि में आहुतिदे अतिघोर वृत्रासुरको उत्पन्न कर ऐसा बोले कि हमारी तपस्याके प्रभावसे हे इन्द्रके शत्रु तुमबढ़ो । ४८ । ऐसा कहतेही सूर्य व अग्नि के समान तेजस्वी एकपुरुष स्वर्गको आच्छादितकर प्रलयकाल समय के सूर्यके समान उदयहो बोला. कि क्या आज्ञा होतीहै । ४९ । त्वष्टाने कहा इन्द्रको मारो जैसेही ऐसी आज्ञा पाई कि वह बलवान् सीधा स्वर्गको चला गया, व वहां वृत्रासुर व इन्द्रका बड़ा भारी समर हुआ । ५० । क्योंकि दोनों इतना क्रुद्ध हुये थे जिसका कुछ ठिकाना नहीं, तदनन्तर वृत्रासुरने इन्द्रको पकड़लिया । ५१ । व अपना मुँहफैलाकर इन्द्रको क्रोधके उठाकर डालिलया तब इन्द्रके निगलजानेपर देवतालोग बहुत व्याकुलहुये । ५२ । व अपने पराक्रमसे उन्होंने वृत्रासुरके नाशनेवाली जंभाई बनाकर छोड़ी तब वृत्रासुर जँभुवाने

---

in asceticism, peaceful, having control over his organs and sinless. I shall produce Vritrasur to kill Indra. Let all men see the power of my asceticism. Let bad-natured and sinful India too see it." Having said this, the rishi sipped water and in great anger poured libations into fire. Having produced Vritrasur from the fire, Twashta said, "Grow up by the power of my asceticism, you enemy of Indra!" At these words, a person glorious like the sun and fire, covering the sky like the sun at the time of *pralaya*, sprang up and said, "What is your order?" "Kill Indra," repled Twashta. As soon as he received this order he ascended to heaven and there a severe battle was fought between Indra and Vritrasur. 50. They were both exceedingly enraged. At last, Vritrasur

ह्यन्यभिसंक्षिप्य निष्क्रान्तोबलनाशनः ततःप्रभृतिलोकस्यजृम्भिकाप्राणसंश्रिता५४ जहृषुश्चसुराःसर्वेशक्रंदृष्ट्वाविनिःसृतम् । ततः प्रववृतेयुद्धंवृत्रवासवयोःपुनः ॥ ५५ ॥ संरब्धयोस्तदाघोरंसुचिरंभरतर्षभ । यदाव्यवर्द्धतरणेवृत्रोबलसमन्वितः ॥५६॥ त्वष्टुस्ते जोबलाविद्धस्तदाशक्रोन्यवर्तत । निवृत्तेचतदादेवा विषादमगमन्परम् ॥ ५७ ॥ समेत्यसहशक्रेणत्वष्टुस्तेजोविमोहिताः । अमन्त्रयन्तवेसर्वे मुनिभिःसहभारत ५८ ॥ किंकार्यमितिवैराजन् विचिन्त्यभयमोहिताः । जग्मुःसर्वेमहात्मानंमनोभिर्विष्णुमव्ययम् । उपविष्टामन्दराग्रे सर्वेवृत्रवधेप्सवः ५९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि इन्द्रविजये नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

लगा उसका मुँह फैलगया । ५३ । उसीसे अपने अंगकोसिकोड़ इन्द्र बाहर निकलआये, उसी समयसे प्राणियोंको जँभाई आनेलगी उस के पूर्व न थी ।५४। इन्द्रको वृत्रासुरके मुख से निकले देख देवगण बहुत हर्षितहुये व इन्द्र वृत्रासुरका फिर बड़ाभारी युद्धहुआ ।५५। जबदोनोंने क्रोधकर बड़ाभारी युद्ध कियातो त्वष्टाके तेजके बलसे महाबलवान वृत्रासुर रण में बहुत बढ़ा ॥ ५६ ॥ जब उसको अत्यन्त बढ़ा देखा तो इन्द्र लौटखड़ेहुये जाना कि हम इससे नहीं जीतसके जबइन्द्र लौटआये तो देवताओं ने बड़ा विषाद किया । ५७ । फिर इन्द्रको संगले सबने ऋषियों से सम्मतिली । ५८ । तत्पश्चात् देवताओं ने सोचा कि क्या करना चाहिये और वृत्रासुर के नाशके लिये सब मिलकर विष्णुभगवान् के पासगये और इन्द्रादि मन्दर पर्वत के निकट पहुँचकर अनेक प्रकार से स्तुति करने लगे ॥ ५९ ॥

---

captured Indra and threw him down into his large, gaping mouth. The gods were much frightened to see Indra swallowed by him and let loose the Yawn to destroy him. Vritrasur began to yawn with his mouth opened wide and Indra having contracted his own body came out through it. It is from that time that people yawn. The gods were pleased to see Indra released from the mouth of Vritrasur and there was again a great war between the two. But during that fight Vritrasur grew larger and Indra found himself unable to withstand him. So to the great grief of the gods he withdrew from battle. The gods, headed by Indra, took counsel of the rishis as to how they should behave. Wishing to destroy Vritrasur they all sought Vishnu near Mandar hill and there they began to praise him. 60

इन्द्र उवाच । सर्वंव्याप्तमिदंदेवा वृत्रेणजगदव्ययम् । नह्यस्यसदृशं किञ्चित् प्रति घाताययद्भवेत् ॥ १ ॥ समर्थोह्यभवंपूर्वं मसमर्थोऽस्मिसाम्प्रतम् । कथंनुकार्यंभद्रं वो दुर्द्धर्षःसहिमेमतः ॥ २ ॥ तेजस्वीचमहात्माच युद्धेचामितविक्रमः । ग्रसेत्त्रिभुवनंसर्वं सदेवासुरमानुषम् ॥ ३ ॥ तस्माद्विनिश्चयमिमं शृणुध्वंत्रिदिवौकसः । विष्णोःक्षयमु- पागम्य समेत्यचमहात्मना ॥ ४ ॥ तेनसंमन्त्र्य वेत्स्यामो वधोपायंदुरात्मनः । शल्य उवाच । एवमुक्तेमघवता देवाःसर्षिगणास्तदा । शरण्यंशरणंदेवं जग्मुर्विष्णुंमहाबल म् ॥ ५ ॥ ऊचुश्चसर्वेदेवेशंविष्णुं वृत्रभयार्दिताः । त्वयालोकास्त्रयः क्रान्तास्त्रिभिर्वि- क्रमणैःपुरा ॥ ६ ॥ अमृतंचाहृतं विष्णो दैत्याश्चनिहतारणे । बलिंबध्वामहादैत्यं शक्रोदेवाधिपःकृतः ॥ ७ ॥ त्वंप्रभुः सर्वदेवानां त्वयासर्वमिदंततम् । त्वंहिदेवो महादेवः सर्वलोकनमस्कृतः ॥ ८ ॥ गतिर्भवत्वं देवानां सेन्द्राणाममरोत्तम ।

अध्याय १० ॥

इन्द्रजी देवताओंसे बोले हे देवगण, सब यह जगत वृत्रासुर से व्याप्त है, ऐसा कुछ पदार्थ नहीं दिखाई देता जो वधके नाशके लिये हो। १ । हम प्रथम उससे लड़नेमें समर्थ हुवेथे परन्तु अब असमर्थ हैं, कहो अब कैसे कल्याणहो क्योंकि वह तुमलोगों को बड़ादुर्द्धर्ष है ।२। देखो वह बड़ातेजस्वी, महात्मा व युद्धमें देवता मनुष्यसहित तीनों लोकमसलेगा ।३। इससे हे देवगण इस विषयमें यह निश्चय किया जाता है कि चलो श्रीविष्णुमहात्माके स्थानपर चलें ।४। व उनसे सम्मतकर इस दुष्टात्माके वधका उपायजानें शल्यराज बोले कि ऐसाकह ऋषियोंसहित सब देवतालोग, शरणागत वत्सल महाबली श्री विष्णु भगवान्की शरणको गये ।५। व वृत्रासुर के भयसे पीड़ित वे लोग सब देवता- ओंके स्वामी विष्णुजी से बोले, कि हे भगवान् आगे तुमने तीनोंलोक अपने विक्रम से दबालिया ६ व अमृत ले देवोंको पिलाया व रणमें दैत्योंको मारा, व महादैत्य बलिको बांध इन्द्रको देवताओंका स्वामी बनाया ७ सबदेवोंके प्रभु आपहीहो, व यह संसार

CHAPTER X

"Vritrasur is pervading all this world," said Indra to the gods, "I can find no means for his destruction. Formerly we could stand against him in fight, but now we are powerless. How can you gain victory over him, for he is stronger than you?" See, he is very glorious and great and will vanquish the gods and the men of the three worlds. I have therefore resolved to go to Vishnu and to devise the means of the destruction of this bad natured demon in consultation with him." Having come to this resolution the gods and the rishis went to Vishnu the refuge of the refugees and possessor of great strength. Terrified with the fear of Vritrasur, they said to Vishnu the lord of all the gods, "Formerly, you had

जगद्व्याप्तमिदंसर्वं वृत्रेणासुरसूदन ॥ ९ ॥ विष्णुरुवाच ॥ अवश्यंकरणीयंमे भवतांहितमुत्तमम् । तस्मादुपायंवक्ष्यामि यथासौनभविष्यति ॥ १० ॥ गच्छध्वं सर्षिगन्धर्वा यत्रासौविश्वरूपधृक् । सामतस्यप्रयुञ्जध्वं ततएनं विजेष्यथ ॥ ११ ॥ भविष्यतिजयोदेवाः शक्रस्यममतेजसा । अदृश्यश्चप्रवेक्ष्यामि वज्रेह्यस्यायुधोत्तमे १२ गच्छध्वमृषिभिःसार्द्धं गन्धर्वैश्चसुरोत्तमाः । वृत्रस्यसहशक्रेण सन्धिंकुरुतमाचिरम् १३॥ शल्य उवाच । एवमुक्तेतुदेवेन ऋषयस्त्रिदशास्तदा । ययुःसमेत्यसहिताः शक्रंकृत्वा पुरःसरम् ॥ १४ ॥ समीपमेत्यचयदा सर्वएवमहौजसः । तंतेजसाप्रज्वलितं प्रतप-न्तंदिशोदश ॥ १५ ॥ ग्रसन्तमिवलोकांस्त्रीन् सूर्याचन्द्रमसौ यथा । ददृशुस्तेततो वृत्रंशक्रेणसह देवताः ॥ १६ ॥ ऋषयोऽथततोऽभ्येत्य वृत्रमूचुःप्रियंवचः । व्याप्तं जगदिदंसर्वं तेजसातवदुर्जय ॥ १७ ॥ नचशक्नोपि निर्ज्जेतुं वासवंबलिनाम्वर ।

आपही में विस्तृत है, व आपदेव महादेवहैं व आपहीको सब लोक नमस्कार करते हैं ८ हे देवोत्तम इन्द्र सहित सबदेवताओं की गति आपहो, हे दैत्यसूदन वृत्रासुरसे यह सब जगत् व्याप्त है ।९। इतनासुन श्री विष्णु भगवान् बोले, आपलोगोंका उत्तम हित अवश्य हमको करना है, इससे ऐसाउपाय बतावेंगे जिसमें वह न बचेगा नाशही होजायगा १० अब ऋषि देवता सबजने वहां जाय जहां वह विश्व भरकारूप धारे है, उससे सम्मत करो फिर उसे जीतभी लेगे ११ हे देवताओ हमारे तेजसे देवराजही की जयहोगी क्यों कि हम अदृश्यहो इन्द्रके उत्तम आयुधमें प्रवेश करें इससे देवताओं ऋषियों व गन्धर्वों के संगजाओ वृत्रासुरका व इंद्रका मिलाप कराओ १३ शल्यराजा बोले कि जब श्री भगवान् श्री ने ऐसा कहा तो सब देवगण व ऋषिगण इन्द्रको आगेकर चले १४ व जाय २ महा पराक्रमी सब देवताओं उसके समीप पहुँचे, तेजसे प्रज्वलित दशोदिशों को तपाते हुये १५ व तीनलोकोंको ग्रसतेहुये सूर्य चंद्रमा के समान प्रकाशित वृत्रासुर को इन्द्रादि देवोंने देखा १६ व ऋषिलोगोंने वृत्रासुर के समीप आकर कहा हे दुर्जय

subdued all the three worlds by your prowess and made the gods to drink nectar. You killed the daityas in battle and having bound Bali the greatest of Daityas, made Indra the king of gods. You are the lord of all the gods and this world rests in you. You are Mahadeva to whom all the creatures bow. Best of gods! you are the refuge of all the gods as well as of Indra. Destroyer of daityas! Vritrasur has pervaded over all the world." 10 "I am intent on doing good to you," said Vishnu, "I shall point you out the way of killing him! All the rishis and gods may now go to Vritrasur and make peace with him. Indra will conquer him by my grace; for I shall enter unseen into the good weapon of Indra. Let the gods go in company with the rishis and gandharvas and let them

युध्यतोश्चापिवांकालो व्यतीतःसुमहानिह ॥ १८ ॥ पीड्यन्तेचप्रजाःसर्वाः सदेवा सुरमानुषाः । सख्यंभवतुतेन्द्रेण शक्रेणसहनित्यदा ॥ १९ ॥ अवाप्स्यसिसुखंत्वञ्च शक्रलोकांश्चशाश्वतान् । ऋषिवाक्यंनिशम्याथ वृत्रःसुमहाबलः ॥ २० ॥ उवाच तान्प्रणिपत्यैव प्रणम्यशिरसासुरः । सर्वेयूयंमहाभागा गन्धर्वाश्चैवसर्वशः ॥ २१ ॥ यद्ब्रूथतच्छ्रुतंसर्वंममापि शृणुतानघाः । सन्धिः कथंवैभविता मममशक्रस्यचोभयोः । तेजसोर्हिद्वयोर्देवाः सख्यंवैभविताकथम् ॥ २२ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ सकृत्सतांसङ्गतं लिप्सितव्यं ततःपरम्भविताभव्यमेव । नातिक्रमेत्सत्पुरुषेणसङ्गतं तस्मात्सतांसङ्गतं लिप्सितव्यम् ॥ २३ ॥ दृढंसतांसङ्गतंचापिनित्यं ब्रूयाच्चार्थंह्यर्थकृच्छ्रेषु धीरः । महार्थवत्सत्पुरुषेणसङ्गतं तस्मात्सन्तं नजिघांसेतधीरः ॥ २४ ॥ इन्द्रःसतांसम्मतश्च

तुम्हारे तेजसे तीनोंलोक व्याप्त हैं १७ परन्तु बड़ाभारी समय बीतगया तुम इन्द्रसे नहीं जीतसके १८ इस तुम्हारी उनकी लड़ाई में देवता दैत्य मनुष्य सब पीड़ितहोते हैं इससे अब तुम्हारी व इन्द्रकी मैत्रीहोजाय १९ इस मैत्री में तुम सुखभी पावोगे व इन्द्रलोकभी पावोगे ऋषियों के वचन सुन महाबली वृत्र सुर । २० । उन ऋषियोंको प्रणामकर विनय पूर्वक बोला, कि आप लोग व सब गन्धर्व लोगों ने , जो कहा वह हमने सबसुना अब हमाराभी वचन सुनो मेरा हमारा व इन्द्र का मिलाप कैसेहोगा क्योंकि वे भी तेजस्वी ठहरे व हमभी फिरदो तेजस्वियों का कहीं मिलाप होता है । २२ । इतना सुन ऋषिलोग बोले कि एक बारभी सज्जनोंकी सङ्गति करनी चाहिये, उसके करने से कल्याण होजाताहै इससे सत्पुरुषकी सङ्गति का उल्लङ्घन न करना चाहिये, बस यह सत्पुरुषोंकीही संगति है अवश्य कीजिये । २३ । व सज्जनोंकी संगति दृढ़ व सत्य होती है जहां अर्थ देने में कष्टहो वह सज्जनोंकी संगतिही से कार्य सिद्धि होती है

bring about peace between Indra and Vritrasur" Shalya says that on *hearing Vishnu's advice, the gods and rishis, led by Indra, went* back and saw Vritrasur glorious like the sun or the moon in possession of the three worlds. The rishis went to him and said, "You are pervading throughout the three worlds, but the hard times are gone by and you could not vanquish Indra The gods as well as the daityas and men are sore in trouble on account of your fighting with Indra and therefore we request you to make peace with him. 20 You will gain happiness as well as the *kingdom of Indra* by peace." On hearing the above, Vritrasur bowed down to the rishis and humbly said, "I have heard what you and the gandharvas have said and I say in reply that Indra and I being so glorious and ambitious cannot remain at peace with each other" "The meeting of great men," said the rishis, "is always advantageous,

निवासश्च महात्मनाम् । सत्यवादीह्यनिन्द्यश्च धर्मवित्सूक्ष्मनिश्चयः ॥ २५ ॥ तेनते सहशक्रेण सन्धिर्भवतुनित्यदा । एवविश्वासमागच्छ मातेऽभूद्बुद्धिरन्यथा ॥ २६ ॥ शल्य उवाच । महर्षिवचनंश्रुत्वा तानुवाचमहाद्युतिः । अवश्यंभगवन्तोमे माननीयास्तपस्विनः ॥ २७ ॥ ब्रवीमियदहं देवास्तत्सर्वं क्रियतेयदि । ततःसर्वंकरिष्यामि यदूचुर्मांद्विजर्षभाः ॥ २८ ॥ नशुष्केणनचार्द्रेण नाश्मनानचदारुणा । नशस्त्रेणनचास्त्रेणनदिवानतथानिशि ॥ २९ ॥ वध्योभवेयविप्रेन्द्राःशक्रस्यसहदैवतैः । एवंमेरोचते सन्धि शक्रेणसहनित्यदा ॥ ३० ॥ बाढमित्येवऋषयस्तमूचुर्भरतर्षभ । एवंवृत्तेतु संधाने वृत्रःप्रमुदितोऽभवत् ॥ ३१ ॥ युक्तःसदाभवच्चापिसक्रोहर्षसमन्वितः । वृत्रस्य वधसंयुक्तानुपायाननुचिन्तयन ॥ ३२ ॥ छिद्रान्वेषीसमुद्विग्नः सदाव्सतिदेवराट् ।

सत्पुरुष का संग महाअर्थ के तुल्य होताहै, इस से धीर लोग सज्जनोंकी संगति नहीं छोड़ते । २४ । फिर इन्द्रतो सज्जनों मेंहीहैं व महात्माओं के निवासके स्थानहैं, तथा सत्यवादी अनिन्द्य, धर्मज्ञ, व सूक्ष्म विषय के निश्चय जाननेवालेहैं । २५ । इससे इन्द्रके साथ तुम्हारी बहुत दिनों के लिये मैत्री होती है, इससे हमलोगोंके कहने में विश्वास करो इसके विपरीत अपनी बुद्धि न करो । २६ । राजाशल्य बोले कि महर्षियों के वचन सुन महातेजस्वी वृत्रासुर उन लोगोंसे बोला कि आप लोग हमारे अवश्य माननीय हैं, क्योंकि तपस्वीहैं । २७ । पर हे देवताओ जो हम कहतेहैं वह कियाजायतो जो महर्षियों ने हमसे कहाहै वह हम अवश्य करें । २८ । न सूखे में न जलमें न पत्थरसे न काठसे इन्द्र और देवगण मुझको न मारसकें इसी प्रकार मेरी और इन्द्रकी सन्धयता होसकती है ऋषियों ने इस बातको स्वीकार किया और वृत्रासुर यह सुनकर अति प्रसन्न हुआ और इंद्रने अपने मन में वृत्रासुरका वध करना निश्चयकरके प्रसन्नता पूर्वक उससे मित्रताकी ।३२। तबसे इन्द्र वृत्रासुरके छिद्र निहारनेलगा कि कोनसे उपायसे इसे मारना

therefore such meeting should not be cast aside and you should try to contract friendship with the great. The friendship of great men is deep rooted and true. A thing difficult of attainment is obtained through the friendship of great men Such friendship should be deemed a great treasure and therefore wise men never let slip an opportunity for gaining it. Indra is truthful and the haven of greatness. He is of unblemished character and knows of Dharm and its subtleties. You have an opportunity of contracting a friendship of long standing with Indra and therefore you should believe us and act upon our advice" On hearing this, Vritrasur of great glory replied, "You are certainly worthy of respect because you are ascetics, but I shall act upon the advice of the rishis if the gods will consent to my conditions. 30. I shall enter into friend

सकदाचित्समुद्रान्ते तमपश्यन्महासुरम् ॥ ३३ ॥ सन्ध्याकालउपावृत्तेमुहूर्तेचातिदारुणे । ततः सञ्चिन्त्यभगवान् वरदानंमहात्मनः ॥ ३४॥ सन्ध्येयंवर्त्ततेरौद्रानरात्रिर्दिवसंनच । वृत्रश्चावश्यवध्योऽयंममसर्वहरोरिपुः ॥३५॥ यदिवृत्रंनहन्म्यद्यवञ्चयित्वामहासुरम् महाबलंमहाकायंनमेश्रेयोभविष्यति ३६ एवंसञ्चिन्तयन्नेवशक्रोविष्णुमनुस्मरन् अथफेनंतदापश्यत् समुद्रेपर्वतोपमम् ॥३७। नायंशुष्कोनचार्द्रोऽयं नचशस्त्रमिदंतथा । एनंक्षेप्स्यामिवृत्रस्य क्षणादेवनशिष्यति ॥ ३८ ॥ सवज्रमथफेनंतं क्षिप्रंवृत्रेनिसृष्टवान् प्रविश्यफेनंतंविष्णुरथ वृत्रंव्यनाशयत् ॥ ३९ ॥ निहतेतुततोवृत्रे दिशो वितिमिराभवन् । प्रववौचशिवोवायुः प्रजाश्चजहृषुस्तदा ॥ ४० ॥ ततोदेवाःसगन्धर्वा यक्षरक्षोमहोरगाः । ऋषयश्चमहेन्द्रंतमस्तुवन्विविधैःस्तवैः ॥ ४१ ॥ नमस्कृतःसर्वभूतैः सर्व

चाहिये एकदिन इन्द्रने समुद्र के किनारे उस वृत्रासुर को देखा ।३३। उस समय सन्ध्या होगईथी इससे बड़ा दारुण मुहूर्त था, जिसके पीछे इन्द्रने उसके वरदानकी ओर दृष्टि की । ३४ । कि अब सन्ध्या होगई है न रात्रि है न दिन, व वृत्रासुरभी अवश्यही बध करने के योग्य है क्योंकि हम सबोंका वैरी है । ३५ । अब महा बलवान् व महा शरीरवान् वृत्रासुर को जो आज हम नहीं मारडालेंगे तो कल्याण न होगा । ३६ । इसप्रकार चिन्तवन करते हुए इन्द्र ने श्रीविष्णुजीका स्मरणकिया कि उसीसमय समुद्र में एक पर्वताकार फेना बहुताहुआ देखा । ३७ । कहा न यह सूखा है न गीला, न कोईशस्त्र भस्त्र, इससे इसे वृत्रासुर के ऊपर फेंकें क्षणही भरमें वह मरजावेगा । ३८ । यह विचारवज्र व फेना साथही बहाकर वृत्रासुरको इंद्रने मारा बस तभी फेनके भीतर पैठ श्रीविष्णुजी ने वृत्र सुरका नाशकिया । ३९ । जब वृत्रासुर मारागयातो सब दिशों में प्रकाश होगया पवन अच्छीतरह बहनेलगे व प्रजालोग बहुत हर्षित हुये ।४०। इसके पीछे देवता गन्धर्व यक्ष राक्षस नाग व ऋषि लोग इन्द्रकी स्तुति विविध प्रकारके स्तो-

ship with Indra if he and the gods promise not to kill me during day or night, with dry and wet substances, nor with stone, wood, weapons or missiles. The rishis agreed to this proposal. Vritrasur was glad at it and Indra became his friend with a fixed resolution in his mind to kill him. From that time, Indra waited for an opportunity to destroy Vritrasur. One day he saw him sitting by the sea shore. It was a dreadful evening. Indra remembered his word of promise and found that it was neither day nor night; so he thought of killing Vritrasur his enemy and observed that he would never get a more suitable opportunity for doing so. Amidst such thoughts he remembered the words of Vishnu and saw forth with a mass of sea foam huge as a mountain. On seeing it he said to himself, "This is neither dry nor wet and it is no weapon or missile

भूरात्पत्तसान्त्वयत् । हत्वाशत्रुमहृष्टात्मा वासवःसहदैवतैः ॥ ४२ ॥ विष्णुत्रिभुवनश्रेष्ठ पूजयामासधर्मवित् । ततोहतेमहावीर्ये वृत्रेदेवभयंकरे ॥ ४३ ॥ अनृतेनाभिभूतोऽभूच्छक्रः परमदुर्मनाः । त्रैशीर्षयाभिभूतश्च सपूर्वमब्रह्महत्यया ॥ ४४ ॥ सोऽन्तमाश्रित्य लोकानां नष्टसंज्ञोविचेतन । नप्राज्ञायत देवेन्द्रस्त्वभिभूतः सकल्मषैः ॥ ४५॥ मतिच्छन्नोऽसरत्वाप्सु चेष्टमानइवोरग । ततःपनष्टेदेवेन्द्रे ब्रह्महत्याभयार्दिते ।४६। भूमि प्रध्वस्ततद्धया निर्वृक्षाशुष्ककानना । विच्छिन्नस्रोतसोनद्य सरांस्यनुदकानि च ॥ ४७ ॥ संक्षोभश्चापि सत्त्वानामनावृष्टिकृतोऽभवत् । देवाश्चापिभृशं त्रस्तास्तथा सर्वेमहर्षयः ॥ ४८ ॥ अराजकंजगत्सर्व मभिभूतमुपद्रवैः । ततोभीताभवन् देवाः

थों से करनेलगे । ४१ । जब बड़ी स्तुतिकी तो भगवान्ने सबको समझाया, व शत्रुको मार इन्द्रजी ने सबदेवों सहित । ४२ । त्रिभुवनमें श्रेष्ठ श्री विष्णु भगवान् की बड़ी पूजाकी इसके पीछे जब वृत्रासुर मारागया तो । ४३ । इन्द्रको झूठ ही ने बड़ा तिरस्कार किया, क्योंकि विश्वरूप के शिर कटवाने की ब्रह्महत्यासे । ४४ वे समुद्रमें छिपे थे फिर वृत्रासुरके मारने को निकलआये थे, इससे फिर बलीपापके मारे जाकर समुद्रमें मूर्छित होगये वहीं पता सोमझी नहींलगता । ४५ । वे जलमें पड़े सर्प समान लोटतेथे, इसप्रकार ब्रह्महत्याके भयसे जब इन्द्र गुमहोगये । ४६ । पृथ्वीपरका प्रकाश जाता रहा वृक्ष वन सब सूखे होगये, नदियों के सोते बन्द होगये तड़ाग सब सूखगये । ४७ । व जल न बरसने के कारण सबप्राणी इधर उधर घूमने मरनेलगे देवता ऋषिलोगभी अत्यन्त भयभीत हुये । ४८ । व सब जगत् राजा न होनेके कारण निरादर युक्त होगया, तब देवगण

Vritrasur will surely die if I hurl this mass over him." 40. Having come to this resolution, Indra let flow his vajra with the foam and hurled it at Vritrasur. Vishnu who was concealed within the foam, destroyed Vritrasur. At his death there was light in all the directions, the wind blew freely and the people were very glad. Gods and gandharvas, yakshes and rakshases, Nags and rishis praised Indra with various songs. Having received praises at the destruction of the enemy, Indra with the gods worshipped Vishnu. Indra was filled with remorse after the death of Vritrasur. He had hidden himself within the ocean after killing Vishwarup and had come out of it to kill Vritrasur, so he plunged again into water losing all senses, and disappeared from the eyes of all. While he thus lay like a serpent afraid of the consequences of killing a Brahmen, all light of the earth was gone, forests were dried up, springs

क्रोनोराजाभवेदिति ॥ ४९ ॥ दिविदेवर्षयश्चापि देवराजविनाकृताः । नस्मकश्चन देवानां राज्येवैकुरुतेनतिम् ॥ ५० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि वृत्रवधे इन्द्रविजयोनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

शल्यउवाच । ऋषयोऽथाब्रुवनसर्वे देवाश्चत्रिदिवेश्वराः । अयंवैनहुषःश्रीमान् देवराज्येऽभिषिच्यताम् ॥ १ ॥ तेजस्वीचयशस्वीचधार्मिकश्चैवनित्यदा । तेगत्वा त्वब्रुवन्सर्वेराजानोभवपार्थिव ॥ २ ॥ सतानुवाचनहुषोदेवानृषिगणांस्तथा । पितृभिः सहितानराजन्परीप्सन्हितमात्मनः ॥ ३ ॥ दुर्बलोऽहंनमेशक्तिर्भवतांपरिपालने ।

बहुत व्याकुलहो कहने लगे अब हमलोगोंका राजा कौनहो । ४९ । इसप्रकार स्वर्ग में सब देव बिना इन्द्रके व्याकुल हुये व बार बार कहने लगे कि हमलोगों का राजा बनने की इच्छा कोई नहीं करता । ५० ।

अध्याय ११ ॥

राजा शल्यने कहा, कि जब देवताओंनेचाहा कि कोई हम लोगोंका राजाहो तो सब ऋषियोंने कहा कि हेदेवं यक्ष किन्नर इन राजानहुषको देवताओंके राज्यपर अभिषेक करो । १ । क्योंकि ये राजा बड़े तेजस्वी यशस्वी व धर्मात्माहैं, यह विचार राजा के समीप आकर देवतादिकों ने कहा कि आप हमलोगोंके राजाहों तब देवताओं व ऋषियोंसे व पितरोंसे अपना हित चाहतेहुये राजाने कहा । ३ । कि हम दुर्बलहैं हमको आप लोगोंको परिपालन करनेकी शक्ति नहींहै, आप लोगोंका राजा बलवान् होना चाहिये

---

and rivers received no supply of water, all the living beings wandered hither and thither for want of rain and the gods and the rishis were much terrified. All the world was disheartened at the loss of its king and the gods in consternation] began to look out for a king. Thus all the gods in heaven were dissatisfied without Indra and remarked again and again that no one wished to be their king. 52.

CHAPTER XI

" While the gods were looking for a king," continued Shalya, "the rishis asked the gods, the yakshes and the kinnars to instal king Nahush as the king of gods, for they said that he was very glorious and virtuous. At this the gods went to him and requested him to be their king. But the king, wishing to gain the favour of the gods, the rishis and the pitars, said that he was weak and could not protect

बलवान्जापतेराजावलंशक्रोहिनित्यदा ॥ ४ ॥ ततस्त्वब्रुवन् सर्वे देवाऋषिपुरोगमाः अस्माकंतपसायुक्तःपाहिराज्यंत्रिविष्टपे ॥ ५ ॥ परस्परभयंघोरमस्माकंहिनसंशयः । अभिषिच्यस्वराजेन्द्रभवराजात्रिविष्टपे ॥ ६ ॥ देवदानवयक्षाणामृषीणांरक्षसांतथा पितृगन्धर्वभूतानां चक्षुर्विषयवर्तिनाम् ॥७। तेजआदास्यसेपश्यन्बलवांश्चभविष्यसि धर्मंपुरस्कृत्यसदासर्वलोकाधिपोभव ॥ ८ ॥ ब्रह्मर्षींश्चापिदेवांश्चगोपायस्वत्रिविष्टपे । अभ्यषिच्यतराजेन्द्रस्ततोराजात्रिविष्टपे ॥ ९ ॥ धर्मंपुरस्कृत्यसदासर्वलोकाधिपोऽभवत् । सुदुर्लभंवरंलब्ध्वाप्राप्यराज्यंत्रिविष्टपे ॥ १० ॥ धर्मात्मासततंभूत्वाकामात्मासमपद्यत । देवोद्यानेषुसर्वेषुनन्दनोपवनेषुच ॥ ११ ॥ कैलासेहिमवत्पृष्ठेमन्दरेश्वेतप

जो तो बल इन्द्रहीमें है तब सब देवता ऋष्यादि राजासे बोले कि आप हमलोगों के तपोयुक्त हो स्वर्ग में राजाहो पालनकरो । ५ । क्योंकि हमलोगों को परस्पर अतिघोर भयहै इससे हेराजेन्द्र तुम स्वर्गके राजाहो । ६ । देवता, दानव, यक्ष, ऋषि, राक्षस पितर, गन्धर्व भूत, व अन्यभी जो दृष्टि गोचर होतेहैं । ७ । इन लोगोंको देखतेहुये तुम तेजग्रहण करोगे तोबलवान् होजावोगे, इससे सदा धर्मपर चलतेहुयेही हमलोगों के राजा आपहों । ८ । व ब्रह्मर्षियों देवोंकी रक्षा स्वर्गमेंकरें यह कह राजानहुष को देवों ने स्वर्गके राज्यपर अभिषेक करादिया व वे सदा धर्म्म पूर्वक शुभ कर्म्म करतेहुये सब लोगों के स्वामी होगये । ९ । इसप्रकार अति दुर्लभ वरदान पाय स्वर्गमें राजाहो नित्य धर्मात्मा होकर फिर कामात्मा होगये । १० । व सब देवताओंकी फुलवाड़ियोंमें नन्दनवनके उपवनों में, हिमवान् पर्वतपर व कैलासपर, व मन्दराचल व श्वेतपर्वतपर ॥ ११ ॥ सह्य महेन्द्र, मलयाचल समुद्र व नदियों के तटपर, अप्सराओं व देवक-

---

them and that the king of gods should be powerful like Indra. At this they said that they would give him strength of their own asceticism to enable him to rule over the kingdom of heaven, because they were much afraid of each other. They said that he would gain power by the sight of gods, Danavas, yakshes, rishis, rakshases pitars, gandharvas, bhutas and others, and that he should rule over the Brahmarshis and gods justly. They installed king Nahush on the throne of heaven. So he became master of all the people and began to rule justly. Thus, after getting the kingdom of heaven while acting virtuously, he was filled with avarice 10. Roaming in the flower gardens of gods, in the orchards of Nandan forest, on the Himalyas, Kailas, Mandarachal and white mountains, over Sahya,

र्वते । सह्येमहेन्द्रेमलयेसमुद्रेषुसरित्सुच ॥ १२ ॥ अप्सरोभिःपरिवृतोदेवकन्यासमावृतः । नहुषोदेवराजोऽथक्रीडन्बहुविधंतदा ॥ १३ ॥ शृण्वन्दिव्याबहुविधाःकथाःश्रुतिमनोहराः । वादित्राणिचसर्वाणिगीतञ्चमधुरस्वनम् ॥ १४ ॥ विश्वावसुर्नारदश्चगन्धर्वाप्सरसांगणाः । ऋतवःषट्चदेवेन्द्रंमूर्तिमन्तउपस्थिताः ॥ १५ ॥ मारुतःसुरभिर्वातिमनोज्ञःसुखशीतलः । एवञ्चक्रीडतस्तस्यनहुषस्यदुरात्मनः ॥ १६ ॥ सम्प्राप्तादर्शनंदेवीशक्रस्यमहिषीप्रिया । सतांसन्दृश्यदुष्टात्माप्राहसर्वान्सभासदः ॥ १७ ॥ इन्द्रस्यमहिषीदेवी कस्मान्मांनोपतिष्ठति । अहमिन्द्रोऽस्मिदेवानां लोकानांचतथेश्वरः ॥ १८ ॥ आगच्छतुशचीमह्यं क्षिप्रमद्यनिवेशनम् । तच्छ्रुत्वादुर्मनादेवी बृहस्पतिमुवाचह ॥ १९ ॥ रक्षमांनहुषाद्ब्रह्मंस्त्वामस्मि शरणंगता । सर्वलक्षणसम्प-

---

न्याओं के बीचमें टिकेहुये । १२ । नहुष देवराज बहुत तरहसे क्रीड़ा करतेहुये, व बहुत प्रकारकी दिव्य व सुनतेहीसे मन हरनेवाली कथा सुनतेहुये । १३ । व विविध प्रकारके बाजे व मधुरस्वर सहित गान सुनते घूमने फिरनेलगे विश्वावसु नारदादि गन्धर्व तथा सब अप्सरा । १४ । व मूर्तिधारणकिये सब ऋतु उनके सामने उपस्थित रहने लगे, व शीतल मन्द सुगन्ध तीन प्रकारका मनोहरण शील पवन बहनेलगा । १५ । इसप्रकार क्रीड़ा करतेहुये महात्मा राजा नहुषकी दृष्टिमें वहीं इन्द्रकी प्राणप्रिया इन्द्राणी पड़गई । १६ । उनको देख उन दुष्टाधिराजने सभासदोंसे कहा कि इन्द्रकी रानी देवी हमारे पास क्यों नहीं आती । १७ । क्योंकि हम देवताओं के इन्द्र हैं तथा सब लोगोंके स्वामीहैं इससे इन्द्राणी आज हमारे स्थानपर जरूर आवैं । १८ । यह वार्ता सुन उदासहो इन्द्राणीजी बृहस्पतिजीसे बोलीं, हेब्रह्मन् हम आपकी शरणमें आई हैं नहुष से हमारी रक्षा कीजिये । १९ । आप हमको सब लक्षण संयुक्त कहतेहो व यहभी कि

Mahendra and Malayachal and on the banks of seas and rivers; amid apsaras and goddesses, playing various games and hearing many charming and divine stories and sweet songs, Nahush the king of gods passed a happy time. Vishwavasu, Narad and other gandharvas, all the apsaras, the seasons in a bodily form, and cold, gentle and delicious breezes went along with him. While king Nahush was thus amusing himself he caught sight of Indrani the beloved queen of Indra and being enamoured of her beauty the wicked man asked of his courtiers, "Why does Indrani not come to me? I am the Indra of gods as well as the lord of all persons, she should therefore attend on me to day." On hearing this she went to Vrihaspati and said, "I seek your refuge, Brahman, protect me from Nahush. You

मां ब्रह्मंस्त्वंमामभाषसे ॥ २० ॥ देवराजस्य दयितामत्यन्तसुखभागिनीम् । अवैध व्येनयुक्तां चाप्येकपत्नींपतिव्रताम् ॥ २१ ॥ उक्तवानसिमां पूर्वं ऋतां तांकुरुवैगिरम् । नोक्तपूर्वञ्चभगवन् मृषाते किंचिदीश्वर ॥ २२ ॥ तस्मादेतत् भवेत्सत्यं त्वयोक्तं द्विजसत्तम । बृहस्पतिरथोवाच शक्राणींभयमोहिताम् ॥ २३ ॥ यदुक्तासिमयादेवि सत्यं तद्भविताध्रुवम् । द्रक्ष्यसे देवराजानमिन्द्रं शीघ्रमिहागतम् ॥ २४ ॥ नभेतव्यञ्च नहुषात् सत्यमेतद्ब्रवीमिते । समानयिष्येशक्रेण नाचिराद्भवतीमहम् ॥ २५ ॥ अथ शुश्रावनहुषः शक्राणींशरणंगताम् । बृहस्पतेरङ्गिरसश्चुक्रोध सनृपस्तदा ॥ २६ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि इन्द्राणीभये एकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

तुम देवराजकी अत्यन्त सौभाग्यवती प्राणप्रियाहो । २० । व सदा सौभाग्यवती सती रहोगी विधवाकभी न होवोगी व पतिव्रता होनेके कारण तुम्हारेपति भी एकही रहेगा, ऐसा पूर्वसमय आपने कहाथा अब अपनी यह वाणी सत्यकीजिये । २१ । आजतक आपका वचन कभी मिथ्या नहींहुआ इससे हेद्विजसत्तम यहभी आपका वचन सत्यहो २२ ऐसी भयसे चकित इन्द्राणीजीसे बृहस्पतिजीने कहा कि हमने जैसा तुमको कहाथा तुम वैसीही रहोगी यह निश्चयहै ॥ २३ ॥ यहां आयेहुये इन्द्रजीको शीघ्रही देखोगी, नहुष से न डरो यह हम सत्यही कहतेहैं । २४ । हम तुमको बहुतशीघ्र इन्द्रसे मिलावेंगे यह बात नहुष नेभी सुनी कि इन्द्राणी बृहस्पतिजीकी शरणमें गई हैं ॥ २५ ॥ इससे अंगिराजीके पुत्र बृहस्पतिजीके ऊपर उन्होंने बड़ा क्रोध किया ॥ २६ ॥

---

have often called me the most fortunate wife of Indra and said that I am endowed with all the lucky marks 20. You have foretold that I should never be a widow and that being a chaste woman I should have only one husband. Be pleased to prove your prediction true. Your words can not be false as you have never told a lie." "It will be as I have predicted," said Vrihaspati to the distressed Indrani, "You will soon see your husband again You need have no fear from Nahush. Rely on my words. I shall soon arrange your meeting with Indra" Nahush heard that Indrani had sought the protection of Vrihaspati and he was very angry with Vrihaspati the son of Angira. 26.



शल्य उवाच । क्रुद्धंतुनहुषंदृष्ट्वा देवाऋषिपुरोगमाः । अब्रुवन्देवराजानं नहुषं घोरदर्शनम् ॥ १ ॥ देवराज जहिक्रोधं त्वयिक्रुद्धेजगद्विभो । त्रस्तंसासुरगन्धर्वं सकिन्नरमहोरगम् ॥ २ ॥ जहिक्रोधमिमंसाधो नक्रुप्यन्तित्वद्विधाः । परस्यपत्नीसादेवीप्रसीदस्वसुरेश्वर ॥ ३ ॥ निवर्तयमनःपापात् परदाराभिमर्षणात् । देवराजोऽसिभद्रं ते प्रजाधर्मेणपालय ॥ ४ ॥ एवमुक्तोनजग्राह तद्वचःकाममोहितः । अथदेवानुवाचेदमिन्द्रं प्रतिसुराधिपः ॥ ५ ॥ अहल्याधर्षिता पूर्वमृषिपत्नीयशस्विनी । जीवतोभर्तुरिन्द्रेण सवःकिंननिवारितः ॥ ६ ॥ बहूनिचनृशंसानि कृतानीन्द्रेणवैपुरा । वैधर्म्याण्युपाधाश्चैवसवः किंननिवारितः ॥ ७ ॥ उपातिष्ठतुदेवीमा मेतदस्याहितंपरम् । युष्मा

अध्याय १२ ॥

राजा शल्य बोले कि नहुषको क्रोध किये देख ऋष्यादि देवों ने अतिघोर दर्शन नहुष देवराज से बोले कि । १ । हे देवराज आपक्रोध न करें क्योंकि आप के क्रोध करने से देवता गन्धर्व दानव किन्नर नाग सहित सब जगत् नष्ट होजायगा । २ । आप क्रोध मिटावें आप सदृश लोग कोप नहीं करते, और प्रसन्न हों इन्द्राणी तो पराई स्त्री है । ३ । इस से परदारागमन रूप महा पापसे अपना मन लौटाइये तुम्हारा कल्याण हो तुम देवराज हो प्रजाओं को धर्म से पालन करो । ४ । ऐसा कहेभी गये पर काम से मोहित नहुषने देवादिकों का वचन न माना वरन इन्द्र के ऊपर क्रोधकर यह कहा कि । ५ । पूर्व समय में महा यशस्विनी ऋषि की पत्नी अहल्या के संग जब इन्द्रने उस के पति गौतमजी की विद्यमानताही में भोग किया था तब आप लोगों ने क्यों नहींरोका । ६ । इस के सिवाय इन्द्र ने औरभी क्रूर कर्म पूर्वकाल में किये हैं जैसे विश्वरूप को मारना व वृत्रासुर से मैत्रीकर छलसे उसका मारना आदि, फिर तब आप लोगों ने क्यों नहीं उसको रोका । ७ । यह इन्द्राणी हमारे पास आवें इसी में उनका

CHAPTER XII

The rishis and gods seeing the dreadful Nahush in a state of anger said to him, " Be not angry king of gods ! Your anger will destroy all the world with its gods, gandharavas, Danavas, kinnara and nagas ! Be pleased to subdue your anger. People like you never indulge in anger. Indrani is another's wife; adultery is a great sin, you should therefore think no more of her. May you be blessed ! Being the king of gods you should rule your subjects justly." But in spite of the entreaties of the gods, Nahush did not give up the idea of possessing her and being infatuated with love he said to them in reply, " Why did you not prohibit Indra in former days when he committed adultery with Ahilya the wife of Gautam rishi during the lifetime of her husband. Besides this he committed

फन्चसद्यः देवाः शिवमेवभविष्यति ॥ ८ ॥ देवा ऊचुः । इन्द्राणीमानयिष्यामो यथेच्छसि दिवस्पते । जहिक्रोधमिमंवीर प्रीतोभवसुरेश्वर ॥ ९ ॥ शल्य उवाच । इत्युक्त्वाततदादेवा ऋषिभिःसहभारत । जग्मुर्बृहस्पतिं वक्तुमिन्द्राणीं चाशुभंवचः १० जानीमःशरणंप्राप्तामिन्द्राणीं तववेश्मनि । दत्ताभयाञ्चविप्रेन्द्रत्वयादेवर्षिसत्तम ११ तेत्वांदेवाःसगन्धर्वा ऋषयश्चमहाद्युते । प्रसादयन्तिचेन्द्राणी नहुषाय प्रदीयताम् १२ इन्द्राद्विशिष्टो नहुषो देवराजोमहाद्युतिः । वृणोत्वियंवरारोहा भर्तृत्वेवरवर्णिनी १३ एवमुक्तेतुसादेवी बाष्पमुत्सृज्य सस्वनम् । उवाचरुदतीदीना बृहस्पतिमिदंवचः १४ नाहमिच्छामिनहुषं पतिंदेवर्षिसत्तम । शरणागतास्मिते ब्रह्मन्त्राहिमां महतो भयात् ॥ १५ ॥ बृहस्पतिरुवाच । शरणागतांनत्यजेयमिन्द्राणि मम निश्चयः । धर्मज्ञांसत्यशी

हित है, व हे देवगण तुम्हाराभी इसमें बड़ा हितहोगा । ८ । देवगण, बोले हे सुरराज जैसा तुम चाहते हो हम लोग इन्द्राणी को तुम्हारे पास लिवालावेंगे अब यह क्रोध मिटाइये व प्रसन्न हूजिये । ९ । शल्य राजाबोले कि नहुष से ऐसा कह सब देवता व ऋषिलोग बृहस्पतिजी व इन्द्राणीजी से शुभ वचन कहने गये । १० । व बोले हे विप्रेंद्र हम लोग जानते हैं कि इन्द्राणी आप की शरण में प्राप्त होकर आपके स्थान में हैं, व आपने उनको अभय दानभी दिया है यहभी जानते हैं । ११ । परन्तु अब सब देवता ऋषि व गन्धर्वादि आपकी प्रार्थना करते हैं कि इन्द्राणी नहुषको आपदेवें । १२ । क्योंकि महा द्युति ये देवराज नहुष इन्द्रसे विशेषहैं इस से इन्द्राणी इनको अपना पति बनावें १३ जब देवर्षियों ने ऐसा कहा तो बेचारी इन्द्राणी रोदन करती हुई बृहस्पतिजी से यह वचन बोली । १४ । हे ब्रह्मन् हम नहुषको पति बनाना नहीं चाहतीं इससे इस बड़े भारी भयसे हमारी रक्षा कीजिये । १५ । बृहस्पति बोले ! हे इन्द्राणी मेरी यह प्रतिज्ञाहै

other sins, for example, the killing of Vishwarup and the deceitful murder of Vritrasur after contracting friendship with him, but you never interfered then ! She must come to me, her safety as well as your own depends on this " On hearing this the gods promised to bring Indrani to please him and requested him to pacify his anger Having said this to Nahush, the gods and the rishis went to Vrihaspati and Indrani on a mission of peace 10 " Best of Brahmans !" said they to Vrihaspati, " We know that Indrani has sought your refuge and is living with you We also know that you have espoused her cause and yet all the rishis, gandharvas and gods pray you to give her to Nahush, for Nahush the king of gods is superior to Indra and therefore she should make him her husband " On hearing these words from the gods, Indrani addressed Vrihaspati with tears in her eyes and said, " I donot wish to make Nahush

छान्व नत्यजेयमनिन्दिते ॥ १६ ॥ नाकार्य्यंकर्त्तुमिच्छामि ब्राह्मण सन् विशेषत । ऋतधर्मासत्यशीलो जानन्धर्मानुशासनम् ॥ १७ ॥ नाहमेतत्करिष्यामि गच्छन्त्व वै सुरोत्तमा । अस्मिन्नर्थे पुरागीत ब्रह्मणा यथाविदम् ॥ १८ ॥ नतस्यबीजंरोहति रोहकालेनतस्यवर्षं वर्षतिवर्षकाले । भीतंप्रपन्नंप्रददातिशत्रवे नसत्रातारलभते त्राणमिच्छन ॥ १९ ॥ मोघमन्नंविन्दति चाप्यचेताः स्वर्गाल्लोकाद्भ्रश्यतिनष्टचेष्टः । भीत प्रपन्नंप्रददाति योवै नतस्यहव्यं प्रतिगृह्णन्ति देवा ॥ २० ॥ प्रमीयतेचास्यप्रजाह्यकाले सदा विवासं पितरोऽस्यकुर्वते । भीतंप्रपन्नंप्रददातिशत्रवे सेन्द्रादेवा प्रहरन्त्यस्यवज्रम् ॥ २१ ॥ एतदेवंविजानन्वै नदास्यामि शचीमिमाम् । इन्द्राणीं विश्रुतां लोके शक्रस्यमहिषीं प्रियाम् ॥ २२ ॥ अस्याहितंभवेद्यच्च ममचापिहितंभवेत् । क्रियतां तत्

कि हम शरणागतको नहीं छोड़ेंगे हे निंदा रहित शची तुम धर्म और सत्य से पूर्णहो इस कारण हम तुमको नहीं छोड़ेंगे मैं ब्राह्मणहूं इस कारण अधर्म नहीं करूंगा मैं धर्म जानताहूं शीलसे भराहूं इस कारण अधर्म नहीं करूंगा १७ हे देवतो तुमलोग चलेजावो मैं इन्द्राणीको नहीं दूंगा इस विषय में ब्रह्माने जो कहाहै सो सुनो जो शरणागत को शत्रुको देता है उस के बोयेहुये खेतमें अन्न नहीं उत्पन्न होता, वृष्टहोनेपर भी समय पर जल नहीं बरसता और उसको रक्षा करने का फलभी नहीं मिलता उसको अन्न बहुत नहीं मिलता और वोह मूर्ख स्वर्गलोकसे भी गिरा दियाजाताहै २० जो भयभीत शरणागत को छोड़ देता है उसका आहुति को देवता नहीं ग्रहण करते उस राजाकी प्रजा नष्ट होजाती है उस के पितृ नर्क में चलेजाते हैं और इन्द्र सहित देवता उस के ऊपर वज्र गिराते हैं। हम इन सबको जानकर शची को नहीं देंगे क्योंकि यह जगत् में इन्द्र की प्यारी की विख्यात है। जिसमें हमारा और इसका कल्याण हो सोई काम आप लोगों

---

my husband and therefore crave your protection from the great danger" "I have made it my rule never to give up a refugee of mine, how can I leave a virtuous woman like yourself? Being a Brahman I shall never do a thing unworthy of me, for I always act according to the Vedas, truthfulness is a part of my nature and I obey the dictates of dharm. You may go back, gods, I will not do this, for there is an old hymn sung by Brahma which you may hear from me, It is as follows — He who gives up in enemy seeking refuge is never happy on earth, he obtains no pleasure from air nor does water come to him in time and he never gets a protector at the time of need He does not get plenty of food and the fool is not allowed to enter paradise He who gives up a terrified refugee is undone, because gods donot accept his offerings, his subjects die away, his pitars go to hell and the gods with Indra hurl

सुरश्रेष्ठनहि दास्याम्यहंशचीम् ॥ २३ ॥ शल्य उवाच । अथदेवाःसगन्धर्वा गुरुमा हुरिदंवचः । कथंसुनीतंतु भवेन्मन्त्रयस्वबृहस्पते २४ ॥ बृहस्पतिरुवाच । नहुषं याचतांदेवी किञ्चित्कालान्तरं शुभा । इन्द्राणीहितमेतद्धि तथास्माकंभविष्यति २५॥ बहुविघ्नःसुराःकालः कालःकालंनयिष्यति । गर्वितोबलवांश्चापि नहुषोवरसंश्रयात् ॥ २६ ॥ शल्य उवाच । ततस्तेनतथोक्तेतु प्रीतादेवास्तदाब्रुवन् । ब्रह्मन्साध्विदमुक्तंते हितंसर्वदिवौकसाम् ॥ २७ ॥ एवमेतद्द्विजश्रेष्ठ देवीचेयंप्रसाद्यताम् । ततःसमस्ताइन्द्राणीं देवाश्चाग्निपुरोगमाः ॥ २८ ॥ ऊचुर्वचनमव्यग्रा लोकानां हितकाम्यया देवा ऊचुः । त्वयाजगदिदंसर्वं धृतंस्थावरजङ्गमम् । एकपत्न्यसिसत्याच गच्छस्वनहुषंप्रति ॥ २९ ॥ क्षिप्रंत्वामभिकामश्च विनशिष्यतिपापकृत् । नहुषोदेविशक्रश्च सुरैश्वर्यमवाप्स्यति ॥ ३० ॥ एवंविनिश्चयं कृत्वा इन्द्राणीकार्यसिद्धये । अभ्यगच्छत

को करना उचित है हम शची को नहीं देंगे २३ शल्य बोले बृहस्पति के ऐसे वचन सुन कर सब देवता ऋषि और गन्धर्व कहने लगे २४ हे बृहस्पति ? अब किस प्रकार से कल्याण होगा सो कहो । बृहस्पति बोले कुछ समय के लिये नहुष से इन्द्राणी को मांगना उचित है इसमें हमारा तुम्हारा और इन्द्राणी का कल्याण है । हे देवतो फिर और कुछ विघ्न पड़ जायगा इस समय बलिके नहुष बहुत अभिमानी और बलवान् होगयाहै २६ शल्यबोले बृहस्पति के वचन सुन सब देवता प्रसन्नहुये और कहने लगे कि हे ब्रह्मन् आपने बहुत ठीक कहा ऐसा करने से सब देवताओं का कल्याण होगा है ब्राह्मण श्रेष्ठ ऐसाही करनेसे इन्द्राणीको प्रसन्न करनाचाहिये अनन्तर अग्नि आदिक देवताओंने लोक के कल्याण के हेतु इन्द्राणी से कहने लगे । देवता बोले हे देवि । तुम्हारे सत्य से यह सब जगत् स्थिर है तुम पतिव्रता धर्म से भरी हो तुम नहुष के पास जाओ वह इस समय देवराजेन्द्र है तुमको प्राप्त करतेही उसका नाश होजायगा ऐसा निश्चय करके

vajra at him. Knowing all this I will not give up Shachi; for she is the famous wife of Indra. You must so act that she and I may not come to harm." Having heard the above from Vrihaspati, the gods, the rishis and the gandharvas said, "Tell us what is to be done for the good of all." Vrihaspati then said, "For our own good and for the good of Indrani let us request Nahush to have patience for some time. He is very powerful and proud of his power at present, but soon a change will occur in his condition." The gods were much pleased to hear the proposal of Vrihaspati and praised his wisdom. "Then Agni and other gods addressed Indrani, saying, "The world exists by your truth, goddess. You are chaste and virtuous. Go to Nahush who is at present the prince of gods and destroy him by your meeting." Having come to this

सव्रीडा नहुषं घोरदर्शनम् ॥ ३१ ॥ दृष्ट्वा तां नहुषश्चापि वयोरूपसमन्विताम् । समहृष्यत दुष्टात्मा कामोपहतचेतनः ॥ ३२ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि इन्द्राणीकालावधियाचने
द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

शल्य उवाच । अथ तामब्रवीद्दृष्ट्वा नहुषो देवराट् तदा । त्रयाणामपि लोकानामहमिन्द्रः शुचिस्मिते ॥ १ ॥ भजस्व मां वरारोहे पतित्वे वरवर्णिनि । एवमुक्ता तु सा देवी नहुषेण पतिव्रता ॥ २ ॥ प्रावेपत भयोद्विग्ना प्रवाते कदली यथा । नमस्य सा हि ब्रह्माणं शिरसा तु कृताञ्जलिः ॥ ३ ॥ देवराजमथोवाच नहुषं घोरदर्शनम् । कालमिच्छाम्यहं लब्धुं त्वत्तः कश्चित् सुरेश्वर ॥ ४ ॥ न हि विज्ञायते शक्रः किं वा प्राप्तः क्व वा गतः । तत्त्वमेतत्तु विज्ञाय यदि न ज्ञायते प्रभो ॥ ५ ॥ ततोऽहं त्वामुपस्थास्ये सत्यमेतद्ब्रवीमि ते । एवमुक्तः स इन्द्राण्या नहुषः प्रीतिमानभूत् ॥ ६ ॥ नहुष उवाच । एवं भवतु सुश्रोणि यथा मामिह

इन्द्राणी पापी नहुष के पास गई नहुषभी उस सुन्दरी रूपवती को देख काम से मोहित होकर प्रसन्न हुये ३२ ॥

अध्याय १३ ॥

शल्य बोले हे राजन् ! युधिष्ठिर शची को देख देवराज नहुष ने कहा मैं तीनों लोकों का इन्द्र हूं । हे सुन्दर हंसनेवाली, हे सुन्दर मुखे, हे उत्तम वर्णवाली तुम हमारी स्त्री हो पतिव्रता शची नहुष के ऐसे वचन सुन इसप्रकार कांपने लगी जैसे केले का वृक्ष कांपता है फिर हाथ जोड़कर देवराज नहुष से बोली । हे देवराज आप थोड़ा समय हम को दीजिये क्योंकि हम यह नहीं जानती कि इन्द्र कहां गये और किस दिशा में हैं इस लिये मैं इस सबको जानकर आपकी स्त्री हूंगी इन्द्राणी के उक्त वचन सुन नहुष प्रसन्न होकर कहने लगे ।६। नहुष बोले हे सुश्रोणि तुम जो कहती हो सो ऐसाही होगा तुम इन्द्रकी

resolution Indrani went to the sinful Nahush who was much pleased to see her and was enamoured of her beauty.

CHAPTER XIII

"I am the lord of the three worlds," said Nahush the prince of gods addressing Indrani, "be my wife, possessor of beautiful smile, beautiful face and lovely colour!" The chaste Shachi trembled on hearing the words of Nahush like a plantain tree shaken by the wind and with clasped hands she said to the prince of gods, "Give me time, king of gods; for I donot know where or in what state Indra is. I shall be your wife after ascertaining all about him" Nahush was pleased to hear these words from Indrani and said, "Let it be as you say beautiful one. Come to me after ascertaining all about Indra I think it is but proper to do so." Having said

भाषत । ज्ञात्वाचागमनं कार्यं सत्यमेतदनुस्मरेः ॥ ७ ॥ नहुषेणविसृष्टाच निश्चक्राम ततः शुभा । बृहस्पतिनिकेतंच साजगाम यशस्विनी ॥ ८ ॥ तस्याः संश्रुत्य वचो देवाश्चाग्निपुरोगमाः । चिन्तयामासुरेकाग्राः शक्रार्थे राजसत्तम ॥ ९ ॥ देवदेवेन सङ्गम्य विष्णुनाप्रभविष्णुना । ऊचुश्चैनं समुद्विग्ना वाक्यं वाक्यविशारदाः ॥ १० ॥ ब्रह्मवध्याभिभूतो वै शक्रः सुरगणेश्वरः । गतिश्च नस्त्वं देवेश पूर्वजो जगतः प्रभुः ॥ ११ ॥ रक्षार्थं सर्वभूतानां विष्णुत्वमुपजग्मिवान् । त्वद्वीर्यान्निहते वृत्रे वासवो ब्रह्महत्यया १२ वृत सुरगणश्रेष्ठ मोक्षतस्य विनिर्दिश । तेषां तद्वचनं श्रुत्वा देवानां विष्णुरब्रवीत् ॥ १३ ॥ मामेव यजतां शक्रः पावयिष्यामि वज्रिणम् । पुण्येन हयमेधेन मामिष्ट्वा पाकशासनः १४ पुनरेष्यति देवानामिन्द्रत्वमकुतोभयः । स्वकर्मभिश्च नहुषो नाशमेष्यति दुर्मतिः ॥ १५ किञ्चित्कालमिमं देवा मर्षयध्वमतन्द्रिताः । श्रुत्वा विष्णोः शुभां सत्यां वाणीं तामसृतो-

सब बात जानकर हमारे पास आना इसको भी ऐसाही सत्य जान पड़ता है ऐसा कह नहुष ने इन्द्राणी को बिदा किया सुन्दरी यशस्विनी इन्द्राणी वहां से चलकर बृहस्पति के घर गई और सब देवताओं को नहुष के वचन कह सुनाये अग्नि आदिक देवताओंने शची के वचन सुन एकान्त में बैठ कर इन्द्र के बुलाने का विचार किया फिर सब संहित देवता घबड़ा कर जगत के स्वामी देव विष्णु के पास गये और कहने लगे कि इन्द्र ब्रह्महत्या से घबड़ाकर न जाने कहां चलेगये अब आपही हम सब के स्वामी हैं। हम लोग आपकी शरण हैं।११। आप जगत्की रक्षा के हेतु विष्णु हुये हैं आपके बलसे वृत्र सुर को मारकर ब्रह्महत्या से घबड़ कर इन्द्र भागगये हैं अब आप उन के पवित्र होनकी कथा बत इये देवताओं के वचन सुन विष्णु बोले तुम लोग हमारी पूजा करो तो हम वज्र धारी इन्द्रको पवित्र करदेंगे निर्भय इन्द्र फिर देवताओं के राजा होंगे और पापी नहुषभी अपने कर्मों से नाश होजायगा। १५ । हे देवतो तुम लोग थोड़ेदिन आलस्य रहित होकर

this, Nahush dismissed her from his presence Beautiful Indrani went to the house of Vrihaspati and told the gods what had happened On hearing h r words, Agni and other gods held a private meeting and consulted about the bringing back of Indra. But they could not settle what to do and in great confusion went to Vishnu the god of gods. On reaching there they said, "Being afraid of the sin of killing a Brahman Indra has concealed himself, you are the lord of us all and we seek your refuge. You are Vishnu the protector of the world Having destroyed Vritrasur by your help, Indra has concealed himself for the fear of the sin of killing the Brahman. Please let us know how he can be purified from that sin." "Worship me and I will purify Indra the wielder of Vajra," replied Vishnu, "Indra will again rule over the gods

पताम् ॥ १६ ॥ ततःसर्वेसुरगणाः सोपाध्यायाःसहर्षिभिः । यत्रशक्रोभयोद्विग्नस्तं देशमुपचक्रमुः ॥ १७ ॥ ततोऽश्वमेधःसुमहान्महेन्द्रस्य महात्मनः । ववृतेपावनार्थंवै ब्रह्महत्यापहोनृप ॥ १८ ॥ विभज्यब्रह्महत्यान्तु वृक्षेषुचनदीषुच । पर्वतेषुपृथिव्याञ्च स्त्रीषुचैवयुधिष्ठिर ॥ १९ ॥ संविभज्यचभूतेषु विसृज्यचसुरेश्वरः । विज्वरोधूतपाप्माच वासवोऽभवदात्मवान् ॥ २० ॥ अकम्प्यंनहुषंस्थानाद्दृष्ट्वा चबलसूदनः । तेजोघ्नंसर्वभूतानां वरदानाच्चदुःसहम् ॥ २१ ॥ ततःशचीपतिर्देवः पुनरेवव्यनश्यत । अदृश्यः सर्वभूतानां कालाकांक्षीचचारह ॥ २२ ॥ प्रनष्टेतुततःशक्रे शचीशोकसमन्विता । हा शक्रेतितदादेवी विललापसुदुःखिता ॥ २३ ॥ यदिदत्तंयदिहुतं गुरवस्तोषितायदि । एकभर्तृत्वमेवास्तु सत्यंयद्यस्तिवामयि ॥ २४ ॥ पुण्यांचेमामहं दिव्यां प्रवृत्तामुत्तरा-

समय बितायो विष्णु के ऐसे उत्तम वचन सुन देवताओं ने इस वाणी को सत्य और अमृत के समान जाना इसके पश्चात् सब देवता और ऋषि उस स्थानपर गये जहां भयसे छिपेहुये इन्द्र बैठथे हेयुधिष्ठिर महात्मा इन्द्रने अपने पवित्र होनेके लिये उसी स्थानपर अश्वमेध यज्ञ किया अनन्तर इन्द्रने उस ब्रह्महत्या को वृक्ष, नदी और स्त्रियों को बांटदिया।१९।देवराज इन्द्र इस प्रकार ब्रह्महत्या करनेसे पवित्र हुए और सुखी होकर सावधान होगये अनन्तर बल नाशक इन्द्रने देखा कि नहुष वरदान के बलसे इन्द्रासन को नहीं छोड़ता और सब प्राणियों के तेजको नाश करता है तब इन्द्र फिर गुप्त होकर अपना अच्छा समय आने की आशा से जगत् में घूमने लगे जब इन्द्र फिर गुप्त होगये तब पतिव्रता शची हा इन्द्र ! हा इन्द्र ! कहकर रोनेलगी शची बोली कि यदि मैंने कुछ तपकियाहो यदिमैंने कुछ दान कियाहो, यदि मैंने गुरुओंको प्रसन्न किया हो। और यदि मुझमें कुछभी सत्यहोतो इन्द्रही मेरे पतिहों।२४। मैं उत्तरायण सूर्यकी पवित्रात्रिको नमस्कार

fearlessly while sinful Nahush will bring about his own ruin by his wicked deeds. You must be diligent for sometime, gods." The gods believed in the words of Vishnu and acted upon it. They then went to the place where Indra had concealed himself and Indra performed there an Ashwamedh sacrifice for his purification. He distributed the sin among trees, rivers and women. He was thus purified from the sin of killing the Brahman and regained his senses and happiness. But when Indra saw that Nahush, by the power of the boon, attracted the glory of every one he looked at and would not leave the throne, he again concealed himself and wandered from place to place hoping for the coming of better times. Shachi, the chaste wife of Indra was again disconsolate and wept bitterly crying "Indra, Indra!" She then said within herself, "May Indra alone be my husband, if I have done asceticism, given charity, pleased my elders and spoken

पथे । देवीं रात्रिं नमस्यामि सिध्यतां मे मनोरथः ॥ २५ ॥ प्रयताचनिशां देवीमुपातिष्ठत तत्र सा । पतिव्रतात्वात् सत्येन सोपश्रुतिमथाकरोत् ॥ २६ ॥ यत्रास्ते देवराजोऽसौ तं देशं दर्शयस्व मे । इत्याहोपश्रुतिं देवी सत्यं सत्येन दृश्यताम् ॥ २७ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि उपश्रुतियाचने त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

शल्य उवाच । अथैनां रूपिणीं साध्वीमुपातिष्ठदुपश्रुतिः । तां वयोरूपसम्पन्नां दृष्ट्वा देवीमुपस्थिताम् ॥ १ ॥ इन्द्राणी संप्रहृष्टात्मा सम्पूज्यैनामथाब्रवीत् । इच्छामि त्वामहं ज्ञातुं का त्वं ब्रूहि वरानने ॥ २ ॥ उपश्रुतिरुवाच । उपश्रुतिरहं देवि तवान्तिकमुपागता । दर्शनं चैव संप्राप्ता तव सत्येन भामिनि ॥ ३ ॥ पतिव्रतासि युक्ता च यमेन नियमेन च । दर्शयिष्यामि ते शक्रं देवं वृत्रनिषूदनम् ॥ ४ ॥ क्षिप्रमन्वेहि भद्रं ते द्रक्ष्यसे सुरसत्तमम् । ततस्तां प्रस्थितां देवीमिन्द्राणी सा समन्वगात् ॥ ५ ॥ देवारण्यान्यतिक्रम्य पर्वतांश्च बहूंस्ततः । हिमवन्तमतिक्रम्य उत्तरं पार्श्वमागमत् ॥ ६ ॥ समुद्रं च समासाद्य

करती हूं यह हमारे मनोरथको सिद्ध करे ऐसा कहकर पतिव्रता शची अपना सन्देह नाश होने के लिये तप करने लगी और सन्देह नाशनी देवी से बोली कि जहां इन्द्र हैं उस स्थान को मुझे दिखावो । २७ ।

अध्याय १४ ॥

शल्य बोले इन्द्राणी के ध्यान करतेही सन्देहों को निर्णय करनेवाली उपश्रुति नामक देवी को देख इन्द्राणी ने प्रसन्न होकर पूजा करी और कहाकि हे सुन्दर मुखवाली तुम कौनहो हम तुम्हें जानना चाहती हैं । २ । उपश्रुति बोली हे देवि ! हे भामिनी मैं उपश्रुति नामक देवी हूं मैं तुम्हें पतिव्रता और नियमयुक्त जानकर तुम्हारे पास आई हूं मैं वृत्रासुर नाशक इन्द्रको तुम्हें दिखाऊंगी तुम हमारे संग चलो देवश्रेष्ठ इन्द्रके दर्शन करोगी ऐसा सुनकर इन्द्राणी उनके संगचली अनेक पर्वत वन और हिमाचल के पारहोकर

the truth. I bow to the holy night of the northward progress of the sun for the fulfilment of my desire" Having said this, Indrani performed asceticism for the removal of her grief and prayed the goddess who destroys griefs to guide her to the place where Indra was.

CHAPTER XIV

"As soon as Indrani thought of the remover of doubts," said Shalya, "the goddess named Upshruti came to her and seeing the young and beautiful goddess, Indrani worshipped her and said, "Who are you beautiful one, I wish to know." "I am Upshruti the goddess," said she, "Knowing you to be chaste and vow observing I have come to you. I shall show you Indra the destroyer of Vritrasur. Come with me and you will see Indra the best of

वहुयोजनविस्तृतम् । आससादमहाद्वीपं नानाद्रुमलताहृतम् ॥ ७ ॥ तत्रापश्यत्सरो दिव्यं नानाशकुनिभिर्वृतम् । शतयोजनविस्तीर्णं तावदेवायतंशुभम् ॥८॥ तत्र दिव्यानिपद्मानि पञ्चवर्णानिभारत । षट्पदैरुपगीतानि प्रफुल्लानिसहस्रशः ॥ ९ ॥ सरसस्तस्यमध्येतु पद्मिनीमहतीशुभा । गौरेणोन्नतनालेन पद्मेनमहतावृता ॥ १० ॥ पद्मस्यभित्त्वानालञ्च विवेशसहितातया । विसतन्तुप्रविष्टञ्च तत्रापश्यच्छतक्रतुम् ११ तंदृष्ट्वाचसुसूक्ष्मेण रूपेणावस्थितंप्रभुम् । सूक्ष्मरूपधरादेवी बभूवोपश्रुतिश्चसा ॥१२॥ इन्द्रंतुष्टावचेन्द्राणी विश्रुतैः पूर्वकर्मभिः । स्तूयमानस्ततोदेवः शचीमाहपुरन्दरः ॥१३॥ किमर्थमसिसम्प्राप्ता विज्ञातश्चकथंत्वहम् । ततः साकथयामास नहुषस्यविचेष्टितम् । ॥ १४ ॥ इन्द्रत्वंत्रिषुलोकेषु प्राप्यवीर्यमदान्वितः । दर्पाविष्टश्चदुष्टात्मा मामुवाचशतक्रतो ॥ १५ ॥ उपतिष्ठसिमांक्रूरः कालञ्चकृतवान्मम । यदिनत्रास्यसिविभो करि

उत्तर कोनेपर पहुँची । ६ । वहां जाकर अनेक योजन चौड़े समुद्र को देखा उसके बीचमें अनेक वृक्ष और लताओं सेहुये द्वीपमें पहुँची उस द्वीपके बीचमें १०० योजन लम्बा अनेक देव स्थान युक्त पक्षियों से भरे एक सुन्दर तालाब को देखा उसमें पांच वर्णवाले सुन्दर कमलों को देखा उनपर अनेक भँवरे गूँज रहेथे उस तालाब के बीचमें सफेद और ऊँची डंडी से युक्त अनेक कमलिनी और कमल खिलरहे थे । अनन्तर उपश्रुति देवी शची के सहित छोटारूप बनाकर कमलकी डंडीमें घुसगई वहां जाकर सूतके समान सूक्ष्मरूप धारी इन्द्रको देखा उपश्रुतिभी सूक्ष्म होगई । १२ । तब इन्द्राणीने इन्द्रको अपना कर्म सुनाकर प्रसन्न किया इन्द्रबोले तुम हमारे पास क्यों आईहो और तुमने हमको कैसे पहिचाना तब इन्द्र से शची ने नहुष का सब समाचार इस प्रकार कहा हे इन्द्र नहुष मुझसे कहता है कि मैं तीनोंलोकों का इन्द्र हूं तुम हमारी स्त्री बनो

gods." Having heard this Indrani followed her over hills and forests and traversing the Himalayas she reached its northern boundary. From there they saw the Ocean, extending many miles wide and went to an island full of trees and creepers. In the midst of the island they saw a lake with its temples and birds, extending a hundred yojans. Within the lake were growing lotuses of five colours over which black bees were humming. In the midst of the lake there were many lotus plants with large white stalks. Upshruti transformed herself with Indrani into a very minute form and got into one of the stalks. She saw there Indra in the form of a fine thread. Indrani thereupon pleased Indra with the praises of his former deeds "Why have you come here and how did you know me," said Indra to Shachi and she told him all that had passed between Nahush and her, saying, - "Nahush says to me that he is the lord of the thr

ष्यानसपांरशे ॥ १६ ॥ एतेनचाहमस्माशा सुनंशक्रतथान्तिकम् । जहिदैद्रंमहावाहो नहुंपापानिश्चयम् ॥ १७ ॥ प्रकाशयात्मनात्मानं दैत्यदानवसूदनम् । तेजः समाप्नुहि विभो देवराज्यं प्रशाधिच ॥ १८ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि इन्द्राणीन्द्रस्तवे चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

शल्यउवाच । एवमुक्तःसभगवानशच्यातांपुनरब्रवीत् । विक्रमस्यनकालोऽयंनहुषोबलवत्तरः ॥ १ ॥ विवर्द्धितश्चऋषिभिर्हव्यैःकव्यैश्चभामिनि । नीतिमत्रविधास्यामिदेवितांकर्तुमर्हसि ॥ २ ॥ गुह्यंचैतत्त्वयाकार्यंनाख्यातव्यंशुभेक्वचित् । गत्वानहुषमेकान्तेब्रवीहिचसुमध्यमे ॥ ३ ॥ ऋषियानेनदिव्येनमामुपैहिजगत्पते । एवंतववशेप्रीताभविष्यामीतितंवदः ॥ ४ ॥ इत्युक्तादेवराजेनपत्नीसाकमलेक्षणा । एवम

वह दुष्ट अभिमान और बल से भरा है मैंने उस से थोड़ा समय मांग लिया है यदि तुम इस समय के बीचमें स्वर्ग को नहीं जावो तो वोह अवश्य मुझे अपने वशमें करेगा इस लिये मैं तुम्हारे पास शीघ्रता सहित आई हूं । हे महाबाहो ! पापी दुष्ट नहुषको जीतो तुम अपने तेजका प्रकाश करो हे दैत्य और दानवों के मारनेवाले अब तुम ईश बनकर प्रजाकी रक्षा करो । १८

अध्याय १५ ॥

शल्यने कहा हे राजन् युधिष्ठिर भगवान् इन्द्र शचाके ऐसे वचन सुनबोले हे भामिनि ! यह समय युद्ध करनेका नहीं है क्योंकि नहुष बलवान्है उसे ऋषियों ने आहुति देकर बहुत बढ़ा दिया है हे देवी मैं एक नीति कहताहूं तुम उसको सुनो तुम इस शुभनीति को किसीसे वर्णन मतकरना हे पतली कमरवाली इस नहुषके पास जाकर एकान्तमें कहो कि तुम देवऋषियों की पालकीपर चढ़कर हमारे पास आवो तब मैं तुम से प्रसन्नहूंगी इन्द्रके ऐसे वचनसुन कमलनयनी सुन्दर हँसनेवाली शची बहुतअच्छा कह-

worlds. He is full of pride and power. I have secured from him some days of leave; but if you will not return to paradise within that time he will have me within his power. I have therefore come to you in haste. Vanquish the sinful and wicked Nahush without delay and show your glory. Protect your subjects, destroyer of Daityas and Danavas !"

CHAPTER XV

"This is not the time for making war," said Indra to Shachi, "for, Nahush is very strong with the libations which rishis offer him. I shall tell you goddess what to do; but you must keep the plan secret. Go to Nahush in private and tell him that you will not be pleased unless he comes to you in a palanquin borne by Devarishis." Having heard the directions of Indra Shachi of enchanting smiles

स्तथेत्युक्त्वा तु जगाम नहुषं प्रति ॥ ५ ॥ नहुषस्तां ततो दृष्ट्वा विस्मितो वाक्यमब्रवीत् स्वागतं ते वरारोहे किं करोमि शुचिस्मिते ॥ ६ ॥ भक्तं मां भज कल्याणि किमिच्छसि मनस्विनि । तव कल्याणि यत्कार्यं तत्करिष्ये सुमध्यमे ॥ ७ ॥ न च व्रीडा त्वया कार्या सुश्रोणि मयि विश्वसेः । सत्येन वै शपे देवि कर्तास्मि वचनं तव ॥ ८ ॥ इन्द्राण्युवाच । यो मे कृतस्त्वया कालस्तमाकाङ्क्षे जगत्पते । ततस्त्वमेव भर्ता मे भविष्यसि सुराधिप ॥ ९ ॥ कार्यं च हृदि मे यत्तद्देवराजावधारय । वक्ष्यामि यदि मे राजन् प्रियमेतत्करिष्यसि ॥ १० ॥ वाक्यं प्रणयसंयुक्तं ततः स्यां वशगा तव । इन्द्रस्य वाजिनो वाहा हस्तिनोऽथ रथास्तथा ११॥ इच्छाम्यहमथापूर्वं वाहनं ते सुराधिप । यन्न विष्णोर्न रुद्रस्य नासुराणां न रक्षसाम् ॥ १२ ॥ वहन्तु त्वां महाभाग ऋषयः सङ्गता विभो । सर्वे शिबिकया राजन्नेतद्धि मम रोचते १३ ॥

कर नहुष के पास गई नहुष उसको देखकर बहुत प्रसन्न हुये और हँसकर कहनेलगे हेसुन्दर हँसनेवाली हेसुमुखि हम तुम्हारा स्वागत करतेहैं कहो हम तुम्हारा कौनसा काम करें हेकल्याणि ! हेभगवती ! हम तुम्हारे दास हैं तुम हमारी स्त्री बनो हेकल्याणि पत-लीकमरवाली तुम्हारी जोकुछ इच्छाहो सो हम करेंगे तुम हमसे लज्जा मतकरो और हमारा विश्वासकरो हम प्रतिज्ञा करतेहैं कि तुम्हारी आज्ञा पालनकरेंगे।८ इन्द्राणीने कहा हेदेवराज मैंने जो तुम्हारे संग समयकी प्रतिज्ञा करीथी सो अब पूरीहोगई यदि तुम मेरेपति होना चाहतेहो तो हमारे मन में जो कार्यहै सो सिद्धिकरो हेराजन् ! हेदेव राज यदि तुम उसे पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञा करतेहो तो मैं तुम से कहूं हेदेवराज मैं तुमसे वि-नय पूर्वक प्रार्थना करतीहूं यदि तुम उसको पूर्ण करोतो मैं तुम्हारी स्त्री होजाऊंगी इन्द्र के यहां हाथी और घोड़े आदि सब वाहन हैं परन्तु आप मेरेयहां अपूर्व वाहनपर चढ़-कर आइये हेदेवराज आपका ऐसा वाहनहोना चाहिये जो न इन्द्र, न विष्णु और न शिवके यहांहो । हेपृथिवीनाथ ! आप की पालकी में महाभाग सप्तऋषिगण यही हमारी

and lotus like eyes promised to act upon Indra's advice and forth went to Nahush. He was much pleased to see her and said to her with a smiling face, " You are welcome beautiful one of enchanting smiles ! What should I do for you ? I am your slave, beautiful one ! Be my wife fortunate woman of slender waist. I shall always act according to your desires. Donot be abashed and trust me. I tell you truly that I shall ever obey you." " The time for which I asked you to wait is nearly at an end. Satisfy my desire if you wish to become my hu-band. I shall speak out if you promise to fulfil my desire. I shall become your wife if you will do what I shall tell you. Indra possesses elephants, horses and other vehicles, but I wish you to come to me in a vehicle that no one can possess. Your vehicle should be such as neither Indra, Vishnu nor Shiva possesses. The

नासुरो पुनर्देवेषु तुल्यो भवितुमर्हसि । सर्वेषां तेज आदत्से स्वेन वीर्येण दर्शनात् न ते प्रमुखत
स्थातुं कश्चिदस्ति वीर्यवान् ॥ १४ ॥ शल्य उवाच । एवमुक्तस्तु नहुषः प्राहृष्यत तदा
किल । उवाच वचनं चापि सुरेन्द्रस्तामनिन्दिताम् ॥ १५ ॥ नहुष उवाच । अपूर्वं वा
हनमिदं त्वयोक्तं वरवर्णिनि । दृढं मे रुचितं देवि त्वद्वशोऽस्मि वरानने ॥ १६ ॥ नह्यल्पवी
र्यो भवति यो वाहान् कुरुते मुनीन् । अहं तपस्वी बलवान् भूतभव्यभवत्प्रभुः ॥ १७ ॥ मयि
क्रुद्धे जगन्न स्यान्मयि सर्वं प्रतिष्ठितम् । देवदानवगन्धर्वाः किन्नरोरगराक्षसाः ॥ १८ ॥
न मे क्रुद्धस्य पर्याप्ताः सर्वे लोकाः शुचिस्मिते । चक्षुषा यं प्रपश्यामि तस्य तेजो हराम्यहम् १९
तस्मात्ते वचनं देवि करिष्यामि न संशयः । सप्तर्षयो मां वक्ष्यन्ति सर्वे ब्रह्मर्षयस्तथा ॥ २० ॥

मनकी इच्छा है आप इसको पूर्ण कीजिये क्योंकि आप देवता असुर और राक्षसोंके समान होनेयोग्य नहींहैं तुम अपने दर्शनसे सब के तेजको छीनलेतेहो तुम्हारे आगे इन्द्रभी नहीं ठहरसकेहैं और सबकी तो कथाही क्या है ।१४। शल्यने कहा हेराजा युधिष्ठिर इन्द्राणीके ऐसे वचनसुन नहुष बहुत प्रसन्नहुये और इन्द्राणीसे कहा हेअनिन्दिते तुमने यह बड़ा अपूर्व वाहन बताया मैं इस वाहनको बहुतअच्छा समझता हूं हेवरानने जैसे तुमने कहा मैं वैसेही करूंगा क्योंकि निर्बल, मुनियोंको वाहन नहीं बना सकता मैं इस समय तीनों लोकोंका स्वामीहूं इसीसे मुनियोंको वाहन बनऊंगा मुझे क्रोध आनेसे सब जगत्का नाश होसक्ताहै सब जगत् मेरी शक्तिसे स्थिरहै ।१७। हेसुन्दर हँसनेवाली मुझे क्रोध आनेसे देवता दानव गन्धर्व, किन्नर, सर्प और राक्षसभी नहीं बचसके और न मेरे क्रोध को वे लोग सहसक्तेहैं मैं जिसको अपने नेत्रसे देखता हूं उसकातेज नाश होजाताहै इसलिये मैं तुम्हारे वचनको अवश्य करूंगा सातें ऋषि और ब्रह्म ऋषि हमसे कहते हैं कि तुम इन्द्र हमारे

seven rishis should bear your palanquin, lord! This is my heart's desire which you should fulfil. Your vehicle should not be equalled by gods, rishis or rakshases. You attract the glory of all by your mere look. Even Indra cannot stay before you nothing to say of others! *Shalya said to Yudhishthir that having heard the above* from Indrani, Nahush was much pleased and said to her, "You have suggested a matchless vehicle for me, blameless one! I like it very much, beautiful one. I shall do as you desire, for a weak person cannot ride on the shoulders of Munis. I am at present the lord of the three worlds and shall make munis to carry me. I can destroy all the world by my anger. All the worlds stays by my power, O beautiful one of sweet smiles! Even gods, Danavas, serpents and rakshases cannot stand before me. They cannot withstand my anger. I attract every one's glory by my mere look. I shall certainly do what you desire. The seven rishis and Brahma rishis say that I am their Indra and king, beautiful one! See my

पश्यमाहात्म्यमेगमेऽन्याद्धिञ्चवरवर्णिनि । शल्यउवाच । एवमुक्ताततांदेवीं विसृज्य चन्द्राननाम् । विमानेयोजयित्वाचऋषीन्नियममास्थितान् ॥२१॥ अब्रह्मण्योबलोपेतो मदोमदबलेनच । कामवृत्तःसदुष्टात्मावाहयामासतानृषीन् ॥ २२ ॥ नहुषेणविसृष्टा चबृहस्पतिमथाब्रवीत् । समयोऽल्पावशेषोमेनहुषेणेह कृतः ॥ २३ ॥ शक्रंमृगयशीघ्रंत्वभक्तायाः कुरुदयाम् । बाढमित्येवभगवान्बृहस्पतिरुवाचताम् ॥ २४ ॥ नभेतव्यंत्वयादेविनहुषाद्दुष्टचेतसः । नह्येषस्थास्यतिचिरंगतएषनराधमः ॥ २५ ॥ अधर्मज्ञोमहर्षीणांवाहनाच्चततःशुभे । इष्टिंचाहंकरिष्यामिविनाशायास्यदुर्मतेः ॥ २६ ॥

राजाहो हेसुन्दर वर्णवाली तुम मेरी शक्तिको देखो । शल्यने कहा सुन्दरि शचीसे ऐसा कह नहुष ने उसे विदाकिया फिर सप्तऋषियों को पालकी में जोडकरचले। २१ । उस समय राजानहुषने ब्राह्मणोंकी सब भक्ति छोड़दी और बल तथा अभिमान में भरकर नियम में रहने वाले सप्तऋषियोंको पालकीमें लगाकर इन्द्राणीके यहागये,उस समय दुष्टा त्मापापी नहुष काम के वशमें होकर सब भूलगये और ऋषियों को पालकी में लगा लिया, जिस समय नहुष इन्द्राणीको विदा कियाथा, उसी समय इन्द्राणी,बृहस्पति के पासगई और कहनेलगी, मैंने जो नहुष के संग समयकी प्रतिज्ञा करीथी, सो उसमें अब बहुत थोडा समय शेष रहगया है इस लिये अब आप कुछ उपाय कीजिये । आप शीघ्र इन्द्रको ढूंढिये, क्योंकि मैं आपकी शरणागत और भक्तहूं आप हमारी रक्षाकीजिये बृहस्पति ने कहा कि बहुत अच्छा तुम कुछ भयमतकरो, नहुष महापापी और दुष्टात्मा है वह इस स्थान पर नहीं रहसकता वह महा अधर्मी है । इस लिये अवश्य सप्तऋषि- योंके विमानपर चढ़कर आवेगा, तबहीं उस के मारनेका मैं उपाय करूंगा और इन्द्रके

---

power." Shalya said that after saying this to Shachi, Nahush dismissed Shachi and after her departure he ordered the seven rishis to carry his palanquin. From that time Nahush lost all respect for Brahmans and in the pride of his power made the seven rishis carry his palanquin to the house of Indrani. The wicked Nahush, in the pride of his power, forgot all and made the rishis carry his palanquin. Having taken leave from Nahush, Indrani went to Vrihaspati and said to him, "The time given me by Nahush has nearly come to an end, be pleased to devise some means to seek out Indra, for I am your devotee and refugee. Be pleased to protect me." "Very well," said Vrihaspati, "Do not fear. Nahush is very wicked and bad natured. He cannot remain long at this exalted position, for he is devoid of religion.

शक्रंचाधिगमिष्यामिमाभैस्त्वंभद्रमस्तुते । ततःप्रज्वाल्यविधिवज्जुहावपरमंहविः २७ बृहस्पतिर्महातेजादेवराजोपलब्धये । हुत्वाग्निंसोऽब्रवीद्राजञ्छक्रमन्विष्यतामिति २८ ॥ तस्माच्चभगवान्देवः स्वयमेवहुताशनः । स्त्रीवेषमद्भुतंकृत्वातत्रैवान्तरधीयत ॥२९॥ सदिशःप्रदिशश्चैवपर्वतानिवनानिच । पृथिवींचान्तरिक्षञ्चाविचिन्त्याथमनो गतिः । निमेषान्तरमात्रेणबृहस्पतिमुपागमत् ॥ ३० ॥ अग्निरुवाच । बृहस्पतेनपश्यामिदेवराजमिहक्वचित् । आपःशेषाःसदाचापःप्रवेष्टुंनोत्सहाम्यहम् ॥ ३१ ॥ नमेतत्र गतिर्ब्रह्मन् किमन्यत्करवाणिते । तमब्रवीद्देवगुरुरपोविशमहाद्युते ॥ ३२ ॥ अग्नि रुवाच नापःप्रवेष्टुंशक्ष्यामिक्षयोमेऽत्रभविष्यति शरणंत्वांप्रपन्नोऽस्मिस्वस्तितेऽस्तुमहा

ढूंढ़ने काभी उपाय करूंगा तुम कुछ भयमतकरो, मैं अवश्य इन्द्रको लाऊंगा तुम पर-ड़ाओमत तुम्हारा कल्याणहो, ऐसा कहकर महातेजस्वी बृहस्पति ने अग्नि जलाकर आहुति दी, फिर महातेजस्वी बृहस्पतिने राजा इन्द्रकी प्राप्तिके लिये कहा कि इन्द्रको ढूंढ़ो क्योंकि विना राजाके यह देश अच्छा नहीं लगता । बृहस्पति के सामने अग्नि स्त्रीका वेषबनाके प्रत्यक्ष हुये और फिर उसी अग्निकुंड में अन्तर्द्धान होगये, महाबुद्धिमान अग्निने कुछ काल के पश्चात् समस्त पृथ्वी, वन, उपवन, नदी और सब दिशाओं में इन्द्रको ढूंढ़ा परन्तु कहीं पता नहीं लगा फिर वह स्त्री थोड़ेही समय में बृहस्पति के पास आगई और कहने लगी कि, हे देव देव ! हम सब दिशाओंमें घूम आईं परन्तु इन्द्रको कहीं नहीं पाया जल शिष्ट है और हम जलमें प्रवेश नहीं करसकती, इस से जलमें मेरी गति नहीं है । सो आप जो चाहैं सो विचार कीजिये ; बृहस्पति ने कहाकि हे महातेजस्वी ! तुम जलमें प्रवेश करो उसीमें इन्द्र मिलैंगे, जलसे अग्नि, ब्रह्मा से क्षत्री और पत्थर से लोहा

He will make the seven rishis to carry his palanquin and then I shall devise some plan to destroy him as well as of searching out Indra. Have no fear I shall surely bring back Indra. May you be blessed !' Having said this Vrihaspati poured libations into fire and asked Agni to search Indra, for, he said, that the country did not look well without its king. Agni came to Vrihaspati in the likeness of a woman and again disappeared within the altar. He searched for Indra over all the earth, midst forests, orchards, rivers and all directions but to no purpose. In a short time the same woman came back to Vrihaspati and said, "I have searched Indra in every direction, but have found him no where. Water only remains, but I cannot go in water. Tell me now what to do" "Go into water," replied Vrihaspati, "You will find

युदे ॥ ३३ ॥ अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनोलोहमुत्थितम् । तेषांसर्वत्रगन्तेजः स्वासुयोनिषुशाम्यति ॥ ३४ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि बृहस्पत्यग्निसम्वादे पंचदशोऽध्यायः १५॥

बृहस्पतिरुवाच । त्वमग्ने सर्वदेवानां मुखंत्वमसिहव्यवाट् । त्वमन्तःसर्वभूतानां गूढश्चरसिसाक्षिवत् ॥ १ ॥ त्वामाहुरेकं कवयस्त्वामाहुस्त्रिविधंपुनः । त्वयात्यक्तंजगच्चेदं सद्योनश्येद्धुताशन ॥ २ ॥ कृत्वातुभ्यंनमोविप्राः स्वकर्मविजितांगतिम् । गच्छन्तिसहपत्नीभिः सुतैरपिचशाश्वतीम् ॥ ३ ॥ त्वमेवाग्ने हव्यवाहस्त्वमेव परमंहविः । यजन्तिसत्रैस्त्वामेव यज्ञैश्चपरमाध्वरे ॥ ४ ॥ सृष्ट्वालोकांस्त्रीनिमान् हव्यवाहप्राप्ते कालेपचसिपुनः समिद्धः । त्वंसर्वस्यभुवनस्य प्रसूतिस्त्वमेवाग्ने भवासिपुनःप्रतिष्ठा ॥ ५ ॥

उत्पन्न हुआ है, इन सबका तेज सर्वव्यापक है, परन्तु अपने स्थान में जाकर शान्त होजाते हैं। १५ ।

अध्याय १६ ॥

इतना सुन बृहस्पतिजी बोले हे अग्नि तुम सब देवताओं के मुखहो क्योंकि हव्य तुम्हारेही मुखसे सबोंको पहुँचती है, व तुम सब प्राणियों के अन्तःकरण में गुप्तहो साक्षीके समान विचरतेहो । १ । कविलोग तुमको एककहते हैं व फिर गार्हपत्य दक्षिणाग्नि व आहवनीयके भेदसे तीनप्रकारका कहते हैं । २ । जब तुम इस जगत्को त्याग दोतो यह तुरन्तही नष्टहोजाताहै व तुमको नमस्कार कर ब्राह्मणलोग अपनी स्त्री पुत्रों सहित अपने कर्मों से जीतीहुई निरन्तर गतिपाते हैं । ३ । हे अग्नि तुम्हीं खीर पहुँचाने वालेहो व तुम्हीं परम हव्यहो, व बड़े २ यज्ञों में तुम्हारीही पूजा होती है । ४ । हे हव्यवाहन इन तीनों लोकोंको बना प्रलयकाल में फिर सबको भस्म करते हो, इस से सब भुवनोंकी उत्पत्ति के कारण तुम्हींहो व तुम्हीं सब भुवनों के लीनहोने के स्थानहो

Indra there. Water gives birth to fire, Brahman to Kshatrya and stone to iron Their glory is all pervading but they lose their glory in the places of their birth"

CHAPTER XVI

"You are the mouth of all gods," said Vrihaspati to Agni, "for all the gods receive their shares of the sacrifice through you and you dwell within the minds of all beings like a spy. Poets call you one and yet they recognise you under three different names, namely, Garhpatya, Dakshin and ahavaniya. The world is soon destroyed when you leave it and Brahmans with their wives and sons gain salvation which they earn by bowing to you. You are the carrier of milk and sacrifices and you are worshipped in large sacrifices. You are the creator as well as the destroyer of the three worlds, Havya

त्वामग्ने जलदानाहुर्विद्युतश्च मनीषिणः । दहन्तिसर्वभूतानि त्वत्तोनिष्क्रम्यहेतयः ६॥ त्वय्यापोनिहिताःसर्वास्त्वयि सर्वमिदंजगत् । नतेऽस्त्यविदितंकिञ्चित् त्रिषुलोकेषुपावक ॥ ७ ॥ स्वयोनिंभजतेसर्वो विशस्वापोऽविशङ्कितः । अहंत्वांवर्द्धयिष्यामि ब्राह्मैर्मन्त्रैःसनातनैः ॥ ८ ॥ एवंस्तुतोहव्यवाड् भगवान्कविरुत्तमः । बृहस्पतिमथोवाच प्रीतिमान्वाक्यमुत्तमम् । दर्शयिष्यामिते शक्रं सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ ९ ॥ शल्यउवाच प्रविश्यापस्ततोवह्निः ससमुद्राः सपल्वलाः । आससादसरस्तच्च गूढो यत्र शतक्रतुः ॥ १० ॥ अथतत्रापिपद्मानि विचिन्वन्भरतर्षभ । अपश्यत्सतुदेवेन्द्रं बिसमध्यगतंतदा ॥ ११ ॥ आगत्यचततस्तूर्णं तमाचष्टबृहस्पतेः । अणुमात्रेणवपुषा पद्मतन्त्वाश्रितंप्रभुम् ॥१२ । गत्वादेवर्षिगन्धर्वैः सहितोऽथबृहस्पतिः । पुराणैःकर्मभिर्देवं तुष्टा

। ५ । व पंडितलोग बादल बिजुली तुम्हीं को कहते हैं, व तुम से ज्वाला निकल सब प्राणियोंको प्राप्त होती है । ६ । व तुम्हीं में सबजल टिके हैं व सब यहजगत् तुम्हीं में है, इस से तीनोंलोकों में ऐसा कुछ नहीं जो आपको विदित नहो । ७ । अपनी योनिमें सब कोई पैठतेहैं तुमभी निश्शंकहो जलमें पैठो हम तुमको सनातन ब्राह्मणों के मंत्रोंसे बढ़ावेंगे । ८ । इसप्रकार जब अग्निजी की स्तुति हुई तो उत्तम कवि भगवान् अग्निजी प्रसन्न हो बृहस्पतिजी से उत्तम वचन बोले ९ कि अच्छा अब तुमको इंद्र दिखाई देंगे यह हम सत्यही कहते हैं, इतना कह जलमें छोटे २ तलैयोंसे ले समुद्रपर्य्यंत जल है सब में आप ढूंढा जब पता नहीं लगा तो आते २ वहां पहुँचे जिस सरमें तुमको इंद्र जी रहते थे । १० । वहांभी कमलों के बीचों ढूंढते २ एक भसीड़की नाल के बीचोंमें छिपे हुये इन्द्रको अग्निजी ने देखा । ११ । देखकर झटही अग्निदेव ने आ बृहस्पति से कहा, कि एक अणुमात्र का शरीर धारण किये इन्द्र कमलकी नाड़ी के सूत्रमें बैठे हैं । १२ । यह सुन बृहस्पतिजी देवता और गन्धर्वों को सगलेजाकर उनके पुराने कर्मोंसे

vahan ! All the worlds get their births from you and in you they are ultimately united. Learned men call you by names of cloud and lightning and your streaks overreach all the livings. You are the stay of the waters as well as of all the world and therfore no place can remain hidden from you. Like everyone else you must enter water the place of your birth and we shall make you grow with the hymns of the Brahmins of old." Thus praised by Vrihaspati, Bhagwan Agni the best of poets was much pleased and promised to search out Indra. He then went through every piece of water, from the smallest pond to the sea, till he reached the lake in which Indra was hiding!" Searching amidst lotus plants, Agni saw him hiding in a stalk. He soon returned to Vrihaspati and informed him of what he had seen of Indra. Vrihaspati, accompanied

वृत्रसूदनम् ॥ १३ ॥ महासुरोहतःशक्र नमुचिर्दारुणस्त्वया । शम्बरश्चबलश्चैव तथोभौ घोरविक्रमौ ॥ १४ ॥ शतक्रतोविवर्द्धस्वसर्वान्शत्रून्निषूदय । उत्तिष्ठशक्र सम्पश्यदेवर्षींश्चसमागतान् ॥ १५ ॥ महेन्द्रदानवान्हत्वालोकास्त्रातास्त्वया विभो । अपांफेनंसमासाद्यविष्णुतेजोऽतिबृंहितम् । त्वयावृत्रोहतःपूर्वंदेवराजजगत्पते ॥१६॥ त्वंसर्वभूतेषुशरण्यईड्यस्त्वयासमंविद्यतेनेहभूतम् । त्वयाधार्यन्तेसर्वभूतानिशक्रत्वंदेवानांमहिमानंचकर्थ ॥ १७ ॥ पाहिसर्वान्सलोकांश्चमहेन्द्रबलमाप्नुहि । एवंसंस्तूयमानश्चसोऽवर्द्धतशनैःशनैः ॥ १८ ॥ स्वञ्चैववपुरास्थायबभूवसबलान्वितः । अब्रवीच्चगुरुंदेवोबृहस्पतिमवस्थितम् ॥ १९ ॥ किंकार्यमवशिष्टंवोहतस्त्वाष्ट्रोमहासुरः । वृत्रश्चसुमहाकायोयोवैलोकाननाशयत् ॥ २० ॥ बृहस्पतिरुवाच । मानुषोनहुषोराजादेव

इन्द्रकी स्तुति करने लगे । १३ । हे इन्द्र महादारुण असुर नमुचिको तुमने मारा व बड़ेही घोर पराक्रमी शम्बरासुर तथा बलासुरको मारा । १४ । हे इन्द्र बढ़ो सब शत्रुओंको मारो, व उठो देखो सब देवता ऋषि तुमको देखने आये हैं । १५ । हे महेन्द्र दानवोंको मार तुमने सदा लोकोंकी रक्षाकी है व विष्णुके तेज से संयुक्त जलका फेनाले । १६ । तुमने पूर्वकाल में वृत्रासुरको मारा, तुम सब प्राणियों में शरणागत रक्षकहो व स्तुति करने के योग्य तुम्हींहो, व तुम्हारे समान और कोई प्राणी नहीं है, हे इन्द्र सब प्राणियों को तुम्हीं अपने में स्थापित करातेहो, व देवताओंकी महिमा तुम्हींसे है । १७ । हे महेंद्र बलपाओ व सबलोकोंकी रक्षा करो, जब ऐसी इन्द्रकी स्तुति हुईतो वे धीरे २ बढ़नें लगे । १८ । व थोड़ीही देरमें अपना पूर्वकाल शरीर धारणकर वे बहुत बलयुक्त होगये, व आगे खड़ेहुये गुरू बृहस्पतिजी से बोले । १९ । कि अब आप लोगों का कौनकार्य बाकी है महाकाय त्वष्टा व वृत्रासुरको तो हमने मारडाला था जो कि लोकभर नाश किये देते थे । २० । बृहस्पतिजी बोले कि मनुष्य राजा नहुष देवताओं

by gods and Gandharvas went there and began to praise Indra's former deeds: "You killed the most dreadful Daitya Namuchi, as well as the powerful Shamvasur and Valasur. Rise Indra, destroy the enemies! Rise up and see the gods and rishis that have come to see you. You have always protected the gods by killing Danavas. You killed Vritrasur by the sea foam big with the power of Vishnu. You are the refuge of all living beings and praiseworthy. No one is your equal. You are the stay of all beings, Indra. The greatness of the gods depends on you. Receive strength, Mahendra, and protect all beings." Thus praised Indra at last grew in size and gradually regained his former size and strength. He then addressed his preceptor Vrihaspati who was standing before, saying. "What am I to do? I have already killed huge Vritrasur who was intent on

पिंगणतजसा । देवराज्यमनुप्राप्तो राजर्षिर्बाधते भृशम् ॥ २१ ॥ इन्द्रउवाच । कथं चनहुषोराज्यदेवानामापदुर्लभम् । तपसाकेनवायुक्तःकिंवीर्योवाबृहस्पते ॥ २२ ॥ बृहस्पतिरुवाच । देवाभीताःशक्रमकामयन्तत्वयात्यक्तमहदैन्द्रपदंतत् । तदादेवाः पितरोऽर्षयश्चगन्धर्वमुख्याश्चसमेत्यसर्वे ॥ २३ ॥ गत्वाब्रुवन्नहुषमत्रशक्रत्वनोराजाभवभुवनस्यगोप्ता । तानब्रवीन्नहुषोनास्मिशक्तआप्यायध्वंतपसातेजसामाम् ॥ २४ ॥ एवमुक्तैर्वर्द्धितश्चापिदेवैराजाभवन्नहुषोघोरवीर्यः । त्रैलोक्येचप्राप्यराज्यंतपस्वीनकृत्वावाहान्यातिलोकानदुरात्मा ॥ २५ ॥ तेजोहरंदृष्टिविषंसुघोरंमात्वंपश्येर्नहुषंवैकदाचित् । देवाश्चसर्वेनहुषंभयार्त्तानपश्यन्तोगूढरूपाश्चरन्ति ॥ २६ ॥ अगस्त्यउवाच ।

ऋषियों के तेजसे देवताओंका राज्य पा इसलोग ऋषि देवताओं को बाधित करता है । २१ । इन्द्रजी ने कहा कि बताओ देवताओंकी दुर्लभ राज्य नहुष ने कैसेपाया, कौन की उसने तपस्याकी है व कैसा उसका वीर्य है । २२ । बृहस्पतिजी ने कहा हे इन्द्र जब तुमने इन्द्रपद छोड़दियाथा भयके मारे देवताओं ने चाहा कि किसीको इन्द्रबनावैं, तब देवता पितर गन्धर्व व ऋष्यादि सब एकत्र हो । २३ । सबने नहुष से कहा कि तीनों भुवनों के रक्षक तुम हमारे इन्द्र बनो, उन से नहुषने कहा हम इन्द्र नहीं होसके जो हमको अपने तेजसे बढ़ावो तो राजाहों २४ ऐसा कहने पर देवताओं के वीर्य व तेज से नहुष वह देवादिकों का राजाहुआ, परन्तु वह ऐसा दुरात्मा ठहरा कि तीनोंलोकों का राज्यपाकर अब ऋषियों से पालकी उठवा कर लोक घूमने जाता है । २५ । परन्तु देखो तुम नहुषको कभी न देखना क्योंकि देखतेही वह प्राणियोंका बल व तेजखींच अपने में करलेता है, इसी से सब देवताभी नहुषको नहीं देखते छिपे छिपे घूमाकिरते हैं २६

---

destroying the world" 20. "Having got the kingdom of gods by the grace of gods and rishis," replied Vrihaspati, "Nahush is now persecuting us." 'How did Nahush get the kingdom of gods, ?' asked Indra, "What sort of asceticism had he done and what powers does he possess ?' "The gods in consternation wanted to fill up the post," replied Vrihaspati, "When you had left the throne vacant The gods, the pitris, the gandharvas and the rishis went together to Nahush and asked him to become Indra the protector of the three worlds But Nahush said that he was too weak and could not be their king unless they gave him power. So the gods gave him power and glory and he was anointed king of gods But he has proved himself unworthy of such a high post as he makes the rishis carry his palanquin.

एवंवदत्यङ्गिरसांवरिष्ठेबृहस्पतौलोकपालःकुबेरः । वैवस्वतश्चैवयमःपुराणोदेवश्चसोमो वरुणश्चाजगाम ॥ २७ ॥ तेवैसमागम्यमहेन्द्रमूचुर्दिष्ट्यात्वाष्ट्रोनिहतश्चैववृत्रः । दिष्ट्याचत्वांकुशलिनमक्षतञ्चपश्यामोवैनिहतारिञ्चशक्र ॥ २८ ॥ सतानयथावच्चहि लोकपालान्समेत्यवैप्रीतमनामहेन्द्रः । उवाचचैनानप्रतिभाष्यशक्रः सञ्चोदयिष्यन्नहुषस्यान्तरेण ॥ २९ ॥ राजादेवानांनहुषोघोररूपस्तत्रसाह्यंदीयतांमेभवद्भिः । तेचाब्रुवन्नहुषोघोररूपोदृष्टीविषस्तस्यबिभीमईश ॥ ३० ॥ त्वञ्चेद्राजानंनहुषंपराजयेस्ततोवयंभागमर्हामशक्र । इन्द्रोऽब्रवीद्भवतुभवानपाम्पतिर्यमःकुबेरश्चमयाभिषेकम् ॥ ३१ ॥ सम्प्राप्नुवन्त्वद्यसहैवदेवतैरिपुंजयामतंनहुषंघोरदृष्टिम् । ततःशक्रंज्वलनोप्याहभागंमम

राजाशल्य बोले कि बृहस्पतिजी ऐसा कहरहेहैथे कि लोकपाल कुबेर व यमराज चन्द्रमा वरुण आये । २७ । व सब एकत्रहो इन्द्रजी से बोले कि बड़े हर्षकी बातहै कि त्वष्टा के पुत्र वृत्रासुरको आपने मारडाला, व यह बड़ेही भाग्यकी बात है कि शत्रुको तो मार डाला पर अपने शरीर में कहीं घाव नहीं लगा । २८ । ऐसी बड़ाई सुन इन्द्रजी कुबेरादिकों से अच्छी तरह मिल इन सब लोकपालों से नहुषकी बुद्धि में भेदकरवाने के लिये बोले । २९ । यह देवताओंका राजा नहुष बड़ा घोररूप है उसके मारने में आप लोग हमारी सहायताकरें वे लोग बोले कि हां नहुष तो बड़ा घोररूप है वह तो देखतेही तेजबल खींचलेता है इससे हमलोग भी बहुत डर से डरते हैं । ३० । जो तुम नहुष राजाको पराजितकरो तो हम लोगभी अपना २ भाग पावें इन्द्रने कहा वरुण आप फिर जलपतिहों, व कुबेरजी तुमकोभी हमने तुम्हारे अधिकार पर बैठाया । ३१ । अब देवगणों के संग अपना भाग ग्रहणकरो घोर दृष्टि नहुष शत्रुको हम मारडालेंगे तब अग्नि

You must not look Nahush in the face as he draws to himself the power and glory of every one he looks at. The gods themselves remain concealed and donot go before him." While Vrihaspati was thus saying the, lokpals, Kuver, Yam, Chandra and Varun came there and said to Indra, "We are happy to hear that you have killed Vritrasur the son of Twashtri. It was very creditable to you that you killed such a formidable enemy without yourself receiving a wound." Indra was much pleased to receive such praises and received the gods very affectionately. Then, to turn their minds from Nahush, he said, "Nahush the king of gods is very formidable, you will have to help me in killing him." And they replied, "Certainly, Nahush is very powerful and he attracts to himself the glory of others by his mere look. We stand much in fear of him. 30. We shall get our shares on your killing Nahush." And Indra said, "You

च्छलग्नं त्वसाह्यकारिष्ये। तथाहशक्रोभवितागेतवापिचेन्द्र भ्यागैर्भागमएकोमहाकतौ॥ ३२
शल्यउवाच। एवंसञ्चिन्त्यभगवानमहेन्द्र पाकशासन। कुबेरंसर्वयक्षाणांधनानाञ्च
मश्वरंतथा॥ ३३॥ वैवस्वतंपितृणांचवरुणंआप्यपतितथा। आधिपत्यंददौशक्रःसञ्चि
न्त्यवरदस्तथा॥ ३४॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणिसेनोद्योगपर्वणि इन्द्रवरुणादिसम्वादे
षोडशोऽध्यायः॥ १६॥

शल्यउवाच। अथसञ्चिन्तयानस्य देवराजस्यधीमतः। नहुषस्यवधोपायंलोक
पालैःसदैवतैः॥ १॥ तपस्वीतत्रभगवानगस्त्यः प्रत्यदृश्यत। सोऽब्रवीदर्च्यदेवेन्द्रं
दिष्ट्यावैवर्द्धसेभवान॥ २॥ विश्वरूपविनाशेनवृत्रासुरवधेनच। दिष्ट्याचनहुषो
भ्रष्टोदेवराज्यात्पुरन्दर। दिष्ट्याहतारिंपश्यामिभवन्तंबलसूदन॥ ३॥ इन्द्रउवाच।

अग्नि ने भी इन्द्र से कहा हमाराभी भाग लगाइये हमभी आपके सहायहोंगे। ३२। इन्द्र ने कहा तुम्हाराभी भाग यज्ञमें होगा पर हमारे साझेमें, राजाशल्य बोले, कि इसप्रकार चिन्तवनकर सब धनों व यक्षों के राजा कुबेरजी को बनाया। ३३। व यमराज को पितरों का राजा तथा वरुणजी को जलका ऐसा विचार इन्द्र ने इन लोगोंको इनके अधिकार फिर सौंपदिया ३४॥

अध्याय १७॥

राजाशल्यबोले, लोकपालों व देवताओं के सङ्ग बैठे इन्द्रजी नहुष के मारने का उपाय विचार रहे थे। १। कि इतने में महातपस्वी अगस्त्यजी वहां आये, व इन्द्रकी बड़ाई करते हुये बोले कि बड़े भाग्यकी बातहै जो आप बढ़ते हैं २ विश्वरूपका विनाश हो किया था व वृत्रासुरके वधपर बड़े हर्षकी बात यह हुई जो नहुष देवराज्य से नीचे

---

will again be the lord of waters, Varun; I reinstall you again on your former post, Kuver. Receive your respective shares along with the other gods. I shall kill Nahush of dreadful eyes" Agni too, wanted a share for himself and promised to help Indra. Indra consented to participate in the sacrifices with Agni. Kuver was made the lord of the yakshas as well as of all wealth; Yam was made the king of piturs and Varun of water Thus Indra gave each of them his former post 34.

CHAPTER XVII

While Indra was thus consulting with the gods about the destruction of Nahush, the great ascetic Agastya came there and after giving praises to Indra, said, "Happy are we to see you rising. We congratulate you for killing Vritrasur after the destruction of

स्वागतंतेमहर्षेस्तुप्रीतोऽहंदर्शनाच्च । पाद्यमाचमनीयञ्चगामर्घ्यञ्चप्रतीच्छमे ॥ ४ ॥ शल्यउवाच । पूजितंचोपविष्टंतमासनेमुनिसत्तमम् । पर्यपृच्छतदेवेशःप्रहृष्टोब्राह्मणर्षभम् ॥ ५ ॥ एतदिच्छामिभगवन्कथ्यमानंद्विजोत्तम् । परिभ्रष्टःकथंस्वर्गान्नहुषःपापनिश्चयः ॥ ६ ॥ अगस्त्यउवाच । शृणुशक्रप्रियंवाक्यंयथाराजादुरात्मवान् । स्वर्गाद्भ्रष्टोदुराचारोनहुषोबलदर्पितः ॥ ७ ॥ श्रमार्तास्तुवहन्तस्तंनहुषंपापकारिणम् । देवर्षयोमहाभागास्तथाब्रह्मर्षयोऽमलाः ॥ ८ ॥ पप्रच्छुर्नहुषंदेवसंशयंजयतांवर । यइमेब्रह्मणाप्रोक्तामन्त्रावैप्रोक्षणेगवाम् ॥ ९ ॥ एतेप्रमाणंभवतउताहोनेतिवासव । नहुषोनेतितानाहतमसामूढचेतनः ॥ १० ॥ ऋषयऊचुः । अधर्मेसंप्रवृत्तस्त्वंधर्मंनप्रतिपद्यसे ।

गिराया गया । ३। यह सुन इन्द्रजी बोले हे महर्षिजी आपका अच्छा आगमन हुआ, हम आपके दर्शन से बहुत प्रसन्न हुये, अर्घ्य पाद्याचमनीय व सुन्दरवाणी हम से लीजिये ।४। राजाशल्य बोले कि इसप्रकार पूजाकर सुखपूर्वक आसनपर बैठाय महर्षिवहो इन्द्रजी ब्राह्मणों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी से बोले कि ।५। हे भगवन् हमारे यह सुनने की इच्छा है कि पापी नहुष स्वर्गसे कैसे भ्रष्टहुआ । ६ । अगस्त्यजीने कहा, हेइन्द्र यह प्रिय वचन सुनिये जैसे दुष्टात्मा, दुराचारी, व बल के मारे महा अहंकारी राजानहुष स्वर्गसे भ्रष्ट-हुआ । ७ । पापी नहुषको कन्धोंपर पालकीमें चढ़ाये घूमते २ एक दिन हम महर्षि-लोग व देवर्षि थकी थककर । ८ । नहुषसे पूंछनेलगे हेजीतनेवालोंमें श्रेष्ठ हमलोगों को एक संशयहै कि जो ब्रह्माजीहीने गाइयों के प्रोक्षण करनेकेलिये मंत्र बनाये हैं, वे प्रमाणयुक्तहैं या नहीं । ९ । यह सुन मूर्ख नहुष ने कहा उन मन्त्रोंका प्रमाण नहींहै । १० । तब ऋषियोंने कहा अधर्मी तुम लोगोंहो धर्म कहांसे पाओ इन मन्त्रोंका प्रमाण

Vishwarup; but the most happy news is the fall of Nahush." On hearing this, Indra welcomed Agastya and said, 'Happy are we to see you, accept our offering of *arghya, padya, achmaniya* and soft words." Having worshipped and given a seat to the best of Brahmans Indra asked of him very cheerfully how sinful Nahush had fallen from heaven and Agastya replied, " Hear the happy news how that ill natured and wicked Nahush boastful of his power fell down from heaven. We, the Maharshis and Devarshis were carrying sinful Nahush on our shoulders and when we were very tired we said to him. " A doubt has risen to us, best of conquerers. Can the *mantras* made by Brahma for purifying cows stand the test of proof ?" On hearing this the fool replied that they were not reliable. 10. The rishis remarked that as he was going astray from

प्रमाणमेतदस्माकंपूर्वंप्रोक्तमहर्षिभिः ॥ ११ ॥ अगस्त्यउवाच । ससोविवदमानःस मुनिभिःसहवासव । अथमामस्पृशन्मूर्ध्निपादेनाधर्मपीडितः ॥ १२ ॥ तेनाभूद्धततेजाश्च निःश्रीकश्चमहीपतिः । ततस्तंतमसाविग्नमवोचंभृशपीडितम् ॥ १३ ॥ यस्मात् पूर्वैःकृतंराजन्ब्रह्मर्षिभिरनुष्ठितम् । अदुष्टंदूषयसिमेयच्चमूर्ध्न्यस्पृशःपदा ॥ १४ ॥ यच्चापित्वमृषीन्मूढब्रह्मकल्पान्दुरासदान् १५ वाहान्कृत्वावाहयसितेनस्वर्गाद्धतप्रभः । ध्वंसपापपरिभ्रष्टःक्षीणपुण्योमहीतले ॥ १६ ॥ दशवर्षसहस्राणिसर्परूपधरोमहान् । विचरिष्यसिपूर्णेषुपुनःस्वर्गमवाप्स्यसि ॥ १७ ॥ एवंभ्रष्टोदुरात्मासदेवराज्याद्रिन्दम । दिष्ट्यावर्द्धामहेशक्रहतोब्राह्मणकण्टकः ॥ १८ ॥ त्रिविष्टपंप्रपद्यस्वपा

महर्षियोंने इसके पूर्वही कह रक्खाहै । ११ । अगस्त्यजीने कहा, हेइन्द्रजी इसप्रकार ऋषियोंके साथ विवाद करतेहुये नहुष दुष्टने हमारे शिरमें अपनी लात छुवादी । १२ । पश्च उसीसे उसका तेज हत होगया व श्रीरहित होगया तब मारे भयके भीतहुये उस दुष्टसे हमने कहा ।१३। जिससे सबसे पूर्वज परमेश्वरके बनायेहुये व ब्रह्मर्षियों के अनुष्ठान कियेहुये मंत्रोंको तुम दूषतेहो जो अदूषहैं, व हमारे शिरमें अपना पैर तुमने छुवा दिया । १४ । व जोकि ब्रह्मतुल्य ब्रह्मर्षियोंको तुमने वाहन बनाय है ।१५। इनकर्मोंसे तुम पापी स्वर्गसे भ्रष्टहो व पुण्यक्षीणहो पृथ्वीतलपर जावो ।१६। दशहजार वर्षतक सर्परूप धारणकिये पृथ्वीपर विचरोगे फिर स्वर्गमें आवोगे ।१७। इसप्रकार वह दुरात्मा देवराज्य से भ्रष्टहुआ बड़े भाग्यकी बात है अब हम सब बढ़ेंगे ब्राह्मणोंका कंटक दुष्टहत होगया ।१८। अब देवलोकमें चल तीनोंलोकोंकी रक्षा कीजिये क्योंकि शत्रुओंको जीतइन्द्रियां इन्द्रि-

---

dharm he could not know such things and that the testimony of rishis for those mantras was already in existence. During this controversy Nahush grew hot and touched my head with his foot. His glory and prowess at once vanished away and I said to the terrified wretch: " Because you have found fault with the Mantras made by god, used by rishis of old and without defect; because you have touched my head with your foot and because you have made the most holy and revered rishis to be your palanquin bearers, you will fall from paradise on earth, losing the merit of your former good deeds. For ten thousand years you will wander on earth in the form of a serpent and then you will be taken again into paradise." Thus the wicked man lost the kingdom of heaven. We shall now be happy as the thorn of Brahmans has been destroyed. You may now go to paradise to protect the three worlds. You will kill your enemies and will

हिलोकानद्य चीपते । जितेन्द्रियोजितामित्रःस्तूयमानोमहर्षिभिः ॥ १९ ॥ शल्यउवाच ततोदेवाभृशंतुष्टामहर्षिगणसंवृताः । पितरश्चैवयक्षाश्चभुजगाराक्षसास्तथा ॥ २० ॥ गन्धर्वादेवकन्याश्चसर्वेचाप्सरसांगणाः । सरांसिसरितःशैलाःसागराश्चविशाम्पते ॥ २१ ॥ उपागम्याब्रुवन्सर्वे दिष्ट्यावर्द्धसिशत्रुहन् । हतश्चनहुषःपापो दिष्ट्यागस्त्ये नधीमता । दिष्ट्यापापसमाचारःकृतःसर्पोमहीतले ॥ २२ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि इन्द्रागस्त्यसम्वादे नहुष भ्रंशे सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

शल्य उवाच । ततःशक्रःस्तूयमानो गन्धर्वाप्सरसांगणैः । ऐरावतंसमारुह्यद्विपेन्द्रं लक्षणैर्युतम् ॥ १ ॥ पावकःसुमहातेजा महर्षिश्चबृहस्पतिः । यमश्चवरुणश्चैव कुबेरश्च

थोंको जीत व महर्षियों से स्तुति पा सुखीही रहोगे तो रक्षा करतेही रहोगे ।१९। राजा शल्यने कहा देव, महर्षि, पितर, यक्ष, गन्धर्व, नाग, निशाचर सब नहुषके गर्वनाशको सुनकर प्रसन्नहुये ।२०। यह सुनकर कि नहुष सर्प होकर पृथ्वीपर गिरेगा देवसुता और अप्सरागण नदी और पहाड़ोंपर प्रसन्नहुये ।२१। सबने मिलकर कहा कि हेरिपुनाशन सुरराज बड़ा नहुषको अगस्त्य मुनिने मारकर देवताओंका बड़ा कार्य कियाहै बड़े भाग्य की बातहै कि वहपापी सर्पहुआ और भूमिपर गिरा इससे उसका सब गर्व नाशहुआ २२॥

अध्याय १८ ॥

राजा शल्यने कहा कि उस के पीछे गंधर्व व अप्सराओं ने इन्द्रकीही बड़ी स्तुति की व देवराज सब लक्षण संयुक्त ऐरावत हाथीपर चढ़े । १ । महातेजस्वी अग्नि महर्षि

---

protect us and be happy, controlling your organs and receiving praises from Maharishis." The gods, Maharshis, Pitars, yakshes, gandharvas, nagas and night-rovers were all pleased to hear of the fall of Nahush. The goddess and apsaras were pleased everywhere to hear that Nahush would fall down in the likeness of a serpent They unanimously said, "May you grow strong ! destroyer of enemies ! Agastya has done great kindness to gods by causing the fall of Nahush. We are happy to hear that the sinner has become a serpent and has fallen down on the Earth and will boast no longer. 22.

CHAPTER XVIII

King Shalya continued: "The gandharvas and apsaras then gave praises to Indra. Having mounted Airavat the famous elephant and accompanied by the glorious Agni, Vrihaspati, the Brahmarshi,

धनेश्वरः ॥ २ ॥ सर्वैर्देवैःपरिवृतः शक्रोवृत्रनिषूदनः । गन्धर्वैरप्सरोभिश्च यातस्त्रिभुवनंप्रभु ॥३॥ ससमेत्यमहेन्द्राण्यादेवराजःशतक्रतुः । मुदापरमयायुक्तःपालयामासदेवराट् ॥४॥ ततःसभगवांस्तत्र अंगिरासमदृश्यत । अथर्ववेदमन्त्रैश्चदेवेन्द्रंसमपूजयत् ॥ ५ ॥ ततस्तुभगवानिन्द्रः संहृष्टःसमपद्यत । वरञ्चप्रददौतस्मै अथर्वाङ्गिरसेतदा ॥ ६ ॥ अथर्वाङ्गिरसोनाम वेदेऽस्मिन् वैभविष्यति । उदाहरणमेतद्धि यज्ञभागञ्चलप्स्यसे ॥ ७ ॥ एवंसम्पूज्य भगवानथर्वाङ्गिरसंतदा । व्यसर्जयन्महाराज देवराज शतक्रतुः ॥ ८ ॥ सम्पूज्य सर्वांस्त्रिदशानृषींश्चापि तपोधनान् । इन्द्रःप्रमुदितोराजा धर्मेणापालयत्प्रजाः ॥ ९ ॥ एवंदुःखमनुप्राप्त मिन्द्रेणसहभार्य्यया । अज्ञातवासश्चकृतः शत्रूणांवधकांक्षया ॥१०॥ नात्रमन्युस्त्वयाकार्य्यो यत् क्लिष्टोऽसिमहा-

---

बृहस्पति, यमराज, वरुण, धनकेस्वामी कुबेरजी। २। व अन्य सब देवताओं अप्सराओं गंधर्वों सहित वृत्रासुरके मारनेवाले इन्द्रजी अपने स्वर्गकोगये। ३। व अपनी इन्द्राणी के साथ परमानन्दितहो देवराज त्रिभुवनका पालन करनेलगे। ४। तिसके पीछे वहां अथर्व वेदके अधिकारी अंगिरा मुनि दिखाईदिये, व उन्होंने अथर्व वेदके मन्त्रोंसे इन्द्रकी पूजा की। ५। उस के पीछे भगवान् इन्द्रने बहुत हर्षितहो अंगिराजीको वरदानदिया।६। कि जिसमे अंगिराजीने हमारी पूजा अथर्व वेदके मन्त्रों से की है इससे इस अथर्व वेदके अधिकारी अंगिराजीहुये व इस वेदका अथर्वांगिरस नाम हुआ व अंगिराजी आजसे यज्ञ में भाग पायाकरें। ७। ऐसी रीतिसे अंगिराजीकी पूजाकर देवराजने उनको प्रसन्नता पूर्वक विदाकिया। ८। फिर सब देवताओं व ऋषियोंकी पूजाकर अति हर्षितहो इन्द्र जी धर्मसे प्रजाओंका पालन करनेलगे। ९। इस रीतिसे स्त्री सहित इन्द्र ने यह बड़ा दुःखपाया, व शत्रुओंके मारने के लिये छिपकर जलके भीतर रहेथे। १०। इस से

Yamraj, Varun, Kuver the lord of wealth and other gods, Indra the destroyer of foes went to paradise and being very happy at the reunion of his wife he began to rule the three worlds. Then came there Angira the Muni invested with the authority of the Atharva Veda and worshipped Indra with the hymns of that Veda. Indra was much pleased with Angira and said, " As Angira has worshipped me with the hymns of the Atharva Veda, he will be an authority of the Atharva Veda which will henceforth be named Atharvangiras and he will get share in sacrifices from this day. Having thus requited angira, Indra bade him farewell with a cheerful heart and having worshipped the gods and rishis, began to rule his subjects justly and cheerfully." Indra and his wife had thus borne the great miseryand remained concealed under water to kill the enemies. 10. You should

वने। द्रौपद्यासहराजेन्द्र भ्रातृभिश्चमहात्मभिः ॥ ११ ॥ एवंत्वमपिराजेन्द्र राज्यंप्रा प्स्यसिभारत। वृत्रंहत्वायथाप्राप्तः शक्रःकौरवनन्दन ॥ १२ ॥ दुराचारश्च नहुषो ब्रह्मद्विट्पापचेतनः। अगस्त्यशापाभिहतो विनष्टःशाश्वतीःसमाः ॥ १३ ॥ एवंतवदु रात्मानः शत्रवःशत्रुसूदन। क्षिप्रंनाशंगमिष्यन्ति कर्णदुर्योधनादयः ॥ १४ ॥ ततः सागरपर्यन्तां भोक्ष्यसेमेदिनीमिमाम्। भ्रातृभिःसहितोवीर द्रौपद्याचसहानया १५ उपाख्यानमिदंशक्र विजयंवेदसम्मितम्। राज्ञाव्यूढेष्वनीकेषु श्रोतव्यंजयमिच्छता ॥ १६ ॥ तस्मात्संश्रावयामित्वां विजयंजयतांवर। संस्तूयमानावर्द्धन्ते महात्मानो युधिष्ठिर ॥ १७ ॥ क्षत्रियाणामभावोऽयं युधिष्ठिर महात्मनाम्। दुर्योधनापराधेन भीमार्जुनबलेनच ॥ १८ ॥ आख्यानमिन्द्रविजयं यइदंनियतःपठेत्। धूतपाप्माजि-

---

द्रौपदी व अपने महात्मा भाइयों समेत जो महावनमें आपने क्लेशपाया उसका खेद न करो। ११। जैसे वृत्रासुरको मार इन्द्रजीने अपना राज्यपाया ऐसेही आपभी राज्य पावैंगे। १२। देखो ब्राह्मणोंका वैरी पापी दुराचारी नहुष अगस्त्यजीके शापसे दशहजार वर्षतेकलिये नष्टहोगया। १३। ऐसेही दुराचारी कर्ण दुर्योधनादि तुम्हारे शत्रुभी शीघ्रनष्ट होजायँगे। १४। तब इन द्रौपदीके व अपने भाइयोंके साथ समुद्र पर्य्यन्त इस पृथ्वीका राज्य आप भोगकरोगे, । १५। हे राजन् यह वेदतुल्य इन्द्रकी विजयका उपाख्यान विजयकी इच्छा कियेहुये राजाको सेनाकी तैयारीके समयमें सुनना चाहिये। १६। हे जीतनेवालोंमें श्रेष्ठ इसीसे आपको हमने यह इन्द्र विजय सुनायाहै जिससे महात्माओंका स्तुति करनेसे बढ़ते हैं। १७। हे युधिष्ठिरजी दुर्योधनके अपराधसे व भीमार्जुनके बल से सब महात्मा क्षत्रियोंका अभाव होजायगा। १८। यह इन्द्रकी

---

not mind the troubles which you with Draupadi and brothers have borne in the forest. You will regain your kingdom as Indra had done after killing Vritrasur. See, Nahush of bad nature, the enemy of Brahmans was annihilated for ten thousand years by the course of Agastya. In the same manner, your enemies, Karan, Duryodhan and other wicked ones will be destroyed and you, with Draupadi and brothers, will rule the Earth to the verge of the Ocean. A king wishing for conquest should hear, at the time of sending forth his army this account of Indra's victory like Vedic lore. It is for this reason, Yudhishthir, that I have given you this account of the victory of Indra whose praises cause great men to grow. All the great Kshatryas will be destroyed by the fault of Duryodhan and the prowess of Bhim

तस्वर्गः परत्रेहचमोदते ॥ १९ ॥ नचारिजंभयंतस्य नापुत्रोवाभवेन्नरः। नापदंमाप्नुयात् काश्चिद्दीर्घमायुश्च विन्दति । सर्वत्रजयमाप्नोति नकदाचित्पराजयम् ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमाश्वासितोराजा शल्येनभरतर्षभ । पूजयामास विधिवच्छल्यं धर्मभृताम्वरः ॥ २१ ॥ श्रुत्वातुशल्यवचनं कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । प्रत्युवाचमहाबाहुर्मद्रराजमिदंवचः ॥ २२ ॥ भवानकर्णस्यसारथ्यं करिष्यतिनसंशयः । तत्रतेजोवधः कार्यः कर्णस्यार्जुनसंस्तवैः ॥ २३ ॥ शल्य उवाच । एवमेतत्करिष्यामि यथामांसंप्रभाषसे । यच्चान्यदपिशक्ष्यामि तत्करिष्याम्यहंतव ॥ २४ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्त्वामन्त्र्य कौन्तेयाञ्छल्यो मद्राधिपस्तदा । जगाम सबलः श्रीमान् दुर्योधनमरिन्दम ॥ २५ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि शल्य गमने अष्टदशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

स्वर्गका आख्यान को पुरुष इन्द्रियों को अपने वशमें कर पढ़े वह पापरहितहो स्वर्गजीत वहां यहां सुखी रहे ।१९ व उसको शत्रुसे उत्पन्न भय कभी न हो न वह पुत्रहीन कभीहो व न कोई विपत्ति उसको कभी हो, व बड़ी लम्बी आयुष उसकीहो, सब कहीं वह जयपावे पराजय उसकी कभी नहो। २० । वैशम्पायनजी बोले कि इसप्रकार शल्य राजा ने राजा युधिष्ठिरजी को बहुत समझाया तो उन्हों ने शल्यकी बड़ी पूजा की। २१ । व शल्यके वचन सुन कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर मद्रदेशके राजा शल्यसे यह वचन बोले। २२। आप कर्ण के सारथी अवश्य हूजिये जिससे अर्जुन कर्ण का वध करे शल्य ने कहा कि मैं निस्सन्देह ऐसाही करूंगा और इसके अतिरिक्त तुम्हारा जो कार्य हो वह करूंगा यह कहकर शल्य पाण्डवों से मिलकर दुर्य्योधन के पास गया २५ ॥

---

and Arjun. Whoever, having control over his organs, will hear this account will be absolved from all his sins, will go to paradise and will be happy there as well as here. He will have no enemy nor will he lack son. He will never fall into misery, will have long life, will conquer everywhere and will never suffer a defeat." 20. Vaishampayan said that on hearing the above from Shalya, Yudhishthir worshipped him and spoke to him as follows:—" You must become Karan's driver, so that Arjun may destroy him." Shalya promised to do this and expressed his willingness to do this as well other things that Yudhishthir might desire him to do. Shalya the king of Madra then asked leave of Yudhishthir and went with his army to where Duryodhan was. 25.

वैशम्पायन उवाच । युयुधानस्ततोवीरः सात्वतानांमहारथः । महताचतुरङ्गेण बलेनागाद्युधिष्ठिरम् ॥१॥ तस्ययोधामहावीर्य्या नानादेशसमागताः । नानाप्रहरणा वीराःशोभयाञ्चक्रिरेबलम् ॥२॥ परश्वधैर्भिन्दिपालैः शूलतोमरमुद्गरैः । परिघैर्यष्टिभिःपाशैः करवालैश्चनिर्मलैः ॥ ३ ॥ खड्गकार्मुकनिर्व्यूहैः शरैश्चविविधैरपि । तैलधौतैःप्रकाशद्भिः सदाशोभतवैबलम् ॥४॥ तस्य मेघप्रकाशस्यसौवर्णैःशोभितस्य च । बभूवरूपंसैन्यस्य मेघस्येवसविद्युतः ॥५॥ अक्षौहिणीतुसासेना तदायौधिष्ठिरंबलम् प्रविश्यान्तर्दधेराजन् सागरंकुनदीयथा ॥ ६ ॥ तथैवाक्षौहिणींगृह्य चेदीनामृषभोबली धृष्टकेतुरुपागच्छत् पाण्डवानमितौजसः ॥ ७ ॥ मागधश्चजयत्सेनो जरासन्धिर्महाबलः । अक्षौहिण्यैवसैन्यस्य धर्मराजमुपागमत् ॥ ८ ॥ तथैवपाण्ड्योराजेन्द्र सागरानु

अध्याय १९ ॥

वैशम्पायनजी जनमेजयसे बोले कि सात्वत वंशियों का महारथ युयुधान वीर बड़ीभारी चतुरङ्गिनी सेना ले युधिष्ठिरके पास आया १। इसमहारथकी युयुधान अर्थात् सात्यकिकी नानादेशोंसे सेना आई, उस में नानाप्रकार के आयुध धारणकिये वीर सेना को शोभितकरते थे २ ये आयुध वीरों के पास थे, फरसा, पनवांसी, शूल, बरछी, मुद्गर, भाला, लाठी, फांसी, बालों से मूंठ बनी हुई तलवार ३ खड्ग, धनुष, व विविध प्रकार के बाण, ये सब मलदके चमाचम थे इनसे सेना शोभित थी ।४। इन अस्त्र शस्त्रों से शोभित वह दल व दल सेना बिजुली सहित बादलही के समान शोभित हुई ।५। यह ऐसी एक अक्षौहिणी सेना युधिष्ठिर की सेना में प्रवेश कर कैसी दिखाई दी जैसे समुद्र में कोईछोटी सी नदी जामिले ।६। इसीतरह एक अक्षौहिणी सेना ले महाबली चन्देरी का राजा धृष्टकेतु अमित पराक्रमी पाण्डवों की सहाय को आया ।७। व जरासन्ध का पुत्र बड़ा बलवान् जयत्सेन मगधदेश का राजाभी एक अक्षौहिणी सेनाले पाण्डवोंके यहां आया ।८। व ऐसेही समुद्रतट निवासियोंके

CHAPTER XIX

Vaishampayan said to Janmejaya that Yuyudhan the great warrior of Satwat dynasty came with a large army to the help of Yudhishthir The army of Yuyudhan or Satyaki consisted of the people of different countries. The brave soldiers bore weapons of different sorts, such as the battle axe, the javelin, the spear, the club, the staff, the noose, the sword, the sabre, the bow and arrows of different sorts, all shining and polished. The army equipped with shining weapons looked like clouds and lightning. An akshauhini of such army joined Yudhishthir's forces as a small river unites with the ocean. The powerful king of Chandeli, named Dhrishtketh came with an akshauhini of army to the help of the Pandavas and Jayatsen ... of great power, the king of Magadh and son of Jarasandh bro...

पत्त्यासिभिः । वृतो बहुविधैर्योधैर्युधिष्ठिरमुपागमत् ॥ ९ ॥ तस्य सैन्यमतीवासीत्तस्मिन् बलसमागमे । प्रेक्षणीयतरं राजन् सुवेशं बलवत्तदा ॥ १० ॥ द्रुपदस्याप्यभूत् सेना नानादेशसमागतैः । शोभिता पुरुषैः शूरैः पुत्रैश्चास्य महारथैः ॥ ११ ॥ तथैव राजा मत्स्यानां विराटो वाहिनीपतिः । पार्वतीयैर्महीपालैः सहितः पाण्डवानियात् १२ ॥ इतश्चेतश्च पाण्डूनां समाजग्मुर्महात्मनाम् । अक्षौहिण्यस्तु सप्तैता विविधध्वजसंकुलाः ॥ ॥ १३ ॥ युयुत्समानाः कुरुभिः पाण्डवान् समहर्षयन् । तथैव धार्तराष्ट्रस्य हर्षं समभिवर्द्धयन् ॥ १४ ॥ भगदत्तो महीपालः सेनामक्षौहिणीं ददौ । तस्य चीनैः किरातैश्च काञ्चनैरिव संवृतम् ॥ १५ ॥ बभौ बलमनाधृष्यं कर्णिकारवनं यथा । तथा भूरिश्रवाः शूरः शल्यश्च कुरुनन्दन ॥ १६ ॥ दुर्योधनमुपायातावक्षौहिण्या पृथक्पृथक् । कृतवर्मा च हार्दिक्यो भोजान्धकुकुरैः सह ॥ १७ ॥ अक्षौहिण्यैव सेनाया दुर्योधनमुपागमत् ।

सङ्ग लिये पाण्डीचरी का राजा बहुत योधों को संगलिये युधिष्ठिर के पास आया । ९ । इस राजा की सेना इस सब सेना में सबसे अधिक देखनेके योग्य थी । १० । उसी समय राजा द्रुपद की बड़ी धूमधाम से सेना आई इसमें नानादेश के लोग थे व महारथी उन के पुत्रही बड़े धीरथे । ११ । व ऐसेही मत्स्य देश का राजा विराट पर्वती सेना लिये पाण्डवों के समीप आया । १२ । इसतरह इधर उधर से महात्मा पाण्डवोंके यहां सात अक्षौहिणी सेना आई इनमें सबके ध्वजादि चिन्ह और २ प्रकार के थे । १३ । व सब सेनावाले कौरवोंसे लड़ने की इच्छा किये पाण्डवों को हर्षित करते थे, ऐसेही दुर्योधनादिकों को हर्ष बढ़ाती हुई । १४ । पूर्व के समुद्र के किनारे के राजा भगदत्त ने एक अक्षौहिणी सेना दी, इस राजाकी सेना में चीन देश व किरात देश के लोग इतना सुवर्ण धारण किये थे जिसके कारण वह सेना कठचम्पा के वन के समान शोभित होती थी । १५ । ऐसेही भूरिश्रवा व शल्य राजा १६ एक २ अक्षौहिणी सेना ले दुर्योधन के पास आये, व भोज अन्धक कुकुर वंशियों सहित कृतवर्मा

the same number of forces. In the same manner, the king of Pondichery came to help Yudhishthir with a large number of soldiers residing by the sea coast. The army of this king was worth seeing above all the others. At the same time Drupad's army came there with great pomp and accompanied with his valliant sons. King Virat of the Matsya country also came there with his army of hill tribes. Thus, the armies of different kings who came to assist the Pandavas, amounted to seven akshauhinis strong. The armies of different kings bore different sorts of standards and badges and were intent on fighting against the Kauravas and pleasing the Pandavas. In a like manner, Bhagdatt, the king of the country on the coast of the Eastern sea, gave an akshauhini of army to please Duryodhan and others. The soldiers of this army, coming from

तस्वतः कुरुरूप्याग्रैर्वनमालाधरैर्वलम् ॥ १८ ॥ अशोभतयथामत्तैर्वनंप्रक्रीडितैर्गजैः। जयद्रथमुखाश्चान्ये सिन्धुसौवीरवासिनः ॥ १९ ॥ आजग्मुःपृथिवीपालाः कम्पयन्त इवाचलान्। तेषामक्षौहिणी सेना बहुलाविबभौतदा ॥ २० ॥ विधूयमानोवातेन बहुरूपइवाम्बुदः। सुदक्षिणश्चकाम्बोजो यवनैश्चशकैस्तथा ॥ २१ ॥ उपाजगाम कौरव्य मक्षौहिण्याविशाम्पते। तस्यसेनासमावायः शलभानामिवाबभौ ॥ २२ ॥ सच सम्प्राप्यकौरव्यं तत्रैवान्तर्दधेतदा। तथामाहिष्मतीवासी नीलोनीलायुधैःसह ॥२३॥ महीपालो महावीर्यैर्दक्षिणापथवासिभिः। आवन्त्यौचमहीपालौ महाबलसुसंवृतौ ॥ २४ ॥ पृथगक्षौहिणीभ्यांता वभियातौ सुयोधनम्। कैकेयाश्चनरव्याघ्राः सोदर्याः पञ्चपार्थिवाः ॥ २५ ॥ संहर्षयन्तःकौरव्यमक्षौहिण्या समाद्रवन्। ततस्ततस्तुसर्वेषां

१७ एक अक्षौहिणी ले दुर्योधन की सहायता को आया, इस राजाकी सेनामें सब पुरुष सिर वनमाला धारण किये थे। १८। इससे वह सेना मतवाले हाथियोंकी कीड़ासे युक्त वनके समान शोभित होतीथी, ऐसेही जयद्रथादि सिन्धु सौवीरदेशवासी। १९। राजा-लोग, पर्वतोंको कंपातेही से आये, इन लोगोंकी बड़ीभारी सेना ऐसी शोभितहोती थी कि। २०। जैसे पवन से उड़ायाहुआ बादल शोभित होताहै, व काम्बोज देश का राजा सुदक्षिण। २१। एक अक्षौहिणी लेआया, इसकी सेनाका समूह टीड़ियोंके झुंडके समान शोभित होताथा। २२। वह दुर्योधन की सेनामें आकर गुप्तहोगया क्योंकि वहांभी तो बड़ीभारी सेना इकट्ठीथी, ऐसेही माहिष्मतीपुरी के रहनेवाला नीलनाम राजा नीलही रंगके आयुधलिये। २३। व दक्षिण देशके निवासियोंको संगलिये आया, व अवन्तीपुरीके दोराजा जो कि बड़े बलवान् व पराक्रमीथे बड़ीभारी। २४। एक २ अक्षौहिणी लेकर दुर्योधनके समीप आये, व केकय देशके राजा पांच सगेभाई। २५।

the countries of China and Kirat, with their gold ornaments, looked like a forest of yellow flowers in bloom. In the same manner Bhurishrava and Shalya, each of them, brought an akshauhini of forces to help Duryodhan. Kritvarma too brought with him an akshauhini of Bhojas, Andhaks. All the warriors of this army wore flower garlands round their necks and looked like a forest full of mad elephants. In the same manner, Jayadrath and others, of the countries of Sindhu and Sauvir, came down as if they would shake the mountains. Their armies looked as beautiful as the clouds by the wind. Sudakshin the king of Kamboj brought an akshauhini of army which looked like a flight of locusts. His army entered Duryodhan's lists which had by this time swollen very much. ' Nil the king of Mahishmapuri with blue weapons, followed by the warriors of the South, came there and the two kings of Avanti-

भूमिपानांमहात्मनाम् ॥ २६ ॥ तिस्रोन्याःसमवर्त्तन्त वाहिन्योभरतर्षभ । एवमेकादशावृत्ताः सेनादुर्योधनस्यताः ॥ २७ ॥ युयुत्समानाः कौन्तेयान् नानाध्वजसमाकुलाः । नहास्तिनपुरे राजन्नवकाशोऽभवत्तदा ॥ २८ ॥ राज्ञांस्वबलमुख्यानां प्राधान्येनापिभारत । ततःपञ्चनदञ्चैव कृत्स्नञ्चकुरुजाङ्गलम् ॥ २९ ॥ तथारोहितकारण्यं मरुभूमिश्चकेवला ॥ अहिच्छत्रंकालकूटं गङ्गाकूलञ्चभारत ॥ ३० ॥ वारणंवाटधानं च यामुनश्चैवपर्वतः । एषदेशःसुविस्तीर्णः प्रभूतधनधान्यवान् ॥ ३१ ॥ बभूवकौरवेयाणां बलेनातीवसंवृतः । तत्र सैन्यंतथायुक्तं ददर्शसपुरोहितः ३२ यःसपाञ्चालराजेन प्रेषितःकौरवान् प्रति ॥ ३३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि सेनोद्योगपर्वणि पुरोहितसैन्य दर्शने एकोनविंशोऽध्यायः ॥ १९ ॥

समाप्तञ्च सेनोद्योगपर्व ॥

दुर्योधनको हर्षित करातेहुये एक अक्षौहिणी लेकरआये । २६ । इसतरह जहां तहां के महात्मा राजाओंकी तीनसेना और बनगई हेभरतर्षभ । २७ । इसतरह दुर्योधनके ग्यारह अक्षौहिणी सेनाहोगई, वेसब पांडवोंसे युद्ध करनेको नानाप्रकारके ध्वजा सहित रथोंसे समाकुलथीं । २८ । ऐसा हुआ कि हस्तिनापुर में मुख्य २ सेना टिकनेकाभी अवकाश न मिला । २९ । इससे सब पञ्चनददेश, व कुरु जांगलदेश रोहितवन मरुदेश । ३० । अहिच्छत्र प्रदेश, कालकूट, व गंगाकूल, वारण वाटधान, यमुनोत्तरी पर्वत । ३१ । यह सब प्रकार के अन्नोंसे संयुक्त देश कुरुवंशियोंकी सेनासे भरगया । ३२ । ऐसी सेना उस पुरोहितने जा देखी जिसे राजा द्रुपदने दुर्योधनादिकों के समझाने को भेजाथा । ३३ ।

---

pari, who were very strong and full of prowess, brought an akshauhini of army separately. And the kings of Kakaya, five brothers, brought an akshauhini to please his father. The kings of other places brought together three large armies. Thus Duryodhan had collected eleven akshauinis, all ready to fight for the Pandavas, under different banners. 28. There was no room in Hasthinapur to put even the leading men and therefore the several armies had to be lodged in Panchnad, Kurujungle, Rohit forest, Maru, Ahichatra, Kalkut, Gangakul, Varan, Batdhan, Yamnottari hill and other countries abounding in food. The priest of Drupad, sent as ambassador to Duryodhan, witnessed the collection of those armies. 33.

अथ संजययान पर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । सचकौरव्यमासाद्य द्रुपदस्यपुरोहितः सत्कृतोधृतराष्ट्रेण भीष्मेणविदुरेणच ॥१॥ सर्वंकौशल्यमुक्त्वादौ पृष्ट्वाचैवमनामयम् । सर्वसेनाप्रणेतॄणां मध्येवाक्यमुवाचह ॥ २ ॥ सर्वैर्भवद्भिर्विदितो राजधर्मःसनातनः । वाक्योपादानहेतोस्तुवक्ष्यामिविदितेसति ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्रश्चपाण्डुश्चसुतावेकस्यविश्रुतौ । तयोःसमानं द्रविणंपैतृकंनात्रसंशयः ॥ ४ ॥ धृतराष्ट्रस्ययेपुत्राः प्राप्तास्तेपैतृकंवसु । पाण्डुपुत्राः कथंनामनप्राप्ताः पैतृकंवसु ॥ ५ ॥ एवंगतेपाण्डवेयैर्विदितंवः पुरायथा । नप्राप्तंपैतृकंद्रव्यं धृतराष्ट्रेणसंवृतम् ॥ ६ ॥ प्राणान्तिकैरप्युपायैः प्रयतद्भिरनेकशः । शेषवन्तो नशकितानेतुंवैयमसादनम् ॥ ७ ॥ पुनश्चवर्द्धितंराज्यंस्वबलेनमहात्मभिः । छद्मना

अध्याय २० ॥

वैशम्पायनने कहा कि जब वह राजा द्रुपदका पुरोहित कौरवोंकी सभामें पहुँचा उस का बड़ाभारी सत्कार धृतराष्ट्र भीष्म व विदुरजीने किया । १ । फिर उसनेभी अपनी कुशल कह व कौरवोंकी कुशलपूंछ सब सेनापतियोंके बीचमें बैठ सभोंकी ओरदेख वचन कहा । २ । कि आप सबलोग राजाओंका सनातन धर्म जानतेहैं इससे आप लोगोंसे इसका उत्तर लेनेकेलिये यद्यपि विदितहै तौभी हम कुछ कहेंगे । ३ । धृतराष्ट्र व पाण्डु एकही विचित्र वीर्यहीके पुत्रहैं, इससे पिताके धनमें दोनोंका भाग समानहै इसमें कुछभी संदेह नहीं । ४ । उनमें धृतराष्ट्रके पुत्रोंने तो पितृ पितामहादिकोंका धनपाया व पा- ण्डुके पुत्रोंने किसीतरह पितृ पितामहादिकोंका धन न पाया । ५ । वह आपलोग जान तेहीहैं कि धृतराष्ट्रके पुत्रों ने ऐसा धनका आच्छादनकिया कि पाण्डुपुत्रोंको कुछ भी न मिला, । ६ । यहांतक कि उनके प्राणान्त होनेके लियेभी अनेक उपाय किये परन्तु उनकी आयुष बाकीथी इससे मारे न मरसके । ७ । फिर उन महात्माओंने अपने बल

CHAPTER XX

Vaishampayan said to Janmejaya that the priest of king Drupad was received with great respect at the court of the Kauravas by Dhritrashtra, Bhishma, and Vidur. After exchange of greetings he sat in the midst of warriors and looking at all of them he addressed the assembly as follows:- "You all know the duties of kings and therefore I have come to receive your reply although it is known already: Dhritrashtra and Pandu were the sons of the same father, Vichitravirya, and therefore had equal shares in the heritage of their father. Of these two, the sons of Dhritrashtra have got all the patrimony, while those of Pandu are totally deprived of it. You all know that the sons of Dhritrashtra have kept all the wealth for themselves and have given the sons of Pandu nothing

पद्दहंसुद्रेर्गीर्षैराद्रैः ससौवकैः ॥ ८ ॥ तदप्यनुमतकर्णयथायुक्तमनेन वै । वासितास्वम हारण्येवर्षाणीहत्रयोदश ॥ ९ ॥ सभायांक्लिशितैर्वीरै सहभार्यैस्तथाभृपम् । अरण्ये विविधाःक्लेशाःसम्प्राप्तास्तैःसुदारुणाः ॥ १० ॥ तथाविराटनगरेयोन्य-तरगतैरिव । प्राप्त.परमसंक्लेशोयथापापैर्महात्मभि ॥ ११ ॥ तेसर्वपृष्ठतःकृत्वातत्सर्वपूर्वकिल्विषम् सामैवकुरुभिःसार्द्धंमिच्छन्तिकुरुपुङ्गवाः ॥ १२ ॥ तेषाञ्चवृत्तमाज्ञायवृत्तंदुर्योधनस्य च । अनुनेतुमिहार्हन्तिधार्तराष्ट्रंसुहृज्जनाः ॥ १३ ॥ नाहितेविग्रहंवीराःकुर्वन्तिकुरुभिः सह । अविनाशेनलोकस्यकांक्ष-तेपाण्डवाःस्वकम् ॥१४॥ यश्चापिधार्तराष्ट्रस्यहेतुःस्या द्विग्रहंप्रति । सचहेतुर्नमन्तव्योबलीयांसस्तथाहिते ॥ १५ ॥ अक्षौहिण्यश्चसप्तैवधर्मसु

से कुरुराज्य पहाया, यह शकुनि के साथमिल धृतराष्ट्रके पुत्रोंने छलसे जुआ खिलवाकर छीनलिया । ८ । उसकोभी कुन्ननहींकहते जो हुआ सोहुआकही हुआ, फिर उसपरभी संतोष न हुआ उनवेचारे पाण्डवोंको तेरह वर्षकेलिये बनवास दिवागया । ९ । फिर भी सभामें उनलोगों को सभामें अत्यन्त क्लेशदियेगये फिर बनमें नानाप्रकार के दारुणक्लेश उनकोमिले । १० । फिर विराटनगरमें उन महात्माओंने ऐसे क्लेश पाये जैसे पापी लोग अन्ययोनि,में उत्पन्न होकर पातेहैं व उनका स्मरण नहीं करते । ११ । परन्तु वे पाण्डवलोग उन सब पहाके किये कराये पापों को पीछे डाल कुरुवंशियों से मिलापही चाहते हैं । १२ । इससे उन लोगोंके वृत्तान्त व दुर्योधनकेभी आप्त सुहृद लोगोंको चाहिये कि दुर्योधनको समझावें । १३ । वेवीर कुरुओं के संग विग्रह नहीं करते, यह चाहतेहैं कि लोकका विनाश नहो व हम अपनाराज्य पायजायें । १४ । व जो हेतु दुर्योधनकाहै कि वे लोग हमसे दुर्बलहैं इससे मिलाप चाहते हैं हम इनको जीतलेंगे यह हेतु आप लोगों को न मानना चाहिये क्योंकि वेलोग बड़े भारी बलवानहैं दुर्बल किसी प्रकार से नहींहैं । १५ । इसी सातअक्षौहिणी सेना युधिष्ठिरके बड़ा इकट्ठीहैं,

They tried their best to make away with the Pandavas, but the latter did not die as the days of their lives were not over and when the Pandavas had extended their empire by the strength of their arms, the sons of Dhritrashtra deprived them of it in the deceitful game of dice played by the help of Shakuni Not satisfied with these atrocities they sent them away for thirteen years in exile. The Pandavas and their wife were disgraced in various ways in the open court and they suffered much in the exile 10 Again in the city of Virat they suffered great hardships such as sinful men suffer in various transmigrations and yet have no recollection of them But the Pandavas would overlook all their former wrong and would make peace with the Kauravas For these reasons, knowing the deeds of the Pandavas and of Duryodhan, the friends of the latter should

मस्तमस्तता। युयुत्सयानाःकुरुभिः प्रतीक्षन्तेऽस्यशासनम् ॥ १६ ॥ अपरेपुरुषव्याघ्रा सहस्राक्षौहिणीसमाः। सात्यकिर्भीमसेनश्चयमौचसुमहाबलौ ॥ १७ ॥ एकादशैताःपृतना एकतश्चसमागताः । एकतश्चमहाबाहुर्बहुरूपीधनञ्जयः ॥ १८ ॥ यथाकिरीटीसर्वाभ्यःसेनाभ्योऽप्यतिरिच्यते । एवमेवमहाबाहुर्वासुदेवोमहाद्युतिः ॥ १९ ॥ बहुलत्वञ्चसेनानांविक्रमञ्चकिरीटिनः। बुद्धिमत्ताञ्चकृष्णस्यबुद्ध्वायुध्येत्कोनरः ॥ २० । तेभवन्तोयथाधर्मंयथासमयमेवच । प्रयच्छन्तुप्रदातव्यं माभः कालोऽत्यगादयम् ॥ २१ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि पुरोहितयाने विंशोऽध्यायः ॥ २० ॥

व सब कौरवोंके संग लड़नेको तैयारहैं केवल महाराज धर्मपुत्रकी आज्ञाहीकी राहदेखते हैं। १६ । इनके सिवाय और पुरुष सिंहहैं जो हजारों अक्षौहिणियों के समान एक २ हैं जैसे सात्यकि, भीमसेन, नकुल व सहदेव। १७। व इधरभी ग्यारह अक्षौहिणी सेना इकट्ठी हैं, व उधर बहुरूपी महाबाहु अर्जुनहैं। १८। व जैसे अर्जुन सब सेनाओंसे बढ़हैं वेसेही महाद्युतिमान् भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजीभी हैं। १९। फिर सेनाका बहुत होना, व अर्जुनका विक्रम, तथा कृष्णचन्द्रजी की बुद्धिमत्ता जान ऐसा कौन मनुष्यहै जो उनसे युद्ध करे। २०। बुद्धिसे समय को विचार जो उत्तर आप देनाचाहें शीघ्रदें वृथा समय न गवावें। २१।

---

give him proper advice. Those brave men have no enmity with the Kauravas nor do they like bloodshed. They want only their kingdom Duryodhan's plea, that the Pandavas are weak and therefore sue for peace, is not founded on truth, for they are very powerful and far from being helpless. Yudhishthir has collected seven akshauhinis ready to fight the Kauravas and awaiting the order of Yudhishthir. Besides these, there are other warriors who can singly cope with thousands, such as Satyaki, Bhim, Nakul and Sahadev. On this side, too, there are eleven akshauhinis, but on that side is Arjun who of great prowess, capable of assuming many forms and like him, Bhagwan ShreeKrishn is over and above those armies. Who will choose to fight against such a large army after knowing of the prowess of Arjun and the wisdom of Krishna? 20. After fully considering what to do at this occasion, you must give me a suitable reply without loss of time. 21.

वैशम्पायनउवाच । तस्यतद्वचनंश्रुत्वाप्रज्ञावृद्धोमहाद्युतिः । सम्पूज्यैनंयथाकालं भीष्मोवचनमब्रवीत् । दिष्ट्याकुशलिनः सर्वे सहदामोदरेणते । दिष्ट्यासहायवन्तश्चदिष्ट्याधर्मेचतेरताः ॥ २ ॥ दिष्ट्याचसन्धिकामास्तेभ्रातरःकुरुनन्दनाः । दिष्ट्यानयुद्धमनसःपाण्डवाःसहबान्धवैः ॥ ३ ॥ भवतासत्यमुक्तं तु सर्वमेतन्नसंशयः । अति तीक्ष्णन्तुतेवाक्यं ब्राह्मण्यादितिमेमतिः ॥ ४ ॥ असंशयंक्लेशितास्तेवनेचेहच पाण्डवाः । प्राप्ताश्चधर्मतःसर्वंपितुर्धनमसंशयम् ॥ ५ ॥ किरीटीबलवान्पार्थःकृतास्त्रश्चमहारथः । कोहिपाण्डुसुतंयुद्धे विसहेतधनञ्जयम् ॥ ६ ॥ अपिवज्रधरःसाक्षात्

अध्याय २१ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि पुरोहित के ऐसे वचन सुन काल के अनुसार पूजा कर महातेजस्वी व बुद्धि अवस्था दोनों से वृद्ध भीष्मपितामहजीने कहा । १ । बड़े भाग्यकी बातहै कि कृष्णचन्द्र सहित सब पाण्डव कुशल पूर्वकहैं, बड़े भाग्य की बातहै कि उनलोगों को सहायकभी मिले हैं व बड़े भाग्यकी बात है कि वे अपने धर्म हीमें रतहैं । २ । व बड़े भाग्यकी बातहै जो वेलोग कौरवों से मिलापही चाहते हैं, व बड़े भाग्यकी बातहै जो पाण्डवलोग अपने भाई कौरवों के साथ युद्ध नहीं किया चाहते ३ आपने सत्यही कहा यह ऐसा हीहै इसमें कुछ सन्देह नहीं परन्तु जो आपने अतितीक्ष्ण वचनकहा वह ब्राह्मण हैसेही कहा यहभी हमारे चित्त में आता है । ४ । इसमें भी संशय नहीं पांडवलोगों को यहां व वनमेंभी क्लेशमिला, व धर्म से उन लोगोंने अपने पितृ पितामहोंका सब धनभी नहीं पाया इसमेंभी सन्देह नहीं । ५ । व अर्जुन अस्त्र-विद्यामें कुशल बलवान् व महारथी हैं युद्ध में उनको कौन सहसकेगा यह भी ठीकहै ६

CHAPTER XXI

Vaishampayan said that having heard the priest and worshipped him as the occasion required, Bhishma the grandfather, of great glory and old in wisdom as well as in age, spoke out: "It is by great good fortune that Krishna and the Pandavas are safe and sound, that they have got allies, that they are firm in their religion, that they are desirous of peace with the Kauravas and are not intent on fighting against their brothers. You have spoken the truth, but the harsh words that you have uttered were methinks not worthy of a Brahman. There is no doubt that the Pandavas have suffered many wrongs here as well as in the *forest* and have not got the just share of their patrimony. Arjun is, as you say, clever in the use of weapons, strong

किमुतान्येधनुर्भृतः । त्रयाणामपिलोकानांसमर्थइतिमेमतिः ॥ ७ ॥ भीष्मेणुक्तातिद्वा मयंधृष्टमाक्षिप्यमन्युना । दुर्योधनंसमालोक्यकर्णोवचनमब्रवीत् ॥ ८ ॥ नतत्राविदि तंब्रह्मन्लोकेभूतेनकेनचित् । पुनरुक्तेनकिन्तेनभाषितेनपुनःपुनः ॥ ९ ॥ दुर्योधना र्थेशकुनिर्द्यूतेनिर्जितवान्पुरा । समयेनगतोऽरण्यंपाण्डुपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ १० ॥ सतं समयमाश्रित्यराज्यंनेच्छतिपैतृकम् । बलमाश्रित्यमत्स्यानांपाञ्चालानाञ्चमूर्खवत् ॥ ११ ॥ दुर्योधनोभयाद्विद्वन्नदद्यात्पादमन्ततः । धर्मतस्तुमहींकृत्स्नांप्रदद्याच्छत्र वेऽपिच ॥ १२ ॥ यदिकांक्षन्तितेराज्यंपितृपैतामहंपुनः । यथाप्रतिज्ञंकालंतंचरन्तुवन

क्योंकि वे हैं साक्षात् इन्द्रभी आवें तौभी न लड़ेहोसकें फिर अन्यधनुर्द्धारियों की क्यागणना, हमतो जानतेहैं कि वे तीनों लोकोंके जीतनेमें समर्थहैं । ७ । भीष्मजीके ऐसा कहतेही कि उनका निरादरकर दुर्योधनकी ओर देख बड़ी ढिठाईसे मारे क्रोधके कर्ण ने ऐसा कहा । ८ । हेमहात्मनदेव पांडवों के पराक्रम जो बातें तुमने कहीं उनको लोकमें ऐसा कोई प्राणी नहीं जो न जानताहो फिर बार २ उनबातों के कहनेकी कौन आवश्यकताहै । ९ । हां दुर्योधनकी ओरसे शकुनि जुआं खेलनेमें आगेही युधिष्ठिर को जीत लियाथा उस में बन जानेकी प्रतिज्ञा होगई थी इससे वेवनको चलेगये । १० । व उस तेरहवर्षके बितानेके समयकी राहपारहेथे इससे उन्होंने अपने पितृ पितामहोंका राज्य नहीं लेनाचहा पर यह समयतो अबभी नहीं बीता केवल मत्स्य देशके राजा व पाञ्चाल देशके राजा द्रुपदके बलपर मूर्खोंके समान राज्यलिया चाहते हैं । ११ । सो हे विद्वन् भयसे तो दुर्योधन आधा क्या चौथाईभी राज्य नदेंगे, व धर्म सेतो संपूर्ण पृथ्वी शत्रु कोभीदेदें । १२ । जो वेलोग अपने पितृ पितामहादिकोंका राज्य फिर लेना चाहते हैं

---

and valliant; who will dare to resist him in battle? For, even Indra himself cannot withstand him, nothing to say of other archers. Methinks he is capable of conquering the three worlds." Karan heard these words of Bhishma with contempt and looking towards Duryodhan, he spoke out the following daring words in anger:- "The exploits of the Pandavas are known throughout the world. There was no need of repeating them here. Of course, Shakuni defeated the Pandavas at dice for the sake of Duryodhan and they had to go into exile as a part of their agreement and made no attempt to regain the throne of their forefathers because they had promised to remain thirteen years in exile. But the time is not yet come and they are foolishly desiring to regain the kingdom on the strength of the Kings of Matsya

माश्रिताः ॥ १३ ॥ ततोदुर्योधनस्याङ्केवर्तेरन्नकुतोभयाः । अधार्मिकींतुमाबुद्धिंमौर्ख्यात्कुर्वन्तुकेवलात् ॥ १४ ॥ अथतेधर्ममुत्सृज्ययुद्धमिच्छन्तिपाण्डवाः । आसाद्येमान्कुरुश्रेष्ठान्स्मरिष्यन्तिवचोमम ॥ १५ ॥ भीष्मउवाच । किंनुराधेयवाचातेकर्मतत्स्मर्तुमर्हसि एकएवयदापार्थः षड्रथान्जितवान्युधि ॥ १६ ॥ बहूञ्जित्वायथानस्त्वं कर्मदृष्टंतदैवते । नचेदेवंकरिष्यामोयदयं ब्राह्मणोऽब्रवीत् । ध्रुवंयुधिहतास्तेनभक्षयिष्यामपांशुकान् ॥ १७ ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ धृतराष्ट्रस्ततोभीष्ममनुमान्यप्रसाद्य च । अवभर्त्स्यचराधेयमिदंवचनमब्रवीत् ॥ १८ ॥ अस्मद्धितंवाक्यमिदंभीष्मः शान्तनवोऽब्रवीत् । पाण्डवानांहितंचैवसर्वस्यजगतस्तथा ॥ १९ ॥ चिन्तयित्वातु

तो अबसे फिर तेरह वर्षतक जाय वनमें बसें क्योंकि उनकी प्रतिज्ञा नहीं पूर्णहुईथी कि उनका पता मिलगयाथा । १३ । फिर चाहोंतो निर्भयहो दुर्योधन के समीप बैठें, मूर्खतासे केवल अधर्म्मिकी बुद्धि न करें । १४ । नहीं जो धर्म्मछोड़ पाण्डवलोग युद्धकी करनेकी इच्छा करते हैं तो इन सब कौरवोंके सामने आ हमारे वचनका स्मरण करेंगे । १५ । इतनासुन फिर भीष्मजीने कहा कि कर्ण तुम्हारे इस वचनसे क्याहै अर्जुनका वह कर्म स्मरणकरो, जोकि अकेलेही उन्होंने हम तुम सब छः महारथों को विराटनगर में जीत लिया । १६ । व उसीसमय बहुतलोगों को जीतते हुए उनका कर्म तुमने देखाहै इससे जैसा ये ब्राह्मण देव कहते हैं जो हम लोग वैसा न करेंगे तो निश्चय है कि समर में अर्जुन के मारेहुए पृथ्वीपर परे धूर फाँकेंगे । १७ । वैशम्पायनजीबोले कि जब भीष्मजी ने ऐसा कहा तो धृतराष्ट्रभी उनकी बड़ाई कर व प्रार्थनाकर व कर्ण को बहुत फटकार ऐसा बोले । १८ । कि शन्तनुजी के पुत्र भीष्मजी ने जो कहा है यह हमारे हितकी बात है

and Panchal II Duryodhan may give up the whole earth for the sake of dharm but for fear he will not part with a fourth even of the kingdom, nothing to say of the half. They must live in exile for another period of thirteen years, if they want to regain the kingdom of their fore fathers, for they were discovered before the end of the thirteenth year. They will be allowed to sit near Duryodhan at the end of that period, but they must not try foolishly to gain it unjustly. If the Pandavas are intent on making an unjust war they will have to rue when they come before the Kauravas" On hearing this, Bhishma said again," Why do you boast Karan? Remember the exploits of Arjun how singly he overcame us six warriors, at the city of Virat You have seen him conquering our great army at the same time, If, therefore, we will not do as this Brahman says, our bodies shall surely kiss the ground by the weapons of Arjun." Vaishampayan said to Janmejaya that Dhritrashtra praised the wisdom of Bhishma

पार्थेभ्यः प्रेषयिष्यामिसञ्जयम् । सभवानप्रतियात्वद्य पाण्डवानित्यमाचिरम् ॥ २० ॥ सतंसत्कृत्यकौरव्यः प्रेषयामासपाण्डवान् । सभामध्येसमाहूय सञ्जयं वाक्य मब्रवीत् ॥ २१ ॥ इतिमहाभारते उद्योपर्वणि सञ्जययानपर्वणि पुरोहितयाने

एकविंशोऽध्यायः ॥ २१ ॥

धृतराष्ट्रउवाच । प्राप्तानाहुःसञ्जयपाण्डुपुत्रान्उपप्लव्येतान्विजानीहिगत्वा । अ-जातशत्रुञ्चसभाजयेथादिष्ट्यानघस्थानमुपस्थितस्त्वम् ॥१॥ सर्वान्वदेःसञ्जयस्वस्ति पन्तः कृच्छ्रंवासमतदर्हानिरुष्य । तेषांशान्तिर्विद्यतेऽस्मासुशीघ्रंमिथ्योपेतानामुपकारि णांसताम् ॥ २ ॥ नाहंक्वचित्सञ्जयपाण्डवानांमिथ्यावृत्तिंकाञ्चनजात्वपश्यम् । सर्वांश्रियंह्यात्मवीर्येणलब्धांपर्याकार्षुः पाण्डवामह्यमेव ॥ ३ ॥ दोषंह्येषांनाध्यगच्छं

व पाण्डवों के तथा सब जगत् के हितकी है। १९। संजय को बुलाकर हम पाण्डवों के समीप भेजेंगे और संजय पाण्डवों की सभा में जाकर विनय और आदर पूर्वक वचन कहेगा तत्पश्चात् राजाने संजयको सभा में बुलाकर कहा। २१।

अध्याय २२ ॥

धृतराष्ट्रजी सञ्जयसे बोले हे सञ्जय सब कहते हैं कि पांडवलोग दुःख सह साथ आये हैं, इससे वहां जाकर उनके समाचार जानो, युधिष्ठिरसे ऐसा कह उनका आदर करना कि बड़े भाग्यकी बातहै जो आप अपने स्थानको प्राप्तहुये। १। व सबसे कहना कि हम सब बहुत अच्छी तरह हैं, क्योंकि वे लोग कष्टसहित वासके योग्यभी न थे तथापि बनवासकर आये तौभी वे हमलोगोंकी ओर निष्कपट व उपकारीही बनेहैं व शांति रखते हैं।२। हे सञ्जय हमनेकहीं कोई भी पांडवों की कभी मिथ्यावृत्ति नहीं देखी, प उनलोगोंने अपने वीर्यसे जोधन लक्ष्मीपायाथो सब हमको देदिया।३। हम पार्थोंको परत

and admonished Karan, he said, "Bhishma the son of Shantanu has given us a good advice which is beneficial to us as well as the Pandavas and all the world. I shall send Sanjaya to the Pandavas, for he knows all. He will go to the Pandavas and will say to them in the midst of the assembly with great humility." He then called Sanjaya in the court and said. 21.

CHAPTER XX11

"We hear, Sanjay" said Dhritrashtra, "that the Pandavas have returned after suffering great hardships. Please go to them to ascertain all about them. Tell him that it is by goodness of fortune that he has come back. Tell them that we are all well here. They have come back after exile and borne hardships to which they were not accustomed and bear no enmity towards us. We have never seen, Sanjaya, any trace of falsehood among them. They have given us

परीच्छनिरदेकञ्चिद्येनगर्हेयपार्थान् । धर्मार्थाभ्यांकर्मकुर्वन्तिनित्यंसुखप्रियास्तेनानुरुध्यन्तिकामात् ॥ ४ ॥ धर्मशीतंक्षुत्पिपासेतथैवनिद्रांतन्द्रींक्रोधहर्षौप्रमादम् । धृत्या चैवप्रज्ञयाचाभिभूयधर्मार्थयोगान् प्रयतन्तिपार्थाः ॥ ५ ॥ त्यजन्तिमित्रेषुधनानिकाले नसंवासाज्जीर्यतितेषुमैत्री । यथार्हमानार्थकरादिपार्थास्तेषांद्वेष्टानास्त्यजमीढपक्षे ६ अन्यत्रपापाद्विषमान्मन्दबुद्धेर्दुर्योधनात् क्षुद्रतराच्चकर्णात् । तेषांहीमौहीनसुखप्रियाणां महात्मनांसञ्जनयतोहितेजः ॥ ७ ॥ उत्थानवीर्यःसुखमेधमानोदुर्योधनः सुकृतंमन्यतेतत् तेषांभागंयच्चमन्येतबालः शक्यंहर्तुंजीवतांपाण्डवानाम् ॥ ८ ॥ यस्यार्जुनःपदवीं केशवश्चवृकोदरः सात्यकोऽजातशत्रोः । माद्रीपुत्रौसृञ्जयाश्चापियान्ति पुरायुद्धात्साधुतस्यप्रदानम् ॥ ९ ॥ सह्येकःपृथिवींसव्यसाची गाण्डीवधन्वाप्रणुदेद्रथस्थः

देखिरहे पर उनके गोंमें कोई ऐसा एकभी दोष न पाया जिससे उनकी निंदाकरें, वे सदा धर्म के अर्थ व धनके अर्थ कामकरते हैं व सुखकेलिये तथा पुत्रादि प्रियके लिये धर्म नहीं छोड़ते न कामोंको रोकते हैं। ४। व पार्थलोग, घाम, जाड़ा, भूख, प्यास, नींद, आलस, क्रोध, हर्ष, व प्रमाद, इनको धारणा व बुद्धि से तिरस्कारकर धर्म के अर्थ उपाय करतेहैं ५ वे लोग समयपर मित्रोंको धनदेदेते हैं, व बहुत दिन एकत्र रहने से मैत्रीनहीं मिटादेते, यथोचित मान व धन मित्रोंका करतेहैं, उनका वैरी राजा अजमीढ़के पक्षमें कोईनहीं है ६ हा पापी विषमबुद्धि दुर्योधन व क्षुद्रस्वभाव कर्ण इनदोनों को छोड़, क्योंकि येदोनों सुख रहित प्रिय व महात्मा लोगोंका क्रोध दर्प बढ़ाया करते हैं। ७। व कार्यके आरम्भ में वीर्य करनेवाला फिर चाहे कार्यहो वा न हो सदासुख चाहनेवाला यह दुर्योधन पाण्डवों के जीते जो उनके भागका हरलेना योग्य मानताहै यह इसकी मूर्खता है। ८। युधिष्ठिर के अनुयायी अर्जुन, श्रीकृष्णचन्द्र, भीमसेन, सात्यकि, नकुल, सहदेव व सञ्जय दि हैं, इस से युद्धहोने से प्रथमही उनका भागदेदेना अच्छा है। ९। क्योंकि अकेले एक

all the wealth which they had acquired by the strength of their arms In spite of all our tests we have found no defect in them worthy of note They are always engaged in acts of virtue and never forsake dharm for the sake of pleasure or kinsmen They have their organs under control The Pandavas over come heat cold, hunger, thirst, sleep, laziness, anger, pleasure and pain with wisdom and are diligent in doing dharm. They give money to their friends in the time of need and donot quarrel with friends however long they may live with them They give respect and wealth to their friends and have no enemy in the family of Ajmirh except the foolish Duryodhan and ill natured Karan who both increase the anger of great men Duryodhan who is very noisy in the beginning of deeds and then taking small care of it, because of his love of ease, is foolish enough to think he is

तथाजिष्णुःकेशवोऽप्यमधृष्यो लोकत्रयस्याधिपतिर्महात्मा ॥ १० ॥ तिष्ठतकस्तस्य मर्त्यःपुरस्ताद्यःसर्वलोकेषुवरेण्यएकः । पर्जन्यघोषान्प्रवपन्शरौघान्पतङ्गसंघानि वशीघ्रवेगान ॥ ११ ॥ दिशंह्युदीचीमपिचोत्तरान् कुरून्गाण्डीवधन्वैकरथोजिगाय धनंचैषामाहरत्सव्यसाचीसेनानुगान्द्राविडांश्चैवचक्रे ॥ १२ ॥ यश्चैवदेवान्सखाण्डवेसव्यसाचीगाण्डीवधन्वाप्रजिगायसेन्द्रान् । उपाहरत्फाल्गुनोजातवेदसे यशोमानंवर्धयन्पाण्डवानाम् ॥१३॥ गदाभृतांनास्तिसमोऽत्रभीमाद्धस्त्यारोहोनास्तिसमश्चतस्य रथेऽर्जुनादाहुरहीनमेनं बाह्वोर्बलेनायुतनागवीर्यम् ॥ १४ ॥ सुशिक्षितःकृतवैरस्तरस्वी

अर्जुनही रथपर चढ़ गांडीव धन्वा ले, पृथ्वीभर को भगादेंगे व वैसेही वरन उनसे भी अधिक तीनोंलोकों के स्वामी महात्मा जीतलेने के स्वभाववाले श्रीकृष्णचन्द्र हैं जिन के सामने कोईभी ढिठाई नहीं करसक्ता । १० । व जो श्रीकृष्णचन्द्रजी मेघ समान शब्दकरते हुये बाण समूहोंको पांखियों के समान जल्दचलते हुये केवल, वरदान ही मांगने के योग्य हैं न लड़ने के भला उनके सामने युद्धकरने को कौन मनुष्य खड़ा होगा हाथजोड़ वरदान भले मांगले । ११ । देखो अकेले अर्जुन उत्तर कुरुदेश व उनके उधारी उत्तर दिशा रथपर चढ़ जीतआये, व उनका धन हर लाये व दक्षिण समुद्र के तटपर द्राविड़देश के रहनेवालों को भी अपना अनुयायी करलिया । १२ । व जिन अर्जुन ने गांडीव धन्वा के खाण्डव वनमें इन्द्रसहित सब देवगणों को जीतलिया, वह वन अग्नि को देदिया इस से पाण्डवों का कितना यशमान हुआ । १३ । व गदाधारियों में भाग कल भीमसेन के तुल्य दूसरा कोई नहीं, व हाथियों को चढ़ानेवालाभी उनके समान कोई नहीं व रथपरभी चढ़ने में अर्जुन से न्यून इनको कोई नहीं कहते, व बाहों में दी उन

---

justified in usurping the share of the Pandavas during their lifetime. Yudhishthir has for his allies Arjun, Shree Krishna, Bhimsen, Satyaki, Nakul, Sahadeva, Sanjaya and others, it is therefore good to give their share without war. For, Arjun alone riding on his chariot with the Gandiva bow, can defeat all the world. Likewise no one can withstand Shree Krishna the lord of the three worlds and a conquerer by nature whose swift arrows make a sound like that of rain and of whom one get everything with asking and none with fighting. Arjun, alone on his chariot, had conquered the northern Kurus and the districts lying to the north of them and having seized their wealth he also subdued the Dravidians residing at the shore of the Southern sea. He conquered Indra and other gods with his Gandiva bow in the forest of Khandava and gave the forest to Agni,

स्वीदं हि शुद्धात्तर साधार्थं राष्ट्रान। सदात्यमर्षी न च क्लान्तसत्त्वः शक्यो युद्धे जेतुं वासवेनापि साक्षात् ॥ १५ ॥ सुचेतसौ बलिनौ शीघ्रहस्तौ सुशिक्षितौ भ्रातरौ फाल्गुनेन । श्येनौ यथा पक्षिपूगान् रुजन्तौ माद्रीपुत्रौ क्षपयेतां न शत्रून् ॥ १६ ॥ एतद्बलं पूर्णमस्माकमेवं यत्तत्सत्यं तान्प्राप्य नास्तीति मन्ये । तेषां मध्ये वर्तमानस्तरस्वी धृष्टद्युम्नः पाण्डवानामिहैकः ॥ १७ ॥ सहामात्यः सोमकानां नरेन्द्रः सन्त्यक्तात्मा पाण्डवार्थे श्रुतो मे । अजातशत्रुं प्रसहेत कोऽन्यो येषां स स्यादग्रणीर्वृष्णिसिंहः ॥ १८ ॥ सहोषितश्चरितार्थो वयस्थो मात्स्येयानामधिपो वै विराटः । स वै सपुत्रः पाण्डवार्थे च शश्वद्युधिष्ठिरे भक्त इति श्रुतं मे ॥ १९ ॥ अवरु

के दशसहस्र हाथियोंका बलहै । १४ । व जो अच्छीतरह युद्ध विद्या सीखे, बैर करना जानते, वे भगवान् बड़े, सदा असहनशील, बड़े बलवान् हैं जिनको युद्ध में साक्षात् इन्द्र भी न जीतसके, ऐसे भीमसेन क्रोध करने पर तो सब हमारे सम्बन्धी दुर्योधनादिको भस्मकरडालेंगे । १५ । फिर बन में जिसको कहैं किसको न कहैं सुन्दर चित्तवाले, बल व न् शीघ्र हाथ चलानेवाले, अर्जुन से धनुर्विद्या अच्छी तरह सीखे हुये नकुल व सहदेव शत्रुओंमें एकको भी ऐसाजीता न रक्खेंगे जैसे बाजपक्षी उड़तेहुए पक्षियोंमें किसीको बाकी नहीं छोड़ते । १६ । व जो हमारे यह बलवान् भीष्मद्रोणादि सैन्य सत्य २ हैं इसको भी पांडवों के सामने हम तुच्छ समझते हैं इसकाभी किया कुछ न होगा, व उनपांड-वोंके मध्यमें धृष्टद्युम्न एक बड़ाभारी वेगवान् योधा वर्त्तमान है । १७ । हमने सुना है कि यह अपने मन्त्रियों समेत पांडवों के अर्थ आया है, फिर जिसके धृष्टद्युम्न ऐसा वृष्णिसिंह अगुवा है ऐसे युधिष्ठिर को कौन सहसकेगा । १८ । यहभी हमने सुनाहै कि विराटराजा युधिष्ठिर के साथ रात्रि दिन बैठता खेलताथा इस से उनकासखा होगया है व अपने पुत्र सहित युधिष्ठिर का भक्त है । १९ । व पांचभाई केकय देशके राजा

causing the fame of the Pandavas to spread throughout the world. No mace bearer is better than Bhimsen today. He is the best manager of elephant fighting and is as good a charioteer as Arjun. He has the strength of ten thousand elephants in his arms. He is very clever and dexterous in the art of war, unbearable and strong such as even Indra cannot defy. Bhimsen, when angry, will burn down Duryodhan and other kinsmen of ours. There are others too worthy of note: Nakul and Sahadev, of good nature, powerful, dexterous of hand, pupils of Arjun in the art of war, will leave no enemy alive as a hawk spares no bird. Our army headed by Bhishma and Drona is nothing before the Pandavas. It is powerless before them. Dhrishtadyumna, among the Pandavas, is a very dexterous warrior. We hear that he has come with his ministers to help the Pandavas. Who then, can withstand

दारायेन:कैकयेभ्योपहृत्वासाभ्रातरःपञ्चसन्ति । केकयेभ्योराज्यमाकांक्षमाणायुद्धा धिनश्चानुवसन्तिपार्थान ॥ २० ॥ सर्वांश्चवीरान्पृथिवीपतीनांसमागतांपाण्डवार्थेनि विष्टान । शूरानहंभक्तिमतः शृणोमिप्रीत्यायुक्तान्संश्रितान्धर्मराजम् ॥ २१ ॥ गि र्याश्रयादुर्गनिवासिनश्चयोधाःपृथिव्यांकुलजाविशुद्धाः । म्लेच्छाश्चनानायुधवीर्यवन्तः समागताःपाण्डवार्थेनिविष्टाः॥२२ पाण्ड्यश्चराजासमितीन्द्रकल्पोयुधिप्रवीरैर्बहुभिःसमे तः । समागतःपाण्डवार्थेमहात्मालोकप्रवीरोऽप्रतिवीर्यतेजाः ॥ २३ ॥ अस्त्रंद्रोणादर्जु नाद्वासुदेवात्कृपाद्भीष्माद्येनकृतंशृणोमि। यन्तंकार्ष्णिप्रतिमप्राहुरेकंससात्यकिःपाण्डवा र्थेनिविष्टः ॥ २४ ॥ उपाश्रिताश्चेदिकरूपकाश्चसर्वोद्योगैर्भूमिपालाःसमेताः । तेषांच

हैं उनको सब रथियों ने रोकरक्खा है इस से वे लोग केकयदेशवालों से राज्य लेनेकी इच्छा से पांडवों के अनुयायी हैं कि ये लोग हमाराराज्य हमको दिलादेंगे । २० । व हमसुनते हैं कि वीर राजा जितने हैं सब पांडवों के अर्थ आये हैं वे सब शूरवीर, बड़ी भक्तिसे व प्रीति से युधिष्ठिरकी सेवामें हैं । २१ । व सब पर्वतीराजा, अन्य कठिन स्थानों के रहनेवाले राजा, व और जो पृथ्वीमें बड़े २ कुलीनवृद्धहैं, व म्लेच्छभी नानाप्रकारके शस्त्र आयुध सहित पांडवोंके अर्थआये व वहांटिके हैं । २२ । व पाण्डुदेशका राजा जो समरमें इन्द्रहीके तुल्य है वह बहुतसे युद्धविशारद योधोंको संगले पांडवोंके अर्थ आया है यहभी महात्मा लोकमें बड़ाभारी वीर है व उसके समान वीर्य तेज किसी में नहीं । २३ । व जिसने द्रोणाचार्य, अर्जुन, श्रीकृष्णचन्द्र कृपाचार्य भीष्मपितामह सोंधे अस्त्रविद्यासीखी है व जिसको लोग प्रद्युम्न के समान कहतेहैं वह सात्यकिभी पांडवोंके अर्थ आया है व टिका है । २४ । व चेदि करूषादि देशोंके राजाभी, सब उपायों से तैयारहो पाण्डवों के अर्थ

Yudhishthir who has Dhrishtadyumna, a lion among Vrishnis, for his warrior. We hear that king Virat used to sit and play day and night with Yudhishthir and has therefore become a faithful friend of Yudhishthir together with his son. There are five brothers, the kings of Kaikaya, who have become the allies of the Pandavas because they wish to regain the kingdom of Kaikaya with their help.20. We also hear that the brave kings, who have come to help the Pandavas, serve Yudhishthir, with zeal and love. Kings of the mountainous and other impregnable places as well as the grand old men of noble families and the *mlechas* with different sorts of weapons are there to help the Pandavas. The king of the country of Pandu, a great warrior like Indra, has come to help the Pandavas with great many warrior and has no match, in the world. Satyaki has got instruction in the art of war from Dronacharya, Arjun, Shree Krishna, Kripacharya and Bhishma and is pronounced

भोमूर्य्यमिवातपन्तंश्रियावृतंचेदिपतिंज्वलन्तम् ॥ २५ ॥ असंभवनीयंयुधिमन्यमानोज्याकर्षतांश्रेष्ठतमंपृथिव्याम् । सर्वोत्साहंक्षत्रियाणांनिहत्यप्रसह्यकृष्णस्तरसासंममर्द ॥ २६ ॥ यशोमानौवर्द्धयनपाण्डवानांपुराभिनच्छिशुपालंसमीक्ष्य । यस्यसर्वेवर्द्धयन्तिस्मपानंकरूषराजप्रमुखानरेन्द्राः ॥ २७ ॥ तमसह्यंकेशवंतत्रमत्वासुग्रीवयुक्तेनरथेनकृष्णम् । केपाद्रुवंश्चेदिपतिंविहायसिंहंदृष्ट्वाक्षुद्रमृगाइवान्ये ॥ २८ ॥ यस्तंप्रतीपस्तरसाप्रत्युदीयादाशंसमानोद्वैरथेवासुदेवम् । सोऽशेतकृष्णेनहतःपरासुर्वातेनेवोन्मथितःकर्णिकारः ॥ २९ ॥ पराक्रमंमेयदवेदयंततेषामर्थेसञ्जयकेशवस्य । अनुस्मरंस्तस्यकर्माणिविष्णोर्गावल्गणेनाधिगच्छामिशान्तिम् ॥ ३० ॥ नजातुतान्शत्रुरन्यःसहेतयेषांसस्यादग्रणीर्वृष्णिसिंहः

भायेहैं, उनचेदिदेशके राजाओंमें सूर्य समान तपतेहुये, राज्य लक्ष्मीसे शोभित देदीप्यमान । २५ । समरमें और किसीके रोकनेके योग्यनहीं पृथ्वी में सब धनुर्द्धरोंमें श्रेष्ठ ऐसे चेदिराज शिशुपालको, क्षत्रियोंका उत्साह मिटा विवश । २६ । पाण्डवों का यश व मान बढ़ातेहुये जिन श्रीकृष्णचन्द्रजीने त्रिशूल चलाय मारडाला, जिनका मान सब करुष चेदि आदिदेशोंके राजा मानते हैं । २७ । उन कृष्णचन्द्रकी ओर शिशुपाल को छोड़ कौन राजा दौड़ता, औरतो सिंहके सामने छोटेमृगोंकेही समानथे । २८ । सो वहभी इनको देखदौड़ा तौभी परन्तु कृष्णजीके मारनेसे निर्जीवहो पृथ्वीपर पवनके वेगसे उखड़ेहुये कठचम्पाके वृक्षकेसमान गिरपड़ा । २९ । हे संजय जबसे दूतोंने आकर पांडवों के समाचार हमसे कहेहैं तबसे हम कृष्णचन्द्रके कर्मोंका स्मरणकरतेहैं पर शांतिको नहीं प्राप्तहोते । ३० । जिन यादवोंके अग्रणी वृष्णिसिंह श्रीकृष्णभी हैं उनको और कोई शत्रु नहीं सहसक्ता फिर जाने हुआ कि अर्जुन रथी व कृष्णचन्द्र सारथीहोंगे तबसे हमारा हृदय कांपताहै, कि एक

equal to Pradyumna in prowess. He also has come to help the Pandavas. The king of Chedi and Karush has come to help the Pandavas. One of the kings of Chedi, glorious like the sun, possessed of kingly wealth, irrestible in war, best of all the warriors of the earth, named Shishupal was killed by Shree Krishna who is intent on increasing the fame and respect of the Pandavas. Shree Krishna is respected by kings of Chedi Karush and other places. Who except Shishupal could dare to attack Shree Krishna, before whom all other kings are as deer before a lion? Shishupal attacked him, but fell down dead as a champa tree uprooted by the wind falls down to the ground. From the time the spies have told me, Sanjaya, of the preparations of the Pandavas, I remember the deeds of Shree Krishna and I cannot find rest. 30 The Pandavas, having Shree Krishna the lion of the Vrishnis for their leader, are unapproachable by all enemies. From the time I have heared

अवेपतेमेहृदयंभयेन श्रुत्वाकृष्णावेकरथेसमेतौ ॥ ११ ॥ नचेद्गच्छेत्सङ्गरंमन्दबुद्धि स्ताभ्यांलभेच्छर्मतदासुतोमे । नोचेत्कुरून्सञ्जयनिर्दहेतामिन्द्राविष्णूदैत्यसेनांयथैव ॥ १२ ॥ मतोहिमेशक्रसमोधनञ्जयः सनातनोवृष्णिवीरश्चविष्णुः । धर्मारामोह्रीनिषेधस्तरस्वीकुन्तिपुत्रः पाण्डवोऽजातशत्रुः ॥ १३ ॥ दुर्योधनेननिकृतोमनस्वीनोचेत्क्रुद्धःप्रदहेद्धार्तराष्ट्रान् । नाहंतथाह्यर्जुनाद्वासुदेवाद्भीमाद्वापियमयोर्वाबिभेमि ॥ १४ ॥ यथाराज्ञःक्रोधदीप्तस्यसूतमन्योरहंभीततरःसदैव । महातपाब्रह्मचर्येणयुक्तः सङ्कल्पोऽयंमानसस्तस्यसिध्येत् ॥ १५ ॥ तस्यक्रोधंसञ्जयाहंसमीक्ष्यस्थानेजानन्भृशमस्म्यद्य भीतः । सगच्छशीघ्रंप्रहितोरथेन पांचालराजस्यचमूनिवेशनम् ॥ १६ ॥ अजात

अर्जुनहीके सामने जाना कठिनथा फिर ये दोनों महापुरुष एकही रथपरहैंगे कौन सन्मुख होगा । ११ । कदाचित् मन्दबुद्धि यह हमारापुत्र दुर्योधन संग्राम में उनदोनों के सन्मुख न आय तौ चाहै कल्याण पावै, नहींतौ येदोनों पुरुष कौरवोंको भस्म करदेंगे जैसे इन्द्र और विष्णु दैत्योंकी सेना भस्मकरदेते हैं । १२ । हमारे मतसे अर्जुन इन्द्र समान हैं, व कृष्ण चन्द्र जानों सनातन पुरुषहैं व कुंती के पुत्र युधिष्ठिर जानों धर्मराज लज्जावान्, व अति शीघ्र कार्य करने वालेहैं । १३ । दुर्योधनने युधिष्ठिर को छलकिया नहीं तौ वे जो क्रोध करते तौ सब धृतराष्ट्रके पक्षवालोंको भस्मकरदेते, हम वैसा अर्जुनसे, कृष्णचंद्रसे भीमसेन व नकुल सहदेवसे नहीं डरते । १४ । जैसा क्रोधकिये हुये राजा युधिष्ठिरके क्रोधसे डरते हैं, क्योंकि वे महातपस्वी, ब्रह्मचर्य युक्त हैं उनके मनका संकल्प सिद्ध होजाता है १५ सो हम उनका क्रोध जानते हैं यहां बैठे २ स्मरणकर भयभीत होरहे हैं लड़ने भिड़नेको कौनकहै इस से रथपरचढ़ शीघ्रही राजा द्रुपदकी जहां सेना टिकी है वहांजाओ १६।

---

that Shree Krishna will drive Arjun's chariot my heart trembles. It was hard for a warrior to stand against Arjun alone; who will oppose Shree Krishna and Arjun sitting in the same chariot! Our unwise son, Duryodhan may save himself from ruin if he does not go to fight with those two warriors; otherwise they will burn down all the Kauravas as Indra and Vishnu burn down the armies of Daityas. Methinks, Arjun is like Indra, Shree Krishna is the Eternal Being and Yudhishthir the son of Kunti is Dharmraj himself, bashful and very swift worker. Yudhishthir was deceived by Duryodhan. He did not become angry or he had burnt all of us. We are not so much afraid of Arjun, Shree Krishna, Bhimsen, Nakul and Sahadev as of the anger of Yudhishthir, when he is angry; for he has the strength of asceticism and celibacy and his attempts are always successful. I know his anger and

शत्रुंकुशलंस्मपृच्छेःपुनःपुनःप्रीतियुक्तंवदेस्त्वम् । जनार्दनंचापिसमेत्यतातमहामात्रंवीर्यवतामुदारम् ॥ ३७ ॥ अनामयंमद्वचनेनपृच्छेर्धृतराष्ट्रःपाण्डवैःशान्तिमीप्सुः । नतस्यकिंचिद्वचनेनकुर्यात्कुन्तीपुत्रो वासुदेवस्यसूत ॥ ३८ ॥ प्रियश्चैषामात्मसमश्चकृष्णो विद्वांश्चैषांकर्मणिनित्ययुक्तः । समानीतानपाण्डवान्संजयांश्चजनार्दनंयुयुधानंविराटम् ३९ अनामयंमद्वचनेनपृच्छेःसर्वांस्तथा द्रौपदेयांश्चपंच । यद्यत्तत्रप्राप्तकालंपरेभ्यस्त्वंमन्ये भारतानांहितंच । तत्तद्भाषेथाःसंजयराजमध्येनमूर्च्छयेद्यन्नचयुद्धहेतुः ४०॥ इति महा० उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि धृतराष्ट्रसंदेशे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥

जातेही युधिष्ठिर से कुशल पूंछना व जब वे प्रसन्नहों तो फिर पूंछना, व महाभाग वीर्यवानों में उदार जनार्दन भगवान् के समीप जाकर कुशल पूंछना । ३७ । सबसे कुशल हमारी ओरसे पूंछना व कहना कि धृतराष्ट्र पाण्डवों से शांति चाहते हैं, हे सूत युधिष्ठिर कृष्णचन्द्रजी के किसी वचनका निषेध नहीं करते वरन सब उन्हींका कहा करते हैं । ३८ । व पाण्डवों को श्रीकृष्णचन्द्रजी अपने समान प्रिय हैं क्योंकि वे महाविद्वान् नित्य पाण्डवोंकी कुशलही में युक्त रहते हैं । ३९ । मेरे वचन सुनाकर सब पांडवोंसे कुशल पूछियो और मत्स्य विराट और सात्यकि ऐसे वचन कहियो जिस से विग्रह न बढ़ने पावे । ४० ।

---

am afraid of it even here, nothing to say of war. Ride a chariot and go soon to the place where Drupad's army is encamped. Ask of Yudhishthir his welfare as soon as you reach there. Ask it again and again until he is well pleased. You will then go to Janardan the most magnanimous of warriors and humbly ask his welfare. Tell every one that I wish happiness to all the Pandavas. Yudhishthir obeys Shree Krishna in all respects and does nothing with out his counsel. The Pandavas love Shree Krishna like themselves; for he is very learned and is always doing well to the Pandavas. Tell all the Pandavas that I wish them happiness. You should so converse with the king of Matsya and Virat as to pacify their anger." 40.



वैशंपायनउवाच । राज्ञस्तुवचनंश्रुत्वा धृतराष्ट्रस्य सञ्जयः । उपप्लव्यंययौद्रष्टुं पाण्डवानमितौजसः ॥ १ ॥ सतुराजानमासाद्य कुन्तीपुत्रंयुधिष्ठिरम् । अभिवाद्य ततःपूर्वं सूतपुत्रोऽभ्यभाषत ॥२॥ गावल्गणिःसञ्जयःसूतसूनुरजातशत्रुमवदत्प्रतीतः। दिष्ट्याराजंस्त्वामरोगंप्रपश्ये सहायवन्तञ्चमहेन्द्रकल्पम् ॥ ३ ॥ अनामयंपृच्छति त्वाम्बिकेयो वृद्धोराजाधृतराष्ट्रोमनीषी । कच्चिद्भीमःकुशलीपाण्डवाग्र्यो धनञ्जयस्तौचमाद्रीतनूजौ ॥ ४ ॥ कच्चित्कृष्णाद्रौपदीराजपुत्री सत्यव्रतावीरपत्नीसपुत्रा। मनस्विनीयत्रचवाञ्छसि त्वमिष्टान्कामानभारतस्वस्तिकामः ॥५॥ युधिष्ठिरउवाच । गावल्गणेसञ्जयस्वागतंते प्रीयामहेतेवयंदर्शनेन । अनामयंप्रतिजानेतवाहंसहानुजैः कुशलीचास्मिविद्वन् ॥ ६ ॥ चिरादिदंकुशलंभारतस्य श्रुत्वाराज्ञःकुरुवृद्धस्यसूत ।

अध्याय २३ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि राजाधृतराष्ट्रजीके ऐसे वचन सुन संजय पांडवों के देखने को विराटनगरके समीप के उपप्लव्य नामस्थानको गये । १ । व वहां पहुँच कुंतीपुत्र राजा युधिष्ठिरके समीपजा प्रणामकर प्रथम संजय । २ । गवल्गणके पुत्र हर्षितहो युधिष्ठिर से कहनेलगे कि, हेराजन् बड़े भाग्यकी बातहै जो आपको रोगरहित देखते हैं, व सहाय वान् इन्द्रही के समान विद्यमान् देखतेहैं यह और भी बड़े भाग्यकी बातहै । ३ । आपसे कुशल बुद्धिमान् व वृद्ध अम्बिकाके पुत्र राजाधृतराष्ट्रजीने पूंछाहै कि पांडवोंमें श्रेष्ठ आप व भीमसेन व नकुल सहदेव कुशलसेहैं । ४ । व हेराजन् जिसमें आप कल्याणकी इच्छा से इच्छित कामोंकी इच्छा करतेहो, वे मनस्विनी सत्यव्रता, वीरोंकी पत्नी राजपुत्री द्रौपदीभी अपने पांचोंपुत्र सहित कुशलतोहैं । ५ । यह सुन युधिष्ठिरजीने कहा, संजयजी स्वागत करतेहो तुम्हारा आगमन हुआ तुम्हारे दर्शन से हमलोग बहुत प्रसन्नहुये तुम्हारी कुशल चाहते हैं हमभी अपने छोटेभाइयों सहित बहुत आनन्द में हैं हे विद्वन् ।६। हे सूत बहुत दिनों के पीछे कुरुवंशियों में वृद्ध राजाधृतराष्ट्रजी भी यह कुशल

CHAPTER XXIII

Vaishampayan said to Janamejaya that having heard the instructions of Dhistrashtra, Sanjaya went to Upaplavyanear Viratnagar to see the Pandavas. On reaching there he went to Yudhishthir, the son of Kunti and said to him cheerfully, "I am very fortunate to see you in health and with friends like Indra in person and still more fortunate to bring you the message of wise and old Dhritrastra, the son of Ambika. He asks about the welfare of you, the best of Pandavas, as well as of Bhimsen, Arjun, Nakul, Sahadev and your [illegible] wife Draupadi of truthful vows, the wife of valiant [illegible] [illegible] her five sons. "You are welcome, Sanjaya," replied Yudhishthir, "I am very happy to see you and wish you happiness, [illegible]

मन्येसाक्षाद्दृष्टमहंनरेन्द्रं दृष्ट्वैवत्वांसञ्जयप्रीतियोगात् ॥ ७ ॥ पितामहोनः स्थविरोमनस्वी महाप्राज्ञःसर्वधर्मोपपन्नः । सकौरव्यःकुशलीतातभीष्मो यथापूर्वंवृत्तिरस्त्यस्य कच्चित् ८ ॥ कच्चिद्राजाधृतराष्ट्रःसपुत्रो वैचित्रवीर्यःकुशलीमहात्मा । महाराजो बाह्लिकःप्रातिपेयः कच्चिद्विद्वान्कुशलीसूतपुत्र ॥ ९ ॥ ससोमदत्तःकुशलीतातकच्चि द्भूरिश्रवाःसत्यसन्धःशलश्च । द्रोणःसपुत्रश्चकृपश्चविप्रो महेष्वासाःकच्चिदेतेऽप्यरोगाः ॥ १० ॥ सर्वेकुरुभ्यःस्पृहयन्तिसञ्जय धनुर्द्धरायेपृथिव्यांप्रधानाः । महाप्रज्ञाः सर्वशास्त्रावदाता धनुर्भृतांमुख्यतमाःपृथिव्याम् ॥ ११ ॥ कच्चिन्मानंतातलभन्तएते धनुर्भृतःकच्चिदेतेऽप्यरोगाः । येषांराष्ट्रेनिवसतिदर्शनीयोमहेष्वास शीलवान्द्रोणपुत्रः ॥ १२ ॥ वैश्यापुत्रः कुशलीतातकच्चिन्महाप्राज्ञोराजपुत्रोयुयुत्सुः । कर्णोऽमात्यः

सुन जानों हमने आज राजाकोही देखा यह बात जैसेही तुमको देखा वैसेही प्रीति के योग से जानपरी । ७ । भला वृद्धावस्थाको प्राप्त, बड़ेमनस्वी बड़े बुद्धिमान, सर्व धर्मयुक्त, पितामह भीष्मजी कुशलतोहैं व उनकी वृत्ति हमलोगोंमें पूर्वही कीसी है । ८ । भला अपने पुत्रोंसहित महात्मा विचित्रवीर्यके पुत्र राजाधृतराष्ट्रतो कुशलपूर्वकहैं, व बड़े ज्ञानी विद्वान् महाराज बाह्लिकजी तो कुशली हैं । ९ । हे तात सोमदत्त कुशलीहैं व भूरिश्रवा व सत्यप्रतिज्ञ शल कुशली हैं, अपने पुत्र सहित द्रोणाचार्य व कृपाचार्य ये विप्र सब बड़े धनुर्धर अरोग तो हैं । १० । व सब पृथ्वीभरके धनुर्धारियों में मुख्य, महाप्रज्ञ सब शास्त्रोंके जाननेवाले, व भूतलमें धनुर्धारियों में प्रधान ये लोग कुरुवंशियों का कल्याण तो चाहते हैं । ११ । जिन कुरुवंशियों के देशमें ये सब धनुर्द्धारी रहते हैं उनसे ये लोग मान भी पाते हैं क्योंकि उनमें तो एक शीलवान बड़े धनुर्द्धर, दर्शनीयरूप अश्वत्थामाजीहैं वे बिना मान कैसे रहते । १२ । हे तात महाप्राज्ञ राजकुमार वैश्याके पुत्र युयुत्सुभी तो

कुशलीतातकच्चिद्सुयोधनोयस्यमन्दोविधेयः ॥ १३ ॥ स्त्रियोवृद्धाभारतानांजनन्यो महानस्योदासभार्याश्चसूत । वध्वःपुत्राभागिनेयाभगिन्योदौहित्रावाकच्चिदव्यलीकाः ॥ १४ ॥ कच्चिद्राजाब्राह्मणानां यथावद्वृत्तिमवर्त्ततेपूर्ववत्तातवृत्तिम् । कच्चिद्दायान्मामकान्धार्त्तराष्ट्रो द्विजातीनां सञ्जयनोपहन्ति ॥ १५ ॥ कच्चिद्राजाधृतराष्ट्रः सपुत्रउपेक्षतेब्राह्मणातिक्रमान्वै । स्वर्गस्यकच्चिन्नतथा वर्त्मभूतामुपेक्षतेतेषुसदैववृत्तिम् ॥ १६ ॥ एतज्ज्योतिरुत्तमंजीवलोके शुक्लंप्रजानांविहितंविधात्रा । तेचेदेतंनानयच्छन्तिमन्दाः कृत्स्नो नाशोभविताकौरवाणाम् ॥ १७ ॥ कच्चिद्राजाधृतराष्ट्रःसपुत्रोबुभूषतेवृत्तिममात्यवर्गे । कच्चिन्नभेदेन जिजीविषन्तिसुहृद्रूपादुर्हृदश्चैकमत्यात् १८ कच्चित्पापंकथयन्ति तातते पाण्डवानां कुरवःसर्वएव । द्रोणःसपुत्रश्चकृपश्च वीरो

सच्छे हैं, व जिसका आज्ञाकारी मन्दबुद्धि दुर्योधन है वह मन्त्री कर्ण कुशली है यथा । १३ । व सब घरकी वृद्ध स्त्रियां धृतराष्ट्रादिकों की मातालोग व दासोंकी स्त्रियां जो भोजन बनातीहैं, बहुएँ, पुत्र, भानजे, बहिनें, कन्या, पुत्र ये सब निष्कपट हो रहते हैं । १४ । हेतात भलाराजा पूर्ववत् ४८ ब्राह्मणोंका स्नेहसे यथोचित करते हैं भला ब्राह्मणों को जो हमने ग्रामादि दिये थे दुर्योधन उनको लिये तो नहीं लेता है वो बराबर पाये हो जातेहैं । १५ । भला अपने पुत्रों सहित राजा धृतराष्ट्र ब्राह्मणों के निरादरसे डरतेहैं, व दाताको स्वर्ग में पहुंचाने के लिये [illegible] ब्राह्मणोंकी जीविका के हरने से तो डरतेहैं या नहीं । १६ । क्योंकि यह ब्राह्मणोंकी जीविका का पालन परलोकमें प्रकाशकारी के लिये बड़ी भारी मशाल है व यहां यशकारी है, जो कदाचित् ये मन्दबुद्धि ब्राह्मणोंकी जीविकाका नाश करेंगे तो सब कौरवोंका नाशहोजायगा । १७ । भला अपने पुत्रों सहित राजा धृतराष्ट्र जो मन्त्री दीवान आदि अर्थात् [illegible] जीविकासे बराबर निर्वाह हैं व वे लोग शत्रुओं से मिलकर अपनी जीविका नहीं किया चाहते कि मित्र सुहृद बने रहतेहों व लोग बैरियोंकी मति से करतेहों देखा तो नहीं है । १८ । हे तात भला

yodhan under control, well? Are all the old women of the household, the mothers of Dhritrashtra, the wives of servants who cook food, daughters-in-law, sons, sister's sons, sisters and daughters free from intrigues ? Does the king love the Brahmans as of old ? Do the Brahmans enjoy the landed property we had given them or has Duryodhan deprived them of its use ? 15 Do Dhritrashtra and his sons fear to insult Brahmans ? Do they fear depriving of the livelihood of Brahmans who are as a ladder leading the donor to heaven [illegible] ing livelihood to Brahmans is a great torch to give our light [illegible] other world and to give fame in this, They will bring [illegible] of the Kauravas, if they will deprive Brahmans of their live[illegible] Dhritrashtra and his sons pay the ministers, de[illegible]

नास्माशुपापानि वदन्तिकच्चित् ॥ १९ ॥ कच्चिद्राजेधृतराष्ट्रं सपुत्रमुपेत्याहुःक्रूरव-र्सएन । कच्चिदृष्ट्वादस्युसंघान समेतानस्मरन्ति पार्थस्ययुधांप्रणेतुः ॥ २० ॥ मौर्वीभुजाग्रप्रहितान् स्मरन्ति दोधूयमानेन धनुर्धरेण । गाण्डीवनुन्नांस्तनयित्नु घो-षानिजिह्मगान् कच्चिदनुस्मरन्ति ॥ २१ ॥ नचापश्यंकञ्चिदहं पृथिव्यां योधंसमं वाधिकमर्जुनेन । यस्यैकषष्ठिर्निशिताःतीक्ष्णधाराः सुवाससः सम्पतोहस्तवापा ॥ २२॥ गदापाणिर्भीमसेनस्तरस्वी प्रवेपयन्छत्रुसेनाननीके । नागःप्रभिन्नइव नड्वलेषु चङ्क्र-म्यते कच्चिदेनंस्मरन्ति ॥ २३ ॥ माद्रीसुतः सहदेवः कलिङ्गान् समागतानजयद्दन्त-कूरे । वामेनास्यन् दक्षिणेनैवयोवै महाबलंकच्चिदेनंस्मरन्ति ॥२४॥ सुराजेतुंनकुलः

कौरवलोग हम पांडवों लोगोंका कुछ पापतो आपसमें नहीं कहते, व अश्वत्थामा द्रोणाचार्य व कृपाचार्य ये ब्राह्मण लोग जो कि बड़े वीर हैं वे लोगतो कुछ हम लोगों में पापतो नहीं कहते । १९ । भलाकभी सहित पुत्र धृतराष्ट्रजी के पास आय कौरवलोग कहतेहैं कि शान्त रहो भलाकहीं चोरादि दुष्टों को एकत्र बैठेदेख मग्रामर्मे से शत्रुओं को भगानेवाले अर्जुनके कर्मोंका स्मरण करतेहैं । २० । भलाकभी धनुषकी खींचीहुई पनचपर चढ़ेहुये फिर गांडीवसे छूटेहुये मेघसमान गर्जते सीधे चलेजातेहुये अर्जुन के बाणोंको स्मरण करते हैं । २१ । क्योंकि इस पृथ्वी में अर्जुन के समान व अधिक योद्धा हमने नहीं देखा जिसके हाथसे एकहीबारके चलाने से बड़ी तीक्ष्ण पैनी सपक्षबाणोंकी साठ धारा निकलती हैं । २२ । भला गदाहाथ में लिये शत्रुओं को कँपवाते बड़े वेगवान् भीमसेन को बहुत घासयुक्त स्थानों में इधर उधर दौड़तेहुये मदच्युत हाथी के समान वेग में फिरते हुये कभी कौरवलोग स्मरण करते हैं या नहीं । २३ । भला जिन्हों ने आये हुये कलिंग देशके राजादिकों को समर में बायें दाहिने हाथसे बाण चलाय २ औलड़िया दहिने से नहीं पंथे सहदेवका स्मरण कभी कौरव करते हैं या नहीं । २४ । सञ्जय

their wages regularly or do the latter try to earn living in collusion with the enemies? Do the Kauravas ever think ill of us the Pandavas? Do the great Brahmans Ashwatthama, Droonacharya and Kripacharya ever think ill of us? Do the Kauravas ever come to Dhritrashtra and his sons to advise them to be peaceful. Seeing thiefs and wicked men together, do they ever remember the exploits of Arjun? 20. Do they ever remember Arjun's arrows shot from the Gandiv bow like rain? We have not seen a better archer than Arjun from whose hand a current of sixty sharp and feathered arrows comes out each time. Do the Kauravas ever remember Bhimsen running like a mad, elephant over long grass, mace in hand, making the hearts of enemies tremble with fear? Do they ever remember Sahadev who defeated the army of the king of Kaling by the arrows shot from

मेषितोऽयं शिबीन्त्रिगर्तान् संजयपश्यतस्ते। दिशंप्रतीचींवशमानयन्मे। माद्रीसुतंकच्चिदे-तंस्मरन्ति ॥ २५ ॥ पराभवोद्वैतवनेय आसीद्दुर्मन्त्रिते घोषयात्रागतानाम् । यत्रम न्दाञ्छत्रुवशं प्रयातानमोचयद्भीमसेनो जयश्च ॥ २६ ॥ अहंपश्चादर्जुनमभ्यरक्षं माद्री पुत्रौभीमसेनोऽप्यरक्षत्। गाण्डीवधन्वाशत्रुसंघानुदस्य स्वस्त्यागमत् कच्चिदेनंस्मरन्ति ॥ २७ ॥ नकर्मणासाधुनैकेननूनं सुखंशक्यंवै भवतीहसञ्जय । सर्वात्मनापरिजेतुं वयंचेन्नशक्नुमो धृतराष्ट्रस्य पुत्रम् ॥ २८ ॥

इति-महा० उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि युधिष्ठिरमश्ने त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

तुम्हारे सामनेही एक समय त्रिगर्त देशवाले संदियों के जीतने को नकुल को पश्चिम दिशा में भेजाथा इन्होंने जीत वह दिशा हमारे वशमें करदी इनको कभी वे लोग स्मरण करते हैं या नहीं । २५ । जब दुष्टमन्त्रियों की सम्मति से दुर्योधनादि घोषयात्रा को द्वैत वन होकर जातेथे, वहीं शत्रुओं के वश में पड़गये थे इस म महाअनादर हुआ था, तब अर्जुनने व भीमसेन ने जाय छुड़ाया । २६ । उस समय अर्जुन के पीछे हमभी प्रेरणा करते जाते थे व भीमसेन नकुल सहदेवको प्रेरणा करते अर्थात् हमपांचों ने उनको छुड़ाया पर मुख्यकर अर्जुननेही शत्रुओं को भगाय उनको छुड़ाया सो कभी ऐसे अर्जुन का स्मरण करते हैं । २७ । जब दान भेद और दंडसे धृतराष्ट्रके पुत्र न जीतसके तब क्या केवल साम से वे हम से जीत सकते हैं इस लिये हे संजय हम उनको दंड देना चाहते हैं या जैसे आप कहेंगे वैसाही हम करेंगे । २८ ।

---

his left hand ? You know, Sanjaya, that once I sent Nakul to the west to conquer the Sidis of Trigart and he conquered the country and put under my rule. Do the Kauravas ever think of Nakul ? When Duryodhan and others going to inspect cows in Dwait forest, by the advice of wicked ministers, fell into the hand of the enemy, they were set free by Bhim and Arjun. Arjun was then assisted by me and Bhim by Nakul and Sahadev, but it was chiefly Arjun who put the enemies to flight. Do they ever remember Arjun ? How can they defeat us now when they failed to do so in their former trials. We wish to chastise them and will do as you will direct us to do" 28.



सञ्जय उवाच । यथाहमेपाण्डवतथैव कुरून् कुरुश्रेष्ठजनान्पृच्छसि । अनामयास्तात मनस्विनस्ते कुरुश्रेष्ठान् पृच्छसिपार्थयांस्त्वम् ॥ १ ॥ सन्त्येववृद्धाः साधवोधार्तराष्ट्रे सन्त्यपापाः पाण्डवतस्यविद्धि । दद्यादिशत्रुभ्योऽपिहि धार्तराष्ट्रःकुतो दायांल्लोपयेद्ब्राह्मणानाम् ॥ २ ॥ यद्युष्माकं वर्ततेसौनधर्म्यमद्रुग्धेषु द्रुग्धवत्तन्नसाधु मित्रध्रुक्स्याद्धृतराष्ट्रः सपुत्रोयुष्मान् द्विषन्नसाधुवृत्तानसाधुः ॥ ३ ॥ नचानुजानाति भृशञ्चतप्यंशोचत्यन्तः स्थविरोऽजातशत्रो । शृणोति हि ब्राह्मणानां समेत्य मित्रद्रोहः पातकेभ्योगरीयान् ॥ ४ ॥ स्मरन्तितुभ्यंनरदेव संयुगे युद्धेचजिष्णोश्चयुधांप्रणेतुः ॥

अध्याय ॥ २४ ॥

संजय बोले कि हम से जैसा आप कहते हो वह वैसाही है, व जो आप कौरवों व वहां रहनेवाले और श्रेष्ठ जनों को पूंछते हो वे सब कुरुवंशी कुशल पूर्वक हैं किसी को कोई रोग नहीं व औरभी जिन जिन लोगोंको आपने पूंछा सब वे कुशली हैं । १ । हे पाण्डव दुर्योधन के वृद्ध व साधुलोगभी हैं व पापी भी बहुत हैं व मांगने पर तो शत्रुओंकोभी दुर्योधन दान देते हैं फिर ब्राह्मणों की जीविका क्यों हरें । २ । व जो बिना अपराध किये हुये दुर्योधनादिकों के साथ द्रोह किया चहते हैं वह अच्छा नहीं क्योंकि जब उन्होंने आपको बनवास दियथा अपराध कियाथा तौभी आपने उन का द्रोह नहीं किया तो इस समय तो अवश्य न द्रोह करना चाहिये, व जो साधु वृत्ति से चलनेवाले आप लोगों को पुत्र सहित धृतराष्ट्र कुछ अनुचित कहैं तो मित्र द्रोही हों । ३ । वे वृद्ध धृतराष्ट्र ठीक २ विलाप तो नहीं करते पर हां अपने पुत्रों के नाश के भयसे अन्तःकरण में अत्यन्त जला करते हैं, यद्यपि ब्राह्मणों से सुनते हैं कि मित्रद्रोह करना सब पापों से बड़ा है तथापि निवृत्त नहीं होते हां हे नरदेव आपकास्मरण सदा करते हैं व युद्धमें संग्राममें शत्रुओं को भगाने वाले अर्जुन

CHAPTER XXIV

"You are right in what you say, Yudhishthir," replied Sanjaya, "All the Kauravas are safe and sound as well as the other persons of whom you have asked. Duryodhan has with him good men as well as wicked. He does not refuse to give anything to an enemy; how could he deprive Brahmans of their livelihood. Your resolution to fight with the Kauravas is not good, for you did not chastise them when they sent you into exile and you should not do it now. While you are living peacefully, Dhritrashtra and his sons would be guilty of quarrelling with friends if spoke ill of you. Old Dhritrashtra, though not desiring peace, burns with the fear of his son's destruction and in spite of his hearing from Brahmans that enmity with friends is the greatest of sins, he is not free from

गदाहस्ते दुन्दुभिशङ्खशब्दे गदापाणिं भीमसेनं स्मरन्ति ॥ ५ ॥ माद्रीसुतौ चापि रणे चरन्तौ दिशश्च सर्वा विचरन्तौ स्मरन्ति । सेनां वर्षन्तौ शरवर्षैरजस्रं महारथौ समरे दुःप्रकम्पौ ॥ ६ ॥ न त्वेवमन्ये पुरुषस्य राजन्ननागतं शक्यमवेत्तुमद्य । त्वं चेत्तथा सर्वधर्मोपपन्नः प्राप्तः क्लेशं पाण्डव कृच्छ्ररूपम् । त्वमेवैतत् सर्वमतश्च भूयः समीकुर्याः प्रज्ञयाजातशत्रो ॥ ७ ॥ न कामार्थं सन्त्यजेयुर्हि धर्मं पाण्डोः सुताः सर्व एवेन्द्रकल्पाः । त्वमेवैतत् प्रज्ञयाजातशत्रो समीकुर्या येन शर्म प्राप्नुयुस्ते ॥ ८ ॥ धार्तराष्ट्राः पाण्डवाः सृञ्जयाश्च ये चाप्यन्ये सन्निविष्टा नरेन्द्राः । यन्मामवोचत् धृतराष्ट्रो निशाम्याजातशत्रो वचनं पिता ते ॥ ९ ॥ सहामात्यः सपुत्रश्च राजन् समेत्य तां वाचमिमां निबोध ॥ १० ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि संजयवाक्ये चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

जीका स्मरण करतेहैं, व जहां मल्लयुद्ध के पहले नगारे शंखबाजने लगतेहैं वहां गदा हाथ में लिये भीमसेनजी का स्मरण करतेहैं । ५ । व समरभूमि में सब दिशों में घूमतेहुये व बार २ सेनाके ऊपर बाण बरसातेहुये व समर में बड़े दुःख से कंपानेके योग्य नकुल व सहदेवजीकाभी स्मरण करतेहैं । ६ । हे राजन् सर्व धर्म युक्तहोकर आपको भी ऐसा कठिन क्लेश प्राप्त हुआ तो पुरुष के प्रारब्ध में क्या होनेवाला है यह नहीं जान पड़ता । ७ । इससे अब आपही अपनी बुद्धि से समाधान करिये क्योंकि इन्द्र के तुल्य सब पाण्डुजी के पुत्र आपलोग कामके अर्थ धर्म को न छोड़ें । ८ । अब आपही अपनी बुद्धि से ऐसा करिये जिसमें कौरवों पाण्डवों संजयों व अन्य राजाओं का जोकि इधर उधर के सम्बन्धी हैं सबका कल्याण हो । ९ सुत अमात्य और सम्बन्धियों सहित अम्बापुत्र धृतराष्ट्र ने जो तुमसे कहा है उसे सुनिये । १० ।

---

that fault. He always remembers you as well as Arjun the destroyer of foes and whenever he hears the sound of drums and conchs preparatory to a wrestling match he remembers Bhimsen and his mace. He also remembers Nakul and Sahadeva as jumping in all directions and showering flight of arrows over enemies or doing other dreadful work in battle. Seeing that you have borne so much misery in spite of all your virtues, no one can say what is in store for man. You must control yourself with wisdom so that the other Pandavas of Indra like prowess may not leave Dharm for worldly desires. You should control yourself in order that the Kauravas, the Pandavas and the other kings assembled on both the sides may not be destroyed. Hear from me what Dhritrashtra the son of Ambika, sitting amongst his sons, kinsmen and councillors has said to you." 10.

युधिष्ठिर उवाच । समागताः पाण्डवाः सृञ्जयाश्च जनार्दनो युयुधानो विराटः । यत्ते वाक्यं धृतराष्ट्रानुशिष्टं गावल्गणे ब्रूहि सूतपुत्र ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । अजातशत्रुं च वृकोदरं च धनञ्जयं माद्रवतीसुतौ च । आमन्त्रये वासुदेवं च शौरिं युयुधानं चेकितानं विराटम् ॥ २ ॥ पांचालानामधिपं चैव वृद्धं धृष्टद्युम्नं पार्षतं याज्ञसेनिम् । सर्वे वाचं शृणुतेमां मदीयां वक्ष्यामि यां भूतिमिच्छन् कुरूणाम् ॥ ३ ॥ शमं राजा धृतराष्ट्रोऽभिनन्दन्नयोजयत्त्वरमाणो रथं मे । सभ्रातृपुत्रस्वजनस्य राज्ञस्तद्रोचतां पाण्डवानां शमोऽस्तु ॥ ४ ॥ सर्वैर्धर्मैः समुपेताः स्तु पार्थाः संस्थानेन मार्दवेनार्जवेन । जाताः कुले ह्यनृशंसा वदान्या ह्रीनिषेवाः कर्मणां निश्चयज्ञाः ॥ ५ ॥ न युज्यते कर्म युष्मासु हीनं सत्त्वं हि वस्तादृशं

अध्याय ॥ २५ ॥

इतना सुन युधिष्ठिरजी बोले कि इस समय पाण्डव संजय श्रीकृष्णचन्द्रजी सात्यकि व विराट सब बैठे हैं जो बात धृतराष्ट्रजी ने तुमसे कही है वह कहो १ संजय बोले, कि युधिष्ठिरजी, भीमसेनजी अर्जुनजी व नकुल सहदेवजी, व श्रीकृष्णचन्द्र वासुदेव, सात्यकि, चेकितान व विराटजी २ व राजाद्रुपदजी जो सब से वृद्ध हैं व धृष्टद्युम्न, व पञ्चाल राज याज्ञसेनि, इन सब महाशयोंसे हम कुरुवंशियों का ऐश्वर्य चाहतेहुये जो बात कहेंगे सब आपलोग सुनैं ३ राजा धृतराष्ट्रजी चाहते हैं कि अब तक जो हुआ अब झगड़ा शान्त होजाय इससे हमारे यहां आने के लिये बड़ी शीघ्रता के साथ अपने हाथसे रथमें घोड़े जोते कुछ देरी नहीं अब भाई पुत्र स्वजन सहित राजाका वचन सुन पाण्डवों को करै जिसमें शान्ति होजाय विग्रह न बढ़ै । ४ । आप सब पाण्डवलोग सब उत्तम २ धर्मों से संयुक्त हैं जैसे कि सुन्दर आकार, प्राणियों के ऊपर कृपा सरलता अक्रूरता दान शीलता, लज्जापरायणता, व कर्मों का निश्चय ज्ञान करना ये सब गुण पाण्डवों में विद्यमान हैं व उत्तम कुल में उत्पन्न हैं । ५ । इस से ऐसे आपलोगों को यह नहीं उचित

CHAPTER XXV

On hearing the above, Yudhishthir said, "The Pandavas, Shree Krishna, Satyaki and Virat are all sitting here, you may tell us the message of Dhritrashtra" Sanjaya addressed Yudhishthir, Bhimsen, Arjun, Nakul, Sahadeva, Shree Krishna the son of Vasudev, Satyaki, Chekitan, Virat, King Drupad the oldest of the kings then present, Dhrishtadyumna, the hill Kings and Yagyaseni, separately, saying, "King Dhritrashtra wishes to put an end to the former quarrel and has therefore sent me here in haste himself putting the horses to my chariot to save time. The Pandavas will hear the message of Dhritrashtra and his sons and will please man[illegible] to put an end to the quarrel The Pandavas are full of [illegible], kindness on beings, simple habits, absence of cruelty, good

भीमसेनाः । वदासने ह्यञ्जनबिन्दुवद्वच्छुभ्रे मलेश्यस्त्वेतु किल्बिषंत. ॥ ६ ॥ सर्वक्षयोदयपतेयत्रकृत्स्नः पापोदयो निरयोऽभावसंस्थः । कस्तत्कुर्याज्जातु कर्मप्रजानन् पराजयोयत्रसमोजयश्च ॥ ७ ॥ तेवैधन्यायैःकृतंज्ञातिकार्यं तेवै पुत्राःसुहृदोबान्धवाश्च उपक्रुष्टंजीवितंसन्त्यजेयुर्यतः कुरूणांनियतोवैभवः स्यात् ॥ ८ ॥ तेवैकुरूननुशिष्याथपार्थाः निर्णीयसर्वान् द्विषतोनिगृह्य । समंवस्तज्जीवितं मृत्युनास्याद्यज्जीवध्वं ज्ञातिवधेनसाधु ॥ ९ ॥ केह्यवयुष्मानसह केशवेनसचेकितानान् पार्षतबाहुगुप्तान् । ससा-

---

हीनकर्म करना उचित नहीं है, क्योंकि आपलोगों के बुद्धिबल व भयङ्कर सेना भी है इससे प्रकाशित होरहे हैं उसमें इस पाप से मलिनता आजानी जैसे उजले वस्त्र में एक बिंदु भी काजर लगने से धब्बापरजाता है । ६ । जिस युद्ध में सबका नाश होता हैं, व पापका उदय होताहै, नरकजानाँ होताही है, व उसका अन्त नाशही होता, यह जानता हुआ पुरुष कौन ऐसा कार्य करै क्योंकि जयभी हुई व भाई बन्धु मारे गये तौ वह पराजयकेही समान है । ७ । व जिन लोगों ने अपनी जातिवालों का कार्य किया वे धन्यहैं व वही लोग पुत्रहैं, सुहृद, व बान्धव भी वेहीलोग हैं सो जानो घोषयात्रा में दुर्योधन दिकों को छुड़ाया ज्ञातियों का कार्यतो बहुत अच्छा किया अब यह निन्दित ज्ञातियोंका मारना न करना चाहिये क्योंकि युद्धहुआतो अवश्य कुरुवंशियोंका विनाशहोगा । ८ । सो जो आपलोगों ने दुर्योधनादिकों को न सिखलाया केवल उनके वधुवान ताही डालोगे तो यह आपलोगों का जीवनभी मृत्युही के समान है क्योंकि पाण्डवों को मार आपजीवे यह अच्छा नहीं समझा जाता । ९ । व युद्ध करने में उधरके भी लोग अवश्य मारेजायँगे क्योंकि चाहे देवता लोग जिनके मंत्री व सहायहैं वे इन्द्रभी अकेले

---

ness of temper, bashfulness and the true knowledge of facts and they are born of a noble family. People like you should not engage in bloodshed. You have the strength of wisdom as well as that of armies. You are glorious and therefore you should not let your glory be tarnished by sins a pure white cloth is blotted by a single black drop. What wise man would engage in bloodshed which leads to the destruction of all, to sin and hell and ends in death. A conqest which causes the death of one's kinsmen is equal to a defeat Blessed are those who assist their fellow men. They are real sons, friends and kinsmen. You released Duryodhan and others formerly and thus assisted your kinsmen. You should not now do the wicked deed of killing them; the Kauravas are sure to meet destruction, if the war breaks out. Your life will be like death,

त्यक्तान् विपक्षे तव जेतुं लब्धापि देवान् सचिवान् सहेन्द्रान् ॥ १० ॥ को वा कुरून् द्रोण-भीष्माभिगुप्तानश्वत्थाम्ना शल्यकृपादिभिश्च । रणे विजेतुं विषहेत राजन् राधेयगुप्तान् सहभूमिपालैः ॥ ११ ॥ महद्बलं धार्तराष्ट्रस्य राज्ञः को वै शक्तो हन्तुमक्षीयमाणः । सोऽहं जये चैव पराजये च निःश्रेयसं नाधिगच्छामि किंचित् ॥ १२ ॥ कथं हि नीचा इव दौष्कुलेया निर्धर्मार्थं कर्म कुर्युश्च पार्थाः । सोऽहं प्रसाद्य प्रणतो वासुदेवं पञ्चालानामधिपं चैव वृद्धम् ॥ १३ ॥ कृताञ्जलिः शरणं वः प्रपद्ये कथं स्वस्ति स्यात् कुरुसृञ्जयानाम् । न ह्येव ते वचनं

आपलोगों व भगवान् कृष्णचन्द्रजी के व चेकितान पार्षतों को बाहों से रक्षित सात्यकि आदिके सामने खड़ेहोंपर जीत न सकेंगे । १० । व फिर द्रोण भीष्म अश्वत्थामा शल्य कृपाचार्य कर्ण व अन्य राजाओं से रक्षित कौरवों को भी रण में अकेला कौन वीर जीत लेगा । ११ । व दुर्य्योधनकी भी बड़ी भारी सैन्यहै उसकोभी ऐसा कौन है कि उसकी ओर कोईमारा न जाय व वह उस सैन्य को जीतले, इस से हम जय व पराजय दोनों में कुछ कल्याण नहीं देखते । १२ । भला, दुष्कुल में उत्पन्नहुये नीचों के समान ये आप पाण्डवलोग धर्म अर्थ रहित यह कर्म कैसे करेंगे इससे हम आपलोगों से प्रसाद मांगते व प्रणाम करते तथा वासुदेव भगवान् से व बड़े वृद्ध राजा द्रुपदजी केभी प्रणाम करते । १३ । व हाथजोड़ आपलोगों के शरण में आये हैं बताइये कौरवों व सृञ्जयों का कल्याण कैसे हो व जो हमने ऐसा हीनवचन कहा कि पाण्डवादिकों के सामने इन्द्रभी न खड़ेहो सकेंगे, व यह कठोर वचन कि कौरवों के सामनेभी कौन खड़ाहोगा यह आपलोगों को भयभीत होनेकेलिये नहीं कहा वरन दोनों ओर के लोगोंका विनाश दिखाय मिलापहोजाने

---

if you will regard Duryodhan and others as enemies and will kill them. It is not well to live after killing one's own children. That side will surely suffer; for even Indra with gods cannot conquer you, protected as you are by Shree Krishna, Chekitan Satyaki and others.10. In a like manner, no single man can conquer the Kauravas protected by Drona, Bhishma, Ashwathama, Shalya, Kripacharya, Karan and other kings. Duryodhan too has got a large army and none can defeat him without suffering loss. I do not, therefore, see any good in either conquest or defeat. How can the virtuous Pandavas do a thing which is only fit for a low born man. I humbly ask you this boon and bow to Shree Krishna as well as to old king Drupad. With clasped hands I seek your refuge. Pray tell me how the Kauravas and Srinjayas can live in peace. I have said that even Indra cannot withstand the Pandavas and likewise none can oppose the Kauravas. I said this not to

वासुदेवोधनञ्जयोवा जातुकिंचिन्नकुर्यात् ॥१४॥ प्राणानदध्याद्याचमानः कुतोन्यदे वद्धिद्नसाधनार्थंब्रवीमि । एतद्राज्ञोभीष्मपुरोगमस्य मतंयद्वःशान्तिरिहोत्तमास्यात् १५

-इति महाभारते उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि संजय वाक्ये पंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥

युधिष्ठिर उवाच । कांनुवाचंसंजयमे शृणोषियुद्धैषिणींयेन युद्धाद्बिभेषि । अयुद्धं वैतातयुद्धाद्गरीयः कस्तल्लब्ध्वाजातु युध्येतसूत ॥ १ ॥ अकुर्वतश्चेत्पुरुषस्य संजय सिध्येत सङ्कल्पोमनसायं यमिच्छेत् । नकर्मकुर्याद्विदितं ममैतदन्यत्रयुद्धाद्बहुयल्लघीयः ॥ २ ॥ कुतोयुद्धंजातुनरोऽवगच्छेत् कोदेवशप्तोहिवृणीतयुद्धम् । सुखैषिणः

केःलिये कहा है इससे भगवान् वासुदेवजी व अर्जुनजी इस हमारे वचनकी ओर कि कैंच-न्म भ्रमी दृष्टि न करें । १४ । क्योंकि मांगनेपरतौ दुर्योधन प्राणभी देसक्तेहैं तौ अन्य राज्यादिको कौन कहै यह राजा व भीष्मादिकों काभी मतहै कि आपलोगोंको शान्तिही उत्तम है विग्रहहोना सर्वथा अनुचितहै ॥ १५ ॥

अध्याय ॥ २६ ॥

युधिष्ठिरजी बोले हे सञ्जय युद्धाभिलाषिणी वाणी हमारी कौनसी आपने सुनी जिस से युद्ध से डरतेहो, हे तात अयुद्ध युद्ध से बहुत अच्छा है सो अयुद्ध से कामचले तो कौन पुरुष युद्धकरै । १ । हे सञ्जयजी बिना कुछ किये ही पुरुष जो चाहे वह काम सिद्धहो जायतो फिर कर्म्म न करै यह बात हम जानतेहैं व जो बिना कुछ किये काम न चले तो युद्ध से भी थोड़ेश्रम से कर्म्महैं करै पर युद्ध कभी न करै २ युद्ध पुरुष कभी न करै, ऐसा किसके ऊपर दैव का शापहै जो अपने यूते युद्धकरना अङ्गीकार करै, फिर सुखकी

---

frighten you but to show you the loss on both the sides in case of war and to bring about peace. I pray that you will not take offence at my words. Duryodhan will give up his own life, if one asks it of him nothing to say of other material objects. Bhishma and other men also plead for peace and see no good in war." 15.

CHAPTER XXVI

"From what word of mine do you infer that I wish for war!" replied Yudhishthir, "Peace is certainly better than war. Who would fight when a result could be accomplished without it? Nobody will care for work, if a desired object can be had without it and if one has to stir himself for an object, one will certainly shun fighting so long as it can be got by a simpler deed. Every one should avoid fighting. Who is so accursed by fate as to take on himself

कर्मैद्रुर्वन्तिपार्था धर्मादहीनंयच्च लोकस्यपथ्यम् ॥ ३ ॥ धर्मोदयंसुखमाशंसमानाः कृच्छ्रोपायंतत्रचताकर्मदुःखम् । सुखंप्रेप्सुर्विजिघांसुश्च दुःखंयइन्द्रियाणां प्रीतिरसानुगामी ॥४॥ कामाभिध्यास्वशरीरं दुनोतिययामुक्तोन करोतिदुःखम् । यथेध्यमानस्य समिद्धतेजसो भूयोबलं वर्द्धतेपावकस्य ॥ ५ ॥ कामार्थलाभेनतथैवभूयो नतृप्यतेसर्पिषेवाग्निरिद्धः । सम्पश्येम भोगचयमहान्तं सहास्माभिर्धृतराष्ट्रस्यराज्ञः ॥ ६ ॥ नाश्रेयानीश्वरो विग्रहाणां नाश्रेयान्वैगीतशब्दंशृणोति । नाश्रेयान्वैसेवते माल्यगन्धान्न चाप्यश्रेयाननुलेपनानि ॥ ७ ॥ नाश्रेयान्वैप्रावारान संविवस्ते कथंत्वस्मान्संप्रणुदेत्

इच्छा से पार्थलोग कर्मतो करते हैं परन्तु जो धर्मयुक्त व लोकका हितहोता वही करते हैं ३। धर्मपरायणलोग यही सुखका कर्म करते जिसमें धर्मकी वृद्धहो जैसे ग्रीष्मऋतु में गङ्गाजी का स्नान व जिससुखके कर्ममें पापहोता उसे नहींकरते जैसे जीवहिंसा व परस्त्री गमनादि, । ४ । काम वासना का स्मरण करना चित्त को सन्तप्त करता है व उसमें लगेहुये से पुरुष को दुःख नहीं होता जैसे जलतेहुये अग्नि में घृतादिकी आहुति देनेसे और अग्नि का तेज बढ़ताहै दुःख उसे दुःख नहीं होता । ५ । व काम अर्थ सिद्धहोजाने परभी पुरुष इससे तृप्त नहीं होता जैसे घृतडालने से अग्नि नहीं तृप्तहोता इस विषय में हमलोगों व धृतराष्ट्र का दृष्टान्त देखिये हमलोगों सहित उनके १०५ पुत्रहैं तथापि उन्होंनेराज्य करना न छोड़ा करतेही रहे फिर उसपर भी तृप्त न हुये तो हम पांचों को दूरकरदिया पर अबभी नहीं तृप्तहुये । ६ । समर्थ विग्रहकर औरों के विरोधसे अपनी उत्कर्षता करता है उसको कोई कुछ नहीं कहता असमर्थ करतातो नष्टही होजाता, व असमर्थ नाचगीत नहीं देखता समर्थ देखता सुनताहै असमर्थ पुष्प चन्दन दि नहीं सूंघता समर्थ सूंघता व असमर्थ अंगादि अनुलेपन नहीं लगाता समर्थलगाता ७ असमर्थ वस्त्रपात्र नहीं धारणकरसक्ता

---

the consequences of fighting. The Pandavas certainly work for their happiness but donot deviate from the path of virtue Good men do only virtuous deeds to gain happiness, as bathing in the Ganges in summer season, they do no wicked deeds for their pleasure, as killing and adultry The mind becomes heated by thinking o worldly desires and being thus engaged man feels no trouble as the flames increase when fire is fed by libations of ghee and it feels no pain. Man is not satisfied even when his desires are accomplished as fire is never satisfied by the pouring of ghee. Look at Dhritrashtra, for example: he had one hundred and five sons including ourselves and yet he continued to reign. Not satisfied with this, he rejected us five and yet his desires remain as they were. A powerful man seeks his own greatness in the

कुरुभ्यः । अबलस्याद्गुणस्यैव काम प्रायःशरीरेहृदयंदुनोति ॥ ८ स्वयंराज विषमस्थःपरेषु सामर्थ्यमन्विच्छतितन्नसाधु । यथात्मनःपश्यतिवृत्तमेव तथापरेषामपिसोऽभ्युपैति ॥९॥ आसन्नमग्निन्तु निदाघकाले गम्भीरकक्षेगहनेविसृज्य । यथाविवृद्धं वायुवशेनशोचेत् क्षेमंमुमुक्षुः शिशिरव्यपाये ॥१०॥प्राप्तैश्वर्योधृतराष्ट्रोऽद्य राजालालप्यतेसंजयकस्यहतोः । मुख्यदुर्बुद्धिमनार्जवेरत पुत्रमन्दमूढममन्त्रिणन्तु ॥ ११ ॥ अनाप्तवचाप्तनमस्यवाचः सुयोधनाविदुरस्यावमत्य । सुतस्यराजाधृतराष्ट्र प्रियैषी स-

---

समर्थ करसक्ता, समर्थ चाहे जो करै जो राजाधृतराष्ट्रभी असमर्थ होतेतो हमलोगोंको देश से क्यों निकालदेते यद्यपि एसा है तथापि काम हृदय को खेदकरताहै सो काम मनुष्योंमे दुर्योधनादिकोंको ही उचित है पुन जो हम लोग हैं उनको उचित नहीं क्योंकि इनलोगों के शरीरोंमें जो कामरहताहै सो हृदयको खेदकरता है । ८ । राजा धृतराष्ट्र आप विषम स्वभाव हैं व औरों की सामर्थ देखतेहैं यह अच्छा नहीं जैसे अपने वृत्त जानतेहैं वैसेही औरों केभी जाने । ९ । अब धृतराष्ट्रका शोक करना इससमय एसा है जैसे कोई पुरुष बसन्त वा गर्मी के ऋतु में दो पहर के समय बड़भारी सूखे वृक्षों के वनमें अग्निलगाय व प्रचण्ड पवन के चलनेसे अग्नि बढ़े व उनके समीपही आप खड़े होकर फिर अपने बचाने का उपाय विचारै । १० । दुर्बुद्धि, कुटिलता करने में रत, मन्दमति, मूढ, व दुष्ट मंत्रियों के मत में चलनेवाले अपने पुत्रके वशीभूतहो ऐश्वर्य वा राजा धृतराष्ट्र मानतेही हैं फिर दीनवचन बार २ क्यों कहतेहैं । ११ । महा श्रेष्ठतम विदुरजी को नीचके समान दुर्बुद्धि दुर्योधन उनके वचनका निरादर करताहै एसेपुत्रका राजाधृतराष्ट्र प्रिय

---

quarrel of others and does not get blame, whereas a powerless man brings about his own ruin, if he does the same thing. A man endowed with power enjoys the songs of dancers, perfume of flowers and sandal pastes of good smell and fine clothes while a powerless man cannot enjoy such things. One having power can do anything. Dhritrashtra could not send us into exile if he had no power. Knowing all these things, the heart cannot but feel the pangs of desire. Fools like Duryodhan may be actuated by desires yet wise men like us should be free from them, for we do feel the pangs of desire in our bodies. King Dhritrashtra himself is of a vexacious temper as he desires to find out the power of others he should know the behaviour of others as he does his own. His grief is now like that of a man who having set fire to a dry forest on a summer midday is himself caught within it and thinks of escaping from it. 10 Led by his wicked son who is crooked, unwise and acting on the counsel

क्षुध्यमानो विश्वसेऽर्थधर्मौ च ॥ १२ ॥ मेधाविनं ह्यर्थकामं कुरूणां बहुश्रुतं वाग्मिनं शील-
वन्तम् । स तं राजा धृतराष्ट्रः कुरुभ्यो न सस्मार विदुरं पुत्रकाम्यात् ॥ १३ ॥ मानघ्नस्या
सौमानकामस्य चण्डं सरम्भिणश्चार्थधर्मातिगस्य । दुर्भाषिणो मन्युवशानुगस्य का-
मात्मनो दौर्हृदैर्भावितस्य ॥ १४ ॥ अनेयस्याश्रेयसो दीर्घमन्योर्मित्रद्रुहः राजपापबु-
द्धेः । सुतस्य राजा धृतराष्ट्रः प्रियैषी सम्पश्यमानः प्राजहाद्धर्मकामौ ॥ १५ ॥ तदैवाहं स-
ञ्जय दीव्यतोऽभून्नाति कुरूणामागतः स्यादभावः । काव्यां वाचं विदुरो भाषमाणो न
विन्दते यद्धार्तराष्ट्रात्प्रशंसाम् ॥ १६ ॥ क्षत्तुर्यदा नान्ववर्तन्त बुद्धिं कृच्छ्रं कुरून्स त
दाभ्यागमिष्यत् । यावत्प्रज्ञामन्ववर्तन्त तस्य तावत्तेषां राष्ट्रवृद्धिर्बभूव ॥ १७ ॥

चाहते जान बूझ अधर्मही करते हैं । १२ । देखो बड़े मेधावी कुरुवंशियों के शुभचिन्तक बहुतसे शास्त्र सुने पढ़े, प्रशस्तवक्ता, शीलवान् विदुरजीको कुरुवंशियोंके हितके अर्थ राजा धृतराष्ट्र पुत्रके स्नेहसे न स्मरण किया । १३ । मान नाशनेवाले, मानकी कामना करने वाले, दूसरेका उत्कर्ष न सहनेवाले, क्रोधी, अर्थ व धर्मका उल्लंघनकिये, दुर्भाषी कर्णादि दुष्ट राजाओं के वशानुग, कामात्मा, पापियों सेही पूजित, शिक्षा, देनेके अयोग्य, कल्याण रहित, बड़े क्रोधी, मित्रद्रोही व पापबुद्धि अपने पुत्र दुर्योधनको देखके २ राजा धृतराष्ट्र ने अर्थ व काम दोनों छोड़दिये । १५ । हे संजय हमने तभी जान लियाथा कि अब अबकौरवों का नाश होजायगा जब हम जुआ खेलरहेथे व विदुरजीने बहुत अच्छी बातकही पर धृतराष्ट्रके भी मुखसे न निकला कि विदुर अच्छा कहते हैं । १६ । हे संजय जबसे विदुरजी का परामर्श मानने लगे तभी से कौरवोंके ऊपर क्लेशआया व जबतक विदुरजी की बुद्धि के विचार में चले तबतक कौरवों का राज्य बढ़ता हीरहा । १७ ।

---

of bad advisers, King Dhritrashtra wishes to be great and yet utters pitiable words again and again. Duryodhan looks down upon and insults Vidur the best of men and the king deliberately sins in loving such a son On account of the evil influence of his son, the king does not take the good advice of Vidur the wisest of men, wellwisher of the Kauravas, scholar of many books, best of speakers and good natured The king disregards both *Jam* and *arth* for the sake of his son Duryodhan who is enemy to respect, ambitious, hot tempered, destroyer of *arth* and dharm, harsh, acting on the advice of wicked men like Karan, lustful respected by sinners, unworthy to be taught, accursed, rash, ill wisher of friends and sinful I foresaw the ruin of the Kauravas when at the time of our gambling match Vidur gave good advice and king Dhritrashtra did not utter

तदर्थलुब्धस्य निबोधमेऽद्यये मन्त्रिणोधार्तराष्ट्रस्यसूत । दुःशासनः शकुनिः सूतपुत्रो गावल्गणेपश्यसम्मोहमस्य ॥ १८ ॥ सोऽहंनपश्यामिपरीक्षमाणः कथंस्वस्तिस्यात् कुरुसृञ्जयानाम् । आत्तैश्वर्योधृतराष्ट्रः परेभ्यः प्रव्राजितेविदुरेदीर्घदृष्टौ ॥ १९ ॥ आशंसतेवैधृतराष्ट्रः सपुत्रो महाराज्यमसपत्नं पृथिव्याम् । तस्मिञ्शमः केवलंनोपलभ्यः सर्वंस्वकंमद्गतंमन्यतेऽर्थम् ॥ २० ॥ यत्तत्कर्णोमन्यते पारणीयंयुद्धे गृहीतायुधमर्जुनंवै । आसंश्चयुद्धानि पुरामहान्ति कथंकर्णोनाभवद्द्वीपएषाम् ॥ २१ ॥ कर्णश्चजानातिसुयोधनश्च द्रोणश्चजानाति पितामहश्च । अन्येचयेकुरवस्तत्र सन्ति यथार्जुनान्नास्त्यपरोधनुर्द्धरः ॥ २२ ॥ जानन्त्येतत्कुरवः सर्वएव येचाप्यन्ये भूमिपालाः

हे संजय, इससे अर्थ के लोभी हमारे वचनसुनो, व जो दुर्योधनके मंत्री, दुश्शासन, शकुनि, व कर्ण हैं उनकी मूढ़ता देखो १८ सो हम इसकी परीक्षाही करते हैं कि कौरवों व सृंजयों की स्वस्ति कैसेहो पर नहीं देखते, क्योंकि अब धृतराष्ट्रजी ने और लोगोंकाभी बहुत ऐश्वर्यपाय दीर्घदर्शी विदुरजी को राज्यसे निकाल दिया १९ अब पुत्रों सहित धृतराष्ट्रजी प्रशंसा करते हैं कि पृथ्वी में हमारा निष्कंटक राज्यहोगया, अब उनलोगोंके साथ हमारा मेलहोता नहींदेख पड़ता जिन्होंने अब हमको वनवास हुआ तो अपना सब कार्य सिद्ध मानलिया, मानों हमी लोग उनके सब कार्यों के अवरोधक थे २० जो कर्ण युद्ध में आयुध हाथमें लिये अर्जुनको अजेय नहीं समझता है तो विराटादि नगरों में तो अर्जुन से बड़ेबड़े बहुत युद्धहुये उनमें डूबते हुये कौरवोंको द्वीप समान आश्रय स्थान वह क्योंन हुआ कि छुड़ाने न देता २१ अर्जुन से अधिक दूसरा धनुर्द्धर भूमण्डल में नहीं है इसबात को कर्ण जानता है, व दुर्योधन भी जानते हैं, व द्रोणाचार्य व भीष्म पितामहजीभी जानते हैं व और औरभी कौरव जो वहां हैं व वे पराक्रमी थे सब जानते हैं २२

---

a single word in his praise. The Kauravas have come to grief from the time they disregarded Vidur's advice: their kingdom increased so long as they heared him. Give ear to my words full of meaning, Sanjaya and see the folly of the advisors of Duryodhan, Dushasan, Karan and Shakuni. I see no way to the peace of the Kauravas, O Sanjaya; for Dhritrashtra, having got the wealth of others, has turned out far-seeing Vidur from his kingdom. Now Dhritrashtra and his sons boast of their having made their kingdom free from thorns. We can see no way of peace with the avaricious men who thought themselves happy on sending us into exile as if we were a binderance to their happiness. 20. Karan, does not think it impossible to conquer Arjun in battle, though he could not help the Kauravas from defeat at Virat-nager. There is no warrior in

सचेताः । दुर्योधनेराज्यमिहाभवद्यथा अरिन्दमे फाल्गुनेविद्यमाने ॥ २३ ॥ तेनानु-
बन्धंमन्यते धार्तराष्ट्रः शक्यंहर्तुंपाण्डवानां ममत्वम् । किरीटिना तालमात्रायुधेन तद्वे-
दिनासंयुगंतत्रगत्वा ॥ २४ ॥ गाण्डीवविस्फारितशब्दमाजावश्रृण्वाना धार्तराष्ट्राध्रिय-
न्त । क्रुद्धंनचेद्वीक्षते भीमसेनं सुयोधनोमन्यते सिद्धमर्थम् ॥ २५ ॥ इन्द्रोऽप्येतन्नोत्स-
हेतात हर्तुमैश्वर्यंनोजीवतिभीमसेने । धनञ्जयेनकुले चैवसूत तथावीरेसहदेवे सहि-
ष्णौ ॥ २६ ॥ सचेदेतांप्रतिपद्येतबुद्धिं वृद्धोराजा सहपुत्रैरसूत । एवंरणेपाण्डवकोप-
दग्धा नतनश्येयु संजय धार्तराष्ट्राः ॥ २७ ॥ जानासित्वंक्लेशमस्मासु वृत्तंत्वांपूजयन्

जैसे शत्रुओं के नाशक अर्जुन के यहां न होनेपर दुर्योधन के पास राज्य होगया है उस को सब कौरव लोग जानते हैं, व और भी राजलोग जो यहां इकट्ठे हैं वे भी जानते हैं। २३ । इसी हेतुसे, दुर्योधन पाण्डवों का ममत्व हर लेना, चार हाथ का लम्बा आयुध हाथमेंलिये, धनुर्विद्या जाननेवाले अर्जुन के सामने युद्धमें जाकर अपने राज्यके लिये अच्छा समझते हैं। २४ । परन्तु हम जानते हैं, जोरसे खींचेहुये गाण्डीव धन्वाका शब्द जब तक युद्धमें नहीं सुना तभीतक सब धृतराष्ट्र के पुत्रजीते हैं, व जब तक भीमसेन को युद्धमें क्रुद्धनहीं देखते तभीतक दुर्योधन अपनाअर्थ सिद्ध मानते हैं २५। हे तात इन लोगोंकी कौन गणना है, इन्द्रभी भीमसेन, अर्जुन व नकुल सहदेवके जीवते हमारा ऐश्वर्य नहीं हरसके । २६ ।. जो हे संजय, जो अपने पुत्रों सहित वृद्ध राजा धृतराष्ट्रजी भी इसबातको समझें तो धृतराष्ट्र पुत्र संग्राम में पाण्डवों के कोप से भस्म होकर नाशको न प्राप्तहों। २७ । हे संजय आपको पूजाकर हम क्षमापन कराते हैं,

---

world greater than Arjun and Karan knows it as well as Duryodhan, Dronacharya, Bhishma and other Kaurava warriors who were present at the great battle fought during ghosh-yatra. All the Kauravas know that Duryodhan is master of the kingdom only so long as Arjun the destroyer of enemies is not there to oppose him. It is thus that Duryodhan thinks it proper to withhold the wealth of the Pandavas at the risk of having to fight with Arjun the great archer with a bow four hands long. But we know that the sons of Dhritrashtra are alive so long as they have not heard twang of the Gandiva bow drawn with force and Duryodhan thinks himself successful so long as he has not seen the angry face of Bhimsen. Even Indra cannot deprive me of my wealth during the life time of Bhimsen, Arjun, Nakul and Sahadeva. His sons will not be destroyed in battle by the anger of the Pandavas, if king Dhritrashtra bears these facts in mind. We beg

संनयाहं क्षमेयम् । यच्चास्माकं कौरवैर्भूतपूर्वं यानोवृत्तिर्धार्तराष्ट्रे तदासीत् ॥ २८ ॥ अद्यापितत्तत्तथैववर्त्ततां शान्तिंगमिष्यामियथात्वमात्थ । इन्द्रप्रस्थेभवतु ममैवराज्यं सुयोधनो यच्छतु भारताग्र्यः ॥ २९ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि युधिष्ठिर वाक्ये षड्विंशोऽध्यायः ॥ २६ ॥

सञ्जयउवाच । धर्मनित्यापाण्डवते विचेष्टालोकेश्रुतादृश्यतेचापिपार्थ । महाश्रावंजीवितंचाप्यनित्यंसम्पश्यत्वंपाण्डवमाव्यनीनशः ॥१॥ नचेद्भागंकुरवोऽन्यत्रयुद्धात्प्रयच्छेरंस्तुभ्यमजातशत्रो । भैक्ष्यचर्यामन्धकवृष्णिराज्येश्रेयोमन्येनतुयुद्धेनराज्यम् ॥ २ ॥ अल्पकालंजीवितंयन्मनुष्येमहाश्रावं नित्यदुःखंचलञ्च । भूयश्चतद्यशसोनानु

आप जानते हो कौरवों ने जो २ कष्ट हम लोगोंको दिये हैं व हम लोगोंकी वृत्ति जैसी दुर्योधनादिकोंमें रही यहभी जानते हो । २८ । हस्तिनापुर बड़ाराज्य है और इन्द्रप्रस्थ छोटा राज्य है इस लिये हमको छोटा राज्यदेकर बड़ेराज्य को आपही रक्खें ।

अध्याय २७ ॥

युधिष्ठिरजी के वचन सुन फिर सञ्जयजी बोले, हे पार्थ धर्ममें तुम्हारा व्यवहार व्यापार लोक में सुना व देखाभी यहांभी आपकी कीर्त्तिभी सुनी इस से अनित्य जीविका के अर्थ व्यर्थ कौरवोंको न मारिये । १ । कदाचित् विनायुद्ध किये कौरव लोग आपको राज्यभी न दें तो अन्धक वंशियों व वृष्णिवंशियों के राज्यमें भिक्षामांग निर्वाह करना अच्छा है पर युद्धकर राज्यलेना अच्छा नहीं ।२। एक तो मनुष्यका जीवन थोड़ेही दिनोंका, यहभी अति चलायमान व अनित्य उसमेंभी नित्य दुःख, व फिर चंचल, स्थिरता

---

your pardon respectfully, Sanjaya. *You know what troubles the* Kauravas have given us as well as our treatment with them. Hasthinapur is a great kingdom and Indraprasth is its defendency we shall be satisfied if they give us the lesser kingdom of Indraprasth, keeping the larger one for themselves.

CHAPTER XXVII

On hearing the speech of Yudhishthir, Sanjaya said, "The world knows of your virtuous deeds as well as of your great fame; you must not destroy the Kauravas for the sake of wealth that is transitory. You must not fight for the kingdom even if the Kauravas are not willing to restore it without fighting; it is better to live on alms in the kingdom of Vrishnis and Andhaks. Donot sin uselessly for a life that is transitory, full of pain and not sta-

रूपंतस्मात्पापंपाण्डवमाकृथास्त्वम् ॥ ३ ॥ कामामनुष्यंप्रसजन्तएते धर्मस्यपेविघ्नमू लंनरेन्द्र । पूर्वंनरस्तान्मतिमान्प्रणिघ्नन् लोकेप्रशंसांलभतेऽनवद्याम् ॥ ४ ॥ निबन्धनीह्यर्थतृष्णेहपार्थ तामिच्छतांबाध्यतेधर्मएव । धर्मन्तुयःप्रवृणीतेसबुद्धः कामेगृध्नोहीयतेऽर्थानुरोधात् ॥ ५ ॥ धर्मंकृत्वाकर्मणां तातमुख्यं महाप्रतापःसवितेवभाति । हीनोह्रिधर्मेणमहीमपीमां लब्ध्वानरः सीदतिपापबुद्धिः ॥ ६ ॥ वेदोऽधीतश्चरितं ब्रह्मचर्यं यज्ञैरिष्टं ब्राह्मणेभ्यश्च दत्तम् । परंस्थानंमन्यमानेनभूय आत्मादत्तो वर्षपूगंसुखेभ्यः ॥ ७ ॥ सुखप्रिये सेवमानोतिवेलं योगाभ्यासे योनकरोतिकर्म । वित्तक्षयेहीनसुखो-

---

क्षणमात्रकी भी नहीं फिर वह यश के अनुरूप नहीं इस से पाण्डव आप वृथा पाप न करें । ३ । हे नरेन्द्र धर्मके विघ्नके मूल ये काम मनुष्यको हठसे आकर लिपटजाते हैं इस से बुद्धिमान् पुरुष प्रथम उनका विनाशकरता हुआ लोकमें उत्तम प्रशंसा पाताहै।४। हे पार्थ अर्थ की तृष्णा इस संसार में महाबन्धन है, जो पुरुष अर्थ तृष्णाकी इच्छा करते हैं उनका धर्म बाधित होजाताहै इस से जो पुरुष धर्महो अङ्गीकार करता वही ज्ञानीहै, व जो कामकी इच्छा करताहै उसका अर्थभी जातारहताहै धर्म तो मानों पहिलही बाधित होगया । ५ । हेतात, धर्म, अर्थ, कामादिकर्म्मों में धर्मको जो पुरुष मुख्य मानता है वह महाप्रतापी सूर्य्य समान प्रकाशित होता, व धर्महीन पुरुष जो यह पृथ्वीभर पायजाय तौभी वह पापबुद्धि कष्टही पाता है । ६ । आपने वेदपढ़े, ब्रह्मचर्य्य धारण किया, बहुत से यज्ञ किये, ब्राह्मणों को इच्छितदान दिया, व परलोक में बहुतवर्षों तक सुखपाने के लिये अपना आत्माभी देदिया । ७ । जो पुरुषभोग विलासादि सुख व पुत्रादि प्रियोंहाही सेवन कियाकरता व योगाभ्यास के कर्म नहीं करता, वह धननाश होजाने

---

tionary in one condition. The worldly desires, which are hinderances to dharm, cling naturally to the people of the world; the wise man gets praise by destroying them. The thirst for wealth is very strong and destroys Dharm. He is wise who accepts the Dharm alone. A slave of desires loses his wealth as well as Dharm.5. He who makes *dharm*, *arth* and *kam* his chief care, becomes glorious like the sun; but an irreligious man though he may become master of the whole earth is immersed in sin. You have read the Vedas, practiced celibacy, performed many sacrifices, given the Brahmans what they asked and have self sacrifice for the purpose of enjoying long years of happiness in the world to come. He who passes his life in luxury in the midst of his family and friends and practices no asceticism, becomes unhappy at the loss of wealth and has no

ऽतिवेलं दुःखंशेते कामवेगप्रणुन्नः ॥ ८ ॥ एवंपुनर्ब्रह्मचर्य्याप्रसक्तो हित्वाधर्मंपापकृत्रात्यधर्मम् । अश्रद्दधत्परलोकायमूढो हित्वादेहंतप्यतेप्रेत्यमन्दः ॥ ९ ॥ नकर्मणांविप्रणाशाऽस्त्यमुत्र पुण्यानांवाप्यथवापापकानाम् । पूर्वकर्त्तुर्गच्छतिपुण्यपापं पश्चात्त्वेनमनुयात्येवकर्त्ता ॥ १० ॥ न्यायोपेतंब्राह्मणेभ्योयदन्नं श्रद्धापूतंगन्धरसोपपन्नम् । अन्वाहार्य्येषूत्तमदक्षिणेषु तथारूपंकर्मविख्यायतेते ॥ ११ ॥ इहक्षेत्रेक्रियतेपार्थकार्य्यं नवैकिञ्चित्क्रियतेप्रेत्यकार्य्यम् । कृतंत्वयापारलौक्यञ्चकार्य्यं पुण्यंमहत्सद्भिरनुप्रशस्तम् ॥ १२ ॥ जहातिमृत्युञ्चजरांभयञ्च क्षुत्पिपासेमनसोऽप्रियाणि । नकर्त्तव्यं विद्यतेतत्रकिञ्चिदन्यत्रवैचेन्द्रियप्रीणनाद्धि ॥ १३ ॥ एवंरूपंकर्मफलंनरेन्द्र मात्रावद्

पर सुखहीन होजाता है व काम वेगसे प्रेरितदुःख पूर्व्वक सोताहै । ८ । इसीप्रकार जो पुरुष ब्रह्मचर्य्य में युक्त हो धर्म करता व धर्म छोड़ फिर अधर्म करने लगता उसकी परलोक में अश्रद्धा होजाती है वह मन्दबुद्धि मरने के पीछे सन्तप्तहोता है । ९ । परलोक में कर्मोंका नाश नहीं होता चाहे पुण्यकर्महो व पापकर्म्म पुण्य व पाप जो किया जाता वह पहिले परलोक में पहुँच जाता व उसके करने वाला पीछेसे पहुँचता है । १० । आपने न्याय पूर्वक धन इकट्ठाकर ब्राह्मणों को दिया सो भी जो श्रद्धासे पवित्र व गन्ध रसादि युक्त, वह भी बहुधा यज्ञ कराय दक्षिणा की रीतिसे इसप्रकार के सब उत्तम आपके कर्म विख्यातहैं । ११ । हेपार्थ धर्म इसी लोकमें किया जाताहै मरजाने पर फिर वहां कुछ नहीं कियाजाता, इससे आपने पारलौकिक कार्य पुण्य यहीं सब करलिया जिसकी प्रशंसा सब पंडितलोग करते हैं । १२ । परलोक में न मृत्युहै, न बुढ़ापा, न भय, न भूख, प्यास व न कुछ मनके अप्रिय पदार्थ, व न वहां कुछ करनाहोता, केवल इन्द्रियोंकाही पालन पोषण करना होताहै । १३ । हेपार्थ कामसे इसप्रकार का नाश देनेवाला

---

rest at night by painful thought of desires. In a like manner, he who leads a virtuous life of celibacy and then plunges in *adharm* loses all belief in the next world and is unhappy after death. One's deeds are not destroyed in the next world. Whether the deeds be good or bad, their result goes to the next world before the doer. 10. You are famous for your good deeds because you collected wealth with fair means and then gave it to Brahmans as donation after performing sacrifices. Good deeds can be done only in this world and not in the next. You have done for the next world good deeds which are praised by learned men. Death and old age, fear, hunger and thirst or things displeasing the mind cannot enter the next world nor is there anything to be done except the care of organs. One should not do a deed which is not lasting. Hell is the result

हृदयस्याप्रियेण । सक्रोधजंपाण्डवहर्षजञ्च लोकावुभौमाप्रहासीश्चिराय ॥ १४ ॥ अन्तंगत्वाकर्मणांमाप्रजह्याः सत्यंदमञ्चार्जवमानृशंस्यम् । अश्वमेधंराजसूयंतथेष्ट्वा पापस्यान्तंकर्मणोमापुनर्गाः ॥ १५ ॥ तच्चेदेवंद्वेषरूपेणपार्थाः करिष्यध्वंकर्मपापं चिराय । निवसध्वंवर्षपूगान्वनेषुदुःखं वासंपाण्डवाधर्महेतोः ॥ १६ ॥ अप्रव्रज्यपाण्डवाः हित्वापुरस्तादात्माधीनंयद्बलंतेतदासीत् । नित्यञ्चतवइमेसचिवास्तवेमे जनार्दनो युयुधानश्चवीरः ॥ १७ ॥ मत्स्योराजारुक्मरथःसपुत्रः प्रहारिभिःसहपुत्रैर्विराट । राजानश्चयेविजिताःपुरस्तात्त्वामेवतेसंश्रयेयुःसमस्ताः ॥ १८ ॥ महासहायःप्रतपन्

कर्म न करै, क्रोधसे उत्पन्न नाक, व हर्षसे उत्पन्न स्वर्गलोक दोनों हैं परन्तु आप नरक वा स्वर्गदोनों के जानेवाले कर्म न करैं, किन्तु मोक्ष के अर्थ उत्कृष्ट योगाभ्यास ही कीजिये भाइयों को मार इस राज्य के लेने से क्या है । १४ । कर्मों के पीछे सत्य, दम, सरलता, अक्रूरता आदि शुभकर्म आप न छोड़ें व अश्वमेध राजसूयादि यज्ञ लोक के संग्रहके लिये करें परन्तु पाप कर्म के समीप अब आप न जावें ।१५। हे पाण्डव जो यह गोत्र वधरूप पाप बहुत दिनोंके लिये आपलोगकरैंगे सो जो वनमें बहुत वर्षोंतक आपलोग वसे सो दुःख सहकर धर्म किया वह वृथा ही होजायगा । १६ । यदि कहिये कि उससमय कोई सहाय न था इससे हमने वनवास अङ्गीकार किया दुर्योधनके भयसे नहीं, तो वनके जानेसे प्रथमही क्यों न युद्ध किया राज्यादि छोड़ क्यों चलेगये, यह आपलोगों का शारीरिक बल तो तबभी विद्यमान था, व ये मन्त्री लोगभी आपके वशमें थे व भगवान् कृष्णचन्द्र सात्यकि वीरभी वश में थे । १७ । अपने पुत्रों सहित रुक्मरथ, व विराटभी बड़े प्रहारक अपने पुत्रों सहित, इनके सिवाय जिन राजाओं को आप लोगोंने प्रथम जीता था वे सबतो आपही के संगहोते । १८ । इसप्रकार इन सबोंकी सहायता से प्रताप

---

of anger and paradise is the result of pleasure: you should not do deeds that lead to hell or paradise, you should practice severe asceticism for the sake of salvation and do not try to secure the kingdom by killing your brothers. Donot set your mind against truth, control of organs, simple habits and absence of cruelty. Perform Rajsuya, Ashwamedh and other sacrifices to secure better worlds; but donot go near sin If you will commit the heinous sin of killing your kinsmen, you will lose the merit of virtuous deeds, which you have been doing so long If you say that you consented to the exile because you had no helpers at that time and not for the fear of Duryodhan, what prevented you from waging war before you went into exile and why did you leave your Kingdom? You were as strong of body then as you are now and you had the same

वलस्थः पुरस्कृतोनाशुदंवार्जुनाभ्याम् । वरानहनिष्यनद्विषतोरङ्गमध्ये व्यनेष्यथाधार्त्त राष्ट्रस्यदर्पम् ॥ १९ ॥ बलङ्कस्माद्वर्द्धयित्वापरस्य निजानकस्मात्कर्षयित्वासहायान् । निष्यकस्माद्वर्षपूगान्वनेषु युयुत्ससेपाण्डवहीनकालम् ॥ २० ॥ अप्राज्ञोवापाण्डव युध्यमानो धर्मज्ञोवाभूतिमथोऽभ्युपैति । प्रज्ञावानवाबुध्यमानोऽपिधर्मं संरम्भाद्वा सोऽपिभूनैरवेति ॥ २१ ॥ नाधर्मेतेधी तेपार्थबुद्धिर्न संरम्भात्कर्मचकर्थपापम् । अस्थि किंतत्कारणंयस्यहेतोः प्रज्ञाविरुद्धंकर्मचिकीर्षसीदम् ॥ २२ ॥ अव्याधिजं कटुकंशीर्षरोगियशोमुषं पापफलोदयवा । सतांपेयंयन्नपिबन्त्यसन्तो मन्युंमहाराज

के मारे तपते हुये कृष्णचन्द्रजी व अर्ज्जुन के सामने बड़े बड़े शत्रुओं को रंगभूमि में मारते हुये आपने दुर्योधन का अहङ्कार क्यों न दूरकर दिया । १९ । अब शत्रुका बल बढ़ाकर व अपने सहायों को दुर्बल कराकर वनमें तेरहवर्ष बस इस हीनकाल में क्यों लड़ने की इच्छा करतेहो, इससे तो उस समयका लड़ना अच्छा था । २० । अबतो हमारे मतसे किसी रीतिसे भी युद्ध न करना चाहिये, क्योंकि चाहे अधर्मज्ञहो व धर्मज्ञ हो पर युद्ध करनेपर ऐश्वर्य उसको मिलता है, पर कभी ऐसाभी देखा कि अधर्मज्ञकी विजय व धर्मज्ञ की पराजय, व बुद्धिमान कहीं युद्ध करने में हारजाता व निर्बुद्धि जीत-जाता प्रयोजन कि युद्ध में जय पराजय किसी के अधीन नहीं होती । २१ । हे पार्थ, आजतक अधर्म में आप की बुद्धि कभी नहीं टिकतीथी व न कभी क्रोधसे आपने पापकिया अब नहीं जानते क्याकारण है जो आप अपनी बुद्धि के विरुद्ध यह गोत्रवध रूप पापकिया चाहते हैं । २२ । हे महाराज, यह क्रोध आपके पीनेके योग्यहै जोकि न तो किसीरोगसे

---

advisers under your control as well as Shree Krishna and valliant Satyaki. You had then Rukmarath and king Virat with their valliant sons as well as the kings whom you had conquered, to help you. Why did you not crush down the pride of Duryodhan by destroying your great enemies in the field of battle by the help of glorious Shree Krishna and brave Arjun? Having given time to increase the power of your enemy and to decrease the power of your friends and having lived for thirteen years in exile, why do you intend to fight now? It was certainly better to fight at that time.20. I think this is not the proper time for you to fight; for the virtuous as well as the wicked get wealth from fighting, but we often see a wicked men defeating a virtuous man and a wise man suffering defeat from him who is not wise. You have never thought of deviating from the path of virtue and never committed a sin in anger; why, I donot know, you are ready to commit the sin of

पिबप्रशाम्य ॥ २३ ॥ पापानुबन्धंकोनुतं कामयेतक्षमैवतेज्यायसीनोतभोगाः । यत्रभीष्मःशान्तनवोहतःस्या यत्रद्रोणःसहपुत्रोहतःस्यात् ॥ २४ ॥ कृपःशल्यःसौमदत्तिर्विकर्णो विविंशतिः कर्णदुर्योधनौच । एतानहत्वाकीदृशं तत्सुखं स्यायद्विन्देथास्तदनुब्रूहिपार्थ ॥ २५ ॥ लब्ध्वापीमांपृथिवींसागरान्तां जरामृत्यूनैवहित्वंप्रजह्याः । प्रियाप्रियेसुखदुःखेचराजन्नेवंविद्वन्नैवयुद्धंकुरुत्वम् ॥ २६ ॥ अमात्यानांयदिकामंस्यहेतोरेव युक्तकर्मचिकीर्षसित्वम् । अपक्रामेःस्वंप्रदायैव तेषांमागास्त्वंदेवयानात् पथोद्य ॥ २७ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि संजय वाक्ये
सप्तविंशोऽध्यायः ॥ २७ ॥

उत्पन्न है व कड़ है, व शिर दुखाने लगता है यशको हरता है, पाप उदय इसका फलहै, सज्जनों के पीनेके योग्य है व असज्जनों के पीनेके योग्य नहीं, फिर आपसे बढ़कर सज्जन और कौन है जो क्रोध पानकरे । २३ । ऐसा कौन है जो पापमूल क्रोधकरने की इच्छाकरे आपको क्षमाही बहुत अच्छी है भोग नहीं, क्योंकि जिसक्रोध में, आपके परदादा शन्तनुजी के पुत्र भीष्मजी मारे जायँगे, व पुत्र सहित द्रोणाचार्य आप लोगोंके भी गुरू । २४ । फिर कृपाचार्य, राजाशल्य आपके मामा सोमदत्त, विकर्ण, विविंशति, कर्ण व दुर्योधन, इन सबोंको मार आपको कैसा सुखहोगा, जैसा सुख पाइयेगा हमसे कहिये । २५ । समुद्र, काल, पृथ्वी हमको जरा मरण प्रिय, अप्रिय सुख दुःख से नहीं, छुड़ाते यह देखकर आपको लड़ना योग्य नहीं है । २६ । हे भूप यदि अपने अमात्यों का हित चहते होतो उनको धनदो नहीं तो तुम नरक को जाओगे ॥ २७ ॥

---

your kinsmen slaughter. You must subdue king, your anger which is not the result of a discase yet it produces headache, destroys famo and leads to sin. Good men can subdue, but not the wicked men. Who can be more qualified than you to subdue anger. You will desire to be over powered by anger the root of all sin. Forgiveness befits you very much and not enjoyment, for the anger which destroys your grandfather Bhishma the son of Shantanu as well as Dronacharya with son, Kripacharya, king Shalya your uncle, Somdatta, Vikaran, Vivinshati, Karan and Duryodhan, cannot lead to happiness. Time, land and water donot make us free from, old age, death, friends, foes, happiness and misery. Seeing this you must not fight. If you desire the safety of your kinsmen, give them wealth; if not, you will go to hell." 27.

युधिष्ठिर उवाच । असंशयंसञ्जयसत्यमेतद्धर्मोवरः कर्मणांयत्त्वमात्थ । ज्ञात्वा तुमांसञ्जय गर्हयेस्त्वंयदिधर्मं यद्यधर्मंचरेयम् ॥ १ ॥ यत्राधर्मोधर्मरूपाणि धत्तेधर्मः कृत्स्नोदृश्यतेऽधर्मरूपः । बिभ्रद्धर्मोधर्मरूपंतथाच विद्वांसस्तंसम्प्रपश्यन्तिबुद्ध्या ॥ २ ॥ एवंतथैवापदि लिङ्गमेतद्धर्माधर्मौ नित्यवृत्तीभजेताम् । आद्यंलिङ्गंयस्यतस्य प्रमाणमापद्धर्मं सञ्जयतंनिबोध ॥ ३ ॥ लुप्तायान्तुप्रकृतौयेनकर्म निष्पादयेत्तत् परीप्सेद्विहीनः।

अध्याय ॥ २८ ॥

सञ्जयके ऐसे वचन सुन महाराज युधिष्ठिरजी बोले, कि सञ्जय जैसा तुम कहतेहो इसमें कुछ सन्देह नहीं अधर्मसे धर्मही अच्छा होताहै, परन्तु धर्म वा अधर्म जो हमकरैं दोनोंको अच्छीतरह जान जो अधर्मही ठहरे तो हमारी निंदा कीजिये । १ । धर्माधर्म की परीक्षा तीन प्रकार की होती है, जैसे दम्भादि युक्त पुरुष में मंत्र जपादि अधर्म को अन्य पुरुष धर्मही जानतेहैं, उसी प्रकार प्रच्छन्न योगी दत्तात्रेयादि परमहंसों में रागद्वेषादि शून्यतारूप धर्म भी उन्मत्तवत् आचरण होनेके कारण अधर्मही ऐसा दिखाई देताहै, व वशिष्ठादि मुनियों में जो धर्म है वह धर्मही है, परंतु विद्वान् लोग अपनी बुद्धिसे अच्छी तरह देखलेते हैं, आपभीतो विद्वान् हैं, देखलीजिये हममें धर्म है वा अधर्म । २ । यहभी धर्म ब्राह्मणका अध्ययनादि, क्षत्रियका शौर्य्यादि, वैश्यका कृष्यादि जैसा पूर्वमें कहआये हैं वैसाही है, परन्तु आपत्काल में धर्म अधर्म दोनों नित्यवृत्ति हैं, जैसे आपत्कालमें ब्राह्मण व वैश्यको क्षत्रियों की वृत्ति शौर्य्यादि करना धर्म है व अनापत्काल में अधर्म, ऐसेही एकही धर्म अन्यवर्णका अन्यवर्ण में होनेसे अधर्म होजाताहै, परन्तु प्रमाणमुख्य धर्म काही है आपद्धर्म का नहीं । ३ । परन्तु जब जिसकी जो जीविकाहै वह लुप्तहोजाय तो

CHAPTER XXVIII

"Dharm is better than adharm, as you say, Sanjaya," said Yudhishthir in reply," but whether we act rightly or wrongly you must first examine and then you may blame us if it is proved that we are not right. The test of right and wrong is of three kinds: a crafty man performing asceticism is some times looked on as a real ascetic, whereas a real ascetic is regarded cunning; yet learned men can distinguish truth from falsehood. The duties of Brahmans, Kshatriyas and Vaishyas are reading, bravery and cultivation respectively, but during the times of trouble the one has to do the work of another, yet the real nature of the doer remains unchanged. The mode of earning livelihood, too, in times of trouble, may be altered, but it should be altered again as soon as the bad times pass away; in the same manner, it is improper to stick to one's own trade in

प्रकृतिस्थश्चापदि वर्त्तमान उभौ गर्ह्यौ भवतःसञ्जयैतौ ॥ ४ ॥ अविनाशमिच्छतां ब्राह्मणानां प्रायश्चित्तं विहितं यद्विधात्रा । सम्पश्येथाःकर्मसुवर्त्तमानान विकर्मस्थानसंजय गर्हयेस्त्वम् । ॥ ५ ॥ मनीषिणां सत्त्वविच्छेदनाय विधीयतेसत्सुवृत्तिः सदैव । अब्राह्मणाः सन्तितुयेन वैद्याःसर्वोत्संगं साधुमन्यततेभ्यः ॥ ६ ॥ तदध्वान.पितरोयेचपूर्वे पितामहायेचतेभ्यःपरेऽन्ये । यज्ञैषिणोयचहिकर्म कुर्युर्नान्यंततो नास्तिकोऽस्मीतिमन्ये

आपत्काल में भी जो जीविका न करनी चाहिये जैसे ब्राह्मणकी जीविका एक भिक्षाटन भी है वह आपत्काल में भी क्षत्रिय दिकों को न करनी चाहिये पर जब अपनी जीविका जाती रहै तो उसे क्षत्रियादि भी करसक्तेहैं तबवही उनका धर्म होजाता है परन्तु जब आपत्काल बीतजाने परभी उसको न छोड़े तो वह अधर्महोनेसे महानिन्द्यहै, ऐसेही को आपत्काल में भी अपनाही कर्म करताहै तो वहभी निन्द्य है क्योंकि उसमें प्राण जातेरहने व कुटुम्बियों के मरजानेसे आत्महत्याका दोष होताहै । ४ । हे संजय, जिससे कि ब्रह्माजीने ब्राह्मणोंको और वर्णकी जीविका करलेनेसे फिर आपत् से छूटनेपर प्रायश्चित्त लिखा है इससे विदित होता है कि आपत्कालमें एकदूसरेकी जीविका करसक्तेहैं बस इसीसे हमनेभी एकचक्रामें भिक्षाटन किया वह अनुचितनहीं है इससे कर्म करने वालोंको देखो जब जानों कि वे असत्कर्म करतेहैं तभी उनकी निन्दा करो । ५ । प्राणियोंका नाश जिससे नहो इस लिये पण्डितोंने सबके लियेभी ब्राह्मणों की वृत्ति भिक्षाटनका करना विधान करदिया है व जो अब्राह्मण विद्वान नहीं हैं उनके वंस्तेतः सबके समीप जाकरजो जीविका करैं उसका विधानही है । ६ । वह हमारे पितृ पितामहादि तथा अन्य प्रपितामहादि भी जिस मार्ग पर चलेहैं हमभी उसीपर चलते हैं क्योंकि हम आस्तिकहैं अन्य धर्म को नहीं मानते । ७ ।

---

troublous times, for in so doing there is danger of one's own death and the death of kinsmen. Brahma has ordered the Brahmans to perform penance after having earned livelihood by some other way in the time of trouble. From this it is clear that one can earn livelihood by other ways than his own and it was for this reason that we begged our food at Ekchakra. You should first look into the deeds of men and if their deeds are bad you may blame them. Learned men have prescribed begging for all classes to save their lives and the uneducated men of classes other than Brahman have the ways of their living already pointed out to them. We walk on the way that our forefathers have gone as we believe in the Almighty and in no other. We would not take by unfair means all the wealth of the world, of gods, and the regions of

॥ ७ ॥ यत्किञ्चिदेतद्वित्तमस्यां पृथिव्यांयद्देवानां त्रिदशानांपरंयत् । प्राजापत्यंत्रि-दिवंब्रह्मलोकंनाधर्मतः संजयकामयेयम् ॥ ८ ॥ धर्मेश्वरःकुशलोनीतिमां श्चाप्युपासिता ब्राह्मणानांमनीषी । नानाविधांश्चैवमहाबलांश्च राजन्यभोजाननुशास्तिकृष्णः ॥ ९ ॥ यदिह्यहंविसृजन्सामगर्ह्योनियुध्यमानो यदिजह्यांस्वधर्मम् । महायशाःकेशवस्तद्ब्रवीतु वासुदेवस्तूभयोरर्थकामः ॥ १० ॥ शैनेयोऽयञ्चेदयश्चान्धकाश्च वार्ष्णेयभोजाः कुकुराः सृञ्जयाश्च । उपासीनावासुदेवस्य बुद्धिंनिगृह्यशत्रून् सुहृदोनन्दयन्ति ॥ ११ ॥ वृष्ण्यन्धकाह्युग्रसेनादयोवै कृष्णप्रणीताःसर्व एवेन्द्रकल्पाः । मनस्विनःसत्यपराय-णाश्च महाबलायादवाभोगवन्तः ॥ १२ ॥ काश्यांबभ्रुःश्रियमुत्तमांगतो लब्ध्वाकृष्णं

हे सञ्जय, जोकुछ धन इस पृथ्वीपर है, व जो देवताओं के यहां है, व प्राजापत्य, त्रिदिव, ब्रह्मलोकादि जो कुछ पदार्थ हैं अधर्म से हम इनको भी नहीं इच्छा करते । ८ । देखो धर्म के ईश्वर, कुशल, नीतिमान, ब्राह्मणों के उपासक अति बुद्धिमान, कृष्णचन्द्रजी नाना-प्रकार के महा बलवान राजाओंको आनेहुये शिक्षा देते हैं । ९ । जो हम मिलाप करना न मानें तो निन्द्य समझे जायँ व जो युद्ध करते हुये अपना धर्म न करेंतो भी निन्द्यसमझे जायँ इनको तो दोनों अभीष्ट हैं समझावें समझतेहों तो समझें नहींतो युद्ध किया चाहें युद्धकरें, हम से कहते करते न बनताहोतो महायशस्वी भगवान् वासुदेवजी बैठे हैं ये बोलें क्योंकि ये हम दोनों जनोंका अर्थ चाहतेहैं । १० । फिर, शैनेय चेदि-वंशी, अन्धकवंशी, वृष्णिवंशी, भोजवंशी, कुकुरवंशी, व सृंजयवंशी, सब बैठे हैं, ये सब लोग वासुदेवजी कीही बुद्धिसे शत्रुओं व मित्रोंको आनन्दितकरते हैं । ११ । व उग्रसे-नादि वृष्णिवंशी अन्धकवंशी सब कृष्णचन्द्रही के चलायेहुये नीतिमार्ग पर चलते हैं, व सब देवतुल्य मनस्वी, सत्यपरायण, महाबली, यादवलोग बड़े २ भोगवान् यहां बैठे हैं

Prajapati, Trivid and Brahma. See, Shree Krishna the wi-e lord of Dharm and plitics, worshipper of Brahmans and very wise, picks out the most powerful kings and teaches them. You may blame, if you find us slow in contracting peace or doing our duty in the field of battle. Both peace and war are agreeable to us, the Kauravas may choose one of the two and if I am not on the right, let Bhagwan Vasudev of great glory, the well wisher of both sides, speak.10. Again, we have here the Shaineyas, the representatives of Chedi, the Andhaks, the Vrishnis, the Bhojes, the Kukurs, and and the Srinjayas sitting before us; they take the advice of Vasudeva in all matters of peace and war. Ugrasen and other Vrishnis and the Andhaks all follow Shree Krishna. We have here the great Yadavas, too, god-like men, truthful and exceedingly powerful.

भ्रातरमीश्वितारम् । यस्यैकामानवर्षतिवासुदेवो ग्रीष्मात्ययेमेघइवप्रजाभ्यः ॥ १३ ॥ ईदृशोऽयंकेशवस्ताबिद्वान् विद्धिह्येनं कर्मणांनिश्चयज्ञम्। प्रियश्चनःसाधुतमश्चकृष्णो नातिक्रमेवचनंकेशवस्य ॥ १४ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणिसञ्जययानपर्वणियुधिष्ठिरवाक्ये
अष्टाविंशोऽध्याय ॥ २८ ॥

वासुदेवउवाच । अविनाशंसञ्जयपाण्डवानामिच्छाम्यहंभूतिमेषांप्रियञ्च । तथा राज्ञोधृतराष्ट्रस्यसूत समाशंसेबहुपुत्रस्यबुद्धिम् ॥१॥कामोहिमेसञ्जयनित्यमेव नान्यद् ब्रूयांतान्प्रतिशाम्यतेति । राज्ञश्चहिप्रियमेतच्छृणोमि मन्येचैतत्पाण्डवानांसमक्षम् २ ॥ सुदुष्करस्तत्रशमोहिनूनंप्रदर्शितः सञ्जयपाण्डवेनायस्मिन्गृद्धोधृतराष्ट्र सपुत्रः कस्मादे

। १२ । फिर कृष्णचन्द्रजी को ऐश्वर्यदायक भाई पाकर काशी के राजा बभ्रुजी उत्तम श्रीपाये बैठे हैं, जिसको सब इच्छित वासुदेवजी देते हैं जैसे वर्षाऋतुमें सब प्रजाओं का हित मेघ बरसाते हैं । १३ । सब कर्मोंके पंडित मेरेप्रिय साधु यह केशव हैं इन का वचन हम अवश्य मानेंगे । १४ ।

अध्याय ॥ २९ ॥

तब भगवान् महान् बुद्धिमान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले कि संजय हमसदा पाण्डवों का अविनाश, ऐश्वर्य व प्रियचाहते हैं, व वैसेही बहुत पुत्र सहित राजा धृतराष्ट्रकी वृद्धिचाहते हैं ।१। व हमको यही इच्छारहती है कि इनलोगों से यही प्रतिदिन कहें तुमलोग आपस में मिलेरहो शान्त होजाओ, व पाण्डवों के सामने राजा युधिष्ठिर से भी यही सुनते हैं कि उनको यही प्रिय है ।२। परन्तु हे संजय, राज्यके निमित्त युधिष्ठिरजी शान्तहोना चाहतेहैं

Babhru the wealthy king of Kashi, who has found in Shree Krishna a wealth giving brother, is also present here Shree Krishna accomplishes all his desires as the clouds of rains do good to all the people. My dear friend Keshav knows all things and I shall act upon his advice" 14

CHAPTER XXIX

Shree Krishna of great wisdom then said to Sanjaya, "I am the well wisher of king Dhritrashtra and his many sons as well as of the Pandavas whose safety, wealth and well being are under my constant care. It is my constant desire that they should live at peace with one another and Yudhishthir always tells the Pandavas that he is a lover of peace. But it is very difficult for Yudhishthir to remain peaceful without getting the kingdom, of which king Dhritrashtra

पांकरुहोनावमूर्छेद् ॥ ३ ॥ नत्वंधर्मविचरंसञ्जयेहमचक्ष्य जानासियुधिष्ठिराच्च । अथोकस्मात्संजयपाण्डवस्यउत्साहिनः पूरयतःस्वकर्म ॥ ४ ॥ यथाख्यातमावसतः कुटुम्बेपुराकस्मात्साधुविलोपमात्थ । अस्मिनविधौवर्त्तमाने यथावदुच्चवचामनयोब्राह्मणानाम् ॥५॥ कर्मणाहुःसिद्धिमेकेपरत्र हित्वाकर्मविद्ययासिद्धिमेके । नाभुञ्जानोभक्ष्यभोज्यस्यतृप्ये द्विद्वानपीह विहितंब्राह्मणानाम् ॥ ६ ॥ यावैविद्याः साधयन्तीह कर्मतासांफलं विद्यनेनेतरासाम् । तत्रेहवैदृष्टफलन्तुकर्म पीत्वोदकं शाम्यतितृष्णयार्त्तः ॥ ७ ॥ सोऽयंविधिर्विहितः कर्मणैवसम्वर्त्तते संजयतत्रकर्म । तत्रयोऽन्यत् कर्मणःसा

वह अति दुष्कर है, क्योंकि इस राज्यके पुत्र सहित धृतराष्ट्रभी अति लोभीहैं फिर उन कौरवों का कलह क्यों न बढ़ेगा ।३। हे संजय, विचलित धर्मको पालन करतेहुये हमको व युधिष्ठिर जीको तुम जानतेहो, फिर उत्साह करनेवाले, प्रसिद्ध कार्य्य करतेहुये कुटुम्बमें बसे युधिष्ठिरजीसे तुमने यह क्यों कहा कि तुम धर्मलोप करतेहो, इस विषयमें तो पाण्डव पवित्र हैं क्योंकि वे अद्रोही हैं, जहां कुछ कर्त्तव्याकर्त्तव्यकी व्यवस्थाहो वहीं ब्राह्मणोंको ऊंची व नीची व्यवस्था देनीचाहिये ।५। मोक्षकी सिद्धि कर्म सेहीहोती है जैसे जनकादिकों को कोईर कहतेहैं कि कर्मसे नहीं होती विद्यासे होती है जैसे कि संन्यासियों को, इससे कर्म करना व न करना शास्त्रके मतसे दोनों ठीकहैं, परन्तु जो सदाअच्छे पदार्थ भोजन कररहा है वह उससे तृप्त नहीं होता इससे सन्यास गृहस्थ नहीं करसक्ता उसको अपने आश्रमका धर्मही करना ठीकहै, क्योंकि संन्यासी ब्राह्मण लोगभी गृहस्थही के द्वारपै आते हैं । ६ । जिन विद्याओं से कर्म सिद्ध होते हैं उन्हींका फलभी होता न कि अन्य विद्याओंका, फिर इस विषय में तो कर्मही का फल देखते हैं क्योंकि प्यासा जब जल पीता है तभी उसकी प्यास जाती है । ७ । व यह ज्ञानविधि कर्मही के साथ कर्त्तव्य है अतएव कर्म किये

---

and his sons are so fond. How can the Kauravas remain at peace under these circumstances. You know, Sanjaya, how firm Yudhishthir and myself are on Dharm; how did you blame Yudhishthir of deviating from the right path? The Pandavas are innocent in this respect because they have not raised the quarrel. Brahmans should decide the questions of right and wrong. Salvation is got by deeds or knowledge: opinions differ. According to the opinion of shastras the doing and not doing of deeds are both right; but one is not tired of always eating good food. A recluse cannot follow the vocation of a householder; he must stick to his own dharm; even recluse Brahman begs at the doors of householders. The knowledge which can be brought into practice is useful and therefore deeds only have result, as a thirsty man cannot quench his thirst without

धुपत्येन्मोघं तस्यालपितं दुर्बलस्य ॥ ८ ॥ कर्मणामी भान्ति देवाः परत्र कर्मणैवेह प्लवते मातरिश्वा । अहोरात्रे विदधत् कर्मणैव अतन्द्रितो नित्यमुदेति सूर्यः ॥ ९ ॥ मासार्द्धमासानथ नक्षत्रयोगानतन्द्रितश्चन्द्रमाश्चाभ्युपैति । अतन्द्रितो दहते जातवेदाः समिध्यमानः कर्मकुर्वन्प्रजाभ्यः ॥ १० ॥ अतन्द्रिता भारमिमं महान्तं बिभर्त्ति देवी पृथिवी बलेन । अतन्द्रिता शीघ्रमपो वहन्ति सन्तर्पयन्त्यः सर्वभूतानि नद्यः ॥ ११ ॥ अतन्द्रितो वर्षति भूरितेजाः संनादयन्नन्तरिक्षं दिशश्च । अतन्द्रितो ब्रह्मचर्यं चचार श्रेष्ठत्वमिच्छन् बलभिद्देवतानाम् ॥१२॥ हित्वा सुखं मनसश्च प्रियाणि तेन शक्रः कर्मणा श्रैष्ठ्यमाप । सत्यं

जाता है व ज्ञानभी करता है दोनों होते जाते हैं, जब कर्म छोड़देते हैं ज्ञानही ज्ञान रखते हैं उसीको संन्यास कहते हैं ।८। परन्तु कर्म करना अच्छा है देखो कर्महीसे ये देवगण शोभित होते हैं, व कर्महीसे पवन आकाश तक चला जाता है कर्मही से रात्रि दिन होते हैं, आलस्य नहीं करते इसी से सूर्य नित्य उदयहोते हैं कर्म न करैं तो कैसे उदयहों ॥ ९ । मास, आधा मास, नक्षत्र योग, इन सबों में आलस्य रहितहो चन्द्रमा प्राप्तहोता है, व आलस्य छोड़ अग्नि जलाता है, व प्रजा उस में आहुत्यादि देती हैं तो वह उनको कर्म फल देता है । १० । व आलस्य छोड़ यह पृथ्वी अपने बल से इतनाबड़ाभारी भार अपने ऊपर उठाती है, व नदियांभी आलस्य छोड़ शीघ्रता के साथ जल बहाती हैं सब ये सब प्राणियों को तृप्त करती हैं । ११ । व अन्तरिक्ष व दिशों में गर्जते हुये मेघ व आलस्य रहित होबरसते हैं व देवताओं में श्रेष्ठहोने की इच्छा से इन्द्र ने आलस्य रहित हो ब्रह्मचर्य किया । १२ । वसी से प्रथमसुख व मन के प्रियपदार्थ छोड़ कर्म करने से श्रेष्ठता को प्राप्तहुये, जो वे तपस्या करते थे सत्यताहोने धर्म से चलते

---

drinking water Knowledge goes hand in hand with deeds, but when one having knowledge abstains from deeds one passes into the state of Sanyas or becomes a recluse. It is however better to be engaged in doing deeds the gods are honoured for their deeds, the air has some work to do in reaching the sky, days and night are the result of work, the sun rises every day and the moon diligently produces the month, the fortnight and the union of constellations. Fire burns without lack of energy and people pour libations in it, deriving much good from so doing. 10. The Earth carries so great a burden with diligence and rivers diligently carry along so much water with them, giving happiness to all beings. The clouds pour down incessantly in all directions; Indra practiced Brahmacharya diligently in order to gain supremacy over gods. He gave up all pleasures and desires and worked up his greatness. He became

धर्मपालयन्ननमचो दमन्तितिक्षांसमतांप्रियञ्च ॥१३॥ एतानिसर्वाण्युपसेवमानः सदे वराज्यंमघवान प्रापमुख्यम् । बृहस्पतिर्ब्रह्मचर्यं चचार समाहितः संशितात्मायथावत् ॥ १४ ॥ हित्वासुखं प्रतिरुध्येन्द्रियाणि तेनदेवानामगमद्गौरवंसः । तथानक्षत्राणिकर्मणामुत्रभान्ति रुद्रादित्या वसवोऽथापिविश्वे ॥ १५ ॥ यमोराजावैश्रवणः कुवेरो गन्धर्वयक्षाप्सरसश्च सूत । ब्रह्मविद्यांब्रह्मचर्यं क्रियाञ्च निषेवमाणा ऋषयोऽमुत्रभान्ति ॥ १६ ॥ जानन्निमंसर्वलोकस्यधर्मं विप्रेन्द्राणां क्षत्रियाणांविशाञ्च । सकस्मात्त्वंजानतांज्ञानवान् सन् व्यायच्छसे संजयकौरवार्थे ॥ १७ ॥ आम्नायेषुनित्यसंयोगमस्य तथाश्वमेधे राजसूयेचविद्धि । संयुज्यतेधनुषा वर्मणाचहस्त्यश्वाद्यै रथशस्त्रैश्चभूयः १८

प्रमत्त नहींरहते, इन्द्रियोंको दमनकरते, सहनशीलतारखते, सबमें समताकरते, व सबका प्रियकरते । १३ । इतने सबकर्म करने से देवराजने देवताओं का राज्यपाया, व एकाम चित्तहो अपना शरीर प्रशंसनीय कर बृहस्पतिजी ने ब्रह्मचर्य्य कर्मकिया । १४ । सब सुख छोड़ इन्द्रियोंकोरोका इस से देवताओं के गुरु हुये, व इसीतरह कर्महीं से स्वर्गमें नक्षत्र शोभित होते हैं, व । ११ । रुद्र, ८ वसु, १३ विश्वेदेव, । १५ । राजायम, विश्रवाकेपुत्र कुवेर, गन्धर्व, यक्ष, अप्सरा, सब कर्महीं से शोभित हैं, ब्रह्मविद्य ब्रह्मचर्य व क्रिया करतेहुये ऋषिलोग स्वर्ग में शोभित होते हैं। १६ । इस प्रकार सबलोगों व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंका कर्म जानते हो कि सब अपना २ कररहे हैं फिर जाननेवालों में ज्ञानवानहो तुम कौरवों से युद्ध करने को क्यों रोकते हो । १७ । फिर इन युधिष्ठिर जीका संयोग वेदोंमें अच्छी तरह है व अश्वमेध राजसूयादि यज्ञ करनेसे धर्ममें संयोग है व धनुष कवच वस्तरआदि धारण करने व हाथी घोड़े रथ शस्त्र रखनेमें भी संयोगहै इससे शिक्षा

---

king over gods by speaking truth, acting upon the dictates of dharm, abstaining from intoxication, controlling his organs, forbearance, equal regard for all and love towards all. Vrihaspati practiced Brahmacharya with concentration of thoughts and making himself praiseworthy, forsaking all pleasures and having control over his organs, he became the preceptor of gods. The stars in heaven gain all their beauty by work. The greatness of the eleven Rudras, the eight Vasus, the thirteen Vishwedevas, the fifteen* Yams, of Kuver the son of Vishrava and of gandharvas, Yakshes and apsaras, lies in deeds. The Rishis in heaven get their greatness by the practice of the knowledge of Brahma and Brahmacharya. In a like manner, Brahmans, Kshatryas and Vaishyas all do their respective work. Being a wise man, why do you disapprove of our war

तचेदिते कौरवाणामुपायमवगच्छेयुरवधेनैव पार्थाः । धर्मत्राणं पुण्यमेषां कृतं स्यादार्ये वृत्ते भीमसेनं निगृह्य ॥१९॥ ते चेत्पित्र्ये कर्मणि वर्तमाना आपद्येरन् दिष्टवशेन मृत्युम् । यथाशक्त्या पूरयन्तः स्वकर्म तदप्येषां निधनं स्यात्प्रशस्तम् ॥२०॥ उताहो त्वं मन्यसे शाम्यमेव राज्ञां युद्धे वर्तते धर्मतन्त्रम् । अयुद्धे वा वर्तते धर्मतन्त्रं तथैव ते वाचमिमां शृणोमि ॥२१॥ चातुर्वर्ण्यस्य प्रथमं संविभागमवेक्ष्य त्वं संजय स्वञ्च कर्म । निशम्याथो पाण्डवानां च कर्म प्रशंस वा निन्द वा या मतिस्ते ॥ २२ ॥ अधीयीत ब्राह्मणो वै यजेत दद्यादियात्तीर्थमुख्यानि चैव । अध्यापयेद्याजयेच्चापि याज्यान् प्रतिग्रहान्वा विदितान्प्रतीच्छेत् २३

करनेके योग्य नहीं न किसीके जीतने के मानके हैं । १८ । कदाचित् ये पांडवलोग बिना कौरवोंको बिना मारेही राज्य पानेके विषयका उपाय जानपावैं तौ जानौ हिंसाकरनेमें उद्यत भीमसेनको रोक धर्मकी रक्षारूप पुण्यही इनलोगोंकोहो यह तौ बड़ी अच्छी बातहै । १९ । नहीं तो जो येलोग क्षत्रियोंके धर्ममें वर्तमानहो भाग्यवश मृत्युहीको प्राप्त होजायँगे, तौ भी अपनी शक्तिभर अपना क्षत्रियोंका धर्म पालनकरते इनका स्मरणभी उत्तमहोगा । २० । यद्वा जो तुम मिलापही करना उत्तम मानतेहैतौ राजाओंकाधर्म युद्ध करने में है कि अयुद्ध करने में इसका निर्णय कर आपलोग कहें हमलोग वही करेंगे । २१ । हे संजय प्रथम तुमचारों वर्णोंका धर्मदेखलो व अपनाभी कर्मजानलो या सुनलो तो फिरचाहै पांडवों के कर्मकी निन्दाकरना व प्रशंसा करना जैसी तुम्हारी बुद्धिहो वैसा करना । २२ । अब वर्णोंके धर्म कहते हैं सुनो ब्राह्मण वेदपढ़ें, यज्ञकरैं, दानदें, मुख्य २ तीर्थों की यात्रा करैं,

---

with the Kauravas. Besides this Yudhishthir has learnt the Vedas, has performed Ashwamedh, Rajsuya and has done other deeds of virtue; he also knows how to use the bow, the arms and the armour; he is even well up in the control of elephants, horses, chariots and weapons. These are the reasons why he is above your advice and cannot fear defeat from any one. It would indeed be very good, if the Pandavas knew how to regain their kingdom having to kill the Kauravas: in that case they would be able to keep Bhimsen from splitting blood and would do a deed of virtue. On the other hand, if these men die fighting like Kshatryas, they will leave a great name behind. 20. But if you are bent to advise us to make peace, you must first decide whether kings should fight or they should abstain from so doing. Examine the duties of the four orders, Sanjaya, as well as your own, and then you are at liberty to praise or dispraise the work of the Pandavas. The duties of the four classes are as follows— Brahmans should read the Vedas, perform sacrifices,

तथाराजन्योरक्षणं वैप्रजानांकृत्वा धर्मेणाप्रमत्तोऽथ दत्त्वा। यज्ञैरिष्ट्वा सर्ववेदानधीत्य दारान्कृत्वा पुण्यकृदावसेद्गृहान् ॥ २४ ॥ सधर्मात्माधर्ममधीत्य पुण्यं यदिच्छयाव्रजतिब्रह्मलोकम्। वैश्योऽधीत्य कृषिगोरक्षपण्यैर्वित्तं चिन्वन्पालयन्नप्रमत्तः २५ प्रियंकुर्वन ब्राह्मणक्षत्रियाणां धर्मशीलः पुण्यकृदावसेद्गृहान्। परिचर्यावन्दनं ब्राह्मणानांनाधीयीत प्रतिषिद्धोऽस्ययज्ञः। नित्योत्थितोभूतयेऽतन्द्रितः स्यादेवंस्मृतः शूद्रधर्मःपुराणः ॥ २६ ॥ एतान्राजा पालयन्नप्रमत्तो नियोजयन्सर्ववर्णान्स्वधर्मे। अकामात्मासमवृत्तिः प्रजासु नाधार्मिकाननुरुध्येत् कामात् ॥ २७ ॥ श्रेयांस्तस्माद्धि

विद्या पढ़ावैं यज्ञ करावैं योग्य दानभी लेवैं। २३। इसी प्रकार क्षत्रिय प्रजाओंकी रक्षाकरै पर रक्षाबड़ी सावधानी से करै प्रमत्त होकर नहीं कि कुछका कुछहोजाय, दानदे, यज्ञकरै, वेदपढ़े, विवाहकरै, व पुण्य करताहुआ अपने घरमें रहै। २४। धर्मसदा करतारहै, धर्म शास्त्रभी अवश्यपढ़े, पुण्य वह करै जिससे जब चाहै तब ब्रह्मलोक को चलाजाय, व वैश्य वेद पढ़खेती गोरक्षा व उद्यमकर धन बटोरताहुआ, व सबको पालन पोषण करता रहता। २५। व ब्राह्मणों क्षत्रियोंका प्रिय करताहुआ, धर्मशीलहो पुण्य करताहुआ अपने घरमें रहै शूद्रकाधर्म पुराना यह सुनाई देताहै कि ब्राह्मणोंकी टहलकरै व उनको प्रतिदिन प्रणाम करैं, वेदशास्त्र कुछ न पढ़ैं न यज्ञकरैं नितउठ ऐश्वर्य बढ़ानेमें निरालस रहैं। २६। क्षत्रिय मात्रकातो धर्मकहचुके क्षत्रियों में जो राजाहो उसके इतने औरभी धर्म हैं, कि इन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य व शूद्रोंका पालनकरै, व सब वर्णोंको अपने अपने धर्म में लगावै प्रजाओंसे किसी वस्तुकी इच्छा न करै, व सबप्रजासे समभाव रक्खै, अधर्मके कार्य न

---

give charity, visit the chief holy places, impart knowledge, superintend the sacrifices and accept proper donations. Kshatryas should, protect the people with great care, give charity, perform sacrifices, read the Vedas, marry and settle in houses doing acts of virtue. They should lead virtuous lives, read the religious books and perform such acts of virtue as lead to the region of Brahma. A Vaishya should read the Vedas, should engage himself in cultivation, protection of cows, collection of wealth by trade, protection, of people, pleasing the *Brahmans and Kshatryas, doing good deeds and holding* house. A Shudra's duty from ancient times, has been the attendance on Brahmans, bowing to them every day, abstaining from the study of the Vedas, from performing sacrifices and earning wealth with diligance. The duties of Kshatryas as a class, have been given above, but those who are kings have additional duties which are as

विंघतरश्चिदभिज्ञातः सर्वधर्मोपपन्न । सतदृष्ट्वानुशिष्यात् प्रजानांचेतद्बुध्येदिति साधुरसाधु ॥ २८ ॥ यदागृध्येत् परभूमिंनृशंसो विधिप्रकोपाद्बलमाददानः ॥ ततोराज्ञामभवद्युद्धमेतत्तत्रजातं वर्मशस्त्रधनुश्च ॥ २९ ॥ इन्द्रेणैतद्दस्युवधायकर्मउत्पादितंवर्मशस्त्रधनुश्च ॥३०॥ तत्रपुण्यदस्युवधेनलभ्यते सोऽयदोषःकुरुभिस्तीव्ररूप । अधर्मज्ञैर्धर्ममबुध्यमानैः प्रादुर्भूत संजयसाधुतन्न ॥ ३१ ॥ तत्रराजाधृतराष्ट्रःसपुत्रोध र्म्यंहरेत्पाण्डवानामकस्मात् । नावेक्षतेराजधर्मपुराणं तदन्वयाःकुरवःसर्वएव ॥ ३२॥ स्तेनोहरेद्यत्रधनमदृष्टः प्रसह्यवायत्रहरेतदृष्ट । उभौगर्ह्यौभवत संजयैतौ किंवैपृथक्त्वं

करे । २७ । जो कोई ऐसेराजाओंसे अप्रही व अपनेज्ञानसे सर्वधर्मयुक्त राजा युधिष्ठिर को प्रजाओंकी रक्षाकरने व देखनेकोकहै, इसकार्य में इनको साधु न जाने तो वह असाधु है । २८ । कदाचित् कोई क्रूरराजा दुर्योधन सदृश दैवके कोपसे सैन्यसे दूसरेका ऐश्वर्य चहै, तो फिर राजाओं में युद्ध होनेलगे जैसे दुर्योधन युधिष्ठिर के राज्यका लोभकिया है तो युद्धही करने के लिये इन्द्रजीने कवच, शस्त्र, धनुष, बनाया है व ऐसे चोर राजाओंके ही मारने को कवच शस्त्र धनुषका कर्म बनाया है । ३० । ऐसे चोर रूप राजाओं के वध से पुण्य मिलता है सो यहदोष कुरुवंशियों में अच्छीतरह विद्यमान है, क्योंकि इन अधर्मज्ञोंने धर्म न जाना यहचोर राजाओं का धर्म प्रत्यक्ष करदिया यह अच्छा नहीं है, । ३१ । देखो धृतराष्ट्र के पुत्रने अकस्मात् पाण्डवों का राज्य हरलिया, अब उन के वंश वाले सब कुरुवंशी पुराने राजधर्म नहीं देखते । ३२ । देखो चोर जहां अदृष्टहोकर धन हरता है व प्रत्यक्ष में हरता है परन्तु निन्दा दोनोंकी होती है फिर यह बात क्या दुर्योधन

follows – They should protect the four classes and make them to follow their respective vocations They should not expect any thing from their subjects, should do justice, and should abstain from cruelty. Yudhishthir is very learned, virtuous and the best of kings and he who says that Yudhishthir is not a fit person to rule an empire, is himself wicked A cruel king like Duryodhan, wishing to seize the wealth of another by the help of his army, as Duryodhan has coveted the state of Yudhishthir, will be the cause of war among kings. Indra has made the armour, weapons and the bow for the very purpose of destroying the thiefs among kings 30. The destruction of the thiefs among kings is good the Kauravas are prominently defective in this respect, for those wicked men, not knowing dharm, have chosen the practice of thiefs which is not good. See, the son of Dhritrashtra has deprived the Pandavas of

धृतराष्ट्रस्यपुत्रे ॥ ३३ ॥ सोऽयक्रोधमान मन्येत धर्ममेतं यदिच्छतिक्रोधवशानुगामी । भागः पुनः पाण्डवानां निविष्टस्तनः कस्मादाददीरन परेवै ॥ ३४ ॥ अस्मिन् पदेयुध्यतां नोवधोपिश्लाघ्यः पित्र्यं परराज्याद्विशिष्टम् । एतान धर्मान्कौरवाणां पुराणानाचक्षीथाः सञ्जयराजमध्ये ॥ ३५ ॥ येतेमहान्मृत्युवशाभिपन्नाः समानीताधार्त्तराष्ट्रेणमूढा । इदंपुनः कर्मपापीयएवसभामध्ये पश्यवृत्तंकुरूणाम् ॥ ३६ ॥ प्रियांभार्यांद्रौपदींपाण्डवानां यशस्विनींशीलवृत्तोपपन्नाम् । यदुपैक्षन्तकुरवो भीष्मपुरुषाः कामानुगेनोपरुद्धांव्रजन्तीम् ॥ ३७ ॥ तञ्चेतदातेसकुमारवृद्धा अवार

पृथक् हैं, नहीं उनमें तो विद्यमानही है उन्होंने सोचोरी क्या डाकाहीडाला जो प्रत्यक्षही में पाण्डवों का राज्य हरलिया । ३३ । अब जिसको क्रोध वशानुगामी है गोरक्षोभ के धर्म मानते हैं कि यह राज्यभी हमाराही है वह भाग अब पाण्डवों का है क्योंकि तेरहवर्ष वनवास के पीछे इनको मिलजानेकी प्रतिज्ञा होचुकीथी, वह इनपाण्डवोंका भाग दुर्योधनने दिये क्योंलिये बैठ हैं । ३४ । इससे अब इस विषय में युद्ध करते २ जो इन पाण्डवों का वधभी होजाय तौभी प्रशंसाही के योग्य है क्योंकि अपने पितृ पितामहादिकों का राज्य दूसरे के राज्य से विशेषहै, हे सञ्जय ये पुराने राजधर्म जो हमने तुमसे कहे वे सब राजसभा में कौरवों के सामने कहना । ३५ । ये मृत्यु के वशीभूत जिन मूढ राजाओं को दुर्योधन ने बुलाया है सभा में इनके भी सामने यह सब वृत्तान्त जाकि दुष्ट दुर्योधनादिकों ने सभाके बीचमें किय था कहना । ३६ । कि परमयशस्विनी शीलवती रोदनकरती पाण्डवोंकी प्राणप्रिय भार्या द्रौपदीजी को घर से पकड़ मँगाया व भीष्मादि कुरुवंशी देखतेरहे । ३७ । उस समय जो कोई बाल वृद्ध कुरुवंशी ऐसादर्श करते दुःशा-

---

their kingdom and the Kauravas have no regard for the old ways of kings. Whether a thief steal by night or by day, his action cannot but be bad, Duryodhan has seized the goods of the Pandavas, therefore he is not only a thief but also a robber. The kingdom of the Pandavas which they regard as their own is no longer theirs because it was settled that the Pandavas should receive it back after thirteen years of exile. Now the Pandavas cannot be blamed if they die fighting for the kingdom of their forefathers. You will please repeat the duties of kings which I have spoken of when you return to the court of the Kauravas 35 The foolish kings that have come to die at the call of Duryodhan, must know the deeds done by Duryodhan in the open court the most glorious wife of the Pandavas was dragged weeping from the inner appartments into the open court and was seen by Bhishma and other Kauravas It

चिष्यनकुरुदासमेताः । ममाप्रियंधृतराष्ट्रोऽकरिष्यत् पुत्राणाञ्चकृतमस्याभविष्यत् ३८ दुःशासनःमातिलोम्याजिनाय सभामध्येश्वशुराणाञ्चकृष्णाम् । सामनीताकरुणान्य पेक्षमानान्यक्षस्तुनाथमवापाकिञ्चित् ॥ ३९ ॥ कार्पण्यादेवसहितास्तत्रभूपा नाशक्नुवन् नप्रतिवक्तुसभायाम् । एकःक्षत्ताधर्म्यमर्थंब्रुवाणो धर्मबुद्ध्यात्यमुवाचाल्पबुद्धिम् ४०॥ अनुक्त्वात्वंधर्ममेतंसभायामथेच्छसे पाण्डवस्योपदेष्टुम् । कृष्णात्वेतत्कर्मचकारशुद्धं सुदुष्करंतत्रसभांसमेत्य ॥ ४१ ॥ येनकृच्छ्रात्पाण्डवानुज्जहारतथात्मानंनौरिवसाग रौघात् । यत्राब्रवीत्सूतपुत्रःसभायांकृष्णां स्थितांश्वशुराणांसमीपे ॥ ४२ ॥ नतेग तिर्विद्यतेयाज्ञसेनिप्रपद्यदासी धार्त्तराष्ट्रस्यवेश्म। पराजितास्ते पतयोनसन्तिपतिंचान्यं

धन को रोकते तो धृतराष्ट्र हमारा प्रियकरते व उनके पुत्रोंका कल्याण होता नहीं तो इसके पछे में जो होगा सो सब जानेंगे । ३८ । दुश्शासन दुष्ट बलपूर्वक द्रौपदीजीको पकड़ घसीटता हुआ सभा में श्वशुरों के सामने लाया उस समय करुणा पूर्वक रोदन करती हुई द्रौपदीने इच्छाकी कि कोई हमारा नाथहो बचावे विदुरको छोड़ और किसीको नाथ न देखा ।३९। भारे दीनताके सब राजा सभामें बैठरहे कोई बोल न सके एक विदुरजी धर्मार्थ युक्त वचन अपनी धर्मबुद्धि से उस अल्पबुद्धि दुश्शासन से बोले । ४० । हे संजय उस सभा में तुमभी थे कुछ नहीं बोलेअब पाडवों को धर्मका उपदेश किया चाहते हो, व द्रौपदीजी ने तो उस सभा में जाकर ऐसा शुद्ध व दुष्कर कर्म किया, कि जिससे शोकसागरमें डूबतेहुए पाडवों को तथा अपनेको ऐसे उभार लिया जैसे समुद्र के जल से नाव उभार लेती है । ४१ । जहां कि श्वशुरों के समीप खड़ी द्रौपदीसे कर्ण ने कहा कि हे द्रौपदी अब तुम्हारी अन्यत्र गति नहीं है अब दासीबन धृतराष्ट्र के घरको

---

would have been better for Dhritrashtra and his sons, had some one of the Kauravas checked Dushasan from doing so, but now all men will *see the punishment.* *The wicked Dushasan dragged Draupadi* while she was weeping bitterly and brought her before the elders of the house She besought for help and moaned piteously, but none except Vidur pitied her. All the kings looked on but none spoke out of fear, Vidur was the only virtuous man to speak to the unwise Dushasan. 40. You were present in the court, Sanjaya, and you could say nothing, but now you come to preach Dharm to the Pandavas. Draupadi did glorious work there: she saved the Pandavas as well as herself from drowning in the sea of grief as a boat saves people from drowning in the sea And while Draupadi was standing near her father's in-law, Karan told her that she

भार्यानित्यंवृणीष्व ॥ ४३ ॥ योबीभत्सोर्हृदयेप्रोतआसी दस्थिच्छिन्दन्मर्मघातीसु घोरः । कर्णाच्छरोवाङ्मयस्तिग्मतेजाः प्रतिष्ठितोहृदयेफाल्गुनस्य ॥ ४४ ॥ कृष्णाजिनानिपरिधित्समानान् दुःशासनःकटुकान्यभ्यभाषत । एतेसर्वेषण्ढतिलाविनष्टाः क्षयंगतानरकंदीर्घकालम् ॥ ४५ ॥ गान्धारराजःशकुनिर्निकृत्या यदब्रवीद्द्यूतकालेस पार्थम् । पराजितोनन्दनःकिंतवास्तिकृष्णायात्वंदीव्यवैयाज्ञसेन्या ॥४६॥ जानासित्वं सञ्जयसर्वमेतद्द्यूतेवाक्यंगर्ह्यमेवंयथोक्तम् । स्वयंत्वहंप्रार्थयेतत्रगन्तुं समाधातुंकार्यमेत द्विपन्नम् ॥ ४७ ॥ अहापयित्वायदिपाण्डवार्थंशमंकुरूणामपिचेच्छकेयम् । पुण्यञ्च

वरो, तुम्हारे पति हारगये उनको जीते न समझो अब अपने वास्ते और पति अङ्गीकार करलो । ४३ । वह कर्ण का बाणरूप वचन अतितीक्ष्ण अर्जुनजीके कानों से होकर हृदय में बैठगया है व वह मर्मघाती अतिघोर वाग्बाण अन्तःकरण के हाड़ों को काटता हुआ उनके हृदय में चुभगया है । ४४ । व जब युधिष्ठिरादि वन जानेके लिये मृग-चर्म धारण करने लगे उस समय दुश्शासन ने जो कटुक वचन कहे कि ये सब मरगये इनके लिये तिल छोड़डालो, अब ये मरकर बहुत दिनोंतक नरकों रहेंगे । ४५ । व गान्धार देश के राजा शकुनि ने छल से जुआं खेलने के समय पार्थ से कहा कि नकुल तो हारगये अब तुम्हारा क्या है तुम द्रौपदी को बाजी लगाय जुआं खेलो । ४६ । यह सब संजय तुमभी जानतेहो कि जुआंखेलने के समय कैसे २ निन्दित वचन उन लोगों ने कहे, परन्तु अब हम यह प्रार्थना करते हैं कि यह कार्यकरने के लिये जो हम वहां जावें तो । ४७ । ऐसाकरें कि पाण्डवोंका अर्थ भी हो व कौरवोंको समझाभी सकें, तो

---

was homeless and should have to enter the household of Dhritrashtra *as a slave, that her husbands had lost at the game and she* should no longer consider them alive, but should choose another husband for herself. These words of Karan have pierced like sharp arrows in the heart of Arjun. The dreadful arrow of his words has gone through the ears of Arjun and wounded his heart. When the Pandavas, with deer skins over their bodies, were going into exile, Dushasan uttered these harsh words:—" The Pandavas are dead. Offer sesame to their manes. They will remain long in hell." During the progress of the deceitful game, Shakuni had said to the son of Kunti: "You have lost Nakul, too; what more have you left except Draupadi to stake?" All this you know, Sanjaya; what insulting language they used during the game! I have a great desire to go there, so that I may do good to the Pandavas and may, at the

पेस्याघरितंमहोदयंमुच्येरंश्चकुरवोमृत्युपाशात् ॥ ॥ ४८ ॥ अपिनोवाचमापन्नाणस्य काव्यां धर्मारामार्थवतीमहिंसाम्। अवेक्षेरन्धार्तराष्ट्राः समक्षं मांचमासंकुरवः पूजयेयुः ॥ ४९ ॥ अतोन्यथारथिनाफाल्गुनेन भीमेनचैवाहवदंशितेन। परासिक्तान् धार्तराष्ट्रांश्च विद्धि प्रदह्यमानान्कर्मणास्वेनपापान ॥ ५० ॥ पराजितान् पाण्डवेयांस्तु वाचो रौद्रारूक्षाभाषते धार्तराष्ट्रः। गदाहस्तो भीमसेनोऽप्रमत्तो दुर्योधनं स्मारयिता हिकालम् ॥ ५१ ॥ दुर्योधनोमन्युमयो महाद्रुम स्कन्धःकर्णः शकुनिस्तस्यशाखा। दुःशासनःपुष्पफले समृद्धे मूलंराजाधृतराष्ट्रो मनीषी ॥५२॥ युधिष्ठिरोधर्ममयोमहाद्रुम स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्यशाखा। माद्रीपुत्रौपुष्पफले समृद्धे मूलन्त्वहंब्रह्मच

इसको तो बड़ी पुण्य व महाउदय हो व कुरुवंशी मृत्युकी फांसी से छूटें। ४८ । परन्तु यह तो तबही जो कौरवलोग, नीतियुक्त, धर्मवती, अर्थवती हिंसा रहित हमारी वाणी की ओर दृष्टि दें व आने पहुँचने पर कुरुवंशी हमारी पूजा करें । ४९ । व जो इस के विपरीत हुआ हम गये भी व हमारे वचन उन्होंने न माना तौ संग्राम करने के लिये तैयार महारथी अर्जुन व भीमसेनजी से ध्वस्त व अपने कर्मों सेही भस्मीभूतही धृतराष्ट्र के पुत्रोंको जानो । ५० । दुर्योधन अभी अपने घरबैठे, कठोर वचन पाण्डवों को कहता है कि ये लोग हमसे पराजित होगये, जो हाथ में गदालिये प्रमत्त भीमसेनजी समयपर दुर्योधन को स्मरण करावेंगे । ५१ । दुर्योधन क्रोधमय बड़ाभारी वृक्ष है, उसके स्कन्ध कर्ण हैं, व डाळे शकुनि हैं व फूलफल; दुश्शासन हैं व बुद्धि के नाशक राजा धृतराष्ट्र उसकी जड़ हैं । ५२ । व युधिष्ठिरजी धर्ममय बड़ेभारी वृक्ष हैं उस वृक्ष

---

same time, bring the Kauravas on the right path. I shall thus do a deed of charity and goodness, if I can save the Kauravas from the death But this can be done, if the Kauravas undertake to receive me with respect and to hear and act on my good advice, but in case I go there and the Kauravas donot attend to what I shall tell them, the result will be disastrous, for all the sons of Dhritrashtra will bring upon their own ruin by their wicked deeds and will be destroyed by Arjun and Bhimsen 50. Duryodhan has been insulting the Pandavas in his own house by saying that he has defeated them. Bhimsen, maddened with anger and bearing mace in hand, will make him eat his words Duryodhan is the tree of anger, Karan is its trunk, Shakuni the branches, Dushasan its flower and fruit and Dhritrashtra, the enemy of wisdom, is the root. Yudhishthir is the tree of virtue, Arjun is its trunk, Bhim the

ब्राह्मणाश्च । वनंराजाधृतराष्ट्रः सपुत्रो व्याघ्रास्तेवै संजयपाण्डुपुत्राः ॥ ५३ ॥ मावनं छिन्धिसव्याघ्रं माव्याघ्रानीनशन्वनात् ॥ ५४ ॥ निर्वनोवध्यते व्याघ्रो निर्व्याघ्रंछिद्यते वनम् । तस्माद्व्याघ्रो वनंरक्षेद्वनं व्याघ्रञ्चपालयेत् ॥५५॥ लताधर्माधार्तराष्ट्राः शालाः सञ्जयपाण्डवाः । नलतावर्द्धतेजातु महाद्रुममनाश्रिता ॥५६॥ स्थिताः शुश्रूषितुंपार्थाः स्थितायोद्धुमरिन्दमाः । यत्कृत्यंधृतराष्ट्रस्य तत्करोतुनराधिप ॥ ५७ ॥ स्थिताःशमेमहात्मानः पाण्डवाधर्मचारिणः । योधाःसमर्थास्तद्विद्वन्नाचरस्व यथाक्षमम् ५८॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणिसञ्जययानपर्वणिकृष्णवाक्ये
एकोनविंशोऽध्याय ॥ २९ ॥

के स्कन्ध अर्जुन व भीमसेन शाखा नकुल सहदेव फूलफल हम, वेद व ब्राह्मण उस के मूल हैं । ५३ । व पुत्रसहित राजा धृतराष्ट्र वन हैं व उस वन में व्याघ्ररूप ये पाण्डुपुत्र हैं इस से हे संजय व्याघ्रों सहित यह वन न काटो, कि वन से निकले व्याघ्र सर्वदा विनाश करें । ५४ । वन के बिना व्याघ्र नहीं रहसक्ता और व्याघ्र के बिना वन नहीं रहसकता इस लिये व्याघ्रकी रक्षासे वनकी रक्षाहोती है । ५५ । सुयोधन आदि लता हैं और पाण्डवलोग महावृक्ष हैं, वृक्ष के सहारे बिनालता नहीं रहसक्ती । ५६ । पाण्डव सेवा और युद्ध दोनों के लिये तयार हैं धृतराष्ट्र को जो अच्छा लगे वही करेंगे । ५७ । यह धर्मात्मा पाण्डव मिलापही चाहते हैं इस लिये इन समर्थ योद्धाओंसे ऐसीबात मतकहो ५८

---

branches, Nakul and Sahadeva its fruit and flowers and I as well as the Vedas and Brahmans its root. Dhritrashtra and his sons are a forest and the Pandavas are like lions in the forest; donot let this forest, inhabited by lions, be cut down, Sanjaya, lest the lions be let loose to destroy all. Lions cannot live without a forest and the forest is not safe without its lions: the protection of the lions means the protection of the forest. The Kauravas are like creepers and the Pandavas are like trees: creepers cannot stand without the support. The Pandavas are ready to obey as well as to fight; let Dhritrashtra choose what he requires of them. These virtuous Pandavas are desirous of peace; you should not ask of them, anything else,"58.



संजय उवाच । आमन्त्रये त्वा नरदेवदेव गच्छाम्यहं पाण्डवस्वस्तितेऽस्तु । कच्चिन्नवाचा वृजिनं हि किंचिदुच्चारितं मे मनसोऽभिषङ्गात् ॥ १ ॥ जनार्दनं भीमसेनार्जुनौ च माद्रीसुतौ सात्यकिं चेकितानम् । आमन्त्र्य गच्छामि शिवं सुखं वः सौम्येन मां पश्यत चक्षुषा नृपाः ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच । अनुज्ञातः संजय स्वस्ति गच्छन स्मरस्य-प्रियं जातु विद्वन । विद्म धरात्वा च वयं च सर्वे शुद्धात्मानं मध्यगतं सभास्थम ॥३॥ आप्तो दूतः संजय सुप्रियोसि कल्याणवाक् शीलवान्दृष्टिमांश्च । न मुह्येस्त्वं संजय जातु मत्या न च क्रुध्येरुच्यमानोऽपि रुक्षम् ॥ ४ ॥ न मर्मगां जातु वक्तासि रूक्षां नोपश्रुतिं कटुकां नोत मुक्ताम् । धर्मारामामर्थवतीमहिंस्रामेतां वाचं तव जानीम सूत ॥ ५ ॥ त्वमेव नः प्रियतमो

अध्याय ३० ॥

श्रीकृष्णचन्द्रजीके ऐसे वचनसुन संजयबोले, कि हे नरदेव पाण्डव अब हम आप से आज्ञामांगते हैं व जाते हैं हमने जो वचन कहेहैं वे कुछ कुटिलतासे नहीं कहे कि उन को विचार दुःख मानाजाय आपका कल्याणहो । १ । व जनार्दनजी भीमसेन अर्जुन, नकुल, सहदेव, सात्यकि, चेकितान, इन सबलोगों सेभी जाने के लिये आज्ञा मागते हैं आपलोगोंका कल्याणहो, हे महाराजो, हमारे ऊपर कृपादृष्टि बनीरहै । २ । जब संजय ऐसाकह बिदाहोने लगे तो युधिष्ठिरबोले कि अच्छा संजय जावो तुम्हारा कल्याणहो, हम लोगोंके अप्रिय वचनों का स्मरण कभी न करना क्योंकि हमलोग व कौरवलोगभी तुमको जानते हैं कि ये शुद्धात्मा सभामें स्थितहैं ये किसीकीभी नहीं कहते । ३ । तुम यथार्थ वक्ता, सुप्रिय, कल्याण वचन शीलवान् व सन्तोषी दूतहो व कभी तुम्हारी मति मोहित नहीं होती, व कभी दुर्वचन सुन क्रोध नहीं करते । ४ । न कभी रूखी, मर्मस्थलभेदिनी, नीरस, व कार्यहीन वाणी बोलते हम जानते हैं कि धर्मयुक्त, अर्थवती व हिंसारहित वाणी सदाबोलतहो । ५ । प्रियतम तुम हमारे तुम्हींहो दूसरा कोईआवे तोविदुरजी आवें

CHAPTER XXX

On hearing the words of Shree Krishna, Sanjaya said, "I ask your permission to go, Pandava, the best of men. I have said nothing with a bad intention to displease you, may you be blessed! I ask leave of Janardan, Bhimsen Arjun, Nakul, Sahadeva, Satyaki and Chekitan and request that they will not withdraw their favour from me" On hearing this, Yudhishthir said, "You may go, Sanjaya, may you be happy! Donot take ill of the unpleasant words of ours We as well as the Kauravas know that you possess a pure soul and are never partial You are a truthful messenger of pleasant speech, peaceful, good natured and contented Your wisdom never goes astray and you are never angry with those who speak to you harshly. You never speak unpleasant, heart piercing and

ऽसि दूतइहागच्छेद्विदुरो नाद्वितीयः । अभीक्ष्णदृष्टोऽसि पुराद्दिनस्त्वं धनञ्जयस्यात्म सम सखासि ॥ ६ ॥ इतोगत्वासंजय क्षिप्रमेव उपातिष्ठेथाब्राह्मणान् येतदर्हाः । विशुद्धवीर्य्याश्चरणोपपन्नाः कुलेजाताः सर्वधर्मोपपन्नाः ॥ ७ ॥ स्वाध्यायिनो ब्राह्मणा भिक्षवश्च तपस्विनोयेच नित्यावनेषु । अभिवाद्यावै मद्वचनेन वृद्धास्तथेतरेषां कुशलंच देयाः ॥ ८ ॥ पुरोहितं धृतराष्ट्रस्य राज्ञस्तथाचार्य्यानृत्विजो येचतस्य । तैश्चत्वंतात सहितैर्यथार्हं सङ्गच्छेथाः कुशलेनैवसूत ॥ ९ ॥ अश्रोत्रियायेच वसन्तिवृद्धा मनस्विनाशीलबलोपपन्नाः । अशंसन्तोऽस्माकमनुस्मरन्तो यथाशक्तिधर्ममात्रां चरन्तः ॥१०॥ श्लाघ्यस्वमांकुशलितेस्म तेभ्योह्यनामयं तातपृच्छेर्जघन्यम् । येजीवन्ति व्यवहारेणराष्ट्रे

क्योंकि हमलोग तुमको बार २ बहुत दिनोंसे देखते हैं तुम अर्जुन के समान हमारे सखाहो । ६ । हे सञ्जय यहां से शीघ्रही जा प्रणाम करनेके योग्य ब्राह्मण लोगोंसे हमारी ओरसे स्तुतिकरना, क्योंकि वे लोग विशुद्धवीर्य्य, ब्रह्मचर्य्य, से वेदाध्ययन करने वाले, उत्तम कुलों उनका जन्म, व सर्व्व धर्मयुक्त होते हैं । ७ । व स्वाध्यायी, संन्यासी ब्राह्मण, तपस्वी जो नित्य वनमें रहते हैं, इन सबोंसे हमारी ओर से प्रणाम करना, व अन्य सबलोगोंकी कुशल सबसे कहना । ८ । व राजा धृतराष्ट्रजी के पुरोहित से, तथा आचार्य्य ऋत्विजों से भी अच्छीतरह से मिलना व उनकी कुशल पूंछना यहां की उनसे कहना । ९ । व जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंसे पृथक् शूद्रलोग यहां बसते हैं व वृद्ध मनस्वी शील बलवान्हैं व कहतेहीं कदके हमलोगों का स्मरण करनेलगते हैं व यथाशक्ति कुछ अपने धर्म के अनुसार कामकरते हैं । १० । उनसे हमारी कुशल पूर्व्वक नमस्कार फिर हमारी ओरसे उनको पूंछना व पीछे फिर उनका अनामय पूंछना कि अच्छेतोहो व जो लोग राज्यमें व्यवहार जीते हैं व जो लोग बड़े २ अधिकारों पर नियुक्तहों व उन

useless words; we know that your words are always full of virtue and meaning and free from injury to others. You are our dearest messenger as well as Vidur; for we have known you for many days and love you like Arjun. When you reach there, Sanjaya, you will convey my respects to the venerable Brahmans who possess great power, have read the Vedas in Brahmacharya, are born of noble families and are the seat of all virtue. Give my compliment to the Brahmans who are engaged in self-study, *sanyas* and asceticism and who always dwell in forests and tell them that we are happy. See the priests and *ritwijas* of king Dhritrashtra and tell them that we are happy and expect them to be so. Go to the Shudras who live apart from Brahmans, Kshatryas and Vaishyas, who are old, good natured and powerful, who remember us and who try to walk in the path of virtue. Tell them that we are happy and inquire about their happiness. Remember us to the traders and

शलंतातपृच्छेः ॥१७॥ भ्राताकनीयानपि तस्यमन्दस्तथाशीलः संजयसोऽपिप्रश्नत् । महेष्वासःशूरतमःकुरूणां दुःशासनः कुशलंतातवाच्यः ॥ १८ ॥ यस्यकामोवर्तते नित्यमेवनान्यच्छमाद्भारतानामितिस्व । सवाह्लिकानामृषभो मनीषी त्वयाभिवाद्यः संजयसाधुशीलः ॥ १९ ॥ गुणैरनेकैः प्रवरैश्चयुक्तो विज्ञानवान्नैवच निष्ठुरोयः । स्नेहादमर्षं सहतेसदैव ससोमदत्तः पूजनीयोमतोमे ॥२०॥ अर्हत्तमःकुरुषु सौमदत्तिः सनो भ्रातासंजयमत्सखाच । महेष्वासो रथिनामुत्तमोऽर्हैःसहामात्यः कुशलंतस्यपृच्छेः ॥ २१ ॥ येचैवान्येकुरुमुख्यायुवानःपुत्राःपौत्राभ्रातरश्चैवयेनः । यंयमेषांमन्यसेयेन योग्यंतत्तद्प्रोच्यानामयंसूतवाच्याः ॥ २२ ॥ येराजानःपाण्डवायोधनाय समानीता धार्तराष्ट्रेणकेचित् । वसातयः शाल्वकाः केकयाश्चतथांवष्ठायेत्रिगर्ताश्चमुख्याः २३ ॥ प्राच्योदीच्यादाक्षिणात्याश्चशूरास्तथा प्रतीच्याःपार्वतीयाश्चसर्वे । अनृशंसा शीलवृ

दुर्योधन से भी हमारी ओर से कुशल पूंछना। १७। व बड़ा धनुर्द्धर कौरवों में शूरतम उसका छोटा भाई दुश्शासन जो कि उसी के समान दुष्ट है उससे भी कुशल पूंछना। । १८ । व जिन वाह्लिक देशके राजाको कौरवों पाण्डवों के मिलाप होजाने के सिवाय अन्य कुछ प्रयोजन नहीं उन बुद्धिमान् राजा से हमारा प्रणाम कहना क्योंकि ये बड़े साधुस्वभावहैं । १९ । अनेक श्रेष्ठ गुणोंसे युक्त विज्ञानवान्, सौम्य स्वभाव व स्नेहसे सदा अमर्ष सहने वाले सोमदत्त हमारे पूजनीय हैं । २० । महाधनुर्द्धर, महारथी, कुरुवंशियों में पूजनीय, सौमदत्ति हमारे भाई व सखा हैं मन्त्री सहित उनसे कुशल पूंछना । २१ । व और भी जो २ कुरुवंशियों में मुख्य २ हों चाहे युवा, पुत्र, पौत्र, जो कुछ हमलोगों का लगताहो उससे हमारीओर से जो २ योग्यहो वह २ कुशल पूंछना । २२ । व जिन २ राजाओं को पाण्डवों से युद्ध करने के लिये दुर्य्योधन ने बुलाया है, वसाति, केकय, शाल्व, अम्बष्ठ, त्रिगर्त्तादि, पूर्व; उत्तर, दक्षिण, पश्चिम किसी देशके रहनेवाले

Kurus, learned in many religious books, worshipper of old man and himself very old. Ask for us the welfare of Duryodhan the foolish, ignorant, deceitful and sinful ruler of the world. Ask also the welfare of Dushasan the greatest of archers, best of Kauravas, younger brother of Duryodhan and like him in wickedness. Convey our respect to the king of Valluk who is solely desirous of peace between the Kauravas and the Pandavas, because he is wise and good. Somadatta the virtuous wise and good natured, who suffers wrongs for the sake of friends, deserves our respect. 20. Somadatti the great archer, warrior, and worthy of respect among the Kauravas is our friend and brother; ask of his welfare as well as of his ministers. Communicate our greetings to the chief Kauravas our cousins. Ask the welfare of all the kings, Vashati, Shalva,

येपालयन्तो निवसन्तिराष्ट्रे ॥ ११ ॥ आचार्यइष्टोनयगोविधेयो वेदानभीप्सनब्रह्मचर्य्यंचचार। योऽस्त्रंचतुष्पात् पुनरेवचक्रे द्रोण प्रसन्नोभिवाद्यस्त्वयासौ ॥ १२ ॥ अधीतविद्यश्चरणोपपन्नो योऽस्त्रंचतुष्पात् पुनरेवचक्रे। गन्धर्वपुत्रप्रतिमं तरस्विनं तदश्वत्थामानं कुशलस्मपृच्छेः ॥ १३ ॥ शारद्वतस्यावसथ स्मगत्वा महारथस्यात्मविदां वरस्य। त्वंमामभीक्ष्ण परिकीर्त्तयन्वै कृपस्यपादौ सञ्जयपाणिनास्पृशेः ॥ १४ ॥ यस्मिन्शौर्यमानृशस्यं तपश्चमेधा शीलश्रुतिसत्त्वे धृतिश्च। पादौगृहीत्वा कुरुसत्तमस्य भीष्मस्यमांतत्रनिवेदयेथाः ॥ १५ ॥ प्रज्ञाचक्षुर्यः प्रणेताकुरूणां बहुश्रुतो वृद्धसेवीमनीषी। तस्मैराज्ञेस्थविरायाभिवाद्य आचक्षीथा सञ्जयमामरोगम् । १६॥ ज्येष्ठःपुत्रो धृतराष्ट्रस्यमन्दो मूर्खः शठः संजयपापशीलः। प्रशास्तावै पृथिवीयेनसर्वा सुयोधनकु-

पोषण करते हैं इन सब लोगोंको भी पूछना। ११। व द्रोणाचार्य्य जी से भी बहुत प्रकार से प्रणाम कहना जो कि हमलोगों के इष्ट आचार्य्य हैं व नीतिनिपुण विधान करने के अधीकारी व वेदोंके पढ़ने के समय ब्रह्मचर्य्य जिन्हों ने धारण कियाथा व जिन्हों ने अस्त्रके फिर चार चरणका बनाया उन अस्त्रके ४ चरण ये हैं मन्त्र उपचार प्रयोग व संहार। १२। व सब विद्यापढ़, शुभकर्मों में दक्ष, चतुश्चरणास्त्रकारी, गन्धर्व पुत्र समानरूपधारी अति वेगधारी अश्वत्थामा से भी हमारी ओरसे कुशल पूछना। १३। व महारथ आत्मविद्या विशारद कृपाचार्य्यजी के स्थान पर जाकर हमारी ओरसे बार २ हमारा नामले तुम उनके चरण छूना। १४। व जिनमें, शूरता अक्रूरता, तपस्या, बुद्धिमत्ता, शीलता, विशेष श्रवणशक्तिता, पराक्रमता, धारणादि गुणहैं ऐसे कुरुसत्तम भीष्मजी के चरण छूकर हमारा नाम बतालेना। १५। हे सञ्जय बुद्धिचक्षु कुरुवंशियों के नायक, बहुशास्त्र श्रुत वृद्धसेवी अतिबुद्धिमान, व अतिवृद्ध राजा धृतराष्ट्रजीको प्रणामकरके उन से हमको आरोगी बताना। १६ व मन्द, मूर्ख, शठ, पाप, शील, व जो पृथ्वीभरका राज्य करता है ऐसे

great officers of state 11 Convey our respect to Dronacharya, our dear teacher, great Politician who has observed severe vow of celibacy to learn the Vedas and knows the use of all the weapons perfectly well Inquire about the welfare of Ashwathama who knows all the branches of knowledge, is expert in the art of war, knows all the four uses of weapons, is beautiful like a Gandharva's son and exceedingly dexterous Touch the feet of the great warrior Kripacharya, master of the knowledge of the soul, in my name, when you go to him Touch the feet of and mention my name to Bhishm the best of Kurus who possesses the qualities of bravery, absence of cruelty, asceticism, wisdom, good manners, great powers of hearing, prowess and patience. Respectfully convey, Sanjaya, the news of our health to king Dhritarashtra the wise ruler of the

कुशलंतातपृच्छेः ॥१७॥ भ्राताकनीयानपि तस्यमन्दस्तथाशीलः संजयसोऽपिशश्वत् । महेष्वासःशूरतमःकुरूणां दुःशासनः कुशलंतातवाच्यः ॥ १८ ॥ यस्यकामोवर्त्तते नित्यमेवनान्यच्छमाद्भारतानामितिस्म । सबाह्लिकानामृषभो मनीषी त्वयाभिवाद्यः संजयसाधुशीलः ॥ १९ ॥ गुणैरनेकैः प्रवरैश्चयुक्तो विज्ञानवान्नैवच निष्ठुरोयः । स्नेहादमर्षं सहतेसदैव ससोमदत्तः पूजनीयोमतोमे ॥२०॥ अर्हत्तमःकुरुषुसौमदत्तिः सनो भ्रातासंजयमत्सखाच । महेष्वासो रथिनामुत्तमोऽर्हः सहामात्यः कुशलंतस्यपृच्छेः ॥ २१ ॥ येचैवान्येकुरुमुख्यायुवानःपुत्राःपौत्राभ्रातरश्चैवयेनः । यंयमेषांयेनयेन ...गच्छेरनामयंमद्वचनेनवाच्यः ॥ २२ ॥ येराजानःपाण्डवायोधनाय समानीता धार्तराष्ट्रेणकेचित् । वसातयः शाल्वकाः केकयाश्चतथाम्बष्ठायेत्रिगर्ताश्चमुख्याः २३ ॥ प्राच्योदीच्यादाक्षिणात्याश्चशूरास्तथा प्रतीच्याःपार्वतीयाश्चसर्वे । अनृशंसा शीलवृ

दुर्योधन से भी हमारी ओर से कुशल पूंछना। १७। व बड़ा धनुर्द्धर कौरवों में शूरतम उसका छोटा भाई दुश्शासन जो कि उसी के समान दुष्ट है उससे भी कुशल पूंछना । १८ । व जिन बाह्लिक देशके राजाको कौरवों पाण्डवों के मिलाप होजाने के सिवाय अन्य कुछ प्रयोजन नहीं उन बुद्धिमान् राजा से हमारा प्रणाम कहना क्योंकि ये बड़े साधुस्वभावहैं । १९ । अनेक श्रेष्ठ गुणोंसे युक्त विज्ञानवान्, सौम्य स्वभाव व स्नेहसे सदा अमर्ष सहने वाले सोमदत्त हमारे पूजनीय हैं । २० । महाधनुर्द्धर, महारथी, कुरुवंशियों में पूजनीय, सौमदत्ति हमारे भाई व सखा हैं मन्त्री सहित उनसे कुशल पूंछना । २१ । व और भी जो २ कुरुवंशियों में मुख्य हैं हों चाहे युवा, पुत्र, पौत्र, जो कुछ हमलोगों का लगता हो उससे हमारीओर से जो २ योग्यहो वह २ कुशल पूंछना । २२ । व जिन २ राजाओं को पाण्डवों से युद्ध करने के लिये दुर्योधन ने बुलाया है, वसाति, केकय, शाल्व, अम्बष्ठ, त्रिगर्त्तादि, पूर्व, उत्तर, दक्षिण, पश्चिम किसी देशके रहनेवाले

Kurus, learned in many religious books, worshipper of old man and himself very old. Ask for us the welfare of Duryodhan the foolish, ignorant, deceitful and sinful ruler of the world. Ask also the welfare of Dushasan the greatest of archers, best of Kauravas, younger brother of Duryodhan and like him in wickedness. Convey our respect to the king of Valhik who is solely desirous of peace between the Kauravas and the Pandavas, because he is wise and good. Somadatta the virtuous wise and good natured, who suffers wrongs for the sake of friends, deserves our respect. 20. Somadatti the great archer, warrior, and worthy of respect among the Kauravas is our friend and brother; ask of his welfare as well as of his ministers. Communicate our greetings to the chief Kauravas our cousins. Ask the welfare of all the Kings, Vasati, Shalva,

सोपपन्नास्तेषामर्थे नाकुशलमनुपृच्छे ॥ २४ ॥ हस्त्यारोहा रथिनः सादिनश्च पदातयश्चार्यसंघा महान्तः । आख्याय मां कुशलिनं स्मनित्य मनामयं परिपृच्छेः समग्रान् ॥२५॥ तथा राज्ञो ह्यर्थयुक्तानमात्यान् दौवारिकानये च सेनां नयन्ति । आयव्ययं ये गणयन्ति निस्यमर्थांश्च ये महतश्चिन्तयन्ति ॥ २६ ॥ वृन्दारकं कुरुमध्येष्वमूढं महाप्राज्ञं सर्वधर्मोपपन्नम् । न तस्य युद्धं रोचते वै कदाचिद्वैश्यापुत्रं कुशलं तात पृच्छेः ॥ २७ ॥ निकर्तने देवने योऽद्वितीयश्छन्नोपधः साधुदेवी मताक्षः । यो दुर्जयो देवितव्येन संख्ये स चित्रसेनः कुशलं तात वाच्यः ॥ २८ ॥ गान्धारराजः शकुनिः पार्वतीयो निकर्तने योऽद्वितीयोऽक्षदेवी । मानं कुर्वन्धार्तराष्ट्रस्य सूत मिथ्याबुद्धेः कुशलं तात पृच्छेः ॥ २९ ॥ यः पाण्डवानेकरथेन वीरः समुत्सहत्यप्रधृष्यान्विजेतुम् । यो मुह्यतां मोहयिताद्वितीयो वैकर्तनं कुशलं सत्य पृच्छेः ॥३०॥ स एव भक्तः स गुरुः स भर्ता स वै पिता स च माता सुहृच्च । अगाधबुद्धि

हों व पर्वती हों परन्तु अक्रूर व शील वृत्तयुक्त हों तो उन सभों की कुशल पूछना । २४ । व हाथी रथ घोड़ों पर चढ़नेवाले व पैदल चलनेवाले जितने लोग श्रेष्ठ बान्धवों से हमको कुशल युक्त बताय उनकी कुशल पूछना । २५ । व राजाके अमात्य, द्वारपालक, सेनापति, कोशाधीश, आयव्यय लिखनेवाले व धन एकत्रकरनेवाले, जो लोगहैं उनलोगोंसे भी कुशल पूछना । २६ । व कुरुवंशियों के बीच में श्रेष्ठ, विज्ञ, महापण्डित, सब धर्मयुक्त व जिसको युद्ध करना कभी नहीं अच्छा लगता, ऐसे वैश्यापुत्र से कुशल पूछना । २७ पराद्रव्य हरनेमें निपुण जुआखलन में अद्वितीय, गुप्त, छली, पाशाखेलनेमें महाचतुर, गोटी चलने में महाविज्ञ द्यूतविद्यामें दुर्जय युद्धमें असमर्थ ऐसे चित्रसेन से कुशल पूछना ।२८। परद्रव्य हरने में चतुर, पाशा खेलनेमें अद्वितीय दुर्योधनका मानकरने के लिये मिथ्यावादी गान्धारदेश के पर्वती राजा शकुनिसभी कुशल पूछना । २९ । व जो अप्रधृष्य पाण्डवों को अकेला रथ पर सवारहो जीतना चाहता है व पाण्डवों को मोहित

Kukaya, Amvasht, Trigart and others who have come at Duryodhan's call to fight against the Pandavas and who are not of cruel or wicked nature. Inform of our welfare and ask about the welfare of the best among elephant, horse and foot soldiers Inquire after the welfare of the king's ministers, doorkeepers, commanders of the army, treasurers, accountants and money collectors Ask about the welfare of the concubine's son, the best of the Kauravas, wise, learned, virtuous and constant condemner of war Inquire after the welfare of Chitrasen who is matchless in defrauding people of their wealth, unequalled in gambling deceiver in secret, dexterous in throwing dice and cubes, unconquerable in gambling and weak in fighting Ask about the welfare of Shakuni the king of the hilly country of Kandhar, dexterous in cheating, unequalled in

विदुरोदीर्घदर्शी मनोमन्त्रीनुद्कुलंस्वपृच्छेः ॥ ३१ ॥ वृद्धाःस्त्रियोयाश्चगुणोपपन्ना ज्ञायन्तेनःसञ्जयमातरस्ताः। ताभिःसर्वाभि सहिताभि समेत्यस्त्रीभि वृद्धाभिरभि वादयेथा ॥ ३२ ॥ कच्चित्पुत्राजीवपुत्राः सुसम्यग्वर्तन्तेवोवृत्तिमनृशंसरूपा । इतिस्मोक्त्वासञ्जयब्रूहिपश्चादजातशत्रु कुशलीसपुत्रः ॥ ३३ ॥ यानोभार्याःसञ्जय वेत्थयत्रतासांसर्वासांकुशलंतातपृच्छेः सुसंगुप्ताःसुरभयोऽनवद्याकच्चिद्गृहानावसथा प्रमत्ताः ३४ कच्चिद्वृत्तिंश्वशुरेषुभद्राः कल्याणींवर्तध्वमनृशंसरूपाम् । यथाचवःस्युः पतयोऽनुकूलास्तथावृत्तिमात्मनःस्थापयध्वम् ॥ ३५ ॥ यानःस्नुषाःसञ्जयवेत्थतत्र प्राप्ताःकुलेभ्यश्चगुणोपपन्नाः । प्रजावत्योब्रूहिसमेत्यताश्चयुधिष्ठिरोवोऽभ्यवदत्प्रसन्नः ॥ ३६ ॥ कन्याःस्वजेथाःसदनेषुसञ्जय अनामयंमद्वचनेनपृष्ट्वा । कल्याणावःसन्तु पतयोऽनुकूलायूयंपतीनांभवतानुकूलाः ॥ ३७ ॥ अलङ्कृतावस्त्रवत्य सुगन्धा अबीभ

कहने में अद्वितीय वैकर्तन है उससे भी कुशल पूंछना । ३० । दूरदर्शी मंत्री विदुरजी से भी कुशल पूछियो जो हमारे सुहृद और माता पिता और गुरु के समान हैं । ३१ । उन वृद्धनारियोंसे भी जो हमारी माताकी समान हैं कुशल पूछियो ।३२। उन से कहियो कि तुम्हारे पुत्र पौत्र जीवित रहैं और कौरवों की भार्य ओंसे भी कुशल पूंछना और कहना कि वे अपने श्वशुर की सेवा अपने पति के अनुकूल करती रहैं । ३५ । य हे संजय जो हमारी प्यारी कुमारि यांहैं हैं, व अपने कुलकी मर्यादापर चलतीं व सब सुशील व गुण युक्त हैं उन से जाकर कहना कि प्रसन्नहो युधिष्ठिर ने कहाहै कि तुम्हारी सन्तान बढ़ै । ३६ । हे संजय जो अमीकन्या हैं जिन का विवाह नहीं हुआ उनको गोदमें बैठाकर अनामय पूछना व हमारी ओरसे कहना, कि तुमलोगों को कन्या व पुत्र व तुम्हारे अनुकूल पति मिलें व तुम लोग अपने पतियों के अनुकूल रहो। ३७ । हे तात अलङ्कृत, सुन्दरवस्त्र धारण किये, सुगन्ध लगाये, सुन्दर रूपवाले, सुखवती, भोगवती,

playing at dice and speaker of falsehood to please Duryodhan. Inquire the welfare of Karan who aspires to conquer alone the invincible Pandavas and who is unequalled in terrifying the already terror striken Pandavas 30. Inquire after the welfare of our benefactor and friend Vidur the wise in counsel. Go to the old women who are worthy of respect like our mother and ask concerning their welfare. Tell them that we pray for the longevity of their sons and grandsons. Ask about the welfare of the wives of the Kauravas and tell them to attend on their father in law and their husbands. Tell our dear daughter in law who are good natured and firm on the paths of virtue, that we pray for the happiness as well as the increase of their children. Tell the unmarried girls, Sanjaya that we ask about their welfare and pray

घतेयुक्तिरेतस्य काचिन्नैवं विधास्यामयथाभेयंते । ददस्वद्वाशक्रपुरीं ममैव युध्यस्व वा भारतमुख्यवीर ॥ ४९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि युधिष्ठिर संदेशे त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

युधिष्ठिर उवाच । उतसन्तमसन्तंवा बालंवृद्धंचसञ्जय । उताबलंबलीयांसं धातामकुरुतेवशे ॥ १ ॥ उतबालायपाण्डित्यं पण्डितायोतबालताम् । ददातिसर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरन् ॥ २ ॥ बलंजिज्ञासमानस्य आचक्षीथायथातथम् । अथमन्त्रंमन्त्रयित्वा याथातथ्येनहृष्टवत् ॥ ३ ॥ गावल्गणेकुरून्गत्वा धृतराष्ट्रंमहाबलम् । अभिवाद्योपसंगृह्य ततःपृच्छेरनामयम् ॥ ४ ॥ ब्रूयाश्चैनंत्वमासीनं कुरुभिःपरिवारितम् । तवैवराजन्वीर्येण सुखंजीवन्तिपाण्डवाः ॥ ५ ॥ तवप्रसादाद्बालास्ते प्राप्ता राज्यमरिन्दम । राज्येतान्स्थापयित्वाग्रे नोपेक्षस्वविनिश्यत. ॥ ६ ॥ सर्वमप्येतदे-

दुर्योधन शीघ्र इन्द्रप्रस्थ न देंगे तो लड़ाई होगी जो उन को अच्छा लगे वह करें ४९।

अध्याय ३१ ॥

फिर युधिष्ठिरजी बोले कि संजय साधु व असाधु बालक, व वृद्ध, अबल, व बलवान्, सबको ईश्वर अपने वशमें करता है । १ । व वही बालक को पंडित करता व पंडितको बालक, इसी तरह पूर्व के कर्मानुसार सबको सब देता है । २ । जो वे हमारा बल जानना चाहतेहों तो जैसा है ज्योंका त्यों कहदेना, यद्वा सम्मत कराय हर्षित हो यथा तथा कहना । ३ । हे संजय कौरवों के समीप जाकर महाबलवान् धृतराष्ट्रजी को प्रणामकर हमारी ओर से कुशल पूछना । ४ । व कुरुवंशियों के मध्य में बैठेहुये राजा से कहना कि राजन् तुम्हारेही वीर्यसे पाण्डवलोग सुख से जीवित हैं । ५ । तुम्हारे ही प्रसाद से उन बालकोंने राज्य पायाथा, अपने आगे उनको राज्यपर स्थापित करनेमें उपेक्षा न कीजिये क्योंकि आपकी उपेक्षा में वे न रहेंगे । ६ । व हे संजय सबब्रह्मांड

the kingdom of Indraprastha, let him choose one of the two courses."

CHAPTER XXXI

"The good and the wicked, the young and the old, the weak and the strong," said Yudhishthir to Sanjaya, "are under the control of the Almighty. He alone makes the child learned and again transforms a learned man into a child in accordance with the former deeds. Tell them the exact number of our forces as you have seen them or, if you are advised to the contrary, you may state otherwise. When you approach the Kauravas, you will ask about the welfare of king Dhritrashtra of prodigious strength and salute him on our behalf. Tell the king, while he be sitting amidst Kauravas, that the [illegible] happy through his grace that it was he who had on [illegible] and that he should not neglect [illegible] by him so doing we cannot exist.

स्त्राःसुखितभोगवत्यः। लघुयासांदर्शनंवाक्चलब्धीवेशस्त्रियाकुशलंतापृच्छेः ३८॥ दास्य.स्पुर्यांगेचदासाः कुरूणांतदाश्रयाबहवः कुब्जखञ्जाः । आख्यायमांकुशलिनंस्म तेभ्योऽप्यनामयं परिपृच्छेर्जघन्यम् ॥ ३९ ॥ कच्चिद्वृत्तिर्वर्ततेवैपुराणी कच्चिद्भोगा न धार्तराष्ट्रोददाति। अङ्गहीनानकृपणान्वामनान्वायानान्धांश्चपो धृतराष्ट्रोबिभर्ति ४० अन्धांश्चसर्वान स्थविरांस्तथैव हस्तगाजीवा बहवोयेऽत्रसन्ति।आख्यायमांकुशलिनंस्म तेभ्योऽप्यनामयं परिपृच्छेर्जघन्यम् ॥ ४१ ॥ माभैष्टदुःखेनकुजीवितेन नूनंकृतंपरलोकेषुपापम् । निगृह्यशत्रून् सुहृदोऽनुगृह्य वासोभिरन्नेनच वोभरिष्ये ॥ ४२ ॥ सन्त्येवमेब्राह्मणेभ्य.कृतानि भावीन्यथोनोबततवर्तयन्ति । तान्पश्यतानि युक्तरूपांस्तथैव ता

व शीघ्रही सब के सामने आनेवाली व बहुत युक्तिसे शीघ्र बोलनेवाली वेश्यालोगों से भी हमारी ओरसे पूछना । ३८ । व कौरवोंकी जितनी दासियां दास व अन्धे पँगुले लँगड़े और जो लोग उन के आश्रित हों उन सबोंसे प्रथम हमको कुशलपूर्वक बताय पीछे उन की कुशल पूछना । ३९ । कि तुमलोगों की पुरानी जीविका चली आती है कि नहीं, व दुर्योधन के यहांसे भोग के पदार्थ तुमलोगों को मिलजाते हैं व नहीं, व जो अंगहीन, कृपण, वामन, अंधे, बूढ़े हाथी घोड़ों परके नौकर दुर्योधन-दयावान् के यहां रहते हैं इन से भी प्रथम हम को कुशल बताकर पीछे उनकी कुशल पूछना । ४१ । व कहना कि तुमलोग अपनी जीविका के दुःखसे न डरो परलोक में तुम लोगों ने अवश्य पाप किया है परन्तु अब थोड़ेही दिनोंकी बात है शत्रुओं को जीत सुहृदों के ऊपर अनुग्रह कर तुम लोगोंको कपड़े व अन्नसे अच्छीतरह पोषेंगे । ४२ । व दुर्योधन से दूतों के द्वारा यह कहलादेना कि ब्राह्मणों को जो वार्षिकी जीविका हम ने देरक्खी है उसको

---

that they be happy and get husbands worthy of them so that they may please them. Ask also about the welfare of the well-decked and well-dressed prostitutes who adorn themselves, are fond of pleasure and luxury, come readily towards everyone and talk pleasantly. Having informed all the male and female servants of the Kauravas, the blind, the lame and the helpless people, of our welfare ask about theirs in return and say: "Do you receive your living as you did formerly? and do you get from Duryodhan all your necessities?" Tell all the limbless, pitiable, dwarfish, blind or old keepers of elephants and horses, employed under Duryodhan, that we are happy and ask about their welfare. Tell them that they must not fear for their livelihood; that they have certainly sinned during their former birth, but they will soon see us giving us

मेवाभिवृद्धिं श्रावयेथा नृपस्तम् ॥ ४३ ॥ येचानाथादुर्बलाः सर्वकालमात्मन्येव प्रयतन्ते-ऽथमूढाः । तांश्चापित्वंकृपणान् सर्वथैवास्मद्वाक्यात् कुशलंतातपृच्छेः ॥ ४४ ॥ ये चाप्यन्ये संश्रिता धार्तराष्ट्रान्नानादिग्भ्योऽभ्यागताः सूतपुत्र । दृष्ट्वातांश्चैवार्हतश्चापि सर्वान् संपृच्छेथाः कुशलंचाव्ययञ्च ॥ ४५ ॥ एवंसर्वानागताभ्यागतांश्च राज्ञोदूतान् सर्वदिग्भ्योऽभ्युपेतान् । पृष्ट्वासर्वान् कुशलंतांश्च सूतपश्चादहंकुशलीतेषुवाच्यः ॥ ४६ ॥ नहीदृशाःसन्त्यपरे पृथिव्यां येयोधकाधार्तराष्ट्रेण लब्धाः । धर्मस्तुनित्योममधर्म एवमहाबलः शत्रुनिबर्हणाय ॥ ४७ ॥ इदंपुनर्वचनं धार्तराष्ट्रं सुयोधनंसंजयश्रावयेथाः । यस्तेशरीरेहृदयं दुनोतिकामः कुरूनसपत्नोऽनुशिष्याम् ॥ ४८ ॥ नवि-

---

कहीं वे न मिटावें व जो कुछ उन्होंने अपनी ओर से दी होंगी वेभी हम आकर सब देखेंगे अच्छीतरह उनलोगोंकी जीविका सुधार देंगे । ४३ । व जो अनाथ, दुर्बल मूढ़ लोग हैं सदा काम किया करते व कुछभी नहीं करसके ऐसे विचारे दीनोंसे भी हमारी जबानी कुशल पूछना । ४४ । व हे संजय, जो और लोग नानादिशों से आय अन्न के लिये दुर्योधनकी शरणमें हों उन सबलोगों की ओर देख सबों से कुशल पूंछना । ४५ । इस प्रकार सब आयेहुये अभ्यागतों से व सब दिशों से आयेहुये दूतों से उन की कुशल पूंछ पीछे से हमारी कुशल उन से कहना । ४६ । जो योधा दुर्योधन से जुड़े हैं पृथ्वी में वैसे और नहीं हैं यह न समझें, शत्रुओं को नाशनेवाला धर्म हमारे ही यहां है सेनासे शत्रु नहीं माराजाता किंतु धर्महीसे माराजाता है । ४७ । हे संजय दुर्योधन से यहभी वृत्तान्तकहना कि जो इच्छा तुम्हारे हृदयको खेददेती है कि हमीं सब राज्य लेवें उसी इच्छा से हम सबकौरवों को शिक्षा देंगे । ४८ । हमसे यदि

---

happiness to our friends with the destruction of our enemies and providing for the food and raiments of those poor men. 43. Send some one to inform Duryodhan that he should not stop the annuities that we used to give the Brahmans, that we shall see what additions he has made in them. Ask about the welfare of the orphans, the weaklings and those who are unable to work. Inquire after the health of those who have come from out stations and are dependent on Duryodhan for their good. Having asked about the health of the guests and foreign ambassadors, inform them of our welfare. Duryodhan should not think that the Earth does not possess warriors like those that have come together to help him for we have on our side dharm which alone is sufficient to give victory. Tell Duryodhan that his cherished desire to rule all the world will be the cause of his ruin. We shall fight if Duryodhan does not give

यदेयुक्तिरेतस्य काचिदेवं विधास्याम्यथवाभियंते । ददस्ववाशक्रपुरीं ममैव युध्यस्व वा भारतमुख्यवीर ॥ ४९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि युधिष्ठिर संदेशे त्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

युधिष्ठिर उवाच । उतसन्तमसन्तंच बालंवृद्धंचसञ्जय । उताबलंबलीयांसं धातामकुरुतेवशे ॥ १ ॥ उताबालायपाण्डित्यं पण्डितायोतबालताम् । ददातिसर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरन् ॥ २ ॥ अलंविज्ञापनायस्य आचक्षीथायथातथम् । अथमन्त्रंमन्त्रयित्वा याथातथ्येनहृष्टवत् ॥ ३ ॥ गावल्गणेकुरून्गत्वा धृतराष्ट्रंमहाबलम् । अभिवाद्योपसंगृह्य ततःपृच्छेरनामयम् ॥ ४ ॥ ब्रूयाश्चैनंत्वमासीनं कुरुभिःपरिवारितम् । तवैवराजन्वीर्येण सुखंजीवन्तिपाण्डवाः ॥ ५ ॥ तवप्रसादाद्बालास्ते प्राप्ता राज्यमरिन्दम । राज्येतान्स्थापयित्वाग्रे नोपेक्षस्वविनिश्यतः ॥ ६ ॥ सर्वमप्येतदे-

---

दुर्योधन शीघ्र इन्द्रप्रस्थ न देंगे तो लड़ाई होगी जो उन को अच्छा लगे वह करें ४९।

अध्याय ३१ ॥

फिर युधिष्ठिरजी बोले कि संजय साधु व असाधु, व लड़क, व वृद्ध, अबल, व बलवान्, सबको ईश्वर अपने वशमें करता है । १ । व वही बालक को पंडित करता व पंडितको बालक, इसी तरह पूर्व के कर्मानुसार सबको सब देता है । २ । जो वे हमारा बल जानना चाहतेहों तो जैसा है वैसा त्यों कहदेना, यद्वा सम्मत कराय हर्षित हो यथा तथा कहना । ३ । हे संजय कौरवों के समीप जाकर महाबलवान् धृतराष्ट्रजी को प्रणामकर हमारी ओर से कुशल पूछना । ४ । व कुरुवंशियों के मध्य में बैठेहुये राजा से कहना कि राजन् तुम्हारेही वीर्यसे पाण्डवलोग सुख से जीवित हैं । ५ । व तुम्हारे ही प्रसाद से उन बालकोंने राज्य पायाथा, अपने आगे उनको राज्यपर स्थापित करनेमें उपेक्षा न कीजिये क्योंकि आपकी उपेक्षा में वे न रहेंगे । ६ । व हे संजय सबप्रकार

---

the kingdom of Indraprastha, let him choose one of the two courses."

CHAPTER XXXI

"The good and the wicked, the young and the old, the weak and the strong," said Yudhishthir to Sanjaya, "are under the control of the Almighty. He alone makes the child learned and again transforms a learned man into a child in accordance with the former deeds. Tell them the exact number of our forces as you have seen them or, if you are advised to the contrary, you may state otherwise. When you approach the Kauravas, you will ask about the welfare of King Dhritrashtra of prodigious strength and salute him on our behalf. Tell the king, while he be sitting amidst Kauravas, that the Pandavas are happy through his grace that it was he who had once installed us on the throne and that he should not neglect now our claim to the throne, as by his so doing we cannot exist.

कस्य नाहं संजयकस्यचित् । शतसहत्यजीवामो द्विषतांमावशंगम ॥ ७ ॥ तथा भीष्मंशान्तनवं भारतानांपितामहम् । शिरसाभिवदेथास्त्वं ममनामप्रकीर्तयन् ॥८॥ अभिवाद्यच वक्तव्यस्ततोऽस्माकं पितामहः । भवताशन्तनोर्वंशो निमग्नःपुनरुद्धृतः ॥ ९ ॥ सत्वंकुरुतथातात स्वमतेनपितामह । यथाजीवन्तितेपौत्रा. प्रीतिमन्त.परस्परम् ॥ १० तथैवविदुरंब्रूयाः कुरूणांमन्त्रधारिणम् । अयुद्धंसौम्यभाषस्व हितकामोयुधिष्ठिरे ॥ ११ ॥ अथदुर्योधनंब्रूया राजपुत्रममर्षणम् । मध्येकुरूणामासीनमनुनीय पुनःपुनः ॥ १२ ॥ अपापां यदुपैक्षस्त्वं कृष्णामेतांसभागताम् । तद्दुःखमतितिक्षाम मा वधिष्मकुरूनिति ॥ १३ ॥ एवंपूर्वापरान्क्लेशान तितिक्षन्तपाण्डवाः । यवीयांसोऽपिसन्तो यत्तत्सर्वंकुरवोविदुः ॥ १४ ॥ यन्नःमव्राजयेःसौम्य अजिनैःप्रतिवासितान्

एकही किसी के पास नहीं है इस में बहुत अवकाश है कहीं सब लोग पड़े रहेंगे तुम शत्रुओं के वश में न पड़ना । ७ । व उसीतरह, भारत वंशियों के पितामह, व शान्तनुजी के पुत्र भीष्मजी से हमारा नाम लेकर कहना कि युधिष्ठिर आप को प्रणाम करते हैं इतना कह शिर झुकाय अभिवादन करना । ८ । व हमारे पितामह से अच्छीतरह अभिवादनकर विनयपूर्वक कहना कि आपने डूबताहुआ राजा शान्तनुजी का वंश फिर उबारा । ९ । अब अपने मतसे आप ऐसा करें जिसमें तुम्हारे पौत्र परस्पर प्रीतिमानहो जीतेरहैं । १० । व इसीरीतिपर कुरुवंशियों के परममन्त्री विदुरजी से कहना कि हे सौम्य युधिष्ठिरजी के विषयमें जो हित चाहतेहोतो ऐसी बातें कहो जिसमें युद्ध नहो । ११ । व राजसभा में कुरुवंशियों के मध्यमें बैठे असहनशील राजाके पुत्र दुर्योधन से बार बार कहना, कि अपापिनी इस हमारी द्रौपदी को जो तुमलोगोंने सभाके बीच में तिरस्कार किया उसको हमलोगों ने क्षमा किया इससे कौरवों को न मारेंगे । १३ । व इसीतरह पूर्व परके बहुतसे क्लेश पांडवों ने क्षमाकिये यद्यपि बड़े बलवान

A single man cannot be the master of the whole world; there is much room in it for people together take care that you may not fall in the hands of an enemy. In the like manner tell Bhishma, the son of Shantanu and grandfather of the Kauravas, that I salute him reverentially to obtain his blessings and then say to him, "You had once saved the line of king Shantanu from becoming extinct, be pleased to devise some plan for the reconciliation of your grandsons and to save them from destruction 10. In, the same *manner, when you go to Vidur the best counsellor of the Kauravas*, request him to advise the Kauravas to shun from fighting if he wants to do me good. Say again and again, in the open court, to Duryodhan the rash son of the King that we have forgiven the wrongs done by him to our innocent Draupadi and will not kill the Kauravas and that we forgive also the wrongs done to us in spite

तदु खमति तिक्षाम मातखिव कुरुनिति ॥ १५ ॥ यत्कुन्तींसतिक्रम्य कृष्णां केशे ष्वधर्षयत् । दु शासनस्तेऽनुमते तचास्माभिरुपेक्षितम् ॥ १६ ॥ अथोचितंस्वकंभागं लभेमहिपरन्तप । निवर्तयपरद्रव्यात् बुद्धि गृद्धांनरर्षभ ॥ १७ ॥ शान्तिरेवं भवेद्राजन् प्रीतिश्चैवपरस्परम् । राज्यैकदेशमपिनः प्रयच्छशममिच्छताम् ॥ १८ ॥ अविस्थलं वृकस्थलं माकन्दींवारणावतम् । अवसानंभवत्वत्र किञ्चिदेकञ्च पञ्चमम् ॥ १९ ॥ भ्रातॄणांदेहिपञ्चानां पंचग्रामांनसुयोधन । शान्तिर्नोऽस्तु महाप्राज्ञज्ञातिभिःसहसञ्जयः ॥ २० ॥ भ्राताभ्रातरमन्वेतु पितापुत्रेणयुज्यताम् । स्मयमानाःसमायान्तु पांचालाःकुरुभिःसह ॥ २१ ॥ अक्षतान् कुरुपांचालान् पश्येयमितिकामये । सर्वेसुमनसस्तात शाम्यामभरतर्षभ ॥ २२ ॥ अलमेवशमायास्मि यथायुद्धायसञ्जय । धर्मार्थयोरलश्चाहं मृदवे दारुणाय च ॥ २३ ॥

इति उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि युधिष्ठिरवाक्ये एकत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३१ ॥

भी रहे वह सब कौरवलोग जानतेहैं । १४ । हे सौम्य जो हमलोगों को मृगचर्म पहिराय तुमने बनवास दियाहै, वह दुःख हमलोगों ने क्षमाकिया इससे अब कौरवों को न मारेंगे । १५ । व जो कुंती के सामने द्रौपदी के केशपकड़ तुम्हारे मत से दुश्शासन ने खींचा है वहभी दुःख हमलोगों ने क्षमा किया । १६ । अब अपना राज्यपावैं, तुम अपनी लोभिनी बुद्धि पराये धनसे हटावो । १७ । अब हमलोग शान्तिही चाहते हैं कि राज्य का एकभी देश हमलोगोंको देवोगे तब शान्ति होजावे व परस्पर हमारी तुम्हारी प्रीति बनीरहे । १८ । और वसने पांचवां एक और इन पांचों भाइयों को देदेनेसे जाति सहित हम सबकी शान्ति होसकती है । २० । भाई भाईसे और पुत्र पितासे मिलकर कौरवादि सबलोग हर्षित होंगे और लड़ाई से बचेंगे सब पांचाल और कौरव क्षयको प्राप्त नहोंगे और शान्ति पूर्वकरहेंगे चाहे शान्ति होचाहे लड़ाईहो दोनों में हम धर्म और अर्थ को चाहते हैं २१ ॥

of our great strength which the Kauravas well know. We have forgiven them the pangs of our exile and will consider of revenge no longer. In the presence of Kunti, Dushasan dragged Draupadi by the hair; but we forgive Duryodhan by whose consent it was done. We want only our kingdom and he must no more covet the property of others. We are desirous of peace. We shall be contented if they give us only one province amicably and shall ever be bound in love. ' We will live peacefully if they will give us five villages, namely, Kushthal, Vrikthal, Makaudi, Baranavat, and one more. 20. All the brothers, fathers and sons will be happy if we can avoid war and Kauravas and the Panchal will not die. We shall not leave *dharm* and *arth* whether it be peace or war."23.

वैशम्पायन उवाच । अनुज्ञातः पाण्डवेन प्रययौ सञ्जयस्तदा । शासनं धृतराष्ट्रस्य सर्वं कृत्वा महात्मनः ॥ १ ॥ सम्प्राप्य हास्तिनपुरं शीघ्रं च प्रविवेश ह । अन्तःपुरसमास्थाय द्वाःस्थं वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ आचक्ष्व मां धृतराष्ट्राय द्वाःस्थ उपागतं पाण्डवानां सकाशात् । पाण्डुपुत्राणां सञ्जयमाचिरं कृथा ॥ ३ ॥ जागर्ति चेदभिवदेस्त्वं हि द्वाःस्थ प्रविशेयं विदितो भूमिपस्य । निवेद्यमत्यधिकं हि मेऽस्ति द्वाःस्थोऽथ श्रुत्वा नृपतिं जगाद ॥ ४ ॥ द्वाःस्थ उवाच । सञ्जयोऽयं भूमिपते नमस्ते दिदृक्षया द्वारमुपागतस्ते । प्राप्तो दूतः पाण्डवानां सकाशात् प्रशाधि राजन् किमयं करोतु ॥ ५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ आचक्ष्व मां कुशलिनं कल्यमस्मै प्रवेश्यतां स्वागतं सञ्जयाय । न चाहमेतस्य भवाम्यकल्यः स मे कस्माद् द्वारि तिष्ठेच्च सक्तः ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत प्रविश्यानुमते नृपस्य महद्वेश्म प्राज्ञशूरा

अध्याय ३२ ॥

वैशम्पायनजी जनमेजयजी से बोले कि धृतराष्ट्र की आज्ञा सब पूरी कर युधिष्ठिर जी की आज्ञा पाय सञ्जय हस्तिनापुर को गये । १ । व वहां शीघ्रही पहुँच पुरमें प्रवेश कर अविलम्ब अन्तःपुरकी ड्योढ़ीपर जाय द्वारपाल से बोले । २ । हे द्वारपाल, महाराज धृतराष्ट्रजी से जाय कहो कि पाण्डवों के यहां से सञ्जय आये हैं खबरदार देर न करो । ३ । जो राजा जागते होंतो कहो कि जब उनको विदित होजायगा हम प्रवेश करें, हमको बहुत आवश्यक बात कहनी है, इतना सुन द्वारपाल राजाके पास गया व हाथजोड़ बोला । ४ । हेमहाराज सञ्जय आप को प्रणाम करते हैं व आपके दर्शनके लिये द्वार पै खड़े हैं पाण्डवों के यहां के समाचार लाये हैं उनके लिये क्या आज्ञा है । ५ । यह सुन धृतराष्ट्रजी बोले, कि उनसे हमको अति कुशली बताओ, अच्छीतरह आये हुये संजयको यहांलाओ, उनके देखनेके लिये हमभी किसी समय में भी असमर्थ नहीं हैं वे द्वारपर क्यों खड़ेरहे सीधे यहां क्योंनहीं चले आये । ६ । वैशम्पायनजी बोले कि द्वारपालने तब

CHAPTER XXXII

Vaishampayan said to Janmejaya that having done the work of Dhritrashtra and taken leave of Yudhishthir, Sanjaya went to Hasthinapur. Having reached there, he went directly to the palace gate and said to the porter, "Tell king Dhritrashtra that Sanjaya has come after seeing the Pandavas and is awaiting his permission to enter the palace I have some thing of importance to communicate to him" The porter, on hearing this, went to the king and said with joined palms, "Sanjaya sends you his greetings, king He is waiting at the gate to see you and has brought news from the Pandavas. What are your orders concerning him?" "Tell him that I am quite safe," replied Dhritrashtra, "and bring him here. I am at all times prepared to receive him. Why is he standing at the gate, he should have come directly to me The porter told

यंगुप्तम् । सिंहासनस्थंपार्थिवमाससादवै चित्रवीर्यमाञ्जलिःसूतपुत्रः ॥ ७ ॥
संजयउवाच ॥ संजयोऽहम्भूमिपतेनमस्ते प्राप्तोऽस्मिगत्वानरदेवपाण्डवान् । अभिवा
द्यत्वांपाण्डुपुत्रो मनस्वीयुधिष्ठिर कुशलचान्वपृच्छत् ॥ ८ ॥ सतेपुत्रान्पृच्छतिमी
यमाणःकच्चित्पुत्रैः प्रीयसेनप्तृभिश्च । तथासुहृद्भिः साचिवैश्चराजन् येचापित्वामुपजीव
न्तितैश्च ॥ ९ ॥ धृतराष्ट्रउवाच । अभिनन्द्यत्वांतातवदामिसञ्जय अजातशत्रुञ्च
सुखेनपार्थम् । कच्चित्सराजा कुशलीसपुत्रः सहामात्यः सानुजःकौरवाणाम् ॥१०॥
संजय उवाच । सहामात्यः कुशलीपाण्डुपुत्रो बुभूषतेयच्चतेऽग्रेतमनोऽभूत् निर्णिक्त-
धर्मार्थकरोमनस्वी बहुश्रुतो दृष्टिमानशीलवांश्च ॥ ११ ॥ परोधर्मात् पाण्डवस्या-नृशं-

---

वैशाही संजय से कहा सो राजाकी आज्ञापा बड़े चतुर शूरवीर व श्रेष्ठ लोगों से रक्षित राजभवन में जाय सिंहासन पर विराजमान राजा धृतराष्ट्रजी से हाथजोड़ संजय बोले । ७ । कि महाराज हम संजय हैं प्रणाम करते हैं पाण्डवों के पास से हमआये, आपको प्रणाम कर पाण्डवके पुत्र युधिष्ठिरजीने आपकी कुशल पूछी है । ८ । व उन्होंने आप के सबपुत्रोंका भी प्रसन्नता से पूंछाहै व यहभी कि महाराज पुत्रपौत्रों समेत कुशलतो हैं, व जो आपके सुहृद मन्त्री व अन्य उपजीवी नौकर चाकर हैं उन समेत राजा कुशल हैं यह भी पूंछा है । ९ । धृतराष्ट्र जी बोले कि हे तात संजय तुमको व युधिष्ठिर को सुख से अभिनन्दित कर कहते हैं कि भला अपने पुत्र अमात्य भाइयों सहित कौरवोंके राजा युधिष्ठिरभी बनाय अच्छे तो हैं । १० । संजयजी बोले कि अमात्यादिकों सहित युधिष्ठिरजी बहुत कुशलपूर्वक हैं आपके आगे जो कुछ धनादिक पातेथे अब फिर उसके पाने की इच्छा करते हैं, व दोषरहित धर्म अर्थ करते बहुत शास्त्र सुनते उदार चित्तदृष्टे शीलवान् हैं व शुभाशुभ विचार में दृष्टि रखते हैं । ११ । व युधिष्ठिर के अन्य धर्मी

Sanjaya what he had heard from the king Sanjaya entered the palace which was well protected by valliant people of the best type. There he saw Dhritrashtra on the royal throne and said to him with joined palms, "I am Sanjaya, king, I salute you. I have come from the Pandavas. Pandu's son Yudhishthir sends you his greetings and inquires after your welfare as well as that of your sons, grandsons, friends, ministers, attendants and dependents" "I am happy to greet you and Yudhishthir," said Dhritrashtra to Sanjaya, "is Yudhishthir the king of the Kauravas well with his sons, ministers and brothers ?" 10 "Yudhishthir and his ministers are safe," said Sanjaya in reply, "he is desirous of getting back the allowance which he used to receive before and is passing his life in the doing of the deeds of virtue, the hearing of religious books and thinking of what is right and wrong He finds his chief pleasure in doing kindness

स्वयं धर्मपरो वित्तचयान्मतोऽस्य । सुखप्रिये धर्महीनेऽनपार्थेनुरुध्यते भारतास्यबुद्धिः ॥ १२ ॥ परप्रयुक्तः पुरुषो विचेष्टते सूत्रप्रोता दारुमयीवयोषा । इमंदृष्ट्वा नियमं पाण्डवस्य मन्येपरकर्मदैवमनुष्यात् ॥ १३ ॥ इमञ्चदृष्ट्वा तव कर्मदोष पापोदर्कघोरमवर्णरूपम् । यावत्परः कामयतेऽतिवेलं तावन्नरोऽयं लभतेप्रशंसाम् ॥ १४ ॥ अजातशत्रुस्तु विहायपाप जीर्णात्वचसर्प इवासमर्थाम् । विरोचतेऽहार्य्यवृत्तेन धीरो युधिष्ठिरस्त्वयि पापंविसृज्य ॥ १५ ॥ हन्तात्मनः कर्म निबोधराजन् धर्मार्थयुक्तादार्यवृत्तादपेतम् । उपक्रोशंचेह गतोऽसिराजन् भूयश्चपापं प्रसजेदमुत्र ॥ १६ ॥ सत्वमर्थं संशयितं विनातैराशंससे पुत्रवशानुगोऽस्य । अधर्मशब्दश्च महान्पृथिव्यां नेदंकर्मत्व

वे सुरूपधर्म दया है व दयासे भी जो धर्म यज्ञादि धन से होते हैं वे मुख्य हैं, व उन का सुखप्रिय अप्रयोजन कामों में रहता है । १२ । ईश्वरकी प्रेरणासे पुरुष सबकार्य्य करता है जैसे कठपुतली नचानेवालेकी प्रेरणासे सब कार्य्य करती है, युधिष्ठिरजी ऐसे कार्य्य करने पर भी कष्टित देख मनुष्य के कार्य्यसे ईश्वरका कार्य बड़ा मानते हैं ।१३। व पापाधिक घोररूप, कहने के अयोग्य यह तुम्हारे बड़ाका कर्म देख जबतक उत्कृष्ट शत्रु विचारे कि देखें ये क्या चाहते हैं तबतक अन्य पुरुष कार्य्य कर प्रशंसा पा जाय । १४ युधिष्ठिरजी तो अप्रयोजन पुरानी केचुल छोड़े हुये सर्प के समान पापछोड़ अपने स्वाभाविक आचरण से शोभितहोते हैं क्योंकि उन्होंने सबपाप अब आपके ऊपर छोड़ दिया । १५ । बड़े खेदकी बात है कि धर्म अर्थयुक्त श्रेष्ठलोगों के आचरण से रहित अपना कर्म महाराज सुनिये जिसके करने से यहां तो निन्दितहुये हो, फिर स्वर्गमें भी पाप पीछे लगेगा । १६ । सो अब उन पाण्डवों को छोड़ अपने पुत्रके वशीभूतहो अकेले ही दुर्लभ अर्थ आप लियाचाहतेहो, व पृथ्वीपर अधर्म शब्दभी आप अकेलेही लिया

and performing sacrifices and useful deeds. God keeps every action *of man under control as a juggler does the movements of his dolls.* Seeing Yudhishthir distressed for all his virtue, we believe that God's deeds are above those of men As long as an enemy watches your sinful and inexpressible deeds to find out your intentions, an outsider enters in and bears away the palm Yudhishthir is leading a virtuous life and has cast aside his sins as a serpent does his skin: he has given over all his sins to you It is a subject of great annoyance that you have to hear of your deeds as contrary to the practice of good men, for which you have become notorious and which will stick to you in the other world. Sitting the Pandavas aside you are influenced by your son and would alone usurp the whole wealth which is not an easy task. The world is becoming full of the news of your sins which are not worthy of you! Troubles

त्वसंभारताश्च ॥ १७ ॥ हीनप्रज्ञो दौष्कुलेयो नृशंसो दीर्घवैरी क्षत्रविद्यास्वधीरः । एवंधर्मा नापदः संश्रयेत हीनवीर्यश्च भवेदशिष्टः ॥ १८ ॥ कुलेजातो बलवान् यो यशस्वी बहुश्रुतः सुखजीवी यतात्मा । धर्माधर्मौ ग्रथितौ यो बिभर्ति सह्यस्य दिष्टस्य वशादुपैति ॥ १९ ॥ कथं हि मन्त्राग्र्यधरो मनीषी धर्मार्थयोरापदि संप्रणेता । एवंयुक्तः सर्वमन्त्रैरहीनो नरो नृशंसं कर्म कुर्यादमूढः ॥ २० ॥ तवह्येते मन्त्रविदः समेत्य समासते कर्मसु नित्ययुक्ताः । तेषामयं बलवान्निश्चयश्च कुरुक्षये नियमेनोदपादि ॥ २१ ॥ अकालिकं कुरवो नाभविष्यन् पापेन चेत् पापमजातशत्रुः । इच्छेज्जातु त्वयि पापं विसृ-

चाहते हो, हे महाराज यह निन्द्यकर्म आपके योग्य नहीं है। १७ । क्योंकि बुद्धिहीन दुष्कुल में उत्पन्न, क्रूरस्वभाव, दीर्घ वैरी, क्षत्रियोंकी विद्यामें अधीर, हीन वीर्य, व अशिष्ट पुरुषों के ऊपर आपदें आनी चाहिये । १८ । आप तो अच्छे कुल में उत्पन्न, बलवान्, यशस्वी, बहुश्रुत, सुखजीवी, जितेन्द्रिय, धर्म्म अधर्म्म दोनों के सेवकहो फिर आप के ऊपरभी अभाग्यवशवाहो तो बड़े आश्चर्य की बात है । १९ । आपने यह निन्द्य कर्म्म पाण्डवों को वनवास रूप कैसे किया क्योंकि ऐसे श्रेष्ठ भीष्मपितामह व विदुरादि मन्त्रियों ने कहाभी कि जुआ न खेलो पर नहीं माना, तुमतो बड़े बुद्धिमान व विपत्तिसमयमें भी धर्म्म अर्थके करनेवालेथे, महाराज, ऐसा कर्म्म तो सब मन्त्रियों सेहीन क्रूरमनुष्य करताहै । २० । हाय बड़े खेदकी बात है कि आपके यहां सबमन्त्रवेत्ता, व कर्म्मकरने में नित्य युक्त ऐसे ऐसे मन्त्री विद्यमानहीं रहे, उनका यह बलवान् निश्चय हुआ कि कुरुवंशियोंको नाशहोनेपर पहुँचादिया । २१ । जो तुम्हारे पापकर्म्म से प्रेरित युधिष्ठिरजी ने पाप करने की इच्छाकी तो सब कुरुवंशियों का अकाल मरणहुआ, जो कहो ऐसा करने से उनको गोत्रवध दोष होता तो यहबात नहीं तुम्हारेही कारण तो चोरों के समान पाप

may come upon those who are devoid of wisdom, low born, cruel, harrassed by enemies, impatient in the art of Kshatryas, cowardly and wicked you are born of a noble family, are powerful, glorious, learned, easy-going and brave and can distinguish *dharm* from *adharm*, it would be a wonder if you are attacked by misfortunes. How could you do the sinful deed of sending the Pandavas into exile and *not minding the advice of Bhishma and Vidur, the best of men*, who warned you against gambling You are very wise and cannot foreake dharm even at the time of trouble such a deed can be done by those cruel men who have no counsellors 20. Alas! all your wise counsellors of great experience are resolved upon the doing of a deed that will lead to the destruction of the Kauravas If actuated by your sins, Yudhishthir is bent on revenge, it will mean an an untimely death to the Kauravas. Yudhishthir will yet be

ज्यनिन्दा चेयंतवलोकेऽभविष्यत् ॥ २२ ॥ किमन्यत्र विषयादीश्वराणां यत्रपार्थः परलोकंस्म द्रष्टुम् । अत्यक्रामत्सतया सम्मतः स्याञ्चसंशयो नास्तिमनुष्यकारः २३॥ एतान्गुणानकर्मकृतानवेक्ष्य भावाभावौ वर्त्तमानावनित्यौ । बलिर्हिराजापारमविन्द मानो नान्यत्कालात् कारणंतत्रमेने ॥ २४ ॥ चक्षुःश्रोत्रे नासिकात्वक्चजिह्वा ज्ञान स्यैतान्यायतनानि जन्तोः । तानिप्रीतान्येव तृष्णाक्षयाञ्चे तान्यव्यथो दुःखहीनः प्रणु- द्यात् ॥ २५ ॥ नत्वेवमन्ये पुरुषस्यकर्म संवर्त्ततेसुप्रयुक्तं यथावत् । मातुःपितुःकर्मणा भिप्रसूतः संवर्द्धते विधिवद्भोजनेन ॥ २६ ॥ प्रियाप्रियेसुखदुःखेच राजन्निन्दाप्रशं- सेचभजन्तएव । परस्त्वेनं गर्हयतेऽपराधे प्रशंसतेसाधुवृत्तं तमेव ॥ २७ ॥ सत्वांगर्हे

हुआ इस से पाप व निन्दा तुम्हारे ऊपर छोड़ वै अपाप व अनिन्द्य होंगे । २२ । ईश्वरोंके विषय से बाहर कुछनहीं सब ईश्वराधीन हैं, क्योंकि अर्जुनजी परलोक तक इसी शरीर से चलेगये उनकोभी वनवासादि के दुःखहुये सो इस में कुछ सन्देह नहीं कि मनुष्यकी कर्त्तव्यता कुछ नहीं है । २३ । व इसी से इन शौर्य्यादि गुणोंको कर्म्मानुसार घटती बढ़ती को देख व ऐश्वर्य्य अनैश्वर्य अनित्य देख, पार न पाय, र आबलिराजाने, कालको छोड़ और कुछ बलाबल करने का कारण नहीं माना । २४ । चक्षु, श्रोत्र, नासिका, त्वचा, व जिह्वा, येही पांच मनुष्य के ज्ञानस्थान हैं, इनकी जब तृष्णा का नाशहोता तभी सुख दुःख लाभ अलाभ को समान जान पुरुष इन्द्रियों को अपने अपने विषय से निवृत्त करता है । २५ । परन्तु हम ऐसाभी पुरुषका कर्म नहीं मानते कि सब ईश्वराधीनही है, क्योंकि माता व पिता के कर्म से पुरुष उत्पन्नहोता है, व विधि पूर्वक भोजन करता है तभी शरीर रहता है उस समय कौन कर्मकरता है । २६ । व सदा प्रिय अप्रिय, सुख दुःख, निन्दा प्रशंसा, इनको सब समय पर भजते हैं, परन्तु जब यह अपराध करता तो दूसरा मनुष्य उसकी निन्दा करता जब यह अच्छे काम करता

innocent of the deed of killing you, his kinsmen, as it was you who did the deed of sin before. Nothing is beyond the power of God: Arjun who went in his worldly body to the paradise, could not avoid the miseries of the exile; this shows that man is powerless. It was for this reason that seeing increase and decrease of power according to one's own deeds and seeing that wealth of the world was transitory, king Bali came to the conclusion that nothing except time was the cause of strength and weakness.* One can control his desires by controlling the organs of his senses and is then in a position to disregard the pleasures and pains and gains and losses of the world. Yet we donot believe that man is thoroughly led in his actions by god; for, man is born as a result of the deeds of his father and mother and his body grows by taking food. We always come in contact with things which we like or dislike, with

भारतानां विरोधादन्तो नूनं भवितायं प्रजानाम् । नोचेदिदं तव कर्मापराधात् कुरून्दहेत् कृष्णवर्त्मेवकक्षम् ॥ २८ ॥ त्वमेवैकोजातु पुत्रस्यराजन् वशंगत्वासर्वलोकेनरेन्द्र कामात्मनः श्लाघनोद्यूतकाले नागाःशममपश्य विपाकमस्य ॥ २९ ॥ अनाप्तानांसंग्रहात्त्वंनरेन्द्र तथाप्तानां निग्रहाच्चैवराजन । भूमिंस्फीतां दुर्बलत्वादनन्तामशक्तस्त्वं रक्षितुंकौरवेय ॥ ३० ॥ अनुज्ञातो रथवेगावधूतः श्रान्तोऽभिपद्ये शयनन्नृसिंह । प्रातःश्रोतार कुरव सभायामजातशत्रोर्वचनं समेता ॥ ३१ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अनुज्ञातोस्यावसथं परेहि प्रपद्यस्व शयनं सूतपुत्र । प्रातः श्रोतारः कुरवः सभायामजातशत्रोर्वचनं त्वयुक्तम् ॥ ३२ ॥

इति उद्योगपर्वणि संजययानपर्वणि धृतराष्ट्रसंजयसम्वादे द्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

समाप्तञ्च संजययानपर्व ॥

तो, उसीकी प्रशंसा करने लगता । २७ । इससे पाण्डवों के विरोध से हम आपकी निन्दा करते हैं, जो हमाराकहा न मानोगे युधिष्ठिरादिकों को राज्य में भाग न दोगे तो प्रजाओं के लिये यह कर्म अवश्य होजायगा, कि तुम्हारे अपराध से अर्जुनजी कौरवों को भस्म करदेंगे जैसे अग्नि सूखी घासको जलाता है । २८ । हे राजन्, जुआ खेलने के समय जो तुम अकेले, कामात्मा अपने पुत्रके वशमें आय पड़ेहुए करतेहुये इस लोकमें शान्त न होगये उसके परिणामका यह फलदेखो । २९ । हे नरेन्द्र अश्रेष्ठ कर्णादिकों के ग्रहण करने से व श्रेष्ठ विदुरादिकों के दूर करनेसे, अब ऐसे दुर्बल होगयेहो कि सब धन धान्य समेत इस पृथ्वीकी रक्षा नहीं करसकेहो यह अवहाथसे जाती है । ३० । हे भूप मैं इससमय मार्ग के श्रमसे थका हुआ हूं कलको प्रात, कालही सभा में पाण्डवोंका समाचार सुनाऊंगा यह सुनकर नृपने उत्तर दिया कि अच्छा कल प्रातःकालही सभा में आकर सब समाचार कहियो ॥ ३२ ॥

pleasures and pains and with praise and dispraise, but the same man is praised and dispraised for his own good and wicked deeds respectively. We dispraise you for your enmity towards the Pandavas. If you will not restore to the Pandavas their kingdom, you will be the cause of the destruction of your subjects by your sin, for, Arjun will burn them as fire burns hay. This is the result of your being engaged in gambling and being influenced by your avaricious son. You cannot keep the kingdom passing from you because you have become too weak by hearing the advice of Karan and others and disregarding that of Vidur. 30. I am very tired at this time, king, I shall tell you all about the Pandavas tomorrow in the court." The king, on hearing this, allowed Sanjaya to retire for the night, expecting to hear him the next morning. 32.

अथ प्रजागर पर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । द्वाःस्थंप्राहमहाप्राज्ञो धृतराष्ट्रोमहीपतिः । विदुरंद्रष्टुमिच्छामि तमिहानयमाचिरम् ॥ १ ॥ प्रहितोधृतराष्ट्रेणदूतः क्षत्तारमब्रवीत् । ईश्वरस्त्वांमहाराजो महाप्राज्ञादिदृक्षति ॥ २ ॥ एवमुक्तस्तुविदुरः प्राप्यराजनिवेशनम् । अब्रवीद्धृतराष्ट्राय द्वाःस्थंमांप्रतिवेदय ॥ ३ ॥ द्वाःस्थ उवाच । विदुरोऽयमनुप्राप्तो राजेन्द्र तवशासनात् । द्रष्टुमिच्छतितेपादौ किंकरोतुप्रशाधिमाम् ॥ ४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । प्रवेशयमहाप्राज्ञं विदुरंदीर्घदर्शिनम् । अहंहिविदुरस्यास्य नाकल्योजातुदर्शने ॥ ५ ॥ द्वाःस्थ उवाच । प्रविशान्तःपुरं क्षत्तर्महाराजस्यधीमतः । नहितेदर्शनेऽकल्यो जातु राजाब्रवीद्धिमाम् ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततःप्रविश्यविदुरो धृतराष्ट्रनिवेशनम्

अध्याय ३३ ॥

वैशम्पायन जी बोले कि संजय को अपने घर जानेकी आज्ञादे महाप्राज्ञ राजा धृतराष्ट्र जी द्वारपालसे बोले कि हम विदुरजी को देखाचाहते हैं उनको यहां लावो विलम्ब नहो ।१। धृतराष्ट्र जीका भेजादूत विदुरजीके पास जाकर बोला हे महाप्राज्ञ महाराज आपको देखा चाहते हैं। २ । दूतद्वारा ऐसी आज्ञापाय विदुरजी राजभवन में आय द्वारपाल से बोले कि महाराज से जाय निवेदन करो कि विदुरआये हैं। ३ । द्वारपाल जाय महाराज से बोला कि हे राजेन्द्र आपकी आज्ञा से विदुरजी आये व आप के चरण देखा चाहते हैं क्या करें हमको आज्ञाहो। ४। धृतराष्ट्रजी बोले कि दूरदर्शी महाप्राज्ञ विदुर जीको यहां बुलाय लावो हम विदुरजी के दर्शनमें कभीभी असमर्थ नहीं हैं। ५ । द्वारपाल जाय विदुरजी से बोला कि विदुरजी बुद्धिमान् राजा साहब के अंतःपुर में प्रवेश कीजिये क्योंकि महाराज ने हमको आज्ञादी है कि हम विदुरजी के देखने में असमर्थ नहीं हैं। ६ । वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे विदुरजी धृतराष्ट्रजीके स्थानपर जाय हाथजोर चिन्ताकरते हुए राजा

CHAPTER XXXIII

Having allowed Sanjaya to go home, king Dhritrashtra the wise ordered the doorkeeper to bring Vidur without delay. The king's messenger went to Vidur and said, "The king wishes to see you." Being thus informed, Vidur came to the palace gate and sent word to the king of his own arrival. The porter told the king that Vidur was waiting at the gate to see him and the king permitted him to let Vidur in, saying, "I am never unprepared to see Vidur." The porter informed Vidur that the king was ready to see him and that he might enter the palace. Vidur accordingly went to Dhritrashtra and with joined palms said meekly, "I am here by your permission, king, and am ready to obey your orders." "Sanjay has returned," said Dhritrashtra, "and has gone home after reviling me; he will

अब्रवीत्प्रांजलिर्वाक्यं चिन्तयानंनराधिपम् ॥ ७ ॥ विदुरोऽहंमहाप्राज्ञ संप्राप्तस्तव शासनात् । यदि किञ्चनकर्त्तव्यमयमस्मि प्रशाधिमाम् ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । सञ्जयो विदुरप्राप्तो गर्हयित्वाचमांगतः । अजातशत्रोःश्वोवाक्यं सभामध्येसवक्ष्यति ॥ ॥ ९ ॥ तस्याद्यकुरुवीरस्य नविज्ञातंवचोमया । तन्मेदहतिगात्राणि तदकार्षीत्प्रजागरम् ॥ १० ॥ जाग्रतोदह्यमानस्य श्रेयोयदनुपश्यसि । तद्ब्रूहित्वंहिनस्तात धर्मार्थकुशलोह्यसि ॥ ११ ॥ यतः प्राप्तः सञ्जयः पाण्डवेभ्यो नमेयथावन्मनसः प्रशान्तिः । सर्वेन्द्रियाण्यप्रकृतिं गतानि किंवक्ष्यतीत्येव मेऽद्यप्रचिन्ता ॥ १२ ॥ विदुर उवाच ॥ अभियुक्तंबलवता दुर्बलंहीनसाधनम् । हृतस्वंकामिनं चौरमाविशन्ति प्रजागराः ११ कच्चिदेतैर्महादोषैर्न स्पृष्टोऽसिनराधिप । कच्चिन्नपरवित्तेषु गृध्यन्परितप्यसे १४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । श्रोतुमिच्छामितेधर्म्यं परंनैश्रेयसंवचः । अस्मिन्राजर्षिवंशे हि त्व-

धृतराष्ट्रजी से बोले ।७ हेमहाप्राज्ञ आपकी आज्ञासे हमविदुरहैं, आयेहैं जो कुछ करनाहो तैयारहैं उसके करनेकी आज्ञाहो । ८ । धृतराष्ट्रजी बोलेकि, हे विदुरजी संजय यहांसे आये व हमारी निंदाकर घरको गये, प्रातःकाल सभामें युधिष्ठिर के वचन वे कहैंगे ।९। उन कुरुवीर का वचन हम नहीं जानते कि क्याहै वही हमारे अंगोंको जलाता है इसीसे हमको निंद्रा नहीं आई । १० । अब जागते में जलते हुये हमारा जिसमें कल्याण देखो, वही हम से कहो क्योंकि हे तात तुम धर्म अर्थ में कुशलहो । ११ । जबसे संजय पांडवों के यहां से आयेहैं तबसे हमारे मनको यथावत्शांति नहीं है, सब इन्द्रियां सुस्थिर नहीं हैं, वे क्या कहैंगे यही हमको चिन्तालगी है । १२ । विदुरजी बोले कि साधनहीन दुर्बल पुरुष जो बलवान् पुरुषके हाथमें पड़ा, व जिसका धन हरगया व कामीपुरुष, व चोर इन चारोंको नींद नहीं आती । १३ । हे महाराज क्या इन महादोषोंका स्पर्शतो कहीं नहीं होगया, कि कहीं दूसरे के धनकी इच्छा कियेतो नहीं सन्तप्तहोते । १४ । धृतराष्ट्रजी बोले कि हम परम कल्याणकारी धर्मयुक्त तुम्हारे वचन सुना चाहते हैं, क्योंकि इस राजवंशमें एक तुम्ही

tell tomorrow, in the court, the message of Yudhishthir. I donot know what he has to say; it burns my body and I cannot sleep. 10. I am burning while awake; tell me what is best to be done; for you are well acquainted with *dharm* and *arth*, brother. My mind is ill at ease from the time that Sanjaya has returned from the Pandavas. My senses are not steady and I wonder what I shall hear from him." To this Vidur replied, "Four men find no sleep: a weak man who falls in the hands of a strong man; one who has lost his wealth; one who is overcome by love and a thief. Have you got a touch of one of these four sins? Are you not burning with the desire of possessing another's wealth." "I wish to hear your good words full of wisdom," said Dhritrashtra, "because you are the

मेक प्राज्ञसम्मतः ॥ १५ ॥ विदुर उवाच । राजा लक्षणसम्पन्नस्त्रैलोक्यस्याधिपोभवेत् । प्रेष्यस्तेप्रेषितश्चैव धृतराष्ट्रयुधिष्ठिरः ॥१६॥ विपरीततरश्चत्वं भागधेयेनसम्मतः । अर्चिषांप्रक्षयाच्चैव धर्मात्माधर्मकोविदः ॥ १७ ॥ आनृशंस्यादनुक्रोशाद्धर्मात् सत्यात् पराक्रमात् । गुरुत्वात्त्वयिसंप्रेक्ष्य बहून्क्लेशान् तितिक्षते ॥१८॥ दुर्य्योधनेसौबलेच कर्णेदुःशासनेतथा । एतेष्वैश्वर्यमाधाय कथंत्वंभूतिमिच्छसि ॥ १९ ॥ आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता । यमर्थान्नापकर्षन्ति सवैपण्डितउच्यते ॥ २० ॥ निषेवतेप्रशस्तानि निन्दितानिनसेवते । अनास्तिकःश्रद्दधानएतत् पण्डितलक्षणम् २१ क्रोधोहर्षश्चदर्पश्च ह्रीस्तम्भोमान्यमानिता । यमर्थान्नापकर्षन्ति सवैपण्डितउच्यते

तुम्हीं विद्यानीहो । १५ । विदुरजी बोले कि हे धृतराष्ट्र सर्वलक्षण सम्पन्न पुरुष तीनलोकों का राजाहोता है, इससे युधिष्ठिर तुम्हारे प्रार्थना करने के योग्यहैं उनको आपने वनको भेजा । १६ । व तुम उसके विपरीत सर्वलक्षण हीनहो इससे राज्यांश पानेके योग्य नहीं क्योंकि नेत्रहीन ठहरे व धर्म्मात्मा भीहो व धर्मके विषयमें चतुरभी बड़ेहो । १७ । व युधिष्ठिरजी ने, अक्रूरता, दयालुता, सत्यता, व पराक्रमता के हेतु तुम्हारा गौरव मान बहुतसे क्लेश सहे । १८ । फिर ऐसे युधिष्ठिरको तो तुमने निकाल दिया अब दुर्योधन, शकुनि, कर्ण व दुश्शासन, इनलोगों में ऐश्वर्य स्थापन कर तुम कैसे ऐश्वर्य चाहते हो ।१९। शास्त्रकी अपेक्षा, शक्तिकी अपेक्षा, वैराग्यकी, अपेक्षा, श्रद्धाकी अपेक्षा इतनेज्ञान जिसको अर्थसे न खींचसकें वह पंडित कहाताहै ।२०। व जो अच्छेदर कार्योंका सेवनकरै, निन्दित कार्योंका सेवन न करै नास्तिक होय नहीं, व श्रद्धावानहो, ये सब पंडितके लक्षण हैं । २१ । व क्रोध अहर्ष अहंकार निर्लज्जता, अपनाको पंडित मानना, जिसको ये दुर्गुण

---

only wise man in our royal family." "A virtuous man," said Vidur, "is worthy of becoming the king of the three worlds; Yudhishthir, whom you sent into exile, is worthy of being praised by you. Being blind you are unfit to rule the kingdom, although you are virtuous and wise. Yudhishthir is free from cruelty, is merciful, truthful and valliant and has suffered many wrongs because he has regard for your age. Having sent Yudhishthir into exile, how can you wish for greatness through Duryodhan, Karan, Shakuni and Dushasan? He is learned who does not let go his purpose and at the same time has regard for religious books, power, absence of worldly desires and faith. 20. A Pandit does good deeds shuns himself from sin, is not ungodly and has faith. A Pandit is not influenced by anger, displeasure, vanity, shamelessness and selfconciet. He is certainly

॥ २२ ॥ यस्यकृत्यंनजानन्ति मन्त्रंवामन्त्रितंपरे । कृतमेवास्यजानन्तिसवैपण्डित उच्यते ॥ २३ ॥ यस्यकृत्यंनविघ्नन्तिशीतमुष्णंभयंरतिः । समृद्धिरसमृद्धिर्वा सवैपण्डितउच्यते ॥ २४ ॥ यस्यसंसारिणीप्रज्ञाधर्मार्थावनुवर्तते । कामादर्थंवृणीतेयःसवैपण्डितउच्यते ॥२५॥ यथाशक्तिचिकीर्षन्ति यथाशक्तिचकुर्वते । नकिञ्चिदवमन्यन्ते नराःपण्डितबुद्धयः ॥ २६ ॥ क्षिप्रंविजानातिचिरंशृणोति विज्ञायचार्थंभजतेनकामात् । नासम्पृष्टोव्युपयुंक्तेपरार्थे तत्प्रज्ञानंप्रथमंपण्डितस्य ॥२७॥ नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति नष्टंनेच्छन्तिशोचितुम् । आपत्सुचनमुह्यन्तिनराःपण्डितबुद्धयः ॥२८॥ निश्चित्ययःप्रक्रमतेनान्तर्वसतिकर्मणः । अवन्ध्यकालोवश्यात्मा सवैपण्डितउच्यते ॥ २९ ॥ आर्य

सोच न सके वह पंडित कहाताहै । २२ । जिसकी कृत्य व मंत्रितमंत्र और कोई नहीं जानते, जब वह कार्यकर चुकता तभी सब जानते वह निश्चय पंडित कहाताहै । २३ । शीत, उष्ण, भय, मैथुन, धनसमृद्धि, दरिद्रता, ये जिसके कार्य में विघ्न न करसकें वह निश्चय पंडित कहाताहै । २४ । जिसकी बुद्धि स्वभावही से चंचलहै काम व अर्थ में नहीं टिकती, व जो कामसे अधिक अर्थ को मानताहै, वह निश्चय पंडित कहाताहै ।२५। व जिन मनुष्यों की पंडितोंकी बुद्धिहोती है वे यथाशक्ति किसी कार्य के करनेकी इच्छा करतेव यथा शक्तिही करते व अपमान किसीका नहीं करते । २६ । जो पुरुष अच्छी तरह स्वता पूर्वक जानलेने के लिये बड़ी देरतक सुनता व फिर शीघ्र जानलेता व सब कार्य जानहीकर करताहै, व जो बिना अच्छीतरह पूछे किसीको उत्तर नहीं देता वह पंडित का पहिला चिह्नहै । २७ । वे पंडितों की बुद्धि रखनेवाले मनुष्य जो मिलनेके योग्य वस्तु नहीं उसकी इच्छा नहीं करते व जो वस्तु जाती रहती उसका शोचनहीं करते व विपत्ति समयमें भी मोहित नहीं होते। २८ । व जो पुरुष निश्चयकर कार्य करता, व बिना कार्यकी समाप्ति हुये उस कार्य को छोड़ता नहीं, व सदा सप्रयोजनही काम करता,

---

a Pandit whose deeds and plans are not known to others before completion. A Pandit is he whose work cannot suffer on account of cold, heat, fear, lust, wealth and poverty. A Pandit is he who possesses a mind naturally active and not sticking to worldly desires and who has greater regard for the work in hand than for other objects of desire. Those who are endowed with sound intellect donot run after things beyond their power and perform deeds to the best of their power. The first sign of a Pandit is that he hears long enough to know a thing fully, is quick of understanding, does nothing without knowing it and gives no reply without being asked. Wise men do not covet things which they know to be impossible to get, are not sad at a loss and donot lose wits at the time of trouble.

कर्माणिरज्यन्तेभूतिकर्माणिकुर्वते । हितञ्चनाभ्यसूयन्तिपण्डिताभरतर्षभ ॥ ३० ॥ न हृष्यत्यात्मसंम्मानेनावमानेनतप्यते । गाङ्गोह्रदइवाक्षोभ्यो यःसपण्डितउच्यते ॥ ३१ तत्त्वज्ञःसर्वभूतानांयोगज्ञःसर्वकर्मणाम् । उपायज्ञोमनुष्याणां नरपण्डितउच्यते ॥ ३२ प्रवृत्तवाक्चित्रकथऊहवान्प्रतिभानवान । आशुग्रन्थस्यवक्ताच यःसपण्डितउच्यते ॥ ३३ ॥ श्रुतंप्रज्ञानुगंयस्यप्रज्ञाचैवश्रुतानुगा । असम्भिन्नार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेतसः ॥ ३४ ॥ अश्रुतश्चसमुन्नद्धोदरिद्रश्चमहामनाः । अर्थांश्चाकर्मणाप्रेप्सुर्मूढइत्यु

वह निश्चय पण्डित कहाताहै । २९ । हे भरतर्षभ, पण्डित लोग, श्रेष्ठही कर्म में अनुराग करते, व सदा ऐश्वर्यही के कर्म करते व अपने हितकारी की निन्दाकभी नहीं करते ३० व जो पुरुष अपने सन्मान में हर्षित नहीं होता, व अपमान में बहुत सन्तप्त भी नहीं होता व गङ्गाजी के कुण्डके समान जो सदा अचल रहता वह निश्चय पण्डित कहाताहै । ३१ । व जो सब प्राणियों का निश्चय जानता सब कर्मोंका योगजानता, व मनुष्यों के सब उपाय जानता ऐसापुरुष निश्चय पण्डित कहाताहै । ३२ । व जो पुरुष अकुण्ठित वचनहोता लोककी कथाओंमें अभिज्ञ होता, तर्कणा करना जानता, व जिसको सुनतेर तुरन्तु स्मरण होजाता, व जो बहुतही शीघ्र ग्रन्थोंका अर्थ कहता वह निश्चय पण्डित कहाता । ३३ । व शास्त्र जिसकी बुद्धिके पीछे चलता व बुद्धि शास्त्रके पीछे चलती व जिसने श्रेष्ठोंकी मर्य्यादा भिन्न नहीं की, वह निश्चय पण्डित कहाता है । ३४ । व जो शास्त्र नहीं जानता, पर सब काम करने में घमंड रखता, व दरिद्रहोकरभी उदार चित्त रहता, व सदा जहां कहीं से पावे परधनही खींचनेका मन कुकर्म से रखता, उसको

He who thinks well before doing, does not leave a thing undone and does every thing with a purpose, is surely a Pandit. Wise men ever love to do good deeds; they always do deeds of prowess that bring them greatness and never despise their well wishers. 30. He who is not pleased with praises nor displeased with insult and is ever steady like a pool of the Ganges, is surely a Pandit. He who is not cruel of speech, knows the history of the world, can discuss questions of improtance, remembers what he hears and is quick at interpreting the shastras, is surely a Pandit. He who is of the same opinion with shastras, acts upon their dictates and does not break the rules of the good, is surely a Pandit. He who is not acquainted with the shastras and yet wishes to engage in every enterprise, who would be magnanimous in spite of his poverty and who wickedly wishes to rob other men of their wealth is considered to be a fool and such

च्यतेबुधैः ॥३५॥ स्वमर्थयःपरित्यज्यपरार्थमनुतिष्ठति । मिथ्याचरतिमित्रार्थेयश्चमूढः सउच्यते । ३६ ॥ अकामान्कामयतियः कामयानानपरित्यजेत् । बलवन्तञ्चयोद्वेष्टितमाहुर्मूढचेतसम् ॥ ३७ ॥ अमित्रंकुरुतेमित्रंमित्रंद्वेष्टिहिनस्तिच । कर्मचारभतेदुष्टंतमाहुर्मूढचेतसम् ॥ ३८ ॥ संसारयतिकृत्यानिसर्वत्रविचिकित्सते । चिरंकरोतिक्षिप्रार्थेसमूढोभरतर्षभ ॥ ३९ ॥ श्राद्धंपितृभ्योनददातिदैवतानिनचार्चति । सुहृन्मित्रंनलभतेतमाहुर्मूढचेतसम् ४० ॥ अनाहूतःप्रविशतिअपृष्टोबहुभाषते । आविश्वस्तेविश्वसिति मूढचेतानराधमः ॥ ४१ ॥ परंक्षिपतिदोषेणवर्त्तमानःस्वयंतथा । यश्चक्रुध्य

पण्डित लोग मूर्ख कहते हैं, ऐसेही दुर्योधनहै । ३५ । व जो अपना अर्थछोड़ दूसरे के अर्थके पीछे घूमता, व मित्रके अर्थ मिथ्या कहता वह मूढ़ कहाता, जैसा कि शकुनि है ।३६। जो बिना इच्छाकिये लोगोंको अपनी ओर इच्छा कराता, व जो उसकी ओर इच्छा करते हैं उनका परित्याग करता व बलवान् से बैर करता, वह मूर्ख कहाता है जैसे आप । ३७ । व जो अमित्रको मित्र करता, व मित्रसे बैर करता व मारता भी है व दुष्टही कर्म करने का आरम्भ करता उसको पण्डित लोग मूढ़ कहतेहैं । ३८ । व जो अपना काम भृत्यादिकों के द्वाराही कराता आप नहीं देखता सुनता, सबकहीं अपनी जान उपायही किया करता व जो शीघ्र करनेके योग्यहै उसमें देरकरताहै वह मूढ़ है । ३९ । व जो पितरोंकी श्राद्ध नहीं करता, व न देवताओं की पूजा करता, व अच्छा मित्र नहीं करता उसको लोग मूर्ख कहतेहैं । ४० । व जोबिना बुलाये जाता, व बिना पूंछेही बहुत कहने लगता व अविश्वस्तका विश्वास मानता वह मनुष्याधम मूर्ख है । ४१ । व जो अपने में वही दोष होनेपरभी औरोंको वह दोष लगाता, व अपने में सामर्थ्य न होनेपरभी औरों

---

is Duryodhan. He also is a fool who, not caring for his own wealth, follows the fortune of another and tells lies for the sake of a friend: such a fool is Shakuni. He too is a fool who tries to draw unwilling people towards himself and leaves those who have an affection for him, feels enmity with those who are stronger than him: you yourself are an example of such a one. He is a fool who makes friendship with an enemy, destroys his friends and does other wicked deeds. He is a fool who does not look after his own affairs, does not keep an eye on his workmen, is always drawing schemes and so makes delays in works worth doing. He too is a fool who does not please the pitars and gods and who makes friendship with those who are of no good. 40. He is a fool who comes uncalled, talks unasked and trusts the untrustworthy. He is a fool who accuses others of the faults which he himself possesses and having no

स्यनीशान सचमूढतमोनरः ४२ ॥ आत्मनोबलमज्ञायधर्मार्थपरिवर्जितम् । अलभ्य मिच्छन्नैष्कर्म्यान्मूढबुद्धिरिहोच्यते ॥ ४३ ॥ अशिष्यंशास्तियोराजन् यश्चशून्यमु पासते । कदर्यंभजतेयश्चतमाहुर्मूढचेतसम् ॥ ४४ ॥ अर्थंमहान्तमासाद्यविद्यामैश्वर्यमे ववा। विचरत्यसमुन्नद्धो यःसपण्डितउच्यते ॥ ४५ ॥ एकःसम्पन्नमश्नातिवस्तेवा सश्चशोभनम्। योऽसंविभज्यभृत्येभ्यः कोनृशंसतरस्ततः ॥ ४६ ॥ एकःपापानिकुरु तेफलंभुंक्तेमहाजनः । भोक्तारोविमुच्यन्ते कर्तादोषेणलिप्यते ॥ ४७ ॥ एकंहन्या न्नवाहन्यादिषुर्मुक्तोधनुष्मता । बुद्धिर्बुद्धिमतोत्सृष्टाहन्याद्राष्ट्रं सराजकम् ॥ ४८ ॥ एक याद्वेविनिश्चित्यत्रींश्चतुर्भिर्वशेकुरु।पञ्चजित्वाविदित्वाषट्सप्तहित्वासुखीभव ४९ ॥

के ऊपर क्रोधकरता वह मूढ़ है । ४२ । व जो अपना बलनहीं जानता, धर्म्म अर्थ वर्जित अलभ्य वस्तु बिना यत्नही किये लिया चाहता है वह मूढ़ बुद्धि कहाता है । ४३ । व जो अन्यके शिष्य को सिखाता, व जो शून्य में राजा व औरोंकी स्त्रियोंकी उपासना करता, व अदातासे कुछ पानेकी इच्छासे उसकी सेवा करता वह मूढ़ कहाता है । ४४ । व जो महाभारी धनपाय व विद्या ऐश्वर्य्य पायभी शान्तचित्त विचरता मदान्ध नहीं घूमता वह पण्डित कहाता है । ४५ । व जो अकेलाही अच्छा पदार्थ भोजन करता व सुन्दर वस्त्र आपही धारण करता अपने अधीन भृत्यादिकों को कुछ नहीं देता उससे अधिक क्रूर और कौनहोगा । ४६ । पुरुष अकेलाही पाप करता व फल बहुतसे लोग भोगते हैं पर भोगने वाले लोग छूटजाते हैं करनेवाला दोषभागी होता है । ४७ । धनुर्द्धर का चलाया बाण एकको मारे वा न मारे, परन्तु बुद्धिमान् की चलाई बुद्धि राजा सहित देशभरका नाश करदे । ४८ । एक बुद्धिसे कार्य्य अकार्य्य दो पदार्थोंका निश्चयकर, मित्र, उदासीन व

---

strength becomes angry with others. He is a fool who, not knowing his own strength, wishes to get a thing, forbidden by dharm and arth, without having taken any trouble for it. He is a fool who teaches the disciple of another, attends on the women of the king and other people in a lonely place and serves a miser, expecting to get something from him. He is a Pandit who, having a great store of knowledge and wealth, retains peace of mind and is not blinded by misfortune. Who can be more cruel than him who eats good things alone and wears good clothes without giving any thing to his servants? Many men suffer for the fault of one, but the sin attaches to the doer and not to those who suffer for it. An arrow shot by an archer may or may not kill one, but the wise plan of a wise man will destroy the whole kingdom. Having dertermined the things

एकंविषरसोहन्ति शस्त्रेणैकश्चवध्यते । सराष्ट्रंसप्रजंहन्तिराजानं मन्त्रविप्लवः ५० ॥ एकःस्वादुनभुञ्जीत एकश्चार्थांन्नचिन्तयेत् । एकोनगच्छेदध्वानं नैकःसुप्तेषुजागृयात् ॥ ५१ ॥ एकमेवाद्वितीयं तद्यद्राजन्नावबुध्यसे । सत्यंस्वर्गस्यसोपानं पारावारस्यनौरिव ॥ ५२ ॥ एकःक्षमावतांदोषो द्वितीयोनोपपद्यते । यदेनंक्षमया युक्तमशक्तंमन्यते जनः ॥ ५३ ॥ सोस्यदोषोनमन्तव्यः क्षमाहिपरमंबलम् । क्षमागुणोह्यशक्तानां शक्तानांभूषणंक्षमा ॥ ५४ ॥ क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमाया किंनसाध्यते । शान्तिखड्ग करे

शत्रु इन तीनोंको, साम,दाम, भेद व दण्ड इन चारोंसे अपने वशमें करो, व पांच इन्द्रियों को जीत, संधि विग्रह, यान, द्वैधीभाव, स्वस्थानस्थिति, शत्रुद्रोह चिन्तन ये छः पदार्थ जान अति स्त्रीसेवन, द्यूतखेलना, अखेटकरना, मद्यपीना, कठोर वचन बोलना, अतिघोर दण्डदेना व वृथा धन व्ययकरना इन सातोंको छोड़ सुखीरहो, । ४९ । विष एक पीने वालेहीको मारता है, शस्त्रसेभी एकही माराजाता है, परन्तु दुष्टमन्त्री का मंत्र, राज्य प्रजा सहित राजाका विनाश कराता । ५० । अकेले स्वादुयुक्त पदार्थ न भोजन करे, अकेले बहुत अर्थोंकी चिंतना न करे, अकेले मार्ग न चले, जहां बहुत सोवेहों अकेला बैठ न जागे । ५१ । हे राजन् , एक अद्वितीय जो ब्रह्म है उसे तुम नहीं जानते जोकि स्वर्ग के लिये सत्य सोपान है जैसे समुद्र उतरने के लिये नौका होती है । ५२ । क्षमाकरने वालों में एकही दोष होता है दूसरा कोई नहीं जो कि क्षमावन्को लोग अशक्त मानने लगतेहैं । ५३ । परंतुवह दोष क्षमा करनेवालेको न लगाना चाहिये क्योंकि क्षमापरम बल है, अशक्तोंको क्षमा गुण है व समर्थों का भूषण है । ५४ । लोकमें क्षमा सबको वश करलेती है, व क्षमासे कौन नहीं सिद्धहोता, क्योंकि शान्तिरूप खड्ग

---

worthy of doing or not doing one should control the friends, neutrals, and enemies by conciliation, bribery, division and punishment and having the five senses under control one should know the rules of peace, war, attack, duplicity, consolidation and enmity and should abstain from too much intercourse with women, gambling, hunting, wine, harsh speaking, severe punishments and useless expenditure of wealth. Poison kills only him who drinks it and the same is the case with a weapon; but a wicked counsellor causes the ruin of the whole kingdom. 50. One should not eat delicious food alone, and should not think of many things at the same time, should not journey alone and should not sit alone where many men are sleeping. You do not know the One Brahma who has no second and who is the only ladder for the paradise like a ship to go over the sea. The for-

धृतसङ्कल्पा सा म चिन्तयती वधम् ॥ १० ॥ ततो महेन्द्रं सह तैर्मुनिभिर्भृगुसत्तमः। यथागत तथा सोगान् मामपामन्त्र्य भारत ॥ ११ ॥ ततो रथ समारुह्य स्तूयमानो द्विजातिभि । प्रविश्य नगरं मात्रे सत्यवत्यै न्यवेदयम् ॥ १२ ॥ यथावृत्तं महाराजसा च मां प्रत्यनन्दत । पुरुषांश्चादिशं प्राज्ञान् कन्यावृत्तान्तकर्मणि ॥ १३ ॥ दिवसे दिवसे ह्यस्या गति जल्पितचेष्टितम् । प्रत्याहरंश्च मे युक्ता. स्थिता. प्रियहिते सदा ॥ १४ ॥ यदैव हि वनं प्रायात् सा कन्या तपसे धृता । तदैव व्यथितो दीनो गतचेता इवाभवत् ॥ १५ ॥ नहि मां क्षत्रिय कश्चित् वीर्येण व्यजयत्युधि।

रोषके व्याकुल नेत्र कर हमारे वधकरने का संकल्पकर व उसीकी चिन्ता करती वह कन्या तपस्या करने को चलीगई । १० । इसके पीछे हम से विदाहो उन सब मुनियों सहित भृगुनाथजी अपने महेन्द्राचलपर को चलेगये । ११ । उसके पीछे हम भी रथ पर चढ ब्राह्मणों से आशीर्वाद पाते अपने नगर में आय माता सत्य वतीजी से सब वृत्तान्त निवेदनकर उनके आगे बैठगये । १२। सब समाचार सुन उन्होंने हमारे ऊपर अपनी बडी प्रसन्नता दिखाई, उसके पीछे हमने कन्या के वृत्तान्त जानने के लिये बहुत से पुरुष नियत किये । १३ । और उन से कहा कि जाय प्रतिदिन के उस कन्याके समाचार हमको देतेरहो कि क्या करती है, हमारी प्रेरणा से उनलोगों ने उसके तप करने के स्थानपर जाय रोजर के वृत्तान्त हमारेपास भेजनेका प्रारम्भ किया । १४ । जैसेही वह कन्या तपकरने के लिये वनकोगई वैसेही हम ऐसे व्यथितहुये कि जानो हमारे प्राणही निकलगये । १५ । हे राजन आजतक समरमें कोई क्षत्रिय अपने वीर्यसे हमको नहीं जीतसका, हां वेदवित् तपस्वी जितेन्द्रिय ब्राह्मणको छोड़कर क्योंकि हमको अस्त्र शस्त्र न दिखावे

---

with tears in her eyes resolved on my destruction, she went to perform asceticism 10. Then Parashuram took leave of me and accompanied by other rishis went to Mahendra hill I too mounted my chariot with benediction from Brahmans and on my return to the city told all that had happened to my step mother Satyavati; she sat down before her and she was much pleased to hear my account After this I sent many men to know the whereabouts of the girl and to watch her daily doings. They went to the place where she was performing asceticism and continued sending me an account. On her going to perform asceticism I felt as if I was about to die No kshatrya has ever been able to defeat me with the strength of his arms and I have been afraid of no one but the wrath of an angry Brahman I related all this to Vyas and Narad and both of them said to me

ऋते ब्रह्मविदस्तात तपसा संशितव्रतात् ॥ १६ ॥ अपि चैतन्मया राजन्नारदे पिनिवेदितम् । व्यासे चैव तथा कार्य्यं तौ चोभौ मामवोचताम् ॥ १७ ॥ न विषादस्त्वया कार्य्यो भीष्म काशितां प्रति । दैवं पुरुषकारेण को निवर्तितुमुत्सहेत् ॥ १८ ॥ सा कन्या तु महाराज प्रविश्याश्रममण्डलम् । यमुनातीरमाश्रित्य तपस्तेपेति मानुषम् ॥ १९ ॥ निराहारा कृशा रूक्षा जटिलामलपंखिनी । षण्मासान् वायुभक्षाच्च स्थाणुभूतातपोधना ॥ २० ॥ यमुनाजलमाश्रित्य सम्वत्सरमथापरम् । उदवासं निराहारा धारयामास भामिनी ॥ २१ ॥ शीर्णपत्रेण चैकेन पारयामास सापरम् । सम्वत्सरंतीव्र कोपा पादांगुष्ठाग्रंधिष्ठिता ॥ २२ ॥ एवं द्वादश वर्षाणि तापयामासरोदं

ऐसे ही ब्राह्मण क्रोधकरे हजार लाखवार उससे हारे वं हारें । १६ । यह वृत्तान्त फिर हमने नारदजी व भगवान व्यासजीसे भी कहा तो उन दोनों महात्माओं ने हमसे यह कहा कि । १७ । हे भीष्म अब तुम काशिराजकी कन्याके विषय में विषाद न करो क्योंकि भाग्य को पौरुषसे कोईभी नहीं हटासक्ता । १८ । हे महाराज, वह कन्या यमुनाजी के किनारेपर एक आश्रममें टिके जिसे कोई मनुष्य न करसके वैसा तप करनेलगी । १९ । प्रथम तो उसने यमुनाजलके भीतर रात्रि दिन खड़ीहो निराहार उपवासकर एक वर्ष विताया । २० । उसके पीछे छः मासतक निराहार अतिदुर्बल शरीर रूखीजटा रखाय विनास्नानकिये अङ्गों में कीचड़ लगाये केवल वायु पानकरती तपस्याही को धनमानती खड़ी रही । २१ । फिर एक वर्षतक अपने आप गिरेगिरये वृक्षों के सूखे पत्तेखाय २ बड़े कोपसे पृथ्वीमें पैरके अँगूठोंके बल खड़ीरही । २२ । ऐसे ही करते २ उसने बारहवर्ष विताये तब उसके तपसे पृथ्वी अन्तरिक्ष दोनों तपनेलगे, उसके नातदारों ने जाय

---

that I should think no more of the princess of Kashi as no one could obliterate Fate by one's own prowess. In the meantime the girl stayed at a hermitage on the bank of the Yamuna and performed penances as no man could. She stood for a year, day and night, in the water and performed penances. 20. After that she stood for six months, subsisting on air only without food or drink and with her lean body and dry locks stained all over with mud, performed asceticism. For a year she subsisted on fallen dry leaves of trees and stood on her great toes in a rage. In this manner she passed twelve years so that both earth and sky shone with the effect of her penances. Her kinsmen tried to keep her back from her purpose but she would not listen to them. Then she left the bank of the Yamuna

सी। निवर्त्यमानापिच सा नाति मिथ्यैव शस्यते ॥ २३ ॥ ततोगमद्वत्सभूमिं सिद्धचारणसेविताम्। आश्रमं पुण्यशीलानां तापसानां महात्मनाम् ॥ २४ ॥ तत्र पुण्येषुतीर्थेषु सा प्लुतागी दिवानिशम्। व्यचरत्काशिकन्यासा यथाकाम विचारणी ॥ २५॥ नन्दाश्रमे महाराज तथोलूकाश्रमे शुभे। च्यवनस्याश्रमे चैव ब्रह्मण स्थाने एवच ॥ २६ ॥ प्रयागे देवयजने देवारण्येषु चैवह। भोगवत्यां महाराज कौशिकस्याश्रमे तथा ॥२७। माण्डव्यस्याश्रमे राजन् दिलीपस्याश्रमे तथा। रामहृदे च कौरव्य पैलगर्गस्य चाश्रमे ॥ २८ ॥ एतेषु तीर्थेषु तदा काशिकन्या विशांपते। आप्लावयत गात्राणि व्रतमास्थाय दुष्करम् ॥ २९ ॥ तामब्रवीच्च कौरव्य मम माता जले स्थिता। किमर्थं क्लिश्यसे भद्रे

जाय रोंकाभी परन्तु उसने न माना। २३। हे वत्स, तिसके पीछे यमुनाजी का तट छाड़ और २ स्थान जो सिद्ध चारणोंसे सेवितथे जहां पुण्यात्मा महात्मा तपस्वियोंके आश्रमथे वहां ॥ फिरनेलगी। २४। व उन सब पुण्यतीर्थों में रात्रि दिन स्नानकरती वह काशिराजकी कन्या अपनी इच्छाके अनुसार घूमनेलगी। २५। जैसे कुछदिन नन्दप्रयागमें रही फिर उलूकाश्रममें गई, फिर च्यवनजी के आश्रमपर रह ब्रह्मावर्त्त में आई। २६। फिर देवताओं के यज्ञस्थान प्रयागराज में पहुँची, फिर देवारण्य तीर्थको गई, फिर भोगवतीपुरी में कुछ दिनोंतक रह, कौशिकजी के आश्रमपर आई। २७। फिर माण्डव्य ऋषिके आश्रमपर जाय दिलीपाश्रमपर पहुँची, फिर कुरुक्षेत्र में आय पैलगर्ग के आश्रमपर पहुँची। २८। हे राजन्, इन सब तीर्थों में जाय २ उस काशिराज कन्याने अति दुष्कर व्रत करने के लिये अपने अङ्ग पलगों बहुत २ दिनों तक डुबाय। २९। एकदिन हमारी माता गंगाजी ने जलके भीतर स्त्रीका रूप धारण किये खड़ाहो उससे पूछा

and roamed in other places frequented by *Sidnas* and *Charans* and inhabited by pious ascetics. She bathed night and day in holy places and roamed at will. She visited one after another Nand Prayag, the hermitages of Uluk and Chyavan, Brahmavart, Prayag the seat of the sacrifices of gods and Bhogvati till she came to the hermitage of Kaushik. Next she visited hermitages of the sages named Mandavya and Dilip and went on till she reached the hermitage of Pailgarbh at Kurukshetra. That daughter of the king of Kashi plunged her body for many days at these holy places to observe severe vows. One day, my mother Ganga, came to her in the disguise of a woman and asked of her the reason why she was suffering so many hardships.

तथ्यमेव वदस्व मे ॥ ३० ॥ सैनामथाब्रवीद्राजन् कृत्वांजलि मनिन्दिता । भीष्मेण समरे रामो निर्जितश्चारु लोचने ॥ ३१ ॥ कोन्यस्तमुत्सहज्जेतु मुद्यतेषु महीपतिः । साहं भीष्मविनाशाय तपस्तप्स्ये सुदारुणम् ॥ ३२ ॥ विचरामि महीं देवि यथा हन्यामहं नृपम् । एतद् व्रतफलं देवि परमस्मिन्यथाहि मे ॥ ३३ ॥ ततो ब्रवीत् सागरगा जिह्मञ्चरसिभाविनि । नैषकामो नवद्यांगि शक्यः प्राप्तु त्वयाऽवले ॥ ३४ ॥ यदि भीष्म विनाशाय काश्ये चरसि वै व्रतम् । व्रतस्थाच शरीरं त्वं यदि नाम वियोक्ष्यसि ॥३५॥ नदी भविष्यसि शुभे कुटिला वार्षिकोदका । दुस्तीर्था नतु विज्ञेया वार्षिकी नाष्टमासिकी ॥ ३६ ॥ भीष्मग्राहवती घोरा सर्वभूत भयंकरी । एवमुक्त्वा ततो राजन् काशि-

---

कि हे भद्रे तू किसलिये ऐसे क्लेश सहती है इससे सत्यही बतादे । ३० । तब उस निन्दारहित काशिराज कन्याने हाथजोड गङ्गाजीसे कहा कि हे चारुलोचने समर में परशुरामजी भीष्मजी से पराजित होगये हैं । ३१ । अब जो वे बाण उठावेंगे तो ऐसा दूसरा कौन राजा पृथ्वीपर है जो उन्हें जीतसके, इससे इन भीष्मके विनाशक अर्थ दारुणतप करती हूं और अभी करती रहूंगी । ३२ । व इसीलिये हम इस पृथ्वी भरमें घूमतीहैं कि जिसमें भीष्म हमारेही हाथों से मारेजायँ ।३३ । तब गङ्गाजी ने कहा कि तुम बड़ाकुटिल कर्म करतीहो यह मनोरथ तुम्हारा पूरा नहीं होसक्ता । ३४ । यदि तू भीष्म के विनाशही के लिये ऐसा व्रत करती है, तो इसी व्रत में टिकी २ जब तू अपना शरीर छोडेगी तो । ३५ । हे शुभे तू कुटिला नाम नदी होगी, जिस में चार मास वर्षाही में जल रहेगा, व आठ मास ऐसे ही सूखी पडी रहेगी व वर्षा में भी तेरे तटों में ऐसे दलदल होंगे कि कोई स्नान न करसकेगा । ३६ । व तुझमें इतने भयकर घड़ियाल होंगे जिस

---

30. And she with clasped hands said to Ganga, " Parashuram has been defeated by Bhishm in battle and I believe that no other king on earth can vanquish the latter in fight, I am therefore observing and shall continue to observe severe vows for his destruction I am wandering on earth in order that he may be killed by mine own hands." To this Ganga replied, " You are doing a very cruel deed You cannot be successful in your enterprise But if you are suffering all this trouble for his destruction only, you will be turned after your death into a river named Kutila which will flow only for the four months of the rainy season and will remain dry during the remaining eight months. Even in the months of rain your banks will be swampy and unfit for bathing The large number of gavials in your waters will be

कन्या न्यवर्तत ॥ ३७ ॥ माता मम महाभागा स्मयमानेव भाविनी । कदाचिदष्टमे मासि कदाचिद्दश मे तथा ॥ ३८ ॥ न प्राश्नीतोदकमपि पुन सा वरवर्णिनी । स वत्स भूमिं कौरव्यतीर्थलोभात्ततस्ततः । पतितापरिधावन्ती पुन काशपतेः सुता ॥ ३९ ॥ सा नदी वत्सभूम्यान्तु प्रथिता चेति भारत । वार्षिकी ग्राह बहुला दुस्तीर्था कुटिलास्तथा ॥ ४० ॥ साकन्यातपसा तेन देहार्धेन व्यजायत । नदी च राजन् वत्सेषु कन्याचैवाभवत्तदा ॥ ४१ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि अम्बातपस्यायां सप्ताशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८७ ॥

भीष्म उवाच । ततस्ते तापसाः सर्वे तपसे धृतनिश्चयाम् । दृष्ट्वा न्यवर्त्तयस्तात किं कार्य्यमिति चाब्रुवन् ॥ १ ॥ तानुवाच तत कन्या तपोवृद्धानृषींस्तदा ।

में प्राणियों को महा भयं होगी इस से कोई कभी स्नान न करेगा, ऐसा काशिराजकी कन्यासे कह हमारी माताजी निवृत्त हुई । ३७ । और वह कभी २ आठ मासपर कभी २ दशमासपर थोडा जल पीके व योंही निराहार सब तीर्थों में फिराकरे । ३८ । काशिराजकी पुत्री तीर्थ करने के लिये भूमि पर घूमती फिरी और मरण पश्चात् वत्सदेश में जाकर कुटिलानाम नदी हुई परन्तु आधे देहसे वह कुटिला हुई और आधे से शिखण्डीनाम्नी नृपसुता हुई ॥ ४१ ॥

अध्याय १८८ ॥

भीष्मजी दुर्य्योधनसे बोले कि जब वह तप करतीथी जहां कहीं तपस्वियोंके आश्रमपर पहुँचती इसे उग्रतपकरती देख सब रोंकते थे कि यह कौनकार्य्य तू करती है । १ । तब तपोवृद्ध वनस्थऋषियोंसे वह कन्या बोली कि भीष्मने मेरा

---

a cause of terror to the people and they will be afraid of setting their feet in you Having said these words to the princess of Kashi my mother went away, but the princess continued severe penances and roamed in holy places without food, drinking a small quantity of water after every eight or ten months. She thus wandered from one holy place to another and after her death was turned into the Kutila having her water full of crocodiles. But only half of her body was turned into the stream and the other half was turned into a princess who is now known as Shikhandi" 41

CHAPTER CLXXXVIII

Bhishma said to Duryodhana, "Whenever she performed a severe ascetic [illegible] people would check her from doing so and she would say to them in reply, 'Bhishma has grossly insulted me and deprived

निराकृतास्मि भीष्मेण भ्रंशिता पतिधर्मतः ॥ २ ॥ वधार्थं तस्य दीक्षा मे न लो-
कार्थं तपोधनाः । निहत्य भीष्मं गच्छेयं शान्तिमित्येव निश्चयः ॥ ३ ॥ यत्कृते
दुःखवसतिमिमां प्राप्तास्मि शाश्वतीम् । पतिलोकाद्विहीना च नैव स्त्री न पुमानिह
॥ ४ ॥ नाहत्वा युधि गाङ्गेयं निवर्तिष्ये तपोधनाः । एष मे हृदि संकल्पो यदिदं
कथितं मया ॥ ५ ॥ स्त्रीभावे परिनिर्विण्णा पुंस्त्वार्थे कृतनिश्चया । भीष्मे प्रतिचिकी-
र्षामि नास्मि वार्येति वै पुनः ॥ ६ ॥ तां देवो दर्शयामास शूलपाणिरुमापतिः । मध्ये
तेषां महर्षीणां स्वेन रूपेण तापसीम् ॥ ७ ॥ छन्द्यमाना वरेणाथ सा वव्रे मत्परा-
जयम् । हनिष्यसीति तां देवः प्रत्युवाच मनस्विनीम् ॥ ८ ॥ ततः सा पुनरेवाथ

बड़ा निरादर कियाहै कि मुझको पतीके धर्मसे भ्रष्ट करादियाहै । २ । इन से हे
तपोधनो हमारा सङ्कल्प भीष्मके वधके अर्थहै कुछ किसी लोकके अर्थ नहीं है, मेरा
यही निश्चय है कि भीष्मको मारहीकर शान्त हूंऊँगी । ३ । क्योंकि जिस भीष्महीके
के कारण मैं जन्मपर्यन्त के लिये निरन्तर इस दुःखकी वस्ती में बसीहूं, पति के
लोक से विहीन होनेके कारण न अब मैं स्त्रीही हूं न पुरुषहीहूं । ४ । हे तपोधनो
समरमें विना भीष्मका वध किये मैं इसकेअर्थसे निवृत्त न होऊँगी, बस जो मैंने
कहा यही मेरे हृदयमें सङ्कल्पहै । ५ । स्त्रीभावसे तो अब मैं उदासीनहूं केवल
पुरुषमात्र में निश्चय कियाहै, जो कार्य मैंने भीष्मके विषयमें विचाराहै उसके
करने में किसी के रोकने से न रुकूंगी । ६ । ऋषियों के बीच में वह ऐसा कहरहीथी
थी कि उमाजी के पति शूलपाणि महादेवजी ने अपने रूपसे उसे आय दर्शन
दिया । ७ । और कहा कि वरदान मांग जो चाहतीहो उसने हमारी पराजय अपने
से मांगी, तब उस मनस्विनी से महादेवजीने कहा कि अच्छा तू भीष्मका वध

trouble to destroy
me of husband, I have therefore taken all this
Bhishm and for no other purpose I am resolved never to be
satisfied without destroying him. I have been forced by him to
suffer hardships and grief all my life and am neither a man nor a
woman, because I have been deprived of a married life by him. I
shall not rest without killing Bhishm in battle and I am resolved
on doing this. I am discontented with the life I am leading,
my only hope lies in being transformed into a man and I will not
be checked by any one from my purpose." She was thus conversing
with the ascetics when Mahadev the wielder of trident and hus-
band of Uma appeared before her in his proper form and said "Ask of,
me the boon you require." She desired my defeat and the boon

कन्या रुद्रमुवाच ह । उपपद्यत् कथं देव स्त्रिया युधि जयो मम ॥ ९ ॥ स्त्रीभावेन च मे गाढं मनः शान्तमुमापते । प्रतिश्रुतश्च भूतेश त्वया भीष्मपराजयः ॥ १० ॥ यथा स सत्यो भवति तथाकुरु वृषध्वज । यथा हन्यां समागम्य भीष्मं शान्तनवं युधि ॥ ११ ॥ तामुवाच महादेवः कन्यां किल वृषध्वजः । न मे वागनृतं प्राह सत्य भद्रे भविष्यति ॥ १२ ॥ हनिष्यसि रणे भीष्मं पुरुषत्वञ्च लप्स्यसे । स्मरिष्यसि च तत् सर्वं देहमन्यं गता सती ॥ १३ ॥ द्रुपदस्य कुले जाता भविष्यसि महारथः । शीघ्रास्त्रश्चित्रयोधी च भविष्यसि सुसम्मतः ॥ १४ ॥ यथोक्तमेव कल्याणि सर्वमेतद् भविष्यति भविष्यसि पुमान् पश्चात् कस्माच्चित् कालपर्ययात् ॥ १५ ॥

कोगी ८ तब वह फिर महादेवजीसे बोली कि भला मैं तो स्त्रीहूँ समरमें मेरी विजय कैसे होसकैगी । ९ । हे शिव स्त्रीभाव होनेसे मेरा मन शौर्य्यसे रहित हो गया है, और आप कहचुकेहैं कि तुम्ह से भीष्मकी पराजय होगी । १० । इससे हे वृषध्वज जिसमें आपका वचन सत्यहो वैसा उपाय कीजिए, कि जिसमें मैं संग्राम में शान्तनुके पुत्र भीष्मको मारसकूं ११ । तब महादेवजी उस कन्यासे बोले कि हमारा वचन कभी झूठा हुआ ही नहीं इसंसे हे भद्रे यहभी सत्यही होगा । १२ । तू भीष्म को रणमें मारेगी व पुरुषत्व को भी प्राप्त होगी और अन्यदेहको पावेगी तबभी इन बातोंका स्मरण बनारहेगा १३ राजाद्रुपदके यहां प्रथम तू कन्याहोकर उत्पन्न होगी फिर बड़ा महारथ वीर होजावगी, उस महारथ की अवस्थामें बड़ी शीघ्रता के सङ्ग अस्त्रशस्त्र चलावेगी व चित्र विचित्र युद्ध करेगी, व पुरुषोंमें बड़ीप्रशंसाहोगी १४ हे कल्याणि हमने जैसा कहाहै सब वैसाही होगा, किसी कार्य्यकी उलटापलटी से स्त्री शरीरसे फिर तू पुरुष शरीर होजायगी । १५ ।

---

was granted her accordingly She asked again of Mahadev how, being a woman, she would be able to kill me "You say," replied she that I shall be able to kill Bhishm but I can not do any deed of prowess as long as I am a woman, 10 You may be pleased to devise a plan so that I may be able to kill him in battle." To this Mahadev replied "My word has never proved untrue and the present one will not prove an exception You will kill Bhishm in battle and will gain manhood in another body but will retain a memory of the present circumstances. You will be born as a daughter in the house of King Drupad and will afterwards be transformed into a great warrior You will then be very dexterous in the use of weapons and will gain great fame It will all come to pass as I have said, you will somehow have your womanhood to be transformed

एवमुक्त्वा महादेव कपर्दी वृषभध्वज । पश्यतामेव विप्राणां तत्रैवान्तरधीयत ॥ १६ ॥ ततः सा पश्यतां तेषां महर्षीणामनिन्दिता । समाहृत्य । वनात्तस्मात् काष्ठानि वरवर्णिनी ॥ १७ ॥ चितां कृत्वा सुमहतीं प्रदाय च हुताशनम् । प्रदीप्तेऽग्नौ महाराज रोषदीप्तेन चेतसा ॥ १८ ॥ उक्त्वा भीष्मवधायेति प्रविवेश हुताशनम् । ज्येष्ठ काशिसुताराजन् यमुनामभितो नदीम् ॥ १९ ॥

इति श्री महाभारत उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि अम्बाहुताशनप्रवेशे अष्टाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८८ ॥

दुर्योधन उवाच । कथं शिखण्डी गांगेय कन्या भूत्वा पुरा तदा । पुरुषोऽभवद्युधि श्रेष्ठ तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ १ ॥ भीष्म उवाच । भार्यातु तस्य राजेन्द्र द्रुपदस्य महीपते । महिषी दयिता ह्यासीदपुत्रा च विशाम्पते ॥ २ ॥ एतस्मिन्नेव कालेतु द्रुपदो वै महीपतिः । अपत्यार्थे महाराज तोषयामास शङ्करम् ॥ ३ ॥ अस्मद्वधार्थं

उससे यह कहकर महादेव गिरिजेश वृषकेतु अपने स्थानको गये तब उस अनिन्दित नृप सुताने सब ऋषियों के देखते, काष्ठ एकत्रितकर और चिता । वनाकर उसमें अपने हाथसे आग लगादी और जब अग्नि प्रचण्ड हुआ तब यह कहकर कि भीष्म के वधार्थ इस अग्नि में बैठती हू जल गई । १९ ।

अध्याय ॥ १८९ ॥

इतनी कथा सुन दुर्योधन भीष्मजीसे पूछनेलगे कि हे पितामह शिखण्डी प्रथम कन्याही फिर पुरुष कैसे होगया यह हमसे बताइये । १ भीष्मजी बोले कि हे राजेन्द्र महाराज द्रुपद की स्त्री के कोई पुत्र नहींथा तिसपर भी वह राजाको प्राणसमान प्रियथी । २ । एकसमय पुत्रहोनेके अर्थ राजाद्रुपदने शिवजीको तप

---

into a man. 15 Having said this to the princess Mahadev the lord of Girija and possessor of the ensign of ox went to his place. Then the blameless princess collected firewood and in the presence of the rishis, having set fire to the pyre, and when the fire was burning furiously, she threw herself upon it, saying "I burn myself for the destruction of Bhishm" 19

CHAPTER CLXXXIX

Having heard this Duryodhan asked of Bhishm to tell him how the girl Shikhandi became a boy, and Bhishm replied, "Drupad had no son and yet he loved his queen like his own life. Once the king gratified Mahadev with his asceticism for the sake of a son. He had performed a severe asceticism to kill me. When Madhadev came to

निश्चित्य तपोघोरं समास्थितः। ऋते कन्यां महादेव पुत्रो मे स्यादिति ब्रुवन् ॥ ४ ॥ भगवन् पुत्रमिच्छामि भीष्मं प्रति चिकीर्षया । इत्युक्तो देवदेवेन स्त्रीपुमांस्तेभवि-ष्यति ॥ ५ ॥ निवर्त्तस्व महीपाल नैतज्जात्वन्यथा भवेत्। सतु गत्वा च नगरं भार्यामिदमुवाच ह ॥ ६ ॥ कृतो यत्नो महादेवस्तपसाराधितो मया। कन्या भूत्वापुमान्भावी इति चोक्तोस्मि शम्भुना ॥ ७ ॥ पुनः पुनर्याच्यमानो दिष्टमित्यब्रवीच्छिवः । न तदन्यच्च भविता भवितव्यं हि तत्तथा ॥ ८ ॥ ततः सा नियता भूत्वा ऋतुकाले मन-स्विनी । पत्नी द्रुपदराजस्य द्रुपदं प्रविवेश ह ॥ ९ ॥ लेभे गर्भं यथाकालं विधिदृष्टेन कर्मणा। पार्षतस्य महीपाल यथा मां नारदोब्रवीत् ॥ १० ॥ ततो दधार सादेवी

करने से प्रसन्नकिया ।३। राजाने हमारे वधकरनेकी इच्छासे बड़ाभारी तप किया जब महादेवजी प्रसन्न हुये तो कहा कन्याकी हमको इच्छा नहीं इससे हमारे पुत्रही हो। ४ । सोभी पुत्र हम भीष्मके वधकी इच्छासे चाहतेहैं जब महादेवजी से उन्होने ऐसा कहा तो उन्होंने कहा कि अच्छा तुमने प्रथम कन्याका नाम लिया इससे पहिले तुम्हारे कन्याहोगी फिर वही पुत्र होजायगा । १५ । हे महीपाल बस अब लौटजावो और कुछ न कहो हमारे वचन कभी मिथ्या नहीं होसक्ते, यह सुन नगरमें जाय राजाद्रुपदने अपनी भार्यासे यह कहा कि । ६ । हे देवि हमने बड़ा यत्न किया तब मैं महादेवजी को प्रसन्न किया पर उन्होंने कहा कि पहले कन्याहोकर फिर वही पुरुष होजायगा । ७ । हमने बार २ शिवजी से प्रार्थनाकी पर उन्होंने कहा तुम्हारे प्रारब्ध में ऐसाही है अब वह और नहीं होसक्ता बस वही होगा जो हमने कहा है । ८ । इसके पीछे जब ऋतुकाल आया तो परममन-स्विनी राजा द्रुपदकी रानी अपने पति द्रुपदजी को प्राप्तहुई । ९ । व जैसा गर्भ धारण करनेका विधानहै उस रीति से धारण किया, ये समाचार आय नारदजीने

---

him, he said, "I have no desire for a daughter. Grant me a son that may kill Bhishm." Mahadev on hearing this said, "You uttered the name of a daughter first and therefore a daughter will be born to you but will be transformed into a son. Say no more king and return home; for my words can not be untrue." At this the king returned to his capital and told his wife all that had happened, saying "With great exertion I pleased Mahadev, but he said that I should have a daughter who would change her sex. I entreated him again and again, but he said that it was written in my fate and could not be otherwise. At the proper time the husband and wife met and the wife became pregnant. Narad brought this news to

गर्भे राजीवलोचना । तां स राजा प्रियां भार्यां द्रुपद कुरुनन्दन ॥ ११ ॥ पुत्रस्नेहान्महाबाहुः सुखं पर्य्यचरत्तदा । सर्वानभिप्रायकृतान् भार्या लभत कौरव ॥ १२ ॥ अपुत्रस्यसतो राज्ञो द्रुपदस्य महीपते । यथाकालन्तु सा देवी महिषी द्रुपदस्यह ॥१३॥ कन्यां प्रवररूपान्तु प्राजायत नराधिप । अपुत्रस्य तु राज्ञः सा द्रुपदस्य मनस्विनी १४ ॥ ख्यापयामास राजेन्द्र पुत्रो ह्येष ममेति वै । ततः स राजा द्रुपदः प्रच्छन्नाया नराधिप ॥ १५ ॥ पुत्रवत् पुत्रकार्य्याणि सर्वाणि समकारयत् । रक्षणञ्चैव मन्त्रस्य महिषी द्रुपदस्य सा ॥ १६ ॥ चकार सर्व यत्नेन ब्रुवाणा पुत्र इत्युत । न च तां वेद नगरे कश्चिदन्यत्र पार्षतात् ॥ १७ ॥ श्रद्दधानो हि तद्वाक्यं देवस्याच्युत तेजसः । छादयामास तां कन्यां पुमानिति च सोऽब्रवीत् ॥ १८ ॥ जातकर्माणि सर्वाणि कारयामास

हमसे कहे । १० । जब कमलनयनी द्रुपदराजकी स्त्री ने गर्भको धारण किया तब राजा द्रुपद उस अपनी प्रियभार्या को । ११ । पुत्रके स्नेहसे अपने आप सुखदेने के लिये सेवा करते थे, इससे उस रानीका गर्भधारणके समयमें जिसर पदार्थ को मन चला सब उसे तुरन्त मिला । १२ । इसप्रकार पुत्रहीन राजा द्रुपदजी की पटरानी ने जब दशमास बीतगये तो अति रूपवती एक कन्या उत्पन्नकी राजा द्रुपद अपुत्र थे कन्याभी उन के प्रथम सेभी थी इस लिये उनकी रानीने उस कन्याको राजाके प्रसन्नहोने के लिये कहदिया कि महाराज हमारेपुत्र हुआहै ।१४। तब राजा द्रुपदने उसका गुप्तरीत सब संस्कारभी पुत्रवत कराये और राजा आप तो जानभी गये पर उनकी रानी ने ऐसा गुप्त उस कन्याको राखा कि कोई भी यत्नसेन जानसका कि यह कन्याहै इससे राजाको छोड़ कोई भी नगरनिवासी इस हृदको न जानसके । १७ । राजाने भी विचारा कि महादेवजी ने तो कहाही है कि कन्यासे पुत्र होजायगा तो फिर अच्छाहै गुप्तही रहनेदो इसी से वेभी सबसे पुत्रही बताते रहे । १८ । पुत्रकेसे जात कर्म कराकर द्रुपदराजने द्विजों से उसका

---

me. The king himself attended to his wife's comforts for the sake of the son and gave her the things she liked best. After teh months the childless king's wife brought him forth a beautiful daughter, but to please him she informed him that she had given birth to a son. The king knew the secret but performed all the ceremonies of a male child's birth. No one but the king knew the secret of the child's sex, so carefully had the queen managed the secrecy. The king too thought it proper to keep the matter secret as he thought that by virtue of Mahadev's word the girl would change her sex. Having performed all the ceremonies of a male

पार्थिव । पुंवद्विधानयुक्तानि शिखण्डीति च तां विदु ॥ १९ ॥ अहमेकस्तु चारेण वचनान्नारदस्य च । ज्ञातवान् देववाक्येन अम्बायास्तपसा तथा ॥ २० ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि शिखण्डयुत्पत्तौ एकोनवत्यदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८९ ॥

भीष्म उवाच । चकार यत्न द्रुपदः सुतायाः सर्वकर्मसु । ततो लेख्यादिषु तथा शिल्पेषु च परन्तप ॥ १ ॥ इष्वस्त्रे चैव राजेन्द्र द्रोणशिष्यो बभूव ह । तस्य माता महाराज राजानं वरवर्णिनी ॥ २ ॥ चोदयामास भार्यार्थं कन्यायाः पुत्रवत्तदा । ततस्तां पार्षतो दृष्ट्वा कन्यां सम्प्राप्तयौवनाम् । स्त्रियं मत्वा ततश्चिन्तां प्रपेदे सह भार्यया ॥ ३ ॥ द्रुपद उवाच । कन्या ममेयं सम्प्राप्ता यौवनं शोकवर्धिनी ।

नाम शिखंडी रखाया हमने भी नारदके कहने और शिवके वचन से अम्बा के तप पर कुछ ध्यान न दिया ॥ २० ॥

अध्याय ॥ १९० ॥

भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि राजा द्रुपद ने प्रथम अपनी कन्याको सीना पिरोना, चित्रकारी, कसीदा सीखनादि स्त्रियों के कर्म सिखवाये । १ । फिर द्रोणाचार्यजी से धनुर्विद्या अच्छीतरह पढ़वाई, तब हे महाराज, उसकी माताने अपने पतिसे कहा कि अब कहीं इसपुत्रके लिये स्त्री ढूढनी चाहिये, इतने में राजा द्रुपद ने देखा तो वह कन्या युवतित्वको प्राप्तहोगई कुचादि उत्पन्नहोआये, अब श्रीमान राजा रानी दोनोंने बड़ी चिन्ताकी और अपनी स्त्रीसे कहा । ३ । अब तो यह हमारी कन्या बनाय यौवन धर्मको प्राप्तहुई इससे शोक बढाती है आज तक हमने

---

child, the king had the child named Shikhandi I too believed the words of Narad and knew that Amba was born there by the boon of Shiv" 20.

CHAPTER CX

Bhishm said to Duryodhan "To have the girl taught in sewing, painting, working designs on cloth and other duties of women was the first care of king Drupad, then he got her instructed in archery by Dronacharya. The mother of the girl once asked her husband to look for a bride for the alleged boy But king Drupad saw that the girl was about to show signs of womanhood in her youth and both the king and the queen felt very anxious He said to queen "Our girl increases my grief by her showing signs of womanhood.

मया प्रच्छादिता चेयं वचनाच्छूलपाणिनः ॥ ४ ॥ भार्य्योवाच । न तन्मिथ्या महाराज भविष्यति कथञ्चन । त्रैलोक्यकर्त्ता कस्माद्धि वृथा वक्तुमिहार्हति ॥ ५ ॥ यदि ते रोचते राजन् वक्ष्यामि श्रृणुमेवचः । श्रुत्वेदानीं प्रपद्येथा स्वां मतिं पृषतात्मज ।६॥ क्रियतामस्य यत्नेन विधिवद्दारसंग्रहः । भविता तद्वच. सत्य मिति मे निश्चिता मतिः ॥ ७ ॥ ततस्तौ निश्चयं कृत्वा तस्मिन् कार्य्येथ दम्पती । वरयाञ्चक्रत कन्यां दशार्णाधिपतेः सुताम् ॥ ८ ॥ ततो राजाद्रुपदो राजसिंह सर्वान्राज्ञ, कुलत समिशम्य । दाशार्णकस्य नृपतेस्तनूजा शिखण्डिने वरयामास दारान् ॥ ९ ॥ हिरण्यवर्मेतिनृपो योसौ दाशार्णकः स्मृत । स च प्रादा-महीपालः कन्यां तस्मै शिखण्डिने ॥ १० ॥

महादेवजीके वचनके भरोसे से गुप्त रक्खाथा कि अब पुरुष हुईजाती,है अब होतीहै । ४ । यहसुन राजाकी स्त्री बोली कि, हे महाराज वह तो मिथ्या किसी प्रकार होई गा नहीं कि यह कन्या पुरुष न होजाय, क्योंकि तीनोंलोकोंके कर्त्ता धर्त्ता भर्त्ता महादेवजी क्यों झूठ कहते । ५ । इससे जो आपको रुचे तो हे राजन हम एकयुक्ति कहेंगी हमारा वचन सुनो, सुनकर जो आपकी मति,में भी आवे तो उसे कीजिये । ६ । अब आप यत्न से कहीं इसका विवाह किसी की कन्या के साथ कीजिये हमारे विचारमें आता है कि महादेवजीका वचन तो सत्यही होगा, क्या सन्देह है । ७ । इसप्रकार स्त्री पुरुष दोनों ने सम्मत कर बनाय अपने मनों में निश्चयकर दशार्ण देशके राजाकी कन्या अपने पुत्रका विवाह करने के लिये माँगी । ८ । तब राजसिंह राजा द्रुपदजी ने प्रथम सब राजाओं की वंशावली मँगवाय उनके कुलों के समाचार सुन, दशार्णदेश के राजाका वंश अच्छा जान उनकी कन्या अपने शिखण्डी नाम पुत्रकी स्त्री बनाने के लिये अङ्गीकार किया । ९ । हिरण्यवर्मा नाम उनदिनों में दशार्ण देशाधिपति थे उन्होंने अपनी कन्याका विवाह

Relying on the word of Mahadave we kept the fact secret, hoping that some day or other she would change her sex" To this the queen replied "The thing is sure to happen, for the creator and protector of the three worlds, the god of gods said so Hear my proposal and do what you like after hearing it. Let us marry her to a girl as the words of Mahadev cannot prove false." The husband and wife agreed to this proposal and asked the daughter of the king of Dasharan for marriage to their son. King Drupad sent for the geneology af all the kings and on studying them found that the family of King Dasharan was the best He selected his daughter for marriage to his son Shikhandi. Hiranyavarma the king of

स च राजा दशार्णेषु महानासीत् सुदुर्जयः । हिरण्यवर्मा दुर्धर्षो महासेनो महामनाः ॥ ११ ॥ कृते विवाहे तु तदा सा कन्या राजसत्तम । यौवनं समनुप्राप्ता सा च कन्या शिखण्डिनी ॥ १२ ॥ कृतदारः शिखण्डी च काम्पिल्यं पुनरागमत् । ततः सा वेदतां कन्यां कञ्चित्कालं स्त्रियं किल । हिरण्यवर्मणः कन्या ज्ञात्वा तान्तु शिखण्डिनीम् ॥ १३ ॥ धात्रीणाञ्च सखीनाञ्च व्रीडयाना न्यवेदयत् । कन्यां पाञ्चालराजस्य सुतांतांवैशिखण्डिनीम् ॥ १४ ॥ ततस्ता राजशार्दूल धात्र्यो दाशार्णिकास्तदा । जग्मुरार्त्तिं परां प्रेष्याः प्रेषयामासुरेवच ॥ १५ ॥ ततो दशार्णाधिपते प्रेष्याः सर्वान्यवेदयन् । विप्रलम्भं यथा वृत्तं स च चुक्रोध पार्थिवः ॥ १६ ॥ शिखण्डयपि महाराज

शिखण्डी के सङ्ग करदिया । १० । यह दशार्णदेशका राजा बड़ा दुर्जय दुर्द्धर्ष था सेना भी हिरण्यवर्मा की बड़ीभारीथी मनस्वीभी वह एकही था । ११ । विवाह होजानेपर दशार्णदेश के राजाकी कन्या यौवनको प्राप्त हुई व यह द्रुपदराजाकी शिखण्डिनी कन्या जानो प्रथमही बनाय जवानीहो चुकीथी । १२ । शिखण्डीतो विवाहकर अपने राज्यको आया॰दशार्णदेशके राजा की कन्या जब बधूप्रवेश में तीसरे वर्ष आई तो उसने शिखण्डीको जाना कि यहभी स्त्री है । १३ । तब अपनी सखियों से उसने कहा कि यह जिसके संग हमारा विवाह हुआ है पुरुष नहीं स्त्री है, हम दशार्णदेश के राजाकी कन्या ठहरीं व यह द्रुपददेश के राजाकी शिखण्डिनी नाम कन्या है । १४ । हेराजन् तब दशार्ण देशके राजाके यहां की जो धात्रियां संग आईथीं सब बहुत दुःखित हुईं व दो चार अपनी दासियोंको दशार्णदेश को भेजा । १५ । तब दासियों ने जाय दशार्णदेशके राजासे सब समाचार कहे जैसे छलसे स्त्रीके संग स्त्रीका विवाहहुआ था इसबातको जान दशार्णराज ने बड़ा

Dasharn married his daughter to Shikhandi 10 He was very valliant and inconquerable and possessed a large army After the wedding the daughter of king Dasharan gained her youth, while the girl Shikhandi was already a woman. After the wedding ceremony Shikhandi returned to the country of her birth but the daughter of the king of Dasharn did not know the fact of her being a woman till she came to her father-in law's house three years after the marriage. She told her companions that her bidegroom Shikhandi was a daughter of king Drupad. The female attendants who had come with her from her father's house were much grieved at this news. Some of them went to Dasharn and informed the king how his daughter was deceitfully married to a girl. This enraged him very much. Shikhandi in the meantime

पुवद्राजकुले तदा । विजहार मुदा युक्त स्त्रीत्वंनैव तिरोचयन् ॥ १७ ॥ ततः कति पयाहस्य तच्छ्रुत्वा भरतर्षभ । हिरण्यवर्मा राजेन्द्र रोषादार्त्तिं जगाम ह ॥ १८ ॥ ततो दाशार्णको राजा तीव्रकोपसमान्वत । दूतं प्रस्थापयामास द्रुपदस्य निवेशनम् ॥ १९ ॥ ततो द्रुपदमासाद्य दूत कांचनवर्मण । एक एकान्तमुत्सार्य रहो वचन मब्रवीत् ॥ २० ॥ दाशार्णराजो राजस्त्वामिद वचनमब्रवीत् । अभिषङ्गात् प्रकुपितो विप्रलब्धस्त्वयानघ ॥ २१ ॥ अवमन्यसे मां नृपते नून दुर्मन्त्रित तव । यन्मे कन्यां स्वकन्यार्थे मोहाद्याचितवानसि ॥ २२ ॥ तस्याद्य विप्रलम्भस्य फल प्राप्नुहि दुर्मते । एष त्वां सजनामात्यमुद्धराम स्थिरो भव ॥ २३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि हिरण्यवर्मदूतप्रेषणे नवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९० ॥

भारी कोप किया । १६ । व यहां शिखण्डी स्त्री का वेष छिपाये पुरुष बनाहुआ राजकुल में यथेच्छ विहार करता था । १७ । जब राजा हिरण्यवर्मा ने ये वृत्तान्त सुने तो वह अति दु खित हुआ । १८ । तब अति क्रोध युक्तहोकर दशार्णराजने द्रुपद के यहां दूत भेजा कनकवर्मा दूत द्रुपद पांचाल राजके पास आकर एकान्त में बोला । २० । कि दशार्ण राजने तुम्हारे छलपर कुपित होकर कहा है तुमने मेरी कन्याका अपनी कन्याके साथ विवाह करके अति निरादर किया है और इस छलके बदले में तुम अमात्यादि सहित मारे जाओगे । २३ ।

---

passed for a prince throughout the kingdom, but King Hiranya varma was very unhappy to hear this and in great anger sent a messenger to king Drupad Kanakvarma the messenger of the king came to Drupad, and said to him in private, "My lord the king of Dasharn, being very angry at your conduct says that you have insulted him by marrying his daughter to yours and you will suffer for this deceit, for you and your retainers will be put to death." 23



भीष्म उवाच । एवमुक्तस्य दूतेन द्रुपदस्य तदा नृप । चोरस्येव गृहीतस्य न प्रावर्त्तत भारती ॥ १ ॥ स यत्नमकरोत् तीव्रं सम्बन्धिष्वनुसान्त्वने । दूतैर्मधुरसंभाषैर्नैतदस्तीति संदिशन् ॥ २ ॥ स राजा भूय एवाथ ज्ञात्वा तत्त्वमथागमत् । कन्येति पांचालसुतां त्वरमाणो विनिर्ययौ ॥ ३ ॥ ततः संप्रेषयामास मित्राणाममितौजसाम् । दुहितुर्विप्रलम्भं तं धात्रीणां वचनात्तदा ॥ ४ ॥ ततः समुदयं कृत्वा बलानां राजसत्तमः । अभियाने मतिं चक्रे द्रुपदं प्रति भारत ॥ ५ ॥ ततः सम्मंत्रयामास मन्त्रिभिः स महीपतिः । हिरण्यवर्मा राजेन्द्र पांचाल्यं पार्थिवं प्रति ॥ ६ ॥ तत्रवै निश्चितं

अध्याय ॥ १९१ ॥

भीष्मजी दुर्योधनसे बोले कि जब दशार्ण देश के राजा के दूतने ऐसावचन कहा तो बँधे चोरके वचनके समान राजा द्रुपद के मुख से कुछ वचन न निकला । १ । पर यत्न उन्हों ने यह किया कि अपने बहुत से दूत सम्बन्धी के पास उन्होंने भेजे उन के द्वारा कहलाभेजा कि यह बात झूठी है भला ऐसाभी कहीं होता है जो कन्याही के साथ कन्याका विवाहहो । २ । कुछ दिन ऐसा करने से बीते तब फिर हिरण्यवर्मा राजा ने निश्चय जाना कि सत्य २ द्रुपदराजकी भी कन्याहीहै पुत्र नहीं है इस से अपने यहां द्रुपदराज के ऊपर चढ़ाई करनेका विचार करनेलगा । ३ । तब उसने अपनेमित्रोंको राजाद्रुपद के समीप भेजा व कहा कि क्षत्रियों के कहनेसे विदितहुआ है कि द्रुपदराज ने अपनी कन्याके संग हमारी कन्याका विवाह करा लिया है यह वृत्त तुम लोगभी उनसे जायकहो । ४ । उन लोगों को एसाकह वहां भेज अपने यहां बड़ीभारी सेना इकट्ठीकी, व द्रुपदराज के ऊपर चढ़ाई करने के विषय में सबों से सम्मत पूछा । ५ । व सब अपने मन्त्रियोंसे भी राजा हिरण्यवर्मा ने द्रुपद के ऊपर चढ़ाई करनेके विषयमें सम्मत

CHAPTER CXCI

Bhishm said to Duryodhan that on hearing the words of the messenger of king Dasharn, Drupad could not, like a thief, utter a word in reply. But he contrived to send some of his men to Dasharn and sent word through them that the news of a girl marrying another of her sex was wrong Some days passed in this manner, but at last king Hiranyavarma knew for certain that king Drupad had no son and resolved to invade his country. He sent his friends to king Drupad and sent him word through them to the effect that as he had caused his daughter to be married to his own he should suffer the consequences. Having sent the messengers the king collected a large army and summoned a council to decide the invasion. He

तेषामभूद्राज्ञां महात्मनाम् । तथ्यं भवति चेदेतत् कन्याराजन् शिखण्डिनी ॥ ७ ॥ वध्वा पञ्चालराजानमानयिष्यामहे गृहम् । अन्य राजानमाधाय पाञ्चालेषु नरेश्वरम् ॥ ८ ॥ घातयिष्यामि नृपतिं पाञ्चालं सशिखण्डिनम् ॥ ९ ॥ तत्तदा नूनमाज्ञाय पुनर्दूतान्नराधिपः । प्रास्थापयत् पार्षताय निहन्मीति स्थिरोभव ॥ १० ॥ भीष्म उवाच । स हि प्रकृत्या वै भीत किल्विषीच नराधिप । भयन्त्व्रमनुप्राप्तो द्रुपद पृथिवीपतिः ॥ ११ ॥ विसृज्य दूतान् दाशार्णे द्रुपदः शोकमूर्छित । समेत्य भार्य्यां रहिते वाक्यमाह नराधिपः ॥ १२ ॥ भयेन महताविष्टो हृदि शोकेन चाहत । पाञ्चालराजो दयितां मातरञ्च शिखण्डिनः ॥ १३ ॥ अभियास्यति मा कोपात् सम्बन्धी सुमहाबलः । हिरण्यवर्मा नृपति कर्षमाणो वरूथिनीम् ॥ १४ ॥ किमिदानीम् करिष्यावो मूढौ कन्यामिमां प्रति । शिखण्डी किल पुत्रस्ते कन्येति

लिया । ६ । तब सबराजालोगों व मन्त्रियों का सम्मतहुआ कि यादि यहबात सत्यहीहो शिखण्डिनी कन्य हीहो तो । ७ । हम सबलोग वहांजाय पांचालराज को बँधुआकर आपके पास लेआवेंगे; व पांचालि देश में दूसराराजा स्थापितकर ८ शिखण्डी सहित पांचालराजका वधकरडारेंगे । ९ । इसबातको फिर राजा ने सत्यजान फिर द्रुपदराज क पास दूतों को भेज कहलाभेजा कि खडाहो हमआय तुमको वहीं मारडालते हैं । ११ । भीष्मजी बोले कि राजाद्रुपद एकतो स्वभावही से डरपुत थे फिर अपराधी भी ठहरे इस से दशार्णराजका सन्देश सुन अति भयभीतहुये । ११ । फिर राजा हिरण्यवर्माके समीप दूतभेज एकान्तमें राजाद्रुपद अपनी स्त्री से बोले । १२ । राजा भयके मारे कपत थ व मारे शोकके हतहागये थे इस से वहुतधीरेसे शिखण्डी की माता अपनी रानीसे यहबोले कि । १३ । हमारे समधी हिरण्यवर्माजी मारेकोप के व्याकुल बडीभारी सेनालिये हमारेऊपर । १४ । अब हम तुम इस शिखण्डी के विषयमें कौन उपाय करेंगे क्योंकि शिखण्डी

told his ministers of his intention to invade the country of Drupad. The council was unanimously of opinion that they would bring king Drupad captive, if the news of Shikhandi being a girl proved untrue and having installed another king in Panchal, would kill Drupad as well as Shikhandi. The king, having ascertained the truth of the news, sent other messengers to Drupad, asking him to be ready for death. 10, Bhishm continued that on hearing the news king Drupad who was naturally a coward, became conscious of his own guilt and was much afraid. Having sent messengers to king Hiranyavarma, he came to his wife and trembling with fear and grief, said to her in a gentle voice, "Hiranyavarma is coming on us in a rage with a large army, what shall we do in the matter of

परिशङ्कित ॥१५॥ इतिसञ्चिन्त्ययत्नेनसमित्र सबलानुग ।वञ्चितोस्मीतिमन्वानोमांकिं लोद्धर्त्तुमिच्छति १६ ।कमत्रतथ्य सुश्रोणिमिथ्याकिंमूहि शोभने। श्रुत्वा त्वत्त शुभेवाक्य सविधास्याम्यहं तथा ॥ १७ ॥ अह हि संशय प्राप्तो बालाचेयं शिखण्डिनी । त्वञ्च राज्ञि महत् कृच्छ सम्प्राप्ता वरवर्णिनि ॥ १८ ॥ सात्व सर्वे विमाक्षाय तत्वमाख्याहि पृच्छत । तथा विदध्या सुश्रोणि कृत्यमाशु शुचिस्मिते ॥ १९ ॥ शिखण्डिनि च मामैत्व विधास्ये तत्र तत्वत । कृपयाह वरारोह वञ्चित पुत्रधर्मत. ॥ २० ॥ मया दाशार्णको राजा वञ्चित स महीपति । तदाचक्ष्व महाभागे विधास्ये तत्र याञ्छितम् ॥ २१ ॥ जानता हि नरेन्द्रेण ख्यापनार्थं परस्यवै । प्रकाश्य चोदितादेवी प्रत्युवाच महीपतिम् २१

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि द्रुपदप्रश्ने एकनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९१ ॥

तो तुम्हारा पुत्रकरके प्रसिद्ध है,व वास्तवमें कन्या तो हुई है । १५ । इससे वे भी इसको कन्याही जान अपने इष्ट मित्र सेनादि सङ्ग ले यहां आय हमको उच्छिन्न किया चाहते हैं । १६ । अब इसविषय में सत्य २ सबलोगों के सामने बताओ जिसमें सबलोग जान कि राजा नहीं जानते कि शिखण्डी तुम्हारा पुत्र नहीं है यहबात कह राजाने मत्स्यसंपे रानी से पूछा कि शिखण्डी पुत्र ठीकहै व जैसा हमारे समधी साहब जानतेहैं कि यह कन्याहै यहबात ठीकहै अब तुम्हारा वचन सुन फिर हम वैसा उपाय करेंगे । १७ । अब हमको, शिखंडीको और तुमको भी अवश्य अतिकष्ट होगा । १८ । इस कारण सब दुःखमिटाने के लिये तुम सच कहो कि शिखंडी पुत्र है वा कन्या तुम अपने और शिखंडी के लिये कुछ न डरो और लाज छोड़कर सत्य कहो हमने दशार्ण राजसे यदि छल किया हो तो कहो यद्यपि द्रुपद ने सबके दिखानेको रानीसे ऐसा कहा परन्तु वह पहले ही से सब कुछ जानता था ॥ २२ ॥

Shikhandi your daughter who is passing for a son? They have heard that Shikhandi is a girl and are coming down upon us intent on our destruction. Tell us before all these men present that Shikhandi is not a boy and that I did not know the fact up to this time." "Tell us without reserve," said Drupad to the queen in public, "Whether Shikhandi is a boy or a girl as Hiranyavarma says. On ascertaining this I shall do what is needful You as well as Shikhandi and I are in great danger Let us know the truth at once without fear or reserve You and Shikhandi need not fear I practiced deceit on the king of Dasharn or not, tell us truly" Drupad asked this of his wife to convince the public of his innocence, although he was from the first in the secret, 22.

भीष्म उवाच । ततः शिखण्डिनो माता यथातत्त्वं नराधिप । आचचक्षे महाबाहो भर्त्रे कन्यां शिखण्डिनीम् ॥ १ ॥ अपुत्रया मयाराजन् सपत्नीनां भयादिदम् । कन्या शिखण्डिनी जाता पुरुषो वै निवेदिता ॥ २ ॥ त्वया चैव नरश्रेष्ठ तन्मेप्रीत्यानुमोदितम् । पुत्रकर्म कृतञ्चैव कन्यायाः पार्थिवर्षभ ॥ ३ ॥ भार्य्या चोढात्वया राजन् दशार्णाधिपतेः सुता । मया च प्रत्यभिहितं देववाक्यार्थदर्शनात् । कन्या भूत्वा पुमान्भावी-त्येवञ्चैतदुपेक्षितम् ॥ ४ ॥ एतच्छ्रुत्वा द्रुपदो यज्ञसेन सर्वं तत्त्व मन्त्रविद्भ्यो निवेद्य । मन्त्रं राजा मन्त्रयामास राजन् यथायुक्त रक्षणे वै प्रजानाम् ॥ ५ ॥ सम्बन्धकञ्चैव समर्थ्य तस्मिन् दाशार्णके वै नृपतौ नरेन्द्र । स्वयं कृत्वा विप्रलम्भं प्रथावन् मन्त्रे-

अध्याय १९२ ॥

भीष्मजी दुर्य्योधन से बोले कि तब शिखण्डी की माता ने सब के सामने अपने पति से कहा कि सत्य २ यह शिखण्डिनी नाम कन्याहै शिखण्डी नाम पुत्र नहीं है । १ । हे महाराज मेरे पुत्र तो थाही नहीं इससे सौतों के भयसे शिखण्डिनी कन्याके उत्पन्नहोन पर भी मैंने आपसे कहदिया कि पुत्र उत्पन्नहुआ है । २ । आपने हमारे कहने से मानलिया कि ऐसाही होगा इससे प्रीति से इसके सब संस्कारभी पुत्रही के समान किये कराये । ३ । इसकी भार्य्या भी आप दशार्ण देशके राजाकी कन्या को विवाह करके बनाई, हमने भी जो ऐसा कहदिया था सो महादेवजी के वचनके विश्वासपर कहाथा क्योंकि जानती थी कि कन्या होकर फिर पुरुष होनेवालाहै इससे अबतक आपसेभी नहींबताया । ४ । इतना सुन द्रुपददेशके राजा यज्ञसेनजी ने सब वृत्तान्त अपने उत्तम मन्त्रियों से कह, फिर अपनी प्रजाओंकी रक्षाके विषयके सम्मत मन्त्रियोंसे पूछे । ५ । व सब से कहा कि मित्रो देखो हमने जो दशार्णदेश के राजाको अपना समधी बनाया सो कुछ अनुचित नहींकियाथा सुनतेहीहो रानीने आजहमसे बतायारहा अबकि दशार्ण

CHAPTER CXCII

Bhishm said to Duryodhan that the mother of Shikhandi said to the king in the presence of all, "Truly Shikhandi is no son but only a daughter I had no son and fearing the cowives, I told you that a son was born to me. You believed me and performed ceremonies usual at the birth of a son You married Shikhandi to the daughter of the king of Dasharan I told this lie on the strength of Mahadev's words, for I knew that the girl would subsequently change her sex and so I did not inform you with the true state of things." Having heard this, Yagyasen the king of the country of Drupad, told his ministers what had happened and asked their opinion as to what was best to be done for the safety of the subjects, saying,

काम्रो निश्चय वै जगाम ॥ ६ ॥ स्वभावगुप्तं नगरमापत्कालेतु भारत । गोपयामास राजेन्द्रसर्वतः समलंकृतम् ॥ ७ ॥ आर्त्तिञ्च परमां राजा जगाम सह भार्य्यया । दशार्णपतिना सार्धं विरोधे भरतर्षभ ॥ ८ ॥ कथं सम्बन्धिना सार्धं न मे स्याद्विग्रहो महान् । इति संचिन्त्य मनसा देवतामर्चयत् तदा ॥ ९ ॥ तन्तु दृष्ट्वा तदाराजन् देवी देवपरन्तदा । अर्च्चां प्रयुञ्जानमथो भार्य्यावचनमब्रवीत् ॥ १० ॥ देवानांप्रतिपत्तिश्च सत्यं साधुमता सताम् । किमु दुःखार्णवं प्राप्य तस्मादर्चयतांगुरून् ११ दैवतानि च सर्वाणि पूज्यन्तांभूरिदक्षिणम् । अग्नयश्चापिह्यन्तां दाशार्णप्रतिषेधने

राज इसको अनुचितजान चढ़ आवें तो अपने नगरकी रक्षा करनीचाहिये । ६ । हे दुर्योधन ऐसा कह राज द्रुपदजी ने अपने नगरकी बड़ीभारी रक्षाकी व नये सिरसे रँगाया छुहाया यद्यपि उनका नगर स्वभावहीसे बहुतरँगा छुहाया ७.और दशार्णदेशके बलवान राजाके सङ्ग विरोध होनेसे रानी सहित राजा बड़े दुःखित भी हुये । ८ । अवश्य कैसाकरें जिसमें सम्बधी के संग यह बड़ाभारी विग्रह न हो यह बात मनसे निश्चयकर देवताओंकी पूजा करनेलगे । ९ । राजाको देवताओं की पूजाकरते देख उनकी रानी बहुत सोचविचार अपने राजासे यहवचन बोली । १० कि जो लोग कल्याणवानभी हैं कुछ दुःखादि उनके नहीं है उनको भी देवताओंकी पूजा सदा करनी चाहिये, फिर दुःख पानेपर क्या कहें उसमें तो अवश्यही करनी चाहिये परन्तु दुःख समय में देवताकी आराधनाके लिये ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिये इससे आप ब्राह्मणोंकी ही पूजा कीजिये । ११ । और उनको बहुतसी दक्षिणा दीजिये मानो सब देवताओंकी पूजा करचुके व देवताओं की अर्चा आपभी करते जाइये व अग्नियों में आहुतियां दीजिये दिलाइये जिससे

"My attempt at forming relationship with the king of Dasharan was not worthy of blame. You have heard the explanation of the queen. We should now try to protect our country from the just wrath of the king of Dasharan" Having said this Drupad issued orders to fortify the capital and newly to paint and repair the already embellished city. The king and the queen were very anxious on account of the intended invasion of the king of Dasharan. They worshipped the gods in order to ward off the peril. Seeing the king worshipping gods, the queen in great anxiety said to him. 10. "Even prosperous men who are beset with no troubles should always worship gods and the more so when they are in trouble. You should worship Brahmans to propitiate gods and should give them

॥ १२ ॥ अयुद्धेन निवृत्तिश्च मनसा चिन्तयप्रभो। देवतानां प्रसादेन सर्वमेतद्भ विष्यति ॥ १३ ॥ मन्त्रिभिर्मन्त्रितं सार्धं त्वया पृथुललोचना। पुरस्यास्याविनाशाय यच्चराजंस्तथा कुरु॥ १४ ॥ दैवं हि मानुषोपेतं भृशं सिध्यति पार्थिव। परस्परविरोधाद्धि सिद्धरस्ति न चैतयो॰ ॥ १५ ॥ तस्माद्विधाय नगरे विधानंसचिवैः सह। अर्च्चयस्व यथाकामं दैवतानि विशाम्पते ॥ १६ ॥ एवं सम्भाषमाणौ तु दृष्ट्वा शोकपरायणौ। शिखण्डिनी तदाकन्याव्रीडितेव तपस्विनी ॥ १७ ॥ ततः सा चिन्तयामास मत्कृते दुःखितावुभौ। इमाविति ततश्चक्रे मतिं प्राणविनाशने १८ एवं सा निश्चयं कृत्वा भृशं शोकपरायणा। निर्ज्जगाम गृहं, त्यक्त्वा गहनं निर्ज्जनं वनम् ॥ १९ ॥ यक्षेणार्द्धिमता राजन् स्थूणाकर्णेन पालितम्। तद्भयादेव च

दशार्ण देशका राजा यहां न आसके। १२। मनसे यही चिन्तना किये रहिये कि समधीसे युद्ध नहो, यह बात ब्राह्मणों व देवताओं के प्रसादसे होजायगी अन्तर न पड़ेगा। १३। हे राजन् मन्त्रियोंके साथ जो तुमने इसपुरके नाश न होनेके विषयमें रक्षा आदि विचारीहो वहभी करतेरहो। १४। क्योंकि मनुष्यकर्म सहित देवकर्म अत्यन्त सिद्ध होता है, और जब दैव मानुषकर्मों में परस्पर विरोध होता है तो दोनों नहीं सिद्धहोते। १५। इससे मन्त्रियों के साथ नगरकी रक्षाका विधान भी कीजिये फिर देवताओंकी पूजाभी करते रहिये। १६। इसप्रकार वार्त्ताकरते शोकमें युक्त राजा रानीको देख महातपस्विनी शिखण्डिनी कन्या बहुत लाज्जतसी होगई। १७। फिर उसने चिन्तनाकी कि ये हमारे पिता माता हमारेही लिये अति दुःखित हैं इससे हम कहींजाय अपने प्राण छोड़दें तो अच्छाहो। १८ अत्यन्त शोक युक्तहो ऐसा निश्चयकर वह कन्या अपने घर से निकल बड़े दुर्गम वनको

large donations. This will be the best form of the worship of gods. Pour libations to fire so that the king of Dasharan may not be able to come hither. Take care to raise no quarrel with your kinsman and the gods and Brahmans will help you in the matter. Continue strengthening the fortifications of the town as you have begun; for even men are assisted in their works by gods; but both are upset where there is a difference of opinion. Protect your town with the help of your ministers." Having heard this sad conversation between her father and mother the girl Shikhandi was much ashamed. She thought that as she was the cause of all that trouble to her parents she should go some where else to die. With this resolution she left her paternal house and entered a thick forest where a very

जनो विसर्जयति तद्वनम् ॥ २० ॥ तत्र च स्थूणभवनं सुधामृत्तिकलेपनम् । लाजो ल्लापिकधूमाढ्यमुच्चप्राकारतोरणम् ॥२१॥ तत् प्रविश्य शिखण्डी सा द्रुपदस्यात्मजानृप। अनश्नाना बहुतिथं शरीरमुपशोषयत् ॥ २२ ॥ दर्शयामास तां यक्षः स्थूणोमार्दव संयुतः । किमर्थोऽयं तवारम्भः करिष्ये ब्रूहि मा चिरम् ॥ २३ ॥ अशक्यमिति सा यक्षं पुनः पुनरुवाच ह । करिष्यामीति वै क्षिप्रं प्रत्युवाचाथ गुह्यकः ॥ २४ ॥ धनेश्वरस्यानुचरो वरदोऽस्मि नृपात्मजे । अदेयमपि दास्यामि ब्रूहि यत्ते विवक्षितम् ॥ २५ ॥ ततः शिखण्डी तत् सर्वमखिलेन न्यवेदयत् । तस्मै यक्षप्रधानाय स्थूणा-

चली गई । १९ । जिस वनमें कन्या पहुँची उसकी रक्षा एक बड़ा धनवान स्थूणाकर्ण नाम यक्ष करताथा, उसके भयसे कोई पुरुष वहां नहीं जाताथा । २० । वहां जो उस यक्षका मन्दिर बनाथा उसमें अमृतकी बटीकूककर ता चूना बनाया गयाथा उसीसे चूनाकारी हुईथी, और गड़रेकी जड़के परिमलका धुआं वहां होताथा इस से अति सुगन्धितथा फाटक व उसका सरदर बड़ा ऊंचाथा । २१ । उसस्थानपर जाय राजाद्रुपदकी शिखण्डिनी नाम कन्याने बहुत दिनोंतक निराहाररह अपनाशरीर बनाय दुर्बलकरडाला । २२ । तब स्थूणाकर्ण नाम यक्षने आय दर्शन दे अति कोमल वचन कहा कि तू यह क्याकरती है और क्या चाहती है हमसे सत्य२ कहदे हम तेरा कार्य करेंगे । २३ । तब उसने यक्षसे बार बार कहा कि मेराकार्य किसी के करनेके मानका नहीं है इससे क्याकहूं तब उस यक्षने कहा कि तू कह तो हम तुरन्त करदेंगे चाहे जैसा कठिन कार्यहो । २४ । हे नृप कन्ये हम कुबेर जीके साथी और जाकुछ तू मांगेगी देंगे । २५ । तब शिखंडी ने अपना सब वृ-

rich Yaksh, named Sthoonakarn was the ruler and by whose fear no man durst enter his domains 20 The palace of the Yaksh was white washed with powdered ambrosia and incence giving sweet scent was always burnt there and the entrance into the palace lay through a wide gate Having reached there Shikhandini the daughter of king Drupad made her body lean by remaining without food for many days The Yaksh Sthoonakarn then came and spoke to her saying "What dost thou do here and what dost thou want? Tell me all about it truly and I promise to do thy work." But again and again she told him that no one could do her work The yaksh insisted on her informing him with what she required, promising to satisfy her desire as he said he was a companion of Kuver's and could give her whatever she wanted Then Shikhandi related her history thus — "My father has no son and king Kanakvarma has invaded

कर्णाय भारत ॥ २६ ॥ शिखण्डुवाच । अपुत्रो मे पिता यक्ष न चिरान्नाशमेष्यति । अभियास्यति सक्रोधो दशार्णाधिपतिर्हितम् ॥ २७ ॥ महाबलो महोत्साहः सहेम कवचो नृपः । तस्माद्रक्षस्व मां यक्ष मातरं पितरञ्चमे ॥ २८ ॥ प्रतिज्ञातो हि भवता दुःखप्रतिशमो मम । भवेयं पुरुषो यक्ष त्वत्प्रसादादनिन्दितः ॥ २९ ॥ यावदेव सराजावै नापयाति पुरं मम । तावदेव महायक्ष प्रसादं कुरुगुह्यक ॥ ३० ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि शिखण्डिपुंस्त्वप्राप्तौ द्विनवत्यदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९२ ॥

भीष्म उवाच ॥ शिखण्डिवाक्यं श्रुत्वाथ स यक्षो भरतर्षभ । प्रोवाच मनसा चिंत्य दैवेनोपनिपीडितः ॥ १ ॥ भवितव्यं तथा तद्धि मम दुःखाय कौरव । भद्रे कामं करिष्यामि समयन्तु निबोधमे ॥ २ ॥ किंचित् कालांतरं दास्ये पुल्लिंगं स्वमिदं तव ।

चान्त पक्षसे कहा है यक्षराज सुनिये मेरेपिता पुत्र रहित न राजावे क्योंकि कनकवर्मा राजा ने उसके ऊपर चढ़ाई की है वह राजा महाबली है उससे मेरी और मेरे माता पिता की रक्षा कीजिये । २८ । तुम ने मेरा दुख दूरकरने की प्रतिज्ञा की है अब ऐसा उपाय कीजिये कि मैं पुरुषहोजाऊं उस राजा के मेरेनगर में आने से पहले मेरेऊपर कृपाकीजिये ॥ ३० ॥

अध्याय ॥ १९३ ॥

भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि शिखण्डीके वचन सुन मनमें चिन्तनाकर भाग्य से उपपीड़ितहो वह यक्ष शिखण्डी से बोला । १ । कि अच्छा स्त्रीसे पुरुष तो तुम होजावोगे पर वह तुम्हारा ऐसाहोना हमारे दुःखका कारण होगा इससे हे भद्रे हम तुम्हाराकाम तो करेंगे परन्तु हम इस विषयमें जो करार करते हैं उसे सुनो । २ ।

him in anger. The latter is very powerful and my father, mother and myself are in great danger from him. Pray protect us from him as you have promised to remove my grief. Do so contrive that I may be turned into manhood before the country of my birth is invaded. Be kind to me, Yaksh."30.

CHAHTER CXCIII

Bhishm said to Duryodhan that on the words of Shikhandi," the yaksh thought for a while and being influenced by Fate, he said to her, "You will be transformed into manhood at my expence and grief. I shall do your work on certain conditions. I shall lend you my manhood for a fixed period and you will have to promise that,

आगन्तव्य त्वया काले सत्यञ्चैव वदस्व मे ॥ ३ ॥ प्रभु सङ्कल्प सिद्धोस्मि कामचारी विहगम । मत्प्रसादात् पुरञ्चैव त्राहि बन्धूंश्च केवलम् ॥ ४ ॥ स्त्रीलिङ्ग धारयिष्यामि तदे । पार्थिवा मजे । सत्य मे प्रति जानीहि करिष्यामि प्रियतव ॥५॥ शिखण्ड्युवाच॥ प्रति दास्यामि भगवन् पुंलिंग तव सुव्रत । किंचित् कालान्तरं स्त्रीत्व धारयस्व निशाचर । ६ ॥ प्रतियाते दशार्णेतु पार्थिवे हेमवर्मणि । कन्यैवाहं भविष्यामि पुरुषस्त्व भविष्यसि ॥ ७ ॥ भीष्म उवाच । इत्युक्त्वा समय तत्र चक्राते तावुभौ नृप । अन्योन्यस्याभिसन्देहे तौ संक्रमयतां तत ॥ ८ ॥ स्त्रीलिङ्ग धारयामास स्थूणो यक्षोथ भारत । यक्षरूपञ्च तद्दीप्त शिखण्डी प्रत्यपद्यत ॥ ९ ॥ तत शिखण्डी पाञ्चाल्य

कुछ कालक लिये हम अपना पुंस्त्व तुमको देंगे पर जबतक का कौल होजाय तब तुमको आजाना यदि आवो तो हमसे सत्यकहो । ३ । हम सङ्कल्प सिद्धहैं इससे यथेच्छचारी हैं और च हते तब अपनारूप बदलसक्त हैं, इससे अब हमारे प्रसादसे तुम अपने पुर व भाई बन्धु माता पिताकी रक्षा करो । ४ । अब हम तुम्हारा स्त्रीलिङ्ग धारणकरेंगे व तुम हमारा पुल्लिंग धारणकरो हम तुम्हारा प्रियकरेंगे पर तुम बतावो कब आवोगी । ५ । यहसुन शिखण्डनी बोली कि आप कछु काल तक हमारा स्त्रीत्व धारण कियारहिये फिर हम आय आपका पुल्लिंगत्व आपको देजायँगी । ६ । जब राजादशार्ण चलाजायगा तब हम यहां आय आपका पुंस्त्व आपको देदेंगी हम फिर कन्या होजायँगी और आप पुरुषहोजायँग । ७ । भीष्म जी दुर्योधन स बोले कि यहकह परस्पर उनदोनों ने प्रतिज्ञाकरली फिर आपसमें दोनोंने अपने २ देह बदल लिये । ८ । स्थूणाकर्ण यक्षने तो स्त्रीका स्वरूप धारणकरलिया और शिखण्डीने दिव्य यक्ष पुरुषका रूप धारणकर लिया । ९ । इसके

---

you will return at the appointed time. I can change my sex at will and you will be able to protect your kinsmen and parents by the power which I shall give you I shall become a woman and you will become a man, but first let me know the time of your coming back to me." Shikhandi promised to return the manhood of yaksh after a fixed time, saying that she would come back to him after the departure of the king of Dasharan Thus the two changed their sexes on promise of receiving and giving back what each had given to and taken from the other Sthoonakaran became a woman and Shikhandi was *transformed into a beautiful youth* After *having thus changed* the sex, Shikhandi returned to his father Drupad in a joyful mood. 10 He now told his father what had passed to his great joy

पुरुषत्वमासाद्य पार्थिव । विवेश नगरं हृष्ट पितरञ्च समासदत् ॥ १० ॥ यथावृत्तन्तु तत् सर्वमाचख्यौ द्रुपदस्य तत् । द्रुपदस्तस्य तच्छ्रुत्वा हर्षमाहारयत् परम् । ११ ॥ समार्यस्तच्च सस्मार महेश्वरवचस्तदा । ततः सम्प्रेषयामास दशार्णाधिपतेर्नृप ॥ १२ ॥ पुरुषोऽयं मम सुत श्रद्धातामेभवानिति । अथ दाशार्णको राजासहसाभ्यागमत्तदा ॥ १३ ॥ पञ्चालराज द्रुपदं दु खशोकसमन्वित । ततः काम्पिल्यमासाद्य दशार्णाधिपतिस्ततः ॥ १४ ॥ प्रेषयामास सत्कृत्य दूतं ब्रह्मविदांवरम् । ब्रूहि मद्वचनाद्दूत पाञ्चालं तं नृपाधमम् ॥ १५ ॥ यन्मे कन्यां स्वकन्यार्थे वृतवान् सिदुर्मते । फलं तस्यावलेपस्य द्रक्ष्यस्यद्य न संशय । १६ ॥ एवमुक्तश्च तेनासौ ब्राह्मणो राजसत्तम । दूतः प्रयातो नगरं दशार्णनृपचोदितः ॥ १७ ॥

पीछे हे भारत द्रुपदका पुत्र शिखण्डी पुरुषका रूपबनाय बहुत हर्षितहो अपनेनगर में आय अपने पिता के पास पहुँचा । १० । जैसा वृत्तांत वनमें हुआ सबज्योंका त्यों अपने पिता द्रुपद से निवेदन किया द्रुपद इस वृत्तांत को सुन बहुत हर्षित हुवे । ११ । व स्त्री पुरुषदोनों ने बैठकर महादेवजी के वचन का स्मरण किया व एकदूत झटपट दशार्णदेश के राजा के पास यह सन्देश लेकर भेजा कि । १२ । आप हमारे वचन का विश्वसकीजिये हमारा यहपुत्र पुरुषही है दूत वहां पहुँचनहीं न पाया कि दशार्णदेशका राजा खुद यहांको चढआया । १३ । व मारे दुःख शोकके राजा द्रुपदके राज्य में आया व काम्पिल्यनाम नगरमें उतरा जो पंचराज धानी से थोड़ीही दूरपरहै १४ । व एक वेदपाठी ब्राह्मणको दूतबनाय राजाद्रुपद के पास भेजा कि हे दूत हमारी जबानी महाअधम राजाद्रुपद से कहो कि । १५ । हेदुर्मति राजाद्रुपद जो तुम ने हमारी कन्या अपनी कन्याके विवाह के अर्थ ग्रहण किया है इस गर्वका फल आजही देखोगे इस में कुछभी संशय न जानना । १६ । यह समझाय उस अपने पुरोहित ब्राह्मणोत्तम को द्रुपदके पास भेजा वह दशार्ण

Both husband and wife remembered the words of Mahadev and forthwith sent word through a messenger to the king of Dasharnu to the effect that Shikhani was really a man and he should believe it, but before the coming of the messenger the king had invaded the country of Drupad. He came with a large army and encamped at Kampilya a city near the capital of Drupad. He sent a Brahman learned in the Vedas to the court of Drupad with a message that as Drupad was foolish enough to marry his daughter to his own, he would that very day reap the punishment of his pride. The learned priest came with the message to the court of Drupad and

दयामास पुरोधा द्रुपदं पुरे । ततो पाञ्चालको राजा गामर्घ्यञ्च सुसत्कृतम् ॥ १८ ॥ प्रापयामास राजेन्द्र सह तेन शिखण्डिना । तां पूजां नाभ्यनन्दत् स वाक्यञ्चेदमुवाच ह ॥ १९ ॥ यदुक्तं तेन वीरेण राज्ञा काञ्चनवर्मणा । यत्तेहमधमाचार दुहित्रास्म्यभिवाञ्चितः ॥ २० ॥ तस्यपापस्य करणात् फलं प्राप्नुहि दुर्मते । देहि युद्धं नरपते ममाद्य रणमूर्धनि ॥ २१ ॥ उद्धरिष्यामि ते सद्यः सामात्यसुतबान्धवम् । तदुपालम्भसंयुक्तं श्रावितः किल पार्थिवः ॥ २२ ॥ दशार्णपतिना प्रोक्तो मन्त्रिमध्ये पुरोधसा । अभवद् भरतश्रेष्ठ द्रुपदः प्रणयानतः ॥ २३ ॥ यद् ब्रवीति भवान् ब्रह्मन् सम्बन्धिवचनाद्वचः । अस्योत्तरं प्रतिवचो दूतो राज्ञे वदिष्यति ॥ २४ ॥ ततः सम्प्रेषयामास द्रुपदोपि महात्मने । हिरण्यवर्मणे दूतं ब्राह्मणं वेदपारगम् ॥ २५ ॥ तमागम्य

राजकी प्रेरणा से द्रुपदके समीप आया । १७ । व इसलाकर राजाद्रुपदकी सभा में पहुँचा राजा द्रुपदने बड़ीभागी उस ब्राह्मणकी पूजाकी । १८ । व सब पूजा शिखण्डीही के हाथों पहुँचवाई; परन्तु उन पुरोहितजीने उसपूजाको ग्रहण न कर के यह वचन कहा कि । १९ । जो कि दशार्णदेश के राजा ने उन से कहाथा कि हे अधमाचार जो कि तुम्हारी कन्याने हमको छला है । २० । उस पाप के करने का फल भोगो हे दुर्मति वाल हे राजन अब संग्राम में हमको युद्ध देवो । २१ । तुम्हारे मन्त्री पुत्र कुटुम्बादि सबों को हम उच्छिन्न करदेंगे यह निन्दा पूर्वक वचन राजाको सभाके बीच में उन पुरोहित देवता ने सुनाया । २२ । इसबात को सुन राजाद्रुपद ने बड़े प्रेम से शिर नीचे झुकालिया । २३ । व कहा कि हे ब्राह्मण हमारे समधीकी जबानी जो आपने हम से कहा उसका उत्तर हमारा भेजाहुआ दूत राजासे कहेगा । २४ । इतनाकह राजाद्रुपदनेभी महात्मा राजाहिरण्यवर्मा के पास एक वेदपाठी ब्राह्मणही को फिर दूतबनाय भेजा । २५ । वह ब्राह्मण दशार्ण

---

was worshipped with great respect by the latter. Shikhandi himself attended to the work of worshipping the Brahman but he refused all offerings, saying. "You have done a very ignoble deed of deception through your daughter. 20 You will suffer for your misdeed. Be prepared to fight. We will destroy all your ministers and kinsmen." But Drupad on hearing all his words, bowed down his head and replied. "Our messenger will give a reply to the king." 24. Having said this, king Drupad too, sent a learned Brahman as a messenger to the court of the glorious king Hiranyavarma. The messenger came to the king of Dasharan and thus rendered Drupads'

तु राजानं दशार्णाधिपतिं तदा । तद्वाक्यमाददे राजन् यदुक्तं द्रुपदे नह ॥ २६ ॥ आगम. क्रियतां व्यक्तः कुमारोयं सुतो मम । मिथ्यैतदुक्तं केनापि तदश्रद्धेयमिच्युत ॥ २७ ॥ तत. स राजा द्रुपदस्य श्रुत्वा विमर्षयुक्तो युवतीर्वरिष्ठाः । सम्प्रेषयामास सुचारुरूपा. शिखण्डिनं स्त्री पुमान्वेति वेत्तुम् ॥ २८ ॥ ता. प्रेषितास्तत्स्वभावं विदित्वा प्रीत्या राज्ञे तच्छशंसुर्हि सर्वम् । शिखण्डिनं पुरुषं कौरवेन्द्र दशार्णराजाय महानुभावम् ॥ २९ ॥ तत कृत्वा तु राजा स आगमं प्रीतिमानथ । सम्बन्धिना समागम्य हृष्टो वासमुवास ह ॥ ३० ॥ शिखण्डिने च मुदित प्रादाद्वित्तं जनेश्वरः । हस्तिनोश्वांश्च गाश्चैव दास्योथ बहुलास्तथा ॥ ३१ ॥ पूजितश्च प्रतिययौ निर्भर्त्स्यतनयां किल । विनीतकिल्विषे प्रीते हेमवर्मणि पार्थिवे ॥ ३२ ॥

देशके राजाके पास जाय वह वचन बोला जो कि राजाद्रुपदने कहाथा । २६ । वह यह था कि यह हमारा कुमार पुत्रही है आप जैसी चाहें परीक्षा लेलें किसीने आपसे मिथ्याही कहदियाहै कि वह स्त्री है इस बातका विश्वास किसी प्रकार न मानना चाहिये । २७ । राजाद्रुपद के ऐसे वचन सुन दशार्णदेश के महाराज ने अतिक्रोधकर अतिरूपवती बहुतसी ज्वानी स्त्रियां द्रुपदराज के यहां भेजीं कि तुम जानआवो शिखण्डी स्त्री है व पुरुष है । २८ । उन स्त्रियों ने यहां आय अच्छी तरह परीक्षाले जाय राजा हिरण्यवर्म्मा से कहा कि इसमें कुछभी सन्देह नहीं है शिखण्डी महानुभाव पुरुषही है स्त्री किसी प्रकार नहीं है । २९ । इस बातको सुन राजा हिरण्यवर्म्मा बहुत प्रसन्न हुआ और अपने सम्बन्धी द्रुपदको शिखण्डी सहित अपने यहां बड़ी धूमधाम से बुलाया ३० फिर प्रसन्नहो शिखण्डी को बहुतसा धनादिया बहुतसे हाथी घोड़े दास दासी रथादिभी दिये । ३१ । इन्होंनेभी बड़ा आदर सत्कार राजाका किया चलने के

---

message. "Our prince is a son, you may prove this in whatever way you like. Some one has misrepresented the truth in ascribing womanhood to him and such a false report should not be believed" On hearing the message of Drupad, the king of Dasharn in a great rage, sent many youthful women of great beauty to test whether Shikhandi was a man or a woman They came, and after examining Shikhandi, who had now been turned into a man, brought report to the king that there was no doubt about Shikhandi's manhood The king was much pleased to hear this and with great pomp invited king Drupad and his son 30. He was much pleased with Shikhandi and gave him much wealth including elephants, horses, chariots and

मतियाते दशार्णे तु हृष्टरूपा शिखण्डिनी। कस्यचित्त्वथ कालस्य कुबेरोनरवाहनः। लोकयात्रां प्रकुर्वाणः स्थूणस्यागात्रिवेशनम् ॥ ३३ ॥ स तद्गृहस्योपरि वर्त्तमान आलोकयामास धनाधिगोप्ता। स्थूणस्य यक्षस्य विशिष्टवेश्म स्वलंकृतं माल्यगुणैर्विचित्रैः ॥ ३४ ॥ लाजैश्च गन्धैश्च तथा वितानैरभ्यर्चितं धूपनधूपितञ्च। ध्वजैः पताकाभिरलंकृतञ्च भक्ष्यान्नपेयामिषदत्तहोमम् ॥ ३५ ॥ तत् स्थानं तस्यदृष्ट्वातु सर्वतः समलंकृतम्। मणिरत्नसुवर्णानां मालाभिः परिपूरितम् ॥ ३६ ॥ नाना कुसुमगन्धाढ्यं सिक्तसंमृष्टशोभितम्। अथाब्रवीद्यक्षपतिस्तान् यक्षाननुगांस्तदा

समय राजा पुरमेंभी आया अपनी कन्याको बहुत अपकार के वचन कह अपनी सेनासमेत निजदेशको चलागया जब राजादशार्ण चलेगये और यह सब दोष जातारहा सब परीक्षादि होगई, तो शिखण्डी बहुत प्रसन्नहुआ। ३२। अब वहां इसी बीचमें पालिकी पर सवार कुबेरजी तीर्थयात्राके प्रसङ्ग से घूमते २ एक दिन स्थूणाकर्ण यक्षके स्थानपरो आये। ३३। उन्हों ने स्थूणाकर्ण का स्थान बड़ा चित्रविचित्र देखा जिसमें नानाप्रकार के पुष्पादि सुगंध। ३४। व जो खशखशकी जड़के परिमलके धुआं से सुगन्धित चन्दनादि और भी गन्धों से सुगन्धित सुन्दर वस्त्रोंकी चान्दनियों से तना ध्वजापताकादिकों से अलङ्कृत भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य चारप्रकार के अन्नों से भरा। ३५। वह ऐसा भूषित स्थान देख कुबेरजीने अपने नौकर चाकर यक्षों से कहा कि हे अमितविक्रमो स्थूणाकर्ण का मकानतो इस प्रकार का शोभित है पर वहमूर्ख हमारे समीप क्यों नहींआता। ३६। जिससे जान बूझकर वह मन्द हमारे समीप नहीं आता इस से हमारे

---

slaves of both sexes. King Drupad too paid great respect to him when he at the time of departure came into the city. Having reproached his daughter, the king returned home with his army. Shikhandi was much pleased at his own success when Dasharn had returned well satisfied with the examination. In the meantime, Kuver, riding a palanquin in the course of his travels to holy places visited the place where Sthoonakaran the yaksh lived and saw his beautiful palace made lovelier with different sorts of flowers. The place was fragrant with the burning of incence, well decorated with cloth hangings and banners and well furnished with the articles of food and drink. Having seen the place in such a good order Kuver said to his attendants "My brave yakshas! the house of Sthoonakaran is so enchanting; but why does the wretch not appear in person! He

॥ ३७ ॥ स्वलङ्कृतमिदं वेश्म स्थूणस्यामितविक्रमा । नोपसर्पति माञ्चैव कस्माद्द्य स मन्दधी ॥ ३८ ॥ यस्माज्जानन् स मन्दात्मा मामसो नोपसर्पति । तस्मात्तस्मै महादण्डो धार्य्यःस्यादिति मे मतिः ॥ ३९ ॥ यक्षा ऊचुः ॥ द्रुपदस्य सुताराजन् राज्ञो जाता शिखण्डिनी । तस्या निमित्ते कस्मिंश्चित् प्रादात् पुरुषलक्षणम् ४०॥ अग्रहील्लक्षणं स्त्रीणां स्त्रीभूता तिष्ठतेगृहे । नोपसर्पति तेनासौ सव्रीड स्त्रीसरूपवान् ४१ एतस्मात् कारणाद्राजन् स्थूणो न त्वाद्य सर्पति । श्रुत्वा कुरु यथान्यायं विमानमिह तिष्ठताम् ॥ ४२ ॥ आनीयतां स्थूण इति ततो यक्षाधिपोब्रवीत् । कर्त्तास्मि निग्रहं तस्य प्रत्युवाच पुनः पुन ॥ ४३ ॥ सोऽभ्यगच्छत यक्षेन्द्रमाहूतः पृथिवीपते । स्त्री स्वरूपो महाराज तस्थौ व्रीडासमन्वित ॥ ४४ ॥ त शशापाथ सक्रुद्धो धनदः कुरु

मतसे उसको बड़ा भारी दण्ड देनाचाहिये । ३७ । यह सुन उसके यहां रहने वाले यक्ष बोले कि हे महाराज राजाद्रुपद के शिखण्डिनी कन्या हुईथी उस को किसी कारण से स्थूणाकर्णने अपना पुरुष चिह्न ददिया है । ३८ । व आपने उसका स्त्री का चिह्न ललिया है इसीस स्त्रीहोकर घरके भीतर घुसा बैठाहै स्त्री स्वरूप के कारण लज्जित है इसी से आपके निकट नहीं आता । ३९ । वस हे राजन् इसीकारण से स्थूणाकर्ण तुम्हारेपास नहीं आता और कुछ कारण नहीं है यह सुन अब जैसा उचितहो यहां रहनेवालों को वैसा कीजिये । ४१ । तब कुबेरजी ने कहा कि अच्छा हमारे समीपतक स्थूणाकर्णको लिवालावो हम उस को दण्ड देंगे यह बात बार २ कुबेरजी ने कही । ४२ । जब ऐसी आज्ञाहुई तो वह स्थूणाकर्ण कुबेरजी के पासआया पर स्त्री स्वरूप होनेसे लज्जित अलग खड़ारहा । ४४ । उसको देख कुबेरजी ने सबयक्षों से कहा कि अब इस पापी

is wilfully keeping himself away from my presence, I am therefore greatly inclined to punish him for this conduct of his." At this the yakshes who lived at that place, informed Kuver that Sthoonakaran had exchanged his manhood with the womanhood of Shikhandini the daughter of king Drupad and being thus transformed into a woman was ashamed to appear before Kuver This, they said, was the reason of his absence and that otherwise he was faithful to Kuver like other yakshes 40 Kuver thereupon ordered Sthoonakaran to be brought in his presence for punishment. Accordingly he was brought there, but being in a woman form, stood aside with shame, Seeing him in that form, Kuver pronounced his judgment in the presence of all the yakshes, saying "Let him remain a woman

नन्दन । एवमेव भवत्वद्य स्त्रीत्वं पुरुषत्वं गुह्यक ॥ ४५ ॥ ततोऽब्रवीत् यक्ष पतिर्महात्मा यस्माद्दास्त्व मवमन्येह यक्षान्। शिखण्डिनो लक्षण पापबुद्ध स्त्रीलक्षण चाग्रहीः पापकर्मन् ॥ ४६ ॥ अप्रवृत्तं सुदुर्बुद्धे यस्मा देतत् त्वयाकृतम् । तस्माद्य प्रभृत्येव स्त्री त्वं सा पुरुषस्तथा ॥ ४७ ॥ ततः प्रसादयामासुर्यक्षा वै श्रवणं किल। स्थूणस्यार्थे कुरुष्वान्त शापस्येति पुनः पुनः ॥ ४८ ॥ ततो महात्मा यक्षेन्द्र प्रत्युवाचानुगामिनः । सर्वान् यक्षगणांस्तात शापस्यान्त चिकीर्षया ॥ ४९ ॥ शिखण्डिनि हते यक्षा स्वरूपप्रतिपत्स्यते। स्थूणो यक्षो निरुद्वेगो भवात्वति महामनाः ॥ ५० ॥ इत्युक्त्वा भगवान् देवो यक्षराजः सुपूजितः । प्रययौ सहितः सर्वैर्निमेषान्तरचारिभिः ॥ ५१ ॥ स्थूणस्तु शाप सप्राप्य तत्रैव न्यवसत्तदा। समये चागमत्तूर्णं शिखण्डी तं क्षपाचरम्

का रूप स्त्रीहीका बनारहै। ४५ । फिर ऐसा सब यक्षों से वह कुबेरजीने स्थूणाकर्ण से कहा कि हे मन्दाशयन, जिससे कि तुमने सब यक्षोंका अपमान कर शिखण्डी का स्त्रीलक्षण ग्रहणकियाऔर अपना पुरुष लक्षण उसको दिया। ४६। हे दुष्ट जिससे तुमने यह उलटाकर्म्म किया ब्रह्माकी सृष्टिही उलटदी इस से अब आजसे तुम स्त्रीही बनेरहो और शिखण्डी पुरुषही बनारहै। ४७ । तब सब यक्षोंने स्थूणाकर्ण के लिये बार २ प्रार्थनाकी कि महाराज इस शापकी कुछ मर्यादा करदीजिये कि इतने दिनों के पीछे इसका अन्तहोगा। ४८ । तब यक्षराज महात्मा कुबरजीने उस शापके अन्त करनेकी इच्छासे सबयक्षों से कहा कि । ४९ । हे यक्षो जब शिखण्डी माराजायगा तब स्थूणयक्ष फिर पुरुष होजायगा बस हमने इस शापका यही अन्त कहदिया अब यह आनन्दितहो। ५० । कुबेरजी ऐसा कह सबयक्षों से पूजितहो अपने सब अनुचरों सहित अपनी अलकापुरी को चलेगये। ५१ । और स्थूण शापपाय वहीं रहनेलगा यहां जब समय पूरा

Having said this to the [illegible] she, Kuver turned to Sthoonal man and said "Because you have exchanged your manhood with the womanhood of Shikhandi and done a preposterous deed, in as much as you meddled with the laws of the creator, you will henceforth be a woman and Shikhandi will remain a man." At this all the yakshas interceded again and again for Sthoon and entreated Kuver to set a bound to his curse [illegible] to be lenient, said Sthoon [illegible] will [illegible] the death of Shikhandi. I have fixed this [illegible] for the duration of the curse, let him be satisfied." Having [illegible] Kuver returned to Alakapuri with all his attendants but Sthoon [illegible] was. On the other

॥ ५२ ॥ सोऽभिगम्याब्रवीद्वाक्यं प्राप्तोऽस्मि भगवन्निति । तमब्रवीत्तत स्थूण प्रीतोऽस्मीति पुन पुन ॥ ५३ ॥ आर्जवेनागत दृष्ट्वा राजपुत्र शिखण्डिनम् । सर्वमेव यथा वृत्त माचचक्षे शिखण्डिने ॥ ५४ ॥ यक्ष उवाच ॥ शप्तो वै श्रवणेनाहं त्वत्कृत पार्थिवात्मज । गच्छेदानीं यथा काम चर लोकान् यथासुखम् ॥ ५५ ॥ दिष्टमेतत् परा मन्ये न शक्य मतिवर्त्तितुम् । गमन तव चेतोऽह पौलस्त्यस्य च दर्शनम् ॥ ५६ ॥ भीष्मउवाच एवमुक्त. शिखण्डी तु स्थूणयक्षेण भारत । प्रत्याजगाम नगरं हर्षेण महता वृत. ॥५७। पूजयामास विविधैर्गन्धमाल्यैर्महाधनै । द्विजातीन् देवताश्चैव चैत्यानथचतुष्पथ न् ५८ द्रुपद सह पुत्रेण सिद्धार्थेन शिखण्डिना । मुदं परमालेभे पाञ्चालश्च सह बान्धवै. ५९।

हुआ दशार्णराज प्रसन्नहो शिखण्डीकी परीक्षाके चलागया तो शिखण्डी स्थूणाकर्णके समीप आया । ५२ । व प्रणामकर बोला कि हे भगवन् मैं अब आगया अपना पुरुषत्व लीजिये मेरा स्त्रीत्व मुझे दीजिये, तब स्थूणाकर्ण प्रसन्नहो शिखण्डीसे बार २ बोला कि हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्न हैं । ५३ । क्योंकि तुम अपनी सिधाई से सत्य पर आये ऐसाकह. शिखण्डी से सब वृत्तान्त कहनेलगा । ५४ । हे राजकन्ये, तुम्हारेलिये हमको कुबेरजीने शाप देदियाहै इस से तुम सुखपूर्वक सर्वोंके बीचमें फिरो हम स्त्रीही का स्वरूप धारण कियेरहेंगे । ५५ । इसको हम भाग्यही का कारण मानते हैं कि उधर तुम्हारा यहां से जानाहुआ और इधर कुबेरजी के हमको दर्शनहुये । ५६ । भीष्मजीने दुर्योधनसे बोले कि जब उस यक्षने शिखण्डी से ऐसा कहातो अति हर्षितहो शिखण्डी अपनेनगरको चलाआया । ५७ । व यहां नानाप्रकारकी पूजा दान दक्षिणादिकों से ब्राह्मण देवता ग्रामदेवी देव चौरहा आदिकी पूजा करने लगा । ५८ । व राजाद्रुपद भी अर्थ सिद्ध पाय अपनेपुत्र शिखण्डी और भाई

---

hand when Dasharn had returned well satisfied after the examination of Shikhandi, the latter came to Sthoonakaran and having made his obeisance to him with great respect, said. "I have come Bhagwan! take back your manhood and give me my womanhood." Sthoonakaran much pleased with the conduct of Shikhandi, said, "I am quite pleased with you. 51 For you have kept your word" After this he told him all that had happened about the curse of Kuver and bade him be of good cheer during the currency of the curse, saying, "You will live a man all your life. I ascribe it to fate, for as soon as you had turned back, Kuver visited my place." Bhishm said to Duryodhan that on hearing the above, Shikhandi returned home well

शिष्यार्थं प्रददौ चापि द्रोणाय कुरुपुंगव । शिखण्डिनं महाराज पुत्रं स्त्रीपूर्विणं तथा ॥ ६० ॥ प्रतिपेदे चतुष्पादं धनुर्वेदं नृपात्मजः । शिखण्डी सह युष्माभिर्धृष्टद्युम्नश्च पार्थिव ॥ ६१ ॥ मम त्वेतच्चरास्तात यथावत्प्रत्यवेदयन् । जडान्धबधिराकारा ये युक्ता द्रुपदे मया ॥ ६२ ॥ एवमेष महाराज स्त्रीपुमान् द्रुपदात्मजः । स सम्भूतः कुरुश्रेष्ठ शिखण्डी रथसत्तमः ॥ ६३ ॥ ज्येष्ठा काशिपतेः कन्या अम्बा नामेति विश्रुता । द्रुपदस्य कुले जाता शिखण्डी भरतर्षभ ॥ ६४ ॥ नाहमेनं धनुष्पाणिं युयुत्सुं समुपस्थितम् । मुहूर्तमपि पश्येयं प्रहरेयं न चाप्युत ॥ ६५ ॥ व्रतमेतन्मम सदा पृथिव्यामपि विश्रुतम् । स्त्रियां स्त्रीपूर्वके चैव स्त्रीनाम्नि स्त्रीस्वरूपिणि ॥ ६६ ॥ न मुञ्चेयमहं बाणानिति कौरवनन्दन ।

बन्धुओंके संग बड़ेआनन्दित हुये । ५९ । हे कौरवनन्दन, अपने शिखण्डी पुत्रको धनुर्वेद पढने के लिये द्रोणाचार्यजीके पास भेजा, क्योंकि प्रथम जब शिखण्डी स्त्री था तबभी उससे कुछ धनुर्विद्या सीखीथी पर स्त्रीहोने के कारण अच्छीतरह अभ्यास न हुआथा अब फिर द्रोणाचार्यजीका आय शिष्यहुआ । ६१ । व उस ने चारपदयुक्त पूरा धनुर्वेद तुमलोगोंके संगही सग द्रोणाचार्य जीसे पढा उसके भाई धृष्टद्युम्नने भी उसी के संगही सब धनुर्वेद पढा । ६२ । ये सब वृत्तान्त हमसे हमारे दूतोंने आन २ कहे जिनको हमने इस भदके जानने के लिये नियत किया था व वे गूंगे जड़ बहिरे बने वहां टिके रहतथे । ६३ । हे कुरुश्रेष्ठ इसरीति से राजाद्रुपदकापुत्र महारथ शिखण्डी प्रथम स्त्रीउत्पन्नहो फिर पुरुषहोगया । ६४ । वह जो काशिराजकी अम्बा नाम जेठी कन्याथी वही हमारे मारनेके लिये द्रुपद राज के यहां शिखण्डी होकर उत्पन्नहुई ।६५। इस लिये धनुषबाण हाथमें लियेहुए शिखडी को रणमें हम क्षणभरभी नहीं देख सकते और इसीलिये मेरा यहव्रत

---

pleased and distributed large donations in honour of the gods King Drupad too, with his brothers and kinsmen, was overjoyed at this and sent his son Shikhandi to Dronacharya to learn archery which he had begun during his womanhood He completed his course along with you and his brother Dhrishtadyuma. Our spies kept me informed with all that was happening They lived there as dumb and deaf men and brought me news of what was happening 60 Thus Shikhandi who being born a woman, became a man, is, in reality, Amba the daughter of the king of Kashi, born to kill me. I can not bear even for a moment the sight of Shikhandi bearing arms in the field of battle Moreover I have made a vow to the effect—and the world knows it—that I shall not discharge my arrow at a

न हन्या महते तेन कारणेन शिखण्डिनम् ॥ ६७ ॥ एतत् तत्त्व मह वेद जन्म तात शिखण्डिन.। ततो नैन हनिष्यामि समरेच्वा ततायिनम् ॥ ६८ ॥ यदि भीष्म स्त्रिय हन्यात् सन्त कुर्युर्विगर्हणम । नैन तस्माद्घनिष्याम दृष्ट्वा पि समरे स्थितम् ॥ ६९ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ एतच्छ्रुत्वातु कौरव्यो राजा दुर्योधनस्तदा । मुहूर्त मिव स ध्यात्वा भीष्मे युक्त ममन्यत ॥ ७० ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि.शिखण्डिपुरुत्वप्राप्तौ त्रिनवत्यदधिकशततमाऽध्यायः ॥ १९३ ॥

सञ्जय उवाच ॥ प्रभातायांतु शर्वर्यां पुनरेव सुतस्तव । मध्ये सर्वस्य सैन्यस्य पितामहमपृच्छत ॥ १ ॥ पाण्डवेयस्यगांगेय यदेतत् सैन्यमुद्यतम् । प्रभूतनरनागाश्व महारथसमाकुलम् ॥ २ ॥ भीमार्जुनं प्रभृति भिर्महेष्वासैर्महाबलैः । लोकपाल समैर्गु

पृथ्वी भर को विदित है कि स्त्री अथवा स्त्रीरूप वा स्त्री वेषधारी पर हम बाण नहीं छोड़ेंगे इसीकारण हम शिखंडी को नहीं मारेंगे यदि हम स्त्री को मारें तो लोग हमपर हसेंग इस लिये हम उसको रणमें उद्यत दखकरभी न मारेंगे दुर्योधन ऐसे वचन सुनकर उसका विश्वास होगया कि भीष्मजी शिखंडी से युद्ध न करेंगे और मन में शोचकरने लगा ॥ ७० ॥

अध्याय ॥ १९४ ॥

सञ्जय धृतराष्ट्रसे बोले कि जब रात्रिबीती प्रातःकाल हुआ तो तुम्हारे पुत्र दुर्योधन ने सब सैन्यके बीच में फिर भीष्मपितामह जी से पूछा । १ । कि हे गांगेयजी बहुतसे मनुष्य हाथी घोड़े रथादिकों से भरी, जो यह पांडवों की बड़ी भारी सेना युद्धकरने को उद्यत है व जो कि महाधनुर्द्धर महाबली लोकपालों के

---

woman or at a man bearing the name or likeness of a woman. People will laugh at me if I kill a woman and therefore I shall not kill him when he faces me in the field of battle." Having heard these words Duryodhan knew for certain that Bhishm would not fight against Shikhandi and became dejected in mind. 67.

CHAPTER CXCIV

Sanjaya said to Dhritrashtra that at the close of the night, when the day dawned, Duryodhan asked of Bhishm in the midst of the army "How long," said he "will it take you to destroy yonder army of the Pandvas, full of numerous men, elephants, horses and chariots, ready to fight, protected by great archers of immence strength like *lokpals*

सं धृष्टद्युम्नपुरोगमैः ॥ ३ ॥ अप्रधृष्यमनावार्यं मुद्वृत मिवसागरम् । सेनासागर मक्षोभ्य मपि देवैर्महाहवे ॥ ४ ॥ केन कालेन गांगय क्षपयेथा महाद्युते । आचार्यो वा महेष्वासः कृपो वा सुमहाबलः ॥५॥ कर्णो वा समरश्लाघी द्रौणिर्वा द्विजसत्तम । दिव्यास्त्र विदुषः सर्वे भवन्तोहि बले मम ॥ ६ ॥ एत दिच्छाम्यहं ज्ञातुं परं कौतूहलं हि मे । हृदि नित्यं महाबाहो वक्तु मर्हसि तन्मम ॥ ७ ॥ भीष्म उवाच ॥ अनुरूपं कुरु श्रेष्ठ त्वय्येतत् पृथिवीपते । बलाबलममित्राणां तेषां यदिह पृच्छसि ॥ ८ ॥ शृणु राजन्मम रणे या शक्तिः परमा भवेत् । शस्त्रवीर्यं रणे यच्च भुजयोश्च महाभुज ॥ ९ ॥ आर्जवेनैव युद्धेन योद्धव्य इतरो जन । मायायुद्धेन मायावी इत्येतद्धर्म निश्चयः ॥ १० ।

समान पराक्रमी भीमसेन अर्जुन धृष्टद्युम्नादि महारथों से रक्षित व दिखाई करने के अयोग्य किसीके रोकने के मानकी नहीं, व जिस सेनासागरको समर में देवता लोगभी न चलायसकैं ४ । उस सेनाको हे गङ्गासुत आप कितने दिनों में नाश करसकोगे, व महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य जी कितने दिनों में नाश करसकेंगे व कृपाचार्य जी कितने दिनों में । ५ । व समर में मशसुनीय कर्ण कितने दिनों में फिर ब्राह्मणों में उत्तम अश्वत्थामाजी कितनेदिनों में उस पांडवी सेना का विनाश करसकेंगे, क्योंकि इतने आप सब लोग हमारी सेना में दिव्यास्त्र जानने के बड़ेभारी विद्वान हैं । ६ । हे महाबाहु यह जानने का हमको नित्य परम कौतूहल रहताहै इससे सुना चाहते हैं आप कृपाकर कहने के योग्य हैं ७। भीष्मजी इतना सुन बोले कि, हे कुरुश्रेष्ठ यह तुम्हारे योग्यहीहै जो शत्रुओं का बलाबल पूँछतेहो । ८ । हे राजन सुनो, रण में जो हमारी परमशक्ति शस्त्रवीर्य में व भुजों में है बताते हैं । ९ । सज्जन लाग सरलता व धर्म से युद्धकरते हैं और मायावीलाग मायासे समरकरते हैं, यह

---

in prowess, Bhishm, Arjun, Dhristadyumn and other warriors whom no one can face with impunity or check in brttle and which ocean like army even the gods cannot agitate? Again, how long will Dronacharya the great archer, Kripacharya, praiseworthy Karan and Ashwathama the best of Brahmans take to destroy the Pandva army? For these are the men in our army that know well the use of divine weapons I am very anxious to know this and have long been desirous of knowing this from you" It is worthy of you Duryodhan," replied Bhishm, "that you wish to know the strength and weakness of the enemy. Hear the account of my great strength and dexterity of arms. Good men fight with straightforwardness and fair means, and deceitful men use cunning and deceit in battle. 10.

हन्यामहं महाभाग पाण्डवानामनीकिनीम् । दिवसे दिवसे कृत्वा भागं प्राग्माह्निकं मम ॥ ११ ॥ योधानां दशसाहस्रं कृत्वा भागे महाद्युते । सहस्रं रथिनामेकमेषभागो मतो मम ॥ १२ ॥ अनेनाहं विधानेन सन्नद्धः सततोत्थितः क्षपयेयं महत् सैन्यं कालेनानेन भारत ॥ १३ ॥ मुञ्चेयं यदि वास्त्राणि महान्तिसमरे स्थितः । शतसाहस्रघातीनि हन्यांमासेन भारत ॥ १४ ॥ सञ्जय उवाच । श्रुत्वा भीष्मस्य तद्वाक्यं राजा दुर्य्योधनस्ततः । पर्य्यपृच्छत राजेन्द्र द्रोणमाङ्गिरसांवरम् ॥ १५ ॥ आचार्य केन कालेन पाण्डुपुत्रस्य सैनिकान् । निहन्यादिति तं द्रोणः प्रत्युवाच हसन्निव ॥१६॥ स्थविरोस्मि महाबाहो मन्दप्राणविचेष्टितः । शस्त्राग्निना निर्दहेयं ,पांडवानामनीकिनीम् ॥ १७ ॥ यथा भीष्मः शान्तनवो मासेनेति मतिर्मम । एषामे परमाशक्तिरेतन्मे परमं बलम् ॥ १८ ॥ द्वाभ्यामेव तु मासाभ्यां कृपः शारद्वतोनवीत् ।

दोनों के धर्म्मोंका निश्चयहै । १० । हे महाभाग हम प्रतिदिन दोपहर तक पाण्डवोंकी सेनाके दशहजार योधा मारडाला करेंगे, व एकसहस्र रथीभी प्रतिदिन मारेंगे । १२ । हे भारत इसविधान से हम प्रतिदिन उठकर दोपहरतक दशहजार योधा व एकहजार रथी मार सब पाण्डवोंकी सेना नाशकरदेंगे । १३ । और जो समरमें टिके बड़े २ अस्त्र छोड़ जिनसे एकही बारमें सैकड़ों हजारों मरें तो बस एकमास भरमें पाण्डवों की पूरी सेना मारडाले । १४ । संजय बोले कि भीष्मजी के वचन सुन फिर राजादुर्य्योधन ने अङ्गिरसों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्यजी से पूंछा । १५ । कि हे आचार्य्यजी भला आप कितने काल में राजायुधिष्ठिरकी सेनाको मारसकोगे यह सुन हँसतेही से द्रोणाचार्य राजादुर्योधनसे बोले । १६ । कि महाबाहु अबतो हम वृद्ध हैं व हमारे प्राण अब शिथिलहोगये हैं, तोभी पाण्डवोंकी सेना को शस्त्राग्निसे जैसे भीष्म मासभर में भस्मकरसक्ते हैं वैसेही हमभी करसक्ते हैं, बस यही हमारी परमशक्ति है यही हमारा परमबल है । १८ । कृपाचार्य

I shall kill every day, from morning till noon, ten thousand warriors of the Pandvas, together with a thousand charioteers. Thus destroying of the Pandavas, ten thousand warriors and a thousand charioteers of the Pandavas, I shall extirpate the whole army and by using my weapons which can destroy hundreds and thousands at a time I shall do the whole work in the course of a month" Having heard the words of Bhishm, Duryodhan put the same question to Dronacharya the best of Angiras-es, asking him how long it would take him to destroy the army of Yudhishthir. To this Dronacharya gave the following reply with a smile:—"I have become old, my nerves have become slack, yet, like Bhishm, I can destroy the Pandva army in a month and this is my utmost strength and prowess." Kripacharya said that he could do

द्रौणिस्तु दशरात्रेण प्रतिजज्ञे बलक्षयम् ॥ १९ ॥ कर्णस्तु पञ्चरात्रेण प्रतिजज्ञे महास्त्रवित् । तच्छ्रुत्वा सूतपुत्रस्य वाक्यं सागरगासुत ॥ २० ॥ जहास सस्वनं हास चाक्यवेदमुवाच ह । न हि यावद्रणे पार्थं बाणशङ्खधनुर्धरम् ॥ २१ ॥ वासुदेवसमायुक्तं रथेनायान्तमाहवे । समागच्छसि राधेय तेनैवमभिमन्यसे । शक्यमेवं च भूयश्च त्वया वक्तं यथेप्सत ॥ २२ ॥

इति श्री महाभारतेऽनुद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि भीष्मादिशक्तिकथने चतुर्नवत्यदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९४ ॥

वैशम्पायन उवाच । एतच्छ्रुत्वा तु कौन्तेय सर्वान् भ्रातृनुपह्वरे । आहूयभरत श्रेष्ठ इदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ युधिष्ठिर उवाच । धार्त्तराष्ट्रस्य सैन्येषु ये चार पुरुषा मम । ते प्रवृत्तिं प्रयच्छन्ति ममेमां व्युषितां निशाम् ॥२॥ दुर्य्योधनः किलापृच्छ दापगेयं महाव्रतम् । केन कालेन पाण्डूनां हन्याः सैन्यमिति प्रभो ॥ ३ ॥ मासे

ने कहा कि हमतो दोमास में पांडवोंकी सेना मारसक्ते हैं, अश्वत्थामाने कहा कि हमतो सबपाण्डवों की सेना दशरात्रियों में मारसक्ते हैं ।१९। तब महास्त्रोंही कर्ण ने कहा कि हमतो पांचरात्रियों में मारसक्ते हैं, कर्ण के वचन सुन भीष्मजी ।२०। बड़े जोर से हहाकर हँसे, व यह वचनभी बोले कि जबतक बाण शंख व धनुष धारण किये अर्जुन को, कृष्णचन्द्र समेत रण में नहीं देखते व समर में उन के सामने नहीं जाते तभीतक ऐसा मानतेहो नहीं तो जब उन के सामने जावगे तो फिर ऐसा कैसे कहसकोगे २२ ॥

अध्याय १९५ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि दुर्योधन के यहां कि ये सब बातें दूतोंकी द्वारा सुन राजायुधिष्ठिरजी ने भाइयों को एकांत में बुलाय यहवचन कहा कि दुर्योधनकी सेनामें जो मेरेचार दूत रहते हैं उन्होंने मुझसे कहा है कि गत रात्रि का दुर्योधन ने गंगा पुत्र भीष्म जीसे पूछा कि तुम पांडवोंसेना कितने दिन में मारडालोगे

---

the same work in two months Ashwathama promised to do the work of destruction in ten days; but Karan the great scholar of the knowledge of weapons said that he could do it in five days. On hearing the words of Karan, Bhishm laughed a loud laugh and said. "You will not I fear keep your promise after seeing Arjun armed with his arrow, conch and bow and accompanied by Shree Krishn in the field of battle." 22.

CHAPTER CXCV

Vaishampayan said that on hearing the above conversation [illegible] his spies, Yudhishthir summoned all his brothers to a secluded [illegible] and said "My four spies, living in the army of Duryodhan informed me that last night Duryodhan had asked of Bhishm

नेति च तेनोक्तो धार्त्तराष्ट्रः सुदुर्मतिः । तावता चापि कालेन द्रोणोपि प्रतिजज्ञि-
वान् ॥ ४ ॥ गौतमो द्विगुणं कालमुक्तवानिति नः श्रुतम् । द्रौणिस्तु दशरात्रेण प्रति-
जज्ञे महास्त्रवित् ॥ ५ ॥ तथा दिव्यास्त्रवित् कर्णः संपृष्टः कुरुसंसदि । पञ्चभिर्दि-
वसैर्हन्तुं स सैन्यं प्रतिजज्ञिवान् ॥६॥ तस्मादहमपीच्छामि श्रोतुमर्जुन ते वचः । कालेन
कियता शत्रून् क्षपयेरिति फाल्गुन ॥ ७ ॥ एवमुक्तो गुडाकेशः पार्थिवेन धनंजयः ।
वासुदेवं समीक्ष्येदं वचनं प्रत्यभाषत ॥ ८ ॥ सर्व एते महात्मानः कृतास्त्राश्चित्रयो-
धिनः। असंशयं महाराज हन्युरेव न संशयः ॥ ९ ॥ अपैतु ते मनस्तापो यथासत्यं
ब्रवीम्यहम् । हन्यामेकरथेनैव वासुदेवसहायवान् ॥ १० ॥ सामरानपि लोकांस्त्रीन्
सर्वान् स्थावरजङ्गमान् । भूतं भव्यं भविष्यच्च निमेषादिति मे मतिः ॥ ११ ॥ यत्तद्
घोरं पशुपतिः प्रादादस्त्रं महन्मम । कैराते द्वन्द्वयुद्धे तु तदिदं मयि वर्तते ॥ १२ ॥
यद्युगान्ते पशुपतिः सर्वभूतानि संहरन् । प्रयुङ्क्ते पुरुषव्याघ्र तदिदं मयि वर्तते १३

भीष्मजीने उत्तर दिया कि हम एकमहीने में मारडालेंगे द्रोणाचार्य नेभी यही
आज्ञा दिखाई कृपाचार्य ने दो महीने में मारने को कहा महारथ अश्वत्थामा ने
दस दिन में और दिव्यास्त्र प्रहारकरने वाले कर्ण ने मेरी सेना को पांच दिन में
ही मारना विचारा है । ६ । इस से हे अर्जुन हमभी तुम्हारा वचन सुना चाहते
हैं कि तुम कितने दिन में शत्रुकी सेना को मारसक्तेहो युधिष्ठिर के यहवचन सुन
कर बलवान गुडाकेशने श्रीकृष्ण के मुखकी ओर देखकर यहकहा कि महाराज
यह सब महाअस्त्र चित्रयोधी हैं परन्तु आप कुछ संशय न करें और मेरेवचनको
सत्य मानें कि केवल हरिकी सहाय से निमिषमात्र में स्थावर जंगम और देवताओं
सहित भूत भविष्य और वर्तमान चौदह भुवनको गिरिजेशके दियेहुये महाअस्त्रसे
नाशकर सक्ता हूं । १२ । युगान्त में प्राणियों के नाश के लिये जिस अस्त्रको

Bhishm replied that he would take a month for the purpose and the same period was fixed by Dronacharya. Ashwathama the great warrior said that he would require ten days, while Karan the wielder of divine weapons reduced the time required for the destruction of my army to five days. I ask you, Arjun, how long it will take you to destroy the army of the enemy." On hearing the words of Yudhishthir brave Arjun looked in the face of Shri Krishn and said "That army consists of warriors of renown; but you need entertain no anxiety; believe me when I say that with the assistance of Shree Krishn alone I can destroy the fourteen regions together with the moveables, immoveables and gods in them by the weapon which Mahadev being pleased with me in the duel had made me a present of. I possess the weapon which Mahadev uses to destroy all beings at the end of a yug. Bhishm

तत्र जानाति गाङ्गेयो न द्रोणो नच गौतम । नच द्रोणसुता राजन् कुत एव तु सूतज ॥ १४ ॥ न तु युक्त रणे हन्तु दिव्यैरस्त्रैः पृथग्जनम् । आर्जवेनैव युद्धेन विजेष्यामो वयपरान् ॥१५॥ तथेमे पुरुषव्याघ्रा सहायास्तव पार्थिव । सर्वे दिव्यास्त्र विद्वांस सर्वेयुद्धाभिकांक्षिण ॥१६॥ वेदान्तावभृथस्नाता सर्वे एतेऽपराजिता । निहन्यु समरे सेना देवानामपि पाण्डव ॥ १७ ॥ शिखण्डी युयुधानश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षत । भीमसेनो यमौ चोभौ युधामन्युत्तमौजसौ ॥ १८ ॥ विराटद्रुपदो चोभौ भीष्म द्रोणसमौ युधि । शङ्खश्चैव महाबाहुर्हैडम्बश्च महाबल ॥ १९ ॥ पुत्रोऽस्याञ्जनपर्वा तु महाबलपराक्रम । शैनेयश्च महाबाहु सहायो रणकोविद ॥ २० ॥ अभिमन्युश्च बलवान् द्रौपद्याः पञ्च चात्मजा । स्वयञ्चापि समर्थोसि त्रैलोक्योत्सादनेपि च ॥ २१ ॥ क्रोधाद्य पुरुष पश्येस्तथा शक्रसमद्युते । स क्षिप्र न भवेद् व्यक्तमिति त्वां वेद्मि कौरव ॥ २२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि अर्जुनवाक्ये पञ्चनवत्यधिकशततमोऽध्याय १९५ ॥

त्रिपुरारि छोड़ते हैं वही परवास है उसको भीष्म, द्रोण, कृप, अश्वत्थामा भी नहीं जानते कर्ण क्या जानेगा परन्तु उससे मनुष्यों का मारना ठीक नहीं है इस लिये सरल युद्धसेही रिपुको जीतूगा यह बलवान हार युद्ध विशारद अस्त्रज्ञाता तुम्हारी सहाय करेंगे यह अपराजित देवताओं को भी रण में मारसकते हैं । १७ । सात्यकि धृष्टद्युम्न, वीर शिखण्डी, भीमसेन, माद्रीपुत्र युधामन्यु द्रुपद विराट द्रोण भीष्मादि को मारडालेंगे, शङ्ख, हिडिम्बापुत्र अञ्जनपर्वा आदि महापराक्रमी पुरुष रण के ज्ञाता तुम्हारे सहायक हैं । २० । बलवान अभिमन्यु और द्रौपदी के पांच पुत्रों की सहायतासे आपतीनों लोक नाश करसकते हैं जिसकी ओर आप क्रोध की दृष्टि उठावें वह जीवित नहीं रहसकता ॥ २२ ॥

Dronacharya, Kripacharya and Ashwathama donot know the use of it, how can Karna know it? But it is not well to use that weapon for destroying human beings, I shall therefore conquer the enemy with ordinary weapons. Mighty Hari, the master of the art of war and of the use of weapons, will help you. The unconquerable one can destroy even gods. Satyaki, Dhrishtadyumn, brave Shikhandi Dhrishtadyumn, brave Shikhandi, Bhimsen, the sons of Madri, Yudhamanyu, Drupad and Virat will kill Drona, Bhishm and others. Shankh, the son of Hidimva, Anjanparva and other warriors of renown are your allies. 20 With valliant Abhimanyu and the five sons of Draupadi you can destroy the three worlds. He whom you look at with an angry eye, can not remain alive." 22.

वैशम्पायन उवाच । ततः प्रभाते विमले धार्तराष्ट्रेण चोदिताः । दुर्योधनेन राजानः प्रययुः पाण्डवान् प्रति ॥ १ ॥ आप्लाव्य शुचयः सर्वे स्रग्विणः शुक्लवाससः । गृहीतशस्त्रा ध्वजिनः स्वस्ति वाच्य हुताग्नयः ॥ २ ॥ सर्वे ब्रह्मविदः शूराः सर्वे सुचरितव्रताः । सर्वे कामकृतश्चैव सर्वे चाहवलक्षणाः ॥ ३ ॥ आहवेषु परॉल्लोकान् जिगीषन्तो महाबलाः । एकाग्रमनसः सर्वे श्रद्दधानाः परस्परम् ॥ ४ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ केकया बाह्लिकैः सह । प्रययुः सर्व एवैते भारद्वाजपुरोगमाः ॥ ५ ॥ अश्वत्थामा शान्तनवः सैन्धवोऽथ जयद्रथः । दाक्षिणात्याः प्रतीच्याश्च पार्वतीयाश्च ये नृपाः ॥ ६ ॥ गान्धारराजः शकुनिः प्राच्योदीच्याश्च सर्वशः । शकाः किराता यवनाः शिबयोऽथ वसातयः ॥ ७ ॥ स्वैः स्वैरनीकैः सहिताः परिवार्य महारथम् । एते महारथाः सर्वे द्वि

अध्याय १९६ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि जब प्रातःकाल हुआ तो दुर्योधन के प्रेरित सब राजालोग पांडवों के ऊपरको चढ़े । १ । सबोंने बड़े भोरही स्नानकर फूलोंकी माला धारणकर, श्वेतवस्त्र पहिन, अपने २ अस्त्र शस्त्र ले रथा(र) ध्वजा लगाय, ब्राह्मणों से स्वस्ति वचवाय आग्नों आहुतिदी।२। सबके सब वेदपढेलिखे, सब शूरवीर सब सदाचार व्रत नियममें तत्पर, सबइच्छाकिये, सबों में युद्ध सम्राटक लक्षण विद्यमान, सब समरोंमें परलोक जीतनकी इच्छा किये, सब एकाग्रमन किये, सब परस्पर के मेलमें विश्वस्तचित्तथे।४। अब उज्जैनी के राजा विन्द अनुविन्द, केकयदेशके राजा बाह्लीकदेशके भूपाल, ये सब द्रोणाचार्यजीके पीछे२ चले। ५। अश्वत्थामा, भीष्मपितामह, सिन्धुदेशका राजा जयद्रथ, दक्षिणी, पश्चिमी, पर्वती सब राजालोग, गान्धारराज शकुनि, पूर्वी, उत्तरी सबमहीपाल, शकजाति के लोग, किरातलोग, यवन, शिबिवंशी वसातिवंशी, ये सब अपनी २ सनाओंसे भीष्मजीको बीचमें किये चले ये सब महारथ दूसरी सनामें चले, इन के सबके

CHAPTER CXCVI

Vaishampayan said that early the next morning all the warriors on Duryodhan's side were ready to attack the Pandvas. They bathed early in the morning, decked themselves in flower garlands and white clothes, put their weapons in their chariots, furled their banners and poured libations into fire with benedictions of Brahmans. They were all learned in the Vedas, great warriors, firm in good conduct, in vows and in observations, willing, bearing marks of war, wishing to win paradise by their death in the field of battle, firm of mind and trusting one another. Vind and Anuvind the kings of Avantipur, kings of Kaikays and of Vahlik followed Drona. Ashwathama, and Bhishm the grandfather, Jaydrath the king of Sindhu, kings

तीये निर्ययुरंठे ॥ ८ ॥ कृतवर्मा सहानीकस्त्रिगर्तश्चमहारथः । दुर्योधनश्चनृपतिर्भ्रातृभिः परिवारितः ॥ ९ ॥ शलो भूरिश्रवा शल्य कौशल्याय बृहद्रथ । एते पश्चादनुगता धार्तराष्ट्रपुरोगमा ॥ १० ॥ ते समेत्य यथान्याय धार्तराष्ट्रामहाबलाः । कुरुक्षेत्रस्य पश्चार्धे व्यवातिष्ठन्त दंशिता ॥ ११ ॥ दुर्योधनस्तु शिबिरं कारयामास भारत । यथैव हास्तिनपुरं द्वितीयं समलंकृतम् ॥ १२ ॥ न विशेष विजानन्ति पुरस्य शिबिरस्य वा । कुशला अपि राजेन्द्र नरानगरवासिनः ॥ १३ ॥ तादृशान्येव दुर्गाणि राज्ञ मपि महीपतिः । कारयामास कौरव्य. शतशोथसहस्रश ॥ १४ ॥ पञ्चयोजनमुत्सृज्य मंडलं तद्रणाजरम् । सेनानिवेशास्ते राजन्नाविशञ्छतशो॥ १५ ॥ तत्र ते पृथिवीपाला यथोत्साहं यथाबलम् । विविशु

अभ्यक्ष भीष्मजी हुये । ८ । कृतवर्मा, अपनी सेनासे त्रिगर्त देशका राजा जो बड़ा महारथ था, राजा दुर्योधन अपने सौभाइयों समेत, शल, भूरिश्रवा, शल्य व अयोध्यापुरीका राजा बृहद्रथ, ये सब दुर्योधन के पीछे २ चले । १० । ये सब महाबली धृतराष्ट्र के पुत्र इकट्ठे हो अपने अस्त्रशस्त्र धारण किये कवचादि पहिने कुरुक्षेत्रकी पश्चिम ओर आधी सेनाको आगकर खड़ेहुये । ११ । दुर्योधनने ऐसा सेना निवेशस्थान अच्छा बनवाया मानों दूसरा हस्तिनापुरही होगया जो कि सबप्रकार से भूषित कराया था । १२ । हस्तिनापुर निवासी पुरुष जो बड़े चतुरभी थे वे हस्तिनापुर नगर व कुरुक्षेत्रके सेना निवेशमें कुछ विशेषता नहीं जानते नहीं समझते कि हम अपने नगरही में बैठे खड़े डोलते फिरते हैं । १३ । इसप्रकार के सब राजाओं के भी किलाआदि दुर्योधनने बनवाये थे । १४ । बीसकोसकी गुलाई में वह सब संग्रामभूमि बनाईगई थी, व बाजार शूरों घोड़ों हाथियों रथोंके रहने टिकने के स्थान इसके बाहर २ बनाये गयेथे । १५ । उन

of South, of the West and of hill countries, Shakuni the king of Ghandhar, the kings of the East and of the North and the tribes of Shaks, of Kirats, of Yavans, of Shivis and of Vashatis formed another portion of the army under the leadership of Bhishm. Kritvarma, king of Trigart with his army, king Duryodhan with his hundred brothers, Shal, Bhurishrava, Shalya and Vrahadrath the king of Ayodhia all followed Duryodhan 10 All the warrior sons of of Dhritrashtra, armed with arms and armour, led half the army to the west of Kurukshetra. The camp of Duryodhan looked in grandeur a second Hasthinapur and was well decked The wise inhabitants of Hashthinapur found no difference in their camp at Kurukshetra and their capital city, and were at home there. In the same manner Duryodhan had got fortified places to be made for all the kings. The field of battle occupied a circuit of twenty miles and

शिविराण्यत्र द्रव्यवन्ति सहस्रशः ॥ १६ ॥ तेषां दुर्योधनो राजा ससैन्यानां महात्मनाम् । व्यादिदेश सवाह्यानां भक्ष्यभोज्यमनुत्तमम् ॥ १७ ॥ सनागाश्वमनुष्याणां ये च शिल्पोपजीविनः । ये चान्येऽनुगतास्तत्र सूतमागधबन्दिनः ॥ १८ ॥ वणिजो गणिकाश्चारा ये चैव प्रेक्षका जनाः । सर्वांस्तान् कौरवो राजा विधिवत् प्रत्यवेक्षत ॥ १९ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि कौरवसैन्यनिर्याणे पञ्चनवत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १९६ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ तथैव राजा कौन्तेयो धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः । धृष्टद्युम्नमुखान् वीरांश्चोदयामास भारत ॥ १ ॥ चेदिकाशिकरूषाणां नेतारं दृढविक्रमम् । सेनापतिममित्रघ्नं धृष्टकेतुमथादिशत् ॥ २ ॥ विराटं द्रुपदं चैव युयुधानं शिखण्डिनम् । पाञ्चाल्यौ च महेष्वासौ युधामन्यूत्तमौजसौ ॥ ३ ॥ ते शूराश्चित्रवर्माणस्तप्तकुण्डलधारिणः ।

सहस्रों में सब राजाओंके आगे २ सेना सामग्री सबै उत्साह बलके अनुसार उतरे, ऐसा शिविर कोई न था जिसमें कोई वस्तु वा खाने पीनेको वा युद्धकी नहो । १६ । सेना सहित सब राजाओंको भोजनादि सामग्री पहुँच ई जाती थी, घोडों मनुष्यों शिल्पियों मागध सूतों वणिकों गणिका आदिकों के लिये कौरव राजकी ओर से निवासस्थान और खान पानादि मिलते थे ॥ १९ ॥

अध्याय ॥ १९७ ॥

वैशम्पायनजी जनमेजयजी से बोले कि जैसे दुर्योधनने अपनी सेनाको वहाँ लेजाय टिकाया था वैसे ही कुन्ती व धर्मजी के पुत्र महाराज युधिष्ठिरजी ने भी धृष्टद्युम्नादि वीरोंको प्रेरित किया । १ । फिर चेदिदेश काशी व करूषदेश के स्वामी शत्रुओं के नाशक धृष्टकेतु नाम वीर सेनापति को वहां चलने की आज्ञा दी । २ । फिर, महाराज विराट, महीपाल द्रुपद, युयुधान, शिखण्डी, पांचालदेश

markets as well as camps for warriors, horses elephants and chariots were laid outside. The kings occupied those places according to their ranks and forces No tent was destitute of the articles of war food and drink The kings and their armies had all the requisites supplied to them. Food and residence was well supplied to beasts, artisans, bards, traders, courtesans, and menials of all sorts. 19.

CHAPTER CXCVII

Vaishampayan said to Janmejaya that as soon as the army of Duryodhan was stationed there, Yudhishthir, the son of Kunti and Dharm, ordered Dhrishtadyumna to send the warriors of Chedi and Kashi and Kurush under Dhrishtketu the brave commander and destroyer of foes. Then king Virat, Drupad with his sons Yuyudhan and

आग्यावसिक्ताज्वलिता धिष्ण्येष्विव हुताशनाः ॥ ४ ॥ अशोभन्त महेष्वासा ग्रहाः प्रज्वलिता इव । अथ सैन्यं यथायोगं पूजयित्वा नरर्षभ ॥ ५ ॥ दिदेश तान्यनीकानि प्रयाणाय महीपतिः । तेषां युधिष्ठिरो राजा ससैन्यानां महात्मनाम् ॥ ६ ॥ व्यादिदेश सवाह्यानां भक्ष्यभोज्यमनुत्तमम् । सगजाश्वमनुष्याणां ये च शिल्पोपजीविनः ॥ ७ ॥ अभिमन्युं बृहन्तञ्च द्रौपदेयांश्च सर्वशः । धृष्टद्युम्नमुखानेतान् प्राहिणोत् पाण्डुनन्दन ॥ ॥ ८ ॥ भीमञ्च युयुधानञ्च पाण्डवञ्च धनञ्जयम् । द्वितीयं प्रेषयामास बलस्कन्धं युधिष्ठिर ॥ ९ ॥ भाण्डं समारोपयतां चरतासम्प्रधावताम् । हृष्टानां तत्र योधानां शब्दो दिवमिवास्पृशत् ॥ १० ॥ स्वयमेव ततः पश्चाद् विराट द्रुपदान्वित । अथापरैर्महीपालैः सह प्रायान्महीपतिः ॥ ११ ॥ भीमधन्वायनीसेना

के राजादी के पुत्र युधामन्यु व उत्तमौजादि आज्ञादी । १ । ये सब शूरलोग चित्र विचित्र कवच वस्त्रादि से चमचमाते थे सब तपाये नये सुवर्ण के कुण्डल धारण किये ऐसे शोभितहोते-जैसे घृतकी आहुति से प्रज्वलित अग्नि कुण्डों में शोभित होते हैं । ४ । इन सबराजालोग अग्निकी समान प्रकाशमानहुए और बड़ी सेनासे अति कोमल वाक्य कहे सेना ने भी उन के साथ चलने की तयारी की और सब शूरवीरों को सेना सहित अच्छी खाने पीने की वस्तुए दी गईं सब वाहन हाथी आदि युद्ध के लिये सजाये गये महा रणधीर अभिमन्यु पांचों द्रौपदी पुत्रों और धृष्टद्युम्न, भीमसेन, युयुधान और वीर अर्जुन को भी राजा ने भेजा योद्धा लोग इधर उधर रणकी सामग्री ठीक कर रहेथे और उनका शब्द आकाश तक पहुँचता था । १० । और रिपुओं को बाधित करताथा द्रुपद विराट और अनेक महीपालों के साथ धर्मपुत्र युधिष्ठिरजी चले धृष्टद्युम्न से पालित महा बलवान सेना समुद्रके समान पूर्ण वेगवाली दिखलाई देतीथी फिर मंदबुद्धि राजाधृतराष्ट्र

Shikhandi, Yudhamanyu and Uttamauja were ordered to proceed These warriors were armed with arms and armours of shining materials, wore earrings of bright virgin gold, shining like fire when clarified butter is poured over it Then all the kings shone like fire and spoke in very soft words to the large army which was at once ready to follow them All the warriors were supplied with good food and drink and the beasts were made ready for action Valliant Abhimanyu as well as the five sons of Draupadi, Dhrishtadyumn, Bhimsen, Yuyudhan and Arjun were sent out by the king The warriors bustled hither and thither to prepare all for battle and their noise reached the sky, causing anxiety to the enemy Yudhishthir the son of Dharm was with Drupad, Virat and other kings. 10 Led by Dhrishtadyumn the great army looked like the great ocean in agitation. The unwise son of Dhritrashtra too prepared his

धृष्टद्युम्नेन पालिता । गंगेव पूर्णा स्तिमिता स्यन्दमाना व्यदृश्यत ; ॥ १२ ॥ ततःपुनरनीकानि व्ययोजयत बुद्धिमान् । मोहयन् धृतराष्ट्रस्य पुत्राणांबुद्धिनिश्चयम् १३ द्रौपदेयान्महेष्वासानभिमन्युञ्च पाण्डव । नकुलं सहदेवञ्च सर्वांश्चैव प्रभद्रकान् ॥१४॥ दश चाश्वसहस्राणि द्विसहस्राणि दन्तिनाम् । अयुतञ्च पदातीनां रथाः पञ्चशतंतथा ॥ १५ ॥ भीमसेनस्य दुर्धर्ष प्रथमं प्रादिशद्बलम् । मध्यमे च विराटञ्च जयत्सेनञ्च पाण्डव ॥ १६ ॥ महारथौ च पाञ्चाल्यौ युधामन्यूत्तमौजसौ । वीर्यवन्तौ महात्मानौ गदाकार्मुकधारिणौ ॥ १७ ॥ अन्वयातांतदा मध्ये वासुदेवधनञ्जयौ । बभूवुरति संरब्धा कृतप्रहरणा नराः ॥ १८ ॥ तेषां विंशतिसाहस्राध्वजा शूरैरधिष्ठिताः । पञ्च नागसहस्राणि रथवंशाश्च सर्वशः ॥ १९ ॥ पदातयश्चयेशूराः कार्मुकासिगदाधराः । सहस्रशोऽन्वयु पश्चादग्रतश्च सहस्रशः॥२०॥युधिष्ठिरो यत्रसैन्ये स्वयमेव बलार्णवे । तत्रते पृथिवीपालाभूयिष्ठ पर्य्यवस्थिताः ॥ २१ ॥ तत्रनागसहस्राणि हयानाम युतानिच । तथा रथसहस्राणि पदातीनाञ्च भारत ॥ २२ ॥ चेकितानः स्वसैन्येन महता पार्थिवर्षभ । धृष्टकेतुश्च चेदीनां प्रणेता पार्थिवोययौ ॥ २३ ॥ सात्यकिश्च महेष्वासो वृष्णीनां प्रवरो रथः । वृतः शतसहस्रेणरथाना

के पुत्रने भी अपनी सेना तयारकी, महा धनुर्धर द्रौपदी के पांच पुत्र, अभिमन्यु माद्रीपुत्र और प्रभद्रादिकों को नृपने भेजा और भीमसेन के साथ दशसहस्र घोड़े दोसहस्रहाथी और पांचसौरथ और दशसहस्र पियादे चले जयत्सेन और विराट के मध्य में राजा स्वयम् निष्पाप मनस चले उत्तमौजा और युधामन्यु दोनों महा रथियोंके मध्यमें हरि गदा और चाप लेकर चले ।१६। उनके साथ पचीस सहस्र अति बलवान रथी थे पैदलों के पास गदा आदि आयुध थे सेना के मध्यमें राजा युधिष्ठिर स्वयम् चले उनके चारोंओर बहुत से महिपालथे, उनके साथ एकसहस्र बड़े हाथी दशसहस्र घोड़े एकसहस्र रथ और सहस्र पैदलथे ।२२। नृपवर चेकितान बड़ी सेना अपने साथ लेकर धृष्टकेतु चेदिराजके साथ चला । २३ । महा धनुर्धर

army. The five valliant sons of Draupadi as well as Abhimanyu, the sons of Madri and Prabhadraks went into the field of battle by the order of the king Ten thousand horses, two thousand elephants, five hundred chariots and ten thousand foot soldiers followed Bhimsen. The king himself, with an innocent mind, went between Jayatsen and Virat. Uttamauja and Udhamanyu went on both sides of Hari who was armed with mace and bow. They had with them twenty five thousand warriors. The foot soldiers were armed with maces and other weapons and king Yudhishthir himself was in the middle of many kings. He had with him a thousand large elephants, ten thousand horses, a thousand chariots and a thousand foot soldiers 22 Chekitan the best of kings, with a large army, went with Dhrishtketu the king of Chedi. The great archers of the Vrishni family, Satyaki was followed by thousands of chariots. These two best of warriors guarded the rear

प्रणुदन्नली ॥ २४ ॥ सहदेव माद्रेयौ रथस्थौ पुरुषर्षभौ । जघनं पालयन्तौ च पृष्ठतो नुप्रजग्मतुः ॥ २५ ॥ शकटापणवेशाश्च यानं युग्यं च सर्वशः । तत्र नागसहस्राणि हयानामयुतानि च ॥ फल्गु सर्वं कलत्रं च यत् किंचित् कृशदुर्बलम् ॥ २६ ॥ कोशसंचयवाहांश्च कोष्ठागारं तथैव च । गजानीकेन संगृह्य शनैः प्रायाद्युधिष्ठिरः ॥ २७ ॥ तमन्वयात् सत्यधृतिः सौचित्तिर्युद्धदुर्मदः । श्रेणिमान् वसुदानश्च पुत्रः काश्यस्य वा विभुः ॥ २८ ॥ रथा विंशतिसाहस्रा ये तेषामनुयायिनः । हयानां दश कोट्यश्च महतां किङ्किणीकिनाम् ॥ २९ ॥ गजा विंशतिसाहस्रा ईषादन्ताः प्रहारिणः । कुलीना भिन्नकरटा मेघा इव विसर्पिणः ॥ ३० ॥ षष्टिर्नागसहस्राणि दशान्यानि च भारत । युधिष्ठिरस्य यान्यासन् युधि सेनामहात्मनः ॥ ३१ ॥ क्षरन्त इव जीमूताः प्रभिन्नकरटामुखाः । राजानमन्वयुः पश्चाच्चलन्त इव पर्वताः ॥ ३२ ॥ एवं तस्य बलं भीमं कुन्तीपुत्रस्य धीमतः । यदाश्रित्याथ युयुधे धार्तराष्ट्रं सुयोधनम् ३३॥ ततोऽन्ये शतशः पश्चात् सहस्रायुतशो नराः । नदन्तः प्रययुस्तेषामनीकानि सहस्रशः ॥ ३४॥ तत्र भेरीसहस्राणि शङ्खानामयुतानि च । अभ्यवाद्यन्त संहृष्टाः सहस्रायुतशो नराः ॥ ३५ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि सप्तनवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९७ ॥

समाप्तश्चेदमुद्योगपर्व ॥

इधरसे सात्यकि सहस्रों रथ सहित चला यह दोनों पुरुष श्रेष्ठ रणश्रेष्ठ क्षत्रिय सेना पृष्ठकी रक्षा करते चले उनके साथ एक सहस्र हाथी और दशसहस्र घोड़े थे छोटे बालक बूढ़े आदि दुर्बल सेनासे पीछे छोड़ दिये गये कोश वाहक बहुतसे कोष्ठागार भरा गजानीक लेकर राजालोग साथ लेकर चले उनके पीछे सौचित्ति वसुदान और सत्यधृति काशी राजके पुत्र रहे उनके साथ बीस सहस्र रथ सब विधि भूषित थे दशकोटि घोड़े थे ।२८। बीससहस्र गजथे मद्रराजके साथ छः सहस्र हाथी और दशसहस्र घोड़े थे यहसब युधिष्ठिरकी सेना में थे । ३० । हाथी सूंड मुख आदि से मदझरनाते भूपति के सामने चलते थे । ३१ । इसप्रकार राजा युधिष्ठिरकी महाभयंकर सेना दुर्योधनकी सेनासे लड़नेको चली उसअपार सेनाका गमन कौन वर्णन करसकताहै, सहस्रों शंख भेरी हर्षयुक्त शूर बजाते चलतेथे ३५॥

and had with them a thousand elephants and ten thousand horses. Old and infirm people were left behind The kings had with them stores of everything required in the war. Sauchitti, Vasudan and Satyadhriti the sons of Kashiraj brought up the rear with twenty thousand chariots well decked, a hundred thousand horses and twenty thousand elephants. The king of Madra had with him six thousand elephants and ten thousand horses. They formed part of Yudhishthir's army. The elephants dropped sap from their trunks and mouths as they went along. Thus moved the dreadful army of Yudhishthir to cope with that of Duryodhan. The uproar of the warriors, sounding thousands of trumpets and conches in the course of their march was beyond description. 35

द्वावपनविराजेते विपरीतेनकर्मणा । गृहस्थश्चनिरारम्भः कार्यवांश्चैवभिक्षुकः ६२॥ द्वाविमौपुरुषौराजन् स्वर्गस्योपरितिष्ठतः॥ प्रभुश्चक्षमयायुक्तो दरिद्रश्चप्रदानवान् ॥ ॥ ६३ ॥ न्यायागतस्यद्रव्यस्य बोद्धव्यौद्वावतिक्रमौ । अपात्रेप्रतिपत्तिश्च पात्रेचाप्रतिपादनम् ॥ ६४ ॥ द्वावम्भसिनिवेष्टव्यौ गलेबध्वादृढांशिलाम् । धनवंतमदातारं दरिद्रंचातपस्विनम् ॥ ६५ ॥ द्वाविमौपुरुषव्याघ्र सूर्यमण्डलभेदिनौ । परिव्राड्योगयुक्तश्च रणेचाभिमुखोहतः ॥ ६६ ॥ त्रयोपायामनुष्याणां श्रूयन्तेभरतर्षभ । कनीयान्म-

पदार्थों को चाहता है व दूसरा जो, असमर्थ हो कोप करता है, वह असामर्थ्य तुम्हारे पुत्र में है । ६१ । विपरीत कर्म करने से दो पुरुष शोभित नहीं होते, एक किसी कार्य के करनेमें उदासीन गृहस्थ व दूसरा कार्य करताहुआ संन्यासी, सो आप अपने पुत्र के कलह निवारण करनेमें उदासीन रहते हैं, अच्छीतरह कभी रोकते नहीं। ६२ । हे राजन्, दो पुरुष स्वर्ग के ऊपर टिके रहतेहैं, एक क्षमायुक्त राजा, दूसरा दरिद्र होकर भी दानी, सो क्षमायुक्त राजा युधिष्ठिर हैं। ६३। न्यायसे आयेहुए धन के दो अतिक्रम हैं एक अपात्रको देना दूसरा पात्र को न देना । ६४ । दो पुरुष संसार में गलेमें बड़ी भारी पर्वतकी शिला बँधाय बड़े गहिरे पानी में फेंकदेने के योग्यहैं एक धनवान् होकरभी जो दान नहीं देता व दूसरा जो दरिद्र होकर भी तपस्या नहीं करता सो दान तुम्हारा पुत्र नहीं करता । ६५ । हे राजन् दो पुरुष सूर्यमंडल भेदनकर ऊंचे को चलेजाते हैं, एक योगाभ्यास युक्त संन्यासी, दूसरा जो सम्मुख रणमें मारागया, ६६ हे भरतर्षभ, वेदवादी लोग कहतेहैं कि उत्तम, मध्यम,

reverencing the wicked; but you respect the wicked Shakuni and such others. Two sorts of people are very credulous; a love-sick woman and a worshipper of favourites; you worship Shakuni the favourite of your son. 60. Two sorts of people have sharp thorn to make the body lean; a poor man wishing for good things and a weak man indulging in anger like your sons. Two men, doing deeds which they should not do, donot look well: firstly, a householder sitting idle and secondly, a recluse doing some work. You are indifferent in the quarrels of your son and do not check him. Two men go to paradise, the king who forgives and the poor man who gives alms; Yudhishthir is a forgiving king. There are two misuses of wealth: giving it to the undeserving and withholding it from the deserving. Two persons are worthy of being throne into deep water with a heavy stone round their necks one the rich man, who does not give,

यस्य किंकरिष्यतिदुर्ज्जनः ॥ ५५ ॥ अतृणेपतितोवन्हिः स्वयमेवोपशाम्यति । अक्षमावान्परंदोषै रात्मानंचैवयोजयेत् ॥५६॥ एकोधर्मः परंश्रेयः क्षमैकाशान्तिरुत्तमा । विद्यैकापरमा तृप्तिरहिंसैकासुखावहा ॥ ५७ ॥ द्वाविमौग्रसतेभूमिः सर्पोबिलशयानिव । राजानंचाविरोद्धारं ब्राह्मणंचाप्रवासिनम् ॥ ५८ ॥ द्वेकर्मणीनरः कुर्वन्नस्मिँल्लोके विरोचते । अब्रुवन्परुषं किञ्चिदसतोऽनर्चयंस्तथा ॥ ५९ ॥ द्वाविमौपुरुषव्याघ्र परप्रत्ययकारिणौ । स्त्रियः कामितकामिन्यो लोकः पूजितपूजकः ॥ ६० ॥ द्वाविमौ कण्टकौतीक्ष्णौ शरीरपरिशोषणौ । यश्चाधनः कामयतेयश्च कुप्यत्यनीश्वरः ॥ ६१ ॥

जिसके हाथमें है उसको दुर्जन क्या करेगा । ५५ । जहां खर न हो उस स्थानपर अग्नि गिरे सो अपने आप बुझजाय व जो क्षमा नहीं करता वह बहुत से दोषों से अपने को युक्त कराता है । ५६ । एक धर्म परम कल्याण दायक है, व एक क्षमा उत्तम शान्ति है, व एक विद्या परम तृप्ति है व एक अहिंसा सब सुख देता है । ५७ । जैसे बिल में रहनेवाले अन्य जन्तुओं को सर्प निगल जाता है वैसही, जो राजा युद्ध करने में कुशल नहीं उस राजा को, व अप्रवासी ब्राह्मण को पृथ्वी निगल जाती है, । ५८ । दो कर्म करताहुआ पुरुष इस लोक में शोभित होता है, एक कठोर वचन न बोलताहुआ, व दूसरे दुष्टों का सत्कार न करताहुआ सो दुष्ट शकुन्यादिकों का आप सत्कार करते हैं, । ५९ । दो मनुष्य औरों का विश्वास बहुत करते हैं, एक कामिनी स्त्रियां दूसरा अपने पूजितों की पूजा करने वाला, जैसे आप अपने पुत्र दुर्योधन के पूजित शकुनिकी पूजा करते । ६० । दो पुरुष लोक में शरीर शोषने के लिये बड़े तीक्ष्ण कण्टक हैं, एक निर्द्धन होकर जो उत्तम

---

giver has only this defect that he is thought weak by the people; but he should not take ill at the talk of the people, because forgiveness *is the greatest power: forgiveness is a good quality to the weak and an* ornament to the strong. Forgiveness subdues all: what can forgiveness not do? What can the wicked do to him who has the sword of forgiveness in hand? Fire falling on a place destitute of fuel goes out of itself and he who has no forgiveness makes himself open to many defects. Dharm is the best of beneficial things, forgiveness is the best peace, knowledge is the best giver of happiness and absence of cruelty gives every pleasure. The earth swallows up the King who is not dexterous in warfare and the Brahman, who does not leave home, as the serpent does with the animals living in holes. Two deeds look well in a man: abstaining from harsh words and from

होमप्रमानमौन मानेनाधीतमुतमानयज्ञः ॥ ७८ ॥ पञ्चाग्नयोमनुष्येण परिचर्याः प्रयत्नतः । पितामाताग्निरात्माच गुरुश्चभरतर्षभ ॥ ७९ ॥ पंचैवपूजयन्लोके यशः प्राप्नोतिकेवलम् । देवान् पितॄनमनुष्यांश्च भिक्षूनतिथिपञ्चमान् ॥ ८० ॥ पञ्चत्वानुगमिष्यन्ति यत्रयत्रगमिष्यसि । मित्राण्यमित्रामध्यस्था उपजीव्योपजीविन. ॥८१॥ पञ्चेन्द्रियस्यमर्त्यस्य छिद्रंचेदेकमिन्द्रियम् । ततोऽस्यस्रवतिप्रज्ञा दृते पात्रादिवोदकम् ॥ ८२ ॥ षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्याभूति मिच्छता । निद्रातन्द्रीभयंक्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥ ८३ ॥ षडिमानपुरुषो जह्याद्भिन्नां नावमिवार्णवे । अप्रवक्तारमाचार्य मनधीयानमृत्विजम् ॥ ८४ ॥ अरक्षितारंराजानं भार्याचाप्रियवादिनीम् । ग्रामकाम ञ्चगोपालं वनकामञ्चनापितम् ॥ ८५ ॥ षडेवतुगुणाःपुंसा नहातव्याः कदाचन ॥

अभयंकर हैं परन्तु विपरीत होने से भयदायक होजाते हैं, मान पूर्वक अग्निहोत्र व मानपूर्वक मौन व मानसहित पढ़ना व मानपूर्वक यज्ञ । ७८ । पिता माता अग्नि, आत्मा, व गुरु, इन पांचोंकी सेवा पांचअग्नियों के समान करनी चाहिये, ७९। व देवता, पितर, मनुष्य, भिक्षुक व अतिथि इन पाचोंकी पूजा करने से यश होता है । ८० । मित्र, अमित्र, मध्यस्थ, गुरु, व सेवक लोग, जहा २ तुम जाओगे ये पांच तुम्हारे पीछे २ चले जायँगे । ८१ । व मनुष्यके पाच इन्द्रियां होती हैं कदाचित् एक इन्द्रियमें छेद हो तो मनुष्यकी बुद्धि चूजाती जैसे चर्मके पात्रसे जल बहजाता है । ८२ । नींद, सुस्ती, भय, बैर, आलस्य, व शीघ्रता से करने वाले काम में विलम्ब करना ये ६ दोष ऐश्वर्य चाहने वाले पुरुषको चाहिये कि छोड़दें । ८३ । समुद्रके बीच में टूटीहुई नौकाके समान पुरुष इन ६ दोषोंको छोड़दें १ अप्रवक्ता आचार्य २ विनापढ़ा ऋत्विक् ३ अरक्षक राजा ४ अप्रिय वादिनी भार्या ५ ग्रामकी कामनाकिये गोपाल ६ व वन की

reverence of wise men and the destruction of sinners. Four things remove fear, though they become dreadful if done in a wrong way. Libations to fire, vow of silence, study and *yagya*. The father, the mother, Agni, the soul and the preceptor, these five should be respected like the five fires. The worship of gods, pitars, men, beggars and *guests leads to fame* 80. Friends, enemies, neutrals, preceptors and attendants will follow you wherever you go. If one of the five senses of men be defective, intellect leaks through it as water leaks out of a leather vessel. People wishing greatness should not be overpowered by sleep, sloth, fear, enmity, idleness and delay. People should leave off the following six, like a boat that is broken in the midst of water.—an uneloquent preceptor, an uneducated priest, a king who does not protect, a wife who speaks harshly, a cowherd wishing for a residence in villages and a barber

॥ ७३ ॥ चत्वारिराज्ञातुमहाबलेन वर्ज्यान्याहुः पण्डितस्तानि विद्यात् । अल्पप्रज्ञैः सहमन्त्रंन कुर्यान्नदीर्घसूत्रैरभसैश्चारणैश्च ॥ ७४ ॥ चत्वारितेतातगृहेवसन्तु श्रिया-भिजुष्टस्यगृहस्थधर्मे । वृद्धो ज्ञातिरवसन्नः कुलीनः सखादरिद्रोभगिनी चानपत्या७५ चत्वार्याहमहाराज सायस्कानिबृहस्पतिः । पृच्छतेत्रिदशेन्द्राय तानीमानि निबोधमे ॥ ७६ ॥ देवतानाञ्चसंकल्पमनुभावञ्चधीमताम् । विनयंकृतविद्यानां विनाशंपाप कर्मणाम् ॥ ७७ ॥ चत्वारि कर्माण्यभयङ्कराणि भयंप्रयच्छन्त्ययथाकृतानि । मानाग्नि

वान् राजाको चार बातें न करनी चाहिये पर उनको पण्डितही जानता है सब लोग नहीं जानते वेयेहैं अल्पबुद्धियों से, सुस्त मनुष्यों से, जो शीघ्रताके कार्य में भी सुस्ती करतेहों, व जो मारे हर्षके चंचल रहतेहों, व जो युद्धकर्म न जानतेहों केवल जुआं इत्यादि देखनाही जानतेहों इनके साथ सलाह न करें । ७४ हे तात शोभायुक्त तुम्हारेगृहमें ये चारों प्रकार के लोग विद्यमानहैं व उन्हीं से सम्मति लीजाती है व वृद्ध, ज्ञातिवाला, अवसन्न, कुलीन, सखा, दरिद्र, संतान रहित भगिनी येसब तुम्हारे घरमें हैं तौभी तुम उपदेश नहीं ग्रहण करते क्योंकि ये लोग जहां रहते अच्छाही कार्य करते हैं जैसे कि वृद्ध कुलके धर्मबताया करताहै ज्ञातिवाला सहायक होता, अवसन्न सेवा करता कुलीन बालकोंको धर्म सिखला । सखा हितकी बातें बताता, दरिद्र सदा आज्ञाकारी रहता, सन्तान रहित भगिनी धनकी रक्षा करती है । ७५ । हे महाराज, चार पदार्थ तुरन्त फल देनेवाले होते हैं यह पूंछते हुये इन्द्रजी से वृहस्पतिजी ने कहाहै वे हमसे सुनो । ७६ । देवताओंका संकल्प बुद्धि-मानोंका अनुभाव, विद्वान् लोगोंका विनय, व पापियों का विनाश । ७७ । व चारकर्म

promising to be faithful and he who says that he is yours, these three coming under refuge should not be abandoned even in the time of trouble; the Pandavas possess all the three qualifications and you are not in trouble. The giving of a boon, ruling over a kingdom, the birth of a son and relieving an enemy in distress are equal in merit. A powerful king should not do four things which are known to learned men only: one should not take advice of the unwise, the lazy, the overpleased and those ignorant of the rules of war. All these four sorts of people are found in your household and you follow their advice. You do not consult old men who can tell you of the practice of your family, relatives who are your helpers, the homeless who attend upon you, men of noble family who teach your children, friends who can give you good advice, poor men who always obey you and childless sisters who protect your wealth. All these people form part of your household and can be really good advisors. Four things, which Vrihaspati pointed out to Indra as giving immediate results, are:-the resolution of gods, the resolution of wise men, the

होत्रमुत्तमानमौनं मानेनाधीतमुत्तमानयज्ञः ॥ ७८ ॥ पञ्चाग्नयोमनुष्येण परिचर्य्याः प्रयत्नतः । पितामाताग्निरात्माच गुरुश्चभरतर्षभ ॥ ७९ ॥ पंचैवपूजयन्लोके यशः प्राप्नोतिकेवलम् । देवान्पितृन्मनुष्यांश्च भिक्षूनतिथिपञ्चमान् ॥ ८० ॥ पंचत्वानुगमिष्यन्ति यत्रयत्रगमिष्यसि । मित्राण्यमित्रामध्यस्था उपजीव्योपजीविनः ॥८१॥ पञ्चेन्द्रियस्यमर्त्यस्य छिद्रंचेदेकमिन्द्रियम् । ततोऽस्यस्रवतिप्रज्ञा दृतेःपात्रादिवोदकम् ॥ ८२ ॥ षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्याभूति मिच्छता । निद्रातंद्रीभयंक्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ॥ ८३ ॥ षडिमान्पुरुषो जह्याद्भिन्नां नावमिवार्णवे । अप्रवक्तारमाचार्य्य मनधीयानमृत्विजम् ॥ ८४ ॥ अरक्षितारंराजानं भार्य्याचाप्रियवादिनीम् । ग्रामकामञ्चगोपालं वनकामञ्चनापितम् ॥ ८५ ॥ षडेवतुगुणाःपुंसा नहातव्याः कदाचन ॥

अभयंकर हैं परन्तु विपरीत होने से भयदायक होजाते हैं, मान पूर्वक अग्निहोत्र व मानपूर्वक मौन व मानसहित पढ़ना व मानपूर्वक यज्ञ । ७८ । पिता माता अग्नि, आत्मा, व गुरू, इन पांचोंकी सेवा पांचअग्नियों के समान करनी चाहिये, ।७९। व देवता, पितर, मनुष्य, भिक्षुक व अतिथि इन पांचोंकी पूजा करने से यश होता है । ८० । मित्र, अमित्र, मध्यस्थ, गुरू, व सेवक लोग, जहां २ तुम जाओगे ये पांच तुम्हारे पीछे २ चले जायँगे । ८१ । व मनुष्यके पांच इन्द्रियां होती हैं कदाचित् एक इन्द्रियमें छेदहो तो मनुष्यकी बुद्धि चूजाती जैसे चर्मके पात्रसे जल बहजाताहै । ८२ । नींद, सुस्ती, भय, बैर, आलस्य, व शीघ्रता से करने वाले काम में विलम्ब करना ये ६ दोष ऐश्वर्य चाहने वाले पुरुषको चाहिये कि छोड़दें । ८३ । समुद्रके बीच में टूटीहुई नौकाके समान पुरुष इन ६ दोषोंको छोड़दें १ अप्रवक्ता आचार्य २ विनापढ़ा ऋत्विक् ३ अरक्षक राजा ४ अप्रिय वादिनी भार्या ५ ग्रामकी कामनाकेलिये गोपाल ६ व वन की

---

reverence of wise men and the destruction of sinners. Four things remove fear, though they become dreadful if done in a wrong way: Libations to fire, vow of silence, study and *yagya*. The father, the mother, Agni, the soul and the preceptor, these five should be respected like the five fires. The worship of gods, pitars, men, beggars and guests leads to fame. 80. Friends, enemies, neutrals, preceptors and attendants will follow you wherever you go. If one of the five senses of men be defective, intellect leaks through it as water leaks out of a leather vessel. People wishing greatness should not be overpowered by sleep, sloth, fear, enmity, idleness and delay. People should leave off the following six, like a boat that is broken in the midst of water:—an uneloquent *preceptor*, an uneducated priest, a king who does not protect, a wife who speaks harshly, a cowherd wishing for a residence in villages and a barber

सत्यं दानमनालस्यमनसूयाक्षमाधृतिः ॥८६॥ षडिमानिविनश्यन्ति मुहूर्त्तमनवेक्षणात् गावःसेवाकृषिर्भार्य्या विद्यावृषलसङ्गति. ॥८७॥ षडेतेह्यवमन्यन्ते नित्यं पूर्वोपकारिणम् । आचार्यंशिक्षिताःशिष्याः कृतदाराश्चमातरम् ॥ ८८ ॥ नारींविगतकामास्तु कृतार्थाश्चप्रयोजकम् । नावं निस्तीर्णकान्तारा आतुराश्चचिकित्सकम् ॥ ८९ ॥ आरोग्यमानृण्यमविप्रवासः सद्भिर्मनुष्यैः सहसंप्रयोगः । स्वप्रत्ययावृत्तिरभीतवासः षड्जीवलोकस्य सुखानिराजन् ॥ ९० ॥ ईर्षुर्घृणीनसन्तुष्टः क्रोधनोनित्यशङ्कितः । परभाग्योपजीवीच षडेतेनित्यदुःखिताः ॥ ९१ ॥ अर्थागमो नित्यमरोगिताच प्रिया च भार्याप्रियवादिनीच । वश्यश्चपुत्रोऽर्थकरीच विद्या षड्जीवलोकस्य सुखानिराज'

इच्छा किये नापित । ८५ । सत्य, दान, अनालस्य, अनसूया, क्षमा, व धारणाशक्ति, ये ६ गुण पुरुष को कभी न छोड़ना चाहिये । ८६ । गाय बैल, सेवा, खेती, भार्या, विद्या, व शूद्रकी संगति, इनको जो मुहूर्त भरभी देखभाले न रहे तो नष्ट होजाती हैं । ८७ । ये ६ पुरुष अपने पूर्वके उपकारीको पीछे से छोड़देते हैं व उसका अपमान करने लगते हैं विद्या पढ़चुकने पर विद्यार्थी अपने आचार्य का अपमान करते, व विवाह होजाने व स्त्री पास आनेपर पुत्र अपनी माताका अनादर करते व कन्दर्प रहित पुरुष स्त्री का, सेवक लोग कार्यकर होनेपर स्वामीका, व नावसे उतरे हुये राहीनावका, व बीमारलोग अच्छे होजाने पर वैद्य का निरादर करते हैं । ८९ । आरोग्य, अनृणहोना, विदेश में न रहना, सज्जनों के संग बैठना उठना, आनुकूल जीविका, निर्भय वास ये ६ पदार्थ मनुष्य को सुखदायक हैं । ९० । ईर्षाकारी, निर्दयी, असन्तुष्ट, क्रोधी, नित्य शंकित चित्त व पर भाग्योपजीवी ये ६ पुरुष नित्य दुखित रहते हैं । ९१ । प्रतिदिन कुछ धन आना, आरोगिता, प्रियवादिनी, प्रिय भार्य्या, अपने वश्य पुत्र, अर्थकारी विद्या ये ६ प्राणियों को

desiring to go to forest. One should never leave off truth, charity, briskness, forgiveness and patience. Cattle, worship, cultivation, a wife, knowledge and the society of a *shudra* are spoiled if you donot take care of them for a moment. Six persons are apt to forsake their former benefactors and often look down upon them: a student has no regard for his teacher after finishing his studies; a married son disregards his mother; a loveless man disregards his wife; a powerful servant disregards his master; a passenger disregards the boat after crossing a river and a patient disregards the physician after cure. Six things are conducive to happiness: health, freedom from debt, residence at home, good society, agreeable living and freedom from fear. 90. Six persons are always unhappy: the envious, the cruel, the discontented, the hot tempered, the suspicious and those who are dependant on others for their living. Six things are

न ॥ ९२ ॥ पञ्चात्मनि नित्यानामैश्वर्यं योऽधिगच्छति । नसपापैः कुतोऽनर्थैर्युज्यते विजितेन्द्रियः ॥ ९३ ॥ षडिमेषट्सुजीवन्ति सप्तमोनोपलभ्यते । चौराःप्रमत्तेजीवन्ति व्याधितेषुचिकित्सकाः ॥ ९४ ॥ प्रमदाःकामयानेषु यजमानेषुयाजकाः । राजावि- वदमानेषु नित्यंमूर्खेषुपण्डिताः ॥ ९५ ॥ सप्तदोषाःसदाराज्ञा हातव्याव्यसनोदयाः प्रायशोयैर्विनश्यन्ति कृतमूलाअपीश्वराः ॥ ९६ ॥ स्त्रियोऽक्षामृगयापानं वाक्पारु- ष्यंचपञ्चमम् । महच्च दण्डपारुष्यमर्थदूषणमेवच ॥९७॥ अष्टौपूर्वनिमित्तानि नर- स्यविनशिष्यतः । ब्राह्मणान्प्रथमंद्वेष्टि ब्राह्मणैश्चविरुध्यते ॥ ९८ ॥ ब्राह्मणस्वानि चादत्ते ब्राह्मणांश्चजिघांसति । रमतेनिन्दयाचैषां प्रशंसांनाभिनन्दति । ९९॥ नैनान्

सुखदायीहैं । ९२ । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मान, इन छवों के वशीभूत जो नहीं होता वह जितेन्द्रिय पापों के वशीभूत नहीं होता फिर अनर्थ उसके पास कहांसे आवें । ९३ । ६ प्राणी छः में जीते हैं सातवां इनको साथी कोई नहीं प्रमत्तलोगों के यहां से चोरजीते हैं, रोगियों के यहां से वैद्यलोग, कामियोंके यहांसे वेश्या, यजमानों के यहांसे यज्ञ करानेवाले, पंडित आपसमें लड़ते हुओं के यहांसे, राजालोग व मूर्खों के यहांसे पण्डित लोगजीव तेहैं । ९५ । दुःख के उदय करानेवाले ७ दोष राजाको सदा त्यागना चाहिये कि जिन दोषों से राजालोग बहुधा नष्टहोजातेहैं चाहे उनकी जड़ कैसी भी पुष्टहो । ९६ । अति स्त्री सेवन, पांशाखेलना, शिकारखेलना, मदिरापीना, कटुवचन बोलना, अतिक्रम दण्डदेना, अर्थका दूषण करना, । ९७ । व पुरुष के नाशहोने के पूर्वनिमित्तये ८ हैं १ ब्राह्मणों से वैरकरना २ ब्राह्मणों के सङ्ग विरोध करना ३ ब्राह्मणों का धनहरना ४ ब्राह्मणों के मारने की इच्छा करना ५ ब्राह्मणोंकी निन्दाकरना ६ ब्राह्मणोंकी प्रशंसा सुन प्रसन्न न होना ७

---

conducive to happiness: a regular income, health, a sweet speaking wife, an affectionate wife, an obedient son and fruitful knowledge. He who is not under the control of worldly desires, avarice, foolishness, lasciviousness and pride, has the organs under control and is not influenced by sin and injustice. Six persons get their living by the following and in no other way:—thieves get their living by the carelessness of others;—physicians live on the fees they get from patients; prostitutes live on the wealth of the lascivious; priests live by the donations of those who employ them in performing sacrifices; learned men get their living by those who quarrel with each other as well as by kings and fools. The following seven things which lead to ruin, should be cast aside by kings howsoever powerful they may be:—too much intercourse with women, gambling, hunting, drinking, abusive language, too severe punishments and rapine. The eight causes of ruin are:—enmity with Brahmans,

स्मरतिकुत्स्येषु याचितश्चाभ्यसूयति । एतान्दोषाननरःप्राज्ञो बुध्येद्बुद्ध्वाविसर्जयेत् ॥१००॥ अष्टाविमानिहर्षस्य नवनीतानिभारत । वर्तमानानिदृश्यन्ते तान्येवसुसुखान्यपि । १ ॥ समागमश्च सखिभिर्महांश्चैव धनागमः । पुत्रेणचपरिष्वङ्गःसन्निपातश्च मैथुने ॥ २ ॥ समयेच प्रियालापः स्वयूथ्येषुसमुन्नतिः । अभिप्रेतस्य लाभश्च पूजा चजनसंसदि ॥ ३ ॥ अष्टौगुणाःपुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञाचकौल्यञ्च दमःश्रुतञ्च । पराक्रमश्चाबहुभाषिताच दानंयथाशक्ति कृतज्ञताच ॥ ४ ॥ नवद्वारंपिदंवेश्म त्रिस्थूणं पचसाक्षिकम् । क्षेत्रज्ञाधिष्ठितं विद्वान् योवेदसपरः कविः ॥ ५ ॥ दशधर्मंनजानन्ति

अपने यहां कुछ कार्य्य होनेपर ब्राह्मणों का न स्मरण करना ८ ब्राह्मणों के मांगने पर उनकी निन्दा करना इन दोषों को जाने व जानकर विज्ञको चाहिये कि न करे। १००। हे भारत ८ ये हर्ष के हेतु हैं नवतों और कोई नहीं व यही ८ सुख के हेतुभी हैं १०१ १ मित्रों के साथ समागम, २ बहुत धन इकट्ठा मिलजाना, ३ पुत्रका मिलाप, ४ मैथुनके समय का सन्निपात, ५ समय पर प्रियवार्त्ता, ६ अपने वर्गवालों का उत्कर्ष, ७ वाञ्छित लाभ ८ सभा के बीचमें अपनी पूजा ८ गुण पुरुषको तेजस्वी करते हैं १ प्रज्ञा, २ कुलीनता, ३ इन्द्रियों को दमन करना, ४ शास्त्र पढ़ना, ५ पराक्रम। होना, ६ बहुत बोलनेका स्वभाव न पढ़ना, ७ यथ शक्ति दान देना, ८ उपकार मानना, ४ शरीर रूप गृह में पांच श्रोत्रादि इन्द्रियां मन, बुद्धि, अहंकार, व स्थूल शरीरये ९ द्वार हैं, अविद्या, काम व कर्म ये ३ इसके धारण करनेवाली थूंन्हियां हैं शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये ५ साक्षीहैं व चिच्छक्ति से अधिष्ठित इसको जो जानता है वह उत्कृष्ट कवि है ५ हे धृतराष्ट्र दश प्राणी धर्म नहीं जानते उनको समझो, १ मदिरादि पीनेसे मत्त, २ अन्य विषय के

quarrel with Brahmans seizing the property of Brahmans, wishing to destroy Brahmans, speaking ill of Brahmans, not showing pleasure at hearing praise from Brahmans, not calling Brahmans to assist in ceremonies and reviling the Brahmans on their asking for something. A wise man should carefully shun these defects. 100. The following eight things are conducive to pleasure and happiness and none other.—the society of friends, treasure trove, meeting with a son, the excitement of sexual passion, kind words timely spoken, the succes of one's own *party*, gain of the desired object and respect in society. Eight qualities make a man glorious:—wisdom, noble birth, control of organs, learning, prowess, absence of garrulity, charity according to means and gratitude. The five senses, the mind, the intellect, egotism and material body are the nine gates of the body; ignorance, desire and action are its three supports; sound, touch, form, taste and smell are its five witnesses and he is exceedingly wise who knows that the body exists by the power of the

धृतराष्ट्रनिबोधतान् । मत्तःप्रमत्त उन्मत्तः श्रान्तःक्रुद्धोबुभुक्षितः ॥ ६ ॥ त्वरमाणश्च लुब्धश्च भीत-कामीचतेदश । तस्मादेतेषुसर्वेषु नप्रसज्येतपण्डितः ॥ ७ ॥ अत्रैवो-दाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । पुत्रार्थमसुरेन्द्रेण गीतञ्चैवसुधन्वना ॥ ८ ॥ यः काममन्यू प्रजहातिराजा पात्रेप्रतिष्ठापयते धनञ्च । विशेषविच्छ्रुतवान क्षिप्रकारीतंसर्वलोक कुरुतेप्रमाणम् ॥ ९ ॥ जानाति विश्वासयितुंमनुष्यान विज्ञातदोषेषु दधाति दण्डम् । जानाति मात्राञ्चतथाक्षमाञ्च तंतादृशं श्रीर्जुषतेसमग्रा ॥ १० ॥ सुदुर्बलं नावजानाति कश्चिद्युक्तो रिपुंसेवते बुद्धिपूर्वम् । नविग्रहंरोचयतेबलस्थैः कालेचयोवि क्रमतेसधीरः ॥ ११ ॥ प्राप्यापदंनव्यथते कदाचिदुद्योगमन्विच्छति चाप्रमत्तः । दुः

कारण प्रमत्त, ३ धातुके दोष से उन्मत्त ४ थकाहुआ, ५ क्रुद्ध ६ बुभुक्षित, ७ दौड़ताहुआ ८ लोभी, ९ भयभीत, १० कामी, इसपे इन सबों में पंडितको न लगना चाहिये, इनमें तुम लोभीहो, ७ इस विषय में एक पुराना इतिहास है जिसे पुत्रके लिये सुधन्वा असुरेन्द्रने गाया है ८ जो राजा काम व क्रोध त्यागताहै, व पात्रको दान देता है, व विशेष बातें जानता, शास्त्र पढ़ता, शीघ्रही कार्य्य करता उसका सबलोक प्रमाण करते हैं ९ व जो पुरुष मनुष्यों को विश्वासमें लेआना जानता है व दोष प्रसिद्ध होजाने पर दण्डदेता व अपराध के अनुसार दण्डदेना जानता व ब्राह्मणादिकों के ऊपर अपराध करने परभी क्षमाकरना जानता ऐसे पुरुष की सेवा लक्ष्मी करती है । ११० । व जो शत्रु को अति दुर्बल नहीं जानता ऐसा रिपु होता बुद्धि पूर्वक उसकी वैसेही सेवा करता व बलवानों के साथ विग्रह करना नहीं चाहता व समयपर अपना पराक्रम दिखाता वह पुरुष धीर कहाता है । १११ । व जो पुरुष विपत्ति में कभी दुःखित नहीं होता व सावधानता से

mind. Ten persons who donot know *dharm* are -one who is intoxicated with wine; one intoxicated with any other thing, a mad man, a tired one, in anger, a hungry man, one who is running, one who is avaricious, one who is terrified and one who is love-sick: you are avaricious. In support of the above, there is an old historical song sung by Sudhanwa the king of asurs who composed it for his own son. The king who is free from desires and anger, gives alms to the deserving, know many things, reads the *shastras* and is quick of action, is respected by all. *And he who knows how to secure the* confidence of his people, to bring the wrong doers to justice and to punish *them accordig to the extent of their crimes*, and to *forgive* the failings of Brahmans, is served by Lakshmi 110. One who does not know an enemy to be too weak, behaves with his enemies in accordance with their strength, does not quarrel with those stronger than himself and shows his prowess in time, is called brave. And he who is not troubled by misfortunes, does his work with patience

खंचकाले राहतेमहात्मा धुरन्धरस्तस्य जिताःसपत्नाः ॥ १२ ॥ अनर्थकं विप्रवासंगृहेभ्यःपापैःसन्धिं परदाराभिमर्षम् । दम्भंस्तैन्यं पैशुनं मद्यपानं नसेवतेयस्सुखीसदैव ॥ १३ ॥ नसंरम्भेणारभते त्रिवर्गमाकारितः शंसतितत्त्वमेव । नमित्रार्थे रोचयते विवादं नापूजितःकुप्यतिचाप्यमूढ ॥ १४ ॥ योऽभ्यसूयत्यनु कम्पतेच नदुर्बलःप्रातिभाव्यंकरोति , नात्याहकिञ्चित्क्षमते चैविवादं सर्वत्रतादृग्लभतेप्रशंसाम् ॥ १५ ॥ योनोद्धतंकुरुतेजातुवेशंनपौरुषेणापिविकत्थतेऽन्यान् । नमूर्च्छित कटुकान्याह किञ्चित्प्रियंसदातंकुरुतेजनोहि ॥ १६ ॥ नवैरमुद्दीपयतिप्रशान्तं नदर्पमारोहतिनास्तमेति ।

सो सदा उद्योग करता रहता समयपर दुःख सहता व धुरन्धर कहलाता वह सबको जीत लेता है । ११२ । जो पुरुष व्यर्थ विदेश को नहीं जाता पापियोंके संग मिलाप नहीं करता व पराईका स्पर्श नहीं चाहता दम्भ, चोरी, चुगुली, व मदिरापान नहीं करता वह सदा सुखी रहता है । ११३ । व जो पुरुष क्रोध से अर्थ धर्म कामोंको सेवा नहीं करता व जहां बुलाया जाता वहां निश्चय युक्तही वचन कहता व मित्र के साथ कभी विवाद करना नहीं चाहता व आप अपूजित होने परभी कोप नहीं करता वह निश्चय पण्डित है । ११४ । व जो किसी की निन्दा नहीं करता दया सबके ऊपर रखता व आप दुर्बल होनेपर किसी से प्रतिकूलता नहीं करता व बहुत दिनोंतक किसी से विवाद नहीं करता ऐसा पुरुष सर्वत्र प्रशंसित होता है । ११५ । जो पुरुष कभी उद्धत वेष नहीं बनाता व अपने पौरुष से औरोंके सामने किसीको बकता झकता नहीं व आप मूच्छितभी होजाय तोभी किसी को कटु वचन नहीं कहता उसका प्रियवोग सदा करते हैं । ११६ । व जो पुरुष मिटे मिटाय वैरको फिर नहीं बर्द्धित कराता न अहंकार पर आरूढ़होता न बिलकुल अरतही होजाता व आप दुर्गतिमें भी पड़ाहो तोभी अकर्त्तव्य कार्य नहीं करता

and bears misfortunes bravely, is called the foremost and wins all. He who does not mix with sinners, does not touch the woman of another and obstains from deceit, theft, back-biting and drinking, is always happy. He who is free from anger in the pursuit of *dharm*, *arth* and *kam*, always speaks the truth, never wishes to quarrel with friends and b ing in power abstains from angor, is surely a Pandit. He who does not revile others, is merciful to all, being himself weak raises no enemies and never quarrels with anybody, is praised everywhere. He who does not disguise himself in false colours, d es not boast of his power and never speaks bitter words, is dear to all. He who does not try to kindle the fire of quarrel when it is once pacified, does not insist on his own haughtiness nor does he debase himself altogether or do an unworthy deed even when he is fallen into misery, is called good by the good. He who is not overpleased

नदुर्गतोस्मीतिकरोतिपकार्यं तमार्यशीलंपरमाहुरार्याः ॥ १७ ॥ नस्वेसुखेवैकुरुतेमहर्षं नान्यस्य दुःखेभवतिमहृष्टः । दत्त्वानपश्चात् कुरुतेऽनतापं सकथ्यते सतपुरुषार्यशीलः ॥ १८ ॥ देशाचारान समयान जातिधर्मान्बुभूषतेयःसपरावरज्ञः । सयत्रतत्राभिगतःसदैव महाजनस्याधिपत्यंकरोति ॥ १९ ॥ दम्भंमोहंमत्सरं पापकृत्यं राजद्विष्टंपैशुनं पूगवैरम् । मत्तोन्मत्तैर्दुर्जनैश्चापिवादं यःप्रज्ञावान् वर्जयेत्सप्रधानः ॥ २० ॥ दानं गोहंदैवतं मङ्गलानि प्रायश्चित्तान विविधाल्लोकवादान । एतानिपःकुरुते नैत्यकानि तस्योत्थानं देवताराधयन्ति ॥ २१ ॥ समैर्विवाहंकुरुतेनहीनैः समैःसख्यं व्यवहारंकथाञ्च । गुणैर्विशिष्टांश्च पुरोदधाति विपश्चितस्तस्य नयाःसुनीताः ॥ २२ ॥ मितंभुंक्ते

उस श्रेष्ठ शीलवान् पुरुषको श्रेष्ठलोग श्रेष्ठ कहतेहैं । ११७ । व जो पुरुष अपने सुख में प्रहर्षित नहीं होता न और के दुःख में प्रहृष्टहोता व देकर फिर पछितावा नहीं वह सत्पुरुषों के स्वभाव का कहाजाताहै । ११८ । व जो पुरुष देशाचार, समय व जाति धर्म को भूषित किया चाहता है वह परावरज्ञ कहाताहै वह पुरुष चाहे जहां कहीं जाय पर महाजनों का अधिपति होताहै । ११९ । व जो पुरुष दम्भ, मोह, मत्सर, पापकार्य्य राजवैरकारक, चुगली, वैरसमूह, मत्त उन्मत्त व दुर्जनों के साथ वाद नहीं करता वह प्रज्ञावान् सबों में प्रधान होताहै । १२० । व जो पुरुष, दान, गोह, देवता, मङ्गलपदार्थ प्रायश्चित्त, व विविध प्रकार के लोकवाद, इन को जो नैत्यक मानता नैमित्तिक नहीं मानता उसके कार्य की आराधना देवता करते हैं । १२१ । व जो पुरुष बराबरी वालों के सङ्ग विवाह करता हीनों के सथ नहीं करता, व बराबरी वालोंके ही साथ सख्य, व्यवहार, व कथा करता है, व जिन में विशेष गुणहोते उनको आगे बैठाय सत्कार

---

with his own happiness or at the misery of others and does not feel remorse after giving a thing, is said to be endowed with good nature. He who wishes to embellish the customs, time, society and dharm, is called the best of wise men; he becomes the chief of great men wherever he goes. He is the chief of wise men who does not talk with the deceitful, the deluded, the envious, the sinful, the enemies of the king, the backbiters, the quarrelsome, the intoxicated and the wicked.120. The good praise the work of him who regards gratuity, delusion of mind, the gods, the auspicious articles, atonement and worldly rumours as indispensable and not as accidental. The policy of that man is regarded to be the best who intermarries, mixes, makes friendship and talks with his equals and respects those whoare

संविभज्याश्रितेभ्यो मितंस्वपित्यमितं कर्मकृत्वा । ददात्यमित्रेष्वपियाचितः संस्तमात्मवन्तं प्रजहत्यनर्थाः ॥ २३ ॥ चिकीर्षितं विप्रकृतञ्चयस्य नान्येजनाः कर्मजानन्ति किञ्चित् । मन्त्रेगुप्ते सम्यगनुष्ठितेच नाल्पोप्यस्य च्यवतेकश्चिदर्थः ॥ २४ ॥ यःसर्वभूतप्रशमे निविष्टः सत्यो मृदुर्मानकृच्छुद्धभावः । अतीवसज्ञायते ज्ञातिमध्ये महामणिर्जात्य इवप्रसन्नः ॥ २५ ॥ यआत्मनापत्रपते भृशंनरः स सर्वलोकस्य गुरुर्भवत्युत । अनन्ततेजाः सुमनाःसमाहितः स्वतेजसासूर्य इवावभासते ॥ २६ ॥ वनेजाताः शापदग्धस्य राज्ञः पाण्डोःपुत्राः पञ्चपंचेन्द्रकल्पाः । त्वयैवबाला वर्द्धिताःशिक्षिताश्च तवादेशंपा-

---

करता, उस पण्डित की नीति सुनीति होती है । १२२ । व जो पुरुष अपने आश्रितों को प्रथम भाग लगाय आप कुछ प्रमाण सहित थोड़ा भोजन करता, व अमित कर्म्मकर मित रात्रतक कुछ थोड़ाशयन करता, व जो उस से कोई मांगे तो वह बैरीको भीदे, ऐसे आत्मज्ञानी के समीप अनर्थ आतेही नहीं, । १२३ । व जिसका कर्त्तव्य ऐसा गुप्त होता कि अन्यलोग कोई जानही नहीं पाते, जबतक सत्कार्यहोत्ती तब तक कोई जान नहीं पाता जब कार्य्य होजाता तभी लोग जानते हैं, ऐसे पुरुष का कोई भी अर्थच्युत नहीं होता । १२४ । व जो पुरुष सबप्राणियों से शान्तरहता, व सत्यवादी, कोमलस्वभाव, औरों के मानकरनेवाला, व शुद्ध अभिप्राय रखने वाला, अपनी जातिके लोगों के मध्यमें ऐसा प्रसिद्धहो जैसे सब मणिओंमें बड़ी खानिका श्रेष्ठमणि प्रसिद्ध होताहै । १२५ । जो पुरुष अपने आप निन्दित कर्मों से लज्जितरहता है वह सबलोक का गुरुहोताहै, व वह अनन्ततेज, प्रसन्न मन, एकाग्रचित्त, व सूर्य्यसमान प्रकाशित रहता है । १२६ । देखो शापसे दग्ध राजा पाण्डुजी के इन्द्र के तुल्य ये पांचपुत्र वनमें उत्पन्नहुये, व उन बालकों को तुम्हीं ने पढ़ा या व पढ़ाया लिखाया, व वे तुम्हारी ही आज्ञाका पालन

---

endowed with special qualifications. That sage is free from all blemishes who eats a little himself after allotting the greater part of the food to his dependents, who sleeps a little after doing much work and also gives everything on being asked, even though his enemy be the person asking it. He is never unsuccessful in his interprises whose plans remain concealed until the work is completed. He who is peaceful, truthful, pleasing, respectful and truthful, is respected by his fellows like the best jewel of the mine. He who is ashamed of wicked deeds, is respected by the world and attains great glory, happiness and peace of mind and shines like the sun. See these five sons, like Indra, were born to Pandu after he was cursed in the forest; they were brought up and bred by you and they still obey

ऴपन्त्वाभिषेक्य ॥ २७ ॥ प्रदायैषामुचितं तावराज्यं सुखीपुत्रैः सहितो मोदमानः ॥ नदेवानांनापिच मानुषाणां भविष्यसित्वं तर्कणीयोनरेन्द्र ॥ २८ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरनीतिवाक्ये त्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । जाग्रतोदह्यमानस्य यत्कार्यमनुपश्यसि । तद्ब्रूहित्वं हिनस्तात धर्मार्थकुशलोह्यसि ॥ १ ॥ त्वंमांयथावद्विदुरप्रशाधि प्रज्ञापूर्वं सर्वमजातशत्रोः । यन्मन्यसेपथ्यमदीनसत्त्व श्रेयस्करंब्रूहि तद्वैकुरूणाम् ॥२॥ पापाशङ्कीपापमेवानुपश्यन् पृच्छामित्वां व्याकुलेनात्मनाहम् । कवेतन्मेब्रूहिसर्वं यथावन्मनीषितं सर्वमजातशत्रोः ॥ ३ ॥ विदुर उवाच । शुभंवायदिवापापं द्वेष्यंवायदि वाप्रियम् । अपृष्टस्तस्य तद्ब्रूयाद्यस्य नेच्छेत्पराभवम् ॥ ४ ॥ तस्माद्वक्ष्यामितेराजन् हितंयत्स्यात्कुरून्प्रति ।

अवभी करोगे । १२७ । इससे हेतात, पाण्डवों को राज्यदे आप अपने पुत्रोंसहित प्रमुदितरहिये, व फिर आपदेवता लोगोंकी व मनुष्योंकी ओरसेभी शङ्कनीय न रहेंगे १२८॥

अध्याय ३४ ॥

धृतराष्ट्रजी इतनासुन फिर विदुरजी से पूंछने लगे कि चिन्तारूपिअग्निसे दग्धजागतेहुये हमारे करने के योग्य जो देखतेहो हे तात वही हमसे कहो क्योंकि धर्मअर्थ में तुम कुशलहो । १ । हे विदुर तुम बुद्धिपूर्वक सब हमको आज्ञादो जो कुछ युधिष्ठिर का विचार तुम्हारे विचारमें आताहै व जो कुरुवंशियोंका कल्याणकारक मानतेहो वह कहो । २ । हम पापाशङ्की हैं इस से हमें इसमें पापही देखपड़ता है, इससे व्याकुलहो तुमसे पूंछते हैं, अब तुमने जो युधिष्ठिर के मनकी बात विचारीहो वह हमसे कहो । ३ । विदुरजी यह सुन बोले, शुभहो वा पाप, वैरकी बातहो वा प्रिय, पर जिसका अन दर न चाहताहो उस से बिना पूंछेभी सब कहना चाहिये । ४ । इससे हे राजन जो तुम्हारा

---

your orders. You should give them back their kingdom. You will then be happy with your sons and will have no fear from gods or men."128.

CHAPTER XXXIV

Having heard the above, Dhritrashtra again said to Vidur, "I am careworn and sleepless; please tell me what I should do for you are well up in *dharm* and *arth*. Tell me, Vidur, by your wisdom, all that you have decided about Yudhishthir as well as what is beneficial to the Kauravas. I am of a suspicious nature and think others to be in fault; with a troubled mind I ask you to tell me what you have resolved in the case of Yudhishthir." To this Vidur replied, "We should tell those whom we love what we know, whether the information be good or bad and pleasant or unpleasant. I

वच श्रेयस्करंधर्म्यं ब्रुवतस्तन्निबोधमे ॥ ५ ॥ मिथ्योपेतानिकर्माणि सिद्ध्येयुर्यानि भारत । अनुपायमयुक्तानि मास्मतेषुमनः कृथा ॥ ६ ॥ तथैवयोगविहितं यत्तुकर्मन सिध्यति । उपाययुक्तं मेधावी नतत्रग्लपयेन्मनः ॥ ७ ॥ अनुबन्धानपेक्षेत सानुबन्धेषु कर्मसु । सम्प्रधार्यच कुर्वीत नवेगेनसमाचरेत् ॥ ८ ॥ अनुबन्धञ्च सम्प्रेक्ष्य विपाकं चैवकर्मणाम् । उत्थानमात्मनश्चैव धीरः कुर्वीतवानवा ॥ ९ ॥ यःप्रमाणंनजानाति स्थानेवृद्धौ तथाक्षये । कोशेजनपदेदण्डे नसराज्येऽवतिष्ठते ॥ १० ॥ यस्त्वेतानिप्रमाणानि यथोक्तान्यनुपश्यति । युक्तोधर्मार्थयोर्ज्ञाने सराज्यमधिगच्छति ॥ ११ ॥ न

व सब कुरुवंशियों का हित बचन होगा वही कहेंगे, कल्याणकारक व धर्मयुक्त बचन हम कहतेहैं सो वह सुनो । ५ । हे भरत, जो बचन कपट चूतादि मिथ्याकर्मों से मिले हुये हैं व असत् उपायोंसे सिद्ध होनेलायक हैं, उनमें मन कभी न करो । ६ । व जो कर्म उपाय युक्तहो चाहे सिद्धहो व न सिद्धहो सो उसमें बुद्धिमान् को अपने चित्तमें ग्लानि न करनी चाहिये । ७ । सप्रयोजन कर्मों में प्रयोजन का निश्चय प्रथम करले तदनन्तर कर्म करने का प्रारम्भ करना चाहिये वही जल्दी न करनी चाहिये । ८ । प्रथम जो करनाहो उसका प्रयोजन देखले फिर यह कि इसका फलक्या होगा, व फिर अपना उद्यम देखे कि हमारे साध्यहै या नहीं, साध्य देखाकरे असाध्य न देखा करे ।९। जो पुरुष, किला सेना वृद्धि क्षय इत्यादि कर्मोंका निश्चय नहीं जानता व कोश देशका भी निश्चय नहीं जानता वह राज्यपर स्थित नहीं रहसक्ता । १० । जो पुरुष इन सेना कोशादिकों के निश्चय अच्छीतरह जानता है, व धर्म अर्थके समझने में युक्तहै वह पुरुष राज्य पाता है । ११ । राज्यको पाय अयोग्य रीतिसे कभी न चलना चाहिये

shall tell you what is good for both the Kauravas and the Pandavas, hear from me the words that are full of dharm and giver of happiness. The words that are full of deceit and falsehood and can be established only by unfair means, should be avoided A wise man should not be ashamed of failure in doing a work the accomplishment of which be possible by fair means Before beginning a work with a purpose, you should make the purpose clear and should do nothing rashly. First you should look into the cause of what you wish to do, then the end and then your own power to see if you can accomplish it or not. He who does not ascertain the strength of his fortresses, armies, power, weakness, treasure and country, cannot be safe on his throne That man gets kingdom who knows well the management of armies, treasury and such other things and is well

राज्यंप्राप्तमित्येव वर्तितव्यमसांप्रतम् । श्रियंह्यविनयोहन्ति जरारूपमिवोत्तमम् १२॥ भक्ष्योत्तमप्रतिच्छन्नं मत्स्योबडिशमायसम् । लोभाभिपातीग्रसते नानुबन्धमवेक्षते ॥ ॥ १३ ॥ यच्छक्यंग्रसितुंग्रस्यं ग्रस्तंपरिणमेच्चयत् । हितंचपरिणामे यत्तदाद्यंभूतिमिच्छता ॥१४॥ वनस्पतेरपक्वानि फलानिप्रचिनोतियः । सनाप्नोतिरसंतेभ्योबीजं चास्यविनश्यति ॥ १५ ॥ यस्तुपक्वमुपादत्ते कालेपरिणतंफलम् । फलाद्रसंसलभते बीजाच्चैवफलंपुनः ॥ १६ ॥ यथामधुसमादत्ते रक्षन्पुष्पाणिषट्पदः । तद्वदर्थान्मनुष्येभ्य आदद्यादविहिंसया ॥ १७ ॥ पुष्पंपुष्पंविचिन्वीत मूलच्छेदंनकारयेत् । मा-

---

क्योंकि अविनय राजलक्ष्मी का नाश करता है जैसे बुढ़ापा रूपका नाश करताहै १२ । जो वस्तु मुखमें मीठी लगतीहो व खानेपर मृत्यु करती हो उसे न खाना चाहिये क्योंकि बहुत अच्छा भोजन जान मछली लोहेकी कटिया लोभके मारे लीलजाती है बखरा प्रयोजन नहीं देखती व न फल विचारती इससे प्राणजाते रहते हैं । १३ । जो वस्तु सुखसे भोजन करने के योग्यहो व भोजन करने पर अच्छीतरह पचतीहो व अन्तमें भी हितकरे कुछवातादिरोग न करतीहो ऐश्वर्य चाहनेवाला पुरुष वही पदार्थ भोजन करे । १४ । वृक्षके कच्चे फल जो पुरुष तोड़लेता वह प्रथम तो उन फलोंमें रस नहींपाता दूसरे फिर बीजकी हानि होजाती है क्योंकि कच्चेफलकी गुठलीजमतीही नहीं । १५ । व जो पुरुष समय पर पककर चुआ फल ग्रहणकरता वह फलसे रसभीपाता है व बीज से फिर फलपाता है । १६ । जैसे भ्रमर फूलोंकी रक्षाकिये रहता युक्तिसे रसही चूस लेता, इसी प्रकार राजा को चाहिये कि मनुष्योंसे धनलेले पर उनके प्राण न मारे १७ पुष्पही पुष्प तोड़ लेना चाहिये जड़से वृक्ष न उखाड़ना चाहिये जैसे माली बगिचा में

---

up in *dharm* and *arth*. Having got kingdom, one should not behave in an unkingly way; for impropriety of conduct destroys the wealth of the kingdom as old age destroys beauty. One should not eat a thing that is sweet to the taste but results in death; for a fish swallows the iron hook for the sake of good food and not knowing the purpose or result of it, loses its own life. One, wishing greatness, should take food which is worth eating, such as is easy to digest and does good. He who plucks the unripe fruit of a tree, loses the relish as well as the seed of it, whereas he who picks up the fruit that falls down from the tree after it ripens, enjoys good flavour and secures the seed from which he again gets the fruit. A king should gather taxes from his people without destroying them as the bee sucks the juice of flowers without doing them any harm. One should do no harm to the plant in plucking of flowers as a gardener does. First think

काकारइवारामे नपथाङ्गारकारकः ॥ १८ ॥ किन्तुमेस्यादिदङ्कृत्वा किं नुमेस्यादकुर्वतः इतिकर्माणिसञ्चिन्त्य कुर्याद्वापुरुषोनवा ॥ १९ ॥ अनारभ्याभवन्त्यर्था केचिन्नित्यं तथागताः । कृताःपुरुषकाराहि भवेयुर्हिनिरर्थकः ॥ २० ॥ प्रसादोनिष्फलोयस्य क्रोधश्चापिनिरर्थकः । नतंभर्त्तारमिच्छन्ति षण्ढंपतिमिवस्त्रियः ॥ २१ ॥ कांश्चिदर्थान्नरः प्राज्ञो लघुमूलान्महाफलान । क्षिप्रमारभतेकर्त्तुं नविघ्नयतितादृशान् ॥ २२ ॥ ऋजुः पश्यतियःसर्वं चक्षुषानुपिबन्निव । आसीनमपितूष्णीकमनुरज्यन्ति तंप्रजाः ॥ २३ ॥ सुपुष्पितःस्यादफलः फलितःस्याद्दुरारुहः । अपक्वःपक्वसङ्काशोनतुशीर्येतकर्हिचित् ।

पुष्पही तोड़ता है वृक्षोंको उखाड़ विध्वंस नहीं करता । १८ । यह करने से हमको कौन फल होगा, व न करने से क्या होगा इसरीति से कर्मोंका निश्चय करके फिर करने योग्यहो तौ करे न करने योग्यहो तौ न करे । १९ । बहुत काम ऐसे होते हैं कि उनके करने का आरम्भही न करना चाहिये जैसे बलवान् के साथ का वैर,क्योंकि ऐसे कामों में जो पौरुष किया वह निरर्थक होजाता है । २० । व जिस की प्रसन्नता से कुछफल नहीं मिलता व क्रोधभी जिसका निरर्थक होता क्रोधकरके भी कुछ हानि नहीं करसका उसको प्रजा अपना स्वामी नहीं बनाना चाहती जैसे नपुंसक पतिको स्त्रिया अपना पति नहीं बनाना चाहतीं । २१ । कोई २ प्रयोजन ऐसे हैं कि थे इवेतो हैं थोड़े उपाय से व उन का फल बड़ा होता है, बुद्धिमान् लोग उन के करने का आरम्भ बहुत जल्द करते हैं उन के करने में विघ्न नहीं करते । २२ । जो राजा सबको सीधी दृष्टि से मानों पीताही हुआ देखता है, वह चाहे चुपचाप बैठाभी रहे तो प्रजा उस का अनुराग करती है । २३ । कोई २

of the propriety or otherwise of a deed that you wish to do and then do it if you think it proper. It is better not to begin the doing of such things, as enemity with one stronger then *yourself*, for, energy is wasted in doing such things 20. People donot like to make him their lord by whose pleasure they can gain nothing and whose displeasure can do them no harm as women do not like to make impotent men their husbands. Some works are such as can be done by little labour but give great results, wise men make no delay in beginning such works and bring them to a succesful close. People love a king who looks them in the face as if he would drink them in though he remains silent. Some trees bear only flowers and no fruit, others bearing fruit are difficult of ascent, while some fruits look ripe though they are not so in reality. He who tries to please

॥ २४ ॥ चक्षुषामनसावाचा कर्मणाचचतुर्विधम् । प्रसादयतियोलोकं तल्लोकोऽनु प्रसीदति ॥२५॥ यस्मात्त्रस्यन्ति भूतानि मृगव्याधान्मृगाइव । सागरान्तामपिमहीं लब्ध्वा सपरिहीयत ॥ २६ ॥ पितृपैतामहंराज्यं प्राप्तवानस्वेनकर्मणा । वायुरभ्रमिवासाद्य भ्रंशयत्यनयोस्थित ॥ २७ ॥ धर्ममाचरतोराज्ञः सद्भिश्चरितमादितः । वसुधावसुसम्पूर्णा वर्द्धतेभूतिवर्द्धिनी ॥ २८ ॥ अथसन्त्यजतोधर्म मधर्मञ्चानुतिष्ठतः । प्रतिसंवेष्टते भूमिरग्नौ चर्माहितं यथा ॥ २९ ॥ य एव यत्नः क्रियते परराष्ट्रविमर्द्दने । स एव यत्नः कर्त्तव्यः स्वाराष्ट्रपरिपालने ॥ ३० ॥ धर्मेण राज्य

वृक्ष अच्छीतरह फूलते हैं पर फलते नहीं, व फलतेहैं तोभी वही कठिनता से चढ़ने के योग्य होताहै, व कोई पकानहीं है पर वे पके समान जानपड़ता है, वह कभी चूता नहीं । २४ । व जो पुरुष, देखने से, मनसे, वचनसे, व कर्म से सेवकों को प्रसन्न रखता है उसके ऊपर सेवकभी प्रसन्न रहते हैं । २५ । जैसे व्याधोंको देख मृगगण डरते हैं वैसेही जिसको देख सब प्राणी डरतेहों वा वह पुरुष चाहे समुद्र पर्य्यन्त सबकी पृथ्वी का राजा होजाय तोभी उसका राज्य छूटजाय । २६ । व जो अन्यायी पुरुष है चाहे अपने पितृ पितामहोंका राज्य अपने कर्म से पाभी जाय परन्तु वह राज्य नष्ट करदेता है, जैसे कि पवन बादर को नष्टकरदेताहै ।२७। जो राजा धार्मिक सज्जनोंके किये धर्म करता है ऐश्वर्य बढ़ानेवाली उसकी पृथ्वी धनसे पूर्णहोजाती है ।२८। व धर्म छोड़नेवाले व अधर्म करनेवाले राजाकी पृथ्वी जानों सकुचित होजाती अन्नादि नहीं उपजाती जैसे चमड़ेसे ढाक देनेसे अग्नि सकुचित होजाताहै ।२९। जो यत्न लोग शत्रु राज्यके नाशन में करते हैं वही यत्न अपने राज्यके पालन में करें तो अच्छाहो ।३०। धर्म से राज्य मिलताहै इससे धर्मही

---

his attendants with the eye, the mind, the word and the deed, secures their good will He at the sight of whom people are terrified like deer at the sight of a fowler, will lose his kingdom though he be the ruler of the whole earth to the verge of the sea. And an unjust man loses the kingdom which he inherits from his ancestors as wind disperses clouds The king who follows the practice of his forefathers in doing acts of virtue, finds his kingdom full of wealth. The territory of the wicked king becomes as it were contracted as fire does when it is covered with leather, and does not produce corn. Kings can do much good to their own territories if they try as hard to improve them as they do to destroy the countries of their enemies 30 Kingdom is got by Dharm therefore we should rule with Dharm, so that we may be prosperous prosperity does not for

विन्देतधर्मेणपरिपालयेत् । धर्ममूलांश्रियंप्राप्य नजहातिनहीयते ॥ ३१ ॥ अप्युन्मत्तात् प्रलपतो बालाच्चपरिजल्पतः । सर्वतः सारमादद्यादश्मभ्य इवकाञ्चनम् ॥ ३२ ॥ सुव्याहृतानिसूक्तानि सुकृतानिततस्ततः । सञ्चिन्वन्धीरआसीत शिलाहारीशिलं यथा ॥ ३३ ॥ गन्धेनगावःपश्यन्ति वेदैःपश्यन्तिब्राह्मणाः । चारैःपश्यन्ति राजा-नश्चक्षुर्भ्यामितरेजनाः ॥ ३४ ॥ भूयांसंलभतेक्लेशं यागौर्भवतिदुर्दुहा । अथया सुदुहा राजन्नैनतांवितुदन्त्यपि ॥ ३५ ॥ यदतप्तंप्रणमतिन तत् सन्तापयन्त्यपि । यच्चस्वयंनतंदारु नतत्सन्तापयन्त्यपि ॥ ३६ ॥ एतयोपमयाधीरः सन्नमेतबलीयसे । इन्द्रायसप्रणमते नमतेयोबलीयसे ॥ ३७ ॥ पर्जन्यनाथाःपशवो राजानोमन्त्रिबान्धवाः

से राज्यका पालनभी करे जिस में धर्ममूल राजलक्ष्मी पाय न उसको छोड़ना पड़े न राजलक्ष्मी उसे छोड़े, । ३१ । चाहे उन्मत्त । के कारण कोई अनर्थ वचनभी कहताहो व चाहे कोई बालक कुछ बकताहो पर उसमें की भी सारांश बातों को ग्रहण करके जैसे पत्थरों के बीचसे सुवर्ण निकाल लिया जाता है । ३२ । पण्डितस्य युक्तवचन, व सुन्दर रीतिसे कहे माता पिता गुरु आदि के वचन, व अच्छी तरह कहे हुये चाहे जिसके वचनहों उनकोभी चुन २ ग्रहण करे जैसे शीला बीनने वाले एक २ अन्नचुनते हैं ३३ गाय बैल गन्धसे देखते हैं, व ब्राह्मणलोग वेदताओं के द्वारा सब देखते, व राजालोग दूतों के द्वारा देखतेहैं, व अन्यलोग नेत्रोंसे देखते हैं ३४ जो गाय लतही होनेके कारण बड़ी कठिनता से दुहने देती व छोड़ने बांधने आदि कितने कष्ट पाती है, व जो सीधी होती दुहने देती है उसको कोई कुछव्यथा नहीं देता ३५ जो विना तपाये झुकजावे उसे लोग नहीं तपाते, जो बांस अपने आप सीधा रहता उसे कोई सीधा होनेके लिये नहीं तपाते ३६ इसी उपमासे धीरका चाहिये कि बलवान को देख आप नम्रहोजायँ, व जो

---

sake him who does not forsake Dharm. Extract truth from the words of a madman or even a prattling child as one draws gold out of stones. Pick up the words of wisdom as well as the good words of mother, father preceptor or any one else, as a gleaner picks up the grains of corn one by one. Cattle perceive things by smell, Brahmans can see by the divine powers, kings see through spies and other people with their own eyes. A wicked cow which kicks at the time of being milked is badly treated while a meek one receives kind treatment. People do not heat the metal which can be bent without heating; the bamboo which remains straight does not suffer heat. In a like manner, a wise man should bow down to the strong; for he who bows down to the strong, does so to Indra and the latter is kind and merciful to him. Clouds give nourishment to cattle,

पतयोबान्धवाःस्त्रीणां ब्राह्मणावेदबान्धवाः ॥ ३८ ॥ सत्येनरक्ष्यतेधर्मो विद्यायोगेन रक्ष्यते । मृजयारक्ष्यतेरूपं कुलंवृत्तेनरक्ष्यते ॥ ३९ ॥ मानेनरक्ष्यते धान्यमश्वान रक्षत्यनुक्रमः । अभीक्ष्णदर्शनंगाश्च स्त्रियोरक्ष्याःकुचेलतः ॥४०॥ नकुलंवृत्तहीनस्य प्रमाणमितिमेमतिः । अन्त्येष्वपिहिजातानां वृत्तमेवविशिष्यते ॥ ४१ ॥ यईर्षुः परवित्तेषु रूपेवीर्येकुलान्वये । सुखसौभाग्यसत्कारे तस्यव्याधिरनन्तकः ॥ ४२ ॥ अकार्यकरणाद्भीतः कार्याणांच विवर्जनात् । अकालेमन्त्रभेदाच्चयेनमाद्येन्नतत्पिबे-

---

पुरुष बलवान् के आगे नम्र होताहै वह इन्द्रको प्रणाम करता है इस से इन्द्रभी उस के ऊपर दया करते हैं, प्रयोजन यह है कि पाण्डवलोग बलवान् हैं उन के सामने तुम झुकचलो तो अच्छाहै। ३७ । पशुओं के स्वामी मेघहैं, व राजाओं के बान्धव दूत लोग हैं, स्त्रियोंके बान्धव पतिलोग होतेहैं, ब्राह्मणों के बान्धव वेदहैं, इस से पाण्डवोंके समाचार तुम दूतोंके द्वारा जानलो क्योंकि राजाओं के बान्धव दूतही हैं, । ३८ । सत्य से धर्मकी रक्षाहोती है व विद्याकी रक्षा योग से होती, शुद्धता से रूपकी रक्षाहोती, व आचार से कुलकी रक्षा होती है, इस से सत्य की रक्षाकरो। ३९ । तोल नाप करने से अन्नकी रक्षा होती है, घोड़ोंकी रक्षा दाना खुवाने आदिसे होती है, व बार २ देखनेसे गाय बैलोंकी रक्षाहोती व स्त्रियोंकी रक्षा मलीन फटे आदि वस्त्रोंसे होती है, क्योंकि सुन्दरवस्त्र धारण करने से उन के गाहक और लोग होजाते हैं । ४० । हम जानते हैं कि आचारहीन पुरुष का कुल कुछ प्रमाण नहीं होता क्योंकि जो अन्त्यजों में भी उत्पन्न हैं आचार करने से विशेष होजाते हैं । ४१ । व जो पुरुष, दूसरे के धन, रूप, वीर्य, कुल सुख, सौभाग्य व सत्कारादिकी ईर्ष्या करताहै, उस के अनन्त रोग बने रहते, इस से तुमभी पांडवोंकी ईर्ष्या न करो। ४२ । अकर्तव्य करने से सदा

---

spies are kinsmen to kings, husbands are the kinsmen of women and the Vedas are the kinsmen of Brahmans Truth protects Dharm, yoga protects knowledge, chastity protects beauty and good conduct protects the family: you must protect truth. Corn is protected by weights and measures, horses are protected by grooming, cattle are protected by constant care and women are protected by dirty and torn clothes. 40. We know that an unprincipled man is not respected though born of a noble family, while a low born man may become great. He who envies the wealth, beauty, strength, noble birth, happiness, good fortune and respect of another, is surrounded by many ills; you should not therefore envy the Pandavas. Abstain from deeds that are not worth doing, from neglect of duty and from

त् ॥ ४३ ॥ विद्यामदो धनमदस्तृतीयोऽभिजनोमदः । मदाएतेऽवलिप्तानां एतएवसतांदमाः ॥ ४४ ॥ असंतोऽभ्यर्थिताः सद्भिः किंचित्कार्यंकदाचन । तावज्ञातस्व सुकृतं किंचित्कार्यंकदाचन । मन्यंतेसन्तमात्मानं असंतमपि विश्रुतम् ॥ ४५ ॥ गतिरात्मवतांसन्तः संतएवसतांगतिः । असतांचगतिःसंतो नत्वसंतः सतांगतिः ॥ ४६ ॥ जितासभावस्त्रवतामिष्टाशागोमताजिता । अध्वाजितोयानवतासर्वं शीलवताजितम् । ॥४७॥ शीलंप्रधानंपुरुषे तद्यस्येहप्रणश्यति । नतस्यजीवितेनार्थो नधनेनननबन्धुभिः

करता रहे व कर्तव्यों के न करने से भी डरे, व कार्यसिद्धके प्रथम मन्त्र भेदसेभी डरे, व जिसके पीने से मद होताजावे उसे न पीवे । ४३ । विद्यामद, धनमद, व परिवार का मद, ये तीन संसार में मद होते हैं, परन्तु ये मद अहंकारियों कोही होते सज्जनों के लिये येही सब दमहोजाते अर्थात् सज्जनलोग विद्यादि होने से औरभी अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें रखते । ४४ । असज्जन लोगोंकी जब सज्जनलोग किसी कार्य के करने के लिये प्रार्थना करते हैं, तो वे असज्जन भी हैं पर अपना को सज्जन मानने लगते हैं, चाहे उनका कुछ कार्य भी न करें पर उनके पूंछनेहीपर समझने लगते हमने इनकाकार्य करदिया । ४५ । आत्मज्ञानियोंकी गति सज्जन लोगही हैं, व सज्जन सज्जनों की भी गति हैं तथा असज्जनों की गतिभी सज्जन हैं व असज्जन सज्जनोंकी गति किसी प्रकार नहीं हैं । ४६ । सुन्दरवस्त्र धारणकिये पुरुष सभाजीतलेता, इन्द्रियजित पुरुष मीठे भोजनकरनेकी आशा जीतलेता, किसी सवारीपर सवारपुरुष मार्गजीतलेता, व शीलवान् सबकुछ जीतलेता है, । ४७ । इससे पुरुष में शीलही प्रधानहै, वह जिसका नष्टहोगया, उसको न कुछ जीनेसे प्रयोजनहै, न धनसे न बान्धवोंसे, इससे आप शीलकी रक्षाकरें धनाढ्यों के भोजन में मासकी उत्कृष्टता समझीजाती है व मध्यम लोगों के में गोरसकी,

disunion as well as from drinking the intoxicating liquors There are three sources of pride in the world, namely learning, wealth and noble birth, these are found in shallow minded men only, but in good men they are turned into the means of controlling the passions, for instance, a learned man is better able to control his organs of senses When good men apply to bad men for help the latter think themselves great and though they may not be of any service to the former, they think that they have done what they could. Virtuous men are the refuge of sages, the virtuous and the wicked, a wicked man cannot be the refuge of the virtuous. A well dressed man wins the hearts of an assembly one, having his passions under control, wins the desire of taking sweetmeats, a rider wins distance by his swiftness, and a virtuous man wins all *So virtue is the chief thing in man,* he who has lost it, neither life nor wealth or friends can avail him

। ४८ ॥ आढ्यानांमांसपरमं मध्यानांगोरसोत्तरम । तैलोत्तरंदरिद्राणां भोजनंभरतर्षभ ॥ ४९ ॥ सम्पन्नतरमेवान्नं दरिद्राभुञ्जतेसदा । क्षुत्स्वादुतांजनयति साचाढ्येषुसुदुर्लभा । प्रायेणश्रीमतां लोके भोक्तुंशक्तिर्नविद्यते । जीर्यन्त्यपिहिकाष्ठानि दरिद्राणांमहीपते॥ ५१ ॥ अवृत्तिर्भयमन्त्यानां मध्यानांमरणाद्भयम् । उत्तमानान्तु मर्त्यानामवमानात् परंभयम् ॥ ५२ ॥ ऐश्वर्यमदपापिष्ठा मदाःपानमदादयः । ऐश्वर्यमदमत्तोहि नापतित्वा विबुध्यते ॥ ५३ ॥ इन्द्रियैरिन्द्रियार्थेषु वर्तमानैरनिग्रहैः । तैरयंताप्यतेलोको नक्षत्राणिग्रहैरिव ॥ ५४ ॥ योजितः पञ्चवर्गेण सहजेनात्मकर्पि-

व दरिद्रों के में तैलकी उत्कृष्टता समझीजाती है, इससे आप शीलवान्हों उसमें दारिद्र्यभी

प्राप्तहोगी तोभी कल्याणही है । ४९ । दरिद्रलोग केवल अन्नहीको अच्छीतरह बनाय चुनाय सदा भोजनकरते हैं मांस गोरस कुछनहींपाते, परन्तु भूंख उनको ऐसास्वादु उत्पन्न कराती है जो धनाढ्यों को बहुतही दुर्लभहै । ५० । बहुधालोक में धनवानों के भोजन करनेकी शक्तिही रहजाती क्योंकि उनके कुछ पचताही नहीं व दरिद्रोंके पेटों में काष्ठभी पचजाते हैं । ५१ । निकृष्टलोगोंको आजीविका की भयलगी रहती है कि ऐसा न हो कभी जीविका न मिले, मध्यम लोगोंको मरने की भय लगी रहती, व उत्तम मनुष्यों को अपमान होनेकी भय रहती, इससे शील न होनेसे महाभारी अपमान होगा जिससे बड़ा क्लेशहोगा । ५२ । ऐश्वर्य का मद महापापिष्ठहोता है क्योंकि उसी से मदिरा पीने आदि के मद उत्पन्नहोते हैं, ऐश्वर्य मदसे मतवाला पुरुष जबतक ऐश्वर्यसे पतित नहीं होजाता तब तक नहीं जानता । ५३ । इन्द्रियों के अर्थोंमें वर्तमान बिना रोकी हुई इन्द्रियों से लोग तपाये जाते हैं जैसे सूर्यादि ग्रहों से नक्षत्र तपाये जाते हैं । ५४ । जबरदस्ती खींचने

Flesh is regarded the best food for the rich, milk for the middle classes and oil for the poor; be virtuous, though you may have to encounter poverty. Poor men prepare food grains in various ways without flesh and milk; but apetite makes the coarse food so palatable to them as it is impossible for the rich. 50. Many rich men of the world have no apetite, because they have lost the power of digestion; but a poor man can digest wood within his belly. Poor men care for their livelihood; the middle classes are much in fear of death, while the upper ones are afraid of contempt. You should be afraid of contempt and the consequent grief, if you are wanting in virtue. The intoxication of wealth is the worst form of drunkenness, because from it arises the evil habits of drinking wine and such others: one intoxicated with the pride of wealth does not awake until he loses all. People get heat from their uncontrolled passions as the

णा । आपदस्तस्य वर्द्धन्ते शुक्लपक्ष इवोडुराट् ॥ ५५ ॥ अविजित्य य आत्मानममा-
त्यान् विजिगीषते । अमित्रान्वाजितामात्यः सोऽवशः परिहीयते ॥ ५६ ॥ आत्मान-
मेवप्रथमं द्वेष्यरूपेण योजयेत् । ततोऽमात्यानमित्रांश्च नमोघं विजिगीषते ॥५७॥ वश्ये-
न्द्रियंजितात्मानं धृतदण्डं विकारिषु । परीक्ष्यकारिणंधीरमत्यन्तं श्रीर्निषेवते ॥ ५८ ॥
रथःशरीरंपुरुषस्य राजन्नात्मा नियन्तेन्द्रियाण्यस्यचाश्वाः । तैरप्रमत्तःकुशली सदश्वैर्दा-
न्तैः सुखंयातिरथीवधीरः ॥ ५९ ॥ एतान्यनिगृहीतानि व्यापादयितुमप्यलम् । अ-
विधेयाइवादान्ता हया पथिकुसारथिम् ॥ ६० ॥ अनर्थमर्थतः पश्यन्नर्थंचैवाप्य

वाली पांच इन्द्रियों से खींचेहुये पुरुषके ऊपर आपत्तियां बढ़तीहैं, जैसे शुक्लपक्ष में बहुत बढ़जाने से चन्द्रमाके ऊपर कृष्णपक्षहोतेही विपत्ति आजाती है इससे आपभी ऐश्वर्य्य मत्तहोगयेहैं आपत्तिको प्राप्तहुआ चाहते हैं । ५५ । जो राजा अपनेको विनाजीते अमात्यों के जीतनेकी इच्छाकरता है व शत्रुओं केही जीतनेकी इच्छा करता है वह अमात्यादिकों को जीत नहीं सक्ता अवशहो आपही हीनहोजाता है।५६ प्रथम अपने शरीरहीको वैरीसमझ करके जीते, तो अमात्यों व शत्रुओंको सहजहीमें जीतले ।५७। क्योंकि जितेन्द्रिय जितात्मा, व विकार करनेवालोंको दण्डदेनेवाले, व सब कार्य्य परीक्षा लेकर करनेवाले पुरुषकी सेवा लक्ष्मी नित्य किया करती । ५८ । हे राजन् यह पुरुषका शरीररथहै, आत्मा, इसकासारथि, व इन्द्रियां घोड़े हैं, जो इन्द्रिया अच्छीतरह दमनकर सिखलाईगई तो सिखेहुये घोड़ों के समान इसरथ को चलाती हैं फिर सुखपूर्वक जीव इसपर सवारघूमता जैसेरथी रथपरचढ़ सुखसे जाता ।५९। व येही इन्द्रिया जो अपने वशमें न रक्खीगईंतो फिर मारडालनेपरभी तैयार होजाती हैं, जैसे जो घोड़े वशमें नहीं हैं वे मार्ग में अनाड़ी सारथिको मारडालते । ६० । अर्थके हेतु जो अनर्थ देखता व अर्थको अन्यायसे देखता, वह अजितेन्द्रिय बाल

stars do from the sun One overpowered by the powerful five senses is surrounded with troubles, as the moon when she becomes full begins to wane for the next fifteen days. You have become intoxicated with the pride of power and so you are about to be harrassed with troubles. The king who without controlling his own passions, tries to control his ministers and to win his enemies, becomes powerless instead of being able to gain his purpose. Considering your own body as your enemy you should first control yourself and then you will be able to control your ministers and to win your enemies; for the goddess of wealth attends upon the person who has control over his passions and self, punishes the wrongdoers and does other works carefully. The human body is a chariot, the soul is its driver and the organs of the senses are the horses; if the organs are well trained, they carry the chariot like well trained,

नर्थतः । इन्द्रियैरजितैर्बालः सुदुःखंमन्यतेसुखम् ॥ ६१ ॥ धर्मार्थौयःपरित्यज्य स्या दिन्द्रियवशानुगः । श्रीप्राणधनदारेभ्यः क्षिप्रंसपरिहीयते ॥ ६२ ॥ अर्थानामीश्वरो यःस्या दिन्द्रियाणामनीश्वरः । इन्द्रियाणामनैश्वर्यादैश्वर्याद्भ्रश्यते हिसः ॥ ६३ ॥ आत्मनात्मानमन्विच्छेन्मनोबुद्धीन्द्रियैर्यतैः । आत्माह्येवात्मनोबन्धुरात्मैवरिपुरात्मनः ॥ ६४ ॥ बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनैवात्मात्मनाजितः । सएवनियतोबन्धुः सएवनि यतोरिपुः ॥ ६५ ॥ क्षुद्राक्षेणेवजालेन झषावपिहितावुरू । कामश्चराजन्क्रोधश्च तौ प्रज्ञानं विलुम्पतः ॥ ६६ ॥ समवेक्ष्येहधर्मार्थौ सम्भारान्योऽधिगच्छति । सवैसम्भृ तसम्भारः सततंसुखमेधते ॥ ६७ ॥ यःपञ्चाभ्यन्तरान् शत्रूनविजित्य मतीमयान्। जिगीषति रिपूनन्यान् रिपवोऽभिभवन्तितम् ॥ ६८ ॥ इह्यन्तेह्यमहात्मानो बध्यमा

बुद्धि पड़े दुःखको सुख मानता है । ६१ । व जो पुरुष धर्म, व अर्थको छोड़ केवल इन्द्रियोंके ही वशमें पड़ारहता है वह लक्ष्मी, प्राण, धन, व स्त्रियोंसे शीघ्रही परित्याग किया जाता है । ६२ । जो पुरुष केवल अर्थही का ईश्वर रहकर इन्द्रियोंका अनीश्वर होजाता है, वह इन्द्रियों के अनैश्वर्यके हेतु ऐश्वर्यहीसे भ्रष्ट होजाताहै । ६३ । बुद्धि से जीतेहुये मन बुद्धि व पांचइन्द्रियों से आत्माको वशमें करे, क्योंकि आत्माकाबन्धु आत्माही है व आत्माकारिपुभी आत्माही है । ६४ । व वह आत्माका बन्धुभी आत्माही है, जिसने आत्मा से आत्माको जीतलिया वह निश्चय बन्धु समान है, व रिपुके भी समान है । ६५ । हे राजन सूक्ष्म छिद्रके जालमें फँसीहुई दो मछलियों के समानकाम व क्रोध प्रज्ञाकालोप करदेते हैं । ६६ । जो पुरुष अर्थ धर्मको देख अर्थसिद्ध करने की सामग्री इकट्ठीकरता, वह पुरुष सामग्रीकर सुखपाता है । ६७ । जो पुरुष भीतर की पांच इंद्रियों को विनाजीते मन से उत्पन्न और शत्रुओंका जीतना चाहता है उसका अनादर

horses and the soul *rides* in it happily like a charioteer. But if the passions are not kept under control they will bring about your ruin, as the horses which run away out of control kill the ignorant driver. 60. He who, with uncontrolled passions, foolishly desires to gain his purpose by unfair means, mistakes great misery for happiness. He who, having abandoned *dharm* and *arth*, is influenced by passions, is forsaken by wealth, life, glory and women. He who, being the lord of wealth, loses control over his organs, falls from greatness on account of that weakness. Control your soul by the wise control of mind, intellect and the five senses; for the soul is its own friend and enemy. The soul is its own relation too: whoever wins the soul by the help of the soul is his own friend and enemy, like two fishes cought in a net of small holes, desire and anger drive away wisdom. He who, having his eye on *arth* and *dharm*, collects materials to gain conquest, brings about happiness. He who with-

नाऽस्वकर्मभिः । इन्द्रियाणामनीशत्वाद्राजानो राज्यविभ्रमैः ॥ ६९ ॥ असन्त्यागात् पापकृतामपापांस्तुल्यो दण्डःस्पृशते मिश्रभावात् । शुष्केणार्द्रंदह्यते मिश्रभावात् तस्मात्पापैः सहसन्धिनकुर्यात् ॥ ७० ॥ निजानुत्पततःशत्रून पञ्चपञ्चप्रयोजनान् । योमोहान्ननिगृह्णाति तमापद्ग्रसतेनरम् ॥ ७१ ॥ अनसूयार्जवंशौचं सन्तोषःप्रियवादिता । दमःसत्यमनायासो नभवन्तिदुरात्मनाम् ॥ ७२ ॥ आत्मज्ञानमनायासस्तितिक्षा धर्मनित्यता । वाक्चैवंगुप्तादानञ्च नैतान्यन्त्येषुभारत ॥ ७३ ॥ आक्रोशपरि

वे शत्रुकाडालते हैं देखते हैं कि बड़े २ महात्मा राजालोग इन्द्रियों को वश न करने के कारण, अपने कर्म्मों से व राज्यके विभ्रमों से बांधेजाते हैं । ६८ । ऐश्वर्य्य के विलास सहित अपने कर्मों से बहुतसे महात्मा राजा अजितेन्द्रिय होने से बँधे देखगये । ६९ । पापियों के सम्बन्ध से अपापियोंको पापियों के तुल्यही दण्डहोताहै, क्योंकि उन दोनों के एकत्र रहने से मित्रभाव होजाताहै, जैसे सूखे ईंधन के सङ्गमिलाकर बालने से गीलाभी जलजाताहै, इससे पापियोंके सङ्ग मिलाप न करना चाहिये । ७० । रस शब्द स्पर्शादि पञ्चप्रयोजन ,सहित शत्रुरूप रसनादि पांच इन्द्रियों को जो पुरुष मोहवश अपने वशमें नहीं रखता उस पुरुषको विपत्ति ग्रसलेती है । ७१ । अनिन्दा, सरलता, पवित्रता, सन्तोष, प्रियबोलना, इन्द्रियोंका दमन करना, सत्यता, विनाप्रयास कुछकार्य्य करना, दुराचारियों के इतनी बातें नहीं होतीं । ७२ । व, आत्मज्ञान, विनाप्रयासके कुछ कार्य्य करना, सहनशीलता, धर्मकी स्थिरता, गुप्तवाणी, व दान ये पदार्थ नीचों के नहीं होते । ७३ । रूखीबोली, व निन्दासे मूर्ख लोग पंडितोंकी हिंसा करतेहैं, परन्तु रूखी बोली

---

out controlling the five senses, wishes to conquer other enemies born of mind, has to suffer defeat at the hands of those enemies. We see many a king bound by his own deeds and the vicissetudes of fortune for want of control over the passions. Many great kings are bound by the enjoyment of wealth and their own deeds for want of control over their senses. Innocent people are punished like sinners by mixing with the latter as green wood is burnt along with the dry fuel. 70. He who does not control his five senses together with their motives, falls into troubles. Ill-behaved persons donot passess the following virtues:-freedom from wickedness, honesty, purity, contentment, sweetness of speech control over senses, truthfulness and doing things without exertion. Ignoble men cannot possess the knowledge of self; cannot perform works without exertion; have no

वादाभ्यां विदिंसन्त्यबुधाबुधान । वक्तापापमुपादत्ते क्षममाणो विमुच्यते ॥ ७४ ॥ हिंसावलमसाधूनां राज्ञांदण्डविधिर्बलम् । शुश्रूषातुबलंस्त्रीणां क्षमागुणवतांबलम्७५ वाक्संयमोहिनृपते सुदुष्करतमोमतः । अर्थवच्चविचित्रञ्च नशक्यंबहुभाषितुम् ॥ ॥ ७६ ॥ अभ्याव्रहतिकल्याण विविधंवाक्सुभाषिता । सैवदुर्भाषिता राजन्ननर्थायोपपद्यते ॥ ७७ ॥ रोहतेसायकैर्विद्धं वनंपरशुनाहतम् । वाचादुरुक्तंबीभत्सं नसंरोहतिवाक्क्षतम् ॥ ७८ ॥ कर्णिनालीकनाराचा न्निर्हरन्तिशरीरतः । वाक्शल्यस्तुन निर्हर्त्तुं शक्योहृदिशयोहिसः ॥ ७९ । वाक्सायका वदनान्निष्पतन्ति यैराहतःशोचतिरात्र्यहानि । परस्यनामर्मसुते पतन्तितान् पण्डितो नावसृजेत् परेभ्यः ॥ ८० ॥ य-

---

व निन्दाके कहनेवाला पापी होता व क्षमा करनेवाला छूटजाता है ७४। असाधुओंको हिंसाका बलहोता, व राजाओंको दण्ड विधानका बलहोता, स्त्रियोंको शुश्रूषा करनेका, व गुणवानोंको क्षमाकाबलहोताहै । ७५ । निश्चित वचन बोलना राजाको बहुतदुष्कर होता है, क्योंकि अर्थयुक्त व विचित्र वचन बहुत कोई नहीं बोलसक्ता । ७६ । अच्छा बोलना विविधप्रकारके कल्याण प्राप्त कराता है, और खराब बोलना अनर्थ उत्पन्न कराता है । ७७ । बाण लगने से जो घाव होता वह फिर भरजाता व कुल्हारी से काटा वन फिर हरियाता है, परन्तु जो दुर्वचन लगनेसे छेद होजाता वह कभी नहीं भरता ।७८। कानके आकारकी गांसीवाले व फोंफुरी नलीसे चलनेवाले बाण लगनेपर मनुष्य निकाल लेतेहैं परन्तु वचनबाण कोई निकाल नहीं सक्ता, क्योंकि वह हृदयमें सदा सोयाकरता इससे खटकतारहता । ७९ । बाणीरूप बाण मुखसे निकलते हैं, जिनके लगनेसे रात्रि दिन पुरुष शोचता है, वे दूसरेके सुकुमार स्थलमें लगतेहैं इससे विद्वान् लोग दूसरोंके

---

forbearance, firmness on religion, secret communication and charity. Fools insult learned men by harsh words and dispraise, but sin attaches to the reviler and not to the forgiver. The strength of wicked men lies in doing injury, of kings in dealing punishment, of women in obedience and of the virtuous in forgiveness. It is hard for a king to speak deliberately, for everyone has not the power of speaking various words that are full of meaning. Sweet words give many blessings to the speaker, while harsh words are harmful. The wound caused by an arrow is healed again and the forest cut by the axe becomes again great, but harsh words inflict never healing wounds. Barbed arrows piercing the body can be extracted, but none can extract a word arrow which lies for ever rankling in the breast. The arrows of words come out of the mouth, wounds caused by them smart day and night and penetrate the most delicate parts

स्यैदेवा ययच्छन्ति पुरुषायपराभवम् । बुद्धिंतस्यापकर्षन्ति सोऽवाचीनानिपश्यति । ॥ ८१ ॥ बुद्धौकलुषभूतायां विनाशेप्रत्युपस्थिते । अनयोनयसङ्काशो हृदयान्नापसर्पति ॥ ८२ ॥ सेयंबुद्धिःपरीतातेपुत्राणांभरतर्षभ । पाण्डवानांविरोधेन नचैनानवबुध्यसे ॥ ८३ ॥ राजालक्षणसम्पन्नस्त्रैलोक्यस्यापि योभवेत् । शिष्यस्तेशासिता सोऽस्तु धृतराष्ट्रयुधिष्ठिरः ॥ ८४ ॥ अतीवसर्वान् पुत्रांस्ते भागधेयपुरस्कृत । तेजसा प्रज्ञया चैवयुक्तो धर्मार्थतत्त्ववित् ॥८५॥ अनुक्रोशादानृशंस्याद्योऽसौ धर्मभृतांवर । गौरवात्तव राजेन्द्र बहून् क्लेशांस्तितिक्षति ॥ ८६ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरनीतिवाक्ये चतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

ऊपर वाणवाण न छोड़े । ८० । देवता लोग जिस पुरुषका निरादर करतेहैं, उसकी बुद्धि खींचलेतेहैं और वह नीचकर्म्म करने लगता है । ८१ । विना शकालमें बुद्धि मलिन होजाती है, इससे उसके हृदयसे अन्यायन्यायके समान कभी नहीं हटता । ८२ । हे राजन, अब पाण्डवों के व तुम्हारे पुत्रों के विरोध से तुम्हारी बुद्धिभी वैसीही होगई है, पर तुम नहीं, जानते । ८३ । हे धृतराष्ट्र सर्व्वलक्षण सम्पन्न होनेसे तीनों लोकों के राजा युधिष्ठिर होंगे, पर तुम्हारे आज्ञाकारी हैं । ८४ । तुम्हारे सब पुत्रोंका अतिक्रमण कर राज्यके योग्य वही हैं, क्योंकि तेज, प्रज्ञासे युक्त व धर्म अर्थके जाननेवाले हैं । ८५ । अक्रूरता और दया आदि गुणयुक्त, धर्मात्माओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ने तुम्हारे कारण बहुतसे दुःख सहे हैं ॥ ८६ ॥

---

of the body a wise man should never discharge such arrows at others. 80. When gods are displeased with any one, they deprive him of wisdom and he begins to do wicked deeds. A person about to be ruined loses his wits and injustice never leaves him. With the quarrels of your sons and the Pandavas you have lost your wisdom and you donot know it Yudhishthir will be king of the three worlds, because he is virtuous and yet he is obedient to you. Setting aside all your sons, Yudhishthir is fit to rule the empire as he is glorious, wise and well acquainted with *dharm* and *arth*. The best of virtuous men and possessing the qualities of mercy and absence of cruelty, Yudhishthir has borne many hardships by your cruelty."80.

धृतराष्ट्र उवाच । ब्रूहि भूयो महाबुद्धे धर्मार्थसहितं वचः । शृण्वतो नास्ति मे तृप्ति-
र्विचित्राणीह भाषसे ॥ १ ॥ विदुर उवाच । सर्वतीर्थेषु वा स्नानं सर्वभूतेषु चार्जवम्
उभे त्वेते समे स्यातामार्जवं वा विशिष्यते ॥२॥ आर्जवं प्रतिपद्यस्व पुत्रेषु सततं विभो
इह कीर्तिं परां प्राप्य प्रेत्य स्वर्गमवाप्स्यसि ॥ ३ ॥ यावत्कीर्तिर्मनुष्यस्य पुण्या लोके
प्रगीयते । तावत्स पुरुषव्याघ्र स्वर्गलोके महीयते ॥ ४ ॥ अत्राप्युदाहरन्तीममितिहा-
सं पुरातनम् । विरोचनस्य संवादं केशिन्यर्थे सुधन्वना ॥ ५ ॥ स्वयम्वरे स्थिता क-
न्या केशिनी नाम नामतः । रूपेणाप्रतिमा राजन् विशिष्टपतिकाम्यया ॥ ६ ॥ विरोच
नोऽथ दैतेयस्तदा तत्राजगाम ह । प्राप्तुमिच्छंस्ततस्तत्र दैत्येन्द्रं प्राह केशिनी ॥ ७ ॥

अध्याय ३५ ॥

इतना सुन धृतराष्ट्रजी बोले हे बुद्धिमान् विदुरजी धर्म अर्थ सहित वचन फिर कहो क्योंकि तुम बड़े विचित्र वचन कहते हो जिनके सुनने से हमारा मन तृप्त नहीं होता । १ । विदुरजी बोले सब तीर्थों में स्नान करना व सब प्राणियों के संग समता रखना दोनों समान हैं वरन समता और विशेष है । २ । इस से हे राजन अपने पुत्रों व भतीजों में समता रक्खो इस से यहां बड़ी कीर्त्ति पाय मरणान्त में स्वर्ग पाओगे । ३ । क्योंकि जब तक मनुष्यकी पुण्य कीर्त्ति लोक में गाई जाती है तब तक वह पुरुष स्वर्ग लोक में पूजित होताहै । ४ । इस विषय में यह पुरातन इतिहास पण्डित लोग कहते हैं जिसमें केशिनी के अर्थ विरोचन व सुधन्वा का सम्वाद है । ५ । हेराजन् अतिरूपवती केशिनी नाम एक कन्या विशेष पति पानेकी इच्छा से स्वयम्बर में स्थितथी । ६ । उस कन्याके लेने के लिये विरोचन नाम दैत्य वहां आया उसे देख केशिनी उस से बोली । ७ ।

CHAPTER XXXV

Having heard the above, Dhritrashtra continued, "Speak yet longer, wise Vidur. Your words are full of *dharm* and *arth* and possess a wonderful power of speech with which I never feel tired." "Equal regard for all beings," said Vidur, "is equal in merit to bathing in all the holy rivers and somewhat more. Have equal regard to your sons and nephews; thus you will gain fame here and paradise after death. For, as long as the fame of one's good deeds is sung in this world, one is respected in paradise. There is an old history, sung by learned men, which I quote by way of example, and which relates the discussion of Virochan and Sudhanwa for the sake of Keshini. Keshini a maiden of great beauty had come out in the Swayamvara ground to choose herself a worthy husband.

केशिन्युवाच । किंब्राह्मणाःस्विच्छ्रेयांसो दितिजाःस्विद्विरोचन । अथकेनस्मपर्यङ्कं सुधन्वानाधिरोहति ॥ ८ ॥ विरोचन उवाच । प्राजापत्याःस्तुवै श्रेष्ठा वयंकेशिनिसत्तमाः । अस्माकंखल्विमेलोकाः केदेवाःके द्विजातयः ॥ ९ ॥ केशिन्युवाच । इहैवास्वांप्रतीक्षाव उपस्थानेविरोचन । सुधन्वाप्रातरागन्ता पश्येयंवांसमागतौ ॥ १० ॥ विरोचन उवाच । तथाभद्रेकरिष्यामि यथात्वंभीरुभाषसे । सुधन्वानञ्चमाञ्चैव प्रातर्द्रष्टासिसङ्गतौ ॥ ११ ॥ विदुर उवाच । अतीतायांचशर्वर्यामुदिते सूर्यमण्डले । अथाजगामतंदेशं सुधन्वाराजसत्तम । विरोचनोयत्रविभो केशिन्यासहितःस्थितः १२ सुधन्वाचसमागच्छत् प्राह्रादिं केशिनींतथा । समागतं द्विजंदृष्ट्वा केशिनीभरतर्षभ । प्रत्युत्थायासनंतस्मै पाद्यमर्घ्यंददौपुनः ॥ १३ ॥ सुधन्वोवाच । अन्वालभेहिरण्मयं प्राह्रादेतेवरासनम् । एकत्वमुपसम्पन्नो नत्वासेऽहंत्वयासह ॥ १४ ॥ विरोचन

कि ब्राह्मण सुधन्वा हमारे पर्य्यङ्क पर क्यों न चढ़ेंगे जो तुम नीच दैत्य हमारे लिये आये हो । ८ । विरोचन बोले, कि हमलोग प्रजापति के वंशके हैं इस से निश्चय श्रेष्ठहैं व हमारेही ये सबलोक हैं देव कौन होवेहैं व ब्राह्मण कौन होवे हैं । ९ । केशिनी बोली, अच्छा इसी स्थानपर हमारे लिये आये हुये तुम्हारी व सुधन्वा ब्राह्मणकी परीक्षा हमलेंगी, क्योंकि सुधन्वा प्रातःकाल आनेवाले हैं तुम आही चुकेहो । १० । विरोचन बोले, कि अच्छा जैसा तुम कहती हो वैसाही हम करेंगे हम व सुधन्वा दोनों को प्रातःकाल देखोगी । ११ । विदुरजी बोले कि जब रात्रि बीतगई व सूर्य उदयहुये तो प्रह्लादके पुत्र विरोचन व केशिनी दोनों के पास सुधन्वानाम ब्राह्मण आये । १२ । उन ब्राह्मण देवको आये देख केशिनी ने उठ प्रणाम कर पाद्य अर्घ्यादि उनको दिया । १३ । तब सुधन्वा से विरोचन ने कहा कि हमारे साथ आओ इस सुवर्ण के आसन पर बैठो तब सुधन्वा बोले कि हे विरोचन तुम अपने सुवर्ण के आसनपर अकेले बैठेरहो हम तुम्हारे संग

Virochan the daitya prince came to woo her. "Is Sudhanwa the Brahman not fit to step on my bedstead, that you have come to woo me?" said Keshini to Virochan when she saw him. "I am descended of Prajapati," replied Sudhanwa "and am therefore of noble origin. We are the owners of all these countries; what are gods and Brahmans?" "I shall test you as well as Sudhanwa on this very spot," said Keshini, "for Sudhanwa is coming here tomorrow while you are present."10. "Let it be as you say," replied Virochan, "You will see both of us in the morning." At daybreak the next day, came Sudhanwa the Brahman to Virochan and Keshini. On seeing the Brahman, Virochon asked him to sit on the same seat on which he himself was sitting. But Sudhanwa replied, "You may sit alone on your golden seat; I shall not sit with you." "A wooden

उवाच । तवाईतेतुफलकं कूर्चवाप्यथवावृषी।सुधन्वश्वस्त्वमर्होऽसि मयासहसमासनम् ॥१५॥ सुधन्वोवाच । पितापुत्रौसहासीतां द्वौविप्रौक्षत्रियावपि। वृद्धौवैश्यौचशूद्रौच नत्वन्यावितरेतरम् ॥ १६ ॥ पिताहिते समासीनमुपासीतैव मामधः । बालःसुखैधितोगेहेनत्वं किञ्चनबुध्यसे ॥ १७ ॥ विरोचन उवाच । हिरण्यञ्चगवाश्वञ्च यद्वित्तमसुरेषुनः । सुधन्वन्‌ विपणेवेन प्रश्नंपृच्छावयेविदुः ॥ १८ ॥ सुधन्वोवाच । हिरण्यञ्चगवाश्वञ्च तवैवास्तुविरोचन । प्राणयोस्तुपणंकृत्वा प्रश्नंपृच्छावये विदुः १९ विरोचन उवाच । आवांकुत्रगमिष्यावः प्राणयोर्विपणेकृते । नतुदेवेष्वहंस्यातानमनुजेषु कर्हिचित् ॥ २० ॥ सुधन्वोवाच । पितरंतेगमिष्यावः प्राणयोर्विपणेकृते । पुत्र-

आसनपर न बैठें गे ।१४। तब विरोचन बोले, कि हांसुधन्वा तुम्हारे योग्य तो काठका पीढ़ा वा कुशकी चटाई है तुम हमारे साथ श्रेष्ठ आसन पर क्यों बैठोगे । १५ । सुधन्वाबोले कि पिता व पुत्र एक आसन पर बैठसक्ते हैं, वा दो ब्राह्मण, वा दो क्षत्रिय, वा दो वृद्ध वैश्य, वा दो शूद्र परन्तु और २ जाति के दो २ मनुष्य कभी एक आसनपर नहीं बैठ सके । १६ । तुम्हारे पिता नीचे बैठकर हमारी सेवा करते हैं, परन्तु तुम बालकहो व घरमें रह सुख करतेहो तुम कुछ नहीं जानते । १७ । विरोचनबोले, कि हमारे यहां जितने सुवर्ण चांदी बैलघोड़े हैं सबकी बाजी लगाते हैं, हम तुममें जो श्रेष्ठहो उस के जाननेवाले के पास चलो पूंछें । १८ । सुधन्वाबोले, कि सोना चांदी बैल घोड़े तुम्हारे तुम्हारे यहां रहैं उनके बाजी लगाने की आवश्यकता नहीं हमारे तुम्हारे प्राणोंकी बाजी लगाई जाय जो हारे अपने प्राण देदे, चलो जो जानताहो पूंछें । १९ । विरोचन बोले कि हम तुम प्राणोंकी बाजीलगाय कहां पूंछने चलेंगे बतावोतो न तो हम देवताओंके पास जायंगे न मनुष्यों के पास कभी जायंगे।। २० । सुधन्वाजी बोलेकि, प्राणों की

seat or a grass mat is good for you," said Virochan, "how can you sit on a golden seat with me?" "Father and son," said Sudhanwa, "may sit together as well as a couple of Brahmans, Kshatryas, Vaishyas or Shudras; but two men of different classes cannot sit on the same seat. Your father sits lower when he attends on me, but you, being a child and living a life of ease in your house, know nothing." "I wager all the gold, silver, oxen and horses at my house," said Virochan, "let us go to one who can tell which of us is the greater of the two." "You may keep your gold, silver, oxen and horses," said Sudhanwa, "there is no need of staking them, but let us wager our lives, and refer the matter to an expert." "Well," said Virochan, "having wagered our lives, whom we shall go to for reference; for, I would not refer it to a god or a man."20. "Having staked our lives for a wager," said Sudhanwa, "let us go to Prahlad

स्यापिसहेतोर्हि महादोनान्ववंवदेत् ॥ २१ ॥ विदुर उवाच । एवंकृतपणौक्रुद्धौ तत्रा भिजग्मतुस्तदा । विरोचनसुधन्वानौ प्रह्लादोयत्रतिष्ठति ॥ २२ ॥ प्रह्लाद उवाच । इमौतौसम्प्रदृश्येते याभ्यांनचरितंसह । आशीविषाविवक्रुद्धा वेकमार्गाविहागतौ २३ किंवैसहैवंचरथो नपुराचरथःसह । विरोचनैतत्पृच्छामि किंतेसख्यंसुधन्वना २४॥ विरोचन उवाच । नमेसुधन्वनासख्यं प्राणयोर्विपणावहे । प्रह्लादतत्त्वंपृच्छामि माप्र श्नमनृतंवद. ॥ २५ ॥ प्रह्लाद उवाच । उदकंमधुपर्कं चाप्यानयन्तु सुधन्वने । ब्रह्म नभ्यर्चनीयोऽसि श्वेतागौःपीवरीकृता ॥ २६ ॥ सुधन्वोवाच । उदकंमधुपर्कंचा पथि-

बाजी लगाय तुम्हारे बाप प्रह्लादजी के पास चलेंगे क्योंकि वे पुत्र के अर्थभी झूंठ न कहेंगे फिर दूसरे के अर्थ क्यों कहनेलगे । २१ । बिदुरजी बोले कि क्रोधकर ऐसीबाजी लगाय सुधन्वा व विरोचन दोनों प्रह्लादजी के पास गये । २२ । इन दोनोंको देखते ही प्रह्लादजीने विचार किया येदोनों तो ऐसे दिखाई देते हैं मानों बैरके कारण कभी एक स्थान पर बैठेभी नहीं, क्योंकि क्रोध कियेहुये दो सर्पों के समान एकमार्ग में चले आते हैं । २३ । यह विचार विरोचन से पूंछा कि विरोचन इस तरह इनके साथ तो कभी नहीं चलतेथे अब आज क्यों चलते हो, यह हम तुमसे पूंछते हैं कि क्या तुम्हारा व सुधन्वाका सख्यभाव है । २४ । विरोचन बोले, कि सुधन्वासे हमारा सख्य कुछ नहीं है हम दोनों ने प्राण की बाजी लगाई है, इस से हम दोनों में कौन श्रेष्ठ है यह निश्चय बताओ मिथ्या न कहना । २५ । प्रह्लादजी बोले कि अरे सेव- को सुधन्वाजीके लिये पादधोनेके लिये जल व पीनेके लिये शर्बतलाओ, यह सेवकोंसे कह सुधन्वासे बोले कि ब्राह्मण देव आपतो पूजनीय हो और सामग्री भी आती है पर तब तक मंगाये यह मोटी ताजी गाय लो । २६ । सुधन्वा बोले कि शर्बत पानी

your father; for he will not tell a lie for the sake of his own son." Vidur said that having so staked their lives in anger, both Sudhanwa and Virochan went to Prahlad who, as soon as he saw them, said within himself, "It appears to me that they have not sat together on account of enmity as they are coming this way like two angry serpents." Having come to this conclusion, he asked Virochan whether he had contracted friendship with Sudhanwa and said that he had never seen them together before. "We are not friends," said Sudhanwa, "we have staked our lives. Pray tell us which one of us is superior to the other." On hearing this, Prahlad ordered his attendants to bring water to wash the feet of Sudhanwa, and sherbat for him to sip. Then addressing Sudhanwa he said, "Worshipful Brahman, I have sent for all those things to worship you but in the meantime accept this sleek cow as a present."

प्येवार्पितंमम । प्रल्हादत्वन्तुपेतथ्यं प्रश्नंसमृहिपृच्छतः । किंब्राह्मणाःस्विच्छ्रेयांस उताहोस्विद्विरोचनः ॥ २७ ॥ प्रल्हाद उवाच । पुत्रएकोमम ब्रह्मंस्त्वञ्च साक्षादिहास्थितः । तयोर्विवदतोःप्रश्नं कथमस्मद्विधोवदेत् ॥ २८ ॥ सुधन्वोवाच । गांप्रदद्यास्त्वौरसाय यद्वान्यत्स्यात्प्रियंधनम् । द्वयोर्विवदतोस्तथ्यं वाच्यञ्चमतिमंस्त्वया ॥ ॥ २९ ॥ प्रल्हाद उवाच । अथयोनैवप्रब्रूयात् सत्यंवायदिवानृतम् । एतत्सुधन्वन्पृच्छामि दुर्विवक्तास्मकिंवसेत् ॥ ३० ॥ सुधन्वोवाच । यांरात्रिमधिविन्नास्त्री यांचैवाक्षपराजितः । यांचभाराभितप्ताङ्गो दुर्विवक्तास्मतांवसेत् ॥ ३१ ॥ नगरेप्रतिरुद्धःसन् बहिर्द्वारेबुभुक्षितः । अमित्रान्भूयसःपश्येयः साक्ष्यमनृतंवदेत् ॥ ३२॥ पञ्च

सो हमने मार्गही में छोड़दिया है प्रह्लादजी जो प्रश्न हम पूंछते हैं उसका निश्चय बताओ क्या है । २७ । भला ब्राह्मण लोग श्रेष्ठ हैं वा विरोचन, प्रह्लादजी बोले कि ब्राह्मण देव एकही तो हमारे पुत्रहै तुम साक्षात् ब्राह्मणहो फिर दोनों जनोंके विवाद में हम ऐसा परथ प्रश्नका उत्तर कैसे दें । २८ । सुधन्वा बोले, कि गाय व और जो कुछ धनहो अपने पुत्रको दो हमारे व इनके विवाद में सत्य २ कहो । २९। प्रह्लादजी बोले, कि प्रथम तुम हमारे प्रश्नका बतादो कि, जो न सत्यही कहे न असत्यही कहे, ऐसा अन्याय वक्ता कौन दुःख पावे । ३० । सुधन्वा बोले सौत के संगही संग पतिके संग रात्रिमें रहने से स्त्री को जो दुःख होताहै, व जुआसे हारे हुवे को रात्रि में जो दुःख होताहै, व भार लादने से बहुत थके पुरुषको जो रात्रिमें दुःख होता वह अन्यायवक्ता को हो । ३१ । जो दुःख सारे भूखोंके किसी नगर में घिरेहुवे व द्वारपर बहुत से शत्रुओं को खड़ेहुवे देख होताहै वही दुःख झूठी साक्षी बोलने वाले अन्यायी को

"Pending the arrival of sherbet and water, please answer a question of *mine: is Virochan superior to a Brahman!*" *To this* Prahlad replied, "I have only one son, and you are a true Brahman; how do you expect an answer to such a hard question from me?" "Give cows and other wealth to your son," said Sudhadwa, "I want your true decision on the discussion between us." "First give an answer to my question," *replied* Prahlad, "what punishment will he suffer, who neither speaks the truth nor tells a lie?"30. "An unjust speaker," replied Sudhanwa, "will come to as much grief as a woman who has to pass a night of uneasiness in company with her husband and cowife; or as a gambler who has lost, feels at night, or as a man tired with carrying a heavy burden, feels at night. A false witness will have to suffer as much grief as the one who, oppressed by hunger in a besieged city, sees the enemies standing at the gate in large numbers. One who tells a lie in respect of goats has his fire

पश्वनृतेहन्ति दशहन्तिगवानृते । शतमश्वानृतेहन्ति सहस्रंपुरुषानृते ॥ १३ ॥ हन्ति जातानजातांश्च हिरण्यार्थेऽनृतंवदन् । सर्वंभूम्यनृतेहन्ति मास्मभूम्यनृतंवदः ॥ १४ ॥ प्रह्लादउवाच । मत्तःश्रेयानङ्गिरावै सुधन्वात्वद्विरोचन । मातास्यश्रेयसी मातुस्तस्मात्त्वंतेनवैजितः ॥ १५ ॥ विरोचनसुधन्वायं प्राणानामीश्वरस्तव । सुधन्वन्पुनरिच्छामि त्वयादत्तंविरोचनम् ॥ १६ ॥ सुधन्वोवाच । यद्धर्ममवृणीथास्त्वं न कामादनृतंवदीः । पुनर्ददामितेपुत्रं तस्मात्प्रह्लाददुर्लभम् ॥ १७ ॥ एषप्रह्लादपुत्रस्ते मयादत्तोविरोचनः

मिलताहै ।१२। छगली आदि पशुओं के बीचमें झुंठाई करनेसे पांच पीढ़ी तकके पुरुष नरक में गिराये जातेहैं, व गाय बैलोंके अर्थ मिथ्या कहने से दश पीढ़ी ऊंच व घोड़ों के विषय में झुंठाई करने से सौ पीढ़ी तक के, व पुरुषके विषयमें मिथ्या कहने से सहस्र पीढ़ी तकके ऊंचवाले व आपभी नरक में जाता है । १३ । व जो सुवर्ण के लिये मिथ्या कहता है वह अपने उत्पन्न हुओं व होनेवालों को भी मारता है, व पृथ्वी के लिये झुंठाई सबका नाशकरती है इस से पृथ्वीके विषयकी झुंठाई कभी न करो यह केशिनी भी पृथ्वीही के तुल्य है । १४ । प्रह्लाद जी बोले, कि हे विरोचन सुधन्वा के पिता अंगिराजी हम से श्रेष्ठ हैं, व तुम से श्रेष्ठ सुधन्वा हैं व इन की माताभी तुम्हारी माताये श्रेष्ठ है इस से तुम सुधन्वा से हारगये । १५ । हे विरोचन अब तुम्हारे प्राणों के मालिक सुधन्वा हैं, व सुधन्वाजी तुम्हारे देनेसे हम फिर विरोचन को पानेकी इच्छा करते हैं । १६ । सुधन्वा बोले, हे प्रह्लाद जिससे तुमने धर्मही की बातकही मिथ्या नहीं कहा, इस से तुमको दुर्लभ पुत्र फिर देते हैं । १७ । हे प्रह्लाद यह विरोचन पुत्र हमने तुमको दिया, अब यह हमारे सामने केशिनी के पाद हलदी से धोवे व बस

generations thrown into hell; he who tells a lie with respect to cattle, has his ten generations thrown into hell; he who tells a lie about horses, has his hundred generations thrown into hell and he who, tells a lie about men has a thousand generations thrown into hell and himself as well. He who tells a lie for the sake of gold, destroys his subsequent generations; but telling a lie for the sake of earth destroys all. You should not tell a lie for the sake of earth and Keshini is like it." On hearing this, Prahlad said to Virochan, "Angira the father of Sudhanwa is superior to me; Sudhanwa is superior to you and his mother is superior to your; you are therefore defeated by him and he is the master of your life." Then turning to Sudhanwa he said, "It is now in your power to restore Virochan to me and I beg of you to spare him." I give you back your dearest son," replied Sudhanwa, "because you have not deviated from justice and told no lies. Prahlad, I have given you your son Virochan. Let

पादप्रक्षालनंकुर्य्यात् कुमार्य्याःसन्निधौमम ॥ ३८ ॥ विदुरउवाच । तस्माद्राजेन्द्र भूम्यर्थे नानृतंवक्तुमर्हसि । मागमः ससुतामात्यो नाशं पुत्रार्थमनृतम् ॥ ३९ ॥ नदेवा दण्डमादाय रक्षन्तिपशुपालवत् । यन्तुरक्षितु मिच्छन्ति बुध्यासंविभज न्तितम् ॥ ४० ॥ यथायथाहिपुरुषः कल्याणेकुरुतेमनः । तथातथास्यसर्वार्थाः सिध्यन्तेनात्रसंशयः ॥ ४१ ॥ नैनंछन्दांसि वृजिनात्तारयन्ति मायाविनंमायया वर्त्तमानम् । नीडंशकुन्ताइव जातपक्षाश्छन्दांस्येनं प्रजहत्यन्तकाले ॥ ४२ ॥ मद्यपानंकलहंपूगवैरं भार्य्यापत्योरन्तरं ज्ञातिभेदम् । राजद्विष्टं स्त्रीपुंसयोर्विवादं वर्ज्यान्याहुर्यश्च पन्थाःप्रदुष्टः ॥ ४३ ॥ सामुद्रिकं वणिजंचौरपूर्वं शलाकधूर्तञ्च चिकित्सकञ्च । अ-

को अपनी स्त्री बनावे इससे उस से कुछ काम नहीं । ३८ । विदुरजी धृतराष्ट्रजी से बोले कि राजन् इससे तुमभी भूमिके अर्थ मिथ्या कहनेके योग्यनहीं हो, अपने पुत्रकेलिये झूंठकह पुत्र मन्त्र्यादि सहित नाशको न पहुँचाओ । ३९ । जैसे लाठीले चरवाह पशुओं की रक्षाकरतेहैं वैसे देवता लोग हाथ में दंडले नहीं रक्षाकरते किन्तु जिसकी रक्षाकिया चाहते बुद्धि से उसका विभाग करते हैं । ४० । इस से जैसे २ पुरुष कल्याण में मन करता है वैसे २ उसके सब अर्थ सिद्ध होते हैं इस में कुछभी संशय नहीं । ४१ । माया में वर्तमान मायावी पुरुषको वेद दुःख से नहीं तारते, अन्तकाल में वेद मायावी को छोड़ देते हैं, जैसे पङ्ख जमआने पर पक्षी फिर वृंद नहीं रहते वहांसे उड़कर चारा चुनने लगते हैं । ४२ । मदिरा पीना, कलह करना, बहुत लोगों से वैर रखना, किसी की स्त्री में व किसी के पुत्रके बीचमें उससे अन्तर डालना, जातिवालों के बीच में भेद कराना, राजा का भाग, स्त्री पुरुषका वियोग, व खराब मार्ग, इनसे कार्य छोड़ने के योग्यहैं, राजन् इन में जातिवालों में भेद व कलह में तुम्हारी प्रवृत्ति उचित नहीं है ४३ हाथों की रेखा

him wash the feet of Keshini with turmeric and make her his wife in *my presence; I have nothing to do with her.*" "*In the same way,*" said Vidur to Dhritrashtra, "you should not tell a lie for the sake of Earth: *donot destroy your sons and ministers by telling a lie for the sake of your son.* The gods donot protect a man by means of a stick as a shepherd does, but give him a share of their wisdom. 40. It is therefore that a man's desires are accomplished in proportion to his being engaged in doing good. The Vedas donot extricate from trouble the deceitful man practicing deceit; they leave him at last as birds cannot suffer the pangs of hunger on being fledged. It is good to abstain from the following things:-wine, quarrelling, enmity causing ill between a person and his son or wife, causing ill will among the members of a caste, king's share, separating man and wife and bad way. You should not cause ill feeling to be produced

रिङ्चमित्रञ्च कुशीलवञ्च नैतान्साक्षे त्वधिकुर्वीतसप्त ४४ मानाग्निहोत्रमुतमानमौनमा नेनाधीतमुतमानयज्ञः । एतानिचत्वार्यभयङ्कराणि भय प्रयच्छन्त्ययथाकृतानि ४५॥ अगारदाही गरदः कुण्डाशी सोमविक्रयी । पर्वकारश्चसूचीच मित्रध्रुक्पारदारिकः ॥ ॥४६॥ भ्रूणहागुरुतल्पीच यश्चस्यात्पानपो द्विज । अतितीक्ष्णश्चकाकश्च नास्तिको वेदनिन्दकः ॥ ४७ ॥ स्रुवप्रग्रहणोव्रात्यः कीनाशश्चात्मवानपि । रक्षेत्युक्तश्च योहिंस्यात् सर्वे ब्रह्महणैः समा ॥ ४८ ॥ तृणोल्कया ज्ञायते जातरूपं वृत्तेनभद्रो व्यव

देखने व ले सामुद्रिक, प्रथम चोरी करताहो फिर उद्यम करने लगे ऐसा बनिया, व रमल विद्य व ला पण्डित, वैद्य, शत्रु, मित्र, व भडुआ इन सातको कभी गवाही करने को न लेजाना चाहिये, इनमें शत्रुकी गवाही में विपरीत बोलने का भय रहता व मित्रके बोलने में प्रतिपक्षी विश्वास नहीं करते ४४ मानके लिये अग्निहोत्र, व मानके अर्थ मौन रहना, मान के लियेही पढना, मानके अर्थ यज्ञ करना ये चार यद्यपि अभयंकरहैं तथापि जब अच्छी रीतिसे नहीं किये जाते तो भयंकर होजाते हैं ४५ घर फूकनेवाला, विष देनेवाला अपनी स्त्री की खर्ची खानेवाला, यज्ञकी औषधि बेंचने वाला, तीर बनानेवाला, चुगुली करने वाला, मित्र द्रोही, परस्त्रीगामी, गर्भपात करवाने वाला, गुरुकी शय्यापर बैठनेवाला, ब्राह्मण हो मदिरा पीने वाला, अति तीक्ष्ण स्वभाववाला, दुःखित को दुःख देनेवाला, नास्तिक, वेदकी निन्दा करनेवाला, पुरोहित जिसका सोलहवर्षतकभी यज्ञोपवीत न हुआहो, व जो कभी गायत्री न जपताहो, ब्राह्मणहो हलजोतनेवाला चाहे समर्थभी हो, व हमारी रक्षाकरो ऐसा कहनेपरभी मारडालनेवाला, ये सब ब्रह्मघातीके समानहैं, इनमें घर फूंकनेवाला व विष देनेवाला ये दोनों तुम्हारे पुत्रों में हैं ।४८। अँधेरे में तृणों के बालनेसे रूप पहिंचाना जाता है, आचार से धर्म जानाजाता, अहिंसादि करने से साधु, भयमें

amongst your kinsmen king Seven persons are incompetent witnesses, namely, one versed in palmistry, a trader who was once a thief, an astrologer, a physician, an enemy, a friend and a buffoon. Sacrifices, vow of silence, study and libations poured on fire although good in themselves, become ruinous if practiced for show. The following persons are as sinful as a murderer of Brahmans, namely, an incendiary, one who administers poison, one living on the prostitution of his own wife, a seller of the herbs for *yagya*, an arrowsmith, a backbiter, a treacherous friend, a drunkard, a rash *person, an oppressed, a reviler of the Vedas*, a priest who has not been invested with sacred thread till the age of sixteen, one who does not repeat Gayatri, a Brahman who drives the plough and one who kills a refugee Among your sons there are incendiaries and *poisoners. We can see a face in darkness by burning straw, virtue*

हारेणसाधुः । शूरोभयेष्वर्थकृच्छ्रेषुधीरः कृच्छ्रेष्वापत्सुसुहृदश्चारयश्च ॥ ४९ ॥ जरारूपं हरतिहि धैर्यमाशा मृत्युः प्राणान्धर्मचर्यामसूया । क्रोधः श्रियं शील मनार्यसेवा ह्रियंकामः सर्वमेवाभिमानः ॥ ५० ॥ श्रीर्मङ्गलात्प्रभवति प्राग ल्भ्यात्संप्रवर्द्धते । दाक्ष्यात्तुकुरुतेमूलं संयमात्प्रतितिष्ठति ॥ ५१ ॥ अष्टौ गुणा पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञाच कौल्यंचदमः श्रुतञ्च । पराक्रमश्चाबहुभाषिताच दानंयथाशक्ति कृतज्ञताच ॥ ५२ ॥ एतान्गुणांस्तातमहानुभावानेकोगुणःसंश्रयतेप्रसह्य । राजायदा सत्कुरुतेमनुष्यं सर्वान्गुणानेष गुणोविभाति ॥ ५३ ॥ अष्टौनृपेमानिमनुष्यलोके स्वर्गस्यलोकस्यनिदर्शनानि । चत्वार्येषामन्वेतानि सद्भिश्चत्वारिचैषामनुयान्ति

शूर, दारिद्रमें धीर, आपत्काल में मित्र व शत्रु जाने जाते हैं । ४९ । बुढ़ापा रूपको हरता है, आशा धैर्यको, मृत्यु प्राणों को, निन्दा धर्म को, क्रोध लक्ष्मी को, अनाड़ियोंकी सेवा शीलको, काम लज्जाको, व अभिमान सबको हरता है । ५० । मङ्गल कर्मसे श्री होती है, व ढिठाई से बढ़ती है, शीघ्रता से काम करने से जड़ पकड़ती है संयम रखने से सदा टिकी रहती है, तुम में संयम नहीं है इस से श्री न रहेगी । ५१ । प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रियों का दमन, शास्त्र पढ़ना, पराक्रम, बहुत न बोलना, यथा शक्ति दान, व उपकार मानना ये ८ गुण पुरुष को प्रकाशित करते हैं । ५२ । ये सब गुण उस पुरुष के पास अपने आप आजाते हैं राजा जिसका सत्कार करता है यद्यपि ये बड़े महानुभाव गुण हैं तथापि राजसत्कार गुण सब से अधिक शोभित होता है । ५३ । आठगुण जो आगे कहेंगे वे मनुष्यलोक में स्वर्गलोक के दृष्टान्त हैं, उनमें चार तो सज्जनों में

---

is known by conduct, a sage is known by abstaining from injury, bravery is known at the time of danger, patience in poverty and friends and enemies in need. Old age destroys beauty, hope destroys patience, death destroys life, wickedness destroys dharm, anger destroys wealth, society of ignorant people destroys character, lust destroys shame and pride destroys all things. 50. Wealth is obtained by good luck, it grows with perseverance, it takes root by speedy actions and it becomes permanent by control of passions. You donot possess control and therefore your wealth will not last. Eight qualities make the possessor famous, namely, intelligence, noble birth, control of passions, study of shastras, prowess, abstaining from too much talk, giving according to means, and gratitude. These qualities come of themselves to one who is respected by the king and although they are so great yet being respected by a king is

सन्तः ॥ ५४ ॥ यज्ञोदानमध्ययनं तपश्चचत्वार्येतान्यन्ववेतानि सद्भिः । दमःसत्य-माआर्जवमानृशंस्यं चत्वार्येतान्यनुयान्तिसन्तः ॥ ५५ ॥ इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यंक्षमाघृणा । अलोभइतिमार्गोयं धर्मस्याष्टविधःस्मृतः ॥ ५६ ॥ तत्रपूर्वंचतुर्वर्गो दम्भार्थमपिसेव्यते । उत्तरश्चचतुर्वर्गो नामहात्मसुतिष्ठति ॥ ५७ ॥ नसासभायत्र न सन्तिवृद्धा नतेवृद्धायेनवदन्तिधर्मम् । नासौधर्मोयत्र नसत्यमस्ति नतत्सत्यं यच्छले-नाभ्युपेतम् ॥ ५८ ॥ सत्यंरूपंश्रुतंविद्या कौल्यंशीलं बलंधनम् । शौर्यञ्चचित्रभाष्य ञ्च दशेमेस्वर्गयोनयः ॥ ५९ ॥ पापंकुर्वन् पापकीर्तिः पापमेवाश्नुतेफलम् । पुण्यं

नित्य रहते हैं, व चारके पीछे २ पण्डितलोग चलते हैं । ५४ । यज्ञ, दान, पढ़ना, तपस्या, ये चार तो पंडितों में नित्य रहते व दम, सत्य, सरलता, अक्रूरता, इन चारों के सज्जन पण्डितलोग अनुयायी रहते हैं । ५५ । यज्ञ करना, वेदाध्ययन करना, दानदेना, तपस्या करना, सत्यबोलना, क्षमा करना, करुणाहोना, व अलोभ करना, यह आठ प्रकारका धर्मका मार्ग है । ५६ । उन में प्रथम के चार यज्ञ, अध्ययन, दान, तपस्या इनको लोग दम्भ के अर्थ भी सेवन करते, परन्तु पीछे के चार सत्य, क्षमा करुणा, अलोभ ये दुष्टों में रहतेही नहीं ये सदा सज्जनों मेंही रहते हैं । ५७ । जिसमें वृद्धलोग न बैठेहों वह सभा नहीं है, व जो धर्म नहीं कहते वे वृद्ध नहीं हैं, व जिसमें सत्य नहीं है वह धर्म नहीं है, व जो छलयुक्त वचन है वह सत्य नहीं है । ५८ । सत्य, रूप, शास्त्र, विद्या, कुलीनता, शील, बल, धन, शूरता, शोभन वचन, ये दश स्वर्गकी योनियां हैं । ५९ । पाप करनेसे पापकीर्ति पुरुषहो पापहीभोगकरता, व पुण्य कर पुण्य कीर्ति

greater than all of them. The following eight qualities are examples of paradise; four of them always stand in good men and the other four come by application:–yagya, almsgiving, study and asceticism are always found among learned men, and control of passions, honesty, truth and absence of cruelty are followed by learned men. There are eight ways of dharm, namely, to perform yagya, the study of the Vedas, almsgiving, asceticism, truthfulness, forgiveness, mercy and absence of avarice: the first four of these are often performed for deceit, but the last four are found only in good men. There can be no council without old men; they are not old who do not speak according to dharm; there can be no dharm without truth and deceitful words cannot be true. Truth, beauty, shastras, learning, noble birth, good conduct, strength, wealth, bravery and oratory are the ten stages of paradise. A sinful man suffers for his sins,

कुर्वन् पुण्यकीर्त्तिः पुण्यमत्यन्तमश्नुते ॥६०॥ तस्मात्पापंनकुर्वीत पुरुषःशंसितव्रतः। पापंप्रज्ञांनाशयति क्रियमाणंपुनःपुनः ॥ ६१ ॥ नष्टप्रज्ञःपापमेवनित्यमारभते नरः। पुण्यंप्रज्ञांवर्द्धयति क्रियमाणंपुनःपुनः ॥ ६२ । वृद्धप्रज्ञःपुण्यमेव नित्यमारभतेनरः। पुण्यंकुर्वन पुण्यकीर्त्तिः पुण्यंस्थानं स्मगच्छति ॥ ६३ ॥ तस्मात्पुण्यंनिषेवेत पुरुषः सुसमाहितः। असूयकोदन्दशूको निष्ठुरोवैरकृच्छठः। सकृच्छ्रंमहदाप्नोति नचिरात्पापमाचरन ॥ ६४ ॥ अनसूयुःकृतप्रज्ञः शोभनान्याचरन् सदा। नकृच्छ्रंमहदाप्नोति सर्वत्रचविरोचते ॥ ६५ ॥ प्रज्ञामेवागमयति यःप्राज्ञेभ्यःसपण्डितः। प्राज्ञोह्यवाप्यधर्मार्थौ शक्नोतिसुखमेधितुम् ॥ ६६ ॥ दिवसेनैवतत् कुर्याद्येनरात्रौ सुखंवसेत्। अष्ट-

---

पुरुष पुण्यही भोगता है। ६०। इस से प्रशंसित पुरुष पाप कभी न करे, क्योंकि बार बार का किया हुआ पाप बुद्धिका नाश करदेता है। ६१। नष्ट बुद्धि पुरुष नित्य पापही करनेका आरम्भ करता है, यद्यपि पुण्य बार २ करने से बुद्धिको बढ़ाती है पर दुष्ट तौभी पुण्य नहीं करते। ६२। वृद्ध प्रज्ञलोग नित्य पुण्यही करनेका आरम्भ करतेहैं क्योंकि पुण्य करता हुआ पुण्यकीर्त्ति पुरुष पुण्य स्थानको जाता है, इससे एकाग्रचित्तहो पुरुष पुण्यही की सेवा करे।६३। निन्दक, मर्म्मस्थल भेदक, अप्रियवादी, वैर करनेवाला, व शठ, ऐसा पापी पुरुष शीघ्रही कष्टपाता है।६४। व अनिन्दक,प्रज्ञावान्,व सदा सुन्दर कार्य्य करनेवाला वह बड़ा कष्ट कभी नहीं पाता सर्व्वत्रशोभित होताहै । ६५। जो बुद्धिमानों से बुद्धिही सीखता है वही पण्डितहै, क्योंकि पण्डित धर्म्म अर्थ दोनों पाकर सुख बढ़ा-सक्ता है। ६६। दिनमें वह कार्य्य करना चाहिये जिससे रात्रिमें सुख से बसे, व आठ

---

while a virtuous men gets the reward of his good deeds. 60. One who is famous for his good deeds should never commit sins; for sin committed again and agair, destroys wisdom. One who has lost his wits often commits sins. The doing of good deeds increases wisdom but the wicked never do good.. Wise old men always do good; for a good man goes to good regions by his good deeds. One should always perform good deeds with steadiness. A reviler who pierces delicate parts of the body by his harsh words, a quarrelsome or a deceitful man is soon destroyed. Those free from reviling, and wise and virtuous men donot fall into great troubles and are happy everywhere. He who learns wisdom from the wise is a Pandit; for he can promote happiness with *dharm* and *arth*. One should do such work by day as enable him to sleep happily by night; one should do such and so much work during eight months that he may

मासेनतत् कुर्याद्येन वर्षाःसुखंवसेत् ॥ ६७ ॥ पूर्वेवयसितत् कुर्याद्येनवृद्धः सुखंवसेत् यावज्जीवेनतत् कुर्याद्येनप्रेत्यसुखं वसेत् ॥ ६८ ॥ जीर्णमन्नंप्रशंसन्ति भार्यांञ्च गत-यौवनाम् । शूरंविजितसंग्रामं गतपारंतपस्विनम् ॥ ६९ ॥ धनेनाधर्मलब्धेन यच्छिद्रमपिधीयते । असंवृतंतद्भवति ततोऽन्यदवदीर्यते ॥ ७० ॥ गुरुरात्मवतांशास्ता शास्ताराजा दुरात्मनाम् । अथप्रच्छन्नपापानां शास्तावैवस्वतोयमः ॥ ७१ ॥ ऋषीणांचनदीनांच कुलानांचमहात्मनाम् । प्रभवोनाधिगन्तव्यः स्त्रीणांदुश्चरितस्यच ॥ ॥ ७२ ॥ द्विजातिपूजाभिरतो दाताज्ञातिषुचार्जवी । क्षत्रियःशीलभाग्राजंश्चिरं पाल

महीनों में इतना कार्य करे जिससे चार महीना वर्षा में सुख से रहे । ६७ । बाल्य व युवावस्था में वह विद्याध्ययन धनोपार्जनादि कार्यकरे जिससे वृद्धावस्था में सुखसे रहै, व जबतक जीवे तबतक ऐसा कार्य करै जिससे मरने के पीछे स्वर्गादि में सुखसे बसै । ६८ । लोग जो अन्न वस्त्र खा पहिर चुकते हैं उसकी बड़ाई करते, व जब स्त्री बूढ़ी होजाती है तो उसकी बड़ाई करते कि जवानी में हमारी स्त्री बहुत अच्छी थी, व लड़ाई जीते हुये शूरकी प्रशंसाकरते तथा वेदज्ञानी तपस्वी की प्रशंसा करते हैं । ६९ । अधर्म से पायेहुये धनसे जो छिद्र मूंदा जाता है वह खुला ही रहता है वरन पहले से भी अधिक खुलजाता है । ७० । चित्त जीते हुये पुरुषों का शिक्षक गुरु है, व दुष्टोंका शिक्षक राजा व गुप्त पापियों के शिक्षक यमराजजी हैं । ७१ । ऋषियों, नदियों, महात्माओं के कुलों व स्त्रियों के दुराचार का माहात्म्य ढूंढ़ने योग्य नहीं है । ७२ । ब्राह्मणोंकी पूजा करने

---

be able to pass the four months of the rainy season in pleasure, one should learn such knowledge and acquire so much wealth in childhood and youth that he may pass his old age in happiness, and one should do such work during his lifetime that he may be happy in the next world. People boast of the food and clothes eaten and worn by them in their days of prosperity and of the youth and beauty of their wives when the latter are old and they praise the bravery of a warrior who has won a battle and the holiness of an ascetic who is learned. A hole covered with the wealth acquired by unfair means remains not only open but becomes wider than it was before. 70. People are taught control of their passions by their preceptors, wicked men are taught by kings and those who sin in secret are taught by Yamraj. No one knows of the greatness of rishis, rivers, and noble families and the wickedness of women. That virtuous king rules long who respects Brahmans, gives alms and does good to

यतेनमहीम् ॥ ७३ ॥ सुवर्णपुष्पांपृथिवीं चिन्वन्तिपुरुषास्त्रयः । शूरश्चकृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ॥ ७४ ॥ बुद्धिश्रेष्ठानिकर्माणि बाहुमध्यानिभारत । तानिजंघाजघन्यानि भारप्रत्यवराणिच ॥ ७५ ॥ दुर्योधनेचशकुनौ मूढेदुःशासनेतथा । कर्णेचैश्वर्यमाधाय कथंत्वंभूतिमिच्छसि । सर्वैर्गुणैरुपेतास्तु पाण्डवाभरतर्षभ । पितृवत्त्वयिवर्तन्ते तेषुवर्तस्वपुत्रवत् ॥ ७७ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरहित वाक्ये
पंचत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३५ ॥

विदुर उवाच । अत्रैवोदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । आत्रेयस्यचसम्वादं साध्यानांचेतिनःश्रुतम् ॥ १ ॥ चरन्तंहंसरूपेण महर्षिसंशितव्रतम् । साध्यादेवामहा

वाला, दानी, व अपनी जातिवाले भाई बन्धुओं के साथ सिधाई करने वाला, व शील-वन क्षत्रिय बहुत दिनों तक पृथ्वी का पालन करता है । ७३ । पृथ्वी पर सोनेके फूल फूले हुए हैं उनको शूर, कृतविद्य और नीति ज्ञाता तोड़ते हैं । ७४ । बुद्धि बल से सब कर्म साध्य हैं बिना बुद्धि केवल बाहुबल से कौन जय पा सकता है । ७५ । दुर्योधन, शकुनि, दुशासन और कर्ण यह सब मूर्ख हैं ऐसे मूर्खों को ऐश्वर्य कहां । ७६ । पांडव सब गुणयुक्त हैं और तुम्हें पिताके समान मानतेहैं तुमभी उनको पुत्र समान जानो ७७ ।

अध्याय ३६ ॥

विदुरजी बोले कि इस विषय में एक पुराना इतिहास कहते हैं जिसमें दत्तात्रेयजी व साध्योंका संवाद है यह हमने सुनाहे । १ । परमहंस रूपसे फिरतेहुये महाप्रज्ञ

---

his people and kinsmen. The brave, the wise and the Politician pluck the golden flowers of the Earth. One can do every thing with wisdom strength, but none can hope to win by mere strength without the assistance of wisdom. Duryodhan, Shakuni, Dushasan and Karan are all foolish; how can such foolish men acquire greatness? The Pandavas are endowed with all qualities and revere you as if you were their father; you should therefore love them like your sons." 77

CHAPTER XXXVI

"I shall relate to you," said Vidur, "an old historical fact bearing on this very subject and containing the dialogue of Dattatreya and certain Sadhyas. I hear that Dattatreya who had all his senses

प्राज्ञं पर्यपृच्छन्तवैपुरा ॥ २ ॥ साध्या ऊचुः । साध्यादेवा वयमेतेमहर्षे दृष्ट्वाभव-न्तंन शक्नुमोऽनुमातुम् । श्रुतेनधीरोबुद्धिमांस्त्वं मतोनः काव्यांवाचंवक्तुमर्हस्युदाराम् ॥ ॥ ३ ॥ हंस उवाच । एतत्कार्यममराः संश्रुतंमेधृतिः शमः सत्यधर्मानुवृत्तिः । ग्रन्थिं विनीयहृदयस्य सर्वं प्रियाप्रिये चात्मवशंनयीत ॥ ४ ॥ आक्रुश्यमानो नाक्रोशेन्मन्यु-रेव तितिक्षतः । आक्रोष्टारंनिर्दहति सुकृतंचास्यविन्दति ॥ ५ ॥ नाक्रोशीस्यान्नाव-मानीपरस्य मित्रद्रोहीनोतनीचोपसेवी । नचाभिमानी नचहीनवृत्तो रूक्षांवाचंरुषतीं वर्जयीत ॥ ६ ॥ मर्माण्यस्थीनिहृदयं तथासूनरूक्षा वाचोनिर्दहन्तीह पुंसाम् । तस्मा-द्वाचमुषतीं रूक्षरूपां धर्मारामो नित्यशो वर्जयीत ॥ ७ ॥ अरुन्तुदंपरुषं रूक्षवाचं वा-

---

दत्तात्रेयजी को देख साध्यदेवगणों ने पूंछा । २ । कि हे महर्षिजी हम साध्य देवताहैं, परन्तु आपको देख अनुमान नहीं करसके, हमलोग जानतेहैं कि आप शास्त्र पढ़ने से बड़े धीरहैं व बड़े बुद्धिमान् हैं, इससे कवियोंकी उदारवाणी हमसे कहिये ।३। यह सुन परमहंसजी बोले, हे देवताओ हमने सुनाहै कि इतना कार्यकरना चाहिये, कि अविकलता, इन्द्रियोंकी निवृत्ति, सत्यधर्मका अनुवर्त्तन इनसे हृदयकी गांठकाट आत्माके साथ प्रिय अप्रिय दोनों को समान जाने ४ चाहे कोई अपनेको शापभी दे पर आत्मज्ञानी उसको न शापदे क्योंकि सहनेवालेका क्रोधही शापदेनेवालेको जलाता है व उसका पुण्य भी उसी सहनेवाले को मिलजाताहै ।५। शाप किसीको न दे, अपमान किसीका न करे, मित्रद्रोही नहो, व नीचों कीसेवा न करे, अभिमान न करे, आचारहीन नहो, रूखी व रोषवती वाणी न बोले ।६। क्योंकि रूखी बोली पुरुषों के मर्मस्थल हड्डियों, हृदय व प्राणों को भस्म करदेती है इससे धर्मात्माको चाहिये कि रूखी व अकल्याणकारिणी वाणी न बोले । ७ । जो पुरुष

---

under control was once seen during his wanderings by a company of divine Sadhyas who said to him, "Great rishis, we are divine Sadhyas. *We can infer nothing from seeing you although we know* that you are very wise and learned; you should therefore tell us some wise sayings of great men." On hearing this the sage said to the gods, "I hear that one should so act as the knot of his heart be cut asunder by steadiness, control of senses and the practice of true religion and his soul may begin to hold both pleasure and pain on the same level. If one curses a sage the latter does not curse him in return; for, the anger of him who forbears, is sufficient to burn him who curses and moreover the religious merit of the latter passes to the former. One should abstain from cursing, insult, enmity with friends, attendance on the low-born, boastfulness, immorality and

वाक्कण्टकैर्वितुदन्तं मनुष्यान् । विद्यादलक्ष्मीकतमं जनानां मुखे निबद्धां निर्ऋतिं वहन्त ॥ ८ ॥ परश्चेदेनमभिविध्येत बाणैर्भृशं सुतीक्ष्णैरनलार्कदीप्तैः । सविद्ध्यमानोऽप्यतिदह्यमानो विद्यात्कविः सुकृतंमेदधाति ॥ ९ ॥ यदिसन्तं सेवतियद्यसन्तं तपस्विनंयदि वास्तेनमेव । वासोयथारङ्गवशं प्रयाति तथासतेषां वशमभ्युपैति ॥ १० ॥ अतिवादं नप्रवदेन्नवादयेद्यो नाहतःप्रतिहन्यान्न घातयेत् हन्तुञ्चयो नेच्छतिपापकंवै तस्मैदेवाः स्पृहयन्त्यागताय ॥११॥ अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेयआहुः सत्यंवदेद्व्याहृतं तद्द्वितीयम्

ऐसे वचनबोलते हैं कि सुननेवालेके सुकुमार उपस्थल व्यथितहोजाते हैं, व जो कठोर वचन बोलते व जिसकी रूखीवाणी होती है, व जो वचनरूपकांटों से मनुष्यों को व्यथित करताहै, उस पुरुष को अति दरिद्र जानना चाहिये, व जानों वह अपने मुखमें मृत्युको बैठाये हैं जभी वह भीतर पैठजाय तभी मारडाले । ८ । व जो कोई शत्रु महात्माको अति तीक्ष्ण व अग्नि सूर्य के समान चमकते हुये बाणों से मारताहै तो उस महात्मा पण्डित को चाहिये कि उसके प्राणलगेहों व जलभी जाताहो तो यह मानै कि यह हमको पुण्य देता है । ९ । जो सज्जनकी सेवा वा असज्जनकी, तपस्वीकी सेवा करे वा चोरकी, वह जिसकी सेवाकरेगा उसीके वशहोजायगा जैसे उजले कपड़े को चाहो जिस रँग में रँगो वह वैसाही होजाताहै ऐसेही तुम्हारे पुत्र पापी हैं उन के निकट रहने से तुमभी पापकरने लगोगे । १० । जो पुरुष वाद विवाद न करता न कराता व जो मारने पर आप मारता न किसी से कहकर मरवाताहै, व जो पापीको मारना नहीं चाहता, देवतालोग चाहते हैं कि ऐसा पुरुष हमारे यहां आवे । ११ । बोलनेसे बिना

---

harsh words; for harsh words burn the vital parts, the bones, the breast and the life of people and therefore a virtuous man should not utter harsh words. He is the unhappiest of mortals who injures the feelings of others by using unpleasant and harsh words and wounds people by the thorns of his words: he is like one who has in his mouth death which will kill him as soon as it enters his body. And if an enemy pierces a great man with sharp arrows, bright like the sun or fire, the great man should bear them with pleasure although he may be burning with them. He who serves a good man, a wicked one, an ascetic or a thief, becomes like his master, as a white cloth takes whatever colour you may put it in. In the same manner, you are beginning to be a sinner by mixing with your wicked sons. 10. He who abstains from quarrelling, who does neither himself give blow nor instigates another to do so for him, and

प्रियंचवदेद्व्याहृतं तत्तृतीयंधर्म्यं वदेद्व्याहृतं तच्चतुर्थम् ॥ १२ ॥ यादृशैःसन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते । यादृगिच्छेच्च भवितु तादृग्भवतिपूरुषः ॥ १३ ॥ यतोयतोनिवर्त्तते ततस्ततोविमुच्यते । निवर्त्तनाद्धि सर्वतो नवेत्तिदुःखमण्वपि ॥ १४ ॥ नजीयतेचानुजिगीषतेऽन्यान्न वैरकृच्चाप्रतिघातकश्च । निन्दाप्रशंसासु समस्वभावो नशोचतेहृष्यतिनैवचायम् ॥ १५ ॥ भावमिच्छति सर्वस्य नाभावेकुरुतेमनः । सत्यवादी मृदुर्दान्तो यःसउत्तमपूरुषः ॥ १६ ॥ नानर्थकं सान्त्वयति प्रतिज्ञायददातिच । रन्ध्रंपरस्य जानाति यःसमध्यमपूरुषः ॥ १७ ॥ दुःशासनस्तूपहतोभिशस्तो नावर्त्तते मन्युवशा-

---

बोलना अच्छाहै, व जो बोले तो सत्यही बोले यह दूसरा अच्छा है, सत्यहो व प्रियभी होतो तीसरा अच्छाहै, व सत्य प्रिय धर्मयुक्त भी होतो चौथा अच्छा है । १२ । जैसे लोगों के संग पुरुष बैठता व जैसे लोगोंकी सेवाकरता, वैसाही वह होना चाहता है इससे वैसाही वह होना है इससे वैसाही होजाताहै । १३ । जहां से पुरुष निवृत्त होताहै वहां से छूटता जाता है, इसीतरह जब सबकहीं से निवृत्त होजाताहै फिर उसको कुछभी दुःख नहीं रहता । १४ । पुरुष न किसीसे जीताजाता न औरोंके जीतनेकी इच्छा करता है, न किसीके छल्छ वैरकरता न मारताहै, व निन्दा प्रशंसामें तुल्य स्वभाव रहता, व न सोचही करता न हर्षही करता, इसके करने करानेवाला औरही है । १५ । जो सबका कल्याणचाहता अकल्याण में मनकरताही नहीं, व सत्यवादी, कोमलस्वभाव, इन्द्रियों को जीतेरहता यह उत्तम पुरुष कहाताहै ।१६। जो अनर्थ नहीं समझाता, व जिसको देनेको कहता देताहीहै, व दूसरे के छिद्रभी देखता रहताहै पर दुखता नहीं करता यह मध्यम पुरुष कहाताहै।१७।

---

who forgives sins committed against him, is loved by gods. Silence is better than speaking, speaking the truth is better still; it is still better if the truth be pleasent to hear and the more so if in addition to being pleasant it be in accordance with dharm. One aspires to be like those whom he serves or sits with and at last becomes like them. One leaves the places from which one cuts connection and when one's connection is cut off from all things, one has not to feel any pangs. Man can neither be won by others nor does he wish to win them; he is neither at war with others nor does he kill; he behaves alike in receiving praise and dispraise; he is neither happy nor grieved: the doer and instigator of these things is another. He is the best of men who wishes well to all and ill to none and who is truthful, magnanimous and controller of passions. There is an intermediate class of man who do not give bad advice, give what they promise and although they see the weak points of others, they do not take

त्कृतघ्नः । नकस्यचिन्मित्रमथो दुरात्मा कलाश्चैता अधमस्येहपुंसः ॥ १८ ॥ नश्रद्दधातिकल्याणं परेभ्योप्यात्मशंकितः । निराकरोति मित्राणि योवैसोधमपूरुषः ॥१९॥ उत्तमानेवसेवेत प्राप्तकालेतुमध्यमान । अधमांस्तुनसेवेत इच्छेद्भूतिमात्मनः ॥२०॥ प्राप्नोतिवै वित्तमसद्बलेन नित्योत्थानात् प्रज्ञयापौरुषेण । नत्वेवसम्यग्लभते प्रशंसां नवृत्तमाप्नोति महाकुलानाम् ॥ २१ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । महाकुलेभ्यः स्पृहयन्ति देवाधर्मार्थनित्याश्च बहुश्रुताश्च । पृच्छामित्वां विदुर प्रश्नमेतं भवन्तिवैकानिमहाकुलानि ॥ २२ ॥ विदुर उवाच । तपोदमोब्रह्म वित्तंवितानाः पुण्याविवाहाः सततान्नदानम्

दुश्शासन घोषयात्रा में गन्धर्वों की गदा से माराभी गया, व शस्त्रों से विदीर्णभी हुआ तथापि क्रोधवश होनेसे अभी सीधा नहीं हुआ, वह कृतघ्नभी है उपकार किसी का मानताही नहीं पाण्डवों ने उसे गन्धर्वों से छुटायाभी परन्तु उनके उपकार का नाशही करताहै व उनकाही क्या किसीकाभी मित्र वह दुष्टात्मा नहींहै, बस येसबकला उसमें अधम पुरुषकीहैं । १८ । जो पुरुष गुरुलोग श्रेष्ठों से भी कल्याण होने में विश्वास नहीं करता सदा आत्मा में ही शंकित बना रहता है व मित्रों का अनादर किया करता है वह अधम पुरुषहै । १९ । जहांतकहो उत्तम पुरुषों कीही सेवा करे समय पड़ जानेपर मध्यम पुरुषोंकीभी करे परन्तु जो अपना ऐश्वर्य चाहे वो अधमों की सेवा कभी न करे ।२०। नित्य श्रम करने व बुद्धि व पौरुष व बल से असज्जनभी पुरुष धन पाता है परन्तु अच्छी प्रशंसा नहीं पाता न महाकुलीनों के आचार पाता है । २१ । धृतराष्ट्रजी बोले कि यद्यपि देवता लोग धर्म अर्थसे नित्य व बहुश्रुतहैं तथापि महाकुलीन होनेकी इच्छाकरतेहैं, इस से हे विदुरजी हम आपसे यह प्रश्न करते हैं कि महाकुल कौन होते हैं । २२ । विदुरजी बोले कि जहां कृच्छ्र चान्द्रायणादि व्रतरूप तपस्याहो, व इन्द्रिय जय वेदाध्ययन वेदा-

advantage of them Dushasan has not learnt a lesson, although he was hit by the maces and weapons of the gandharvas during the excursion of *ghosh* and is yet under the control of anger. He is ingrate too; for he is not thankful to the Pandavas who released him from the gandharvas He is not friendly to any one else as well. All these things mark him to be the lowest of men. He who is doubtful of the *good faith* of his elders and preceptors and insults his friends, is a man of the lowest class. One should always mix with the best of men or with the middle sort, if needful; but one should never mix with the lowest class if one wishes to be great 20. A wicked man may become wealthy with constant labour, wisdom, prowess and strength; but he does not acquire fame and good conduct like those born of noble families." Having heard this, Dhritrashtra asked of Vidur to tell him the reason why the gods

येष्वेवैतेसप्तगुणा वसन्ति सम्यग्वृत्तास्तानि महाकुलानि ॥ २३ ॥ येषांनवृत्तंव्यथतेन योनिश्चित्तप्रसादेनचरन्तिधर्मम् । येकीर्तिमिच्छन्ति कुलेविशिष्टां त्यक्तानृतास्तानि महाकुलानि ॥ २४ ॥ अनिज्यया कुविवाहैर्वेदस्योत्सादनेनच । कुलान्यकुलतां यान्ति धर्मस्यातिक्रमेणच ॥ २५ ॥ देवद्रव्यविनाशेन ब्रह्मस्वहरणेनच । कुलान्यकुलतां यान्ति ब्राह्मणातिक्रमेणच ॥ २६ ॥ ब्राह्मणानां परिभवात् परिवादाच्च भारत । कुलान्यकुलतांयान्ति न्यासापहरणेनच ॥ २७ ॥ कुलानिसमुपेतानि गोभिः पुरुषतोर्थतः । कुलसंख्यांनगच्छन्ति यानिहीनानिवृत्ततः ॥ २८ ॥ वृत्ततस्त्वविहीनानि कुलान्यल्पधनान्यपि । कुलसंख्याञ्चगच्छन्ति कर्षन्तिचमहद्यशः ॥ २९ ॥ वृत्तंयत्ने

ध्यापनादि प्रद धन, यज्ञ, पुण्य पूर्व्वक विवाह, व निरन्तर अन्नदान ये सात गुणहों व सदाचारहोता है वे महाकुल कहाते हैं । २३ । जिन लोगों का आचार व्यथित नहीं होता न उनके उत्पन्न करने वाले पिता माता उनके वृत्तसे व्यथितहों किन्तु उनके आचार से सदा सन्तुष्ट रहते हों व जो चित्तकी प्रसन्नता से धर्म्म करते हैं व जो अपने कुलमें विशेष कीर्ति चाहते हैं, व मिथ्या बोलतेही नहीं वही महाकुलहैं । २४ । यज्ञ न करने से व नीचोंके यहां विवाह करने से, वेदके न पढ़ने पढ़ाने से, व ब्राह्मणोंके निरादर से कुल अकुलता को पहुँचजाते हैं । २५ । ब्राह्मणों के अनादरसे, ताड़न से, व ब्राह्मणोंकी निन्दा से, व किसीकी धरोहर हरलेनेसे कुलीन अकुलीन होजाते हैं ।२६। जोकुल आचर से हीनहैं, वेगाय बैल आदिसे, व सत्पुरुषोंके होनेसे व धनकेहोनेसे कुलीनों की गणनामें नहीं गिनेजासक्ते ।२७। व जो आचरण से हीन नहीं हैं वे अल्प धनभी कुल कुलीनों की गिनती में आजाते हैं वे बड़ायश करलेतेहैं ।२८। सुन्दर आचरणकी रक्षा यत्न से करनी चाहिये व धन तो आता जाता रहताहै धनसे क्षीण होने से अक्षीणही समझा जाता है व

who were so virtuous and learned, desired to be born of noble families and what was meant by noble families. To this Vidur replied, "Wherever fasts like Chandrayana and penances together with control of organs, the study and the teaching of the Vedas, yagyas, holy marriages and almsgiving are seen, it is surely a noble family. They are of a noble family whose conduct is good, parents are well satisfied with their mode of life, who follow virtue with a joyful heart, who aspire to make their family famous and who always speak the truth. The status of a family goes down by the omission of *yagyas*, by marrying in low families, by omission of the study and the teaching of the Vedas and by insulting Brahmans. A family goes down by the disrespect, chastisement and speaking ill of Brahmans as well as by breach of trust. A family destitute of good conduct cannot be great by the possession of cattle, good men

नसंरक्षेद्वित्तमेतिच यातिच । अक्षीणोवृत्ततःक्षीणो वृत्ततस्तुहतोहतः ॥ ३० ॥ गोभिः पशुभिरश्वैश्च कृष्याचसुसमृद्धया । कुलानिनप्ररोहन्ति यानिहीनानिवृत्ततः ॥ ३१ ॥ मानःकुलेवैरकृत् कश्चिदस्तु राजामात्यौ मापरस्वापहारी । मित्रद्रोही नैकृतिकोनृतीवा पूर्वाशीवा पितृदेवातिथिभ्यः ॥ ३२ ॥ यश्चनोब्राह्मणान् हन्याद्यश्च नोब्राह्मणान् द्विषत् । ननस्समितिंगच्छेद्यश्च नोनिर्वपेत् कृषिम् ॥ ३३ ॥ तृणानिभूमिरुदकं वाक्चतुर्थीचसूनृता । सतामेतानिगेहेषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन ॥ ३४ ॥ श्रद्धया परया राजन्नुपनीतानि सत्कृतिम् । प्रवृत्तानिमहाप्राज्ञ धर्मिणांपुण्यकर्मिणाम् ॥ ३५ ॥ सूक्ष्मोपिभारं नृपतेस्यन्दनोवै शक्तोवोढुंनतथान्येमहीजाः । एवंयुक्ताभारसहा भवन्ति

आचारसे हतहुआ तो हतही होजाता है । २९ । जो कुल आचरण से हीन होजाते हैं गाय बैलोंसे, छाग छगड़ियोंसे, घोड़ोंसे व अच्छी खेतीसे, वेकुछ नहीं हरेभरे होते । ३० । हमारे कुलमें कोई वैर करनेवाला न हो, व राजा मन्त्री परधन हारी नहीं व मित्रद्रोही नहो कपटी, मृषावादी, देवता पितर व अतिथियों से प्रथम भोजन करने वाला नहो । ३१ । जो हमारे ब्राह्मणों को मारे व जो हमारे ब्राह्मणों को बिपद् हमारे संग्राम में न आवे वह हमारे संग न रहै । ३२ । अतिथियों के लिये सज्जनों के गृहमें बिछाने के लिये तृण, अच्छी भूमि, जल, व सुन्दर मधुरवाणी अवश्यही मिलजाते हैं । ३३ । सत्कार करने के लिये परम श्रद्धासे जहां तृणादि दियेजाते हैं वे पुण्यात्मा धर्म करनेवाले मनुष्यों के कामही हैं । ३४ । छोटीभी गाड़ी जितनाभार उठासकी है उतना और पृथ्वीसे उत्पन्न कोई भी नहीं उठासके, ऐसेही योग्यकुलीन लोग जितना लोगोंका भार सहते हैं उतना अन्य मनुष्य नहीं सहसके । ३५ । जिसके कोपसे भय लगताहो वह मित्र नहीं है व जिसमित्रकी ओरसे सदा चित्त शंकितही बनारहै वहभी मित्र नहींहै किन्तु जिस मित्र के

and wealth. A family not wanting in good conduct may be respected and famous in spite of the smallness of fortune. Good conduct should be preserved with care, the possession of wealth is transitory and the loss of it does not involve the loss of manhood, but the loss of good conduct is irreparable. The families wanting in good conduct cannot be prosperous by the possession of cattle, goats, horses and fields. 30. Let there be no cause of dispute in our family, let no ministers be usurping, false to friends, deceitful, untruthful and taking food before offering it to gods, pitars and guests. Let him not live with us who kills and poisons our Brahmans and does not take part in our wars. Straw bed, good seats, water and sweet words are never withheld from guests in the houses of good men. Virtuous men always offer the abovementioned things with the purity of heart. None can lift up as much load as is

महाकुलीनान तथान्येमनुष्याः ॥ ३६ ॥ नतन्मित्रंयस्य कोपाद्बिभेति यद्वामित्रंशंकितेनोपचर्यम् । यस्मिन्मित्रे पितरीवाश्वसीत तद्वैमित्रं सङ्गतानीतराणि ॥ ३७ ॥ यः कश्चिदप्यसम्बद्धो मित्रभावेनवर्त्तते । सएवबन्धुस्तन्मित्रं सागतिस्तत् परायणम् ३८ चलाचित्तस्यवैपुंसो वृद्धाननुपसेवतः । पारिप्लवमतेर्नित्य मध्रुवोमित्रसंग्रहः ॥ ३९ ॥ चलचित्तमनात्मानमिन्द्रियाणां वशानुगम् । अर्थाःसमभिवर्त्तन्ते हंसाःशुष्कंसरोयथा ॥ ४० ॥ अकस्मादेवकुप्यन्ति प्रसीदन्त्यनिमित्ततः । शीलमेतदसाधूनामभ्रं पारिप्लवंयथा ॥ ४१ ॥ सत्कृताश्च कृतार्थाश्च मित्राणांन भवन्तिये । तान्मृतानपिक्रव्यादाः कृतघ्नान्नोपभुञ्जते ॥ ४२ ॥ अर्चयेदेवमित्राणि सतिवासतिवाधने । नानर्थयन्प्रजा-

सामने पिता के पास के रहने के समान शिक्षा मिलती हो वह मित्र है औरतो सम्बन्ध मात्र के मित्रहैं ।३६। व जो कोई सम्बन्धीभी नहो पर मित्रभावसे रहताहोतो वही बन्धु वही मित्र वही गति वही उत्तम गृह है ।३७। चलाचित्त व वृद्धों के असेवक व चंचल बुद्धि पुरुषका मित्र संग्रह करना निश्चय नहीं है । ३८ । चलाचित्त, अनात्मज्ञानी व इन्द्रियों के वशीभूत पुरुषसे दूरहीदूर अर्थ रहते हैं निकट नहीं आते जैसे सूखे सरोवर के पास हंस नहीं जाते । ३९ । अकस्मात् कोप करना, व विना निमित्तही कभी प्रसन्न होजाना बादल के समान चंचल असाधुओं का शील होताहै । ४० । जो लोग सत्कार करने व अर्थसिद्धहोनेपरभी अपने मित्रों के हित नहीं होते मरने पर उनका मांस चील कौवे आदि मांसभक्षी पक्षी व शृगाल कुत्तेआदि पशु नहीं खाते ।४१। चाहे धनहो वा न हो मित्रों का सत्कार सदा करतारहै यह न विचारे कि इनके सो थोड़ाही सारांश है इनका सत्कार क्या करें । ४२ । दूसरेका सन्ताप करने से रूप भ्रष्ट होजाता है व सन्ताप से बल भ्रष्ट होताहै सन्ताप से ज्ञान भ्रष्ट होता है व सन्तापही से पुरुष रोगी

carried in the smallest cart; in a like manner, the worthies bear the greatest burden of the people. He whose anger is the cause of our fear, cannot be a friend nor he of whom we are always suspicious; a friend, is he who advises us like a father: others are friends in name. A friend, although not your kinsman, must be regarded as relation, friend helper and home. It is not right to contract friendship with those who are fickle minded, who do not revere old men and who are cunning. Wealth does not come near him who is fickleminded, unwise and slave of passions, as swans donot go to a dry tank. Sudden anger and kindness without reason are among the habits of the wicked who are fickle like clouds. 40. Even the birds of prey and dogs donot eat the flesh of those who are ungrateful to their friends from whom they receive kindness. Friends, whether wealthy or poor, should be treated with respect. Sorrow destroys beauty,

नाति मित्राणांसारफल्गुताम् ॥ ४३ ॥ सन्तापाद्भ्रश्यतेरूपं सन्तापाद्भ्रश्यतेबलम् । सन्तापाद्भ्रश्यतेज्ञानं सन्तापाद्व्याधिमृच्छति ॥४४॥अनवाप्यञ्च शोकेन शरीरंचोप तप्यते।अमित्राश्चप्रहृष्यन्तिमास्मशोकेमनःकृथाः॥ ४५॥पुनर्नरोम्रियते जायतेच पुनर्नरो हीयतेवर्द्धतेच । पुनर्नरो याचतियाच्यतेच पुनर्नरःशोचति शोच्यतेच ॥४६॥ सुखञ्च दुःखञ्च भवाभवौच लाभालाभौमरणं जीवतंच । पर्य्यायशः सर्वमेतेस्पृशन्ति तस्मा-द्धीरोनच हृष्येन्नशोचेत् । ४७ ॥ चलानिहीमानि षडिन्द्रियाणि तेषांयद्यद्वर्द्धतेयत्रय त्र । ततस्ततःस्रवते बुद्धिरस्य छिद्रोदकुम्भादिव नित्यमम्भः ॥ ४८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच तनुरुद्धः शिखीराजा मिथ्योपचरितोमया । मन्दानां मम पुत्राणां युद्धेनान्तंकरि-

होजाता है । ४३ । जो मिलने के योग्य इष्टवस्तु नहीं उसके न मिलने से जो पुरुष शोक करता है उसका परतो वृथा शरीर तप्त होता है दूसरे बैरीलोग हर्षित होतेहैं इस से शोक में मन न करो । ४४ । मनुष्य मरता और फिर उत्पन्नहोता है व पुरुष घटता रहताहै फिर बढ़ता है व मनुष्य मांगताहै व फिर और उससे मांगते हैं, व मनुष्य औरों को शोचता है फिर कभी उसे और लोग शोचतेहैं । ४५ । व सुख, दुःख, लाभ, अलाभ, मरना, जीना, भव, अभव, ये सब क्रम से समय २ पर हुआ करतेहैं इससे धीरपुरुष न हर्षित हो न शोक करे । ४६ । श्रोत्रादि पांच इन्द्रियां व मन ये छवो चलहैं, इनका विषय जहां २ बढ़ता है, उस २ मार्गके द्वारा पुरुषकी बुद्धि चूती है, जैसे छेदवाले वर्तनसे जलचुआ करता है । ४७ । इतनासुन धृतराष्ट्रजी बोले, कि शरीरके भीतर मिथ्या बातोंके उपचारसे हमने अग्निको स्थापन कररक्खा है इससे वह अग्नि मन्दबुद्धि हमारे पुत्रों को युद्ध कराकर मारेगा । ४८ । यह सब संसार नित्य उद्विग्न रहता है व यह मनभी नित्य उद्विग्न रहता है, अब जो पदनित्य अनुद्विग्न रहता

strength, intellect and health. He who laments for things beyond his *reach, makes his body lean for nothing and becomes* the laughing stock of his enemies. Man dies and is born again; *from* childhood he grows up to be a man; he begs and is begged at times; he feels sorrow for others and others feels sorrow for him. A wise man should neither be sorry nor overjoyed; for, pleasure and pain, gain and loss, life and death, health and sickness, all come in time. The five senses and the mind are restless; whichever of these doors opens wide the wisdom leaks through, as water leaks through a hole in a vessel." On hearing this Dhritrashtra, said, "We have inflamed a fire within us by our false dealings and it will destroy our children in the ensuing battle. This world as well as the mind is changing; pray tell me of that which remains unchanged for ever." To this Vidur replied, "You cannot have peace of mind without

पश्यति ॥ ४९ ॥ नित्यो द्विग्रमिदंसर्वं नित्योद्विग्नमिदंमनः । यत्तत्पदमनुद्विग्नं तन्मेवद महामते ॥ ५० ॥ विदुर उवाच । नान्यत्र विद्यातपसोर्नान्यत्रेन्द्रियनिग्रहात् । नान्यत्रलोभसन्त्यागाच्छान्तिं पश्यामितेऽनघ ॥ ५१ ॥ बुद्ध्याभयंप्रणुदति तपसाविन्दते महत् । गुरुशुश्रूषयाज्ञानं शान्तिंयोगेनविन्दति ॥ ५२ ॥ अनाश्रितादानपुण्यं वेदपुण्यमनाश्रिताः । रागद्वेषविनिर्मुक्ता विचरन्तीह मोक्षिणः ॥ ५३ ॥ स्वधीतस्यसुयुद्धस्य सुकृतस्यचकर्मणः । तपसश्चसुतप्तस्य तस्यान्तेसुखमेधते ॥ ५४ ॥ स्वास्तीर्णानिशयनानि प्रपन्नानवै भिन्नाजातु निद्रांलभन्ते । नस्त्रीषु राजन्रतिमाप्नुवन्ति नमागधैःस्तूयमानान सूतैः ॥५५॥ नवै भिन्नाजातु चरन्तिधर्मं नवैसुखं प्राप्नुवन्तीहभिन्नाः । नवैभिन्नागौरवं प्राप्नुवन्ति नवैभिन्नाः प्रशमंरोचयन्ति ॥ ५६ ॥ नवैतेषांस्वदते पथ्य

हो वह हमसे कहो । ४९ । इतना सुन विदुरजी बोले, कि हे पापरहित विद्या, तपस्या, इन्द्रियोंका जीतना, लोभ छोड़ना, इनकार्यों के विनाकिये हम आपकी शांति नहीं देखते । ५० । पुरुष बुद्धि से भय मिटाता, व तपस्या से सद्गुरू शास्त्रादि पाता, व गुरुकी सेवा करने से ज्ञान पाता, व योगाभ्याससे शांति पाता है । ५१ । विना दान पुण्यकरने से व विना वेद पुण्य के पढ़ने जानने से, व विना राग वैरादि छूटने से मोक्षकी अभिलाषा किये पुरुष यहीं घूमाकरते हैं ।५२। अच्छी तरह पढ़नेका व अच्छी तरह युद्ध करनेका व अच्छी तरह किये गये कर्मका व अच्छी तरह कियेगये तपका फल व सुख अन्तमें पाता है । ५३ । जिन पुरुषोंका जातिवाले लोगोंके संग विगाड़ होजाता है अच्छे २ विस्तरों पर लेटने से भी उनको नींद नहीं आती, न स्त्रियों में उनको प्रीति होती, न मागध सूतों के स्तुति करने सेही नींद आती न प्रसन्नताही होती । ५४ । न वे लोग कभी धर्महो करते व न वे लोग कभी सुखही पाते न वे गौरवही पाते न उनलोगों को शांत रहनाही रुचता है । ५५ । व न उनको अपना हितभी कोई कहता तो अच्छा लगता व उनका योग क्षेम भी नहीं अच्छी तरह होता, उन लोगों को नाशके सिवाय और कुछ सूझताही नहीं

knowledge, asceticism, control of senses and freedom from avarice.50. Man removes fear by means of intellect, by penance he gets a true preceptor; he gains knowledge by pleasing his preceptor and peace of mind by abstract meditation of the Supreme Being. One, desiring salvation without charity, the study of the Vedas and control of passions, wanders for ever in this very world. One gets in the end the fruit of good fighting, good deeds and penances well performed. They can find no sleep even on well prepared beds, who have made enemies of their kinsmen; they can neither find pleasure in women nor sleep and pleasure with the songs of their praises sung by bards; they are never engaged in doing *dharm* nor do they ever get happiness, greatness or peace of mind; they donot like to hear good

मुक्तं योगक्षेमं कल्पते नैव तेषाम् । भिन्नानां वै मनुजेन्द्र परायणं न विद्यते किञ्चिदन्यद्विनाशात् ॥ ५७ ॥ सम्पन्नं गोषु सम्भाव्यं सम्भाव्यं ब्राह्मणे तपः । सम्भाव्यं चापलं स्त्रीषु सम्भाव्यं ज्ञातितो भयम् ॥ ५८ ॥ तन्तवोऽप्यायता नित्यं तनवो बहुलाः समाः । बहून्बहुत्वादायासान् सहन्तीत्युपमा सताम् ॥ ५९ ॥ धूमायन्ते व्यपेतानि ज्वलन्ति सहितानि च । धृतराष्ट्रोल्मुकानीव ज्ञातयो भरतर्षभ ॥ ६० ॥ ब्राह्मणेषु च ये शूराः स्त्रीषु ज्ञातिषु गोषु च । वृन्तादिव फलं पक्वं धृतराष्ट्र पतन्ति ते ॥ ६१ ॥ महानप्येकजो वृक्षो बलवान्सुप्रतिष्ठितः । प्रसह्य एव वातेन सस्कन्धो मर्दितुं क्षणात् ॥ ६२ ॥ अथ ये सहिता

। ५६ । गाइयों को दुग्धादि से सम्पन्न होना चाहिये, ब्राह्मणों को तपस्या से सम्पन्न होना चाहिये, स्त्रियों में चपलता होतीही है, व जातिवालों से भय होतीही है । ५७ । कुलके लोग पहिले बढ़ाये जाते हैं फिर बहुत वर्षोंतक बढ़ते रहते हैं, व बहुत होनेके कारण बहुत प्रयास करते हैं जिनकी कि सज्जनों की उपमा होती है जैसे तुम्हारे पांडव लोग । ५८ । यह गुण पाण्डवोंहीमें है कि जहां से बढ़ायेगये हैं उनके संग पड़ें तो बहुत ही बड़ा काम करें सब जातिवाले वैसे नहीं होते वरन उनके विपरीत होतेहैं, जातिवाले लोग जबतक अलग २ रहते हैं धुआंयाकरते, व जब इकट्ठे होजाते हैं तो जलने लगते हैं, हे धृतराष्ट्र जातिके लोग अंगारों के समान होतेहैं जबतक अलग २ रहते धुआं निकला करता जब इकट्ठे होते तो धधक बलने लगतेहैं । ६० । बड़ाभारी बलवान बड़ी पुष्टताके साथ लगा हुआ भी अकेला वृक्ष कुछ नहीं करसक्ता क्योंकि उसको बब चहै प्रचंड पवन जड़मूल से उखाड़ डाले । ६१ । परन्तु जो वृक्ष बागों में बहुत से एकत्र लगेहोते वे परस्पर एकत्र रहने से मिले रहते हैं इससे प्रचण्ड पवनकोभी सहलेते

advice nor feel themselves secure, and think of nothing but killing. Cows give milk; Brahmans do penances; women are naturally fickle and kinsmen excite fear. First the seed of a family is sown, then its members grow up for great many years; when they become many, they rise by their effort and through them the family becomes noble: your Pandavas are an example. The Pandavas can do great deeds if they join those from whom they had their birth; all others donot possess these qualities: some smoke when they are apart and begin to burn when they come together. Some kinsmen are like charcoals which smoulder as long as they are lying apart, but begin to burn as soon as they come together. 60. A large tree, howsoever strong and well-rooted, is helpless while it stands alone; for a storm of wind may uproot it at any time. But clumps of trees, standing together in gardens, can bear the roughest wind and are not easily broken down. In the same manner, a lonely man however strong he may

वृक्षाः सघशःसुप्रतिष्ठिता । तेहिशीघ्रतमान वातान सहन्तेऽन्योऽन्यसंश्रयात् ॥६३॥ एवमनुष्यमप्येकं गुणैरपिसमन्वितम् । शक्यंद्विषन्तोमन्यन्ते वायुर्द्रुममिवैकजम् ६४ अन्योऽन्यसमुपष्टम्भादन्योन्यापाश्रयेण च । ज्ञातयःसम्प्रवर्द्धन्ते सरसीवोत्पलान्यु त ॥ ६५ ॥ अवध्याब्राह्मणागावो ज्ञातयःशिशव स्त्रियः । येषाञ्चान्नानिभुञ्जीत ये चस्युःशरणागताः ॥ ६६ ॥ नमनुष्येगुणः कश्चिद्राजन् सधनतामृते । अनातुरत्वा-द्भद्रन्ते मृतकल्पाहिरोगिणः ॥ ६७ ॥ अव्याधिजकटुकं शीर्षरोगि पापानुबन्ध परुषं तीक्ष्णमुष्णम् । सतांपेयं यन्नपिबन्त्यसन्तो मन्युमहाराज पिबप्रशाम्य ॥ ६८ ॥ रो-गार्दितानफलान्याद्रियन्ते नवैलभंते विषयेषु तत्त्वम् । दुःखोपेतारोगिणो नित्यमेव

हैं एकाकी नहीं चलहते । ६२ । इसीतरह सबगुणों से युक्तभी हो पर अकेला मनुष्य है तो उसे अकेले पेड़के समान उखाड़ने के योग्य, शत्रुलोग समझते हैं । ६३ । एक दूसरे की सहाय करने से व मिलजुल कर रहने से जातिके लोग इकट्ठे रहने से बढ़तेहैं, जैसे तड़ाग में कमल मिलजुल कर बढ़ते हैं । ६४ । ब्राह्मण, गाय, जातिके लोग, बालक, स्त्रियां व जिनका अन्नखाताहो व जो शरण में आयेहों इतने लोग मारने के योग्य नहीं होते । ६५ । हे राजन् मनुष्य में जीवन व नीरोगताके सिवाय और कोई गुण नहीं होता इससे जो रोगी होतेहैं वे मरेहीके तुल्यहोतेहैं । ६६ । हे महाराज प्रशान्त चित्तहो दीनता को पान करजाओ यह दीनता व्याधि से उत्पन्न नहीं होवे, पर कडुवीहोती है, व शिर में व्यथा करती, पापका अनुबन्धही है, कठोर, तीक्ष्ण, व गरम होती है सज्जनलोग इसे पीते असज्जन नहीं पीते ।६७। रोगीलोग फूलोंका आदर नहीं करते व न विषय वासनाओंको निश्चय जानते, न धन के योगसे सुखपाते हैं क्योंकि नित्य वे लोग सदा दुःखितही रहते इससे कुछ जानही नहीं पाते । ६८ । हे राजा जुए में जीतीहुई द्रौपदी को देख हमने

be, is regarded vulnerable by the enemy, like a tree standing alone. The members of a family grow strong if they live together peacefully as lotus plants grow together in a lake. Brahmans, cows, kinsmen, children, women, givers of food and those who come under your refuge are never to be slain. Men have no properties other than life and health, a sickman is therefore like one dead. Subdue your mind, king, and drink in dejection which is not born of misery, yet it is bitter, makes the head giddy, is connected with sin, is hard, sharp and hot and is drunk by good men and not by the wicked. A sick man finds no pleasure in flowers and cannot enjoy the beauties of nature and wealth, for he is always in trouble and cannot realise anything. You did not act on my advice which I gave you on my seeing Draupadi won in the game. I told you to check Duryodhan's wickedness, for good men donot gamble. It is no strength which

नवुद्यन्ते धनभोगान्नसौख्यम् ॥ ६९ ॥ पुराह्युक्तंनाकरोस्त्वं वचोमे द्यूतेजितान्द्रौपदीं प्रेक्ष्यराजन् । दुर्य्योधनं वारयेत्यक्षवत्यां कितवत्वं पण्डितावर्ज्जयन्ति ॥ ७० ॥ नतद्बलंयन्मृदुना विरुध्यते सूक्ष्मोधर्म्मस्तरसा सेवितव्यः । प्रध्वंसिनी क्रूरसमाहिता श्री मृंदुप्रौढा गच्छतिपुत्रपौत्रान ॥ ७१ ॥ धार्त्तराष्ट्राः पाण्डवान् पालयन्तु पाण्डोः सुतास्तवपुत्रांश्चपान्तु । एकारिमित्राःकुरवो ह्येककार्य्या जीवन्तुराजन् सुखिनःसमृद्धाः ७२ मेढीभूतःकौरवाणां त्वमद्य त्वय्यधीनं कुरुकुलमाजमीढ । पार्थान्बालान् वनवासप्रतप्तान् गोपायस्वस्वं यशस्तातरक्षन् ॥ ७३ ॥ सन्धत्स्वत्वं कौरव पाण्डुपुत्रैर्मातेऽन्तरं रिपवःप्रार्थयन्तु । सत्ये स्थितास्ते नरदेवसर्वे दुर्य्योधनं स्थापयत्वंनरेन्द्र ॥ ७४ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरहित वाक्ये
षट्त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३६ ॥

जो बचन आपसे कहा आपने उसे नहीं माना, वह यह था कि दुर्योधन को रोको इस विषय में अनर्थ न करे क्योंकि सत्पुरुष जुआ नहीं खेलते । ६९ । वह बलनहीं है जो कोमलपदार्थ से अबल होजाय, व सूक्ष्मधर्म शीघ्रताके साथ सेवन करना चाहिये, व जो लक्ष्मी क्रूरपुरुष में समाहित रहती है वह शीघ्रही नष्टहोती है व जो कोमल मनुष्यों से प्रौढ़रहतीहै वह पुत्र पौत्रादिकोंके समयतक बनीरहतीहै ।७०। हे धृतराष्ट्र आप पाण्डवोंकी पालना अपने सुतों के समानकरें क्योंकि कौरवों और पांडवों के शत्रु और मित्र एकही हैं दोनों मिलकर रहें और बहुत दिन तक धन धान्ययुक्तऔर सुखी रहें । ७१ । हे धृतराष्ट्र तुम कौरवों के मान्यहो और सब भूप कौरव कुलके आधीन हैं वनवास से दुःखित पाण्डवों को पालकर यश लीजिये यह बचन हमारा मानिये और कुछ न कीजिये कौरव और पांडवों का मेलकरो और बहुत से रिपु मत बढ़ाओ पांडव सब धर्म परहैं दुर्योधन को यही समझाइये ॥ ७४ ॥

---

can be defeated by a delicate thing; the dictates of *dharm* should at all times be followed. The wealth of the cruel man is soon lost while that of the kindhearted is handed down to his sons and grandsons. 70. You must maintain the Pandavas like your sons; for the enemies and friends of the Kauravas and the Pandavas are the same. Let both be united to live long in peace and prosperity. You are the head of the Kaurava family and all the kings obey you. Make yourself glorious with the help of the Pandavas who are distressed with the pain of exile. Do as I say and nothing else. Bring about the union of the Kauravas and the Pandavas and donot increase the number of your enemies. Tell Duryodhan that the Pandavas are on the right.'74.

विदुर उवाच । सप्तदशेमानराजेन्द्र मनुः स्वायम्भुवोऽब्रवीत् । वैचित्रवीर्य पुरुषा नाकाशं मुष्टिभिर्घ्नतः ॥ १ ॥ दानवेन्द्रस्य चधनुरनाम्यं नमतोऽब्रवीत् । अथोमरीचि नः पादानग्राह्यान गृह्णतस्तथा ॥ २ ॥ यश्चाशिष्यं शास्तिवैयश्च तुष्येद्यश्चातिवेलंभजते द्विषन्तम् । स्त्रियश्चयो रक्षतिभद्रमस्तुते यश्चायाच्यं याचतेकत्थतेवा ॥ ३ ॥ यश्चाभि जातः प्रकरोत्यकार्यं यश्चाबलो बलिनानित्यवैरी । अश्रद्दधानायच योब्रवीति यश्चाका म्यं कामयतेनरेन्द्र ॥४॥ वध्वाऽवहासं श्वशुरोमन्यतेयो वध्वाऽवसन्नभयो मानकामः ।

अध्याय ३७ ॥

विदुरजी बोले हे धृतराष्ट्रजी स्वायम्भुव राजा मनुजी ने आकाश अपनी मुट्ठी में किये सत्तरह पुरुष बताये हैं । १ । एक तो बताया है कि इन्द्रका धनुष किसी के झुकाने के नानका नहीं है, व फिर सूर्य्य चंद्रमा के किरण किसी के पकड़ने के योग्य नहीं । २ । व जो पुरुष बिना सिखाने के योग्य पुरुषको थोड़े लाभके लिये सिखाताहै व उस से संतुष्ट होजाता है व जो अपने लाभके लिये शत्रुकी सेवा करता है, व जो स्त्रियोंकी रक्षासे अपना कल्याण चाहताहै वे दोनों मूर्ख हैं, व जो बिना मांगने वाले से मांगताहै व आप युद्धादि कुछ कर नहीं सक्ता पर बकता बहुत है । ३ । व जो कुलीन होकर चोरी व्यभिचारादि अकर्त्तव्य कार्य्य करता है, व जो निर्बलहो बलवान् का नित्य बैरी रहता, व जो श्रद्धारहित पुरुष को कुछ सदुपदेश करता है व जो चाहनेके अयोग्य की चाहना करता है । ४ । व जो श्वशुरहोकर अपनी पतोहू से उसके पिता भाई आदि के समान प्रत्यक्ष में कुछ हास्यकी वार्त्ता करता, व जो आपत्काल में कहीं बधू के पिता

CHAPTER XXXVII

Vidur said to Dhritrashtra, "Manu the self-create has mentioned seventeen persons that are foolish; namely: he who wishes to catch the rainbow, he who would control the rays of the sun and moon, he who teaches an unworthy man for a small remuneration and is satisfied with it, he who serves an enemy for his own benefit, he who seeks happiness by the protection of women, he who begs something of a miser, he who has no powers and talks much, he who being born of a noble family commits adultery theft and other wicked deeds, a weak man making an enemy of a stronger one than himself, one teaching truth to him who has no faith in it, one desiring to get things which he cannot get, father-in-law joking with his daughter-in-law in the presence of her kinsmen, one who expects honour while

परक्षेत्रेनिर्वपति यश्चबीजं स्त्रियञ्चयः परिवदतेऽतिवेलम् ॥ ५ ॥ यश्चापिलब्ध्वान स्मरामीतिवादी दत्त्वाचयः कत्थतियाच्यमानः । यश्चासतः सत्त्वमुपानयीत एतान्नय न्तिनिरयंपाशहस्ताः ॥ ६ ॥ यस्मिन्यथा वर्त्ततेयो मनुष्यस्तस्मिंस्तथा वर्त्तितव्यंसधर्मः । मायाचारोमायया वर्त्तितव्यः साध्वाचारः साधुनाप्रत्युपेयः ॥ ७ ॥ जरारूपंह रतिहि धैर्यमाशा मृत्युःप्राणान् धर्मचर्यामसूया । कामोह्रियं वृत्तमनार्यसेवा क्रोधःश्रियं सर्वमेवाभिमानः ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । शतायुरुक्तःपुरुषः सर्ववेदेषुवैयदा । नाप्नोत्यथचतत्सर्वं मायुःकेनेहहेतुना ॥ ९ ॥ विदुर उवाच । अतिमानोतिवादश्च तथा

आदि से रक्षितहो फिर अनापत्काल में भी वहींरह अपना मान चाहता है, व जो पर स्त्री गमन करता है, व जो स्त्रियों के संग बार २ वार्त्ता कियाकरता है । ५ । व जो पुरुष पाकर कहता है हमको स्मरण नहीं है, व जो तीर्थादि में देनेको कहआता व वहां मांगनेपर कहने लगता हमतो यहीं देचुके, व जो दुष्टके पराक्रम व साधुताकी बड़ाई करता व उसको सत्यव की बताता यह ये १७ मूर्खहुये, इन सबोंको हाथों में फांसी लिये यमराज के दूत नरकको लेजाते हैं । ६ । जिसके संग जो जैसाकरै उसके संग वहभी वैसाही करै, दुष्टके संग दुष्टता व साधु के संग साधुता करनाही धर्म है व इसके विपरीत अधर्म है । ७ । वृद्धता रूपको हरती है, आशा धैर्य्यको हरती, मृत्यु प्राणों को, निन्दा धर्मको, कामलज्जाको, नीचकीसेवा आचरणको, क्रोधलक्ष्मीको, व अभिमान सब पदार्थोंको हरता है । ८ । धृतराष्ट्रजी बोले, कि विदुरजी वेदों में पुरुषकी १०० वर्षकी आयुष्य लिखी है पर किस हेतुसे पूरी आयुष्य पुरुष नहीं पाता । ९ । विदुरजी बोले, कि अतिमान करना अतिवाद करना, चोरीकरना, विष खिलाना, क्रोधकरना, अपनेही उदरका

---

residing at the house of his father-in-law, an adulterer, one who is talking constantly with women, one who pretends forgetfulness after receiving something, one who does not fulfil the promises made and one praising the truth, greatness and prowess of a tyrant: the messengers of Yamraj seek such fools with nooses in their hands to carry them to hell. It is but fair to do ill to one who has done you ill and to do good to him who has done you good: acting against this principle is acting against *dharm*. Old age destroys beauty; hope destroys patience; death destroys life; blame destroys *dharm*; passion destroys shame; attendance on a lowborn man destroys conduct; anger destroys wealth and pride destroys everything." "The Vedas ascribe a hundred years of life to man," said Dhritrashtra to Vidur, "how is it that many people donot reach their

त्यागोनराधिप । क्रोधश्चात्मविधित्साच मित्रद्रोहश्चतानिषट् ॥ १० ॥ एतएवासयस्तीक्ष्णाः कृन्तन्त्यायूंषि देहिनाम् । एतानिमानवान् घ्नन्तिनमृत्युर्भद्रमस्तुते ॥ ११ ॥ विश्वस्तस्यैतियोदारान् यश्चापिगुरुतल्पगः । वृषलीपतिर्द्विजोयश्च पानपश्चैवभारत ॥ ॥१२॥ आदेशकृद्वृत्तिहन्ता द्विजानांमेषकश्चयः। शरणागतहाचैव सर्वेब्रह्महणःसमाः। एतैःसमेत्यकर्त्तव्यं प्रायश्चित्तमितिश्रुतिः ॥ १३ ॥ गृहीतवाक्योनयविद्वदान्यः शेषान्नभोक्ताह्यविहिंसकश्च। नानर्थकृत्याकुलितः कृतज्ञः सत्योमृदुःस्वर्गमुपैति विद्वान् १४ सुलभाःपुरुषाराजन् सततंप्रियवादिनः । अप्रियस्यतुपथ्यस्य वक्ताश्रोताच दुर्लभः

पालन पोषण करना, व मित्रों से द्रोह करना ये ६ बड़े तीक्ष्ण खड्गहैं जो मनुष्योंकी आयुष्य काट डालते हैं, वसयेही ६ मनुष्योंको मारडारते हैं मृत्यु किसीको नहीं मारती । ११ । विश्वस्त पुरुषकी स्त्रीके संग जो भोगकरता व जो गुरुके बिस्तरेपर बैठताहै व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य होकर जो शूद्रकी स्त्रीके संग भोगकरता है व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहो जो मदिरा पान करता । १२ । व जो ब्राह्मणहो किसी की पठौनी करता है व जो किसी की जीविका हरलेता है व जो ब्राह्मण को सेवकाई में रखता, व जो शरणागतको मारता व मरवाता, येसब ब्राह्मण मारडालनेवाले के समान हैं, इन के संग बैठने उठने खानेपीने से ब्रह्महत्याका प्रायश्चित्त करना चाहिये । १३ । व विद्यावान्, नीतिमान, दानी, देवता पितर व अतिथियों के भोजन से बचे अन्नके भोजन करनेवाला किसी को भी जीवको न मारनेवाला, अनर्थ न करनेवाला, कुशल, उपकार माननेवाला, सत्यवादी व सरल चित्त वाला इतने पुरुष स्वर्गको जाते हैं । १४ । हे राजन् सदा प्रियवादी पुरुष सुलभ हैं सब कहीं मिलते हैं परन्तु अप्रियहो वाहितहो ऐसे वचनको श्रोतावक्ता दोनों दुर्लभ हैं । १५ ।

---

full age!" "Too much boasting and bragging, theft, poisoning, anger, gluttony and bad treatment of friends, replied Vidur," are the sharp swords to cut human life short; they kill men and not Death. 11. He who commits adultery with the wife of one who trusts him, he who sits on the seat of his preceptor, he who being a twice born has sexual intercourse with a Shudra woman, he who being a twice born drinks wine, a Brahman serving another, he who deprives another of livelihood, he who employs a Brahman as menial servant and he who kills a refugee, all these are like one who murders a Brahman; any one mixing with them will have to be expiated from the sin. The following persons will enter paradise—a learned man, a politician, a liberal man who eats after offering food to gods, pitars and guests, one who does not deprive another of

॥ १५ ॥ योहिधर्मसमाश्रित्य हित्वाभर्तुःप्रियाप्रिये । अप्रियाण्याह पथ्यानि तेनराजासहायवान् ॥ १६ ॥ त्यजेत्कुलार्थेपुरुषं ग्रामस्यार्थेकुलंत्यजेत् । ग्रामंजनपदस्यार्थे आत्मार्थेपृथिवींत्यजेत् ॥ १७ ॥ आपदर्थेधनं रक्षेद्दारान् रक्षेद्धनैरपि । आत्मानंसततंरक्षेद्दारैरपि धनैरपि ॥ १८ ॥ द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टंवैरकरंनृणाम् । तस्माद्द्यूतंन सेवेत हास्यार्थमपिबुद्धिमान् ॥ १९ ॥ उक्तंमयाद्यूतकालेऽपि राजन्नेदंयुक्तं वचनंगाऽतिपेय । तदौषधंपथ्यमिवातुरस्य नरोचतेतववैचित्रवीर्य ॥ २० ॥ काकैरिमांश्चित्र-

---

जो पुरुष धर्म पर आरूढ़ हो प्रिय अप्रियछोड़ अपने स्वामीके हितहीके वचन कहताहै चाहे सुनने में बहुतही अप्रियहो ऐसेही पुरुष से राजा सहायवान् होताहै । १६ । कुलके अर्थ दुराचारी एक पुरुष को छोड़ देना चाहिये व ग्राम के अर्थ एककुल छोड़ देना चाहिये देशके अर्थ एकग्राम छोड़ना चाहिये व अपने अर्थ पृथ्वीभर छोड़नी चाहिये व । १७ । आपत्कालके लिये धनकी रक्षा करनी चाहिये व स्त्रियोंकी रक्षा धनसे करनी चाहिये व अपनी रक्षा स्त्रियों व धन दोनोंसे करनी चाहिये । १८ । बहुत पूर्व समय से जुआ खेलना मनुष्योंका वैरकारी देखासुना गयाहै इससे बुद्धिमान् पुरुष हँसी करने के लियेभी जुआ कभी न खेलैं । १९ । हे राजन् जब तुम्हारे यहां जुआ खेलने का प्रारम्भ हुआ था तभी हमने कहा था कि यहबात अच्छी नहीं इसमें अनर्थ होगा परन्तु आपको हमारा वचन ऐसा न अच्छालगा जैसे रोगीको हितकारीभी कडुवी औषध अच्छी नहींलगती २० हे राजन् काकरूप अपने पुत्रों से चित्र विचित्र पंखवाले मयूर रूप पाण्डवों को पराजित

---

livelihood, he who is not unjust, a wise man, a *grateful man*, a truthful man and a *pureminded man*. It is easy to find men who can talk agreeable; but it is difficult to find men who will speak and hear words that are disagreeable but salutary. He who is firm on duty will say words that are beneficial to his master whether they be pleasant or unpleasant to hear and a king receives real help from such people only. A wicked man may be sacrificed for the sake of a family; a family for a village; a village for the country and the whole Earth for the good of self. Wealth is kept as a safeguard against calamities; it should be sacrificed for the protection of women and both wealth and women may be sacrificed for the sake of self. Gambling has proved hurtful from past experience, wise men donot gamble even in joke. I warned you aganist the evils of gambling before the commencement of the game, but you did not like it as a sick man does not like bitter medicine. 20. You expect your crowlike sons to defeat the peacocklike Pandavas and wish to protect

वर्हान्मयूरान पराजयेथाः पाण्डवान पार्त्तराष्ट्रैः । हित्वासिंहान क्रोष्टुकान गूहमानःप्राप्ते कालेशोचिता त्वंनरेन्द्र ॥ २१ ॥ यस्तातनक्रुध्यति सर्वकालं भृत्यस्यभक्तस्य हितेरतस्य । तस्मिनभृत्याभर्तरि विश्वसन्ति नचैनमापत्सु परित्यजन्ति ॥ २२ ॥ नभृत्यानां वृत्तिसंरोधनेन राज्यंधनं सञ्जिघृक्षेदपूर्वम् । त्यजन्ति ह्येनंवञ्चितावैविरुद्धाः स्निग्धाह्यमात्याः परिहीनभोगा. ॥ २३ ॥ कृत्यानिपूर्वं परिसंख्यायसर्वा ण्यायव्यये चानुरूपाञ्चवृत्तिम् । संगृह्णीयादनुरूपान् सहायान् सहायसाध्यानि हि दुष्कराणि २४॥ अभिप्रायंयोविदित्वातु भर्तुः सर्वाणिकार्याणि करोत्यतन्द्री । वक्ताहितानामनुरक्त

कराया चाहते हो व सिंहोंको छोड़ शृगालों की रक्षा चाहतेहो इस से समय आनेपर शोच करोगे इस में कुछभी सन्देह नहीं है । २१ । हेतात जोपुरुष सेवा करते हुये व सदाहितकारी सेवकके ऊपर कभी क्रोधनहीं करता उस स्वामी में सेवक भी विश्वास करते हैं व आपत्काल में स्वामीको नहीं छोड़ते । २२ । भृत्योंकी जीविकारोक और बाहर से किसीका धन उस के बदले में न हरनेकी इच्छाकरे क्योंकि जिनभृत्योंकी जीविका रुकजातीहै वे समयपर स्वामीको छोंड़देते हैं चाहे स्नेहवान भी हों पर जब उन की जीविका नहीं रहती तो कार्य्य नहीं करते । २३ । प्रथम जो कार्य करता है उस का साध्य असाध्य विचार ले फिर नौकरों चाकरों की जीविका अच्छी तरह नियत करे व अपनी आयव्ययभी जान ले तो फिर अपने मनके सहायकों को ग्रहण करे क्योंकि सहायकों से सिद्ध होनेवाले कार्य्य बड़े दुष्कर होते हैं । २४ । जो पुरुष स्वामी का अभिप्राय जान सबकार्य्य निरालसहो करता है व सदा हितही वचन बोलता

---

jackals against lions; you will undoubtedly repent of your conduct in time. The master who is never angry with servants, who work faithfully, is trusted by them and they never forsake him at the time of trouble. The pay of servants should not be stopped, for by so doing the servants leave the master at the time of need and donot work without receiving it. First ascertain the possibility or impossibility of success in the work which you wish to begin, then fix the salaries of your servants, having in view your income and expenditure and last of all receive assistance of others; for the work which depends wholly on the assistance of others is ill performed. He who knows the wishes of his master, serves him diligently, gives him good advice, is faithful and owns his authority, should be loved in return. He who disregards his master's directions, disobeys his orders, has a very high opinion of his own wisdom and always acts contrary to his

आर्यः शक्तिज्ञआत्मेवहि सोऽनुकम्प्यः ॥ २५ ॥ वाक्यंतुयो नाद्रियतेऽनुशिष्टः प्रत्याहयश्चापि नियुज्यमानः । प्रज्ञाभिमानी प्रतिकूलवादी त्याज्यःसतादृक् त्वरयैवभृत्यः ॥ २६ ॥ अस्तब्धमक्लीवमदीर्घसूत्रं सानुक्रोशं श्लक्ष्णमहार्यमन्यैः । अरोगजातीयमुदारवाक्यं दूतं वदन्त्यष्टगुणोपपन्नम् ॥ २७ ॥ नविश्वासाज्जातु परस्यगेहे गच्छेन्नरश्चेतयानो विकाले । नचत्वरेनिशि तिष्ठेन्निगूढो नराजकाम्यां योषितंप्रार्थयीत ।२८। ननिन्हवं मन्त्रगतस्य गच्छेत् संसृष्टमन्त्रस्य कुसङ्गतस्य । नचब्रूयान्नाश्वसिमित्वयीति सकारणंव्यपदेशन्तु कुर्यात् ॥ २९ ॥ घृणीराजा पुंश्चलीराजभृत्यः पुत्रोभ्राता विधवा

व सदास्वामी का अनुरागी रहता व अपने स्वामीकी शक्ति जानता है ऐसा श्रेष्ठ अपने समान दया करने के योग्य है । २५ । व जो भृत्य सिखानेपर स्वामी के वचन का आदर न करताहो व कार्य्य करने की आज्ञा पाय उसका निषेध करताहो व जो अपनी बुद्धि का बड़ा अभिमान रखताहो व सदा आज्ञाके विरुद्धही काम करताहो ऐसे भृत्य का त्याग तुरन्तहीकर देनाचाहिये । २६ । व अहंकार रहित, सामर्थ्यवान, शीघ्रकार्यकारी, दयावान्,मधुरवक्ता, औरों के फुसलानेमें न आजानेवाला रोगरहित, सयुक्तिकवचन कहनेवाला ऐसा ८ गुणयुक्तदूत जहां कहीं भेजनाहो भेजे । २७ । संध्या समय बिना परिचित मनुष्य के घरपर टिकने के लिये न जाना चाहिये व रात्रि में अकेला चौराहा में न सोवै व राजाके भोग करनेवाली स्त्रियों से भोग करने के लिये प्रार्थना न करै ।२८। व अच्छे मंत्रीको चाहियेकि जिस राजाके बहुतसे दुष्टमंत्रीहों और राजाउन्हींकी संगतिमें पड़ारहताहोतो उसकी सम्मतिमें नरहे व पूंछनेपर यहभी न कहे कि तुम्हारेतो बहुत मंत्री हैं हमकुछ न कहेंगे किन्तु कहदे कि हमको इस समय कार्य है इतना कह टलजाय ।२९। अति लज्जावान्, राजा, पुंश्चल, राजसेवक, पुत्र, भाई, विधव स्त्री, व छोटेबालककी माता, सेनासे जीविका

---

master's orders, should at once be dimissed. An ambassador should be free from vanity, strong, dexterous, merciful, good speaker, strong-willed, healthy and reasonable. One should not go in the evening to stay at the house of an unknown person; one should not sleep alone by night at the place where four roads meet; and one should not try to have sexual intercourse with women having connection with the king. A virtuous minister should not give advice to the king who is under the influence of many wicked ministers nor on being asked he should refer him to other ministers for advice, but should make some excuse. To have money dealings with the following persons is forbidden:-a very bashful person, a king, a harlot's son, a king's officer, a son, a brother, a widow, an infant

वालपुत्रा । सेनाजीवीचोद्धृतभूतिरेव व्यवहारेषुवर्ज्जनीयाःस्युरेते ॥ ३० ॥ अष्टौ गुणाः पुरुषंदीपयन्ति प्रज्ञाच कौल्यञ्चश्रुतंदमश्च । पराक्रमश्चाबहुभाषिताच दानं यथाशक्तिकृतज्ञताच ॥ ३१ ॥ एतान्गुणांस्तातमहानुभावा नेकोगुण.संश्रयतेप्रसह्य । राजायदासत्कुरुतेमनुष्यं सर्वानगुणानेषगुणो विभर्ति ॥ ३२ ॥ गुणादशस्नानशीलं भजंते बलंरूपंस्वरवर्णप्रशुद्धिः । स्पर्शश्चगंधश्चविशुद्धताच श्रीःसौकुमार्य प्रवराश्च नार्यः ॥ ३३ ॥ गुणाश्चषण्मितभुक्तंभजंते आरोग्यमायुश्चबलंसुखंच । अनाविलं चास्यभवत्यपत्यं नचैनमाद्यूनइतिक्षिपंति ॥ ३४ ॥ अकर्मशीलंच महाशनंच लोकद्विष्टंबहुमायंनृशंसम् । अदेशकालज्ञमनिष्टवेष मेतान्गृहेनप्रतिवासयेत ॥ ३५ ॥ कदर्यमाक्रोशकमश्रुतंच वनौकसं धूर्तममान्यमानिनम् । निष्ठूरिणंकृतवैरंकृतघ्न मेतान

करने वाला, व जिसकी जीविका छीनली गई हो धन लेन देन के व्यवहार में इतने पुरुष वर्जनीय हैं । ३० । प्रज्ञा, कुलीनता, शास्त्र पढ़ना, दम, इन्द्रियों का जीतना, पराक्रम, बहुत न बोलना, दान यथाशक्ति देना, उपकार मानना, इतने गुण पुरुषको प्रकाशित करते हैं । ३१ । हे तात इन सब महानुभाव गुणों को एकगुण अपने वश में करलेता है जिसका राजा सत्कार करता है वह इन सबगुणों को धारण करता है । ३२ । व जो पुरुष नित्य अच्छीतरह स्नान करता है उसको, बल, रूप, स्वर, वर्णोंका शुद्धोच्चारण, स्पर्श, गन्ध, विशुद्धता, श्री, सुकुमारता व श्रेष्ठ स्त्रियां ये दशगुण प्राप्त हैं । ३३ । व जो पुरुष अच्छी तरह योग्य भोजन करताहै उसको आरोग्य, आयुर्बल, बल, सुख, स्वच्छता, व सुन्दर सन्तान ये ६ गुण भजते हैं, व उसको बहुत भोजन करने वाला कोई नहीं कहता । ३४ । व अकर्मशील, बहुत खानेवाला, लोगोंका वैरी, बड़ा मायावी, क्रूर, देशकाल न जाननेवाला, कुत्सित वेष धारण करने वाला, इतने पुरुषोंको अपने घर में न बसावे । ३५ । कृपण, गालियां देनेवाला, मूर्ख, वनवासी, जुआरी जो

child's mother, a soldier and one who has lost his livelihood. 30. Wisdom, noble birth, study of shastras, control of organs, prowess, *absence of garrulity*, charity to the utmost of one's power and gratefulness are the qualities which make one glorious. The above-mentioned qualities come of themselves to one whom a king respects. Strength, beauty, correct pronounciation of words, powers of touch and smell, purity, delicacy, love of women, good voice and wealth come to him who bathes well every day. He who takes wholesome and well-cooked food *every day*, secures health, longevity, strength, happiness, cleanliness and good offspring and is not called a glutton. One should not let the following persons stay at his house:—an immoral person, a glutton, an enemy of mankind, a deceitful man, a

भृशार्तोऽपि नजातुयाचेत् ॥ ३६ ॥ संक्लिष्टकर्माणमतिप्रवादं नित्यानृतञ्चादृढभक्तिकञ्च । विसृष्टरागं पटुमानिनञ्चाप्येतान्न सेवेतनराधमान्षट् ॥ ३७ ॥ सहायबन्धनाह्यर्थाः सहायाश्चार्थबन्धनाः । अन्योन्यबन्धनावेतौ विनान्योऽन्यं नसिध्यतः ॥३८॥ उत्पाद्यपुत्राननृणांश्च कृत्वा वृत्तिञ्चतेभ्योनुविधायकाञ्चित् । स्थानेकुमारीः प्रतिपाद्यसर्वा अरण्यसंस्थोऽथमुनिर्बुभूषेत् ॥ ३९ ॥ हितंयत् सर्वभूतानामात्मनश्च सुखावहम् । तत्कुर्यादीश्वरे ह्येतन्मूलं सर्वार्थसिद्धये ॥ ४० ॥ बुद्धिःप्रभावस्तेजश्च सत्त्वमुत्थानमेवच । व्यवसायश्च यस्यस्यात् तस्यावृत्तिभयंकुतः ॥ ४१ ॥ पश्यदोषा-

---

मानने के योग्य नहीं पर मानाजाताहो, निष्ठुरवादी, वैरी, व उपकार न मानने वाला चाहे बहुतसा दुःखितहो पर इतने पुरुषोंसे कभी कुछ न मांगे । ३६ । व आततायी, जोकि ६ प्रकार के होते हैं जैसे कि, अग्नि लगाने वाला, विष खिलाने वाला, सदा शस्त्रही हाथ रखनेवाला परधन छीनलेने वाला, पराया खेत व पराई स्त्री हरलेने वाला, सदा व्यभिचित, नित्य मिथ्यावादी, अदृढ़ भक्तियुक्त स्नेहहीन अपनीही कुशल चाहने वाला इन ६ अधम पुरुषोंका सेवन कभी न करना चाहिये । ३७ । सहायकोंसे ही धन मिलताहै व धनसेही सहायक मिलतेहैं इससे ये दोनों परस्पर बँधेहुये हैं व इसी से बिना एकदूसरेके सिद्ध नहीं होता । ३८ । पुरुषको चाहिये कि पुत्रों को उत्पन्नकर उनको ऋणी न रखकर व उनके लिये कुछ जीविका भी नियतकर, कन्याओंका विवाहादिकर उनके घरोंको भेज वनमेंजाय मुनि होजावे । ३९ । व जो कार्य सबप्राणियों को हित हो व अपनेको भी सुखदायकहो, वही कर्म करनाचाहिये क्योंकि ईश्वर ऐसेही कर्म से सब अर्थोंकी सिद्धि का मूलहोता है । ४० । बुद्धि, प्रभाव, तेज, पराक्रम, उद्यम, व निश्चय इतने जिसके होतेहैं उसको अजीविकानहीं होसक्ती किन्तु सदा जीविका रहती है । ४१ ।

---

cruel man, one who has no regard for time and place and one wearing dirty clothes. One should not ask anything of a miser, a reviler, a fool, a forester, a gambler, one unworthy of respect, one cruel in speech, an enemy and an ingrate. The following persons should be carefully shunned:-an incendiary, a poisoner, a murderer, robber who robs another of wealth, land and woman, a fickle minded person, a liar, an athiest, an enemy and a self-conceited person. Wealth is obtained from helpers and it procures helpers; the two are inseparably dependent on each other. Having produced sons, one should provide for their livelihood and when the daughters are married and gone to their respective homes, one should become a hermit residing in forest. One should do a work that is beneficial to others as well as to self; for God gives all things to one who so acts. 40. Wisdom, prowess, glory, fame, trade and belief cannot fail to make the possessor of them sure of his livelihood. A quarrel with

न पाण्डवैर्विग्रहस्त्वं यत्रव्यथेयुरपिदेवाः सशक्राः । पुत्रैर्वैरं नित्यमुद्विग्नवासो यशःप्रणाशो द्विषताञ्चहर्षः ॥४२॥ भीष्मस्य कोपस्तव चैवेन्द्रकल्पद्रोणस्यराज्ञश्च युधिष्ठिरस्य उत्सादयेल्लोकमिमं प्रवृद्धः श्वेतो ग्रहस्तिर्यगिवापतन्खे ॥ ४३ ॥ तवपुत्रशतंचैवकर्णः पंचचपाण्डवाः । पृथिवीमनुशासेयुरखिलां सागराम्बराम् ॥ ४४ ॥ धार्तराष्ट्रा वनं राजन् व्याघ्राःपाण्डुसुता मताः । मावनं छिन्धिसव्याघ्रं माव्याघ्रानीनशन्वनात् ४५ नस्याद्वनमृते व्याघ्रान् व्याघ्रानस्युर्ऋतेवनम् । वनंहिरक्ष्यते व्याघ्रैर्व्याघ्रान्रक्षतिकानम् ॥ ४६ ॥ नतथेच्छन्तिकल्याणान परेषांवेदितुंगुणान् । यथैषांज्ञातुमिच्छन्ति नैर्गुण्यंपापचेतसः ॥ ४७ ॥ अर्थसिद्धिंपरामिच्छन् धर्ममेवादितश्चरेत् । नहिधर्मादपैत्य-

---

पाण्डवोंके संग विग्रह करनेमें तुम देखो कितने कोपहैं , जिनमें कि इन्द्रादि देव गणभी व्यथितहोंगे, व पुत्रोंसे वैर, नित्य उद्विग्नता सहित बसना यशका नाश, शत्रुओंको हर्ष होगा । ४२ । भीष्मजी का कोप व तुम्हारा कोप, इन्द्रसमान द्रोणाचार्यका कोप, राजायुधिष्ठिरकाकोप, ये सब इसलोकको उजाड़देंगे जैसे केतुका आकाशमें उदय सबलोकों को उजाड़ता है । ४३ । व जो मेलकरलोगे तो १०० पुत्र तुम्हारे व कर्ण व ५ पाण्डव ये सब समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वीका राज्य अच्छी तरह करेंगे। ४४ । हे राजन् तुम्हारे पुत्र वनके समान हैं, व पाण्डुके पुत्र व्याघ्रों के तुल्यहैं इससे व्याघ्र सहित वन न काटो क्यों कि व्याघ्र वन के नाश नहीं होवे वे वनेही रहते हैं । ४५ । व्याघ्रों के विना वन नहीं बचसका, व विना वन व्याघ्रभी नहीं बचते, इससे व्याघ्र वनकी रक्षा करते हैं व वन व्याघ्रों की रक्षाकरता है । ४६ । देखो पापी दुर्य्योधनादि पुत्रात्मा पाण्डवोंके कल्याण रूप गुणोंके जाननेकी वैसी इच्छा नहीं करते जैसी कि उन लोगोंके निर्गुण जाननेकी इच्छा करतेहैं । ४७ । जो उत्कृष्ट धर्मकी सिद्धिचाहे वह प्रथमही से सेवनकरै, क्योंकि

---

the Pandavas is precusor of evils, sufficient to disturb Indra and other gods, as well as of enmity with sons, constant care, loss of fame and the joy of enemies. Your own anger as well as that of Bhishma, Dronacharya and Yudhishthir will destroy the whole world like the appearance of Ketu on the sky. In the case of peace; your hundred sons with Karan and the five Pandavas will rule the whole land to the verge of the sea. Your sons, king, are like a forest and the Pandavas are like lions living in it: donot cut the forest inhabited by lions; for lions are not killed by cutting the forest. A forest and lions cannot exist without each other and both protect each other. See, the wicked Duryodhan and others donot wish to know the virtues of the good Pandavas as well as they desire to find out their faults. He who wishes the perfection of his dharm, should follow it from the beginning; for wealth cannot remain separate from dharm as

र्थः स्वर्गलोकादिवामृतम् ॥ ४८ ॥ यस्यात्मा विरतः पापात् कल्याणेच निवेशितः । तेनसर्वमिदंबुद्धं प्रकृतिर्विकृतिश्चया ॥ ४९ ॥ योधर्ममर्थकामञ्च यथाकालं निषेवते धर्मार्थकामसयोगं सोऽमुत्रेहचविन्दति ॥ ५० ॥ सन्नियच्छन्तियो वेगमुत्थितं क्रोधह र्षयोः । सश्रियोभाजनं राजन् यश्चापत्सुनमुह्यति ॥ ५१ ॥ बलंपंचविधं नित्यं पुरुषा णांनिबोधमे । यत्तुबाहुबलं नाम कनिष्ठंबलमुच्यते ॥ ५२ ॥ अमात्यलाभोभद्रंते द्वि तीयंबलमुच्यते । तृतीयं धनलाभन्तु बलमाहुर्मनीषिणः ॥ ५३ ॥ यत्त्वस्यसहजंराज न् पितृपैतामहंबलम् । अभिजातबलं नाम तच्चतुर्थंबलंस्मृतम् ॥ ५४ ॥ येनत्वेतानि सर्वाणि संगृहीतानिभारत । यद्बलानां बलंश्रेष्ठं तत्प्रज्ञाबलमुच्यते ॥ ५५ ॥ महते योपकाराय नरस्यप्रभवेन्नरः । तेनवैरंसमासज्य दूरस्थोऽस्मीतिनाश्वसेत् ॥५६॥ स्त्री

धर्म से अलग अर्थ कभी नहीं आता जैस स्वर्ग लोकसे अमृत कहीं नहीं जाता । [illegible] जिसका आत्मा पाप से अलग रहता, व कल्याणमेंही लगारहता है वह प्रकृति [illegible] सब जानता है । ४९ । जो पुरुष धर्म अर्थ व काम अपने समय पर सेवन[illegible] वह पुरुष धर्म्म अर्थ व काम यहां व परलोक में भी पाता है । ५० । हे रा[illegible] क्रोध व हर्षसे उठेहुये वेगको को रोकताहै व जो विपत्तिकाल में भी मोहित न[illegible] वह लक्ष्मी पाताहै । ५१ । पुरुषों के पांच प्रकारका बल होता है वह हमसे [illegible]निये, जो बाहों का बल होता वह सबसे छोटा बल होता है । ५२ व अच्छे अमा[illegible] मिलना दूसरा बल है, व धनका लाभ तीसरा बल है यह पण्डित लोगोंने कहे[illegible] । ५३ । व जो उसके पितृ पितामहादिकों का सहज बलहै उसका अभिजात नाम[illegible] वह चौथा बल है । ५४ । हे भारत जिसने इनचारों का संग्रह किया है वह [illegible] बलों का बल प्रज्ञाबल पांचवां कहाताहै ।५५। जो पुरुष किसीके संग बड़ाभारी अपका[illegible] उससे वैरबांध इम बहुतदूरहैं इसतक वह काहेको पहुँचेगा इसका विश्वासजो नहीं कर[illegible] वह मूर्ख [illegible]

ambrosia from paradise. He whose soul is free [illegible]om sins and engaged in doing good, knows all about the na[illegible]al states and changes of things. He who follows *dharm, arth* and *kam* at proper times, gets all these three here as well as in the w[illegible]ld to come. 50. He who checks the velocity of the rising anger and joy and does not lose his wits even in the time of trouble, obtains wealth. Hear from me the five sorts of strength which people possess, of these the strength of the body is the lowest in rank. The second is the strength of good ministers; the third strength, as mentioned by learned men, is that drived from wealth; the fourth is the hereditary strength of the forefathers and the fifth which embodies the above four, is the strength of wisdom. He is a fool who thinks that his benefactor has no power to harm him; for wise men never trust in a

पुराजसुसर्पेषु स्वाध्यायनशुत्रुषु । भोगेष्वायुषिविश्वासं कःप्राज्ञःकर्तुमर्हति ॥५७॥ प्रज्ञाशरेणाभिहतस्य जन्तोश्चिकित्सकाः सन्तिनचौषधानि । नहोममन्त्रा नचमङ्गलानि नाथर्वणानाप्यगदाः सुसिद्धाः ॥ ५८ ॥ सर्पश्चाग्निश्च सिंहश्च कुलपुत्रश्चभारत । ना वज्ञेयामनुष्येण सर्वे ह्येतेऽतितेजसः ॥ ५९ ॥ अग्निस्तेजोमहल्लोके गूढस्तिष्ठतिदारुषु । नचोपयुंक्तेतद्दारु यावन्नोद्दीप्यतेपरैः ॥ ६० ॥ सएवखलुदारुभ्यो यदानिर्मथ्यदीप्यते । तद्दारुचवनं चान्यान्निर्दहत्याशु तेजसा ॥ ६१ ॥ एवमेवकुलेजाताः पावकोपमते- जसः । क्षमावन्तोनिराकाराः काष्ठेऽग्निरिवशेरते ॥ ६२ ॥ लताधर्मात्वंसपुत्रः शालाः पाण्डुसुतामताः । नलतावर्द्धते जातु महाद्रुममनाश्रिता ॥ ६३ ॥ वनंराजंस्त्वं सपुत्रो- ऽम्बिकेय सिंहान्वने पाण्डवांस्तात विद्धि । सिंहैर्विहीनं हि वनं विनश्येत् सिंहा विनश्येयुर्ऋते वनेन ॥ ६४ ॥

इति श्रीम० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरहित वाक्ये सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥३७॥

क्योंकि स्त्री राजा सर्प विद्या स्वामी शत्रु व भोग के पदार्थों में कौन प्राज्ञ विश्वास करे ।५७। व प्रज्ञारूप बाण से मारेहुये पुरुष के लिये नवो वैद्य हैं न औषधें न होम मन्त्र न मंगल पदार्थ न अथर्व वेद के मारण मोहन वशीकरण उचाटन स्तम्भनादि प्रयोग न सिद्ध लोग हैं ।५८। हे राजन् सर्प्प अग्नि सिंह व जातिभर में बड़ा बुद्धिमान् पुत्र इन सबका अनादर मनुष्य को न करना चाहिये । ५९ अग्नि का तेज लोक में बहुत है वह काष्ठों के भीतर रहता है परन्तु काष्ठ तब तक नहीं जलता, जबतक कोई बालनेवाला नहीं होता । ६० । व वही अग्नि जब काष्ठों मे मथकर बाहर निकाला जाता तो उस काष्ठ व दूसरे वनकोभी जला देता है ।६१। क्षमायुक्त कुलीन नर अग्निकी समान तेजस्वी होता है उसमें अग्नि बिना आकार के रहती है जैसे काष्ठमें ।६२। तुम और तुम्हारे पुत्र लता के समान और पांडव शालवृक्ष के समान हैं बिना वृक्ष पर चढ़े लता नहीं ठहरसकी । ६३ । तुम्हारे पुत्र वनकी समान हैं और पांडव व्याघ्रोंकी समानहैं बिना सिंहके वन नहीं रहसका । ६४ ।

woman, a king, a serpent, knowledge, a master, an enemy and the worldly enjoyments. No physicians, medicines, charms, incantations and sages can avail him who is shot by wisdom's arrows. A serpent, fire, a lion and the eldest son who is wise should not be ill-treated. Fire with all its force lives in wood; but it does not burn trees without some one to ignite it. 60. The same fire, when ignited by friction of wood, burns it as well the whole forest. A forgiving man of noble birth is glorious like fire; fire lies hidden within him as it does within wood. You and your sons are like creepers and the Pandavas are like huge *sal* trees: a creeper cannot stand without the support from a large tree. Your sons are like a forest and the Pandavas are lions: a forest without lions is soon wasted."64.

विदुर उवाच । ऊर्ध्वंप्राणाह्युत्क्रामन्ति यूनः स्थविरआयाति । प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिपद्यते ॥ १ ॥ पीठंदत्वा साधवेऽभ्यागताय आनीयापः परिनिर्णिज्यपादौ । सुखंपृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां ततोदद्यादन्नमवेक्ष्यधीरः ॥ २ ॥ यस्योदकं मधुपर्कंचगांच नमन्त्रवित् प्रतिगृह्णातिगेहे । लोभाद्भयादर्थकार्पण्यतोवा तस्यानर्थं जीवितमाहुरार्याः ॥ ३ ॥ चिकित्सकः शल्यकर्त्तावकीर्णी स्तेनः क्रूरोमद्यपोभ्रूणहाच सेनाजीवीश्रुतिविक्रायकश्च भृशं प्रियोप्यतिथिर्नोदकार्हः ॥ ४ ॥ अविक्रेयंलवणंपक्वमन्नं दधिक्षीरंमधुतैलं घृतञ्च । तिलामांसं फलमूलानिशाकं रक्तंवासः सर्वगन्धागुडा

अध्याय ॥ ३८ ॥

विदुरजी बोले कि जब वृद्ध मनुष्य किसी युवा पुरुष के निकट आता है तो मारे गौरव के युवाके प्राण निकलजाते हैं जब वृद्ध का प्रत्युत्थान व प्रणाम करताहै तो फिर उसके प्राण आजातेहैं । १ । इससे चाहिये कि जब कोई साधु श्रेष्ठ अपने यहां आवे तो प्रथम उसे आसन दे जललाकर पांवधोये, उसकी कुशल पूंछ अपने समाचार उससे कहै फिर उसे अन्नादि भोजन दे । २ । क्योंकि जिसका जल शर्बत, व सुन्दर वचन घरमें आनेपर साधु महात्मा नहीं ग्रहण करता चाहे उसने लोभसे न दियाहो व भय से व कृपणतासे पर उसके जीवनको श्रेष्ठ लोग निरर्थक कहतेहैं । ३ । क्योंकि, वैद्य, तीर बनानेवाला, ब्रह्मचर्य्य भ्रष्ट, चोर, क्रूर, मद्यपीनेवाला, गर्भपात करानेवाला, खड्गादि अस्त्र शस्त्र बनानेवाला, वेद बेचनेवाला, ये सब यद्यपि जलमात्रभी देनेके योग्य नहीं तथापि जो अतिथिहो सन्ध्यासमय अपने द्वारपै आवें तो अति प्रियोंके समान पूजनीय हैं । ४ । जैसे वेद बेचनेके योग्य नहीं वैसेही, लोन, पूरी आदि पक्का, अन्न, दही, दूध, मधु, तेल, घी, तिल, मांस, फल मूल, तरकारी, रँगावस्त्र, सब सुगन्धित वस्तु, व सबतरहकी मिठाइयां

· CHAPTER XXXVIII

Vidur said, "When an old man goes to a young man, the vitality of the latter goes out till he rises out of respect; one should therefore offer good seat, water to wash the feet, welcome and food to a saintly guest. For, he whose water, sherbet and sweet words are not accepted by good men. leads a useless life, though he has not offered them through avarice, fear or miserly. And though physicians, makers of arrows, breakers of the vow of celibacy, thieves, cruel persons, drinkards, those who cause miscarriage, makers of weapons and sellers of the Vedas are not fit to receive offerings, yet they are worthy of respect like dear friends when they come as guests in the evening. Salt, cooked food, curds, milk, honey, oil, butter, sesamum, flesh meats, fruits, roots, vegetables, coloured clothes, sweet scents and sweetmeats are not to be sold by Brahmans and kshatryas, A

पितुरन्तःपुरं दद्यान्मातुर्दद्यान्महानसम् । गोषुचात्मसमं दद्यात् स्वयमेव कृषिं व्रजेत् ॥१२॥ भृत्यैर्वाणिज्यचारञ्च पुत्रैः सेवेत च द्विजान् । अद्भ्योग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम् ॥ १३ ॥ तेषांसर्वत्रगं तेजः स्वासु योनिषु शाम्यति । नित्यं सन्तःकुले जाताः पावकोपमतेजसः ॥ १४ ॥ क्षमावन्तोनिराकाराः काष्ठेग्निरिवसेरते । यस्यमंत्रं नजानन्ति बाह्याश्चाभ्यन्तराश्चये ॥ १५ ॥ सराजा सर्वतश्चक्षुश्चिरमैश्वर्यमश्नुते । करिष्यन्न प्रभाषेत कृतान्येवतुदर्शयेत् ॥ १६ ॥ धर्मकामार्थकार्य्याणितथामन्त्रोनभिद्य

स्त्रियों को पिताका जनाना मकान देदे व माताकी रसोईका स्थानभी इन्हींको देदे व गायबैल आदि पशुओंकी अन्नादि देनेसे अपने समान रक्षाभी उन्हींको सौंप दे तो आप खेती आदि जो चाहे करनेको जाय ।१२। व भृत्योंके सुपुर्द उद्यमकी चीजें करे व पुत्रों के सुपुर्द ब्राह्मणोंकी सेवा इस तरह करने से पुरुष सुखी रहता है, देखो जलसे आग उत्पन्न होती व ब्राह्मणसे क्षत्रिय व पत्थरसे लोहा उत्पन्न होताहै, इन अग्नि क्षत्रिय व लोहोंका सब कहीं तेजफैलता है परन्तु अपनी २ उत्पत्ति स्थानमें जाने से अर्थात् अग्नि जलमें जानेसे क्षत्रिय ब्राह्मणके सामने जानेसे व लोहा पत्थरपर पड़ने से नहीं तेज करता बिलकुल शांतहोहो जाता है । १३ । नित्यही अच्छे कुल में उत्पन्न सज्जन लोग अग्नि समान तेजस्वी होते हैं पर क्षमावान ऐसे होतेहैं कि मानों उनका कुछ आकारही नहीं होता जैसे काष्ठ में आग रहती है पर बिना मथे नहीं निकलती न कुछ जोर करती है । १४ । जिस राजाकी सलाह घर बाहर कहीं के रहने वाले नहीं जानते वह सब ओर देखता हुआ राजा बहुत दिनोंतक ऐश्वर्य्य भोगता है । १५ । जब करनेपरहो कभी किसी से न कहे जब करचुके तो सब आप जानलेंगे कहनेकी आवश्यकता नहीं । १६ । धर्म्म काम अर्थ कार्य्य व मन्त्र इनमें ऐसा करने से

who takes a just share, who speaks fairly and who is of an amicable nature, should not fall a prey to the sweet words of women. 10. Women are ever worthy of respect; for, they are fortunate, virtuous and the light and adornment of the house; they should be protected with great care. Women should be put in charge of the inner apartment of your father's house, the cooking room of your mother and the feeding and care of your cattle and you yourself must do the outdoor work. Servants may be entrusted with your trade business and sons with the attendance of Brahmans; such arrangement is the giver of happiness. Fire is produced from water, a kshatrya from a Brahman, iron from stone; but they become tranquil in the presence of those who gave them birth. Those born of noble families are always glorious; but on account of their peaceful nature they remain inconspicuous as fire within wood. The king whose secrets are not known in and out and who looks in all directions, remains long in

श्च ॥ ५ ॥ अरोषणो यः समलोष्ठाश्मकांचनः प्रहीणशोको गतसन्धिविग्रहः । निन्दाप्रशंसोपरतः प्रियाप्रिये त्यजन्नुदासीनवदेष भिक्षुकः ॥ ६ ॥ नीवारमूलेङ्गुदशाकवृत्तिः सुसंयतात्माग्निकार्येषु चोद्यः । वनेवसन्नतिथिष्वप्रमत्तो धुरन्धरः पुण्यकृदेष तापसः । ॥ ७ ॥ अपकृत्वा बुद्धिमतो दूरस्थोऽस्मीति नाश्वसेत् । दीर्घौ बुद्धिमतो बाहू याभ्यां हिंसति हिंसितः ॥ ८ ॥ न विश्वसेदविश्वस्ते ऽविश्वस्ते नातिविश्वसेत् । विश्वासाद्भयमुत्पन्नं मूलान्यपि निकृन्तति ॥ ९ ॥ अनीर्षुर्गुप्तदारश्च संविभागी प्रियं वदः । श्लक्ष्णो मधुरवाक् स्त्रीणां न चासां वशगो भवेत् ॥ १० ॥ पूजनीया महाभागाः पुण्याश्च गृहदीप्तयः । स्त्रियः श्रियो गृहस्योक्तास्तस्माद्रक्ष्या विशेषतः ॥ ११ ॥

ब्राह्मण क्षत्रियके बेचनेके योग्य नहीं हैं । ५ । व जो पुरुष रोषरहित व ढेला पत्थर सुवर्ण के समान जाननेवालाहो, व शोक रहित, स्नेह वैरहीन निन्दा सुन कोप न करनेवाला, प्रशंसासुन हर्षित न होनेवाला, व प्रिय अप्रियको छोड़ रागद्वेष रहित होनेसे उदासीन वृत्ति से रहताहो उसका भिक्षुक नाम है । ६ । फिर कन्द मूल शाकसे अपनी जीविका करताहो अपनी इन्द्रियोंको वशमें रखताहो अग्निमें हवनादि करने में उद्यत रहताहो वनमें बसताहो ऐसा तपस्वी पुण्य तथा अतिथियोंका धुरन्धर कहाताहै । ७। बुद्धिमान्का अपकारकर अपने को दूरसमझ विश्वास न करै क्योंकि बुद्धिमानकी भुजा बड़ी ऊंची होती हैं जिनसे पकड़ मारडालता है क्योंकि वह पहिले माराजाया है ।८। और विश्वास पात्रका विश्वास न करै व विश्वासपात्र काभी अति विश्वास न करै क्योंकि विश्वास करने से ऐसा भय उत्पन्न होती है कि जड़मूल से काट बहाती है । ९ । ईर्ष्यारहित अपनी स्त्री को रक्षामें रखने वाला समान भाग लेनेहारा व प्रियवादी स्नेहवान् पुरुष स्त्रियोंकी मधुर वाणी के वश में न पड़े । १० । भाइयो स्त्रियां सदा पूजा करने के योग्यहैं क्योंकि बड़ी भाग्यवाली व पुण्यात्मा होती हैं व घरका प्रकाश इन्हीं से होताहै, व येहीघर की शोभाहैं इससे इनकी रक्षा विशेष होनी चाहिये क्योंकि इनके भ्रष्ट होनेसे सब भ्रष्ट होजाता है । ११ ।

---

bhikshu (a brahman in the fourth stage of life) is that who is free from anger, thinks gold like clay, is free from grief, love and enmity, is not angry on hearing his dispraise nor pleased with praises, has no concern with friends or enemies, is free from likings and dislikings and lives the life of a recluse. The foremost of guests is that ascetic who lives upon fruits and roots, has control over his organs, pours libations over fire regularly and resides in forests. Having insulted a wise man, do not think yourself secure because you are at a distance from him; for, the arm of a wise man is very long and with it he can revenge his wrongs. Donot rely on an untrustworthy fellow and donot rely too much even on him whom you consider trustworthy; for, the fear which arises from trust may be strong enough to destroy your root and all. He who is free from envy, who protects his wife,

पितुरन्तःपुरं दद्यान्मातुर्दद्यान्महानसम् । गोषुचात्मसमं दद्यात् स्वयमेव कृषिं व्रजेत् ॥१२॥ भृत्यैर्वाणिज्यचारञ्च पुत्रैः सेवेत च द्विजान् । अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम् ॥ १३ ॥ तेषांसर्वत्रगं तेजः स्वासु योनिषु शाम्यति । नित्यं सन्तःकुले जाताः पावकोपमतेजसः ॥ १४ ॥ क्षमावन्तोनिराकाराः काष्ठेग्निरिवशेरते । यस्यमंत्रं नजानन्ति बाह्याश्चाभ्यन्तराश्चये ॥ १५ ॥ सराजा सर्वतश्चक्षुश्चिरमैश्वर्यमश्नुते । करिष्यन्न।भाषेत कृतान्येवतुदर्शयेत् ॥ १६ ॥ धर्मकामार्थकार्याणितथामन्त्रोनभिद्य

स्त्रियों को पिताका जनाना मकान देदे व माताकी रसोईका स्थानभी इन्हींको देदे व गायबैल आदि पशुओंकी अन्नादि देनेसे अपने समान रक्षाभी इन्हींको सौंप दे तो आप खेती आदि जो चाहे करनेको जाय ।१२ व भृत्योंके सुपुर्द उद्यमकी चीजें करे व पुत्रों के सुपुर्द ब्राह्मणोंकी सेवा इस तरह करने से पुरुष सुखी रहता है, देखो जलसे आग उत्पन्न होती व ब्राह्मणसे क्षत्रिय व पत्थरसे लोहा उत्पन्न होताहै, इन अग्नि क्षत्रिय व लोहोंका सब कहीं तेजफैलता है परन्तु अपनी २ उत्पत्ति स्थानमें जाने से अर्थात् अग्नि जलमें जानेसे क्षत्रिय ब्राह्मणके सामने जानेसे व लोहा पत्थरपर पड़ने से नहीं तेज करता बिलकुल शांतहीहो जाता है । १३ । निश्चही अच्छे कुल में उत्पन्न सज्जन लोग अग्नि समान तेजस्वी होते हैं पर क्षमावान् ऐसे होवेहैं कि मानों उनका कुछ आकारही नहीं होता जैसे काष्ठ में आग रहती है पर बिना मथे नहीं निकलती न कुछ जोर करती है । १४ । जिस राजाकी सलाह घर बाहर कहीं के रहने वाले नहीं जानते वह सब ओर देखता हुआ राजा बहुत दिनोंतक ऐश्वर्य्य भोगता है । १५ । जब करलेपरही कभी किसी से न कहे जब करचुके तो सब आप जानलेंगे कहनेकी आवश्यकता नहीं । १६ । धर्म्म काम अर्थ कार्य्य व मन्त्र इनमें ऐसा करने से

who takes a just share, who speaks fairly and who is of an amicable nature, should not fall a prey to the sweet words of women. 10. Women are ever worthy of respect; for, they are fortunate, virtuous and the light and adornment of the house; they should be protected with great care. Women should be put in charge of the inner apartment of your father's house, the cooking room of your mother and the feeding and care of your cattle and you yourself must do the outdoor work. Servants may be entrusted with your trade business and sons with the attendance of Brahmans; such arrangement is the giver of happiness. Fire is produced from water, a kshatrya from a Brahman, iron from stone, but they become tranquil in the presence of those who gave them birth. Those born of noble families are always glorious; but on account of their peaceful nature they remain inconspicuous as fire within wood. The king whose secrets are not known in and out and who looks in all directions, remains long in

ते । गिरिपृष्ठमुपारुह्यप्रासादंवारहोगतः ॥ १७ ॥ अरण्येनिःशलाके वा तत्रमन्त्रो विधीयते । नासुहृत्परमंमन्त्रं भारतार्हतिवेदितुम् ॥ १८ ॥ अपण्डितोवापिसुहृत्पण्डितोवाप्यनात्मवान् । नापरीक्ष्यमहीपालः कुर्यात्सचिवमात्मनः ॥ १९ ॥ अमात्येह्यर्थलिप्साचमन्त्ररक्षणमेवच । कृतानिसर्वकार्याणियस्यपारिषदाविदुः ॥ २० ॥ धर्मेचार्थेचकामेच सराजाराजसत्तमः । गूढमन्त्रस्यनृपतेस्तस्यसिद्धिरसंशयम् ॥२१॥ अप्रशस्तानिकार्याणियोमोहादनुतिष्ठति । सतेषांविपरिभ्रंशाद्भ्रश्यतेजीवितादपि २२ कर्मणान्तुप्रशस्तानामनुष्ठानंसुखावहम् । तेषामेवाननुष्ठानंपश्चात्तापकरंमतम् ॥ २३ ॥ अनधीत्ययथावेदान्नब्राह्मणःश्राद्धमर्हति । एवमश्रुत्वाषाड्गुण्यंनमन्त्रंश्रोतुमर्हति ॥ २४ ॥

भेद नहीं पड़ता जब कि मंत्र पर्वत पर चढ़कर व एकान्त स्थल में बैठकर करे । १७ । व वन में जाकर व जहां कहीं तृण वृक्ष कुछ नहो साफ सुथरा बड़ी दूरतक पड़ाहो वहां मन्त्र करने से भेद नहीं पड़ता जो सुहृद नहीं है वह परम मन्त्र जानने के योग्य नहीं है ।१८। चाहे पण्डितहो वा अपण्डित पर चचल मनुष्य मन्त्री बनाने के योग्य नहीं होता इस से राजा बिना परीक्षा लिये कभी किसी को मन्त्री न बनावे ।१९। मन्त्री हो स्वामी के अर्थकी सदा इच्छा रक्खे व जो सम्मत उससे पूंछा गयाहो उसकी रक्षाकरे किसी दूसरे से न कहे बस ऐसा करने से जानो उसने उसके सब काज करदिये । २० । धर्म्म अर्थ व काम में जो राजा गूढ़मन्त्र रहताहै उस के सबकाम सिद्धहोजाते हैं इस में कुछभी सन्देह नहीं है । २१ । जो राजा मोहवश अच्छे कार्य्य नहीं करता वह उन कार्यों के भ्रष्ट होने से अपने प्राणभी खोदेता है । २२ । प्रशस्त कर्मोंका अनुष्ठान सुखदायी होता है, व अच्छे कार्यों का प्रारम्भ न करना पश्चात्ताप कराता है । २३ । जैसे बिना

---

possession of greatness. Never disclose to any one what you are going to do; the results and not your words should be known by the public. Your secrets, the business of *dharm, arth* and *kam*, will not break out, if you discuss them on mountains, secluded places and plains destitute of trees; donot disclose your secrets to any one excepting your dear friends, fickle-minded man whether learned or ignorant, should not be employed as ministers, a king should not choose his ministers without testing them. A minister should always have the interests of his employer in view and should guard secrets scrupulously; he will do well his duty, if he so acts. 20. A king whose secrets remain safe in the work of *dharm, arth* and *kam*, is undoubtedly successful in his plans; but the fool who does his works carelessly, spoils them and loses his own life. The doing of good deeds leads to happiness, whereas the leaving of them brings about repentence. He who does not possess the six attributes is not

स्यामवृद्धिक्षयज्ञस्यषाड्गुण्यविदितात्मनः। अनवज्ञातशीलस्यस्वाधीनापृथिवीनृप२५॥ अमोघक्रोधहर्षस्यस्वयंकृत्यान्ववेक्षिणः । आत्मप्रत्ययकोशस्य स्वाधीनेयंवसुन्धरा ॥ ॥२६॥ नाममात्रेणतुष्येतछत्रेणचमहीपतिः । भृत्येभ्योविसृजेदर्थान्नैकःसर्वहरोभवेत् ॥ २७ ॥ ब्राह्मणंब्राह्मणोवेदभर्त्तावेदस्त्रियंतथा । अमात्यंनृपतिर्वेदराजाराजानमेव च ॥२८॥ नशत्रुर्वशमापन्नोमोक्तव्योवध्यतांगतः । न्यग्भूत्वापर्युपासीतवध्यंहन्याद्बलेसति । अहताद्धिभयंतस्माज्जायतेनचिरादिव ॥ २९ ॥ दैवतेषुप्रयत्नेनराजसुब्राह्मणेषुच । नियन्तव्यःसदाक्रोधोवृद्धबालातुरेषुच ॥ ३० ॥ निरर्थंकलहंप्राज्ञोवर्ज्जये

वेदपढ़े ब्राह्मण श्राद्धखाने व श्राद्धमें भोजन करने के योग्य नहीं होते ऐसेही जो पुरुष सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, व समाश्रयण, ये ६ गुण नहीं जानता वह मन्त्र सुनने के योग्य नहीं । २४ । हे नृप, जो पुरुष, यथावस्थित अपने सब काज करने पर स्थित रहता, व अपनी वृद्धि क्षय जानता, व सन्धि विग्रहादि ६ गुण जानता, व सत्कृत शीलरखताहै ऐसे पुरुषके पृथ्वी स्वाधीन रहती है । २५ । व जिसका क्रोधहर्ष दोनों निष्फल नहीं व सब कार्य्य अपने आप देख लियाकरै, व खज़ाना पर अपनेही विश्वास में रक्खे ऐसे पुरुषके भी पृथ्वी स्वाधीन रहती है । २६ । राजाको चाहिये कि राजा इसनाम मात्रहीसे व छत्रधारण करनेही से सन्तुष्टरहे और धन ऐश्वर्यादि मन्त्री आदिकों कोभी देतारहे आपही न सब खाजाय । २७ । ब्राह्मणको ब्राह्मणही जानताहै, स्त्रीको पतिही जानताहै, अमात्य को राजाही जानता है व राजाको भी राजाही जानताहै । २८ । बन्दीखाने में प्राप्त शत्रुको कभी न छोड़ना चाहिये अब उसे देखे टेढ़ीही नजर से देखे बलहो तो मारभी डाले, व शिथिल बन्धनसे कभी शत्रुको न बांधे क्योंकि वैसे शत्रुसे सदा भयरहती है । २९ । देवता, राजा, ब्राह्मण, वृद्ध, बालक, व रोगी इनके ऊपर जो क्रोध कभी आवे तोक्रोध को अवश्य रोकना चाहिये । ३० । मूर्खोंके करनेके

worthy of being entrusted with secrets as a Brahman who has not read the Vedas is unworthy of superintending and eating at a *sradh*. *He who tries his best in doing everything, who knows his power and* weakness and who possesses the six attributes and good conduct, rules the Earth. He whose anger and pleasure are both potent, who casts his eyes over all his business and who has his treasury in his own keeping, rules the Earth as well. A king should be content with his position and should not spend all the wealth on himself without sharing it with his ministers. A Brahman is known to a Brahman; the wife is known to the husband; the ministers are known to the king and a king is known to a king An enemy made captive by you should not be released; always look at him with a frown and kill him if you can. An enemy should not be tied loosely; for in so doing you

न्मूढसेवितम् । कीर्तिंश्च लभते लोके न चानर्थेन युज्यते ॥ ३१ ॥ प्रसादो निष्फलो यस्य कोपश्चापि निरर्थकः । न तं भर्तारमिच्छन्ति षण्ढं पतिमिव स्त्रियः ॥ ३२ ॥ न बुद्धिर्धनलाभाय न जाड्यमसमृद्धये । लोकपर्यायवृत्तान्तं प्राज्ञो जानाति नेतरः ॥ ३३ ॥ विद्याशीलवयोवृद्धान् बुद्धिवृद्धांश्च भारत । धनाभिजातवृद्धांश्च नित्यं मूढोऽवमन्यते ॥ ३४ ॥ अनार्यवृत्तमप्राज्ञमसूयकमधार्मिकम् । अनर्थाः क्षिप्रमायान्ति वाग्दुष्टं क्रोधनं तथा ॥ ३५ ॥ अविसंवादनं दानं समयस्याव्यतिक्रमः । आवर्तयन्ति भूतानि सम्यक्प्रणिहिता च वाक् ॥ ३६ ॥ अविसंवादको दक्षः कृतज्ञो मतिमानृजुः । अपि संक्षीणकोशोऽपि लभ

योग्य निरर्थक कलह बुद्धिमान् न करै क्योंकि ऐसा करने से एकतो लोक में अकीर्ति होती है व कुछ अनर्थ उसके ऊपरभी आजाता है । ३१ । जिस राजाकी प्रसन्नता से कुछ लाभ नहीं होता व जिसके क्रोध से भी कुछ हानि नहीं होती उस राजा को प्रजा नहीं चाहती, जैसे नपुंसक पति को स्त्रियां नहीं चाहती । ३२ । न बुद्धिही से धन मिलता है न मूर्खताही से दरिद्रता मिलती है पण्डितलोग इस धन व दरिद्रता मिलनेका हेतु प्रारब्ध जानतेहैं और कुछ नहीं क्योंकि बहुत बुद्धिमान् दरिद्र देखेजाते व बहुत मूर्ख धनवान् पर सार्वत्रिक नहीं कि मूर्खही धनवानहों पंडित नहीं । ३३ । विद्यावृद्ध, शीलवृद्ध, वयोवृद्ध व बुद्धिवृद्ध व धनहोने से वृद्ध, इनसब वृद्धोंका अपमान मूर्ख नित्य कियाकरते हैं । ३४ । परंतु, अप्रशस्त आचरण करनेवाले, मूर्ख, निन्दक अधर्मात्मा वचनदुष्ट व क्रोधी के यहां अनर्थ बहुतही शीघ्र आजातेहैं, । ३५ । व दान देकर न कहना व जिस कार्यके लिये जो समय नियत है उसको उसीपर करना, व मधुर प्रिय बोलना, ये काम शत्रुओं को भी अपने वशमें खींचलेते हैं । ३६ । छलरहित बोलनेवाला चतुर, उपकार माननेवाला, मतिमान, व सरलचित्त पुरुष जो धनहीनभी होजाताहै तौ

---

endanger your own life. You should invariably subdue your anger whenever you feel angry with a god, a king, a Brahman, an old man, a child and a sick man. 30. A wise man should not engage in quarrels which are useless and worthy of fools for they result in loss of fame and in misfortune. The king whose pleasure is profitless and whose anger is harmless, is not loved by the people, as a eunuch husband is not loved by woman. All wise men are not rich nor all fools poor; wealth and poverty are ascribed to fate by learned men and to nothing else. Foolish men always insult those who are older in learning, in age, in wisdom or in wealth; but calamities soon overtake the wicked, the foolish, the reviler, the irreligious, the slanderer and the rageful. Not to talk of one's own charity, doing things at the proper time and sweet speech are qualities which bring the minds of enemies also into subjection. A truthful man, a wise

तेपरिवारणम् ॥३७॥ धृतिःशमोदमःशौचं कारुण्यंवागनिष्ठुरा । मित्राणांचानभिद्रोहः सप्तैताः समिधःश्रियः ॥ ३८ ॥ असंविभागी दुष्टात्मा कृतघ्नोनिरपत्रपः । तादृग्नराधिपोलोके वर्जनीयोनराधिप ॥ ३९ ॥ नचरात्रौसुखं शेते ससर्पइववेश्मनि । यः कोपयतिनिर्दोषं सदोषोऽभ्यन्तरंजनम् ॥४०॥ येषुदुष्टेषुदोषःस्याद्योगक्षेमस्य भारत । सदाप्रसादं तेषां देवतानामिवाचरेत् ॥४१॥ येर्थाःस्त्रीषुसमायुक्ताः प्रमत्तपतितेषुच । येचानार्येसमासक्ताः सर्वेतेसंशयंगताः ॥ ४२ ॥ यत्रस्त्रीयत्रकितवोबालो यत्रानुशासिता । मज्जन्तितेवशा राजन्नद्यामश्मप्लवा इव ॥ ४३ ॥ प्रयोजनेषुयेसक्ता नविशेषे-

---

भी उसकी रक्षा बहुत लोग करते हैं । ३७ । धारणा शक्ति, इन्द्रियों को उनके विषय से निवृत्तकरना, व इन्द्रियों को जीतना, पवित्र रहना, करुणाकरना, प्रियवचन बोलना व मित्रोंसे द्रोह न करना ये सातपदार्थ लक्ष्मीके बढ़ानेवालेहैं । ३८ । जो पुरुष बिना देवता पितर अतिथियों को दिये भोजन करताहै व दुष्टात्माहोता, है उपकार नहीं मानता, निर्लज्ज होताहै ऐसापुरुष लोकमें त्यागकरने के योग्यहै । ३९ । जो पुरुष निर्दोष पुरुष के अन्तःकरण को आप सदोषहो कुपित कराता है वह अपने घर में सर्प के समान रात्रि में भी सुखसे नहीं सोता । ४० । जो दुष्ट अपनी मजदूरी आदिके लिये दुष्टता करतेहों उनको सदा देवताओं के समान प्रसन्न रखनाचाहिये । ४१ । जो धन स्त्रियोंकेपास धरा है, व जो धन जाति आदिसे उन्मत्त चित्त पुरुषोंके पास है, जो जाति भ्रष्टोंके पास, व जो और नीचों के पास धराहै, इनसबों में संदेहही है समयपर काम आवे या न आवे । ४२ । जहां स्त्रियोंकाही पुरुषार्थ है, व जहां जुआ खेलाजाताहै, व जहां बालककी शिक्षा से कार्य्य होताहै, वहां के लोग अवशहो ऐसे डूबतेहैं जैसे पत्थरकी नावपर चढ़नेवाले नदी में अवश्य डूबते हैं । ४३ । हे भारत जो लोग अपने प्रयोजन में लगे रहतेहैं

---

man, a grateful man, a clever man or an honest man has many protectors though he be poor. Patience, control and subjugation of senses, purity, mercy, sweet words and true friendship are the seven qualities which increase wealth. An ill-natured man, he who eats without offering to gods, pitars and guests, an ingrate and a shameless man are unworthy of friendship in the world. He who enrages an innocent man, can find no sleep by night like a snake. 40. Those who are troublesome for the sake of their wages, should be appeased like gods. Wealth in the possession of women, of self-conceited men and of mean persons may or may not be of use at the time of need. The people of those places where women are in power, where gambling goes on and where the advice of young men is acted upon, sink helplessly like those who may be rowing in a boat made of stone.

तिदानेन प्रियवादेनचापरः । मन्त्रमूलबलेनान्यो यःप्रियःप्रियएवसः ॥ ३ ॥ द्वेष्यो नसाधुर्भवति न मेधावीनपण्डितः । प्रियेशुभानिकार्याणि द्वेष्येपापानिचैवह ॥ ४ ॥ उक्तंमयाजातमात्रेपिराजन दुर्योधनंत्यजपुत्रंत्वमेकम् । तस्यत्यागात्पुत्रशतस्यवृद्धिर स्यात्यागात्पुत्रशतस्यनाशः ॥ ५ ॥ नवृद्धिर्बहुमन्तव्या याद्धिःक्षयमावहेत् । क्षयोपि बहुमन्तव्यो यःक्षयोवृद्धिमावहेत् ॥ ६ ॥ नसक्षयोमहाराज यः क्षयो वृद्धिमावहेत् । क्षयःसइहमन्तव्यो यंलब्ध्वाबहुनाशयेत् ॥ ७ ॥ समृद्धागुणतःकेचिद्भवन्तिधनतो परे । धनवृद्धानगुणैर्हीनान् धृतराष्ट्रविवर्जय ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्रउवाच । सर्वंत्वमायती

जो प्रियकरता है वह प्रियहोता है परन्तु वह दानमान के न होनेपर अप्रिय होजाता है परन्तु हम वैसेनहीं हैं हमने समयकी बात कही है इस से हम अनादर करने के योग्य नहीं हैं । ३ । जो जिसका वैरी होता है वह उस के विचार से साधु व पण्डित नहीं होता, जो प्रिय चाहे अशुभभी कहे तो उसकी दृष्टि में शुभही कहाता है व वैरी अच्छाभी कहैतो अशुभही समझ पड़ता है । ४ । हे राजन् जब दुर्योधन पुत्र छोटाहीथा तभी हमने आप से कहाथा कि इसका आप परित्याग करें क्योंकि इस के छोड़ने से तुम्हारे १०० पुत्र बचेंगे व इसके न त्यागने से १०० का नाश होगा । ५ । वह वृद्धि बहुत न माननी चाहिये जिससे क्षयहो, किन्तु वह क्षय बहुत मानना चाहिये जिससे वृद्धिहो । ६ । हे महाराज जिस क्षयके होने से वृद्धिहोती हो वह क्षय नहीं है, किन्तु, क्षय उसको मानना चाहिये जिसके पाने से बड़ी हानिहो । ७ । कोई गुण के धनी होते हैं कोई धन के परन्तु जो केवल धनहीसे धनी हों गुणहीन हों आप उनका त्यागकरें । ८। धृतराष्ट्रजी बोले, कि सब आप उन्नतहोने के हितही बचन कहते हैं पर क्याकरें हम पुत्र

---

physical strength, but want of charity and respect turns friends into enemies; I am not the latter sort of man; my words are compatible with time and donot merit displeasure. One does not think one's enemy to be virtuous or learned; for, a friend's words, though inaspicious, are pleasant to the ear, while the good words of an enemy appear inaspicious. I told you to abandon Duryodhan when he was yet a child. You will secure the safety of your hundred sons by leaving Duryodhan; on the contrary, you will bring about the ruin of all. The low state resulting in greatness is better than a greatness attended by a fall. It is not a loss which brings about greatness, but that which results in ruin. Some men are fond of virtue, while others are fond of wealth; but wealth without virtue is no desirsable thing." "You are giving me advice for my good," said

पुभारत। तानहंपण्डितामन्ये विशेषाहिमसाज्ञिनः ॥ ४४ ॥ यंप्रशंसन्ति कितवा यंप्रशंसन्तिचारणाः यंप्रशंसन्तिवन्धकी नसजीवतिमानवः ॥ ४५ ॥ हित्वातानपरमेष्वासान् पाण्डवानमितौजसः। आहितंभारतैश्वर्यं त्वयादुर्योधनेमहत् ॥ ४६ ॥ तंद्रक्ष्यसिपरिभ्रष्टं तस्मात्त्वमचिरादिव। ऐश्वर्यमदसम्मूढं बलिंलोकत्रयादिव ॥ ४७ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरहित वाक्ये

अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३८ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ अनीश्वरोयंपुरुषोभवाभवे सूत्रप्रोतादारुमयीवयोषा। धात्रा तु दिष्टस्यवशेकृतोयं तस्माद्वदत्वंश्रवणेधृतोहम् ॥ १ ॥ विदुर उवाच ॥ अप्राप्तकालं वचनं बृहस्पतिरपिब्रुवन्। कभतेबुद्ध्यवज्ञान मवमानञ्चभारत ॥ २ ॥ प्रियोभव

और विशेष कामों में नहीं लगते, उन लोगों को हम पण्डित मानतेहैं, क्योंकि वे लोग विशेष प्रशंसाजानते हैं। ४४। जिसकी प्रशंसा जुआरी लोग करें व दूतलोग करें, व जिसकी प्रशंसा जिन स्त्रियों के बिना ब्याही जाने पर पुत्र हुआहो उसकीही वृत्ति से जीतीहों वे करें वह पुरुष नहीं जीता। ४५। परम धनुर्धर पांडवों को छोड़कर तुम दुर्योधनको राजा बनाना चाहते हो इस लिये शीघ्रही तुम्हारा धन और बलनष्टहो जायगा। ४७।

अध्याय ॥ ३९ ॥

इतनी बातें सुन धृतराष्ट्रजी ने कहा कि, पुरुष ऐश्वर्य अनैश्वर्यके करने में असमर्थ ही है क्योंकि सूत्र में बँधीहुई कठपुतली के समान भाग्यने इस पुरुषको अपने वश में करक्खा है। १। इस से हमको क्यों दूषित करतेहो अब जो उचितहो कहिये, हम कानलगाकर सुनते हैं विदुरजीबोले, हे भारत इस क्या जो काल के प्रतिकूल वचनकहै तो बृहस्पतिभीहों तो अज्ञता व अपमानको प्राप्तहों। २। मन्त्र बल से व मूलबल से

Those who are engaged in useful work only, are wise, because they know what is worth knowing. That person will not live long who is praised by gamblers, by spies and by those who live on the prostitution of unmarried women. Having forsaken the valliant Pandavas, you would instal Duryodhan on the throne; as a result of this, you will soon lose your greatness and power." 47.

CHAPTER XXXIX

"As regards greatness and otherwise, man is powerless," said Dhritrashtra, "for, he is bound by fate like a doll tied to a string. Why do you blame me then, Vidur? now tell me what is proper for me to do; I am all ear." "Even Vrihaspati will be blamed of ignorance and come to disgrace," replied Vidur, "if he says anything not compatible with time. He is dear who does good by advice and

तिदानेन प्रियवादेनचापरः । मन्त्रमूलबलेनान्यो यःप्रियःप्रियएवसः ॥ ३ ॥ द्वेष्यो नसाधुर्भवति न मेधावीनपण्डितः । प्रियेशुभानिकार्याणि द्वेष्येपापानिचैवह ॥ ४ ॥ उक्तंमयाजातमात्रेपिराजन् दुर्योधनंत्यजपुत्रंत्वमेकम् । तस्यत्यागात्पुत्रशतस्यवृद्धिर स्यात्यागात्पुत्रशतस्यनाशः ॥ ५ ॥ नवृद्धिर्बहुमन्तव्या वृद्धिःक्षयमावहेत् । क्षयोपि बहुमन्तव्यो यःक्षयोवृद्धिमावहेत् ॥ ६ ॥ नसक्षयोमहाराज यः क्षयो वृद्धिमावहेत् । क्षयःसइहमन्तव्यो यंलब्ध्वाबहुनाशयेत् ॥ ७ ॥ समृद्धागुणतःकेचिद्भवन्तिधनतो परे । धनवृद्धान्गुणैर्हीनान् धृतराष्ट्रविवर्जय ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्रउवाच । सर्वंत्वमायती

जो प्रियकरता है वह प्रियहोता है परन्तु वह दानमान के न होनेपर अप्रिय होजाता है परन्तु हम वैसेनहीं हैं हमने समयकी बात कही है इस से हम अनादर करने के योग्य नहीं हैं । ३ । जो जिसका वैरी होता है वह उस के विचार से साधु व पण्डित नहीं होता, जैं प्रिय चाहे अशुभभी कहे तो उसकी दृष्टि में शुभही कहाता है व वैरी अच्छाभी कहैतो अशुभही समझ पड़ता है । ४ । हे राजन् जब दुर्योधन पुत्र छोटाहीथा तभी हमने आप से कहाथा कि इसका आप परित्याग करें क्योंकि इस के छोड़ने से तुम्हारे १०० पुत्र बचेंगे व इसके न त्यागने से १०० का नाश होगा । ५ । वह वृद्धि बहुत न माननी चाहिये जिससे क्षयहो, किन्तु वह क्षय बहुत मानना चाहिये जिससे वृद्धिहो । ६ । हे महाराज जिस क्षयके होने से वृद्धिहोती हो वह क्षय नहीं है, किन्तु, क्षय उसको मानना चाहिये जिसके पाने से बड़ी हानिहो । ७ । कोई गुण के धनी होते हैं कोई धन के परन्तु जो केवल धनहीसे धनी हों गुणहीन हों आप उनका त्यागकरें । ८ । धृतराष्ट्रजी बोले, कि सब आप उत्तमहोने के हितही वचन कहते हैं पर क्याकरें हम पुत्र

---

physical strength, but want of charity and respect turns friends into enemies; I am not the latter sort of man; my words are compatible with time and donot merit displeasure. One does not think one's enemy to be virtuous or learned; for, a friend's words, though inauspicious, are pleasant to the ear, while the good words of an enemy appear inauspicious. I told you to abandon Duryodhan when he was yet a child. You will secure the safety of your hundred sons by leaving Duryodhan; on the contrary, you will bring about the ruin of all. The low state resulting in greatness is better than a greatness attended by a fall. It is not a loss which brings about greatness, but that which results in ruin. Some men are fond of virtue, while others are fond of wealth; but wealth without virtue is no desirable thing." "You are giving me advice for my good," said

युक्तं भाषसेमाज्ञसम्मतम् । नचोत्सहेसुतन्त्यक्तुं यतोधर्मस्ततोजयः ॥ ९ ॥ विदुर उवाच । अतीवगुणसम्पन्नो नजातुविनयान्वितः । सुसूक्ष्ममपिभूतानामुपमर्दमुपेक्षते । ॥ १० ॥ परापवादनिरताः परदुःखोदयेषुच । परस्परविरोधेच यतन्तेसततोत्थिताः ॥ ११ ॥ सदोषंदर्शनंयेषां सम्वासेसुमहद्भयम् । अर्थादानेमहान्दोषः प्रदानेचमहद्भयम् ॥ १२ ॥ येवैभेदनशीलास्तु सकामानिस्त्रपाःशठाः । येपापाइति विख्याताः सम्वासे परिगर्हिताः ॥ १३ ॥ युक्ताश्चान्यैर्महादोषैर्ये नरास्तान् विवर्जयेत् । निवर्तमानेसौहार्दे प्रीतिर्नीचेप्रणश्यति ॥ १४ ॥ याचैवफलनिर्वृत्तिः सौहृदेचैव यत्सुखम् । यततेचापवादाय यत्नमारभतेक्षये ॥ १५ ॥ अल्पेप्यपकृतेमोहान्नशान्तिमधिगच्छति ।

को नहीं छोड़सक्ते यह जानतेभी हैं कि जहां धर्म्म है वहीं जयहोती है । ९ । विदुरजी ने कहा चाहे अतीव गुण सम्पन्नहो पर विनय युक्त नहो व थोड़ाभी प्राणियोंका नाश चाहे तो वह त्याज्य है । १० । व जो लोग सदा दूसरे के अपवादही में निरत रहते व दूसरों को दुःखही देनेमें भी व परस्पर विरुद्ध करानेके लिये सदा यत्नकरते । ११ । उन के देखने में बड़ दोष व उन के संग बसने से महाभय व उनका धन लेनेसे महादोष उनको कुछ देने से महाभय होती है । १२ । व जो लोग आपस में भेद करानेका स्वभाव रखते, व आप सदा सकाम रहते हैं वे निर्लज्ज शठ महापापी कहाते हैं ये साथ बसाने में अतिनिन्दित हैं । १३ । व इनके सिवाय औरभी बड़े २ दोषों से जो नर युक्तहों उनका परित्याग करना चाहिये, क्योंकि नीच के साथ सौहार्द करने से प्रीति व सुखका नाश होता है । १४ । व सौहार्द में सुख कुछभी नहीं होता क्योंकि नीच अपवादही के लिये यत्न करते हैं व नाशही होनेवाले कार्योंका आरम्भकरते हैं । १५ ।

Dhritrashtra, "but I cannot leave my son, although I know that *dharm* and conquest cannot live apart." "One having many qualities," continued Vidur, "must be abandoned if he is wanting in humility and is desirous of doing harm to others. 10. Those who *are always engaged in reviling, injuring and causing disunion among* others, should not be looked at, mixed with and dealt with; for in so doing there is great danger and sin. Those who are in the habit of causing disunion among others and gaining something by so doing, are called shameless, perfidious and sinful, people should avoid living with them. Those too who possess other wicked habits besides these, should be abandoned; for, friendship with a mean person destroys love and happiness. There is no pleasure in the friendship of such persons; for mean fellows always try to raise quarrels and begin such

तादृशैः सङ्गतंनीचैर्नृशंसैरकृतात्मभिः ॥ १६ ॥ निशम्यनिपुणंबुध्या विद्वान्दूराद्विवर्जयेत् । योज्ञातिमनुगृह्णाति दरिद्रंदीनमातुरम् ॥ १७ ॥ सपुत्रपशुभिर्वृद्धिं श्रेयश्चानन्त्यमश्नुते । ज्ञातयो वर्द्धनीयास्तैर्य इच्छन्त्यात्मनः शुभम् ॥ १८ ॥ कुलवृद्धिञ्च राजेन्द्र तस्मात्साधुसमाचर । श्रेयसायोक्ष्यते राजन् कुर्वाणोज्ञातिसत्क्रियाम् ॥ १९॥ विगुणाह्यपिसंरक्ष्या ज्ञातयोभरतर्षभ । किंपुनर्गुणवन्तस्ते त्वत्प्रसादाभिकांक्षिणः ॥२०॥ प्रसादंकुरुवीराणां पाण्डवानांविशाम्पते । दीयन्तांग्रामकाः केचित्तेषांवृत्त्यर्थमीश्वर ॥ २१ ॥ एवंलोकेयशःप्राप्तं भविष्यतिनराधिप । वृद्धेनहित्वयाकार्यं पुत्राणां तातशासनम् ॥ २२ ॥ मयाचापि हितंवाच्यं विद्धिमांत्वद्धितैषिणम् । ज्ञातिभिर्विग्र-

व थोड़ा अपकार करनेसेभी मारेमोहके वह नीच शान्त नहीं होता ऐसे दुष्ट नीच क्रूरपापियोंके सङ्गसे अनर्थही होता है । १६ । इस से इननीचोंका स्वभाव सुन दूरही से विद्वान् को चाहिये कि इनका परित्यागकरे, जो दीन रोगी व ज्ञातिवर्गकी रक्षाकरताहै । १७ । वह पशु पुत्र सहित अनन्त कल्याणकी बातें पाताहै, व जो अपना सुखचाहें उनको चाहिये कि अपनी जाति के लोगों को बढ़ावें । १८ । इससे हे राजन् तुमभी अपने कुलकी वृद्धिकरो, जो ज्ञातिवालोंका सत्कार करोगेतो तुम्हारा कल्याणहोगा । १९। ज्ञाति के लोग गुणहीन भीहों तो वे रक्षाकरनेही के योग्यहोते हैं, व जो गुणवान् तुम्हारी प्रसन्नताकी इच्छाकरते हों उनको क्याकहैं । २० । हे राजन् वीर पाण्डवों के ऊपर प्रसाद कीजिये उनकी जीविका के लिये कुछ ग्राम देदीजिये । २१ । ऐसा करने से लोकमें आपका यशहोगा अवआप वृद्धहुये हैं पुत्रोंको शिक्षा देतेरहें । २२ । हम भी तुम्हारे हितही की कहते हैं हमको अपने हित चाहनेवाला समझिये, हे तात, जो अपना

works as lead to ruin. Those who are not satisfied with doing small injuries, are mean and foolish and the society of such sinful wretches is always attended with evil. Having heard the habits of mean persons, a wise man should shun them. He who protects the poor, the sick and the relatives, gets together with his sons and animals many blessings. He who desires happiness to himself should look after the improvement of his relatives. You must look, therefore, after the improvements of your relatives, king! you will be happy if you will look after the comforts of your relatives. Relatives, though wanting in virtue, should be protected, nothing to say of the virtuous who try to please you. 20. Be kind, king, to the brave Pandavas and grant them a few villages for their maintenance. Your fame

इस्तात नकर्त्तव्यःशुभार्थिनाः । सुखानिसहभोज्यानि ज्ञातिभिर्भरतर्षभ ॥ २३ ॥ सम्भोजनंसङ्कथनं सम्प्रीतिश्चपरस्परम् । ज्ञातिभिःसहकार्याणि नाविरोधः कदाचन । ॥ २४ ॥ ज्ञातयस्तारयन्तीह ज्ञातयोमज्जयन्तिच । सुवृत्तास्तारयन्तीह दुर्वृत्तामज्जयन्तिच ॥ २५ ॥ सुवृत्तोभवराजेन्द्र पाण्डवान्प्रतिमानद । अधर्षणीयःशत्रूणांवृ्तस्त्वंभविष्यसि ॥ २६ ॥ श्रीमन्तंज्ञातिमासाद्य योज्ञातिरवसीदति । दिग्धहस्तंमृगइवस एनस्तस्यविन्दति ॥ २७ ॥ पश्चादपिनरश्रेष्ठ तवतापोभविष्यति । तान्वाहतान्वाहतान्वापि श्रुत्वातदनुचिन्त्य ॥ २८ ॥ येनखट्वांसमारूढः परितप्येतकर्मणा ।

शुभ चाहे ज्ञाति के लोगों से विग्रह न करे किन्तु ज्ञातिवाले लोगोंकेही साथ सबसुख भोगे अकेले भोगने की इच्छा न करे । २३ । साथ भोजन, साथही बतलाना, व परस्पर प्रीति करना जाति बिरादरी के लोगों के संग येही कार्य्य करने चाहिये, विरोध कभी उनके संग न करना चाहिये । २४ । ज्ञातिही के लोग तारते हैं व ज्ञातिहीव ले डुबाते हैं, उनमें अच्छे आचरणवाले तारते हैं, व खराब आचरण वाले डुबाते हैं । २५ । हे राजेन्द्र पाण्डवों के लिये आप अच्छे आचरणवाले हों, क्योंकि जब आप पाण्डवों समेत होजाँयगे तो कोई भी शत्रु आपकी ओर ढिठाई न करसकेगा । २६ । ज्ञातिवाले को धनवान् व राज्यवान् देख ज्ञाति के लोग जो भूंख प्यास के मारे दुखित होते हैं उनका पाप उस धन राज्यवान्को पहुँचता है जैसे विषयुक्त बाण लगेहुये मृगके वधका दोष बाण चलानेवाले व्याधको होता है । २७ । हे नरश्रेष्ठ जो हमारा कहा नहीं मानते तो पीछे पछितावोगे, क्योंकि अपने पुत्रों व पाण्डवों मेंसे जिस किसी को मारेहुये सुनोगे पश्चात्तापके सिवाय और कुछ न हाथ लगेगा । २८ । जिसकर्म के करने से पश्चात्तापमें

---

will spread in the world by your doing so. You are now an old man; give your sons good advice. I am your well-wisher and as such I am giving you good advice. One wishing to be happy, should never quarrel with his relatives; and instead of trying to keep all the good things for himself he should share them with his relatives. You should eat with your relatives, talk with them, love them and should raise no quarrels with them. Good relatives will raise you up while the wicked ones will sink you down. Be Good to the Pandavas, emperor; for, no enemy will dare look you in the face, if you will unite with them. The poorer relatives are distressed to see a relative in possession of wealth and kingdom and their sin attaches to the wealthy one as the sin of killing a deer with a poisoned arrow attaches to the archer. You will repent, best of men, if you will not

आद्रावेवनततकुर्या दप्युवेनीवितेसति ॥ २९ नकार्थिन्नापनयते पुमानन्यत्रभार्गवात् । शेषसम्प्रतिपचिस्तु बुद्धिमत्स्वेवतिष्ठति ॥ ३० ॥ दुर्य्योधनेनयद्येतत् पापंतेषुपुराकृतम् । त्वयातत्कुलवृद्धेन प्रत्यानेयंनरेश्वर ॥ ३१ ॥ तांस्त्वंपदेप्रतिष्ठाप्य लोकेविगतकल्मषः । भविष्यसिनरश्रेष्ठ पूजनीयोमनीषिणाम् ॥ ३२ ॥ सुव्याहृतानिधीराणां फलतःपरिचिन्त्ययः ॥ ३३ ॥ अध्यवस्यतिकार्येषु चिरंयशसितिष्ठति । असम्यगुपयुक्तंहि ज्ञानंसुकुशलैरपि । उपलभ्यञ्चाविदितं विदितंचाननुष्ठितम् ॥ ३४ ॥ पापोदयफलंविद्वान् योनारभतिवर्द्धते ३५ यस्तुपूर्वकृतं पापमविमृश्यानुवर्त्तते ॥३६॥

खट्वा पर बैठ परिताप करना पड़े वह कर्म पहिलेही से न करै क्योंकि यह जीवन अनित्य है कितने दिनोंकेलिये ऐसा कर्मकरै । २९ । शुक्राचार्य्यकी नीतिके विरुद्ध कर्म जो पुरुष करताहै वह सुख नहींपाता इससे अवतक जो हुआ सो हुआ अब जो बाक़ीहै वही अर्थ के पानेका विचारकरके करना चाहिये । ३० । पाण्डवोंके विषयमें प्रथम जो पाप दुर्य्योधनने कियेहैं अब तुम कुलवृद्धहो उनपापोंको मिटावो । ३१ । उसका उपाय यही है पांडवोंको राज्यका अधिकारदे निष्पापहो लोकमें आनन्दसे रहो व बुद्धिमान् लोग तुम्हारी बड़ाईकरें । ३२ । जो पुरुष धीरोंके वचन सुन उनमें निश्चयकर कर्मकरने का आरम्भ करता उसका यश बहुत दिनोंतक रहता है । ३३ । व जो पुरुष कुशल लोगों के कहे वचनोंको अच्छी तरह नहीं जानता व जानताभी है तो करता नहीं वो वह वचन निरर्थकही हो जाता है । ३४ । जो विद्वान् पापके उदय करनेवाले कर्मोंका आरम्भही नहींकरता वह बढ़ता रहता है, व जो अपने पूर्व समयके कियेहुये पापों का विचार नहीं करता व कर्म करने का प्रारम्भ करदेता है । ३५ । वह कुबुद्धि पुरुष अगाध नरकमें गिराया जाता है, मन्त्र भेदके द्वारहैं पण्डितलोग कहतेहैं जिनको हम कहते हैं । ३६ । जो पुरुष

mind my words: you will feel remorse whether you hear of the death of Pandavas or of your sons. *Never do the work which you know will result in your sorrow; for, life is short and therefore does not deserve* the doing of such deeds. He who acts against these institutes of Shukracharya, is never happy. Let alone what is past; only think of the future good. 30. Being the eldest of the family, you should obliterate the sins committed by Duryodhan in former days. The only expiation within your power is to give the kingdom to the Pandavas. Thus you will pass a life of innocence and felicity and wise man will praise you. He who hears the advice of wisemen and acts upon it acquires a long standing fame. He who does not hear the opinion of experts or hears but does not act upon it, depreciates its value. The wise man, who does not commence the doing of sinful deeds, rises in the worlds and he who begins his life without thinking of his former sins, falls into the bottomless

अनाधाङ्केदुर्मेधा विपर्णेविनिपात्यते । मन्त्रभेदस्यषद् माज्ञो द्वाराणिमानिलक्षयेत् ॥ ॥ ३७ ॥ अर्थसन्ततिकामश्च रक्षेदेतानिनित्यशः । मदंस्वप्नमविज्ञानमाकारंचात्म सम्भवम् ॥ ३८ ॥ दुष्टामात्येषुविश्रम्भं दूताच्चाकुशलादपि । द्वाराण्येतानियो ज्ञात्वा संवृणोतिसदानृप ॥ ३९ ॥ त्रिवर्गाचरणेयुक्तः सशत्रूनाधितिष्ठति । नवैश्रुतमविज्ञाय वृद्धाननुपसेव्यवा ॥ ४० ॥ धर्मार्थौवेदितुशक्यौ बृहस्पतिसमैरपि । नष्टंसमुद्रेपतितं नष्टं वाक्यमशृण्वति ॥ ४१ ॥ अनात्मानि श्रुतंनष्टं नष्टंहुतमनग्निकम् । मत्यापरीक्ष्य मेधावी बुद्ध्यासम्पाद्य चासकृत् ॥४२॥ श्रुत्वादृष्ट्वाथविज्ञाय माज्ञैर्मैत्रीं समाचरेत् । अकीर्तिविनयोहन्ति हन्त्यनर्थपराक्रमः ॥४३॥ हन्तिनित्यंक्षमा क्रोधमाचारो हन्त्यल

धनकी वृद्धि निरन्तर चाहे वह इनकी रक्षा किये रहै, मद्यपान करना, निद्रा, परदूतादि को न जानना, व अपने इशारे । ३७ । व दुष्ट अमात्यों में विश्वास करना, व अकुशल दूतकाभी विश्वास मानना, इन मन्त्रद्वारोंको जान जो सदा इनको गुप्त रखताहै । ३८ । व अर्थ धर्म कामके आचरण में युक्त रहता वह अपने शत्रुओं के ऊपर आ बैठताहै, व बिना शास्त्रजाने व बिना वृद्धों की सेवाकिये । ३९ । धर्म अर्थ कोई नहीं जानसक्ता चाहे बृहस्पतिके समान हो, जो वस्तु समुद्रमें गिरी वह नष्ट होगई, व जो वाक्य, किसी ने न सुना वह नष्टही होता है । ४० । व जो समझता नहीं उससे कहने से शास्त्र नष्ट होता, व बिना अग्नि केवल राखहीमें आहुति देना नष्टहोता, इससे पंडितको चाहिये जो कार्य्य करै प्रथम अपनी बुद्धि से परीक्षालेले, व बुद्धिही से बार२ उसकी निश्चय करले कि इसका फल क्याहोगा । ४१ । व सुन देखकर तब प्राज्ञों से मैत्रीकरे, विनय, अकीर्ति का नाश करती है, व पराक्रम अनर्थ का नाश करता है । ४२ । व क्षमा नित्य क्रोधको नाशती है व आचार अलक्षण को नाशता है । ४३ । भोजन वस्तकी सामग्री, खेत, घर,

perdition. A wise man desiring the increase of of wealth, should continually guard the six gates pointed out by learned men, from which secrets leak out: they are intoxication, sleep, not knowing the spies of others, one's own gestures and trusting wicked ministers as well as unfit ambassadors. - He who is wise in doing his businesses relating to wealth, religion and sexual desires subdues his enemies. None can know *dharm* and *arth* without reading the shastras and without attending on old men though he be as wise as Vrihaspati. Whatever falls in the sea, is lost and the same is the fate of the word which no one hears. 40. The teaching of the shastras is lost on him who does not understand it as well as pouring libations over ashes; a learned man should therefore think before doing and should judge of the result. Friendship should be contracted after seeing and hearing. Humility destroys infamy; prowess destroys bad luck; forgiveness always destroys anger, and propriety of conduct destroys bad habits.

क्षणम् । परिच्छदेनक्षेत्रेण वेश्मनापरिचर्यया ॥४४॥परीक्षेतकुलंराजन् भोजनाच्छाद नेनच । उपस्थितस्यकामस्य प्रतिवादोनविद्यते ॥ ४५ ॥ अपिनिर्मुक्तदेहस्य कामर क्तस्यकिंपुन. । प्राज्ञोपसेविनंवैद्यं धार्मिकं प्रियदर्शनम् ॥ ४६ ॥ मित्रवन्तंसुवाक्यंच सुहृदंपरिपालयेत् । दुष्कुलीनःकुलीनोवा मर्यादांयोनलंघयेत् ॥ ४७ ॥ धर्मापेक्षीमृदु र्ह्रीमान सकुलीनशताद्वरः । ययोश्चित्तेनवाचित्तं निभृतंनिभृतेनवा ॥ ४८ ॥ समेति प्रज्ञयाप्रज्ञा तयोर्मैत्रीनजीर्यति । दुर्बुद्धिमकृतप्रज्ञं छन्नंकूपं तृणैरिव ॥ ४९ ॥ विवर्ज यीतमेधावी तस्मिन्मैत्रीप्रणश्यति । अवलिप्तेषुमूर्खेषु रौद्रसाहसिकेषुच ॥ ५० ॥ तथै वापेतधर्मेषु नमैत्रीमाचरेद्बुधः । कृतज्ञंधार्मिकं सत्यमक्षुद्रं दृढभक्तिकम् ॥ ५१ ॥ जि-

सेवा, भोजन व वस्त्रादिसे कुलकी परीक्षा लेनी चाहिये । ४४ । जो वस्तु अकस्मात् इच्छित मिलजाय उसका निषेध न करना चाहिये, चाहे निर्मुक्त देह विरक्तभीहो फिर कामरक्त गृहस्थका क्या कहना । ४५ । राजद्वारमें प्रतिष्ठाके साथ रहनेवाले पंडित, व प्रियभाषी प्रियदर्शन पुरुष व सुन्दर बोलनेवाले मित्रका पालन यत्नसे करना चाहिये । ४६ । चाहे दुष्कुलीनहो व कुलीनहो पर मर्य्यादाका उल्लंघन न करताहो व सदा धर्म करनेकी इच्छा रखताहो, सरल स्वभाव रहताहो व लज्जावान् हो, सो वह १०० कुलीनों से श्रेष्ठ है । ४७ । जिसका चित्त अपने चित्तसे मिले, व गूढाचार मन्त्र यन्त्रादि से जिसका चित्त मिले, व बुद्धिसे बुद्धि मिले उन दोनोंकी मैत्री कभी नहीं मिटती । ४८ । व दुर्बुद्धि, किसीकार्य्यकी उन्नति न जाननेवाले, व अन्धेकुयें के समान तृणों से मुंदेहुये पुरुषकी मैत्री बुद्धिमान् पुरुष न करे क्योंकि वह नष्टही होजाती है । ४९ । व अहंकारी मूर्ख, क्रोधी व बिना विचारे करनेवाला, व धर्मरहित इन पुरुषों के संग मैत्री कभी न करनी चाहिये । ५० । व उपकार माननेवाला, धर्मात्मा, सत्यवक्ता, गम्भीर स्वभाव दृढभक्ति करनेवाला, जितेन्द्रिय, व मर्य्यादा में स्थित ऐसे मित्रका त्याग कभी

A family may be tested by examining its food, fields, house, attendance, stores and dress. Never reject a desired object because it is easily got. a person free from worldly enjoyment may disregard the objects of desire, but a householder cannot. A learned man living with respect at th king's court, one possessing agreeable speech and beauty of person and a dear friend should be maintained with care. He is better than a hundred persons born of noble family, who, whether he comes of a noble or an ignoble family, does not overstep the rules of conduct, is desirous of doing good deeds, has a mild temper and is bashful That friendship is never broken which exists between two persons of like minds, like opinions and like wisdom. Never contract friendship with a foolish and ignorant person who is like a blind well covered over with straw, nor with

तेन्द्रियं स्थितं स्थित्वा मित्रवत्यागिचेष्यते । इन्द्रियाणामनुत्सर्गो मृत्युनापिविशिष्यते ॥ ५२ ॥ अत्यर्थपुनरुत्सर्गः सादयेदैवतान्यपि । मार्दवं सर्वभूतानामनसूया क्षमाधृतिः ॥ ५३ ॥ आयुष्याणिबुधाः प्राहुर्मित्राणांचाविमानना । अपनीतम्सुनीतेन योर्थं मत्यानिनीषते ॥५४॥ मतिमास्थायसुदृढां तदकापुरुषव्रतम् । आयत्यां प्रतिकारज्ञस्त दात्वे दृढनिश्चयः ॥ ५५ ॥ अतीतकार्यशेषज्ञो नरोर्थैर्नप्रहीयते । कर्मणामनसावाचा यदभीक्ष्णंनिषेवते ॥५६॥ तदेवापहरत्येनं तस्मात् कल्याणमाचरेत् । मङ्गलालम्भन योगः श्रुतमुत्थानमार्जवम् ॥ ५७ ॥ भूतिमेतानिकुर्वन्ति सतांचाभीक्ष्णदर्शनम् । अ-

न करना चाहिये । ५१ । इन्द्रियों को उन के विषय से रोकना मृत्यु के समान दुःखद है एकाएकी कोई रोक नहीं सक्ता, पर जो उनको अपने विषयों में अत्यन्त छगजाने देवो देवताओंकोभी वे नष्टकरदें फिर मनुष्यों की कौन गणना । ५२ । सब प्राणियों से कोमलता रखना, व निन्दा न करना, क्षमा करना व धारणाशक्ति रखना व मित्रोंका अपमान कभी न करना पंडितलोग इनकामोंको आयुष बढ़ानेव के कहतेहैं ।५३। जो पुरुष अन्याय से नाशितधन न्याय से फिर इकट्ठा करना चाहता है वह बुद्धिमान सत्पुरुष का काम है ऐसाही करना चाहिये । ५४ । जो पुरुष होनेवाले दुःखके निवारणेका उपाय जान तब उसमें दृढ़ निश्चय करलेता व जो कार्य्य व्यतीत हैं उनको भी अच्छी तरह जानता, उस पुरुषका धन कभी नहीं घटता । ५५ । कर्म मन व वचन से जिस पदार्थ का सेवन पुरुष नित्य किया करता है, वही उस पुरुषको अपनी ओर खींचता है इस से भलाही का आचरण करना चाहिये । ५६ । मंगल वस्तु (दधि दूर्वा धेनुआदि) का छूना शास्त्र पढ़ना, उद्यम करना, सरलता रखना, व बार २ सज्जनोंका दर्शन इतने पदार्थ पुरुषको ऐश्वर्य करावेहैं । ५७ । उद्योग करना, लक्ष्मी लाभ, व

those who are boastful, ignorant angry, rash and irreligious. One who is grateful, grave strongly devoted, controller of organs and firm, should never be deserted The control of organs is painful like death. None can control them of a sudden but if they are allowed to have their way uncontrolled, they will bring about ruin not only to men but also to gods. To be tender to all beings, to refrain from contumely, forgiveness, patience and to abstain from disrespect of friends are qualities which tend to longevity. He who tries to amass justly again what is unjustly lost, is wise. He who knowing the remedy of an impending evil takes advantage of it and he who knows the best ways of doing things, is never attacked by poverty. The thing which a person attaches himself to by deeds, thoughts and words, draws him towards it, one should therefore attach himself to dharm. To touch auspicious things, to read the sacred books, perseverence, honesty and the society of virtuous men are things

निर्वेदःश्रियोमूलं लाभस्यचशुभस्यच ॥ ५८ ॥ महान्भवत्यनिर्विण्णः सुखंचानन्त्य मश्नुते । नातःश्रीमत्तरंकिञ्चिदन्यत् पथ्यतममतम् ॥५९॥ प्रभविष्णोर्यथातात क्षमा सर्वत्रसर्वदा । क्षमेदशक्तःसर्वस्य शक्तिमान्धर्मकारणात् । अर्थानर्थौसमौयस्य तस्य नित्यंक्षमाहिता ॥ ६० ॥ यत्सुखंसेवमानोपि धर्मार्थाभ्यां नहीयते । कामंतदुपसेवेत नमूढव्रतमाचरेत् ॥ ६१ ॥ दुःखार्त्तेषुप्रमत्तेषु नास्तिकेष्वलसेषुच । न श्रीर्वसत्यदान्तेषु येचोत्साहविवर्ज्जिताः ॥ ६२ ॥ आर्ज्जवेननरंयुक्तमार्ज्जवात् सव्यपत्रपम् । अशक्तं मन्यमानास्तु धर्षयन्तिकुबुद्धयः ॥ ६३ ॥ अत्यार्यमतिदातारमतिशूरमतिव्रतम् प्रज्ञाभिमानिनञ्चैव श्रीर्भयान्नोपसर्पति ॥ ६४ ॥ नचातिगुणवत्स्वेषा नात्यन्तंनिर्गु-

शुभका मूल होता है, इससे पुरुष सदा प्रसन्न रहता व अनन्त सुखपाता है । ५८ । जो अपनी बढ़ती चाहे वह सदा सर्वत्र क्षमाकरै, क्योंकि इस से बढ़कर कोई ऐश्वर्य्य करनेवाला व हित पदार्थ संसार में नहीं है । ५९ । उस में अशक्त पुरुष तो सदा क्षमाकरै व समर्थभी धर्मके कारण क्षमाकरै व जो न अशक्तहो हो न समर्थही हो किन्तु मध्यमहो उसकोभी क्षमाही करनी चाहिये । ६० । व जिस सुख के सेवन करने से पुरुषके धर्म अर्थ न जाते रहते हों ऐसे कामका सेवन करना चाहिये खाने पीने में किसी वस्तु के ऊपर हठ न करै । ६१ । व दुःखसे पीड़ित, किसी वस्तुके अहङ्कार से प्रमत्त, नास्तिक, आलसी, अजितेन्द्रिय व उत्साहरहित पुरुषों में लक्ष्मी नहीं बसती । ६२ । व जो पुरुष सरलता युक्त रहता है व अपने सीधेपनही से लज्जावान् रहता है उस से असमर्थमान दुष्ट लोग ढिठाई करने लगते हैं । ६३ । व अत्यन्तसीधे, अतिदानी अतिशूर अतिव्रत करनेवाले व प्रज्ञा के अभिमानियों के समीप मारेभय के लक्ष्मी जाती ही नहीं । ६४ । लक्ष्मी न अतिगुणवानों के यहां रहती न अतिनिर्गुणों के यहां बसती

which lead to wealth. Perseverence gives wealth, profit, good fortune, constant pleasure and illimitable happiness. He who desires his own greatness, should always forgive; for there is nothing in the world better giver of greatness than forgiveness. A weak person should invariably forgive, a powerful man should do so for the sake of dharm and one who is neither powerful nor weak, should also do it. 60. One may indulge in pleasures that are compatible with *dharm* and *arth*; but should never insist on articles of food and drink. Wealth cannot last with those who are afflicted with troubles, and are proud, irreligious, lazy, passionate and unambitious. He who is honest and bashful, is often mistaken for a weakling by wicked persons and they become rude. The goddess of wealth is afraid to go to those who are extremely simple, too charitable, too brave, too vow-observing and self-conceited. She lives with the extremely wise nor with the extremely foolish; for she likes neither too many

णेषु च । नैषा गुणानकामयते नैर्गुण्यान्नानुरज्यते ॥ ६५ ॥ उन्मत्तागौरिवान्धा श्रीः क्वचिदेवावतिष्ठते । अग्निहोत्रफला वेदाः शीलवृत्तफलं श्रुतम् ॥ ६६ ॥ रतिपुत्रफला नारी दत्तभुक्तफलं धनम् । अधर्मोपार्जितैरर्थैः करोत्यौर्ध्वदैहिकम् ॥ ६७ ॥ न स तस्य फलं प्रेत्य भुङ्क्तेऽर्थस्य दुरागमात् । कान्तारवनदुर्गेषु कृच्छ्रास्वापत्सु सम्भ्रमे ६८॥ उद्यतेषु च शस्त्रेषु नास्ति सत्त्ववतां भयम् । उत्थानं संयमो दाक्ष्यमप्रमादो धृतिः स्मृतिः ॥ ६९ ॥ समीक्ष्य च समारम्भो विद्धि मूलं भवस्य तु । तपो बलं तापसानां ब्रह्म ब्रह्मविदां बलम् ॥ ७० ॥ हिंसा बलमसाधूनां क्षमा गुणवतां बलम् । अष्टौ तान्यव्रतघ्नानि आपो मूलं फलं पयः ॥ ७१ ॥ हविर्ब्राह्मणकाम्या च गुरोर्वचनमौषधम् । नैतत्परस्य सन्दध्यात् प्रतिकूलं यदात्मनः ॥ ७२ ॥ संग्रहेणैष धर्मः स्यात् कामादन्यः प्रवर्तते । अक्रो-

है क्योंकि न तो यह बहुत गुणोंकी इच्छा करती न निर्गुणों की । ६५ । किन्तु उन्मत्त हो बैलकी इच्छा की हुई गायके समान अन्धी यह लक्ष्मी कहीं २ टिकती है अग्निहोत्रादि यज्ञही देवताओं के फल हैं व शास्त्र पढ़नेका फल शील व आचरण है । ६६ । व स्त्रीका फल भोग करना व पुत्र होना है धनका फल देना व भोग करना है व जो पुरुष अधर्म से उपार्जे हुये धनसे परलोक के लिये यज्ञ दानादि करता है । ६७ । वह पुरुष मरने पर उसका फल नहीं भोगता क्योंकि वह धन खोटे कुमार्ग से आयाथा । ६८ । *महावन में व वनमें कष्ट व आपत्तिओंमें व क्रोधमें व समाग में अस्त्र शस्त्रों के उठने पर* सत्त्ववान् पुरुषों को भयनहीं होती । ६९ । उद्यम संयम चतुरता अनालसता धारणा शक्तिस्मरण अच्छी तरह विचार पूर्वक कार्य्य में आरम्भ करना ये सब ऐश्वर्य के मूल हैं । ७० । तपस्वियों के तपस्याही बल है व वेदवादियों को वेदही बलहै असाधुओंको हिंसा बलहै व गुणवानों को क्षमा बलहै । ७१ । जल, मूल, फल, दुग्ध, खीर, ब्राह्मणकी आज्ञा, गुरुके वचन, व औषध, ये ८ पदार्थ व्रतको नहीं नाश करते । ७२ । व

qualities nor the total absence of them and yet, sometimes, she stays blindly with some persons like a cow which is mad and blind with desire for a bull. Gods are propitiated with libations, good conduct and manners are the fruits of study, sexual enjoyment and progeny are the fruits of women and the fruits of wealth are enjoyment and charity. He who performs yagyas with, or gives in charity, the money got by ill means, for the sake of the next world, derives no benefit from it after death, because of the ill gotten money. A virtuous person is not afraid of forests, pain, danger, anger, battles and weapons. Exertion, humanity, adroitness, firmness, remembrance and beginning things with care and forethought, all these qualities are the roots of greatness. 70. The strength of ascetics lies in asceticism, that of Vedic scholars in the Vedas, of the wicked in doing injury and of the virtuous in forgiveness. Water, roots,

धेनजयेत् क्रोधमसाधुं साधुनाजयेत् ॥ ७३ ॥ जयेत्कदर्यंदानेन जयेत्सत्येनचानृतम् स्त्रीधूर्त्तकेऽलसे भीरौ चण्डे पुरुषमानिनि ॥ ७४ ॥ चौरेकृतघ्नेविश्वासो नकार्योनचनास्तिके । अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः ॥ ७५ ॥ चत्वारिसम्प्रवर्द्धन्ते कीर्त्तिरायुर्यशोबलम् । अतिक्लेशेनयेर्थाः स्युर्धर्मस्यातिक्रमेणवा ॥ ७६ ॥ अरेर्वाप्रणिपातेन मास्मतेषु मनःकृथाः । अविद्यःपुरुषःशोच्यः शोच्यं मैथुनमप्रजम् ॥ ७७ ॥ निराहाराःप्रजाःशोच्याः शोच्यं राष्ट्रमराजकम् । अध्वाजरादेहवतां पर्वतानांजलंजरा ॥ ७८ ॥ असम्भोगोजरा स्त्रीणां वाक्शल्यमनसो जरा । अनाम्नायमलावेदा ब्राह्मणस्यावतंमलम् ॥ ७९ ॥ मलंपृथिव्यावाह्लीकाः पुरुषस्यानृतंमलम् । कौतूहलमला-

जो कर्म करनेसे अपने को कष्टहो वह दूसरे के संग न करै यह संग्रह के अर्थ हमने धर्म बताया इस से विपरीत अपने मनमाना धर्म है वह करने के योग्य नहीं ; ७३ । अक्रोधसे क्रोध जीतना चाहिये, साधु कर्म से असाधु को, कृपण को दानसे व सत्यसे मिथ्याको जीतना चाहिये । ७४ । परस्त्रीगामी आलसी, डरपोक, अति क्रोधी, अपनेको ही पुरुष समझनेवाला, चोर, उपकार न माननेवाला व नास्तिक जो वेद शास्त्र का प्रमाण न मानताहो इनका विश्वास कभी न करना चाहिये । ७५ । जो पुरुष अपने से बड़े लोगोंको प्रणाम करता है व नित्य वृद्धोंकी सेवा करता है उसके कीर्ति आयुर्बल यश व बल ये चार पदार्थ बढ़ते हैं । ७६ । जो धनादि अतिक्लेश से मिलैं व जो अधर्म से मिलैं व शत्रु के सामने प्रणामादि करने से मिलैं उन सबों में कभी न मन कीजिये ।७७। मूर्ख, सन्तान रहित, मैथुन, भूंखी प्रजा व बिना राजाका राज्य इतने शोच करनेके योग्य हैं । ७८ । प्राणियोंका बुढापा मार्ग चलना है, व पर्वतोंका जल, स्त्रियोंका बुढ़ापा भोग न करना व मनका बुढ़ापा दुर्वचन है, । ७९ । वेदोंका मल अनभ्यासहै व ब्राह्मण

fruits, milk, rice, boiled with milk, permission of Brahmans, the words of a preceptor and medicines donot destroy observance. One should not do to others what one dislikes is the rule to be followed by all; others are self made and not so binding. Anger should be subdued by composure, vice by virtue, stinginess by charity and falsehood by truth. An adulterer, an indolent person, a coward, an irascible person, self-conceited person, a thief, an ingrate and an athiest should not be trusted. He who reveres his elders and attends on old persons, gets fame, longevity, glory and strength. Never try to get the wealth which can be got by great trouble, by unfair means or by stooping low to an enemy. A fool, a childless person, coition, a starving nation and a kingless kingdom excite sorrow. People become old with travelling, mountains by the action of water, women for want of coition and mind by abusive words. The rust of the Vedas is the want of reading; that of Brahmans is

साध्वी विप्रवासमलास्त्रियः ॥ ८० ॥ सुवर्णस्यमलंरूप्यं रूप्यस्यापिमलंत्रपु । त्रपुणोमलंसीसं सीसस्यापिमलंमलम् ॥ ८१ ॥ नस्वप्नेनजयेन्निद्रां नकामेनजयेत्स्त्रियः नेन्धनेनजयेदग्निं नपानेनसुरांजयेत् ॥ ८२ ॥ यस्यदानजितं मित्रं शत्रवोयुधि निर्जिताः । अन्नपानजिता दाराः सफलंतस्य जीवितम् ॥ ८३ ॥ सहस्रिणोऽपिजीवन्ति जीवन्तिशतिनस्तथा । धृतराष्ट्रविमुञ्चेच्छां नकथंचिन्नजीव्यते ॥ ८४ ॥ यत्पृथिव्यां व्रीहियवं हिरण्यंपशवःस्त्रियः। नालमेकस्यतत्सर्वं मितिपश्यन्नमुह्यति ॥ ८५ ॥ राजन्भूयोब्रवीमित्वां पुत्रेषुसममाचर । समतायदितेराजन् स्वेषुपाण्डुसुतेषुच ॥ ८६ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरहित वाक्ये,

एकोनत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३९ ॥

का मल व्रत न करना पृथ्वीका मल वाल्हिक देश है जोकि समुद्र में जहां सिंधु आदि ६ नदियां मिली हैं वहां है व पुरुषका मल झूंठ है। ८० । व पतिव्रता स्त्रीका मल बहुत चटापटी का वेषबनाव हास्यकी बातें करना है व स्त्रियोंका मल विदेशमें रहना है सुवर्ण का मल रूप, व रूपका मल रांगा, रांगाका सीसा, व सीसे का मल मैल है । ८१ । सोनेसे निद्रा न जीते, व कामसे स्त्रीको न जीते इन्धनसे अग्निको न जीते व न पीनेसे मदिराको जीते क्योंकि ये इननोंसे कभीनहीं जाते वरन् और बढ़ते हैं । ८२ । जिसने दानसे मित्रोंको जीतलिया, व संग्राम में शत्रुओंको जीता, व अन्नपानसे स्त्रियोंको जीता व उसका जीवन सफल हुआ । ८३ । कोई मनुष्य विनाकाल के नहीं मरता चाहै सौ वा सहस्र वर्षजीता रहै इससे हे धृतराष्ट्र बहुत इच्छाको छोड़दो ।८४। जितने अन्य पुरुष और नारी पृथ्वी पर हैं सब एकही को नहीं मिलते यह देखकर अधिक लोभ छोड़दो ।८५। हे नृप मैं फिर तुमसे कहता हूं कि यदि पांडवों को अपने पुत्रोंकी समान समझतेहोतो उनको राज्य बांटदो ॥ ८६ ॥

non-observance of religious vows; that of the Earth is the country of Valhiks, where six rivers, Sudhu and others, fall into the ocean and falsehood is the rust of men. 80 . The rust of a chaste woman is gaudy dress and merriment; the rust of women is living away from home; the rust of gold is silver; that of silver is tin; that of tin is lead and the rust of lead is dirt Sleep cannot be conquered by sleeping nor women by coition; fire is not subdued by piles of wood nor wine by drinking. He who wins friends with charity, the enemy with fighting and the women with food and drink, has fulfilled the mission of his life. Man does not die before time, though he may live a hundred or a thousand years; seeing this, you must leave your avarice. No one person can get all the food, animals and women in the world; you must control your desires. I say again, king, if you love the Pandavas like your sons, share the kingdom with them."86.

विदुरउवाच । योऽभ्यर्चितः सद्भिरसज्जमानः करोत्यर्थंशक्तिमहापयित्वा। क्षिप्रंयशस्त्वंसमुपैतिसन्तमलंप्रसन्नाहिसुखायसन्तः ॥ १ ॥ महान्तमप्यर्थमधर्मयुक्तं यःसन्त्यजत्यनपाकृष्टएव । सुखंसुदुःखान्यवमुच्यशेते जीर्णांत्वचंसर्पइवावमुच्य ॥ २ ॥ अनृतेचसमुत्कर्षोराजगामिचपैशुनम् । गुरोश्चालीकनिर्बन्धः समानिब्रह्महत्यया ॥३॥ असूयैकपदंमृत्युरतिवादः श्रियोवधः । अशुश्रूषात्वराश्लाघा विद्यायाः शत्रवस्त्रयः ॥ ४ ॥ आलस्यंमदमोहौचचापलंगोष्ठिरेवच । स्तब्धताचाभिमानित्वंतथात्यागित्वमेवच ॥ ५ ॥ एतेवैसप्तदोषाःस्युः सदाविद्यार्थिनांमताः । सुखार्थिनःकुतोविद्यानास्ति

अध्याय ॥ ४० ॥

विदुरजी फिर बोले कि जो पुरुष सज्जनोंकी पूजा से पूजित अभिमान से शून्य यथाशक्ति अर्थ करता है व सज्जनों को प्राप्त होता है उसका बड़ाभारी यश होता है क्योंकि सज्जनलोग सुख यश देनेके लिये सदा समर्थ होते हैं। १ । जो पुरुष शत्रुओंकी खींचाखांची से बच अधर्म युक्त बड़े भी अर्थ को त्यागता है वह बड़े २ दुःख छोड़ सुख पूर्वक शयन करता है जैसे पुरानी खाल छोड़ सर्प्प सुख पूर्वक सोता है । २ । मिथ्या कहने से जयहोना, व राजाके बीचमें चुगुली करना, व पिता माता गुरु आदि बड़ोंकी निन्दा करना ये तीनों ब्रह्महत्या के समान हैं। ३ । सब प्रकार से निन्दाकरना मृत्युहै व अविवाद लक्ष्मीका नाशकहै, व सेवा व शीघ्रकी बड़ाई करना ये सब विद्याके शत्रु हैं । ४ । आलस्य, मद, मोह, चञ्चलता, सभा में बैठना, उद्धतता, अभिमानता, व लोभ ये सात दोष विद्यार्थियों को सदा त्यागना चाहिये, क्योंकि सुखार्थी को विद्या कैसे प्राप्त-

CHAPTER XL.

Vidur continued: "He who is respected by good men, is free from conceit and is charitable to the best of his power, gets much fame; for, good men can always give happiness and fame. He who, having no enemies to trouble him, rejects even large profits which can be got by unfair means, sleeps free from all cares like a serpent which lies at its ease after casting out its old skin. Conquest by falsehood, backbiting others before a king and using abusive language to elders, are as heinous as murder of Brahmans. Reviling brings death, useless talk destroys wealth and servitude as well as undue praise is the enemy of knowledge. Idleness, intoxication, foolishness, fickleness, sitting at a much frequented place, vanity, pride and avarice should be shunned by students; for a pleasure seeking person cannot acquire knowledge: Learning and pleasure are opposed to each other. Fire

विद्यार्थिनः सुखम् ॥ ६ ॥ सुखार्थीवात्यजेद्विद्यां विद्यार्थीवात्यजेत्सुखम् । नाग्निस्तृप्यतिकाष्ठानां नापगानांमहोदधिः । नान्तकःसर्वभूतानां नपुंसांवामलोचना ॥ ७ ॥ आशाधृतिंहन्ति समृद्धिमन्तकः क्रोधःश्रियंहन्तियशः कदर्यताम् । अपालनंहन्तिपशूंश्चराजन्नेकःक्रुद्धो ब्राह्मणोहन्ति राष्ट्रम् ॥ ८ ॥ अजाश्वकांस्यंरजतञ्चनित्यं मध्वाकर्षःशकुनि श्रोत्रियश्च । वृद्धोज्ञातिरवसन्नः कुलीन एतानितेसन्तु गृहेसदैव ॥ ९ ॥ अजोक्षाचन्दनंवीणा आदर्शोमधुसर्पिषी । विषमौदुम्बरंशंख स्वर्णनाभोऽथरोचना । ॥ १० ॥ गृहेस्थापयितव्यानि धन्यानिमनुरब्रवीत् । देवब्राह्मणपूजार्थमतिथीनां च भारत ॥ ११ ॥ इदञ्चत्वां सर्वपरंब्रवीमि पुण्यंपदंतात महाविशिष्टम् । नजातुकामा

कोहै, इससे विद्यार्थी को सुख नहीं है । ६ । सुखार्थीहो सो विद्याछोड़े व विद्यार्थीहो वो सुख छोड़े, अग्नि काष्ठोंसे तृप्त नहीं होता, व नदियों से समुद्र नहीं तृप्त होता, सब प्राणियों को एकही संग कोई नहीं मारसक्ता, न पुरुषोंको स्त्री मारसक्ती हैं । ७ । आशा धारणाशक्तिका नाश करती है, व यमराज धनराज्यादिका नाश करते हैं क्रोध लक्ष्मी का नाश करता है कृपणता यशका नाश करती है अपालन पशुओं का नाश करताहै हे राजन् क्रोधकर अकेला ब्राह्मण राज्यभरका नाश करताहै । ८ । छाग, अश्व, कांस्य, चांदी, शकुनि, ब्राह्मण, वृद्ध, अवसन्नज्ञाति व कुलीन, इतने लोग सदा तुम्हारे घरमें रहते हैं । ९ । व छाग, बैल, चन्दन, वीणा, दर्पण, मधु, घृत, विष ताम्रपात्र, दक्षिणावर्त्ती शंख, शालग्राम, हरिद्रा, । १० । इतने पदार्थ गृहमें रखने चाहिये यह मनुजी ने कहा है, व इन सब पदार्थों के रखने का प्रयोजन देवता ब्राह्मण व अतिथियोंकी पूजा है ११ हे तात सब से पर पुण्यदायक व सब से विशेष यह तुमसे बताते हैं, कि काम, लोभ,

---

is never surfeited with fuel and the Ocean is not surfeited with rivers. None can kill all the beings at once nor women can kill men. Hope destroys patience; Yam destroys wealth and kingdoms; anger destroys wealth; stinginess destroys fame, want of care destroys cattle and a sinful angry Brahman can destroy a whole kingdom. Goats, horses, bronze, silver, Shakuni, Brahmans, old men and people of low and high birth are found in your house. Goats, oxen, sandal wood, a lute, a mirror, honey, clarified butter, poison, copper utensils, conchs of the south, sacred stones and turmeric should be kept in the house for the sake of gods, Brahmans and guests as enjoined by manu. The best and most virtuous of all things is, that one should never discard dharm for worldly desires, greediness and fear; for dharm is everlasting while pleasure and pain are shortlived.

न्नभयान्न लोभाद्धर्मं जह्याज्जीवितस्यापिहेतोः ॥१२॥ नित्योधर्मः सुखदुःखेत्वनित्ये जीवोनित्यो हेतुरस्यत्वनित्यः त्यक्त्वानित्यं प्रतितिष्ठस्वनित्ये सन्तुष्यत्वंतोषपरो हिला भः ॥ १३ । महाबलानपश्य महानुभावान् प्रशास्यभूमिं धानधान्यपूर्णाम् । राज्यानि हित्वाविपुलांश्च भोगान् गतान्नरेन्द्रान् वशमन्तकस्य ॥ १४ ॥ मृतंपुत्रंदुःखपुष्टं मनुष्या उत्क्षिप्यराजन स्वगृहान्निर्हरन्ति । तंमुक्तकेशाः करुणंरुदन्ति चितामध्ये काष्ठमिवक्षिपन्ति ॥ १५ ॥ अन्योधनं प्रेतगतस्यभुंक्ते वयांसिचाग्निश्च शरीरधातून । द्वाभ्यामयंसह गच्छत्यमुत्र पुण्येनपापेनच वेष्ट्यमानः ॥ १६ ॥ उत्सृज्यविनिवर्तन्ते ज्ञातयःसुहृदःसुताः । अपुष्पानफलान्वृक्षान् यथाताततपतत्रिणः ॥ १७ ॥ अग्नौप्रास्तं

व भय से, व प्राणोंके निमित्तभी धर्म कभी न छोड़े । १२ । क्योंकि धर्म नित्यहै, व सुख दुःख अनित्यहैं, व जीव नित्यहै इसके हेतु अनित्यहैं, इस से अनित्यको छोड़ नित्यमें टिको, सन्तोषको प्राप्तहोवो, क्योंकि सन्तोष के समान और कुछ लाभ नहीं है ।१३। हेराजन् , देखो महाबली, महानुभाव लोग, धनधान्यसे पूर्ण पृथ्वीका राज्य भोगकर पर राज्य व बहुत भोग विलास के पदार्थ यहीं छोड़ यमराज के वशमें जायपड़े । १४ । देखो, बड़े दुःख से पालित पोषित पुत्रको मरजाने पर मनुष्य उठाके अपने घरसे दूरलेजाते, व बाल बनवाय बहुत रोदन कर उसे काष्ठ के समान अग्नि में जलादेते हैं । १५ । इस प्रकार जब प्राणी मरजाता है तो उस का धन औरही कोई भोगता है, पक्षी व अग्नि उसके शरीरके धातु चर्बी मेदा चमड़ा आदिको खाते हैं, वह केवल पाप व पुण्यको अपने संगलेजाता है और कुछ उस के संग नहीं जाता । १६ । सब उसको इस तरह श्मशान भूमि में छोड़ जाति बिरादरी के लोग सुहृद व पुत्र सब अपने २ घरको लौट आते हैं, जैसे पुष्पफल

The soul too is everlasting while its motives are transitory. Stick to the everlasting and leave the transitory. Be contented, for there is nothing better than contentment. See, king, many powerful and great men who ruled the Earth have died leaving their kingdoms and worldly enjoyment after them. See, how people carry away, far from their houses, a dead son whom they have brought up with so much trouble, and having shaved their heads aad wept over him, they burn him like wood. Thus when a person dies, others enjoy his wealth and the parts of his body are eaten up by birds and fire. He does not carry way anything with him excepting his virtues and sins and his sons, kinsmen and friends return home after leaving him on the cremation ground as birds leave the trees that are distitute of flowers and fruits. Only the virtuous and wicked deeds of a

नुपुरुषं कर्माण्वेतिस्वयंकृतम् । तस्मात्तुपुरुषो यत्नाद्धर्मं सञ्चिनुयाच्छनैः ॥ १८ ॥ अस्माल्लोकादूर्ध्वममुष्य चाधो महत्तमस्तिष्ठति ह्यन्धकारम् । तद्वैमहामोहनमिन्द्रियाणां बुध्यस्वमात्वां प्रलभेतराजन् ॥ १९ ॥ इदंवचश्चक्ष्यसि चेद्यथावन्निशम्य सर्वंप्रतिपत्तुमेव । यशःपरंप्राप्स्यसिजीवलोके भयंनचामुत्रनचेहतेऽस्ति ॥ २० ॥ आत्मानदी भारत पुण्यतीर्था सत्योदकाधृतिकूला दयोर्मिः । तस्यांस्नातः पूयतेपुण्यकर्मा पुण्योह्यात्मानित्यमलोभएव ॥ २१ ॥ कामक्रोधग्राहवतीं पञ्चेन्द्रियजलांनदीम् । नावंधृतीमयींकृत्वा जन्मदुर्गाणिसन्तर ॥ २२ ॥ प्रज्ञावृद्धंधर्मवृद्धं स्वबन्धुं विद्यावृद्धंवयसाचा-

---

रहित वृक्षोंको छोड़ पक्षी लोग जहां चाहते चले जाते हैं । १७ । जब अग्नि में पुरुष डाला जाता है तो उसके कर्म उसके पीछे२ स्वर्ग वा नरक को जाते हैं इस से पुरुषको चाहिये कि धीरे २ धर्मका संग्रह यत्न से करता रहे । १८ । इसलोक से ऊपर स्वर्ग लोक है व उसके व इससेभी नीचे पाताल में महाअंधकाररूप अंधतामिस्र नामनरक है वह इन्द्रियोंको मोहित कराता उसको जानो पर राजन् ऐसा न करो जिसमें तुमको भी वही प्राप्तहो । १९ । यह हमारा वचन सुन जो इसको यथावत् जानना चाहोगे तो परमयश पावोगे, व न यहां न परलोक में कुछ तुमको भय होगी । २० । हे राजन् यह जीव नदी रूप है, व पुण्य इस में स्नान करने का घाट है, सत्य इस में जल है, धारणाशक्ति इसके किनारे हैं, दया लहरें हैं, इस में स्नान करने से पुण्य कर्म करने वाला प्राणी पवित्रहोजाता है क्योंकि जीव सदा पुण्यरूप व लोभरहित होता है । २१ । काम क्रोध रूप गड़ियालवाली, व पञ्चेन्द्रिय जलवाली नदी में, धारणाशक्तिको नाव बनाय जन्म मरणादि भयंकर स्थल से उतरो । २२ ।

---

person follow him to paradise or hell when body is burnt in fire; every one should therefore persevere in practicing virtue. The region of paradise is above this world and that of hell, where total darkness prevails, is below it. Know, king, that hell stupifies the senses and do nothing that may lead you there. You will attain to great glory, if you will mind my advice and there will be no cause of fear for you either here or in the next world. 20. The soul is like a river whose bathing place is virtue, whose water is truth, whose banks are patience and whose waves are mercy. the virtuous person bathing in it becomes purified and the soul becomes a personification of virtue and free from greediness. From this mortal world you may cross by the boat of perseverance the river of the five senses having desires and anger for its crocodiles. He never falls in delusion who respectfully asks the council of those who are old in

पिद्धम्। कार्याकार्ये पूजयित्वाप्रसाद्य यःसम्पृच्छेन्नसमुह्येत् कदाचित् ॥ २३ ॥ धृत्वाशिश्नोदरंरक्षेत् पाणिपादञ्चचक्षुषा । चक्षुःश्रोत्रेचमनसा मनोवाचञ्चकर्मणा ॥ ॥ २४ ॥ नित्योदकी नित्ययज्ञोपवीती नित्यस्वाध्यायी पतितान्नवर्जी । सत्यम्ब्रुवन् गुरवेकर्म कुर्वन्न ब्राह्मणश्च्यवते ब्रह्मलोकात् ॥२५॥ अधीत्यवेदान् परिसंस्तीर्यचाग्नीनिष्ट्वायज्ञैः पालयित्वाप्रजाश्च । गोब्राह्मणार्थे शस्त्रपूतान्तरात्मा हतःसंग्रामेक्षत्रियः स्वर्गमेति ॥ २६ ॥ वैश्योऽधीत्यब्राह्मणान क्षत्रियांश्च धनैःकाले संविभज्याश्रितांश्च त्रेतापूतं धूममाघ्रायपुण्यं प्रेत्यस्वर्गे दिव्यसुखानिभुंक्ते ॥ २७ ॥ ब्रह्मक्षत्रंवैश्यवर्णञ्च

प्रज्ञावृद्ध, धर्म्मवृद्ध, विद्यावृद्ध, व वयोवृद्ध अपने भाई बन्धुकी पूजाकर जो कार्य अकार्य पूंछता है वह कभी मोहको नहीं प्राप्त होता । २३ । धारणाशक्ति से शिश्नेन्द्रिय व उदर की रक्षाकरै, व हाथों पैरोंकी नेत्रों से व नेत्र कान मनसे मन व वचनोंकी रक्षा कर्म्मसे करै । २४ । नित्य यथाकाल स्नान आचमनमें तत्पर, नित्य यज्ञोपवीत धारणकिये, नित्य वेदाध्ययन करताहुआ, नित्य जातिभ्रष्टका अन्न त्यागे, सत्य बोलता, गुरु के कर्म्म करता हुआ, ब्राह्मण ब्रह्मलोकसे कभी नहीं नीचे आता॥२५॥व चारवेद पढ़, अग्निहोत्र नित्यकर यज्ञों से देवताओं की पूजाकर, प्रजाओं का पालकर, गाय व ब्राह्मण के अर्थ शस्त्रधारण करने से अपना शरीर पवित्रकर संग्राम में मृत्युपाय क्षत्रिय स्वर्ग को जाताहै । २६ । वेदशास्त्रपढ़, ब्राह्मण व क्षत्रियोंको समयपर धनदे तथा औरभी आश्रित लोगोंको धनदे, तीन अग्नियों की पूजाकर व उनका शुद्ध, धूम सूंघ मरनेपर दिव्यसुख स्वर्ग में वैश्य-पाता है । २७ । व शूद्र, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी पूजा क्रम से करता हुआ, इनके

---

wisdom, in dharm, in learning and in age Protect the belly and the organ generation by control, protect hands and feet with eyes and protect the mind and words with eyes, ears and mind. That Brahman never falls down from the region of Brahman who regularly bathes, wears sacred thread, reads the Vedas, abstain from the food of those who are cast away by society, speaks the truth and obeys the orders of his preceptor. That Kshatrya goes to paradise, who having read the four Vedas pours daily libations on fire, worships gods by means of sacrifices, protects his subjects and having this purified himself, dies fighting in the cause of cows and Brahmans. Having read the Vedas and shastras, the Vaishya who always gives in charity to Brahmans and Kshatryas, and inhales the odorous smoke coming out from fire at the time of pouring libations, goes to paradise after death. A shudra destroys his sins by pleasing

शूद्रः क्रमेणैतान् न्यायतः पूजयानः । तुष्टेष्वेतेष्वव्यथो दग्धपापस्त्यक्त्वा देहंस्वर्गसुखानि भुंक्ते ॥ २८ ॥ चातुर्वर्ण्यस्यैष धर्मस्तवोक्तो हेतुं चानुब्रुवतो मे निबोध । क्षात्राद्-(द्धीयते पाण्डुपुत्रस्तंत्वंराजन् राजधर्मे नियुंक्ष्व ॥ २९ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । एवमेत द्यथात्वं मामनुशाससि नित्यदा । ममापि च मतिः सौम्य भवत्येवंयथात्थमाम् ॥ ३० ॥ सा तु बुद्धिः कृताप्येवं पाण्डवान् प्रति मे सदा । दुर्योधनं समासाद्य पुनर्विपरिवर्त्तते ३१ न दिष्टमभ्यतिक्रान्तुं शक्यं भूतेन केनचित् । दिष्टमेव ध्रुवं मन्ये पौरुषन्तु निरर्थकम् ॥ ३२ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि विदुरवाक्ये चत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥
समाप्तञ्च प्रजागरपर्व ॥

सन्तुष्ट होतेही अपने पाप भस्मकर मरनेपर देह यहां छोड़ स्वर्ग के सुख भोगता है । २८ । इस तरह चारों वर्णोंका धर्म आपसे कहा उस के कहनेका हेतु हम से सुनो अब क्षत्रिय के धर्म प्रजादि पालन रूपसे युधिष्ठिरजी हीनहुये जाते हैं इस से उन को राजगद्दी पर बैठावो । २९ । इतना सुन धृतराष्ट्रजी बोले कि जो तुम कहतेहो सो ठीक है जो तुम कहते हो मेराभी वहीमत है । ३० । पांडवों के प्रति दिनरात हमारी यही मति रहती है परन्तु जब दुर्योधन को देखते हैं तब हमारी मति विपरीत होजाती है । ३१ । भाग्य को कोई उल्लंघन नहीं करसकता इस लिये भाग्यही बलवान् है पौरुष कुछ नहीं । ३२ ।

Brahmans, kshotryas and Vaishyas with his work and goes to paradise. Thus I have told you the dharm of the four orders; now hear the cause of my so doing: Yudhishthir is falling from kshatrya dharm as he has no subjects to rule over and it is therefore your duty to instal him on the throne." On hearing the above Dhritrashtra said. "You are right in what you say and I concur with you. Day and night I am kindly disposed towards the Pandavas, but the presence of Duryodhan alters my resolution. None one can overstep Fate: Fate is almighty and the human strength is powerless."32.



अथ सनत्सुजातपर्व ॥

धृतराष्ट्र उवाच । अनुक्तंयदितेकिञ्चिद्वाचा विदुरविद्यते । तन्मेशुश्रूषतोब्रूहिविचित्राणीहभाषसे ॥ १ ॥ विदुर उवाच । धृतराष्ट्रकुमारोवै यःपुराणःसनातनः । सनत्सुजातःप्रोवाच मृत्युर्नास्तीतिभारत ॥ २ ॥ सतेगुह्यान्प्रकाशांश्च सर्वान्हृदयसंश्रयान् । प्रवक्ष्यतिमहाराज सर्वबुद्धिमतांवरः ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । किंत्वंनवेद तद्भूयो यन्मेब्रूयात्सनातनः । त्वमेवविदुरब्रूहि प्रज्ञाशेषोऽस्तिचेत्तव ॥ ४ ॥ विदुर उवाच । शूद्रयोनावहंजातो नातोन्यद्वक्तुमुत्सहे । कुमारस्यतुयाबुद्धिर्वेदतां शाश्वतीमहम् ॥ ५ ॥ ब्राह्मींहियोनिमापन्नः सुगुह्यमपि योवदेत् । नतेनगर्ह्योदेवानां तस्मादेतद्-

---

अध्याय ४१ ॥

धृतराष्ट्रजी बोले हे विदुर जो कुछ तुमने न कहाहो अभी कहने को बाकी है वहभी हम सुना चाहते हैं क्योंकि तुम जितना कहते हो सब विचित्रही कहते हो । १ । विदुरजी बोले हे भारत पुराने सनातन सनत्सुजात मुनि जिनकी पांचवर्ष की अवस्था सदा बनी रहती है और जिनकी मृत्युकभी नहीं है । २ । वे तुमसे गुप्त प्रकट व सब के हृदय में टिकनेवाली ब्रह्मविद्या कहेंगे क्योंकि सब बुद्धिमानों में वे श्रेष्ठतम हैं । ३ । धृतराष्ट्रजी बोले हे विदुर अबजो हम से सनत्सुजातकहें वह क्या तुम नहीं जानते जो तुम्हारी प्रज्ञामें कुछ शेषहो तो तुम्हीं हम से कहो । ४ । विदुरजी बोले कि हम शूद्रयोनि में उत्पन्न हुये हैं इस से अब ब्रह्मविद्या नहीं कहसक्ते जो कुमार सनत्सुजातकी बुद्धिहै हम सब जानते हैं पर क्या करें । ५ । जो ब्राह्मण की योनिमें उत्पन्नहो वह गुप्त योगसांख्य शास्त्रादि ब्रह्मविद्या जो चाहै कहै उस से देवतालोगभी उसकी निन्दा न करें

CHAPTER XLI

Dhritrashtra continued, "I wish to know, Vidur, whatever you have still left unsaid; for, your discourse is full of wonder." "Bharat," said Vidur in reply, "you will hear the secret, apparent and charming knowledge of Brahma from Sanatsujat who always looks like a child of five and never dies. He is the wisest of men." Can you not say to me what Sanatsujat will have to say?" said Dhritrashtra to Vidur; but the latter said that although he knew as much of Brahma as Sanatsujat did, yet being born of a Shudra woman he could not promulgate it like a Brahman. Dhritrashtra thereupon said, "Do you think, Vidur, that I shall be able to see here that ancient sage Sanatsujat who lives mostly in the region of

ब्रवीमिते ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । ब्रवीहिविदुरत्वंमे पुराणंतं सनातनम् । कथमेतेन देहेन स्यादिहैवसमागमः ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच । चिन्तयामास विदुरस्तमृषिं शंसितव्रतम् । सचतच्चिन्तितंज्ञात्वा दर्शयामासभारत ॥ ८ ॥ सचैनंप्रतिजग्राह विधिदृष्टेनकर्मणा । सुखोपविष्टंविश्रान्तमथैनं विदुरोब्रवीत् ॥ ९ ॥ भगवनसंशयःकश्चिद्धृतराष्ट्रस्य मानसः । योनशक्योमयावक्तुं त्वमस्मैवक्तुमर्हसि ॥ १० ॥ यंश्रुत्वायंमनुष्येन्द्रः सर्वदुःखातिगोभवेत् । लाभालाभौ प्रियद्वेष्यौ यथैनंनजरान्तकौ ॥ ११ ॥ विषहेरन्भयामर्षौ क्षुत्पिपासेमदोद्भवौ । अरतिश्चैवतन्द्रीच कामक्रोधौक्षयोदयौ १२

इति महा० उद्योगपर्वणि सनत्सुजातीयपर्वणि विदुरकृत सनत्सुजातप्रार्थने एकचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४१ ॥

इससे तुमसे हमने यह बात कही है । ६ । धृतराष्ट्रजी बोले कि हे विदुर बताइये वो भला सनातन मुनि सनत्सुजातजी का समागम हमारे इस देहके साथ यहीं बैठे २ कैसे होगा वे तो ब्रह्मलोक में प्रायः रहते हैं । ७ । वैशम्पायनजी जनमेजयजी से कहने लगे कि इतने में विदुरजी ने सनत्सुजात ऋषिका स्मरण किया कि विदुरका चिन्तित जान सनत्सुजातजी ने आकर उसी स्थानपर दर्शनदिया । ८ । व विदुरजी ने वेदविधान से उनको अर्घ्यपाद्याचमनीयादिदे सुख पूर्व्वक बैठाकर उन से प्रश्न किया । ९ । कि हे भगवन् धृतराष्ट्र के मनमें कुछ संशय है जो कि हम नहीं कहसके आप इनसे उसका उत्तर बतावें । १० । यह नृप आप की वाणी को सुनकर सब दुःख से पारहोजायगा और लाभ अलाभ, प्रिय अप्रिय, भय अमर्ष क्षुधा प्यास मद भूति अरति आलस्य काम क्रोध पाप और पुण्यकी बाधामें नहीं रहेगा । १२ ।

Brahma?" Vaishampayan said to Janmejaya that in the meantime Vidur thought of Sanatsujat who, knowing Vidur's desire, came there. Vidur worshipped him with the Vedic rites, offering him water to wash his feet and to sip. He then gave him a comfortable seat to sit upon and said, "Bhagwan, Dhritrashtra has in his mind some doubts which I cannot remove; be pleased to speak to him, so that, by hearing your words, he may become free from all anxieties as well as from the bondage of profit, loss, likes, dislikes, fear, anger, hunger, thirst, passions, birth, discontentment, idleness, desires, rage and sinful and meritorious deeds."12.

वैशम्पायन उवाच । ततोराजाधृतराष्ट्रोमनीषी सम्पूज्यवाक्यं विदुरेरितंतत् । सनत्सुजातं रहितेमहात्मा पप्रच्छबुद्धिं परमांबुभूषन् ॥ १ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । सनत्सुजातयदिदं शृणोमि नमृत्युरस्तीति तवप्रवादम् । देवासुराह्याचरन ब्रह्मचर्यममृत्यवे तत्कतरन्नुसत्यम् २ सनत्सुजातउवाच । अपृच्छःकर्मणायच्च मृत्युर्नास्तीतिचापरम् शृणुमेब्रुवतोराजन् यथैतन्मा विशंकियाः ॥३॥ उभेसत्येक्षत्रियैतस्य विद्धि मोहन्मृत्युः सम्मतोयं कवीनाम् । प्रमादंवै मृत्युमहंब्रवीमि तथाप्रमादममृतत्वंब्रवीमि ॥४॥ प्रमादाद्वैअसुराः पराभवन्नप्रमादाद्ब्रह्मभूता भवन्ति । नैवमृत्युर्व्याघ्र इवात्तिजन्तून्ह्यस्य रूपमुपलभ्यतेहि ॥५॥ यमंत्वके मृत्युमतोऽन्यमाहुरात्मावसन्नममृतं ब्रह्मचर्यम् । पितृलोके

अध्याय ४२ ॥

वैशम्पायनजी बोले, तिसके पीछे बड़े बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्रजी ने विदुरजी के वचन सुन परम बुद्धि को भूषित करते हुये, सनत्सुजातजी से पूंछा । १ । हे सनत्सुजात जी जो आपकी वाणी विदुरजी से सुनी कि मृत्यु नहीं है तो देवता दैत्यादि सब अमृत्यु के लिये ब्रह्मचर्य्य करते हैं, तो मृत्यु अमृत्यु दोनों पक्षों में कौन सत्य है । २ । सनत्सुजातजी बोले कि जिस ब्रह्मचर्य्य कर्म्म से मृत्यु नहीं होती व मृत्यु स्वरूप से है यह तुमने हमसे पूंछा हम कहते हैं सुनो इस विषय में कुछ शंका न करो । ३ । मृत्यु अमृत्यु अवस्था भेद से एकही पुरुष के दोनों सत्यहैं, मोहसे मृत्यु होती है यह कवियों का सम्मतहै, हम प्रमादको मृत्यु कहतेहैं व अप्रमादको अमृत्यु । ४ । प्रमादही से असुर लोग मृत्युको प्राप्त होतेहैं, व ज्ञानसे फिर ब्रह्मभूत होजाते हैं, कुछ मृत्यु व्याघ्र के समान किसीको पकड़कर खा नहीं जाती क्योंकि इसका रूपतो कुछ दिखाई ही नहीं देता । ५ । जो मृत्युका रूपही नहीं दिखाई देतातो उसके होनेमें कौन प्रमाण है इस विषयमें कहते

CHAPTER LXII

Vaishampayan continued that after hearing the words of Vidur, *the wise king Dhritrashtra said, "Among your teachings, Sanatsujat, I have heard from Vidur that gods as well as Daityas observe the* vow of celibacy for the sake of longevity: pray tell me whether life or death be true." To this Sanatsujat replied, "I shall tell you about celibacy which gives immortality; hear and remove your doubts: life and death are both true of a man at different times. Wise men say that delusion begets death; but we say that insensibility is death, while the absence of it is life. Asurs die through insanity and again become united with the supreme spirit through gyan. Death does not devour any one like a *lion: for it* has no form. What is the proof of the existence of death when we can not see him? Some people say that Yamraj is death; but persons

राज्यमनुशासितदेवः शिवःशिवानामशिवोऽशिवानाम् ॥ ६ ॥ अस्यादेशान्निःसरतेनराणां क्रोधःप्रमादो लोभरूपश्चमृत्युः । अहंगतेनैवचरन् विमार्गान्नचात्मनो योगमुपैतिकश्चित् ॥ ७ ॥ तेमोहितास्तद्वशे वर्तमाना इतःप्रयातास्तत्र पुनः पतन्ति । ततस्तानदेवाअनुविप्लवन्तेअतोमृत्युर्मरणाख्यामुपैति ॥ ८ ॥ कर्मोदयेकर्मफलानुरागास्तत्रानुतेयान्ति न तरन्ति मृत्युम् । सदर्थयोगानवगमात् समन्तात् प्रवर्त्ततेभोगयोगेन देही ॥ ९ ॥ तद्वैमहामोहनमिन्द्रियाणां मिथ्यार्थयोगस्य गतिर्हिनित्या । मिथ्यार्थयोगाभिहतान्तरात्मा स्मरन्नुपास्ते विषयान्समन्तात् ॥ १० ॥ अभिध्यावै प्रथमंहन्ति लोकान्

हैं कि कोई २ मूढ़ यमराजको मृत्यु कहते हैं, परन्तु जिनका आत्मा ब्रह्मचर्य में लगा हुआ जैसे कि योगियोंका उनकी मृत्यु कभी होतीही नहीं, हां यमराजको कहते हैं कि पितृलोक में बैठेहुयेहैं सबको शिक्षा देते हैं, वही शुभ कर्म करनेवालोंको कल्याण रूपहैं, व अशुभ करने वालों को अकल्याण रूपहैं पर यहभी भ्रान्ति वस्तुतः कुछभी नहीं । ६ । वेही लोग यहभी कहतेहैं कि यमराजहीकी आज्ञासे क्रोध अज्ञान लोभ रूप मृत्यु नरोंके लिये निकलती है इसी से अहंकार के मारे कुमार्गों में चलने से आत्माके योगको कोई नहीं पाता । ७ । व इसीसे वे मनुष्य मोहितहो यमराजरूप मृत्युके वशीभूतहो यहांसे यमलोक में पहुँचते वहां से कालान्तर में फिर यहां आते फिर नरक में जाते हैं, प्राणियों के मरनेके पीछे उनकी इन्द्रियों के देवगण भी वहीं चलेजाते हैं इसी से मरण को मृत्यु कहते हैं प्रयोजन यह कि यमराजको व अज्ञान नाशको मृत्यु कहते हैं । ८ । फिर जब उनके कर्मोंकी उदय हुई तो कर्मफलों के भोग करने के अनुराग से स्वर्गादिकों में जातेहैं इससे मृत्युको नहीं तरते महाके अष्टांग योग न करने के कारण प्राणी फिर भोग करनेमें प्रवृत्त होजाताहै । ९। व जो इस पुरुषकी मिथ्याभूत शब्द स्पर्शादि विषयों में नित्य प्रवृत्ति रहती है वही इन्द्रियों को

like *yogis* who observe celibacy never die. It is said that Yamraj holds a sitting in the region of pitris and teaches all. He is kind to the virtuous and cruel to the wicked; but this too is a delusion and no reality. They also say that Death in the forms of anger, ignorance and greediness comes out to the people by the order of Yamraj, that the people becoming wicked with *self-conceit remain* in spritual ignorance and consequently being caught by Yamraj or Death are carried to the region of Yam and then to hell and again here. They say that after death the gods of senses too go there and for this reason it is called Death. So Death is another name for Yam the remover of ignorance. People go to paradise to enjoy the fruits of their good deeds, but not being able to conquer Death and for want of union with Brahma, they are always doing deeds and abiding by their result. He who is always entangled in the object

क्रामक्रोधावनुगृह्याशु पश्चात् । एतेबालान्मृत्यवे मापयन्ति धीरास्तुधैर्य्येण तरन्तिमृत्यु म् ॥ ११ ॥ सोऽभिध्यायन्नुत्पतितान्निहन्यादनादरेणाप्रतिबुध्यमानः । नैनं मृत्युर्मृत्यु रिवात्तिभूत्वा एवंविद्वानयो विनिहन्तिकामान् ॥ १२ ॥ कामानुसारीपुरुषः कामान नुविनश्यति । कामान्व्युदस्य धुनुते यत् किञ्चित्पुरुषोरजः ॥ १३ ॥ तमोऽप्रकाशो भूतानां नरकोयंप्रदृश्यते । मुह्यन्तइवधावन्ति गच्छन्तः श्वभ्रवत्सुखम् ॥ १४ ॥ अ- मूढवृत्ते-पुरुषस्येह कुर्यात् किंवैमृत्युस्तार्ण इवास्यव्याघ्रः । अमन्यमानःक्षत्रिय किञ्चि-

महामोह करातीहै, इसीसे मिथ्य भूत विषयोंके योगसे अभिहतहो यह अन्तरात्मा सबओर विषयोंका सेवन करने लगताहै ।१०। इससे शब्दादि विषयोंका स्मरण प्रथम लोगोंका नाश करता, उस के पीछे काम फिर क्रोध, परन्तु ये सब बिना चित्तशुद्धि जीतेहुये अज्ञानियों कोही मृत्युको प्राप्त करावते हैं व चित्तशुद्धि को जीतेहुये धीरलोग तो अपने धैर्य्य से मृत्युको उतर जातेहैं । ११ । इससे जो मृत्युके पार जाया चाहताहो वह पुरुष अपने सामने आयेहुये अभिलाषोंका नाशकरे, जो अभिलाषहो भी तोभी उसका अनादर कर भुलादे, इस तरह जो विद्वान् अभिलाषों का नाश करता है उसको अज्ञानरूप मृत्यु यमरूप मृत्यु के समान नहीं खाती, निष्काम पुरुषके समीप मृत्यु नहीं आती । १२ । पुरुष काम के अनुसार चलता है इससे कामही के पीछे उसका विनाश भी होताहै इस से कर्मों को दूरकर जो कुछ दुःखरूप अन्धकार है उसको पुरुष नाशता है । १३ । यह काम प्राणियों को अज्ञान रूप नरक दिखाई देता है, इस काम की सुखादि में पुरुष गढा युक्त भूमिपर दौड़तेहुए पुरुषोंके समान दौड़तेहुए इधर उधर ठोकर खाते हैं । १४ । जो पुरुष काम से निराशित चित्त नहीं है उसको तृणमय व्याघ्र के समान मृत्यु क्या कर- सकेगी इससे हे राजन्, इस काम के जीवनरूप अज्ञान को नाश करताहुआ पुरुष

of senses falls in the darkness of ignorance and the soul overcome with false objects becomes entangled in them. 10. The objects of senses, desires and anger bring about the Death of those who have no control over their minds, but wise men who have control over their minds patiently cross the river of Death. He who wants to subdue Death must destroy his desires; he who is free from desires or wisely subdues them is never devoured by Death. He who follows his desires, is destroyed by them: but he who keeps himself free, destroys the darkness of affliction. The desires are like a hell of ignorance; he who pursues them, stumbles like one running over an uneven ground. Like a lion made of straw, Death cannot harm him who is not under the influence of desires. Dispelling the darkness of ignorance, you should disregard worldly pleasures and thus be free from desires. The soul, full of anger, folly and greediness within

दन्यत्राधीयीत निर्गुदक्षिवास्यनायुः ॥ १५ ॥ सक्रोधलोभौ मोहयानन्तरात्मा सवै मृत्युरस्त्वच्छरीरेष एषः । एवंमृत्युंजायमानं विदित्वा ज्ञानेस्थितुनविभेतीह मृत्योः ॥ विनश्यतेविषये तस्य मृत्युर्मृत्योर्यथा विषयंप्राप्यमर्त्यः ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । यानेवाहुरिज्यया साधुलोकान् द्विजातीनां पुण्यतमान सनातनात् । तेषांपरार्थं कथयन्तीहवेदा एतद्विद्वान्नोपैति कथंनुकर्म ॥ १७ ॥ सनत्सुजात उवाच । एवंह्यविद्वानुपयातितत्र तत्रार्थजातञ्च वदन्तिवेदाः । अनीहआयाति परंपरात्मा प्रयातिमार्गेण निहत्यमार्गान् ॥ १८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । कोसौनियुंक्तेतमजं पुराणं सचेदिदंसर्वम

इत्यादिकों के सुख को कुछभी न मानता हुआ उसका स्मरण न करै । १५ । क्रोध, मोह लोभ युक्त जो तुम्हारा जीव इस तुम्हारे शरीर के भीतर है यही तुम्हारी मृत्यु है, इस प्रकार मृत्यु को उत्पन्नजान ज्ञान में टिका पुरुष मृत्यु से नहीं डरता, क्योंकि जैसे मृत्यु के विषय में प्राप्त होने से मनुष्य मरताहै वैसेही ज्ञानी पुरुष के विषय में आकर मृत्यु मरजाती है । १६ । इतना सुन धृतराष्ट्रजी बोले कि यज्ञ करने से द्विजातियों को पुण्यतम सनातन उत्तम सत्य लोकादि मिलते हैं यह वेदोंमें वेदवादियों ने कहा है, व उन्हीं लोकों को वेद मोक्ष प्रापक कहतेहैं फिर विद्वान् यज्ञादि कर्म क्यों नकरै, जब यज्ञही से मोक्ष मिलताहै तो ज्ञान से क्या है । १७ । यह सुन सनत्सुजातजी फिर बोले, कि जैसा तुम कहते हो उस मार्ग से अज्ञानी पुरुष मोक्षको प्राप्तहोता है, व वेदभी उस मार्ग की द्वारा मोक्ष प्राप्ति कहते हैं, परन्तु, जीव जब कुछ चेष्टा नहीं करता केवल ब्रह्म ही समझता है तभी निर्गुण आत्मा को प्राप्तहोता है व निष्काम पुरुष सुषुम्ना नाड़ी के मार्गों को तोड़कर ब्रह्मलोक हो परमेश्वर में लीन होता है । १८ । यह सुन धृतराष्ट्रजी बोले कि उस अज पुराण पुरुषको कौन संयोग कराता है जिसके संयोग से वह दुःखादिका भागी होता है, व

your body, is your death and knowing death to be thus born, the wise men is not afraid of it; for Death itself dies in contact with the wise as the fool dies when he meets Death." On hearing this Dhritrashtra said, "The Vedas say that the twice-born go to the everlasting good region by performing Yagyas and the same regions are obtained by those who gain salvation; why should wise men seek gyan while they can get salvation by means of yagyas?" To this Sanatsuyan replied, "Only ignorant people get salvation by the means you speak of and the Vedas confirm the fact; but when a person relies upon gyan only without the help of actions, he approches the supreme spirit and being *free from desires* and stopping the ways of the artery called *sushumna*, he becomes united with the supreme spirit." Dhritrashtra on hearing this said, "What united people with Vishnu who is free from birth without whom

नुक्रमेण । किंवास्यकार्यमथवा सुखञ्च तन्मेविद्वन्ब्रूहि सर्वंयथावत् ॥ १९ ॥ सनत्सुजात उवाच । दोषोमहानत्र विभेदयोगे ह्यनादियोगेन भवन्तिनित्याः । तथास्यनाधिक्यमपैति किञ्चिदनादियोगेन भवन्तिपुंसः ॥ २० ॥ यएतद्वाभगवान्स नित्यो विकारयोगेन करोति विश्वम् । तथाचतच्छक्तिरिति स्ममन्यते तथार्थयोगेन भवन्ति वेदाः ॥ २१ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । येऽस्मिन धर्मान्नाचरन्तीह केचित्तथाधर्मान केचिदिहाचरन्ति । धर्मःपापेन प्रतिहन्यते स्विदुताहोधर्मः प्रतिहन्तिपापम् ॥ २२ ॥ सनत्सुजात उवाच ॥ उभयमेव तत्रोपयुज्यते फलंधर्मस्यैवेतरस्यच ॥ २३ ॥ तस्मिन स्थितौ वाप्युभयंहि नित्यं ज्ञानेनविद्वान प्रतिहन्तिसिद्धम् । तथान्यथा पुण्यमुपैतिदेही

जो वही इस सब विश्वको क्रमसे उत्पन्न करता है तो, उसका इस के करने से कौन प्रयोजन है, व उसको इसमें सुख क्याहै हे विद्वन् यह सब यथावत् हमसे कहो । १९ । सनत्सुजातजी बोले, कि जीव व परमात्मा के भेद करने में बड़ाभारी दोष है क्योंकि इन का अनादि से योग है इससे ये नित्यही होते हैं, जीव व परमात्मा के योगमें कुछ आधिक्यनहीं होजाता क्योंकि पुरुष अनादि योगही से होते हैं । २० । जो यह भगवान्है वह नित्य है पर मायाके योगसे आत्मस्वरूप इस विश्वको उत्पन्न करता है, व उसी तरहकी वह अपनी शक्ति मानता है क्योंकि शक्ति व शक्तिमान् में वेद भेद नहीं बताते, ।२१। धृतराष्ट्र ने कहा, कि इस जगत् में कोई २ धर्म नहीं करते, व कोई २ अधर्मही करते, तो बताइये कि धर्मको पाप नष्ट करडालता है वा धर्म पापको नाशता है । २२ । सनत्सुजातजी बोले, कि पाप व धर्म दोनों भोग करने होते हैं इससे दोनों मोक्ष साधन के उपयोगी हैं अर्थात् संन्यास व कर्म दोनोंमोक्ष के उपयोगी हैं । २३ । इससे मोक्षकी स्थितिमें दोनों नित्य हैं, व ज्ञानसे विद्वान् संन्याससे सिद्ध परमेश्वर को प्राप्तहोता है, व

people fall into trouble and who produces all the world? Please tell me the purpose which this world is created for and what are pleasure and pain?" To this Sanatsuyan replied, "It is a great sin to make a distinction between soul and the supreme spirit; for the connection between the two has been without a beginning and it will last for ever. There is nothing strange in the connection, because both are free from beginning. 20. The Supreme Being is eternal. He creates the world in His own form by the contact of illusion. His power is like him; for the Vedas draw no line of distinction between power and the possessor of it." Dhritrashtra then said, "There are some persons in the world who donot follow dharm and others who act against it; pray let me know whether sin destroys dharm or is destroyed by it." To this Sanatsuyan replied, "Both sin and dharm have to be suffered as they are useful for the

पैतिदेही तथागतंपापमुपैति सिद्धम् ॥ २४ ॥ गत्योभयंकर्मणायुज्यतेऽस्थिरं शुभस्य पापस्यसचापिकर्मणा । धर्मेणपापंप्रणुदतीहविद्वान धर्मोबलीयानितितस्यसिद्धिः २५ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यानिहाहुःस्वस्यधर्मस्यलोकान् द्विजातीनांपुण्यकृतांसनातनान् । तेषांक्रमानकथयततोऽनिचान्यान्नैतद्विद्वन् वेत्तुमिच्छामिकर्म ॥ २६ ॥ सनत्सुजात उवाच ॥ येषांव्रतेऽथविस्पर्द्धा बलेबलवतामिव । तेब्राह्मणाइतःप्रेत्य ब्रह्मलोकेप्रकाशकाः ॥ २७ ॥ येषांधर्मेच विस्पर्द्धा तेषांतज्ज्ञानसाधनम् । तेब्राह्मणाइतोमुक्ताः स्वर्गंयान्ति त्रिविष्टपम् ॥ २८ ॥ तस्यसम्यक्समाचार माहुर्वेद विदोजनाः । नैनं

कर्म करने से पुण्यको प्राप्त होता है परन्तु किसी २ कर्म से पापकोभी प्राप्त होताहै इस से ज्ञानही श्रेष्ठ है । २४ । पुण्य पाप दोनों कर्म सफल हैं पुण्य से स्वर्ग प्राप्ति फल होता व पापसे नरक प्राप्ति फल होताहै परन्तु स्थिर दोनों हैं कर्म करनेसे धर्मभी मिटता है व पापभी, इस से विद्वान् लोग धर्मसे पापका नाश करते हैं व मूढ़लोग कर्म के फल में स्वर्ग धनधान्यादि सुख लेते हैं इस से पापसे धर्म बलवान् होता यह बात सिद्धहुई २५। धृतराष्ट्रजी ने कहा, कि अपने २ धर्म के अनुसार पुण्य करते हुये ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों को जो सनातन लोक मिलते हैं उनका क्रम आपकहैं, व उनसे भिन्न मोक्ष सुखभी आप बतावें यह हम जानना चाहते हैं । २६ । सनत्सुजातजी बोले कि जिन ब्राह्मणोंको यम नियमादि रूपव्रत करने में यह मानहै कि हम औरों से अधिक करेंगे जैसे कि मल्लादि बल वालों को परस्पर विस्पर्द्धा होती है वे ब्राह्मणलोग इस शरीरसे मृतकहो ब्रह्मलोकको जावें फिर वहां ब्रह्माके संग मुक्त होजाते हैं । २७ । व जिन ब्राह्मणों को व्रतमें नहीं यज्ञादि धर्म करने में विस्पर्द्धा है वे उन यज्ञादिकी द्वारा यहांसे स्वर्ग लोकको जाते सत्यलोक को नहींजाते । २८ । परन्तु जो लोग धर्म न करने में अपराध समझ अपना यज्ञादि

accomplishment of salvation and both are constant factors to its stability. A learned man attains by sacred knowledge to the Supreme spirit who is obtained by abandonment of worldly desires. *Some deeds are meritorious whilst others are sinful; it is therefore best to leave them altogether.* All deeds are fruitful: the meritorious ones lead to paradise and the wicked ones lead to hell. Deeds may destroy dharm as well as sin; learned men destroy sin by deeds of virtue, while foolish ones enjoy paradise or wealth by means of them and hence it is proved that dharm is superior to sin." Dhritrashtra then asked the rishi to tell him in detail what regions or what happiness of salvation could Brahmans, Kshatryas and Vaishyas obtain respectively by their meritorious deeds. And Sanatsujan replied, "Those Brahmans who vie with others in the observance of religious duties, obligatory and optional, go to the region of Brahma

मन्येतभूयिष्ठं बाह्यमाभ्यन्तरंजनम् ॥ २९ ॥ यत्रमन्येतभूयिष्ठं प्रावृषीवतृणोलपम्।
अन्नंपानंब्राह्मणस्य तज्जीवेन्नानुसंज्वरेत् ३० यत्राकथयमानस्यप्रयच्छत्यशिवंभयम्
अतिरिक्तमिवाकुर्वन् सश्रेयान्नेतरोजनः ॥३१॥ योवाकथयमानस्यह्यात्मानंनानुसंज्व
रेत्। ब्रह्मस्वं नोपभुञ्जीततदन्नंसम्मतंसताम् ॥ ३२ ॥ यथास्वंवान्तमश्नाति श्वा वै
नित्यमभूतये। एवन्तेवान्तमश्नन्तिस्ववीर्य्यस्योपसेवनात् ॥३३॥ नित्यमज्ञातचर्य्यामे
इतिमन्येतब्राह्मणः। ज्ञातीनांतुवसन्मध्येनैवविदुर्ब्राह्मणंबुधाः ॥ ३४ ॥ कोह्यनन्तरमा

धर्महीं किया करते वे वेदवादी लोग यही कहते कि यज्ञादि धर्महीं करना चाहिये, वे लोग यज्ञसे व्यतिरिक्त व्रतादि करनेवाले ब्राह्मणोंको बड़े नहीं मानते। २९। अब योगियोंका धर्म कहते हैं, योगी को चाहिये कि जिस ब्राह्मण के यहां वर्षासमय के तृणके समान अन्न जल अधिकहो उसी ब्राह्मण के यहां भोजनकर जीवन् वृत्तिकरें दीन ब्राह्मणों को न सतावें व क्षुधासे अपनी आत्माको न पीड़ितकरें। ३०। जिस देशमें विना अपना प्रभाव बताये कोई अमंगल भयगाली प्रदानादि करताहो वहांभी जो अपना उत्कर्ष न कहकर भोजनादि किसी तरह करलेता है वह श्रेष्ठतम योगीहै व जो इस के विपरीत करताहै वह श्रेष्ठ नहीं है। ३१। व जो अपनी प्रशंसा न करनेवाले के ऊपर कोप न करै, व निन्दादि रहित श्रद्धापूर्वक अन्नदाताहीं का अन्न भोजन करे वही उत्तम योगी है। ३२। व जो संन्यासी अपने पाण्डित्यादि वीर्य्यके बलसे जीविकाकरै व उत्कर्ष दिखाय कहीं भोजन करता वह कुत्तेके समान वान्ताशी है। ३३। व जो ब्राह्मण अपनी ज्ञाति के लोगों के बीचमें बसाहुआभी यह चाहता है कि मेरा ब्रह्मचर्य्यादि कोई ज्ञातिवाला न जाननेपावे गुप्तही किया करूं पण्डित लोग उसको उत्तम ब्राह्मण कहते हैं

and there get emancipation. Those who perform *yagyas* go to paradise. But those scholars of the Vedas who think it a sin to leave actions and who are therefore engaged in performing *yagyas* and other deeds of virtue, donot think highly of those who are opposed to do any such things. As regards ascetics, they should live upon the food of those who have it in abandance and should neither add to the misery of the poorer ones by taking out of their necessities nor should they make their own bodies lean for want of food. 30. The best yogi is that who begs his food without showing his own greatness and suffers insults without grumbling: one who does not come up to this standard is not good. He who is not angry with one who reviles him and who without resenting his insult eats the food offered by the donor, is the best yogi. The *sanyasi* who lives upon the display of his learning, is an eater of vomit like a dog. A good Brahman is that who silently observes his religious duties and does not make a display of them; without

त्यानंब्राह्मणोहन्तुमर्हति। निर्लिङ्गमचलंशुद्धंसर्वद्वैतविवर्जितम्। ३५॥ तस्माद्धि क्षत्रियस्यापिब्रह्मावसतिपश्यति॥ ३६॥ योऽन्यथासन्तमात्मानमन्यथाप्रतिपद्यते। किंतेनकृतंपापंचौरेणात्मापहारिणा॥ ३७॥ अश्रान्तःस्यादनादातासम्मतोनिरुपद्रवः शिष्टोनशिष्टवत्सस्यात्सब्राह्मणोब्रह्मवित्कविः॥३८॥ अनाढ्यामानुषेवित्तेआढ्यादैवे तथाक्रतौ। तेदुर्द्धर्षादुष्प्रकम्प्यास्तान्विद्याद्ब्रह्मणस्तनुम्॥ ३९॥ सर्वानस्विष्टकृतो देवान्विद्याद्यइहकश्चन। नसमानोब्राह्मणस्यतस्मिन्प्रयततेस्वयम्॥ ४०॥ यमप्रय

। ३४। इस प्रकारकी ब्रह्मचर्य्या बिना किये अन्तर रहित, चिन्हहीन, अचल, शुद्ध, व द्वैत वर्जित आत्मा को कौन ब्राह्मण पानेके योग्य है, इससे ऐसा करने से क्षत्रिय के यहांभी ब्रह्म का वास होता है। ३५। व जो कोई आत्मा को अपने से पृथक् मानताहै उस पापी आत्मघाती चोर ने कौन पाप नहीं किया, किन्तु सब पाप कर चुका। ३६। जो पुरुष श्रम हीन रहता कुछ अपने पास नहीं रखता, वह शिष्टों में श्रेष्ठ व उपद्रव हीन गिना जाता है, व शिष्टभी हो तो अपना आचरण शिष्टों कासा न रक्खे वही ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण कहाता है। ३७। जो ब्राह्मण मनुष्यों के धन पशु स्त्री पुत्रादि में तो दरिद्र रहते व देवताओं के धन पारलौकिक कर्मादि करने में धनाढ्य रहते व ईश्वरकी उपासना में भी सम्पन्न रहते, वह किसीके ढिठाई करने व कम्पवाने के मान के नहीं होते उनको परमेश्वर का देहही समझ ना चाहिये। ३८। जो पुरुष यज्ञ करने वालों को इष्टफल देनेवाले देवताओं को यज्ञादि करने से अच्छी तरह जाने वहभी ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के समान नहीं है क्योंकि याज्ञिकको यज्ञफल मिलताहै वह अनित्य है व ब्रह्मज्ञानी अपने आप परमेश्वर मात्रिका यत्न करता है। ३९। जिस निरारम्भ ब्राह्मणको देवता लोग मानते हैं वह ब्रह्मात्मवेत्ता ब्राह्मण मानित होता है, परन्तु अपने को मान्य नहीं मानता व जो उसका अपमान करता है

such observance no Brahman or Kshatrya is able to go to the supreme spirit who is the spotless, pure and matchless Brahm. What sin is that suicide thief not guilty of who believes the soul to be separate from himself? He who performs no labour and keeps nothing in his po session, is regarded the best of men. That Brahman is said to possess divine knowledge, who being learned does not make a show of his learning. Those who are poor in worldly wealth, but are rich in performing deeds of virtue and engaged in the worship of the Supreme Being, are never awed with the fear of any one and are regarded as embodiments of the Most High. He who knows well the gods presiding over yagyas, inferior to him who knows the Supreme Being; for the results of sacrifices to gods are not everlasting, while he who possesses the knowledge of Brahm, prepares the way for attaining to the Supreme Being. The Brahman who being free from actions knows Brahm, is respected

तमानन्तु मानयन्तिसमानितः । नमान्यमानोमन्येत नमान्यमभिसंज्वरेत् ॥ ४१ ॥ लोकःस्वभाववृत्तिर्हि निमेषोन्मेषवत्सदा । विद्वांसोमानयन्तीह इतिमन्येतमानितः ॥ ४२ ॥ अधर्मनिपुणामूढा लोकेमायाविशारदाः । नमान्यंमानयिष्यंति मान्यानाम वमानिनः ॥ ४३ ॥ नवैमानञ्चमौनञ्च सहितौवसतःसदा । अयंहिलोकोमानस्य असौमौनस्यतद्विदुः ॥ ४४ ॥ श्रीःसुखस्येहसंवासः साचापिपरिपन्थिनी । ब्राह्मी सुदुर्लभाश्रीर्हि प्रज्ञाहीनेनक्षत्रिय ॥ ४५ ॥ द्वाराणितस्येहवदन्तिसन्तो बहुप्रकारा णिदुराधराणि । सत्यार्जवेह्रीर्दमशौचविद्या यथानमोहप्रतिबन्धनानि ॥ ४६ ॥

इतिमहा० उद्योगपर्वणि प्रजागरपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि द्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

उसको भी पीड़ित नहीं करता ।४१। जिसका मानहो उसको चाहिये कि ऐसा माने कि लोकका स्वभावही माननेका है इससे सब हमको मानते हैं कुछ हममें मान्य होनेकी योग्यता नहीं है । ४२ । अधर्म्म निपुण, माया करने में चतुर मूढ़लोग जो कि मान्य लोगोंके अपमान करनेवाले हैं वे मान्यलोगों का मान नहीं करते मान्योंको चाहिये कि पशुओं के समान उन निर्विवेकियों से उपेक्षारक्खें पर उनको दण्ड कुछभी न दें । ४३ । मान व मौन एक स्थानपर नहीं रहते क्योंकि मानार्थियोंको परलोक दुर्लभहै, व परलोका- र्थियों को मान दुर्लभहै ।४४। यद्यपि लक्ष्मी सुखकी देनेवाली है परन्तु योगी लोग कहतेहैं कि वह महादुःखदाई है जो वेदोक्त श्री द्विजोंके लिये लिखी है वह मूर्खों के लिये दुर्लभ है उसका वृत्तान्त हम तुम से कहते हैं । ४५ । वैदिक श्री के बहुतसे कठिन द्वार हैं जो पंडित लोग बतलाते हैं अर्थात् सरलता, शौच, दम, विद्या, लज्जादि जो मोहके नाश करने वाले हैं । ४६ ।

---

by gods, but in spite of this he is not self conceited nor does he injure one who insults him. 40. He who is respected in the world, *should think that people are habitually respectful to others and that* he has nothing special in himself to merit that respect. Wicked and deceitful fools insult those greate than themselves; but great men should look down upon those brute men without punishing them. Pride and silence can not exist together, for it is as difficult for the proud to enter paradise as for those who are desirous of paradise to be haughty. Though in an ordinary sense the pecuniary wealth is said to be the giver of happiness, yet the yogis think it to be the root of all evil; hear from me the wealth mentioned by the Vedas which is difficult to be obtained by *ignorant persons*. The Vedic wealth has many impregnable gates which the learned men know. They *are honesty, purity, control of senses, knowledge*, bashfulness and others, which destroy delusion."45.

धृतराष्ट्र उवाच । कस्यैपमौनः कतरन्नुमौनं प्रब्रूहिविद्वन्निह मौनभावम् । मौनेन विद्वानुतयाति मौनं कथंमुने मौनमिहाचरन्ति ॥१॥ सनत्सुजात उवाच । यतोनवेदा मनसा सहैनमनुप्रविशन्ति ततोथमौनम् । यत्रोत्थितो वेदशब्दस्तथायं सतन्मयत्वेन विभातिराजन् ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । ऋचोयजूंषियोवेद सामवेदञ्चवेदयः । पापा निकुर्वनपापं न लिप्यते किंनलिप्यते ॥ ३ ॥ सनत्सुजात उवाच । नैनंसातान्यृचोवापि नयजूंष्यविचक्षणम् । त्रायन्तेकर्मणः पापात्तते मिथ्याब्रवीम्यहम् ॥ ४ ॥ नछन्दांसि वृजिनात्तारयन्ति मायाविनंमायया वर्त्तमानम् । नीडंशकुन्ताइव

अध्याय ४३ ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि हेविद्वन् मुनिके धर्म्मको मौनकहते हैं तो वहमौन किस प्रयोजन के लिये है व श्रवण मनन से बाहर जो मौनशब्द है वह किस लिये है व मौन भाव किसको कहते हैं मौनसे विद्वान् मौन को प्राप्त होताहै व मौन कैसे लोग रहते हैं ये ५ प्रश्न मौन शब्द के हुये सो कहिये । १ । सनत्सुजातजी बोले कि जिससे मन सहित वेद उस परमेश्वर में प्रवेश नहीं करसक्ते इससे उसको मौन कहते, व जहां वचन मन दोनों न पहुँचें वहां मौनका प्रयोजनहै, वह दोप्रकारका है एक बाहर की इन्द्रियों के रोकनेसे मौन, दूसरा मनके रोकने से मौन इसतरह चार मौनका उत्तर हुआ, व जिससे ओंकार उत्पन्नहुआ जिससे सब् वेद बने इससे पांचवां मौन शब्द हुआ । २ । धृतराष्ट्रजी बोले कि यजुर्वेद व सामवेद को जो जानता है वह पाप करने से पाप में लिप्तहोता वा नहीं सनत्सुजातजीबोले कि, अविज्ञानीको न सामवेदके मन्त्र कर्म्मके पाप से रक्षाकरते हैं न यजुर्वेदके मन्त्र, यहहम तुमसे मिथ्या नहींकहते ।४। मायायुक्त मायावी

CHAPTER XLIII

"The dharm of *munis,*" said Dhritrashtra, "is called *maun* (silence). Pray let me know, learned muni, the object of silence. Why is this word beyond hearing and thinking? What is it; how does a learned man become a muni by silence and what sort of people observe this vow? There are the five questions regarding silence. Please give your replies." To this Sanatsujat replied, "Maun is so called because the Vedas together with the mind cannot enter into the Supreme spirit. Maun is needful where both word and mind cannot go. It is of two kinds; namely, the control of external organs and that of mind. These are the four kinds of Maun; the fifth is that from whom the mystic word *Om* and the Vedas had their birth." "Is a scholar of the Vedas soiled with the sins he commits?" asked Dhritrashtra. "Neither the hymns of the

ज्ञातपक्षाश्छन्दांस्येनं प्रजहत्यन्तकाले ॥ ५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । नचेद्वेदाविनाधर्मं त्रातुंशक्ताविचक्षण । अथकस्मात्प्रलापोऽयं ब्राह्मणानांसनातनः ॥६॥ सनत्सुजात उवाच । तस्यैव नामादिविशेषरूपै रिदंजगद्भाति महानुभाव । निर्दिश्यसम्यक्प्रवदन्ति वेदास्तद्विश्ववैरूप्यमुदाहरन्ति ॥ ७ ॥ तदर्थमुक्तं तपएतदिज्या ताभ्यामसौपुण्यमुपैति विद्वान् । पुण्येनपापं विनिहत्यपश्चात् सञ्जायते ज्ञानविदीपितात्मा ॥ ८ ॥ ज्ञानेनचात्मानमुपैति विद्वान् अथान्यथा वर्गफलानुकांक्षी । अस्मिन्कृतं तत्परिगृह्यसर्वममुत्रभुंक्ते पुनरेतिमार्गम् ॥ ९ ॥ अस्मिँल्लोके तपस्तप्तं फलमन्यत्रभुज्यते । ब्राह्मणाना-

---

पुरुषको दुःखसे वेद नहीं तारते, किन्तु जैसे पंख जमआने पर पक्षी अपनी झोंझ छोड़ देतेहैं ऐसेही अन्तकाल में वेद उस आविज्ञानी पुरुष को छोड़देते हैं ५ धृतराष्ट्रजी यहसुन फिर बोले, हे विचक्षण जो बिना धर्मवाले को वेदरक्षा नहीं करसके तो ऋक् यजुस्साम से पवित्रपुरुष ब्रह्मलोकमें पूजितहोताहै यह ब्राह्मणोंका सनातन अनर्थक वचन कैसेहै ।६। सनत्सुजातजीबोले कि, उसपरमेश्वरके श्वाससे वेद उत्पन्नहुयेहैं व उसीके नाम रूपादिसे यह विश्वउत्पन्नहै, इससे वेद व विश्व दोनों परमेश्वरहीके रूपहैं ७ उसी परमेश्वरके अर्थ तपकरना कहाहै व यज्ञकरना, इन दोनों के करनेसे विद्वान पुण्यको प्राप्तहोताहै, फिर पुण्यसे पापका नाशकर पीछे ज्ञानसे प्रकाशित उसका जीव होजाताहै ८ व फिर ज्ञानसे विद्वान् आत्माको प्राप्त होताहै व इसके विपरीत अनात्मज्ञानी इन्द्रियों को सुखपाहताहै, इससे इस लोक व परलोक दोनों में इन्द्रिय विषयों के फल भोगता व उलट पलट फिर स्वर्ग नरकादि में पड़ताहै ९ तपस्या इस लोकमें कीजाती है व फल अन्य लोकमें भोगनेको

Samveda nor those of the Yajur," said Sanatsujat, "save a sinner from the punishment of sins. The Vedas donot help a deceitful person in his difficulties, but leave him as the young birds leave their nest on being fledged." "How can the old saying of Brahmans, that a person purified by the Vedas is respected in the region of Brahm, be true, if the Vedas donot protect an irreligious man?" said Dhritrashtra. "The Vedas are produced from the breath of the Supreme Being," replied Sanatsujat, "the world too is produced from Him, therefore both the Vedas and the world are His forms. The penances and sacrifices are performed in His name; the wise men who perform them, become purified and as their sins are destroyed by doing those deeds of virtue, their souls become enlightened with gyan through which wise men attain to the Supreme Spirit. On the other hand, foolish men are ever desirous of obtaining the pleasures of senses and so they are always passing from heaven to

मिमेलोका धात्वेतपासि तिष्ठताम् ॥ १० ॥ धृतराष्ट्र उवाच । कथंसमृद्धमसमृद्धं तपो भवतिकेवलम् । सनत्सुजाततद्ब्रूहि यथाविद्यामतद्वयम् ॥११॥ सनत्सुजात उवाच निष्कल्मषं तपस्त्वेतत् केवलंपरिचक्षते । एतत्समृद्धमप्यृद्धन्तपो भवतिकेवलम् १२ तपोमूलमिदंसर्वं यन्मांपृच्छासि क्षत्रिय । तपसावेदविद्वांसः परंत्वमृतमाप्नुयुः ॥१३॥ धृतराष्ट्र उवाच । कल्मषंतपसोब्रूहि श्रुतंनिष्कल्मषं तपः । सनत्सुजातयेनेदं विद्यांगुह्यं सनातनम् ॥१४॥ सनत्सुजातउवाच । क्रोधादयोद्वादशयस्य दोषास्तथा नृशंसानि दयानिराजन । धर्मादयो द्वादशैतेपितॄणां शास्त्रेगुणाये विदिताद्विजानाम् ॥१५॥ क्रोधः

मिलता है यह अविद्वानों का विषय है, पर जो विद्वान लोग तपस्या करते हैं उनको इसी लोक में फल मिलजाते हैं । १० । धृतराष्ट्रजी ने कहा कि हे सनत्सुजात वही शुद्धतप विद्वान् के लिये समृद्ध व मूर्खके लिये असमृद्ध दो प्रकारका कैसे है आप ऐसी रीति से बताइये जिसमें हम दोनों प्रकारका तपजाने । ११ । सनत्सुजातजी बोले, कि जो तपस्या निष्कामकीजाती उस से मुक्ति मिलती उसे समृद्ध कहते, व जो सकाम की-जाती उस से स्वर्गादि सुखमिलते उसे असमृद्ध कहते हैं । १२ । हे क्षत्रिय जो हमसे पूंछते हो यह सब भोग्य पदार्थ तपोमूल है इसी तपही से विद्वान् लोग मुक्तिपाते हैं १३ धृतराष्ट्र जी बोले कि हे सनत्सुजातजी निष्कल्मष तपस्या तो हमने सुनी अब तपस्या का कल्मष बतावो क्याहै जिससे हम सनातन ब्रह्मको जानें । १४ । सनत्सुजातजी बोले तपस्यामें क्रोधादिक बारह व क्रूरता ये तेरहदोष होते हैं, व धर्मादिक बारह गुण जो कि तुम्हारे पूर्वज मन्वादिकों के शास्त्रोंमें व ब्राह्मणों के शास्त्रों में लिखे हैं व सब कहीं प्रसिद्ध

---

hell and vice versa. The asceticism performed in this world, gives *fruit in the next: this is the theory of ignorant people;* wise men reap the fruit of their asceticism in this very world."10. "How can the same asceticism be beneficial to the wise and not to the foolish?" said Dhritrashtra. "*The asceticism performed for no worldly end,*" replied Sanatsujat, "gives Salvation and is called prosperous; but that done for a purpose, gives the pleasures of paradise and is called unprosperous. I should say, king that all the enjoyments are obtain-*able from asceticism and wise people attain to salvation through it.*" "I have heard of sinless asceticism from you; now tell me its weak points," said Dhritrashtra. "The thirteen weak points which asceticism is susceptible of," replied Sanatsujat, "are anger, cruelty and others and there are likewise twelve famous good points mentioned in the books of Brahmans and your predecessor Manu.

क्रोधो लोभमोहौ विधित्साऽकृपाऽसूये मानशोकौ स्पृहा च । ईर्ष्या जुगुप्सा च मनुष्यदोषा वर्ज्याः सदा द्वादशैते नराणाम् ॥१६॥ एकैक पर्य्युपास्तेह मनुष्यान्मनुजर्षभ । लिप्स मानोऽन्तरं तेषां मृगाणामिव लुब्धकः ॥ १७ ॥ विकत्थनः स्पृहयालुर्मनस्वी बिभ्रत् कोपं चपलोऽरक्षणश्च । एतान्पापाः षण्नराः पापधर्मान् प्रकुर्वते नोत्रसन्तः सुदुर्गे ॥१८॥ सम्भोगसम्विद्विषमोऽतिमानी दत्तानुतापी कृपणोबलीयान् । वर्गप्रशंसी वनिताशु द्वेष्टा एतेपरे सप्त नृशंसवर्गाः ॥१९॥ धर्मश्चसत्यञ्च दमस्तपश्च अमात्सर्यं ह्रीस्तितिक्षान सूया । यज्ञश्चदानञ्च धृतिःश्रुतञ्च व्रतानिवैद्वादश ब्राह्मणस्य ॥ २० ॥ यस्त्वेतेभ्यः

हैं । १५ । क्रोध, काम, लोभ, मोह, अतृप्ति, अकृपा, असूया, मान, शोक, स्पृहा, ईर्ष्या, निन्दा, ये । १२ मनुष्यों के दोष हैं इनसे सबत्यागने के योग्य हैं । १६ । इन में से एकभी उपासनाकरने से दूसरा छिद्र देखे रहता ऐसेही क्रमसे सब आजातेहैं ये सब ऐसे छिद्र देखते जैसे मृगों के छिद्रब्याध देखता है । १७ । १ निन्दा २ भोग, दिकी इच्छाकरने वाला ३ अहंकारसे दूसरे का अपमान करने वाला ४ बिना कारणभी सदाकोप करने वाला ५ चपल, ६ अरक्षण, शक्ति होनेपरभी पालन न करनेवाला, इनने ६ पाप पापी लोग किया करते हैं, व सज्जनलोग बड़ेक्लेशमें भी पड़ने पर इनको नहीं करते । १८ । १ स्त्री संगम सम्मति में दुष्ट व्यवस्था वाला २ अतिमानी ३ दत्तानु-तापी दान देकर पछिताने वाला ४ कृपण ५ बलीयान् अतिशय भेंटलेनेवाला ६ वर्गप्र-शंसी, दूसरे के निरादर की बड़ाई करनेवाला ७ वनिता सुद्वेष्टा व अपनी ब्याही स्त्री से अप्रीति करनेवाला,-ये सात व पूर्वश्लोक के ६ सब १३ नृशंस दोषहुये इन सबों को धर्मात्मा नहीं करते । १९ । १ धर्म २ सत्य ३ दम ४ तप ५ अमात्सर्य्य ६ लज्जा ७ तितिक्षा ८ अनसूया ९ यज्ञ १० दान ११ धृति १२ श्रुत ब्राह्मणके ये १२ व्रतहैं

Anger, attachment to worldly objects, greediness, delusion, discontentment, cruelty, jealousy, pride, grief, covetousness, envy and blame are the twelve defects which should be given up. If one of those is tolerated, others creep in as if it were through a hole; for they watch the opportunity as hunter is on the look out for the vulnerability of deer. Boastfulness, covetousness, pride, undue anger, fickleness and neglect in protection are the six sins which are committed by sinners and which good men never indulge in even when they are in great trouble. Giving wicked advice regarding women, haughtiness, covetousness, reviling and abandonment of one's own wife, these seven together with the sin mentioned above, are the thirteen heinous sins which are never committed by virtuous men. Dharm, truth control of organs, asceticism, freedom from envy, modesty,

ऽभवेद्द्वादशभ्यः सर्वामपीमांपृथिवीं सशिष्यात् । त्रिभिर्द्वाभ्यामेकतो वार्थितोयस्तस्य स्वमस्तीति सवेदितव्यः ॥ २१ ॥ दमस्त्यागोऽप्रमादश्च एतेष्वमृतमाहितम् । तानि सत्यमुखान्याहुर्ब्राह्मणाये मनीषिणः ॥२२॥ दमोष्टादशगुणः प्रतिकूलं कृताकृते । अनृतंचाभ्यसूयाच कामार्थौच तथास्पृहा ॥ २३ ॥ क्रोधः शोकस्तथातृष्णा लोभःपैशुन्यमेवच । मत्सरश्चविहिंसाच परितापस्तथारतिः ॥ २४ ॥ अपस्मारश्चातिवादस्तथा सम्भावनात्मनि । एतैर्विमुक्तोदोषैर्यः सदान्तःसद्भिरुच्यते ॥ २५ ॥ मदोष्टादशदोषःस्यात्त्यागो भवतिषड्विधः । विपर्ययाःस्मृताएते मददोषाउदाहृताः ॥ २६ ॥

। २० । जो इनद्वादश गुणोंको ग्रहण करे, वह पृथ्वीभर का राज्य करसके व सबको शिक्षादेसके, इनमें के तीन या दो वा एकभी जिसमें हो वह धनवान् अवश्यहो २१ दम इन्द्रियोंका जीतना, त्याग सबकर्म ईश्वर में अर्पणकरना, अप्रमाद तत्वोंका अनुसन्धान करना, इनतीनों में मुक्ति टिकी रहती है इन सबोंका फल सत्य है इससे सत्य दम त्याग अप्रमाद ये सब करने चाहियें । २२ । १८ दोषत्यागने से १८ प्रकारका दमसिद्ध होता है १ कृताकृत में प्रतिकूलता वैदिकादि कर्ममें आलस्यादि करना व अकृत्र उपवासादि में इन्द्रियोंकी चंचलता २ अनृत ३ अभ्यसूया ४ काम ५ अर्थ ६ स्पृहा धनका अभिलाष । २३ । ७ क्रोध ८ शोक ९ तृष्णा १० लोभ ११ पैशुन्य चुगुली १२ मत्सर १३ हिंसा १४ परिताप १५ अरतिअच्छे कर्ममें प्रीति न करना । २४ । १६ अपस्मार १७ अतिवाद १८ सम्भावना, इन १८ दोषोंसे जोविमुक्तहो उसको पण्डितलोग दान्त अर्थात् जितेन्द्रिय कहते हैं ।२५। जिसके दमादिक विपरीत हैं उसको १८ मदादि होजाते हैं व ६ प्रकारका त्याग ये सब २४ प्रकार के मददोष कहाते हैं ।२६। व ६ प्रकारका त्याग

---

patience, freedom from envy, yagya, charity and firmness are the twelves vows of a learned Brahman. 20. He who possesses these twelve virtues, can rule the whole Earth and is fit to teach all. He who has three, two or even one of them, cannot lack wealth. The control of organs, freedom from actions and wisdom are the props salvation and their result is truth; it is therefore well to practice all the four. The leaving of each of the following eighteen is a control of organs:—carelessness, idleness, falsehood, envy, cupidity, greediness, covetousness, anger, grief, avidity, avarice, backbiting, jealousy, injury, pain, discontentment, epilepsy, garrulity and doubt; one who is free from these eighteen defects is said by learned men to have control of organs. He who cannot control his organs of senses, is attacked by the above-mentioned eighteen defects which together with six more all called the passions. The leaving of six things is

श्रेयांस्तुषड्विधस्त्यागस्तृतीयो दुष्करोभवेत् । तेनदुःखंतरत्येव भिन्नंतस्मिन्जितकृते ॥ २७ ॥ श्रेयांस्तुषड्विधस्त्यागः श्रियंप्राप्यनहृष्यति । इष्टापूर्ते द्वितीयंस्यान्नित्य वैराग्ययोगतः ॥ २८ ॥ कामत्यागश्चराजेन्द्र सतृतीयइतिस्मृतः । अप्यवाच्यंवदन्त्येतं सतृतीयोगुणःस्मृतः ॥ २९ ॥ त्यक्तैर्द्रव्यैर्यद्भवति नोपयुक्तैश्चकामतः । नचद्रव्यैस्तद्भवति नोपयुक्तैश्चकामतः ॥ ३० ॥ नचकर्मस्वसिद्धेषु दुःखंतेनचनग्लपेत् । सर्वैरेवगुणैर्युक्तो द्रव्यवानपियोभवेत् ॥ ३१ ॥ अप्रियेचसमुत्पन्ने व्यथांजातुनगच्छति । इष्टान्पुत्रांश्चदारांश्च नयाचेतकदाचन ॥ ३२ ॥ अर्हतेयाचमानाय प्रदेयंतच्छुभंभवेत् ॥ अप्रमादीभवेदेतैः सचाप्यष्टगुणोभवेत् ॥ ३३ ॥ सत्यंध्यानंसमाधानं चोद्यंवैराग्यमेवच

कल्याण दायक है उनमें तीसरा कामत्याग बहुत दुष्कर है इस कामत्याग से मनुष्य दुःख से उतरजाता है व जो उसको जीतलेता है उसको सर्वदुःख निवृत्तिरूप मोक्षहोजाता है । २७ । छः प्रकारका त्याग कल्याणदायक है उनमें प्रथम यह है जो लक्ष्मी को देख हर्षित नहो, व नित्य वैराग्य के योग्यथे कुआं खुदाना तड़ागादि खुदाना वाटिकादि लगाना इसे इष्टापूर्त कहते यह दूसरा त्याग है । २८ । व काम त्याग तीसरा त्यागहै यद्यपि यह अवाच्यपदहै तथापि यहदोष नहींहै तीसरागुण है ।२९। यहकाम त्यागकी सुखादि द्रव्योंके त्यागसे होताहै व द्रव्योंके सेवन से नहीं होता किन्तु द्रव्यों के सेवन से अधिक बढ़ता है । ३० । कर्मों के सिद्ध न होनेपर दुःख न करे, न कुछ ग्लानिकरे, किन्तु सबको कीर्त्यादि गुणों से संयुक्तहो द्रव्यवान् बना रहै । ३१ । व कीर्तिधनादि नाशरूप अप्रिय होनेपरभी व्यथित नहो यह चौथा त्याग है, व इष्ट पुत्रों व स्त्र्यादि पदार्थों को कभी न मांगे यह पांचवां त्याग है । ३२ । व कोई योग्य पुरुष कुछमांगे तो उसे धनादि देदेतो बड़ा शुभहो यह छठां त्याग है, इनसब

---

beneficial. Of these the suppression of desires is the most difficult. The six things are as follows:-want of cheerfulness at the sight of wealth, performance of sacrifices and charitable deeds by a recluse, desires which always get the more strong the more they are satisfied with enjoyments, to grieve for one's failures—instead of losing heart in trouble, one should cheerfully guard his wealth and should not be distressed at the loss of fame or wealth—,asking boons for the purpose of getting sons, wives and such other things and refusing to give in charity. By giving up the six things mentioned above, a person acquires the following eight good qualities:-truth, meditation, peace of mind, power of reasoning, freedom from worldly desires, freedom from theft, celibacy and poverty. 34. Thus, one should

अस्तेयंब्रह्मचर्यञ्च तथासंग्रहमेवच ॥ ३४ ॥ एवंदोषा मदस्योक्तास्तान्दोषान् परिवर्ज्जयेत् । तथा त्यागोऽप्रमादश्च सचाप्यष्टगुणोमतः ॥ ३५ ॥ अष्टौदोषाःप्रमादस्य तान्दोषान् परिवर्ज्जयेत् । इन्द्रियेभ्यश्चपञ्चभ्यो मनसश्चैवभारत । अतीतानागतेभ्यश्च मुक्त्युपेतःसुखीभवेत् ॥ ३६ ॥ सत्यात्माभवराजेन्द्र सत्येलोकाः प्रतिष्ठिताः । तांस्तुसत्यमुखानाहुः सत्येह्यमृतमाहितम् ॥ ३७ ॥ निवृत्तेनैवदोषेणतपोव्रतमिहाचरेत् । एतद्धातृकृतंवृत्तंसत्यमेवसतांव्रतम् ॥ ३८ । दोषैरेतैर्विमुक्तस्तुगुणैरेतैःसमन्वितः। एतत्समृद्धमत्यर्थंतपोभवतिकेवलम् ॥३९॥ यन्मांपृच्छसिराजेन्द्र संक्षेपात्प्रब्रवीमि ते । एतत्पापहरंपुण्यं जन्ममृत्युजरापहम् ॥ ४० ॥ धृतराष्ट्रउवाच । आख्यानपञ्चमैर्वेदै

त्यागोंके करने से प्रमाद न करे, तो जानों आठगुणों को प्राप्तहो जो आगे कहेंगे । ३३ । सत्य १ ध्यान २ समाधान ३ तर्क करना ४ वैराग्य सब जगत् से विराग करना ५ अस्तेय चोरी न करना ६ ब्रह्मचर्य्य ७ असंग्रह कुछ अपने पास न रखना ८ । ३४ । इसप्रकार मदके जो दोष कहे उनका परित्याग करे, व प्रमादको भी त्यागकरे, वह भी आठगुण वाहि है । ३५ । आठदोष प्रमादके हैं उनकोभी त्यागे, वे प्रमाद पांचतो पांच इन्द्रियों से उत्पन्न होते छठा मनसे । ३६ । व पुत्रादि के नष्ट होजाने का शोक सातवां प्रमाद है, व पुत्रादिकी कामना करने परभी उसकी प्राप्ति न होना यह आठवां प्रमादहै, इन आठों से छूटे तो सुखी हो । ३७ । हेराजेंद्र सत्यात्मा होवो क्योंकि सत्यही पर सब लोक अपने २ स्थानोंपर स्थितहैं इन सबोंमें सत्यमुख्य है क्योंकि सत्यमें मुक्ति स्थित रहती है । ३८ । दोषोंको छोड़ तप व्रतकरे, यही ब्रह्माका बनाया सत्य व्रतहै इससे सज्जनों को यही करना चाहिये । ३९ पूर्वकथित सब दोषों से छूटना व सब गुणों से संयुक्त होना यही समृद्ध अत्यर्थ युक्त केवल तप कहाताहै । ४० । हेराजन् जो तुमने

---

give up the eight defects which arise out of passions together with the passions themselves. The eight defects are as follows:—five of the defects arise out of the five senses, the sixth from the mind, the seventh is the grief attending the death of relations and the eighth is the nonfulfilment of desires. The giving up of these leads to happiness. Be truthful, king; for all the worlds as well as salvation stand on truth. Having given up the defects, one should perform asceticism; this is the observance of truth ordained by Brahma for all good persons. The giving up of the aforesaid defects and the acquirement of all the good qualities constitute asceticism the seat of all wealth. 40. I have briefly explained to you, king, what you

भूयिष्ठंकथ्य तेजनः । तथाचान्येचतुर्वेदास्त्रिवेदाश्चतथापरे ॥ ४१ ॥ द्विवेदाश्चैकवेदाश्चाप्यनृचश्चतथापरे । तेषांतुकतरःसस्यायमहंवेदवै द्विजम् ॥४२॥ सनत्सुजातउवाच एकस्यवेदस्याज्ञानाद्वेदास्ते बहवःकृताः । सत्यस्यैकस्यराजेन्द्र सत्येकश्चिदवस्थितः ॥ ४३ ॥ एवंवेदमविज्ञाय प्राज्ञोऽहमितिमन्यते । दानमध्ययनंयज्ञो लोभादेतत्प्रवर्त्तते ॥४४॥ सत्यात्प्रच्यवमानानां सङ्कल्पश्चतथाभवेत् । ततोयज्ञःप्रतायेत सत्यस्यैवावधारणात् ॥ ४५ ॥ मनसान्यस्यभवति वाचान्यस्याथ कर्मणा । सङ्कल्पसिद्धःपुरुषः

इमसे पूंछा वह हमने संक्षेप से बताया, यह पापहारी, पुण्यकारी, व जन्म मृत्यु जरापहारी है । ४१ । इतना सुन धृतराष्ट्रजी पूंछने लगे कि इतिहास पुराणादिकों को आख्यान कहतेहैं उन सहित वेदको बड़ाभारी लोग कहतेहैं, व कोई २ चारवेद कहते कोई २ तीन । ४२ । कोई दो वेदकोई एक वेद कोई ब्राह्मणों सहित बहुत वेद कहतेहैं, उनमें हम कितना जानें वह बताइये । ४३ । सनत्सुजातजी बोले, कि ब्रह्म एकही है वह सत्यहै व उसीके जानने के लिये वेदहैं उसके अज्ञान से बहुत वेद बनाडाले गये इसीसे बहुत उपासना करने के योग्य देवादिभी बनायेगयेहैं पर वेदमें उनसबों के ऊपर ब्रह्मत्व नहीं कहा गया, जो सत्य है वही ब्रह्महै जैसी उपासना करते हैं वह ब्रह्म नहीं है उस सत्यसे भी ब्रह्मका लाभबड़ा दुर्घटहै । ४४ । इसप्रकार वेदको न जानइम प्राज्ञहैं लोग जानते हैं, व दान, अध्ययन, यज्ञलोभ से करनेलगतेहैं । ४५ । जब सत्य से छूटे तो उनको संकल्पहोता है, उस से यज्ञकरनेकी इच्छाहोतीहै यह सब सत्यब्रह्म वेद्य वेदके

---

required. It is the destroyer of sin, birth, death and old age and giver of holiness." Having heard this, Dhritrashtra said, "The Itihas and the Purans, which inform us of old times, together with the Vedas are held in great regard; but opinions differ on the number of the Vedas: some say that they are four in number, some three, some two and some one, while others say that including the Brahmans they are many. Pray tell us the exact number." To this Sanatsujat replied, "There is only one true Brahm or Supreme Being and the Vedas help in knowing Him. The Vedas have been multiplied by not knowing Him and many gods have been made the object of worship whom the Vedas donot call Brahm. Brahm is truth and not as worshipped by the people—he is even more difficult to be got than truth. Without knowing the Vedas, people think themselves wise and have made charity, study and sacrifices the objects of gain. Those who fall away from truth, begin to fall in with rites and ceremonies and thus have a desire to perform sacrifices which is a

सङ्कल्पानधितिष्ठति ॥ ४६ ॥ अनैभृत्येनचैतस्य दीक्षतव्रतमाचरेत् । नापेतद्धातुनिर्वृत्त सत्यमेवसतांपरम् ॥ ४७ ॥ ज्ञानंवैनाममत्यक्षं परोक्षंजायतेतप । विद्याद्वहुपठन्तन्तु द्विजंवैवहुपाठिनम् ॥ ४८ ॥ तस्मात्क्षत्रियमांमंस्था जल्पितेनैववैद्विजम् । य एवसत्यान्नापैति सज्ञेयोब्राह्मणस्त्वया ॥ ४९ ॥ छन्दांसिनामक्षत्रिय तान्यथर्वापुरा-जगौ महर्षिसंघएषः । छन्दोविदस्तेय उतनाधीतवेदानवेदवेद्यस्य विदुर्हितत्त्वम् ॥५०॥ छन्दांसिनामद्विपदांवरिष्ठ स्वच्छन्दयोगेन भवन्तितत्र । छन्दोविदस्तेनच तानधीत्य

बिना ज्ञानलेही से यज्ञादि करनेकी इच्छाहोती है । ४६ । कोई देवता ध्यानादि रूप यज्ञ मनसे करते, व कोई ब्रह्मयज्ञ जपादि रूप यज्ञ वचन से करते कोई ज्योतिष्टोमादि यज्ञ कर्म से करते, इनमें कर्मयज्ञ से वचनयज्ञ श्रेष्ठ है व वचनयज्ञ से मनोयज्ञ, व संकल्प सिद्ध पुरुष संकल्पनीय पदार्थ ब्रह्मलोकादिकों को प्राप्तहोता है । ४७ । जब आत्म ज्ञानका संकल्प न सिद्धहो तो मौनादि व्रत धारण करे, परन्तु ज्ञानियों को तो सत्यव्रतही करना सब व्रतोंसे श्रेष्ठहै । ४८ । एक ज्ञान प्रत्यक्ष होताहै जैसे शोक मोह निवृत्ति रूप व एक ज्ञान परोक्ष होता जैसे कायिक वाचिक मानसिक तपस्या इसका फल स्वर्गादि में प्राप्तहोता है, बहुत पढ़नेवाले व बहुत पढ़ानेवाले को द्विज समझो ४९ इससे हे क्षत्रिय जो पढ़कर बहुत बकताही हो उसे ब्राह्मण न मानो, किन्तु जो सत्यज्ञान परमात्मा के स्मरण से बाहर न हो उसे तुम ब्राह्मण जानो । ५० । पूर्व काल में जो अथर्वा मुनिने अथर्व उपनिषद् कहा है जिसमें लिखाहै कि यज्ञ पाप से रक्षानहीं करसके

---

clear sign of not knowing the true God. Some perform mental sacrifices by meditation; others perform verbal sacrifices called Brahm-yagya and jap, others perform Jyotishtom and others yagyas. Of these, verbal sacrifices are better than those done by deeds and the mental ones are better than the verbal ones. Rituals lead to the desirable regions of Brahm and others Silence and other vows may be observed when the knowledge of self is not obtained by other means, though the observance of truth is the best for those who are desirous of gyan. Gyan is of two kinds: one is visible or immediate, as the absence of grief and delusion, and the other is invisible or that which bears fruit in the next world, as asceticism of the body, word or mind. A dwij is one who is, for the greater part of his life, engaged in reading and teaching; it does not include those who talk much after finishing their study, but those who are given to true gyan and the meditation of the Supreme Being 50. The Atharva upnishad, composed by Atharva muni, says that yagyas can protect

गतानवेदस्य नवेद्यमार्याः ॥ ५१ ॥ नवेदानांवेदिता कश्चिदस्ति कश्चित्त्वेतान बुध्यते वापिराजन् । योवेदवेदान्नस वेदवेद्यं सत्येस्थितोयस्तु सवेदवेद्यम्॥५२॥नवेदानांवेदिताकश्चिदस्ति वेद्येनवेदं नविदुर्नवेद्यम् । योवेदवेदं सचवेदवेद्यं योवेदवेद्यंनस वेदसत्यम् ॥ ५३ ॥ योवेदवेदान सचवेदवेद्यं नतंविदुर्वेदविदो नवेदाः । तथापिवेदेन विदन्तिवेदं येब्राह्मणावेदविदो भवन्ति ॥ ५४ ॥ धामांशभागस्य तथाहिवेदा यथाचशाखाहि महीरुहस्य । संवेदनेचैव यथामनन्ति तस्मिन हिसत्येपरमात्मनोर्थे ॥ ५५ ॥

क्योंकि वे पापसे तारने के लिये अदृढ़ नौकाहैं, उपनिषदोंके पढ़नेवाले वेदवित नहीं कहाते किन्तु जो वेद पढ़ेभी नहीं पर वेदों के जाननेके योग्य परमेश्वरके तत्वको जानते हों वे वेदवित हैं । ५१ । उस सत्य ब्रह्म में वेद स्वतन्त्रताले प्राप्त होतेहैं, व वेदवादी केवल वेद पढ़नेही से नहीं होता किन्तु जो वेद पढ़कर वेदसे जाननेके योग्य सत्य ब्रह्मको जानते हैं वे ब्रह्मवादी हैं । ५२ । वेदों के रहस्यको कोई नहीं जानता कोई २ चित्तकी शुद्धिसे इन वेदों के रहस्यको जानता है परन्तु जो केवल वेदरहस्यही जानताहै व वेद वेद्य सत्यब्रह्मको नहीं जानता वह भी वेद नहीं जानता, किन्तु जो सत्यब्रह्म में टिकाहै वही वेदवेद्य परमेश्वरको जानता और वही वेदोंकोभी जानताहै । ५३ । अहङ्कारादि अचेतनों के मध्यमें कोई जानने के योग्य नहीं है इससे जानने के योग्य चित्तसे वेदके जानने योग्य आत्माको नहीं जानते व जानने के योग्य अनात्माको भी नहीं जानते । ५४ । व जो चिदात्मा परमेश्वर वेदों को प्राप्त होताहै वह वेद्य अनात्माको भी जानता है पर उसको न वेद जानतेहैं न वेदके जाननेवाले, यद्यपि वह ऐसा है तथापि वेदके जानने वाले वेदही के प्रमाण से उस चिदात्माको जानतेहैं । ५५ । जैसे चन्द्रमाके किरणों से

---

none from the punishment of sin; for, they are flimsy boats to cross the ocean of sin. The Scholars of the upnishads are not called the scholars of the Vedas, although those who know the reality of the Supreme Being, knowable by the Vedas, may be so called without reading the Vedas. No one knows the esoteric teaching of the Vedas: some know it by the purity of their minds; but he who knows it without knowing the true Brahm, who is known by the Vedas, does not know them. He who sticks to the true Brahm, knows the Almighty who is known through the Vedas as well as the Vedas themselves. Nothing can be known by those who are insensible with self love and so they do not know the Supreme Spirit who can be known by the Vedas, nor do they know self. The Supreme Being known by the Vedas, knows things other than Self;

अभिजानामि ब्राह्मण व्याख्यातार विचक्षणम् । यश्छिन्नविचिकित्स सव्याचष्टेस र्वसंशयान ॥ ५६ ॥ नास्यपर्येषणगच्छेत् प्राचीननोतदक्षिणम्। नार्वाचीन कुतस्तिर्य ङ्नादिशन्तु कथञ्चन ॥ ५७ ॥ तस्यपर्येषणगच्छेत् प्रत्यर्थिपुरुषव्वन । अविचिन्व न्निम वेदेतपःपश्यतितम्प्रभुम् ॥ ५८ ॥ तूष्णीम्भूतउपासीत नचेष्टन्मनसापिच । उपावर्त्तस्वतद्ब्रह्म अन्तरात्मनि विश्रुतम् ॥ ५९ ॥ मौनान्नसमुनिर्भवति नारण्यवसना न्मुनिः । स्वलक्षणन्तुयोवेद समुनिःश्रेष्ठउच्यते ॥६०॥ सर्वार्थानां व्याकरणाद्वैयाक-

---

प्रकाशित वृक्षकी शाखा लोग जानलेते इसी तरह वेदभी परमात्मा के अर्थ को स्वत प्रकाशित होने के कारण जानलेतेहैं कुछ अपनी सामर्थ्य से नहीं जानते जैसे चन्द्र के प्रकाश बिना रात्रि में वृक्षकी शाखा कोई नहीं जानसक्ता । ५६ । हम उसको ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण जानते हैं जो सबप्रकार से शास्त्रों व वेदोंकी व्याख्याकरे, व शास्त्रके अर्थोंको युक्ति से अनुसन्धानकरे, व जिसको शास्त्रमें सशय नहोय दूसरोंके सशयमिटादे, ऐसेही ब्रह्मज्ञानी को गुरू बनाना चाहिये । ५७ । वस ऐसे परमेश्वरका न कहीं पूर्व दिशामें ढूढना चाहिये, न दक्षिण में न नयेस्थानों में, न तिरछे स्थलों में, न सबकोणों में । ५८ । किन्तु उसको आत्मज्ञ नियों में ढूढना चाहिये वेदों में ढूढने की आवश्यकता नहीं उस प्रभुको तपस्या देखतीहै इससे तप करना चाहिये । ५९ । व मौनहो उसकी उपासना करे मनसे भी कोई और काय व्यापार न करे, इसप्रकार तुमभी अन्तरात्मा में प्रसिद्ध उस ब्रह्मको प्राप्त होवो । ६० । केवल मौन रहनेसे मुनि नहीं होता, व न घर छोड़ सन्यास से

---

but He is neither known to the Vedas nor to the readers of the Vedas and yet the latter know Him with the help of the former The Vedas know him because He is self manifested and not by their own power, as people see the moon lit branches of a tree We know him to be a Brahman or Brahm knowing man who explains the Vedas and shastras *who make out suitable connection in the* meaning of Shastras by his skill and who himself having no doubts in them removes those of others such a Brahm knowing man is worthy of becoming a preceptor Donot seek for the Supreme Being in the East, in the South, in new places in oblique places or in corners, but seek Him among those who have the knowledge of the Supreme Spirit There is no need of seeking him among the Vedas, the ascetic sees the lord and therefore you must perform asceticism Worship Him in silence and never think of doing anything else Thus you will attain to that Brahm whose seat is within your heart 60 One does not become a *muni* by mere silence, nor by

रण उच्यते । तन्मूलतोऽयाकरणं व्याकरोतीति तचथा ॥ ६१ ॥ प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शीभवेन्नरः । सत्येवै ब्राह्मणस्तिष्ठस्तद्विद्वान्सर्वविद्भवेत् ॥ ६२ ॥ धर्मादिपुस्थितोप्येवं क्षत्रियब्रह्मपश्यति । वेदानांचानुपूर्वेण एतद्बुद्ध्याब्रवीमिते ॥६३॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । सनत्सुजातयामिमां परांत्वं ब्राह्मींवाचं वदसे विश्वरूपाम् । परांहिकामेनसुदुर्लभां कथांप्रब्रूहिमे वाक्यमिदंकुमार ॥ १ ॥ सनत्सुजात उवाच । नैतद्ब्रह्म त्वरमाणेनलभ्यं यन्मां पृच्छस्यतिहृष्यस्यतीव । बुद्धौविलीने मनसिप्रचिन्त्या

वनमें बसने से किन्तु जो परमेश्वर के लक्षण जगदुत्पत्यादि आत्मज्ञान जानताहो वह सबों में श्रेष्ठ मुनि है । ६१ । व वह ज्ञानी सब अर्थों के प्रकटकरनेसे वैय्याकरणकहाता है व उसीसे वह आत्मज्ञानी व्याकरणरूप परमेश्वरके विपरीत कुछ नहीं करता । ६२ । जो ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण सबलोकोंको प्रत्यक्ष देखताहै वह सर्वदर्शीहोताहै, व जो सत्यरूप ब्रह्म सच्चिदानन्द में स्थितहोताहै वह सर्वज्ञ कहाताहै ६३ हे भूप ऐसे धर्म में स्थितहोकर पुरुष ब्रह्मको देखताहै यही वेदों में देखकर हमने अपनी मति कही है ६४ ॥

अध्याय ४४ ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि हे सनत्सुजात जो उत्कृष्ट ब्रह्मप्राप्तिका कामहीन विश्वरूपिणी वाणी आप जानते हैं वह हमसे कहिये ।१। सनत्सुजातजी बोले कि यह ब्रह्म शीघ्र नहीं जानपड़ता जिसको पूंछतेहो व अपने मनमें हर्षित होतेहो कि हमभी ब्रह्मविद्याके अधिकारी

---

leaving home and residing in a forest; but he who knows the properties of the Almighty and the knowledge of self is the best of munis. He is called a Grammarian because he explains all the meanings and, knowing self, does nothing contrary to the laws of the Almighty. That Brahm-knowing Brahman who sees all the regions is called omnisient and he who stays in the true Sachidand Brahm is called all-knowing. One sticking to such dharm sees the Supreme Being and this is what I have learnt from the Vedas. 63.

CHAPTER LIV

Tell me the best way of attaining to Brahm and of suppression of desires in the best words that you are master of," said Dhritrashtra to Sanatsujan and the latter replied, "It is not easy to know Brahm whom you speak of and are pleased to think that you

विद्याहिसा ब्रह्मचर्येणलभ्या ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अत्यन्तविद्यामिति यत् सनातनींब्रवीषित्व ब्रह्मचर्येण सिद्धाम् । अनारम्भांवसतीह कार्यकाले कथंब्राह्मण्यम मृतत्वलभेत ।३॥सनत्सुजात उवाच । अव्यक्तविद्यामभिधास्ये पुराणींबुद्ध्याचतेषां ब्रह्मचर्येणसिद्धाम् । यांप्राप्यैनं मर्त्यलोकं त्यजन्तियावै विद्यागुरुवृद्धेषुनित्या ॥ ४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । ब्रह्मचर्येणयाविद्या शक्यावेदितुमञ्जसा । तत्कथंब्रह्मचर्यंस्या देतत् ब्रह्मन्ब्रवीहिमे ॥ ५ ॥ सनत्सुजात उवाच । आचार्ययोनिमिहये प्रविश्यभूत्वा गर्भं ब्रह्मचर्यंचरन्ति । इहैवतेशास्त्रकारा भवन्ति प्रहायदेहंपरमं यान्तियोगम् ॥ ६ ॥ अस्मिँल्लोके जैयन्तीहकामान ब्राह्मींस्थितिं ह्यनुतितिक्षमाणाः । तआत्मानं निर्हरन्तीह

हैं, वह विद्या सब इन्द्रिय मनमें व मन बुद्धिमें रोकने से व ब्रह्मचर्य्य वह गुरुकुलमें रहने से मिलती है ।२। धृतराष्ट्रजी बोले कि जिस सनातनी अत्यन्त विद्याको ब्रह्मचर्य्य से प्राप्तहोनेके योग्य आप बताते हैं, व वह कार्य्य कालमें यहीं आत्मामें ही बसती है अब ब्राह्मणों के योग्य वह मुक्तिरूप विद्या कैसे प्राप्तहो बताइये । ३ । सनत्सुजातजीबोले कि ब्रह्मचर्य्य से सिद्ध पुरानी व गुरु वृद्धों में नित्य रहनेवाली ब्रह्मविद्या कि जिसको प्राप्तहो लोग मर्त्यलोक छोड़ देते हैं वह ब्रह्मविद्या हम कहेंगे । ४ । धृतराष्ट्रजीबोले कि जो ब्रह्म-विद्या ब्रह्मचर्य्यहीसे जानने के योग्य है तो प्रथम यह कहिये कि वह ब्रह्मचर्य्यही कैसेहो ।५। सनत्सुजातजी बोले, जो लोग आचार्य्य के स्थान में जाय निष्कपट ब्रह्मचर्य्य करते हैं, वे लोग यहीं वेदशास्त्र बनानेवाले होजातेहैं, वे देह छोड़ ब्रह्ममें लीन होजातेहैं, फिर उनका जनम मरणादि नहीं होता । ६ । इस लोकमें जो लोग ब्रह्म के साथ वासकी इच्छाकर

---

have a right to acquire the knowledge of Brahm which can only be got by control of senses, celibacy and living with the family of a preceptor." "Tell me how to acquire that ancient and boundless knowledge which, you say, is acquired by celibacy, which at all times resides within the soul and which is worthy of Brahmans" said Dhritarshtra. "I shall impart to you," replied Sanatsujat, "the knowledge of Brahm acquired with celibacy, old, immortal and found among learned on acquiring which people dissever their connection from this mortal world." "Will you first explain to me how to observe Brahmcharya by which the knowledge of Brahm is acquired?" said Dhritrashtra "Those who live within the family circles of acharyas and lead a pure life of Brahmcharya," said Sanatsujat, "become the authors of the Vedas and shastras, become united with Brahm after leaving this body and are freed from future births and

देहान्मुञ्जादिषीकामिव सत्त्वसंस्थाः ॥ ७ ॥ शरीरमेतौकुरुतः पितामाताचभारत ॥ अचार्यशास्तायाजातिः सापुण्याऽसाजराऽमरा ॥ ८ ॥ यःप्रावृणोत्यवितथेन वर्णा नृतं कुर्वन्नमृतंसंप्रयच्छन । तंमन्येतपितरं मातरंच तस्मैनद्रुह्येत् कृतमस्यजानन् ॥९॥ गुरुंशिष्यो नित्यमभिवाद्यधीत स्वाध्यायमिच्छेच्छुचिरप्रमत्तः । मानंनकुर्यान्नादधीत रोषमेषप्रथमो ब्रह्मचर्यस्यपादः ॥ १० ॥ शिष्यवृत्तिक्रमेणैव विद्यामाप्नोतियःशुचिः। ब्रह्मचर्यव्रतस्यास्य प्रथमःपादउच्यते ॥ ११ ॥ आचार्यस्यप्रियं कुर्यात् प्राणैरपिधनै- रपि । कर्मणामनसावाचा द्वितीयःपादउच्यते ॥ १२ ॥ समागुरौयथा वृत्तिर्गुरुप

सत्वगुण में स्थित कामों को जीतते हैं वे देहसे आत्मा को पृथक् करते हैं, जैसे मूंजसे सिरकी अलग की जाती है । ७ । हे भारत पिता माता इस शरीरको उत्पन्न करते हैं, व आचार्य उसको ब्रह्मविद्या पढ़ाता है सो जानो उसका दूसरा जन्महोताहै इसतरह जो गुरुके यहां ब्रह्मविद्या सीखताहै वह जरा मरण रहित होजाताहै । ८ । जो गुरु ब्राह्मणादि वर्णों को मोक्ष देताहुआ उनके अन्तःकरण में सत्य ब्रह्म सच्चिदानन्द को स्थापित कराता है उसको पिता माता मानना चाहिये व उसका उपकार मान कभी उससे द्रोह न करना चाहिये ।९। शिष्य नित्य प्रथम गुरुको प्रणामकर पवित्र व सावधान चित्तहो वेद पढ़नेकी इच्छा करे, मान कभी न करे न कभी रोषकरे, ब्रह्मचर्य्यका यह प्रथमपादहै ।१०। क्योंकि जो पुरुष पवित्रहो शिष्य वृत्ति के क्रम से विद्या पढ़ता है, वही ब्रह्मचर्य व्रतका प्रथम पाद कहाता है । ११ । व मन वचन कर्म प्राणों व धनोंसे गुरु का प्रिय करताहै, यह ब्रह्म- चर्य व्रतका दूसरापाद कहाता है । १२ । व जिसमें कि गुरुके समानहीं गुरुपत्नी होती

---

deaths. Those who, wishing to live with Brahm, stick to the path of virtue and control their organs, sever the soul from the body as a broom is separated from the outer skin. The parents give birth to our bodies and an acharya gives us a second birth by imparting knowledge which liberates us from the bondage of birth and death. The preceptor who gives salvation by imparting the knowledge of true God must be revered like a parent and should never be set at defiance for the sake of the good which he does and for which we should ever remain grateful. A pupil should always bow to his preceptor before beginning the study of the Vedas and should be pure and steady of mind. He should never be proud and angry; this is the first step of Brahmcharya. 10. For he who, being pure of mind behaves, like a dutiful pupil during the period of study, is said to have performed a fourth part of Brahmcharya. He who gratifies his preceptor with his mind, words, deeds, life and wealth and serves

-न्यांतथाचरेत् । तत्पुत्रेचतथाकुर्वन् द्वितीयःपादउच्यते ॥ १३ ॥ आचार्येणात्मकृत विजानन्ज्ञात्वाचार्थं भावितोऽस्मीत्यनेन । यन्मन्यतेतं प्रतिहृष्टबुद्धि सवै तृतीयोब्रह्म चर्यस्यपादः ॥ १४ ॥ नाचार्यस्यानपाकृत्य प्रवासंप्राज्ञः कुर्वीतनैतदहंकरोमि । इतीवमन्येतनभाषयेत सवै चतुर्थो ब्रह्मचर्यस्यपादः ॥ १५ ॥ कालेनपादं लभतेतथार्थं ततश्चपादं गुरुयोगतश्च । उत्साहयोगेनच पादमृच्छेच्छास्त्रेणपादञ्च ततोऽभियाति ॥१६॥ धर्मादयाद्वादशयस्य रूपमन्यानि चाङ्गानि तथाबलञ्च । आचार्ययोगे फलतीति चाहुर्ब्रह्मार्थयोगेनच ब्रह्मचर्यम् ॥ १७ ॥ एवंप्रवृत्तोयदुपालभेत वैधनमाचार्याय

है इस से जैसे गुरुकी सेवाकरता व मानताहै वैसेही गुरुकी स्त्री कोभी सेवाकरे व माने, व गुरुपुत्र को भी वैसेही माने यहभी दूसराही पाद है । १३ । व जब विद्या पढ़े तो यह जाने कि इन आचार्यजी ने हमको अपना ज्ञान शास्त्रवेद ब्रह्मविद्या, पढ़ाकर बढ़ाया है और अत्यानन्दितहो वह ब्रह्मचर्य व्रतका तीसरापाद है । १४ । व विद्यापढ़ जब तक गुरु दक्षिणा न देचुके तब तक दूसरे आश्रम को न जाय व जो धनादि गुरु दक्षिणा में दे उसका अभिमान न करे कि हमने इतनी गुरु दक्षिणादी, यह ब्रह्मचर्य व्रतका चौथापद है । १५। विद्या का एकपाद् गुरु से पढ़कर जाने दूसरा विद्यार्थी अपनी बुद्धि से जाने तीसरा बुद्धि के विभव से चौथा साथ पढ़नेवाले विद्यार्थियों के संगबैठ अभ्यास करने से । १६ । इस ब्रह्मचर्य व्रतके धर्मादिक १२ गुण व और आसन प्राणयामादि व बल येसब रूपहैं, व आचार्यकी सेवा और वेदके अर्थ में अभ्यास करलेना ये दोनों उसके फलहैं । १७ । इसप्रकार पढ़लिख जो धन कहीं पावे उसमें अहंकार न करे कि हमने अपनी

---

the preceptor's wife and son in the same way, fulfils the second quarter of Brahmcharya The third quarter of Brahmcharya is the gratitude which pupil feels towards his preceptor for the knowledge and bringing up which the latter has bestowed on him. The fourth part of it is that after finishing his study the pupil thinks it to be his primary duty to pay the preceptor's free He does not enter into any business or mode of life until he has paid and does not become haughty on account of the great amount he has been able to pay. One should read a part of knowledge from the preceptor, another by his own wisdom, a third by his advanced intelligence and the fourth from association with his fellow Students There are twelve properties of Brahmcharya, its characteristics are, suspension of breath and peculiar modes of sitting and its fruits are devotion to the preceptor and the study of the meanings of the Vedas. After finishing his studies, when the pupil amasses some fortune, he should

वदनुमयच्छेत् । सत्तांह्यपिवहुगुणामेवपेतिगुरोः पुत्रेभवतिचहापिरेषा ॥ १८ ॥ एवं वसनस्सर्वतोवर्द्धतीह वहून्पुत्रांल्लभेतचप्रतिष्ठाम् । वर्षन्तिचास्मैप्रदिशो दिशश्चवसन्त्यस्मिन्ब्रह्मचर्येजनाश्च ॥ १९ ॥ एतेनब्रह्मचर्येणदेवा देवत्वमाप्नुवन् । ऋषयश्चमहाभागा ब्रह्मलोकंमनीषिणः ॥ २० ॥ गन्धर्वाणामपनेनैव रूपमप्सरसामभूत् । एतेन ब्रह्मचर्येण सूर्योप्यह्नायजायते ॥ २१ ॥ आकांक्ष्यार्थस्य संयोगाद्रसभेदार्थिनामिव एवंह्येतेसमाज्ञाय तादृग्भावं गताइमे, ॥ २२ ॥ यआश्रयेत्पावयेचापिराजन् सर्वं सर्वंशरीरंतपसातप्यमानः । एतेनवैबाल्यमभ्येतिविद्वान्मृत्युन्तथासजयत्यन्तकाले २३। अन्तवतः क्षत्रियतेजयन्तिलोकानजनाःकर्मणानिर्मलेन । ब्रह्मैवविद्वांस्तेनचाभ्येति

बुद्धिसे पायाहै किन्तु सब गुरुके प्रभाव से मिला है यहमान गुरुको दे व पीछे यही वृत्ति गुरुके पुत्रके विषयमें भी रहे, यह सज्जनों की गुणयुक्त वृत्ति है। १८ । इसप्रकार जो ब्रह्मचर्य व्रतकर गृहस्थाश्रममें आता है वह बहुत पुत्रपाता है व सब रीति से उसकी बढ़ती होती है व प्रतिष्ठाभी वह बड़ीभारी पाता है, व दिशा विदिशा सब उसके मनोरथ पूरेकरती हैं व उस के ऐसे ब्रह्मचर्य में सबलोग बसते हैं । १९ । इस ब्रह्मचर्य से देवतालोग देवत्व को प्राप्तहुये, व ऋषिलोग ऋषित्व को, व ब्रह्मलोक को । २० । गन्धर्वों व अप्सराओं का रूप इसी ब्रह्मचर्यही से हुआ है व इसी ब्रह्मचर्य के प्रभावसे सूर्य शीघ्र उदयहोते हैं । २१ । जैसे चिन्ता मणि से उस से मांगनेवाले लोग जो चाहते हैं मांगलेते हैं वैसेही ब्रह्मचर्य का प्रभाव जान देवादिकों ने जो चाहा मांगलिया इसीसे ये सब ऐसे होगये हैं । २२ । जो पुरुष सब चारपाद युक्त ब्रह्मचर्य का सेवन करता है व तपस्याकर अपना शरीर पवित्र करता है वह इसी ब्रह्मचर्य के प्रभावसे रागद्वेषादि रहित होजाता है व अन्तकाल में मृत्युकोभी जीतलेता और मोक्षको प्राप्त

---

not be vain of his own enterprises but should ascribe all to his preceptor's kindness. *He should thus give all honour to the preceptor* and should respect the preceptor's son like him. This is the practice of virtuous men. *He who, after observing the vow of* Brahmcharya *as mentioned above,* becomes a householder, gets many sons as well as *greatness,* honour and good luck and the world gets benefit from his conduct. Brahmcharya has given godhood to the *gods, sanctity and the residence in the regions of Brahm to the sages,* beauty to gandharvas and apsaras and light to the sun. 21. Like Chintamani (the famous philosopher's stone), Brahmcharya gives all things that one desires and the gods, knowing this quality of it, have got what they desired and have risen to the high rank which they hold today. *He who observes Brahmcharya in all its four parts* and purifies *his body* with asceticism, *is freed from all the worldly*

सर्वेनान्यः पन्थाअयनायाविद्यते ॥ २४ ॥ धृतराष्ट्रउवाचच । आभातिशुक्लमिवलोहितमिवाथोकृष्णमथांजनंकाद्रवंवा । सद्ब्रह्मणः पश्यतियोत्रविद्वानकथंरूपंतदमृतमक्षरंपदम् ॥ २५ ॥ सनत्सुजातउवाच । आभातिशुक्लमिवलोहितमिवाथोकृष्णमायसमर्कवर्णम् । नपृथिव्यांतिष्ठतिनान्तरिक्षेनैतत्समुद्रेसलिलंबिभर्ति ॥ २६ ॥ नतारकासुनचविद्युदाश्रितंनचाभ्रेषुदृश्यतेरूपमस्य । नचापिवायौनचदेवतासुनैतच्चन्द्रेदृश्यतेनोतसूर्ये ॥ २७ ॥ नैवर्क्षुतन्नयजुष्षुनाप्यथर्वसुनदृश्यतेवैविमलेषुसामसु । रथन्तरेबार्हद्रथेवापिराजन्महाव्रते नैवदृश्येद्ध्रुवंतत् ॥ २८ ॥ अपारणीयंतमसः परस्तात्तदन्तकोप्यति

होजाता है । २३ । हे क्षत्रिय, अविद्वान लोग निर्मलकर्म से अनित्यलोकों को जीतते हैं, व विद्वान् उसी निर्मलकर्म से ब्रह्महीको प्राप्तहोजाता है क्योंकि मोक्षके लिये अन्य मार्गही नहीं है ज्ञानही से मुक्ति होती है । २४ । इतनासुन चुपहो ब्रह्मका ध्यानकर उसे न देख नानावर्ण के नाड़ियों के मार्ग हृदयमें देख शंकित चित्तहो धृतराष्ट्रजी बोले कि हमको तो शुक्ल, लोहित, कृष्ण, अंजन सदृश, धूम्र सदृश कईप्रकार का ब्रह्मकारूप विदित होता है, पर सद्ब्रह्म का जो रूप विद्वान् पुरुष देखताहो वह मोक्ष रूप पद हम कैसे जानें बताइये । २५ । सनत्सुजातजी बोले, कि ब्रह्ममार्ग में यद्यपि शुक्लसा लोहितसा, कृष्णसा, लोहवर्णसा व सूर्यवर्णसा दिखाईदेता है तथापि ब्रह्म जैसा है वह रूप न पृथ्वी में है, न अन्तरिक्षमें, व न समुद्र के जलमें । २६ । न नक्षत्रों में, न बिजुली में, न बादलों में न पवनमें न देवताओं में, न चन्द्रमा में दिखाई देता है न सूर्यमें । २७ । न ऋग्वेद में न यजुर्वेद में न विमल सामवेदमें, न रथन्तर में न बार्हद्रथमें न यज्ञादिकों में उस अरूपका रूप दिखाई देताहै । २८ । किन्तु इस

---

entanglements and having conquered Death gets salvation at last. Ignorant persons win transient worlds by their good deeds, while learned men attain to Brahm by the same deeds; for there is no way for salvation other than knowledge." Having heard this, Dhritrashtra silently meditated on Brahm for a short time and having seen nothing but arteries within him, he fell into a state of suspense and said, "Brahm looks to me of white, red, black, jet and smoke colours; how can I see the colour of true Brahm as a learned man does?" To this Sanatsujat replied, "Although one sees something like white, black, red, and shining like the sun in the path of Brahm; but the colour like that of Brahm is neither on Earth nor in sky, nor in the sea water, nor in stars, nor in lightning, nor in clouds, nor in air, nor in gods, nor in the moon, nor in the sun, nor in the Rigved, nor in the Yajurved, nor in the pure Samved, nor in Indra's chariot, nor in the yagyas: the form of the formless One is beyond all ignorance and

विनाशकाले ।·अणीयोरूपंक्षुरधारया समंमहच्चरूपं तद्वैपर्वतेभ्यः ॥ २९ ॥ सामतिष्ठा तदमृतंलोकास्तद्ब्रह्मतद्यशः । भूतानिजज्ञिरेतस्मात् प्रलयंयान्तितत्रहि ॥ ३० ॥ अनामयंतन्महदुद्यतं यशोवाचोविकारं कवयो वदन्ति । यस्मिन्जगत्सर्वमिदं प्रतिष्ठितं येतद्विदुरमृतास्तेभवन्ति ॥ ३१ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये चतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४४ ॥

सनत्सुजात उवाच । शोकःक्रोधश्चलोभश्च कामोमानःपरासुता । ईर्ष्यामोहो विधित्साच कृपाऽसूया जुगुप्सता ॥ १ ॥ द्वादशैतेमहादोषा मनुष्यप्राणनाशनाः।

स्वरूपका रूप अपारणीयहै, व अज्ञान रूपान्धकारसे परे है, व महाप्रलय के समय में कालभी उसी ब्रह्ममें लीन होता है, वह अतिसूक्ष्म होने से दुर्लभ है, व क्षुराकी धार से भी तीक्ष्ण है व पर्वतादि जितने बड़े से बड़े पदार्थ हैं उनसबों से बड़ा है।२९। वह अविकार सब लोकों फैला हुआ है उसका नाम ब्रह्म महद्यश इसीसे है और उस का निवास स्थान प्रलय है वह महद्यश, अनामय और विकार रहित है उसमें सब जगत रहता है और जो कोई उसको जानता है वह अमर है । ३१ ।

अध्याय ४५ ॥

सनत्सुजातजी बोले कि शोक १ क्रोध २ लोभ ३ काम ४ मान ५ निद्रा ६ ईर्ष्या ७ मोह ८ मद्यादि पीनेकी इच्छा ९ स्नेह १० असूया ११ निन्दा १२ । १ ये १२ महादोष मनुष्यों के प्राणनाशक हैं, जो इनमें के एक दो हों तबभी प्राण नाशक हैं

---

darkness. Even Time unites with Him at the time of Mahapralaya. On account of His fineness He is very difficult of attainment. He is sharper than the edge of a razor and larger than the largest mountain. He is changeless and all-pervading and therefore he is called Brahm of great glory. He alone exists in pralaya. He is Mahadyash, Anamaya and changeless. All the world lives within Him and he who knows Him cannot die. 31.

CHAPTER XLV

"Grief, anger, greediness, desire, haughtiness, sleep, envy, delusion, intoxication, affection, calumny and blame," said Sanatsujat, "are the twelve defects which destroy human life. Even one or two of them are sufficient to destroy men and the presence of all of them can not

एकैकमेतेराजेन्द्र मनुष्यान्पर्य्युपासते । यैराविष्टोनरःपापं मूढसंज्ञोव्यवस्यति ॥२॥ स्पृहयालुरुग्रः परुषोवावदान्यःक्रोधं बिभ्रन्मनसावै विकत्थी। नृशंसधर्माः षडिमेजना वैप्राप्याप्यर्थं नोतसभाजयन्ते ॥ ३॥ सम्भोगसम्विद्विषमोऽतिमानी दत्त्वाविकत्थी कृपणोदुर्बलश्च । बहुप्रशंसीवनिताद्विड् सदैवसप्तैवोक्ताः पापशीलानृशंसाः ॥ ४ ॥ धर्मश्चसत्यञ्चतपोदमश्च अमात्सर्यं ह्रीस्तितिक्षानसूया । दानंश्रुतञ्चैवधृतिः क्षमाचमहाव्रताद्वादशब्राह्मणस्य ॥ ५ ॥ योनैतेभ्यःप्रच्यवेद्द्वादशभ्यः सर्वामपीमांपृथिवींस विष्यात् । त्रिभिर्द्वाभ्यामेकतो वार्थितोयोनास्य स्वमस्तीतिचवेदितव्यम् ॥ ६ ॥ दमस्त्यागोऽप्रमादइत्येतेष्वमृतंस्थितम् । एतानिब्रह्ममुख्यानां ब्राह्मणानांमनीषि-

---

जो सबहीं तो क्या कहना इन दुर्गों से युक्त पुरुष पापकरने पर उताकहोताहै ।२। स्पृह-याळु, परुष, अवदान्य, क्रोधी, विकत्थन करनेवाला, ये ५ क्रूर के धर्म्म हैं इनको पाकर पुरुष और किसीका मान नहीं करते । ३ । सम्भोग सम्विद्विषम १ अतिमानी २, दत्त्वाविकत्थी ३ कृपण ४ दुर्बल ५ बहुप्रशंसी ६ वनिताद्विट् ७ ये सातदोष पापियों के स्वभाव के हैं व नृशंस दोष कहाते हैं । ४ । धर्म्म १ सत्य २ तप ३ दम ४ अ-मात्सर्य ५ लज्जा ६ सहन शीलता ७ अनिन्दा ८ दान ९ शास्त्राभ्यास १० धारणा शक्ति, ११ व क्षमा १२ ये ब्राह्मण के महाव्रतहैं ।५। जो इन द्वादशगुणों से नहीं च्युतहोता वह समुद्र पर्य्यन्त पृथ्वी को शिक्षा देसकाहै, तीन दो वा एक धर्म्मादिकोंमें ■ प्रत्येककी रक्षाके लिये वह अपना सब धन खर्च करडालताहै । ६ । व दमत्याग और अप्रमाद में मुक्ति टिकी है, ये सब वेदवादियों में मुख्य ब्राह्मणों में रहते हैं । ७ । चाहे सत्यहो व असत्यहो पर किसी के दोष ब्राह्मणको कहना उचित नहीं है, क्योंकि जो पराया अपवाद कहतेहैं उनको नरकवास

---

but lead to sinfulness. Envy, harshness, cutting, anger and boasting are the five signs of cruelty and the possessor of them has no regard for others. Fondness for women, haughtiness, boasting of charity, niggardliness, weakness, too much praise and want of love with one's own wife are the seven characteristic faults of sinful men. Dharm, truth, asceticism, control of organs, freedom from envy, bashfulness, forbearance, freedom from blame, charity, learning, patience and forgiveness are the twelve great vows of a Brahman. He who does not break any of the above-mentioned vows can rule over the whole Earth to the verge of the Ocean and will protect each of them at the expense of all his wealth. Control of organs, liberality and abandonment of pleasures are the basis of salvation and these qualities are always to be found in the best of Brahmans that are learned in the

णाम ॥ ७ ॥ सद्वाऽसद्वापरीवादो ब्राह्मणस्यनशस्यते । नरकप्रतिष्ठास्तेस्युर्यएवं कुरुतेजनाः ॥ ८ ॥ मदोऽष्टादशदोषः सस्यात्पुरायोऽप्रकीर्तितः । लोकद्वेष्यमातिकुल्यमभ्यसूया मृषावचः ॥ ९ ॥ कामक्रोधौपारतन्त्र्यं परिवादोऽथपैशुनम् । अर्थहानिर्विवादश्च मात्सर्यंप्राणिपीडनम् ॥ १० ॥ ईर्ष्यामोदोऽतिवादश्च संज्ञानाशो ऽभ्यसूयिता । तस्मात्प्राज्ञोनपायेत सदाह्येतद्विगर्हितम् ॥ ११ ॥ सौहृदेवैषड्गुणा वेदितव्याःप्रियेहृष्यन्त्यप्रियेच व्यथन्ते । स्यादात्मनःसुचिरंयाचते योददात्ययाच्यमपिदेयंखलुस्यात् । इष्टान्पुत्रान्विभवान स्वांश्च दारानभ्यर्थितश्चार्हति शुद्धभावः ॥ १२ ॥ त्यक्तद्रव्यःसंवसेन्नेह कामानभुंक्तेकर्म स्वाशिषम्बाधतेच ॥ १३ ॥

होता है । ८ । मदमें १८ दोष होवेहैं १ लोकद्वेष्य परस्त्रीगमनादि २ प्रातिकूल्य धर्मादि कर्मों विघ्नकरना ३ अभ्यसूया गुणी पुरुषों में दोष आरोप करना ४ मिथ्या बोलना ।९। ५ कामस्त्री का अभिलाष ६ क्रोध ७ पारतन्त्र्य मदिरादिके वशहोना ८ परिवाद परदोष कहना ९ पैशुन चुगुली १० अर्थहानि नट कथिक वेश्यादिको व्यर्थ देना ११ विवाद वैरकरना १२ मात्सर्य १३ प्राणियोंको पीड़ितकरना ।१०।१४ ईर्ष्या पर गुणोंको न सहना १५ मोद अहङ्कार से हर्षकरना १६ अतिवाद निर्मर्याद बोलना १७ संज्ञानाश, कार्य्य अकार्यका विचार न करना १८ अभ्यसूयत, निरन्तर परद्रोह करनेका स्वभाव, इससे पण्डित को चाहिये मद न करे क्योंकि यह सदानिंद्य है । सौहृद में ६ गुणहैं १ प्रियके सुखमें हर्ष करना २ प्रियके दुःखमें दुःखित होना ३ अपना जो कुछहो मांगनेपर प्रियको देदेना बिना मांगनेपरभी देना चाहे स्त्री पुत्रादि इष्टभी पदार्थ प्रिय मांगे शुद्धभाव से सब देना । १२ । ४ जिसको अपना सर्वस्व देदे उसके यहां अपने उपकार के पलटे में कुछ पानेकी इच्छा से न बसना ५ अपने कर्मसेही उपार्जित धनखाना मित्रोपार्जित की इच्छा न करना ६ अपना कल्याणभी मित्रके लिये नाशना । १३ । जो गृहस्थ

Vedas. Brahmans should not point out the faults of others whether true or false; for, those who accuse others are cast in hell. There are eighteen defects in intoxication; they are as follows:—wantonness, irreligion, fault-finding, falsehood, desire for women, anger, dependence, scandal, backbiting, extravagance, quarreling, envy, cruelty, jealousy, haughtiness, boastfulness, carelessness and calumny, a learned man should never indulge in intoxication which is always very wicked. Friendship has six qualities, namely, cheerfulness at the happiness of friends; sorrow at their misery; giving any and everything to friends, asked or unasked; not expecting any return for favours done, not coveting the wealth of friend and sacrificing one's own profits for the sake of friendship. 13. The householder who possesses these qualities

द्रव्यवानगुणवानेव त्यागीभवतिसात्त्विकः। पञ्चभूतानिपञ्चभ्यो निवर्त्तयातताहिशः ॥ १४ ॥ एततसमृद्धमप्यूर्द्ध तपाभवतिकेवलम् । सत्त्वात्मच्ययमानानां सङ्कल्पेन समाहितम् ॥ १५ ॥ यतोयज्ञा प्रवर्द्धन्ते सन्तस्यैवावरोधनात् । मनसान्यस्यभवति वाचान्यस्याथकर्मणा ॥ १६ ॥ सङ्कल्पसिद्ध पुरुषमसङ्कल्पोऽधितिष्ठति । ब्राह्मणस्य विशेषेण किञ्चान्यदपिमेशृणु ॥ १७ ॥ अध्यापयेन्महदेतद्यशस्यं वाचोविकारान् कवयोवदन्ति । अस्मिनयोगेसर्वमिदंप्रतिष्ठितं येतद्विदुरमृतास्तेभवन्ति ॥ १८ ॥ नकर्मणासुकृतनैवराजन्‌ सत्यञ्जयेज्जुहुयाद्वायजेद्वा । नैतेनबालोऽमृत्युमभ्येतिराजन रतिञ्चासौनलभत्यन्तकाले ॥ १९ ॥ तूष्णीमेकउपासीत चेष्टेतमनसापिन । तथा

इसतरह गुणवान्, दाता, व सात्विक होता है वह शब्द स्पर्श रस गन्ध रूप पांच विषयों से श्रोत्र त्वचा रसना घ्राण चक्षु पांच इन्द्रियां निवृत्त करलेता है । १४ । धैर्यके कोष्युत नहीं होवे उन्हीं लोगोंके सकल्पसे यह विषयों से इन्द्रियोंका निवृत्त करना तप ब्रह्मकोकादि देताहै।१५। फलमकत पुरुषके सकल्पही से सब यज्ञहोतेहैं व मध्यम पुरुषके वचनसे व प्राकृत लोगों के कर्म करने से होतेहैं । १६ । जो सगुण ब्रह्मकी उपासना से संकल्प सिद्ध पुरुषहोते हैं उनसे विशेष निर्गुण ब्रह्मकी उपासनासे सकल्प सिद्ध होतेहैं ।१७। यह योगशास्त्र शिष्योंको पढाना चाहिये इसले बडायशहोताहै इससे अन्यजो शास्त्रहैं उनको कविलोग केवल वचनका विकार कहतेहैं, व इस योगशास्त्र जाननेवाले योगीमें सबकुछ शक्ति होती है, व लोग इस योगशास्त्रको जानतेहैं वे मुक्तहोजातेहैं।१८ हेराजन् कर्मरूप पुण्य करने से सत्य ब्रह्मको पुरुष नहीं पासका, व जो होमयज्ञादि कर्म अविद्वान्लोग करते हैं वे मोक्ष को नहीं प्राप्त होते, व न अन्तकालमें कुछ आनन्दही पावेहैं । १९ । मौनी मानसिक जप

---

and is charitable and virtuous, is able to control his senses from the objects of their desires. Those who are firm in the control of their organs, attain to the region of Brahm by means of that penance. A person of true vows performs all the sacrifices within his mind, one of the middle class performs them with words while ordinary men perform them by their deeds. Desires are better accomplished by silent meditation of Brahm than by worshipping Him as an object of sense. It is very useful to teach books on yog, other books are treated by learned men as mere collection of words. A yogi, learned in yog shastras, becomes almighty and those who read the yog-shastra, get Salvation. One does not attain to true Brahm by good deeds; for the yagyas and libations of the ignorant people donot lead to salvation and eternal happiness. He who worships Brahm in silent

संस्तुतिनिन्दाभ्या प्रीतिरोपौविवर्ज्जयेत् ॥ २० ॥ अत्रैवतिष्ठन्क्षत्रिय ब्रह्माविशति पश्यति । वेदेषुचानुपूर्व्वेण एतद्विद्वन्ब्रवीमिते ॥ २१ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये

पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४५ ॥

सनत्सुजात उवाच । यत्तच्छुक्रं महज्ज्योतिर्दीप्यमानं महद्यशः । तद्वैदेवाउपासते तस्मात्सूर्यो विराजते । योगिनस्तंप्रपश्यन्ति भगवन्तंसनातनम् ॥ १ ॥ शुक्राद्ब्रह्म प्रभवतिब्रह्मशुक्रेणवर्द्धते । तच्छुक्रंज्योतिषांमध्येऽतप्तं तपतितापनम् । योगिनस्तं० २॥ अपोथअभ्द्यसलिलस्यमध्येउभौदेवौशिश्रियातेऽन्तरिक्षे । अतन्द्रितः सवितुर्विवस्वा

सना करता है उसको किसी कार्यकी आवश्यकता नहीं वह न स्तुतिसे हर्षित होताहै न निन्दा से अप्रसन्न होता है । २० । हमने वेदमें देखा है कि कर्मसे ज्ञान उत्तम है और सब जगत ब्रह्ममें लीनहोजाता है ॥ २१ ॥

अध्याय ॥ ४६ ॥

सनत्सुजातजी बोले कि जो ब्रह्मबीज बीजतुल्यहो विश्वकी उत्पत्तिका मूल कारणहै, व जो सूर्य रूपसे सर्वत्र दीप्यमान है व जिसका महद्यश नाम है उसी को इन्द्रियोंके देवगण सेवतेहैं व उन्हींसे सूर्य प्रकाशित होतेहैं उन्हीं सनातन भगवान्को योगी लोग देखतेहैं ।१। शुक्ररूप आनन्दसे ब्रह्म आकाश होताहै व उसी से बढ़ता है, वही शुक्र प्रकाशवान सूर्य दिकों के मध्यमें स्थितहो तपता है उसी सनातनभगवान् को योगीलोग देखते हैं ।२। जलों से जलरूप परब्रह्म जलके मध्यमें टिकाहै व जीव ईश्वर दोनों अन्तरिक्ष में विराजमान होतेहैं, उनदोनों से भिन्न जगत् का कारण चिद्रूप जो सदा उदयास्त होनेपरभी प्रकाशित

meditation, has no need of doing anything, he is neither pleased with praise nor displeased with dispraise. The Vedas teach us that gyan is superior to deeds and the gyani sees all this world leaning on Brahm "21.

CHAPTER XLVI

"*Om* who like a seed," continued Sanatsujat, "is the chief cause of the creation of the world, who, in the form of the sun, illumines the whole world and who is known as Mahadyash, is worshipped by the gods of the senses, gives light to the sun and is seen only by Yogis. The essence of Brahm becomes aether and increases by His pleasure, it stays in the midst of the sun and other bodies and gives out heat: the Yogi sees such eternal Lord. The same Brahm stays in the *midst of waters.* Both the soul and the *Supreme Spirit* stay between the Earth and the sky and apart from both the creator of the world who shines even in the absence of the sun, supports both the soul and the Supreme Spirit as well as the Earth and the sky

सुपौविभर्चिपृथिवींदिवञ्च । योगीनस्तंमपश्यन्तिभगवं ॥ ३ ॥ उभौचदेवौपृथिवींदि वंच दिशः शुक्रोभवनंविभर्त्ति । तस्माद्दिशः सरितश्चस्रवन्ति तस्मात्समुद्राविहिताम हान्तः योगिनस्तं ॥ ४ ॥ चक्रेरथस्यातिष्ठन्तोऽध्रुवस्याव्ययकर्मणः । केतुमन्तवहन्त्य श्वास्तंदिव्यमजरंदिवि । योगिनस्तं० ॥ ५ ॥ नसादृश्येतिष्ठतिरूपमस्य नचक्षुषापश्य तिकश्चिदेनम् । मनीषयाथोमनसाहृदाच यएनंविदुरमृतास्तेभवन्ति । योगिनस्तं० ॥६॥ द्वादशपूगांसरितंपिबन्तीदेवरक्षिताम् । मध्वीक्षन्तश्चतेतस्याः सञ्चरन्तीहघोराम् । योगिनस्तंमपश्यन्ति ॥ ७ ॥ तदर्द्धमासंपिबति सञ्चित्यभ्रमरोमधु । ईशानःसर्वभूतेषु हविर्भूतमकल्पयत् । योगिनस्तं० ॥ ८ ॥ हिरण्यपर्णमश्वत्थमभिपत्य ह्यपक्षकाः ।

रहताहै वह जीव ईश्वर दोनोंको व पृथ्वी स्वर्गको धारण करताहै ऐसे सनातन भगवान् को योगीलोग देखतेहैं । ३ । व वही शुक्र जीव व ईश्वर दोनोंको पृथ्वी स्वर्ग व ब्रह्मांडको धारण करताहै व उसीसे दिशा नदियां सब निकलतीहैं, व उसीसे बड़े २ भारी समुद्र निकलते हैं, ऐसे सनातन भगवान्को योगीलोग देखतेहैं । ४ । व जिस शुक्रके विनाशीभी रथरूप शरीरके चक्रके निमित्त चलतेहुये अश्वरूप इन्द्रिय प्रज्ञावान जीवको परमात्माको प्राप्त करातेहैं, व जो दिव्य अजर अमरहै, ऐसे सनातन भगवान्को योगीलोग देखतेहैं ।५। इस ब्रह्म आकृति सादृश्यमें नहीं टिकती व इसीसे कोई नेत्र से उसे नहीं देखता, जो अपनी बुद्धि मन व हृदयसे उसको जानतेहैं, वे मुक्त होजाते हैं, ऐसे ब्रह्म सनातन भगवान्को योगी लोग देखतेहैं । ६ । व चित्तादि द्वादशपूग अर्थात् समुदाय युक्त नदी अविद्यानाम महा नदी जो बड़ी प्रवाहवती है चक्षुरादि इन्द्रियों के अनुग्राहक सूर्यादि देवताओंसे रक्षित व

---

and is seen by the eye of yog alone. The same essence supports the soul, the Supreme Spirit, the Earth, the sky and the whole mundane egg, causing the directions, the rivers and the deep sees: such eternal Lord is seen by the yogi. The Supreme Spirit who is attained by an intelligent soul through control of the senses which like horses draw the chariot of the body and who is free from old age and death, is seen by yogis. No one can see Brahm, because our image can be made of His body; those who know Him with their intellectual minds, get salvation and the Yogi alone sees Him. The great river of ignorance, consisting of the twelve groups, mind and others, protected by the sun and other gods of eyes and other organs and having for its sons the souls like birds drinking honey in the high and low places of this region is illumined by the essence of Brahm whom the Yogis see. Like a black bee, the soul drinks ambrosia after performing sacrifices and other deeds and is born again in the mortal wolrd to reap the fruit of its actions and does more deeds in the course of life: the Yogi sees the soul united with the eternal Lord. Having got

तेतत्रपक्षिणोभूत्वा प्रपतन्ति यथादिशम् । योगिनस्तं प्रपश्यन्तिभगवन्तंसनातनम् ॥ ९ ॥ पूर्णात्पूर्णान्युद्धरन्ति पूर्णात्पूर्णानिचक्रिरे । हरन्तिपूर्णात्पूर्णानि पूर्णमेवा वशिष्यते । योगिनस्तंप्रपश्यन्ति भगवन्तंसनातनम् ॥ १० ॥ तस्माद्वैवायुरायातस्त स्मिंश्च प्रयतः सदा । तस्मादग्निश्चसोमश्च तस्मिंश्चप्राणआततः ॥ ११ ॥ सर्वमेव

इस शुक्राधिष्ठित स्थानमें भासमान महाभयंकर अविद्या नाम नदीका पुत्र पक्ष्यादिरूप मधु पीतेहुये जीव उसके ऊंचे नीचे मार्गोंमें घूमतेहैं इससे फिर २ इस शुक्राधिष्ठानमें घूमतेहैं ऐसे सनातन भगवान्को योगीलोग देखतेहैं वे १२ पुष ये हैं, चित्त १ स्मरण २ श्रोत्र ३ श्रवण ४ वाग ५ वचन ६ शब्द ७ विषद ८ प्राण ९ श्वसन १० अहंकार ११ सुकृत १२ भ्रमरूप ईशान जीव यहां यज्ञादि कर्मकर चन्द्रमंडलके मध्यमें बैठ उसके भीतरका अमृत देवता होकर पीता व फिर कर्मफल जो भोगकरनेको शेष रहजावें उनके भोगने की इच्छा से सब प्राणियों में जन्म लेता है वही जीव हवीरूप पक्षकी कल्पना करता है उस ईश्वर रूप जीव सनातन भगवानको योगीलोग देखते हैं सुवर्ण तुल्य स्त्री पुत्रादि पुष्पयुक्त अविद्यारूप नाशहोने के योग्य वृक्षको पाकर प्राणरहित जीवपक्षी रूप हो इधर उधर नानाप्रकारकी योनियों में जन्म लेते हैं, उस सनातन भगवान्को योगी लोग देखते हैं । ९ । पूर्ण रूप ब्रह्मसे पूर्णरूपही जीव पृथक् कियेजाते हैं व वही पूर्णसे प्राणादि पूर्णबनाये गये व पूर्ण प्राणादि ब्रह्ममें टिकेरहते वो पूर्ण ब्रह्मही से दूर करते हैं वो शेषभी पूर्णही रहजाता है उस पूर्ण सनातन भगवान्को योगी लोग देखते हैं । १० । उसी पूर्ण ब्रह्मसे आकाश उत्पन्न हुआ आकाश से वायु वायुसे अग्नि अग्नि से जल जल से पृथ्वी उस से सबप्राणी व उसी पूर्णमें ये सब फिर मिलजाते उसमें अग्नि भोक्ताहै व सोम भोज्य व सोममें सबप्राण व इन्द्रियां विस्तृत हैं । ११ । कहांतक गिनावें जो कुछ

wives, sons, wealth and the *fatal* tree of ignorance, the *souls are born* in different shapes like birds: the Yogi sees the eternal lord. From the perfect Brahm are separated perfect Souls and perfect vital parts and yet He remains perfect: the Yogi sees such eternal Lord. From that perfect Brahm is born aether which produces air; the air produces fire which *gives* birth to water. Water produces land which gives birth to all the living beings. All these reunite in Brahm ■ Agni consumes *Soma* in which all life and senses are diffused. In short, all the immovables and movables are born from Him who is beyond description and whom the Yogi sees. *The air in the lower* part of the body (apan) is drawn by that in upper part (pran); the latter is drawn by the mind which is drawn by intellect and this is drawn by the Supreme Spirit who is the enternal Lord seen by the Yogi. The Supreme Spirit, swan-like, *perches over the tree of body*

ततो विद्यात्तचद्वर्त्तुंनशक्नुमः । योगि०॥१२॥अपानंगिरतिप्राणः प्राणंगिरतिचन्द्रमाः।
आदित्योगिरते चन्द्रमादित्यं गिरते परः । योगि० ॥ १३ ॥ एकंपादंनोत्क्षिपति
सलिलाद्धंसउच्चरन् । तञ्चेत्संततमृध्वाय नमृत्युर्नामृतंभवेत् । योगि० ॥ १४ ॥
अंगुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा लिङ्गस्य योगेनसयाति नित्यम् । तमीशमीड्यमनुकल्प-
माद्यं पश्यन्ति मूढानविराजमानम् । योगिनस्तंप्रपश्यन्ति भगवन्तंसनातनम् ॥ १५ ॥
असाधनावापिससाधनावा समानमेतद्दृश्यते मानुषेषु । समानमेतदमृतस्येतरस्य मुक्ता-

स्थावर जङ्गम हैं सब उसीसे उत्पन्न हैं उसे कह नहीं सके ऐसे पूर्ण सनातन भगवान् को योगी लोग देखते हैं । १२ । प्राणवायु अपान को खींचता, व प्राणको मनखींचता मनको बुद्धि खींचती बुद्धि को परमात्मा खींचता उस परमात्मा सनातन भगवान् को योगी लोग देखते हैं । १३ । हंसरूप परमात्मा शरीररूप वृक्षपर चढ़ा है पर उस वृक्षमें बँधा नहीं है उसआत्मा के जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति व तुरीय ये चार चरणहैं, इनमें चौथा तुरीय चरण यह नहीं प्रकाशित करता, व उन तीनों चरणों से जलसे बाहर उड़ता हुआ घूमता, व उस चौथे तुरीय पादको बार २ ऊपरको उठाताहै उसको शिव अद्वैत मानते हैं, उस सनातन भगवान् को योगीलोग देखते हैं । अंगुष्ठमात्र पुरुष अन्तरात्म, पञ्चप्राण मन बुद्धि दशइन्द्रिय युक्त लिङ्ग शरीरके सम्बन्ध से इसलोक परलोक दोनों में जाताहै उस स्तुति करने के योग्य, उपाधि के अनुसार सबकार्य्य करने में समर्थ आदि मूल कारणको चैतन्यरूप से सर्व्वत्र विराजमान होने परभी मूढ़नहीं देखते उस सनातन भगवान् को योगी लोग देखते हैं । १५ । मनुष्यों में संघाताभिमानी जीवोंमें कोई शम दमादि हीन होनेसे असाधु नहीं कहाते कोई क्षमादि युक्त होनेसे साधु न कहाते पर यह ब्रह्म सदा निर्विकार होनेसे मनुष्यों में समान दिखाई देता, इससे मुक्त व बद्ध दोनों में समानही रहता, उनमें मुक्तलोग ब्रह्मरसके उत्कर्षको प्राप्तहोते, ऐसे समान सनातन

but is not tied to it. He has four states, namely, awake, asleep, profound repose and a fourth state which is not known. In the first three stages He is seen floating above the waters, but the fourth or the union of soul with Brahm is seldom seen; that eternal Lord is seen by the Yogi. The soul, in a thumb-like body, with the five airs, mind, intellect and ten senses goes into this world as well as in the next; but ignorant people cannot see the Almighty worthy of praise, the first cause and Omnipresent; only the Yogi sees Him. Some people are not called wicked though they cannot control their senses, while others are not considered good though they are possessed of mercy and other good qualities; but Brahm appears all the same in the good and the wicked, because He is changeless and the Yogi alone can see Him. By virtue of knowledge of Brahm, a

स्तत्रमध्ये वसन्तंसमाहुः । योगि० ॥ १६ ॥ उभौलोकौ विद्ययावाप्य यातितदाहुतं चाहुतमग्निहोत्रम् । मातेब्राह्मीलघुतामादधीत प्रज्ञानंस्यान्नामधीरालभन्ते । योगि० ॥ १७ ॥ एवंरूपोमहात्मास पावकंपुरुषोगिरन् । योवैतंपुरुषंवेद तस्येहार्थोनरिष्यते । योगि० ॥ १८ ॥ यःसहस्रंसहस्राणां पक्षान्सन्तत्यसम्पतेत् । मध्यमेमध्यआगच्छेदपि चेत्स्यान्मनोजवः ॥ योगि० ॥ १९ ॥ नदर्शनेतिष्ठतिरूपमस्य पश्यन्तिचैनंसुविशुद्धसत्त्वाः । हितोमनीषीमनसानतप्यते येप्रव्रजेयुरमृतास्तेभवन्ति । योगि०

भगवान्‌को योगीलोग देखतेहैं । १६ । ब्रह्माकार अन्तःकरणकी वृत्तिरूप विद्या से आत्मलोक अनात्मलोक दोनों को प्राप्तहो प्रारब्ध के अनुसार विद्वान् देहधारी होताहै तो उसका न किया हुआ भी अग्निहोत्र किया हुआ होजाता है, इससे हम ब्रह्महैं, ऐसी ब्राह्मीवाणी कहतेहुये तुमको लघुता नहो अर्थात् हम दासहैं ऐसा न कहो क्योंकि ब्रह्मवित् ब्रह्मही होता इससे अपने को ब्रह्मकहनाही चाहिये व उसीको प्रज्ञान नामहै पर उसको धीरलोगही प्राप्तहोते हैं । १७ । इसतरह वचन मन से अतीत, जगत् के जन्मादि स्थान का रूप परमात्मा, महात्मा, महापूज्यतत्त्व को प्राप्त होताहै उसको कर्मलोपका दोषभी नहीं होता, व पावकरूप भोक्ता जीव को अपने में मिलाताहै उस पुरुषको जो जानताहै उस पुरुषका अर्थ मोक्ष नहीं नाश होता, जिसके ज्ञान से अर्थ नाश नहीं होता उस सनातन भगवान्‌को योगीलोग देखतेहैं । १८ । जो दशलक्ष वा अनन्त पंखलगाकर दूरको चला जाय वह भी जिसके हृदयके मध्यमें परमेश्वर बैठाहै उस योगी के हृदय में आपही आता है चाहे मनके समान वेग रखताहो, जिस परमेश्वर में दूरकी भी वस्तु आजाती हो उस सनातन भगवान् को योगीलोग देखतेहैं । १९ । इस परमेश्वर अरूपका रूप किसी के देखने में नहीं आता, पर विशुद्ध सत्त्व ब्रह्मज्ञानी संन्यासी उसका रूप देखते हैं, यह जान जो जगत्‌का हितकारी होताहै वह मनका जीतनेवाला होता है,

---

learned man reaches the region of soul and non-soul and when he enters a body, he gets the merit of performing yagyas without doing so and this state is called Pragyan which is attainable by the wise. Thus the great Supreme Spirit, creator of the world is worshipped by all; is not bound by the results of deeds and like fire devours and assimilates the souls within Himself: the Yogi sees Him and gets salvation. The Yogi who has the Supreme Spirit within himself, can grasp anything though it has a myriad wings and flies with the swiftness of thought; the eternal Lord who draws things from great distances, is seen by the Yogi. No one can see the form of the formless supreme Spirit except the pure and virtuous Sanyasi who has a knowledge of Brahm; he who knows this, controls his mind for the good of the world and is never confused in the greatest calamity.

॥ २० ॥ गूहन्तिसर्पाइवगह्वराणि स्वशिक्षयास्वेनवृत्तेनमर्त्याः । तेषुप्रमुह्यन्तिजना-
विमूढा यथाध्वानंमोहयन्तेभयाय । योगि० ॥ २१ ॥ नाहंसदासत्कृतःस्यां नमृत्यु-
र्नचामृत्युरमृतंमेकुतःस्यात् । सत्यानृतेसत्यसमानबन्धे सतश्चयोनिरसतश्चैकएव । योगि०
॥ २२ ॥ नसाधुनानोतअसाधुनावा समानमेतद्दृश्यतेमानुषेषु । समानमेतदमृतस्य
विद्यादेवंयुक्तोमधुतद्वै परीप्सेत् । योगिनस्तंप्रपश्यन्ति भगवन्तंसनातनम् ॥ २३ ॥

व पुत्रादि के नाशमें भी व्याकुल नहीं होता, व जो ऐसा जान सबछोड़ विरक्त होतेहैं वे मुक्त होजाते हैं उस मुक्त सनातन भगवान्को योगीलोग देखते हैं । २० । संन्यास करके भी मूर्खों की संगति न करनी चाहिये, क्योंकि लौकिक मनुष्य अपने गुरुओंकी शिक्षासे मद्य मांस परस्त्रीसेवनादि पापरूप गह्वरों को छिपातेहैं, जैसे सर्प अन्यको भयभी देते हैं पर बिलादि में छिपकर अपने को छिपातेहैं, उन बाहरसे रमणीय मद्य मांसादिकों में पड़कर मूढ मोहित होवेहैं जैसे अपने सुन्दर मार्ग में चलते हुये पुरुषोंको मद्य मांसादि भक्षण अपवित्र मतोंके उपदेश से दाम्भिकलोग लोगों को नरकमें पहुँचाने के लिये भुलादेते हैं इससे अच्छीतरह परीक्षा लेकर जिसके लाभके लिये संगति करनीचाहिये उस सनातन भगवान् को योगी देखते हैं । २१ । जो लोग जीवन्मुक्त हैं वे ऐसा कहते हैं कि हम सदा असत् देहेन्द्रियोंसे सुख दुःख जन्म जरा मरणवान् कियेगये पर असत्कृत न होवें क्योंकि मृत्युभी तो नहीं है न जन्मही है न मोक्षभी हमको कहींसे नहीं है क्योंकि जब बन्धन होता है तब मुक्ति होती है वह तो हम को हैही नहीं हमको योगीलोग देखते हैं । २२ । वह ब्रह्मवित् साधु कर्म से उत्कृष्ट नहीं होता व असाधु कर्म से अपकृष्ट नहीं होता क्योंकि मनुष्यों में वह सदा समान ब्रह्मविद्रूप दिखाई देता है, वह ब्रह्मविद्रूप ब्रह्मलोकमें भी समानही दिखाई देताहै क्योंकि पाप पुण्य दोनों का स्पर्श उस में नहीं रहता, इसप्रकार पूर्वोक्त प्रकार से योगयुक्त ब्रह्मविद्रूप मधवस्तु एकरसरूप ब्रह्मके पीनेकी इच्छा करताहै

He who knows this, turns his thoughts away from the world and sees the eternal Lord 20. A sanyasi should not sit in the society of the wicked, for worldly men conceal their sins from their elders as a serpent which is the cause of danger to others, hides itself in holes. Fools are deceived by the outward beauty of wine and flesh. The use of such things leads the virtuous towards sin and hell. The eternal Lord for the sake of whom people seek good society is seen by the yogi. Those who have attained salvation during their life time, say that they were often subjected to happiness, misery, birth, old age and death on account of their wicked sense organs, but did not lose heart and now we are free from death, birth and salvation, because we are not bound by any ties and the yogis see us. One who knows Brahm, is not raised by good deeds nor lowered by wicked

नास्यातिवादाहृदयंतापयन्ति नानधीतंनाहुतमग्निहोत्रम् । मनोब्राह्मींलघुतामादधीत प्रज्ञाञ्चास्यैनामधीरालभन्ते। योगि० ॥ २४ ॥ एवंयःसर्वभूतेषु आत्मानमनुपश्यति। अन्यत्रान्यत्रयुक्तेषु किंसशोचेत्ततःपरम् ॥ २५॥ यथोदपानेमहतिसर्वत संप्लुतोदके। एवंसर्वेषुवेदेषु आत्मानमनुजानतः ॥ २६ ॥ अंगुष्ठमात्रःपुरुषोमहात्मान नदृश्यते-ऽसौहृदिसन्निविष्टः । अजश्चरो दिवारात्रमतन्द्रितश्च सतंमत्वाकविरास्तेप्रसन्नः॥२७॥ अहमेवस्मृतोमातापिता पुत्रोऽस्म्यहंपुनः । आत्माहमपिसर्वस्य यच्चनास्तियदस्तिच

ऐसे ब्रह्मविद्रूप सनातन ब्रह्म भगवान्को योगीलोग देखते हैं ।२३। इसब्रह्मवित्के हृदयको निन्दा वचन नहीं सन्तप्त कराते, किन्तु इस ब्रह्मवित् को ब्रह्म सम्बन्धिनी विद्या शीघ्रही प्राप्त होती है जिस विद्याको पाकर सबको वह प्राज्ञदेखताहै उस ऋतम्भरानाम ब्रह्मविद्या को ग्रहण करना चाहिये जिसको ध्यानीलोग प्राप्तहोते हैं और जिसको निन्दा वचनादि नहीं ताप कराते उससे अभिन्न सनातन ब्रह्म भगवान्को योगीलोग देखतेहैं । २४ । इस प्रकार जो सब प्राणियोंमें लगेहुये आत्मागुरु वचनको देखताहै वह अन्यत्र दारादिकों में व अन्यत्र कर्मादिकों में युक्त पुरुषों में क्या शोचे कुछभी न शोचे किन्तु वेहीलोग शोच करें । २५ । जैसे बड़ेभारी तड़ागादिमें भी जितने जलसे स्नान पानादिका कामचलताहै उतनेही से लोगोंका प्रयोजन रहता है ऐसेही सबवेदों में आत्मज्ञानीका प्रयोजन जितने से है उतनाही ग्रहण करे बहुत पुस्तक भार लादनेका कुछ प्रयोजन नहीं । २६ । दिन रात्रि जगत्की शिक्षाके लिये घूमते हुये अज महात्मा व्यापक जोकि अंगुष्ठमात्र रूप हृदय में बैठाहुआ दिखाई देताहै उसको आत्मामान कवकृतहो इन्द्रियों के विषयों से निवृत्तहो प्रसन्नतापूर्वक आत्मज्ञानी टिका रहताहै ।२७। व वह ब्रह्मविद्‌ात्मा ऐसामानताहै कि इस

ones; for, among men he looks like Brahm who remains unchanged even in salvation and is not affected by good and bad deeds: the yogi sees such eternal Brahm. He who knows Brahm; is not angry with one who insults him. He soon learns the sacred knowledge with the help of which he sees all. You should learn the sacred knowledge known as Ritamblhara which can be got by one who meditates on Brahm whom yogis know. Thus, he who sees self in all the living beings can not mourn for relations, although he is mourned by them. One who knows self, takes out of the Vedas as much as concerns himself as one takes as much water out of a large lake as one needs. Wandering day and night to teach the world and knowing the Omnipresent, Unborn and the Great One who is seen of the size of a thumb within breasts, the Brahm-gyani is satisfied and removes his thoughts from all worldly cares. He who knows Brahm, thinks himself to be the mother, father, son, soul and all in all of the world. He thinks himself to be the ancestor, father and son of

॥ २८ ॥ पितामहोऽस्मिस्थविरः पितापुत्रश्चभारत । ममैवयूयमात्मस्था नमेयूयंनवो ऽहम् ॥ २९ ॥ आत्मैवस्थानंममजन्म चात्माओतपोतोऽहमजरः प्रतिष्ठः । अजश्चा- होरात्रमतन्द्रितोऽहं मांविज्ञायकविरास्तेप्रसन्न ॥ ३० ॥ अणोरणीयान्सुमनाः सर्व- भूतेषुजाग्रति । पितरंसर्वभूतेषु पुष्करेनिहितंविदु ॥ ३१ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि सनत्सुजातपर्वणि सनत्सुजातवाक्ये
पञ्चचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४६ ॥

समाप्तञ्च सनत्सुजातपर्व ॥

जगत् के माता पिता पुत्रादि सब हमीहैं, व सबके आत्माभी हमीहैं, और कुछ भूत भव्य भवत् नहींहै सब हमीहैं ।२८। व पितामहादि वृद्धभी इससंसारके हमीं हैं व पिता पुत्रभी हमींहैं व तुमलोग हमारेही आत्मामें टिकेहो व फिरभी तुम हमारे नहींहो न हम तुम्हारे कोईहैं, किन्तु आत्माही हमारास्थानहै व आत्माही हमाराजन्महै आत्माही हममें ओतप्रोतहै अजर अमर सब आत्मा हमहैं, व अज अद्वैत जगत्को शिक्षा के लिये रात्रि दिन अनालसहो हमीं फिरतेहैं व हमींको जान आत्मज्ञानी प्रसन्नहो इन्द्रियों के विषयसे अलग प्रसन्नहो बैठारहताहै । ३० । निर्गुण ब्रह्म अति सूक्ष्महै और इसलिये अति दुर्लभहै वही इस सब जगत्को उत्पन्न करके सबके हृदय में वास करता है इसलिये उसका नाम सर्वज्ञहै ३१

---

the world and sees the worlds staying within himself and yet seprate. He knows that the soul is his dwelling, birth place and frame work, that he himself is free from old age, death and birth as well as the teacher of the world and that by knowing him atmagyani is pleased to keep himself seprate from the worldly desires. Nirgun Brahm is very subtile and therefore very hard to be attained to. Having produced the whole world He resides within the breast of every living being and therefore He is called All-knowing. 31.



अथ यानसन्धिपर्व ॥

वैशम्पायनउवाच । एवंसनत्सुजातेन विदुरेणचधीमता । सार्द्धंकथयतोराज्ञः साव्यतीयायशर्वरी ॥ १ ॥ तस्यांरजन्यांव्युष्टायां राजानः सर्वएवते । सभामाविविशुर्हृष्टाः सूतस्योपदिदृक्षया ॥२॥ शुश्रूषमाणाःपार्थानां वाचोधर्मार्थसंहिताः । धृतराष्ट्रमुखाः सर्वे ययूराजसभां शुभाम् ॥ ३ ॥ सुधावदातांविस्तीर्णां कनकाजिरभूषिताम् चन्द्रप्रभां सुरुचिरां सिक्तांचन्दनवारिणा ॥ ४ ॥ रुचिरैरासनैस्तीर्णां काञ्चनैर्दारवैरपि । अश्मसारमयैर्दान्तैः स्वास्तीर्णैः सोत्तरच्छदैः ॥५॥ भीष्मोद्रोणःकृपः शल्यः कृतवर्माजयद्रथः । अश्वत्थामाविकर्णश्च सोमदत्तश्चबाह्लिकः ॥ ६ ॥ विदुरश्चमहाप्राज्ञोयुयुत्सुश्चमहारथः । सर्वेचसहिताः शूराः पार्थिवाभरतर्षभ ॥ ७ ॥ धृतराष्ट्र

अध्याय ४७ ॥

इतनी कथा कह वैशम्पायनजी फिर जनमेजयजी से बोले कि इसप्रकार धीमान् सनत्सुजातजी व विदुरजीके साथ बातकरतेहुए राजा धृतराष्ट्रको वह रात्रि बीतगई । १ । उस रात्रिके बीतने पर सब राजालोग संजय को देखनेकी इच्छा से राजसभामें आये ।२। धर्म अर्थयुक्त पाण्डवों की वार्त्ता सुनने की इच्छा से धृतराष्ट्रादि सब राजालोग, अमृत समान उज्ज्वल, सुवर्ण से भूषित, अति सुन्दर, चन्द्रमाके समान प्रकाशित, अतिमनोहर चन्दनादि सुगन्धित जलसे सींचीहुई, रुचिर चित्र विचित्र सुवर्णके काष्ठों के उत्तम २ पत्थरोंके हाथीदांतोंके कुरसी आदि आसनों से भरीहुई व उनके नीचे चटापटीके बिछौने बिछीहुई बड़ीभारी राजसभामें गये । ६ । उनमें भीष्मजी, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य, राजाशल्य, कृतवर्म्मा, जयद्रथ, विकर्ण, सोमदत्त, वाह्लिक देशका राजा विदुरजी, महारथ महारथ युयुत्सु व और भी जो बड़े २ शूरवीर राजालोग थे वे धृतराष्ट्रजी को आगे कर उस शुभसभा में बैठे । ७ । व दुश्शासन, चित्रसेन, शकुनि, सौबल, दुर्मुख,

CHAPTER XLVII

Vaishampayan said to Janmejaya that Dhritrashtra passed the whole of that night in conversation with Sanatsujat and Vidur. The next morning he came out to see Sanjaya and to hear Yudhishthir's words, full of *dharm* and *arth*, there came with him all the rajas into the court splendid like ambrosia, inlaid with gold, very beautiful, shining like the moon very charming, sprinkled over with sandal and other sweet scents and furnished with beautiful golden seats made of wood, stone and ivory and precious carpets. There sat with Dhritrashtra Bhishma, Dronacharya, Kripacharya, King Shalya, Kritvarma, Jayadrath, Ashwathama, Vikarn, Somdatta, Valhik, Vidur, Yuyutsa and other great warriors. Dushasan, Chitrasen, Shakuni, Souval, Durmukh, Dussah, Karan, Uluk, Vivinshati and

पुरस्कृत्य विविशुस्तांसभांशुभाम् । दुःशासनश्चित्रसेनः शकुनिश्चापिसौबलः ॥ ८ ॥ दुर्मुखोदुःसहः कर्ण उलूकोथविविंशतिः । कुरुराजंपुरस्कृत्य दुर्योधनममर्षणम् ॥९॥ विविशुस्तांसभांराजन सुराः शक्रसदोयथा । आविशद्भिस्तदाराजन शूरैः परिघबाहुभिः ॥ १० ॥ शुशुभेसासभाराजन सिंहैरिवगिरेर्गुहा । तेप्रविश्यमहेष्वासाः सभांसवेंमहौजसः ॥ ११ ॥ आसनानिविचित्राणि भेजिरेसूर्य्यवर्चसः । आसनस्थेषुसर्वेषु तेषुराजसुभारत ॥ १२ ॥ द्वास्थोनिवेदयामास सूतपुत्रमुपस्थितम् । अयंसरथआयातियोऽयासीत् पाण्डवान्प्रति ॥ १३ ॥ दूतोनस्तूर्णमायातः सैन्धवैसाधुवाहिभिः । उपेयायसतुक्षिप्रं रथात्प्रस्कन्द्यकुण्डली । प्रविवेशसभांपूर्णां महीपालैर्महात्मभिः ॥ १४ ॥ सञ्जय उवाच । प्राप्तोऽस्मिपाण्डवान् गत्वातद्विजानीतकौरवाः । यथावयःकुरून्सर्वान् प्रतिनन्दन्तिपाण्डवाः ॥ १५ ॥ अभिवादयन्तिवृद्धांश्च वयस्यांश्च

दुःसह, कर्ण, उलूक, विविंशति, ये सबलोग असहनशील महामानी कुरुराज दुर्योधनको आगेकर उस सभा में पैठे जैसे देवतालोग इन्द्रकी सभा में पैठते हैं । ९ । उससमय परिघ समान लम्बी बाहों के शूरवीरों के पैठने से वह राजसभा सिंहों के पैठने से पर्वत की कन्दराके समान शोभित हुई । १० । व वे महापराक्रमी बड़े २ धनुर्द्धर लोग सभामें पैठ सूर्य्यवत् प्रकाशित चित्र विचित्र आसनों पर जा बैठे । ११ । हे राजन् जब सब राजा लोग आसनों पर बैठचुके तो द्वारपालने आकर कहा कि सूतके पुत्र संजयजी आयेहैं । १२ । देखो ये संजय जो रथपर चढ़ पांडवों के पासगये थे वे हमारे यहां के खूब बहुत अच्छे चलनेवाले घोड़े लगेहुये रथपर चढ़े बड़ी शीघ्रता से चले आतेहैं । १३ । द्वारपाल ऐसा कही रहाथा कि कुण्डल धारणकिये संजय झट रथ से उतर आपहुँचे व महात्मा राजाओंसे भरीहुई उस सभामें पैठे ।१४। व बोले कि हे कौरवलोग हम पांडवों के समीप गयेथे अब आये हैं यह सबलोग जानो, पाण्डवलोग अवस्था के अनुरूप सब कौरवों को अभिनन्दित करते हैं । १५ । व सब वृद्धोंको प्रणाम करते व अपनी अवस्था

others sat round Duryodhan the unforbearing and proud king of Kurus, as gods sit round Indra. With the long armed warriors the court looked like a mountain cave with lions sitting in it. 10. The great archers enterned the court and sat on seats of different sorts shining like the sun. When all the kings had thus seated themselves in the court, the gate keeper announced the arrival of Sanjaya the son of Sut, saying, "See, here is Sanjaya who had gone to the Pandavas. That messenger of ours coming here on a chariot drawn by swift horses." While the gatekeeper was saying this Sanjaya who were earrings, came down from the chariot and entered the court full of rajas. "Let all the present know," said Sanjaya, "that I have come back from the Pandavas to whom I was sent. The Pandavas

वयस्यवत् ।. युनश्चाभ्यवदन्पार्थाः प्रतिपूज्ययथावयः ॥ १६ ॥ यथाहंधृतराष्ट्रेण शिष्टःपूर्वमितोगतः । अब्रुवंपाण्डवान्गत्वा तन्निबोधतपार्थिवाः ॥ १७ ॥

इति महा० उद्योगपर्वणि यानसंधिप० संजयप्रत्यागमने
सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४७ ॥

धृतराष्ट्रउवाच । पृच्छामित्वां सञ्जयराजमध्ये किमब्रवीद्वाक्यमदीनसत्त्वः । धनञ्जयस्तातयुधां प्रणेतादुरात्मनां जीवितच्छिन्महात्मा ॥ १ ॥ सञ्जयउवाच । दुर्योधनोवाचमिमां शृणोतुयदब्रवी दर्जुनोयोत्स्यमानः । युधिष्ठिरस्यानुमतेमहात्मा धनञ्जयःशृण्वतःकेशवस्य ॥२॥ अन्वत्रस्तोबाहुवीर्यं विदानउपह्वरे वासुदेवस्यधीरः । अवोचन्मांयोत्स्यमानः किरीटीमध्येब्रूया धार्तराष्ट्रंकुरूणाम् ॥ ३ ॥ संशृण्वतस्तस्य

वालों से उनके योग्य मिलती भेंटते हैं, व अवस्थाके अनुसार युवालोगों से भी यथोचित कहा है । १६ । हे राजाकोगो जिसप्रकार धृतराष्ट्रजी की शिक्षासे हम यहां से गयेथे सब पांडवों से कहा उन्हों ने जो कहा सुनो । १७ ।

अध्याय ४८ ॥

धृतराष्ट्रजी ने पूंछा कि हे संजय अब हम तुमसे यह पूंछते हैं कि दुष्टात्माओं के प्राण नाशक व संग्रामों के नायक महात्मा अर्जुन वीरने राजसभा में कौन वाक्य कहाहै । १ । संजयजी बोले, कि युधिष्ठिरजी की सम्मति से व कृष्णचन्द्रजीके सामने युद्ध करनेकी इच्छासे महात्मा अर्जुनजी ने जो वचन कहाहै वह दुर्योधन चित्त लगाय सुनें ।२। युद्ध करनेकी इच्छा किये व अपने बाहों का बल जान महारणधीर अर्जुनजी ने कृष्णचन्द्रजी के समीप निर्भयहो कहा कि सब कुरुवंशियों के सामने दुर्योधनसे कहना । ३ । पर

---

great all the Kauravas in the order of their ages: they send their obeisance to the elders, love to the equals and good wishes to those who are younger than them. I have rendered, kings, the message of Dhritrashtra to the Pandavas; now hear what they say in reply." 17.

CHAPTER XLVIII

"Tell me Sanjaya," said Dhritrashtra, "the words of brave Arjun the destroyer of the wicked and conductor of war." "In consultation with Yudhishthir and Shree krishn and desiring war," said Sanjaya, "Arjun the great said the following words which Duryodhan will attentively hear. Desirous of war and knowing the strength of his own arms, Arjun, the wise in battle, spoke fearlessly in the presence of Shree Krishn and directed me to repeat his words in the

दुर्भाषिणोवै दुरात्मनःसूतपुत्रस्यसूत । योयोद्धुमाशंसति मांसदैवमन्दप्रज्ञः कालपक्वो ऽतिमूढः ॥ ४ ॥येचैराजानः पाण्डवायोधनायसमानीताः शृण्वतांचापितेषाम् । यथा समग्रंवचनंमयोक्तं सहामात्यंश्रावयेथानृपंतत् ॥ ५ ॥ यथानूनंदेवराजस्य देवाशुश्रूष न्तेवज्रहस्तस्यसर्वे । तथाशृण्वन्पाण्डवाः सृञ्जयाश्चकिरीटिनावाचमुक्तांसमर्थाम् ६ । इत्यब्रवीदर्जुनोयोत्स्यमानो गाण्डीवधन्वालोहितपद्मनेत्रः । नचेद्राज्यंमुञ्चतिधार्त राष्ट्रो युधिष्ठिरस्याजमीढस्यराज्ञः ॥ ७ ॥ अस्तिनूनंकर्मकृतंपुरस्ताद निर्विष्टपापकंधा र्त्तराष्ट्रैः । येषांयुद्धंभीमसेनार्जुनाभ्यां तथाश्विभ्यांवासुदेवेनचैव ॥ ८ ॥ शैनेयेनध्रुव मात्तायुधेन धृष्टद्युम्नेनाथशिखण्डिनाच । युधिष्ठिरेणेन्द्रकल्पेनचैव योपध्यानान्निर्दहेद्

ऐसे समयमें कहना जब । कि मन्दबुद्धि, अतिमूढ़ कालके समीप आजाने से शिथिल सदा दुष्ट वचन बोलनेवाला दुष्टात्मा कर्णभी सुनताहो जो हमसे सदायुद्ध करनेकी इच्छा किये रहता व सबके अपनी बड़ाई भी किया करता है । ४ । व जिन राजाओं को पांडवों से युद्ध करनेके लिये दुर्य्योधनने बुलाया है उनकोभी सुनाकर कहना, जिसमें हमारे कहे वचन अमात्ययुक्त राजासुनें । ५ । व जिसप्रकार सब देवतालोग देवराजके वचन सुनतेहैं उसी प्रकार अर्जुनजी की समर्थ बाणी संजयवंशी व पांडवोंने सुनी है । ६ । यह वचन गाण्डीव धनुर्द्धारी अरुणनेत्र युक्त अर्ज्जुनजीने युद्ध करनेपर उद्यतहोकर कहाहै कि जो अजमीढ़ वंशके राजा युधिष्ठिरजी का राज्य दुर्य्योधन न छोड़ेंगे तो । ७ । जानो पूर्व समयका कियाहुआ पाप अभी दुर्य्योधनादिकों का विद्यमानही है उन्होंने उसका फल अभी भोग नहीं किया, क्योंकि उनलोगोंका युद्ध भीमसेन अर्ज्जुन नकुल सहदेव व कृष्णचन्द्रजीसे ८ तथा शैनेय आयुध ग्रहण किये धृष्टद्युम्न शिखंडी व इन्द्रतुल्य पराक्रमी युधिष्ठिरजी से होगा जो युधिष्ठिरजी जैसेही अपकार करने की चिन्तना करेंगे वैसेही पृथ्वी व स्वर्ग

---

presence of all the Kauravas and Duryodhan when Karan the foolish, unwise, unnerved on account of the nearness of death, ill-natured, reviler and boaster who is ever desirous of fighting with the Pandavas be near as well as the kings who have come to fight against the Pandavas at the call of Duryodhan. The Sanjayas and the Pandavas have heard the words of Arjun as the gods do the words of Indra. Desirous of war, Arjun the wielder of Gandiv bow said the following words with eyes red in anger:—"If Duryodhan will not give up the throne of Yudhishthir, he will suffer for the former wrongs he has done us; for he will have to cope with Bhim, Arjun, Nakul, Sahadev, Shree Krishna, Shaineye, Dhrishtadyumna, Shikhandi and Yudhishthir who with his anger can destroy the earth and heaven. We shall

गांदिवञ्च ॥ ९ ॥ तेश्रेयोऽद्धुदमन्यतेपार्थराष्ट्रो निर्वृत्तोर्थः सकलः पाण्डवानाम् । मा तत्कार्षीः पाण्डवस्यार्थ हेतोरुपैहियुद्धंयादिमन्यसेत्वम् ॥ १० ॥ यांतांवनेदुःखशय्या मवात्सीत्प्रवाजितः पाण्डवोधर्मचारी । आप्नोतुतांदुःखतरामनर्थामन्त्यांशय्यां धार्त राष्ट्रःपरासुः॥११॥ह्रियाज्ञानेनतपसादमेन शौर्य्येणाथोधर्मगुप्तयाधनेन। अन्यायवृत्तिः कुरुपाण्ड वेयानध्यातिष्ठद्धार्तराष्ट्रोदुरात्मा ॥ १२ ॥ मायोपधः प्रणिपाताज्ज्वाभ्यां तपोदमाभ्यांधर्मगुप्तयाबलेन । सत्यंब्रुवन्प्रीतियुक्तोनृतोनस्तितिक्षमाणः क्लिश्यमानो तिवेलम् ॥ १३ ॥ यदाज्येष्ठः पाण्डवः संशितात्मा क्रोधंयचवर्षपूगानसुघोरम् । अवसृष्टाकुरुषूद्वृत्तचेतास्तदा युद्धंधार्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ १४ ॥ कृष्णवर्त्मेवज्वलितः

दोनोंको भस्म करदेंगे । ९ । ऐसे हम लोगों के संग जो दुर्योधन युद्ध करना चाहवेंहैं तो बस हम पांडवोंका सब कार्य्य सिद्ध होजावगा उनको मार पूरा राज्य लेलेंगे, पांडवों के लिये आधाराज्य न दें अच्छा अब वे युद्धही करें । १० । तो जो दुःख धर्म्मचारी युधिष्ठिरजी ने वनवास में सहेहैं, उन दुःखों को समर में मरकर वहां पड़ेहुये दुर्योधन सहें । ११ । जिन कुरु पांडवेय देशोंको दुष्टात्मा अन्याय वृत्ति दुर्योधन प्राप्तहुआ है, उन देशों को लज्जा, ज्ञान तपस्या दम शूरता धर्म्म रक्षा व बलयुक्त युधिष्ठिरजी के विषय में अनुरक्त करो, दुर्योधन के नाश होनेपर प्रजाओं को हमारे सन्मुख करना तुम्हारा कार्य्य है उसके संग मिलाप करना तुम्हारा कार्य नहीं है यह हमसे कहा । १२ । और यहभी कि प्रणिपात, सरलता, तप, जितेन्द्रियत्व, धर्म्मरक्षा, व बल युक्त युधिष्ठिरजी ने छलकी वार्त्ता को जानकरभी नानाप्रकार के दुःख सह सत्यही बोलते रहे व क्षमाही करते रहे । १३ । जब प्रशंसा करने योग्य हमारे ज्येष्ठ भाई युधिष्ठिरजी क्रोध युक्तहो कुरुवंशियों के ऊपर अपना बहुत वर्षोंका घोर क्रोध छोड़ेंगे तब दुर्योधन युद्धका शोचकरेंगे । १४ । क्योंकि प्रथम धूम युक्तहो फिर

have gained our purpose, if Duryodhan fight with us; for we shall be able to kill him and then to rule over the whole kingdom. He must begin war, if he does not give us half the kingdom. 10. Then Duryodhan will suffer death in battle for the wrongs he had done to Yudhishthir the just. The territories of the Kauravas and the Pandavas which Duryodhan has got by unfair means, will gladly receive Yudhishthir who has modesty, asceticism, control of organs, bravery, dharm, protection and strength in his person. Yudhishthir who is respectful, straight forward, ascetic, controller of organs, protector of dharm and strong, know the deceit practiced on him, but did not leave truth and forgiveness. Duryodhan will repent of fighting when our praiseworthy brother Yudhishthir will send forth

समिद्धो यथादहेत्कक्षमग्निर्निदाघे । एवंदग्धाधार्त्तराष्ट्रस्यसेनां युधिष्ठिरः क्रोधदीप्तोन्ववेक्ष्य ॥१५॥यदाद्रष्टाभीमसेनंरथस्थं गदाहस्तंक्रोधविषंवमन्तम् । अमर्षणंपाण्डवं भीमवेगंतदायुद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ १६ ॥ सेनाग्रगंदंशितंभीमसेनं स्वालक्षणंवीरहणंपरेषाम् । घ्नन्तञ्चमूमन्तकसन्निकाशंतदा स्मर्तावचनस्यातिमानी ॥ १७ ॥ यदाद्रष्टाभीमसेनेननागान निपातितानगिरिकूटप्रकाशान । कुम्भैरिवासृग्वमतोभिन्नकुम्भांस्तदा युद्धंधार्त्तराष्ट्रोऽन्वतप्स्यत् ॥ १८ ॥ महासिंहोगावइवप्रविश्य गदापाणिर्धार्त्तराष्ट्रानुपेत्य । यदाभीमोभीमरूपोनिहन्ता तदायुद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत्॥१९॥ महाभयेवीतभयः कृतास्त्रः समागमेशत्रुबलावमर्दी । सकृद्रथेनाप्रतिमानरथौघान पदातिसं

क्रुद्ध प्रज्वलित तदनन्तर जलते हुयें व शुष्कतृणों को जलाते हुये अग्निके समान क्रोधसे प्रज्वलित युधिष्ठिरजी देखतेही दुर्योधनकी सेनाको भस्म करदेंगे । १५ । जब, गदा हाथमें लिये, रथपरचढ़े, क्रोध रूप विष उगिलते असहनशील भयंकर वेग भीमसेनजी को दुर्योधन देखेंगे तब युद्ध करनेका शोचकरेंगे अभीक्या । १६ । जब कवचादि धारण कर शत्रुओंके वीरोंको मारने वाले व क्रोध करनेपर अपने रूपसे बाहर भीमसेनजी को सेनाके आगे चलते व यमराज समान शत्रुसेना को नाशते देखेंगे तब दुर्योधन हमारे वचनका स्मरणकरेंगे । १७ । जब, पर्वताकार हाथियोंको भीमसेनजी मारे हुये व जलके समान मुखसे रक्त उगिलते हुये व मस्तक फटेहुये देखेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका शोचकरेंगे । १८ । जब गाइयों के झुंडमें पिलेहुये महासिंह के समान गदाहाथ में लिये भीमसेनजी धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मारेंगे तब दुर्योधन युद्धका शोचकरेंगे । १९ । जब, महाभय में भी निर्भय, अस्त्रविद्या में कुशल, पहुँचतेही पहुँचते शत्रुसेना के मर्दन करने

---

on the Kauravas his anger which he has curbed for many years past. Yudhishthir will burn down the Kaurava army by his angry eyes like fire which bursts out of a column of smoke and burns down dry straw. He will repent of waging war when he sees Bhimsen of unbearable temper and dreadful velocity, riding his chariot mace in hand and vomiting forth the fire of anger. He will remember my words when he sees Bhimsen the destroyer of enemies, wearing coat of mail and maddened with anger, leading the army like Yamraj to destroy the enemy's forces. He will repent of fighting when he sees elephants with broken heads vomiting blood like water by the blows of Bhimsen. He will repent of fighting when he sees Bhim killing the sons of Dhritrashtra with his mace, like a lion who enters a herd of cows. He will repent of fighting when he sees Bhimsen the

धानगदया।।पेनिघ्नन्॥२०॥निकर्षन्नागांस्तरसानिगृह्णन् यदाछेत्ता पार्थिवाग्र्यस्य सैन्यम्। छिन्दन्वनंपरशुनेवशूरस्तदायुद्धं धार्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ २१ ॥ तृणपूर्णंज्वलनेनेव दग्धं ग्रामंयथा धार्तराष्ट्रानसमीक्ष्य। पक्वंशस्यंवैद्युतेनेवदग्धंपरासिक्तं विपुलंस्वम्बलौघम् ॥ २२ ॥ हतप्रवीरंविमुखंभयार्त्तं पराङ्मुखमायशोऽनृप्रयोधम्। शस्त्रार्चिषाभीमसेनेन दग्धंतदायुद्धं धार्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ २३ ॥ उपासंगानाचरेद्दक्षिणेन वराग्रानांनकुलश्चित्रयोधी। यदारथाग्र्योरथिनः प्रचेतातदायुद्धंधार्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् २४। सुखोचितोदुःखशय्यांवनेषुदीर्घकालंनकुलोयामशेत। आशीविषःक्रुद्धइवोद्वमन्विषं तदा युद्धंधार्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ २५ ॥ त्यक्तात्मानःपार्थिवायोधनाय समादिष्टाधर्मराजेन

वाले भीमसेनजी, एक रथपर चढ़े हजारों रथोंको व पैदलों को गदासे मारते पीटते व बड़े बड़े हाथियों को बड़े वेगसे पकड़ २ बनवासीपर घर दुर्योधनकी सेनापर फेंकेंगे जैसे काटने वाले कुल्हाड़ी से वन काटते हैं, तब दुर्योधन युद्ध करने का शोच करेंगे। २१। जब अग्नि से जलते हुये छप्परदिक ग्रामके समान, व पक्व अन्न पर बिजुली पड़ने से जले हुये अन्नके तुल्य अपनी सेना दुर्योधन देखेंगे, तब युद्धका शोचकरेंगे । २२ । व जब भीमसेनजी के शस्त्रोंकी ज्वालासे भस्मवीर मारीहुई भयभीतहो भगी व बहुधा धैर्य रहित योधायुक्त अपनी सेना देखेंगे तब दुर्योधन युद्ध करने का शोचकरेंगे । २३ । व जब विचित्र विचित्र युद्ध करनेवाले नकुलजी रथपरचढ़ शत्रुके शिरोंके ढेर काट २ लगावेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका शोच करेंगे । २४ । व बड़ासुख के योग्य नकुलजी वनमें बहुत दिनों तक जो दुःखकी शय्यापर सोये हैं, वे जब क्रोधकर विषधर सर्प के समान विष उगिलेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका शोचकरेंगे । २५ । हेराजन्, युधिष्ठिरजी की आज्ञासे

---

fearless in great danger, dexterous in the art of war and destroyer of enemies, cutting and killing thousands of charioteers and foot soldiers from his chariot and hurling the elephants over the Kaurava army like a woodcutter who cuts a forest with his axe. 21. Duryodhan will repent of fighting when he sees his army like a thached village on fire or like a corn field burnt down by lighting. He will repent of fighting when he sees his army terrified and dispersed with the weapons of Bhimsen. He will repent of war when he sees Nakul the great warrior riding on his chariot and forming heaps of the heads of of Duryodhan's soldiery Nakul who is worthy of the life of ease, has passed many a night of misery in the forests; Duryodhan will repent of the waging of war when Nakul will vomit forth poison like venomous snake. When kings, ready to lay down their lives, will attack your

गूत । रथैःशुभ्रैःसैन्यमभिद्रवन्तो दृष्ट्वापश्चात्तप्स्यतेधार्त्तराष्ट्रः ॥२६॥ शिशून्कृतास्त्रान शिशुप्रकाशान् यदाद्रष्टाकौरवान्पञ्चशूरान् । त्यक्त्वाप्राणान कौरवानाद्रवन्तस्तदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ २७ ॥ यदागतोद्वादघकूजनाक्षं सुवर्णतारंरथमाततायी । दान्तैर्युक्तंसहदेवोऽधिरूढः शिरांसिराज्ञांक्षेप्स्यतेमार्गणौघैः ॥ २८ ॥ महाभयेसम्प्रवृत्तेरथस्थं विवर्त्तमानंसमरेकृतास्त्रम् । सर्वादिशःसम्पतन्तं समीक्ष्यतदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ २९ ॥ ह्रीनिषेवोनिपुणःसत्यवादी महाबलःसर्वधर्मोपपन्नः । गांधारिमाच्छंस्तुमुलेक्षिप्रकारी क्षेप्ताजनानसहदेवस्तरस्वी ॥ ३० ॥ यदाद्रष्टाद्रौपदेयान्महेषून् शूरानकृतास्त्रानरथयुद्धकोविदान् । आशीविषान् घोरविषानिवायतस्तदा युद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३१ ॥ यदाभिमन्युपरवीरघाती शरैःपरान्मेघइवाभिवर्षन् ।

प्राणछोड़ने पर उद्यत राजाओग-जब तुम्हारी सेनाके मध्य में युद्ध करने के लिये अच्छे २ रथोंपर चढ़ दौड़ेंगे तब दुर्योधन युद्ध करने का शोचकरेंगे । २६ । जब शस्त्र विद्या में कुशल युवावस्था वालों के समान प्रकाशित महा शूरवीर द्रौपदी के पांच पुत्रोंको प्राण छोड़ भागते हुये कौरवों के पीछे दौड़ते हुये देखेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका शोचकरेंगे २७ व जब अनुकूलगति शब्द रहित चक्र, सुवर्ण के तारों से खिंचे व सुशिक्षित अश्व जुते रथपर सवार व महाभय में भी निर्भय समरमें बड़े कुशल सहदेवजी को सब दिशोंमें कूदतेहुये व बाणों से राजाओं के शिर काटते हुये देखेंगे तब दुर्योधन युद्धकरने का शोच करेंगे । २९ । व जब लज्जावान् निपुण सत्यवादी महाबलवान् सब धर्मयुक्त व रण संकुल में बड़े शीघ्रकारी सहदेवजी शकुनिके ऊपर दौड़ते हुये बाण चलावेंगे तब दुर्योधन युद्ध करने का शोच करेंगे । ३० । व जब, बाण चलाने वाले शूर वीर अस्त्रविद्या में कुशल रथपर चढ़ युद्ध करने में बड़े पण्डित द्रौपदी के पुत्र प्रतिविन्ध्यादिकों को विषधर सर्पों के समान इधर उधर दौड़ते देखेंगे तब दुर्योधन युद्ध

---

army in good chariots, Duryodhan will be repenting of the war. Duryodhan will repent of his folly, when he will see the five young and valliant sons of Draupadi running after the Kauravas. Duryodhan will repent when he will see Sahadev sitting on the chariot drawn by well-trained horses with gold trappings, fearless even at the time of danger, wise in war, jumping hither and thither and cutting the heads of the rajas with his arrows. Duryodhan will repent of waging war when he will see Sahadev the modest, valliant, dextrous in war and virtuous, running swiftly on Shakuni. 30. Duryodhan will repent of waging war when he sees, running like venomous snakes, the sons of Draupadi who are skilful archers.

विगाहिताकृष्णसमः कृतास्त्रस्तदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३२ ॥ यदाद्रष्टाबाल मबालवीर्य्यं द्विषच्चमूंमृत्युमिवोत्पतन्तम् । सौभद्रमिन्द्रप्रतिमंकृतास्त्रं तदायुद्धंधार्त्तराष्ट्रो न्वतप्स्यत् ॥ ३३ ॥ प्रभद्रकाःशीघ्रनरायुवानो विशारदाःसिंहसमानवीर्य्याः । यदाक्षेप्तारोधार्त्तराष्ट्रान ससैन्यांस्तदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३४ ॥ वृद्धौविराट द्रुपदौमहारथौ पृथक्चमूभ्यामभिवर्त्तमानौ । यदाद्रष्टारौधार्त्तराष्ट्रान ससैन्यांस्तदा युद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३५ ॥ यदाकृतास्त्रोद्रुपदःप्रचिन्वन् शिरांसियूनांसमरे रथस्थः । क्रुद्धःशरैश्छेत्स्यति चापमुक्तैस्तदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३६ ॥ यदाविराटःपरवीरघाती मर्मान्तरेशत्रुचमूंप्रवेष्टा । मत्स्यैःसार्द्धमनृशंसरूपैस्तदा युद्धं

करनेका शोच करेंगे । ३१ । व जब, पर वीरघाती, अस्त्र विद्या में कुशल अभिमन्यु मेघों के समान बाण बरसाते हुये कृष्णचन्द्रजी के समान संग्राममें इधर उधर घूम शत्रुओं का मथन करेंगे तब दुर्योधन युद्धकरने का शोच करेंगे । ३२ । व जब अबल वीर्य्य बालरूप अभिमन्यु को इन्द्र समान अस्त्रविद्या में कुशल सबशत्रुकी सेनामें मृत्युसमान पहुँचे देखेंगे तब दुर्य्योधन युद्ध करनेका शोच करेंगे । ३३ । व जब सिंह समान वीर्य्य, युवावस्था को प्राप्त, बड़े शीघ्रगामी, युद्धकर्ममें बड़े विशारद प्रभद्रक लोग सैन्यसहित धृतराष्ट्रके पुत्रोंके ऊपर बाणोंकी वर्षा करेंगे तब दुर्य्योधन युद्ध करनेका शोच करेंगे । ३४ । व जब, वृद्धअवस्था को प्राप्त महारथी राजा विराट व राजा द्रुपदजी अलग २ सेनाओंके सन्मुखहो सैन्यसहित धृतराष्ट्रके पुत्रोंको देखेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका शोच करेंगे । ३५ । व जब समरमें रथपर सवारहो अस्त्र विद्यामें बड़े चतुर द्रुपदजी क्रुद्धहोकर जवानोंके शिर बाणों से काटेंगे तब दुर्य्योधन युद्धकरनेका शोच करेंगे । ३६ । व जब, परवीर नाशक विराटजी अक्रूर स्वभाव मत्स्यदेश निवासियों

Duryodhan will repent when he sees Sahadev the destroyer of enemies, dexterous in war, shooting arrows like a shower of rain and destroying enemies like Krishn. 32. Duryodhan will repent of fighting when he sees the child like but brave form of Abhimanya, like Indra in war, coming like Death on his army. Duryodhan will repent of the war, when he sees the youthful soldiers of Prabhadraks, brave like lions, shooting then arrows at the sons of Dhritrashtra. He will repent of war when he sees Drupad and the brave old king Virat, with their armies facing the Kauravas. He will repent when Drupad the brave king, cuts the heads of youthful soldiers from his chariot. Duryodhan will be sorry when king Virat

धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठंमात्स्यमनृशंसार्यरूपं विराटपुत्रंरथिनंपुरस्तात्। यदाद्रष्टादंशितंपाण्डवार्थे तदायुद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ३८ ॥ रणेहतेकौरवाणां प्रवीरे शिखण्डिनासत्तमेशान्तनूजे । नजातुनःशत्रवोधारयेयुरसंशयं सत्यमेतद्ब्रवीमि ॥ ३९ ॥ यदाशिखण्डीरथिनःप्रचिन्वन् भीष्मंरथेनाभियाता वरूथी । दिव्यैर्हयैर वमृद्नन्रथौघांस्तदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ४० ॥ यदाद्रष्टा सृञ्जयानामनीके धृष्टद्युम्नंप्रमुखेरोचमानम् । अस्त्रंयस्मैगुह्यमुवाचधीमान् द्रोणस्तदातप्स्यति धार्त्तराष्ट्रः ॥ ४१ ॥ यदाससेनापतिरप्रमेयः परामृद्नन्निषुभिर्धार्त्तराष्ट्रान् । द्रोणंरणेशत्रुसहो-भियातातदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ४२ ॥ ह्रीमान्मनीषीबलवान्मनस्वी सलक्ष्मी वान्सोमकानांप्रबर्हः । नजातुतंशत्रवोन्येसहेरन् येषांसस्यादग्रणीर्वृष्णिसिंहः ॥४३॥

सहित बलवत्तर संग्राममें शत्रुकी सेनामें पैठेंगे तब दुर्योधन युद्धकरनेका शोचकरेंगे । ३७ । व जब, सौम्य स्वभाव श्रेष्ठरूप विराटजीके ज्येष्ठ पुत्रको कवचादि धारणकिये रथपरचढ़े समरमें आगे देखेंगे तब दुर्योधन युद्धकरनेका शोचकरेंगे । ३८ । व जब कौरवोंमें श्रेष्ठवीर भीष्मजीको समरमें शिखण्डीजी मारेंगे तो हमारे शत्रु कोई न जीवेंगे यह हमसत्यही कहते हैं । ३९ । व जब रथरक्षायुक्त दिव्य घोड़ेवाले रथपर सवार शत्रुके रथ समूहोंको तोड़तेहुये व रथियोंको ढूंढ़तेहुये शिखण्डी भीष्मजीका निरादर करेंगे तबदुर्यो-धन युद्धकरनेका शोककरेंगे । ४० । व जब, संजय वंशियोंकी सेनामें आगे चलनेवाले धृष्टद्युम्नको जिस द्रोणाचार्यने अस्त्रविद्या बताईथी देखेंगे तब दुर्योधन सन्तापकरेंगे ।४१। व जब वे धृष्टद्युम्न हमारे सेनापतिहो बाणों से धृतराष्ट्रके पुत्रों व द्रोणाचार्यकोभी मारेंगे तब दुर्योधन रणमें शोच करेंगे ।४२। व लज्जावान्, बुद्धिमान्, बलवान्, मनस्वी व लक्ष्मी वान् सोमवंशियों में श्रेष्ठ वृष्णिसिंह सात्यकि जो हमलोगों के अग्रणीहैं उनका वेग और

---

the destroyer of enemies brings on his army the cruel people of Matsya. Duryodhan will be sorry when he sees the eldest son of king Virat putting on his coat of mail and riding a chariot. None of our enemies will remain alive, when brave Shikhandi kills Bhishm tht best of valliant men and Duryodhan will be sorry when Shikhandi riding on a strong chariot drawn by divine horses and breaking the line of chariots, insults Bhishma. 40 . Duryodhan will be sorry when he sees Dhrishtadyumn the leader of the Sanjayas and pupil of Dronacharya will be sorry when Dhrishtadyumn becomes the leader of our armies and kills the sons of Dhritrashtra as well as Dronacharya. No enemy will be able to oppose Satyaki the lion among the Vrishnis, best of the Lunar line, modest, wise, strong,

इष्वस्त्रनृपापानुगाद्येतिलोके युद्धेऽद्वितीयं सचिवंरथस्थम्। शिनेर्नप्तारमप्रणीमसात्यकिं महाबलंवीतभयकृतास्त्रम् ॥ ४४ ॥ महोरस्कोदीर्घबाहुः प्रमाथीयुद्धेऽद्वितीयःपरमास्त्रवेदी। शिनेर्नप्तातालमात्रायुधोयं महारथोवीतभय कृतास्त्रः ॥ ४५ ॥ यदाशिनीनामधिपो मयोक्त शरैःपरान्मेघ इवप्रवर्षन्। प्रच्छादयिष्यत्यरिहा योधमुख्यांस्तदा युद्धाच्चिरात्प्रेोन्वतप्स्यत् ॥ ४६ ॥ यदाधृतिक्कृत्येयोत्स्यमानः सदीर्घबाहुर्दृढधन्वा महात्मा। सिंहस्येवगन्धमाघ्रायगावः संवेष्टन्तेशत्रवोऽस्माद्रणाग्रे ॥ ४७ ॥ सदीर्घबाहुर्दृढधन्वामहात्मा भिन्द्याद्गिरीन संहरेत्सर्वलोकान्। अस्त्रकृतीनिपुणःक्षिप्रहस्तो दिविस्थित सूर्यइवाभिभाति ॥ ४८ ॥ चित्रःसूक्ष्मःसुकृतोयादवस्य अस्त्रेयोगो

शत्रु न सहेंगे । ४३ । दुर्योधनसे कहना कि ऐसे चाहे उनकी विजयभी होजाती पर अब राज्य पानेकी इच्छा न करें क्योंकि हमलोगों ने अब युद्धमें अद्वितीय महाबली, भीमबल अस्त्रविद्यामें निपुण शिनि के नाती, सात्यकिजी को अपना सचिव बनाया है । ४४ । बड़ी चौड़ी, छातीवाले, दीर्घबाहु, मथनशील, युद्धमें अद्वितीय, परमास्त्र वेत्ता, भयरहित, ताल प्रमाण आयुध धारणकिये, महारथी, अस्त्रविद्यामें कुशल, शिनिकेनाती शिनियोंके स्वामी सात्यकिजी जबहमारे कहनेसे शत्रुओंके ऊपर बाण बरसावेंगे जैसे मेघ जल बरसाते हैं व ये शत्रुनाशक उनकी ओरके प्रधान योधाओं को आच्छादितकरेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका सोचकरेंगे । ४६ । व जब युद्ध करनेकी इच्छा से दीर्घबाहु दृढ धनुर्द्धारी महात्मा सात्यकि जीकी गंधि शत्रुलोग पावेंगे तो जैसे सिंहकी महक पाय गाइयां भागती हैं वैसेही रणसे वेलोग भागेंगे ॥ ४७ ॥ क्योंकि महात्मा दीर्घबाहु दृढ़ धनुर्द्धारी अस्त्रविद्यामें निपुण बहुतजल्द हाथ चलानेवाले ये सात्यकि जी पर्वतों को फोड़ डालेंगे व सबलोकों को हरलेंगे, व आकाश में टिकेहुवे सूर्य के समान शोभितहो

great, fortunate and the leader of our armies Tell Duryodhan that he should give up all hope of victory as we have contracted friendship with Satyaki the grandson of Shini, matchless in war, of dreadful strength and perfect in the knowledge of weapons Duryodhan will be sorry for making war when Satyaki of broad breast, having long arms, diligent, matchless in fighting, perfect in the knowledge of arms, fearless, bearing weapons like a palm tree, great charioteer, perfect in archery, grandson of Shini and leader of the Shinis, will shoot his arrows like a shower of rain and at our request will kill the warriors of our enemies The enemies will run away at the smell of Satyaki the great, of long arms and great skill in archery, as cows disappear at the smell of a lion, for, he will break mountains, will

वृष्णिसिंहस्यभूयान् । यथाविधंयोगमाहुःप्रशस्तं सर्वैर्गुणैःसात्यकिस्तैरुपेतः ॥ ४९ ॥ हिरण्मयं श्वेतहयैश्चतुर्भिर्यदा युक्तं स्यन्दनंमाधवस्य । द्रष्टायुद्धे सात्यकेर्धार्त्तराष्ट्रस्तदा तप्स्यत्यकृतात्मासमन्दः ॥ ५० ॥ यदारथं हेममणिप्रकाशं श्वेताश्वयुक्तंवानरकेतुमुग्रम् । दृष्ट्वाममाप्यास्थितं केशवेनतदा तप्स्यत्यकृतात्मासमन्दः ॥५१॥ यदामौर्व्यास्तलनिष्पेषमुग्रं महाशब्दंवज्रनिष्पेषतुल्यम् । विधूयमानस्य महारणेमया सगाण्डीवस्य श्रोष्यातिमन्दबुद्धिः ॥ ५२ ॥ यदामूढोधृतराष्ट्रस्य पुत्रस्त्वग्रा युद्धेदुर्मतिर्दुःसहायः । दृष्ट्वासैन्यं बाणवर्षान्धकारे प्रभज्यन्तं गोकुलवद्रणाग्रे ॥५३॥ बलाहकादुच्चरतःसुभीमान् विद्युत्स्फुलिङ्गानिव घोररूपान् । सहस्रघ्नानद्विषतांसङ्गरेषु अस्थीञ्छिदोमर्मभिदःसुपुङ्खान् ॥ ५४ ॥ यदाद्रष्टाज्यामुखाद्बाणसंघान् गाण्डीवमुक्तानापततःशिताग्रान्।

गे । ४८ । क्योंकि ये शत्रुओं के विस्मयकारी, रमणीयरूप, सुशिक्षित इनका अस्त्र योग है व जैसा वृष्णिसिंह श्रीकृष्णचन्द्रजी का प्रशस्त बड़ाभारी अस्त्रविद्या में योगहै वैसाही सब गुण युक्त सात्यकिजी का है । ४९ । व जब श्वेत चारघोड़े वाले सुवर्णका रथ मधवंश में उत्पन्न सात्यकि का देखेंगे तब मंदबुद्धि दुर्योधन संताप करेंगे । ५० । व जब सुवर्ण मणियों से प्रकाशित, श्वेतरंग के घोड़ों से युक्त पताका में वानर चिह्नित अतिउग्र रथपर चढ़ेहुये श्रीकृष्णचन्द्र सहित हमको देखेंगे तब दुर्योधन मंदबुद्धि संतापकरेंगे । ५१ । व जब महारणमें मेरे चढ़ायेहुये गांडीव धनुषकी प्रत्यंचाका वज्र के शब्द के समान शब्द वह मंदबुद्धि दुर्योधन सुनेगा तब वह दुष्टधृतराष्ट्र का पुत्र जिस के सहायकभी दुष्टहैं सन्तप्त होगा, व बाणोंकी वर्षा के अन्धकार में वर्षाकी अंधियारी में भागतीहुई गाइयों के समान भागतीहुई अपनी सेनाको देखेगा तबभी संतप्तहोगा । ५३ । व जब बादलसे निकले हुये घोररूप भयंकर बिजुली की चिंगारियों के समान, गांडीव धनुषकी प्रत्यंचासे निकले

---

conquer all the worlds and will shine like the sun in the sky. He is the terror of all enemies and beautiful and his skill in arms is like that of Shree Krishn the lion of the Vrishnis. Duryodhan will be sorry when he sees the golden chariot of Satyaki, drawn by four white horses, 50. Duryodhan of unsound mind will be sorry when he sees Shree Krishn and myself in the great chariot decked with gold and jewels, drawn by white horses and having on its banner the picture of Hanuman. Duryodhan will repent of his folly when he hears the vajra like sound of my Gandiv bow in the great battle and sees his army scampering like cows under the shower of my arrows darkening the air like clouds. Duryodhan will repent of his folly when he sees thousands of his soldiers, horses and elephants cut

हयानगजान्बाणैश्चाददानास्तदा युद्धंधार्त्तराष्ट्रोऽन्वतप्स्यत् ॥ ५५ ॥ यदामन्दः परबाणान् विमुक्तान्ममेषुभिर्ह्रियमाणान् प्रतीपम् । तिर्य्यग्विध्याच्छिद्यमानान् पृषत्कैस्तदा युद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ५६ ॥ यदाविपाठा मद्भुजविप्रमुक्ता द्विजाः फलानीव महीरुहाग्रात् । प्रचेतार उत्तमांगानियूनां तदायुद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ५७ यदाद्रष्टापततःस्यन्दनेभ्यो महागजेभ्योऽश्वगतानसुयोधनान् । शरैर्हतानपतितांश्चैव रंगे तदायुद्धंधार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ५८ ॥ असम्प्राप्तानस्त्रपथंपरस्य यदाद्रष्टानश्यतो धार्त्तराष्ट्रान् । अकुर्वतःकर्मयुद्धे समन्तात्तदायुद्धं धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत्॥ ५९ ॥ पदातिसंघान्रथसंघान् समन्ताद्व्यात्ताननः कालइवाततेषुः । प्रणोत्स्यामि ज्वलितैर्बाणवर्षैः शत्रूंस्तदातप्स्यति मन्दबुद्धिः ॥ ६० ॥ सर्वादिशःसम्पततारथेन रजोध्वस्तंगांडी-

---

हुये तीक्ष्णबाण समूहों को संग्राममें हजारों शत्रुओं को नाशते व हाथी घोड़े रथोंकोभी प्रसते हुये देखेंगे तब मूढ़दुर्योधन युद्धकरने का शोचकरेंगे । ५५ । व जब हमारे प्रेरित बाणों से कटेहुये अपनी ओर के चलाये बाणोंको मंददुर्योधन देखेंगे तब युद्धकरने का शोचकरेंगे । ५६ । व जब हमारे भुजोंसे प्रेरित बाण वृक्षसे गिरेहुये फलोंको चुनतेहुये पक्षियों के समान युवान पुरुषों के शिरचुनेंगे तब दुर्योधन युद्ध करने का शोचकरेंगे । ५७ । व जब रथ हाथी घोड़ोंपरसे हमारे बाणों से मारेहुये वीरोंको रंगभूमि में गिराये देखेंगे तब दुर्योधन युद्ध करनेका शोचकरेंगे । ५८ । व जब धृतराष्ट्रकी की सेनावालों को नष्टहोते व शत्रुके अस्त्र मार्गोंको न पाप्तहोते व कुछभी कर्म न करते देखेंगे तब दुर्योधनयुद्ध करने का शोच करेंगे । ५९ । व जब पैदलोंके समूह तथा, रथोंके समूहों को मुखफैलाये कालके समान, बाण फैलायेहुये हम ज्वलित बाणों से शत्रुओं को दूर बहावेंगे तब मन्दबुद्धि दुर्योधन सन्ताप करेंगे । ६० । व जब हमारे गाण्डीवसे छिन्न भिन्नहो रथसेगिर अपनी सेनाको धूलमें

---

down with my arrows shot from the Gaudiv bow like the dreadful lighting discharged from clouds. Duryodhan will come to grief when he sees his arrows out down by those shot by me. Duryodhan will repent of fighting when the arrows shot from my bow gather the heads of his soldiers like birds picking the fruits fallen from trees. He will be sorry when he sees his warriors fallen from chriots, horses and elephants with my arrows. Duryodhan will be sorry for fighting when he sees Dhritrashtra's army being destroyed without being able to do anything and unable to withstand the force of our arms. Duryodhan the short sighted will be sorry of fighting when he sees his foot-soldiers and charioteers with gaping mouths suffering death from my arrows. 60. He will repent when he sees

वेनमक्तचम् । यदाद्रष्टा रथबलं तम्भमूढं तदापश्चात्तप्स्यति मन्दबुद्धिः ॥ ६१ ॥ कान्दिग्भूतं छिन्नगात्रं विसंज्ञं दुर्य्योधनो द्रक्ष्यति सर्वसैन्यम् । हताश्ववीराग्र्यनरेन्द्रनाग पिपासितं श्रान्तपत्रं भयार्त्तम् ॥ ६२ ॥ आर्त्तस्वरं हन्यमानं हतञ्च विकीर्णकेशास्थिकपालसंघम् । प्रजापतेः कर्म्म यथार्थनिष्ठितं तदाद्रष्टा तप्स्यति मन्दबुद्धिः ॥ ६३ ॥ यदा रथे गाण्डिवं वासुदेवं दिव्यं शङ्खं पाञ्चजन्यं हयांश्च । तूणावक्षय्यौ देवदत्तञ्च मां च द्रष्टा युद्धे धार्त्तराष्ट्रोन्वतप्स्यत् ॥ ६४ ॥ उद्वर्त्तयन्दस्युसङ्घान् समेतान् प्रवर्त्तयन्युगमन्यद्युगान्ते । यदाधक्ष्याम्यग्निवत् कौरवेयांस्तदा तप्ता धृतराष्ट्रः सपुत्रः ॥ ६५ ॥ सभ्राता वै सहसैन्यः सभृत्यो भ्रष्टैश्वर्य्यः क्रोधवशो हतचेताः । दर्पस्यान्ते निहतो वेपमानः पश्चान्मन्दस्तप्स्यति धार्त्तराष्ट्रः ॥ ६६ ॥ पूर्वाह्णे मां कृतजप्यं कदाचिद्विप्रः प्रोवाचोदकान्ते मनोज्ञम् । कर्त्तव्यन्ते दुष्करं कर्म्म पार्थ योद्धव्यन्ते शत्रुभिः सव्यसाचिन् ॥ ६७ इन्द्रो

गिराव्याकुल देखेंगे तब मन्दबुद्धि दुर्योधन सन्तापकरेंगे । ६१ । दुर्योधन छिन्न भिन्नगात्र मूर्च्छित, व घोड़े हाथी वीरमरेहुये अपने सैन्यको देखेंगे तब जानेंगे । ६२ । व जब कठिन शब्दयुक्त मारे गये व मारे जातेहुये, केश हाड व खोपड़ी फैले हुये अपने सैन्योंको यज्ञ के पशुओं के समान मरेपड़े देखेंगे तब दुर्योधन मन्दबुद्धि सन्ताप करेंगे । ६३ । व जब गाण्डीव धनुष, श्रीकृष्णचन्द्र, दिव्य शङ्ख पाञ्चजन्य, घोड़े, अक्षय तूणीर, व देवदत्तनाम अर्जुनका शङ्ख इनसबको रथपर युद्धमें देखेंगे तब दुर्योधन सोच करेंगे । ६४ । व जब घोररूप धृतराष्ट्र पुत्रोंको उनके मरण समय में मार अच्छा धर्म चला, कौरवों को हम भस्म करेंगे तब पुत्र सहित धृतराष्ट्र सोच करेंगे । ६५ । भाई सैन्य भृत्य सहित भ्रष्टैश्वर्यहो क्रोधके वश भूल अल्पचित्त अहंकारके पीछे मारेजानेसे कांपते हुये दुर्योधन पश्चात्ताप करेंगे । ६६ । एक समय सन्ध्या वन्दनादि न करनेके पीछे ब्राह्मणने कहाथा कि हे

---

his soldiers lying uneasily on the dust and fallen from their chariots cut down with our arrows shot from the Gandiva Duryodhan will know better when he sees his horses elephants and warriors cut down and senseless He will repent when he sees his warriors dying in agony and dead and their hair, bones and skulls lying asunder like those of the beasts for sacrifice. Duryodhan will repent when he sees the Gandiv bow, Shree Krishna, Panchjanya the divine conch, the horses, the inexhaustible quiver of arrows and Arjun's conch known as Devadatta together with the chariot in the field of battle. Dhritrashtra and his son will both be sorry when after destroying the sons of Dhritrashtra and all the Kauravas we shall bring good rule to the country. Duryodhan will repent after losing his brothers,

यातेहरिभिर्वज्रहस्तः पुरस्ताद्याताऽरीन विनिघ्नन् । सुग्रीवयुक्तेनरथेनचाते पश्चात् कृष्णोरक्षतुवासुदेवः ॥ ६८ ॥ वव्रेचाहं वज्रहस्तान्महेन्द्रादस्मिन युद्धेवासुदेवंसहायम् । समेलब्धोदस्युवधाय कृष्णोमन्ये चैतद्विहितंदैवतैर्मे ॥ ६९ ॥ अयुध्यमानोमनसापियस्यजयंकृष्णःपुरुषस्याभिनंदेत् । एवंसर्वान्सव्यतीयादमित्रान् सेंद्रान्देवान्मानुषेनास्तिचिंता ॥ ७० ॥ सबाहुभ्यांसागरमुत्तितीर्षेन्महोदधिं सलिलस्याप्रमेयम् । तेजस्विनंकृष्णमत्यन्तशूरं युद्धेनयोवासुदेवंजिगीषेत् ॥ ७१ ॥ गिरिंयइच्छेत्तुतलेन भेत्तुंशिलोच्चयंश्वेतमतिप्रमाणम् । तस्यैवपाणिःसनखोविशीर्य्येन्न चापिकिंचित्सगिरेस्तुकुर्यात् ॥ ७२ ॥ अग्निंसमिद्धंशमयेद्भुजाभ्यां चन्द्रञ्चसूर्य्यञ्चनिवारयेत ।

अर्ज्जुन शत्रुओंके साथ कड़ दुष्कर कर्मकरो । ६७ । तुम्हारे आगे २ हरिवर्ण के घोड़ों के रथपर चढ़ शत्रुओं को नाशते हुये इन्द्रचलेंगे व सुग्रीवादि घोड़ोंके रथपर चढ़े पीछे२ कृष्णचन्द्रजी रक्षा करेंगे । ६८ । व हमने वज्र हाथमें लिये इन्द्रजीसे युद्धमें कृष्णचन्द्रजी को सहाय मांगाथा, वे कृष्णचन्द्र इन चोरों के मारने के लिये हमको सहाय मिले इस से हम जानते हैं कि देवताओंनेही यह हमारा कार्य्य किया । ६९ । वे कृष्णचन्द्र चाहें आप युद्धभी न करें पर मनसे भी जिसपुरुषकी विजय चाहें उसके इन्द्रादि देवभी शत्रुहों तो उनको भी वह जीतले तो मनुष्योंके जीतनेमें कौन चिन्ताहै । ७० । व जो पुरुष युद्धकर कृष्णचन्द्रको जीतना चाहे वहतो सगर के पुत्रों से बढ़ाये हुये अप्रमेय समुद्रको हाथों से उलीचडाले वा तैरकर पारचला जाय । ७१ । जो कैलाशादि पर्वतोंको अपने चटकनों से मार फोड़ना चाहे तो नुहँ सहित उसका हाथही फटजायगा पर वह पर्वतों का कुछभी न करसकेगा । ७२ । व जो युद्ध से कृष्णचन्द्रजी को जीतने की इच्छाकरे

---

armies, servants and wealth, he will then tremble with anger and his pride will kiss the ground. After performing his daily worship a Brahman had once told me that I should perform difficult task, that Indra would go on destroying the enemies before me and that Shree Krishna would protect me from behind from his chariot drawn by Hari horses. I had asked Indra, the wielder of vajra, to grant me the assistance of Shree Krishna. That request of mine has been granted and therefore I know that gods are doing my worth. He who has Shree Krishn for his well-wisher will conquer, even though he has Indra for his enemy and even if Krishna does not take part in fighting. 70. He who tries to conquer Shree Krishn, is like him who tries by handfuls to empty the boundless Ocean enlarged by the sons of Sagar or to cross it by swimming: he who tries to break down a hill with the blows of his hand, will only break his own nails and

हरेद्देवानामृतंमसह्य युद्धेनयोवासुदेवंजिगीषेत्॥ ७३ ॥ योरुक्मिणीमेकरथेन भोजा-न्उत्साद्यराज्ञः समरेप्रसह्य। उवाहभार्यांयशसाज्वलन्तीं यस्यांजज्ञेरौक्मिणेयोमहात्मा ॥ ७४ ॥ अयं गान्धारांस्तरसासम्प्रमथ्य जित्वापुत्रान्नग्नजितःसमग्रान् । बद्धंमुमोच विनदन्तंप्रसह्य सुदर्शनंवैदेवतानांललामम् ॥ ७५ ॥ अयंकपाटेनजघान पाण्ड्यंतथा कलिङ्गान्दन्तकूरेममर्द । अनेनदग्धावर्षपूगान्विनाथा वाराणसीनगरीसम्बभूव ७६॥ अयंस्मयुद्धेमन्यतेऽन्यैरजेयं तमेकलव्यंनाम निषादराजम्।वेगेनैवशैलमभिहत्यजम्भस्सेते सकृष्णेनहतःपरासुः ॥ ७७ ॥ तथोग्रसेनस्यसुतं सुदुष्टंवृष्ण्यन्धकानां मध्यगतंस-

---

बहुतो बलते हुये अग्निको हाथों से बुझा सक्ता है, व चन्द्रमा सूर्य्यको भी रोकसक्ता है, व देवताओं से बलपूर्वक अमृत छीनसक्ता है । ७३ । कि जिन श्रीकृष्णचन्द्रजीने रथपर अकेलेही सवारहो समरमें भोजदेशके राजा व उसकी सेनाको जीत रुक्मिणीजी का विवाह करलिया जिसमें महात्मा प्रद्युम्नजी उत्पन्नहुये । ७४ । व जिन कृष्णचन्द्रजी ने नग्नजित् राजाके पुत्रों से बांधेहुये सुदर्शननाम राजाको गान्धार देश निवासियों व नग्नजित्के पुत्रों को हठसे जीत छुड़ाया । ७५ । व इन्हीं ने अपनी छाती से पांडुरदेश के राजाको पीसडाला तथा कलिंगदेश निवासियों को समर में मर्दन करडाला व इन्हीं की फुँकाई हुई वाराणसीपुरी बहुत वर्षोंतक अनाथ पड़ीरही । ७६ । व एकलव्य नाम निषादराजसे कृष्णचन्द्रजी बहुतदिनों से युद्ध करना चाहते थे पर अब उसे इन्होंने मार डाला इससे वह पृथ्वीपर पड़ा शयन कररहाहै, जैसे जम्भासुरने बड़े वेगसे पर्वत चूर्ण करने के लिये पर्वतमें टक्कर मारा पर पर्वतके टक्करसे आपही मरगया । ७७ । व इन्हीं कृष्णचन्द्रजी ने बलदेवजी के संग वृष्णिअन्धक वंशियोंके स्वामी उग्रसेन के पुत्र कंसको

---

fingers. He who can conquer Shree Krishna in battle, must be able to put ont fire with his own hands, to control the sun and the moon and to seize by force ambrosia from the gods. Shree Krishna conquered singly the army of the king of Bhoj in battle and married Rukmani the mother of Pradyumna. He released king Sudarshan from the captivity of the sons of Nagnjit after defeating them and the people of Gandhar. He smashed with his breast the king of Pandur, defeated the people of Kaling in battle and the city of Varanasi burnt down by him remained kingless for many years. He has killed Eklavya the king of the Nishadas whom he was intending to fight with for many years and now the latter lies dead like Jambhasur who wanted to break down the mountain with his blow but himself died in the attempt. The same Krishn, with Baldev,

भास्थम्। अपातयद्वलदेवद्वितीयो हत्वाददौचोग्रसेनायराज्यम् ॥ ७८ ॥ अयंसौभं योधयामासखस्थं विभीषणंमायपाशाल्वराजम्। सौभद्वारिप्रत्यगृह्णाच्छतघ्नीं दोर्भ्यां कएनंविसहेत मर्त्यः ॥ ७९ ॥ प्रागज्योतिषंनामबभूवदुर्गं पुरंघोरमसुराणामसह्यम्। महाबलोनरकस्तत्रभौमो जहारादित्यामणिकुण्डलेशुभे ॥ ८० ॥ नतंदेवाःसहशक्रेण शेकुःसमागता युधिमृत्योरभीताः। दृष्ट्वाचतंविक्रमंकेशवस्य बलंतथैवास्त्रमवारणीयम् ॥ ८१ ॥ जानन्तोस्यप्रकृतिंकेशवस्य न्ययोजयनदस्युवधायकृष्णम्। सतत्कर्मप्रति शुश्राव दुष्करमैश्वर्यवान् सिद्धिषुवासुदेवः ॥ ८२ ॥ निर्मोचनेषट्सहस्राणिहत्वा सञ्छिद्यपाशान्सहसाक्षुरान्तान्। मुरंहत्वाविनिहत्यौघरक्षो निर्मोचनंचापिजगामवीर ॥ ८३ ॥ तत्रैवतेनास्यबभूवयुद्धं महाबलेनातिबलस्यविष्णोः। शेतेसकृष्णेनहतः

बीच सभामें मार उग्रसेनको राज्य देदिया। ७८। व इन्होंने आकाश में टिकेहुये शाल्वदेश के राजासौभको मारडाला व सौभके द्वारपर उसीकी प्रेरणासे चली आती हुई शक्ति दोनों हाथों से पकड़ली, फिर इनको कौन मनुष्य सहसक्ता है। ७९। व प्राग्ज्योतिष नाम नगरमें बड़ाभारी एक किलाथा जिसके सामने देवता दैत्य कोई नहीं जासक्ते थे वहां भूमिका पुत्र नरकासुर रहताथा उसने इन्द्रकी माता अदितिजी के मणिके कुण्डल छीनलिये थे। ८०। यद्यपि देवता लोग मृत्यु से नहीं डरते तथापि इन्द्रादि देवता उसे जीत न सके, तब श्रीकृष्णचन्द्रजी का अपारणीय बल व अस्त्र देख। ८१। उसके मारने के लिये देवगणों ने कृष्णचन्द्रजी को नियोजित किया, व कृष्णचन्द्रजी ने भी उसके कर्म सुने कि यह बड़ापराक्रमी है। ८२। पर वहां जाय ६ सहस्र पाश जो उसके किला किनारे बंधे उन्हें तोड़ उन्हीं पाशों में एक मुरनामे दैत्यथा उसे मार सब पाश दूरकिये। ८३। व वहां उस बड़े भारी बलवान् से इन महाबली विष्णुजीसे युद्ध हुआ,

---

killed Kans the ruler of *Vrishnis* and *Andhaks* and son of *Ugrasen* and *gave the throne to Ugrasen. He killed* king Saubh of the country of Shalwa which floated in air and held the javelin hurld by him. Who can kill Krishna? There was at Pragjyotish a very strong fort, impregnable by gods and Daityas, where resided Narakasur the son of Bhumi who had taken by force the jewelled earring of Aditi the mother of Indra. 80. The gods inspite of their *immortality* could not conquer him and seeing the immense strength of Krishn, *they requested* him to kill the *Daitya*. Shree Krishn knew the great strength of the Daitys, but went to his stronghold and destroyed the eight thousand nooses which were all round the place together with a *Daitya*, named Mur who was within

परासुर्वातेनेवमथित कर्णिकार ॥ ८४ ॥ आहृत्यकृष्णोमणिकुण्डलेते हत्वाचभौमं नरकंमुरञ्च । श्रियाकृतोपशसाचैनविद्वान मत्याजगामामतिमप्रभावः ॥ ८५ ॥ अस्मैवराण्यददस्तत्र देवादृष्ट्वाभीमंकर्मकृतं रणेतत् । श्रमश्चतेयुध्यमानस्य नस्यादा· काशे चाप्सुचगतिःस्यात् ॥ ८६ ॥ शस्त्राणिगात्रेनचवे क्रमेरन्नित्यवकृष्णश्चततः कृतार्थः । एवंरूपोवासुदेवेऽप्रमेये महाबलेगुणसम्पत्सदैव ॥ ८७ ॥ तमसह्यंविष्णु मनन्तवीर्यमाशंसते धार्तराष्ट्रोविजेतुम् । सदाह्येनंतर्कयतेदुरात्मा तच्चाप्ययंसहतेस्मान समीक्ष्य ॥ ८८ ॥ पर्यागतंममकृष्णस्यचैव योमन्यतेकलहंसंमसह्य । शक्यंनहर्तुं पाण्डवानांममत्वं तद्वेदितासंयुगंतत्रगत्वा ॥ ८९ ॥ नमस्कृत्वाशान्तनवाय राज्ञे

उस में वह कृष्णचन्द्रजी के हाथों से मृत्युपाकर पवन के वेगसे गिरे हुये कर्णिकार वृक्ष समान पृथ्वी पर सोया। ८४। इसप्रकार पृथ्वी के पुत्र नरकासुर व मुरासुरको मार अदिति के मणि मय कुण्डल ले यश व श्रीयुक्त अमातिम प्रभाव कृष्णचन्द्रजी चले आये। ८५। इसप्रकारका भयंकर कार्य किये कृष्णचन्द्रजी को देख देवताओंने बहुत वरदान दिये कि हेकृष्ण आजसे तुमचाहे जितना युद्ध करोगे तुमको श्रम न होगा व आकाश जलादि में तुम्हारी गति होगी। ८६। व तुम्हारे अंगों किसी के चलाये शस्त्र घाव न करसकेंगे इसप्रकार कृष्णचन्द्रजी अस्त्र विद्यामें कुशल हैं व इस प्रकार के गुणगण बड़ी कृष्णचन्द्र जी में गुणों की सम्पदा सदा बनीरहती है। ८७। तिन असह्य वीर्य विष्णु अनन्तको को दुर्योधन कहते हैं कि हम जीतेंगे, सदा यही तर्कना किया करते हैं पर ये हमलोगों की ओर दयाकर उनकी सबबातों को सहते हैं। ८८। व दुर्योधन हठसे चाहता है कि हमारा व कृष्णचन्द्रजी का कलह होजाय परन्तु पांडवोंके विषयमें कृष्णचन्द्रजी को जो ममत्व है

---

one of them. A great fight then ensued between the powerful *Daitya* and still more powerful Vishnu and the *Daitya* fell down dead like a tree broken down by the wind. Thus having killed Narakasur and Murasur and taken the earring, Krishna returned in great glory. For this formidable deed the gods have granted Krishna many boons; such as, he will never feel tired, however much he exerts himself in battle, no weapon will inflict any wound upon him and he will be able to go on air and under water. Thus, Shree Krishn is perfect in the art of war and has an immense wealth of qualities. *Duryodhan* aspires to conquer Vishnu of matchless prowess and disbelieves him: Shree Krishn bears all this insult out of love for us. *Duryodhan* wishes to raise quarrel between us and Shree Krishn; but the love which Shree Krishn bears towards the

द्रौणायनेसहपुत्रायचैव। शारद्वतायापतिद्वन्द्विनेच योत्स्याम्यहंराज्यमभीप्सुमानः ९० धर्मेनाशंनिधनंतस्यमन्ये योयोत्स्यतेपाण्डवैःपापबुद्धिः । मिथ्याग्लहेनिर्जितावैनृशंसैः सम्वत्सरान्वैद्वादशराजपुत्राः ॥ ९१ ॥ वासःकृच्छ्रोविहितश्चाप्यरण्ये दीर्घकालं चैकमज्ञातवर्षम् । तेहिकस्माज्जीवतां पाण्डवानांनन्दिष्यन्ते धार्तराष्ट्राःपदस्थाः ९२॥ तेचेदस्मान्युध्यमानान जयेयुर्देवैरपिमहेन्द्रप्रमुखैःसहायैः । धर्माद्धर्मश्चरितोगरीयांस्ततो ध्रुवंनास्तिकृतञ्चसाधु ॥९३॥ नचेदिदंपौरुषंकर्मबद्धं नचेदस्मान्मन्यतेऽसौ विशिष्टान्। आशंसेऽहंवासुदेवद्वितीयो दुर्योधनंसानुबन्धं निहन्तुम्॥ ९४ ॥नचेदिदंकर्मनरेन्द्र वन्ध्यंनचेत् भवेत्सुकृतंनिष्फलंवा। इदञ्चतच्चाभिसमीक्ष्यनूनं पराजयोधार्तराष्ट्रस्य

है वह किसी के मिटाने का नहीं है उसे कुरुक्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन अच्छीतरह जानेंगे । ८९ । इससे अब हम अपना राज्य पानेके लिये भीष्मपितामह, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य्य, अश्वत्थामा, व शारद्वतको प्रणामकर युद्धकरेंगे । ९० । वह पापबुद्धि दुर्योधन पाण्डवों से लड़ना चाहता है तो धर्महीसे उसका मरण ठीक होजायगा इसमें कुछ सन्देह नहीं, क्यों कि उसने मिथ्या कामीलगाय हमलोगों को जीतलिया जिससे बारह वर्ष तक हमलोग वन में रहे । ९१ । व एक वर्ष जो गुप्तहोकर हमलोग विराट नगर में रहे उसमें तो बड़ाही कष्टपाया, फिर हमलोगों के जीतेजी अधिकारपर बैठ दुर्योधनादि कैसे आनंदित रहने पावेंगे । ९२ । कदाचित् इन्द्रादि देवताओं कीभी सहायता पाय वेलोग हमें युद्धमें जीतलेंगेतो धर्मसे अधर्मही करना श्रेष्ठ समझाजायगा, निश्चय कोई धर्माचरण न करेगा। ९३ । जो पुरुष कर्माधीन न होंगे, व हम लोग दुर्योधनादिकों से श्रेष्ठ न होंगे तो उन्हींकी जयहोजायगी क्या सन्देह है, नहीं तो हम वासुदेवजीकी सहायतासे समुदाय दुर्योधन को मारही डालेंगे । ९४ । व जो यह राजका न देना कर्म वन्ध्य न होगा व पुण्य निष्फल न होगी व जो

Pandavas can not be effaced by any one's instigation and *Duryodhan* will know this in the field of Kurukshetra. We shall fight for our kingdom with due reverence to Bhishm, Dhritrashtra, Dronacharya, Ashwathama and Sharadwat. 90. The wicked Duryodhan wishes to fight against the Pandavas and he will justly meet his death in so doing; for he won us deceitfully. We had to pass twelve years in exile but the thirteenth year of concealment was of the greatest difficulty; how can Duryodhan enjoy the government of the kingdom as long as we are alive! Adharm will be thought better than dharm, if Duryodhan conquers us even with the help of Indra. No doubt we can be defeated by Duryodhan, if people donot abide by the

साधुः ।. ९५ ॥ प्रत्यक्षंवःकुरवोयद्ब्रवीमि युध्यमानाधार्त्तराष्ट्रानसन्ति । अन्यत्र युद्धात्कुरवोयदिस्युर्नयुद्धेवैशेष इहास्तिकश्चित् ॥ ९६ ॥ हत्वात्वहंधार्त्तराष्ट्रं नसकर्णान्राज्यं कुरूणामवजेतासमग्रम् । यद्वःकार्य्यंतत्कुरूध्वं यथास्वमिष्टान्दारानात्म भोगान् भजध्वम् ॥ ९७ ॥ अप्येवनोब्राह्मणाःसन्ति वृद्धाबहुश्रुताःशीलवन्तः कुलीनाः । सांवत्सराज्योतिषिचाभियुक्ता नक्षत्रयोगेषुचनिश्चयज्ञाः ॥ ९८ ॥ उच्चावचंदैवयुक्तंरहस्यंदिव्याःप्रश्नामृगचक्रामुहूर्त्ताः । क्षयंमहान्तंकुरुसृञ्जयानांनिवेदयंते पाण्डवानांजयञ्च ॥ ९९ ॥ यथाहिनो मन्यतेऽजातशत्रुः संसिद्धार्थोद्विषतांनिग्रहाय । जनार्दनश्चाप्यपरोक्षविद्यो नसंशयंपश्यतिवृष्णिसिंहः ॥ १०० ॥ अहंतथैवंखलुभा-

---

हमलोगों को बनवासदिया था उसका भी फल विफल न होगा, तो अवश्य दुर्योधनकी पराजय होगी । ९५ । व यह बात कौरवों के सामने हम कहते हैं कि जो दुर्योधनादि युद्ध करना नहीं चाहते, युद्ध से अन्यत्रहीं कुरुवंशी रहा चाहते हैं तो यहांभी कोई कहना नहीं चाहता । ९६ । व जो तुमलोग युद्धही किया चाहतेहो हम अकेलेही कर्ण सहित धृतराष्ट्र के पुत्रों को मार सब राज्य जीतलेंगे, अबतुमलोगों को जो करनाहो करो अपने धन पुत्र स्त्रियों को देख सुन मिल भेंटहो । ९७ । क्योंकि हमारे यहां वृद्धावस्था को प्राप्त, बहुत शास्त्रपढ़े लिखे, शीलवान्, कुलीन, व पिंगलशास्त्र कहने में चतुर नक्षत्रोंके विचार में निश्चयज्ञ, ऊंचे नीचे सब भाग्य के प्रश्न कहनेवाले ब्राह्मणलोगों ने कहा है कि इस वर्ष में कौरवोंकी क्षयहोगी व पांडवोंकी जय । ९९ । जिसप्रकार युधिष्ठिरभी शत्रुओं से वैर करनाही चाहते हैं उसीप्रकार वृष्णिसिंह श्रीकृष्णजीभी जय पराजयमें संशय नहीं रखते शत्रुओंका निग्रहही चाहते हैं अनुग्रह नहीं चाहते । १०० । व हमभी अनुमानसे

---

results of their actions otherwise we shall defeat him with the help of Shree Krishna. Duryodhan is sure to suffer defeat, if people are bound by the results of their actions and he gets the punishment of sending us into exile. We assert before all the Kauravas that we donot wish to fight, if Duryodhan and the Kauravas are averse to it; but if they will fight, I alone shall destroy all the sons of Dhritrashtra together with Karan. You may do what you like and may save your kinsmen and wealth; for the old, learned, good-natured, noble astrologers and wise Brahmans have predicted this year the victory of the Pandavas and the destruction of the Kauravas. Yudhishthir is averse to war but Krishn desires the enemies rather than to make peace with them. 100. I too am of the same opinion

विरूपंपश्यामि बुद्ध्यास्वयमप्रमत्तः । दृष्टिश्चमेनव्यथतेपुराणी संयुध्यमानाधार्त्तराष्ट्रान सन्ति ॥ १०१ ॥ अनालब्धंजृम्भतिगाण्डीवं धनुरनाहताकम्पतिमेधनुर्ज्या । बाणाश्च मेतूणमुखाद्विसृत्य मुहुर्मुहुर्गन्तुमुशन्तिचैव ॥ १०२ ॥ खड्गःकोशान्निःसरतिप्रसन्नो हित्वेव जीर्णामुरगस्त्वचंस्वाम् ध्वजेवाचोरौद्ररूपाभवन्ति कदारथोयोक्ष्यतेतेकिरीटिन ॥ १०३ ॥ गोमायुसंघाश्च नदन्तिरात्रौरक्षांस्यथो निष्पतन्त्यन्तरीक्षात् । मृगाःशृगालाःशितिकण्ठाश्च काकागृध्राबकाश्चैव तरक्षवश्च ॥ १०४ ॥ सुवर्णपत्राश्चपतन्ति पश्चात् दृष्ट्वारथंश्वेतहयप्रयुक्तम् । अहंह्येकःपार्थिवान सर्वयोधानशरानवर्षन मृत्युलोकं नयेयम् ॥ १०५ ॥ समाददान:पृथगस्त्रमार्गान यथाग्निरिद्धोगहनंनिदाघे । स्थूणाकर्णपाशुपतंमहास्त्रं ब्राह्मंचास्त्रंयच्चशक्रोप्यदान्मे ॥१०६ ॥ वधेधृतोवेगवतःप्रमुक्ष्य-

अपनी बुद्धिसे वैसाही देखतेहैं कि यही भावो है, व हमारी दृष्टि भी इसविषयमें नहीं व्यथितहोती कि युद्ध करनेपर धृतराष्ट्र के पुत्र बचे न रहेंगे । १०१ । व विना खींचेही हमारा गांडीव धनुष हिलता है व विनाहिलायेही धनुषकी पनच कांपतीहै, बाणभी तूणके मुखसे बार २ निकलना चाहते हैं । १०२ । खड्ग मियान से बार २ निकलती है, जैसे पुरानी खालको छोड़ सर्प निकलता है व पताका से ऐसी बातें सुनाईदेती हैं कि अर्जुन तुम्हारा रथ कब युद्धकरने के लिये चलेगा । १०३ । रात्रिमें शृगालों के झुंड के झुंड शब्द करते हैं, व अन्तरिक्षसे राक्षस पृथ्वीपर गिरते हैं व मृगगण शृगाल मयूर काक, गृध्र, बगुला, व्याघ्र । १०४ । व सुवर्ण पत्रादि पक्षी ये सब श्वेत घोड़े हमारा रथ देख उसके पीछे अपने आप गिरते हैं, इससे हम अकेलेही बाण बरषाते हुये सब राजाओंको मृत्यु लोकको भेज देंगे । १०५ । जब हम पृथक् २ अस्त्र समूह धारण करेंगे तो शत्रुओं को ऐसे भस्म करेंगे जैसे ग्रीष्म ऋतुमें अग्नि वन जलाता है, व जो पाशुपतास्त्र व ब्रह्मास्त्र इन्द्रजी ने हमको दिया है । १०६ । उन वेगवान् अस्त्रों को

with Krishna and I think that the sons of Dhritrashtra cannot live in case of war. My Gandiv bow and its string shake without drawing and the arrows come out again and again from the mouth of the quiver. My sword is ready to come out of the scabbard and feels uneasy like a serpent in its old skin. My banner makes a dreadful noise and advises me to take out the chariot for war. Multitudes of jackals howl by night; ashes fall down from the air and birds as well as beasts fall down behind my chariot. I think I shall kill all the kings with my own arrows alone. With my weapons I shall kill all enemies as fire destroys a dry forest. At the

घ्नाहंमशाः किञ्चिदिहावशिष्ये। शान्तिलप्स्येपरमोक्षेपभावः स्थिरोमनमुद्दिगावलगणे तान् ॥ १०७ ॥ येवैजय्याःसमरेसूतलब्ध्वा देवानपीन्द्रप्रमुखान समेतान्। तैर्मन्यते कलहंसम्पलह्य सधार्त्तराष्ट्रःपश्यतमोहमस्य ॥ १०८ ॥ वृद्धोभीष्मःशान्तनवःकृपश्च द्रोणः सपुत्रोविदुरश्चधीमान। एतेसर्वेयद्वदन्त्येतदस्तु आयुष्मन्तःकुरवःसंतुसर्वे १०९

इति महा० उद्योगपर्वणि यानसंधिप० अर्जुननिवेदने
अष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥

वैशम्पायन उवाच। समवेतेषुसर्वेषु तेषुराजसुभारत। दुर्य्योधनमिदंवाक्यं भीष्मःशांतनवोऽब्रवीत् ॥ १ ॥ बृहस्पतिश्चोशनाचब्रह्माणं पर्य्युपस्थितौ। मरुतश्च सहेन्द्रेणवसवश्चाग्निनासह ॥ २ ॥ आदित्याश्चैवसाध्याश्च येचसप्तर्षयोदिवि। वि-

---

जब हम शत्रुओं के मारने के लिये धारण करेंगे तो फिर किसी को बाकी न रक्खेंगे, व तभी हम शान्ति को भी प्राप्त होंगे सञ्जय यह हमारा अभिप्राय सबोंसे कहना। १०७। धृतराष्ट्र के पुत्रयदि इन्द्रादिक देवताओंको भी साथलेकर हम से संग्राम करेंगेतो जीत न सकेंगे परन्तु कलहका फल पावेंगे। १०८। वृद्धभीष्मपितामह कृप, द्रोण, विदुर और अश्वत्थामा जो कहैं वही कौरवों को मानना चाहिये यदि ऐसा करेंगे तो दीर्घजीवी रहेंगे ॥ १०९ ॥

अध्याय ॥ ४९ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि सब राजालोग पञ्च बैठेथे उनसबों के सामने शान्तनुजी के पुत्र भीष्मजी दुर्योधन से यह वचन बोले कि। १। एकसमय बृहस्पतिजी व शुक्राचार्य ब्रह्माजी के पास बैठेथे व इन्द्रादि सब देवता ८ वसु ३ अग्नि। २। १२

---

discharge of Pashupat and Brahmastra, presented to me by Indra, no enemies will remain alive and I shall then get peace of mind. Please tell the Kauravas all that I have said. The sons of Dhritrashtra cannot conquer us even with the assistance of Indra and other gods; they will suffer if they fight. The Kauravas should act upon the advice of Bhishm, Kripa, Drona Vidur and Ashwathama, if they want to live longer."109.

CHAPTER IXL

Vaishampayan said to Janmejaya that in the presence of all the kings Bhishm addressed as follows:-"One day, Vrihaspati and Shukracharya were sitting near Brahma. Indra and other gods with the eight Vasus, the three Agnis, the twelve Suryas, the

श्वावसुश्चगन्धर्वः शुभाश्चाप्सरसाङ्गणाः ॥ ३ ॥ नमस्कृत्योपजग्मुस्तेलोकवृद्धंपितामहम् । परिवार्यचविश्वेशं पर्यासत दिवौकसः ॥ ४ ॥ तेषांमनश्चतेजश्चाप्याददानौविनौजसा । पूर्वदेवौव्यतिक्रान्तौ नरनारायणावृषी ॥ ५ ॥ बृहस्पतिस्तुपप्रच्छ ब्रह्माणंकाविमाविति । भवन्तंनोपतिष्ठेते तौनःशंसपितामह ॥ ६ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ यावेतौपृथिवींद्यांच भासयन्तौतपस्विनौ । ज्वलन्तौरोचमानौच व्याप्यातीतौमहाबलौ ॥ ७ ॥ नरनारायणावेतौ लोकाल्लोकंसमास्थितौ । ऊर्जितौस्वेनतपसा महासत्त्वपराक्रमौ ॥ ८ ॥ एतौहिकर्मणालोकं नन्दयामासतुर्ध्रुवम् । द्विधाभूतौमहाप्राज्ञौ विद्धिब्रह्मन्परन्तपौ । असुराणांविनाशाय देवगन्धर्वपूजितौ ॥ ९ ॥ वैशम्पायन उवाच । जगामशक्रस्तच्छ्रुत्वा यत्रतौतेपतुस्तपः । सार्द्धं देवगणैःसर्वैर्बृहस्पतिपुरोगमैः

सूर्य, साध्यगण, सप्तर्षिलोग, विश्वावसु नाम गन्धर्व, व अच्छी २ अप्सरा । ३ । ये सब लोक भरके वृद्ध ब्रह्माजी को नमस्कार कर व चारों ओर घेर बैठेथे । ४ । उन सबों के मन व तेज अपने पराक्रम से ग्रहण करतेहुये पूर्व के देवता नर नारायण ऋषि वहां आये । ५ । तब बृहस्पतिजी ने ब्रह्माजी से पूंछा कि ये कौन महात्माहैं जो आपकोभी प्रणाम नहीं करते वे बैठेहैं हे पितामह इन दोनोंको हमें बताइये । ६ । ब्रह्माजी बोले कि जो ये महातेजी तपस्वी अपनी तपस्यासे ही पृथ्वी व अंतरिक्षको प्रकाशितकरतेहैं ७. ये नर नारायण ऋषिहैं मनुष्यलोकसे ब्रह्मलोकमें आयेहैं, व ये दोनों अपनेही तपसे बढ़ेहैं वे महा पराक्रमीहैं । ८ । इन दोनों जनोंने अपने कर्मसे लोकभरको आनन्दित कियाहै व दैत्यों का नाश करने के लिये देवता गन्धर्वादिकों ने भी इनकी पूजाकी है । ९ । वैशम्पायनजी बोले कि यह सुन इन्द्रजी वहां चलेगये जहां कि नर नारायण तपस्या करने लगे थे, इन्द्रजी

Sadhyas, the Maharshis, Vishwavasu the gandharv and beautiful apsaras bowed down to Brahma and sat round him. Nar and Narayan the ancient gods came there and attracted as it were the minds and glory of all by their prowess. At this, Vrihaspati asked Brahma to tell him who those persons were that did not bow to him the grandsire of all, and the latter said, "The two great ascetics who illumine the earth and the sky with their asceticism, are the rishis Nar and Narayan who have come here form the world of men. They have become great on account of their asceticism and are very powerful. They have made all the world happy by their good deeds and the gods and gandharvas worship them for their destruction of the Daityas." Vaishampayan said that having heard this Indra

॥ १० ॥ तदादेवासुरेयुद्धे भयेजातेदिवौकसाम्। अयाचतमहात्मानौ नरनारायणौ वरम् ॥ ११ ॥ तावब्रूतांवृणीष्वेति तदाभरतसत्तम। अथैतावब्रवीच्छक्रः सह्यंनः क्रियतामिति ॥ १२ ॥ ततस्तौशक्रमब्रूतां करिष्यावोयदिच्छसि। ताभ्यांचसहितः शक्रो विजिग्येदैत्यदानवान ॥ १३ ॥ नरइन्द्रस्यसंग्रामे हत्वाशत्रून्परन्तपः। पौलोमानकालखञ्जांश्च सहस्राणिशतानिच ॥ १४ ॥ एषभ्रान्तेरथेतिष्ठन् भल्लेनापहराच्छिरः। जम्भस्यग्रसमानस्य तदाह्यर्जुनआहवे ॥ १५ ॥ एषपारेसमुद्रस्य हिरण्यपुरमारुजत्। जित्वाषष्टिसहस्राणि निवातकवचान्रणे ॥ १६ ॥ एषदेवानसहेंद्रेण जित्वा परपुरञ्जयः। अतर्पयन्महाबाहु रर्जुनोजातवेदसम् ॥ १७ ॥ नारायणस्तथैवात्र भूयसोन्यान्जघानह। एवमेतौमहावीर्यौ तौपश्यतसमागतौ ॥ १८ ॥ वासुदेवार्जुनौवीरौ

के संग सब देवता व बृहस्पतिजी भी गये ॥ १० ॥ व उसीसमय में देवासुर नाम संग्राम हुआ था देवताओगों को बड़ी भय उत्पन्न हुई थी, इससे इन्द्रने उन दोनों महात्मा नर नारायणजीसे वरदानमांगा। ११। तौउन दोनों ने कहा कि अच्छा जोवरदान मांगनाहो मांगो, तब इन्द्रने कहा हमारी सहायता आप दोनों कीजिये।१२। तब उन दोनोंने कहा अच्छा जो तुम चाहतेहो हमदोनों करेंगे, तब उनदोनों के संग इन्द्रने बहुतसे दैत्यों व दानवों को जीता ।१३। उन में नर ने संग्राम में इन्द्रके शत्रु पौलोम व कालखंजनाम सहस्त्रों को मारडाला।१४। सो अर्जुन वही नर हैं इन्होंने स्थिर रथपर चढ़ेही चढ़े इन्द्रको भक्षते हुये जम्भासुरका शिर बाणसे काटडाला।१५। व इन्हीं ने समुद्रके पार साठ हजार निवातकवच नाम राक्षसों को जीत हिरण्यपुरको पीड़ित किया।१६। व इन्हीं अर्जुन ने इन्द्रादि देवताओं को जीत खाण्डव बनदे अग्नि को तृप्त करदिया।१७। व इसी प्रकार नारायणजी ने बहुतसे असुरलोगों को मारा इसतरह इन दोनों महा पराक्रमियों को

---

went away to the place where Nar and Narryan were performing asceticism and was followed by all the gods as well as Vrihaspati. In the meantime the battle between the gods and Daityas took place and caused great consternation among gods. Indra thereupon requested them a boon and they promised to grant it. They consented to help him and he won a great victory over the Daityas. Nar killed thousands of Paloms and Kaljanghas enemies to Indra. Arjun is the same Nara who killed Jambhasur with his arrows while the latter was about to swallow Indra. He defeated sixty thousands of Nibat Kachas the demons of Hiranyapur. It was he who pleased Agni by giving him the forest of Khandav to burn. In the same manner, Narayan too killed many enemies. Both warriors,

समवेतौमहारथौ। नरनारायणौदेवौ पूर्वदेवाविति श्रुतिः ॥ १९ ॥ अजेयौमानुषेलोके सेन्द्रैरपिसुरासुरैः। एषनारायणःकृष्णः फाल्गुनश्चनरःस्मृतः। नारायणोनरश्चैव सत्त्वमेकंद्विधाकृतम् ॥ २० ॥ एतौहिकर्मणालोकानश्नुवातेऽक्षयान्ध्रुवान्। तत्र तत्रैव जायेते युद्धकालेपुनःपुनः ॥ २१ ॥ तस्मात्कर्मैवकर्तव्य मितिहोवाचनारदः। एतद्धिसर्वमाचष्ट वृष्णिचक्रस्यवेदवित् ॥ २२ ॥ शंखचक्रगदाहस्तं यदाद्रक्ष्यसि केशवम्। पर्याददानंचास्त्राणि भीमधन्वानमर्जुनम् ॥ २३ ॥ सनातनौमहात्मानौ कृष्णावेकरथेस्थितौ। दुर्योधनतदातात स्मर्तासिवचनंमम ॥ २४ ॥ नोचेदयमभावःस्यात् कुरूणांप्रत्युपस्थितः। अर्थाच्चतातधर्माच्च तवबुद्धिरुपप्लुता ॥ २५ ॥ नचग्रहीष्य

देखो आये हैं। १८। वासुदेव व अर्जुन ये दोनों महारथी नारायण व नर हैं व पूर्वसमय के देवता हैं अब इस लोक में इन्द्रादि देवगणभी इनको नहीं जीतसके। १९। ये कृष्णचन्द्रजी तो नारायण हैं, व अर्जुनजी नर हैं, नारायण व नर एकही पराक्रम रखते हैं पर स्वरूपदो दिखाई देते हैं। २०। ये दोनों कर्मही करनेके लिये लोकमें उत्पन्न हुये हैं, व जहां युद्ध करनेका कामपड़ताहै वहां प्राप्तहोते हैं। २१। नारद जीने इन दोनों से कहदिया है कि तुम युद्धही किया करो यह सब से उन्होंने कहा है क्योंकि वे वृष्णिवंशियों को अच्छीतरह जानते हैं। २२। हे दुर्योधन जब शंख चक्र गदा हाथों में लिये कृष्णचन्द्रजी को व अस्त्र शस्त्र धारणकिये भयंकर धनुर्द्धरण किये अर्जुनको, इन दोनों सनातन महात्माओंको एकही रथपर चढ़े देखोगे तब हमारे वचनों का स्मरण करोगे। २४। व जो तबभी हमारे वचनोंका स्मरण न करोगे तो कौरवों का अभावभी होजायगा क्योंकि तात तुम्हारी बुद्धि अर्थ धर्म दोनों से आजकल पृथक् होगई है। २५। कदाचित् हमारा

Narayan and Nar are identical with Vasudev and Arjun, the gods of old whom even Indra with the gods cannot conquer. Both Narayan and Nar or Krishna and Arjun are of equal prowess though different in form. 20. Both are born in this world to perform deeds of prowess and to go to the place where there is need of prowess. Narad has asked them to do battle; for he knows the Vrishnis well. You will remember my words, Duryodhan, when you will see Krishna with couch, discus and mace and Arjun bearing arms and dreadful bow on the same chariot. The Kauravas will all die, if you donot mind my words even then; for you are deviating from dharm and arth nowadays. You will hear many lives lost, if you will not act upon my advice; for all the Kauravas obey your orders. Your

सेत्वाक्यं श्रोतासिसुबहूनहतान् । तवैवहिमतंसर्वे कुरवःपर्युपासते ॥ २६ ॥ त्रयाणा मेवचमतं तत्त्वमेकोनुमन्यसे । रामेणचैवशप्तस्य कर्णस्यभरतर्षभ ॥ २७ ॥ दुर्नीतेः सूतपुत्रस्य शकुनेःसौबलस्यच । तथाक्षुद्रस्यपापस्य भ्रातुर्दुःशासनस्यच ॥ २८ ॥ कर्णउवाच ॥ नैवमायुष्मतावाच्यं यन्मामात्थपितामह । क्षत्रधर्मे स्थितोह्यस्मि स्वध-र्मादनपेयिवान् ॥ २९ ॥ किञ्चान्यन्मयिदुर्वृत्तं येनमांपरिगर्हसे । नहिमेवृजिनंकिं-चिद्धार्त्तराष्ट्राविदुःक्वचित् ॥ ३० ॥ नाचरंवृजिनंकिंचिधार्त्तराष्ट्रस्यनित्यशः । अहंहिपाण्डवान्सर्वान् हनिष्यामिरणेस्थितान् ॥ ३१ ॥ प्राग्विरुद्धैःसमंसद्भिः कथवाक्रियतेपुनः । राज्ञोहिधृतराष्ट्रस्य सर्वकार्य्यंप्रियंमया । तथादुर्योधनस्यापि

कहा न मानोगे तो बहुतोंको मारेहुये सुनोगे, क्योंकि सबकुरुवंशी तुम्हारेही मतपर चलते हैं । २६ । व तुम इन्हीं तीन दुष्टोंका मतमानतेहो, एकतो परशुरामजी के शाप से युक्त सूतपुत्र कर्ण का । २७ । दुर्नीति सुबल के पुत्र शकुनिका, व इसीतरह क्षुद्र स्वभाव पापी अपने भाई दुश्शासन का । २८ । इतना सुन कर्णबोले, कि जो हमको पितामहजी आप कहतेहो वह आयुष्मान् को न कहना चाहिये, हम क्षत्रियके धर्ममें टिके हैं अपने धर्मसे बाहर नहीं हैं । २९ । फिर और हम में कौन दुराचरण है जिस से आप हमारी निन्दा करतेहो, हमारा दुःख धृतराष्ट्रके पुत्र कोई कुछनहीं जानते ।३०। व न हमने आजतक दुर्योधन का कुछ दुःख किया है, हां जो हम कहते हैं, अवश्य करेंगेभी, हम अकेलेही पांचो पांडवों को मारडालेंगे जो वे रणमें हमारे सामने आवेंगे । ३१ । जिनसे प्रथम विरुद्धहोचुका सज्जनलोग फिर उनसे मेलमिलापकर शांत कैसेहों हम राजा धृतराष्ट्र का व दुर्योधन का सब प्रिय करेंगे क्योंकि राजा वही दोनोंजने हैं

---

chief advisers are three wicked men namely, Karan the son of Sut who is cursed by Parashuram, Shakuni the son of ignoble Subal and Dushasan your mean-natured and sinful brother." On hearing this Karan said, "no one should say to a living man what you have said to me I am firm on the duty of Kshatryas. What wickedness do you reproach me for? None of the sons of Dhritrashtra know of grief. 30. I have never wished ill to Duryodhan I mean to do what I say: I shall kill all the five Pandavas, if they will face me in battle. Good men donot make friendship with an enemy. I shall ever be faithful to king Dhritrashtra and Duryodhan and to none else; for they are really kings." Vaishampayan said that having heard the words of Karan Bhishm addressed Dhritrashtra as follows:—"Karan

सहिराज्येसमाहितः ॥ ३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । कर्णस्यतुवचःश्रुत्वा भीष्मः शान्तनवःपुनः । धृतराष्ट्रंमहाराज सम्भाष्येदंवचोऽब्रवीत् ॥ ३३ ॥ यदयंकत्थतेनित्यं हन्ताहंपाण्डवानिति । नायंकलापिसम्पूर्णा पाण्डवानांमहात्मनाम् ॥ ३४ ॥ अनयोयोयमागन्ता पुत्राणांतेदुरात्मनाम् । तदस्यकर्मजानीहि सूतपुत्रस्यदुर्मतेः ॥३५॥ एतमाश्रित्यपुत्रस्ते मन्दबुद्धिः सुयोधनः । अवामन्यततान्वीरान् देवपुत्रानरिन्दमान् ॥ ३६ ॥ किञ्चाप्येतेनतत्कर्म कृतपूर्वंसुदुष्करम् । तैर्यथापाण्डवैःसर्वैः रेकैकेनकृतंपुरा ॥ ३७ ॥ दृष्ट्वाविराटनगरे भ्रातरंनिहतंप्रियम् । धनञ्जयेनविक्रम्य किमनेनतदाकृतम् ॥ ३८ ॥ सहितान्हिकुरून्सर्वा नभियातोधनञ्जयः । प्रमथ्यचाच्छिनद्वासः किमयंप्रोषितस्तदा ॥ ३९ ॥ गन्धर्वैर्घोषयात्रायां ह्रियतेयत्सुतस्तव । क्वतदासूतपुत्रोभूद्यइदानींवृषायते ॥ ४० ॥ ननुतत्रापिभीमेन पार्थेनचमहात्मना । यमाभ्यामेव

पर और किसी का कहा तो हम न मानते हैं न मानेंगे । ३२ । वैशम्पायन ने कहा कि कर्णके वचन सुन शन्तनुजी के पुत्र भीष्मजी महाराज धृतराष्ट्रको अपनी ओर चिताय यह वचन बोले कि । ३३ । यहकर्ण जो नित्यबड़ा करता है कि हम अकेले पांडवोंको मारडालेंगे यह महात्मा पांडवों का सोलहवां भागभी पूरानहीं है । ३४ । व जो अन्याय दुरात्मा तुम्हारे पुत्रोंको आनेवालाहै वह इसी दुर्मति सूतपुत्रही का कर्म जानो ।३५। व इसी के मतपर टिका मंदबुद्धि तुम्हारा पुत्र दुर्योधन देवपुत्र शत्रुनाशक पांडवों का अपमान करताहै । ३६ । क्या पांडवों ने जो पूर्व समय में कर्म किया है वह दुष्करकर्म इसने कभी किया है जो बार २ बकताहै । ३७ । विराट नगर में जब अर्जुनने इसके भाईको मारडाला तबे देख इस ने क्या करलिया । ३८ । अर्जुन ने अकेले आकर इन सब कौरवोंका मथनकर सबके वस्त्र तक छीनलिया तब क्या यह कहीं विदेश को चलागया था । ३९ । जब घोषयात्रा में गन्धर्वलोग तुम्हारे पुत्र दुर्योधन को पकड़े लियेजातेथे तब यह सूत का बेटा कर्ण कहांथा जो अब बड़ाभारी बीर बनता है । ४० । वहां

---

who often boasts of his ability to kill all the Pandavas alone, is not equal to the sixteenth part of them and the calamity which is about to occur to your sons will come through his bad advice. It is on account of his advice that Duryodhan your unwise son insults the Pandavas who are destroyers of enemies and sons of gods. Has he ever done deeds of prowess like those of the Pandavas which he can boasts of? What did he do to Arjun when the latter killed his brother at Viratnagar? Where was he gone when Arjun defeated the Kauravas and took over clothes away? Where was this son of Sut when the Gandharvas had taken your sons prisoners? Not only

सेवास्यं श्रोता।सिसुबहूनहतान् । तत्रैवहिमतंसर्वे कुरवःपर्युपासते ॥ २६ ॥ त्रयाणां मेवचमतं तत्त्वमेकोनुमन्यसे । रामेणचैवशप्तस्य कर्णस्यभरतर्षभ ॥ २७ ॥ दुर्मतेः सूतपुत्रस्य शकुनेःसौबलस्यच । तथाक्षुद्रस्यपापस्य भ्रातुर्दुःशासनस्यच ॥ २८ ॥ कर्णउवाच ॥ नैवमायुष्मतावाच्यं यन्मामात्थपितामह । क्षत्रधर्मे स्थितोह्यस्मि स्वधर्मादनपेयिवान् ॥ २९ ॥ किञ्चान्यन्मयिदुर्वृत्तं येनमांपरिगर्हसे । नहिमेवृजिनंकिंचिद्धार्तराष्ट्राविदुःक्वचित् ॥ ३० ॥ नाचरंवृजिनंकिंचिद्धार्तराष्ट्रस्यनित्यशः । अहंहिपाण्डवान्सर्वान् हनिष्यामिरणेस्थितान् ॥ ३१ ॥ प्राग्विरुद्धैःसमंसद्भिः कथवाक्रियतेपुनः । राज्ञोहिधृतराष्ट्रस्य सर्वकार्यंप्रियंमया । तथादुर्योधनस्यापि

कहा न मानोगे तो बहुतोंको मारेहुये सुनोगे, क्योंकि सबकुरुवंशी तुम्हारेही मतपर चलते हैं । २६ । व तुम इन्हीं तीन दुष्टोंका मतमानतेहो, एकतो परशुरामजी के शाप से युक्त सूतपुत्र कर्ण का । २७ । दुर्मति सुबल के पुत्र शकुनिका, व इसीतरह क्षुद्र स्वभाव पापी अपने भाई दुश्शासन का । २८ । इतना सुन कर्णबोले, कि जो हमको पितामहजी आप कहतेहो वह आयुष्मान् को न कहना चाहिये, हम क्षत्रियके धर्ममें टिके हैं अपने धर्मसे बाहर नहीं हैं । २९ । फिर और हम में कौन दुराचरण है जिस से आप हमारी निन्दा करतेहो, हमारा दुःख धृतराष्ट्रके पुत्र कोई कुछनहीं जानते । ३० । व न हमने आजतक दुर्योधन का कुछ दुःख किया है, हां जो हम कहते हैं, अवश्य करेंगेभी, हम अकेलेही पांचो पाण्डवों को मारडालेंगे जो वे रणमें हमारे सामने आवेंगे । ३१ । जिनसे प्रथम विरुद्धहोचुका सज्जनलोग फिर उनसे मेलमिलापकर शांत कैसेहों हम राजा धृतराष्ट्र का व दुर्योधन का सब प्रिय करेंगे क्योंकि राजा यही दोनोंजने हैं

chief advisers are three wicked men namely, Karan the son of Sut who is cursed by Parashuram, Shakuni the son of ignoble Subal and Dushasan your mean-natured and sinful brother." On hearing this Karan said, "no one should say to a living man what you have said to me I am firm on the duty of Kshatryas. What wickedness do you reproach me for? None of the sons of Dhritrashtra know of grief. 30. I have never wished ill to Duryodhan I mean to do what I say: I shall kill all the five Pandavas, if they will face me in battle. Good men donot make friendship with an enemy. I shall ever be faithful to king Dhritrashtra and Duryodhan and to none else, for they are really kings." Vaishampayan said that having heard the words of Karan Bhishm addressed Dhritrashtra as follows:—"Karan

साहिराज्येसमाहितः ॥ ३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । कर्णस्यतुवचःश्रुत्वा भीष्मः शान्तनवःपुनः । धृतराष्ट्रंमहाराज सम्भाष्येदंवचोऽब्रवीत् ॥ ३३ ॥ यदयंकत्थतेनित्यं हन्ताहंपाण्डवानिति । नायंकलापिसम्पूर्णा पाण्डवानांमहात्मनाम् ॥ ३४ ॥ अनयोयोयमागन्ता पुत्राणांतेदुरात्मनाम् । तदस्यकर्मजानीहि सूतपुत्रस्यदुर्मतेः ॥३५॥ एतमाश्रित्यपुत्रस्ते मन्दबुद्धिःसुयोधनः । अवामन्यततान्वीरान् देवपुत्रानरिन्दमान् ॥ ३६ ॥ किञ्चाप्येतेनतत्कर्म कृतपूर्वंसुदुष्करम् । तैर्यथापाण्डवैःसर्वै रेकैकेनकृतंपुरा ॥ ३७ ॥ दृष्ट्वाविराटनगरे भ्रातरंनिहतंप्रियम् । धनञ्जयेनविक्रम्य किमनेनतदाकृतम् ॥ ३८ ॥ सहितानहिकुरूनसर्वा नभियातोधनञ्जयः । प्रमथ्यचाच्छिनद्वासः किमयंप्रोषितस्तदा ॥ ३९ ॥ गन्धर्वैर्घोषयात्रायां ह्रियतेयत्सुतस्तव । क्वतदासूतपुत्रोभूद्यइदानींवृषायते ॥ ४० ॥ ननुतत्रापिभीमेन पार्थेनचमहात्मना । यमाभ्यामेव

पर और किसी का कहा तो हम न मानेंगे हैं न मानेंगे। ३२ । वैशम्पायन ने कहा कि कर्णके वचन सुन शान्तनुजी के पुत्र भीष्मजी महाराज धृतराष्ट्रको अपनी ओर चिताय यह वचन बोले कि ; ३३ । यहकर्ण जो नित्यबका करता है कि हम अकेले पांडवोंको मारडालेंगे यह महात्मा पांडवों का सोलहवां भागभी पूरानहीं है। ३४ । व जो अन्याय दुरात्मा तुम्हारे पुत्रोंको आनेवालाहै वह इसी दुर्मति सूतपुत्रही का कर्म जानो ।३५। व इसी के मतपर टिका मंदबुद्धि तुम्हारा पुत्र दुर्योधन देवपुत्र शत्रुनाशक पांडवों का अपमान करता है। ३६ । क्या पांडवों ने जो पूर्व समय में कर्म किया है वह दुष्कर्म इसने कभी किया है जो वार २ बकता है। ३७ । विराट नगर में जब अर्जुनने इसके भाईको मारडाला तो देख इस ने क्या करलिया। ३८ । अर्जुन ने अकेले जाकर इन सब कौरवोंका मथनकर सबके वस्त्र तक छीनलिया तब क्या यह कहीं विदेश को चला-गया था । ३९ । जब घोषयात्रा में गन्धर्वलोग तुम्हारे पुत्र दुर्योधन को पकड़ लिये जातेथे तब यह सूत का बेटा कर्ण कहांथा जो अब बड़ाभारी वीर बनता है। ४० । वहां

---

who often boasts of his ability to kill all the Pandavas alone, is not equal to the sixteenth part of them and the calamity which is about to occur to your sons will come through his bad advice. It is on account of his advice that Duryodhan your unwise son insults the Pandavas who are destroyers of enemies and sons of gods. Has he ever done deeds of prowess like those of the Pandavas which he can boasts of ? What did he do to Arjun when the latter killed his brother at Viratnagar? Where was he gone when Arjun defeated the Kauravas and took over clothes away? Where was this son of Sut when the Gandharvas had taken your sons prisoners? Not only

धृतराष्ट्र उवाच ॥ किमसौपाण्डवोराजा धर्मपुत्रोऽभ्यभाषत । श्रुत्वेहबहुलाः सेनाः प्रीत्यर्थंनःसमागताः ॥ १ ॥ किमसौचेष्टतेसूत योत्स्यमानोयुधिष्ठिरः । केवा स्यभ्रातृपुत्राणां पश्यन्त्याज्ञेप्सवोमुखम् ॥ २ ॥ केस्विदेनंवारयन्ति युद्धाच्छाम्येति वापुनः । निकृत्याकोपितंमन्दैर्धर्मज्ञंधर्मचारिणम् ॥ ३ ॥ संजय उवाच ॥ राज्ञोमुख मुदीक्षन्ते पांचालाःपांडवैःसह । युधिष्ठिरस्यभद्रन्ते ससर्वाननुशास्तिच ॥ ४ ॥ पृथग्भूताःपांडवानां पांचालानांरथव्रजाः । आयांतमभिनन्दन्ति कुन्तीपुत्रंयुधिष्ठिर म् ॥ ५ ॥ नभःसूर्यमिवोद्यन्तं कौंतेयंदीप्ततेजसम् । पांचालाःप्रतिनन्दन्ति तेजोराशि मिवोद्यितम् ॥ ६ ॥ आगोपालाविपालाश्च नन्दमानायुधिष्ठिरम् । पांचालाःकेकया

अध्याय ॥ ५० ॥

धृतराष्ट्रजी संजय से बोले कि धर्मके पुत्र पाण्डव राजा युधिष्ठिरजी ने क्या कहाहै व हमारी प्रसन्नता के लिये जो यह बहुत सेना आई है उसेसुन युद्धकरनेकी इच्छा से युधिष्ठिरजी क्या कररहे हैं व उनके भाइयों तथा पुत्रोंकी आज्ञा चाहते हुये कौन लोग मुखको ओर निहारते हैं । २ । व स्वभाव से अकोपित पर दुष्टों से कोपित राजा युधिष्ठिरजी को युद्ध करने से कौन लोग रोकते हैं । ३ । संजय बोले, कि राजा युधिष्ठिरका मुख सब पांचाल व पांडव देखते हैं, व युधिष्ठिरजी सबको सिखलाते रहतेहैं । ४ । पाण्डवों व पांचालों के रथ समूह अलग २ कुन्तीजी के पुत्र युधिष्ठिरजी को आते देख अभिनन्दित करते हैं । ५ । आकाश में उदित सूर्यके समान प्रकाशित युधिष्ठिरजी तेजोराशिको देख पांचालोग अभिनन्दित करतेहैं । ६ । व गाई बकरी आदि के चरवाहों से ले व पांचालदेश निवासी तथा मत्स्य देशनिवासी सब युधिष्ठिरजी को अभि-

---

CHAPTER L

"What did Yudhishthir the Pandav and son of Dharm say to you?" Said Dhritrashtra to Sanjaya, "what preparations is he making against the great armies that have come here to please us? Who are ready to obey the orders of his brothers and sons and what men give advice against war to Yudhishthir who is naturally calm but hard on the wicked!" "The Panchals and the Pandavas," replied Sanjaya 'await the orders of Yudhishthir who teaches them all. The warriors of the Pandavas and the Panchals give respect to Yudhishthir of sun-like glory. From the shepherds and cowherds to the people of matsya and Panchal, all salute Yudhishthir. Brahman, Kshatrya and Vaishya girls come playing every day to see Yudhish-

संगम्य गन्धर्वास्तेपराजिताः ॥ ४१ ॥ एतान्यस्यमृषोक्तानि बहूनिभरतर्षभ । विकत्थनस्यभद्रन्ते सदाधर्मार्थलोपिनः ॥ ४२ ॥ भीष्मस्यतुवचःश्रुत्वा भारद्वाजोमहामनाः । धृतराष्ट्रमुवाचेदं राजमध्येभिपूजयन् ॥ ४३ ॥ यदाहभरतश्रेष्ठो भीष्मस्तत्क्रियतांनृप । नकाममर्थ लिप्सूनां वचनंकर्त्तुमर्हसि ॥ ४४ ॥ पुरायुद्धात्साधुमन्ये पाण्डवैःसहसंगतम् । यद्वाक्यमर्जुनेनोक्तं संजयेननिवेदितम् ॥ ४५ ॥ सर्वंतदपिजानामि करिष्यतिचपाण्डवः । नह्यस्य त्रिषुलोकेषु सदृशोऽस्तिधनुर्धरः ॥ ४६ ॥ अनादृत्यतुतद्वाक्यमर्थवद्द्रोणभीष्मयोः । ततःससञ्जयंराजा पर्यपृच्छतपांडवान् ४७ तदैव कुरवःसर्वे निराशाजीवितेभवन् । भीष्मद्रोणौयदाराजा नसम्यगनुभाषते ॥ ४८ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि भीष्मद्रोणवाक्ये ऊनपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

अकेले अर्जुनही ने नहीं बरन भीमसेन ने, युधिष्ठिर ने व नकुल सहदेव ने भी इकट्ठे होकर उन गन्धर्वों को पराजित कियाथा । ४१ । हे भरतर्षभ, ये जो बहुतसी बातें यह बकताही चलाजाता है सब झूंठीहैं व सर्वधर्म अर्थ के लोप करने वाली हैं । ४२ । भीष्मजी के वचन सुन बड़े प्रसन्नहो व बड़ाई करते हुये द्रोणाचार्यजी धृतराष्ट्रजी से बोले । ४३ । हेराजन् भरत श्रेष्ठ भीष्मजी ने जो कहा है वही कीजिये, धनके लोभियों के कहेवचन कभी न कीजिये । ४४ । हमभी युद्धसे प्रथमही पांडवों के संग मेल करनाही अच्छा समझते हैं, क्योंकि जो अर्जुनकी कही बातें संजय ने कही हैं । ४५ । हम जानतेहैं अर्जुन सब करेंगे इसमें कुछभी अन्तर न पड़ेगा, क्योंकि अर्जुन के समान तीनों लोकों में आज कल कोई धनुर्द्धर नहीं है । ४६ । अर्थयुक्त भीष्मजी के व द्रोणाचार्य के वचनका निरादरकर राजा धृतराष्ट्र संजय से फिर पांडवों को पूंछने लगे । ४७ । भीष्म द्रोणका उत्तर जब धृतराष्ट्रने प्रीति पूर्वक नहीं दिया तब कौरव निराश होगये ४८॥

Arjun but Yudhishthir, Bhim, Nakul and Sahadev also defeated the gandharvas. The boasting of Karan is all false and against dharm and arth. Dronacharya applauded Bhishma's words and said to Dhritrashtra as follows:- " Act upon the advice of Bhishm, king, never trust those that are greedy. I too like to make peace with the Pandavas instead of making war; for Arjun will do what he has said through Sanjaya and there is no archer like Arjun in the three worlds." Dhritrashtra gave no heed to the words of Bhishm and Dronacharya and began to talk again of the Pandavas with Sanjaya. All the Kauravas were hopeless when the king did not give any reply to to Bhishm and Drona."48.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ किमसौपाण्डवोराजा धर्मपुत्रोऽभ्यभाषत । श्रुत्वेहबहुलाः सेनाः प्रीत्यर्थंनःसमागताः ॥ १ ॥ किमसौचेष्टतेसूत योत्स्यमानोयुधिष्ठिरः । केवास्यभ्रातृपुत्राणां पश्यन्त्याज्ञेप्सवोमुखम् ॥ २ ॥ कोस्विदेनंवारयन्ति युद्धाच्छाम्येति वापुनः । निकृत्याकोपितंमन्दैर्धर्मज्ञंधर्मचारिणम् ॥ ३ ॥ संजय उवाच ॥ राज्ञोमुखमुदीक्षन्ते पांचालाःपांडवैःसह । युधिष्ठिरस्यभद्रन्ते ससर्वाननुशास्तिच ॥ ४ ॥ पृथग्भूताःपांडवानां पांचालानांरथव्रजाः । आयांतमभिनन्दन्ति कुन्तीपुत्रंयुधिष्ठिरम् ॥ ५ ॥ नभःसूर्यमिवोद्यन्तं कौंतेयंदीप्ततेजसम् । पांचालाःप्रतिनन्दन्ति तेजोराशिमिवोदितम् ॥ ६ ॥ आगोपालाविपालाश्च नन्दमानायुधिष्ठिरम् । पांचालाःकेकया

अध्याय ॥ ५० ॥

धृतराष्ट्रजी संजय से बोले कि धर्मके पुत्र पाण्डव राजा युधिष्ठिरजी ने क्या कहाहै व हमारी प्रसन्नता के लिये जो यह बहुत सेना आई है उसेसुन युद्धकरनेकी इच्छा से युधिष्ठिरजी क्या कररहे हैं व उनके भाइयों तथा पुत्रोंकी आज्ञा चाहते हुये कौन लोग मुखकी ओर निहारते हैं । २ । व स्वभाव से अकोपित पर दुष्टों से कोपित राजा युधिष्ठिरजी को युद्ध करने से कौन लोग रोकते हैं । ३ । संजय बोले, कि राजा युधिष्ठिरका मुख सब पांचाल व पांडव देखते हैं, व युधिष्ठिरजी सबको सिखलाते रहतेहैं । ४ । पाण्डवों व पांचालों के रथ समूह अलग २ कुन्तीजी के पुत्र युधिष्ठिरजी को आते देख अभिनन्दित करते हैं । ५ । आकाश में उदित सूर्यके समान प्रकाशित युधिष्ठिरजी तेजोराशिको देख पांचाललोग अभिनन्दित करतेहैं । ६ । व गाई बकरी आदि के चरवाहों से ले व पांचालदेश निवासी तथा मत्स्य देशनिवासी सब युधिष्ठिरजी को अभि-

CHAPTER L

"What did Yudhishthir the Pandav and son of Dharm say to you?" Said Dhritrashtra to Sanjaya, "what preparations is he making against the great armies that have come here to please us? Who are ready to obey the orders of his brothers and sons and what men give advice against war to Yudhishthir who is naturally calm but hard on the wicked?" "The Panchals and the Pandavas," replied Sanjaya "await the orders of Yudhishthir who teaches them all. The warriors of the Pandavas and the Panchals give respect to Yudhishthir of son-like glory. *From the shepherds and cowherds to* the people of matsya and Panchal, all salute Yudhishthir. *Brahman,* Kshatrya and Vaishya girls come playing every day to see Yudhish-

गतस्याः प्रतिनन्दन्तिपांडवम् ॥ ७ ॥ ब्राह्मण्योराजपुत्र्यश्च विशांदुहितरश्चयाः । क्रीडन्त्योभिसमायान्ति पार्थंसन्नद्धमीक्षितुम् ॥ ८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच. ॥ संजय चक्ष्वयेनास्मान् पांडवाअभ्ययुञ्जत । धृष्टद्युम्नस्यसैन्येन सोमकानांबलेनच ॥ ९ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ गावल्गणिस्तुतत्पृष्टः सभायांकुरुसंसदि । निःश्वस्यसुभृशंदीर्घं मुहुःसञ्चिन्तयन्निव ॥ १० ॥ तत्रानिमित्ततोदैवात् सूतंकश्मलमाविशत् । तदाचचक्षेविदुरः सभायांराजसंसदि ॥ ११ ॥ संजयोयंमहाराज मूर्च्छितःपतितोभुवि । वाचंनसृजतेकांचिद्धीनप्रज्ञोल्पचेतनः ॥ १२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ अपश्यत्संजयो नूनं कुन्तीपुत्रान्महारथान् । तैरस्यपुरुषव्याघ्रैर्भृशमुद्वेजितंमनः ॥ १३ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ संजयश्चेततांलब्ध्वा प्रत्याश्वस्येदमब्रवीत् । धृतराष्ट्रंमहाराज सभायांकुरुस

नन्दित करते हैं । ७ । व युधिष्ठिरजी को युद्धकरने के लिये, कवच देखने को सब ब्राह्मणियां व राजपुत्रियां तथा वैश्योंकी कन्या खेलती हुई सदा वहां आती हैं । ८ । धृतराष्ट्रजी बोले कि अब धृष्टद्युम्न व सोमवंशियोंकी सेना पाकर वा और किसीकी सेना पाकर पाण्डवलोग हमलोगों से युद्धकरने को सन्नद्धहुये हों उनको बताओ कौनहैं । ९ । वैशम्पायनजी बोले, कि जब इसप्रकार संजयजी से कुरुवंशियों की सभा में धृतराष्ट्रजी ने पूंछा तो बड़ी देरतक चिन्तना करते ही से सञ्जय अत्यर्थ ऊर्ध्व श्वासलेके । १० । बिना कारणही उनको बड़ा कष्ट हुआ यहांतक कि वे मूर्च्छित होगये, उनकी वह दशा देख सभा में विदुरजी बोले कि । ११ । हे महाराज ये सञ्जय तो मूर्च्छितहो पृथ्वी पर गिर पड़े, अब ऐसे हीनप्रज्ञ होगयेहैं कि कुछ बोलही नहीं सके । १२ । धृतराष्ट्रजी बोले, कि, निश्चयहै कि संजय ने महारथ कुन्ती पुत्रों को देखाहै इसीसे उन पुरुष सिंहों ने इनके मनको उद्वेजित करादिया है । १३ । वैशम्पायनजी बोले कि इतने में चैतन्यहो

---

thir's preparations for war." "Now tell me," said Dhritrashtra, "the names of those kings with the help of whom Yudhishthir means to fight against us." Vaishampayan says that on being thus questioned by Dhritrashtra in the Kaurava court, Sanjaya heaved deep sighs.10. He was fainted with the excess of grief. Seeing this, Vidur said to Dhritrashtra, "Sanjay has fainted, Maharaj; he has lost his sense and cannot speak." "Surely," said Dhritrashtra, "Sanjaya has seen those lions among men, the sons of Kunti and he is excited." Vaishampayan says that in the meantime Sanjaya regained consciousness and thus addressed Dhritrashtra, "Maharaj! I have seen the sons of Kunti very lean on account of their residence at the house of

सदि ॥ १४ ॥ संजय उवाच ॥ दृष्टवानस्मिराजेन्द्र कुन्तीपुत्रान्महारथान्। मत्स्य राजगृहावास निरोधेनावकर्शितान् ॥ १५ ॥ शृणु यैर्हिमहाराज पांडवाअभ्ययुंजत। धृष्टद्युम्नेनवीरेण युद्धेनस्तेभ्ययुंजत ॥ १६ ॥ योनैवरोषान्नभयान्नलोभान्नार्थकारणात्। नहेतुवादाद्धर्मात्मा सत्यंजह्यात्कदाचन ॥ १७ ॥ यःप्रमाणंमहाराज धर्मे धर्मभृतांवरः। अजातशत्रुणातेन पांडवाअभ्ययुंजत ॥ १८ ॥ यस्यबाहुबलेतुल्यः पृथिव्यांनास्तिकश्चन। यंवैसर्वान् महीपालान वशेचक्रेधनुर्द्धरः। यःकाशीनङ्गमगधान् कलिंगांश्चयुधाजयत् ॥ १९ ॥ तेनवोभीमसेनेन पांडवाअभ्ययुंजत। यस्यवीर्येणसहसा चत्वारो भुविपांडवाः ॥ २० ॥ निःसृत्यजतुगेहाद्वै हिडिम्बात्पुरुषादकात्। यथैषामभवद्द्वीपः कुन्तीपुत्रोवृकोदरः ॥ २१ ॥ याज्ञसेनींयथायत्र सिंधुराजो

संजय श्वास सँभार सभामें महाराज धृतराष्ट्रजी से बोले। १४। कि महाराज, विराट राजा के गृहमें बसने से कुन्तीजीके पुत्रों को हमने बहुत दुर्बल देखा। १५। हे महाराज सुनिये जिन लोगों के सहायसे पांडवलोग आपसे युद्ध करने को सन्नद्ध हुये हैं, प्रथम वीर धृष्टद्युम्नके सहायसे पांडवलोग तुम्हारे साथ युद्ध करनेको सन्नद्ध हुये हैं। १६। व जो धर्मात्मा न रोषसे न भयसे न धनके हेतुसे, न कारणों के वादसे कभी सत्यको छोड़ सकेहैं। १७। व जो धर्मधारियों के धर्म में प्रमाणहैं ऐसे युधिष्ठिरजी के सहायसे पांडव लोग युद्ध करनेको सन्नद्ध हुये हैं। १८। व जिन भीमसेनजी ने काशी निवासियों तथा अंग मगध व कलिंग निवासियों को जीता उनके सहायसे पांडवलोग तुमसे युद्ध करनेको सन्नद्ध हुये। १९। व जिसके वीर्य से चारों पांडवलोग बड़ी जल्दी लाक्षाभवन से निकले व फिर हिडिम्ब राक्षस रूप समुद्र जल में धाइलेने को द्वीपरूप हुये। २०। व जब जयद्रथ ने द्रौपदी को पकड़कर खींचाथा तब जो कुन्तीपुत्र भीमसेनजी जिन पाण्डवों को द्वीप हुये थे। २१। व जिस भीमसेन ने वारणावत में जलतेहुये सब पांडवोंको छुड़ाया

Virat. They are ready to fight against you with the help of the following personages:–First among their helpers is brave Dhrishtadyumn who cannot leave truth through anger, fear, avarice or any other reason; the next is Yudhishthir who is an authority in dharm for virtuous men; the third is Bhimsen the conquerer of Kashi, Ang and Kaling, by whose help the Pandavas escaped from the house made of inflammable materials and Hidimv the rakshas. 20. He helped the Pandavas when Jayadrath was taking away Draupadi by force. He saved the Pandavas from burning at Barnavat. He expressed his love to Draupadi at the dreadful Gandhmadan

पक्ष्ठगान्। तत्रैषामभवद्वीरः कुन्तीपुत्रोवृकोदरः २२ यथतानसंगतानसर्वान पांडवान चारणावते। दह्यतोमोचयामास तेनवस्तेभ्ययुज्जते ॥२३॥ कृष्णायांचरतांप्रीति येनक्रोधवशाहता। प्रविश्यविषमंघोरं पर्वतंगन्धमादनम् ॥ २४ ॥ यस्यनागायुतैर्वीर्यं भुजयोःसारमर्पितम्। तेनवोभीमसेनेन पांडवाअभ्ययुञ्जत ॥ २५ ॥ कृष्णद्वितीयो विक्रम्य तुष्ट्यर्थंजातवेदसः। अजयद्यःपुरावीरो युध्यमानपुरन्दरम् ॥ २६ ॥ यास साक्षान्महादेवं गिरिशंशूलपाणिनम्। तोषयामासयुद्धेन देवदेवमुमापतिम् ॥ २७ ॥ यश्चसर्वान्वशंचक्रे लोकपालानधनुर्द्धरः। तेनवोविजयेनाजौ पाण्डवाअभ्ययुंजत २८ प्रतीचींदिशंचक्रे वशेम्लेच्छगणायुताम्। सतत्रनकुलोयोद्धा चित्रयोधीव्यवस्थितः ॥ २९ ॥ तेनवोदर्शनीयेन वीरेणातिधनुर्भृता। माद्रीपुत्रेणकौरव्य पाण्डवाअभ्ययुंजत

घनके सहायसे पांडवलोग तुम्हारे साथ युद्धकरनेको सन्नद्धहुये। २२। व जिस भीमसेन जी ने विषमघोर गन्धमादन पर्व्वतपर जाकर द्रौपदीकी रतिकी प्रीति दिखाई व अपने क्रोधसे औरोंको पराजित किया। २३। व जिनके भुजों में दश सहस्र हस्तियों के पराक्रम का सारहै उन भीमसेनजीके सहाय से पाण्डव लोग तुमसे युद्ध करनेको सन्नद्ध हुयेहैं। २४। व जिन्हों ने कृष्णचन्द्रजीके संग रह पराक्रमसे इन्द्रादि देवोंको जीत अग्निको खांडव वन दिया। २५। व जिन्होंने युद्धमें साक्षात् शूलपाणि गिरीश उमापति महादेव जीको सन्तुष्ट करदिया। २६। व जिन्होंने धनुर्धारण कर सब लोकपालों को अपने वश में करलिया उन अर्ज्जुनजीकी सहायतासे पाण्डवलोग तुमसे युद्ध करने को उद्यत हुयेहैं। २७। जिसने पश्चिमदिशाके निवासी सब म्लेच्छों को जीतकर वह दिशा अपने वश में करली, वे चित्र विचित्र योद्धा नकुलजी वहां विद्यमान हैं। २८। उन अति दर्शनीय धनुर्धारी वीर माद्रीजीके पुत्र नकुल की सहायसे पांडवलोग तुम्हारे साथ युद्ध करनेको सन्नद्ध हुये हैं। २९। जिस ने काशी, अंग, मगध, व कालिंगदेश निवासियोंको समरमें जीतलिया उन्हीं के सहायसे पांडवलोग तुम से युद्ध करनेको सन्नद्धहैं। ३०। व जिसके

---

mountain and fought to please her. He has the strength of ten thousand elephants in his arms. The Pandavas would fight against you on the strength of him who with Shree Krishna defeated Indra and other gods and gave the forest of Khandav to be burnt by Agni, *who pleased in battle Mahadev himself, the lord of Uma, bearer of* trident and lord of mountains and who with his bow conquered the Lokpals. Nakul is the great warrior who conquered the mlechas of the west and conquered that country and who conquered Kashi, Magadh, Ang and Kaling. 30. They are ready to fight against you

॥ ३० ॥ यःकाशीनंगमगधान कलिंगांश्च युधाजयत् । तेनवःसहदेवेन पांडवाअभ्यु युञ्जत ॥ ३१ ॥ यस्यवीर्येण सदृशाश्चत्वारो भुविमानवाः । अश्वत्थामाधृष्टकेतूरुक्मी प्रद्युम्नएवच ॥ ३२ ॥ तेनवःसहदेवेन युद्धंराजन्महात्ययम् । यवीयसानृवीरेण माद्रीनन्दिकरेणच ॥ ३३ ॥ तपश्चचारयाघोरं काशिकन्यापुरासती । भीष्मस्यवधमिच्छन्ती प्रेत्यापिभरतर्षभ ॥ ३४ ॥ पाञ्चालस्यसुताजज्ञे दैवाचसपुनःपुमान् । स्त्रीपुंसोःपुरुष व्याघ्रःयःसवेद गुणागुणान् ॥ ३५ ॥ यःकलिंगान्समापेदे पांचाल्योयुद्धदुर्मदः । शिखण्डिनावःकुरवः कृतास्त्रेणाभ्ययुंजत ॥ ३६ ॥ यंयक्षःपुरुषंचक्रे भीष्मस्यनिधनेच्छया । महेष्वासेनरौद्रेण पाण्डवाअभ्ययुञ्जत ॥ ३७ ॥ महेष्वासाराजपुत्राभ्रातरः पञ्चकेकयाः । आमुक्तकवचाःशूरास्तैश्च वस्तेऽभ्ययुञ्जत ॥ ३८ ॥ योदीर्घबाहुः

वीर्यके सदृश पृथ्वी में चारही पुरुषहैं पांचवां नहीं । ३१ । एक अश्वत्थामा, दूसरा, धृष्टकेतु, तीसरा रुक्मी, चौथे प्रद्युम्न उन्हीं सब से छोटे माद्री के पुत्र सहदेवकी सहायसे पांडवलोग तुम्हारे संग युद्धकरने को उद्यतहैं । ३२ । व जो अम्बानाम काशिराजकीकन्या ने पूर्वकाल में भीष्मपितामहजीके वधकी इच्छा से घोरतप कियाथा व चाहाथा कि मैं मरकरभी जहां कहीं जन्मलूं भीष्मको मारूं व पांचालराजकी कन्याहुई भाग्यवशसे फिर वही पुरुषहो गई । ३४ । व स्त्री पुरुषदोनों के गुण जो अच्छीतरह जानती रही, व वही पुरुष युद्ध में दुर्मद पांचाल राजका पुत्र कलिंगदेश के राजाओं से लड़ा । ३५ । उस शिखंडी वीरकी सहायता से पांडवलोग तुम कुरुवंशियों से युद्धकरने को सन्नद्ध हैं । ३६ । व जिसे भीष्मके वधकी इच्छा से कुवेरने पुरुष बनाया उसी बड़े धनुर्द्धरके सहायसे पांडव लोग तुम्हारेसंग युद्धकरनेको उद्यतहुये हैं । ३७ । व बड़ेभारी धनुर्द्धर पांचभाई केकयराज के पुत्र सदा कवचादि धारणकिये रहते ऐसे शूरहैं उन के सहायसे पांडवलोग तुम से युद्धकरने को सन्नद्ध हैं । ३८ । व दीर्घबाहु शीघ्र अस्त्रचलानेवाले सत्य विक्रम वृष्णिवंशमें वीर सात्यकि

---

on the strength of Sahadev, the youngest son of Madri, whom only four men can cope with, namely, Ashwathama, Dhrisht-ketu, Runki and Pradyumna. Amva, the daughter of the king of Kashi, who had formerly performed a severe penance for the death of Bhim in her next birth, was born as the daughter of the King of Panchal and has got manhood. She has lived the lives of both woman and man and in the latter capacity fought the king of Kaling. That brave Shikhandi has come to help the Pandavas. To kill Bhishm, Kuver has changed her into a man and the Pandavas will fight against you with the help of that great archer. The sons of the king of Kaikaya, five brothers, who are great archers and w'

शिमास्तो धृतिमानसत्यविक्रमः। तेनवोदृष्णिवीरेण युयुधानेनसंगरः ॥ ३९ ॥ य आसीच्छरणंकाले पांडवानांमहात्मनाम् । रणेतेनविराटेन भवितावःसमागमः॥४०॥ य काशिपतीराजा वाराणस्यांमहारथ । सतेषामभवद्योद्धा तेनवस्तेभ्ययुज्जत ४१॥ शिशुभिर्दुर्जयैःसङ्ख्ये द्रौपदेयैर्महात्मभिः। आशीविषसमस्पर्शैः पांडवाअभ्ययुंजत ॥ ४२ ॥ य कृष्णसमशोवीर्ये युधिष्ठिरसमोदमे । तेनाभिमन्युनासंख्ये पांडवाअभ्ययुंजत ॥ ४३ ॥ यश्चैवाप्रतिमोवीर्ये धृष्टकेतुर्महायशाः । दु सहःसमरेक्रुद्धः शैशुपालि र्महारथः ॥ ४४ ॥ तेनवश्चेदिराजेन पांडवाअभ्ययुंजत । अक्षौहिण्यापरिवृतः पांड वानयोभिसंश्रितः ॥ ४५ ॥ यासंश्रयःपांडवानां देवानामिववासवः । तेनवोवासु-

---

र्य हैं,उन से तुम से युद्धहोगा । ३९ । व जो १२ वर्ष बनवास करने के पीछे महात्मा पाण्डवोंके शरण हुयेथे उन राजा विराट से तुम से युद्धहोगा । ४० । व जो काशीपति-राजा वाराणसीपुरी में बसताहै वह पाण्डवों का योद्धाहुआहै इस से वे लोग तुम से युद्ध करने को सन्नद्ध हुयेहैं । ४१ । व द्रुपदराज के महात्मा पुत्र जो विषधर सर्प समान स्पर्श करने में हैं, उनको पाकर पाण्डवलोग तुम से युद्ध किया चाहते हैं । ४२ । व जो वीर्य में अर्जुन के तुल्य व इन्द्रियों के दमन करने के विषय में युधिष्ठिरजी के तुल्यहैं उन वीर अभिमन्यु के साथ पाण्डवलोग तुम से युद्ध करने को सन्नद्ध हुये हैं । ४३ । व, जो शिशुपाल का पुत्र महायशस्वी समर में दुस्सह धृष्टद्युम्न वीरहै उस चेदिराजकी सहायता से पाण्डवलोग तुम से युद्ध करने को सन्नद्धहुये । ४४ । जो कि धृष्टद्युम्न एक अक्षौहिणी सेनाले पाण्डवों के समीप आया है । ४५ । व जो वासुदेवजी पाण्डवों के आश्रय देवताओं के आश्रय इन्द्रके समान हैं उनकी सहायता से पाण्डवलोग तुम

---

are always clad in coats of mail, have come to help the Pandavas. You will have to fight with Satyaki of Vrishni family, long armed, dextrous in the use of weapons and possessing true valour. You *will have to fight also with king Virat who protected the Pandavas* after their twelve years of exile. 40. The king of Kashi, too, has become the champion of the Pandavas and therefore they are prepared to fight against you. The sons of Drupad who are like venomous snakes to the touch, will help the Pandavas against you. Brave Abhimanyu who is like Arjun in prowess and like Yudhishthir in the control of senses, will help the Pandavas against you. Shishupal's son, brave Dhrishtadyumn, the king of Chedy who is unbearable in battle and has brought with him an akshauhini of army, will fight against you. The Pandavas are prepared to fight

द्वेन पाण्डवाअभ्ययुञ्जत ॥ ४६ ॥ तथाचेदिपतेर्भ्राता शरभोभरतर्षभ । करकर्षेणसहितस्ताभ्यांतस्तेभ्ययुञ्जत ॥ ४७ ॥ जारासन्धिःसहदेवो जयत्सेनश्चताबुभौ । युद्धेप्रतिरथेवीरौ पाण्डवार्थेव्यवस्थितौ ॥ ४८ ॥ द्रुपदश्चमहातेजा बलेनमहतावृतः । त्यक्तात्मापाण्डवार्थाय योत्स्यमानोव्यवस्थितः ॥ ४९ ॥ एतेचान्येचबहवः प्राच्योदीच्यामहीक्षितः । शतशोयानुपाश्रित्य धर्मराजोव्यवस्थितः ॥ ५० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि संजयवाक्ये पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ सर्वएतेमहोत्साहा येत्वयापरिकीर्तिताः । एकतस्त्वेवतेसर्वे समेताभीमएकतः ॥ १ ॥ भीमसेनाद्धिमेभूयो भयंसञ्जायतेमहत् । क्रुद्धादमर्षणा-

---

से युद्ध करने को सन्नद्ध हुये हैं । ४६ । व उसी प्रकार का चंदेरी का भाई शरभ है व उस के संग उसका भाई करकर्ष भी है, इन दोनोंकी सहायता से पाण्डवलोग तुम से युद्ध करने को सन्नद्ध हैं । ४७ । व जरासन्ध के पुत्र सहदेव व जयत्सेन युद्ध में अद्वितीय वीर ये दोनों पाण्डवों के अर्थ युद्ध करने पर उद्यत हैं । ४८ । व राजाद्रुपदजी भी बड़ी भारी सेनाले पाण्डवों के अर्थ तुम से युद्ध करने को उद्यतहैं । ४९ । ये व इनको छोड़ और भी पूर्व पश्चिम उत्तर के बहुत से राजालोग सहस्रों वहाँ आये हैं जिन सबोंके आश्रय से पाण्डवलोग तुम्हारे संग युद्ध करने को सन्नद्ध हुये हैं ५० ॥

अध्याय ॥ ५१ ॥

इतना सुन धृतराष्ट्रजी बोले कि, हे संजय जिनको तुमने गिनाया वे सब बड़े धनुर्द्धर हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं परन्तु ये सब मिलकर एक ओर व एक ओर अकेले भीमसेनहैं । १ । इससे हे तात असहनशील क्रोध किये हुये भीमसेन से हमको महाभय

---

against you on the strength of Shree Krishna who is their refuge as Indra is of gods. Sharable and Karshable the brave brothers will help the Pandavas against you. The two sons of Jarasandh, Sahadev and Jayatseen, the matchless warriors, have also come to help the Pandavas. King Drupad, too, with a large army, is ready to fight against you. These and thousands others of the west and the north have come to the help of the Pandavas and they are ready to fight against you with the help of them. 50.

CHAPTER LI

"The persons named by you," said Dhritrashtra to Sanjaya, "are no doubt great archers, but they cannot all be matched by Bhimsen. I am in great terror of the unbearable anger of Bhimsen as deer are

त्तात व्याघ्रादिवपदाकरोः ॥ २ ॥ जागर्मिरात्रयःसर्वा दीर्घमुष्णंचानि श्वसन् । भीतोवृकोदराचात सिंहात्पशुरिवापरः ॥ ३ ॥ नहितस्यमहाबाहोः शक्रप्रतिमतेजसः। सैन्येस्मिनप्रतिपश्यामि यएनंविषहेद्युधि ॥ ४ ॥ अमर्षणश्चकौन्तेयो दृढवैरश्चपांडवः । अनर्महासीसोन्मादस्तिर्यक्प्रेक्षीमहास्वनः ॥ ५ ॥ महावेगोमहोत्साहो महाबाहुर्महाबलः । मन्दानांममपुत्राणां युद्धेनान्तंकरिष्यति ॥ ६ ॥ उरुग्राहगृहीतानां गदांबिभ्रद्वृकोदरः । कुरूणामृषभोयुद्धे दंडपाणिरिवान्तकः ॥ ७ ॥ अष्टास्रिमायसींघोरां गदांकांचनभूषणाम् । मनसाहंप्रपश्यामि ब्रह्मदण्डमिवोद्यतम् ॥ ८ ॥ यथामृगाणांयूथेषु सिंहोजातबलश्चरेत् । मामकेषुतथाभीमो बलेषुविचरिष्यति ॥ ९ ॥ सर्वेषांममपुत्राणां सएकः क्रूरविक्रमः । बह्वाशीविप्रतीपश्च बाल्येपिरभसःसदा १० ॥

उत्पन्न होती है जैसे व्याघ्र से मृगको भयहोती है । २ । हम भीमसेन के भयसे ऊंची व ऊंची श्वासें लेते सब रात्रियों में जागते ही रहते हैं जैसे व्याघ्र के भय से और मृगगण जागते रहते हैं । ३ । व अपनी सेनामें हम ऐसा किसी को नहीं देखते जो इन्द्र समान पराक्रमी महाबाहु भीमसेन के समान युद्ध में लड़ाहो व उनको सहसके । ४ । इससे असहनशील व दृढ़ वैरकारी सत्य हास्य करनेवाले सदा तिरछे देखनेवाले महावेग महापराक्रम महाबाहु महाबल भीमसेनजी मन्दबुद्धि हमारे पुत्रों का युद्ध में नाश करावेंगे । ६ । महानिर्बन्ध के वशीभूत कुरुवंशियों को गदा हाथ में लिये भीमसेन यमराजही के समान युद्धमेंहैं । ७ । आठकोनकी लोहसे बनी व सुवर्ण से भूषित भीमसेनकी महागदा उद्यत ब्रह्मदंडके समान हम देखाकरतेहैं । ८ । जैसे मृगोंके यूथों में बड़े बलसे सिंह फिरता है वैसेही हमारी सेनाओं में भीमसेन फिरेंगे । ९ । ये भीमसेन सब हमारे पुत्रोंसे क्रूर विक्रम हैं व बाल्यावस्थाही में सबसे अधिक भोजन

---

of a lion. *On account of his fear I heave deep sighs and pass sleepness nights as deer are on the watch for the fear of a lion.* I see in our army no warrior who can face or cope with Bhim of Indra like prowess *in battle.* *Bhimsen of unbearable nature, spiteful,* truthful in joke, always sending forth side glances and of great prowess, velocity and arms, will surely kill my foolish sons in battle. *Bhimsen the macebearer is in battle like Yam to the lazy Kauravas.* The eight sided iron mace of Bhimsen, decked with gold, is always before my eyes like the emblem of death. Bhimsen will enter our armies as a lion enters a herd of cattle. Bhimsen is more powerful than any of my sons, he was swifter and ate more than them in his

उद्वेपतेमेहृदयंमे मेदुर्योधनादयः । बाल्येपितेनयुध्यंतो वारणेनेवमर्दिताः ॥ ११ ॥
तस्यवीर्य्येणसंक्लिष्टा नित्यमेवसुतामम । सएवहेतुर्भेदस्य भीमोभीमपराक्रमः १२॥
ग्रसमानमनीकानि नरवारणवाजिनाम् । पश्यामीवाग्रतोभीमं क्रोधमूर्छितमाहवे १३
अस्त्रेद्रोणार्जुनसमं वायुवेगसमंजवे । महेश्वरसमंक्रोधे कोहन्याद्भीममाहवे ॥ १४ ॥
संजयाचक्ष्वमेशूरं भीमसेनममर्षणम् । अतिलाभन्तुमन्येहं यचेनरिपुघातिना १५ ॥
तदैवनहतास्सर्वे पुत्रामममनस्विना । येनभीमबलायक्षा राक्षसाश्चपुराहताः ॥ १६ ॥
कथंतस्यरणेवेगं मानुषःप्रसहिष्यति । नसजातुवशेतस्थौ ममबाल्येपिसंजय ॥ १७ ॥
किंपुनर्ममदुष्पुत्रैः क्लिष्टःसंप्रतिपांडवः । निष्ठुरोरोषणोत्यर्थं भज्येतापिनसंनमेत्

करतेथे व सब से अधिक वेगवान्भी थे । १० । जो बाल्यावस्थाही में हमारे पुत्रों के साथ भीमसेन लड़तेथे तभी से हाथीके समान इनको मर्दित करडालतेथे इसीका स्मरण कर हमारा हृदय कंपता रहताहै । ११ । व उन्हीं के वीर्य में सदा हमारे पुत्र लपटे रहतेथे व वही भीमपराक्रमी भीमही इनलोगों के बीच में भेद डालने के मूलहै । १२ । व मनुष्य घोड़े हाथियों की सेनाओं को निगलते भीमसेनको समर में क्रुद्ध हम अपने आगेही खड़े से देखते हैं । १३ । अस्त्रमें द्रोणाचार्य व अर्जुन के समान वेगमें वायु समान क्रोध में महादेव के तुल्य भीमसेन को संग्राममें कौन मारेगा । १४ । हे संजय असहनशील महाशूरवीर हमारे भीमसेन के समाचार कहो हम उनको अलभ्य लाभ समझते हैं जोकि उन शत्रुघाती ने । १५ । तभी खेलनेही के समय व वनवासहीके समय हमारे पुत्रों को नहीं मारडाला, क्योंकि उन्होंने आगे बड़े २ बलवान् यक्षोंको मारडाला था । १६ । फिर उनका वेग संग्राम में कोई मनुष्य कैसे सहसकेगा, हे संजय भीमसेन तो बाल्यावस्थामेंभी हमारे वश में नहीं रहतेथे । १७। फिर अब जब कि हमारे दुष्टपुत्रों से नानाप्रकार के क्लेशपाचुके, तब तो औरभी निठुर रोषीहो हम से दूर

---

boyhood. 10. *He used to beat all my sons down in boy-fighting* and with the memory of this fact my heart always trembles. My sons have always been entangled in Bhim's quarrels and he is sole cause of strife between them. I see before me the figure of Bhimsen swallowing the elephants, horses and men of our army. Who will kill in battle Bhimsen who is like Dronacharya and Arjun in the knowledge *of arms, like wind in velocity and like Mahadev in anger?* Tell me all about our brave Bhimsen, Sanjaya. It is enough that he did not kill my sons in play or at the time of exile as he had killed many rakshases. Who will be able to withstand him in battle when no one could control him in boyhood? *How can we* pacify Bhimsen who is made more cruel and angry by our wicked

तिरियरूमेषी संहतभ्रूः कथशाम्येद्वृकोदरः ॥ १८ ॥ शूरस्तथाप्रतिबलो गौर स्तालइवोन्नतः । प्रमाणतोभीमसेनः प्रादेशेनाधिकोर्जुनात् ॥ १९ ॥ जवेनवा जिनोत्येति बलेनात्येति कुंजरान् । अव्यक्तजल्पी मध्वक्षो मध्यमः पांडवानवी ॥ २० ॥ इतिबाल्येश्रुतं पूर्वं मयाव्यासमुखात्पुरा । रूपतोवीर्यतश्चैव याथा तथ्येनपाण्डवः ॥ २१ ॥ आयसेनसदण्डेन रथान्नागान्नरान्हयान् । हनिष्यतिरणे क्रुद्धो रौद्रःक्रूरपराक्रमः ॥ २२ ॥ अमर्षीनित्यसंरब्धो भीमःप्रहरतांवरः । मयाताता प्रतीपानि कुर्वनपूर्वंविमानितः ॥ २३ ॥ निष्कर्णामायसींस्थूलां सुपार्श्वांकांचनीं गदाम् । शतघ्नींशतनिर्ह्रादां कथंसह्यन्तिमेसुताः ॥ २४ ॥ अपारमप्लवागाधं समुद्रंशर

भागेंगे वहमेरे सामने कभी न नम्र होंगे, सदा तिरछे देखने टेढ़ी भौंहें किये भीमसेन कैसे शान्त होंगे । १८ । व शूरवीर, अप्रतिमबल गौरस्वरूप ऊंचे ताड़केप्रमाण लम्बाईमें भीमसेन अर्जुनसे भी बीताभर अधिक हैं । १९ । व वेगसे तो वेघ ड़ोंको अतिक्रमण करजाते, व बलसे हाथियोंका, व वे पाण्डवों में मध्यम मधुमत्त नेत्र वही भीमसेन सदा स्पष्ट बातें नहीं करते जो कहते हैं टुकड़ाही भरकर कहते हैं । २० । व हमने व्यासजी के मुखसे भीमसेनकी बाल्यावस्थाहीमें सुनाथा कि रूपस वीर्य से भीमसेन यथातथ्य पाडु व पतनहीके समानहैं । २१ । व जब व समरमें क्रोधकरेंगे तो लोहेकी गदासे रथ हाथी घोड़े व मनुष्य सबको मारडालेंगे । २२ । ऐसे असहनशील नित्य क्रोधी प्रहार करने वालों में श्रेष्ठ भीमसेन का पूर्व समय में अप्रियकर हमने बड़ा अपमान किया है ।२३। अब हम यह सोचते हैं कि कानोंतक खैंचकर चलाई हुई, लोहेकी बड़ी मोटी सुवर्ण से भूषित जञ्जीरों स बँधी भीमसेनकी गदा जो कि सैकड़ों को एकही सग नाशती है व वज्रकासा जिसमें नादहोता है उस हमारे पुत्र कैसे सहसकेंगे । २४ । व वे मन्द हमारे

sons. He will now have no respect for me Brave, unusually strong, of white colour and tall as a palm tree, Bhimsen is taller than Arjun by a span's length. He is swifter than horses and stronger than elephants, his eyes are like that of an intoxicated man and he often speaks in monosyllables 20. Vyasa told me once that the boy Bhim was like Pandu in beauty and prowess He will destroy elephants, horses and men with his iron mace when he is angry in battle We have much displeased Bhim who is of unbearable temper, hotminded and dextrous in the use of weapons I am at a loss to know how our sons will be able to bear the blows of Bhim's iron mace of great thickness, decked with gold and fitted with chains which when hurled with great force destroys thousands at each blow and gives forth a sound like that of vajra Our foolish sons wish to cross the angry ocean

वेधनम् । भीमसेनमयंदुर्गं तातमंदास्तितीर्षवः ॥ २५ ॥ क्रोशतोमेनशृण्वंति बालाः पण्डितमानिनः । विषमंनहिमन्यन्ते प्रपातंमधुदर्शिन ॥ २६ ॥ सयुग येगमिष्यन्ति नररूपेणमृत्युना । नियतंचोदिताधात्रा सिंहनेवमहामृगाः ॥ २७ ॥ शैक्यांतातचतुष्किष्कुं षडस्रिममितौजसम् । महिरांदु:खसमस्पर्शां कथंसक्ष्यन्तिमेसुताः ॥ २८ ॥ गदांभ्रामयतस्तस्य भिंदतोहस्तिमस्तकान । सृक्किणीलेलिहानस्य बाष्पमुत्सृजतोमुहुः ॥ २९ ॥ उद्दिश्यनागान्पततः कुर्वतोभैरवान्रवान् । मतीपपततोमत्तान् कुञ्जरान् मतिगर्जतः ॥ ३० ॥ विगाह्यरथमार्गेषु वरानुद्दिश्यनिघ्नतः । अग्नेःप्रज्वलितस्येव अपिमुच्येतमेप्रजा ॥ ३१ ॥ वीर्यांकुर्वन् महाबाहुर्द्रावयन्ममवाहिनीम् । नृत्यन्निव

पुत्र, अपार नौकाकी भी अथाह धारसे वेधन करने के योग्य भीमसेनरूप दुर्गम समुद्र उतरा चाहते हैं । २५ । ये हमारे मूर्ख लडके हम बका करते हैं सुनतेही नहीं क्या करें मदिरा से मतवाले लोग खाडी ऊंचा विषम मानतेही नहीं । २६ । जो नररूप मृत्यु के सामने समर में जाँयगे उनको जानों ब्रह्मा ने प्रेरणाकी जैसे सिंह मृगों को मारने की प्रेरणा करता है । २७ । व ६ कोणकी चारहाथकी लम्बी अमित पराक्रमी दुःख से स्पर्शकरने के योग्य शिखर में स्थापित किये भीमसेनकी चलाई गदा हमारे पुत्र कैसे सहेंगे । २८ । व गदा घुमाते, हाथियों का मस्तक फोडते, जोम इधर उधर ओठ चाटते वार २ मुखसे फूक निकालते । २९ । हाथियों की ओर निहारते, भयंकर नाद करते, व हाथियों के ऊपर ओरसे कूदते व गर्जते । ३० । व रथ मार्गों में कूदते फाड़ते उन के सवारों को मींगते मारते प्रज्वलित अग्नि के समान वर्तमान भीमसेन से मेरी प्रजा कैसे बचेगी । ३१ । हमारी सेनाको विदारित करते

---

of Bhim's velocity with the help of their flimsy arrows. These foolish sons of mine give no ear to my advice as intoxicated persons donot discern the high and low places Those who impelled by Fate will face that death in human shape will act like deer who go to a lion. How will our sons be able to bear the six-edged mace of Bhimsen which is four cubits long, of great prowess and hard of touch What hope is there of the safety to my army from Bhimsen when he will be swinging his mace, breaking the heads of elephants, licking his lips with his tongue, spitting saliva from his mouth, looking towards elephants, making dreadful noise, jumping and shooting at elephants and chariots and destroying their riders like fire!. 31. Destroying our army and making way for his chariot

गदापाणिर्युगान्तदर्शयिष्यति ॥ ३२ ॥ प्रभिन्नइवमातंगः प्रभंजनपुष्पितान्द्रुमान । प्रवक्ष्यतिरणसेना पुत्राणांमेवृकोदरः ॥ ३३ ॥ कुर्वन्रथान्विपुरुषान विसारथिहय ध्वजान । आरुजन्पुरुषव्याघ्रो रथिनःसादिनस्तथा ॥ ३४ ॥ गंगावेगइवानूपांस्तीरजान्विविधान्द्रुमान । प्रभक्ष्यतिरणेसेनां पुत्राणांममसंजय ॥ ३५ ॥ दिशोनूनं गमिष्यन्ति भीमसेनभयार्दिताः । ममपुत्राश्चभृत्याश्च राजानश्चैवसंजय ॥ ३६ ॥ येन राजामहावीर्य प्रविश्यान्तःपुरंपुरा । वासुदेवसहायेन जरासन्धो निपातितः ॥३७॥ कृत्स्नेयंपृथिवीदेवी जरासंधेनधीमता । मागधेन्द्रेणबलिना वशेकृत्वाप्रतापिता ३८ ॥ भीष्मप्रतापात्कुरवो नयेनान्धकवृष्णयः । यन्नतस्यवशेजग्मुः केवलंदैवमेवतत् ३९॥ सगत्वापाण्डुपुत्रेण तरसाबाहुशालिना । अनायुधेनवीरेण निहतःकिंततोधिकम् ४०॥

रथजाने का मार्ग बनाते गदाहाथ में लिये महाबाहु भीमसेन प्रलय समय दिखावेंगे ३२ पुष्पित वृक्षोंको तोड़ते हुये मदान्ध हाथी के समान हमारे पुत्रोंकी सेनाको विदारते भीमसेन रण में प्रवेश करेंगे । ३३ । व रथी घोड़े सारथि रहित रथों को करते व रथियों तथा सवारों को भंजन करते, तीरके वृक्षों को ढावेहुये गंगा वेगके समान भीमसेन हमारे पुत्रों की सेनामें पैठेंगे । ३५ । हे सञ्जय हमारे पुत्र भृत्य व राजालोग सब भीमसेन के भय से पीड़ित दिशों में भागते फिरेंगे । ३६ । जिस भीमसेन वीर ने कृष्ण चन्द्र की सहायता से महापराक्रमी जरासन्ध को उस के स्थान में जाकर मारा । ३७ । जिस बली जरासन्ध ने संपूर्ण पृथ्वी जीत अपने वशकर प्रतापित कियाथा । ३८ । देखो भीष्मजी के प्रताप से कुरुवंशी अन्धक वृष्णिवंशी जरासन्ध के वशीभूत नहींहुये सो भी भाग्यहीका फलथा । ३९ । ऐसे जरासन्धको बाहुशाली भीमसेनजी ने जाकर बिना आयुध धारण कियेही मारडाला फिर उस से अधिक कौनहै जिसेभीमसेन न मार-

---

with his mace, brave Bhimsen will make the scene like that of pralaya Breaking tees in bloom and destroying the army of our sons like a blind elephant, Bhimsen will enter the field of battle Depriving the chariots of charioteers, horses and drivers and falling trees with the velocity like that of the Ganges, Bhimsen will enter the army of our sons Our sons, servants and warriors, pressed hard by Bhimsen, will run in all directions. No one can kill Bhim who with the assistance of Krishn killed Jarasandh the conquerer of the whole land, although by the graces of Bhishm the latter could not conquer the Kauravas, the Andhaks and the Vrishnis. Bhimsen killed Jarasandh without the assistance of any weapons 40. He

दीर्घकालसमासक्तं विषमाशी विषोयथा । सपोक्ष्यतिरणेतेजः पुत्रेपुममसंजय ४१ महेन्द्रइववज्रेण दानवान्देवसत्तमः । भीमसेनोगदापाणिः सूदयिष्यतिमेसुतान् ४२ अविषह्यमनावार्यं तीव्रवेगपराक्रमम् । पश्यामीवातिताम्राक्ष मापतन्तंवृकोदरम् ४३ अगदस्याप्यधनुषो विरथस्यविवर्मणः । बाहुभ्यांयुध्यमानस्य कस्तिष्ठेदग्रत पुमान् ॥ ४४ ॥ भीष्मोद्रोणश्चविप्रोयं कृप शारद्वतस्तथा । जानंत्येतेयथैवाह वीर्यज्ञस्तस्य धीमता ॥ ४५ ॥ आर्यव्रतन्तुजानन्तः संगरान्तंविभित्सवः । सेनामुखेपुस्थास्यंति मामकानांनरर्षभाः ॥ ४६ ॥ बलीयःसर्वतोदिष्टं पुरुषस्यविशेषतः । पश्यन्नपिजयं तेषां ननियच्छामिपरसुतान् ॥ ४७ ॥ तेपुराणंमहेष्वासा मार्गमैन्द्रंसमास्थिताः । त्य-

---

डालेंगे । ४० । जैसे बहुतकाल से इकट्ठा कियाहुआ विष विषधर सर्प लोगों पर छोड़ता है उसीतरह हमारे पुत्रों के ऊपर रण में भीमसेन तेज छोड़ेंगे । ४१ । व देवताओं में अतिश्रेष्ठ इन्द्रजी जैसे वज्रसे दानवों को मारते हैं ऐसेही गदा हाथमें लिये भीमसेन हमारे पुत्रोंको मारडालेंगे । ४२ । सहने के अयोग्य, अतिवीर्यवान् तीव्रवेग पराक्रमी भीमसेन को लालनेत्र किये आगे रणमें कूदतेही से हम देखा करते हैं । ४३ । गदारहित, धनुर्हीन, रथपर न चढ़ेहुये व कवचादि न धारणकिये हुये भीमसेनजी से केवल मल्लयुद्धही में इधरका कौन वीर आगे खड़ाहोगा । ४४ । जिस प्रकार हमधीमान् भीमसेनका वीर्य जानते हैं, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य भी जानते हैं। ४५। वे भीष्मादिक हमारे यहांके वीर जब सेनाके आगे खड़ेहोंगे तब अपना नाश अच्छी तरह जानेंगे । ४६ । उनलोगोंकी विजय देखते भी हैं परन्तु जो हम अपने पुत्रोंको नहीं रोकते इससे यह स्पष्टहै कि पुरुषकी भाग्य बड़ी बलवती होती है चाहे जो करे ४७ वे सब महाधनुर्द्धर पुराने स्वर्ग मार्गपर टिके हैं, इससे राज यशकी रक्षा करते रणमें

---

will let loose his energy over our sons as a venomous serpent does its long stored venom over men. He will kill our sons with his mace as Indra kills the Danavas with his vajra. The figure of Bhimsen of unbearable prowess with great velocity and with red eyes jumping in battle is always before me. None of my warriors can cope with Bhimsen in wrestling even when he is without his mace, bow, chariot and armour. Bhishma, Dronacharya and Kripacharya as well as I know the strength of wise Bhimsen. Bhishma and other warriors of ours will see their own destruction before them when they stand in the field of the battle. We do not check our sons, although we know that the Pandavas are sure to gain victory; this shows that Fate is very powerful. Those great archers are firm on

क्ष्यन्तितुमुलेप्राणान् रक्षन्तःपार्थिवंयशः ॥ ४८ ॥ यथैवपाण्डवास्तात तथैवपांपाण्डवाअपि । पौत्राभीष्मस्यशिष्याश्च द्रोणस्यचकृपस्यच ॥ ४९ ॥ येत्वस्मदाश्रयंकिंचिद्दत्तमिष्टंचसंजय । तस्याप्रचितिमार्यत्वात्कर्त्तारःस्थविरास्त्रयः ॥ ५० ॥ आददानस्यशस्त्रंहि क्षत्रधर्मपराप्सतः । निधनंक्षत्रियस्याजौ वरमेवाहुरुत्तमम् ॥ ५१ ॥ सर्वेशोचामिसर्वान्वै येयुयुत्संतिपाण्डवैः । विक्रुष्टंविदुरेणादौ तदेतद्भयमागतम् ५२ ननुमन्ये विघाताय ज्ञानंदु खस्यसंजय । भवत्यतिबलंह्येतज्ज्ञानस्याप्युपघातकम् ५३ ऋषयोह्यपि निर्मुक्ताः पश्यंतोलोकसंग्रहान् । सुखैर्भवन्तिसुखिनस्तथादुःखेनदुःखिताः ॥ ५४ ॥ किंपुनर्योहमासक्तस्तत्रतत्रसहस्रधा । पुत्रेपुराज्यदारेषु पौत्रेष्वपिच बन्धुषु ॥ ५५ ॥ संशयेतुमहत्यस्मिन् किंनुक्षेममनुत्तमम् । विनाशंह्येवपश्यामि कुरू

अपने प्राण छोड़नेपर तैयारहोजांयगे । ४८ । व जैसे भीष्मजी के पौत्र व द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य के शिष्य हमारेपुत्र हैं ऐसेही पांडवलोगभी इनलोगों के पौत्र शिष्य हैं ।४९। व जो कुछ हमारे आश्रय से थोड़ाबहुत इष्टआदि इनलोगों को मिलता है उसका उपकार श्रेष्ठ होनेके कारण ये तीनों वृद्धकरेंगे । ५० । क्योंकि क्षत्रियके धर्मको ग्रहणकर जो क्षत्रिय रणमें शस्त्र लेकर लड़ाहुआ व मारागया उसका यही उत्तम धर्म है । ५१ । परन्तु जो कोई पांडवों से युद्धकरना चाहते हैं उन सबोंको हम सोचते हैं क्योंकि जो विदुरजी ने कहाथा उस से भयहोताहै । ५२ । हे संजय हम इस दुःख के मिटाने के लिये कोई ज्ञानही नहीं मानते यह होनेवाला दुःख अति बलवन्त है ज्ञानसे निवारण करने के योग्य नहीं । ५३ । देखो निर्मुक्त ऋषिलोगभी लोकका संग्रह देख सुखसे सुखीहोते व दुःखसे दुःखी । ५४ । फिर हमारी कौन गणनाहै जो पुत्र, राज, स्त्री, पौत्र व बंधुओं में सहस्रों प्रकार से आसक्त हैं । ५५ । अब इस बड़ेभारी संशय में हमको और कुछ

---

the old path of virtue and therefore they will be ready to give up their lives for the sake of the kingdom and glory. The Pandavas are the grandsons of Bhishm and disciples of Dronacharya and Kripacharya like our sons. The three great men will surely have some regard for the food and respect they receive from us; for kshatrya dying in battle performs the duty of his class. But I deplore the state of those who will fight against the Pandavas; for I fear the words of Vidur will prove true. 52. I donot give ear to any good advice to remove this trouble; the impending danger is very great and cannot be avoided by wisdom. Even rishis are affected with the happiness and misery of the world, how can we avoid them attached as we are to our sons, kingdom, wives, grandsons

णामनु चिंतयन् ॥ ५६ ॥ द्यूतमुखमाभाति कुरूणांव्यसनंमहत् । मंदेनैश्वर्यकामेन लोभात्पापमिदंकृतम् ॥ ५७ ॥ मन्येपर्यायधर्मोयं कालस्यात्यन्तगामिनः । चक्रेप्रधिरिवासक्तो नास्यशक्यंपलायितुम् ॥ ५८ ॥ किन्नुकुर्यांकथंकुर्यां क्वनुगच्छामि संजय । एतेनश्यंतिकुरवो मन्दाःकालवशंगताः ॥ ५९ ॥ अवशोहंतदातात पुत्राणांनिहतेशते । श्रोष्यामिनिनदंस्त्रीणां कथंमांमरणंस्पृशेत् ॥ ६० ॥ यथानिदाघे ज्वलनःसमिद्धो दहेत्कक्षंवायुनाचोद्यमानः । गदाहस्तःपांडवोवैतथैव हंतामदीयान् सहितोर्जुनेन ॥ ६१ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये एकपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

उत्तर नहीं दिखाई देता बल जब विचारते हैं तो कौरवों का विनाशही दिखाई देताहै । ५६ । जुआ आदि जो पांडवों के संग खेलगये वही कौरवों के दुःखके कारण हुये, सो ये सब राज्य ऐश्वर्यकी कामना से इस मन्दबुद्धि दुर्योधन ने किये । ५७ । हम जानते हैं कि अन्तगामी कालका धर्म विपरीत है उस से भागकर बचभी नहीं सक्ते जैसे पहियाकी पुट्ठी रथको छोड़ अलग नहीं चलसक्ती । ५८ । क्याकरूं कहांजाऊं काल पाशके फंदेमें कौरवों को बचाने का कोई उपाय नहीं है । ५९ । जब यह सौपुत्र मरेंगे तब इनके मरनेका समाचार सुनकर कौरव नारियों का विलाप देखकर हमारा मरणहोगा । ६० । भीम और अर्जुन मेरे शूरवीरों को इस प्रकार जलादेंगे जैसे ग्रीष्म ऋतुमें पवन युक्त अग्नि तृणको जलादेता है । ६१ ।

---

and kinsmen. I see no way to avoid this great misery and the ruin of the Kauravas seems certain. The gambling with the Pandavas was the cause of ruin to the Kauravas and the greediness of Duryodhan for the sake of wealth and kingdom was at the root of all this. I see that the course of Time is very powerful and we cannot avoid it as the spokes of a chariot wheel cannot move without the chariot. What should I do and where should I go? There is no possibility of saving the Kauravas from destruction. The Kauravas women will weep at the death of my hundred sons and I shall die at *their lamentations. Bhim and Arjun will destroy my* warriors as fire assisted by wind in the season of summer burns down straw."61.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ यस्यवैनानृतावाचः कदाचिदनुशुश्रुम । त्रैलोक्यमपितस्य स्याद्योद्धायस्यधनञ्जयः ॥ १ ॥ तस्यैवचनपश्यामि युधिगाण्डीवधन्वनः । अनिशंचिन्तयानोऽपि यःप्रतीयाद्रथेनतम् ॥ २ ॥ अस्यतःकर्णिनालीकान् मार्गणान् हृदयच्छिदः । प्रत्येतासमरेकश्चि युधिगाण्डीवधन्वनः ॥ ३ ॥ द्रोणकर्णौप्रतीयातां यदिवीरौनरर्षभौ । कृतास्त्रौबलिनांश्रेष्ठौ समरेष्वपराजितौ ॥ ४ ॥ महान्स्यात् संशयोलोके नत्वस्तिविजयोमम । घृणीकर्णःप्रमादीच आचार्यःस्थविरोगुरुः ॥ ५ ॥ समर्थोबलवान्पार्थो दृढधन्वाजितक्लमः । भवेत्सुतुमुलंयुद्धं सर्वशोऽप्यपराजयः ६॥ सर्वेह्यस्त्रविदःशूराः सर्वेप्राप्तामहद्यशः । अपिसर्वामरैश्वर्यं त्यजेयुर्नपुनर्जयम् ॥७॥

अध्याय ॥ ५२ ॥

धृतराष्ट्र जी बोले जिस अर्जुनकी झूंठी बातकभी हमने सुनीही नहीं वे अर्जुन जिस समाज में योद्धाहों तीनों लोकका राज्य उसीका है । १ । हम उन्हीं गांडीवधन्वा अर्जुन के सामने युद्धमें जानेवाला शूरवीर नहीं देखते यही तो निरंतर चिन्तवन करते हैं । २ । हृदय विदारण कानतकखींच चलाये बाणसमूह चलाते अर्जुनके सामने खड़ा होनेवाला बीर हम नहीं देखते । ३ । समर में अपराजित बलवानों में श्रेष्ठ अस्त्रविद्या में निपुण पुरुषों में श्रेष्ठ बड़े बीर द्रोणाचार्य व कर्ण युद्धकरने को जायँ तो । ४ । यह बड़ाभारी संदेह है कि कर्णको भीमादिकों के ऊपर कृपा आजायगी, व द्रोणाचार्य बूढ़ेहीं हैं फिर उनकेभी गुरु हैं ऐसा नहो कि अन्त में विद्या का स्मरण न करें सब प्रकार हमारी विजय नहीं होसक्ती व अर्जुन सब प्रकार समर्थ बलवान् दृढ़धनुर्धर हैं युद्ध बड़ा भारी होगा पर विजय पाण्डवोंकी ही होगी । ६ । सब पाण्डव अस्त्रविद्यामें निपुण हैं व यशों ने बड़ायश पाया है हमसे चाहे सब देवताओं का ऐश्वर्य वे लोग छोड़दें पर

CHAPTER LII.

"He who has Arjun the ever truthful for his warrior," said Dhritrashtra, "is sure to possess the kingdom of the three worlds. I see that none of our warriors can face Arjun in the battle and for this I am always sore in trouble. I find no warrior that can withstand Arjun's heart piercing arrows, unconquerable in war, best of warriors, dexterous in the use of weapons and best of men, Dronacharya and Karan can stand against him; but I fear that Karan may spare Bhim and others while Dronacharya is old as well as the preceptor of the Pandavas and therefore liable to forg[illegible] art. Considering all this, we cannot conquer an[illegible] is [illegible] as well as a great archer. There will be a [illegible] tin[illegible]

बधेनूनंभवेच्छान्तिस्तयोर्वाफाल्गुनस्यच । नतुहन्ताऽर्जुनस्यास्ति जेताचास्यनविद्यते ८ मन्युस्तस्यकथंशाम्येन् मन्दान्प्रतिसमुत्थितः ।' अन्येप्यस्त्राणिजानन्ति जीयन्तेचजय न्तिच ॥ ९ ॥ एकान्तविजयस्त्वेव श्रूयतेफाल्गुनस्यह । त्रयस्त्रिंशत्समाहूय खाण्ड वेऽग्निमतर्पयत् ॥ १० ॥ जिगायचसुरान्सर्वान्नास्य विद्मःपराजयम् । यस्ययन्ता हृषीकेशः शीलवृत्तसमोयुधि ॥ ११ ॥ ध्रुवस्तस्यजयस्तात यथेन्द्रस्यजयस्तथा । कृष्णावेकरथेयत्तौ वधिज्यंगाण्डिवंधनुः ॥ १२ ॥ युगपत्त्रीणितेजांसि समेतान्यत्र शुश्रुम । नैवास्तिनोधनुस्ताद्दृक् नयोद्धानचसारथिः ॥ १३ ॥ तच्चमन्दानजान

विजयको न छोड़ेंगे । ७ । कर्ण व द्रोणाचार्य के मारेजानेपर हमारी ओर शांति होजा- गी व अर्जुन के मारेजानेपर पांडवों की शांति होजायगी, परन्तु अर्जुनका न कोई मार नेहीवाला है न जीतनेहीवाला फिर इधरकी शांति होगी । ८ । भला मन्दबुद्धि इन हमारे पुत्रोंके विषय में जो अर्जुनका क्रोध उठा है वह कैसे शांतहो, और लोगभी अस्त्र जानते हैं पर वे कभीहारते हैं कभी जीतते हैं । ९ । भाई सदा जीतहोनी तो अर्जुनही की सुनाई देती है, देखो ३३ वर्षहोगये उन्होंने देवताओं को जीत अग्निको खाण्डववन दे तृप्तकराया । १० । सब देवताओं को जीत लिया हम लोगतो उसकी पराजय कहीं नहीं जानते, फिर जिस के रथके हांकनेवाले श्रीकृष्णचन्द्र हैं उसकी जय निश्चय होगी जैसे इन्द्रकी जय सदा होती है । ११ । कृष्णचन्द्र व अर्जुन एकरथपर चढ़े व रोदा चढ़ा गांडीवधन्वा, ये तीनों एकही कालमें तेज इकट्ठेहोंगे यह हमने सुना है । १२ । व हमारे उस तरहका धनुष है न वैसायोद्धा न सारथि, इस बातको मन्द दुर्योधन के वशानुग ये हमारे यहांके लोग नहीं जानते । १३ । हे संजय प्रकाशित वज्र किसी के

Pandavas will win at last. The Pandavas are all warriors of known and will gain conquest at the risk of all things. Our side will be cool at the death of *Karan and Dronacharya and that of the* Pandavas at the death of Arjun; but no one can conquer or kill Arjun and therefore we are sure to lose. How can the anger of Arjun raised by our unwise sons, be appeased? Other warriors lose or win at times; but Arjun is the only person who always wins: *thirtythree years ago* he gave the forest of Khandav to *Agni* after conquering the gods. 10. He cannot be defeated by us when he has conquered the gods. Moreover, he has Krishn for his chariot driver and therefore cannot but win as Indra always does. We hear that three forces, namely, Krishna, Arjun and Gandiv bow will be collected together at the same time. We have neither a bow nor a warrior nor a chariot driver like theirs, but the followers of foolish

न्ति दुर्योधनवशानुगाः । क्षेपयेदशनिर्दीप्तो विपतन्मूर्ध्निसंजय ॥ १४ ॥ नतुशेषं शरास्तात कुर्युरस्ताःकिरीटिना । अपिचास्यन्निवाभाति निघ्नन्निवधनञ्जयः १५॥ बद्धरश्मिवक्रायेभ्यः शिरांसिशरवृष्टिभिः । अपिबाणमयंतेजः प्रदीप्तमिवसर्वतः १६ गाण्डीवोत्थंदहेताजौ पुत्राणांममवाहिनीम् । अपिसारथघोषेण भयार्त्तासव्यसाचिनः ॥ १७ ॥ वित्रस्ताबहुधासेना भारतीमांतिभातिमे । यथाकक्षंमहानग्निः प्रदहेत्सर्वं तथरन् । महार्चिरनिलोद्धूतस्तद्वद्धक्ष्यतिमामकान् ॥ १८ ॥ यदोद्वमन्निशितान्बाण संघांस्तानाततायीसमरेकिरीटी । सृष्टोन्तकःसर्वहरोविधात्रा यथाभवेत्तद्वदवारणीयः ॥ १९ ॥ यदाह्यभीक्ष्णंसुबहूनप्रकारान श्रोतास्मितानावसथेकुरूणाम् । तेषांसमन्ता च्चतथारणाग्रे क्षयःकिलायंभरतानुपैति ॥ २० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये द्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥

ऊपरचले उसे बचाभी दे पर अर्जुन के चलाये बाण जिनके ऊपरचलें उनको न बचावें मारही डालें । १४ । अर्जुन बाण चलातेही चलाते मारतेही से शोभित होने लगते हैं, मानों बाणोंकी वर्षा से शत्रुओं के शिरबाहरही उठावहावेंगे । १५ । यह निश्चय है कि गांडीव से उठा प्रदीप्त तेजहमारे पुत्रोंकी सेनाको भस्मकरेगा । १६ । व हमजानते हैं कि अर्जुन के व उनके रथके शब्द से भयपीड़ित हो कौरवोंकी सेना तितरबितर होजायगी । १७ । जैसे दावानल सूखी घासको जलाता चलाजाता है, वैसेही अर्जुन से उठीहुई शरज्वाला हमारे दुर्योधनादिकों को भस्म करेगी । १८ । जब अर्जुन कान तक धनुष खैंचकर तीर मारेंगे तब यमराजकी भांति सब कौरवों को मारडालेंगे । १९ । कौरव लोग कटे छिदे भागेंगे और बड़ाभारी नाशहोगा और कौरवों मे अंधियारा फैलजायगा।२०।

Duryodhan donot know this. One may escape the fall of Vagra, but none can escape Arjun's arrows. Arjun looks very glorious as he discharges his arrows and kills with them as if he would wash away the heads of all enemies with the shower of his arrows. He will surely burn down the army of of our sons with the fire of his arrows I think that the Kaurava army will be terrified and dispersed at the sound of Arjun's chariot. Arjun's arrows will burn our sons dead as the fire of a burning forest consumes grass. When Arjun shoot arrows from the bow drawn to the ear, he will kill all like Yamraj. The wounded army of the Kauravas will be dispersed in all directions. There will be a great slaughter and darkness will prevail over all the Kauravas "20.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ यथैवपाण्डवाःसर्वे पराक्रान्ता जिगीषवः । तथैवाभिसरा स्तेषां त्यक्तात्मानोजयेधृताः ॥ १ ॥ त्वमेवहिपराक्रान्ता नाचक्षीथाःपरान्मम । पांचालान् केकयान्मत्स्यान्मागधानवत्सभूमिपान् ॥ २ ॥ यश्चसेन्द्रानिमाँल्लोका नि च्छनकुर्याद्वशेबली । सस्रष्टाजगतःकृष्णः पांडवानांजयेधृतः ॥ ३ ॥ समस्तामर्जुना द्विद्यां सात्यकिःक्षिप्रमाप्तवान् । शैनेयःसमरेस्थाता बीजवत्प्रवपनशरान् ॥ ४ ॥ धृष्टद्युम्नश्चपांचाल्यः क्रूरकर्मामहारथः । मामकेषुरणंकर्ता बलेषुपरमास्त्रवित् ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरस्यचक्रोधो दर्जुनस्यचविक्रमात् । यमाभ्यांभीमसेनाच्च भयंमेतातजायते ॥ ६ ॥ अमानुषंमनुष्येन्द्रैर्जालं विततमन्तरा । नमेसैन्यास्तरिष्यन्ति ततःक्रोशामि

अध्याय ५३ ॥

धृतराष्ट्रजी फिर संजयजी से बोले कि जैसे बड़े पराक्रमी पांडवलोग सदा जीतने ही की इच्छा रखते हैं वैसेही उनके सबवीर राजालोग भी जयके वास्ते अपने प्राण देनेको तैयार हैं । १ । हे वत्स तुम्हीं बताते हो कि पांचाल देशके राजा, केकय मत्स्य व मगध देशके बहुत से पराक्रमी हमलोगों की हारपर उतारू हैं । २ । व जो इच्छा करैं तो इन्द्रादि सब लोकपाल व लोकोंको भी अपने वशमें करलें वे जगत्कर्त्ता कृष्ण चन्द्रजी भी पांडवों की जयमें चित्त लगाये रहते हैं । ३ । जिस सात्यकिने सब विद्या अर्जुनसे सीखी है वे शैनेय बीजके समान शर बोतेहुये समरमें टिकैंगे । ४ । फिर राजाद्रुपदका पुत्र धृष्टद्युम्न जो बड़ा क्रूरकर्मा व महारथ है हमारे पुत्रोंके सामने रणमें खड़ा होगा । ५ । हेतात, युधिष्ठिरजी के क्रोधसे व अर्जुन के विक्रमसे, तथा नकुल सहदेव व भीमसेन से हमको सदा भय उत्पन्न होती है । ६ । सैन्यके मध्य में उन मनुष्येन्द्रोंने अमानुष जाल डालदिया है उसे हमारे सैन्यवाले न उतर पावेंगे इसी से

CHAPTER LIII

The brave kings who have come to help the Pandavas," continued Dhritrashtra "are ready to lay down their lives for the sake of those brave men desirous of conquests. You yourself say, my child, that the kings of Panchal, Kaibaya, Matsya, Magadh and many other kingdoms are intent on defeating us; that they can conquer Indra and other protectors of the world if they desire; that ,Krisha the creator of the world also desires their victory; that Satyaki who has learnt all knowledge of arms from Arjun, will sow arrows like seeds in battle and that Dhrishtadyumn the brave and warlike son of king Drupad, will also stand against our sons in battle. I am al-

संजय ॥ ७ ॥ दर्शनीयोमनस्वीच लक्ष्मीवान्ब्रह्मवर्चसी । मेधावीसुकृतप्रज्ञो धर्मात्मापाण्डुनन्दनः ॥ ८ ॥ मित्रामात्यैःसुसम्पन्नः सम्पन्नोयुद्धयोजकैः । भ्रातृभिश्वशुरैर्वीरैरुपपन्नोमहारथैः ॥ ९ ॥ धृत्याचपुरुषव्याघ्रो नैभृत्येनचपांडवः । अनृशंसोवदान्यश्च ह्रीमानसत्यपराक्रमः ॥ १० ॥ बहुश्रुतःकृतात्माच वृद्धसेवीजितेंद्रियः तंसर्वगुणसम्पन्नं समिद्धमिवपावकम् ॥ ११ ॥ तमन्तमभिकोमन्दः पतिष्यतिपतंगवत् । पांडवाग्निरवार्य मुमूर्षुर्नष्टचेतनः ॥ १२ ॥ तनुरुद्धःशिखीराजा मिथ्योपचरितोमया । मन्दानांममपुत्राणां युद्धेनान्तंकरिष्यति ॥ १३ ॥ तैरयुद्धंसाधुमन्ये कुरवस्तन्निबोधत । युद्धे विनाशःकृत्स्नस्य कुलस्यभविताध्रुवम् ॥ १४ ॥ एषा मे

हम शोच करते हैं संजय । ७ । बड़े दर्शनीय मनस्वी, लक्ष्मीवान, ब्रह्मवर्चस्वी, मेधवी, सुकृत, प्रज्ञ, व धर्मात्मा युधिष्ठिरजी हैं । ८ । व मित्रोंसे अमात्यों से सुसम्पन्न युद्धके प्रेरणा करनेवालों से सुसम्पन्न, महारथ भाई व श्वशुरादिकों से उपपन्न । ९ । व स्वाभाविक धारणाशक्ति से युक्त, अक्रूर स्वभाव, महादानी, लज्जावान, सत्यपराक्रम । १० । बहु श्रुत, कृतात्मा, वृद्धसेवी, जितेन्द्रिय हैं ऐसे सर्वगुण सम्पन्न जलतेहुये अग्नि के समान प्रज्वलित । ११ । युधिष्ठिरजी में पतंग के समान कौन मूर्ख पतित होगा, क्योंकि यह पांडवाग्नि अनावार्य है जो उस में गिरेगा मरनेही की इच्छा से गिरेगा । १२ । देखो अपने शरीर में क्रोधाग्नि स्थापित किये राजायुधिष्ठिरजी को हमने मिथ्याही प्रज्वलित किया है इस से मन्द हमारे पुत्रों को वे अवश्य युद्ध में मारेंगे । १३ । हे कौरवलोगो सुनो हम पांडवों से युद्ध न करनाही अच्छा समझते हैं क्योंकि युद्ध करने में कुलभरका नाशहोगा । १४ । हमारी यही परम बुद्धि है व इसीमें हमारामन

---

ways afraid of the anger of Yudhishthir and the prowess of Arjun, Bhim, Nakul and Sahadev. They will spread a network of weapons in the field of battle and I fear that our warriors will not be able to go through it. Yudhishthir is very beautiful, humane, fortunate, Brahm-knowing, wise, virtuous, intelligent, good, possessed of friends, ministers and warriors, has valliant brothers and fathers-in-law; is naturally forbearing, merciful, charitable, modest, of true prowess, learned and of pure soul and has respect for old men. Who will fall in with Yudhishthir the possessor of the qualities like an insect falling into a flame? The fire of the Pandavas is unquenchable; who ever falls into it will die. We have inflamed the fire of Yudhishthir's anger for nothing he will surely destroy sons in battle. Hear you all the Kauravas! I donot like to fight against the Pandavas; for,

परमा बुद्धिर्यया शाम्यति मे मनः । यदि त्वयुद्धमिष्टं वो वयं शान्त्यै यतामहे ॥ १५ ॥ न तु नः क्लिश्यमानानामुपेक्षेत युधिष्ठिरः । जुगुप्सति ह्यधर्मेण मामेवोद्दिश्य कारणम् ॥ १६ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये त्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

संजय उवाच ॥ एवमेतन्महाराज यथा वदसि भारत । युद्धे विनाशः क्षत्रस्य गाण्डीवेन प्रदृश्यते ॥ १ ॥ यदन्तु नाभिजानामि तव धीरस्य नित्यशः । यत्पुत्रवशमागच्छेस्तत्त्वज्ञः सव्यसाचिनः ॥ २ ॥ नैष कालो महाराज तव शश्वत्कृतागसः । त्वया ह्येवादितः पार्था निकृता भरतर्षभ ॥ ३ ॥ पिता श्रेष्ठः सुहृद्यश्च सम्यक्प्रणिहितात्मवान् । आस्थेयं हि हितं तेन न द्रोग्धा गुरुरुच्यते ॥ ४ ॥ इदं जितमिदं लब्धमिति श्रुत्वा प

शांत होता है, जो आपलोगों को भी युद्ध करना न अंगीकार हो तो हमभी शांतिही करने का यत्न करते हैं। १५ । हम सबको धर्म के अतिरिक्त न करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से हमको अधर्म से क्लेश होगा। १६ ।

अध्याय ५४ ॥

संजयजी ने कहा, कि महाराज जैसा आप कहते हैं यह ऐसाही है युद्ध करने में अर्जुन सब क्षत्रियों का नाशही करडालेंगे यही दिखाई देता है। १ । व आप अर्जुन के समाचार व आचरण निश्चय जानतेभी हैं पर पुत्रके वशीभूत हैं आप ऐसे धीरका यह विचारही हम नहीं जानते क्यों ऐसाहै। २ । हे महाराज वार २ अपराध करतेहुये आपकी यह बुद्धि न रहैगी, तुम्हीं ने प्रथम से पाण्डवोंका निरादर कररक्खा है। ३। जो पिता श्रेष्ठ सुहृद हो उसको सदा सावधान चित्त रहना चाहिये, व सबको सबका हितही करना चाहिये क्योंकि जो औरोंके मारने की इच्छा करता है वह गुरु नहीं कहाता। ४ ।

---

in so doing there lies the destruction of whole famely. This opinion of mine is the best as it affords me peace of mind and I mean to keep peace if you are of the same opinion with me. We must not deviate from dharm otherwise we will be undone."16.

CHAPTER LIV

"You are right Maharaj," said Sanjaya, "Arjun will surely destroy all the Kshatryas in battle. You know all about Arjun and his prowess; but you are under the influence of your son and therefore, in spite of your great wisdom, you are thinking of war. You will lose your wits by contiuous sinning. You have been disregarding the Pandavas from the beginning. A loving father should always be careful and doing good to others, for he who thinks *of injuring*

राजितान्। द्यूतकालेमहाराज स्मयसेस्मकुमारवत् ॥ ५ ॥ परुषाण्युच्यमानांश्च पुरा पार्थानुपेक्षसे। कृत्स्नंराज्यंजयन्तीति सपालंनानुपश्यसि ॥ ६ ॥ पित्र्यंराज्यंमहाराज कुरवस्तेसजांगलाः। अथवीरैर्जितामुर्वी मखिलांमत्स्यपद्यथाः ॥ ७ ॥ बाहुवीर्यार्जिता भूमिस्तवपार्थैर्निवेदिता। मयेदंकृतमित्येव मन्यसेराजसत्तम ॥ ८ ॥ ग्रस्तानगन्धर्व राजेन मज्जतोह्यप्लवेम्भसि। आनिनायपुनःपार्थः पुत्रांस्तेराजसत्तम ॥ ९ ॥ कुमार वच्चस्मयसे द्यूतेविनिकृतेषुवत्। पाण्डवेषुवनेराजन् प्रव्रजत्सुपुनःपुनः ॥ १० ॥ प्रवर्षतःशरव्राता नर्जुनस्यशितानवहून्। अप्यर्णवाविशुष्येयुः किंपुनर्मांसयोनयः ११॥ अस्यतांफाल्गुनःश्रेष्ठो गांडीवंधनुषांवरम्। केशवःसर्वभूतानां मायुधानांसुदर्शनम् १२

यह जीवा इतना पाया पैसा जब पांडवों को पराजित सुनतेथे तब द्यूत के समयमें लड़कों के समान आपभी हँसतेथे। ५। जो कुछ कठोर वचन कहने लगते थे तो आप पांडवों की उपेक्षा करते यह नहीं देखते कि ये सम्पूर्ण राज्यजीतलेते हैं। ६। महाराज, तुम्हारे पिताका राज्य कुरुदेश व जांगलही देशहै, बाकी पृथ्वी आपने पाण्डवोंकीही जीतीपाई है। ७। अपनी बाहों के बलसे जीत पाण्डवों ने भूमि तुम्हारे समर्पणकी पर आप समझते हो कि यह सब हमीने किया। ८। गन्धर्वराज तुम्हारे पुत्रोंको पकड़ लिये जाता था, पर अर्जुनही तुम्हारे पुत्रों को फिर लाये। ९। जब द्यूत में पाण्डव हारे तब तुम बालकोंके समान सन्तुष्ट हुये, व जब वे लोग बनको चले तबभी तुम्हारी वही दशारही। १०। यह नहीं जानते कि जब बड़े तीक्ष्ण बहुतबाण अर्जुन बरसावेंगे तो समुद्रभी सूखाहोजावेगा, फिर मांस के देहवालोंकी कौन गणना। ११। बाण चलानेवालों में अर्जुन सब से श्रेष्ठ हैं, व धनुषोंमें गाण्डीव सब से श्रेष्ठहै, सब प्राणियों के मध्य में कृष्णचन्द्र व सब

others is not called great. At the time of winning the stakes you were laughing like children and not seeing that your sons were depriving the Pandavas of their kingdom, you did not bear with them when they spoke harsh words You inherited from your father the territory of Kuru jungle, the rest of the land was won by the Pandavas. The Pandavas won the land by their prowess and gave it to you; but you think that it was your own doing. Arjun rescued your sons from the captivity of the gandharva prince. You were pleased like children when the Pandavas lost in gambling and you did the same when they were going into exile. 10. Do you not know that with his arrows Arjun can soak the sea and not only the bodies made of flesh? Arjun is the best of archers; Gandiv is the best of bows, Krishn is the best of living beings; his discus is the best of

वानरोरोचमानश्च केतुःकेतुमतांवरः । पवमेतानिसरथो बहूनश्वेतहयोरणे ॥ १३ ॥ क्षपयिष्यतिनोराजन् कालचक्र मिवोद्यतम् । तस्याद्यवसुधाराजन्निखिलाभरतर्षभ ॥ १४ ॥ यस्यभीमार्जुनौयोधौ सराजाराजसत्तम । तथाभीमहतप्रायां मज्जन्तींतव वाहिनीम् ॥ १५ ॥ दुर्योधनमुखादृष्ट्वा क्षयंयास्यन्तिकौरवाः । नभीमार्जुनयोर्भीता लप्स्यन्तेविजयंविभो ॥ १६ ॥ तवपुत्रामहाराज राजानश्चानुसारिणः । मत्स्या स्त्वामद्यनार्चन्ति पञ्चालाश्चसकेकयाः ॥ १७ ॥ शाल्वेयाःशूरसेनाश्च सर्वेत्वामव जानते । पार्थंह्यतेगताःसर्वे वीर्यज्ञास्तस्यधीमतः ॥ १८ ॥ भक्त्याह्यस्य विरुध्यन्ते तवपुत्रैःसदैवते । अनर्हानेवतुवधे धर्मयुक्तानविकर्मणा ॥ १९ ॥ योऽक्लेशयत्पाण्डु

आयुधों में सुदर्शन । १२ । व रोचमान वानर सबवानरों में श्रेष्ठहै, व केतुमानों में केतु श्रेष्ठहै, इसीतरह श्वेताश्ववाले अर्जुन रण में सब से श्रेष्ठहैं । १३ । वे हमलोगों को ऐसा नाशेंगे जैसे कालचक्र नाशताहै, हे राजन् आजकल सबपृथ्वी उसीकीहै, जिसके भीमसेन व अर्जुन योधाहैं व वही राजसत्तमभी है । १४ । इस से भीमसेनसे मारीहुई तुम्हारी सेना देख, दुर्योधनादि कौरव आप नष्टहोजायँगे । १५ । व भीमसेन अर्जुन से भयभीत तुम्हारे पुत्र व उन के पीछे चलनेवाले राजालोग विजयी न होंगे । १६ । व अब मत्स्य देश के लोग व पंचाल केकयदेशों के लोग तुम्हारी सेवा न करेंगे, शाल्वदेश व शूरसेन देशवाले भी क्योंकि सब तुम्हारा निरादर करते हैं । १७ । ये सब युधिष्ठिरजी के शरण में पहुँचे क्योंकि वे लोग उन के वीर्य को जानते हैं व उन्हीं लोगोंकी भक्ति से तुम्हारे पुत्रों के साथ विरोध रखते हैं । १८ । पाण्डवलोग धर्मयुक्त होने से बध के योग्य नहीं हैं, व जिसने पाण्डु पुत्रों को क्लेश दियाहो व अबभी उन से बैर रखताहो

---

weapons; Roohman monkey is the best monkey and Arjun the possessor of white horses is the best of warriors. He will annihilate us like the wheel of Time. All the Earth belongs to him who has Bhim and Arjun for his warriors and he is the best of kings. Duryodhan and the Kauravas will die when they see your army destroyed by Bhimsen and being terrified by Bhim and Arjun, your sons and their allies cannot conquer. The people of Matsya, Kaikaya and Panchal will no longer obey you as well as those of the countries of Shalwa and Shursen; for they all hate you. They have taken refuge with Yudhishthir as they know his prowess and for the sake of his love they hate your sons. The Pandavas being virtuous are not worthy of being killed and he who has injured the Pandavas and is still bearing them enmity, deserves punishment. Vidur as

पुत्रान् योविद्विष्टवधुनापिवै । सर्वोपायैर्नियन्तव्यः सानुगःपापपूरुषः ॥ २० ॥ तव पुत्रोमहाराज नानुशोचितुमर्हसि । द्यूतकालेमयाप्रोक्त विदुरेणचधीमता ॥२१॥ यदिदंतेविलपितं पाण्डवानप्रतिभारत । अनीशेनैवराजेन्द्र सर्वमेतन्निरर्थकम् ॥ २२ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि सञ्जयवाक्ये चतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५४ ॥

दुर्योधन उवाच ॥ नभेतव्यंमहाराज नशोच्याभवतावयम् । समर्थाःस्मपरान्जेतुं बलिनःसमरेविभो ॥ १ ॥ वनंप्रव्राजितान्पार्थान् यदायान्मधुसूदनः । महता बलचक्रेण परराष्ट्रावमर्दिना ॥ २ ॥ केकयाधृष्टकेतुश्च धृष्टद्युम्नश्चवार्यवान् । राजानश्चान्वयुः पार्थान् बहवोऽन्येनुयायिनः ॥ ३ ॥ इन्द्रप्रस्थस्यचादूरात् समाजग्मुर्महारथाः

वह पापी सब उपाय से शिक्षा करने के योग्य है । १९ । द्यूत खेलने के समय हमने भी कहाथा व विदुरजी ने भी कि यह कर्म अच्छा नहीं है, इस से अब अपने पुत्रका तुम शोच न करो । २१ । अब जो तुम पाण्डवों के विषय में विलाप करतेहो वह ऐसा है जैसे असमर्थ पुरुषका किया सब निरर्थक होता है २२ ॥

अध्याय ५५ ॥

दुर्योधन ने कहा कि हे महाराज न डरिये व आप हमलोगों का शोच न कीजिये क्योंकि हमलोग समर में शत्रुओं के जीतने में समर्थ हैं। १ । जब पाण्डवों को बनवास दियागयातो वहां श्रीकृष्णचन्द्रजी आये व शत्रु राज्यमर्दनकारक बड़ीभारी सेना लिये । २ । केकयदेश के राजा आये धृष्टकेतु धृष्टद्युम्नादि बहुत से अनुयायी राजा पार्थों के पास आये । ३ । व सब इन्द्रप्रस्थ के समीपही होकर निकले व कुरुवंशियों सहित

---

well as I told you at the time of gambling that the deed was wicked, it is therefore useless now to deplore the fate of your sons Your remorse regarding your treatment of the Pandavas, is useless like the work of a weak person "22.

CHAPTER LV

"Have no fear, Maharaj," said Duryodhan, "donot be anxious for our safety, for we are strong enough to conquer our enemies in battle When the Pandavas went into exile, there came to see them Shree Krishn as well as the king of Kaikaya with a large army, Dhrishtketu, Dhrishtedyumn and many other kings. They had all passed by Indraprastha speaking ill of all the Kauravas including

स्यागईयंश्चसंगम्य भवन्तंकुरुभिःसह ॥ ४ ॥ तेयुधिष्ठिरमासीन मजिनैप्रतिवासितम् कृष्णप्रधानाःसंहत्य पर्युपासंतभारत ॥ ५ ॥ मत्यादानञ्चराजस्य कार्यमूचुर्नराधिपाः। भवतःसानुबन्धस्य समुच्छेदं चिकीर्षवः ॥ ६ ॥ श्रुत्वाचैवंमयोक्तास्तु भीष्मद्रोणकृपास्तदा । ज्ञातिक्षयभयाद्राजन् भीतेनभरतर्षभ ॥ ७ ॥ ततःस्थास्यन्तिसमये पांडवाइतिमेमतिः। समुच्छेदंहिनःकृत्स्नं वासुदेवश्चिकीर्षति ॥ ८ ॥ ऋतेचविदुरात् सर्वे यूयंवध्यामतामम । धृतराष्ट्रस्तुधर्मज्ञो नवध्याकुरुसत्तमः ॥ ९ ॥ समुच्छेदञ्च कृत्स्नं नःकृत्वाततजनार्दनः। एकराज्यंकुरूणांस्म चिकीर्षतियुधिष्ठिरे॥ १० ॥ तत्र किंप्राप्तकालंनः मणिपातःपलायनम् । प्राणानथवासम्परित्यज्य प्रतियुध्यामहेपरान् ॥ ११ ॥ प्रतियुद्धेतुनियतः स्यादस्माकंपराजयः । युधिष्ठिरस्यसर्वेहि पार्थिवावशव-

---

आपकी सबों ने निन्दाकी । ४ । वे सब के सब मृगचर्म धारण किये युधिष्ठिरजी के पास बैठे । ५ । व श्रीकृष्णादि सब राजाओं ने कहा कि राज्य पाण्डवों को दियाजाय व सबकी इच्छाथी कि तुम्हारा नाशहो कहीं रहने न पावें । ६ । यह सुन ज्ञातिवालों की क्षयके भयसे हमने भीष्मद्रोण व कृपाचार्य से कहा । ७ । कि अच्छा जब समय आवेगातो पाण्डवलोग राज्यपर टिकेंगे, परन्तु श्रीकृष्णचन्द्र तो सब प्रकार से हमलोगों का समुच्छेदही करना चाहते हैं । ८ । विदुर को छोड़ सब के मत से हम सब वध करने के योग्यहैं, परन्तु धृतराष्ट्र धर्मज्ञ हैं व कुरुवंश में सज्जनता इससे वे भी मारने के योग्य नहीं हैं । ९ । प्रयोजन यह है कि कृष्णचन्द्रजी हमलोगों का पूरा समुच्छेद कर कुरुवंशियों का सब राज्य युधिष्ठिर को दिलाना चाहते हैं । १० । फिर अपनो समय आगया है कि याको मेल करने के लिये चलें उनलोगों के पैरों पड़ें या लज्जासे भाग खड़ेहों वा प्राणों की आशा छोड़ शत्रुओं से युद्ध करें । ११ । यह हमभी जानते

---

yourself. They sat near the Pandavas who wore deer skins and said that the kingdom should be made over to them. They were all desirous of your destruction. At this we held council with Bhishm, Drona and Kripacharya and said to them, "The Pandavas will be *reinstated on their kingdom in time for Krishna want to destroy us.* He held that with the exception of Vidur we are all worthy of being destroyed and that you being virtuous and acquinted with dharm are also to be spared. Shree Krishn wants to give all the kingdom to Yudhishthir after our destruction. 10. It is now time that we should either fall at their feet to sue for peace or to run away with shame or to fight with the enemy and thus leave all hope of life. We know that we are sure to lose battle because all the kings are

र्थिन ॥ १२ ॥ विरक्ताराज्याद्वयं मित्राणिकुपितानिनः । धिक्कृता पार्थिवैः सर्वैः स्वजनैनचसर्वशः ॥ १३ ॥ प्रणिपातेनदोषोऽस्ति सन्धिर्नःशाश्वती समाः । पितरन्त्वेवशोचामि प्रज्ञानेत्रंजनाधिपम् ॥ १४ ॥ मत्कृतेदुःखमापन्नं क्लेशप्राप्तमनन्तकम् । कृतंहितत्पुत्रैश्च परेषामवरोधनम् । मत्प्रियार्थंपुरैवैतद् विदितंतेनरोत्तम ॥ १५ ॥ ते राज्ञोधृतराष्ट्रस्य सामात्यस्यमहारथाः । वैरंप्रतिकरिष्यन्ति कुलोच्छेदेनपाण्डवाः १६ ततोद्रोणोऽब्रवीत्भीष्मः कृपोद्रौणिश्चभारत । मत्वामांपरवशं चिन्ता मास्थितंव्यथितेन्द्रियम् ॥ १७ ॥ अभिद्रुग्धाःपरेचन्नो नभेतव्यंपरन्तप । असमर्थाःपरेजेतु मस्मान

हैं कि प्रतियुद्ध करने से हम लोगों की पराजय होगी क्योंकि सब राजा युधिष्ठिर के वशवर्ती हैं । १२ । व हमलोग राज्यसे स्वयम विरक्त हैं व मित्रलोग सब कोप किये हैं, व राजालोग सब तथा बन्धुलोग हम लोगोंको धिक्कार करते हैं । १३ । उनके पास जाकर प्रणिपात करें तो इस में कुछ दोष नहीं क्योंकि ऐसा करने से वंश क्षय न होगी, और बहुत दिनों तक हमारा उनका मेल मिलाप बनारहेगा, परन्तु हमको तो औरही अभीष्ट है क्योंकि हमतो प्रज्ञा नेत्रवाले राजा अपने पिताका शोच करते हैं १४ जो कि हमारे लिये दुःखको प्राप्त हैं व अनन्त क्लेशपारहे हैं हे नरोत्तम धृतराष्ट्र हम लोग तुम्हारे पुत्रोंने तो प्रथमही शत्रुओंका अवरोध कियाथा जिसमें हम लोगों का प्रिय हो यह बात आप जानतेही हैं । १५ । इस से पाण्डवलोग अमात्य पुत्रादि सहित राजा धृतराष्ट्रका उच्छेद कर वैरही करेंगे अब वे मेल न करेंगे। १६ । जब हम ऐसा विचार मारे चिन्ताके व्यथित होगये तो भीष्मपितामह द्रोणाचार्य कृपाचार्य व अश्वत्थामाने हम से कहा कि । १७ । यद्यपि हमलोगों ने पाण्डवों का बड़ा अभिद्रोह किया

---

allied to Yudhishthir We ourselves are unwilling to rule the king dom as our friends are displeased with us and all the kings as well as kinsmen blame us 10. It would be well to fall at the feet of the Pandavas as by so doing there would be no danger of the destruction of our family and we will long live in peace, but we are quite against this plan. We are sorry for our blind father who suffers for us great agonies of grief. We have already checked our enemies and you know what is best for us The Pandavas and these ministers and sons will extirpate the Kauravas and will never be friendly to them" When we had thus given vent to our grief and were much distressed with anxiety, Bhishm, Dronacharya, Kripacharya and Ashwathama consoled us with the following words—' We have much

युधिसमास्थितान् ॥ १८ ॥ एकैकशःसमर्थाःस्मो विजेतुंसर्वपार्थिवान् । आगच्छन्तु विनेष्यामो दर्पमेषांशितैःशरैः ॥ १९ ॥ पुरैकेनहिभीष्मेण विजिताः सर्वपार्थिवाः । मृते पितर्यतिक्रुद्धो रथेनैकेनभारत ॥ २० ॥ जघानसुबहूंस्तेषां संरब्धःकुरुसत्तमः । ततस्तेशरणंजग्मुर्देवव्रतमिमंभयात् ॥ २१ ॥ सभीष्मःसुसमर्थोयं यस्माभिःसहितो रणे । परान्विजेतुंतस्मात्ते व्येतुभीर्भरतर्षभ ॥ २२ ॥ इत्येषांनिश्चयोह्यासीत् तत्का लेऽमिततेजसाम् । पुरापरेषांपृथिवी कृत्स्नासीद्वशवर्तिनी ॥ २३ ॥ अस्मान् पुनर मीनाद्य समर्थाजेतुमाहवे । छिन्नपक्षाःपरेह्यद्यवीर्यहीनाश्चपाण्डवाः ॥ २४ ॥ अस्मत्सं स्थाचपृथिवी वर्ततेभरतर्षभ । एकार्थाःसुखदुःखेषु समानीताश्चपार्थिवाः ॥ २५ ॥

है पर तुम न डरो क्योंकि युद्धमें टिकेहुये हमलोगों के जीतने में वे लोग समर्थ नहीं होसक्ते । १८ । हमलोग अकेले २ सब पांडवों को जीतसक्ते हैं वे लोग हम लोगों के सामने आवें, तो तीक्ष्णबाणों से सबका अहंकार हमलोग दूरकरदेंगे । १९ । प्रथम अकेले भीष्महीने सब राजाओं को जीतलियाथा, जबकि इनके पिताभी मृतकहुयेथे तब अकेले ही रथपरचढ़ इन्होंने । २० । बहुत से राजाओं को क्रोधकर मारडाला तब सारे भयके सबराजा इन देवव्रत भीष्मजी के शरण को आगये । २१ । वे भीष्मजी हम लोगोंके साथ समर में पाण्डवादिकों के जीतने में समर्थ हैं इस विषय में आप सन्देह न करें । २२ । यह इन अमित तेजस्वियों का निश्चय पूर्वही कालसे होगयाथा हां पहिले सब पृथ्वी पाण्डवों के वशमें थी । २३ । परन्तु अब वे लोग हमलोगों को समरमें नहीं जीतसक्ते, क्योंकि अब पांडवलोग छिन्न पक्ष व हीन वीर्य होगये हैं २४ अब सब पृथ्वी हमलोगों के वश है इसी से हमने सब राजाओं को बुलाया है ये सब

---

oppressed the Pandavas. Yet have no fear with them; for they can not defeat us in battle. Each of us singly can win the Pandavas. We will crush their pride with our arrows in the field of battle. At his father's death Bhishm alone had conquered and killed many kings and they sought his protection through fear."21. Bhishm is capable of conquering all the Pandavas in battle and you need entertain no doubt about it." These powerful men have already formed this resolution. Formerly all the land was under the control of the Pandavas, but they cannot conquer us now, for they have lost allies and power and the land is now under our control. We have summoned here all the kings who will participate in our pleasure and pain and are ready to go into fire and water for us. They

अप्यग्निमविशेयुस्ते समुद्रंवापरन्तप । मदर्थपार्थिवाःसर्वे तद्विद्धिकुरुसत्तम ॥ २६ ॥
उन्मत्तमिवचापित्वां प्रहसन्तीहदुःखितम् । विलपन्तंबहुविधंभीतं परविकत्थने २७॥
एषांह्येकैकशोराज्ञां समर्थ पांडवान्प्रति । आत्मानंमन्यतेसर्वो व्येतुतेभयमागतम् २८
जेतुंसमग्रांसेनांमे वासवोपिनशक्नुयात् । हन्तुमक्षय्यरूपेयं ब्रह्मणापिस्वयम्भुवः २९
युधिष्ठिरःपुरंहित्वा पञ्चग्रामानसयाचति । भीतोहिमामकात् सैन्यात् प्रभावाच्चैवमे
विभो ॥ ३० ॥ समर्थंमन्यसेयच्च कुन्तीपुत्रंवृकोदरम् । तन्मिथ्यानहि मे कृत्स्नं प्रभा
वंवेत्सिभारत ॥ ३१ ॥ मत्समोहिगदायुद्धे पृथिव्यांनास्तिकश्चन । नासीत्कश्चिदति
क्रान्तो भवितानचकश्चन ॥ ३२ ॥ युक्तोदुःखोषितश्चाहं विद्यापारगतस्तथा । तस्मा
न्नभीमान्नान्येभ्यो भयंमे विद्यते क्वचित् ॥ ३३ ॥ दुर्योधनसमोनास्ति गदायामिति

हमारे सुखदुःख में समान सुखी दुःखी हैं। २५ । ये राजालोग हमारे लिये अग्नि में कहो तो पैठें कहोतो समुद्र में फांदपड़े यह आप अच्छीतरह जानें। २६ । व जब तुम पांडवोंकी बड़ाई कर २ उन्मत्त के समान दुःखितहो रोदन करने लगतेहो तो ये लोग तुम पर हँसते हैं। २७ । इन राजाओं में एक २ राजा पाण्डवों के जीतने में समर्थ है व सब यही मानते हैं इस से यह भय जो आपको आगई है दूरहो। २८ । इस हमारी सम्पूर्ण सेनाको इन्द्र भी नहीं जीतसके, वरन ब्रह्माजी भी इसको एकाएकी नाश नहीं करसके। २९ । व हमारे प्रभावसे व हमारी सेनासे भयभीतही होकर युधिष्ठिर हस्तिनापुर छोड़ पांच ग्राम हमसे मांगते थे। ३० । व जो आप कुन्तीजी के पुत्र भीमसेन को समर्थ समझतेहो वह मिथ्या है क्योंकि हमारा सम्पूर्ण प्रभाव आप नहीं जानते। ३१ । हमारे समान गदायुद्धमें पृथ्वी भरमें कोई दूसरा नहीं है व न कभी कोई दूसरा हुआ है न होगा। ३२ । क्याकरें हम बड़ा अभियोग करते हैं व गदा विद्या के पारगन्ता हैं व दुःख पूर्वक इस कुरुकुल में बसे हैं इस से हमको न भीमसेन

---

laugh at you when they hear lamentations and the praises of the Pandavas from you. Each one of these kings is powerful enough to conquer the Pandavas and this belief is shared in common by all of them. You need entertain no fear. Even Indra cannot conquer all our army and Brahma too cannot extirpate it on a sudden. Through the terror of our prowess Yudhishthir has resigned his claim to Hasthinapur and sues for only five villages 30. You think Bhimsen the son of Kunti very powerful; but this is wrong, because you donot know all my prowess: I have no match throughout the land in mace-fighting, in the past, present or future. In spite of my great learning and perfection in the use of mace I am

निश्चयः । संकर्षणस्यभद्रं ते यत्तदैनमुपात्तसम् ॥ ३४ ॥ युद्धे संकर्षणसमो बलेना-भ्यधिकोभुवि । गदाप्रहारंभीमोमे नजातु विषहेद्युधि ॥ ३५ ॥ एकंप्रहारंयंदद्यां भीमायरुपितोनृप । सएवैनंनयेद्घोरः क्षिप्रवैवस्वतक्षयम् ॥ ३६ ॥ इच्छेयञ्चगदाहस्तं राजन्द्रष्टुंवृकोदरम् । सुचिरंमार्थितोह्येष मम नित्यंमनोरथः ॥ ३७ ॥ गदया निहतो ह्याजौ मयापार्थोवृकोदरः । विशीर्णगात्रःपृथिवीं परासुः प्रपतिष्यति ॥ ३८ ॥ गदाप्रहाराभिहतो हिमवानपिपर्वतः । सकृन्मयाविदीर्येत गिरिःशतसहस्रधा ॥ ३९ ॥ स चाप्येतद्विजानाति वासुदेवार्जुनौ तथा । दुर्योधनसमोनास्ति गदायामिति निश्चयः ॥४०॥ तच्चेवृकोदरमयं भयंव्येतुमहाहवे । व्यपनेष्याम्यहंह्येनं माराजन विमनाभव

हीवे भयके न औरही किसीसे । ३३ । हमने बलदेवजी से गदाविद्या सीखी है इससे सत्यही कहते हैं कि हमारे समान दूसरा गदाधारी नहीं है । ३४ । यद्यपि भीमसेन भी युद्धमें बलदेवही के तुल्यहैं व बलमें पृथ्वीभरमें सब से अधिक परन्तु युद्धमें हमारी गदाका प्रहार भीमसेन न सहसकेंगे । ३५ । जो हम एकभी प्रहार रोपकर भीमसेन को दें तो वह प्रहार तुरन्त उन को यमपुरको पहुँचादेगा । ३६ । हे राजन् मैं सदा गदा हाथमें लिये भीमसेन को देखना चाहताहूं, यह बहुत दिनोंसे मनोरथ मेरा चला आता है । ३७ । जब हम समर में भीमसेन के गदा मारेंगेतो अवश्यही वे प्राण रहित हो पृथ्वी पर गिरेंगे इसमें कुछभी संदेह नहीं । ३८ । व भीमसेनकी कौन गणना जो हम गदामारें तो हिमवान् पर्वतभी चूर्णहोजाय व सैकड़ों हजारों प्रकार से बिखरजाय । ३९ । व वासुदेव अर्जुन ये दोनों भी अच्छी तरह जानते हैं कि गदा विद्यामें दुर्योधन के समान पृथ्वी में दूसरा नहीं है यह निश्चय है । ४० । इससे अब समर में भीमसेनमय भय आपको न हो, हे राजन आप उदास न हों हम भीमसेनको अवश्यही

unhappy in this famely of Kauravas but am neither afraid of Bhimsen nor of any one else I tell you truly that I have no rival in the world in the use of mace, because I have learnt it from Baldev. Bhimsen will not be able to withstand blows from my mace, although he is as good a warrior as Baldev and is the strongest of men. One severe blow of my mace is sufficient to send Bhim to the region of Yam. I am always desirous of encountering Bhimsen with mace and have long since cherished this desire. I can break the Himalayas into a thousand pieces with a blow of my mace; how can Bhim withstand it? Both Vasudev and Arjun fully know that Duryodhan has no rival in the use of mace. 40. You must not entertain any fear from Bhimsen in battle.

॥ ४१ ॥ तस्मिन्मयाहते क्षिप्र मर्जुनंबहवोरथाः । तुल्यरूपा विशिष्टाश्च क्षेप्स्यन्तिभरतर्षभ ॥ ४२ ॥ भीष्मोद्रोणःकृपोद्रौणिः कर्णोभूरिश्रवास्तथा । प्राग्ज्योतिषाधिपः शल्यः सिन्धुराजोजयद्रथ ॥ ४३ ॥ एकैकएषांशक्तस्तु हन्तुंभारतपाण्डवान् । समेतास्तुक्षणेनैतान्नेष्यन्तियमसादनम् । समग्रापार्थिवी सेना पार्थमेकं धनंजयम् ॥ ४४ ॥ कस्मादशक्तानिर्जेतु मिति हेतुर्न विद्यते । शरव्रातैस्तुभीष्मेण शतशोनिचितोवशः ४५ द्रोणद्रौणिकृपैश्चैव गन्तापार्थोयमक्षयम् । पितामहोपिगांगेयः शान्तनोरधिभारत ४६ ब्रह्मर्षिसदृशोजज्ञे देवैरपिदुःसहः । नहन्ताविद्यतेचापि राजन्भीष्मस्यकश्चन ४७ ॥

मारडालेंगे । ४१ । जब हम भीमसेनको मारडालेंगे तो बहुत से महारथी हममें ऐसे हैं जो मारे बाणों के अर्जुनको आच्छादित करलेंगे क्योंकि बहुत तो उन के तुल्यरूपही हैं बहुत उन से भी विशेष हैं । ४२ । जैसे, भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य अश्वत्थामा, कर्ण, भूरिश्रवा, प्राग्ज्योतिष देशों के राजा शल्य व सिन्धुदेशके राजा जयद्रथ । ४३ । इनमें एक २ वीर पांडवों को मारसक्ता है, व सब इकट्ठे होकर तो क्षणमात्र में सबको यमपुर भेजदेंगे । ४४ । सब पृथ्वीभरकी सेना अकेले धनुर्द्धर अर्जुन को नहीं जीतसक्ती इस आप के कथनका कुछ हेतुही हमको नहीं विदितहोता क्योंकि भीष्मजी ने सैकड़ों बार बाण समूह से अर्जुनको युक्तकरदिया है । ४५ । व द्रोणाचार्य अश्वत्थामा व कृपाचार्य के सामने पड़नेसे तो वे यमपुरहीको चलेजायँगे हे भारत भीष्मपितामहजी शान्तनुजी से अधिक हैं । ४६ । ये ब्रह्मर्षियों के सदृश हैं यहां उत्पन्नहुये हैं व देवताओं को भी दुस्सह हैं, इस से भीष्मको मारडालनेवाला कोई पृथ्वी में विद्यमानही नहीं है । ४७ । क्योंकि भीष्मजीके पिताने कहदियाथा कि जबतक

Donot be anxious, king; for I shall surely kill Bhimsen. There are many of our warriors who will cover Arjun with their arrows when I have killed Bhim; for there are many warriors equal and superior to Arjun, such as Bhism the grandfather, Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama, Karn, Bhurishrava, Shalwa the king of Pragjyotish and Jayadrath *the king* of Sindhu. Each of those can kill the Pandavas, whereas all of them together can send them at once to the region of yam. Your belief that all the armies of the world cannot conquer Arjun, is groundless; for Bhishm has often covered him with his arrows and he is suro to meet his death when he encounters Dronacharya, Ashwathama and Kripacharya. Bhishm the grandfather has surpassed Shantanu. He is like Brahmarshis, *is unconquerale by gods* and *on noe can kill him; for* his father told

पित्राह्युक्तःप्रसन्नेन नाकामस्त्वंमरिष्यसि । ब्रह्मर्षेश्चभरद्वाजाद् द्रोणोद्रौण्यामजायत ॥ ४८ ॥ द्रोणाज्जज्ञेमहाराज द्रौणिश्चपरमास्त्रवित् । कृपश्चाचार्यमुख्योयं महर्षेर्गौतमादपि ॥ ४९ ॥ शरस्तम्बोद्भवःश्रीमा नवध्यइतिमेमतिः । अयोनिजास्त्रयोह्येते पिता माताचमातुलः ॥ ५० ॥ अश्वत्थाम्नो महाराज सचशूरःस्थितोमम । सर्वएतेमहाराज देवकल्पामहारथाः ॥ ५१ ॥ शक्रस्यापिव्यथांकुर्युः संयुगेभरतर्षभ । नैतेपामर्जुनः शक्त एकैकंप्रतिवीक्षितुम् ॥ ५२ ॥ सहितास्तुनरव्याघ्र हनिष्यन्तिधनंजयम् । भीष्म द्रोणकृपाणांच तुल्यःकर्णोमतोमम ॥ ५३ ॥ अनुज्ञातश्चरामेण मत्समोसीतिभारत । कुण्डलेरुचिरेचास्तां कर्णस्यसहजेशुभे ॥ ५४ ॥ तेसत्यर्थंमहेंद्रेण याचितःसपरन्तपः । अमोघयामहाराज शक्त्यापरमभीमया ॥ ५५ ॥ तस्यशक्त्योपगूढस्य कस्माज्जी-

तुम्हारी इच्छा न होगी तबतक तुम न मरोगे, और द्रोणाचार्य जी जानों महर्षि भरद्वाजजी से द्रोणी में उत्पन्नहुये हैं। ४८ । व द्रोणाचार्यजी से परमास्त्रवेत्ता ये अश्वत्थामा जी उत्पन्नहुये हैं, व ये आचार्य मुख्य कृपाचार्यजी महर्षि गौतमजी से सरपत के वनमें उत्पन्न हुये हैं । ४९ । इससे ये श्रीमान् अवध्यहैं, व अश्वत्थामा के पिता माता व मातुल ये तीनों अयोनि से उत्पन्न हैं । ५० । व ये अश्वत्थामाजी जानों हमारी ओर शूर स्थितहैं, हे महाराज ये सबलोग देवताओं के समान महारथ हैं । ५१ । ये लोग समरमें इन्द्रको भी व्यथित करेंगे इनमें से एक २ को अर्जुन देखभी नहीं सके युद्ध करने को कौन कहे । ५२ । व ये सब जो एकत्रहोंगेतो अर्जुनको मारही डालेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है, व हमारे मतसे भीष्म द्रोण कृपाचार्यही के समान कर्णवीरभी हैं । ५३ । क्योंकि परशुरामजी ने कर्णको आज्ञादी है कि तुम हमारे समान हो व इन कर्णजी के संगही के उत्पन्न दो बड़े सुन्दर कुण्डलथे । ५४ । उनको इन्द्रने मांगकर इन्द्राणी के लिये मांगा व उनके बदले में एकबड़ी अमोघशक्ति इन्द्रनेदी । ५५ ।

him that he would not die until he wished. Dronacharya was born of Bhardwaj; the former gave birth to Ashwathama who is perfect in the use of weapons and this preceptor of ours, Kripacharya was born of rishi Gautam in a forest of weeds. No one can kill these three. The parents and the maternal uncle of Ashwathama were not born of women. 50. Ashwathama is our great warrior. The above mentioned men are great warriors like gods and will defeat Indra too in battle. Arjun can not look any of them in the face; his being able to fight with them is out of question. All of them together will surely kill Arjun and I think Karan is as great a warrior as Bhishm, Drona or, Kripachaya; for Parashuram has made him like himself. Indra took from Karan the two earrings of great beauty, born with his person, for his wife and gave him in return an

वेद्धनञ्जय' । विजयेमेध्रुवराजन् फलपाणाविवाहितम् ॥ ५६ ॥ अभिव्यक्तःपरं पाञ्च कृत्स्नोयुधिपराजयः । आहन्तारोनेनभीष्मोव प्रयुतंहन्तिभारत ॥ ५७ ॥ ततसमाश्चमहेष्वासा द्रोणद्रौणिकृपाअपि । सशप्तकानांवृन्दानि क्षत्रियाणांपरंतप ॥ ५८ ॥ अर्जुनंवयमस्मान्वानिहन्यात्कपिकेतनः । तच्चालमिति मन्यन्तेसव्यसाचिवधेधृताः ॥ ५९ ॥ पार्थिवास्समर्थास्तेभ्यो ह्यकस्माद्व्यथतेकथम् । भीमसेनेच निहते कोन्योयुध्येतभारत ॥६०॥ परेषांतन्ममाचक्ष्व यदिवेत्थपरन्तप । पंचतेभ्रातरःसर्वे धृष्टद्युम्नोथसात्यकिः ६१ ॥ परेषांसप्तयेराजन् योधाःसारंबलंमतम् । अस्माकन्तुविशिष्टाये भीष्मद्रोणकृपादयः ॥ ६२ ॥ द्रौणिर्विकर्त्तनःकर्णः सोमदत्तोथवा

फिर वज्रशक्ति से युक्त कर्ण को अर्जुन कैसे जीतलेंगे, इस से हम जानते हैं कि हाथ में आगये फल के समान हमारी विजयहोगी । ५६ । व हमारे शत्रुओंकी पराजय तो सब प्रकार से है क्योंकि ये हमारे भीष्मजी एकदिन में दशहजार योधों को मारडालतेहैं ५७ व इन्हीं के समान महाधनुर्द्धर द्रोणाचार्य अश्वत्थामा कृपाचार्यभी हैं, व ये सब और क्षत्रियों के समूह यहां वर्तमान हैं । ५८ । याते हमलोग अर्जुनही को मारडालेंगे वा अर्जुन हमींलोगों को मारडालेंगे, परन्तु हमारे योधालोग जब अर्जुनके वधकरनेमें नियुक्त होते हैं तो सब बहुतअच्छा मानते हैं । ५९ । फिर जिस अर्जुनका वध सब राजालोग इसप्रकार समझते हैं उस अर्जुनादिकों से आपको अकस्मात् यह भय कैसे उत्पन्न हुई जब हम भीमसेन को मारडालेंगे तो फिर और कौन युद्धकरेगा । ६० । शत्रुओं में कोई औरभी दिखाई पड़ताहो तो आपही बतावें वे पांचभाई तो जानों आपही में धृष्टद्युम्न व सात्यकि दो ये हैं । ६१ । बस ये सातयोधा शत्रुओंकी ओर ठहरे इन्हीं में बलका सारहै इनसे तो अधिक भीष्म द्रोण कृपाचार्यादि बहुत हैं । ६२ । जैसे अश्वत्थामा,

unerring missile. How can Arjun defeat Karan while the latter is in possession of that missile? I think therefore that our victory is secure like a fruit that has come in hand. Our enemies are sure to be defeated, for our Bhishm kills ten thousand warriors in a day. The great archers, Dronacharya, Ashwathama and Kripacharya too are like him and there are, besides, the seven armies of Kshatryas. Either Arjun will destroy us are we will kill him. Our warriors are very eager to kill him. How can you have any fear of Arjun and others when all the kings think them an easy prey? Who will remain to fight when I shall have killed Bhimsen? 60. What other great warrior is among them besides the five Pandavas, Dhrishtadyumn and Satyaki? These are the only seven warriors among them while there are many more like them on our side such as Bhishm, Dron, Kripacharya, Ashwathama, Vaikartan, Karan, Somdatta,

हिकः । प्राग्ज्योतिषाधिपःशल्य आवन्त्योजयद्रथः ॥ ६३ ॥ दुःशासनोदुर्मुखश्च दुःसहश्चविशाम्पते । श्रुतायुश्चित्रसेनश्च पुरुमित्रो विविंशतिः ॥ ६४ ॥ शलोभूरिश्रवाश्चैव विकर्णश्चतवात्मजः । अक्षौहिण्योहिमेराजन् दशैकाचसमाहृताः ॥ ६५ ॥ न्यूनाःपरेषांसप्तैव कस्मान्मेस्यात्पराजयः । बलंत्रिगुणतोहीनं योद्धंमाहबृहस्पतिः । परेभ्यस्त्रिगुणाचेयं ममराजन्ननीकिनी ॥ ६६ ॥ गुणहीनंपरेषाञ्च बहुपश्यामिभारत । गुणोदयंबहुगुणमात्मनश्चविशाम्पते ॥ ६७ ॥ एतत्सर्वंसमाज्ञाय बलाग्र्यंममभारत । न्यूनतांपाण्डवानांच नमोहंगन्तुमर्हसि ॥ ६८ ॥ इत्युक्त्वासंजयंभूयः पर्यपृच्छतभारत । विविरसुःप्राप्तकालानि ज्ञात्वापरपुरंजयः ६९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि दुर्योधनवाक्ये पञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

वैकर्त्तन, कर्ण, सोमदत्त, बाह्निकराज व प्राग्ज्योतिष इस के राजाशल्यजी व मित्रानुविन्दादि दो अवन्तीपुरी के राजाहैं, व जयद्रथ । ६३ । दुश्शासन, दुर्मुख, दुस्सह, श्रुतायु, चित्रसेन, पुरुमित्र, विविंशति । ६४ । शल, भूरिश्रवा, व तुम्हारे पुत्र विकर्ण, ये सब सो वीरहैं व ११ अक्षौहिणी हमारे सेनाहै । ६५ । व शत्रुओं के सातही अक्षौहिणी सेनाहै फिर हमारीही पराजय क्यों होनेलगी, इसप्रकारसे बृहस्पतिजीनेभी कहा है कि अपनी सेना से शत्रुकी सेना जो तिहाईकमहो तो युद्धकरना चाहिये सो हमारी सेना शत्रुकी सेना से तिगुनी है । ६६ । इस से हे भारत शत्रुओं में बहुत गुणहीनहैं, व अपनी ओर सब महागुण युक्तहैं । ६७ । इस सब सेनासहित हम अधिक बलवान्हैं और पांडवलोग न्यून हैं । ६८ । पितासे यह कहकर दुर्योधन ने संजय से सबवृत्तांत पूछना आरम्भ किया ६९ ॥

Valhik, Shalya the king of Pragjyotish, Mitranurand and another, the two kings of Avanti, Jayadrath, Dushasan, Durmukh, Dussah, Shrutaya, Chitrasen, Purumitra Vivinshati, Shal, Bhurishrava, and your son Vikarn. We have all these warriors in addition to eleven akshauhinis of army while the enemies have only seven; how then can we suffer defeat? Vrihaspati says that one should fight an enemy when the army of the latter be one-third less than that of one's own. Our army is more numerous than that of our enemy and consists of better warriors. With all this army we are more powerful than the Pandavas." Having said this to his father, Duryodhan asked of Sanjaya more about the Pandavas. 69.

दुर्योधन उवाच ॥ अक्षौहिणीःसप्तलब्ध्वा राजभिःसहसञ्जय । किंस्विदिच्छतिकौन्तेयो युद्धप्रेप्सुर्युधिष्ठिरः ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच ॥ अतीवमुदितोराजन युद्धप्रेप्सुर्युधिष्ठिरः । भीमसेनार्जुनौचोभौ यमावपिनंबिभ्यतः ॥ २ ॥ रथन्तु दिव्यंकौन्तेयः सर्वा विभ्राजयन्दिशः । मन्त्रंजिज्ञासमानःसन् बीभत्सुः समयोजयत् ॥ ३ ॥ तमपश्यामसन्नद्धं मेघं विद्युत्प्रभंयथा । समन्तात्समभिध्याय हृष्यमाणोऽभ्यभाषत ॥ ४ ॥ पूर्वरूपमिदंपश्य वयंजेष्यामसंजय । बीभत्सुर्मांयथोवाच तथाऽवैम्यहमच्युत ॥ ५ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ प्रशंसस्यभिनन्दंस्तान् पार्थानक्षपराजितान् । अर्जुनस्यरथेब्रूहि कथमश्वाःकथंध्वजाः ॥ ६ ॥ सञ्जय उवाच ॥

अध्याय ॥ ५६ ॥

दुर्योधनजी बोले हे संजय सात अक्षौहिणी सेनाको राजाओं से मांगनेपर पाई अब युद्धकी इच्छा युधिष्ठिरजी किसविचारसे करते हैं । १ । संजयबोले कि हे राजन् अतीव हर्षितहो युधिष्ठिरजी युद्धकरनेकी इच्छा करतेहैं व भीम अर्जुनभी युद्धही युद्धकरते हैं व नकुल सहदेवभी कुछ नहीं डरते । २ । एक दिन हमारे सामने अर्जुन अस्त्रविद्याकी परीक्षा लेने के लिये सब दिशोंको प्रकाशित करतेहुये रथपर चढ़े । ३ । उनको कवचादि धारण किये हमने बिजुली सहित मेघ के समान चमकते देखा तब चारोंओर निहार अर्जुनजीने हम से कहा कि । ४ । संजय देखो यह हमारा पूर्वरूपहै हमींलोग जीतेंगे, यह जैसे अर्जुन ने हम से कहा है वैसा हमीं जानते हैं । ५ । इतनासुन दुर्योधनबोले कि पार्थों को अभिनन्दित करते हुये उनकी प्रशंसा करतेहो जिनको हमने जुआ में पराजित करादिया है, अच्छा बताओ तो अर्जुन के रथ में किसप्रकार के घोड़े हैं व किसप्रकारकी

CHAPTER LVI

"How does Yudhishthir feel with the seven akshauhinis of army which he has begged of other kings?" asked Duryodhan of Sanjaya. "Yudhishthir is cheerfully making preparations for war," replied Sanjaya, "and Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev talk fearlessly of war. Their talk is of nothing but war. One day, in my presence, Arjun rode out on his chariot to inspect the tournament of warriors, illumining all the directions with his glory. Arrayed in arms and armour, I saw him shining like lighting in the midst of clouds. Then looking all round himself, he said to me, "Look, Sanjaya, this is our original form and we will win." I cannot describe the way in which this was said to me by Arjun." "You praise the Pandavas," said Duryodhan to Sanjaya, "who have already been defeated by us

भौमनःसहशक्रेण बहुचित्र विशांपते । रूपाणिकल्पयामास त्वष्टाधातासदाविभो ७ ध्वजेहितस्मिन्रूपाणि चक्रुस्ते देवमायया । महाधनानि दिव्यानि महान्तिचलघूनि च ॥ ८ ॥ भीमसेनानुरोधाय हनूमानमारुतात्मजः । आत्मप्रतिकृतिंतस्मिन् ध्वज आरोपयिष्यति ॥ ९ ॥ सर्वादिशोयोजनमात्र मन्तरं सतिर्यगूर्ध्वञ्चरुरोधवैध्वज नससज्जत्यसौतरुभि.संवृतोपि तथाहिमाया विहिताभौमनेन ॥ १० ॥ यथाकाशेशक्र धनुःप्रकाशते नचैकवर्णनचविद्मि किन्नुतत् । तथाध्वजोविहितोभौमनेन बहाकारं दृश्यतेरूपमस्य ॥ ११ ॥ यथाग्निधूमो दिवमेतिरुध्वा वर्णानविभ्रत्तैजसश्चित्ररूपान् तथाध्वजोविहितोभौमनेन नचेद्भारोभवितानोतरोध ॥ १२ ॥ श्वेतास्तस्मिन्वात वेगाःसदश्वा दिव्यायुक्ताश्चित्ररथेनदत्ताः । भुव्यन्तरिक्षेदिविवानरेंद्र एषांगतिर्हीयते

ध्वजा । ६ । संजयबोले, कि इन्द्र विश्वकर्मा त्वष्टा व प्रजापति नानाप्रकार के रूप कल्पना किया करते हैं । ७ । इनलोगों ने अर्जुन के रथ मेंभी बहुत से बहुमूल्य बड़े छोटेरूप बनाये हैं । ८ । व भीमसेनभी पवन के पुत्र हैं इस सम्बन्ध से वायुके पुत्र हनुमान्जी अर्जुनकी ध्वजामें आबैठे । ९ । उस ध्वजाने चारकोसकी लम्बाई चौडाई ऊँचाई निचाई में सब दिशों को मूंद लिया है विश्वकर्मा ने ऐसीमाया उसमें रची है कि वह वृक्षोंसे आच्छादितभी था पर नहीं दिखाई देताथा । १० । जैसे आकाश में इन्द्रका धनुष उदित होताहै तो उसमें एकवर्ण नहीं दिखाई देता चित्र विचित्ररंग दिखाई देते हैं, वैसेही विश्वकर्मा ने उसध्वजाका रूप ऐसा बनाया है कि बहुत आकार का उसका रूप दिखाई देताहै । ११ । जैसे चित्रविचित्र रंगके रूपोंको रोके अग्निका धुआं आकाश में पहुँचाहै, उसीतरह विश्वकर्मा ने उस ध्वजका रूप बनाया है न कुछ उस में गरुवापन है न वह किसीको आच्छादित करता । १२ । व उस रथमें चित्ररथ गन्धर्व के दियेहुये वायुवेग १००

---

in gambling. Now let me know what sort of horses draw Arjun's chariot and describe his banner." "Indra, Vrishwakarma, Twashta and Prajapati," replied Sanjaya, "make different forms and they have made many large and small images of great value in Arjun's chariot. Both Bhimsen and Hanuman are sons of Vayu and therefore Hanuman has taken a seat on the banner of Arjun. The banner extends four miles each way and Vishwakarma has constructed it so cleverly that no trees can obstruct its way. 10. "It has many colours like the rainbow in the sky. It is seen like smoke of many colours on the sky and yet it is so wisely constructed by Vishwakarma that it has neither weight nor covers anything. The chariot is drawn by a hundred white horses, swift as the wind.

नात्रसर्गा । शतंयत्तत्पूर्यते नित्यकालं हतंहतंदत्तवरंपुरस्तात् ॥ १३ ॥ तथाराज्ञो दन्तवर्णाबृहन्तो रथेयुक्ताभांतिवद्वीर्यतुल्याः । ऋक्षप्रख्याभीमसेनस्यवाहा रथेवायोस्तुल्यवेगाबभूवुः ॥ १४ ॥ कल्माषांगास्तित्तिरिचित्रपृष्ठा भ्रात्रादत्ताःप्रीयताफाल्गुनेन । भ्रातुर्वीरस्यस्वैस्तुरंगैर्विशिष्टा मुदायुक्ताःसहदेवंवहन्ति ॥ १५ ॥ माद्रीपुत्रनकुलंत्वाजमीढ महेन्द्रदत्ताहरयोवाजिमुख्याः । समावायोर्बलवन्तस्तरस्विनो वहन्तिवीरंवृत्रशत्रुंयथेन्द्रम् । १६ ॥ तुल्याश्चैभिर्वयसाविक्रमेण महाजवाश्चित्ररूपाःसदश्वाः । सौभद्रादीन्द्रौपदेयान्कुमारान वहन्त्यश्वा देवदत्ताबृहन्त. १७ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि सञ्जयवाक्ये
षट्पञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

घोड़े श्वेतवर्णके लगेरहते हैं, पृथ्वी आकाश अन्तरिक्ष कहीं नहीं रुकते सर्वदा सबकहीं चलेजाते हैं, व उनमें से जो कोई कुछघोड़े मारभी डाले तो वे सौके सौ पूरे बनेरहते हैं क्योंकि उनको पूर्वकालका वरदानहै । १३ । इस तरह के अमर राजाके घोड़े श्वेत वर्ण के व श्वेतहीवर्णके रथमें जुते शोभितहोते हैं, व सप्तर्षियोंके तुल्य तेजस्वी वायुवेग भीमसेनजी के रथके घोड़े हैं । १४ । व तित्तिरके रंग के चित्रविचित्र पीठके घोड़े अर्जुन के दिये हुये सहदेवजी के रथमें चलते हैं वे अर्जुनके घोड़ोंसे भी विशेष हैं । १५ । व माद्री के पुत्र नकुलजी के रथमें इन्द्रजी के दिये वायुवेग बलवान् व शीघ्रगामी घोड़े लगते हैं जैसे कि इन्द्रके रथमें लगते हैं । १६ । व इसी तरह सबकी अवस्था व विक्रम के अनुरूप चित्रविचित्र महावेगवान अच्छे २ घोड़े सब देवताओंके ही दियेहुये, अभिमन्यु व द्रौपदीकुमार प्रतिविन्ध्यादिकों के रथ में घोड़े हैं १७ ॥

---

presented by Chitrarath the Gandharv, which can go everywhere on the earth and the sky and whose place is filled up as soon as any of them are killed. Those divine horses of white colour draw the white-coloured chariot of great beauty. Bhimsen's chariot is drawn by seven horses swift as the wind and glorious as the seven rishis. Sahadhve's chariot is drawn by horses having strips like those of partridges on their back. They were presented to him by Arjun and are better than his own. The chariot of Nakul, the son of Madri, is drawn by swift and powerful horses, like those of Indra's chariot, presented by Indra. In the same manner, Abhimanyu and the sons of Draupadi have, each of them according to their ages and prowess, got swift horses of different colours presented by gods."17.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ कांस्तत्रसञ्जयापश्य प्रीत्यर्थेनसमागतान् । येयोत्स्यन्ते पाण्डवार्थे पुत्रस्यममवाहिनीम् ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच ॥ मुख्यमन्धकवृष्णीनां ददृश्यकृष्णमागतम् । चेकितानंचतत्रैव युयुधानञ्चसात्यकिम् ॥ २ ॥ पृथगक्षौहिणीभ्यांतु पाण्डवानभिसंश्रितौ । महारथौसमाख्यातावुभौपुरुषमानिनौ ॥ ३ ॥ अक्षौहिण्याथपांचाल्यो दशभिस्तनयैर्वृतः । सत्यजित्प्रमुखैर्वीरैर्धृष्टद्युम्नपुरोगमैः ॥ ४ ॥ द्रुपदोवर्द्धयन्मानं शिखण्डिपरिपालितः । उपायात्सर्वसैन्यानां प्रतिच्छाद्यतदावपुः ॥ ५ ॥ विराटः सहपुत्राभ्यां शङ्खेनैवोत्तरेणच । सूर्यदत्तादिभिर्वीरैर्मदिराक्षपुरोगमैः ॥ ६ ॥ सहितः पृथिवीपालो भ्रातृभिस्तनयैस्तथा । अक्षौहिण्यैवसैन्यानां वृतःपार्थं समाश्रितः ॥ ७ ॥ जारासन्धिर्मागधश्च धृष्टकेतुश्चचेदिराट् । पृथक्पृथगनुप्राप्तौ

अध्याय ५७ ॥

धृतराष्ट्रजी ने कहा कि सञ्जय तुमने वहां प्रीति से आये किनलोगों को देखा जो पाण्डवों के अर्थ हमारे पुत्रकी सेना से युद्ध करना चाहते हैं । १ । संजय बोले कि अन्धक वृष्णिवंशियों में मुख्य एक श्री कृष्णचन्द्रजी को हमने वहां आये हुये देखा है, व चेकितान व युद्ध करनेकी इच्छा किये सात्यकि को देखा है । २ । ये दोनों पाण्डवों के अर्थ अलग २ एक २ अक्षौहिणी सेना लेकर आये हैं दोनों महारथ हैं व दोनों पुरुष मानी हैं । ३ । एक अक्षौहिणी सेना व अपने सत्यजित धृष्टद्युम्नादि दशपुत्रों सहित पाण्डवों के अर्थ पांचालदेश के राजा द्रुपद भी । ४ । अपने पुत्र शिखण्डी से परिपालित, सब सैन्यों को अच्छादितकर वहां आये हैं । ५ । व अपनेपुत्र शङ्ख तथा उत्तर को सगले व एक अक्षौहिणी सेनासे व सूर्यदत्त मदिराक्षादिवीरोंको सगले व औरभी सब अपने भाई भतीजों सहित विराटदेश के राजा पाण्डवों के पास आये हैं । ७ । व मगधदेश

CHAPTER LVII

"What men have come there out of the love for Pandavas to fight against our sons?" said Dhritrashtra to Sanjaya and the latter replied, "I saw there Shree Krishn the chief of the Andhaks and the Vrishnis, and Chekitana and Satyaki are desirous of engaging in the war. The two last named warriors of great renown have each brought an Akshauhini of army. Drupad the king of the Panchals has brought an akshauhini of army together with his ten sons, Satyajit, Dhrishtadyumna Shikhandi and others. The king of Virat too, together with his sons, Shankh and Uttar, his warriors Suryadatta and Madiraksh, and brothers and kinsmen, has come to help the Pandavas with an akshauhini of army. Sahadev the son of Jara

पृथगक्षौहिणीवृतौ ॥ ८ ॥ केकयाभ्रातरःपञ्च सर्वेलोहितकध्वजाः । अक्षौहिणी परिवृताः पांडवानभिसंस्थिताः ॥ ९ ॥ एतानितावतस्तत्र तानपश्यंसमागतान् । ये पांडवार्थे योत्स्यन्तिधार्त्तराष्ट्रस्यवाहिनीम् ॥ १० ॥ योवेदमानुषंव्यूहं दैवंगान्धर्व मानुषम् । सतत्रसेनाप्रमुखे धृष्टद्युम्नोमहारथः ॥ ११ ॥ भीष्मःशान्तवोराजन् भागः क्लृप्तःशिखंडिनः । तंविराटोऽभिसंयाता सार्धमत्स्यैःप्रहारिभिः ॥ १२ ॥ ज्येष्ठस्यपांडुपुत्रस्य भागोमद्राधिपोबली । तौतुतत्राब्रुवन्केचिद्विषमौ नोमताविति ॥ १३ ॥ दुर्योधनःसहसुतः सार्धंभ्रातृशतेनच । प्राच्याश्चदाक्षिणात्याश्च भीमसेनस्यभागतः ॥ १४ ॥ अर्जुनस्यतुभागेन कर्णोवैकर्त्तनोमतः । अश्वत्थामाविकर्णश्च सैन्धवश्च

के राजा जरासंधके पुत्र सहदेव तथा शिशुपाल के पुत्र धृष्टकेतु चंदेरी का राजा आया है इनदोनोंके संग एक एक अक्षौहिणी सेना है । ८ । व केकयदेशके राजा पांचभाई एक अक्षौहिणी सेनालेकर आये हैं इन सबोंके रथोंकी पताका अरुणरंगकी है । ९ । सब इन्हींलोगोंको हमने वहां आये देखाहै जो पांडवों के अर्थ तुम्हारे पुत्रकी सेनासे युद्धकरना चाहते हैं । १० । जोकि मानुष दैव गांधर्व व आसुर व्यूह जानताहै वह राजाधृष्टद्युम्न सेना में बड़ा मुख्य है । ११ । हे राजन् शान्तनुजीके पुत्र भीष्मजीको तो शिखंडी का भाग बनाया है व उसी शिखण्डीही के पीछे अपने लोगों सहित राजा विराटभी रहेंगे । १२ । व युधिष्ठिरजीके भाग में मद्रदेशके राजा शल्यजी ठहराये गये हैं, क्योंकि वहां सब कहते थे कि ये दोनों विषम स्वभाव नहीं हैं इस से इनदोनों का युद्धठीक है ।१३। व अपने सौ भाइयों समेत व पुत्रों सहित तथा पूर्व देश व दक्षिण देश के राजाओं समेत दुर्योधन भीमसेनके भाग में किये गये हैं । १४ । व कर्ण वैकर्त्तन अश्वत्थामा विकर्ण

---

sandh the king of Magadh and Dhrishtketu the son of Shishupal king of Chandeli have also come there, each with an akshauhini of army. The kings of Kaikaya, five brothers have come there with an akshauhini of army having red banners over their chariots. These are the only kings whom I saw there and who have come to assist the Pandavas against your sons. 10. Dhrishtadyumn who knows how to form phalanxes after the fashions of men, gods, gandharvas asuras, is the chief man in the army. They have allotted Bhishm the son of Shantanu to Shikhandi who will be followed by king Virat and his army. Yudhishthir will dispose of Shalya the king of Madra; for they say that the two are not of dissimilar dispositions and are fit to fight with each other. Duryodhan and his hundred brothers and their sons with the kings of the East and the south are allotted

जयद्रथ ॥ १५ ॥ अशक्यांश्चैवयेकेचित् पृथिव्यांशूरमानिनः । सर्वांस्तानर्जुनः पार्थःकल्पयामासभागतः ॥ १६ ॥ महेष्वासाराजपुत्रा भ्रातरःपञ्चकेकयाः । केकयानेवभागेन कृत्वायोत्स्यन्तिसंयुगे ॥ १७ ॥ तेषामेवकृतोभागो मालवाःशाल्वकास्तथा । त्रिगर्त्तानाञ्चवैमुख्यौ यौतौसंसप्तकाविति ॥ १८ ॥ दुर्य्योधनसुताः सर्वेतथादुःशासनस्यच । सौभद्रेणकृतोभागो राजाचैवबृहद्बलः ॥ १९ ॥ द्रौपदेया महेष्वासाःसुवर्णविकृतध्वजाः । धृष्टद्युम्नमुखा द्रोणमभियास्यन्ति भारत ॥ २० ॥ चेकितानःसोमदत्तं द्वैरथेयोद्धुमिच्छति । भोजन्तुकृतवर्माणं युयुधानोयुयुत्सति ॥ २१ ॥ सहदेवस्तुमाद्रेयः शूरःसंक्रन्दनोयुधि । स्वमंसङ्कल्पयामास श्यालंतेसुबलात्मजम् २२॥ उलूकंचैवकैतव्यं येचसारस्वतागणाः । नकुलःकल्पयामास भागंमाद्रवतीसुतः ॥२३॥

जयद्रथ व और जो पृथ्वीभर में शूरमानी हैं उन सबोंको अर्जुनजीने अपने भागमें लिया है । १६ । व बड़े धनुर्द्धर केकयदेशके राजकुमार पांचभाई अन्य केकय देशवालों से जो तुम्हारी ओर आयेहैं उनसे युद्ध करेंगे । १७ । व उन्हीं पांचभाइयों के भाग में मालव शाल्व त्रिगर्त्तदेशके दोनों सप्तकभी हैं । १८ । व दुर्योधन के सब पुत्र तथा दुश्शासनके सब पुत्रोंको व राजा बृहद्बलको अभिमन्युने अपने भागमें कल्पितकिया है । १९ । व धृष्टद्युम्नादि सब महाधनुर्द्धर व द्रौपदी के पुत्र द्रोणाचार्य्य जी से युद्धकरेंगे । २० । व चेकितान सोमदत्त से द्वन्द्व युद्ध किया चाहते हैं व भोजवंशी कृतवर्मा से सात्यकि युद्ध करना चाहते हैं । २१ । व माद्रीजीके पुत्र बड़े भारी शूरवीर सहदेवजीने युद्धमें अपना भाग आपके स्यालशकुनि को कल्पित कियाहै । २२ । व उलूक छली व सारस्वतगणों को माद्री के पुत्र नकुलजी ने अपना भाग कल्पित कियाहै । २३ । व जो और सबराजालोग

---

to Bhimsen. Karn, Vaikartan, Ashwathama, Vikarn, Jayadrath, and other warriors of renown are allotted to Arjun. The five brothers, *great archers and princes of Kaikaya will fight with others* of the country of Kaikaya that have come to your assistance. The same five brothers will fight the armies of Malava, Shalva and Trigart as well. The sons of Duryodhan and Dushasan and king Vrihadval are allotted to Abhimanyu. The great archers, Dhrishtadyumna and the sons of Draupadi will fight with Dronacharya. 20. Chekitan will fight a duel with Somdatta and Satyaki with Kritvarma. Your brother-in-law, Shakuni is allotted to Sahadev the *great warlike son of Madri.* The deceitful Uluks and Saraswats fall to the lot of Nakul the son of Madri. All the Pandavas will, in

येचान्येपार्थिवाराजन् प्रत्युद्यास्यन्तिसंगरे । समाह्वानेनतांश्चापि पाण्डुपुत्राअकल्पयन् ॥ २४ ॥ एवमेषामनीकानि प्रविभक्तानिभागशः । यच्चेकार्य्यंसपुत्रस्य क्रियतांतदकालिकम् ॥ २५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । नसन्तिसर्वेपुत्रामे मूढादुर्द्यूतदेविनः । येषांयुद्धं बलवताभीमेनरणमूर्धनि ॥ २६ ॥ राजानःपार्थिवाःसर्वे प्रोक्षिताःकालधर्मणा । गाण्डीवाग्निंप्रवेक्ष्यन्ति पतङ्गाइवपावकम् ॥ २७ ॥ विद्रुतांवाहिनींमन्ये कृतवैरैर्महात्मभिः । तांरणेकेऽनुयास्यन्ति प्रभग्नांपाण्डवैर्युधि ॥ २८ ॥ सर्वेह्यतिरथाःशूराः कीर्त्तिमन्तः प्रतापिनः । सूर्य्यपावकयोस्तुल्यास्तेजसा समितिञ्जयाः ॥ २९ ॥ येषांयुधिष्ठिरो नेतागोप्ताचधमधुसूदनः । योधौचपाण्डवौवीरौ सव्यसाचिवृकोदरौ ॥ ३० ॥ नकुलःसह

यहां पाण्डवों से युद्धकरने के लिये संग्राममें आवेंगे उन सबोंके समीप नाम पुकारनेपर सब पाण्डवलोग समय २ पर पहुँचतेरहेंगे । २४ । इसप्रकार तुम्हारी सब सेना वहां आपस में युद्धकरने के लिये बांटलीगई है अब पुत्र सहित आपको जो करनाहो कीजिये । २५ । इतना सुन धृतराष्ट्रजी बोले कि बस दुष्ट जुआरी ये हमारेपुत्र अब न बचेंगे क्योंकि इनका युद्ध संग्राम में बलवान् भीमसेनसे होगा । २६ । व ये सब पृथ्वी भरके राजा जो हमारी ओर आये हैं इनकाभी प्रोक्षण काल ने किया जैसे यज्ञमें यजमान बलिप्रदानके पशुओंको हरिद्रादि लगाय मारने के लिये प्रोक्षित करतेहैं क्योंकि ये सब गाण्डीव धन्वा के अग्नि में पड़कर भस्महोंगे जैसे अग्नि में पतंग गिरकर भस्महोते हैं । २७ । बस हमने जानलिया कि इन महात्माओं के विरोध से हमारी सेना इधर उधर भाग खड़ी होगी फिर पांडवों के सामने युद्धकरने को कौन जायगा । २८ । ये सब पांडवलोग अतिरथ, शूर, कीर्तिमान व प्रतापीहैं, व तेज से सूर्य व अग्नि के तुल्य तेजस्वी हैं इससे अपने तेजही से शत्रुओं को जीतलेंगे । २९ । फिर जिन पांडवों के नायकतो युधिष्ठिरजी तथा रक्षक श्रीकृष्णचन्द्रजी

---

time, come forward to encounter other kings on your side as their names are announced. Thus, all your army has been divided for the sake of battle; you and your sons should do what is needful." On hearing this, Dhritrashtra said, " Our sons, the wicked gamblers cannot now escape death; for they will have to fight with powerful Bhimsen and all these kings who have come here from all parts of the world,* have been consecrated by Death like the animals for slaugter at a sacrifice and will fall like insects into the fire of the Gandiv bow ! I know that our army will be routed in fighting with the Pandavas and no one will face those brave men. The Pandavas are great charioteers, brave, famous, full of prowess and glorious like the sun and will conquer all enemies with their own glory.

देवश्च धृष्टद्युम्नश्चपार्षतः। सात्यकिर्द्रुपदश्चैव धृष्टकेतुश्चसानुजः ॥ ३१ ॥ उत्तमौजाश्च पांचाल्योयुधामन्युश्चदुर्जयः। शिखण्डीक्षत्रदेवश्च तथावैराटिरुत्तरः ॥ ३२ ॥ काश्यश्चेदयश्चैव मत्स्याःसर्वेचसृञ्जयाः। विराटपुत्रोबभ्रुश्च पाञ्चालाश्चप्रभद्रकाः ॥ ३३ ॥ येषामिन्द्रोप्यकामानां नहरेत्पृथिवीमिमाम्। धीराणांरणधीराणां येभिंद्युःपर्वतानपि ॥ ३४ ॥ तान्सर्वगुणसम्पन्नानमनुष्यप्रतापिनः। क्रोशतोममदुष्पुत्रो योद्धुमिच्छति सञ्जय ॥ ३५ ॥ दुर्य्योधन उवाच। उभौस्वएकजातीयौ तथोभौभूमिगोचरौ। अथकस्मात् पाण्डवानामेकतो मन्यसेजयम् ॥ ३६ ॥ पितामहञ्चद्रोणञ्च कृपंकर्णञ्चदुर्जयम्। जयद्रथंसोमदत्तमश्वत्थामानमेवच ॥ ३७ ॥ सुचेतसो महेष्वासा-

---

व योधः अर्जुन भीमसेन। ३० । व नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न, पार्षत, सात्यकि द्रुपद धृष्टकेतु व उसका भाई । ३१ । व उत्तम पराक्रमी पाञ्चालदेशीय अति दुर्जय युधामन्यु, शिखण्डी, क्षत्रदेव, व विराटके पुत्र उत्तर। ३२। इसीप्रकार काशीनिवासी राजालोग, व चन्देली के राज्य के सब, मत्स्यदेश निवासी, व सृञ्जयवंशी, विराटका पुत्र बभ्रु व पाञ्चाल देशवासी तथा भद्रकादि, यहां बीर विद्यमानहैं। ३३ । जिन बीर पांडवोंकी पृथ्वी बिना उनकी इच्छा इन्द्रभी न हरसकें व जो रणधीर बीर पांडव पर्व्वतों को भी बाणों से चूर्ण करडालें। ३४ । उन सब गुण सम्पन्न व देव व प्रतापी पांडवों से, हमारा दुष्ट पुत्र दुर्योधन युद्ध किया चाहताहै हम बराबर हटाकररहेहैं नहीं सुनता संजय क्याकरें। ३५ । इतना सुन दुर्योधन बोले, पांडव व हमदोनों एकही जातिहैं व दोनों पृथ्वीहीपर रहते हैं कोई देवता नहीं जो स्वर्गादि में रहताहो, तो फिर तुम एकपांडवोंकी ही जय क्यों मानतेहो। ३६ । देखो भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य,अतिदुर्जय कर्णबीर, जयद्रथ, सोमदत्त, व अश्वत्थामा । ३७ । इनसब महाधनुर्द्धरों को समर

They have Yudhishthir for their leader, Shree Krishn for their helper and for their warriors they have Arjun, Bhim, Nakul, Sahadev, Dhrishtadyumna, Parshat, Satyaki, Drupad, Dhrishtaketu and his brothers, Udhamanyu the unconquerable warrior of Panchal of great prowess, Shikhandi, Kshatradev, Uttar the son of Virat, the kings of Kashi, Chandeli and Matsya, the Srinjayas, Babhru the son of Virat and the warriors of Panchal and Bhadrâk. 33.. Our wicked son Duryodhan wishes to fight against the brave Pandavas whose land even Indra cannot take by force without their consent and who can break down mountains with their arrows. I am always admonishing my son, what can I do more, Sanjaya ?" "The

जिन्द्रोपि सहितोऽमरैः । अशक्तःसमरेजेतुं किंपुनस्तातपांडवाः ॥ ३८ ॥ सर्वेच पृथिवीपाला मदर्थेतातपांडवान। आर्य्याःशस्त्रभृतःशूराः समर्थाःप्रतिबाधितुम् ॥३९॥ नमामकानपांडवास्ते समर्थाःप्रतिवीक्षितुम् । पराक्रान्तोह्यहंपांडून् सपुत्रानयोद्धुमाहवे ॥ ४० ॥ मत्प्रियंपार्थिवाःसर्वे येचिकीर्षन्तिभारत । तेतान्निवारयिष्यंति एणेयानिव तन्तुना ॥ ४१ ॥ महतारथवंशेन शरजालैश्चमामकैः । अभिद्रुताभविष्यंति पांचालाः पांडवैसह ॥ ४२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । उन्मत्तइवमेपुत्रो विलपत्येषसंजय । नहिशक्तो रणेजेतुं धर्मराजंयुधिष्ठिरम् ॥ ४३ ॥ जानातिहियथाभीष्मः पांडवानांयशस्विनाम्। बलवत्तांसपुत्राणां धर्मज्ञानांमहात्मनाम् ॥४४॥ यतो नारोचयदयं विग्रहंतैर्महात्मभिः।

में, सब देवगण सहित इन्द्रभी न जीतसकेंगे फिर पाण्डवोंकी कौन गणना है । ३८ । इसके सिवाय सब श्रेष्ठ शूरवीर राजालोग हमारे अर्थ पाण्डवोंको मारसक्तेहैं । ३९ । व हमारे यहां के लोगोंको पाण्डवलोग युद्ध में देख भी नहीं सक्ते फिर युद्ध करनेको कौन कहै व हम अकेलेही जो पराक्रमकरें तो सब पाण्डवोंको व उनके पुत्रोंको युद्धमें मारही डालें ।४०। और जो राजालोग हमारा प्रियचाहतेहैं वे उनको घेरलेवेंगे जैसे व्याधलोग हरिणोंके बच्चोंको जालसे घेरते हैं ।४१। व बड़े रथ समूह से तथा हमारे बाणजालोंसे पांचालोंसमेत पाण्डव विध्वस्तहोंगे । ४२ । इतनासुन धृतराष्ट्रजीबोले कि हे संजय, यह हमारा पुत्र उन्मत्त के समान बकताही है समर में धर्मपुत्र युधिष्ठिरजी को नहीं जीत सक्ता । ४३ । धर्मज्ञ महात्मा सपुत्र पाण्डवोंकी बलवत्ता भीष्मजी जानतेहैं अन्य कोई क्या जानेगा । ४४ । व इसी से इनको पाण्डवों के संग विग्रह करनेकी बातही

Pandavas and we," said Duryodhan on hearing this, "are fellow men and no one has any superiority over the other; how can you say that the Pandavas will gain victory? How can the Pandavas defeat Bhishm, Drona, Karan the unconquerable warrior, Jayadrath, Somdatta and Aswathama whom even Indra and his attendants the gods cannot conquer? Besides these great archers there are other kings who can destroy the Pandavas for our sake. They cannot look our warriors in the face. I alone can kill all the Pandavas. 40. The kings who are our well-wishers, will surround them on all sides as hunters do the young ones of deer. The Pandavas and the Panchals will be annihilated by the network of our arrows." "This son of mine," said Dhritrashtra to Sanjaya, "talks like a mad man; but cannot conquer Yudhishthir the son of Dharm in battle. Bhishm

किन्तुसंजयमेब्रूहि पुनस्तेषांविचेष्टितम् ॥ ४५ ॥ कस्तांस्तरांस्तनोभूयः सन्दीपयति पांडवान् । अर्चिष्मतोमहेष्वासान् हविषापावकानिव ॥ ४६ ॥ सञ्जय उवाच ॥ धृष्टद्युम्नःसदैवैतान सन्दीपयतिभारत । युध्यध्वमितिमाभैष्ट युद्धाद्भरतसत्तमाः ४७॥ येकेचित्पार्थिवास्तत्र धार्त्तराष्ट्रेणसंवृताः । युद्धेसमागमिष्यन्ति तुमुलेशस्त्रसंकुले ॥४८॥ तान्सर्वानाहवेक्रुद्धान् सानुबन्धानसमागतान् । अहमेकःसमादास्ये तिमिर्मत्स्यानि वोदकात् ॥ ४९ ॥ भीष्मंद्रोणंकृपंकर्णं द्रौणिंशल्यंसुयोधनम् । एतांश्चापिनिरोत्स्यामि वेलेवमकरालयम् ॥ ५० ॥ तथाब्रुवन्तंधर्मात्मा माहराजायुधिष्ठिरः । तवधैर्यञ्चवीर्यञ्च पाञ्चालाःपांडवैःसह ॥ ५१ ॥ सर्वेसमधिरूढाःस्मसंग्रामान्नः समुद्धर । जानामित्वांमहाबाहो क्षत्रधर्मेव्यवस्थितम् ॥ ५२ ॥ समर्थमेकंपर्याप्तं कौरवाणांवि-

---

नहीं रुचती, अब संजय फिर उन पाण्डवों के विचेष्टित हम से कहो और क्या क्या किया चाहते हैं । ४५ । व उन वीर मनस्वी पांडवों को बार २ प्रेरणा कौन करता है कि तुम युद्धही करो, जैसे बलतेहुये अग्निको कोई आहुति देकर प्रेरित किया चाहे । ४६ । संजय बोले कि बहुधातो सदा धृष्टद्युम्न पांडवों को दीपित करताहै कि हे भरत सत्तम लोगो युद्धसे न डरो अवश्यही युद्धकरो, यही कहा करताहै । ४७ । और यहभी कहताहै कि दुर्योधनने जिन राजाओं को बुलाया है उनमें जितने तुमुल रण संकुल में आवेंगे, उन सबों को सानुबन्ध हम अकेलेही समाप्त करदेंगे जैसे तिमिमत्स्य सब मत्स्यों को खाजाताहै । ४९ । व भीष्म कर्ण द्रोण कृपाचार्य्य अश्वत्थामा शल्य व दुर्योधन इन सबों को हम अकेले आड़ेंगे जैसे किनारा समुद्रको आड़ताहै ।५०। जब ऐसा धृष्टद्युम्नने कहा तो धर्मात्मा राजायुधिष्ठिर जी बोले कि तुम्हारा धैर्य्य व वीर्य्य पांचाल सहित हम सब पांडव जानतेहैं । ५१ । हम लोगोंको इस संग्रामसे उद्धारकरो, हम तुमको जानते हैं कि आप क्षत्र धर्मपर आरूढ़हैं ५२

---

and none else, knows the greatness of the Pandavas and therefore he does not like to hear of war with them. Now tell me, Sanjaya, the intentions of the Pandavas. Who are they that induce the Pandavas to fight, like one who inflames fire by pouring libations ?" "It is for the most part Dhrishtadyumna," said Sanjaya, "who instigates the Pandavas to go to battle without fail and says that he himself will kill all the kings that have come to the help of Duryodhan as a crocodile swallows the small fish and that he will check Bhishm, Dronacharya, Karan, Kripacharya, Ashwathama, Shalya and Duryodhan, as the coast checks the Ocean. On hearing this, Yudhishthir said to him ' Pandavas as well as the Panchals know your strength

निग्रहे । पुरस्तादुपयातानां कौरवाणांयुयुत्सताम् ॥ ५३ ॥ भवतापद्विधातव्यं तन्नः श्रेयःपरन्तप । संग्रामादपयातानां भग्नानांशरणैषिणाम् ॥ ५४ ॥ पौरुषंदर्शयन्शूरो यस्तिष्ठेदग्रतःपुमान् । क्रीणीयात्तंसहस्रेण इतिनीतिमतांमतम् ॥ ५५ ॥ सत्वंशूरश्च वीरश्चविक्रांतश्चनरर्षभ । भयार्त्तानांपरित्राता संयुगेषुनसंशयः ॥ ५६ ॥ एवंब्रुवति कौन्तेये धर्मात्मनियुधिष्ठिरे । धृष्टद्युम्नउवाचेदं मांवचोगतसाध्वसम् । सर्वान्जनपदान्सूत योधादुर्योधनस्यये ॥ ५७ ॥ सवाह्लिकान्कुरून्ब्रूयाःप्रातिपेयान्शरद्वतः। सूतपुत्रंतथाद्रोणं सहपुत्रंजयद्रथम् ॥ ५८ ॥ दुःशासनंविकर्णञ्च तथादुर्योधनंनृपम्। भीष्मञ्चब्रूहिगत्वा त्वमाशुगच्छचमाचिरम् ॥ ५९ ॥ युधिष्ठिरः साधुनैवाभ्युपेयोमा

व यहभी जानते हैं कि आप अकेलेही कौरवों के ऊपर अकृपाकरने में समर्थहैं जो कोई कौरव आगेयुद्ध करनेकी इच्छासे आवेंगे उन्हींको आप मारेंगे ५३ इससे इस विषयमें आपजो कुछकरो व विचारो हमको सब अंगीकारहै जोपुरुष संग्रामसे भागेहुये तथा शरणागत आयेहुओंको अपना पौरुष दिखाताहुआ शूर उन के आगे सन्नद्धहो खड़ाहोता है व उनको बचाताहै उसकोतो सहस्ररुपये देकरभी मोललेना चाहिये यह नीतिमानोंका मतहै । ५५ । सो तुम, शूर, वीर व विक्रमीहो, इस से भयभीत लोगोंके रक्षकहो इस में कुछ सन्देह नहीं । ५६ । जब धर्मात्मा युधिष्ठिरजीने ऐसा कहा तो निर्भयहो धृष्टद्युम्न ने हम से यह कहा कि । ५७ । हे सूत दुर्योधन के जितने देशहैं, व जितने उन के योधाहैं, उन सब बाह्लिकदेश के राजा व कर्ण द्रोण अश्वत्थामा व जयद्रथ, से । ५८ । दुश्शासन विकर्ण व दुर्योधन से, व भीष्मपितामहजीसे इन सबों के पास बहुतही शीघ्र जाय कहना कि । ५९ । धर्मपुत्रको

---

and look to you as their deliverer. We know you to be firm on the duties of your class; alone you can cope with the Kauravas and can kill those that will come forward to fight against you. We shall abide by your decision in whatever you do or think in the case of war. He who defends the fugitives and refugees with all his might, is a cheap bargain for any sum. You are brave, warlike, *full of prowess* and protector of the distressed." Hearing this from Yudhshthir, Dhrishtadyumn said fearlessly to me, "Go at once to Duryodhan and say to him, in the presence of all the kings, Valhik, Karan, Drona, Ashwathama, Jayadrath, Dushasan, Vikarn and Bhishma, that he must not think Yudhishthir to be too simple, that Arjun will kill all the Kauravas, that they should give up the kingdom to Yudhishthir and should beg of him to leave some portion for them.

वोनवधीदर्जुनोदेवगुप्तः। राज्यंदत्त्वं धर्मराजस्यतूर्णं याचध्वंत्वैपाण्डवेलोकवीरम् ६० नैतादृशोह्यियोधोस्ति पृथिव्यामिहकश्चन । यथाविरःसव्यसाची पांडवः सत्यविक्रमः ॥ ६१ ॥ देवैर्हिसंभृतो दिव्यो रथो गांडीवधन्वनः । नसजेयो मनुष्येणमास्मकृध्वं मनोयुधि ॥ ६२ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि सञ्जयवाक्ये सप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । क्षत्रतेजाब्रह्मचारी कौमारादपिपाण्डवः । तेनसंयुगमेष्यन्ति मन्दाविलपतोमम ॥ १ ॥ दुर्योधन निवर्त्तस्व युद्धाद्भरतसत्तम । नहियुद्धंप्रशंसन्ति सर्वावस्थमरिन्दम ॥ २ ॥ अलमर्द्धंपृथिव्यास्ते सहामात्यस्यजीवितुम् । प्रयच्छपाण्डुपुत्राणां यथोचितमरिन्दम ॥ ३ ॥ एतद्धिकुरवः सर्वे मन्यन्तेधर्मसंहितम् । यत्वंप्रशा

सीधा न समझें अर्जुन तुमलोगों को मारडालेगा इस से युधिष्ठिरको राज्य देकर पांडवों से अपने लिये कुछ मांगलो । ६० । इस पृथ्वी पर अर्जुनकी समान दूसरा वीर नहीं है इस को सब संसार जानता है देवताओं ने अर्जुन को रथ, शस्त्र और भूषण दिये हैं इसलिये वह मनुष्यों से अजेय है युद्धकरने की इच्छा न करें ६२ ॥

अध्याय ५८ ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि बड़े आश्चर्यकी बात है कि क्षत्र तेजस्वी कुमारवस्थाही से ब्रह्मचारी युधिष्ठिरजीसे ये मन्द युद्धकिया चाहते हैं हम कहतेही जाते हैं पर कुछभी नहीं मानते । १ । हे दुर्योधन भरतसत्तम, युद्धकरने से निवृत्त रहो, सब अवस्था में युद्धकी प्रशंसा वीरलोग नहीं करते । २ । अमात्यादि सहित तुम्हारी जीविका के लिये आधी पृथ्वी बहुत है, इस से पाण्डु के पुत्रोंको यथोचित आधी पृथ्वी देदो । ३ । इसबातको

Tell them that there is no warrior like Arjun on the face of the earth and all the world knows it. Arjun has received chariots, weapons and jewels from gods and therefore he is unconquerable by them in war." 62.

CHAPTER LVIII

"It is very strange," said Dhritrashtra, "that these fools wish to fight against Yudhishthir the brave, glorious and observant of celibacy from boyhood and give no ear to my repeated warnings. Duryodhan the best of the Bharat race ! give up the idea of war; the brave donot recommend war at all times. Half the land is enough for your maintenance as well as that of your ministers; you must

निबन्धेयाः पाण्डुपुत्रैर्महात्माभिः ॥ ४ ॥ अहमांसमवेक्षस्व पुत्रस्वायेमवाहिनीम्। जातएवतवाभाव स्त्वंतुमोहान्नबुध्यसे ॥ ५ ॥ नत्वहंयुद्धमिच्छामि नैतदिच्छतिबाह्लिकः। नचभीष्मोनचद्रोणो नाश्वत्थामानसञ्जयः ॥ ६ ॥ नसोमदत्तोनशल्यो नकृपो युद्धमिच्छति। सत्यव्रतः पुरुमित्रोजयोभूरिश्रवास्तथा ॥७॥ येपुसम्तातिविष्ठेयुः कुरवः पीडितापरैः। तेयुद्धनाभिनन्दन्ति तत्तुभ्यंतातरोचताम् ॥८॥ नत्वंकरोपिकामेन कर्णः कारयितातव। दुःशासनश्चपापात्मा शकुनिश्चापिसौबलः ॥ ९ ॥ दुर्य्योधन उवाच। नाहंभवतिनद्रोणे नाश्वत्थाम्नि नसंजये। नभीष्मेनचकाम्बोजेन कृपेनचबाह्लिके ॥ १० ॥ सत्यव्रतेपुरुमित्रे भूरिश्रवसिवापुनः। अन्येषुवातावकेषु भारंकृत्वासमाह्व-

---

कुरुवंशी भयेयुक्त मानेंगे जब तुम महात्मा पाण्डुपुत्रों से शान्ति मानोगे। ४। हे प्रियपुत्र अपनी इस सेनाकी ओरसे देखो, तुम्हारा अभावहोगया पर अज्ञान के मारे तुम नहीं समझते। ५। हम युद्धकरना नहीं चाहते, न बाह्लिकराज चाहते हैं, न भीष्म चाहते, न द्रोणाचार्य, न अश्वत्थामा न संजय। ६। न सोमदत्त, न शल्य, न कृपाचार्य युद्धचाहते, सत्यव्रत, पुरुमित्र, भूरिश्रवा व जयद्रथभी युद्ध नहीं चाहते। ७। जो कुरुवंशी पांडवोंकी ओरसे मन से हारगये हैं वे सब युद्धकरनेकी इच्छा नहीं करते फिर तुम अकेले क्या करोगे प्राणप्रिय जो बात हम सबको रुचती है वही तुमकोभी रुचै युद्ध न करो सो हम जानतेहैं कि तुमभी अपनी इच्छा से युद्धकरना नहीं चाहते किंतु तुमकोतो कर्ण युद्धकरनेपर बलात्करकराता है व दुष्टत्मा दुश्शासन तथा सुबलका पुत्र दुष्ट शकुनि। ९। इतनासुन दुर्योधन महामानी बोले कि न हम आप के ऊपर भाररख पांडवों को युद्धकरने के लिये बुलातेहैं न द्रोणाचार्य के ऊपर, न अश्वत्थामाके संजय के, न भीष्मके न कांबोज

---

give the other moity to the sons of Pandu. All the Kauravas will say that you have acted rightly, if you will make peace with the Pandavas Look at your army, my dear son; you donot become wise even at last moment. I have no desire to make war, nor do the king of Balkh, Bhishm, Dronacharya, Ashwathama, Sanjaya, Somdatta, Shalya, Kripacharya, Satybrat, Purumitra, Bhurishrava or Jayadrath Those of the Kauravas who are afraid of the Pandavas donot wish to fight with them. What will you do alone? Abstain from fighting, my dear son, and let you do so as well as wicked Dushasan and Shakuni the son of Suval." On hearing this, Duryodhan said proudly, "I donot lay the burden of the war with the Pandavas on you nor on Dronacharya, Ashwathama, Sanjaya, Bhishm, the kings of Comboj and Valhik, Kripacharya, Satyavrat, Purumitra

यम् ॥ ११ ॥ अहञ्चतातकर्णश्च रणयज्ञंवितत्यवै । युधिष्ठिरंपशुंकृत्वादीक्षितौभरत र्षभ ॥ १२ ॥ रथोवेदीस्रुवःखड्गो गदास्रुक्कवचंसदः । चातुर्होत्रञ्चधुर्यौमे शरादर्भाहविर्यशः ॥ १३ ॥ आत्मयज्ञेननृपते इष्ट्वावैवस्वतंरणे । विजित्यचसमे ष्यावो हतामित्रौश्रियावृतौ ॥ १४ ॥ अहञ्चतातकर्णश्च भ्रातादुःशासनश्चमे । एतेवयं हनिष्यामः पाण्डवान्समरेत्रयः ॥ १५ ॥ अहंहिपाण्डवानहत्वा मशास्तापृथिवीमिमा म् । मांवाहत्वापाण्डुपुत्रा भोक्तारः पृथिवीमिमाम् ॥ १६ ॥ त्यक्तमेजीवितंराज्यं धनंसर्वञ्चपार्थिव । नजातुपाण्डवैः सार्द्धंवसेयमहमच्युत ॥ १७ ॥ यावद्धिसूच्यास्तीक्ष्णाया विध्येदग्रेणमारिष । तावदप्यपरित्याज्यं भूमेर्नःपांडवान्प्रति ॥ १८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । सर्वान्वस्तातशोचामि त्यक्तोदुर्योधनोमया । येमन्दमनुयास्यध्वं यान्तंवैव

देशके राजाके न बाह्लिक के, न कृपाचार्य के, न सत्यव्रतके न पुरुमित्रके न भूरिश्रवाके न औरही किसी तुम्हारे सम्बन्धी के ऊपर । ११ । किन्तु हम व कर्ण दोनोंजने रणयज्ञ फैलाय व युधिष्ठिर को उस यज्ञका पशुकर, दोनोंजने दीक्षित होंगे। १२ । रथकोतो वेदी बनावेंगे व खड्गको स्रुव, गदाको स्रुक् कवचको सभा व चारों घोड़ों में चातुर्होत्र करेंगे, बाणोंको कुशवनावेंगे, व यश को हव्य । १३ । इसप्रकार आत्मयज्ञ से संग्राम में यमराजजीकी पूजाकर शत्रुओंको जीत बैरीहीनहो शोभित होंगे । १४ । हम व कर्ण व हमारे भाई दुश्शा सन बस यही तीनोंजने समरमें पांडवोंको मारडारेंगे और किसीकी कुछ आवश्यकता नहीं है । १५ । यातो हमीं पांडवोंको मार इसपूरी पृथ्वीका राज्यकरेंगे या पांडवही हमको मार पूरी धरणीका राज्यकरेंगे।१६। हे राजन् हमने अपने प्राण, राज्य व धन सब छोड़ा परन्तु पांडवोंके संग हम कभी न बसेंगे । १७ । जितनीबड़ी तीक्ष्ण सुईकी नोक होती है उतनीभी पृथ्वी हम पाण्डवोंको नहीं देसक्ते फिर आधेराज्यको कौन कहे । १८ । यह सुन फिर धृतराष्ट्रजी बोले, हे प्राणप्रियो हमने इस दुर्योधनको आजसे छोड़ा यह मूर्ख

Bhurishrava or any relation of yours. 10. Both Karan and myself will perform the war-sacrifice with Yudhisthir as its victim. We shall make altars of our chariots and sacrificial ladles of our swords and maces and having made the armour a place for the public meeting we shall perform the sacrifice all the day long. We shall make sacred grass of our arrows and pouring libations of our glory we shall please Yamraj by an offering of human victims. Thus, having sacrificed all our enemies and done away with enmity, we shal attain to greater glory. Karan, myself and my brother Dushasan are enough to kill the Pandavas in battle. Either we shall kill them and rule over the whole land, or they will kill us and will be masters of the country. I can give up my life, my kingdom and my wealth, but I will never live with the Pandavas. I cannot give the

स्वतक्षयम् ॥ १९ ॥ रुरूणामिवयूथेषु व्याघ्राःप्रहरतांवराः । वरानवरान् हनिष्यन्ति समेतायुधिपांडवाः ॥२०॥ मतीपमिव मेभाति युयुधानेनभारती । व्यस्तासीमन्तिनि ग्रस्ता ममृष्टादीर्घवाहुना ॥ २१ ॥ सम्पूर्णपूरयनभूयो वलंपार्थस्यमाधवः । शैनेयः समरेस्थाता वीजवत्प्रवपनशरान ॥ २२ ॥ सेनामुखेमयुद्धानां भीमसेनोभविष्यति । तंसर्वे संश्रयिष्यन्ति प्राकारमकुतोभयम् ॥ २३ ॥ यदाद्रक्ष्यसिभीमेन कुंजरान विनिपातितान् । विशीर्णदन्तानगिर्याभान भिन्नकुम्भान्सशोणितान् ॥ २४ ॥ तानभिप्रेक्ष्यसंग्रामे विशीर्णानिवपर्वतान । भीतोभीमस्यसंस्पर्शात् स्मर्तासिवचनस्य मे २५ निर्दग्धं भीमसेनेन सैन्यंरथहत द्विपम् । गतिमग्नेरिवप्रेक्ष्य स्मर्तासिवचनस्यमे २६॥ महद्वोभयमागामि नचेच्छाम्यथपांडवैः । गदयाभीमसेनेन हताःद्दामद्युपैष्यथ २७ ॥

यमपुरको जाता है इसके पीछे जाते हुये आपलोगोंको हम सोचतेहैं । १९ । कुरुवंशियों के यूथों में जो श्रेष्ठ २ हैं उनको शूरवीर पाण्डवलोग ढूँढ़ २ मारेंगे जैसे व्याघ्र पशुओं को मारताहै । २० । हमको अब यह दुःख जान पड़ताहै कि कुरुवंशियों की स्त्रीरूप यह सेना सात्यकि वीरके बाहुओं के बीच में लपटेगी । २१ । व मधुवंश में उत्पन्न शिनिवीर के नाती सात्यकि वीर सब धन पांडवों के अर्थ इकट्ठा करतेहुये बाणोंकी धारका बीज समरभूमि में बोवेंगे । २२ । वहां सेना के मुखिया भीमसेनजी होंगे उनके संश्रित बाकी होंगे । २३ । अभी क्या जब भीमसेन के मारेहुये दांतटूटे शिरफटे पैरकटे सब अंगकटे हाथी देखोगे । २४ । व पर्व्वताकार उनको भीमसे सर्वांग विशीर्ण देखोगे व स्पर्श करोगे हे तात तब हमारे वचनोंका स्मरण करोगे । २५ । जब घोड़े हाथी रथ पैदल सहित सेना भीमसेनसे मारीगई देखोगे तब हमारे वचनोंका स्मरण करोगे । २६ । कदाचित् तुम

Pandavas as much land as the point of a needle, nothing to say of half the kingdom." On hearing this, Dhritrashtra said, "I give up Duryodhan from today; the fool wishes to go to the region of Yam and I pity those who would follow him. The Pandavas will search out and kill the bravest of the Kauravas as a lion destroys other beasts 20. I am sorry to say that the Kaurava army will, like a woman, embrace brave Satyaki. Born in the family of Madhu, Satyaki the grandson of brave Shini, will sow the seeds of arrows in the field of battle to gather all the wealth for the Pandavas. The other army will be led and protected by Bhimsen and you will see the elephants of our army cut and killed, teeth broken, heads split open, feet and all the limbs cut asunder. You will see and feel the mountain like elephants with all the parts of their bodies shattered and will then remember my words. You will recollect my words when you will see all the horses, elephants and chariots and foot

महावनमिवच्छिन्नं यदाद्रक्षसिपातितम् । बलंकुरूणांभीमेन तदास्मर्त्तासिमेवचः २८ वैशम्पायन उवाच ॥ एतावदुक्त्वाराजातु सर्वास्तान्पृथिवीपतीन् । अनुभाष्यमहाराज पुनःपप्रच्छसंजय ॥ २९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये
अष्टपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

धृतराष्ट्र उवाच ॥ यदब्रूतांमहात्मानौ वासुदेवधनञ्जयौ । तन्मेब्रूहिमहाप्राज्ञ शुश्रूषेवचनंतव ॥ १ ॥ संजय उवाच ॥ शृणुराजनयथादृष्टौ मयाकृष्णधनञ्जयौ । ऊचतुश्चापियद्वीरौ तत्तेवक्ष्यामिभारत ॥ २ ॥ पादांगुलीरभिप्रेक्षन् प्रयतोऽहंकृताञ्जलिः । शुद्धान्तंप्राविशंराजन् नाख्यातुंनरदेवयोः ॥ ३ ॥ नैवाभिमन्युर्नयमौ तंदे

लोगों ने पांडवों से मिलाप न कर लिया तो तुम लोगों को बड़ी भारी भय आगई इसमें कुछभी सन्देह नहीं भीमसेनकी गदासे जब मारेजाओगे तब आप शान्तहोजाओगे अभी हमारे कहनेही से शान्तहोजाओ । २७ । जब कुरुवंशियोंकी सैन्य महावन के समान भीमसेनकी गदासे छिन्न भिन्न देखोगे तब हमारे वचनोंका स्मरणकरोगे । २८ । इसप्रकार दुर्योधनादि सब राजाओंसे कह राजा धृतराष्ट्र फिर संजयजी से बोले ॥ २९ ॥

अध्याय ॥ ५९ ॥

धृतराष्ट्रजीबोले कि हे महाप्राज्ञ महात्मा वासुदेव व अर्जुनजी ने जो वचन कहेहों वे हमसे कहिये हम तुम्हारे वचन सुना चाहते हैं । १ । संजयबोले कि हे राजन् सुनिये जिसप्रकार हमने अर्जुन व कृष्णचन्द्रजी को देखा है व उनवीरों ने जैसा कहाहै वह तुम से कहतेहैं । २ । हम चरणकी अंगुलियां देखते हाथ जोड़े, कृष्णचन्द्र व अर्जुन से आप का सन्देश कहने के लिये एकदिन जनाने मकान के भीतरगये । ३ । जहां कि न अभि-

soldiers of your army destroyed by Bhimsen. You will be overtaken by a great calamity, if you will not make peace with the Pandavas. You will no doubt become cool on receiving blows from the mace of Bhimsen; but it is better to become so now. You will remember my words when you see the Kaurava army broken down and fallen like a great forest by the mace of Bhimsen." Having thus said to Duryodhan and the others, king, Dhritrashtra addressed Sanjaya as follows. 29.

CHAPTER LIX

"Tell me, man," said Dhritrashtra, "the words of Vasudev and Arjun." "Hear king," replied Sanjaya, "I shall tell you how I saw Krishna and Arjun as well as the words of those brave men. Looking at the toes of my feet and with clasped hands, one day I went to render your message to Shree Krishn and Arjun and entered the

शुभमभियातिवै । यत्रकृष्णौचकृष्णाच सत्यभामाचभामिनी ॥ ४ ॥ उभौमध्वासव क्षीबा चुचौचन्दनरूषितौ । स्रग्विणौवरवस्त्रौतौ दिव्याभरणभूषितौ ॥ ५ ॥ नैक रत्न विचित्रन्तु कांचनमहदासनम् । विविधास्तरणाकीर्णं यत्रासातामरिन्दमौ ॥ ६ ॥ अर्जुनोत्संगगौपादौकेशवस्योपलक्षये । अर्जुनस्यचकृष्णायां सत्यायांचमहात्मनः ॥ ७ ॥ कांचनंपादपीठन्तु पार्थोमेमादिशत्तदा । तदहंपाणिनास्पृष्ट्वा ततोभूमावुपाविशम् ॥ ८ ॥ ऊर्ध्वरेखातलौपादौ पार्थस्यशुभलक्षणौ । पादपीठादपहृतौ तत्रापश्यमहंशुभौ ॥ ९ ॥ श्यामौबृहन्तौतरुणौ शालस्कन्धाविवोद्गतौ । एकासनगतौदृष्ट्वा भयंमांमहदाविशत् ॥ १० ॥ इन्द्रविष्णुसमावेतौ मन्दात्मानावबुध्यते । संश्रयाद्द्रोणभीष्माभ्यां कर्ण

मन्यु कभीजाते थे न नकुल न सहदेव, केवल कृष्णचन्द्र व अर्जुन व सत्यभामा द्रौपदी चारही जने रहते थे । ४ । दोनों जने मधुपान किये उन्मत्त व दोनों चन्दनलगाये, फूलों की माला पहने सुन्दर वस्त्र ओढ़े पहने दिव्य भूषण धारण कियेथे । ५ । जिसमें चित्र विचित्र हजारों रत्न जड़े थे ऐसे सुन्दर बड़ेभारी आसनपर दोनों महात्मा बैठेथे उसपर बिछवनाभी नाना प्रकार का चित्रविचित्रही बिछा था कि जिसका वर्णन नहीं होसका । ६ । वहां हमने देखा कि अर्जुनकी गोदपरतौ कृष्णचन्द्रजी दोनोंचरण धरेथे, व अर्जुन एकचरण द्रौपदी की गोदमें दूसरा सत्यभामाजीकी गोदमें धरेथे । ७ । तब अर्जुन ने हमको बैठने के लिये सुवर्णकी एकचौकी दी परन्तु हम उसे हाथसे छूकर भूमि पर बैठगये उसपर नहीं बैठे ।८। उससमय चौकीपर से ऊर्ध्वरेखासहित शुभ लक्षण युक्त अर्जुनजी के दोनों चरण हमने देखे । ९ । व श्याम स्वरूप बड़े लम्बे तरुण अवस्थाको प्राप्त, सांखूके वृक्षके समान स्कन्धवाले एक आसन पर बैठेहुये कृष्णचन्द्रजी व अर्जुन जी को देख हमको बड़ाभय हुई । १० । सो इन्द्र व विष्णुके समान अर्जुन कृष्णचन्द्रजी

female apartment where neither Abhimanyu nor Nakul nor Sahadev could go and where only Krishn, Arjun, Satyabhama and Draupadi lived. Both were intoxicated with wine; their bodies were decked with paste of Sandal wood, garlands of flowers, fine clothes, divine ornaments studded with precious stones and both were sitting on a large seat spread over with a beautiful carpet which I cannot describe. Both the feet of Krishna were on the lap of Arjun, while Satyabhama and Draupadi had each of them a foot of Arjun in her lap. Arjun gave me a golden seat to sit on; but I simply touch it with my hand and sat on the ground floor. I saw from the dais both the feet of Arjun bearing auspicious lines. I was much afraid to see dark-coloured, tall, youthful and broad-shouldered Krishna sitting beside Arjun .10. Being proud of the strength of Bhishm and Dronacharya and the bragging of Karan, foolish Duryodhan does not know the

स्यच विकत्थनात् ॥ ११ ॥ निदेशस्थाविमौयस्य मानसस्तस्यसेत्स्यते । संकल्पो धर्मराजस्य निश्चयो मे तदाभवत् ॥ १२ ॥ सत्कृतश्चान्नपानाभ्यामासीनोलब्धसत्क्रियः । अञ्जलिंमूर्ध्नि सन्धाय तौसन्देशमचोदयम् ॥ १३ ॥ धनुर्गुणकिणांकेन पाणिनाशुभलक्षणम् । पादमानमयन्पार्थः केशवंसमचोदयत् ॥ १४ ॥ इन्द्रकेतुरिवोत्थाय सर्वाभरणभूषितः । इन्द्रवीर्योपमःकृष्णः संविष्टोमाभ्यभाषत ॥ १५ ॥ वाचंसवदतांश्रेष्ठो ह्लादिनींवचनक्षमाम् । त्रासिनींधार्तराष्ट्राणांमृदुपूर्वांसुदारुणाम् ॥१६॥ वाचंतांवचनार्हस्य शिक्षाक्षरसमन्विताम् । अश्रौषमहमिष्टार्थां पश्चाद्धृदयदारिणीम् ॥ १७ ॥ वासुदेव उवाच ॥ संजयेदंवचोब्रूया धृतराष्ट्रंमनीषिणम् । कुरु

को भीष्म व द्रोणाचार्य के बल से व कर्णके बकने से मन्दात्मा दुर्योधन नहीं समझते । ११ । हमकोतो तभी निश्चय होगया कि जिन युधिष्ठिरजी के ऐसे ये दोनों आज्ञाकारी हैं उन के मनका संकल्प सिद्धहोगा इसमें कुछभी अंतर नहीं । १२ । इस तरह जब अन्नपानादि से हमारा सत्कार हुआ व अच्छी तरह बैठेतो हमने दोनों से आपका संदेश हाथजोड शिरपरधर कहा । १३ । तब धनुषकी प्रत्यंचा के दाग बनेहुये हाथसे कृष्णचन्द्रजी का शुभलक्षण चरणारविंद छूकर अर्जुनजी ने प्रेरणाकी कि आप संजय को उत्तर दीजिये । १४ । तब इन्द्रध्वज के समान उठकर सर्व भूषण भूषित श्रीकृष्णचन्द्रजी कि जिनका विक्रम इन्द्रकेभी विक्रम से अधिक है बैठकर हमसे बोले । १५ । यह वचन यद्यपि उन्होंने बड़ी नम्रतासे व मन्द २ मुसुकाकर कहा पर ऐसा दारुण था कि सुनतेही सुनते आपकी ओर वालोंको भय उत्पन्न होजाये । १६ । वह शिक्षा अक्षर युक्त वचन हमने सुना पहले तो जानपड़ा कि बहुतही मीठा है पर पीछे से कलेजा धड़क उठा । १७ । वासुदेवजी ने कहा कि, हे संजय यह हमारा वचन धृतराष्ट्रजी व कुरुवंशि-

---

greatness of Krishna and Arjun who are like Vishnu and Indra. I had no doubt in my mind that the desires of Yudhishthir who had those two great men at his command could not but be accomplished. When I had thus been hospitably received and rendered your message, Arjun with his hands bearing the scars of bowstring touch the auspicious feet of Shree Krishna and requested him to give me a reply. Thereupon, rising like Indra's banner, Shree Krishna who was decked with ornaments and whose prowess i greater than that of Indra, sat down and spoke to me. His words, though spoken very gently and with slow smile, were terrible enough to excite terror in the minds of your partisans. I heard those instructive words; they fell very sweet on my ear at first, but subsequently shook my heart. He said, "Repeat my words in the presence of Dhritrashtra and the chiefs among the Kauravas, Bhishma and Dronacharya!

मुख्यस्य भीष्मस्य द्रोणस्यापिच मृण्वतः ॥ १८ ॥ आवयोर्वचनात्सूत ज्येष्ठानप्यभिवादयन । यवीयसश्चकुशलं पश्चात्पृष्ट्वैवमुत्तरम् ॥ १९ ॥ यजध्वं विविधैर्यज्ञैर्विप्रेभ्योदत्तदक्षिणाः । पुत्रैर्दारैश्चमोदध्वं महद्वोभयमागतम् ॥ २० ॥ अर्थांस्त्यजतपात्रेभ्यः सुतान्प्राप्नुतकामजान् । प्रियं प्रियेभ्यश्चरत राजाह्यत्वरतेजये ॥ २१ ॥ ऋणमेतत्प्रवृद्धंमे हृदयान्नापसर्पति । यद्गोविन्देतिचुक्रोश कृष्णामांदूरवासिनम् ॥ २२ ॥ तेजोमयंदुराधर्षं गाण्डीवंयस्यकार्मुकम् । मद् द्वितीयेनतेनेह वैरंवःसव्यसाचिना २३ मद्द्वितीयंपुनःपार्थं कःप्रार्थयितुमिच्छति । योनकालपरीतोवाप्यपि साक्षात्पुरन्दरः ॥ २४ ॥ बाहुभ्यामुद्वहेद्भूमिं दहेत्क्रुद्धइमाः प्रजाः । पातयेत्त्रिदिवाद्देवान् योऽर्जुनं

योंमें मुख्य भीष्मजी तथा द्रोणाचार्य के आगे सब से कहना । १८ । व हम दोनों की ओर से ज्येष्ठलोगों से प्रणाम कह व छोटोंकी कुशल पूंछकर पीछे उत्तर देना ।१९। वह यह है कि आपलोग विविध प्रकार के यज्ञ करें व ब्राह्मणोंको बड़ी दक्षिणायें व की पुत्रादिकों के संग आनन्दकी बातें करलें क्योंकि अब बड़ी भारी भय तुमलोगों के ऊपर आगई है । २० । सुपात्रों को खूब धनदो, व अपने प्रियपुत्रों से मिलो भेंटो, इष्टमित्रों का प्रियकरो क्योंकि महाराज युधिष्ठिर अब तुम लोगों को पराजितकर अपनी जयके विषयमें बड़ी शीघ्रता कररहे हैं । २१ । व दुश्शासनने जब द्रौपदी का वस्त्र राजसमाज में खींचाथा तब उन्होंने जो गोविंदे ऐसा कहकर हमको पुकाराथा वह ऋण उनका हमको केवल वस्त्र बढ़ा देनेसेही नहीं छोड़ता किंतु जब सब कौरवों का नाश करदेंगे तब छोड़ेगा अभी तो उसका व्याज बढ़ताही जाता है । २२ । इस बातका स्मरण करते रहो कि जिन अर्जुनजी के गांडीवधन्वा है व हम सारथी का कर्म करतेहुये सहायक हैं उनके साथ तुमलोगों का दारुण वैरहै । २३ । इस से जिसको काल ने न घेराहो चाहे इन्द्र भी हों तो ऐसा कौन है जो हमको दूसरा पाय अर्जुन के सामने रणमें खड़ाहो । २४ । क्योंकि जो अर्जुन को समर में जीते वहतो बाहोंसे भूमि उठाले, व क्रोधसे

convey my respect to the elders and inquire about the health of the younger ones before repeating my words. Tell them that they must perform different sacrifices with large donations to Brahmans. They must enjoy the society of their wives and sons, for a grat calamity in to besot them. 20. They must give as much they can to the needy, should mix with their dear sons and do good to their friends; for king Yudhishthir will soon defeat them in battle. Dushasan dragged the cloth of Draupadi in the royal court and she called on me as Goviod for help. Her debt is not satisfied by merely enlarging her dress and must remember that they have made mortal enemies of Arjun the possessor of the Gandiv bow and of me who will help him as a driver of his chariot. None but he who is attracted by

समेरजयेत् ॥ २५ ॥ देवासुरमनुष्येषु यक्षगन्धर्वभोगिषु । नतंपश्याम्यहंयुद्धे पाण्डवं योभ्ययाद्रणे ॥२६॥ यच्चद्विराटनगरे श्रूयतेमहदद्भुतम् । एकस्यचबहूनाञ्च पर्याप्तं तन्निदर्शनम् ॥ २७ ॥ एकेनपाण्डुपुत्रेण विराटनगरेयदा । भग्नाः पलायतदिशः पर्याप्तंतन्निदर्शनम् ॥२८॥ बलंवीर्य्यञ्चतेजश्च शीघ्रतालघुहस्तता । अविषादश्चधैर्यं च पार्थान्नान्यत्रविद्यते ॥ २९ ॥ इत्यब्रवीद्धृषीकेशः पार्थमुद्धर्षयनगिरा । गर्ज्जन समयवर्षीव गगनेपाकशासनः ॥ ३० ॥ केशवस्यवचः श्रुत्वा किरीटीश्वेतवाहनः । अर्जुनस्तन्महद्वाक्य मब्रवीद्रोमहर्षणम् ॥ ३१ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि सञ्जयेन श्रीकृष्णवाक्यकथने एकोनषष्टितमोऽध्यायः ॥ ५९ ॥

इस सब प्रजाको भस्म करडाले, देवताओं को स्वर्ग से गिरावे । २५ । व देवता दैत्य मनुष्य यक्ष गन्धर्व नागों में हम उसे नहीं देखते जो रणमें अर्जुन के सन्मुख खड़ाहो । २६ । जो कि विराट नगरकी बातसुनी जाती है कि एकओर एक व एक ओर बहुत से वह बड़ी अद्भुत है व इस विषयमें दृष्टान्त है । २७ । जब कि विराट नगरमें एक ही अर्जुनके मारे तुम सबलोग भागखड़े हुये खड़े हो न सके व इस विषय का वह पूरा दृष्टान्त है दूसरे की आवश्यकता नहीं । २८ । इस से विदित है कि बल, वीर्य, तेज, शीघ्रता, शीघ्र हाथ चलाना, अविषाद व धैर्य अर्जुन से अन्यत्र नहीं है । २९ । महान मेघकी समान समय पर गरजते वर्षते मेघकी समान हरिने अर्जुनका अत्यंत मान बढ़ादिया । ३० । केशव के यह वचन सुनकर अर्जुन ने जो वचन हम से कहे उन के सुनने से रोम खड़े होते हैं ३१ ॥

---

though he be Indra himself, will face in battle Arjun assisted by myself. For he who can defeat Arjun, should be able to uplift the earth from its place, to burn down all the living beings with his anger and to expel the gods from paradise. I see none of the gods, Daityas, men, Yakshes, Gandharvas or Nagas who can face Arjun in battle. We hear that at the city of Virat he stood against many and this fact may be cited as an example. The fact that all the Kauravas were defeated by Arjun alone at Virat, needs no second trial It is therefore clear that Arjun is superior to them in strength, power, glory, dexterity, skill, want of dulness and patience." Thundering like raining cloud of the rainy season, Hari thus increased Arjun's conceit and on hearing the words of Krishn, Arjun said some words at the hearing of which my hair stood on end." 31

वैशम्पायन उवाच ॥ सञ्जयस्यवचःश्रुत्वा प्रज्ञाचक्षुर्जनेश्वरः। ततःसंख्यातुमा रेभे तद्वचोगुणदोषतः ॥ १ ॥ प्रसंख्यायचसौक्ष्म्येण गुणदोषान् विचक्षणः। यथाव न्मातितत्त्वेन जयकामः सुतानप्रति ॥ २ ॥ बलाबलंविनिश्चित्य याथातथ्येनबुद्धिमान् शक्तिंसंख्यातुमारेभे तदावैमनुजाधिपः ॥ ३ ॥ देवमानुषयोः शक्त्या तेजसाचैवपा ण्डवान्। कुरूनशक्ततरान्मत्वा दुर्योधनमथाब्रवीत् ॥ ४ ॥ दुर्योधनेयंचिन्तामे श श्वन्नव्युपशाम्यति। सत्यंह्येतदहंमन्येप्रत्यक्षंनानुमानतः ॥ ५ ॥ आत्मजेषुपरंस्नेहं सर्व भूतानिकुर्वते। प्रियाणिचैषांकुर्वन्ति यथाशक्तिहितानिच ॥ ६ ॥ एवमेवोपकर्तृणां प्रा यशोलक्षयामहे। इच्छन्तिबहुलंसन्तः प्रतिकर्तुमहत्प्रियम् ॥ ७ ॥ अग्निः साचिव्य कर्तास्यात् खाण्डवेतत्कृतंस्मरन्। अर्जुनस्यापिभीमेऽस्मिन् कुरुपाण्डुसमागमे ॥ ८ ॥

अध्याय ६० ॥

वैशम्पायन ने कहा कि संजय के ऐसे वचन सुन राजा धृतराष्ट्रजी पार्थों के गुण व अपनी ओरके दोष विचारने लगे। १। जब सूक्ष्मता से गुण दोष विचारलिये तो भी पुत्रों की जयकी इच्छासे बहुतसी बातें सोचीं।२। व यथातथ्य बलाबल जान महा- बुद्धिमान् धृतराष्ट्रजी पांडवोंकी शक्ति बतानेलगे। ३। उनमें पांडवोंको तो देवता मनुष्य दोनोंकी शक्ति से व तेजसे अधिक समझ व कौरवोंको अल्प शक्तिमान् दुर्योधन से कहनेलगे। ४। हे दुर्योधन यह चिंता हमको निरंतर बनी रहती है कभी मिटताही नहीं तुमसे सत्यही कहते हैं कुछ अनुमान से नहीं कहते। ५। देखो अपने पुत्रों में सब प्राणी परम स्नेह करते हैं, व यथाशक्ति उनका प्रियहितभी करतेही रहते हैं। ६। यहरीति सब उपकार करनेवालों की है कि अपने प्रिय पुत्रादिकों का उपकार करतेही हैं, व इसी से सब सज्जनलोग प्रत्युपकार करनेकी भी इच्छा करते हैं। ७। इस से जब कौरवों पांडवोंका संग्राम होने लगेगातो अग्नि अवश्य अर्जुनका उपकारक प्रत्युपकार

CHAPTER LX

Vaishampayan says that having heard the above, king Dhritrashtra began to think of the virtues of the Pandavas and the failings of his own party and when he had done so, he thought of many plans for the victory of his sons. Having fully pondered on the power and weakness of both sides, Dhritrashtra the wise began to speak of the strength of the Pandavas. Thinking the strength of the Pandavas to be greater than that of men and gods and that of the Kauravas to be much less, he thus addressed Diryodhan, "I am always beset with sorrow and am never free from anxiety, Duryodhan. All beings love their children and try their best to do them good. All philanthropists do good to their dear ones and it is for this reason that all good men wish to do good to others in return. Agni

जातिवृद्ध्याभिपन्नाश्च पाण्डवानामनेकशः । धर्मादयः समेष्यन्ति समाहूता दिवौकसः ॥ ९ ॥ भीष्मद्रोणकृपादीनां भयादशनिसन्निभम् । रिरक्षिषन्तः संरम्भं गमिष्यन्तीति मे मतिः ॥ १० ॥ ते देवैः सहिताः पार्था न शक्याः प्रतिवीक्षितुम् । मानुषेण नरव्याघ्रा वीर्यवन्तोऽस्त्रपारगाः ॥ ११ ॥ दुरासदं यस्य दिव्यं गाण्डीवं धनुरुत्तमम् । वारुणौ चाक्षयौ दिव्यौ शरपूर्णौ महेषुधी ॥ १२ ॥ वानरश्च ध्वजो दिव्यो निःसङ्गो धूमवद्गतिः । रथश्च चतुरन्तायां यस्य नास्ति समः क्षितौ ॥ १३ ॥ महामेघनिभश्चापि निर्घोषः श्रूयते जनैः महाशनिसमः शब्दः शात्रवाणां भयंकरः ॥ १४ ॥ यश्चातिमानुषं वीर्यं कृत्स्नो लोको

करनेके लिये मंत्रीवेंगे क्योंकि अर्जुनने उनको खांडववन दे तृप्तकिया है वह उपकार प्रथम कर चुकेहैं । ८ । व अपनी जाति के लोभसे पांडवों के उपकारके लिये जब बुलाये आवेंगे तब धर्म, पवन, इन्द्र, अश्विनीकुमारभी अवश्य सहायता करेंगे क्योंकि पांडवादि उनके पुत्रही ठहरे । ९ । इससे भीष्म द्रोण कृपाचार्यादिकोंके भयसे पांडवोंकी रक्षा करने को युद्धमें ये लोग अवश्य आवेंगे यह हमारे विचारमें आता है । १० । फिर पहले पार्थ लोग अपनेआप वीर्यवान्हैं फिर अस्त्र शस्त्र हाथ में लिये उसपर धर्मादि देवताओं समेत होंगेतो उनको कोई देखभी न सकेगा कहनेको कौनकहै । ११ । जिस अर्जुनका अति दुःसह दिव्यतो गाण्डीवधन्वा है, व बाणोंसे सदापूर्ण अक्षय बड़ेभारी दोतरकसहैं । १२ । व दिव्यवानर हनुमान् रथकी ध्वजापरहैं, व तरकसकी गति धूमाकारहै जब उससे बाण निकलने लगते तो धुवांदेही हुये निकलते, व रथभी चारोंसमुद्र पर्यंत पृथ्वीभरमें उनके समान किसी का नहीं । १३ । जिसका शब्द महामेघ के गर्जन के समान सबको सुनाई देताहै, व शत्रुओंको भय कराने के लियेतो वज्रके शब्दसे भी अधिक है । १४ । व जिन

---

will surely requite the kindness of Arjun when war between the Kauravas and the Pandavas breaks out; for Arjun had formerly given Agni the forest of Khandav to burn. Dharm, Vayu, Indra and Ashwinikumars will also come to help the Pandavas their sons when they are called on to do so and I think they will surely free them from the fear arising out of Bhishm, Dronacharya and Kripacharya. 10. No one will be able to stand against the Pandavas in battle or even to look them in the face; for besides being powerful and possessing powerful weapons they will be assisted by Dharm and other gods. No one can defeat Arjun who possesses very powerful and divine bow Gandiv, the two inexhaustible quivers full of arrows, the divine Hanuman on the banner of his chariot, the smoke-like quiver which gives out arrows like smoke and the

ऽपवस्यति । देवानामपि जेतारं यं विदुःपार्थिवारणे ॥ १५ ॥ शतानिपञ्चचैवेषून् योमुक्तंनैवदृश्यते । निमेषान्तरमात्रेण मुञ्चन्दूरंश्चपातयन् ॥ १६ ॥ यमाहभीष्मोद्रोणश्च कृपोद्रौणिस्तथैवच । मद्रराजस्तथाशल्यो मध्यस्थायेचमानवाः ॥ १७ ॥ युद्धायावस्थितंपार्थं पार्थिवैरतिमानुषैः । अशक्यंरथशार्दूलं पराजेतुमरिन्दमम् ॥ १८ ॥ क्षिपत्येकेनवेगेन पञ्चबाणशतानियः । सदृशंबाहुवीर्येण कार्त्तवीर्यस्यपाण्डवम् १९ तमर्जुनंमहेष्वासं महेन्द्रोपेन्द्रविक्रमम् । निघ्नन्तमिवपश्यामि विमर्देऽस्मिन्महाहवे २०॥ इत्येवंचिन्तयन्कृत्स्नं अहोरात्राणिभारत । अनिद्रोनिःसुखश्चास्मि कुरूणांशमचिन्तया ॥ २१ ॥ क्षयोदयोऽयंसुमहान् कुरूणामत्युपस्थितः । अस्यचेत्कलहस्यान्तःशमा

को सबलोग वीर्यमें अतिमानुष समझते हैं, व राजालोग जिनको समरमें देवताओंको भी जीतलेनेवाला समझतेहैं । १५ । व जो पांचसौ बाण एकहीवार में तूणीर से निकाल चलादेते हैं चलाते कोई नहीं देखता जब लगनेवालोंको मार फिर लौटतेहैं तोबाणोंको सब कोई देखते हैं यह काम निमेषमात्रमें वे करते हैं, । १६ । व जिनको भीष्म द्रोणाचार्य कृपाचार्य अश्वत्थामा मद्रदेश के राजा शल्यजी व अन्य सब मध्य के लोगभी कहतेहैं कि देवताभी नहीं जीतसक्तेतो मनुष्यकी कौन गणनाहै इससे युद्धमें कोईभी अर्जुनको न जीत सकेगा । १८ । क्योंकि वे एकही हाथ से पांचसौ बाण बड़े वेग से चलातेहैं जैसे कि राजा सहस्रबाहु पांचसौ हाथोंसे चलाताथा ।१९। ऐसे अर्जुनको तो समरमें हम सबको मारतेही देखते हैं पर उनके मारनेवाले को नहीं देखते । २० । इसलिये हे तात हमको एक दिन निद्रा नहीं आती इसी सोचमें रहते हैं कौरवों और पांडवों का मेल होजायतो अच्छाहै

---

chariot which cannot be matched with any one elses' chariot up to the verge of the four seas, the sound of whose motion is like the roll of thunder and falls on the ears of enemies like that of vajra. Arjun whom every one thinks superhuman in strength, whom all the kings know to be the conquerer of gods, who at once discharges from his quiver five hundred arrows which are seen by no one until theif come back after killing the enemies quick as the twinkling of an eye and whom Bhishm, Dronacharya Kripacharya, Ashwathama, Shalya the king of Madra as well as other people believe to be uncoquerable by gods, can never be defeated by men; for he quickly discharges five hundred arrows with one hand as Sahasrabahu used to do with his five hundred. I see that Arjun will destroy all in battle and no one will be able to kill him. 20. I am day and night beset with this care and therefore am desirous of peace between the Kauravas

दन्योनविद्यते ॥ २२ ॥ धर्मोमेरोचतेनित्यं पार्थैस्तातन विग्रहः । कुरुभ्योहिसदा मन्ये पांडवानशक्तिमत्तरान ॥ २३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि धृतराष्ट्रविवेचने षष्ठितमोऽध्यायः ६० ॥

वैशम्पायन उवाच । पितुरेतद्वचःश्रुत्वा धार्त्तराष्ट्रोत्यमर्षणः । आधायविपुलं क्रोधं पुनरेवेदमब्रवीत् ॥१॥अशक्यादेवसचिवाःपार्थाःस्युरितिमन्यवान्। मन्यतेतद्भयं व्येतु भवतोराजसत्तम ॥ २ ॥ अकामद्वेषसंयोगाल्लोभाद् द्रोहाच्चभारत । उपेक्षयाच भावानां देवादेवत्वमाप्नुवन् ॥ ३ ॥ इतिद्वैपायनोव्यासो नारदश्चमहातपाः । जामदग्न्यश्चरामोनः कथामकथयत्पुरा ॥ ४ ॥ नैवमानुषवद्देवाः प्रवर्त्तन्तेकदाचन ।

। २१ । बिना मेल किये अन्तमें कौरवोंका महानक्षही दिखाई देताहै । २२ । इसलिये पार्थ इनसे मेल और बिगाड़ दोनों नहीं भावे क्योंकि कौरव गण पाण्डवों के अधिकार में हैं ॥ २३ ॥

अध्याय ॥ ६१ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि महाराज इसप्रकार पिताके बचन सुन असहनशील दुर्योधन महाक्रोधकर फिर यह बचन बोले कि । १ । हे राजसत्तम जो आप यह मानतेहैं कि देवता लोग पांडवों के मन्त्री व सहायकहैं इससे वे किसी के जीतनेके योग्य नहीं यह भय आपकी दूरहो।२। क्योंकि काम बैरके न करने से व लोभ द्रोहकी उपेक्षा करनेही से देवता लोग देवत्वको प्राप्तहुयेहैं । ३ । यह आगाही भगवान द्वैपायन व्यासजीने, महातपस्वी नारदजी ने व परशुरामजी ने हम से कहा है । ४ । देवतालोग मनुष्यों के समान काम

---

and Pandavas. Without peace all the Kaurava army will be destroyed. I like neither peace nor war with Arjun, because the Kaurav army is at the mercy of the Pandavas" 23.

CHAPTER LXI

Vaishampayan continued that heaving heard the above-mentioned words of Dhritrashtra rash Duryodhan spoke in anger as follows:— "You believe, best of kings, that the gods are advisors and helpers to the Pandavas and therefore they cannot be conquered by any one; but this fear of yours is unfounded. For gods have attained godhood by the absence of desires, enmity, greediness and quarrels and this I have already been told by Vyas, Narad and Parashuram. The

कामात् क्रोधात्तथा लोभाद् द्वेषाच्चभरतर्षभ ॥ ५ ॥ यदाह्यग्निश्चवायुश्च धर्मइन्द्रो
श्विनावपि । कामयोगात्प्रवर्तेरन्न पार्थोदुःखमाप्नुयुः ॥ ६ ॥ तस्मान्नभवताचिन्ता
कार्य्यैपास्यात्कथञ्चन । दैवेष्वपेक्षकाह्येते शश्वद्भावेषुभारत ॥ ७ ॥ अथचेत्काम
संयोगाद् द्वेषोलोभश्चलक्ष्यते । देवेषु दैवप्रामाण्यान्नैषां तद्विक्रमिष्यति ॥ ८ ॥ मयाभि
मन्त्रितः शश्वज्जातवेदाः प्रशाम्यति । दिधक्षुःसकलाँल्लोकान परिक्षिप्यसमन्ततः ॥९॥
यद्वापरमकंतेजो येनयुक्तादिवौकसः । ममाप्यनुपमंभूयो देवेभ्योविद्धिभारत ॥ १० ॥
विदीर्य्यमाणांवसुधां गिरीणांशिखराणिच । लोकस्यपश्यतोराजन् स्थापयाम्यभि-
मन्त्रणात् ॥ ११ ॥ चेतनाचेतनस्यास्य जङ्गमस्थावरस्यच । विनाशायसमुत्पन्नं महं-

---

क्रोध लोभ व द्वेषसे किसी के संग नहीं प्रवर्त्तितहोते । ५ । जो अग्नि, वायु, धर्म, इन्द्र
व अश्विनीकुमारभी कामादिमें लगजायँगतो वेभी वड़ा दुःख पावेंगे । ६ । इस से आप
इस विषयमें चिंता न करें देवतालोग शम दमादि देवकार्य्य करने में सदा उद्यत रहते
युद्धादि असुरों के कामहैं उनमें उनकी उपेक्षा रहती है वे पांडवोंकी सहायता कभी न करें
गे । ७ । व जो कामके संयोग से देवताओं में अपना प्रमाण छोड़ द्वेष व लोभ दिखाई
देगा तो उनका किया कुछहो भी न सकेगा क्योंकि उनकी मर्य्यादा से वाहर होजायगा
। ८ । हां देवबल हममें अलवत्ता है, इससे जो हमने बार २ अग्नि की पूजाकी है वह
अग्नि क्या शान्त होजायगा नहीं महतो तीनों लोकों का नाश करदेगा फिर पांडवोंकी
कौनगणना है । ९ । इससे जितना तेज श्रमादि देवोंमें है हममें उससे अधिक आप
समझिये । १० । क्योंकि हम जो मन्त्र पढ़ेंतो फटती हुई पृथ्वी व फटतेहुये पर्वतों के
शिखरभी यथावस्थित रक्खें फटने न पावें । ११ । व चैतन्य अचैतन्य चर अचर सब

---

gods donot indulge in desires, anger, greediness and enmity like human beings. Arjun, Vayu, Dharm, Indra and Ashwinikumars would themselves fall into greater troubles, if they were subject to desires and other passions. Be no longer anixous on this score; for the gods are always engaged in the godly work of peace and control of organs and never indulge in war which is the work of demons; they will therefore never help the Pandavas. Beside, if the gods leave their peaceful nature and engage in war, they will be able to accomplish nothing, because such work is beyond their bounds. But I am endowed with divine strength; for I have repeatedly poured libations into Agni who instead of being subdued will burn down the three world including the Pandavas. Believe me, I am endowed with

घोरंमहास्वनम् ॥ १२ ॥ अश्मवर्षञ्चवायुञ्च शमयामीहनित्यशः । जगतःपश्यतो भीक्ष्णं भूतानामनुकम्पया ॥ १३ ॥ स्तम्भितास्वप्सु गच्छन्तिमया रथपदातयः । देवासुराणां भावानामहमेकः प्रवर्तिता ॥ १४ ॥ अक्षौहिणीभिर्यान् देशानयामि कार्येण केनचित् । तत्राश्वामेप्रवर्त्तन्ते यत्रयत्राभिकामये ॥ १५ ॥ भयानकानि विषयेव्यालादीनि नसन्तिमे । मन्त्रगुप्तानिभूतानि नहिंसन्तिभयङ्कराः ॥ १६ ॥ निकामवर्षीपर्ज्जन्यो राजनविषयवासिनाम् । धर्मिष्ठाश्चप्रजाःसर्वा ईतयश्चनसन्तिमे ॥ १७ ॥ अश्विनावथवाय्वग्नी मरुद्भिःसहवृत्रहा । धर्मश्चैवमयाद्विष्टान् नोत्सहन्तेभिरक्षितुम् ॥ १८ ॥ यदिह्येतेसमर्थाः स्युर्मद्द्विषस्त्रातुमञ्जसा । नस्मत्रयोदशसमाःपार्था

जगत् के विनाश के लिये जो बड़ा घोरशब्दहो तो हम उसेभी शान्तकरदें । १२ । व पत्थरोंकी वर्षा प्रचण्ड पवन सब को हम शांत करसक्ते हैं, हमारे ये कार्य सब देखाही करें व हम प्राणियोंके ऊपर दयाकर ऐसा करी डालें । १३ । व हम मन्त्र से जल का स्तम्भन करदें तो उस के ऊपर रथ पैदर हाथी घोड़े आदि सब चलेजायँ इस से देवताओं के भाव शाम दमादि व असुरों के भाव वैर मायादि हम सब के प्रवर्त्तक हैं । १४ । व अक्षौहिणियों को संग ले जिन २ देशोंके जानेकी इच्छा हमकरें वहां २ बिना रोक टोक हमारेघोड़े मंत्र के प्रभावसे चलेजायँ । १५ । व हमारे विषय में भयानक सर्पादिभी कुछ नहीं करसक्ते क्योंकि जीतो मंत्रों से रक्षित रहते उनके आगे भयंकर लोग अपने आप नष्ट होजातेहैं । १६ । व हमारे राज्यमें जब हम चाहते हैं तभी वर्षा होती है, व हमारी सब प्रजाभी धर्मिष्ठ है व खेती के विघ्नकारक सातईतियां भी हमारे राज्यमें नहीं होतीं । १७ । व जिनके संग हम वैरकरें उनकी रक्षा अश्विनीकुमार पवन अग्नि व सब देवगण सहित इन्द्र धर्मराज कोईभी नहीं करसक्ते । १८ । जो ये अश्विनीकुमारादि हमारे शत्रुओंकी

---

greater glory and virtue than gods. For with my incantations I can keep the Earth and mountains from splitting and can subdue the great noise raised for the annihilation of the moveables and immoveables of the world. I can stop the fall of stones as well as the violent winds. I can do all this in the face of all. With my incantations I can stop the running water, so that chariots, foot soldiers, elephants and horses may pass over it. I have power over peace and war, the works of gods and demons. I can take the squadrons of my army wherever I like without any obstacle. The dreadful serpents can do me no harm; for dreadful beings die of themselves before those who have the power of incantations. Rains fall in our country at the proper time; our subjects too are virtuous and

दुःखमवाप्नुयुः ॥ १९ ॥ नैवदेवानगन्धर्वा नासुरानचराक्षसाः । शक्तास्त्रातुंममद्विष्टं सत्यमेतद्ब्रवीमिते ॥ २० ॥ यदभिध्याम्यहं शश्वच्छुभं वायदिवाशुभम् । नैतद्विपन्नपूर्वं मेमित्रेष्वरिपुचोभयोः ॥ २१ ॥ भविष्यतीदमितिवायद्ब्रवीमिपरन्तप । नान्यथा भूतपूर्वंश्च सत्यवागितिमांविदुः ॥ २२ ॥ लोकसाक्षिकमेतन्मे माहात्म्यंदिक्षु विश्रुतम् आश्वासनार्थंभवतः प्रोक्तंनश्लाघयानृप ॥ २३ ॥ नह्यहंश्लाघनोराजन् भूतपूर्वः कदाचन । असदाचरितंह्येतद्यदात्मानं प्रशंसति ॥ २४ ॥ पाण्डवांश्चैवमत्स्यांश्च पाञ्चालान्केकयैःसह । सात्यकिंवासुदेवञ्च श्रोतासिविजितान्मया ॥ २५ ॥ सरितःसागरंप्राप्य यथानश्यन्तिसर्वशः । तथैवतेविनंक्ष्यन्ति मामासाद्यसहान्वयाः २६।

रक्षा करने में समर्थ होतेतो तेरह वर्ष तक पांडवलोग दुःख न पाते ये लोग बचालेते । १९ । इससे हम आप से यह सत्यही कहतेहैं कि जिसके संग हम वैरकरें उसकी रक्षा देव गन्धर्व किन्नर नागादि कोईभी नहीं करसक्ते । २० । यह शुभ अशुभ जो कुछ चिन्तवन करतेहैं वह मिथ्या कभी नहीं होता मित्रोंके विषय में शुभ व शत्रुओंके विषयमें अशुभ । २१ । हमजो कहें कि ऐसा होगातो वैसाही हो इससे हमको सबलोग सत्यवादी कहतेहैं । २२ । सो इसविषय में सब लोकभर हमारा साक्षीहै आपके समझानेकेही लिये हमने कहाहै कुछ अपनी बड़ाई के लिये नहीं कहा ।२३। हमने कभी अपनीबड़ाई अपने मुखसे नहीं की क्योंकि अपने मुखसे अपनीबड़ाई करनी मूर्खोंका कामहै सज्जनोंका नहीं।२४। व आप सुनलेंगे कि पांडवों को, मत्स्यदेश निवासियों को पांचाल देश व केकयदेशवालोंको व सात्यकि तथा वासुदेवको दुर्योधन ने जीतलिया । २५ । जैसे सब नदियां समुद्र में पहुँच नष्टहोजाती हैं दिखाई नहीं देतीं वैसेही वंश व मित्रसहित पांडवलोग हमारे सामने आय नष्ट

---

no calamities happen to our field crops Neither Ashwinikumars nor Vayu, Agni or all the gods can save our enemies from destruction. They would have saved the Pandavas from the troubles of their thirteen years of exile, if they had the power. I speak truly that none of the gods, gandharvas, kinnars or nagas can protect my enemies. 20. My good and bad intentions never prove false: whether I desire good to my friends or ill to my enemies, all things happen accordingly and I can therefore be called the truthful. All the world bears testimony to this fact and I have told this to convince you and not by way of self-praise. I am never given to boasting which is the habits of fools and not of wise men. You will soon hear that Duryodhan has conquered the Pandavas, the Matsyas, the Panchals, the Kaikayas, Satyaki and Vasudev. The Pandavas with their

पराबुद्धिः परंतेजो वीर्यञ्चपरमंमम । पराविद्यापरोयोगो ममतेभ्योविशिष्यते ॥ २७॥ पितामहश्चद्रोणश्च कृपःशल्यःशलस्तथा । अस्त्रेषुयत्प्रजानन्ति सर्वंतन्मापि विद्यते ॥ २८ ॥ इत्युक्त्वासञ्जयंभूयः पर्य्यपृच्छतभारत । ज्ञात्वायुधिष्ठिरस्य कार्य्याणि प्राप्तकालमरिन्दमः ॥ २९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि दुर्योधनवाक्ये एकषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६१ ॥

वैशम्पायन उवाच । तथातुपृच्छन्तमतीवपार्थं वैचित्रवीर्यं तमचिन्तयित्वा । उवाचकर्णो धृतराष्ट्रपुत्रं महर्षयन्सदसिकौरवाणाम् ॥ १ ॥ मिथ्याप्रतिज्ञाय मयायद्स्त्रंरामात्कृतं ब्रह्ममयपुरस्तात् । विज्ञायतेनास्मि तदैवमुक्तस्तेनान्तकाले प्रतिभास्य-

---

ही होजायेंगे फिर न दिखाई देंगे । २६ । हमारे उन से पर तो बुद्धि है व उन से पर तेज व उन से पर वीर्य व उन से पर विद्या व उन से पर योग सब बातों में हम उनसे विशेष हैं । २७ । जो बात भीष्मजी द्रोणाचार्य कृपाचार्य शल्य व शल अस्त्रविद्या में जानतेहैं वे सबबातें हम में हैं । २८ । यह सुनकर राजाने संजयसे फिर पांडवों का वृत्तान्त पूछा और कहा कि मेरेपुत्रके सामने उनकाबल कैसा है २९ ॥

अध्याय ६२ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि जब धृतराष्ट्रजी फिर बड़े प्रेम से अर्जुनके समाचार संजय से पूंछनेलगे तो उनकी बतकहीकी ओर व उनका न ध्यानकर कर्ण दुर्योधनको प्रसन्न करतेहुये । १ । कि हमने परशुरामजी से मिथ्या प्रतिज्ञाकर जो ब्रह्मास्त्रविद्या सीखीथी उसको जान मुनिराज परशुरामजीने शापदियाथा कि आ चोर अन्तकाल में यह ब्रह्मास्त्र

---

relations and friends will disappear before me like rivers falling into the Ocean. I am superior to the Pandavas in wisdom, glory, power, knowledge and asceticism. I know all the warlike arts which Bhishm, Dronacharya, Kripacharya, Shalya and Shal know." Having heard this, the king again asked Sanjaya to tell him what the Pandavas had said to compare their power with that of his son 29

CHAPTER LXII

Vaishampayan said that Dhritrashtra again affectionately asked Sanjaya to tell him the words of Arjun; but Karan, regardless of the king and his words, thus spoke out to please Duryodhan — "I made a false promise and learnt the use of Brahmastra from Parashram. The Muni, knowing this, cursed me to the effect that the

सीति ॥ २ ॥ महापराधेह्यपिच तेनमहर्षिणाहं गुरुणाचशप्तः । शक्तःप्रदग्धुंह्यपि तिग्मतेजाः ससागरामप्यवनिंमहर्षिः ॥ ३ ॥ प्रसादितंह्यस्यमया मनोभूच्छुश्रूषया स्वेनचपौरुषेण । तदस्तिचास्त्रंममसावशेषं तस्मात्समर्थोस्मिममैषभारः ॥ ४ ॥ निमेषमात्राच्चमृषेः प्रसादमवाप्य पाञ्चालकरूषमत्स्यान । निहत्यपार्थान्सह पुत्रपौत्रैर्लोकानहं शस्त्रजितान्प्रपत्स्ये ॥ ५ ॥ पितामहस्तिष्ठतुते समीपेद्रोणश्चसर्वेचनरेन्द्रमुख्याः । यथाप्रधानेनबलेनगत्वा पार्थान्हनिष्यामिममैषभारः ॥ ६ ॥ एवंब्रुवन्तंतमुवाचभीष्मः किंकत्थसेकालपरीतबुद्धे । नकर्णजानासियथाप्रधाने हतेहताःस्युर्धृतराष्ट्र

विद्या तुझे छोड़देगी तेरेकाम न आवेगी । २ । बड़ाभारी अपराध करनेपरभी महर्षिजी ने हमको बड़ाशाप नहीं दिया यह बड़ी दयाकी क्योंकि वे तीक्ष्ण तेजस्वी महर्षिजी समुद्र सहित पृथ्वीभरको कोपकरनेपरभी भस्म करसक्ते थे । ३ । हमने बड़ी प्रार्थनाकी तो उन्होंने कहा जबतक तुम्हारी आयुहै तबतक इससे बड़े२ कार्य करसकोगे मरण समयमें तुम्हारे काममें यह अस्त्र न आवेगा सो अभी तो हमारी आयु बहुत बाकी है इस से ब्रह्मास्त्र से हम अर्जुन को मारसक्ते हैं यह भार हमारे शिरहै । ४ । ऋषि के प्रसादसे एक निमेष मात्रमें मत्स्य पांचालादि राजाओं को मार पांडवों का नाशकर शस्त्रधारियोंके लोकको हम चले जाँयगे । ५ । अब भीष्मजी तुम्हारेही समीप बैठेरहें व द्रोणाचार्यभी यहीं रहें अन्यराजालोगोंकाभी कुछ काम नहीं हमारेसाथ कुछ थोड़ीसी सेना करदी जाय हम अकेलेही पांडवों को मारडालेंगे यह भार हमारे ऊपरआया । ६ । जब कर्णने ऐसा कहा तोभीष्मजी उससे बोले कि हे कर्ण यह क्या बकरहाहै तुझेकालने घेरलियाहै छोड़दिया है तू यह नहीं जानता कि हमींतो इस सभामें प्रधानहैं हमारे मारेजाने पर सब कौरव मारे

---

knowledge would be of no avail to me at last. The great rishi's curse on me was not after all too severe, considering that the exceedingly glorious rishi could burn the whole earth together with its seas with his anger and on my earnest apology he told me that *during my life time I would do great deeds with the the help of that weapon, but that it would leave me at the approach of death.* I have still long to live and so I can kill Arjun with the Brahmastra. I take the burden of doing this on my head. By the grace of my preceptor I shall destroy in an instant the armies of Matsya and Panchal and having killed all the Pandavas I shall go to the region of the warriors. Bhishm, Drona and othe kings may stay with you; let me take a small army with me and alone I shall kill all the Pandavas. I take this burden on me." "What nonsense are you

पुत्राः ॥ ७ ॥ यत्खाण्डवंदाहयताकृतंहि कृष्णद्वितीयेन धनञ्जयेन। श्रुत्वैवतत्कर्म नियन्तुमात्मा युक्तस्त्वयावैसहबान्धवेन ॥ ८ ॥ यांचापिशक्तिंत्रिदशाधिपस्तेददौ महात्माभगवान्महेन्द्रः। भस्मीकृतांतांसमरेविशीर्णां चक्राहतांद्रक्ष्यसिकेशवेन ॥ ९ ॥ यस्तेशरःसर्पमुखोविभाति सदाग्र्यमाल्यैर्महितःप्रयत्नात्। सपाण्डुपुत्राभिहतःशरौघैः सहत्वयायास्यति कर्णनाशम् ॥ १० ॥ बाणस्यभौमस्यचकर्णहन्ता किरीटिनंरक्षति वासुदेवः। यस्त्वादृशानांच वरीयसांचहन्तारिपूणां तुमुलेप्रगाढे ॥ ११ ॥ कर्ण उवाच। असंशयंवृष्णिपतिर्यथोक्तस्तथा च भूयांश्चततोमहात्मा। अहंयदुक्तःपरुषन्तु किञ्चित् पितामहस्तस्यफलंशृणोतु ॥ १२ ॥ न्यस्यामिशस्त्राणिनजातुसंख्ये पिता

जायँगे जब औरोंको कुछ समझनाहीनहींतो उनके बचनेसे क्याहोगा ।७। कृष्णचन्द्रजी के संग अर्ज्जुनजी ने अग्निको खांडववन देनेके समयजो कर्म कियाहै उसेजान अब तुम अपने मनकी मनही में रहनेदो बहुत मतबको । ८ । व जो शक्ति देवताओंके राजा इन्द्रजीने तुमकोदीहै उसे तुम समरमें श्रीकृष्णचन्द्रजीके हाथसे चलाये हुये सुदर्शनचक्र से भस्मकी हुई देखोगे । ९ । व जो यह तुम्हारा बाण है जिसपर फूलमाला बहुत चढ़ाते हो व बहुत मानतेहो वह अर्ज्जुनके मारेहुये बाणोंसे तुम्हारे प्राणोंके संग नष्ट होजायगा । १० । हे कर्ण बाणासुर व भौमासुरके मारनेवाले कृष्णचन्द्रजी अर्ज्जुनकी रक्षाकरते हैं जो कि संग्राम में तुम सरीखे सहस्रों मानी शत्रुओं को क्षणमात्रमें मारडालते हैं । ११ । इतना सुनकर्ण रक्तवर्ण मुखकर बोला कि इसमें कुछ सन्देह नहीं जैसा तुम कहतेहो कृष्णचंद्रजी वैसेहीहैं वरन उससे भी अधिकहैं परन्तु जो आपने कुछ कठोरवचन कहाहै उसका फल सुनिये । १२ । हम अब बाण न चलावेंगे क्योंकि जो हमयुद्धकरेंगे तो विजय कियेहुये हमको

---

talking, Karan ?" said Bhishm rising from his seat, " You are surrounded by death. Do you not know that I am the chief man of this court and that no Kaurava can escape with his life when I am slain ? Why should others be saved when they are of no use ? Remember the deed of Arjun who with the help of Shree Krishn gave the forest of Khandava to be burnt by Agni and leave boasting. You will see the missile given you by Indra burnt in battle by the discus Sudarshan discharged by Krishna. Your arrows decorated with flowers and so highly spoken of by you, will be destroyed along with your life by the arrows of Arjun. 10. Shree Krishna, the destroyer of Banasur and Bhaumasur, is the protector of Arjun who destroys thousands of boistful enemies like you in a moment." On hearing this, Karan's face became red with anger

महोद्रक्ष्यति मांसभायाम् । त्वयिमशान्तेतुममप्रभावं द्रक्ष्यन्तिसर्वे भुविभूमिपालाः ११ वैशम्पायनउवाच । इत्येवमुक्त्वासमहाधनुष्मान् हित्वासभांस्वंभवनंजगाम । भीष्मस्तु दुर्योधनमेवराजन् मध्येकुरूणांमहसन्नुवाच ॥ १४ ॥ सत्यमतिज्ञःकिलसूतपुत्रस्त-थासभारंविपहेतकस्मात् । व्यूहंमतिव्यूह्यशिरांसि भित्त्वालोकक्षयंपश्यत भीमसेनात् ॥ १५ ॥ आवन्त्यकालिङ्गजयद्रथेषु चेदिध्वजेतिष्ठति वाह्लिकेच । अहंहनिष्यामि सदापरेषांसहस्रशश्चायुतशश्च योधान् ॥ १६ ॥ यदैवरामेभगवत्यनिंधे ब्रह्मब्रुवाणः

पितामहजी सभामें देखेंगे व जब हम युद्ध न करेंगे तो इनके वीर्यपते है नहीं मारेजावेंगे तब हमारा प्रभाव पृथ्वीभर देखेगी । ११ । वैशम्पायनजी ने कहा कि इतनाकह महाधनुर्द्धर कर्ण अपने घरको चलागया सभा उसने छोड़दी, व भीष्मजी कुरुवंशियों के आगे हँसतेही से दुर्योधनसे बोले । १४ । सूतपुत्र कर्णतो बड़ाही सत्य प्रतिज्ञ ठहरा कहांतो प्रथम प्रतिज्ञाकी कि हम अकेलेही सबको मारडालेंगे कहां अब कहकर चलागया कि तुम्हारे जीतेजी अब हम लड़ेंहीगे नहीं यह कैसा तुम्हारा मित्र ठहरा, फिर अभीतो कहताथा कि पांडवों के मारने का भार हमारे ऊपर आया अब घरबैठे वह भार कैसे सहेगा, हमतो जानतेहैं कर्ण तो जैसेही वैसे पांडवों को मारेगा पर व्यूह बनाकर भीमसेन सबको मारेंगे वह अच्छीतरह सब जने देखोगे । १५ । देखो कर्ण कहताथा कि अवन्तीपुरी के राजा कलिंगदेशके राजा जयद्रथ चंदेलोंका राजा व बाह्लिक देशका राजा, इनकी विद्यमानता में हमीं सब पांडवोंको व सबोंको मारेंगे । १६ । भला यह क्या मारेगा, क्योंकि जब भगवान

---

and he said, "There is no doubt that Krishn is as great as you say or even greater; but the result of your harsh words will be that I shall discharge arrows no more; for, I am sure to gain the victory in battle; but I cannot get any credit for it until Bhishm the grandfather lives and as he has no power he will soon be killed." Vaishampayan says that having said this, Karan the great archer left the court to go home and Bhishm thus addressed Duryodhan with a smile, "Karan the son of the chariot driver appears wonderfully truthful: a short time ago he said that he alone would kill all enemies, but just now he has left the court saying that he would not fight as long as I live. What a strange friend you have in him! He said that he had taken the burden of killing the Pandavas on himself; how can he bear that burden at home? I am doubtful of Karan's ability to kill the Pandavas, but am sure that Bhim and his army will kill you all and you will see it. Karan says that he will kill all

कृतवांस्तदस्त्रम् । तदेवधर्मश्चतपश्चनष्टं वैकर्त्तनस्याधमपूरुषस्य ॥ १७ ॥ वैशम्पायन उवाच । तथोक्तवाक्येनृपतौन्द्रभीष्मे निक्षिप्यशस्त्राणिगतेचकर्णे । वैचित्रवीर्यस्यसुतो ल्पबुद्धिर्दुर्योधनः शान्तनवंबभासे ॥ १८ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि कर्णभीष्मवाक्ये द्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

दुर्योधन उवाच ॥ सदृशानांमनुष्येषु सर्वेषांतुल्यजन्मनाम् । कथमेकांततस्तेषां पार्थानांमन्यसेजयम् ॥ १ ॥ वयश्चतेपितुल्यावै वीर्येणचपराक्रमैः । समेनवपसा चैव प्रातिभेनश्रुतेनच ॥ २ ॥ अस्त्रेणयोधयुग्याच शीघ्रत्वेकौशलेतथा । सर्वेसमसम

अनित्य परशुरामजी से इस ने ब्राह्मण बनकर ब्रह्मास्त्र विद्या पढ़ी तभी इस अधम पुरुष का धर्म तप ब्रत सब नष्ट होगया । १७ । जब इसप्रकार भीष्मजी ने कहातो कर्ण सभा में अस्त्रफेंक अपने घरको चलागया, व धृतराष्ट्र का पुत्र अल्पबुद्धि दुर्योधन भीष्म जी से बोला ॥ १८ ॥

अध्याय ॥ ६३ ॥

दुर्योधन बोले कि भीष्मजी हम व पांडवलोग सब मनुष्यहीहैं व जन्मभी एकही वंश में हमारा उनका है व वीर्य रूपादिकों में भी एकही प्रकारकेहैं फिर आप पांडवोंकी ही जयहोगी यह कैसे मानते हैं । १ । हम व पांडव वीर्य से पराक्रमसे, अवस्थासे, ज्ञानसे व शास्त्र पढ़नेसे समान हैं । २ । व अस्त्रविद्याभी समानही सबलोगों ने सीखी है व शीघ्रतादि कुशलता व शूर समृद्धिभी समानही हममें उनमेंहै, व हम सबकी जातिभी

---

the Pandavas in the presence of the kings of Avanti, Kaling, Chandeli and Valhik; but it is mere boasting; for he lost the merit of his dharm, asceticism and vows when, in the disguise of a Brahman, he cheated great Parashuram and learnt the use of Brahmastra." Having heard this from Bhishm, Karn went home after flinging away all his weapons in the court and Duryodhan the unwise son of Dhritrashtra thus spoke to Bhishm. 18.

CHAPTER LXIII

"The Pandavas as well as we are men," said Duryodhan to Bhishm, "we are born in the same family and are alike in strength and shape; how do you say that the Pandavas and not we will win? The Pandavas and we are alike in power, valour, age, intelligence, book-lore, knowledge of arms, dexterity, perfection, bravery, birth

जातीयाः सर्वेमानुषयोनयः ॥ ३ ॥ पितामहविजानीषे पार्थेषुविजयंकथम् । नाहं भवतिनद्रोणे नकृपेनचबाह्लिके ॥ ४ ॥ अन्येषुचनरेन्द्रेषु पराक्रमयसमारभे । अहंवैकर्त्तनःकर्णो भ्रातादुःशासनश्चमे ॥ ५ ॥ पांडवानसमरेयञ्च हनिष्यामःशितैःशरैः॥ ततोराजनमहायज्ञैर्विविधैर्भूरिदक्षिणैः ॥ ६ ॥ ब्राह्मणांस्तर्पयिष्यामि गोभिरश्वैर्धनेनच । यदापरिकरिष्यन्ति ऐणेयानिवतन्तुना । अतरित्रानिवजले बाहुभिर्मामकारणे ॥ ७ ॥ पश्यन्तस्तेपरांस्तत्र रथनागसमाकुलान् । तदादर्पविमोक्ष्यन्ति पांडवाःसचकेशवः ॥ ८ ॥ विदुरउवाच ॥ इहानिःश्रेयसंमाहुर्वृद्धानिश्चितदर्शिनः । ब्राह्म

समानही है व मनुष्यही ये भीहैं व हमभी । ३ । फिर पितामहजी आप पांडवोंकीही विजय कैसे जानतेहैं, हम न आप के भरोसे युद्ध करनेका आरम्भ करते हैं, न द्रोणाचार्य के न कृपाचार्यके न बाह्लिकके । ४ । न और राजाओं के भरोसे, किन्तु हम कर्ण व हमारा भाई दुःशासन । ५ । बस तीनहीजने सब पांडवोंको समरमें पैने बाणों से मार डालेंगे, उस के पीछे बहुत २ दक्षिणादे अश्वमेधादि यज्ञकरेंगे । ६ । व ब्राह्मणों को गाय घोड़े धनादि दे तृप्त करेंगे व जैसे बिना मल्लाहकी नावोंको जलकुंडों में घुमाय बोरडालता है उसीरीति से समरमें हमलोग पाडवों को बोरेंगे व यज्ञ के पशुओं के समान मारेंगे ७ सो कुछ परोक्षमें नहीं तुम्हारे सामने ही केशव सहित पांडवों को रथनागादि सहित मारेंगे कि उनका अहंकार कहीं को चला जायगा । ८ । यह सुन विदुरजीने विचारा कि यह इन्द्रियादिकों को दमनकिये नहींहै इससे कुलक्षयकरेगा इसलिये दमके लक्षण कहते

---

and humanity, how can you say, grandfather, that the Pandavas will win victory? We do not wish to fight against the Pandavas on your strength or that of Dronacharya, Kripacharya, Valhik and other kings; Karan, my brother Dushasan and I will kill the Pandavas with our arrows and will then perform Ashwamedh and other sacrifices, giving large donations, cows, horses and other sorts of wealth to Brahmans in charity. We shall drown the Pandavas as water does a boat in its whirlpools when there is no boatman to guide it and will slay them like animals for slaughter at sacrifices We shall crush the pride of Keshav and the Pandavas by killing them along with their elephants and charioteers in your presence." On hearing this, Vidur thought that Duryodhan would destroy all the family with want of control over his organs and gave vent to his feelings thus describing the advantages of the control of organs—"He who would know Brahma," said Vidur, "must control his

णस्य विशेषेण दमोधर्मःसनातनः ॥ ९ ॥ तस्यदानंक्षमासिद्धिर्यथावदुपपद्यते। दमो दानंतपोज्ञान मधीतञ्चानुवर्त्तते ॥ १० ॥ दमस्तेजोवर्धयति पवित्रंदमउत्तमम्। विपाप्मावृद्धतेजास्तु पुरुषो विन्दतेमहत् ॥ ११ ॥ क्रव्याद्भ्यइवभूतानामदान्तेभ्यः सदाभयम्। येषाञ्चप्रतिषेधार्थं क्षत्रंसृष्टंस्वयम्भुवा ॥ १२ ॥ आश्रमेषुचतुर्ष्वाहुर्द मर्मेवोत्तमंव्रतम्। तस्य लिंगंप्रवक्ष्यामि येषांसमुदयोदमः ॥ १३ ॥ क्षमाधृतिरहिंसा च समतासत्यमार्जवम्। इन्द्रियाभिजयो धैर्यं मार्दवंह्रीरचापलम् ॥ १४ ॥ आकार्पण्यमसंरम्भः सन्तोषःश्रद्दधानता। एतानियस्यराजेन्द्र सदान्तःपुरुषःस्मृतः १५।

हुये अपने आप बोछ चढे इस संसारमें जिसको ब्रह्मज्ञानकी इच्छाहै उसे दमही सनातन धर्महै यह निश्चय वृद्ध वृद्धोंने कहा है । ९ । व जिसमें दम होता है दान क्षमा उसकी सिद्धियां हैं, व दान्तहोनेके पीछे तपस्या ज्ञान व शास्त्रका पढ़नाभी आताहै बिनादम अर्थात् इन्द्रियों को अपने वशमें किये कुछ नहीं होता । १० । दमही तेज बढ़ाता है व दमही उत्तम पवित्र है, व दम करनेहारावाला पापरहित व वृद्धतेजस्वीभी होताहै । ११ । व जो पुरुष दम नहीं करते उन अदान्तों से प्राणियों को देसाभय रहती है जैसे मांसभक्षी व्याघ्र सिंहादिकों से रहती है, व उन्हींके रोकने के लिये ब्रह्माजीने क्षत्रियों को बनाया है । १२ । इससे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, व संन्यास चारों आश्रमों के लिये दम श्रेष्ठहै, अब जिनका फलोदय दम है उनका लक्षण कहते हैं । १३ । क्षमा, धारणशक्ति, अहिंसा, समता, सत्य, सरलता, इन्द्रियों का जीतना, धैर्य, कोमलता, लज्जा, अचंचलता । १४ । अकृपणता, अक्रोधता, संतोष, श्रद्धा, ये गुण दान्त में रहते हैं, व काम

---

passions and this is the opinion of old men. Charity and forgiveness are constant attendants on him who has control over their passions. Charity is followed by asceticim, knowledge and book lore and both can be attained without it. 10. Control increases glory and is the best purity: one who has control, becomes sinless and exceedingly glorious. Those who have no control over their passions, are objects of terror like carnivorous beasts and Kshatryas are made by Brahma to check them. Control is the best for all the four stages of life. The results of control are as follows:-Forgiveness, forbearance, freedom from cruelty, *equality*, *truth*, *honesty*, *control of organs*, *patience*, tenderness, bashfulness, firmness, charity, *freedom from* anger, contentment and faith. These qualities are *invariably found in a person* having *self-restraint*. One having control over his *passions is not* subject to desires, greediness, anger, sleep, *falsehood*, *boastfulness*,

कामोलोभश्चदर्पश्च मन्युर्निद्राविकत्थनम् । मान ईर्ष्याचशोकश्च नैतद्दान्तोनिषेवते । अजिह्ममशठंशुद्ध मेतद्दान्तस्यलक्षणम् ॥ १६ ॥ अलोलुपस्तथाऽल्पेप्सुः कामानाम विचिंतिता । समुद्रकल्पःपुरुषः सदांतःपरिकीर्त्तितः ॥ १७ ॥ सुवृत्तःशीलसम्पन्नः प्रसन्नात्मात्म विद्बुधः । प्राप्येहलोकेसम्मानं सुगतिंप्रेत्यगच्छति ॥ १८ ॥ अभयं यस्यभूतेभ्यः सर्वेषामभयंयतः । सवैपरिणतप्रज्ञः प्रख्यातोमनुजोत्तमः ॥ १९ ॥ सर्वभूतहितोमैत्रस्तस्मान्नोद्विजतेजनः । समुद्रइवगम्भीरः प्रज्ञातृप्तःप्रशाम्यति २० ॥ कर्मणाचरितंपूर्वं सद्भिराचरितञ्चयत् । तदेवास्थायमोदन्ते दांताःशमपरायणाः २१ नैष्कर्म्यंवासमास्थाय ज्ञानतृप्तोजितेन्द्रियः । कालाकांक्षीचरँल्लोके ब्रह्मभूयायकल्पते

लोभ, अहंकार, क्रोध, निद्रा, मिथ्यावकना । १५ । मान, ईर्ष्या, व शोक, इनकी सेवा दान्त, नहीं करता, क्योंकि सीधापन, अशठता, व शुद्ध रहना ये लक्षण दान्त दमकरने वाले के हैं । १६ । अलोलुप, थोड़ा चाहनेवाला, किसी वस्तुकी इच्छा न करना, समुद्र तुल्य धैर्य रखनेवाला ऐसा पुरुषदान्त कहाताहै । १७ । सदाचारी, शील सम्पन्न, प्रसन्न चित्त, आत्मज्ञानी, पण्डितहो वह पुरुष यहां सुखपाय मरनेपर सुन्दरगति पाताहै । १८ । व जिसको किसी प्राणिसे भय न हो न उससे किसी प्राणीको भयहो, वह पुरुष सबसे उत्तम व परिपक्व बुद्धि कहाताहै । १९ । व जो सब प्राणियोंका हितकारी, सबका मित्रहो व उससे कोईप्राणी डरता नहो, व समुद्र समान गम्भीर स्वभावहो व प्रज्ञासे तृप्त रहताहो शान्त चित्त होजाता है । २० । व जो भाग्य के दिये हुये भोगोंसे तथा सदाचारसे भी मुक्त रहतेहैं, व शममें परायणहोते हैं वही दान्तकहाते व वही प्रसन्नभी रहतेहैं । २१ । व जो पुरुष, मनसा वाचा कर्मणा कुछ करताही नहीं श्रवणमननादि परोक्ष ज्ञानही से

---

envy and grief. One having self-restraint is known by his straightforwardness, want of deceit and purity. One having self-control is indifferent to sensual objects, contented and patient like the Ocean. The wise man who is truthful, good-natured, cheerful and self-knowing, gets happiness here as well as in the next world. He is the best and the wisest of men who has no fear from others nor is the object of fear to others. One who does good to others and is friendly to all, object of terror to none, grave of mind like the deep Ocean and contented, gets peace of mind. 20. He who keeps aloof from enjoyments as well as from the practice of good men and has complete control over his senses, is happy. He who abstains from actions, who finds his pleasure is gyan, who has control over organs, and who is quite free from selfishness, unites with Brahm.

॥ २२ ॥ शकुनीनामिवाकाशे पदंनैवोपलभ्यते । एवंप्रज्ञानतृप्तस्य मुनेर्वर्त्मनदृश्यते ॥ २३ ॥ उत्सृज्यैवगृहान्यस्तु मोक्षमेवाभि मन्यते । लोकास्तेजोमयास्तस्य कल्पन्तेशाश्वतादिवि ॥ २४ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसंधिपर्वणि विदुरवाक्ये त्रिषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६३ ॥

विदुर उवाच ॥ शकुनीनामिहार्थाय पाशंभूमावयोजयत् । कश्चिच्छाकुनिकस्तात पूर्वेषामितिशुश्रुम ॥ १ ॥ तस्मिंस्तौशकुनौबद्धौ युगपत्सहचारिणौ । तावुपादाय तंपाशं जग्मतुःखचरावुभौ ॥ २ ॥ तौविहायसमाक्रांतौ दृष्ट्वाशाकुनिकस्तदा । अन्वधावदनिर्विण्णो येनयेनस्मगच्छतः ॥ ३ ॥ तथातमन्वधावन्तं मृगयुंशकुनार्थिनम्

तृप्त रहताहै, व इन्द्रियोंको जीते रहता, व सब कहीं ममता शून्यरहता, ऐसातो ब्रह्मही होजाताहै । २२ । जैसे आकाश में पक्षियोंकी गति नहीं दिखाई देती इसीप्रकार ज्ञानी मुनिका मार्गभी नहीं दिखाई देता । २३ । जो घर छोड़कर मोक्ष चाहता है उसको शाश्वत लोक मिलते हैं और शोक रहित तेजोमय स्वर्ग में वास करता है ॥ २४ ॥

अध्याय ६४ ॥

विदुरजी बोले कि हमनें पूर्वजों से सुना है कि एक चिड़ीमार ने पक्षियों के पकड़ने के लिये पृथ्वीपर जाल फैलाया । १ । उसमें दो पक्षी फँसगये पर वे दोनों आपस में मेलकर साथही ऐसे जोरसे उड़े कि जाल समेत आकाशको चलेगये । २ । जब चिड़ीमारने देखा कि ये दोनों तो जालसमेत आकाश को उड़गये तो जहां जहां होकर ऊपर २ वे उड़ेजाते थे नीचे २ सारेलोभ के वहभी दौड़ा चलाजाताथा । ३ । इसप्रकार

The way of a muni who finds his pleasure in gyan, is not discernible like the path of a bird in air. The perpetual regions are for him who leaves home for the sake of salvation. He becomes free from grief and gloriously finds a place in paradise."24.

CHAPTER LXIV

"I have heard from the men of old," continued Vidur, "that once a fowler spread his net to catch bird. Two birds were caught in it; but they made a united effort and flew away with the net. The fowler saw this and ran in the direction which the birds had taken in their flight. While he was thus running after the birds, he was seen by an ascetic who had performed his daily worship and who

आश्रमस्थो मुनिः कश्चिद्ददर्शाथ कृताह्निकः ॥ ४ ॥ तावन्तरिक्षगौ शीघ्रमनुयान्तं महीचरम् । श्लोकेनानेन कौरव्य पप्रच्छ स मुनिस्तदा ॥ ५ ॥ विचित्रमिदमाश्चर्यं मृगहन्प्रतिभाति मे । प्लवमानौ हि खचरौ पदातिरनुधावसि ॥ ६ ॥ शाकुनिक उवाच ॥ पाशमेकमुभावेतौ सहितौ हरतो मम । यत्र वै विवदिष्येते तत्र मे वशमेष्यतः ॥ ७ ॥ विदुर उवाच ॥ तौ विवादमनुप्राप्तौ शकुनौ मृत्युसंधितौ । विगृह्य च सुदुर्बुद्धी पृथिव्यां संनिपेततुः ॥ ८ ॥ तौ युध्यमानौ संरब्धौ मृत्युपाशवशानुगौ । उपसृत्यापरिज्ञातो जग्राह मृगहा तदा ॥ ९ ॥ एवं ये ज्ञातयोऽर्थेषु मिथो गच्छन्ति विग्रहम् । तेऽमित्रवशमायान्ति शकुनाविव विग्रहात् ॥ १० ॥ सम्भोजनं संकथनं सम्प्रश्नोऽथ समागमः ।

पक्षियों के पकड़ने की इच्छा से नीचे २ दौड़ते हुये चिड़ीमारको एकमुनिने सन्ध्यावन्दनादि कृत्य करने के पीछे देखा । ४ । उनदोनों पक्षियोंको तो ऊपर उड़ते हुये व लुब्धकको पीछे दौड़ते देख इस अगाड़ी वाले श्लोकको पढ़ मुनिने पूंछा कि । ५ । हे मित्र लुब्धक मुझको यह देखकर अति आश्चर्य है कि तू पक्षियों के पकड़ने को पैदल दौड़ रहाहै ।६। यहसुन चिरीमार बोला कि अभी ये दोनों सम्मत किये हैं इस से मेरा जालभी उड़ाये लिये जाते हैं जहां दोनों में विवाद होगा वहां सहित जाल नीचे गिरेंगे तब मैं इन्हें पकड़लूंगा। तब मेरा कार्य्य सिद्ध होजायगा । ७ । विदुरजी ने कहा कि इसतरह मुनि से कह वह लुब्धक थोड़ीही दूर और उन के पीछे २ दौड़ा कि इतने में उनदोनों में विवाद हुआ दोनों सहित जाल नीचे गिरे । ८ । व आपस में लड़ने लगे यहांतक कि जालमें बझगये तब निकट आकर चिड़ीमार ने दोनोंको पकड़ मारडाला व अपने घर को लेगया । ९ । इसी तरह जो जातिवाले भाई बन्धु आपसमें विग्रहकर लड़ते हैं वे इन दोनों पक्षियों के समान पकड़े और मारेजाते हैं, क्योंकि शत्रु के वशमें विग्रह होने से लोग पड़ही जाते हैं । १० । एक साथ भोजन करना, एकसाथ वार्तालाप

---

said, "I wonder, friend, to see you running on foot after the birds that are flying in the air." To this the fowler replied, "The birds have formed a union and are therefore carrying away my net; but as soon as they will quarrel with each other, they will fall down with the net and I shall be able to catch them." The fowler had not gone very far after them, when a quarrel arose between them and they fell down with the net. They fought on with each other, till they were entangled in the meshes of the net. The fowler then came near, caught and killed them and took them home. Those kinsmen who quarrel among themselves, are caught and killed like the two birds by their enemies. 10. Friends and kinsmen should

एतानिज्ञातिकार्याणि नविरोध कदाचन ॥ ११ ॥ येसमकालेसुमनसः सर्वेवृद्धानुपासते । सिंहगुप्तमिवारण्यमप्रधृष्या भवन्तिते ॥ १२ ॥ येर्थसंततमासाद्य दीनाइव समासते । श्रियंतसम्प्रच्छन्ति द्विषद्भ्योभरतर्षभ ॥१३॥ धूमायन्तेव्यपेतानि ज्वलंति सहितानिच। धृतराष्ट्रोल्मुकानीव ज्ञातयोभरतर्षभ ॥ १४ ॥ इदमन्यत्प्रवक्ष्यामि यथा दृष्टंगिरौमया । श्रुत्वातदपिकौरव्य यथाश्रेयस्तथाकुरु ॥ १५ ॥ वयंकिरातैःसहिता गच्छामो गिरिमुत्तरम् । ब्राह्मणैर्देवकल्पैश्च विद्याजम्भकवातिकैः ॥ १६ ॥ कुञ्जभूतं गिरिंसर्वं मभितोगन्धमादनम् । दीप्यमानौषधिगणं सिद्धगन्धर्वसेवितम् ॥ १७ ॥

करना, परस्पर पूंछा पाछी करना व मंगलादि पूंछना, उन के यहांजाना व उनको अपने यहां बुलाना, ये जातिवाले भाई बन्धुओं के कार्य हैं विरोध करना आपसका काम कभी नहीं है । ११ । जो लोग सुंदर मन से समयपर अपने वृद्धोंकी सेवाकरते व उनकेवचन मानते हैं वे लोग सिंहसे रक्षित वनके समान अच्छेद्य होतेहैं । १२ । व जो लोग धन राज्यादि पाय अकेले दीनसे होकर बैठकर खायाभोगा चाहते हैं वे अपनाधन अवश्य शीघ्रही अपने शत्रुओं को देते हैं । १३ । हे धृतराष्ट्रजी जाति के लोग लुकेठोंके तुल्य होतेहैं जबतक दूर २ रहतेहैं धुआया करतेहैं जब इकट्ठे होतेहैं तो एकमें मिलकर बलने लगतेहैं फिर उनके समीप कोई नहीं आसक्ता । १४ । इसविषयमें एकवृत्तान्त हम और कहतेहैं जैसा कि हमने पर्वतपर देखाहै उसे सुन फिर जैसा उचितहो वैसाकरो । १५ । एकसमय हम यंत्र मंत्रादि जाननेवाले ब्राह्मणों व किरातों के साथ उत्तरदिशा में एक पर्वतपर गये । १६ । वह पर्वत गंधमादन पर्वतके समीप है व सब लतादिकों से आच्छादित है औषधियां उसपर सब प्रकाशित देवता गधर्व सिद्धादि उसकी सेवा करतेथे ।१७।

---

dine *together*, *talk together*, welcome one another and call on one another, but should never quarrel with one another Those who cheerfully serve *their elders in time* and give ear to their advice, live safely like a forest protected by lions, but those who having got wealth and authority, would enjoy them alone like helpless ones, will soon be deprived of those things by their enemies. Some relations, like char coals, smoke when they lie far from one another, but burn with a flame as soon as they come together and then no one can go near them I shall give you an account of what I have seen on a mountain and which has a bearing on the facts I have just mentioned. You may do what you like after hearing it. Once I was travelling with some learned Brahmans and hunters over a mountain in the North. It is situated near Gandhmadan, overgrown with creepers

तत्रापश्यामवैसर्वे मधुपीतकमाक्षिकम् । मरुप्रपातेविषमे निविष्टंकुम्भसम्मितम् ॥१८॥ आशीविषैरक्ष्यमाणं कुबेरदयितंभृशम् । यत्प्राप्यपुरुषो मर्त्योऽप्यमरत्वंनियच्छति १९ अचक्षुर्लभते चक्षुर्वृद्धोभवतिवैयुवा । इतितेकथयन्तिस्म ब्राह्मणाजम्भसाधकाः ॥२०॥ ततःकिरातास्तद्दृष्ट्वा प्रार्थयन्तोमहीपते । विनेशुर्विषमेतस्मिन ससर्पेगिरिगह्वरे २१॥ तथैवतवपुत्रोयं पृथिवीमेकइच्छति । मधुपश्यतिसम्मोहात् प्रपातंनानुपश्यति ॥ २२॥ दुर्योधनोयोद्धुमनाः समरेसव्यसाचिना । नचपश्यामितेजोस्य विक्रमंवातथाविधम् ॥ २३ ॥ एकेनरथमास्थाय पृथिवीयेननिर्ज्जिता । भीष्मद्रोणप्रभृतयः सन्त्रस्ता

उसपर हमने एकस्थानपर कुंभके समान बड़ा सोनामाखी नाम एक धातुदेखा व हमारे सब साथियों ने भी देखा । १८ । उसकी रक्षा विषधर सर्प कररहेथे व वह धातु कुबेर जीको बहुत प्रियथा, जिसको प्राप्तहो मनुष्यभी होतो अमर होजाय । १९ । अन्धाहो तो उसके नेत्र होजायें वृद्ध मनुष्य उसका सेवनकरे तो युवाहोजाय यहबात वे ब्राह्मण लोग कहते थे जो यंत्र मंत्रादि जानते थे । २० । उसके पीछे जो किरात लोग हमारे संग थे उन्हों ने उसे लेनाचाहा पर उनसर्पों ने काटा वे सब मरगये । २१ । ब्राह्मणों ने नहीं लेना चाहा वे बचगये, उसी तरह यह आपका पुत्र पृथ्वी अकेलेही लिया चाहता है, और लोभके मधुको देखता है पर यह नहीं देखता कि कैसे कठिन स्थान में लगी है वहां जायँगे तो गिरकर चकनाचूर होजायँगे । २२ । दुर्योधन समरमें अर्जुन के संग लड़ना चाहते हैं परन्तु हम इनमें तेज व विक्रम उन के समान नहीं देखते । २३ । क्योंकि अर्जुन ने रथपर चढ़ अकेलेही पृथ्वीभरको जीतलिया है, व भीष्मद्रोणादि

---

and herbs and frequented by gandharvas and sidhas. There we saw Sonamashi a metallic substance shaped like a pitcher. It was *guarded by venomous snakes and was very dear to Kuver.* The learned Brahmans in our company told us that it possessed wonderful properties of giving immortality to men, eye sight to the blind and youth to the old. *20.* The hunters who accompanied *us*, wished to take possession of it but were bitten by the snakes and died in the attempt. The Brahmans did not covet it and so escaped the death. In the same manner this son of yours desires to become the *sole* monarch of the whole world. Greedily he looks at the honey, but has no idea of the beetling height over which the hive is placed. He desires to fight with Arjun, but has not glory and valour like that *of Arjun who alone conquered the whole land.* Bhishm, Dronacharya and others were present at the city of Virat; but they all had

साधुयायिनः ॥ २४ ॥ विराटनगरेभग्नाः कितत्रतवदृश्यताम् । प्रतीक्षमाणोयोवीरः क्षमतेवीक्षितंतव ॥ २५ ॥ द्रुपदोमत्स्यराजश्च संक्रुद्धश्चधनञ्जयः । नशेषयेयुः समरेवातयुक्ता इवाग्नयः ॥ २६ ॥ अङ्केकुरुष्वराजानं धृतराष्ट्रयुधिष्ठिरम् । युध्यतोर्हि द्वयोर्युद्धे नैकान्तेनभवेज्जयः ॥ २७ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वे विदुरवाक्ये चतुःषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६४ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । दुर्य्योधनविजानीहि यत्त्वांवक्ष्यामिपुत्रक । उत्पथंमन्यसेमार्गमनभिज्ञइवाध्वगः ॥ १ ॥ पञ्चानांपांडुपुत्राणां यत्तेजःप्रजिहीर्षसि । पञ्चानामिव भूतानां महतांलोकधारिणाम् ॥ २ ॥ युधिष्ठिरंहिकौन्तेयं परंधर्ममिहास्थितम् । परां

जानों सब विराट नगर में गयेथे । २४ । पर सब भाग खड़ेहुये अब तुमको किसका बल देखना है, जो कोई देखने के योग्यहो वह तुम्हारे सामने क्यों नहीं खड़ाहोता २५। द्रुपद मत्स्यपति अब क्रुद्धहोकर विजय करने को आवेगा तब वायु से प्रेरित अग्निकी समान किसी को न छोड़ेगा इस लिये युधिष्ठिर से मेलकरनाही अच्छा है युद्ध में अवश्य अजय होगी । २७ ॥

अध्याय ॥ ६५ ॥

धृतराष्ट्रजी ने कहा कि हे दुर्य्योधन पुत्र जो हम तुमसे कहें वही मानो तुम उस कुमार्ग को मार्ग समझतेहो जैसे अज्ञविरह मार्गी न जानने वाला मुसाफिर जानताहै । १। क्योंकि तुम पांचों पाण्डवों का तेज अकेले हरा चाहतेहो वह तेज पंच महाभूत पृथ्वी जलाग्नि वाय्वाकाश के तेजके समान है जिनके तेजसे सबलोक धारण कराये जाते हैं इससे अधिक कौन कुमार्ग होगा । २ । व धर्म्म समान टिकेहुये कुन्तीजी के पुत्र युधिष्ठिरजी को

---

to turn back. Where is the man whose valour remains untried? Why does he not stand before you? Drupad the king of Matsya will leave no person alive when he comes to conquer us like flaming fire assisted by the wind. It is better to make peace with Yudhishthir; for, in case of war we shall surely lose battle."27.

CHAPTER LXV

"Duryodhan my son," said Dhritrashtra, "act upon my advice. Like an inexperienced wayfarer you go the wrong way and think it to be the right one; for alone you would eclipse the glory of the five Pandavas resembling that of the five elments which supports the earth and sky. What other way can be more crooked than this? You can never conquer Kunti's son, Yudhishthir who is like Dharm,

गींतंसेमस्य नत्वंजेतुमिहार्हसि ॥ ३ ॥ भीमसेनंचकौन्तेयं यस्यनास्तिसमोबले । रणान्तकंतर्जयसे महावातमिवद्रुमः ॥ ४ ॥ सर्वशस्त्रभृतांश्रेष्ठं मेरुंशिखरिणामिव । युधि गाण्डीवधन्वानं कोनुयुध्येतबुद्धिमान ॥ ५ ॥ धृष्टद्युम्नश्चपाञ्चाल्यः कामवाधनशात येत् । शत्रुमध्येशरानमुञ्चन देवराडशनीमिव ॥ ६ ॥ सात्यकिश्चापिदुर्द्धर्षः संमतो ऽधकवृष्णिषु । ध्वंसयिष्यतितेसेनां पांडवेयहितेरतः ॥ ७ ॥ यःपुनःप्रतिमानेन त्रीन् लोकानतिरिच्यते । तंकृष्णंपुण्डरीकाक्षं कोनुयुध्येतबुद्धिमान् ॥ ८ ॥ एकतोह्यस्य दाराश्च ज्ञातयश्चसबान्धवाः । आत्माचपृथिवी चेयमेकतश्चधनञ्जयः ॥ ९ ॥ वासुदेवोपिदुर्द्धर्षो यतात्मायत्रपांडवः । अविषह्यंपृथिव्यापि तद्बलंयत्रकेशवः ॥ १० ॥

तुम किसी प्रकार न जीतसकोगे चाहे मर भले रहो । ३ । व जिन के समान बलवानकोई दूसरा भूतल में विद्यमानही नहीं व रणमें शत्रुओं को कालरूपही दिखाई देते हैं उनभीमसेनको तुम भयभीत किया चाहतेहो यह ऐसा है जैसे वृक्ष प्रचंड पवनको भयभीत किया चाहै । ४ । व सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ जैसे कि सब पर्वतों में सुमेरु पर्वत ऐसे गांडीव धन्वा धारण करनेवाले अर्जुन से युद्धमें कौन लड़ेगा । ५ । व पांचालदेश के राजाके पुत्र धृष्टद्युम्न शत्रुओं के मध्यमें वाण छोड़तेहुये यहांके किसवीरको न मारडालेंगे जैसे वज्र चलाते हुये इन्द्रजी शत्रुओं के ऊपर वज्र चलाते हैं । ६ । व वृष्णि अन्धक वंशियों में सम्मत पाण्डवों के हितमें रत सात्यकीजी तुम्हारी सेनाका विध्वंस करी डालेंगे । ७ । व जो प्रतिमान से तीनों लोकों में सब से अधिक पराक्रमी हैं जिस के समान कोई भी नहीं है उन पुण्डरीकाक्ष कृष्णचन्द्रजी से कौन बुद्धिमान् युद्ध करेगा । ८ । कृष्णचंद्र जी के व अर्जुन के स्त्री ज्ञाति बन्धु बान्धव आत्मा व पृथ्वी सब एकही समझो कुछ उनदोनों में अन्तर नहीं है । ९ । व वासुदेवजी आपभी अति दुर्द्धर्ष व यतात्मा हैं व

---

though you may die in the attempt. Your attempt to terrify Bhimsen who has no rival on earth in valour and who looks like Death to enemies at the time of battle, is like that of trees who would terrify the violent wind. Who can withstand Arjun who is superior to other warriors as Meru is to other mountains and who possesses the Gandiv bow? Which of our warriors can escape death from the vajra like arrows of Dhrishtadyumn the son of the king of Panchal? Satyaki the wisest among the Vrishnis and the Andhaks and the well wisher of the Pandavas, will destroy all your army. What wise man will raise quarrel with Pundarikaksh Shree Krishn whose prowess is unrivalled in the three worlds? Shree Krishn and Arjun are so well united that no distinction can be made between their wives, kinsmen, relations, souls and property. Vasudev is exceedingly

तिष्ठतातससर्वांवाक्ये सुहृदामर्थवादिनाम्। वृद्धंशान्तनवंभीष्मं तितिक्षस्वपितामहम् ११ मांचश्रुवाणंशुश्रूष कुरूणामर्थदर्शिनम् । द्रोणंकृपंविकर्णञ्च महाराजञ्चबाह्लिकम् ॥ १२ ॥ एतेह्यपियथैवाहं मन्तुमर्हसितांस्तथा । सर्वेधर्मविदोह्येते तुल्यस्नेहाश्चभारत ॥ १३ ॥ यत्तद्विराटनगरे सहभ्रातृभिरग्रतः । उत्सृज्यगाःसुसन्त्रस्तं बलंतेसमशीर्यत ॥ १४ ॥ यच्चैवनगरेतस्मिन् श्रूयतेमहदद्भुतम् । एकस्यचबहूनाञ्च पर्याप्तंतन्निदर्शनम् ॥ १५ ॥ अर्जुनस्तत्तथाकार्षीत् किंपुनःसर्वएवते । सभ्रातृनभिजानीहि वृत्त्यातं प्रतिपादय ॥ १६ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये पंचषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६५ ॥

पांडवलोग उन्हीं के हैं फिर जहां कृष्णचन्द्र विद्यमान हैं उनको पृथ्वी भरभी नहीं सह सक्ती । १० । इस से हे तात अर्थ कहने वाले सज्जन सुहृदों के वचनों पर टिको व सब से वृद्ध भीष्म पितामहजी के वचन मानो । ११ । व हमारे भी वचन मानो व कौरवोंके अर्थहीकी बात सदा देखनेवाले द्रोणाचार्य कृपाचार्य्य विकर्ण व महाराज बाह्लीक जीके वचन मानो । १२ । इन सबलोगों को हमारेही समान तुमको माननाचाहिये क्यों कि ये सबधर्मवेत्ता हैं व सब हमारेही तुल्य स्नेह करते हैं । १३ । व जो विराट् नगर में तुम अपने सौ भाइयों समेतथे तथा भीष्म कर्णादिभी विद्यमानथे सबके सामने अर्जुन गाइयों को खेद लेगये व तुम्हारी सेना तितिर बितिर होगई । १४ । यह बात महा अद्भुत उस नगरकी सुनी जाती है कि तुमलोग बड़े २ पराक्रमी बहुतसे थे व अर्जुन अकेलेही थे बस इस विषयका यही दृष्टान्त है कि उन से तुम युद्धमें न जीतोगे । १५ । अर्जुन ने तुम सब भाइयों को अकेले हरादिया इस लिये तुमको चाहिये कि पांडवोंको अपने भाई समझ कर उनका भाग देदो १६ ॥

---

valliant and has control over his organs. The Pandavas are his own and therefore no one on the Earth can conquer them. 10. Be mindful, my son, of the advice of your well-meaning and good friends, the chief among whom is Bhishm the grandfather. You must give ear to my words as well as to those of Dronacharya, Kripacharya, Vikarn and Valhik the well-wishers of the Kauravas. You must mind their advice like mine own, for they are virtuous and love you like me. You and your hundred brothers together with Bhishm, Dronacharya and Karan were routed at Viratnagar by Arjun who recovered the cattle from you. *It is a strange trait of Arjun's that* alone he defeated so many warriors of yours and is a proof of the fact that victory over him is impossible. Arjun alone has defeated all your brothers and therefore you must give the Pandavas their share."16.

वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वामहाप्राज्ञो धृतराष्ट्रःसुयोधनम्। पुनरेवमहाभागः सञ्जयंपर्यपृच्छत ॥ १ ॥ ब्रूहिसंजययच्छेषं वासुदेवादनन्तरम् । यदर्जुन उवाच त्वांपरंकौतूहलंहिमे ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच वासुदेववचः श्रुत्वा कुन्तीपुत्रोधनञ्जयः। उवाचकालेदुर्द्धर्षो वासुदेवस्य शृण्वतः ॥ ३ ॥ पितामहंशान्तनवं धृतराष्ट्रञ्चसंजय। द्रोणंकृपञ्चकर्णञ्च महाराजञ्च बाह्लिकम् ॥ ४ ॥ द्रौणिञ्चसोमदत्तञ्च शकुनिं चापिसौबलम् । दुःशासनंशलंचैव पुरुमित्रंविविंशतिम् ॥ ५ ॥ विकर्णंचित्रसेनञ्च जयत्सेनञ्चपार्थिवम् । विन्दानुविन्दावावन्त्यौ दुर्मुखञ्चापिकौरवम् ॥ ६ ॥ सैन्धवं दुःसहञ्चैव भूरिश्रवसमेवच । भगदत्तंचराजानं जलसन्धञ्चपार्थिवम् ॥ ७ ॥ ये

अध्याय ॥ ६६ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि महाप्राज्ञ धृतराष्ट्रजी इस प्रकार दुर्योधन से कह फिर संजय से पूंछने लगे कि । १ । सञ्जय कृष्णचन्द्रजी की जो बातें कुछ और बाकी होवें सुनाओ व उनके पीछे अर्ज्जुन ने जो कुछ कहाहो वह भी सुनाना इसबात के सुन ने में हमको बड़ा कुतूहलहै । २ । यह सुन संजय बोले कि वासुदेवजी की बातें तो होगईं उन के वचनसुन कुन्ती जी के पुत्र अर्ज्जुनजी ने जो बड़ी दुर्द्धर्षता से कृष्णचन्द्रजी के सुनते में कहाहै सुनाते हैं सुनिये । ३ । शान्तनुजी के पुत्र पितामह भीष्मजी से व धृतराष्ट्रजी से, द्रोणाचार्य्य, व कृपाचार्य्य, कर्ण, व महाराज बाह्लिक से । ४ । अश्वत्थामा, सोमदत्त, शकुनि, दुश्शासन, शल, पुरुमित्र व विविंशति, । ५ । विकर्ण, चित्रसेन, जयत्सेन, विन्दानुविन्द अवन्तीपुरी के राजा, व दुर्म्मुखनाम कौरव से । ६ । सिन्धु देश के राजा, दुस्सह, भूरिश्रवा, भगदत्त, व राजा जलसन्ध । ७ । व और भी

CHAPTER LXVI

Vaishampayan says that having thus talked with Duryodhan, Dhritrashtra the wisest of men again turned towards Sanjaya and said, "Tell me, Sanjaya, if there remains aught of the words of Shree Krishn or Arjun." To this Sanjaya replied, "I have told you all that Krishn had said at the time; but I shall tell you the harsh words which Arjun the son of Kunti uttered subsequently within hearing of Shree Krishn. He directed me to repeat his words to Duryodhan the sinful, within hearing of all the courtiers, after conveying his greetings to and inquiring about the welfare of Shantanu's son Bhishm the grandfather, Dhritrashtra, Dronachaaya, Kripacharya, Karan, Maharaj Vahlik, Ashwathama, Somdatta, Shakuni, Dushasan, Shal, Purumitra, Vivinshaai, Vikarn, Chitrasen, Jayatsen,

चाप्यन्येपार्थिवास्तत्र योद्धुंसमागताः कौरवाणांप्रियार्थम् । मुमूर्षवःपाण्डवाग्नौ प्रदीप्तेसमानीता धार्त्तराष्ट्रेणहोतुम् ॥ ८ ॥ यथान्यायंकौशलं वन्दनञ्चसमागता मद्वचनेन वाच्याः । इदंब्रूया संजय राजमध्ये सुयोधनंपापकृतां निधानम् ॥९॥ अमर्षणदुर्मतिं राजपुत्रं पापात्मानं धार्त्तराष्ट्रंसुलुब्धम् । सर्वममैतद्वचनंसमग्रं सहामात्यंसंजयश्रावयेथाः ॥ १० ॥ एवंप्रतिष्ठ प्यधनञ्जयोमां ततोर्थवद्धर्मवच्चापिवाक्यम् । प्रोवाचेदं वासुदेवं समीक्ष्यपार्थो धीमाँल्लोहितान्तायताक्षः ॥ ११ ॥ यथाश्रुतंतेवदतोमहात्मनो मधुप्रवीरस्यवचःसमाहितम् । तथैववाच्यंभवताहिमद्वचः समागतेषुक्षितिपेषु सर्वशः ॥ १२ ॥ शराग्निधूमेरथनेमिनादिते धनुःस्रुवेणास्त्रबलप्रसारिणा । यथानहोमः

जो राजा लोग वहां मरने की इच्छा से आये हों जिन्हें पाण्डवों से युद्ध करने के लिये कौरवों ने बुलायाहो व पांडवाग्नि में भस्म हुआ चहते हों । ८ । उन सब लोगों से यथायोग्य हमारी ओर से प्रणामादि कह कुशल पूंछ फिर पाप करने वाले सुयोधन से राजसमाज के मध्यमें यह कहना । ९ । जो दुर्योधन, असहनशील, दुर्बुद्धि, पापात्मा, महा लोभी है वह जब अपने मन्त्रियों समेत बैठाहो तब हमारे वचन कहना । १० । इस प्रकार अर्जुनजी ने अर्थयुक्त व धर्म संयुक्त वचन वासुदेवजी की ओर अच्छेप्रकार देख लाल नेत्र फैलाकर कहा ।११। कि जिसप्रकार श्रीकृष्णचन्द्रजी के सामने हमारे वचन तुमने सुनेहैं उसीप्रकार सदस्यसभा में सुयोधन से कहना खबरदार कोई बात रहने न पावे ।१२। वह यह वचनहै कि तुमलोग ऐसा यत्नकरो जिसमें हम महाबाणों के अग्नि में जो कि रथ वायुसे प्रेरितहोगा व धनुषही स्रुवके स्थान में होगा व सब अस्त्र शस्त्रों के बलको हरलेगा, ऐसे समरयज्ञ में तुम लोगों को आहुति बनाय होम न करें । १३ ।

Vindanuvind, the king of Avanti, Durmukh, the Kaurav, the king of Sindhu, Dussah, Bhurishrawa, Bhagdatta, king Jalsandh and other kings who have come here at the call of the Kauravas to fight against the Pandavas and to die. He bade me repeat his words to Duryodhan the unbearable, unwise, sinful and avaricious when he be sitting in the midst of his counsellors. 10. He spoke the words full of Dharm and worldly profit, looking full well towards Shree Krishn with his wide open red eyes. He enjoined me to tell Duryodhan, word for word, all that he was about to say. His words were, "You must so behave that we may no sacrifice you in the fire of our dreadful arrows, instigated with the wind of our chariot, having for ladle our great bow which takes away power from all other weapons

क्रियतेनमहामृधेसमेत्य सर्वैभवतध्वजादृताः ॥ १३ ॥ नचेत्प्रयच्छध्वममित्रघातिनो युधिष्ठिरस्यांशमभीप्सितं स्वकम् । नयामिवः साश्वपदातिकुञ्जरान् दिशंपितॄणाम-शिवांशितैःशरैः ॥ १४ ॥ ततोहमामन्त्र्यतदाधनंजयं चतुर्भुजंचैवनमस्यसत्वरः । जवेनसम्प्राप्त इहामरद्युते तवान्तिकंप्रापयितुं वचोमहत् ॥ १५ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वाणि संजयवाक्ये

षट्षष्टितमोऽध्यायः ॥ ६६ ॥

वैशम्पायन उवाच । दुर्योधनेधार्तराष्ट्रे तद्वचोनाभिनन्दति । तूष्णींभूतेषुसर्वेषु समुत्तस्थुर्नरर्षभाः ॥ १ ॥ उत्थितेषुमहाराज पृथिव्यांसर्वराजसु । रहितेसंजयंराजा परिप्रष्टुंप्रचक्रमे ॥ २ ॥ आशंसमानोविजयं तेषांपुत्रवशानुगः । आत्मनश्चपरेषांच

नहीं अच्छा होगा शत्रुओं के नाशक महाराज युधिष्ठिरजी का भाग बहुतही शीघ्र बांटदो कुछकाल नहीं यदि ऐसा न करोगे तो इसमें कुछभी अन्तर न समझना हम तीक्ष्ण बाणों से मार हाथी घोड़े पैदल सेना समेत तुमलोगों को यमराज के पुरको पहुँचावेंगे ।१४। तब कृष्ण और अर्जुनको प्रणाम करके और उनसे आज्ञा लेकर मैं अति शीघ्र यहां को चला आया ॥ १५ ॥

अध्याय ६७ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि संजय के ऐसे वचन धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन ने न पसन्द किया तब राजालोग चुपहोरहे व सब के सब उठ २ अपने २ स्थानपर चलेगये राज-सभा खाली होगई । १ । जब सब राजालोग चलगयेतो राजाधृतराष्ट्रजी एकान्तमें फिर संजय से कुछ पूंछनेपर हुये । २ । व मन में यह विचारथा कि हमारे पुत्रोंकी विजयहो

---

and the field of battle as our altar. It would be better for you to give Yudhishthir, the destroyer of enemies, his share without any loss of time, or we will dispatch you along with your armies of elephants, horses and foot soldiers, with our sharp arrows to the region of Yam." Having heard this I made obeisance to both Krishn and Arjun and with their permission I came here in all haste."15.

CHAPTER LXVII

Vaishampayan says that Duryodhan the son of Dhritrashtra did not like the words of Sanjaya. All the kings remained silent for some time and then went to their respective places, leaving the court vacant. When all the kings had gone, Dhritrashtra again desired to gain some more information from Sanjaya in private.

पाण्डवानांच निश्चयम् ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । गावल्गणेब्रूहिनःसारफल्गुस्वसेनायां यावाद्विद्वांस्तिकिञ्चित् । त्वंपाण्डवानां निपुणंवेत्थसर्वं किमेषांज्यायःकिमुतेषांकनीयः ४। त्वमेतयोःसारवित्सर्वदर्शी धर्मार्थयोर्निपुणो निश्चयज्ञः । समेपृष्टःसञ्जयब्रूहि सर्वं युध्यमानाःकतरेस्मिन्नसन्ति ॥ ५ ॥ संजय उवाच । नत्वांब्रूयांरहितेजातु किंचिद्-सूयाहि त्वांमविशेतराजन । आनयस्वापितरंमहाव्रतं गान्धारींञ्चमहिषीमाजमीढ । ६ ॥ तौतेसूयांविनयेतांनरेन्द्र धर्मज्ञौतौ निपुणौनिश्चयज्ञौ । तयोस्तुत्वांसन्निधौ तद्वदेयंकृत्स्नं

क्योंकि पुत्रोंके वशीभूतहो येही व पांडवोंका मुख्य अभिप्राय व निश्चय जानके वैसाकरैं । ३ । धृतराष्ट्रजी ने कहा कि हे संजय तुम पाण्डवोंका वृत्तान्त व शक्ति सब अच्छी तरह जानतेहो व यहांभी सेनामें जो कुछ सारांशहै वहभी जानतेहो बताओ कौनबात हमारे पुत्रोंके यहां अधिक है व कौनसी पाण्डवों में कम है । ४ । इस विषय का सब सारांश जानतेहो क्योंकि सर्वदर्शी, धर्म, अर्थमें निपुण व निश्चय जाननेवाले हो इसीसे हमने तुमसे पूंछाहै जो युद्धहोगा तो कौनहारेंगे व कौनजीतेंगे व इधर उधर जितने इकट्ठा हुये हैं उनमें कौन २ युद्ध की इच्छा करतेहैं कौन २ केवल आही गयेहैं पर लड़ना नहीं चाहते । ५ । यह सुन संजयबोले कि राजन् हम एकान्तमें तुमसे कुछभी न कहेंगे क्योंकि हमारे विषयमें तुम्हारी दोषदृष्टि होजायगी इससे अपने पिता व्यासजी को बुलाओ व अपनी रानी गान्धारीजीको भी तब हम तुमसे कहेंगे । ६ । क्योंकि वे दोनों जने जो दोषदृष्टि हमारे विषयमें करोगे उसको दूरकरते रहेंगे क्योंकि वे दोनों धर्मज्ञ निपुण व निश्चय जाननेवाले हैं इससे उन्हीं दोनों के सामने कृष्णचन्द्र व अर्जुन का

Being desirous of securing victory to his sons and being also under their influence, he wanted to know the real purpose of the Pandavas and to act accordingly. "You know all about the Pandavas and their strength," said Dhritrashtra to Sanjaya, "You know also the strength of our army; tell me if you know anything of the strength of our sons and the weakness of the Pandavas. You are all-knowing and perfect in what relates to Dharm and worldly profits and it is therefore that I ask you this. Which of the two sides will win or lose in case of war? Of the kings assembled on both sides, which are desirous of fighting and which not?" To this, Sanjaya replied, "I shall say nothing, while you are alone for fear of your displeasure. Send for your father Vyas and Gandhari your queen and then I shall tell you what you require. They will remove your displeasure as both are well acquainted with dharm. I shall let you know the

मतंकेशवपार्थयोर्यत् ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्युक्तेनचगान्धारी व्यासश्चात्र जगामह । आनीतौविदुरेणेह सभांशीघ्रंप्रवेशितौ ॥ ८ ॥ ततस्तन्मतमाज्ञाय संजयस्यात्मजस्यच । अभ्युपेत्यमहाप्राज्ञः कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् ॥ ९ ॥ व्यास उवाच । संपृच्छतेधृतराष्ट्राय संजयआचक्ष्वसर्वं यावदेषोऽनुयुंक्ते । सर्वंयावद्वेत्थतस्मिन यथावद्या यातथ्यं वासुदेवेऽर्जुनेच ॥ १० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि व्यासगान्धार्यागमने सप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

सञ्जय उवाच । अर्जुनोवासुदेवश्च धन्विनौपरमार्चितौ । कामादन्यत्रसम्भूतौ सर्वभावायसंमितौ ॥ १ ॥ व्यामान्तरंसमास्थाय यथायुक्तंमनस्विनः । चक्रंतद्वासु

सबमत तुमसे कहेंगे । ७ । वैशम्पायनजी बोले कि संजय यह कहतेही थे कि विदुरजी व्यासजी और गान्धारी को वहां बुलालाये व वे आगये । ८ । उससमय संजय व धृतराष्ट्र दोनोंका मत अच्छीतरह जान भगवान् व्यासजी बोले कि । ९ । संजयजो धृतराष्ट्र पूंछते हैं कृष्णचन्द्र व अर्ज्जुन का अभिप्राय जैसा तुम जानते हो यथा तथ्य कहो कुछ भी न्यूनाधिक न हो ॥ १० ॥

अध्याय ॥ ६८ ॥

संजयजी बोले कि कृष्णचन्द्रजी व अर्ज्जुनजी दोनों महा धनुर्द्धरहैं व दोनों सब प्रकार पूजितहैं व दोनों साक्षाद्ब्रह्मरूपहैं सब के ऊपर कृपाकरने के लिये अपनी इच्छासे जन्म दोनों ने लिया है । १ । मनस्वी भगवान् वासुदेव का चक्र पांच हाथ का लम्बाहै उसी के भीतर सब कुछ आजाता है जिस २ बातकी चिन्तना करते सब होजाताहै व

---

opinion of Krishna and Arjun in their *presence.*" Vaishampayan says that on hearing this, Vidur went to call Vyas and Gandhari and they all came there. After learning the purpose of Dhritrashtra and Sanjaya, Vyas said, "Tell, Sanjaya, whatever you know of the opinions of Krishn and Arjun without any addition or alteration."10.

CHAPTER LXVIII

"Both Krishn and Arjun," said Sanjnya, "are great archers; both are worthy of worship like Brahm and are born here to do good to all. The discus of Krishn is five cubits long and can encompass all things. He can do all that he desires and no one can look him in the face. The discus of Vasudev is thirsty for the blood of the

देवस्य माययावर्त्ततेविभो ॥ २ ॥ सापह्नवंकौरवेषु पांडवानांसुसम्मतम् । सारासा बलंज्ञातुं तेजःपुञ्जावभासितम् ॥ ३ ॥ नरकंशम्बरञ्चैव कंसंचैद्यञ्चमाधवः । जित वान्घोरसङ्काशान क्रीडन्निवमहाबलः ॥ ४ ॥ पृथिवींचान्तरिक्षञ्च द्यांचैवपुरुषो त्तमः । मनसैवविशिष्टात्मा नयत्यात्मवशंवशी ॥ ५ ॥ भूयोभूयोहियद्राजन् पृच्छसे पांडवानभवि । सारासारबलंज्ञातुं तत्तुसमासेनमेशृणु ॥ ६ ॥ एकतोवाजगत्कृत्स्न मेकतोवाजनार्दनः । सारतोजगतः कृत्स्नादतिरिक्तो जनार्दनः ॥ ७ ॥ भस्मकुर्य्या ज्जगदिदं मनसैवजनार्दनः । नतुकृत्स्नंजगच्छक्तं भस्मकर्त्तुंजनार्दनम् ॥ ८ ॥ यतः सत्यंयतोधर्मो यतोह्रीरार्जवं यतः । ततोभवतिगोविन्दो यतःकृष्णस्ततोजयः ॥ ९ ॥

उनकी ओर को दृष्टि नहीं करसक्ता । २ । वह वासुदेव का चक्र कौरवोंका तो संहार किया चाहता व पांडवों का हित, इससे वह सार असार बल जानने के लिये तेजका पुंज सब भासित होता है । ३ । इसीसे उसचक्र से श्री कृष्णचन्द्रजी ने नरकासुर शम्बरासुर, कंस व शिशुपाल को जो कि बड़ेही बलवान् थे एक खेलकेसाथ जीतलिया । ४ । व वे जैसेही मनकरें पृथिवी अंतरिक्ष व स्वर्ग सबको अपनी वशमें करलें वरन सबको वशमें किये हैंहैं । ५ । हे राजन् जो आप बार २ पांडवों के विषय में सारासार बल जाननेके लिये पूंछतेही होतो हम विस्तार पूर्वक वर्णन करतेहैं सुनिये । ६ । एक ओर तो सब जगत व एक ओर जनार्दन भगवान्तो भी सार में सब जगत से जनार्दन भगवान् विशेषहैं । ७ । सब जगत मर जो चाहे तो कृष्णचन्द्रजी को भस्म नहीं करसक्ता, व वे सबको क्षणमात्र में भस्म करसक्ते हैं, परन्तु वे कृष्णचन्द्र जहां सत्य, धर्म लज्जा सरलताहोती है । ८ । उसी ओर रहते हैं फिर जहां वे रहते वहीं जयभी होती है व

Kauravas for the good of the Pandavas and looks like a mass of glory to test the strength and weakness. With that discus, Shree Krishn killed Narak, Shambar, Kans and Saishupal the demons of great power, as if in play. He rules and has power over Earth, sea and sky. I shall tell you in detail of the great power of the Pandavas, about which you have asked so often. Janardan (Krishn) is greater in strength than all the world put together. All the world can do him no harm, though he can burn it to ashes with his anger. He takes the side of truth, dharm, bashfulness and honesty and the party which has him for his helper, is sure to win victory. He can change easily the aspect of the Earth, air and heavens and he

पृथिवींचान्तरिक्षञ्च दिवंचपुरुषोत्तमः । विचेष्टयतिभूतात्मा क्रीडन्निवजनार्दनः १०॥ सकृत्वापांडवान्सत्रं लोकंसम्मोहयन्निव । अधर्मनिरतान्मूढान् दग्धुमिच्छतितेसुतान् ॥ ११ ॥ कालचक्रंजगच्चक्रं युगचक्रञ्चकेशवः । आत्मयोगेनभगवान् परिवर्त्तयते-निशम् ॥ १२ ॥ कालस्यचहिमृत्योश्च जङ्गमस्थावरस्यच । ईशतेभगवानेकःसत्यमे-तद्ब्रवीमिते ॥ १३ ॥ ईशन्नपिमहायोगी सर्वस्यजगतोहरिः । कर्माण्यारभतेकर्त्तुं कीनाशइववर्धनः ॥ १४ ॥ तेनवञ्चयते लोकान्मायायोगेन केशवः । येतमेवप्रपद्यंते तेनमुह्यन्तिमानवाः ॥ १५ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्व संजयवाक्ये

ऽष्टषष्टितमोऽध्यायः ॥ ६८ ॥

पृथिवी, अंतरिक्ष, स्वर्ग सबको भगवान् जनार्दनजी । ९ । एक खेलके साथ विचेष्टित कराते हैं, वे भगवान् पांडवों को यज्ञ बनाय लोक भरको मोह करातेही वे अधर्म करनेवाले मूढ़ दुर्योधनादि तुम्हारे पुत्रों को भस्मकिया चाहते हैं । १० । व काल चक्र, जगचक्र, युगचक्र सबको भगवान् वासुदेव अपने योग बल से बार २ घुमाया करतेहैं । १२ । कहां तक कहैं जितना स्थावर जंगम संसारहै व काल मृत्युभी है सब के स्वामी कृष्णहीहैं यह हम तुमसे सत्यही कहतेहैं । १३ । सब संसार के ईशभीहैं तथापि महायोगी सब जगत् में ठिक कर्मकराने का आरम्भ करतेहैं जिसमें जगत् बढ़े, जैसे खेती करनेवाले बढ़नेकी इच्छासे सदा उसी के कर्मों का आरम्भ करतेहैं । १४ । इसीसे अपनी मायाके योग से बढ़ने के लिये जगत्को वंचित करातेहैं, जो पुरुष सबको छोड़ उन्हीं को सब प्रकार से प्राप्त होतेहैं वे मोह को नहीं प्राप्तहोते ॥ १५ ॥

---

wishes to destroy your wicked sons, Duryodhan and others, through the medium of the Pandavas. 10. With his power of yog, Vasudev keeps the wheels of time, world and yug in motion. Whatever of moveable and immoveable there is in the world as well as of Time and Death, Krishn is the lord of all and I speak the truth. He is the lord of the world; he is the great yogi who is stayinng in the world and doing work for its progress like a cultivator working at his field. For the good of the world he allows delusion to deceive people; but those who seek him alone and leave all else, are never deceived." 15.

धृतराष्ट्र उवाच । कथंत्वंमाधवंवेत्थ सर्वलोकमहेश्वरम् । कथमेनंनवेदाहं तन्ममाचक्ष्वसंजय ॥ १ ॥ संजय उवाच । शृणुराजन्नतेविद्या ममविद्यानहीयते । विद्याहीनस्तमोध्वस्तो नाभिजानातिकेशवम् ॥ २ ॥ विद्ययाताताजानामि त्रियुगंमधुसूदनम् । कर्त्तारमकृतंदेवं भूतानांप्रभवाप्ययम् ॥ ३ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । गावल्गणेऽत्रका भक्तिर्याते नित्यं जनार्दने । यया त्वमभिजानासि त्रियुगंमधुसूदनम् ॥ ४ ॥ संजय उवाच । मायांनसेवेभद्रंते नवृथाधर्ममाचरे । शुद्धभावंगतोभक्त्या शास्त्राद्वेद्मिजनार्द-नम् ॥ ५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । दुर्योधनहृषीकेशं प्रपद्यस्वजनार्दनम् । आप्तोनःसंजय

अध्याय ॥ ६९ ॥

धृतराष्ट्रजी बोले कि हे संजय कृष्णचन्द्रजीको तुम कैसे सबलोकके स्वामी समझते व जानतेहो व हम उनको वैसा क्यों नहीं जानते इसका कारण हमसे बतावो ।१। संजय बोले, राजन् सुनिये तुम्हारे विद्या नहीं है हमारी विद्या कभी कम नहीं पड़ती इससे विद्याहीन होनेके कारण तुम्हारा अज्ञानान्धकारध्वस्त नहीं हुआ बस इसीसे केशवभगवान् को तुम नहीं जानते । २ । हे तात विद्याही से हम मधुसूदन भगवान् कृष्णचन्द्रजी को, सब प्राणियों के उत्पन्न पालन व नाश करनेवाले व सबके कर्त्ता व उनको किसीने नहीं किया, व तीनोंकालों में विद्यमान जानते हैं । ३ । यह सुन धृतराष्ट्रजी बोले कि संजय तुम्हारे कौनसी भक्ति है जिससे तुम मधुसूदन भगवान्को जानतेहो कि ये तीनोंकालों में व सब युगों में वर्त्तमान रहतेहैं । ४ । संजयबोले, कि तुम्हारा कल्याणहो, एकतो हम मायाका सेवन नहीं करते, न वृथा अधर्म करते, भक्ति से केवल शुद्धभाव रहतेहैं इसी से शास्त्रहीद्वारा जनार्दन भगवान्को जानतेहैं । ५ । यह सुन धृतराष्ट्रजी दुर्योधनसे बोले

CHAPTER LXIX

"Tell me the reason, Sanjaya," asked *Dhritrashtra*, "how you and not I, know Krishn to be the lord of the three worlds." "You are wanting in knowledge, king," replied Sanjaya "while my knowledge never fails me. The darkness of ignorance in you is not destroyed by knowledge and therefore you donot know Bhagwan Keshav. It is through knowledge that I know Madhusudan Bhgwan Krishn to be the creator, supporter and destroyer of all beings as well as the creator of all, self-create and omnipresent." On hearing this, Dhritrashtra said, "What faith enables you, Sanjaya, to know that Madhusudan exists in the past, present and future?" "May you be happy!" replied Sanjaya, "I do not serve delusion nor

स्तातशरणं गच्छकेशवम् ॥ ६ ॥ दुर्योधन उवाच । भगवान्देवकीपुत्रो लोकांश्चे न्निहनिष्यति । प्रवदन्नर्जुनेसख्यं नाहंगच्छेयकेशवम् ॥ ७ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अवागयं गान्धारि पुत्रस्तेगच्छत्येष सुदुर्मतिः । ईर्षुर्दुरात्मामानीच श्रेयसांवचनातिगः ॥ ८ ॥ गान्धार्युवाच । ऐश्वर्यकामदुष्टात्मन् वृद्धानांशासनातिग । ऐश्वर्यजीविते हित्वापितरंमांचबालिश ॥ ९ ॥ वर्द्धयन्दुर्हृदांप्रीतिं मांचशोकेनवर्धयन् । निहतो भीमसेनेन स्मर्तासिवचनंपितुः ॥ १० ॥ व्यास उवाच । प्रियोसिराजन् कृष्णस्य

हे दुर्योधन हृषीकेश जनार्दन भगवान्की शरणमें प्राप्तहो संजय हमारे बड़े श्रेष्ठहैं इनका भी यही सम्मतहै इससे हे तात केशव भगवान्की शरणको जाव । ६ । यह सुन दुर्योधन बोले, च हे अर्जुन के सखाहोकर भगवान् देवकी के पुत्र लोकभरका नाश करैं पर हम उनकी शरणको न जायँगे । ७ । यह सुन फिर धृतराष्ट्रभी बोले कि, हे गान्धारीभी तुम्हारा यहपुत्र दुर्योधन दुर्बुद्धि नरकको जाता है, क्योंकि यह दुष्टात्मा भगवान् से ईर्षा करता है व महामानी है तथा साधुओं के वचनों का उल्लंघन करता है । ८ । गान्धारी बोलीं, हे ऐश्वर्यकी इच्छासे दुष्टात्मा दुर्योधन, अरे तू वृद्धोंकी आज्ञाका उल्लंघन करताहै, हे मूर्ख ऐश्वर्य व प्राणदोनों छोड़ व हमको व पिताकोभी छोड़ । ९ । व शत्रुओं की प्रीति बढ़ाता हुआ व हमको शोकसे बढ़ाता हुआ जब भीमसेनकी गदासे माराजायगा तब पिताके वचनका स्मरणकरेगा अभीक्यों करेगा । १० । इतनासुन व्यास भगवान्बोले

---

follow unprofitable prtctice of adharm. I lead a pure life of faith which with the help of books enables me to know Janardan." On hearing this, Dhritrashtra said to Duryodhan, "Go under the refuge of Hrishikesh Janardan. Our Sanjaya is a very good man and according to his opinion too you should seek the protection of Keshav." "I shall not seek the protection of the son of *Devaki*, though he may destroy the whole world for the sake of Arjun's friendship" replied Duryodhan. Hearing this, Dhritrashtra said to his wife Gandhari, "Duryodhan, your unwise son, wishes to go to hell; for he is ill-natured enough to envy Krishn; is very boastful and disregards the advice of good men." At this, Gandhari said, "Ambitious and wicked Duryodhan! As you disregard the orders of your superiors, wealth, life, father and mother will leave you. You will remember the words of your father, when struck down with the mace of Bhim you will increase the joy of your enemics and our sorrow." 10. "Hear my words, king Dhritrashtra," said Vyas,

धृतराष्ट्रनिबोधमे । यस्यतेसञ्जयोदूतो यस्त्वांश्रेयसियोक्ष्यते ॥ ११ ॥ जानात्येष हृषीकेशं पुराणंयच्चवैपरम् । शुश्रूषमाणमेकाग्रयं मोक्ष्यतेमहतोभयात् ॥ १२ ॥ वैचित्र वीर्यपुरुषाः क्रोधहर्षसमावृताः । सितानैर्बहुविधैः पाशैर्येनतुष्टाः स्वकैर्धनैः ॥ १३ ॥ यमस्यवशमायान्ति काममूढाः पुनःपुनः । अन्धनेत्रायथैवान्धानीयमानाः स्वकर्मभिः ॥ १४ ॥ एषएकायनःपन्था येनयान्तिमनीषिणः । तंदृष्ट्वामृत्युमत्येति महांस्तत्र नसज्जति ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अङ्गसंजयमेशंस पन्थानमकुतोभयम् । येन गत्वाहृषीकेशं प्राप्नुयांसिद्धिमुत्तमाम् ॥१६॥ संजय उवाच । नाकृतात्माकृतात्मानं

हे राजन धृतराष्ट्र तुम हमारी वार्ता सुनो, तुम कृष्णचन्द्रजीके परम प्रियहो, क्योंकि तुम्हारे संजय ऐसे दूतहैं जोकि तुमको इस संसार फांसी से छुड़ावेंगे । ११ । क्योंकि ये हृषीकेश भगवान्‌को पुराणपुरुष व सबसे परे जानते हैं, व इससे जब एकांत में उनकी सेवा करोगेतो बड़ीभारी भयसे छूटजावगे । १२ । हे धृतराष्ट्र जो पुरुषक्रोधहर्षसे अच्छादितहो नानाप्रकारकी फांसियों से बँधे अपने धनों से नहीं सन्तुष्टहोते दूसरोंका धन लिया चाहतेहैं । १३ । वे लोग कामान्धहो यमराजकी वशमें पड़तेहैं क्योंकि इच्छा उनको मूढ़कर डालती है जैसे अन्धोंके साथ चलनेपर अन्धे गढेमें गिरते हैं । १४ । जिस मार्ग होकर बुद्धिमान लोग जाते हैं वही एक मुख्य मार्गहै व जो उसके विपरीत चलता वह मृत्युको प्राप्त होताहै पर महात्मा उस विपरीत मार्ग में नहीं चलते । १५ । धृतराष्ट्र जी बोलेहे प्रिय संजय हमको वह निर्भय मार्ग बतावो जिसपरचल हमहृषीकेश भगवान्‌को प्राप्तहों जोकि परम उत्तम सिद्धि रूपहैं । १६ । संजयबोले कि जिसने अपनामन नहीं

"You are very dear to Krishn, because you have an ambassador like Sanjaya who can release you from the bondage of the world and who believes Hrishikesh (Krishn) to be the incarnation of Vishnu and above all. You will be released from great fear, if you will attend on him in seclusion. Those who, actuated by anger and pleasures and bound by many ties, are not contented with their own wealth and covet that of others, fall into pits like blind men led by the blind, and, blinded with desirs, fall an easy prey to Yamraj, because they lose their wits on account of greediness. The best way is that which wise men adopt; whoever goes by any other way, meets Death. Great men never tread on the wrong way." "My dear Sanjaya," said Dhritrashtra, "point me out that path free from danger which may lead me to Hrishikesh who is the best of all and perfection personified." "He who has no control over his

जातुविद्यागजार्दनम् । आत्मनस्तुक्रियोपायो नान्यत्रेन्द्रियनिग्रहात् ॥ १७ ॥ इन्द्रियाणामुदीर्णानां कामत्यागोऽप्रमादतः । अप्रमादोऽविहिंसाच ज्ञानयोनिरसंशयम् ॥ १८ ॥ इंद्रियाणांयमेयत्तोभवराजन्नतंद्रितः म्बुद्धिश्चतेमाच्यवतुनियच्छैनांयतस्ततः ॥ १९ ॥ एतज्ज्ञानंविदुर्विप्राध्रुवमिंद्रियधारणम् । एतज्ज्ञानचपन्थाश्चयेनयांतिमनीषिण ॥ २० ॥ अप्राप्यःकेशवोराजन्निंद्रियैरजितैर्नृभिः । आगमाधिगतोयोगाद्वशी तत्त्वेप्रसीदति ॥ २१ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि संजयवाक्ये ऊनसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ६९ ॥

जीता वह पुरुष नित्य भगवान् जनार्दनजी को नहीं प्राप्त होता, इससे अपनी इन्द्रियों को जीतनेसे अन्यत्र कोई उपाय परमेश्वर कृष्णचन्द्र जीकी प्राप्तिके लिये नहीं है । १७ । इससे अप्रमादसे इन्द्रियों को प्रथम इच्छासे अलग करना चाहिये, क्योंकि अप्रमाद व अहिंसा यहीदो ज्ञान के कारणहैं । १८ । इससे राजन् इन्द्रियों के जीतने में यत्नकरो इधर उधर बुद्धि न जाने पावे उसको अपनी वशमें करो । १९ । जो यह ज्ञान ब्राह्मण लोगही जानते हैं जोकि इन्द्रियों को अपनी वशमें करलेते हैं, वस यही ज्ञान व यही मार्गहै जिसकी द्वारा बुद्धिमान् लोग जातेहैं । २० । मुरारि अजितेन्द्रिय पुरुषके वशनहीं होता वहशास्त्र युक्तिके होनेसे ही प्रसन्न होताहै । २१ ।

organs of sense," said Sanjaya, "cannot attain to Janardan the eternal and perfect the control of organs is the only way to reach him You should therefore carefully separate your organs from desires, for carefulness and want of cruelty are the two means of obtaining knowledge Contrive to suppress your passions, king, and donot let your mind wander Gyan is possessed by those Brahmans who control their organs and it is the only way over which the wise walk Murari is not obtainable to those who cannot control their organs, he is pleased with only those who possess a knowledge of the Shastras." 31.



धृतराष्ट्र उवाच । भूयोमेपुंडरीकाक्षं संजयाचक्ष्वपृच्छतः। नामकर्मार्थवित्तात माप्नुयांपुरुषोत्तमम् ॥ १ ॥ संजयउवाच । श्रुतंमेवासुदेवस्य नामनिर्वचनंशुभम्। याव त्तत्राभिजानेहमप्रमेयोहिकेशवः ॥ २ ॥ वसनात्सर्वभूतानां वसुत्वाद्देवयोनितः। वासुदेवस्ततोवेद्यो बृहत्त्वाद्विष्णुरुच्यते ॥ ३ ॥ मौनाद्ध्यानाच्चयोगाच्च विद्धिभा रतमाधवम्। सर्वतत्त्वमयत्वाच्चमधुहामधुसूदनः ॥ ४ ॥ कृषिर्भूवाचकःशब्दोणश्चनि र्वृत्तिवाचकः। विष्णुस्तद्भावयोगाच्च कृष्णो भवतिसात्वतः ॥ ५ ॥ पुंडरीकंपरंधाम

अध्याय ॥ ७० ॥

धृतराष्ट्रजीबोले कि हे संजय तुम भगवान् वासुदेव के नामों व कर्मोंके अर्थ अच्छी तरह जानतेहो इससे हम पूंछते हैं पुंडरीकाक्ष का वर्णन हमसे करो व यहभी बतावो कि हम उनको कैसे पावहों । १ । संजयबोले कि हमने वासुदेवजी के नामोंका अर्थ जो कुछ अवश्य सुनाहै पर जितना अब हमको याद है कहैंगे क्योंकि वासुदेव भगवानतो अप्रमेय हैं वस्तुतः उनके नामोंका अर्थ जानना बहुत कठिनहै । २ । वसै सब भूतप्राणी जिसमें उसे वासुकहते हैं व वासुही जो देव उनको वासुदेव कहतेहैं, व व्यापकहोनेसे विष्णु नामकहाया । ३ । व मा बुद्धिकी वृत्तिको कहतेहैं उसे धवयति कहे दूरकरै जो उसे माधव कहते हैं यद्वा मा लक्ष्मी को कहतेहैं व धव पतिको माकेधवपति को माधव कहतेहैं, यद्वा मौनसे ध्यान से व योगसे माधव कहतेहैं व सर्वतत्त्वमयहोने से मधु अव मधुसूदन कहातेहैं यद्वा मधु पृथिव्यादि । २४ । सत्वों को कहते हैं उनको हनै प्राप्तहो जो उसको मधुहा व मधुसूदन कहते यद्वामधु नाम दैत्य के हनने वाले को मधुहा मधुसूदन कहतेहैं । ४ । कृषिशब्द सत्ताका वाचक है णशब्द निर्वृत्ति का वाचक इसलिये इनदोनों के योग से कृष्णशब्द बनता है इसका अर्थ यह हुआ कि जो सब संसारको अपने में खींचले उसे कृष्ण कहते हैं । ५ । व नित्य अक्षय अव्यय परम

CHAPTER LXX

"You know the meaning of the names and the deeds of Bhagwan Vasudev, Sanjaya," said Dhritrashtra, "tell me what you know of Pundarikash and how to attain to him." "I have heard some of the meanings of the names of Vasudev and I shall tell you the little that I remember, for Vasudev is limitless and it is very difficult to know the meanings of his names. The word Vasudev means and represents the god in whom all beings dwell. He is called Vishnu because he is omnipresent. He is known as Madhav which means the remover of defects from wisdom, the husband of Lakshmi or he who is known with meditation, silence and asceticism. He is known as Madhusudan because he is omnipresent. Madhusudan also means the

नित्यमक्षयमव्ययम् । तद्भावात्पुंडरीकाक्षोदस्युत्रासाज्जनार्दनः ॥ ६ ॥ यतःसत्वान्न च्यवतेयच्चसत्वान्नहीयते । सत्वतःसात्वतस्तस्मादार्षभोवृषभेक्षणः ॥ ७ ॥ नजायते जनित्रायमजस्तस्मादनीकजित् । देवानांस्वप्रकाशत्वाद्दमाद्दामोदरोविभुः ॥ ८ ॥ हर्षात्सुखात्सुखैश्वर्याद्धृषीकेशत्वमश्नुते । बाहुभ्यांरोदसीबिभ्रन्महाबाहु रितिस्मृतः ॥ ९ ॥ अधोनक्षीयतेजातु यस्मात्तस्मादधोक्षजः । नराणामयनाच्चापि ततोनारायणः स्मृतः ॥१०॥ पूरणात्सदनाच्चापि ततोसौपुरुषोत्तमः । असतश्चसतश्चैव सर्वस्यप्रभ-

धामको पुंडरीक कहते हैं उस के भाव से पुण्डरीकाक्ष कहे जाते हैं व पुंडरीक कमलको कहते उस के समान आंखिनेत्र जिसकेहों वह पुंडरीकाक्ष कहाता यह अर्थतो प्रसिद्धही है व जनकहे चोरजनों को त्रासदेने से जनार्दन कहाते हैं, यद्वा जनअर्दन याचन करें सुकृतादि जिस से उसे जनार्दन कहते हैं । ६ । जिससे कि सत्व से च्युत नहीं होते व जो सत्व से हीन नहीं होता उसे सत्वत कहते व सत्वतही को सात्वत कहते व वृषधर्म को कहते उस के कहनेवाले को वृषभकहते सो वेदहुआ व वही वृषभ वेदही ईक्षण नेत्र जिसकेहो वह वृषभेक्षण कहाता है यहभी विष्णुका नामहै । ७ । व जो उत्पन्न नहीं होता उसे अजकहते, व अनीक कहे सेनाको जो जीतता उसे अनीकजित् कहते, व देवताओं के मध्यमें अपही प्रकाशित होने से दामोदर कहाये यद्वा दामरस्सी बांधीगई जिसके उदर में उसे दामोदर कहते हैं । ८ । हर्ष व सुखके ईशहोने से हृषीकेश कहाये व अपने बाहुओं से द्यावापृथिवी को धारण करने से महाबाहु कहाते हैं ।९। व जो अवनीसेको कभी न क्षीणहो उसे अधोक्षज कहते हैं व नरोंका अन्तावस्था में अयनघर जिसमें होता वह नारायण कहाता है । १० । पूर करनेवाले को पुरु या पुरु

destroyer of elements or of the demon named Madhu. Krishn is so called because he draws the world towards himself. Pundarikash means the lord of the eternal world or having his eyes like those of a lotus flower. Janardan is one who punishes thieves or one from whom people obtain their desires. From being eternal he is called Satwat. Vrishabhekshah is one who has the Vedas or expounders *of dharm for his eyes. He is Aj because he is free from birth.* From being a conquerer of anik or armies he is known as Anikjit. He is known as Damodar which means a person who in luminous among gods or the one round whose belly a rope is tied. From being the lord of joy and happiness he is called Hrishikesh. He is known as Mahabahu because he supports the whole earth with his arms. He is Adhokshaj, because he never falls down and Narayan, because he

वाप्ययात् ॥ ११ ॥ सर्वस्यसस्सदाज्ञानात् सर्वमेतंप्रचक्षते । सत्येप्रतिष्ठितःकृष्णः सत्यमत्रप्रतिष्ठितम् ॥ १२ ॥ सत्यात्सत्यंतुगोविंदस्तस्मात्सत्योपिनामतः । विष्णुर्विक्रमणाद्देवो जयनाज्जिष्णुरुच्यते ॥ १३ ॥ शाश्वतत्वादनंतश्च गोविंदोवेदनाद्गवाम् । अतत्त्वंकुरुतेतत्त्वं तेनमोहयतेप्रजाः ॥ १४ ॥ एवंविधोधर्मनित्यो भगवान्मधुसूदनः । आगंताहिमहाबाहु रानृशंस्यार्थमच्युत ॥ १५ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वे संजयवाक्ये सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥

कहते हैं व सीदन्ति कहे टिकतेहों सब जिसमें बसे स कहतेहैं व इनदोनोंके योगसे पुरुष बना व पुरुषही जो उत्तम वही पुरुषोत्तम कहाताहै व पुरुषों में उत्तम पुरुषोत्तम यह अर्थतो प्रसिद्धही है व असत्सत् सब के उत्पत्ति व नाश के स्वामी होने से सर्वभी नाम है । ११ । व धर्म्म में कृष्ण प्रतिष्ठित हैं व धर्म्म कृष्ण में प्रतिष्ठित है । १२ । व सत्य असत्य दोनों गोविन्दही हैं इस से सत्यभी नामहै व विक्रमण करनेसेभी विष्णुनाम है व जीतने से जिष्णुनाम हुआ । १३ । व अन्त न होने से अनन्त नामहै व गाइयों व इन्द्रियों के जानने से गोविन्द नामहुआ व असत्य मिथ्याभूत जगत्को सत्य सत्यसा करने से प्रजाओं को मोहित करते हैं । १४ । इस प्रकार के नित्यभगवान् मधुसूदन महाबाहु अच्युत कृष्णचन्द्रभी अक्रूरता प्रगट करने के लिये तुमलोगों को समझाने को आवेंगे १५ ॥

---

is the refuge of men. He is known as Purushottam or best of purshes which means the lord in whom all beings find support He is known as Sarva, because he is the lord of moveables and immoveables. Krishn is firm on dharm and dharm is honoured in Krishn. Govind is known as Satya, because all the living and lifeless beings stay in him. He is called Vishnu and Jishnu which means full of prowess and conquerer respectively. From being endless he is called Anant and from having a knowledge of cows and organs of senses he is called Govind. He causes delusion by making the false world look like the real one. The eternal god, Madhusudan of great arms, known also as Achyut or Shree Krishn will himself condescend to come here. and admonish you."15.

धृतराष्ट्र उवाच । चक्षुष्मतां वै स्पृहयामि संजय द्रक्ष्यन्ति ये वासुदेवं समीपे । विभ्राजमानं वपुषा परेण प्रकाशयन्तं प्रदिशो दिशश्च ॥ १ ॥ ईरयन्तं भारतीं भारतानामभ्यर्चनीयां शंकरीं सृंजयानाम् । बुभूषद्भिर्ग्रहणीयामनिन्द्यां परासूनामग्रहणीयरूपाम् ॥ २ ॥ समुद्यन्तं सात्वतमेकवीरं प्रणेतारमृषभं यादवानाम् । निहन्तारं क्षोभणं शात्रवाणां मुष्णन्तं च द्विषतां वै यशांसि ॥ ३ ॥ द्रष्टारो हि कुरवस्तं समेता महात्मानं शत्रुहणं वरेण्यम् । ब्रुवन्तं वाचमनृशंसरूपां वृष्णिश्रेष्ठं मोहयन्तं मदीयान् ॥ ४ ॥ ऋषिं सनातनतमं विपश्चितं वाचः

अध्याय ७१ ॥

धृतराष्ट्रजी ने कहा कि हे संजय हम नेत्रवालों के भाग्यकी बड़ाई करते हैं जो कि उत्कृष्ट शरीरसे सब दिशा व विदिशों को प्रकाशित करते शोभायमान कृष्णचन्द्रजी को समीप से देखेंगे हमारे तो नेत्रही नहीं जो समीपभी आवेंगे तोभी न देख पावेंगे । १ । और फिर पांडवों के पूज्यवाणी कहते हुये कृष्णचन्द्रजी को कौरव लोग देखेंगे, वह वाणी सृंजयवंशियों की कल्याण कारिणी होगी, व जो उसको भूषित करेंगे उनके ग्रहण करनेवाली होगी, व जो मृतक होजायँगे उन के ग्रहण के योग्य न होगी व सब प्रकार अनिन्द्य होगी । २ । कृष्णचन्द्रजी जब यहां आवेंगे निरन्तर प्रकाशित एकवीर सब के प्रेरक यादवों में श्रेष्ठ शत्रुओं के निहन्ता व क्षोभक होंगे व वैरियों का यश छीनलेंगे ।३। ऐसे वरदान देनेवाले, महात्मा, शत्रुनाशक, व क्रूरतारहित वाणी बोलते हुये व हमारे पुत्रादिकों को मोहित करते हुये वृष्णिवंशियों में श्रेष्ठ कृष्णचन्द्रजी को कौरव लोग देखेंगे धन्य हैं । ४ । व सनातन ऋषि नारायण आत्मज्ञ संन्यासियों की वाणी के समुद्ररूप

CHAPTER LXXI

"I praise the good luck of those who have eyes," said Dhritrashtra to Sanjaya, "because they will have a close view of Shree Krishn the giver of light to all the world with his auspicious body. I shall not be able to see him on account of my blindness. The Kauravas will hear the speech of Krishn the worshipped of the Pandavas. His words will do good to the descendants of Srinjaya and they will embellish them by their acceptance; his words will not be acceptable to those who are to die and will be free from blemish. Shree Krishn of eternal glory, the best of warriors, admonisher of all and best of the Yadavas will be a terror and destroyer of glory to his enemies when he comes here. The Kauravas will be happy to see Shree Krishn the giver of boons, great destroyer of enemies, who will over

समुद्रंकलशंयतीनाम् । अरिष्टनेमिंगरुडंसुपर्णं हरिंप्रजानांभुवनस्यधाम ॥ ५ ॥ सहस्र शीर्षंपुरुषं पुराणमनादिमध्यान्तमनन्तकीर्त्तिम् । शुक्रस्यधातारमजञ्च नित्यंपरंपरेषां शरणंप्रपद्ये ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यनिर्माणकरंजनित्रं देवासुराणामथनागरक्षसाम् । नराधिपानां विदुषांप्रधान मिन्द्रानुजंतं शरणंप्रपद्ये ॥ ७ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि यानसन्धिपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये
एकसप्ततितमोऽध्यायः ७१ ॥

समाप्तञ्चयानसन्धिपर्व ॥

व कलश समान करमें ग्रहण करने के योग्य, मर्यादा पालक, जाति से गरुड़रूप शोभन पक्षवाले, प्रजाओं के हरनेवाले भुवन के स्थान । ५ । सहस्र शिरवाले, पुराण पुरुष, आदि मध्यान्त रहित अनन्त कीर्ति, बीजके स्थापन करनेवाले, अज, नित्य, परों के भी पर ऐसे कृष्णचन्द्रजी की शरणको मैं प्राप्तहूं व तीनों लोकों के निर्माण करनेवाले व देवता सुर नाग राक्षसों के भी उत्पन्न करनेवाले राजाओं के व पण्डितों के प्रधान व इन्द्र जी के छोटेभाई वामनरूप ऐसे कृष्णचन्द्रजी की मैं शरण में हूं ७ ॥

power our sons with his kind words. May I seek refuge with Shree Krishn the ancient rishi Narayan, ocean of the speech of the self knowing rishis, worthy of being held like a holy vessel, keeper of boundaries, of beautiful plumage like that of Garur, destroyer and resort of all beings, thousand-headed, ancient being, without beginning and middle, of boundless fame, scatterer of seeds, free from birth, eternal and above all! I shall seek refuge with Krishn the creator of the three worlds as well as of gods, nagas and rakshases, chief of kings and learned men and younger brother of Indra who assumed the guise of the Dwarf." 7.



ब्रवीत् ॥६॥ तन्मतंधृतराष्ट्रस्य सोस्यात्माऽविवृततरः । यथोक्तंदूतआचष्टे वध्यःस्यादन्यथाब्रुवन् ॥७॥ अप्रदानेनराज्यस्य शांतिमस्मासुमार्गति । लुब्धःपापेनमनसाचरन्नसमयात्मनः ॥ ८ ॥ यत्तद्द्वादशवर्षाणि वनेषुह्युषितावयम् । छद्मनाशरदंचैकां धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ ९ ॥ स्थातानसमयेतस्मिन् धृतराष्ट्रइतिप्रभो । नाहास्मसमयं कृष्ण तद्धिनोब्राह्मणाविदुः ॥ १० ॥ गृद्धोराजाधृतराष्ट्रः स्वधर्मनानुपश्यति । वश्यत्वात्पुत्रगृद्धित्वान्मन्दस्यान्वेति शासनम् ॥ ११ ॥ सुयोधनमते तिष्ठन्राजास्मासुजनार्दन । मिथ्याचरतिलुब्धः सनचरन्नहिप्रियमात्मनः ॥ १२ ॥ इतोदुःखतरंकिंनु यदहं

सो कहिये जो आप कहोगे हम सब करेंगे । ६ । युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्णचन्द्र आपने पुत्र सहित धृतराष्ट्र का विचार सुना जो संजय ने हम से कहा यह सब धृतराष्ट्रही का विचार है क्योंकि संजयकी वार्त्ता से धृतराष्ट्र के मनकी बात खुलगई, दूतवो मालिककी इच्छा के अनुकूल कहताही है जो जिसका दूत है उस के विपरीत कहै सो मारडालने के योग्य समझा जाय । ८ । देखिये विनाराज्य दियेही हम लोगों से शान्ति चाहते हैं ऐसे लोभीहैं कि पापमन से अपने समान औरकोभी नहीं जानते । ९ । देखो हमलोग धृतराष्ट्रही की आज्ञा से बारह वर्षतक तो वनमें रहे व एक वर्ष छल से छिपकर विराट नगर में रहे । १० । अब चौदहां वर्ष आया तौभी धृतराष्ट्रही राज्यपर टिकेरहेंगे व हमको जो कहाथा कि चौदहें वर्ष अपना राज्य लेना सो हमलोग अबभी राज्य न लें पर हम यह बात न मानेंगे क्योंकि ब्राह्मणों ने हमसे कह दिया है कि अब राज्य तुमको मिलनाचाहिये । ११ । लोभी राजा धृतराष्ट्र अपना धर्म नहीं देखते क्योंकि पुत्र के वशी भूत हैं इसी से उसी मन्दकी आज्ञा में चलते हैं ।१२। हे कृष्ण, सुयोधनही के मत में टिककर राजा हमलोगों के विषय में मिथ्या आचरण करते

heard, Krishn," said Yudhishthir, "the opinion of Dhritrashtra and his son which Sanjaya told us. It was the opinion of Dhritrashtra himself as was evident from the words of Sanjaya; for an ambassador in the mouthpiece of his principal, and he is worthy of death, if he acts otherwise. Dhritrashtra desires to secure peace without giving us a share of the kingdom. He is greedy and wicked enough to disregard others. It was by his order that we remained twelve years in exile and passed the thirteenth year in concealment at Viratnagar.10. Even in this fourteenth year he does not like to give up our share, although he promised to give it in the fourteenth year. We can not bear this; for Brahmans have told us that we are now entitled to our estate. King Dhritrashtra has no regard for dharm, because he is greedy and under the influence of his son, and acts according to

अथ भगवद्यानपर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । सञ्जयेप्रतियातेतु धर्मराजोयुधिष्ठिरः । अभ्यभाषतदाशार्हं वृषभंसर्वसात्वताम् ॥ १ ॥ अयंसकालःसम्प्राप्तो मित्राणांमित्रवत्सल । नचत्वदन्यंपश्यामि योनआपत्सुतारयेत् ॥ २ ॥ त्वांहिमाधवमाश्रित्य निर्भयामोघदर्पितम् । धार्त्तराष्ट्रंसहामात्यं स्वयंसमनुयुंक्ष्महे । ३॥ यथाहिसर्वास्वापत्सुपासि वृष्णीनरिन्दम । तथातेपाण्डवारक्ष्याः पाह्यस्मान्महतोभयात् ॥ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच । अयमस्मिमहाबाहो ब्रूहियत्तेविवक्षितम् । करिष्यामिहितत्सर्वं यत्त्वंवक्ष्यसिभारत ॥ ५ ॥ युधिष्ठिर उवाच । श्रुतंतेधार्त्तराष्ट्रस्य सपुत्रस्यचिकीर्षितम् । एतद्धिसकलंकृष्ण संजयोमांयद-

अध्याय ७२ ॥

इतनी कथासुन जनमेजयजी ने वैशम्पायनजी से पूंछा कि जब संजय पाण्डवों के यहां से कौरवों के पासको गये तो हमारे पिताजी के पितामह पाण्डवों ने क्या किया यह हम सुना चाहते हैं हमसे कहिये । १ । वैशम्पायनजी बोले कि संजय के चले जाने पर धर्म के पुत्र राजा युधिष्ठिरजी सब भक्तों व सात्वत वंशियों के पालक कृष्णचन्द्रजी से बोले । २ । कि हे मित्र वत्सल यह ऐसा काल आया है जिस में आपको छोड़ दूसरे को नहीं देखते जो इस विपत्ति से हमलोगों को तारे । ३ । हे माधव, आपके आश्रित हो निर्भय होकर भी हमलोग, मिथ्याभिमानी अमात्य सहित दुर्योधन से प्रार्थना करें । ४। जैसे सब विपत्तियों में वृष्णिवंशियों की रक्षाकरते हो वैसेही आपको पाण्डव लोगभी रक्षा करने के योग्यहैं इससे इस महाभय से हम लोगोंकी रक्षा कीजिये । ५ । इतना सुन श्रीभगवान् बोले कि हे महाबाहो हम तो यहां प्राप्तही हैं जो आपको कहना हो

CHAPTER LXXII

Having heard the above, Janamejay said to Vaishampayan that he wished to hear about the deeds of his great-grandfathers, the Pandavas, after the departure of Sanjaya to the Kauravas. Vaishampayan said that after the departure of Sanjaya, Yudhishthir the son of Dharm thus addressed Krishna Chandra the protector of devotees and virtuous men:—"It is now time, benevolent friend, that we look to you as the only man that can relieve us from the impending danger. Living fearlessly under your care, must we humiliate ourselves before Duryodhan the empty boaster and his counsellors? You should protect the Pandavas as you do the Vrishnis in every difficulty and I hope you will free us from the great danger." To this Krishn replied, "I am here, king, to oblige you in every respect." "You

ब्रवीत् ॥६॥ तन्मतंधृतराष्ट्रस्य सोस्यात्माऽविवृतान्तरः । यथोक्तंदूतआचष्टे वध्यःस्यादन्यथाब्रुवन् ॥७॥ अप्रदानेनराज्यस्य शांतिमस्मासुमार्गति । लुब्धःपापेनमनसाचरन्नसमात्मनः ॥ ८ ॥ यत्तद्द्वादशवर्षाणि वनेष्ठ्युषितावयम् । छद्मनाशरदंचैकां धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ ९ ॥ स्थातानसमयेतस्मिन् धृतराष्ट्रइतिप्रभो । नाहास्मसमयं कृष्ण तद्धिनोब्राह्मणाविदुः ॥ १० ॥ गृद्धोराजाधृतराष्ट्रः स्वधर्मनानुपश्यति । वश्यत्वात्पुत्रगृद्धित्वान्मन्दस्यान्वेति शासनम् ॥ ११ ॥ सुयोधनमतेतिष्ठन्राजास्मासुजनार्दन । मिथ्याचरतिलुब्धः सन्चरन्नाहितमिवात्मनः ॥ १२ ॥ इतोदुःखतरंकिंनु यदहं

सो कहिये जो आप कहोगे हम सब करेंगे । ६ । युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्णचन्द्र आपने पुत्र सहित धृतराष्ट्र का विचार सुना जो संजय ने हम से कहा यह सब धृतराष्ट्रही का विचार है क्योंकि संजयकी बातों से धृतराष्ट्र के मनकी बात खुलगई, दूततो मालिककी इच्छा के अनुकूल कहताही है जो जिसका दूत है उस के विपरीत कहे तो मारडालने के योग्य समझा जाय । ८ । देखिये बिनाराज्य दियेही हम लोगों से शान्ति चाहते हैं ऐसे लोभीहैं कि पापमन से अपने समान औरकोभी नहीं जानते । ९ । देखो हमलोग धृतराष्ट्रही की आज्ञा से बारह वर्षतक तो बनमें रहे व एक वर्ष छल से छिपकर विराट नगर में रहे । १० । अब चौदहां वर्ष आया तौभी धृत-राष्ट्रही राज्यपर टिकेरहेंगे व हमको जो कहाथा कि चौदहें वर्ष अपना राज्य लेना सो हमलोग अबभी राज्य न लें पर हम यह बात न मानेंगे क्योंकि ब्राह्मणों ने हमसे कह दिया है कि अब राज्य तुमको मिलनाचाहिये । ११ । लोभी राजा धृतराष्ट्र अपना धर्म नहीं देखते क्योंकि पुत्र के वशीभूत हैं इसी से उसी मन्दकी आज्ञा में चलते हैं ।१२। हे कृष्ण, सुयोधनही के मत में टिककर राजा हमलोगों के विषय में मिथ्या आचरण करते

---

heard, Krishn," said Yudhishthir, "the opinion of Dhritrashtra and his son which Sanjaya told us. It was the opinion of Dhritrashtra himself as was evident from the words of Sanjaya; for an ambassador in the mouthpiece of his principal, and he is worthy of death, if he acts otherwise. Dtritrashtra desires to secure peace without giving us a share of the kingdom. He is greedy and wicked enough to disregard others. It was by his order that we remained twelve years in exile and passed the thirteenth year in concealment at Viratnagar. 10. Even in this fourteenth year he does not like to give up our share, although he promised to give it in the fourteenth year. We can not bear this; for Brahmans have told us that we are now entitled to our estate. King Dhritrashtra has no regard for dharm, because he is greedy and under the influence of his son, and acts according to

मातरंततः । शंविभाढुंनशक्नोमि मित्राणांवाजनार्दन ॥ १३ ॥ काशिभिश्चेदिपांचालै र्मत्स्यैश्चमधुसूदन । भवताचैवनाथेन पञ्चग्रामावृतामया॥ १४ ॥ अविस्थलंवृकस्थलं माकन्दीवारणावतम् । अवसानञ्चगोविंद कञ्चिदेवात्रपंचमम् ॥ १५ ॥ पञ्चनस्तातदीयन्तां ग्रामावानगराणिवा । वसेमसहितायेषु माचनोभरतानशन् ॥ १६ ॥ नचतानपिदुष्टात्मा धार्त्तराष्ट्रोनुमन्यते । स्वाम्यमात्मनि मत्वासावतोदुःखतरंनुकिम् ॥ १७ ॥ कुलेजातस्यवृद्धस्य परवित्तेषुगृद्ध्यतः । लोभ प्रज्ञानमाहन्ति प्रज्ञाहन्ति हताह्रियम् ॥ १८ ॥ ह्रीर्हताबाधतेधर्मं धर्मोहन्तिहतःश्रियम् । श्रीर्हतापुरुषंहन्तिपुरुष स्याधनंवधः ॥ १९ ॥ अधनाद्धिनिवर्तन्ते ज्ञातयःसुहृदोद्विजाः । अपुष्पादफलाद्वृक्षा

हैं व मारे लोभ के अपना प्रियकरते हैं । १३ । अब इस से अधिक दुःख हमको कौन होगा कि हमारी माता वहांहीं पड़ी हैं व हम उनका सम्भार नहीं कर सके न अपने इष्टमित्रोंका पालन पोषण करसके हैं । १४ । देखिये काशी के राजा चंदेरी के राजा व मत्स्यदेश व पंचालदेशके राजा व आप ऐसे भारीसहायक तिसपरभी हमने उनसे केवल पांचग्राम मांगे । १५ । कि आविस्थल, वृकस्थल, माकन्दी, व वारणावत, व पांचवां और जो तुम्हारे मनमेंहो सो दो ।१६। बस हमको पांचहीदो चाहे ग्रामदो वा नगरदो, कि जिन में हम पांचोभाई बसैं व युद्धहोनेसे ये भीष्मपितामहादि न मारेजायँ । १७ । पर दुष्टात्मा दुर्योधनने पांचभी देना न अंगीकार किया, अपनेही को वह राजा मानता है फिर इससे अधिक दुःख हमको और कौन होगा । १८ । कुलीन के घरमें उत्पन्न वृद्ध जो दूसरे के धनकी इच्छा करता है, तो उसका लोभ प्रज्ञान का नाश करता है, व प्रज्ञा लज्जाका नाश करती है । १९ । व लज्जा जब हत होजाती है तो धर्म को बाधती है, व जब धर्म

the whims of that wicked man. Being influenced by Duryodhan, Dhritrashtra thinks ill of us and thinks of his own good alone out of greediness. What grief can be greater to us than that our mother is left there and we cannot support her, nor we can do good to our friends. We asked only five villages in spite of having for our allies great men like the kings of Chandeli, Matsya and Panchal as well as yourself. We wanted only Aviethal, Vrikasthal, Makandi, Varnavat and one other, whichever they might spare. We wanted only five villages or cities so that we five brothers might settle in them and people like Bhishm the grandfather may not die in battle; but wicked Duryodhan is not willing to give us even that much. He thinks himself the rightful king. What grief can be greater than this? Greediness destroys wisdom of him who being born in a noble family covets the property of another. with the loss of wisdom one

घषाकृष्णपनाशिणः ॥ २० ॥ एतच्चमरणंतात यन्मचःपतितादिव । ज्ञातयोविनिवर्तन्ते प्रेतसत्त्वादियासवः ॥ २१ ॥ नातःपापीयसीं काञ्चिदवस्थां शम्बरोऽब्रवीत् । यत्रनैवाद्यनप्रातर्भोजनं प्रतिदृश्यते ॥ २२ ॥ धनमाहुःपरंधर्मं धनेसर्वंप्रतिष्ठितम् । जीवन्तिधनिनोलोके मृताघेत्वधनानराः ॥ २३ ॥ येधनादपकर्षन्ति नरंस्वबलमाश्रिताः । तेधर्ममर्थंकामञ्च प्रमथ्नन्तिनरंचतम् ॥ २४ ॥ एतामवस्थांप्राप्यैके मरणं वव्रिरेजनाः । ग्रामायेकेवनायैके नाशायैकेप्रवव्रजुः ॥ २५ ॥ उन्मादमेकेपुष्यन्ति यान्त्यन्येद्विषतांवशम् । दास्यमेकेचगच्छन्ति परेषामर्थहेतुना ॥ २६ ॥ आपदेवास्य

हत होजाता है वो लक्ष्मी का नाश करता है, व लक्ष्मी जब हत होजाती है वो पुरुषका नाश करती है, वस जब पुरुष के पास धन न दुआवो जानो वह मरगया । २० । क्योंकि निर्द्धन पुरुषके यहां से जाति के लोग, मित्र व ब्राह्मण लोग बिना सत्कार पाये लौटजातेहैं जैसे भफल वृक्षसे पक्षी लोग लौटजातेहैं । २१ । हे तात यह हमारा मरण है कुछ जीवन नहीं है जो कि पतित के समान हमारे यहां से ज्ञाति के लोग निवृत्त होजाते हैं जैसे मृतक शरीरसे प्राणनिवृत्त होजाते हैं । २२ । शम्बरासुरने कहा है कि इससे अधिक पापी योनि कोई नहीं जिसको न आज भोजन मिला है न प्रातःकाल मिलने की आशा है । २३ । धनही को परम धर्म कहते हैं क्योंकि धन में सब कुछ टिका रहता है इससे जिनके धन है वही लोक में जीतेहैं व जिनके पास धन नहीं है वे पुरुष मरेही हैं । २४ । व जो पुरुष बलवान् किसी को धनसे अलग खींचकर डालदेते हैं, उन्हीं ने उस पुरुष के धर्म अर्थ काम सब जानों मथडाले व उस पुरुषकोभी । २५ । इस अधम अवस्थाको पाय बहुतसे मृतकही होजातेहैं व कोई अपना ग्राम छोड़ दूसरे ग्रामको भागजाते हैं कोई वनको चलेजातेहैं व कोई नाशही होजातेहैं । २६ । व कोई

---

becomes devoid of shame. Shamelessness destroys dharm; the loss of dharm means the loss of wealth and the loss of wealt is the loss of the person himself. 20. For at the house of a poor man relations, friends and Brahmans find no hospitality and return like birds from a fruitless tree. It is no life to us when relations turn back from us *as from an outcast fellow or as life departs from a dead body.* Shambarasur says that the greatest sinner is he who has neither had food to day nor has any prospect of it tomorrow. Wealth is the best dharm, for in it stay all things; those only that have wealth may be said to live in the world, others are like the dead. A strong man depriving another of wealth, deprives him of *dharm, arth, kam*

मरणात्पुरुषस्य गरीयसी । श्रियोविनाशस्तद्ध्यस्य निमित्तंधर्मकामयोः ॥ २७ ॥ यदस्यधर्म्यंमरणं शाश्वतंलोकवर्त्मतत्। समन्तात्सर्वभूतानां नतदत्येतिकश्चन ॥ २८ ॥ नतथाबाध्यतेकृष्ण प्रकृत्यानिर्धनोजनः । यथाभद्रांश्रियंप्राप्य तयाहीनःसुखैधितः ॥ २९ ॥ सतदात्मापराधेन सम्प्राप्तोव्यसनंमहत् । सेंद्रान्गर्हयते देवान्नात्मानञ्च कथञ्चन ॥ ३० ॥ नचास्य सर्वशास्त्राणि प्रभवन्तिनिवर्हणे । सोभिक्रुध्यतिभृत्यानां सुहृदश्चाभ्यसूयति ॥ ३१ ॥ तत्तदामन्युरेवैति समूयःसंप्रमुह्यति । समोहवशमापन्नः क्रूरंकर्मनिषेवते ॥ ३२ ॥ पापकर्मतयाचैव सङ्करंतेनपुष्यति । सङ्करोनरकायैव सा

विक्षिप्तही होजाते, कोई शत्रुओंकी वश में जा पड़तेहैं कोई किसीके दासहोजाते हैं कि इमको यहांसे कुछ धन मिलेगा । २७ । इसतरहके मरणसे पुरुषको आपत् बड़ी है क्योंकि जब धनका नाशहुआ जोकि धर्म व कामका निमित्त है तो फिर उससे अधिक विपत्ति क्याहोगी । २८ । इस से तो जो निर्द्धनहोकर मरनाहो वो प्रथमही मरजाय यह अच्छाहै, क्योंकि सबके आगे दुर्दशा भोगकर वो न मरनापड़े । २९ । हेकृष्ण जो पुरुष सदाका निर्द्धनही है वह उसप्रकार दुःखित नहीं होता जैसा कि प्रथम धनवान्था व फिर दरिद्र होगया वह दुःखित होता है । ३० । यद्यपि प्राणी अपनेही अपराध से बड़ा दुःखपाताहै, पर दुःखित होनेपर इन्द्रादि देवताओंकी निंदा करताहै अपनी निंदा नहीं करता । ३१ । निर्द्धन पुरुषको ऐसी मति होजाती है कि उसे सब शास्त्रभी नहीं रोकसके, और वह सेवकों को रिसाया करता व सुहृदोंकी निंदा कियाकरता है । ३२ । उसको सदा क्रोधही घेरे रहता, इससे वह मोहित बनारहताहै व मोहकी वश में रहने

---

and life. People deprived of wealth commit suicide, migrate to other places, go to forests or die. Some become insane, others fall into the power of their enemies, while others sell themselves into slavery for the sake of wealth. It is the worst sort of death, for no calamity can be greater than the loss of wealth which is the means of carrying on our religious and worldly affairs. Death is preferable to living a life of misery in poverty. One accustomed to a life of poverty from the beginning does not feel the pangs of it like him who leading a life of ease and plenty is of a sudden deprived of his wealth. 30. People suffering for their own sins are apt to blame Indra and other gods instead of blaming themselves. The knowledge of all the shastras cannot restore peace of mind to one deprived of wealth: he teases his servants and speaks ill of his relations. He is always upset with anger and being thus deprived of the powers of his senses he

काष्ठापापकर्मणाम् ॥ ३१ ॥ नचेत्प्रबुध्येत्कृष्ण नरकायैवगच्छति । तस्यप्रबोधःप्रज्ञैव प्रज्ञाचक्षुस्तरिष्यति ॥ १४ ॥ प्रज्ञालाभेहिपुरुषः शास्त्राण्येवान्ववेक्षते । शास्त्रनिष्ठः पुनर्धर्मं तस्यह्रीरङ्गमुत्तमम् ॥ १५ ॥ ह्रीमानहिपापं प्रद्वेष्टितस्य श्रीरभिवर्धते । श्रीमान्सयावद्भवति तावद्भवतिपूरुषः ॥ १६ ॥ धर्मनित्य प्रशांतात्मा कार्ययोगवहःसदा। नाधर्मेकुरुतेबुद्धिं नचपापेप्रवर्तते ॥ १७ ॥ अह्रीकोवाविमूढोवा नैवस्त्रीनपुनःपुमान्। नास्याधिकारोधर्मेऽस्ति यथाशूद्रस्तथैवसः ॥ १८ ॥ ह्रीमानवतिदेवांश्च पितॄनात्मानमेवच । तेनामृतत्वंव्रजति साकाष्ठापुण्यकर्मणाम् ॥ १९ ॥ तदिदंमयितेदृष्टं प्रत्यक्षं

से सदा क्रूरही कर्मोंकी सेवाकरताहै । ११ । व पाप कर्म करते २ फिर वह वर्णसंकर होजाता व वर्णसंकर पसे नरकको लेजाता, यह हाल पापकर्मही से होताहै । १४ । जो उसने ऐसी अवस्था में विचार न किया तो नरक को जाताही है, व प्रबोध प्रज्ञा से ही होताहै इससे जो प्रज्ञाचक्षु होगा वहीतरेगा नहीं तो डूबने में कौन सन्देह है। १५ । क्योंकि जो पुरुष के प्रज्ञा होती है तो वह शास्त्रों कोही देखता है व जब शास्त्र में निष्ठा हुई तो फिर वह धर्मकरने लगता है, जब धर्म करने लगा तो उसे बुरे कामों के करने में लज्जा होजाती है । १६ । व जो लज्जावान् होताहै वह पापोंसे वैर करने लगताहै जो पापसे वैरकरताहै उस के धन फिर बढ़ताहै जब धनवान्होगया तो फिर पुरुष होजाताहै । १७ । व जब नित्य धर्म करने लगता, तो प्रशान्तात्मा होजाता व फिर सब कार्य के योग्य होजाता, व फिर वह कभी अधर्म करने में बुद्धिही नहीं करता, व पाप कर्म में तो कभी टिकताही नहीं । १८ । व जो निर्लज्जहोजाता वह विमूढ न स्त्रीमें गिनाजाता न पुरुष में किन्तु वह वृक्षादि स्थावरोंकी गणनामें गिनाजाता व पशुओं के तुल्यहोजाता, इस से उसका धर्म करनेका अधिकारही नहीं रहजाता जैसे शूद्र वैसाही वहहोजाताहै।१९

---

commits cruel acts. From repeatedly committing sins, he becomes degenerated and as a result of his wicked deeds he falls into hell. He will have to go to hell if he does not become wise under misery and he is sure to sink if he is not wise, as none can awaken without wisdom. A person, if he has wisdom, will read the shastras, and when he has faith in the shastras, he begins to lead a virtuous life and so to feel repugnance to wicked deeds. And when he feels ashmed of doing sins his wealth increases and with the increase of wealth he regains his manhood. He regains peace of mind when he continues again his daily duties enjoined by religion and becomes fit for doing all other things. From that time forward he feels no inclination to the doing of sin and never commits wicked actions. A

मधुसूदन । यथाराज्यात्परिभ्रष्टो वसामिवसतीरिमाः ॥ ४० ॥ तेवयंनश्रियंहातुमळ न्यायनकेनचित् । अत्रनोयतमानानां वधश्चेदपिसाधुनत् ॥ ४१ ॥ तत्रनःप्रथम कल्पो यद्वयंतेचमाधव । प्रशान्ताःसमभूताश्च श्रियंतामश्नुवीमहि ॥ ४२ ॥ तत्रैवापरमाकाष्ठा रौद्रकर्मक्षयोदया । यद्वयंकौरवान्हत्वा तानिराष्ट्राण्यवाप्नुम. ॥ ४३ ॥ येपुन स्युर- सम्बद्धा अनार्याः कृष्णशत्रवः । तेषामप्यवधःकार्यः किंपुनर्येस्युरीदृशाः ॥ ४४ ॥ ज्ञातयश्चैवभूयिष्ठाः सहायागुरवश्चनः । तेषांवधोपिपापीयान् किंनुयुद्धेदित शोभनम् ॥ ४५ ॥ पापःक्षत्रियधर्मोयं वयञ्चक्षत्रबन्धवः । सनःस्वधर्मोधर्मोवा वृत्तिरन्याविग-

लज्जावान् पुरुष देवताओंकी रक्षाकरता, व पितरों की रक्षा करता व अपनी भी करता ही है, व इसी से अमृतत्व को प्राप्तहोजाता यस पुण्यकर्म करने वालोंकी यही काष्ठा है । ४० । सो लज्जावांन्‌होनेहम में जैसा है वह आपने प्रत्यक्षही देखा, कि लज्जावानही होने के कारण राज्यसे परिभ्रष्टहो अब यहां पड़े हैं । ४१ । इस से अब हम लोग श्री को किसीप्रकार नहीं छोंड़सके इस राज्य लक्ष्मी के लेने के यत्न करने में जो हम लोगों का बधभी होजायतोभी अच्छाही है । ४२ । सो इस विषय में तो हमारा मुख्य पक्षहै लक्ष्मी पावैंहींगे क्योंकि हम तुम्हारे हैं, व फिर प्रशान्त चित्त हैं समता को प्राप्त हैं, फिर उस राज्य लक्ष्मी को प्राप्तही होंगे । ४३ । परन्तु यह बड़ी .रौद्रगति है कि जो हमलोग अब कौरवों को मारही कर राज्य लक्ष्मी पावेंगे यों न पावेंगे । ४४ । क्योंकि जो लोग अपने सम्बन्धवालेभी नहीं व शत्रुता करतेहों सोभी वे अवध्यहैं फिर जो ऐसेहों कि सम्बन्धही के हों फिर अच्छों को उनका क्या कहना उनकोतो मारनाही न चाहिये । ४५ । देखिये पहलेतो सब हमारे

shameless fool is neither reckoned among women nor among men; he falls down to the status of immoveable objects or lower animals and *as like a shudra he has no right to do dharm.* A *modest* person protects the gods, the pitars and himself and attains immortality. It is the only resort of the virtuous 40. You have seen how modest I am. I am deprived of my kingdom and reduced to this state on account of modesty. We can not give up our wealth, though we die in our attempt to regain it. We are entitled to it and we hope to regain it, because we are under your protection and peace of mind and equity are on our side. The idea that we will have to kill the Kauravas for the sake of wealth, excites tears to our eyes; for it is cruelty enough to kill strangers and enemies, nothing to say of the relations who are as well the best of men. They are our kinsmen and

हिंता ॥ ४६ ॥ शूद्रः करोतिशुश्रूषां वैश्या-वैपणजीविकाः । वयंवधेनजीवामः कपालं ब्राह्मणैर्वृतम् ॥ ४७ ॥ क्षत्रियःक्षत्रियंहन्ति मत्स्योमत्स्येनजीवति । श्वाश्वानहन्ति दाशार्हपश्यधर्मो यथागतः ॥ ४८ ॥ युद्धेकृष्णकलिर्नित्यं प्राणाः सीदन्तिसंयुगे । बलन्तुनीतिमाधाय युद्धेजयपराजयौ ॥४९॥ नात्मच्छन्दनभूतानां जीवितंमरणं तथा । नाप्यकालेसुखंप्राप्यं दुःखंवापियदूत्तम ॥ ५० ॥ एकोह्यपिबहून्हन्ति घ्नन्त्येकं बहवो प्युत । शूरंकापुरुषोहन्ति अयशस्वीयशस्विनम् ॥ ५१ ॥ जयोनैवोभयोर्दृष्टो नोभयोश्च

ज्ञाति के ठहरे फिर सब हमसे बड़े, व हमारे सहायक भी भीष्मादिक रहे अबभी हैं, व गुरुलोगभी उनमें हैं, इनका वधतो महापापका रूपही है फिर इसयुद्धमें अच्छाई कौनसी है । ४६ । हां यह अवश्य है कि क्षत्रियों का धर्मही पापी है, फिर हमलोग क्षत्रियों केही बान्धव ठहरे, अब चाहे धर्महो व अधर्म पर हमलोगों का तो धर्मही ठहरा और वृत्तितो हमलोगों की निश्चितही ठहरी ।४७। तीनिवर्णोंकी शुश्रूषा करना शूद्रों की वृत्तिठहरी व वैश्यकी वृत्ति बाजार की जीविका ठहरी, व हमलोग क्षत्रियोंकी जीविका औरोंको वध करें यह ठहरी, व ब्राह्मणों ने अपनी जीविका भिक्षमांगना अंगीकारकर रक्खा है । ४८ । देखो क्षत्रिय क्षत्रियको मारता, व मछली मछली से अपनी जीविका करती है कुत्ता कुत्तेको मारता है, यह कैसा अधम धर्म है । ४९ । हे कृष्ण युद्ध करने में कलह तो जानों नित्यही है, व संग्राम होने के समय सब के प्राणों को कष्ट होताही है, व बल जानों नीतिही के अधीन है फिर जय व पराजय अपने अधीन नहीं जो हो । ५० । व प्राणियों को जीवन मरण उन के अधीन नहीं व अकाल में न दुःखही मिलता न सुख ही किन्तु दुःख सुख अपने २ समय पर मिलते हैं । ५१ । कभी अकेला पुरुष बहुतों

---

elders. Some among them have helped us and still help us, while others are our preceptors. It is but improper to kill them; what good is there in war with them? The practice of kshatryas is certainly sinful; we are born among kshatryas and will do our duty, although we know that it is objectionable. To serve the three classes is the duty of Shudras; Vaishyas have to live by trade; we the kshatryas live on killing others and Brahmans earn their livelihood by begging. See a kshatrya kills another kshatrya, fish kill fish and dogs kill dogs; is this not the worst practice? A war is a constant source of trouble and loss of life. Strength is dependent on policy, but victory and defeat are not under our control. 50. Our life and death are not in our power and pleasures and pains come in time. Sometimes one man kills many; at others many men join to kill one.

पराजयः । तथैवापचयोदृष्टो व्यपयानेक्षयव्ययौ ॥ ५२ ॥ सर्वथावृजिनंयुद्धं को
घ्नन्नप्रतिहन्यते । हतस्यचहृषीकेश समौजयपराजयौ ॥ ५३ ॥ पराजयश्चमरणान
मन्येनैवविशिष्यते । यस्यस्याद्विजयःकृष्ण तस्याप्यपचयोध्रुवम् ॥ ५४ ॥ अन्ततो
दयितंघ्नन्ति केचिदप्यपरेजनाः तस्याङ्गबलहीनस्य पुत्रान्भ्रातॄनपश्यतः ॥ ५५ ॥
निर्वेदोजीवितेकृष्ण सर्वतश्चोपजायते । येह्येवधीराह्रीमन्त आर्याःकरुणवेदिनः ५६ ॥
तएवयुद्धेहन्यन्ते यवीयान्मुच्यतेजनः । हत्वाप्यनुशयोनित्यं परानपिजनार्दन ॥५७॥
अनुबन्धश्चपापोत्र शेषश्चाप्यवशिष्यते । शेषोहिबलमासाद्य नशेषमवशेषयेत् ॥ ५८ ॥
सर्वोच्छेदेचयतते वैरस्यान्तविधित्सया । जयोवैरंप्रसृजति दुःखमास्तेपराजितः ॥५९॥

को मारडालता है व कहीं एकको बहुत मारते हैं, कहीं शूरको कायर मारता, व अयश-
स्वीपुरुष यशस्वी को मारता है । ५२ । दोनोंकी जयहोती कभी देखीही नहीं गई न
दोनोंकी पराजय, व दीनता जानों युद्धमें होती है, व भागने में भी अच्छा नहीं होता,
फिर युद्धमें नाश व धननाश ये भी दोनों होतेही हैं । ५३ । सब प्रकार से युद्धमें क्लेश
ही होता है क्योंकि ऐसा कौन है जो औरोंको मारे व आप न माराजाय, व जो युद्धमें
मारागया उस के लिये जय पराजय दोनों समान हैं । ५४ । मरणसे पराजय कम
विशेष नहींहै और जिसकी विजय होती उसकी भी हानि होती है क्योंकि उसकेभी वो लोग
मारेही जाते हैं । ५५ । अन्त में प्रिय पुत्रादिकोंकोभी लोग मारडालते हैं, व जो पुत्रों
को भाइयों को नहीं देखता उसीका वचन हीनहोजाता है । ५६ । युद्ध में अपनेप्राणों
के रहने से निराशहोजाना चाहिये क्योंकि जो लोग धीर श्रेष्ठ व दयावान्होतेहैं । ५७ ।
वही लोग युद्ध में मारेजाते हैं व छोटे लोग बचजाते हैं, व शत्रुओंको मारडालने परभी
पश्चात्तापही होताहै । ५८ । व दोषका उत्पादन करनाभी पापहै क्योंकि जो शत्रुका

Sometimes cowards kill brave men or infamous men kill famous ones
Both sides can neither win nor lose. Helplessness is seen everywhere
in battle and turning back from battle is not good. Both lives and
wealth are lost in battle and misery is seen everywhere; for, he who
kills others is himself killed in the long run and both victory and
defeat are equal to him who is killed in the battle. Death is not
worse than defeat and victory is not gained without loss of life.
People kill their own sons; but he who does not see his sons and
brothers loses his worth. One should give up all hope of life in a
battle; for, those who are wise, good and merciful, are killed in battle
and ordinary ones escape death. Repentance comes after killing the
enemies. It is a sin to do wicked deeds but the sparing of an enemy

सुखंप्रशांतःस्वपिति हित्वाजयपराजयौ। जातवैरश्चपुरुषो दुःखंस्वपितिनित्यदा ॥ ६० ॥ अनिर्वृतेनमनसा ससर्पइववेश्मनि। उत्सादयतियःसर्वं यशसाचविमुच्यते ॥ ६१ ॥ अकीर्तिंसर्वभूतेषु शाश्वतींसनियच्छति। नहिवैराणि शाम्यन्ति दीर्घकाल कृतान्यपि ॥ ६२ ॥ आख्यातारश्चविद्यन्ते पुमांश्चेद्विद्यतेकुले। नचापिवैरंवैरेणकेशव व्युपशाम्यति ॥ ६३ ॥ हविषाग्निर्यथाकृष्ण भूयएवाभिवर्धते। अतोऽन्यथानास्ति शांतिर्नित्यमन्तरमन्ततः ॥ ६४ ॥ अन्तरं लिप्समानानामयं दोषोनिरन्तरः। पौरुषे योहि बलवानाधिर्हृदयबाधनः। तस्यत्यागेनवा शांतिर्मरणेनापि वाभवेत् ॥ ६५ ॥

शेष रहजाता वह फिर बलपकड़ उसका शेष नहीं रखता इस से शत्रुका शेष न रखना चाहिये । ५९ । क्योंकि वह यही चाहताहै कि हम अब इसका सर्व नाशकरडालें व जिसकी जयहोती है वहतो फिर बैर छोड़देताहै व जो पराजितहोताहै वह दुःखी रहने से उस से बैररखता है । ६ । व जो पुरुष न जयकी इच्छा करे न पराजय की दोनों को त्यागता है वह प्रशान्त चित्तहो सुखसे सोता है व जिसने किसी से बैर कररक्खा है वह नित्य दुःखसेही सोवेही उसको नींद कभी नहीं आती । ६१ । व जो पुरुष अस्वस्थ चित्त हो सर्प सहित मन्दिर के समान सब से शंकित चित्त रहता है उसका यश जातारहता है । ६२ । व उसकी अकीर्ति सब प्राणियों में फैल जाती है व बैर जो कि बहुत काल से उस ने कररक्खे हैं वे शान्त नहीं होवें । ६३ । व जो एकभी पुरुष कुलमें विद्यमान रहताहै तो उस के अपराके कहनेवाले बहुत विद्यमान रहते हैं इस से हे केशव बैरसे कभी नहीं शान्त होताहै । ६४ । जैसे घी डालने से अग्नि औरभी बढ़ता है कुछ शान्त नहीं

---

is a greater sin; for, an enemy once spared regains power, extirpates him who has spared his life and does not rest until he has accomplished his purpose. A conquerer may give up enmity, but one who is conquered has always the former wrongs within his mind and cannot give it up..60. He who is indifferent to conquest and defeat, sleeps joyfully with peace of mind; but he who has made enemies of others, can find no sleep on account of anxiety. He who having no peace of mind distrusts others as if he were in a house infested with snakes, loses his fame. His infamy spreads though all the people; the enmity of long standing which he has contracted does not disappear and people are ready to dispraise him as long as a single man exists in his family. Peace is never promoted by enmity, Keshav, as fire gets the more fierce the more gheo is poured on it. Peace is therefore impossible before total destruction. The great defect of the

अथवामूलघातेन द्विषतांमधुसूदन । फलनिर्वृत्तिरिद्धास्यात्तन्नृशंसतरंभवेत् ॥ ६६ ॥ मातुरत्यागनशान्तिः स्यात्तद्दतवधएनसः । संशयाच्च समुच्छेदाद्द्विषतामात्मनस्तथा ॥ ६७ नचत्यक्तुं तदिच्छामो नचेच्छामकुलक्षयम् । अत्रयाप्रणिपातेन शांतिःसैवगरीयसी ॥ ६८ ॥ सर्वथा यतमानानामयुद्धमभिकांक्षताम् । सान्त्वमप्रतिहतेयुद्धं प्रसिद्धंनापराक्रमः ॥ ६९ ॥ प्रतिघातेनसांत्वस्य दारुणसम्प्रवर्त्तते । तच्छुनामिवसम्पाते पण्डितैरुपलक्षितम् ॥ ७० ॥ लांगूलचालं क्ष्वेडाप्रतिवाचो विवर्त्तनम् । दन्तदर्शन

होता । ६५ । इस से जबतक नाश नहीं होजाता तबतक शान्ति नहीं होती व छिद्र ढूंढनेवालों में यह महादोष है कि जो पौरुष में बलवान् होताहै उस के हृदय को मनकी व्यथा बाधा करती है इसके शान्तहोने का कोई भी उपाय नहीं है फिर याती मनकी व्यथाको त्याग तो शान्ति होय या मरण होजायतो शान्तिहो । ६६ । अथवा शत्रुओं की जड़ के नाश करने से शान्तिहो व एसेही शान्तहोकर बैठेतो वह तो बहुतही अच्छा है व जो वैर छोड़ देनेपर शान्तिहोती है वह सब से ठीक है नहीं तो फिर शत्रुका वध करडाले पूरी शान्तिहोजाय । ६७ । व जो राज्य त्याग करने से शांति होती है सो तो विनाशरूप तो उसका वधही होगया शांति काहे को ठहरी, इससे नाइसीका संशय करे यदि हमारे राज्यमें शत्रुलोग छिद्र देख फिर प्रहार करेंगे न यही विचारे कि भ्रष्ट श्री होने से हमाराही नाश न होगा किन्तु राज्य किसी प्रकार से न छोड़े । ६८ । इससे न तो हम राज्यही छोड़ा चाहें व न कुलही क्षयही चहसकें इस से मेल करने से जो शांति होजायवो वही श्रेष्ठ है । ६९ । व हमलोगतो यही चाहते हैं कि राज्यमिले पर युद्ध न हो मेल होजाय जब किसी प्रकार कहने सुनने समझाने से भी मेल नहो तो युद्धतो सिद्धही फिर

---

fault-finders is that if the adversary is strong, their heart burns with grief and they can have no peace of mind until they can cast away the grief or die. Peace of mind can be obtained with the destruction of the enemy or by giving up enmity. The latter is the better of the two; but if it be impossible, the former should be resorted to to get complete peace of mind. To get peace of mind by resignation of the kingdom is self-evident destruction. We should neither fear the enemies who are ready to attack whenever they find us weak nor should we disregard the loss of our kingdom; but on the contrary we should try to regain it. We neither want to renounce our claim to kingdom nor the destruction of our family; we prefer therefore the amicable settlement of our claim. We would like to regain our kingdom peaceably; but if this be not possible, we should not ...

मारावस्ततो युद्धमवर्चते ॥ ७१ ॥ तत्रयोवलवानकृष्ण जित्वासोत्तिदामिषम् । एवमेवमनुष्येषु विशेषोनास्तिकश्चन ॥ ७२ ॥ सर्वथात्वेतदुचितं दुर्वलेषुवलीयसाम् । अनादरोविरोधश्च मणिपातीह दुर्वलः ॥ ७३ ॥ पिताराजाचवृद्धश्च सर्वथामानमर्हति । तस्मान्मान्यश्चपूज्यश्च धृतराष्ट्रोजनार्दन ॥ ७४ ॥ पुत्रस्नेहश्चवलवान धृतराष्ट्रस्यमाधव । सपुत्रवशमापन्नः मणिपातंमहास्यति ॥ ७५ ॥ तत्रकिंमन्यसेकृष्ण मासकाल मनन्तरम् । कथमर्थाच्च धर्माच्च नहीयेमहिमाधव ॥ ७६ ॥ ईदृशेह्यर्थकृच्छ्रेस्मिन

नपुंसकता अंगीकार कर बैठ न रहना होगा । ७० । जब शांति न होगी तो युद्ध अवश्य ही करना होगा सो भी यह नहीं कि एकबार करके चुपहो रहें नहीं जैसे नित्य बार २ कुत्ते लड़ते हैं उसी प्रकार लड़ना होगा यह तो पंडितों ने बताया है युद्धतो धराही है । ७१ । जैसे कुत्ते प्रथम पूंछ हिलाते हैं वैसे प्रथम ध्वजा हिलावेंगे, कुत्ते फिर भूंकते हैं हमलोगभी हल्ला करेंगे, कुत्ते परस्पर भूंकना सुन और जोरसे भूंकने लगते हमलोग उनकी निन्दा व अपनी प्रशंसा जोर से करेंगे कुत्ते भूमि में लोटने लगते हमलोगभी दण्डादि करने के लिये लोटेंगे कुत्ते दांत निकाल कर गुर्राते व भूंकते हैं हमलोग सिंहनाद करेंगे वस के पीछे वेभी लड़ते हैं हमलोगभी लड़ेंगे । ७२ । फिर इस प्रकार युद्ध करने में जो कुत्ता बलवान् होता है वह मांस खाता है इसी प्रकार मनुष्यों में भी है कुछ विशेष नहीं है लड़ने पर जो बलवान् होगा राज्य भोगेगा । ७३ । बलवानोंको तो सब प्रकार से उचित है कि दुर्बलों का अनादर करें व दारुण विरोध करें व जो प्रणिपात करता है वहतो दुर्बल होताही है । ७४ । परन्तु पिता राजा व वृद्ध सब प्रकार से मानही के पाने के योग्य होते हैं इस से धृतराष्ट्र हमारे मान्य व पूज्य दोनों हैं । ७५ । परन्तु माधव जो हमजाकर उनके पैरों पड़ें तोभी तो नहीं बनता क्योंकि पुत्रका स्नेह बलवान होताहै व धृतराष्ट्र को जानों बहुतही पुत्रका स्नेह है, इस लिये पुत्र के वशीभूतहो हँसेंगे कि देखो फिर हमारे पैरों पर पड़े । ७६ । इस से हे कृष्णचन्द्रजी अब इस समय

---

cowards. 70. If we can not secure peace, we shall have to fight again and again like dogs: we shall shake our banners as dogs shake their tails: shall howl like dogs and shall fight and bark like them. The dog which proves more powerful gets the meat and so is the case with men: whoever proves more powerful, will gain the kingdom. The strong may ill-treat and harrass the weak and he who prostrates himself at the feet of others is surely weak. But a father, a king and old men are worthy of respect and Dhritrashtra deserves respect from us. But it will not do for us to fall at the feet of Dhritrashtra; for he is too fond of his sons and will therefore laugh at us. What do you advise us to do Krishn, in order that we may not lose our dharm

कमन्यंमधुसूदन । उपसम्प्रष्टुमर्हामित्वामृते पुरुषोत्तम ॥ ७७ ॥ प्रियश्चप्रियकामश्चगतिज्ञःसर्वकर्मणाम् । कोहिकृष्णास्ति नस्त्वादृक् सर्वनिश्चयवित्सुहृत् ॥ ७८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तःप्रत्युवाच धर्मराजंजनार्दनः । उभयोरेववामर्थे यास्यामिकुरुसंसदम् ॥ ७९ ॥ शमंतत्र लभेयंचेद्युष्मदर्थमहापयन् । पुण्यमे सुमहद्राजंश्चरितं स्यान्महाफलम् ॥ ८० ॥ मोचयेयंमृत्युपाशात् संरब्धान्कुरुसृञ्जयान् । पाण्डवान्धार्त्तराष्ट्रांश्च सर्वाञ्चपृथिवीमिमाम् ॥ ८१ ॥ युधिष्ठिर उवाच । नममैतन्मतंकृष्ण यत्त्वंयायाः कुरून्प्रति । सुयोधनःसूक्तमपि नकरिष्यतितेवचः ॥ ८२ ॥ समेतंपार्थिवंक्षत्रं दुर्योधनवशानुगम् । तेषांमध्यावतरणं तवकृष्णनरोचये ॥ ८३ ॥ नहिनःप्रीणयेद्द्रव्यं नदेवत्वंकुतःसुखम् । नचसर्वामरैश्वर्यं तवद्रोहेणमाधव ॥ ८४ ॥ श्रीभगवानुवाच ।

आपके विचार में क्या आता है, हमलोग क्याकरें जिस से अर्थ व धर्म दोनों से हीन नहीं । ७७ । इस प्रकार के अर्थ के संकोच में आपको छोड़ और किस से पूछें । ७८ । क्योंकि आप के समान, हमारा, प्रिय चाहनेवाला, व सर्व कर्मों की गति जाननेवाला व सब निश्चय जाननेवाला सुहृद् कौनहै । ७९ । वैशम्पायन ने कहा कि जब युधिष्ठिरजीने ऐसा कहा तो श्रीकृष्णचन्द्रजी ने कहा कि अच्छा हम तुम दोनों के अर्थ कौरवों की सभाको जायँगे । ८० । वहां जो तुम्हारे प्रयोजन के बिना छोड़े शान्ति करापावें तो बड़ी पुण्यहो व हमारा महाफलदायक चरितहो । ८१ । व कौरवों सृञ्जयों को मृत्युकी फांसी से छुड़ावैं जिसमें पांडवों के भी प्राणबचें व कौरवों के भी व सब पृथ्वीभरके राजाओं केभी । ८२ । यहसुन युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्णचन्द्रजी हमारा मत नहीं है कि आप कौरवों के समीप जायँ क्योंकि जो आप अच्छाभी कहेंगेतो दुर्योधन आपका वचन न करेंगे । ८३ । व सब राजा वहां दुर्योधनही के वशानुचर हैं उनके बीचमें आपका जाना हमको नहीं

---

as well as our worldly prospects ? Who else can advise us better than you at this time of trouble? What friend of ours is a greater well-wisher of us than you? There is none more experienced than you." *Vaishampayan says that on hearing Yudhishthir's* words Shree Krishn said, "For the good of both the parties I shall go to the court of the Kauravas. 80. It will be a deed of piety, if I can bring about peace without losing sight of your interests. I would then be able to save the Kauravas and the Srinjayas from the meshes of death and the lives of the Pandavas, the Kauravas and other kings will not be lost." "I donot like," said Yudhishthir on hearing this, "that you should go to the Kauravas; for Duryodhan will give no ear to your good words and all the kings there obey his orders. Neither

जानाम्येतांमहाराज धार्त्तराष्ट्रस्यपापताम् । अवाच्यास्तुभविष्यामः सर्वलोकेमहीक्षिताम् ॥ ८५ ॥ नचापिममपर्य्याप्ताः सहिताःसर्वपार्थिवाः । क्रुद्धस्यसंयुगेस्थातुं सिंहस्येवेतरेमृगाः ॥ ८६ ॥ अथचेत्तेप्रवर्त्तेरन्मयि किञ्चिदसाम्प्रतम् । निर्दहेयंकुरून्सर्वा नितिमेधीयतेमतिः ॥ ८७ ॥ नजातुगमनंपार्थ भवेत्तत्रनिरर्थकम् । अर्थप्राप्तिः कदाचित् स्यादन्ततो वाप्यवाच्यता ॥ ८८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । यत्तुभ्यंरोचतेकृष्ण स्वस्तिप्राप्नुहिकौरवान् । कृतार्थंस्वस्तिमन्तंत्वां द्रक्ष्यामिपुनरागतम् ॥ ८९ ॥ विष्वक्सेनकुरून्गत्वा भारतान्शमयप्रभो यथासर्वेसुमनसः सहस्यामसुचेतसः ९०।

देवता ८४ क्योंकि हमको आपके द्रोहसे न द्रव्य प्रसन्न करसक्तांहै, न देवत्व फिर सुख की कौन गणना है, व न इन्द्रादि सब देवताओं का ऐश्वर्य्य । ८५ । यह सुन श्रीभगवान्जी बोले कि, हां महाराज हमभी दुर्योधनकी यह पापता जानतेहैं, परन्तु जो हम वहां जावेंगे तोकोई राजा व अन्यभी सबलोग हमको कुछ कह न सकेंगे कि कृष्णचन्द्रजीभी वहां रहे उन्हों ने भी न समझाया । ८६ । जो कहो कि वहांकोई अपने मेलका नहीं इससे वे लोग कुछ उपद्रव न करें, तो जब हम युद्धमें क्रोधकरेंगे तो हमारे सामने जितने राजा व कौरव यहां हैं कोईभी खड़े न होसकेंगे, जैसे सिंह के आगे छोटे मृग नहीं खड़ेहोते । ८७ । कदाचित् उन्हों ने हमारे विषय में कुछ अनुचित करना चाहावो, हम सब कौरवों को भस्म कर देंगे यह हमने निश्चय करलियाहै । ८८ । हे पार्थ हमारा वहांका गमन निरर्थक न होगा यातो अर्थहीकी प्राप्ति होगी, या तुम्हारा उनका मेलही होजायगा और फिर किसीको कुछ कहनाही हमारे विषय में बाकी न रहेगा । ८९ । यह सुन युधिष्ठिरजी बोले कि हे कृष्ण जो तुम्हें अच्छालगे सो करो और कौरवों के पाससे शीघ्र लौटकर हमको हर्षितकरो । ९०

---

wealth nor pleasures nor gods with their entire wealth can please me if injury is done to you," "Yes, Maharaj," said Shree Krishna, "I know the wicked nature of Duryodhan, but I go there because, if I do not go, people will lay on me the blame of not admonishing the Kauravas. As for my going alone among them and their doing any mischief, I say that neither the Kauravas nor other kings can withstand my fury in battle as smaller animals cannot stand before a lion. I have made up my mind to destroy all the Kauravas, if they want to do me any harm. My going there will not be useless; for I shall either bring about the peace or exonerate myself by admonishing the Kauravas." "Do as you like, Krishna," said Yudhishthir, "make us happy by your

भ्राताचासिसखाचासि वीभत्सोर्मधमिय। सौहृदेनाविशंकयोसि स्वरितमाप्नुहिभूतये ॥ ९१ ॥ अस्मानवेत्थपरानवेत्थ वेत्थार्थानवेत्थभाषितुम् । यद्यदस्मद्धितंकृष्ण तत्तद्वाच्यःसुयोधनः ॥ ९२ ॥ यद्यधर्मेण संयुक्तमुपपद्येद्धितंवचः । तत्तत्केशवभाषेथाःसान्त्वंवा यदिवेतरत् ॥ ९३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि युधिष्ठिरकृत कृष्णप्रेरणे द्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

श्रीभगवानुवाच । सञ्जयस्यश्रुतंवाक्यं भवतश्चश्रुतंमया । सर्वजानाम्यभिप्रायं तेषांचभवतश्चयः ॥ १ ॥ तवधर्माश्रिता बुद्धिस्तेषांवैराश्रयामतिः । यदयुद्धेनलभ्येत तत्तेबहुमतंभवेत् ॥ २ ॥ नचैवंनैष्ठिकंकर्म क्षत्रियस्यविशाम्पते । आहुराश्रमिणःसर्वे

कौरवोंके पास जाकर उनको समझाओ जिससे कौरव और पांडवों में मिलाप होजाय और दोनों सुख पूर्वकरहें । ९१ । तुम मेरेऔर अर्जुनके भ्राता और सखाहो इससे तुम हमारे लिये अवश्य शुभही करोगे तुमको हमारा और उनका अभिप्राय विदित है जिसमें हमारा हितहो वही करो । ९२ । जो वचन धर्मयुक्त और हितकारक हों और जिनसे शान्ति हो वही कहो ॥ ९३ ॥

अध्याय ॥ ७३ ॥

श्रीभगवानजी बोले कि, हमने संजयका वचन सुना व आपकाभी, इससे हम कौरवों का अभिप्राय जानते हैं व जो आपका अभिप्राय है वहभी जानतेहैं । १ । तुम्हारी बुद्धि धर्मका आश्रय लिये है व कौरवोंकी वैरका आश्रय लिये, जो विना युद्धकिये थोड़ाभी मिले तो वह तुमको बहुतहै।२। परंतु क्षत्रियके लिये नैष्ठिककर्म नहीं लिखाहै, क्योंकि सब आश्रम

---

speedy return from the Kauravas. Go and admonish the Kauravas so that both the parties may live peacefully. 91. You are brother and friend to both Arjun and myself and we expect every good from you. You know our purpose as well as that of our enemies; do what is good for us. Your words there should be compatible with dharm, such as may secure peace and do us good." 93.

CHAPTER LXXIII

"From your words as well as those of Sanjaya," said Shree Krishna, "I know the purpose of both parties: your are inclined towards dharm, while the Kauravas lean on enmity. Even a small portion that can be got without fighting must be enough for you. A Kshatrya is forbidden to have recourse to the last resort, namely

नभैक्षंक्षत्रियश्चरेत् ॥ ३ ॥ जयोवधोवासंग्रामे धात्रादिष्टःसनातनः । स्वधर्मःक्षत्रिय स्यैष कार्पण्यंनप्रशस्यते ॥ ४ ॥ नहिकार्पण्यमास्थाय शक्यावृत्तिर्युधिष्ठिर । विक्रम- स्वमहाबाहो जहिशत्रून्परन्तप ॥ ५ ॥ अतिवृद्धाःकृतस्नेहा दीर्घकालंसहोषिताः । कृतमित्राःकृतबला धार्तराष्ट्राःपरन्तप ॥ ६ ॥ नपर्यायोस्तियत्साम्यं त्वयिकु- र्युर्विशाम्पते । बलवत्तांहि मन्यन्तेभीष्मद्रोणकृपादिभिः ॥ ७ ॥ यावच्चमार्दवेनैतान् राजन्नुपचरिष्यसि । तावदेतेहरिष्यन्ति तवराज्यमरिन्दम ॥ ८ ॥ नानुक्रोशान्नकार्प ण्यान्नच धर्मार्थकारणात् । अलंकर्त्तुं धार्तराष्ट्रास्तव काममरिन्दम ॥ ९ ॥ एतदेव निमित्तंतेपाण्डवास्तु यथात्वयि । नान्वतप्यन्तकौपीनं तावत्कृत्वापिदुष्करम् ॥१०॥

वाले कहतेहैं कि क्षत्रिय भिक्षा न मांगे । ३ । संग्राममें चाहे जयहो व वधहो पर क्षत्रियका सनातन धर्म यही है व दीनता कृपणता क्षत्रिय के लिये अच्छी नहीं है । ४ । हे युधिष्ठिर कार्पण्य पर टिकनेसे जीविका न चलेगी इससे विक्रमकरो व शत्रुओंको मारो । ५ । यहतो जानतेहीहो कि धृतराष्ट्र के पुत्र अत्यन्त लोभीहैं, क्योंकि बहुत दिनोंतक तुम्हारा उनका स्नेह रहाहै व बहुत दिनोंतक एकस्थानपर बसते रहेहो, अब उनलोगों ने मित्रभी बहुत लोगोंको बनालिया है व सेनाभी बहुत इकट्ठी करली है । ६ । यह बात किसी प्रकार नहीं होसक्ती कि वे तुमसे मेलकरें, भीष्म द्रोण कृपाचार्य्यादिकों के साथ होनेसे वे अपनी बलवत्ता समझते हैं । ७ । हे राजन् जबतक तुम इनसे मृदुता करोगे तबतक ये तुम्हारा राज्य हरलेंगे । ८ । दुर्योधनादिक तुम्हारा इच्छित न तुम्हारी दयालुतासे करेंगे न कृपणता व न धर्म अर्थ के कारणसे । ९ । इसका निमित्त यह है कि जब तुम वनवास के लिये कौपीन धारण करलेगये थे वे कुछभी नहीं पछिताये वरन बहुत प्रसन्नहुये, फिर

---

begging. It is the duty of a kshatrya to conquer or to die. Poverty and wretchedness donot look well in a Kshatrya. You will gain nothing by doing nothing; therefore be up and kill your enemies. You know that the sons of Dhritrashtra are very greedy; for you have lived and associated with them so-long. They have made many friends and collected a large army and therefore it is impossible for them to make pace with you. They think themselves strong, because they have Bhishm, Drona and Kripacharya on their side. They will not give you back your kingdom, if you will humiliate yourself before them. They will not do what you wish out of kindness, pity, dharm or worldly considerations; for they did not repent when you had put on ragged garments before going into exile. They were

पितामहस्यद्रोणस्य विदुरस्यचधीमतः । ब्राह्मणानाञ्चसाधूनां राज्ञश्चनगरस्यच ११॥ पश्यतांकुरुमुख्यानां सर्वेषामेवतत्रतः । दानशीलंमृदुंदान्तं धर्मशीलमनुव्रतम् ॥१२॥ यत्त्वामुपधिनाराजन् द्यूतेवञ्चितवांस्तदा । नचापत्रपतेनृशंसः स्वेनकर्मणा ॥१३॥ तथाशीलसमाचारे राजन्माप्रणयंकृथाः । वध्यास्तेसर्वलोकस्य किंपुनस्तवभारत ॥ १४ ॥ वाग्भिस्त्वप्रतिरूपाभिरतुदंस्त्वां सहानुजम् । श्लाघमानःप्रहृष्टःसन्भ्रातृभि सहभापते ॥ १५ ॥ एतावत्पाण्डवानांहि नास्तिकिंचिदिहस्वकम् । नामधेयञ्च गोत्रञ्च तदप्येषांनशिष्यते ॥ १६ ॥ कालेनमहताचैषां भविष्यतिपराभवः । प्रकृतिते भजिष्यन्ति नष्टप्रकृतयोनये ॥ १७ ॥ दुःशासनेनपापेन तदाद्यूतेप्रवर्तिते । अनाथव

उनमें अपनापा कहांहै व तुम्हारी दया कहांहै । १० । देखो भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, बुद्धिमान विदुरजी ब्राह्मणलोग, व साधुलोग, धृतराष्ट्र, व नगरनिवासी । ११ । ये सब कुरु मुख्यदेखते रहे उन सबके सामने दानशील, कोमल स्वभाव, शान्त, धर्मशील व धर्म के अनुयायी ।१२। आपको उन्होंने छलसे खुला जान बूझकर जुआ खेलाया व इसकर्म से अबभी कुछ लज्जित नहीं होते । १३ । इससे अब ऐसे दुष्टस्वभाव दुर्योधनके विषय में दया व प्रेम न करो, वेतो सबलोकभरके मारने के योग्यहैं फिर तुमको क्याकहैं तुम्हें तो उनका वधही करडालना चाहिये । १४ । क्योंकि अयोग्य वाणी कहकर भाइयों समेत तुमको सभा में उन्होंने बहुतपीड़ित किया है, फिर जो उनकी उपर किसी ग्रंथ देखने बड़ाईकी तो बहुतप्रसन्नहुये । १५ । व आपस में बतलाते हैं कि अब पांडवों का यहां कुछ नहीं है, उनका नाम व गोत्रही अब बाकी नहीं रहा क्या जानें कहांको चलेगये व डूब मरे । १६ । व जो कहीं होंगेभीतो बहुतकाल होजानेके कारण उनका निरादर होजायगा, व जब नष्ट प्रकृति होजायँगे तो आप हमारे शरणागतहोंगे । १७ । जब जुआ

---

pleased at your distress. They have no sympathy and mercy for you 10. In the presence of Bhishm, Dronacharya, wise Vidur, the Brahmans, the saints, Dhritrashtra, the citizens and all the Kaurava chiefs they deceived you in gambling and are not yet ashamed of their deed. You must entertain no love and mercy towards wicked Duryodhan and others who deserve death at the hands of not only you but all the world. They insulted you and your brothers in the open court and were overjoyed to hear the praises of their misdeeds from flatterers. They were saying amongst themselves, "The Pandavas have nothing of their own in this would; their name and family have become extinct; we donot know where they have drowned themselves; they will not be cared for, if they will return after a long

यदादेवी द्रौपदीस्तुदुरात्मना ॥१८॥ आकृष्यकेशेरुदती सभायांराजसंसदि । भीष्म द्रोणप्रमुखतो गौरितिव्याहृनामुहुः ॥ १९ ॥ भवतावारितास्सर्वे भ्रातरोभीमविक्रमाः। धर्मपाशनिबद्धाश्च नकिञ्चित्प्रतिपेदिरे ॥ २० ॥ एताश्चान्याश्चपरुषा वाचःससमुदीरयन्। श्लाघन्तेज्ञातिमध्येस्म त्वयिप्रव्रजितेवनम् ॥ २१ ॥ येतत्रासन्समानीतास्ते दृष्ट्वात्वामनागसम्। अश्रुकण्ठारुदन्तश्च सभायामासतेसदा ॥२२॥ नचैनमभ्यनन्दंस्ते राजानोब्राह्मणैःसह। सर्वेदुर्योधनंतत्र निन्दंतिस्मसभासदः ॥ २३ ॥ कुलीनस्यच यानिन्दा वधोवाप्यमित्रकर्शन। महागुणोवधोराजन्न तुनिन्दाकुजीविका ॥ २४ ॥ तदैवनिहतोराजन् यदैवानिरपत्रपः। निन्दितश्चमहाराज पृथिव्यांसर्वराजभिः ॥ २५ ॥

हेनेलगासो पापी दुश्शासन ने अनाथ के समान द्रोपदी के बाल पकड़ सभामें भीष्म द्रोणाचार्यादिकों के सामने घसीटा व कुवचन कहा । १९ । व आपने रोकादेया था इससे कोई आपके ये भीमादि भाईभी नहीं बोलसके, क्याकरें धर्मकी फांसीमें बंधगये नहीं तो उसीसमय उनके सबकर्म करडालते। २० । ये व औरभी बहुतसी बातें कहसुन तुम्हारे चले आनेपर सभामें अपनी बड़ी बड़ाईकी कि देखो कैसे हमने युक्तिसे निकालदिया । २१ । उससमय जो लोग सभामें थे व तुम्हारी दशा जिन्होंने देखीथी कि ये निरपराध निकालेजातेहैं उनके सबके आंसु बहनेलगे थे । २२ । जितने राजालोग व ब्राह्मणलोग वहांथे किसीको यहबात प्रसन्न नहीं आई इससे सब दुर्योधनकी निन्दाकरतेथे । २३ । हे राजन जबकुलीनकी निन्दाहुईतो जानों उसका वधहोचुका पर हमारी जान वध होजाय वह अच्छा पर कुजीविका निन्दा भलीनहीं । २४ । व यहतो तभी मारडाला गया जब निर्लज्जहुआ, फिर एकने नहीं पृथ्वीभरके राजाओं ने निन्दाकी थी व अबभी करते हैं

---

time and when they have lost their individuality, they will come under our refuge of their own accord." When gambling was going on, wicked Dushasan dragged Draupadi by the hair in the presence of Bhishm and Dronacharya and insulted her by harsh words. None of your brothers checked him, because they were forbidden by you. They were bound by duty or else they might have destroyed all the Kauravas. 20. They talked much after your departure and boasted of their skill in driving you out. All those who were present in the court and knew of your innocence, wept for pity. No kings or Brahmans present liked it; they blamed Duryodhan for his wickedness. Bad name to a noble man is worse than death. He was dead from the time he became shameless. He was blamed by all the kings and is still blamed. Little better than dead is he who is

ईदृक्कार्योऽवधस्तस्य यस्य चारित्रमीदृशम् । मरकुन्देन मतिस्तब्धश्छिन्नमूल इव द्रुमः ॥ २६ ॥ वध्यः सर्प इवानार्यः सर्वलोकस्य दुर्मतिः । जह्येनं त्वममित्रघ्न मा राजन्विचिकित्सिथाः ॥ २७ ॥ सर्वथा त्वत्क्षमं चैतद् रोचते च ममानघ । यत्त्वं पितरि भीष्मे च प्रणिपातं समाचरेः ॥ २८ ॥ अहन्तु सर्वलोकस्य गत्वा छेत्स्यामि संशयम् । येषामस्ति द्विधाभावो राजन्दुर्योधनं प्रति ॥ २९ ॥ मध्ये राज्ञामहं तत्र प्रातिपौरुषिकान्गुणान् । तव सङ्कीर्तयिष्यामि ये च तस्य व्यतिक्रमाः ॥ ३० ॥ शृण्वतस्तत्र मे वाक्यं धर्मार्थसहितं हितम् । निशम्य पार्थिवाः सर्वे नानाजनपदेश्वराः ॥ ३१ ॥ त्वयि सम्प्रतिपत्स्यन्ते धर्मात्मा सत्यवागिति । तस्मिंश्चाधिगमिष्यन्ति यथा लोभादवर्तत ॥ ३२ ॥

। २५ । जो ऐसा निन्दित हुआ उसका तो आपही से वध होचुका है कुछ थोड़ाहीसा बाकी है, जैसे जब वृक्षकी बीचवाली जड़ कटगई तो फिर उसके गिरने में कौन अन्तर है । २६ । यह दुष्टतो सर्पके समान सबलोकभरसे वध्यहै इससे हे राजन् दुष्ट दुर्योधनको अब मारहीडालिये कुछ विचारनेकी आवश्यकता नहीं है । २७ । सबप्रकारसे उसकावध तुम्हारे करने के योग्य है व हमकोभी रुचता है, व जो तुम भीष्मपितामह व धृतराष्ट्र के प्रमाण करनेको कहते वहतो उचितहै हमेंभी रुचता है पर दुर्योधन पापीको तो मारही डालिये । २८ । व जिनलोगोंका दुर्योधन के विषयमें दुविधा है कि यह अच्छाहै या बुरा उनलोगोंका संशय हमजाय काटडालेंगे । २९ । व राजाओं के सामने आपके सब पुरुषार्थ कहेंगे जिनके सुननेसे आपकी प्रशंसा व उसकी निन्दाहोगी । ३० । व हम धर्म अर्थ काम सहित वचन कहेंगेतो नानादेशोंके राजालोग सुनकर बहुत प्रसन्न होंगे । ३१ । व तुमको जानेंगे कि ये बड़े धर्मात्मा सत्यवादीहैं, व उसको जानलेंगे जैसा कि उसने लोभ

so blamed as a tree the main root of which is cut down, is sure to fall. The wicked man is worthy of destruction by all like a serpent. You must kill wicked Duryodhan without hesitation. He deserves death according to my opinion too. Bhishm the grandfather and Dhritrashtra are surely worthy of respect; but Duryodhan the sinful deserves death at your hand. I shall remove the doubt of those who are in suspense about his wickedness. I shall praise your valour before all the kings and this will result in your fame and Duryodhan's infamy. 30. The kings present there will be pleased to hear my words full of dharm and worldly profits. They will know that you *are* virtuous and truthful and will know Duryodhan's avarice as well. I shall blame him in the *presence of* all the *young* and old men of the

गर्हयिष्यामिचैवेनं पौरजानपदेष्वपि। वृद्धबालानुपादाय चातुर्वर्ण्यसमागते ॥ ३३ ॥ अयंवैयाचमानस्त्वं नाधर्मंतत्रलप्स्यसे। कुरून्विगर्हयिष्यन्ति धृतराष्ट्रंचपार्थिवाः ३४ तस्मिँल्लोकपरित्यक्ते किंकार्य्यमवशिष्यते। हतेदुर्य्योधनेराजन् यदन्यत्क्रियतामिति ॥ ३५ ॥ यात्वाचाहंकुरून्सर्वान् युष्मदर्थमहापयन्। यतिष्येप्रशमंकर्त्तुं लक्षयिष्येच चेष्टितम् ॥ ३६ ॥ कौरवाणांप्रवृत्तिंच गत्वायुद्धाधिकारिकाम्। निशम्यविनिवर्त्तिष्येजयायतवभारत ॥ ३७ ॥ सर्वथा युद्धमेवाहमाशंसामि परैःसह। निमित्तानिहि सर्वाणि यथानादुर्भवन्तिव ॥ ३८ ॥ मृगाःशकुन्ताश्च वदन्तिघोरं हस्त्यश्वमुख्येषु निशामुखेषु। घोराणिरूपाणितथैवचाग्निर्वर्णान् बहून्पुष्यति घोररूपान् ॥ ३९ ॥ मनुष्यलोकक्षयकृत् सुघोरोनो चेदनुप्राप्तइवान्तकःस्यात्। शस्त्राणियन्त्रंकवचान्रथांश्च

कियाहै। ३२। व जब चारों वर्णों के वृद्ध बालक युवा सब बटुरेंगे तब हम सबके सामने उसकी निंदा करेंगे। ३३। व उनसे शान्त होना जो तुममांगोगेतो तुमको कोई अधर्मीसा न कहेगा, वरन सब राजालोग सब कौरवों व धृतराष्ट्र ही की निन्दा करेंगे। ३४। जब लोकनिन्दित दुर्योधन माराजायगातो फिर और कौनसा कार्य करनेको बाकी रहजायगा वस सवकुछ होजायगा। ३५। इससे हम वहांजाकर तुम्हारे प्रयोजनको लियेहुये कौरवों से शान्त होनेहीकी वार्त्ता करेंगे, व उसको दोषोंसे लक्षित करेंगे। ३६। वहां जाय युद्धादि करनेके कौरवों के वृत्तांत जानसुन तुम्हारी जयके लिये फिर लौट आवेंगे। ३७। पर हम जानतेहैं कि सबप्रकारसे कौरवों से युद्धही करनापड़ेगा शांति नहोगी, क्योंकि सब कारण उसीप्रकार के उत्पन्न दिखाईदेते हैं। ३८। देखो मृग व पक्षी घोरनाद कररहे हैं, व सन्ध्याहोतेही दोनो हाथी घोड़ोंमें जो मुख्य २ हैं उन के घोररूप दिखाईदेते हैं, व अग्नि में बहुतसे रङ्ग दिखाईदेते है। ३९। कदाचित् यहां यमराज न आवें तो चाहे

four castes. No one will regard your claim as unjust and all the people will blame Dhritraahtra and the Kauravas. Nothing will remain undone when infamous Duryodhan is killed. I shall go to the Kauravas as your ambassador and will talk to them of peace and of the wrongs done by Duryodhan. After learning all about the preparations of war made by the Kauravas, I shall return to you to secure your victory. I know that we shall have to fight with the Kauravas at last; for circumstances are against peace. See, the birds aud animals are making a great noise; the elephants and horses are dreadful to behold though the sun has not yet set and many colours are seen in fire. These signs betoken a greater slaughter unless Yamraj forget to do his work. You should collect as many weapons,

नागानहयांश्च मतिपादयित्वा ॥ ४० ॥ योधाश्चसर्वेकृतनिश्चयास्ते भवन्तुहस्त्यश्वरथेषुयुक्ताः । सांग्रामिकंतेयदुपार्जनीयं सर्वंसमग्रंकुरुतन्नरेन्द्र ॥ ४१ ॥ दुर्य्योधनोन ह्युत्सहेद्दातुं जीवंस्तवैतन्नृपतेकथञ्चित् । यत्तेपुरस्तादभवत् समृद्धंद्यूतेहृतं पाण्डवमुख्यराज्यम् ॥ ४२ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये त्रिसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७३ ॥

भीमसेन उवाच । यथायथैवशान्तिस्स्यात् कुरूणांमधुसूदन । तथातथैवभाषेथा मास्मयुद्धेनभीषयेः ॥ १ ॥ अमर्षीजातसंरम्भः श्रेयोद्वेषीमहामनाः । नोग्रंदुर्य्योधनोवाच्यः सान्त्वेनैनंसमाचरेः ॥ २ ॥ प्रकृत्यापापसत्त्वश्च तुल्यचेतास्तुदस्युभिः । ऐश्वर्य्यमदमत्तश्च कृतवैरश्चपाण्डवैः ॥ ३ ॥ अदीर्घदर्शीनिष्ठुरी क्षेप्ताक्रूरपराक्रमः ।

मनुष्यों का क्षय नहो नहीं तो शकुनी से तो बहुत लोगोंका नाशही दिखाई देताहै, इस से शस्त्र, यंत्र, कवच, रथ, हाथी व घोड़े सबको इकट्ठाकर । ४० । सब योधालोग हाथी घोड़े रथोंपर चढ़े तैयार बैठेरहें, व जो कुछ संग्राम के लिये करनाहो करिये । ४१ । दुर्योधन तुम्हारा धन और राज्य जो उसने जुएमें जीताहै नहीं लौटावेगा इस लिये तुमको सबप्रकार युद्ध के लिये तयार रहना चाहिये यह हम निश्चय कहते हैं ४२ ॥

अध्याय ७४ ॥

भीमसेनने श्रीकृष्णचन्द्रजीसे कहा कि हे कृष्णचन्द्रजी जैसी बातें करनेसे कौरवों से मिलापहोजाय वैसेही बातें कीजियेगा युद्धकरनेकी वार्त्ता से उनको न डरवाइयेगा ।१। असहनशील, अतिक्रोधी, कल्याणके वैरी, महामनस्वी, दुर्योधनसे कोई कड़ीबात न कहियेगा किन्तु समझाकरही काम निकालियेगा ।२। क्योंकि एकतो दुर्योधन स्वभावही से पापी जीवहै, फिर चोरों के तुल्य उसका चित्त है, व ऐश्वर्य्य के मदसे मतवाला है फिर पांडवों से बहुत दिनोंसे बैर रखताहै । ३ । फिरदीर्घदर्शी नहींहै फिर निष्ठुर बकाहै, व सबको ऊंची

machines, armours, chariots, elephants and horses as you can. Keep your warriors mounted on chariots, horses and elephants and make preparations for war. Duryodhan will not restore the kingdom and wealth which he has won from you in gambling and therefore you must prepare yourself for war: this is my final opinion." 42.

CHAPTER LXXIV

"Induce the Kauravas with your words to make peace," said Bhimsen to Shree Krishn, "and donot terrify them with the talk of war. Donot use harsh words in your reasoning with Duryodhan of unbearable and rash temper who is an enemy of peace and exceedingly proud. For he is naturally of a wicked soul, with a mind like those of thieves, proud of wealth, an old enemy of the Pandavas, short-

दीर्घमन्युरनेयश्च पापात्मानिकृतिप्रियः ॥ ४ ॥ म्रियेतापिनभज्येत नैवजह्यात्स्वकंमतम् । तादृशेनशमःकृष्ण मन्येपरमदुष्करः ॥ ५ ॥ सुहृदामप्यवाचीनस्त्यक्तधर्मा प्रियानृतः । प्रतिहन्त्येवसुहृदां वाचश्चैवमनांसिच ॥ ६ ॥ समन्युवशमापन्नः स्वभावंदुष्टमास्थितः । स्वभावात्पापमभ्येति तृणैश्छन्नइवोरगः ॥ ७ ॥ दुर्योधनोहियत्सेनः सर्वदाविदितस्तव । यच्छीलोयत्स्वभावश्च यद्बलोयत्पराक्रमः ॥ ८ ॥ पुरामसन्नाः कुरवः सहपुत्रास्तथावयम् । इन्द्रज्येष्ठाइवाभूम मोदमानाःसबान्धवाः ॥ ९ ॥ दुर्योधनस्यक्रोधेन भरतामधुसूदन । धक्ष्यन्त्यशिशिरापाये वनानीवहुताशनैः ॥ १० ॥

नीची कहने का स्वभाव पड़गया है व क्रूर पराक्रमी है, व बड़ा क्रोधी, शिक्षाकरने के अयोग्य व पापात्मा, पाप प्रिय है । ४ । वह चाहे मरजाय पर सेवा कभी किसीकी न करे, व न अपना मतछोड़े चाहे जैसाहो, फिर ऐसे से शान्तिहोनी हम बहुतही दुष्कर समझते हैं । ५ । वह सुहृदों से भी विपरीतही रहता है फिर शत्रुओंसे क्या कहें, व धर्मको उस ने छोड़हीदिया है, व झुँठाई बहुतही उसे प्रिय है व सुहृदोंके भी वचन मनका प्रतिघात करताहै फिर शत्रु पक्षवालों को कौनकहै । ६ । व वह अपने दुष्टस्वभाव में सदा टिका रहता है इससे सदा क्रोधके वशमें रहता है व स्वभावही से पापको प्राप्तहोताहै जैसे तृण से ढकाहुआ सर्प वैसाही वहहै । ७ । दुर्योधनकी जितनी सेनाहै वह आपको विदितहै, व जो उसकाशील व जो स्वभाव है व जो बलहै व पराक्रम है सब आप जानतेहो । ८ । अगाड़ी कौरवभी अपने पुत्र बांधवों सहित प्रसन्न रहते थे व हमलोगभी इससे देवताओं के समान ऐसे होगयेथे क्योंकि बांधवों सहित हर्षित रहतेथे । ९ । परन्तु इसी दुर्योधनही के क्रोधसे कौरव ऐसे भस्महोंगे जैसे जाड़े के पीछे ग्रीष्म में अग्नि से जल वन भस्महोवे

-sighted, cruel of speech, hot tempered, unworthy of instruction, ill-natured and lover of sin. He will prefer death to modesty and will never give up his resolution. It is exceedingly difficult to make peace with one like him. He is not amicable to his friends, nothing to say of the enemies. He has forsaken dharm and loves falsehood. He gives no ear to the words of his friends; what can an enemy expect from him? He is always firm on his wickedness and therefore he is a slave to anger. He is habitually sinful like a serpent which creeps in grass. You know all about Duryodhan's army, his habits and manners and his strength and prowess. Formerly the Kauravas were happy with their sons and relations as well as we and therefore lived the life of gods; but on account of the anger of Duryodhan, they will be burnt like a forest in summer. 10. There have been

अष्टादशेमेराजानः प्रख्यातामधुसूदन । येसमुच्चिच्छिदुर्ज्ञातीन् सुहृदश्चसबान्धवान् ॥ ११ ॥ असुराणांसमृद्धानां ज्वलतामिवतेजसा । पर्य्यायकालेधर्मस्य प्राप्तेकालि रजायत ॥ १२ ॥ हैहयानामुदावर्तो नीपानांजनमेजयः । बहुलस्तालजंघानां कृमी णामुद्धतोवसुः ॥ १३ ॥ अजबिन्दुःसुवीराणां सुराष्ट्राणांरुषर्द्धिकः । अर्कजश्चबली हानां चीनानांधौतमूलकः ॥ १४ ॥ हयग्रीवोविदेहानां वरयुश्चमहौजसाम् । बाहुः सुन्दरवंशानां दीप्ताक्षाणांपुरूरवाः ॥ १५ ॥ सहजश्चेदिमत्स्यानां प्रवीराणांवृष- ध्वजः । धारणश्चन्द्रवत्सानां मुकुटानांविगाहनः ॥ १६ ॥ समश्च नान्दिवेगानामित्येते कुलपांसनाः । युगान्तेकृष्णसम्भूताः कुलेपुरुषाधमाः ॥ १७ ॥ अप्ययंनःकुरूणां स्याद्युगान्तेकालसंभृतः । दुर्योधनःकुलाङ्गारो जघन्यःपापपूरुषः ॥ १८ ॥ तस्मान्मृदु

हैं । १० । हे मधुसूदन जिन्होंने अपने अपने सगोत्री, व मित्र व स्याळ श्वशुरादि बांधवों का नाश कियाहै वे अठारह ये राजा प्रख्यात हैं । ११ । जो जब धर्म के अन्तका समय आताहै तो तेजसे ज्वलित धनाढ्यों के यहां असुरों के समान कलह होनेलगताहै । १२ । वे अठारहराजा ये हैं, हैहय वंशियों में उदावर्त, नीप वंशमें जनमेजय, तालजंघ वंशमें बाहुल, कृमिवंशमें बड़ा उद्धत वसु, सुवीर वंशमें अजबिन्दु, सुराष्ट्रवंश में रुषर्द्धिक, बलीह वंशमें अर्कज, चीन वंशमें धौतमूलक, । १४ । विदेह वंशमें हयग्रीव, महौजस् वंशमें वरयु, सुन्दरदेश वंशमें बाहु, दीप्ताक्षों में पुरूरवा । १५ । चेदिमत्स्यों में सहज, प्रवीरों में वृषध्वज, चन्द्रवत्सों में धारण, मुकुटों में विगाहन । १६ । नन्दिवेगों में शम ये इतने राजा कुल नाशक हुये हैं, हे कृष्ण ये सब युगके अन्तमें उत्पन्न हुये हैं इसी से अपने कुलका नाश करने से पुरुषाधम कहाते हैं । १७ । ऐसेही युगान्त में हम व कौरवों के नाश करने को कालके समान कुलका अंगार यह दुर्योधन हुआहै इससे म

eighteen kings who were notorious for the slaughter of their kindred, friends and relations. For, whenever dharm vanishes, glorious men, proud of their wealth, fight like demons. The names of those eighteen kings are as follows:–Udavart of the family of Hayhaya, Janamejaya of the Nip dynasty, Vahul among the Taljanghas, Vasu of great power in the family of Krimi, Ajavindu of the Suvir family, Rashardhik of the Surashtra family, Arkaj of the Valih family, Dhoutmulak of the Chin family, Hayagriva of the family of Videh, Varayu of the family of Mahaujas, Vahu in the family of Sundar, Pururava among the Diptakshas; Sahaj in the family of Chedimatsyas, Vrishadhwaj among the Pravirs, Dharan among the Chandravatsas, Vigahan among the Mukutas, and Sam among the Nandvegas. These kings were the destroyers of their own families. They were

शनैर्वृया धर्मार्थसहितंहितम् । कामानुबन्धबहुलं नोग्रमुग्रपराक्रम ॥ १९ ॥ अपि दुर्योधनंकृष्ण सर्वेवयमधश्चराः नीचैर्भूत्वानुयास्यामो मास्मनोभरतानशन ॥ २० ॥ अप्युदासीनवृत्तिः स्यायथानःकुरुभिःसह । वासुदेवतथाकार्यं नकुरूननयःस्पृशेत् २१ वाच्यःपितामहोवृद्धो येचकृष्णसभासदः । भ्रातॄणामस्तु सौभ्रात्रंधार्त्तराष्ट्रः प्रशाम्य ताम् ॥ २२ ॥ अहमेतद्ब्रवीम्येतं राजाचैवप्रशंसति । अर्जुनोनैवयुद्धार्थी भूयसी हि दयार्जुने ॥ २३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीमवाक्ये चतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पापी महानीच मारडालनेहीके योग्य है । १८ । इससे उसके सामने बहुत कोमल वचन सोभी धीरे से कहियेगा सोभी धर्म अर्थ सहित व हित वचन, हे उग्रपराक्रम बहुधा ऐसाही बोलियेगा जिससे कामकी सिद्धिहो कठोर किसी तरह न कहियेगा । १९ । हम सबलोग चाहे दुर्योधन के नीचे रहें व नीचहोकर उसके पीछे चलें पर हमारे भीष्मपितामहादि जिसमें नाशको न पावहीं वही करना । २० । चाहे हमसे व कौरवों से उदासीन वृत्तिहै न शत्रुता रहै न मित्रता, पर हे वासुदेव आप ऐसा कीजियेगा जिस में कौरवों को कुलक्षय करने का दोष न स्पर्श करे । २१ । हे कृष्ण, वृद्ध पितामहजी से व सब सभासदोंसे ऐसा कहना कि जिस में सब भाइयों में सौभ्रात्रहो व दुर्योधन शान्तहोजाय । २२ । हमजो कहते हैं सब राजा लोगभी उसकी प्रशंसा करते हैं और अर्जुनभी दयाकरके युद्ध करना नहीं चाहते ॥ २३ ॥

---

born at the end of the yug and from the destruction of their families they are known as the worst of men. In the same manner, Duryodhan the curse of the family is born to destroy us as well as the Kauravas and the sinful wretch therefore deserves death. Your words to him must be sweet and compatible with *dharm* and *arth*. Your talk with him should be mild and peaceful. We prefer to be the followers of Duryodhan and to live in poverty, if we are not forced to kill our grandfather Bhishm and others like him. 20. To avoid the destruction of the whole family, I would like that the Kauravas and ourselves live like strangers and be neither friends nor foes of one another. Your talk with Bhishm the grandfather and the other Kauravas should be such as to bring about love and peace among the brothers. All the kings praise my words and Arjun too out of kindness does not like to have war." 23.

वैशम्पायन उवाच । एवच्छ्रुत्वामहाबाहुः केशवःप्रहसन्निव अभूतपूर्वंभीमस्य मार्दवोपहितंवचः ॥ १ ॥ गिरेरिवलघुत्वं तच्छीतत्वमिवपावके । मत्वारामानुजः शौरिःशार्ङ्गधन्वावृकोदरम् ॥ २॥ सन्तेजयंस्तदा वाग्भिर्मातरिश्वेव पावकम्। उवाच भीममासीनं कृपयाभिपरिप्लुतम् ॥ ३ ॥ श्रीभगवानुवाच । त्वमन्यदाभीमसेन युद्धमेवप्रशंससि । वधाभिनन्दिनःक्रूरान् धार्तराष्ट्रान्निमर्दिषुः ॥ ४ ॥ नचस्वपिषि जागर्षिन्युब्जःशेषेपरन्तप । घोरामशान्तांरुशतीं सदावाचंप्रभाषसे ॥५॥ निःश्वसन्नग्निवर्चेन सन्तप्तःस्वेनमन्युना । अप्रशान्तमनाभीम सधूमइवपावकः ॥ ६ ॥ एकान्ते निःश्वसञ्छेषे भारार्तइवदुर्बलः । अपित्वांकेचिदुन्मत्तं मन्यन्तेऽतद्विदोजनाः ॥ ७ ॥

अध्याय ७५ ॥

वैशम्पायनजी ने कहा कि, पर्वतकी लघुता के व अग्नि में शीतलता के समान असम्भव भीमसेनजी के कोमलता युक्त वचन सुन पवन जैसे अग्नि को प्रचण्ड कराता है वैसे वचनों से कृपायुक्त भीमसेनजी को प्रचण्ड करातेहुये महाबाहु शार्ङ्गनाम धनुषधारण करनेवाले श्रीभगवान् केशवचन्द्र बलदेवजीके छोटे भाई हँसतेहीसे भीमसेन से बोले । ३ । कि हे भीमसेन तुमतो सदाक्रूर व वध करनेकेयोग्य धृतराष्ट्रके पुत्रों के मर्द्दनकरनेकी इच्छासे युद्धही की प्रशंसा करते थे । ४ । व उनके मारडालनेके लिये कभी सोते भी नहीं बहुधा जागतेही रहते कभी लेटभी गये तो बतानेही करवट लें व नीचे मुखकरके नहीं व सदा घोरअशान्तरूप व अकल्याणकारिणीही वाणी बोलते थे ।५। व इसी से सदा अग्नि के तुल्य गर्म श्वास सदा लेते व अपने क्रोध से सदा सन्तप्त बने रहते, व धुआंसहित अग्निके समान सदा अप्रशांत तुम्हारा मन बनारहता । ६ । व एकान्त मेंभी जब कभी सोजाते तो मानों किसीने भारसे दबादियाहै इस से कोईभाई

CHAPTER LXXV

Vaishampayan said that on hearing the gentle words of Bhimsen, which seemed strange as shortness in a mountain or coolness in fire, Bhagwan Keshav the wielder of the bow named Sharang and younger brother of Baladev thus spoke with a smile, fanning as it were the fire of Bhimsen's anger with his words. "You were always," said Krishn to Bhim, "an advocate of war to kill the cruel and wicked sons of Dhritrashtra. You were always desirous of extirpating them and either could find no sleep or lay restlessly with your face downward, uttering words of cruelty and dissatisfaction. You used to heave hot sighs like fire and burnt with your own anger. Your mind used to be uneasy like fire full of smoke.

आरुज्य वृक्षानिर्मूलान गजःपरिरुजन्निव । निघ्नन्पद्भिःक्षितिंभीम निःश्वसनपरिधावसि ॥ ८ ॥ नास्मिनजनेनरमसे रहःक्षिपसिपाण्डव । नान्यंनिशिदिवाचापि कदाचिदभिनंदसि ॥ ९ ॥ अकस्मात्स्मयमानश्च रहस्यास्सेरुदन्निव । जान्वोर्मूर्द्धानमाधाय चिरमास्से प्रमीलितः ॥ १० ॥ भ्रुकुटिंचपुनःकुर्वन्नोष्ठौच विदशन्निव । अभीक्ष्णंदृश्यसे भीमसर्वंतन्मन्युकारितम् ॥ ११ ॥ यथापुरस्तात्सविता दृश्यतेशुक्रमुच्चरन् । यथाचपश्चान्निर्मुक्तो ध्रुवंपर्य्येतिरश्मिमान् ॥ १२ ॥ तथासत्यंब्रवीम्येतत् नास्तितस्यव्यतिक्रमः । हन्ताहंगदयाभ्येत्य दुर्य्योधनममर्षणम् ॥ १३ ॥ इतिस्ममध्ये भ्रातृणां सत्येनालभसेगदाम् । तस्यतेप्रशमे बुद्धिर्धीयतेद्यपरन्तप॥१४॥अहोयुद्धाभि

किया करते, इस से तुमको कोई लोग मानते हैं कि ये उन्मत्तहोगये हैं । ७ । व सदा वृक्षों को तोड़ते उखाड़ते व इधर उधर दौड़ते फिरते थे । ८ । हमलोगोंके संग बैठने की रुचिभी नहीं रखते केवल एकान्त में बैठे सबकी निंदा किया करतेथे कि कोईलड़ने की सम्मति नहीं देता व रात्रि दिन और किसी पुरुषका संग प्रसन्न नहीं करते । ९ । अकस्मात् गर्वयुक्तहो रोदनकरतेसे एकान्त में बैठेरहते, जांघोंके ऊपर शिरधर नेत्र मूंद बड़ी देरतक बैठेरहतेथे । १० । व फिर सदा भौंहैंचढ़ीरहतीं ओष्ठ दांतों से चबातेहीसे रहते, इसप्रकार के तुम बार २ देखेजातेहो यह सब क्रोधहीका कराया हुआहै स्वाभाविक धर्म नहीं है । ११ । व जैसे पूर्वहीओर तेज प्रकाशित करतेहुये प्रतिदिन सूर्य उदित होते व पश्चिमही ओर अस्तहोतेहैं । १२ । वैसेही हम यह सत्य कहते हैं इसमें कुछ भी व्यतिक्रम नहीं है, हमजाकर अकेले गदासे दुर्योधनको मारडालेंगे । १३ । यहकह भाइयों के मध्य में गदा छूकर सौगन्द खातेहो तुम्हारीबुद्धि अब शांतहोनेके विषय में

Whenever you slept you heaved deep sighs as if you were under a heavy burden and people thought that you were going mad. You would break down trees and run and strike your feet on the ground like mad elephants. You found no pleasure in our society and would sit alone and blame us all for not talking of war. You sometimes wept for grief or would sit alone with your head on your knees and eyes shut. Your brows were always contracted and looked as if you were biting your lips with your teeth. These are all signs of anger and no natural defects with you. "It is as true as the sun rises in the east and sets in the west that alone I can kill Durycdhan with my mace" are the words often uttered by you. You have often made this vow and touched your mace; but it appears that all your energy is gone. It is a wonder that one who always talked of

कांक्षाणां युद्धकालउपस्थिते । चेतांसिविमतीपानि यत्त्वांभभिर्मािवन्दाते ॥ १५ ॥ अहोपार्थनिमित्तानि विपरीतानिपश्यसि । स्वमान्तेजागरान्तेच तस्मात्प्रशममिच्छसि ॥ १६ ॥ अहोनाशंससे किञ्चित् पुंस्त्वंक्लीवएवात्मनि । कश्मलेनाभिपन्नोसितेन तेविकृतमनः ॥ १७ ॥ उद्वेपतेतेहृदयंमनस्ते प्रतिसीदति । ऊरुस्तम्भगृहीतोसि तस्मात् प्रशममिच्छसि ॥ १८ ॥ अनित्यंकिलमर्त्यस्य पार्थचित्तंचलाचलम् । वातवेगप्रचलिता अष्ठीलाशाल्मलेरिव ॥ १९ ॥ तवैषाविकृता बुद्धिर्गवांवागिवमानुषी । मनांसिपाण्ड

आगई । १४ । बड़े आश्चर्य्य की बात है जो लोग सदा युद्धकी करने की इच्छा कियेरहे व जब युद्धका समय निकट आजाय चित्त बिगड़उठै इससे विदित हुआ कि भीम अब तुम भयभीतहुये ।१५। बड़े आश्चर्य्यकी बातहै पार्थ तुम स्वप्नके अन्त में व जागने के अंतमें महिषपर चढ़ना व वामनेत्रादि फड़कना इत्यादि विपरीत निमित्त देखतेहो इसीसे कौरवोंसे मेल किया चाहतेहो बस जानलिया कि युद्धसे तुमभी डरतेहो । १६ । बड़ेही आश्चर्य्यकी बातहै जो तुम अब नपुंसकके समानहो पुरुषार्थकी कुछ बातही नहीं करते बड़ेही कष्ट में पड़े हो इसीसे तुम्हारामन ऐसा विकल होगया । १७ । व तुम्हारा हृदय कांपताहै, व मन विशीर्ण हुआजाता है अब टिहुनी पकड़के उठने बैठने लगेहोसो इसीसे कौरवों से मेल चाहते हो भयमें क्यानहीं होता । १८ । हे पार्थ मनुष्यका चित्त अनित्य है कभी चल होजाता कभी अचल, जैसे सेमरकी रुई वातके वेगसे उड़ती चलीजाती है व पवन न होनेपर स्थिरही एक स्थानपर पड़ी रहती । १९ । तुम्हारी तो यह बुद्धि ऐसी अप्रमाण होगई जैसे बैलोंकी वणी मनुष्यकीसी होजाय, वह पांडवों के मनोंको ऐसा डुबोये देतीहै

---

war shuns from it at the approach of it. This shows, Bhim, that you are terrified. It is a wonder that at the end of sleep or awakening you see ill omen, such as riding on a buffalo or beating of the left eyelid and therefore are desirous of peace with the Kauravas; this shows that you are afraid of war. It is strange that like a eunuch you have forgotten all talk of bravery. It is therefore that you have fallen into this great misery. You are uneasy; your heart trembles; your mind is distracted and you lean on your knees when you sit or stand. You want peace with the Kauravas; what can fear not do? Man's mind is not stationary like the flakes of cotton blown by the wind and lying motionless in the absence of it. Your wisdom has fled from you as the power of speech from oxen; it is drowning the minds of the Pandavas as one drowns those who possess no boat and donot know how to swim in deep water. 20. Your words are

पुत्राणां मज्जपत्यप्लुवानिव ॥ २० ॥ इदंमेमहदाश्चर्यं पर्वतस्येवसर्पणाम्। यदीदृशं प्रभाषेथाभीमसेनासमंवचः ॥ २१ ॥ सदृष्ट्वास्वानिकर्माणि कुलेजन्मचभारत। उत्तिष्ठस्वविषादंमाकृथावीरस्थिरोभव ॥ २२ ॥ नचैतदनुरूपंतेयत्ते ग्लानिररिन्दम। यदोजसानलभते क्षत्रियोनतदश्नुते ॥ २३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीमोत्तेजक श्रीकृष्णवाक्ये पंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

वैशम्पायन उवाच। तथोक्तोवासुदेवेन नित्यमन्युरमर्षणः। सदश्ववत्समाधावद्भाषे तदनन्तरम् ॥ १ ॥ भीमसेन उवाच। अन्यथामांचिकीर्षन्तमन्यथा मन्यसेऽच्युत। प्रणीतभावमत्यर्थं युधिसत्यपराक्रमम् ॥ २ ॥ वेत्सिदाशार्ह सत्यंमेदीर्घ

जैसे बिना नाववालोंको कोई अगाध जलमें पकड़ डुबोदे । २० । हे भीमसेन जो तुमने ऐसा अपने स्वभाव के विपरीत वचन कहा उससे हमको ऐसा आश्चर्य हुआ जैसे पर्वत चलनेलगे तो आश्चर्यहो । २१ । इस लिये अपने कर्म और कुलकी ओर दृष्टि करके और विषादरहित होकर लड़ाई के लिये तयारहो । २२ । यह ग्लानि तुम्हारे योग्य नहीं है क्योंकि बिना पराक्रमके क्षत्रियको भोग्य पदार्थ नहीं मिलते २३ ॥

अध्याय ॥ ७६ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि जब वासुदेवजीने ऐसा कहा तो भीमसेनजी जो सदा के क्रोधी व असहनशीलथे काहू को ऐसा सहसके प्रथमतो अच्छे घोड़ेके समान औरसेदौड़ फिरबोले कि । १ । हे सत्यपराक्रम श्रीकृष्णजी हम औरहीप्रकार करना चाहते हैं हम को आप औरही प्रकारके जानतेहैं हम युद्धसे डरनेवालेहोगये। २ । हे कृष्ण तुमतो बहुत

---

as astonishing and far from your nature as the moving of a mountain. You should remember your deeds of prowess as well as those of your family and should prepare yourself for battle with an untroubled mind. This indifference to war is not worthy of you; for a kshatraya can get nothing without prowess. 23.

CHAPTER LXXVI

Vaishampayan said that on hearing the words of Krishn, Bhimsen who was naturally of a hot and unbearable temper, ran about like a swift horse and said, "Shree Krishn of real prowess! You have misunderstood me. I am not afraid of war. Do you not know me after such a long acquaintance like a drowning person who knows

कालं सहोषितः । उतवामांनजानासि प्लवनह्रदइवाप्लवे ॥ ३ ॥ तस्मादनभिरूपाभि र्वाग्भिर्मात्वं समर्च्छसि । कथंहिभीमसेनंमां जानन्कश्चनमाधव ॥ ४ ॥ ब्रूयादप्रति रूपाणि यथामांवक्तुमर्हसि । तस्मादिदंप्रवक्ष्यामि वचनंवृष्णिनन्दन ॥ ५ ॥ आत्मनः पौरुषञ्चैव बलञ्चनसमंपरैः । सर्वथानार्यकर्मैतत् प्रशंसास्वयमात्मनः ॥ ६ ॥ अति वादापविद्धस्तु वक्ष्यामिबलमात्मनः । पश्येमेरोदसीकृष्ण ययोरासन्निमाःप्रजाः ॥७॥ अचलेचाप्रतिष्ठे चाप्यनन्तेसर्वमातरौ । यदिमेसहसाक्रुद्धे समेयातांशिलेइव ॥ ८ ॥ अहमेतेनिगृह्णीयां बाहुभ्यांसचराचरे । पश्यैतदन्तरं बाह्वोर्महापरिघयोरिव ॥ ९ ॥ यएतत्प्राप्य मुच्येतनतं पश्यामिपूरुषम् । हिमवांश्चसमुद्रश्च वज्रीचबलभित्स्वयम्

दिन हमारेसंग रहेहो सत्य सत्य हमको जानतेहो वा नहीं जानते जैसे कुण्ड में डूबताहुआ नावको छोड़ और किसी को कुछ नहीं समझता । ३ । इसीसे तुम हमको ऐसे वचन कहतेहो, क्योंकि जो हमको अच्छीतरह जानताहोगा कि ये भीमसेन हैं वह हमको ।४। ऐसे अयोग्य वचन कैसे कहेगा जैसे आपने कहे सो कुछ नहीं आप सब कुछ कहसकेहैं, पर हमभी अब कुछ कहतेहैं सुनिये । ५ । अपना पौरुष व बल औरों के बल पौरुष के सम नहीं है क्योंकि अपने कर्म की प्रशंसा करना श्रेष्ठों का काम नहीं है क्याकरें अब कुछ कहनाहीपड़ा । ६ । क्योंकि अबतो अतिवाद से युक्तहोहैं कुछ अपना बल कहैंहीगे, कृष्णचन्द्र देखिये यह पृथ्वी व यह स्वर्ग है इन्हीं दोनों में प्रजा बसीहै । ७ । ये दोनों अचल व प्रतिष्ठित व अनन्तहैं व सब संसारके पिता माताहैं, व जो ये दोनों कदाचित् क्रोध करें तो मिलकरके शिलाओं के समान बराबर होजायँ । ८ । परन्तु हम एकएकको दोनों को पकड़ले स्वर्ग अपने स्थानपररहे व पृथ्वी अपने स्थानपर रुकें तो न मिलनेपावें चाहे जैसा हो, हमारे परिघाकार इनबाहोंका अन्तर देखलो । ९ । जो इनके बीचमें पड़कर फिर

---

nothing but the boat? Any one else knowing me to be Bhimsen will not say *so*. You may say what you like; but hear me. My prowess and strength is not like that of others. I must say something about it, although self praise is not the work of good men. I have been blamed of boasting and therefore I must speak. You see, Krishn, this earth and yonder sky between which we dwell and which are immoveable, boundless and the parents of all. They may, if they become angry try to crush all as between the two stones of a mill; but I would not let them meet. See the distance between my two arms which are like clubs; whoever falls within their circuit can never extricate himself. 10. Neither the Himalayas, nor the ocean

॥ १० ॥ मयाभिपन्नंत्रायेरन् वलघास्यायनत्रयः । युद्धाहानिक्षत्रियान् सर्वान्पांडवे-
ष्वाततायिनः ॥ ११ ॥ अधःपादतलेनैता नधिष्ठास्याभिभूतले । नाहित्वंनाभिजानासि
ममविक्रममच्युत ॥ १२ ॥ यथामयाविनिर्जित्य राजानोवशगाःकृताः । अथचेन्मां
नजानासि सूर्य्यस्येवोद्यतः प्रभाम् ॥ १३ ॥ विद्वढेयुधिसम्बाधे वेत्स्यसेमांजनार्दन ।
परुषैराक्षिपसिकिंव्रणं पूतिमिवोन्नयन् ॥ १४ ॥ यथामतिब्रवीम्येवद् विद्धिमामधिकं
ततः । द्रष्टासियुधिसम्बाधे प्रवृत्तेवैशसेऽहनि ॥ १५ ॥ मया प्रणुन्नान्मातङ्गानरथिनः
सादिनस्तथा । तथानराणामभिक्रुद्धं निघ्नन्तंक्षत्रियर्षभान् ॥ १६ ॥ द्रष्टामांत्वञ्चलोकंच

छूटजाय ऐसा पुरुष हम किसीको देखतेहो नहीं । १० । चाहे हिमवानहो, वा समुद्र वा
इन्द्र जिन्होंने वलको मारा परन्तु जिसको हम मारा चाहें ये तीनों उसकी रक्षा न कर
सकें, व जितने ये क्षत्रिय पांडवों से युद्धकरने को आये हैं उन आततायियोंको वो । ११ ।
पैरके तले दबाकर पृथ्वी में प्रविष्ट करादूंगा कि उनका कहीं पतासोज न मिलेगा, परन्तु
आप हमारे विक्रमको अभी कुछभी नहीं जानते । १२ । जैसे हमने विक्रमसे जीत राजाओं
को अपनी वशमें करलिया अच्छा यद्यपि हम सूर्य्यकी प्रभाही के समान बलके कारण प्र-
सिद्धहैं तौभी आप नहीं जानते तो । १३ । जब गाढ़ युद्धहोगा तब तो आप अच्छेप्रकार
जानोगे, अभी हमको कठोर वचनों से क्यों काष्ठित करतेहो जैसे कोई घावकी दुर्गन्धि
दूरकरने के लिये घाववाले को कष्ट देता है । १४ । हम अभी यथामति कहतेहैं पर हम
को इस से अधिक जानो, जो समरमें देखोगे जब हम सबका नाशकरेंगे । १५ । व
हमजब हाथी घोड़े रथों को उन के सवारों सहित पकड़ पकड़ स्वर्ग को फेंकेंगे जो फिर
वायु वेगके कारण नीचे न आवेंगे तब देखोगे अभी क्या, व इसीप्रकार सब क्षत्रियों को
फेंकेंगे जो पड़े २ हैं सोभी देखियेगा । १६ । सो आपभी देखेंगे व सबलोगभी देखेंगे

or Indra the destroyer of Bal can protect him whom I wish to destroy. I shall crush under my foot all the wicked Kshatryas that have come together to fight against the Pandavas. But you do not know yet my prowess with which I subdued so many kings. If you donot know my strength which is as famous as day light, you will know it well in the thick of the battle. Why do you tease me with harsh words like one who wishing to remove the bad smell of a wound teases him who bears the wound? I am more powerful than what I have said about myself and you will see it when I shall destroy all in battle. You will see me hurling up the elphants, horses, chariots and their riders who will not fall down again by the force of the wind. In the same manner, you will see me throwing up the great warriors. My body

विकर्षन्तंवरानवरान्। नमेसीदन्तिमज्जानो नममोद्वेपतेमनः ॥ १७ ॥ सर्वलोकाद भिक्रुद्धान्न भयंविद्यतेमम। किन्तुसौहृदमेवैतत्कृपयामधुसूदन। सर्वान्तितिक्षे संक्लेशान्मास्मनो भरतानशन् ॥ १८ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीमसेनवाक्ये षट्सप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७६ ॥

श्रीभगवानुवाच। भावंजिज्ञासमानोहं प्रणयादिदमब्रुवम्। नचाक्षेपान्नपाण्डित्यान्नक्रोधान्नविवक्षया ॥ १ ॥ वेदाहंतवमाहात्म्यमुत तेवेदयद्बलम्। उततेवेदकर्माणि नत्वांपरिभवाम्यहम् ॥ २ ॥ यथाचात्मनिकल्याणं सम्भावयसिपाण्डव। सहस्रगुणमप्येतत् त्वयिसम्भावयाम्यहम्॥३॥यादृशेचकुलेजन्म सर्वराजाभिपूजिते। बन्धुभिश्च

जब हम सब से बड़ों २ कोही ऊपरको उछालेंगे न हमारी मज्जा कांपितहोतीहै न हमारा मन कांपताहै। १७। व न सबलोकभरेके क्रोध करने सेभी हमको कभी भयहोतीहै फिर इन कौरवों वेचारोंकी कौन गिनती किन्तु हम कृपाकरके अपने सुहृदोंको क्षमा करतेहैं जिससे भीष्मादिक न मारेजावें १८ ॥

अध्याय ॥ ७७ ॥

भीमसेन के वचनसुन श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द बोले कि, भीमसेनजी हमने आपका अभिप्राय जानने के लिये ऐसा कहाहै न निन्दा से न अपनी पांडित्यसे न क्रोधसे न कहने की इच्छासे। १। हम तुम्हारा माहात्म्य अच्छी तरह जानतेहैं, व तुम्हारे जितना बलहै यहभी जानतेहैं, व तुम्हारे सब कर्म भी जानतेहैं, हम तुम्हारा अनादर नहीं करते। २। जैसा तुम अपने में कल्याण बढ़ातेहो हम उससे सहस्रगुण अधिक तुममें कल्याण बढ़ातेहैं। ३। जैसा सब राजाओं से पूजित कुलमें तुम्हारा जन्म है वैसेही भाइयों व सुहृदों सहित

---

knows no exhaustion and my mind knows no trembling. I am not afraid of the anger of all the world; the poor Kauravas are in no count. I wanted peace out of kindness to our dear ones like Bhishm and for no other reason."19.

CHAPTER LXXVII

On hearing the words of Bhimsen, Shree Krishn said, "I wanted to know your purpose and did neither mean to blame you nor to show my learning. I know your greatness and strength well as well as your prowess and did not mean to insult you. I wish you to be thousand times as happy as you do. Your brothers and friends are as noble as the family you are born in. The reason of my

सुहृद्भिश्च भीमत्वमसिताद्दश॥ ४ ॥ जिज्ञासन्तोहिधर्मस्य सन्दिग्धस्यवृकोदर। पर्यायं नाध्यवस्यन्ति देवमानुषयोर्जनाः ॥ ५ ॥ सएवहेतुर्भूत्वाहि पुरुषस्यार्थसिद्धिषु। विनाशेपिसएवास्य सन्दिग्धंकर्मपौरुषम् ॥ ६ ॥ अन्यथापरिदृष्टानि कविभिर्दोषद र्शिभिः। अन्यथापरिवर्तन्ते वेगाइवनभस्वतः ॥ ७ ॥ सुमन्त्रितंसुनीतञ्च न्यायत- श्चोपपादितम्। कृतंमानुष्यकंकर्म दैवेनापिविरुध्यते ॥ ८ ॥ दैवमप्यकृतंकर्म पौरुषेण विहन्यते। शीतमुष्णंतथावर्षं क्षुत्पिपासेचभारत ॥ ९ ॥ यदन्यद्दिष्टभावस्यपुरुषस्य स्वयंकृतम्। तस्मादनुपरोधश्च विद्यतेतत्रलक्षणम् ॥ १० ॥ लोकस्यनान्यतोवृत्तिः पाण्डवान्यत्रकर्मणः। एवंबुद्धिःप्रवर्तेत फलंस्यादुभयान्वये ॥ ११ ॥ यएवंकृतबुद्धिः

भीमसेन तुमहो। ४। जो कहो कि हमको ऐसा जानतेहीहो तो फिर हमारी निन्दा क्यों की, तो देवता व मनुष्य दोनों के धर्मों का अन्त जाननेवाले अच्छेप्रकार नहीं जानते क्यों कि इनदोनों के धर्म में सन्देहही रहताहै, । ५। इस से वही धर्म पुरुषोंकी अर्थसिद्धियों में हेतुहै व पुरुषों के विनाशमें भी, इसलिये पुरुषके कर्ममें सदा सन्देहही रहताहै क्याजानें सिद्धहो व असिद्ध। ६। दोषदर्शी कवियों ने दिखाया कुछ औरही रीति परहै व बर्ताव औरही रीतिपर होताहै जैसा पवनका वेग कभी कुछ दिखाई देताहै कभी कुछ। ७। मनुष्य का कर्म चाहे अच्छीतरह सम्मतकरके कियागयाहो, व अच्छी नीति से कियागयाहो, व न्यायही से सिद्ध कियागयाहो पर दैव उसमें विरोध करदेताहै यथावास्थित सिद्ध नहींहोने देता व दैवके कर्म शीत, उष्ण, वर्षा, भूख, प्यास आदि मनुष्यभी अपने कर्म रजाई कम्बलादि ओढ़ने पंखाचलाने, छत्रादि लगाने, अन्नादि खाने जल पीनेआदि से निवृत्त करदेताहै। ९। जिससे कि दैवकर्म शीतादिका वारण पुरुष कर्म कम्बलादि से होजाता है इससे पौरुष सदा करना चाहिये दैवके ऊपर न बैठरहना चाहिये। १०। इससे हे पांडव कर्म करने से पृथक् लोककी जीविका नहीं होती, इससे दैवकार पुरुषकार दोनों में

---

blaming you in spite of knowing your greatness was that the minds of men and those of gods may change and the same deeds lead to success or ruin; it is therefore that the results are doubtful. The fault finding poets speak what is contrary to practice as the wind blows this way and that. The deeds of men well-devised and planned though they be, are obstructed by fate and likewise the divine ones like heat, cold, rain, hunger and thirst are counteracted by man. From seeing that cold and rain are warded off by men with clothes and wrappers, it follows that instead of relying on fate man should do deeds and should not remain idle. 10. One cannot live in the world without deeds. Both divine and lay deeds are reasonable and should

सकर्मण्येवमथर्त्तते । नासिद्धौव्यथतेनस्य नेसिद्धौहर्षमश्नुते ॥ १२ ॥ तत्रेयमनुमात्रा मेभीमसेनविवक्षिता। नैकान्तसिद्धिर्वक्तव्या शत्रुभिःसहसंयुगे ॥ १३ ॥ नातिमहीण रश्मिःस्यात्तथाभावविपर्यये । विषादमच्छेद्ग्लानिं वाप्येतमर्थंब्रवीमिते ॥ १४ ॥ श्वोभूतेधृतराष्ट्रस्य समीपंप्राप्यपांडव । यतिष्येप्रशमंकर्त्तुं युष्मदर्थमहापयन् ॥ १५ ॥ शमंचेत्तेकरिष्यन्ति ततोऽनन्तंयशोमम । भवतांचकृतःकामस्तेषांच श्रेयउत्तमम् १६ तेचेदभिनिवेक्ष्यन्ते नाभ्युपैष्यान्तमेवचः । कुरवोयुद्धमेवात्र घोरंकर्मभविष्यति ॥१७॥ अस्मिन्युद्धेभीमसेन त्वयिभारःसमाहितः । धूरर्जुनेनधार्य्या स्याद्वोढव्यइतरोजनः ॥ १८ ॥ अहंहियन्ता बीभत्सोर्भविता संयुगेसति । धनञ्जयस्यैषकामो नहियुद्धंनका

युद्धि प्रवृत्त हुं तौ है दोनों करने चाहिये । ११ जो दैवकर्म्म के साथ पौरुष करताहै वह कर्मके न सिद्धहोनेसे व्यथित नहीं होता न सिद्धहोनेपर हर्षहीको प्राप्त होताहै। १२ । इससे इस विषयमें हमने यह माना है कि शत्रुओंके साथ संग्राम करनेमें यहनहीं होसक्ता कि सदा जयहीहो पराजय नहो १३ इससे कार्य्यकी सिद्धि न होनेपर न हीन तेजहो होजाय न विषाद व ग्लानिहीको प्राप्तहो, इसीलिये हम कहतेहैं १४ अब हम प्रातःकाल धृतराष्ट्रके समीप जाकर तुम्हारे अर्थको ग्रहण कियेहुये मिलाप करने व झगड़ा शान्तहोनेमें यत्न करेंगे ।१५। जो वे लोग शम करेंगे तो जानो हमारा बड़ाही यश होगा, व आपलोगोंकाभी काम होगा व उनलोगोंकाभी काम होगा । १६ । व जो वे लोग हमारे बचन न मानेंगे, अपने मनमानाही करेंगे तो, महाघोर कर्म्म युद्धही होगा इस में कौन अन्तर है । १७ । हे भीम इस युद्धमें रथरूप तुमहो इससे सबभार तुम्हारे ऊपरहै व अश्वरूप अर्जुनहैं इससे धुरी खींचने का भार उनके ऊपर व और सबतो उस के ऊपर चढ़कर चलनेवाले हैं । १८ । व संग्राम में हम अर्जुन के सारथिहोंगे अर्जुन ने केवल यही चाहा है हमारे

---

be done. He who does deeds of prowess in conformity with those of nature is neither distressed at failure nor overjoyed at success. I therefore conclude that war will either end in victory or defeat; but in the latter case, one should not be grieved or dejected. I shall go tomorrow to Dhitrashtra and having your interests in view, shall try to bring about peace and to subdue quarrel. In the case of peace I shall get great fame and both the parties will be benefited. But if they donot mind my words and continue to be selfwilled, the result will be war and ruin. Bhim, you are a chariot in the ensuing war and all the burden rests on you; Arjun will work like horses and will draw the chariot with all its load of warriors. I shall drive

मये ॥ १९ ॥ तस्मादाशङ्कमानोहं वृकोदरमतिंतव । गदतःक्लीवयावाचा तेजस्ते समदीदिपम् ॥ २० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कृष्णवाक्ये सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अर्जुन उवाच । उक्तंयुधिष्ठिरेणैव यावद्वाच्यंजनार्दन । तववाक्यन्तुमेश्रुत्वाप्रतिभातिपरन्तप ॥ १ ॥ नैवप्रशममत्रत्वं मन्यसेसुकरंप्रभो । लोभाद्वाधृतराष्ट्रस्य दैन्याद्वासमुपस्थितात् ॥ २ ॥ अफलंमन्यसेचापि पुरुषस्यपराक्रमम् । नचान्तरेणकर्माणि पौरुषेणफलोदयः ॥ ३ ॥ तदिदंभाषितंवाक्यं तथाचनतथैवतत् । नचैतदेवं द्रष्टव्यमसाध्यमपि किञ्चन ॥ ४ ॥ किञ्चैतन्मन्यसे कृच्छ्रमस्माकमवसादकम् । कुर्वन्तितेषां

सारथि बनों इस से हम युद्ध करनेकी इच्छा नहीं करते । १९ । तुम्हारे क्लीव वचन सुनकर मुझको अति शंका हुई थी इस लिये मैंने तुमको तेजित किया है २० ॥

अध्याय ॥ ७८ ॥

अर्जुनजी श्रीभगवान् कृष्णचन्द्रजीसे बोले कि हे जनार्दन युधिष्ठिरजीने जो कहने के लिये आप से कहा वहतो आपका वचन सुन हमको जान पड़ता है । १ । जानोंआप मिलापहोना सहज नहीं समझते, वह धृतराष्ट्र के लोभसे व हमलोगोंकीदीनता से । २ । व आप पुरुषका पराक्रम अफल मानतेहैं दैवही को श्रेष्ठ मानतेहैं, कि बलकी उदयावैना पौरुषकिये व प्रारब्ध अच्छाहुये नहींहोती यह मानते हैं । ३ । यद्यपि युद्धकरनेमें हम लोगोंका अनिष्ट है तथापि जैसा आपने कहाहै कि युद्धहीहोगा मिलाप न होगा परन्तु शमकरा देनाभी आपको कुछ असाध्यनहीं है । ४ । क्या आप हमलोगोंका नाशक युद्ध

Arjun's chariot as requested by him and therefore I will not have to fight. I was in a great doubt to hear your cowardly words and have therefore heated your temper." 20.

CHAPTER LXXVIII

"I conclude from your words, Janardan," said Arjun to Shri Krishn, "that Yudhishthir's desire cannot be satisfied; on account of the avarice of Dhritrashtra and our own poverty as you think that peace is impossible. You believe that human prowess can avail nothing against the all powerful fate and that the development of power cannot be without the joint action of prowess and good luck. We shall have to fight as you say, against our will, although it is not impossible for you to bring about peace. Do you like war which

कर्माणियेषांनारितिफलोदयः ॥ ५ ॥ सम्पाद्यमानंसम्यक्च स्यात्कर्मसफलंप्रभो सतथाकृष्णवर्त्तेस्व यथाशर्मभवेत्परैः ॥ ६ ॥ पाण्डवानांकुरूणाञ्च भवान्प्रथमःसुहृत् । सुराणामसुराणाञ्च यथावीरप्रजापतिः ॥ ७ ॥ कुरूणांपाण्डवानांच प्रतिपत्स्वनिरामयम् । अस्मद्धितमनुष्ठानं मन्येतवनदुष्करम् ॥ ८ ॥ एवञ्चकार्यंतामेति कार्य्यंतवजनार्दन । गमनादेवमेवत्वं करिष्यसिजनार्दन ॥ ९ ॥ चिकीर्षितमथान्यच्चेतस्मिन वीरदुरात्मनि । भविष्यतिचतत्सर्वं यथातवचिकीर्षितम् ॥ १० ॥ शर्मतैःसहवानोस्तु तववायच्चिकीर्षितम् । विचार्य्यमाणोयःकामस्तव कृष्णसनोगुरुः ।

ही अच्छा मानते हैं, हमारीजान तो जिन पुरुषोंको फलकी उदय नहीं है उन के कर्मभी उनको मारडालते हैं । ५ । व जो कर्म अच्छीतरह से कियेजातेहैं वे सफलहोतेहैं इस से आप उसीप्रकारका वर्त्ताव करें जिसमें शत्रुओंसे शमहोजाय युद्ध नहो । ६ । क्योंकि जैसे देवताओं व दैत्यों के सुहृद ब्रह्माजीहैं वैसेही पांडव कौरव दोनों के सुहृद आपहैं ।७। इस से आप कौरवों पांडवों के अच्छाहोनेहीका उपायकरैं, उसमेंभी हमारा हितकरना कुछ आपको दुष्करनहीं है, जो ऐसा करोगे कि युद्धभी नहो व हमको राज्यमें भागभी मिलजाय तो आपका कार्य सिद्धहोजायगा । ८ । जाकर आप वहां ऐसाही कीजियेगा कि जिसमें युद्ध नहो व जो आपने उस दुष्टात्मा दुर्योधन को मारडालनाही विचाराहै तो उसका उपायकीजिये । ९ । अच्छा जाइये याती उन के साथ हमलोगोंका मेलहीहोजायगा या जो आपने विचाराहै वही होगा, वास्तव में तो जो आपने विचारा है कि युद्धहीहोगा मिलाप नहोगा वही हमकोभी अभीष्ट है क्योंकि वह दुष्टात्मा पुत्र बान्धव सहित क्या वध करने के योग्य नहीं है वध के योग्यहीतो है । १० । क्योंकि उस दुष्टने युधिष्ठिर

---

will lead to our ruin! I think that the sins of those who have not divine help on their side, are sufficient to ruin them. Good deeds have good results; it is therefore beneficial to us that you should bring about peace by your diplomacy. You are the well wisher of the Kauravas and Pandavas as Brahma is of the gods and *asurs*. You must contrive to do good to both parties. It is not impossible for you to do us good by securing for us our kingdom without waging war. You will so arrange there that we may not be dragged into war or you may kill Duryodhan if you think it proper. Your going there will either result in peace or war; the latter case seems more probable and we like it. Is that wicked man, together with his sons and relations, not worthy of death? 10. For, the wretch

नसनाद्दितिदुष्टात्मा वधंसमुत्तवान्घवः ॥ ११ ॥ येनधर्मसुतेदृष्टा नसाश्रीरुपमर्पिता। यचाप्यपश्यतोपायं घर्पिष्टंमधुसूदन ॥ १२ ॥ उपायेनतृशंसेन हृतादुर्घूतदेविना । कथंहिपुरुषोजातः क्षत्रियेषुधनुर्द्धरः ॥ १३ ॥ समाहूतोनिवर्त्तेत प्राणत्यागेप्युपस्थिते। अधर्मेणजितान्दृष्ट्वा वनेप्रव्राजितांस्तथा ॥ १४ ॥ वध्यतांममवार्ष्णेयानिर्गतोसौ सुयोधनः । नचैतदद्भुतंकृष्ण मित्रार्थेयच्चिकीर्षसि। क्रियाकथन्नमुख्यास्यान् मृदुनाचेतरेणवा ॥ १५ ॥ अथवामन्यसेज्यायान् वधस्तेषामनन्तरम् । तदेवक्रियतामाशुनविचार्यमतस्त्वया ॥ १६ ॥ जानासिहियथातेन द्रौपदीपापबुद्धिना । परिक्लिष्टासभामध्ये तच्चतस्योपमर्षितम् ॥ १७ ॥ सनामसम्यग्वर्त्तेत पांडवेष्वितिमाधव।

जोकी श्री देख उत्पातकिया, यह न देखा कि यहकार्य हमलोगोंको नाशक है । ११ । युधिष्ठिरजीकी श्री उस कपटीने कपटसे जुआखेलाय धोखे से हरली, हम कहते हैं कि ऐसा छलीपुरुष क्षत्रियों में जन्म लेकर धनुर्द्धर कैसे हुआ । १२ । उसको चाहियेथा कि जो प्राणत्यागकाभी समयहोता तोभी जब जुआखेलनेके लिये बुलायागयाथा तो जुआखेलनेसे निवृत्तहोजाता, न कि अधर्म से जीत हमलोगोंको वनको भेज प्रसन्नहुआ । १३ । इस से अवश्य हम सुयोधनको मारहीडालेंगे, यह कुछ अद्भुत नहीं जो आप मित्रों के अर्थ उसदुष्टका मारनाही चाहते हैं यह आपको उचितही है । १४ । अब बताइये उसके मारनेकी क्रिया कैसे सिद्धहोगी कोमलवाकरने से वा कठोरता करनेसे । १५ । व जो आप निश्चय उसका मारडालनाही श्रेष्ठ मानतेहैं तो फिर वही कीजिये अब कुछ विचार करनेकी आवश्यकता नहीं । १६ । क्योंकि जानतेहीहो जैसा उसपापबुद्धि से द्रौपदी को सभा के बीचमें पकड़कर दुश्शासन से खिंचायाथा, वह उसीका पापथा और किसी का

---

deprived Yudhishthir of his wealth and had no pity on our distress. He deceived Yudhishthir in gambling and took all his wealth; I wonder how a deceitful man like him was born among Kshatryas and became a warrior. Instead of being pleased with gaining our wealth deceitfully he *should* have stopped the gambling to which he had challenged us. We shall surely kill Duryodhan and it is no wonder that for the sake of friends you seek to kill him. You are on the right. Please let me know whether you have decided to kill him by mildness or by force And if you have decided to kill him, you must do it without hesitation. You know how cruelly that sinful wretch had Draupadi dragged into the court by means of Dushasan; it was his own fault and of no one else. Duryodhan and the

नमेसञ्जायते बुद्धिर्बीजमुप्तमिवोषरे ॥ १८ ॥ तस्माद्यन्मन्यसेयुक्तं पांडवानांहितञ्च यत् । तदाशुकुरुवार्ष्णेय यन्नःकार्यमनन्तरम् ॥ १९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि अर्जुनवाक्ये

ऽष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

श्रीभगवानुवाच । एवमेतन्महाबाहो यथावदसिपांडव । पाण्डवानांकुरूणाञ्च प्रतिपत्स्येनिरामयम् ॥ १ ॥ सर्वंत्विदंममायत्तं बीभत्सो कर्मणोर्द्वयोः । क्षेत्रंहिरसवच्छुद्धं कर्मणैवोपपादितम् ॥ २ ॥ ऋतेवर्षान्नकौन्तेय जातुनिर्वर्त्तयेत्फलम् । तत्र वैपौरुषंब्रूयुरासेकं यत्नकारितम् ॥ ३ ॥ तत्रचापिध्रुवं पश्येच्छोषणं दैवकारितम् ।

नहीं । १७ । दुर्योधन और पांडवों में समभाव नहीं रखता यह निश्चय है जैसे ऊसर में बीजबोने से नहीं उपजता । १८ । इस लिये जो उचितहो और जिसमें पांडवों का हित हो वही कीजिये और हमको जो आज्ञाहो वह हम करैं १९ ॥

अध्याय ७९ ॥

श्रीभगवान् कृष्णचन्द्रजी अर्जुनके वचनसुनबोले कि हे पाण्डव यह ऐसाहीहै जैसा तुम कहतेहो, हम कौरव पाण्डव दोनों के कुशलहीका कार्य करेंगे । १ । व युद्ध करादेना मिलापकरादेना दूतके अधीन होताहै हमदूतही बनकर जातेहैं इससे यद्यपि हमारे अधीन है तथापि जैसे खेतको अच्छीतरह जोतते, वापी कूपादि से सींचते, व पृथ्वीभी निर्दोष होती, चर्हीभी उस में होती पर उसमेंभी कभी २ दैवाधीन बिना पानी बरसे फल नहीं लगता ऐसेही दैवाधीन है देखें क्या होताहै । २ । जब वर्षाही के अधीन अन्नका होना ठीकठहरा तो वहां सींचनाही पौरुष ठहरा जिस प्रकार बने सींचे । ३ । फिर सींचनेको

Pandavas are not alike. It is certain that no seeds will grow on barren ground. You should therefore do with out hesitation whatever you think proper for the good of the Pandavas and we shall act upon your advice."19.

CHAPTER LXXIX

" You are right," said Bhagwan Krishn to Arjun, " I am a well-wisher to both the Kauravas and the Pandavas. An ambassador, it is true, has power over both peace and war. I am going there in that capacity and all depends on me; but the result is in the hands of God as a field in spite of being well tilled, well watered and having good soil and favourable climate gives no fruit for want of rain. The production of food grains depends largely on rains, but

तादिदंनिश्चितंबुद्धया पूर्वैरपिमहात्मभिः ॥ ४ ॥ दैवेचमानुषेचैव संयुक्तंलोककार णम् । अहंहिनत्करिष्यामि परंपुरुषकारतः ॥ ५ ॥ दैवन्तुनमयाशक्यं कर्मकर्त्तुंकथ ञ्चन । सहिधर्मञ्चलोकञ्च त्यक्त्वाचरतिदुर्मतिः ॥ ६ ॥ नहिसन्तप्यतेतेनपथारू पेणकर्मणा । तथापिबुद्धिंपापिष्ठां वर्द्धयन्त्यस्यमन्त्रिणः ॥ ७ ॥ शकुनिःसूतपुत्रश्च भ्राताटुःशासनस्तथा । सहित्यागेनराज्यस्य नशर्मसमुपैष्यति ॥ ८ ॥ अन्तरेण वधंपार्थ सानुबन्धःसुयोधनः । नचापिमणिपातेन त्वकुमिच्छतिधर्मराट् । याच्यमानश्च राज्यंसनप्रदास्यति दुर्मतिः ॥ ९ ॥ नतुमन्येसतद्वाच्यो यद्युधिष्ठिरशासनम् । उक्तं

उपाय बहुत करे उस में जो सूखाही पड़गया तो वह दैवका किया हुआ है इससे आगे के महात्मा लोगों ने अपनी बुद्धिसे निश्चय किया है कि लोकका जितना व्यवहार है सब दैव व पुरुषार्थ दोनों के अधीनहै परन्तु हम वही करेंगे जो पौरुष करने से होता है ५ व दैवाधीन कर्म को मानना यह हम कभी नहीं करसके क्योंकि वह दुष्ट धर्म व लोक दोनों को छोड़ काम करता है । ६ । व उस असत्कर्म से कभी सन्तप्त नहीं होता, व उसकी बुद्धिको दुष्टमन्त्री लोग और भी बढ़ातेही जाते हैं । ७ । मन्त्री उसके तीनही हैं शकुनि कर्ण व उसका भाई दुश्शासन, इससे वह राज्य छोड़ मिलापकभी न करेगा। ८। जबतक वह परिवारसहित मार न डालाजायगा राज्य कभी न देगा व युधिष्ठिरजीभी चाहे वह आकर पैरोंपरभी गिरे पर वे राज्य बिना पाये गम न करेंगे, व मांगनेसे वहदुष्ट देगाभी नहीं, फिर कैसे शमहोगा । ९ । इस से जो युधिष्ठिर कहते हैं कि हमको पांचही ग्राम देदें और सब आप लिये रहें इसबातका कहना हम उचित नहीं समझते यद्यपि धर्मराज

---

man supplies the want of it with his own labour and produces fruit: irrigation from wells is done by man, while the bringing forth of rain is a divine work. The sages of old have therefore come to the conclusion that all the worldly affairs depend upon divine as well as human powers. I shall do what a man can do, for I am not one of those who rely upon fate alone. That sinful wretch acts against religious and worldly rules; he is never distressed by his false dealings in which he is assisted by his wicked ministers. He has three advisers, namely Shakuni, Karan and Dushasan his own brother. He will therefore neither make peace nor give up the kingdom. He will not give up the kingdom till he and his family are destroyed and Yudhishthir will have no rest without getting it, though Duryodhan may fall at his feet. The wicked man will give nothing by asking and therefore peace is impossible. Yudhishthir has asked only five villages and relinquishes

प्रयोजनंयत्तु धर्मराजेनभारत ॥ १० ॥ तथापापस्तुतत्सर्वं नकरिष्यतिकौरवः। तस्मिन्श्चाक्रियमाणेसौ लोकेवध्योभविष्यति ॥ ११ ॥ ममचापिसवध्योहि जगतश्चापि भारत। येनकौमारकेयूयं सर्वेविप्रकृताःसदा ॥ १२ ॥ विप्रलुप्तञ्चवोराज्यं नृशंसेनदुरात्मना। नचोपशाम्यतेपापः श्रियंदृष्ट्वायुधिष्ठिरे ॥ १३ ॥ असकृच्चाप्यहंतेनत्वत्कृतेपार्थभेदितः। नमयातद्गृहीतञ्च पापंतस्यचिकीर्षितम् ॥ १४ ॥ जानासिहिमहाबाहोत्वमप्यस्यपरंमतम्। प्रियंचिकीर्षमाणञ्च धर्मराजस्यमामपि ॥ १५ ॥ सजानंस्तस्यचात्मानं ममचैवपरंमतम्। अजानन्निवमां कस्मादर्जुनाद्याभिशङ्कसे ॥ १६ ॥

ने उसके प्रयोजनहीकी बातकही है पर वह पापीदुर्योधन । १० । वैसा किसीतरह न करेगा, जब उसवचनको न मानेगातो उसको लोकभर मारडालने के योग्य समझेंगे ११ व हमभी फिर वधही करनेके योग्य समझेंगे व जगतभर समझेगा, देखो जिस दुष्ट नें, जब तुमलोग दशवर्षके भीतरहीके बालकथे तभी तुम सबोंको नानाप्रकार के दुःखदिये । १२ । व उस क्रूरस्वभाव दुष्टात्माने तुमलोगों का राज्यही लोपकरदिया व फिरभी जो युधिष्ठिरजी को किसी युक्तिसे श्रीहुई उसे देख सन्तप्तहुआ । १३ । व बार २ उसने चाहा कि इनमें व पांडवों में भेद पड़जाय इस विषय में बहुत फोड़ तोड़की बातें कहता रहा परन्तु हमने उस पापीके मनकी बात नहींकी उसके वचन नहीं माने । १४ । जो उसका मत तुमभी अच्छीतरह जानतेहो व हमकोभी जानतेहो कि सदा धर्मराजही का प्रियकरना चाहते हैं । १५ । फिर उसका मतजानते, व हमारे मतको अपना जानते, फिर क्यों अजान के समान हमारे विषय में शंका करतेहो कि ये शान्तहोना नहींचाहते । १६ । फिर तुमसो परम दिव्य जो भावहै कि देवतालोग भूमिकाभार उतारनेके लिये

---

the rest of the claim; but I donot like this and Duryodhan will never give up even this much although it is so easy to do. 10. We will think him worthy of death if he does not comply with my request and he will be considered to be an enemy of all the world. The wretch who gave you all sorts of trouble when you were only ten years old, who has now deprived you of your kingdom and who has ever been envious of the greatness of Yudhishthir, often tried to bring about disunion among the Pandavas; but I never acted upon the advice of that sinful man. You know his opinion well and you know as well that I always try to do good to Yudhishthir. Knowing his opinion and knowing also my attachment to your cause, how can you suspect that I donot want to make peace? You know that

यच्चापिपरमंदिव्यं तच्चाप्यनुगतंत्वया । विधानविहितंपार्थ कथंशर्ममभवेत्परैः ॥ १७॥
यत्तुवाचामयाशक्यं कर्मणावापिपाण्डव । करिष्येतदहंपार्थ नत्वाशंसेशमंपरैः ॥१८॥
कथंगोहरणेयुक्तो नैतच्छमंतथाहितम् । याच्यमानोहिभीष्मेण सम्वत्सरगतेऽध्वनि १९
तदैवतेपराभूता यदासंकल्पितास्त्वया । लवशःक्षणशश्चापि नचतुष्टःसुयोधनः ॥२०॥
सर्वथातुमयाकार्यं धर्मराजस्यशासनम् । विभाव्यंतस्यभूयश्च कर्मपापदुरात्मनः ॥२१॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये
ऊनाशीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ ॥

ठौर २ उत्पन्न हुये हैं व हमारी तुम्हारी द्वारा उतारेंगे, फिर यहतो होनीहीहै कि सब राजा मारेजायँ पृथ्वी का भार उतरे फिर तुम से व शत्रुओं से मेळ कैसेहोगा, युद्ध न होगा तो भूमिका भार कैसे उतरेगा । १७ । इस से हे पाण्डव कर्म व वचनसे जो हम से होसकेगा करेंगे परन्तु कौरवों के संग तुम्हारा मेलहोजाना यह न हम चाहते हैं न करावेंगे । १८ । फिर हमीं तुम्हारा व कौरवों का मेळ नहीं चाहते कौरव तुम से मेळ चाहते हैं, जो वे मेळ चाहते तो जब विराटनगरमें गाइया हरीगईथीं तबभीतो भीष्मजी ने दुर्योधन से कहाथा कि अब पांडवों से मेळकरलो फिर उसने नहीं मानातो अब माने गा । १९ । जब उसने तुमलोगोंको थोड़ाभी राज्य क्षणमात्रभर तकभी देना अंगीकार न किया व सन्तुष्ट न हुआ तभीतो तुमनेभी प्रतिज्ञाकी कि इस दुष्ट के संग सब कौरवों को मारडालूंगा । २० । इस से सबप्रकारसे हम धर्मराजकी आज्ञा करेंगे पर उसदुष्टात्मा दुर्योधन के पाप कर्मोंकाभी विचार किये रहेंगे, जिसमें वहभी जाने २१ ॥

gods are born at various places to ease the earth of her burden and they will do it through you and me. All the kings are fated to die to relieve the earth of her burden, how is peace possible between you and the enemies and how can the earth be relieved of her burden without war? I shall do what I can with my words and deeds; but I shall never try to have peace between you and the Kauravas, because I donot like it. Is it I alone who donot want to have peace between you and the Kauravas? Do the Kauravas want to make peace? If so, why did Duryodhan not hear the advice of Bhishm who at the time of driving away the cows of Virat had advised him to make peace with you! When he did not consent to give you the least share in the kingdom, you made a vow to kill Duryodhan and all the Kauravas. 20. I shall obey Yudhishthir in every respect and shall bear in mind the sins of Duryodhan so that he may suffer the consequences." 21.

नकुल उवाच । उक्तंबहुविधंवाक्यं धर्मराजेनमाधव । धर्मज्ञेनवदान्येन श्रुतश्चैवहितत्त्वया ॥ १ ॥ मतमाज्ञायराज्ञश्च भीमसेनेनमाधव । संशमोबाहुवीर्यञ्च ख्यापितंमाधवात्मनः ॥ २ ॥ तथैवफाल्गुनेनापि यदुक्तंतत्त्वयाश्रुतम् । आत्मनश्चमतंवीर कथितंभवतासकृत् ॥ ३ ॥ सर्वमेतदतिक्रम्य श्रुत्वापरमतंभवान् । यत्प्राप्तकालंमन्येथास्तत्कुर्याःपुरुषोत्तम ॥ ४ ॥ तस्मिंस्तस्मिन्निमित्तेहि मतंभवतिकेशव । प्राप्तकालंमनुष्येणक्षमं कार्य्यमरिन्दम् ॥ ५ ॥ अन्यथाचिन्तितोह्यर्थः पुनर्भवतिसोऽन्यथा । अनित्यमतयोलोके नराःपुरुषसत्तम ॥ ६ ॥ अन्यथाबुद्धयो ह्यासन्नन्यथाभुवनरा

अध्याय ॥ ८० ॥

नकुलजी कृष्णचन्द्रजीसे बोले कि, धर्मज्ञ व महादानी धर्मराजजीने बहुतप्रकारके वाक्यकहे वे सब आपने सुने । १ । व महाराजका मत जान भीमसेनजीने शमकानाम कहा व अपनी बाहों का वीर्य देख युद्धकरनेकीभी प्रशंसाकी । २ । व तथाप्रकारअर्जुनजीने जो कहा वहभी आपने सुना, व फिर कुछ आपने अपनाभी मतकहा । ३ । परन्तु हमारेराजान इन सबमतों का अतिक्रमणकर वहांजाय शत्रुओं का मत सुन जो समयउचितहो वह कीजियेगा । ४ । क्योंकि हरएक निमित्तमें मनुष्यका मत काल के अनुसार होता है राजाका मत है कि शांतहोजाय युद्ध नहो द्रौपदीजीका मतहै कि सबकौरव निर्मूल करदिये जायँ फिर वहां पहुँचने पर जैसा उचित समझपड़े वैसाकीजियेगा । ५ । क्योंकि प्रथम और युक्तिसे अर्थकी सिद्धि विचारीजाती फिरहोती कुछ और तरह से है, क्योंकि लोकमें पुरुषोंकी मति अनित्यहोतीहै जैसा विचारो वैसा नहीं होता । ६ । हमलोगोंकी

CHAPETER LXXX

"You have heard," said Nakul to Shree Krishn, "the words of Yudhishthir the just and those of Bhimsen, who recommended peace on hearing the opinion of Yudhishthir and then seeing the strength of his own arms, praised war. You have likewise heard what was said by Arjun and expressed your own opinion. I think you should keep all these on the back ground and should do what is proper after learning the opinion of the enemy; for opinions differ according to time and circumstances. The king wants peace and Draupadi would like the annihilation of the Kaurava race; you should therefore do what is proper on reaching there. For the means which are proposed for accomplishing a purpose turn out impracticable and others have to be resorted to, because the opinions of men are subject

सिषु । अदृश्येष्वन्यथाकृष्ण दृश्येषुपुनरन्यथा ॥ ७ ॥ अस्माकमपिवार्ष्णेय वने विचरतांतदा । नतथाप्रणयोराज्ये यथासम्प्रतिवर्त्तते ॥ ८ ॥ निवृत्तवनवासान्नः श्रुत्वावीरसमागताः । अक्षौहिण्योहि सप्तेमास्त्वत्प्रसादाज्जनार्दन ॥ ९ ॥ इमानहि पुरुषव्याघ्रानचिन्त्यबलपौरुषान् । आत्तशस्त्रानरणे दृष्ट्वानव्यथेदिहकःपुमान ॥१०॥ सभान्कुरुमध्येवं सान्त्वपूर्वंभयोत्तरम् । ब्रूयाद्वाक्यंयथामन्दो नव्यथेतसुयोधनः ११॥ युधिष्ठिरंभीमसेनं बीभत्सुञ्चापराजितम् । सहदेवञ्चमांचैव त्वाञ्चरामञ्चकेशव ॥ १२ ॥ सात्यकिञ्चमहावीर्यं विराटञ्चसहात्मजम् । द्रुपदञ्चसहामात्यं धृष्टद्युम्नञ्चमाधव ॥१३॥ काशिराजंचाविक्रान्त धृष्टकेतुञ्चचेदिपम् । मांसशोणितभृन्मर्त्यः प्रतियुध्येतकोयुधि ॥ १४ ॥ सभवान्गमनादेव साधयिष्यत्यसंशयम् । इष्टमर्थंमहा

मति वन में बसनेके कारण और प्रकारकी होगई है, इस से अदृश्यपदार्थों में दृश्य जान पड़ता व दृश्य पदार्थोंमें अदृश्य । ७ । हमलोगोंकाभी प्रेम जब वन में थे तब ऐसा राज्य के विषय में नहीं था कि जैसा अब है । ८ । अब हमलोगों को वनवास से निवृत्त सुन तुम्हारे प्रसाद से ये सात अक्षौहिणियां आई हैं । ९ । अब अचिन्त्य बल पौरुष व शस्त्र धारण किये इन सब पुरुषसिंहों को देख ऐसा कौन पुरुष है जो व्यथित नहो।१० इस से आप वहां जाय कौरवों के मध्य में प्रथम समझाय बुझाय बातेंकीजियेगा फिरभय भी दिखाइयेगा पर जहांतकहो ऐसाही कहियेगा जिसमें एकाएकी मन्दबुद्धि दुर्योधन व्यथित नहो उठे । ११ । क्योंकि, युधिष्ठिर, भीमसेन, अपराजित अर्जुन, सहदेव व हम, तुम व बलदेवजी, महावीर्य सात्यकि, पुत्रसहित राजा विराट, मन्त्रियों समेत राजाद्रुपद तथा उनके पुत्र धृष्टद्युम्न, व बड़े विक्रमी काशिराज, चंदेरीके राजा धृष्टकेतु, इनलोगोंसे

---

to change. Our opinions are altered on account of our long exile and therefore we think practicable what is impracticable. Our love for kingdom was not so strong while we were living in forests as it is now. Hearing the termination of our exile these seven akshauhinis are collected here for our help. What mind will not be disturbed at the sight of these lions among men whose strength, prowess and skill in arms are beyond imagination? 10. You should therefore reason with the Kauravas when you go among them and should terrify them; but as far as possible you should not startle Duryodhan on a sudden. For, Yudhishthir, Bhimsen, unconquerable Arjun, Sahadev and I, you and Baldev, Satyaki of great prowess, king Virat and his sons, Drupad with his ministers and sons, the king of

वादो धर्मराजस्यकेवलम् ॥ १५ ॥ विदुरश्चैवभीष्मश्च द्रोणश्चसहबाह्लिकः । श्रेयः समर्था विज्ञातुमुच्यमानांस्त्वयानघ ॥ १६ ॥ तेचैनमनुनेष्यन्ति धृतराष्ट्रंजनाधिपम् । तञ्चपापसमाचारं सहामात्यंसुयोधनम् ॥ १७ ॥ श्रोताचार्थस्यविदुरस्त्वञ्चवक्ता जनार्दन । कमिवार्थंविवर्तन्तं स्थापयेतांनवर्त्मनि ॥ १८ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि नकुलवाक्ये
अशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

सहदेव उवाच ॥ यदेतत्कथितंराजा धर्मएषसनातनः । यथायुद्धमेवस्यात् तथाकार्यमरिन्दम ॥ १ ॥ यदिप्रशममिच्छेयुः कुरवःपाण्डवैःसह । तथापियुद्धंदाशार्ह योजयेथाःसहैवतैः ॥ २ ॥ कथंनुदृष्ट्वापाञ्चालीं तथाकृष्णसभागताम् । अवधेन

समर में मांस व रुधिरकी देहधारे कौन पुरुष युद्धकरेगा । १४ । इस से अब आप वहां जानेही से धर्मराज का इष्ट अर्थ सिद्ध करेंगे इसमें कुछ अंतरही नहीं है । १५ । व फिर जब वहां जाय आप कल्याणकी बातें कहें गे तो विदुर, भीष्म, द्रोण, व बाह्लिकजी तुम्हारे कहने से जानभी सकेंगे ।१६। फिर वे लोग मंत्रियों सहित धृतराष्ट्रजीको व बढ़ हुए पापी दुर्योधन को भी समझा देंगे । १७ । जहां विदुर श्रोता और आप वक्ताहों वहां कौनसा अर्थ सिद्ध नहीं हो सक्ता ॥ १८ ॥

अध्याय ॥ ८१ ॥

सहदेवबोले कि जो राजा ने कहा है सनातन धर्मतो यही है, परन्तु हमारे मत से आप वैसीही बातें कहियेगा जिस में युद्धही हो । १ । जो कौरव-लोग पाण्डवों के संग शामभी चाहें तोभी आप ऐसेही युक्तिकीजियेगा जिसमें उन के साथ युद्धही हो मेल

Kashi of great prowers and Dhrishtaketu the king of Chandeli can not be withstood in battle by any man made of flesh and blood. Undoubtedly you will accomdlish Yudhishthir's desire on reaching there. Vidur, Bhishm, Drona, and Valhik will, on knowing your purpose, induce king Dhrirashtra and his ministers and wicked sons to accept your terms. Where Vidur is the hearer and you are the speaker, nothing can remain unaccomplished." 18.

CHAPTER LXXXI

"The king has spoken in accordance with the old practice," said Sahadev, "but, if you wish to know my opinion, you should so talk there that war may become inevitable. Induce them to make war even if the Kauravas wish to contract peace with the Pandavas; for

मशाम्यैतमपमन्युः सुयोधने ॥ ३ ॥ यदिभीमार्जुनौकृष्ण धर्मराजश्चधार्मिकः । धर्मप्रधानस्तेयुद्धं तेनाहं योद्धुमिच्छामिसंयुगे ॥ ४ ॥ सात्यकिरुवाच । सत्यमाहमहाबाहो सहदेवोमहामतिः । दुर्य्योधनवधे शान्तिस्तस्य कोपस्यमेभवेत् ॥ ५ ॥ नजानासियथादृष्ट्वा चीराजिनधरानवने। तवापिमन्युरुद्भूतो दुःखितान्वीक्ष्यपांडवान् ॥ ६ ॥ तस्मान्माद्रीसुत शूरो यदाहरणकर्कशः । वचनंसर्वयोधानां तन्मतंपुरुषोत्तम ॥ ७ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवंवदतिवाक्यन्तु युयुधानेमहामतौ । सुभीम सिंहनादोभूद्योधानां तत्रसर्वशः ॥ ८ ॥ सर्वेहिसर्वशो वीरास्तद्वचःमत्यपूजयन् । साधुसाध्विति शैनेयंहर्षयन्तोयुयुत्सवः ॥ ९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि सहदेवसात्यकिवाक्ये एकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

किसी तरह न हो। २। क्योंकि सभा में द्रौपदी की वह दुर्दशा देख दुर्योधनको विना मारेबाले हमारा क्रोध कैसे शान्तहोगा। ३। जो भीमसेन अर्जुन व धर्मराज ये धर्मात्मा ही बनेरहेंगे तोभी हम अकेले धर्म छोड़कर समर में दुर्योधन से युद्धही करना चाहते हैं। ४। यह सुन सात्यकिजी बोले कि हे कृष्णचन्द्रजी महामति सहदेव ने सत्यकहा कि दुर्योधन के मारेही जानेपर हमारे क्रोधकी शान्तिहोगी हमारे भी क्रोधकी तभी शान्तिहोगी जब दुर्योधन माराजायगा। ५। क्योंकि आप नहीं जानते जैसे वनमें पाण्डवों को चीर मृगचर्म धारण किये देख आपको भी पाण्डवों को दुःखित देख क्रोध हुआथा। ६। तिससे रण कर्म्म में कर्कश माद्रीजी के पुत्र सहदेवजी ने जो कहा है वही सब योधों का सम्मत है। ७। वैशम्पायनजी बोले कि महामति सात्यकि वीरके ऐसा कहतेही सब योधोंने बड़ा भयंकर सिंहनाद किया। ८। सब दिशाओं से सब वीरों ने साधु साधु कहा और सात्यकि के वचनकी प्रशंसाकी। ९।

---

we can find no peace of mind without killing *Duryodhan* since we have witnessed Draupadi so badly insulted in the court. If Bhimseen, Arjun and Dharmraj all stick to *dharm*, I alone in contravention to it would make war on Duryodhan." On hearing this, Satyaki thus spoke out:—"Sahadev is right; our anger cannot be appeased without killing Duryodhan. Do you not remember your own anger at seeing the Pandavas in rags and deer skins in the forest? It is therefore the opinion of all the warriors what the wise son of Madri has said." Vaishampayan says that on hearing the words of Satyaki all the warriors applauded the words of Satyaki from all directions and praised him. 9.

वैशम्पायन उवाच । राज्ञस्तुवचनंश्रुत्वा धर्मार्थसहितंहितम् । कृष्णा दाशार्हमासीनमब्रवीच्छोककर्षिता ॥ १ ॥ सुताद्रुपदराजस्य स्वासितायतमूर्द्धजा । सम्पूज्य सहदेवञ्च सात्यकिंचमहारथम् ॥ २ ॥ भीमसेनञ्चसंशान्तं दृष्ट्वापरमदुर्मना: । अश्रुपूर्णेक्षणा वाक्यमुवाचेदं मनस्विनी ॥ ३ ॥ विदितंतेमहाबाहो धर्मज्ञमधुसूदन । यथानिकृतिमास्थाय भ्रंशिता:पाण्डवा:सुखात् ॥ ४ ॥ धृतराष्ट्रस्यपुत्रेण सामात्येन जनार्दन । यथाचसञ्जयोराज्ञा मन्त्रंरहसिश्रावित: ॥ ५ ॥ युधिष्ठिरस्यदाशार्हतच्चापि विदितंतव । यथोक्त:सञ्जयश्चैव तच्चसर्वंश्रुतंत्वया ॥ ६ ॥ पञ्चनस्तातदीयन्तां ग्रामा इतिमहाद्युते । अविस्थलंवृकस्थलं माकन्दींवारणावतम् ॥ ७ ॥ अवसानेमहाबाहो कंचिदेकञ्चपंचमम् । इतिदुर्योधनोवाच्य: सुहृदश्चास्यकेशव ॥ ८ ॥ नचापिहकं

अध्याय ८२ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि राजाके धर्मार्थ सहित व हित वचन सुन शोकके मारे कृशित द्रौपदीजी आगे बैठे कृष्णचन्द्रजीसे बोलीं ।१। व बहुत काले व लंबे केशवाली द्रुपद राजकी कन्या सहदेव व सात्यकि के वचनकी प्रशंसा कर । २ । भीमसेन को शांतदेख सदासहो नेत्रों में आंसुभर परम मनस्विनीहो बोलीं । ३ । हेमहाबाहु धर्मज्ञ मधुसूदन आपको विदितही है जैसे कपट से पाण्डव लोग सुखसे भ्रंशित कराये गये । ४ । व उस में मंत्रियों सहित दुर्योधन ने जैसा किया वहभी सब विदितहै, व जैसे संजय ने आप एकान्त में धृतराष्ट्र राजाकी बातें सुनाईं वेभी विदितहैं । ५ । व युधिष्ठिरजीने संजयसे जो कहा व फिर संजयके जानेपर जो आप से कहा आपने सब सुना व जाना ।६। कि पांच ग्राम हमको दो बाकी सब तुमलो, उन में अविस्थल, वृकस्थल, माकन्दी, वारणावत । ७ । व एकजो उन के मन में हो, यह दुर्योधन से व उन के सुहृदों से कहना यह

CHAPTER LXXXII

Vaishampayan said that having heard Yudhishthir's words full of *dharm*, *arth* and profit, Draupadi in the excess of her grief thus addressed Shri Krishn. Having praised the words of Sahadev and Satyaki and seeing the coolness of Bhimsen, the long black haired daughter of king Drupad, spoke with a heavy heart and with tears in her eyes: "Virtuous Madhusudan of long arms ! you know how the Pandavas were deceitfully deprived of happiness; you know the misdeeds of Duryodhan and his ministers and the message of Dhritrashtra which Sanjaya brought to you in private as well as the reply of Yudhishthir and the departing words of Sanjaya. Yudhishthir wanted only five

रोद्रावयं श्रुत्वाकृष्णसुयोधनः । युधिष्ठिरस्यदाशार्ह श्रीमतःसन्धिमिच्छतः ॥ ९ ॥ अप्रदानेनराज्यस्य यदिकृष्णसुयोधनः । सन्धिमिच्छेन्न कर्त्तव्यन्तत्र गत्वाकथञ्चन ॥ १० ॥ शक्ष्यन्तिहिमहाबाहो पांडवाःसृञ्जयैःसह । धार्त्तराष्ट्रबलंघोरं क्रुद्धंप्रतिसमासितुम् ॥ ११ ॥ नहिसाम्नानदानेन शक्यार्थस्तेषुकश्चन । तस्मात्तेषुनकर्तव्या कृपा तेमधुसूदन ॥ १२ ॥साम्नादानेनवाकृष्ण येनशाम्यन्तिशत्रवः । योक्तव्यस्तेषुदण्डः स्याज्जीवितंपरिरक्षता ॥ १३ ॥ तस्मात्तेषुमहादण्डः क्षेप्तव्यःक्षिप्रमच्युत । त्वयाचैव महाबाहो पांडवैःसहसृञ्जयैः ॥ १४ ॥ एतत्समर्थपार्थानां तवचैवयशस्करम् । क्रियमाणंभवेत्कृष्ण क्षत्रस्यचसुखावहम् ॥ १५ ॥ क्षत्रियेणहिहन्तव्यः क्षत्रियोलोभमा

संजय से सन्देश कहा । ८ । पर मेलकी इच्छा किये धर्मात्मा श्रीमान युधिष्ठिरजीकेवचन दुर्योधन ने न माने पांचग्रामभी देना अंगीकार न किया । ९ । इस से हम अब आप से कहते हैं कि जो बिना पांचभी ग्रामदिये दुर्योधन संधि किया चहैं तो आप वहांजाय संधि करना न मानियेगा । १० । क्योंकि सृंजयवंशियों समेत पाण्डव लोग दुर्योधनकी बड़ी घोरभी सेनाके प्रतिपक्षी अच्छीतरह होसकेंगे । ११ । कौरवलोग साम व दामसे कभी न मानेंगे इस से आप उनके ऊपर दया न कीजियेगा । १२ । क्योंकि जो शत्रु साम दामसे न शांतहों, जो अपने प्राणोंकी रक्षा चहे उन शत्रुओं को दण्डही देकर शांतकरे । १३ । इस से कौरवोंके ऊपर महादण्ड प्रक्षेपकरना आपको उचित है, सो आपको अकेले नहीं कहतीं पांडवों सृंजयों समेत आप कौरवों के ऊपर दण्ड प्रक्षेपकीजिये, यह पार्थों के अर्थका साधक व आप के यशका कारकहोगा । १४ । व यह काम क्षत्रियमात्रकोभी सुखदायकहोगा, क्योंकि यहतो लिखाही है कि लोभी क्षत्रियको क्षत्रियमारडाले, व अपने धर्म में टिकाहुआ क्षत्रिय लोभी अक्षत्रियकोभी मारडाले । १५ । परन्तु और सबको

---

villages namely Avisthal, Vrikasthal, Makandi, Varnavat and one more; but Duryodhan disregarded the peaceful request of Yudhishthir the just and did not consent to give even the five villages. Duryodhan will perhaps condescend to make peace without giving the five villages; but you must not make peace with him on such terms. 10. For, the Pandavas and Srinjayas can fully cope with the large army of Duryodhan. The Kauravas will never consent to your terms and therefore you should have no mercy for them; for when an enemy *does not consent to make peace, he should be* subdued with punishment, if one cares for one's own life. You should deal a severe punishment on the Kauravas and not only you but the

स्थितः । अक्षत्रियोवादाशार्ह स्वधर्ममनुतिष्ठता ॥ १६ ॥ अन्यत्रब्राह्मणाद्तात सर्व पापेष्ववस्थितात् । गुरुर्हिसर्ववर्णानां ब्राह्मणःप्रसृताग्रभुक् ॥ १७ ॥ यथाऽवध्येवध्य माने भवेद्दोषोजनार्दन । सवध्यस्यावधेदृष्ट इतिधर्मविदोविदुः ॥ १८ ॥ यथात्वांन स्पृशेदेष दोषःकृष्णतथाकुरु । पाण्डवैःसहदाशार्ह सृञ्जयैश्चससैनिकैः ॥ १९ ॥ पुनरुक्तञ्चवक्ष्यामि विश्रम्भेणजनार्दन । कानुसीमन्तिनीमादृक् पृथिव्यामस्तिकेशव ॥२०॥ सुताद्रुपदराजस्य वेदिमध्यात्समुत्थिता । धृष्टद्युम्नस्यभगिनी तवकृष्णप्रिया सखी ॥ २१ ॥ आजमीढकुलंप्राप्ता स्नुषापांडोर्महात्मनः । महिषीपांडुपुत्राणां पंचेन्द्र समवर्चसाम् ॥ २२ ॥ सुतामेपञ्चभिर्वीरैः पंचजातामहारथाः । अभिमन्युर्यथाकृष्ण

क्षत्रिय मारसक्ताहै जो सब पापही करताहो वैसेभी ब्राह्मण को नहीं मारसक्ता क्योंकि ब्राह्मण सबवर्णोंका गुरू है व सब के प्रथम भोजन करनेका पात्र है । १६ । जैसे अवध्य ब्राह्मणादि के वधकरनेमें दोषहोताहै वैसेही वध्यके न वधकरने में दोषहोता यह धर्मवेत्ताओंने कहाहै । १७ । जिसमें आपको वध्य दुर्योधनादिकों के अवधकादोष नहो वहपांडव दशार्ह सृंजय व सैन्यसहित आप करें । १८ । हे जनार्दन अब हम विश्रम्भके कारण कहीहुई बात फिर कहती हैं, कि भला पृथ्वी में हमारी नाई कौनसी स्त्री है । १९ । जो हम द्रुपदराजकी वो कन्या सोभी योनिसे उत्पन्न नहीं, वेदीके मध्य में से उत्पन्न व धृष्टद्युम्न महारथकी भगिनी, व आपकी प्यारी सखी । २० । आजमीढ राजा के कुल में व्याही महात्मा पाण्डुजी की पुत्रवधू, व इन्द्रसम तेजस्वी पांच पाण्डु पुत्रों की स्त्री । २१ । फिर पांचों वीरों से हमारे पांच वीर पुत्र उत्पन्न हुये, वे पांचों महारथ धर्म से जैसे आपकी भगिनी के पुत्र अभिमन्यु वैसेही वे हमारे पुत्रभी हैं । २२ । सो ऐसी हम, पाण्डु

तथानेतवश्वमतः॥ २३ ॥ साहंकेशग्रहंप्राप्ता परिक्लिष्टासभांगता। पश्यतांपांडुपुत्राणां त्वयिजीवतिकेशव ॥ २४ ॥ जीवत्सुपांडुपुत्रेषु पंचालेष्वथवृष्णिषु। दासीभूतास्मि पापानांसभामध्ये व्यवस्थिता ॥ २५ ॥ निरमर्षेष्वचेष्टेषु प्रेक्षमाणेषुपांडुषु। पाहि मामितिगोविन्द मनसाचिन्तितोसिमे ॥ २६ ॥ यत्रमांभगवान्राजा श्वशुरोवाक्यम ब्रवीत्। वरंवृणीष्वपांचालि वरार्हासिमतामम ॥ २७ ॥ अदासाःपाण्डवाःसन्तु सरथाःसायुधाइति। मयोक्तेयत्रनिर्मुक्ता वनवासायकेशव ॥ २८ ॥ एवंविधानां दुःखानामभिज्ञोसि जनार्दन। त्रायस्वपुण्डरीकाक्ष सभर्तृज्ञातिबान्धवान् ॥ २९ ॥

पुत्रों के देखते २ व आपके जीते २ सभाके बीच में केश पकड़े घसीटी हुई महाक्लेश को प्राप्तहों। २३। हाय, पाण्डु के पुत्रों के व पांचालों के व सृञ्जयों के जीतेही जीते बनपापियों की दासी के समानहो हम सभा में उस दुर्दशा के साथ पहुँचाई गई २४ जब पाण्डवलोग हमको देखते रहे व कुछ न करसके तो हमने मनसे आपका स्मरणकिया कि हे गोविन्द हमारी रक्षा करो। २५। जब हमारे श्वशुर राजा धृतराष्ट्र ने आपकी प्रेरणा से हमसे कहा कि हे द्रौपदि तुम बरदान पाने के योग्यहो जो चाहो बरमांगो २६ तब हमने कहा कि पाण्डव लोग अदासहो रथ घोड़े सहित बनको जानेपावें यही बरदान है, हमारे ऐसा कहने पर ये लोग दासता से छूट बनको जानेपावें। २७। इसप्रकार के सब दुःखों के आप जाननेवालेहो, इस से हे पुण्डरीकाक्ष पति पुत्र बान्धव ज्ञातिसहित हमारी रक्षाकरो। २८। हेकृष्ण धर्म से तो हम भीष्म व धृतराष्ट्रकीभी पतोहूहोती हैं

I tell you again, Janardan, what I have often told: what other woman was ever ill-treated like me? Being the daughter of king Drupad, born of sacrificial fire and of no woman, sister of brave Dhrishtadyumna, your own playmate, married to the descendants of Ajmirh, daughter-in-law of Pandu and wife to the five Pandavas glorious like Indra and mother of five brave sons like Abhimanyu the son of your sister, being such, I fell into the great trouble. In the presence of the Pandavas and during your life time I was dragged by the hair in the open court. Alas! I was dragged like a sinful slave during the life time of the Pandavas, the Panchals and the Srinjayas. When the Pandavas were looking on me helplessly, I remembered you saying, "Govind, protect me!" and then my father-in-law, induced by you, said to me, "Draupadi, you deserve a boon. Ask of me what you like." You know all my misfortunes, Pundrikash, protect me and my husbands, sons, kinsmen and relations. I am the daughter-in law

नन्वहंकृष्ण भीष्मस्य धृतराष्ट्रस्यचोभयोः । स्नुषाभवामिधर्मेण साहंदासीकृताबलात् ॥ ३० ॥ धिक्पार्थस्यधनुष्मत्तां भीमसेनस्यधिग्बलम् । यत्रदुर्योधनःकृष्ण मुहूर्तमपिजीवति ॥ ३१ ॥ यदितेहमनुग्राह्या यदितेस्तिकृपामयि । धार्तराष्ट्रेषुवैकोपः सर्वः कृष्णविधीयताम् ॥ ३२ ॥ वैशम्पायन उवाच । इत्युक्त्वामृदुसंहारं वृजिनाग्रंसुदर्शनम् सुनीलमसितापाङ्गी सर्वगन्धाधिवासितम् ॥ ३३ ॥ सर्वलक्षणसम्पन्नं महाभुजगवर्चसम् । केशपक्षंवरारोहा गृह्यवामेनपाणिना ॥ ३४ ॥ पद्माक्षीपुण्डरीकाक्षमुपेत्य गजगामिनी । अश्रुपूर्णेक्षणाकृष्णा कृष्णंवचनमब्रवीत् ॥ ३५ ॥ अयन्तेपुण्डरीकाक्ष दुःशासनकरोद्धृतः । स्मर्तव्यःसर्वकार्येषु परेषांसन्धिमिच्छता ॥ ३६ ॥

तिसको जबरदस्ती उन के पुत्रोंने दासीबनालिया । २९ । हे कृष्ण जो अब मुहूर्तभरभी दुर्योधन जीतारहातो अर्जुनकी धनुर्द्धरताको धिक्कारहै व भीमसेन के बलको धिक्कार है । ३० । हे कृष्णचन्द्रजी जो आपकी हमारेऊपर अनुग्रहहो व जो हमारे विषयमें आप की कृपाहो तो सबप्रकारसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंके ऊपर आप कोपही करें । ३१ । वैशम्पायन ने कहा कि इसनाकह, सूत्र के ठौरोंसे बँधेहुयेभी व टेढ़े, रमणीय, बहुतबड़ीकाले सबच-मेली आदि सुगन्धित तैलयुक्त । ३२ । सबलक्षण संपन्न, बड़ेकाले सर्पोंके समान लम्बे, ऐसे अपने केश बायें हाथसे पकड़ । ३३ । कमलाक्षी व गजगामिनी द्रौपदीभी नेत्रों में आंसुभर कृष्णचन्द्रजीके समीपजाय यहवचनबोलीं कि हेपुण्डरीकाक्ष । ३४ । शत्रुओंसे मेलकरनेकीइच्छा किये आप सबकार्योंमें दुश्शासन के हाथों से उखाड़ेहुये इन हमारेकेशों का स्मरण करते रहैं । ३५ । हेकृष्ण जो बेचारे भीमसेन व अर्जुन कृपणहो मिलापकाने की इच्छा रखतेहोंतो पुत्रोंसहित हमारा वृद्धपिता कौरवोंसे युद्धकरेगा । ३६ । व पांच

---

of Bhishm and Dhritrashtra whose sons had dragged me by force into slavery. The archery of Arjun and the strength of Bhimsen will come to shame, if Duryodhan lives any longer. 30. Let your anger fall on the sons of Dhtitrashtra, if you are kind to me, Krishn." Vaishampayan said that after this, Draupadi, with tears in her eyes, holding in her left hand her jet black looks tied with ribbons, anointed with sweet-scented oils, and long as a black serpent, went towards Shri Krishna and said, "Pundarikash, in all your peaceful declings with the enemy you must remember that these locks were once torn by the hands of Dushasan! If Bhimsen and Arjun are helplessly desirous of peace, my old father and his sons are ready to fight against the Kauravas. My five brave sons, led by Abhimanyu

यदिभीमार्जुनौकृष्ण कृपणौसन्धिकामुकौ । पितामेयोत्स्यतेवृद्धः सहपुत्रैर्महारथैः ३७ पञ्चचैवमहावीर्याः पुत्रामेमधुसूदन। अभिमन्युंपुरस्कृत्य योत्स्यन्तेकुरुभिःसह ॥३८॥ दुःशासनभुजंश्यामं संछिन्नंपांशुगुंठितम् । यद्यहन्तुनपश्यामि काशान्तिर्हृदयस्यमे ॥ ३९ ॥ त्रयोदशहिवर्षाणि प्रतीक्षन्त्यागतानिमे । विधायहृदयेमन्युं प्रदीप्तमिव पावकम् ॥ ४० ॥ विदीर्यतेमेहृदयं भीमवाक्शल्यपीडितम् । योयमद्य महाबाहुर्धर्ममेवानुपश्यति ॥ ४१ ॥ इत्युक्त्वाबाष्परुद्धेन कण्ठेनायतलोचना । रुरोदकृष्णा सोत्कम्पंसस्वरंबाष्पगद्गदम् ॥ ४२ ॥ स्तनौ पीनायतश्रोणी सहितावभिवर्षती । द्रवीभूतमिवात्युष्णं मुंचतिवारिनेत्रजम् ॥ ४३ ॥ तामुवाचमहाबाहुः केशवःपरिसान्त्वयन्। अचिरात्द्रक्ष्यसेकृष्णे रुदतीर्भरतस्त्रियः ॥ ४४ ॥ एवंताभीरुरोत्स्यन्ति

हमारे महावीर्य पुत्रहैं वे अभिमन्युको आगेकर सब कौरवोंके संग युद्धकरेंगे । ३७ । क्यों कि जबतक हम, दुःशासनका श्यामरंगका हाथ कटाहुआ रक्त व धूलि से युक्त न देखेंगी तबतक हमारे हृदय को कौन शान्तिहोगी । ३८ । प्रदीप्त अग्नि के समान प्रज्वलित क्रोध हृदय में स्थापितकिये राह परखते हमको तेरहवर्ष बीतगये । ३९ । पर हे शत्रु भयंकर कृष्ण, जो आप अबभी धर्महीं देखते हैं तो अब पीड़ितहो हमारा हृदय फटाजाताहै ४० इतनाकह विशाल नेत्रवाली द्रौपदीजी नेत्रोंमें आंसुभर थरथराय कंपतीहुई बड़े जोर से गद्गदायरोदन करनेलगी । ४१ । उससमय गर्म आंसुओं से स्तनोंको भिगो दिया, जिस के देखनेसे महानिष्ठुरभी पुरुषहोवातो उसको करुणाआती । ४२ । ऐसीद्रौपदीजी को समझातेहुये करुणा करुणालय कृष्णचन्द्रजीबोले कि हे द्रौपदि बहुतही शीघ्र कौरवोंकी स्त्रियोंको रोती देखोगी । ४३ । हे भामिनि जिन कौरवों के ऊपर तुम ने क्रोधकिया है

---

will also fight against them; for my heart can find no rest until I see the swarthy hand of Dushasan cut down and lying on the ground stained with blood and dust. I have been waiting for thirteen long years, while anger burns my heart like a flame of fire. My breast will break open if you will look for dharm still longer. 10." Having said this, Draupadi shed tears from her large eyes, trembled and wept bitterly. Warm tears fell on her breast, exciting pity in the hardest hearts. Seeing her weeping so bitterly, Krishn consoled her by saying, "You will soon see the wives of the Kauravas weeping. The wives of the Kauravas who have excited your anger, will weep over the death of their relations and sons. I shall kill them by Yudhishthir's order and with the help of Bhim, Arjun, Nakul and

निहतज्ञातिबान्धवाः । हतमित्राहतबला येषांक्रुद्धासिभामिनि ॥ ४५ ॥ अहञ्चतत् करिष्यामि भीमार्जुनयमैःसह । युधिष्ठिरनियोगेन दैवाच्चविधिनिर्मितात् ॥ ४६ ॥ धार्त्तराष्ट्राःकालपक्वा नचेच्छृण्वन्तिमेवचः । शेष्यन्तेनिहताभूमौ श्वशृगालादनीकृता ॥ ४७ ॥ चलेद्धिहिमवान् शैलोमेदिनीशतधाफलेत् । द्यौः पतेच्चसनक्षत्रा नमेमोघवचोभवेत् ॥ ४८ ॥ सत्यंतेप्रतिजानामि कृष्णेबाष्पोनिगृह्यताम् । हतामित्रान्श्रियायुक्तानचिराद्द्रक्ष्यसे पतीन् ॥ ४९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि द्रौपदीकृष्णसंवादे द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८२ ॥

उनकी स्त्रियां इसीतरह रोदनकरेंगी क्योंकि उन के ज्ञाति बान्धव पति पुत्रादि सबमारडाले जायँगे । ॥४ । यह काम युधिष्ठिरकीही आज्ञा से भीम अर्जुन नकुल व सहदेवके संग हमी करेंगे । ४५ । काल पक्व धृतराष्ट्र पुत्र यदि मेरा कहा न मानेंगेतो मारेजायँगे और उनको कुत्ते और गीदड़ खावेंगे । ४६ । चाहे हिमालय चलजाय पृथ्वी के सौ खंडहो जांय और तारागण टूटपड़े परन्तु मेरा वचन वृथा नहीं होसकता । ४७ । हे द्रौपदी हम सत्य कहते हैं अपने आंसू बंद करो तुम शीघ्रही श्री युक्त और शत्रु रहित होगी ४८ ॥

Sahadev. If the sons of Dhritrashtra who are fated to die, will not hear my words, they will fall dead and their bodies will be eaten by dogs and jackals. My words will not prove false though the Himalayas move from their place, the earth be broken into a hundred pieces and the luminous bodies fall down. Stop your tears Draupadi for you will soon regain your wealth and will be free from enemies."48.



अर्जुन उवाच । कुरूणामद्यसर्वेषां भवानसुहृदनुत्तमः । सम्बन्धीदयितो नित्य मुभयोःपक्षयोरपि ॥ १ ॥ पाण्डवैर्धार्तराष्ट्राणां प्रतिपाद्यमनामयम् । समर्थःप्रशमञ्चैव कर्त्तुमर्हसि केशव ॥२॥ त्वमितःपुण्डरीकाक्ष सुयोधनममर्षणम् । शान्त्यर्थंभ्रातरंब्रूया यत्तद्वाच्यममित्रहन् ॥ ३ ॥ त्वयाधर्मार्थयुक्तञ्चेदुक्तंशिवमनामयम् । हितंनादास्यते बालोदिष्टस्यवशमेष्यति ॥ ४ ॥ श्रीभगवानुवाच । धर्म्यमस्मद्धितञ्चैव कुरूणांयद नामयम् । एषयास्यामिराजानं धृतराष्ट्रमभीप्सया ॥ ५ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततोव्यपेतेतमसि सूर्येविमलउद्गते । मैत्रेमुहूर्त्तेसम्प्राप्ते मृद्वर्चिषिदिवाकरे ॥ ६ ॥

अध्याय ॥ ८१ ॥

अर्जुनजी श्रीकृष्णचन्द्रजी से बोले कि आप सब कौरवों व पाण्डवों के उत्तम सुहृद हैं व दोनों पक्षों के सम्बन्धी व नित्य प्रिय हैं । १ । इस से पाण्डवों की ओर से सब कौरवोंकी कुशल पूंछियेगा, व आप सब कुछ करनेमें समर्थ हैं इससे कौरवों पांडवों का मेलही कराइये । २ । व असहनशील भाई दुर्योधन से आप इस ओर से जो कुछ कहियेगा वह शान्तिही होने के विषय में कहियेगा । ३ । व जो कुशल कारक कल्याण रूप व योग्य आपके वचन वे नमानेंगे तो आप अपनी अभाग्य के बश में पड़ेंगे । ४ । यह सुन श्रीभगवान् बोले कि अच्छा हम अभी जाते हैं जो हम दोनों का हितही व कौरवों को भी कुशलकारकहो वही कहेंगे इस में धृतराष्ट्रके मनकी जो बात होगी वहभी खुलजावगी । ५ । वैशम्पायनजी बोले कि जब प्रातःकाल हुआ व अन्धकार जातारहा व अर्जुनजी के नामके मैत्रनाम मुहूर्त्त प्राप्त हुई व दिवाकर के किरण कोमल हुये

CHAPTER LXXXIII

"You are the friend and kinsman of the Kauravas and Pandavas" said Arjun to Shri Krishn, "you will therefore say that the Pandavas inquire about the welfare of the Kauravas and because you can do everything, you should bring about the union of both the parties. Your talk with our unbearable brother, Duryodhan, should be about nothing but peace and he will suffer from his own misfortune if he does not mind your useful and worthy advice." On hearing this, Shree Krishn said, "Well, I am going there at once, I shall say what is good to our party and which leads to the safety of the Kauravas. The intentions of Dhritrashtra will also be disclosed in this way." Vaishampayan said that early the next morning in a propitious hour when the rays of the sun were shining clearly in the month of Kartik

कौमुदेमासिरेवत्यां शरदन्तेहिमागमे । स्फीतशस्यसुखेकाले कल्पःसत्ववतांवरः ॥७॥ मङ्गल्याःपुण्यनिर्घोषा वाचःशृण्वंश्चसूनृताः । ब्राह्मणानां प्रतीतानामृषीणामिव वासवः ॥ ८ ॥ कृत्वापौर्वाह्णिकंकृत्वा स्नातःशुचिरलंकृतः । उपतस्थेविवस्वन्तं पावकञ्च जनार्दनः ॥ ९ ॥ ऋषभंपृष्ठआलभ्य ब्राह्मणानभिवाद्यच । अग्निंप्रदक्षिणंकृत्वा पश्यन्कल्याणमग्रतः ॥ १० ॥ तत्प्रतिज्ञायवचनं पाण्डवस्यजनार्दनः । शिनेर्नप्ता रमासीनमभ्यभाषत सात्यकिम् ॥ ११ ॥ रथआरोप्यतां शंखश्चक्रश्चगदयासह । उपासङ्गाश्चशक्त्यश्च सर्वप्रहरणानिच ॥ १२ ॥ दुर्य्योधनश्चदुष्टात्मा कर्णश्चसहसौ

। ६ । तब कार्तिक महीने में रेवती नाम नक्षत्र में जब कि पूर्वाफाल्गुणी का जन्म होनेसे रेवती नक्षत्र सत्तरहवां होता है व वह अठई मैत्र नाम तारा होती है व शरदऋतु का अन्त हुआ हिमका प्रारम्भ हुआ व सब अन्न जो ठौर २ बोयागयाथा वह जमरहा था जड़हन धानों में बालियां आयरहीथीं उस समय सबप्रकार अर्जुनजी बलवत्तरहुये क्योंकि स्वामीही का बल दूतका लियाही जाता है इस से उसी समय में । ७ । विश्वस्त ब्राह्मण लोगों के मंगलयुक्त वेद वचन पुण्याहवाचनं सुनते हुये जैसे ऋषियों के वचन इन्द्र सुनते हैं । ८ । पूर्वाह्णि सब क्रियाकार मध्याह्न स्नानकर पवित्रहो चन्दनादि से भूषितहो कृष्णचन्द्रजी ने प्रथम सूर्य्यनाराण का उपस्थान कर फिर अग्नि में आहुतिदी । ९ । फिर एक श्वेत बैलकी पूंछ छू ब्राह्मणोंको प्रणाम कर अग्नि के प्रदक्षिणा विधान कर, व आगे सब कल्याणकी वस्तु देखते । १० । कृष्णचन्द्रजी अर्जुन व युधिष्ठिरादिके वचन के पूरेकरनेकी प्रतिज्ञाकर शिनि के नाती सात्यकि से बोले कि । ११ । रथ के ऊपर, शंख, चक्र, व गदा व सबबाण धनुष शक्ति व अन्य नानाप्रकारके आयुधधरो १२

---

and Revati the seventeenth constellation from Poorvaphalguni was in the ascension and was united with Maitra the eighth star, in the beginning of winter when seeds were coming out in the corn fields and rice fields were in ears. When Arjun's star of fate was powerful, *for a messenger represents his principal.* Shree Krishn heard the Vedic and other holy hymns from learned Brahmans as Indra hears from rishis. And having performed the morning duties after bathing and purifying himself he decorated himself with sandal paste and having worshipped the sun, he poured libations into fire. He then touched the tail of a white bullock and having made obeisance to Brahmans went round the fire and looked at all the propitious things. 10. Having promised to comply with the wishes of Arjun and Yudhishthir, Shri Krishn said to Satyaki the grandson of Shini,

बलः । नचशत्रुरवज्ञेयो दुर्बलोपिबलीयसा ॥ १३ ॥ ततस्तन्मतमाज्ञाय केशवस्य पुरःसराः । प्रसस्रुर्योजयिष्यन्तो रथंचक्रगदाभृतः ॥ १४ ॥ तंदीप्तमिव कालाग्निमाकाशगमिवाशुगम् । सूर्य्यचन्द्रप्रकाभ्यां चक्राभ्यांसमलंकृतम् ॥ १५ ॥ अर्द्धचन्द्रैश्च चन्द्रैश्चमत्स्यैः समृगपक्षिभिः । पुष्पैश्चविविधैश्चित्रं मणिरत्नैश्चसर्वशः ॥ १६ ॥ तरुणादित्यसंकाशं बृहन्तंचारुदर्शनम् । मणिहेमविचित्राङ्गं सुध्वजंसुपताकिनम् ॥ १७ ॥ सूपस्करमनाधृष्यं वैयाघ्रपरिवारणम् । यशोघ्नंप्रत्यमित्राणां यदूनांनन्दिवर्द्धनम् १८॥

क्योंकि शकुनि कर्ण के सम्मतमें पड़ने से दुर्योधन बड़ा दुष्टात्माहोगया है उसका कुछ ठीक नहीं युद्धकरने लगे तो बिनाआयुध क्याहोगा, क्योंकि जो आप बलवान्भीहो तोभी दुर्बल शत्रुको तुच्छ न समझना चाहिये । १३ । केशव भगवान् का ऐसा मतजान सबयोद्धा लोगभी अपने अस्त्र शस्त्रादिले तैयारहुये व भगवान्के रथपरतो जानों सबप्रकारके आयुध स्थापितही किये गये । १४ । व रथ प्रज्वलित कालाग्नि के समान प्रकाशित, अतिशीघ्र चलने के कारण मानों आकाशको चलेजाते हुये व सूर्य चन्द्र समान प्रकाशितदो पहिये बने, इस से भूषित । १५ । व जिसमें अर्द्धचन्द्राकार व चन्द्राकार नानाप्रकारकी मछलियां व मृग पक्षिगण बने व बहुतप्रकारके फूलबने व सर्वत्र मणियों से जटित । १६ । दोपहर के सूर्यके समान प्रकाशित, बड़ाभारी, देखनेमें अतिमनोहर, मणियों व सुवर्ण से जटितहोने के कारण चित्र विचित्र ध्वजा पताकायुक्त १७ सबसामग्रीयुक्त, किसी के ढिठाई करने के अयोग्य व्याघ्रचर्मसेमढ़े शत्रुओं के यशका नाशकरते हुये व यदुवंशियों को

"Put my conch, discus, mace, bows, arrows and other weapons on the chariot, for Duryodhan has become very wicked under the bad advice of Shakuni and Karan and nothing can be done without weapons if he begins fighting—an enemy though weak should not be disregarded." Knowing this opinion of Bhagwan Keshav, all the warriors made ready their weapons and all sorts of weapons were put on the chariot of Shri Krishn which shone like fire. It had two wheels for swift motion as if they would take it to the sky and shine there like the sun and the moon. It was decked with moons, fishes, animals, birds, flowers and gems of sorts. It shone like the sun at mid day and was very large, handsome, decked with gems of different colours and furnished with banners and implements of war. It was invulnerable and covered with skins of tigers, destroying the glory of enemies and pleasing the hearts of the Yadus. It was drawn

वाजिभिःशैव्यसुग्रीवमेघपुष्पवलाहकैः । स्नातैःसम्पादयामासुः सम्पन्नैःसर्वसम्पदा ॥ १९ ॥ महिमानन्तुकृष्णस्य भूयएवाभिवर्द्धयन । सुघोषःपतगेन्द्रेण ध्वजेनयुयुजे रथः ॥ २० तंमेरुशिखराकारं मेघदुन्दुभिनिःस्वनम् । आरुरोहरथं शौरिर्विमानमिव कामगम् ॥ २१ ॥ ततःसात्यकिमारोप्य प्रययौपुरुषोत्तमः । पृथिवीञ्चान्तरिक्षञ्च रथघोषेणनादयन ॥ २२ ॥ व्यपोढाभ्रस्ततः कालःक्षणेनसमपद्यत । शिवश्चानुववौ वायुः प्रशान्तमभवद्रजः ॥२३॥ प्रदक्षिणानुलोमाश्च मंगल्यामृगपक्षिणः । प्रयाणेवासुदेवस्य बभूवुरनुयायिनः ॥ २४ ॥ मंगल्यार्थपदैः शब्दैरन्ववर्त्तन्तसर्वशः । सारसाः शतपत्राश्चहंसाश्चमधुसूदनम् ॥ २५ ॥ मन्त्राहुतिमहाहोमैर्हूयमानश्च पावकः ।

आनन्द बढ़ाते । १८ । शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, वलाहकनाम चारघोड़े जुते, वे घोड़े सब स्नानकराये खरहरा आदि होने से साफसुथरे । १९ । फिर श्रीकृष्णचन्द्रजीकी महिमा को बढ़ाते गरुड़युक्त ध्वजका शब्दहोते, ऐसारथ तैयारहुआ । २० । ऐसे सुमेरु पर्वत के कंगूरेके समान शोभित रथपर श्रीकृष्णचन्द्रजी सवार हुये जानों इच्छा के अनुकूल चलनेवाले विमानही पर सवारहुये । २१ । इसके पीछे पुरुषोत्तम भगवान् सात्यकि को चढ़ाय पृथ्वी आकाश व अन्तरिक्षको शब्दित करातेचले । २२ । उस समय सब बादल छँटगया क्षणमात्रमें सब प्रकाशित होगया, पवन अनुकूल बहने लगा, धूलिका उड़ना बन्दहोगया । २३ । जो पक्षी व मृगगण दहिने निकलनें चाहिये दहिने निकले बायेंवाले बायें, इस प्रकार वासुदेव भगवान्की यात्रामें सब अनुकूलही हुआ । २४ । व मंगल के अर्थके शब्दकरते हुये सारस हंसादिपक्षी कृष्णचन्द्रजीके पीछे २ चलेजाते ।२५। व ब्राह्मणोंने जो मंत्रपढ़ अग्निमें आहुतेंदीं तो अग्नि से दक्षिणावर्त्त लपट निकलने लगीं, व

---

by four horses, named Shaivya, Sugreve, Meghpushp and Valahak which were kept well washed and clean. With its fluttering banner bearing the likeness of Garur it increased the fame of Shri Krishn. 20. Shri Krishn rode on the chariot which was grand like a peak of mount Meru or like a celestial car which goes at will. Behind him rode Satyaki, making the earth, air and sky resound. The day was uncloudy, the sun shone brightly and the breeze played softly. There was no dust on the road and animals and birds were seen on the right and left. Cranes and swans uttered forth cries of joy from behind. Brahmans poured libations to fire with hymns and the flames burnt brightly without smoke. Vasishth, Vamdev, Bhuridyumn, Gaya, Krath, Shukra, Narad, Valmiki, Marut, Kushal, Bhrigu,

मदक्षिणमुखो भूत्वा विधूपः समपद्यत ॥ २६ ॥ वसिष्ठो वामदेवश्च भूरिद्युम्नोगयः क्रथः । शुक्रनारदवाल्मीका मरुतः कुशिको भृगुः ॥ २७ ॥ देवाब्रह्मर्षयश्चैव कृष्णंयदुसुखावहम् । मदक्षिणमवर्चन्त सहितावासवानुजम् ॥ २८ ॥ एवमेतैर्महाभागैर्महर्षिगणसाधुभिः । पूजितःमययौकृष्णः कुरूणांसदनंमति ।.२९॥ तंमयान्तमनुमायात् कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । भीमसेनार्जुनौचोभौ माद्रीपुत्रौचपाण्डवौ ॥ ३० ॥ चेकितानश्च विक्रान्तो धृष्टकेतुश्चचंदिपः । द्रुपदःकाशिराजश्च शिखण्डी चमहारथः ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्नःसपुत्रश्च विराटःकेकयैःसह । ससाधनार्थमययुः क्षत्रियाःक्षत्रियर्षभम् ॥ ३२ ॥ ततोनुव्रज्यगोविंदं धर्मराजोयुधिष्ठिरः । राज्ञांसकाशेद्युतिमान्नुवाचेदंवचस्तदा ॥ ३३ ॥ योवैनकामान्नभयान्नलोभान्नार्थकारणात् । अ-

---

ऐसा प्रज्वलित हो चलनेलगा कि धुआंका कहीं नामभी नहीं सुनाई व दिखाई देता । २६ । व वसिष्ठ, वामदेव, भूरिद्युम्न, गय, क्रथ, शुक्र, नारद, वाल्मीकि, मरुत कुशक, भृगु, । २७ । देवर्षि, ब्रह्मर्षि, राजर्षि ये सब यदुकुलके सुखदायक कृष्णचन्द्रजी के दहिनीओर आनिकले । २८ । इसप्रकार ब्रह्मर्षि महर्षियों से आशीर्वाद पातेहुये कृष्ण चन्द्रजी कौरवों के समीप को चले । २९ । जब इसप्रकार कृष्णजी चले तो उससमय भी कुन्तीजीके पुत्र युधिष्ठिरजी, व भीमसेन, अर्जुन व नकुल सहदेव । ३० । व चेकितान चन्देली का राजा धृष्टकेतु, राजाद्रुपद, काशिराज, महारथ शिखण्डी । ३१ । धृष्टद्युम्न तथा पुत्रोंसहित राजाविराट, व कैकय देश के पांचोंभाई राजकुमारों सहित, ये सब कृष्णचन्द्रजी की सहायताके लिये पीछे पीछे चले । ३२ । तदनन्तर राजाओंके बीच से आगेहो धर्मपुत्र युधिष्ठिरजी श्रीगोविंद भगवान् से बोले । ३३ । जोकि ऐसे स्थिरबुद्धि व ऐसे निश्चल मन थे कि जिन्होंने काम क्रोध व भय के कारण तथा अर्थ के

Devarishis, Brahmarshis and rajarshis passed on the right of Shri Krishna the giver of happiness to the Yadus. Receiving benedictions from those great rishis, Shri Krishn went towards the Kauravas. After Shri Krishn went the sons of kunti, Yudhishthir, Bhim and Arjun, Nakul and Sahadev.30. Chekitan, Dhrishtaketu the king of Chandeli, king Drupad, the king of Kashi, brave Shikhandi, Dhrishtadyumn, king Virat, the five brothers of Kakaya and other princes followed Shri Krishna. After a short time, Yudhishthir came forward from the midst of the other kings and thus addressed Shri Krishna, the wise and firm-minded ho never did injustic for passion, anger, fear and greediness who knew dharm and was forbearing, wisest of men, lord

न्यायमनुवर्त्तेत स्थिरबुद्धिरलोलुपः ॥ ३४ ॥ धर्मज्ञोधृतिमानप्राज्ञः सर्वभूतेषुकेशवः ईश्वरःसर्वभूतानां देवदेवःसनातनः ॥ ३५ ॥ तंसर्वगुणसम्पन्नं श्रीवत्सकृतलक्षणम् । सम्परिष्वज्यकौन्तेयः सन्देष्टुमुपचक्रमे ॥ ३६ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ यास्माबाल्यात्प्रभृत्यस्मान पर्यवर्द्धयताबला । उपवासतपःशीला सदास्वस्त्ययनेरता ३७ देवता तिथिपूजासु गुरुशुश्रूषणेरता । वत्सलाप्रियपुत्राच प्रियास्माकंजनार्दन ३८ सुयोधनभयाद्यानोऽत्रायतामित्रकर्षण । महतोमृत्युसम्बाधा दुत्तरेन्नौरिवार्णवात् ॥ ३९ ॥ अस्मत्कृतेचसततं यथादुःखानिमाधव । अनुभूतान्यदुःखार्हा तांस्मपृच्छे रनामयम् ॥ ४० ॥ भृशमाश्वासयेश्चैनां पुत्रशोकपरिप्लुताम् । अभिवाद्यस्वजेथा स्त्वं पाण्डवान्परिकीर्त्तयन ॥ ४१ ॥ ऊढात्प्रभृतिदुःखानि श्वशुराणामरिन्दम ।

लोभ से कभी अन्याय के पीछे पैरही नहीं धरा । ३४ । वे धर्मज्ञ, धारण शक्तिमान, व सबप्राणियोंमें महाप्राज्ञ केशव सबप्राणियोंके ईश्वर, देवदेव सनातन ब्रह्म ३५ ऐसे सबगुण सम्पन्न, श्रीवत्स के लक्षण से लक्षित ऐसे कृष्णचन्द्रजी को लपट भेंटकर युधिष्ठिरजी कुछ सन्देश कहने लगे, कि । ३६ । जिसने बाल्यावस्थाही से हमलोगों का पालन पोषणकर बढ़ाया, व उपवास तपस्यादि करती हुई सदा हमलोगों के कल्याणही में तत्पर रहीं । ३७ । व सदा देवता अतिथियोंकी पूजामें व गुरुकी शुश्रूषा में तत्पर रहीं व सबके ऊपर वत्सल रहतीं व हमको तो प्राण से अधिक प्रिय जानतीं । ३८ । व जिन्हों ने दुर्योधनकी भयसे हमलोगों की रक्षाकी, यहांतक कि बड़े भारी मृत्युकी बाधा से ऐसे हम सबों को उबारा जैसे समुद्रमें से नौका उबारती है, । ३९ । व जिन्होंने हम लोगों के लिये अनेक दुःख सहे उन दुःख न सहने के योग्य हमारी माताको कुशल पूंछियेगा । ४० । व पुत्रों के शोकसे भरीहुई उनको बहुतही अच्छीतरह से समझाइयेगा,

---

of all beings, god of gods, ancient Brahm, endowed with all virtues and marked with the mark of Shrivats:—"Be pleased, Keshav," said Yudhishthir, embracing Shri Krishna, "to inquire about the welfare of our mother who brought us up from childhood, was ever intent on our good with fasts and asceticism, was ever engaged in the worship of gods and guests and attendance on elders, was kind to all and loved us more than her own life, who protected us from Duryodhan's tyranny and saved us from death as a boat saves one from drowning in the sea and who has suffered for us many pangs. 10. Be pleased to console her, for she is much grieved on the bereavement of her sons, and convey to her the greetings of each of us separately by name.

निकारानवदार्हाच पश्यन्तीदुःखमश्नुते ॥ ४२ ॥ अपिजातुसकालःस्यात् कृष्ण दुःखविपर्ययः । यदाहंमातरंक्लिष्टां सुखंदद्यामरिन्दम ॥ ४३ ॥ प्रव्रजन्तोनुधावन्तीं कृपणांपुत्रगृद्धिनीम् । रुदतीमुपहायैना मगच्छामवयंवनम् ॥ ४४ ॥ ननूनं म्रियतेदुःखैः साचेज्जीवति केशव । तथापुत्राधिभिर्गाढ मार्त्ताह्यानर्चसत्कृत ॥४५॥ अभिवाद्याथसाकृष्ण त्वयामद्वचनाद्विभो । धृतराष्ट्रश्चकौरव्यो राजानश्चवयोधिकाः ॥ ४६ ॥ भीष्मंद्रोणंकृपञ्चैव महाराजञ्चबाह्लिकम् । द्रौणिञ्चसोमदत्तञ्च सर्वांश्च भरतान्प्रति ॥ ४७ ॥ विदुरञ्चमहाप्राज्ञं कुरूणांमन्त्रधारिणम् । अगाधबुद्धिंधर्मज्ञं स्वजेथामधुसूदन ॥ ४८ ॥ इत्युक्त्वा केशवंतत्र राजमध्येयुधिष्ठिरः । अनुज्ञातोनि

व हमलोगों की ओरसे प्रणामकर सबोंका अलग २ नाम कह २ मिलियेगा । ४१ । जिन्होंने बाल्यावस्था से ले आजतक श्वशुरादिकों का दुःख सहा यद्यपि दुःख सहने के योग्य नहीं तथापि दुःखही भोगे । ४२ । हे कृष्ण कभी वहभी समय होगा जिसमें यह दुःख मिटेगा व कष्टसे छुड़ाय अपनी माताको हम सुखमें युक्तकरेंगे । ४३ । जब हमलोग वनको निकालेगये तो पुत्रों के लोभके मारे पीछे २ वे भी दौड़ी आतीथीं पर हम लोग उनको वहीं छोड़ वनको चलेआये कदाचित् वे हमारी माताजी हम लोगों के वियोग के दुःखों से मर न गईहों तो हे द्वारकारेश पूजित । ४५ । हमारी ओर से बहुत २ प्रकार से प्रणामाभिवादन करना, व धृतराष्ट्रसे भी प्रणाम कहना, तथा और राजालोग जो अवस्था में हमसे अधिकहों उनसेभी । ४६ । भीष्म द्रोण कृपाचार्य व महाराज बाह्लिक व अश्वत्थामा सोमदत्त व कौरवों से प्रणामादि कहना । ४७ । हे मधुसूदन, अगाधबुद्धि, धर्मज्ञ, महाप्राज्ञ, व कौरवों के मंत्री विदुरजी से हमारी ओर से लपटकर मिलना । ४८ । इतना राजाओं के मध्य में कृष्णचन्द्रजीसे कह व प्रदक्षिणाकर राजा

She has been long suffering from the tyranny of her father-in-law although she did not deserve it. Will there come a time, Krishn, when we shall be free from troubles and will be able to give happiness to our mother? When we were sent into exile she followed us for affection; but we left her there and went to forest. Say our greetings to her, lord of Dwarka, if she has not already died from grief of our separation. Convey our greetings to Dhritrashtra and other kings who are older than us as well as to Bhishm, Drona, Kripacharya, king Vahlik, Ashwathama, Somdatta and other Kauravas. Embrace Vidur the wise, virtuous and intelligent adviser of the Kauravas for our sake." Having said this in the presence of

चकृत कृष्णंकृत्वाप्रदक्षिणम् ॥ ४९ ॥ मतमब्रवीत्तुवीभत्सुः सखायंपुरुषर्षभम् । अप
वीतुपरवीरघ्नं दाशार्हमपराजितम् ॥ ५० ॥ यदस्माकं विभोवृत्तं पुरावैमंत्रनिश्चये।
अर्द्धराज्यस्यगोविंद विदितं सर्वराजसु ॥ ५१ ॥ तच्चेदद्याद संगेन सत्कृत्यानव
मन्यच । प्रियंमेस्यान्महावाहो मुच्येरन्महतोभयात् ॥ ५२ ॥ अतश्चेदन्यथाकर्त्ता
धार्त्तराष्ट्रोनुपायवित् । अन्तंनूनंकरिष्यामि क्षत्रियाणांजनार्दन ॥ ५३ ॥ एवमुक्ते
पाण्डवेन सप्राहृष्यद्वृकोदरः । मुहुर्मुहुःक्रोधवशात् प्रावेपतचपाण्डवः ॥ ५४ ॥ वेप
मानश्चकौन्तेयः प्राक्रोशनमहतोरवान् । धनञ्जयवचःश्रुत्वाहर्षोत्सिक्तमनाभृशम् ५५
तस्यतंनिनदंश्रुत्वा सम्प्रावेपन्तधन्विनः । वाहनानिचसर्वाणि शकृन्मूत्रंप्रसुस्रुवुः ५६

युधिष्ठिरजी कृष्णचन्द्रजी से विदा होकर लौटे । ४९ । उनके पीछे अर्जुनजी समीपजाय,
अपराजित पुरुष श्रेष्ठ अपने सखा श्रीकृष्णचन्द्रजी से बोले । ५० । हे गोविंद प्रथमजो
सम्मत करने के समय हमलोगों के विषय में निश्चय हुआ था कि आधाराज्य दुर्योधना-
दिकों से मिलना चाहिये इसको सब राजालोगभी जानते हैं । ५१ । कदाचित् प्रसन्न मन
से आपका सत्कारकर वह आधाराज्य हमको देदें तोतो हमारा प्रियहो व वे लोग बड़ीभारी
भयसे छूटजायँ । ५२ । कदाचित् दुर्योधनने इसके विपरीत किया आधा राज्य न दियातो
आपके आगे कहतेहैं निश्चयहै कि क्षत्रियोंका नाश हम करदेंगे । ५३ । जब अर्जुनजी
ने ऐसा कहातो भीमसेन बहुतही हर्षितहुये व क्रोधके मारे थरथराय कँपनेलगे । ५४ ।
व कँपते कँपतेही बड़ेजोर से पुकार खड़े हुये क्योंकि अर्जुनके वचन सुन बहुतही आनन्द
में मग्न होगयेथे । ५५ । भीमसेनका वह जोरसे सिंहनाद सुन सब धनुर्द्धर थरथराय
कँपनेलगे व जितने हाथी घोड़े वृषभादि वाहन वहां थे सबोंने विष्ठा व मूत्र करमारा ।५६।

---

all the kings and having gone round Shri Krishn, Yudhishthir took leave of him to return. After this, Arjun approached his friend Shri Krishn the unconquerable and best of mon, 50. "It was settled after disoussion," said Arjun to Shri Krishna, "that we must get back half of the kingdom from Duryodhan and all the kings know it. There will be peace between us and the Kauravas if they will willingly give us half the kingdom, but if Duryodhan does not consent to this term, I shall destroy all his warriors without fail." Bhimsen was very glad to hear this from Arjun and began to shake with anger, And because his mind was filled with joy, he cried out so loudiy [illegible] to make all the warriors as well as the animals tremble with fear. Bhimsen, being certain of getting half the kingdom, took

इत्युक्त्वाकेशवंतत्र तथाचोक्त्वावीनिश्चयम् अनुज्ञातोनिववृते परिष्वज्यजनार्दनम् ५७ तेषुराजसुसर्वेषु निवृत्तेषुजनार्दनः । तूर्णमभ्यगमद्धृष्टः शैब्यसुग्रीववाहनः ॥ ५८ ॥ तेहयावासुदेवस्य दारुकेणप्रचोदिताः । पन्थानमाचेमुरिव ग्रसमानाइवाम्बरम् ५९॥ अथाऽपश्यन्महाबाहुर्ऋषीनध्वनि केशवः । ब्राह्मयाश्रिया दीप्यमानानस्थितानुभयतः पथि ॥ ६० ॥ सोवतीर्यरथात् तूर्णमभिवाद्य जनार्दनः । यथावृत्तानृषीन् सर्वानभ्यभाषत पूजयन् ॥ ६१ ॥ कच्चिल्लोकेषुकुशलं कच्चिद्धर्मःस्वनुष्ठितः । ब्राह्मणानां त्रयोवर्णाःकच्चित्तिष्ठन्ति शासने ॥ ६२ ॥ तेभ्यःप्रयुज्यतां पूजांप्रोवाचमधुसूदनः । भगवन्तःक्वसंसिद्धाः कावीथीभवतामिह ॥ ६३ ॥ किंवाकार्यंभगवतामहं किंकरवाणिवः । केनार्थेनोपसम्प्राप्ता भगवन्तोमहीतलम् ॥ ६४ ॥ तमब्रवीज्जामदग्न्य उपेत्य

इसप्रकार वादकर व श्रीभगवान् से इसी अर्थ राज्यही पानेका निश्चय कर भीमसेनजी भी मिल भेंट लौटे । ५७ । व सब राजालोगभी प्रणामादिकर लौटे तब कृष्णचन्द्रजी ने बड़ी शीघ्रता के साथ अपने शैव्य सुग्रीव मेघ पुष्प बलाहक नाम घोड़ों को हांका । ५८ । वे वासुदेवजी के घोड़े दारुकनाम सारथिकी प्रेरणा से ऐसे वेग से आकाश मार्गहो चले मानों आकाशही को खाय जायँगे । ५९ । इसप्रकार वायु वेगसे रथ चलाजाताथा कि कृष्णचन्द्र भगवान् ने देखातो मार्ग में ऋषिलोग अपनी ब्राह्मणोंकी शोभासे युक्त खड़े थे तब रथसे कूद उतर श्रीभगवान्ने ऋषियोंको साष्टाङ्ग प्रणाम किया । ६० । व यथायोग्य सब ऋषियों से बोले कि, आप लोगों के यहां सब कुशलतो है व धर्मानुष्ठानतो अच्छी तरह होताहै कोई विघ्नतो नहीं है । ६१ । व आपलोग ब्राह्मणोंकी आज्ञा में क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र तीनों वर्ण टिके रहते हैं, यह कह उनकी पूजाकर जनार्दन भगवान ऋषियों से फिर बोले । ६२ । आपलोग कहां से सिद्धहुये व आपलोगों का यहां मार्ग कौन है, व आपलोगोंका कार्य क्याहै जो हमकरें । ६३ । आपलोगोंका निवासतो जन तपलोकमें रहता है इस पृथ्वीतलपर किसलिये आगमनहुआ, उनमें से परशुराम ऋषिराज कृष्णचन्द्रजी

leave of Shri Krishn and returned with other kings. Shree Krishna then drove swiftly his four horses, who, directed by Daruk the driver, ran swiftly in the air as if they would devour the sky. While the chariot was thus being driven with the velocity of the wind, Shri Krishna saw some rishis standing in a line. He at once leapt down from his chariot, bowed down to the rishis and said, "Are you well and do you perform your religious duties without any hinderance ? Do Khsatryas, Vaishyas and Shudras obey your orders!" Having said this and worshipped them, he again said, "Where have you come from and what can I do for you! Why have you, the dwellers of the region of Sidhas, come here on earth!" At this, Parashuram the great royal sage and friend of gods and daityas approached Shri Krishn and after

मधुसूदनम् । परिष्वज्यचगोविन्दं सुरासुरपतेःसखा॥६५॥ देवर्षयःपुण्यकृतोब्राह्मणाश्चबहुश्रुताः । राजर्षयश्चदाशार्ह मानयन्तस्तपस्विनः । देवासुरस्यद्रष्टारःपुराणस्यमहामते ॥६६॥ समेतंपार्थिवंक्षत्रं दिदृक्षन्तश्चसर्वशः । सभासदश्चराजानस्त्वाञ्च सत्यंजनार्दनम् ६७ एतन्महत्प्रेक्षणीयं द्रष्टुंगच्छामकेशव । धर्मार्थसहितावाचः श्रोतुमिच्छाममाधव ६८ त्वयोच्यमानाःकुरुषु राजमध्येपरन्तप । भीष्मद्रोणादयश्चैव विदुरश्चमहामतिः ६९ त्वञ्चयादवशार्दूल सभायांवैसमेष्यथ । तववाक्यानिदिव्यानि तथातेषाञ्चमाधव ॥ ७० ॥ श्रोतुमिच्छामगोविन्द सत्यानिचहितानिच । आपृष्टोसिमहाबाहो पुनर्द्रक्ष्यामहेवयम् ॥ ७१ ॥ याह्यविघ्नेनवैवीर द्रक्ष्यामस्त्वां सभागतम् । आसीनमासने दिव्ये बलतेजःसमाहितम् ॥ ७२ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णप्रस्थाने
द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥ ८१ ॥

के समीप आयबोले । ६४ । प्रथमतो आय कृष्णचन्द्रजीको लपटकर मिले फिर इन्द्रादि देवताओं व दैत्यों के सखा परशुरामजी ने कहा कि देवर्षिलोग सब पुण्य करतेहैं व ब्राह्मण लोग अपने वेदवेदांगादि पढ़तेहैं । ६५ । व राजर्षिलोग सब तपस्वियों को मानते हैं व सब देवता असुरों को देखे रहते पुराण सदा देखते व उनके अनुसार चलते । ६६ । परन्तु हमलोग सबओर से आयेहुये राजालोगों को व सब सभासदों को व सत्यवक्ता बल पराक्रमी आपको देखने की इच्छा से यहां आयेहैं । ६७ । यह सब देखने की इच्छा से व धर्म अर्थ सहित आपके वचन सुनने की इच्छा हमलोगों को है । ६८ । क्योंकि कौरवों के मध्य में आप भीष्म द्रोणादिकों से व विदुर से कहेंगे । ६९ । आप जब सभा में बैठकर कहेंगे व भीष्म विदुरादि उसका उत्तर देंगे वह सब हमलोग सुना चाहते हैं । ७० । क्योंकि तुम्हारे सब वचन हितकारी और सत्यहोंगे वह हम सुना चाहतेहैं और अब विदाहोते हैं । ७१ । जब आप निर्विघ्न सभामें पहुँचकर दिव्य आसन पर बैठेंगे तबहम आपको देखेंगे ॥ ७२ ॥

embracing him said, "The divine rishis practice beatitude, the Brahmans read the Vedas and their branches, the royal sages give respect to the ascetics, all the gods keep the asura under control and act upon the old principles; but we have come to see the kings who have come from all parts as well as the courtiers and yourself the speaker of truth and of true prowess. We desire to see all and to hear your words full of *dharm* and *arth* which you will say in the midst of the Kauravas and in the presence of Bhishm, Drona and Vidur. We wish to hear your words as well as the reply of Bhishm, Vidur and others. For, all your words will be full of profit and truth and we wish to hear them tomorrow when you will go into the court and will sit there on a divine seat "72.

वैशम्पायन उवाच । प्रयांतंदेवकीपुत्रं परवीररुजोदश । महारथा महाबाहु मन्वयुःशस्त्रपाणयः ॥ १ ॥ पदातीनांसहस्रञ्च सादिनाञ्चपरन्तप । भोज्यञ्चविपुलंराजन् प्रेष्याश्चशतशोपरे ॥ २ ॥ जनमेजय उवाच । कथंप्रयातोदाशार्हो महात्मामधुसूदनः । कानिवाव्रजतस्तस्य निमित्तानिमहौजसः ॥३॥ वैशम्पायन उवाच । तस्यप्रयाणेयान्यास निमित्तानिमहात्मनः । तानिमेशृणुसर्वाणि दैवान्यौत्पातिकानिच ॥ ४ ॥ अनभ्रेशनिर्घोषः सविद्युत्समजायत । अन्वगेवचपर्ज्जन्यः प्रावर्षद्विघनेभृशम् ॥ ५ ॥ प्रत्यगूहुर्महानद्यः प्राङ्मुखा सिन्धुसत्तमाः । विपरीतादिशःसर्वा नप्राज्ञायत किञ्चन ॥ ६ ॥ प्राज्वलन्नग्नयोराजन् पृथिवीसमकम्पत । उदपानाश्चकुम्भाश्चप्रासिञ्चन्शतशोजलम् ॥ ७ ॥ तमःसंवृतमप्यासीत् सर्वंजगदिदंतथा । नदिशोनादिशो

अध्याय ॥ ८४ ॥

वैशम्पायनजी ने कहा, कि जब श्रीकृष्णचन्द्रजी हस्तिनापुर को चले तो उनके पीछे शत्रुके वीरोंके भजन करनेवाले हाथों में शस्त्रलिये दशमहारथ गये ।१। व एकसहस्र प्यादे तथा एकसहस्र सवारभी गये, व भोजनकी वस्तुभी विविध प्रकारकी व सेवकतो सैकड़ों आगये ।२। इतनी बातसुन जनमेजयजी ने पूछा कि महात्मा मधुसूदन भगवान् कैसेगये व चलने के समय कौन२ शकुनादि निमित्तहुये ।३। वैशम्पायनने कहा कि तिन महात्मा की यात्राके समय दैविक जो उत्पात व शकुनभी हुये हम कहतेहैं सुनो ।४। विना बादलही के वज्रका शब्द हुआ व बिजुलीभी चमकी व उसके पीछे विना बादलहीकी वर्षाभी हुई ।५। सब नदियां वेगसे बहनेलगीं वोभी सबकी सब पूर्वही दिशाको पश्चिमका बहनाही बन्द होगया, दिशा सब विपरीत होगईं इससे कुछ समझही नहीं पड़ता कि यह कौन दिशा है ।६। अग्नि सब विना बालेही बलउठे, पृथ्वी कांपनेलगी चरहियों व घड़ोंसे जल अपने आप उफना चला ।७। व जगतभरमें अँधियारी छागई, व धूलि इतनी उड़ने लगी

CHAPTER LXXXIV

Vaishampayan said that as Shri Krishn went towards Hasthinapur, he was *followed by* ten *great* warriors, the destroyers of warlike enemies, a thousand foot soldiers and a thousand horsemen. Hundreds of attendants with provisions were in his retinue."Tell me," asked Janmejaya of *Vaishampayan*,"the manner of Bhagwan Madhusudan's departure and of various omens that occured." "Hear from me," replied Vaishampayan, "the omens and phenomena that occured at the time of his departure. There were claps of thunder, flashes of lighting and fall of rain without clouds, rivers flowed with greater velocity toward the East, there was no flow towards the west, the directions seemed altered, fire burnt of itself, the Earth shook and water oozed out from pitchers. There was darkness over the land and the storm

राजन माज्ञायन्तेरम्यरेणुना ॥ ८ ॥ प्रादुरासीन्महाञ्छब्दः खेशरीरंनदृश्यते। सर्वेषु राजनदेशेषु तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ९ ॥ प्रापप्राद्धास्तिनपुरंवातो दक्षिणपश्चिमः। आरुजनगणशोवृक्षान् पुरुषोऽशनिनिःस्वनः ॥ १० ॥ यत्रयत्रचवार्ष्णेयो वर्ततेपथि भारत। तत्रतत्रसुखोवायुः सर्वञ्चासीत्प्रदक्षिणम् ॥ ११ ॥ ववर्षपुष्पवर्षञ्चकमलानिचभूरिशः। समश्चपन्थानिर्दुःखो व्यपेतकुशकण्टकः ॥ १२ ॥ संस्तुतोब्राह्मणैर्गीर्भिस्तत्र तत्रसहस्रशः। अर्च्यतेमधुपर्कैश्च वसुभिश्चवसुप्रदः ॥ १३ ॥ तंकिरन्ति महात्मानं वन्यैःपुष्पैःसुगन्धिभिः। स्त्रियः पथिसमागम्य सर्वभूतहितेरतम् ॥ १४ ॥ सशालिभवनरम्यं सर्वशस्यसमाचितम्। सुखपरमधर्मिष्ठं मभ्ययाद्भरतर्षभ ॥ १५ ॥ पश्यनबहुपशून् ग्रामान्रम्यान् हृदयतोषणान्। पुराणिच व्यतिक्रामन्राष्ट्राणि विवि

जिससे दिशा विदिशाका ज्ञानहीं न रहा ।८। अकस्मात् आकाश से शब्द होनेलगा शब्द करनेवाले का शरीर कुछभी नहीं दिखाई देता, इसप्रकार सब देशों में एक बड़ाभारी अद्भुतसा हुआ ।९। व हस्तिनापुरमें दक्षिण पश्चिम से इस वेग से पवन बहकर आया कि सहस्रों वृक्ष उखड़पड़े ।१०। व मार्ग में जहां २ कृष्णचन्द्रजी जातेथे वहां २ सुखद दहिने भाग का पवन बहताथा यह सब भयानक हस्तिनापुरहीके निकटहुआ ।११। ऊपरसे फूलोंकी वर्षाहुई व कमल ठौर २ छोटेभी तड़ागों में फूलउठे, सीधीगली आपने आप बन गई सोभी उसमें कुशकंटकादि के नहोनेसे दुःखरहित ।१२। जहां २ जाते वहां वहां ब्राह्मणलोग आशीर्वाद दे २ स्तुति करते, व शर्बत जल आदि से पूजितकरते उनलोगों को कृष्णचन्द्रजी धनदेते ।१३। सबप्राणियोंके हितकरनेमें तत्पर उन श्रीकृष्णचन्द्रजीके ऊपर मार्ग में स्त्रियां फूलोंकी वर्षा करतीथीं ।१४। व सब के घरों में जड़हन धान बढ़ कर भराहुआ इस से शोभितहोनेलगे, व औरभी बहुत से अन्न सब के घर में होगये, इसप्रकार सबलोग परमसुखी व धर्मिष्ठ दिखाई देनेलगे ।१५। मार्ग में जितने ग्राम दिखाई दिये सब घरों में पशु बहुत व सबरम्य इस से देखतेही हृदय के सन्तोष करते

of dust was so great as to hide all the directions from sight. Sounds came from air, while the speakers were not seen. Such were the wonders that occurred in different places. A storm of wind from south-west blew over Hasthinapur and uprooted thousands of trees.10. But in the way a gentle breeze went along with Shri Krishn, the ill omens being visible near Hasthinapur. Flowers fell down from above, lotus flowers opened even in small tanks, the road appeared smooth straight and free from thorns and brambles. Brahmans pronounced benedictions and praises and offered water and sherbet wherever he went and he gave them money in return. Women showered flowers over Shree Krishn who was intent on doing good to all beings. People were happy and prosperous as it was the time of collecting

धानिच ॥ १६ ॥ नित्यंहृष्टाःसुमनसो भारतैरभिरक्षिताः । नोद्विग्नाःपरचक्राणां व्यसनानामकोविदाः ॥ १७ ॥ उपप्लव्यादथागम्य जनाःपुरनिवासिनः । पथ्यतिष्ठन्तसहिता विष्वक्सेनदिदृक्षया ॥ १८ ॥ तेतुसर्वे समायान्तमग्निमिद्धमिवप्रभुम् । अर्चयामासुरर्चार्हंदेशातिथिमुपस्थितम् ॥ १९ ॥ वृकस्थलंसमासाद्य केशवः परवीरहा । प्रकीर्णरश्मावादित्ये व्योम्निवैलोहितायति ॥ २० ॥ अवतीर्यरथात्तूर्णं कृत्वा शौचंयथाविधि । रथमोचनमादिश्यसंध्यामुपविवेशह ॥ २१ ॥ दारुकोऽपिहयान्मुक्त्वा परिचर्यचशास्त्रतः । मुमोचसर्वंयोक्त्रादि मुक्त्वाचैतानवासृजत् ॥ २२ ॥ अभ्यतीत्यतुतत्सर्वं मुवाचमधुसूदनः । युधिष्ठिरस्यकार्यार्थं मिहवत्स्यामहेक्षपाम् ॥ २३ ॥ तस्यतन्मतमाज्ञाय चक्रुरावसथंनराः । क्षणेनचान्नपानानि गुणवन्तिसमार्जयन् २४

काटेथे, इसप्रकार हजारों ग्राम पुर नगर राज्य देश नांघते चलेजाते । १६ । सबग्राम देश कौरवों से रक्षित थे इस से सबसुख प्रसन्नथे, वहां के लोग डरते कभी नहीं थे क्योंकि शत्रुकी सेना कभी उनलोगोंने देखीही नथी । १७ । अपने अपने ग्रामों से आय आय लोग मार्ग में कृष्णचन्द्रजीके दर्शनकी इच्छा से खड़े रहते थे । १८ । व उनको अपने देशके पाहुने जान सबनगर ग्रामनिवासी आदर सत्कारकर पूजाकरतेथे । १९ । इसप्रकार सन्ध्यासमय कृष्णचन्द्रजी वृकस्थल में पहुँचे । २० । व बड़ीजल्दी रथसेउतर स्नानादिकर रथ छोड़नेकी आज्ञादे आप सन्ध्या करनेलगे । २१ । दारुकसारथिभी घोड़ों को छोड़ शास्त्रके अनुसार उनको मलदल घास दाना मसाला आदि दे रथ के सब रस्से आदि खोलखाल इकट्ठे धरे । २२ । जब सन्ध्यादि करचुके तो कृष्णचन्द्रजी बोले कि युधिष्ठिरजी के कार्य के लिये आज यहीं हम रात्रि बितावेंगे । २३ । उनकावचन सुन लोगों ने रहने के लिये रम्य स्थान बनाया, व एकक्षणहीभरमें नानाप्रकारकी खानेपीनेकी वस्तु

---

and cutting of rice and other grains. The droves of cattle looked charming and well pleased in the villages on his way. He thus passed by many villages and cities which were prosperous and protected by the Kauravas. The people of those places were not afraid as they had never seen an enemy's army. They came out of their houses to see Shri Krishn and welcomed him as their guest. In the evening he reached Vrikasthal. 20. Coming down from the chariot, he ordered the horses to be released and then, after bathing, performed the evening worship. Daruk the driver disengaged the horses and having rubbed them clean provided them with fodder. He then collected the traces and ropes of the chariot. After the evening prayers, Shri Krishn expressed his intention to pass the night in that very place and to do the work of Yudhishthir the next day. His attendants made the place clean and charming for his stay and collected

तस्मिन्ग्रामेवधानास्तु येआसन्ब्राह्मणानृप । आर्याः कुलीनाह्रीमन्तो ब्राह्मींवृत्तिमनुष्ठिताः ॥ २५ ॥ तेभिगम्यमहात्मानं हृषीकेशमरिन्दमम् । पूजांचक्रुर्यथान्यायमाशीर्मङ्गलसंयुताम् ॥ २६ ॥ तेपूजयित्वादाशार्हं सर्वलोकेषुपूजितम् । न्यवेदयन्तवेश्मानि रत्नवन्तिमहात्मने ॥ २७ ॥ तान्प्रभुःकृतमित्युक्त्वा सत्कृत्यचयथार्हतः । अभ्येत्य चैषांवेश्मानि पुनरायात्सहैवतैः ॥ २८ ॥ सुमृष्टंभोजयित्वाच ब्राह्मणांस्तत्रकेशवः । भुक्त्वाचसहतैःसर्वैः रवसत्तांक्षपांसुखम् ॥ २९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णप्रयाणे चतुरशीतितमोऽध्यायः ॥ ८४ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ तथादूतैःसमाज्ञाय मयान्तंमधुसूदनम् । धृतराष्ट्रोऽब्रवीद्भीष्म मर्चयित्वामहाभुजम् ॥ १ ॥ द्रोणञ्चसञ्जयञ्चैव विदुरञ्चमहामतिम् । दुर्योधनमहामात्यं हृष्टरोमाब्रवीदिदम् ॥ २ ॥ अद्भुतमहदाश्चर्यं श्रूयतेकुरुनन्दन ।

इकट्ठी करदीं । २८ । उसग्राम में जो सुन्दर मुख्य कुलीन ब्राह्मण रहते थे व ब्राह्मणों की उत्तम वृत्ति करते थे अन्यवृत्तिसे जीविका नहीं करते थे । २५ । उन्होंने महात्मा शत्रु नाशक श्रीकृष्णचन्द्रकी पूजा आशीर्वाद मंगलवस्तुओं समेतकी । २६ । उनलोगोंनेपूजा कर महात्मा कृष्णचन्द्रजी को रत्नजटित बड़े सुंदर अपने मंदिर में जाय टिकाया । २७ । उन के भवनको देख और सत्कार पाकर फिर अपने स्थानपर ब्राह्मणोंसहित लौटआये और उनको अच्छे भोजन खिलाकर और फिर भोजन पाकर वह रात्रि सुखपूर्वक उन के साथ व्यतीतकी २९ ॥

अध्याय ॥ ८५ ॥

वैशम्पायनजीने कहा कि इसप्रकार आतेहुये कृष्णचन्द्रजीको दूतोंकी द्वारा सुन धृतराष्ट्र जी भीष्मपितामहजीसे बोले । १ । व द्रोणाचार्य सञ्जय महामति विदुर व मन्त्रियों सहित दुर्योधन से भी प्रसन्न होकर बोले । २ । कि हे कुरुनन्दन एक बड़े आश्चर्य की बात

articles of food and drink in an instant. The good Brahmans of the village who were firm on their duty and procured their living by that means, worshipped Krishn with benedictions, praises and propitious things and offered him a place for the night in their beautiful house decked with jewels. Having seen their house and received welcome from them, Krishn came back to the place where he was staying and having fed those Brahmans with good food he himself ate after them and passed the whole night happily in their society. 29.

CHAPTER LXXXV

Vaishampayan said that having heard of the arrival of Krishn from his spies, Dhritrashtra said to Bhism the grandfather, Dronacharya, Sanjaya, Vidur the wise and Duryodhan and his advisers,

स्त्रियोबालाश्चवृद्धाश्च कथयन्तिगृहेगृहे ॥ ३ ॥ सत्कृत्याचक्षतेचान्ये तथैवान्येसमागताः। पृथग्वादाश्चवर्तन्ते चत्वरेषुसभासुच ॥ ४ ॥ उपयास्यतिदाशार्हः पांडवार्थेपराक्रमी। सनोमान्यश्चपूज्यश्च सर्वथामधुसूदनः ॥ ५ ॥ तस्मिन्हियात्रालोकस्य भूतानामीश्वरोहिसः। तस्मिन्धृतिश्चवीर्यंच प्रज्ञाचौजश्चमाधवे ॥ ६ ॥ समान्यतांनरश्रेष्ठः सहिधर्मःसनातनः। पूजितोहिसुखायस्यादसुखःस्यादपूजितः ॥ ७ ॥ स चेत्तुष्यतिदाशार्ह उपचारैररिंदमः। कृष्णात्सर्वानभिप्रायान् प्राप्स्यामःसर्वराजसु ॥ ८ ॥ तस्यपूजार्थमद्यैव संविधत्स्वपरन्तप। सभाःपथिविधीयंतां सर्वकामसमन्विताः ॥ ९ ॥ यथाप्रीतिर्महाबाहो त्वयिजायेततस्यवै। तथाकुरुष्वगांधारे कथंवाभीष्ममन्यसे ॥ १० ॥ ततोभीष्मादयःसर्वे धृतराष्ट्रंजनाधिपम्। ऊचुःपरममित्येवं

सुनाई देती है जो कि घर २ स्त्रियां बालक व वृद्ध कहतेहैं ।३। कोई सत्कार के साथ यह बात कहते कोई यहां आय २ कहते परन्तु जै मनुष्य है वहही बातें चौहटोंमें व सभाओं में होरहीहैं । ४ । वह बात यह है कि महापराक्रमी कृष्णचन्द्रजी पांडवों के अर्थ यहां आते हैं अच्छी बातहै वो हमारेभी पूज्य व मान्य सब प्रकार सेहैं । ५ । अंतमें उन्हीं में सब संसार बसता है प्राणियों के ईश्वर वहीहैं व उन माधव में धारणाशक्ति, वीर्य, प्रज्ञा, व पराक्रम सब पदार्थ विद्यमानहैं । ६ । व वे नरश्रेष्ठ सज्जनों के सदा मान्यहैं, व वे सनातन धर्महैं, जो कोई उनकी पूजा करता उसको सुखी करते व जो पूजा नहीं करता उसको दुःखदेतेहैं । ७ । कदाचित् हमारे यहांकी सामग्री से प्रसन्न होजावे तो उनसे सब राजाओं के समाचार मिलजावे । ८ । इससे हेपरंतप उनकी पूजा के लिये सब सामग्री करो, प्रथमतो सब कामयुक्त सभा मार्ग में उनके लिये बनाओ । ९ । हे दुर्योधन तुमको वैसा कार्य करना चाहिये जिसमें उनकी प्रीति तुम्हारे विषय में होवे भीष्मजी इस विषय में आपकी क्या सम्मति है । १० । यहसुन भीष्मादि सब धृतराष्ट्रजी की बातकी बड़ाई

"I hear of a wonder which is the common talk of women, children and old men and some men have brought the news to me; but different people give different accounts. I hear that Shri Krishn of great prowess is coming here from the Pandavas. This is a good news; for Shri Krishn is worthy of love and respect from us in every way. All the world unites in him at last. He is the lord of all the world and possesses patience, bravery, wisdom, prowess and other things. That best of men is worthy of respect from all good men. He is the eternal Dharm who gives happiness to those that worship him and misery to those that donot worship him. He can give us the intelligence of all the kings, if he is pleased to accept of our cheer. Make everything ready for his reception. Make charming places for him in the way. You should try to secure his love, Duryodhan. What

पूजयन्तोऽस्यतद्वचः ॥ ११ ॥ तेषामनुमतंज्ञात्वा राजादुर्योधनस्तदा । सभावास्तूनि रम्याणि प्रदेष्ठुपचक्रमे ॥ १२ ॥ ततोदेशेषुदेशेषु रमणीयेषुभागशः । सर्वरत्नसमाकीर्णाः सभाश्चक्रुरनेकशः ॥ १३ ॥ आसनानि विचित्राणि युतानिविविधैर्गुणैः स्त्रियोगन्धानलंकारान् सूक्ष्माणिवसनानिच ॥ १४ ॥ गुणवन्त्यन्नपानानि भोज्यानिविविधानिच । माल्यानिचसुगन्धीनि तानिराजाददौततः ॥ १५ ॥ विशेषतश्च वासार्थं सभांग्रामेवृकस्थले । विदधेकौरवोराजा बहुरत्नांमनोरमाम् ॥ १६ ॥ एतद्विधायवैसर्वं देवार्हमतिमानुषम् । आचख्यौधृतराष्ट्राय राजादुर्योधनस्तदा १७॥ ताःसभाःकेशवःसर्वा रत्नानिविविधानिच । असमीक्ष्यैवदाशार्हउपायात्कुरुसद्मतत् १८॥

इति महाभारते० उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मार्गेसभा निर्माणे पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

करनेलगे कि हां सब प्रकार उनकी पूजाही होनी चाहिये । ११ । जब सब जनोंका यही सम्मतजाना तो राजा दुर्योधन ने रम्य सभा ठौर २ बनाने को आज्ञादी । १२ । उनकी आज्ञा पातेही सब रमणीय प्रदेशों में नानाप्रकार के रत्नों से संयुक्त बहुत उत्तम २ अनेक सभा बनाई । १३ । व विविध प्रकार के गुणों से युक्त विचित्र आसन बनाये, उनमें उत्तम २ स्त्रियां चन्दनादि सुगंधित पदार्थ व विहुन रेशमी आदि वस्त्र स्थापित हुये । १४ । गुणवान व अन्न पान विविध प्रकारकी भोज्य चीजें उनमें स्थापित कराई गई व नानाप्रकारकी माला राजाने उनमें स्थापित कराई । १५ । यह सर्वत्र किया गया पर कृष्णचन्द्रजीके निवासके लिये वृकस्थल ग्राममें विशेषतासे सभा बनाईगई वहांउसमें दुर्योधन राजाने सब रत्नही इकट्ठे करादिये ।१६। यह सब देवताओंकेही योग्य बनाया व सब इतनीशीघ्रताके साथ बनायागया कि अतिमानुषकर्महुआ, व यहसब बनवाय दुर्योधनने राजधृतराष्ट्रजीसे कहा कि सबकुछ बनाय दियागया १७ सबसभा और विविधरत्नों की ओर मुरारि ने कुछध्यान नहीं दिया और सबको छोड़कर कौरवोंके पासको चले १८ ॥

do you think, Bhishm?" All the present praised the words of Dhritrashtra and recommended the worship of Krishn. With the consent of all those personages Duryodhan ordered charming places to be prepared everywhere. Good courts, decked with jewels, were made by his order in different places and were provided with beautiful carpets, women, perfumes, fine silk, wholesome food and drink and garlands. All this was done; but at Vrikasthal a very charming place was prepared for the residence of Krishn in which precious stones were seen everywhere and which was worthy of the residence of gods. All this was done so quickly that it appeared to be a superhuman work. Duryodhan informed Dhirtrashtra of all the preparations which he had made. Murari gave no thought to the beautiful court and the collection of gems and leaving all, he came to the Kauravas. 18.

धृतराष्ट्र उवाच ॥ उपप्लव्यादिहक्षत्त रुपायातोजनार्दनः । वृकस्थलेनिवसति सचप्रातरिहैष्यति ॥ १ ॥ आहुकानामधिपतिः पुरोगःसर्वसात्वताम् । महामना महावीर्यो महासत्वोजनार्दनः ॥ २ ॥ स्फीतस्यवृष्णिराष्ट्रस्य भर्त्तागोप्ताचमाधवः । त्रयाणामपिलोकानां भगवानप्रपितामहः ॥ ३ ॥ वृष्ण्यन्धकाःसुमनसो यस्यप्रज्ञामुपासते । आदित्यावसवोरुद्रा यथाबुद्धिंबृहस्पतेः ॥ ४ ॥ तस्मैपूजांप्रयोक्ष्यामि दाशार्हायमहात्मने । प्रत्यक्षंतवधर्मज्ञ तांमेकथयतःशृणु ॥ ५ ॥ एकवर्णैःसुकल्पाङ्गैर्बाह्लिजातैर्हयोत्तमैः । चतुर्युक्तानरथांस्तस्मै रौक्ममानदास्यामिषोडश ॥ ६ ॥ नित्यप्रभिन्नान्मातङ्गा नीषादन्तानप्रहारिणः । अष्टानुचरमेकैकं मष्टौदास्यामिकौरव ॥७॥ दासीनामप्रजातानां शुभानांरुक्मवर्चसाम् । शतमस्मैप्रदास्यामि दासानामपितावतः ८ ।

अध्याय ८६ ॥

धृतराष्ट्रने कहा कि हे विदुर विराट नगर के समीप से जनार्द्दन कृष्णचन्द्रजी आये हैं व वृकस्थल में टिकेहैं प्रातःकाल यहां आवेंगे । १ । वे आहुक वंशियों के स्वामी तथा सब सात्वत वंशियों के पुरोगामी, प्रसन्नचित्त महावीर्य व महापराक्रमी जनार्द्दनजी हैं । २ । व सर्व सम्पद्युक्त वृष्णिवंश के राज्यभर्त्ता व रक्षक माधवजीहैं, व तीनोंलोकों के भगवान् प्रपितामहहैं । ३ । व वृष्णि अंधकवंशी उनकी आज्ञा के अनुकूल ऐसे चलते हैं जैसे आदित्य वसु व रुद्रगण बृहस्पति जीकी बुद्धि के अनुकूल चलते हैं । ४ । हे धर्मज्ञ उन कृष्णचन्द्रजी के लिये जो पूजा हम देंगे तुम्हारे प्रत्यक्ष कहतेहैं सुनो । ५ । एकहीरंग के बड़े समर्थ काबुलदेश के चार २ घोड़ोंसे नधे सोलह बड़े उत्तमसे रथ उन भगवान् को देंगे । ६ । व नित्य मद बहतेहुये ८ हाथी जिनकी सेवामें आठ २ और हाथी व जिनके दांत बड़े लम्बे व बड़े तीखेहों देंगे । ७ । व जिनके अभी लड़के नहींहुये ऐसी रूप यौवनादि युक्त सुवर्ण समान चमचमाती सौदासियां व उसीप्रकार नई अवस्था के सुन्दर सौ दासभी उनको देंगे । ८ । व पर्वतियों के लायेहुये बड़े नर्म रोमों के ऊनी

CHAPVER LXXXVI

"Janardan Shri Krishna has come from the vicinity of the city of Virat," said Dhritrashtra to Vidur, he is staying at Vrikasthal and will come here tomorrow. Janardan of great prowess is the lord of the Ahuks and the leader of Satwats He is the master of all wealth, king and protector of the Vrishnis, known as Madhav and the ancestor of the three worlds. The Vrishnis and the Andhaks obey his orders as the Adityas, Vasus and Rudras act upon the advice of Vrihaspati. I am inclined to present the following things to Shri Krishn: sixteen large chariots each drawn by four horses of Kabul breed and of the same colour, eight mad elephants having long teeth each attended by eight elephants, hundred female slaves, shining like gold who have borne no children, hundred male slaves, eighteen thou-

आविकस्य सुखस्पर्शं पार्वतीयैरुपाहृतम् । तदप्यस्मै प्रदास्यामि सहस्राणि दशाष्ट च ९
अजिनानां सहस्राणि चीनदेशोद्भवानि च । तान्यप्यस्मै प्रदास्यामि यावदर्हति केशवः
॥ १० ॥ दिवा रात्रौ च भात्येष सुतेजा विमलो मणिः । तमप्यस्मै प्रदास्यामि तमर्हति हि
केशवः ॥ ११ ॥ एकेनापि पतत्यह्ना योजनानि चतुर्दश । यानमश्वतरीयुक्तं दास्ये
तस्मै तदप्यहम् ॥ १२ ॥ यावन्ति वाहनान्यस्य यावन्तः पुरुषाश्च ते । ततोऽष्टगुणमप्यस्मै
भोज्यं दास्याम्यहं सदा ॥ १३ ॥ मम पुत्राश्च पौत्राश्च सर्वे दुर्योधनादृते । प्रत्युद्यास्य-
न्ति दाशार्हं रथैर्मृष्टैः स्वलंकृताः ॥ १४ स्वलंकृताश्च कल्याण्यः पादैरेव सहस्रशः । वार
मुख्या महाभागं प्रत्युद्यास्यन्ति केशवम् ॥१५॥ नगरादपि याः काश्चिद्गमिष्यन्ति जना
र्दनम् । द्रष्टुं कन्याश्च कल्याण्यस्ताश्च यास्यन्त्यनावृताः ॥ १६ ॥ सस्त्रीपुरुषबालं च
नगरं मधुसूदनम् । उदीक्षतां महात्मानं भानुमन्तमिव प्रजाः ॥ १७ ॥ महाध्वजप-

वस्त्र अठारहहजार उन्हें देंगे । ९ । व चीनदेश के मृगों के हजार मृगचर्म बिछौनाके
लिये देंगे, व और अधिक यदि उन्होंने चाहातो अधिकभी देंगे । १० । व जो यह महामणि
हमारे यहां है कि दिन रात्रि बराबर चमकता रहताहै, वहभी उनको देंगे क्योंकि उसके
पाने के योग्य केशवही भगवानहैं । ११ । व एकही दिन में जो ५६ कोश चलसक्ता है
ऐसा चार खच्चरियों से युक्त रथभी भगवान्कोदेंगे । १२ । व जितने वाहन व जितने
पुरुष उनके साथहोंगे एक२को आठ२ भोजनकीसामग्रीदेंगे१३व दुर्योधनको छोड़ जितने
हमारे पुत्र व पौत्रहैं सब रथादि सवारियोंपर सवारहो श्रीकृष्णचन्द्रजी की अगुआनी को
जायँगे । १४ । व अच्छे अच्छे भूषण वस्त्र धारण किये सहस्रों वेश्यापैदल श्रीकृष्णचन्द्रजी
की अगुआनीको जायँगी । १५ । व नगर से भी जो कन्या सब भूषणों से भूषितहो कृष्ण
चन्द्रजी को देखने आवैंगी वे भी ऐसे सबके सामने चलीजायँगी पर्दा कुछ न कराया जायगा
। १६ । व क्या स्त्री क्या पुरुष क्या बालक जिसको देखनेकी इच्छाहो सब कोई बेरोक
टोक कृष्णचन्द्रजी के दर्शनकरें ।१७। व सब दिशों में महाध्वजा महापताका टांगीजावैं

sands of soft woollen pieces of cloth brought from hills, a thousand pieces of Chinese deer-skins and more if he likes. 10. I shall give him the great jewel which shines day and night, for Keshava is the proper person to possess it. I shall give him the chariot drawn by four mules which can go fiftysix miles in a day. I shall give to each of his attendants as much provisions as would suffice for eight men. All my sons and grandsons with the exception of Duryodhan will go on chariots to receive Shri Krishn. Thousands of dancing girls decked with fine clothes and ornaments will go on foot to receive him. The girls of the citizens decked with ornaments will also go there, and all people whether women or men, young and old, wishing to see Shri Krishn, will have free permission to do so. Banners will be

ताकाश्च क्षिपन्तांसर्वतोदिशः । जलावसिक्तोविरजाः पन्थास्तस्येति चान्वशात् १८॥
दुःशासनस्यचगृहं दुर्योधनगृहाद्वरम् । तदस्यक्रियतांक्षिप्रं सुसंमृष्टमलंकृतम् ॥ १९॥
एतद्धिरुचिराकारैः प्रासादैरुपशोभितम् । शिवञ्चरमणीयञ्च सर्वर्तुसुमहाधनम् २०
सर्वमस्मिनगृहेरत्नं ममदुर्योधनस्यच । यद्यदर्हतिवार्ष्णेयस्तत्तद्देयमसंशयम् ॥ २१ ॥
इति महा० उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्ये षडशीतितमोऽध्यायः ८६॥

विदुर उवाच । राजनवहुमतश्चासि त्रैलोक्यस्यापिसत्तमः । सम्भावितश्चलो-कस्य सम्मतश्चासि भारत ॥ १ ॥ यत्त्वमेवंगतेव्रूयाः पश्चिमेवयसिस्थितः । शास्त्राद्वा सुप्रतर्काद्वासुस्थिरः स्थविरोह्यसि ॥ २ ॥ लेखाश्मनिभाःसूर्ये महोर्मिरिवसागरे । धर्मस्त्वयितथा राजन्निति व्यवसिताःप्रजाः ॥ ३ ॥ सदैवभावितोलोको गुणौघैस्त

व सब मार्ग अच्छीतरह झारे बहारेजायें व कर्पूरादि से सुगन्धित जल उनमें छिड़काया जाय । १८ । दुर्योधन के गृहसे दुश्शासन का सदन बहुत अच्छा है वह सब प्रकार झाड़ फनूसादिकों से भूषित कियाजाय जिसमें उसी में कृष्णचन्द्रजी उतरें । १९ । यह मन्दिर बड़े रुचिर आकारोंके महलों से बना है, इससे कल्याणदायक व रमणीय है व उसमें सदा एकही कालमें ६ ऋतु वर्त्तमान् रहतेहैं । २० । मेरेऔर दुर्योधन के घरमें जो रत्नादि हैं उनमें से जो चाहैं वहलेलें २१ ॥

अध्याय ८७ ॥

विदुरजीबोले कि हे भारत आप सबलोकमें सम्मतहो व तीनोंलोकों में सम्मतहो, व जितनेलोग प्रतिष्ठितहैं उनके मान्यहो । १ । व जो तुम इसवृद्धावस्थामें ऐसी बातें करतेहो वे बातो शास्त्रसे करतेहो या तर्क से करतेहो किसी से करतेहो अब वृद्धहुयेहो । २ । व प्रजालोग यही जानतेहैं कि तुममें ऐसा उत्तम धर्महै जैसे पत्थरमें रेखा, सूर्यमें प्रभा समुद्रमें लहरें ।३। व तुम्हारेगुण समूहों से सदालोग प्रसन्नरहतेहैं, इससे आपगुणों कीही

hung in all directions and the roads will be cleaned and sprinkled over with camphor and other sweet scents. *Dushasan's* palace which is better than that of Duryodhan's, will be decorated with hanging lamps for the reception of Shri Krishn. Its walls are beautifully decorated; it therefore looks very charming and has the advantage of being useful for all the six seasons. All the jewels within my house and that of Duryodhan should be at the service of Hari."21 .

CHAPTER LXXXVII

On hearing the above, Vidur said, "You are wise in all the affairs which relate to three worlds and are respected by all. I donot know whether you have formed this opinion in your old age by your knowledge of the Shastras or for discussion. You have become old and people think that you are as firm in dharm as a line cut in stone or light in the sun; or waves in the sea. *People are always pleased*

वपार्थिव । गुणानांरक्षणेनित्यं प्रयतस्वसबान्धवः ॥ ४ ॥ आर्जवंप्रतिपद्यस्वमा बाल्यादबहुनीनशः । राजन्पुत्रांश्चपौत्रांश्च सुहृदश्चैवसुप्रियान ॥ ५ ॥ यत्त्वमिच्छसिकृष्णाय राजन्नतिथयेवहु । एतदन्यच्चसर्वसोऽर्हः पृथिवीमपिचार्हति ॥ ६ ॥ नतुत्वं धर्ममुद्दिश्य तस्यवाप्रियकारणात् । एतद्दित्ससिकृष्णाय सत्येनात्मानमालभे ॥ ७॥ मायैषासत्यमेवैतच्छद्मै तद्भूरिदक्षिण । जानामित्वन्मतंराजन गूढंवाह्येनरूपेण ॥ ८॥ पंचपंचैवलिप्सन्ति ग्रामकानपांडवान्नृप । नचदित्ससितेभ्यस्तांस्तच्छमंनकरिष्यसि ॥ ९ ॥ अर्थेनतुमहाबाहुं वार्ष्णेयंत्वांजिहीर्षसि । अनेनचाप्युपायेन पाण्डवेभ्योविभेत्स्यसि ॥ १० ॥ नचावित्तेन शक्योसौ नोद्यमेननगर्हया । अन्योधनञ्जयात्कर्तु मेतत्तत्वं ब्रवीमिते ॥ ११ ॥ वेदकृष्णस्यमाहात्म्यं वेदास्यदृढभक्तिताम् । अत्याज्य

रक्षामें यत्नकरतेरहिये ।४। अब सरलताको प्राप्तहोवो बालकोंकीसी बुद्धि से नाशको न प्राप्तहोवो, हे राजन पुत्र पौत्र व सुहृद व जो कुछ श्रीकृष्णचन्द्रजी अतिथि को दिया चाहते हो वह व औरभी वरन सब पृथ्वीभरभी पाने व लेने के योग्य कृष्णचन्द्रजी हैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं ।६। परन्तु तुम न धर्मबुद्धि से उनको यहसब दिया चाहतेहो न उनके प्रियके कारण, हम अपनी शपथ खायकर कहतेहैं जो कृष्णचन्द्रको देनेको कहतेहो इससे कुछ औरही प्रयोजन समझतेहो । ७ । यह केवल मायाही है व सच्छली है क्योंकि तुम्हारा जो मत गुप्तहै वह हम खूब जानते हैं कि ऊपर और भीतर और । ८ । हे राजन् भला पाण्डवलोग पांचही ग्राम मांगते थे वही पायजाते परन्तुतुम उनको पांचभी नहीं दिया चाहते इससे उनसे मेळ न करोगे । ९ । अब तुम धन देकार महाबाहु कृष्णचन्द्रजी को अपनी ओर खींचा चाहते हो, इसउपायसे उनके व पांडवों के बीचमें भेद डालनाचाहतेहो । १० । सो तुम कृष्णचन्द्रको अर्जुन से पृथक् नतो धन से करसकेहो न किसी उद्यम से न निन्दाकरनेसे यह बातहम निश्चय करके कहतेहैं । ११ । हम कृष्ण

---

with your virtues and therefore you should always try to protect virtues. Be straightf orward and donot ruin yourself by your childish acts. There is no doubt, king, that Shri Krishn is worthy to receive what you can give to sons, grandsons, friends and guests. He is deserving to receive the whole earth; but you neither wish to give him all those things for the sake of dharm nor to please him. Your purpose in offering him those things is far from that and I can say this on my oath. You are practicing deceit and I know very well that your out side is not like your inside. The Pandavas wanted only five villages; but you did not like to give them even that much and therefore would not make peace with them. You want to entice Shri Krishna of great strength by bribery and would bring about disunion between him and the Pandavas by this means. 10. You can neither separate Krishn from Arjun by means of wealth nor by

मस्यजानि प्राणैस्तुल्यंधनञ्जयम् ॥ १२ ॥ अन्यत्कुम्भादपांपूर्णादन्यत् पादावसेचनात् । अन्यत्कुशलसम्प्रश्नान्नैषेक्ष्यति जनार्दनः ॥ १३ ॥ यत्त्वस्य प्रियमातिथ्यं मानार्हस्यमहात्मनः। तदस्मैक्रियतांराजन मानार्होसौजनार्दनः ॥ १४ ॥ आशंसमानःकल्याणं कुरूनभ्येतिकेशवः । येनैवराजन्नर्थेन तदेवास्माउपाकुरु ॥१५॥ शममिच्छति दाशार्हस्तव दुर्योधनस्यच । पाण्डवानांचराजेन्द्र तदस्यवचनंकुरु ॥ १६ ॥ पितासिराजन्पुत्रास्ते वृद्धस्त्वंशिशवःपरे । वर्त्तस्वपितृवच्चेषु वर्त्तन्तेतेहिपुत्रवत् ॥१७॥ इति मह।० उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विदुरवाक्ये सप्ताशीतितमोऽध्यायः८७॥

दुर्योधन उवाच ॥ यदाहविदुर कृष्णे सर्वंतत्सत्यमच्यते । अनुरक्तोह्यसंहार्यः पार्थान्प्रतिजनार्दनः ॥ १ ॥ यत्तत्सत्कारसंयुक्तं देयंवसुजनार्दने । अनेकरूपंराजे

का माहात्म्य जानतेहैं व अर्जुनके विषयमें जो उनकी दृढ़भक्तिता है वहभी जानतेहैं, व यहभी जानतेहैं कि उनको अर्जुन प्राणोंके ही समान अत्यज्यहैं । १२ । एक लोटाभर जल चरणधोनेके लिये व लोटाभर पीनेके लिये, व कुशलप्रश्न पूंछने के लिये इसीका ग्रहण कृष्णचन्द्र करेंगे और यह तुम्हारा कुछभी वे न लेंगे । १३ । इससे हे राजन् जो उनका प्रिय आतिथ्यमान है उन महात्माका मान अच्छी तरह कीजिये और इस दिखाव की वहां कुछभी आवश्यकता नहींहै ।१४। व जो कहनेकी इच्छासे तुम कौरवोंके समीप कृष्णचन्द्र आतेहैं, वहअर्थ उनके सामने प्राप्तकरो बस उन्हें और कुछ न चाहिये ।१५।वे केवल तुम्हारा व दुर्योधनका व पांडवोंका मेलहोजाय यही चाहतेहैं बस यहतुम करो जानो उनकी सबपूजा होचुकी १६ हेनृपतुम वृद्धहो और पांडव अभी तुम्हारेपुत्रोंकीभांतिबालक हैं यदि तुम पिताकी नाईं उनपर कृपाकरोगे तोवेपुत्रोंकी सदृश तुम्हारीआज्ञा मानेंगे १७

अध्याय ॥ ८७ ॥

दुर्योधनबोले कि विदुरजीने जो कहा कृष्णचन्द्रजीके विषयमें वह सब सत्यहीसत्य है पार्थोंके विषय में वे ऐसे अनुरक्तहैं कि वहांसे उनको कोई किसी यत्न से अलगनहीं

any other means and what I have said is simple truth. I know the greatness of Sri Krishna as well as the friendship with Arjun and that he cannot give up Arjun like his own life. He will accept from you water to wash his feet and to drink as well as your words of welcome and nothing more. You should therefore treat him well and respectfully like a guest; there is no need of show. He desires the union between the Kauravas and the Pandavas and will be fully satisfied if you will do this. You are old, king, and the Pandavas are young like your sons. If you have a fatherly affection for them, they will be dutiful like sons." 17.

CHAPTER LXXXVIII

"Vidur is right in what he has said about Krishn," said Duryodhan, "no one can dissever him from the cause of the Pandavas.

न्द्र नतद्देयंकदाचन ॥ २ ॥ देशःकालस्तथायुक्तो नहिनार्हति केशवः । मंस्यत्यधो-
क्षजोराजन् भयादर्चतिमामिति ॥ ३ ॥ अवमानस्त्रयत्रस्यात् क्षत्रियस्य विशाम्पते।
नतत्कुर्याद्बुधःकार्यमितिमेनिश्चितामतिः ॥ ४ ॥ सहिपूज्यतमोलोके कृष्णःपृथुल
लोचनः । त्रयाणामपिलोकानां विदितंममसर्वथा ॥ ५ ॥ नतुतस्मैप्रदेयंस्यात्तथा कार्य
गतिःप्रभो । विग्रहःसमुपारब्धो नहिशाम्यत्यविग्रहात् ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच॥
तस्यतद्वचनंश्रुत्वा भीष्मःकुरुपितामहः । वैचित्रवीर्यंराजान मिदंवचनमब्रवीत् ॥ ७॥
सत्कृतोऽसत्कृतोवापि नक्रुध्येतजनार्दनः । नालमेनमवज्ञातुं नावज्ञेयोहिकेशवः ८ ॥
यत्तुकार्यंमहाबाहो मनसाकार्यतांगतम् । सर्वोपायैर्नतच्छक्यं केनचित्कर्तुमन्यथा९॥
सयद्ब्रूयान्महाबाहुस्तत्कार्यमविशंकया । वासुदेवेनतीर्थेन क्षिप्रंसंशाम्यपाण्डवैः १०

करसक्ता । १ । इस से हे राजेन्द्र सत्कार पूर्वक जो २ वस्तु कृष्णचन्द्र के देनेके लिये अनेक रूपकी विचारीगई हैं वे किसीप्रकार उनको न देनी चाहिये । २ । यद्यपि वे पूज्य हैं इस से पूजा पाने के योग्यहैं पर देशकाल इस समय उन के देनेका नहीं है क्योंकि जो कहीं पूजा उनकी कीजायगीतो वे यही मानेंगे कि ये भयसे हमारी पूजाकरतेहैं । ३ । इससे क्षत्रियका जिसकार्य्य के करने में अपमानहो पण्डित क्षत्रियको चाहिये कि वह कार्य कभी न करे हमारी यह निश्चय मति है । ४ । हम यह अच्छी तरह जानतेहैं कि ये कृष्णचन्द्रजी तीनों लोकोंके पूज्यमान्य हैं । ५ । परन्तु उनको कुछ देना यह कार्यकी रीति नहीं है, क्योंकि विग्रह का जो प्रारम्भ होरहा है वह केवल पूजामात्र से नहीं निवृत्त होसक्ता । ६ । वैशम्पायनजी बोले कि कुरुवंशियों के पितामह भीष्मजी दुर्योधन के ऐसे वचन सुन राजाधृतराष्ट्रजी से यह वचन बोले । ७ । कि चाहे सत्कारकरो चाहे असत्कार कृष्णचन्द्रजी क्रोध न करेंगे परन्तु उनका निरादर न करना चाहिये क्योंकि केशव भगवान् निरादर के योग्य नहीं हैं । ८ । हे राजन् जो कार्य मन से होरहा है उसको कोई किसी उपाय से अन्यथा नहीं करसक्ता । ९ । हां वासुदेव भगवान् आयं जो कहें निश्शंकता

It is therefore improper to give him the things you intend to make him a present of. He no doubt, deserves worship, but it is no time to give him all those things; for, in that case, he will think that you have made those offerings out of fear. A wise kshatrya should never do a thing derogatory to himself and I fully believe in this maxim. I know well that he deserves respect from the three worlds, but it is not proper to offer him anything; for the quarrel which has begun can never be pacified by mere respect." Vaishampayan said that having heard the above from Duryodhan, Bhishm the grandfather thus addressed Dhritrashtra:—" Krishn will not be angry with you whether you treat him well or not; but you should not insult him; for, Bhagvan Keshav does not deserve ill treatment.

धर्म्यमर्थ्यञ्चधर्मात्मा ध्रुवंवक्ताजनार्दनः । तस्मिन्नवाच्याःप्रियावाचो भवताबांधवैः सह ॥ ११ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ नपर्यायोस्तियद्राजन श्रियं निष्केवलामहम् । तैः सहेमामुपाश्नीयां यावज्जीवंपितामह ॥ १२ ॥ इदन्तुसुमहत्कार्यं शृणुमेयत्समर्थितम् परायणंपाण्डवानां नियच्छामिजनार्दनम् ॥ १३ ॥ तस्मिन्बद्धेभविष्यन्ति वृष्णयः पृथिवीतथा । पाण्डवाश्चविधेयामे सचप्रातरिहैष्यति ॥ १४ ॥ अत्रोपायान्यथास-म्यक्न बुध्येतजनार्दनः । नचापायोभवेत् कश्चित्तद्भवान प्रब्रवीतुमे ॥ १५ ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्यतद्वचनंश्रुत्वा घोरंकृष्णाभिसंहितम् । धृतराष्ट्रः सहामात्यो व्यथितोविमनाभवत् ॥ १६ ॥ ततोदुर्योधनमिदं धृतराष्ट्रोब्रवीद्वचः । मैवंवोचःप्रजा

से यह करना चाहिये अब मार्ग अच्छा मिलगया है वासुदेवही की द्वारा पांडवों के साथ मिलाप करलीजिये । १० । क्योंकि धर्मात्मा जनार्दन भगवान् जो बातकहेंगे निश्चय है कि धर्म अर्थयुक्तही कहेंगे । ११ । इतना सुन दुर्योधनबोले कि हे पितामहजी यह बात नहीं होसकी कि निष्कण्टक राजलक्ष्मी को पाय अब हम पांडवोंके साथ उसे भोगें, यह बात जब तक हमजीते हैं तबतक नहीं होसकी फिर आगे कौनजानें क्या होताहै । १२ । हां जो हमने विचारा है बड़ाभारी कार्यतो यह सुनिये पांडवों के परमस्नेही कृष्णचन्द्र को हम पकड़कर बन्दीखानामें डालदेंगे । १३ । जब कृष्णचन्द्र बँधुआहोजायँगे तो सब वृष्णिवंशी व सारीपृथ्वी तथा पांडव सब हमारे अधीन होजायँगे, यह बात दूर नहीं है प्रातःकालहीतो कृष्णचन्द्र यहां आवेंगे । १४ । इस विषय के उपाय आप बतावें जिससे जनार्दन इस विषयको न जानपावें व न इसकार्यका नाश किसीप्रकारहो बस यही बताइये । १५ । वैशम्पायनजी बोले कि कृष्णचन्द्रजी के बन्धनके विषयके दुर्योधन के वचन सुन मंत्रियों समेत धृतराष्ट्रजी दुःखितहो उदास होगये । १६ । व दुर्योधन से बोले कि

No one can alter what is deep rooted in your mind, but you should act without hesitation upon the advice of Vasudev. You have got a good opportunity for making peace with the Kauravas through him. 10. For, the words of Bhagwan Janardan are sure to be full of *dharm* and *arth*." "This is impossible, grandfather," said Duryodhan, "that being the sole monarch of the whole kingdom we should share it with the Pandavas during my lifetime. But I have hit upon a capital scheme: we will make Shri Krishn, the dear friend of the Pandavas, our captive. By taking him prisoner we shall have power over all the Vrishnis, the Pandavas and all the land. We shall not have to wait long for this opportunity as he is coming here tomorrow. Tell us the way in which we can catch Janardan unawares and without hinderance." Vaishampayan says that on hearing of the captivity of Krishn from Duryodhan, Dhritrashtra and his courtiers were much grieved and dejected and said,

पाल नैषर्भःपनातना ॥ १७ ॥ दूतश्चहिह्णी केशः सम्बन्धीचप्रियश्चनः । अपरा कौरवेषुस कथं बन्धमर्हति ॥ १८ ॥ भीष्म उवाच । परीतस्तवपुत्रोऽयं धृतराष्ट्रमन्दधीः । वृणोत्यनर्थं नैवार्थंयाच्यमानः सुहृज्जनैः ॥ १९ ॥ इममुत्पथिवर्तन्तं पापं पापानुवन्धिनम् । वाक्यानिसुहृदां हित्वास्त्वमप्यस्यानुवर्तसे ॥ २० ॥ कृष्णमक्लिष्टकर्माणमासाद्यायं सुदुर्मतिः । तवपुत्रःसहामात्यः क्षणेननभविष्यति ॥ २१ ॥ पापस्यास्यनृशंसस्य त्यक्तधर्मस्यदुर्मतेः । नोत्सहेऽनर्थसंयुक्ताः श्रोतुंवाचःकथञ्चन ॥ २२ ॥ इत्युक्त्वा भरतश्रेष्ठोवृद्धःपरममन्युमान् । उत्थायतस्मात् मातिष्ठद्भीष्मःसत्यपराक्रमः ॥ २३ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि दुर्योधनवाक्ये अष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

हे प्रजापालक दुर्योधन ऐसा न कहो यह सनातन धर्म नहीं है कि दूत कहीं बँधुआ कियाजाय । १७ । फिर एकतो कृष्णचन्द्र दूत बनकरआते, फिर हम लोगों के सम्बन्धीहैं उसमें भी प्रिय, फिर कौरवोंके विषयमें सदा पापरहितहैं तो वे बँधुआ होने के योग्य कैसे होसक्तेहैं । १८ । इतने में भीष्मजी बोले कि, हे धृतराष्ट्र तुम्हारा पुत्र दुर्योधन बड़ा मन्दबुद्धि है व इसकीमति विपरीत है क्योंकि इसको अपना शत्रु मित्र नहीं जानपड़ता व इससे सुहृदों के वचन नहीं करता सब अनर्थही करता अर्थकी एकभी बात नहीं करता १९ व पापी, पापानुगामी कुमार्गी इसके पीछे पड़ तुमभी सुहृदों के वचन छोड़ इसीके अनुयायी होगयेहो २० सहज में सब कर्म करने वाले कृष्णचन्द्र के सामने जब यह इस बुद्धि से जायगातो मंत्री परिवार सहित क्षणमात्रमें मारडाला जायगा २१ इसपापी, निर्लज्ज, अधर्मी व दुष्टमति दुर्योधनकी अनर्थ युक्त वाणी हम किसी प्रकार नहीं सुन सके २२ वृद्ध भरतश्रेष्ठ पितामह यहकह और अतिक्रोधितहो वहांसे उठकर चलेगये २३ ।

"Do not say so king Duryodhan. It is unjust to captivate an ambassador. Shri Krishn is ambassador as well as our kinsman and dear friend. Besides, he has never done any ill to the Kauravas and therefore does not deserve this bad treatment." In the meantime, Bhishm interrupted, him by saying, "Your son Duryodhan is very foolish and short sighted, for he does dot distinguish a friend from an enemy and therefore he always acts unjustly against the advice of his well-wishers. He is sinful, wicked and going on wrong way and you too follow his example in not hearing to the advice of your friends. 20. Shree Krishn who can do every thing easily, will kill him with all his advisors, sons and kinsmen, if he goes to him with such intention. We can not hear the unjust talk of this sinful, shameless, unjust and wicked Duryodhan." The old grandfather of the Bharats having said these words in great anger went away from the court. 23.

वैशम्पायन उवाच । प्रातरुत्थाय कृष्णस्तु कृतवान्सर्वमाह्निकम् । ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञातः प्रययौ नगरं प्रति ॥ १ ॥ तं प्रयान्तं महाबाहुमनुज्ञाप्य महाबलम् । पर्यवर्तन्त ते सर्वे वृकस्थलनिवासिनः ॥ २ ॥ धार्तराष्ट्रास्तमायान्तं प्रत्युज्जग्मुः स्वलंकृताः । दुर्योधनादृते सर्वे भीष्मद्रोणकृपादयः ॥ ३ ॥ पौराश्च बहुला राजन् हृषीकेशं दिदृक्षवः । यानैर्बहुविधैरन्ये पद्भिरेव तथापरे ॥ ४ ॥ स वै पथि समागम्य भीष्मेणाक्लिष्टकर्मणा । द्रोणेन धार्तराष्ट्रैश्च तैर्वृतो नगरं ययौ ॥ ५ ॥ कृष्णसम्माननार्थञ्च नगरं समलंकृतम् । बभूवू राजमार्गाश्च बहुरत्नसमाचिताः ॥ ६ ॥ न च कश्चिद्गृहे राजंस्तदासीद्भरतर्षभ । न स्त्री न वृद्धो न शिशुर्वासुदेवदिदृक्षया ॥ ७ ॥ राजमार्गे नरास्तस्मिन् संस्तुवन्त्यवनिं

अध्याय ॥ ८९ ॥

वैशम्पायनजीने कहा कि प्रातःकाल होतेही कृष्णचन्द्रजी सब स्नान पूजनादि आह्निक कर्म कर ब्राह्मणोंकी आज्ञा ले नगरको चले ।१। जब कृष्णचन्द्रजी चले तो जितने वृकस्थल के रहनेवाले थे सब कृष्णचन्द्रजीसे बिदाहो अपने२ गृहको आये ।२। व यहां कृष्णचन्द्रजीको आते सुन दुर्योधनको छोड़ जितने भीष्म द्रोण कृपाचार्यादि धृतराष्ट्र के सम्बन्धी थे सब अगुआनी लेने चले ।३। व बहुत से हस्तिनापुरवासीभी कृष्णचन्द्रजी के दर्शनकी इच्छा से वाहनों पर सवारहो व पैदलभी गये ।४। व कृष्णचन्द्रजी मार्ग में भीष्म द्रोण कृपाचार्य व धृतराष्ट्रजी के सब पुत्र मित्रों से यथायोग्य मिल उनलोगोंके सङ्ग नगरको गये । ५ । वहां कृष्णचन्द्रजी के सम्मानके लिये नगर सब झाड़ बुहार चित्रकारी आदि बनाने से भूषित होरहा था व राजमार्ग में नानाप्रकार के रत्नजड़ दिये गये थे इससे वह शोभित होरहाथा । ६ । व उससमय क्याखी क्या पुरुष क्या बालक क्या वृद्ध क्या युवा कृष्णचन्द्रजी के दर्शन के लिये कोईभी अपने घरके भीतर नहीं रहगया । ७ । वरन भगवान्

CHAPTER LXXXIX

Vaishampayan said that early the next morning having performed ablutions and morning worship and having taken permission from the Brahmans, Shri Krishn came towards Hasthinapur. On his departure all the people of Vrikasthal went away to their respective homes. And hearing of the arrival of Shri Krishn near Hasthinapur, all the Kauravas including Bhishm, Dron, Kripacharya and others, with the exception of Duryodhan, came out of the city to receive him. The citizens also came to see Shri Krishn on their carriages or on foot. Shri Krishn greeted Bhishm, Drona, Kripacharya and the sons of Dhritrashtra in the way and entered the city in their company. The city has already been well cleaned and decorated; the road was

गताः । तस्मिन्काले महाराज हृषीकेशप्रवेशने ॥ ८ ॥ आरत्नानि वरस्त्रीभिर्गृहाणि सुमहान्त्यपि । प्रचलन्तीव भारेण दृश्यन्ते स्म महीतले ॥ ९ ॥ तथा च गतिमन्तस्ते वासुदेवस्य वाजिनः । प्रनष्टगतयोऽभूवन् राजमार्गे नरैर्वृते ॥ १० ॥ स गृहं धृतराष्ट्रस्य प्राविशच्छत्रुकर्शनः । पाण्डुरं पुण्डरीकाक्षः प्रासादैरुपशोभितम् ॥ ११ ॥ तिस्रः कक्ष्या व्यतिक्रम्य केशवो राजवेश्मनः । वैचित्रवीर्यं राजानमभ्यगच्छदरिन्दमः ॥ १२ ॥ अभ्यागच्छति दाशार्हे प्रज्ञाचक्षुर्नराधिपः । सहैव द्रोणभीष्माभ्यामुदतिष्ठन्महायशाः ॥ १३ ॥ कृपश्च सोमदत्तश्च महाराजश्च बाह्लिकः । आसनेभ्योऽचलन्सर्वे पूजयन्तो जनार्दनम् ॥ १४ ॥ ततो राजानमासाद्य धृतराष्ट्रं यशस्विनम् । स भीष्मं पूजयामास

हृषीकेशजीके प्रवेशके समय सब लोग जाय २ राजमार्गों पर खड़े हुयेथे जैसे २ दर्शन करते थे पृथ्वीपर गिरसाष्टांग प्रणाम करते थे । ८ । व जितने मन्दिर राजमार्ग के समीप थे उस समय श्रेष्ठ २ पतिव्रतादि स्त्रियों से भरे थे इस से विदित होताथा कि मानों मारे भारके प्रचलित हुये जाते थे । ९ । व यद्यपि कृष्णचन्द्रजीके घोड़े वायु वेग थे पर राजमार्गोंमें उस समय बड़ी भारी भीड़ होने के कारण उनकी वह चाल जाती रही धीरे २ चलने लगे । १० । जाते २ शत्रुनाशन कृष्णचन्द्र भगवान् कमलनयन धवरहरादिकों से शोभित धृतराष्ट्रजी के राजमन्दिर में पधारे । ११ व राजमन्दिरके तीन फाटकनांघ चौथे फाटकके भीतर भगवान् कृष्णचन्द्रजीने धृतराष्ट्रजीको बैठे देखा । १२ । व कृष्णचन्द्रजीका आना जान महाराज धृतराष्ट्रजी भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य सहित आसन से उठ खड़े हुये । १३ । व कृष्णचन्द्रजीकी पूजा करते हुये, कृपाचार्य, सोमदत्त, व महाराज बाह्लिक भी अपने अपने आसनोंसे उठ खड़े हुये । १४ । इसके पीछे महाराज कृष्णचन्द्रजी ने महायशस्वी राजा धृतराष्ट्र व भीष्म

---

studded with precious stones and all the women, men, children and old people came out of their houses to see him. The people of the city who were standing to see Shri Krishn, prostrated before him as he was passing along the way. All the houses along the road were full of women and looked as if they would fall down by their weight. The swift horses of Shri Krishn had to walk slowly on account of the great crowd in the way. 10. The lotus-eyed Bhagwan Krishn Chandra, the destroyer of enemies, entered at last the palace of Dhritrashtra and after crossing the four gates he saw Dhritrashtra sitting within. Being informed of the arrival of Krishn, Dhritrashtra together with Bhism and Dronacharya, stood up on his seat. Kripacharya, Somdatta and Vahlik too stood upon their respective

मार्ष्णेयो वाग्भिरञ्जसा ॥ १५ ॥ तेषुधर्मानुपूर्वीन्तां प्रयुज्यमधुसूदनः । यथावयः समीपायराजाभिः सहराघवः ॥ १६ ॥ अथद्रोणं सबाह्लीकं सपुत्रञ्चयशस्विनम् । कृपञ्चसोमदत्तञ्च समीयाय जनार्दनः ॥ १७ ॥ तत्रासीदूर्जितंमृष्टं काञ्चनंमहदासनम् । शासनाद्धृतराष्ट्रस्य तत्रोपाविशदच्युतः ॥ १८ ॥ अथगांमधुपर्कञ्चाप्युदकञ्च जनार्दने । उपजहुर्यथान्यायं धृतराष्ट्रपुरोहिताः ॥ १९ ॥ कृतातिथ्यस्तु गोविन्दः सर्वान्परिहसन्कुरून् । आस्तेसाम्बन्धिकंकुर्वन कुरुभिःपरिवारितः ॥२०॥ सोऽर्चितोधृतराष्ट्रेण पूजितश्चमहायशाः । राजानंसमनुज्ञाप्य निरक्रामदरिन्दमः ॥२१॥ तैःसमेत्ययथान्यायं कुरुभिःकुरुसंसदि । विदुरावसथंरम्य मुपातिष्ठतमाधवः ॥२२॥

पितामह व द्रोणाचार्य जीको वचनों से बहुत आदर पूर्वक पूछा । १५ । व उनलोगों के संग अवस्थाके अनुकूल प्रणामादिकर फिर अन्य लोगोंसेभी अवस्था व सम्बन्धके अनुसार नमस्कार प्रणामाशीर्वाद कुशलप्रश्न पूंछना आदि किया । १६ । उसके पीछे द्रोणाचार्य-राजावाह्लिक तथा उनके पुत्र, कृपाचार्य सोमदत्त से बहुत अच्छी तरह मिले भेंटे । १७। इसके पीछे एक सबसे उत्तम सुवर्णकी चौकी रत्नोंसे जटित बहुत ऊँची थी जोकि इन्हीं के बैठनेके लिये राजगद्दी के समीपही धरीथी उसपर धृतराष्ट्रजी के कहने से जा बैठे। १८। इस के पीछे धृतराष्ट्रजी के पुरोहित लोग सुन्दर वचन कह जल शर्बत आदि यथायोग्य सब पदार्थ भगवान् कृष्णचन्द्रजी के लिये लाये । १९ । जब आतिथ्य सत्कार होचुका तो सब कौरवों से जिससे जैसा सम्बन्ध था उसके अनुरूप हास्यादि की बातें आदि करते कराते सब कौरवोंके बीचमें विराजमान रहे । २० । व कुछ देरतक वहां बैठ बैठाय धृतराष्ट्रकी ओरसे पूजा व स्तुति पाय राजासे कहकर उनकी अनुमति पाय वहांसे उठे व सभा से बाहर आये । २१ । व और सब कौरवों से मिलते मिलाते व सत्कार पाते देते करते

---

seats to pay respect to him. Krishn respectfully inquired about the health of Dhritrashtra of great glory, Bhishm the grandfather and Dronacharya and greeted others according to their respective ages and relations. After this he embraced Dronacharya, King Vahlik, his son; Kripacharya and Somdatta and sat down, at the request of Dhritrashtra, *on a gold chair studded with precious stones* which was placed for him on a dais near the royal throne. Dhritrashtra's priests offered with sweet words sherbet and other things. After this he had a friendly talk with his Kaurava kinsmen for sometime. 20. After some time, when he had received the offerings of hospitality from Dhritrashtra, he took leave of the king and came out of the court. He met other Kauravas in the way and was

विदुरःसर्वकल्याणै रभिगम्य जनार्दनम् । अर्चयामासदाशार्ह सर्वकामैरुपस्थितम् ॥ २३ ॥ यामेप्रीतिःपुष्कराक्ष त्वद्दर्शनसमुद्भवा । साकिमाख्यायते तुभ्यमन्तरात्मासिदेहिनाम् ॥ २४ ॥ कृतातिथ्यन्तु गोविन्दं विदुरःसर्वधर्मवित् । कुशलपाण्डुपुत्राणामपृच्छन्मधुसूदनम् ॥ २५ ॥ प्रीयमाणस्यसुहृदो विदुरोबुद्धिसत्तम । धर्मार्थनित्यस्यसतो गतरोषस्यधीमतः ॥ २६ ॥ तस्यसर्वसविस्तारं पाण्डवानांविचेष्टितम् । क्षत्तुराचष्टदाशार्हः सर्वंप्रत्यक्षदर्शिवान् ॥ २७ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि धृतराष्ट्रगृहप्रवेशे पूर्वकं श्रीकृष्णस्य विदुरगृहप्रवेशे एकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

विदुरजीके स्थानपर पहुँचे । २२ । विदुरजी भगवान् कृष्णचन्द्रको देखतेही , अपने को कृतार्थमान प्रणामादि कर नानाप्रकारकी वस्तुओंसे जो अच्छे पाहुनोंको दीजाती हैं उनकी बड़ी भारी पूजा व वचन सत्कारादि कर हाथजोड़ बोले । २३ । हे कमललोचन आपके दर्शनसे जो प्रीति मुझे हुई है वह आप से क्या कहूं क्योंकि आप सब प्राणियों के अन्तःकरणके स्वामी हैं सब जानतेही हैं । २४। फिर अतिथि सत्कार करके धर्म निपुण विदुरजीने पांडवोंकी कुशल बहुतभांति पूछी और हरिने उनको सबप्रकार सुहृद और प्रिय जानकर पांडवोंका सब वृत्तान्त विस्तार पूर्वक वर्णन किया । २७ ।

---

greeted by them till he entered the house of Vidur who, as soon as he saw him, thanked his star and after greetings offered him things which are usually offered to respectable guests. Having given him a hearty welcome, Vidur thus addressed him with joined hands— " I can not find words to describe the pleasure at seeing you; but you know all as you know well what passes within the minds of all. Having welcomed Hari, Vidur, the perfection of dharm, inquired about the health of the Pandavas and the former gave a detailed account of the intentions of the Pandavas to the latter. 27.



वैशम्पायन उवाच । अथोपगम्यविदुर मपराह्ने जनार्दनः । पितृष्वसारंस पृथामभ्यगच्छदरिन्दमः ॥ १ ॥ सादृष्ट्वाकृष्णमायान्तं प्रसन्नादित्यवर्चसम् । कंठे गृहीत्वाप्राक्रोशत् स्मरन्तीतनयान्पृथा ॥ २ ॥ तेषांसत्त्ववतांमध्ये गोविन्दंसह चारिणम् । चिरस्यदृष्ट्वा वार्ष्णेयं बाष्पमाहारयत् पृथा ॥ ३ ॥ साब्रवीत्कृष्णमासीनं कृतातिथ्यंयुधाम्पतिम् । बाष्पगद्गदपूर्णेन मुखेनपरिशुष्यता ॥ ४ ॥ येनेबाल्यात् प्रभृत्येव गुरुशुश्रूषणेरताः । परस्परस्यसुहृदः सम्मताःसमचेतसः । निकृत्याभ्रंशिता राज्याज्जनार्हा निर्जनंगताः ॥ ५ ॥ विनीतक्रोधहर्षाश्च ब्रह्मण्याःसत्यवादिनः । त्यक्त्वाप्रियसुखेपार्था रुदतीमपहायमाम् ॥ ६ ॥ अहार्षुश्चवनंपान्तः समूलंहृदयंमम।

अध्याय ॥ ९० ॥

वैशम्पायनजी जनमेजयजीसे बोले कि दोपहर के पीछे विदुरसे मिल भेंट कर कष्ट सुन कृष्णचन्द्रजी अपनी फूफू कुन्तीजीके समीप गये ।१। व उनको सूर्य समान प्रकाशित आते देख अपने पुत्रोंका स्मरण करती हुई कुन्तीजी कृष्णभगवान्को गलसे लिपटाय रोदन करने लगीं ।२। क्योंकि उन महापराक्रमी पाण्डवोंके संग रहनेवाले कृष्णचन्द्रजीको उन्होंने बहुत दिनोंके पीछे देखाया इससे आंसुओंकी धारा उन्होंने बहाई । ३ । व कृष्णचन्द्रजी को फिर आगत स्वागत कर आसनपर बैठाय आंसुओं से भीगे व शोकसे सूखे मुखसे बड़े छोटे वा गुरुओंकी शुश्रूषामें तत्पर रहे व आपसमें सुहृद रहे व सब समान चित्त होनेसे सबके प्रियरहे वे छलसे राज्यहीन कर दिये गये यद्यपि सदा अच्छे जनों के मध्य में रहनेके योग्यहैं पर निर्जन वनको चले गये । ५ । उनको उपसमय क्या कभी न क्रोधही आता न हर्षही आता व सब ब्रह्मण्य सत्यवादी थे इससे प्रिय व सुख दोनोंको छोड़ तथा रोतीहुई हमको छोड़ वनको चलेही गये । ६ । व वनको जातेहुये उनलोगों ने

CHAPTER XC

Vaishampayan said to Janmejaya that after seeing Vidur, Krishn went in the afternoon to Kunti, his own father's sister. Seeing him coming like the glorious sun and remembering her own sons, she braced him with tears in her eyes; for she had seen Shree Krishn of great prowess and friend of the Pandavas, after a long time. She inquired about his health and having offered him a seat, she said with tears in her eyes and voice choked with weeping, "My children who were respectful to their elders from their early age, who loved one another and who were dear to all on account of their good habits, have been deprived of their kingdom and although they are worthy of residing in the midst of good men, they were sent to live in uninhabited

अतदर्हा महात्मानः कथं केशव पाण्डवाः ॥ ७ ॥ ऊषुर्महावने तात सिंहव्याघ्रगजाकुले । बाला विहीनाः पित्रा ते मया सततलालिताः ॥ ८ ॥ अपश्यन्तश्च पितरौ कथमूषुर्महावने । शंखदुन्दुभिनिर्घोषैर्मृदङ्गैर्वेणुनिःस्वनैः ॥ ९ ॥ पाण्डवाः समबोध्यन्त बाल्यात्प्रभृति केशव । येस्म वारणशब्देन हयानां हेषितेन च ॥ १० ॥ रथनेमिनिनादैश्च व्यबोध्यन्त तदा गृहे । शङ्खभेरीनिनादेन वेणुवीणानुनादिना ॥ ११ ॥ पुण्याहघोषमिश्रेण पूज्यमाना द्विजातिभिः । वस्त्रै रत्नैरलङ्कारैः पूजयन्तो द्विजन्मनः ॥ १२ ॥ गीर्भिर्मङ्गलयुक्ताभिर्ब्राह्मणानां महात्मनाम् । अर्चितैरर्चनार्हैश्च स्तुवद्भिरभिनन्दिताः ॥ १३ ॥ प्रासा

मूल सहित हमारा हृदयभी हरलिया है केशव वे महात्मा पांडव तो बनवास के योग्य थेही नहीं । ७ । इस से सिंह व्याघ्र युक्त बन में कैसे बसेहोंगे, बालपनही में उनके पिता न रहे हमने बड़ी २ कठिनताओं से निरंतर उनका पालन किया । ८ । फिर अब पिता माता दोनों को बिना देखतेहुये वे बन में कैसे बसेहोंगे । ९ । हे केशव बाल्यावस्था से जे जबतक यहां रहे सब पाण्डवलोग शंख नगारे मृदङ्ग बांसुरी आदि बाजों के शब्द के सुनने से जागतेहैं । १० । व हाथियोंकी चिग्घाड़ व घोड़ों का हिनहिनाना सुन वा रथके पहियों का शब्द सुन घरों जागतेहै । ११ । व शंख, नगारे, बीणा आदिके शब्द से व ब्राह्मणों के पुण्याहवाचन के शब्द से पूजितहोते व वस्त्र रत्न भूषणों से सदा ब्राह्मणोंकी पूजाकरते । १२ । फिर ब्राह्मणलोग मंगलके आशीर्वचन सुनाय उनको प्रसन्नकरते ब्राह्मण जिन पूजाके योग्य थे उनसे पाते थे व वे जिन आशीर्वादादि के योग्य थे उनसे पाते थे । १३ । व सदा सम्बूर आदि बड़े कोमल बिस्तरों पर चित्रविचित्र अटारीयों

---

forest. They were free from anger and sudden outbursts of joy and were respectful to Brahmans and truthful, therefore they left what were near and dear to them and I was left weeping bitterly. They took my heart with them when they went to the forest. The great Pandavas were not worthy of exile; what troubles they must have suffered in the forest full of lions and tigers! Their father was dead in their childhood and I had to suffer great hardships in their bringing up. They must have suffered a great deal in the absence of both father and mother. They were accustomed from their childhood to awake at the sound of music. 10. They awoke at the sounds of elephants, horses and of chariot wheels. They always heard the benedictions of Brahmans in the midst of sounds from various musical instruments. The Brahmans would please them with their benedictions and would pray for them on receiving donations. They were

दाम्रिष्ववोध्यन्त राङ्कवाजिनशायिनः । क्रूरक्ष्वानिनदंश्रुत्वा श्वापदानांमहावने ॥१४॥ नस्मोपपानिवनिद्रान्ते ननदर्दाजनार्दन । भेरीमृदङ्गनिनदैः शंखवैणव निःस्वनैः १५॥ स्त्रीणां गीतनिनादैश्च मधुरैर्मधुमूदनम् । वन्दिमागधसूतैश्च स्तुवद्भिर्बोधिताःकथम् ॥ १६ ॥ महावनेष्वबुध्यन्तश्वापदानांरुतेनच । ह्रीमान सत्यधृतिर्दान्तो भूतानामनुकम्पिता ॥ १७ ॥ कामद्वेषौवशेकृत्वा सतांवर्त्मानुवर्तते । अम्बरीषस्य मान्धातुर्ययातेर्नहुषस्यच ॥१८॥ भरतस्यदिलीपस्य शिवेरौशीनरस्यच । राजर्षीणांपुराणानां धुरन्धत्तेदुरुद्वहाम् ॥ १९ ॥ शीलवृत्तोपसम्पन्नो धर्मज्ञःसत्यसंगरः । राजा सर्वगुणोपेतस्त्रैलोक्यस्यापियो भवेत् ॥ २० ॥ अजातशत्रुर्धर्मात्मा शुद्धजाम्बूनदप्रभः । श्रेष्ठः कुरुपुसर्वेषु धर्मतःश्रुतवृत्ततः । प्रियदर्शी दीर्घभुजः कथंकृष्णयुधिष्ठिरः ॥ २१ ॥

में शयन करते थे उनको महावन में वन्यजीव मृग व्याघ्रादिकों का शब्द सुन कैसे निद्रा आईहोगी । १४ । किसी प्रकार उनको निद्रा न आईहोगी न जागेहोंगे क्योंकि वे तो उसके योग्यथेही नहीं हे जनार्दन वेतो सदा नगारे मृदङ्गोंके नादसे व शंख बांसुरी के शब्द से । १५ । व स्त्रियों के मधुर गानेके शब्दसे व वन्दीमागध सूतादिकोंकी स्तुति से सदा जागते थे । १६ । वे अब महावन में वन्यजीवों के शब्द से कैसे जागतेहोंगे, फिर उनमें युधिष्ठिर, लज्जावान, सत्यवादी, इन्द्रियजित् , प्राणियों के ऊपर दया रखनेवाले । १७ । काम व अप्रीति को सदा अपने वश में किये सज्जनोंके ही मार्गपर चलते अम्बरीष, मान्धाता, ययाति, नहुष, भरत, दिलीप, उशीनर देशके राजाशिवि आदि पुराने राजर्षियों का भार उठाते । १९ । व सदाशील वृत्त सम्पन्न, धर्मज्ञ सत्यप्रतिज्ञ सर्वगुण युक्तजो कि तीनोंलोकों के राजाहोने के योग्य । २० । धर्मात्मा पके सुवर्ण के समान वर्ण, युधिष्ठिरतो शास्त्र पढ़ने व सदाचरण रखने से सब कुरुवंशियों में श्रेष्ठहैं फिर हे कृष्ण

accustomed to sleep on soft beds and to live in well furnished houses; how could they have slept in forests full of the noise of of tigers and other animals ? They could not find sleep there, because they were not accustomed to such a life. They awoke at the sounds of musical instruments, sweet songs of women and the praises of bards. They must now be awakening by the sound of wild animals Yudhishthir, among them, is bashful, truthful, and merciful; has control over organs, desires and enmity; treads on the path of the virtuous and follows the example of Amvarish, Mandhata, Yayati, Nahush, Bharat, Shivi and other old royal sages. He is always virtuous, religious, truthful having all qualities and fit to be made the king of three worlds. 20. Yudhishthir the just is like gold in colour and from his learning the Shastras and truthful behaviour is the

यःसनागायुतप्राणो वातरंहामहाबलः । सामर्षीपाण्डवोनित्यं प्रियोभ्रातुःप्रियङ्करः ॥ २२ ॥ कीचकस्यतुसज्ञातेर्योहन्तामधुसूदन । शूरःक्रोधवशानाञ्च हिडिम्बस्य बकस्यच ॥ २३ ॥ पराक्रमेशक्रसमो मातरिश्वसमोबले । महेश्वरसमःक्रोधे भीमःप्रहरतांवरः ॥ २४ ॥ क्रोधंबलममर्षञ्च योनिधायपरन्तपः । जितात्मापाण्डवोऽमर्षी भ्रातुस्तिष्ठतिशासने ॥ २५ ॥ तेजोराशिंमहात्मानं वरिष्ठममितौजसम् । भीमंप्रदर्शनेनापि भीमसेनंजनार्दन ॥ २६ ॥ तंममाचक्ष्ववार्ष्णेय कथमस्तिवृकोदरः । आस्तेपरिघबाहुःस मध्यमःपाण्डवोबली ॥ २७ ॥ अर्जुनेनार्जुनोयःसकृष्ण बाहुसहस्रिणा । द्विबाहुःस्पर्द्धतेनित्य मतीतेनापिकेशव ॥ २८ ॥ क्षिपत्येकेनवेगेन पञ्चबाणशतानियः ।

ऐसे प्रिय दर्शन व दीर्घबाहु युधिष्ठिर कैसे हैं उनके समाचार तो कहो । २१ । व, जिनमें दशसहस्र हाथियों का बल है व पवनके समान वेगहै व महाबलवान् हैं व जो सदा असहन शील हैं, व अपने भाईके बड़े प्रियहैं क्योंकि सदा उनका प्रियही किया करते व जिन्हों ने जाति भाई सहित कीचकको मारडाला व क्रोधके वशीभूतों के बीच में बड़े शूरवीर हैं हिडिम्ब व बकासुर के जिन्हों ने प्राणही लेलिये व जो पराक्रम में इन्द्र के समान व बलमें पवन के समान क्रोध में महादेव के समान व प्रहार करनेवालों में बड़े शूरवीर हैं व जो क्रोधबल असहनशीलताको हृदय में रख अपने आत्माको जीत अपने भाईकी ही आज्ञा में चलतेहैं व जो तेज की राशि, महात्मा अतिश्रेष्ठ अमित पराक्रमी देखने में भी भयंकर ऐसे भीमसेन को बताओ कैसे हैं परिघाकार बाहें धारण किये महाबलवान् सबसे मझिले भीमसेन कैसे रहते हैं वही स्वभाव बनाहै या कुछ बदलगया है । २७ । व हे कृष्ण जो अर्जुन दोही बाहों से प्राचीन राजा अर्जुन जिसके सहस्र बाहें थीं उसकी

---

best of Kurus. Tell me, Krishn, all about that beautiful and long-armed Yudhishthir. Bhim had the strength of ten thousand elephants, velocity of wind and great power, was unbearable of temper and beloved of his elder brother, because he was always intent on doing him good. He killed Kichak and his brothers, was very brave and hot tempered, and killed the demons named Vak and Hidimv. He was like Indra in prowess, like wind in strength, like Mahadev in anger, the most dreadful warrior who having given place to anger, power and unbearableness in his mind and having control over his organs, obeyed the orders of his brother and is the store of glory, best of men, full of prowess and dreadful to look at with his long arms and immense strength—such was Bhimsen: tell me if he is the same or is changed. Arjun with his two arms had does the work of the old king of that name—Kartvirya Arjun had

इष्वस्त्रमहत्त्वोराज. कार्त्तवीर्य्यस्यपाण्डवः ॥ २९ ॥ तेजसादित्यसदृशो महर्षिसदृशो दमे । क्षमया पृथिवीतुल्यो महेन्द्रसमविक्रमः । ३० ॥ आधिराज्यं महद्दीप्तंप्रथित मधुसूदन । आहृतंयेनवीर्येण कुरूणांसर्वराजसु ॥ ३१ ॥ यस्यबाहुबलंसर्वे पांडवाः पर्य्युपासते । ससर्वरथिनांश्रेष्ठ पाण्डवःसत्यविक्रमः ॥ ३२ ॥ यंगत्वाभिमुखःसंख्ये नजीवन्कश्चिदाव्रजेत् । योजेता सर्वभूतानामजेयो जिष्णुरच्युत ॥ ३३ ॥ योपाश्रयः पाण्डवानां देवानामिववासवः । सतेभ्रातासखाचैव कथमद्यधनञ्जयः ॥ ३४ ॥ दयावान्सर्वभूतेषु ह्रीनिषेधो महास्त्रवित् । मृदुश्चसुकुमारश्च धार्मिकश्चप्रियश्चमे ॥३५॥ सहदेवोमहेष्वासः शूरःसमितिशोभनः । भ्रातॄणांकृष्णशुश्रूषुर्धर्मार्थ कुशलोयुवा ३६

रक्खी करते हैं । २८ । क्योंकि वह कार्त्तवीर्य्यार्जुन राजा हजार बाहों से पांचसौ बाण चलाता था व ये हमारे अर्जुन दोही बाहोंसे, एकही बारमें पांचसौ बाण चलाते हैं इस से उसी के समान हैं । २९ । व तेज में तो सूर्य के सदृश, इन्द्रियों के दमन करने में महर्षियोंके समान क्षमाकरने में पृथ्वी के समान विक्रम में इन्द्रके तुल्यहैं । ३० । व जिन्हों ने महाप्रकाशित व विख्यात अधिराज्यपद जो कि सब राजाओं का स्वामित्व है सब राजाओं से हरलाय कौरवों में स्थापित करदिया । ३१ । व जिस, सत्य विक्रमी, सब महारथोंमें श्रेष्ठ पाडवकी बाहोंके बलकी उपासना सब पांडव लोग करते हैं । ३२ । व समर में जिसके सामने आय कोईभी जीवाहुआ नहीं जासक्ता व जो सबप्राणियों को जीतलेतेहैं व उनको कोईभी नहीं जीतसक्ता । ३३ । व जो पांडवों के ऐसे रक्षकहैं जैसे देवताओं के इन्द्र वे तुम्हारे भाई व सखा अर्जुन कैसेहैं कृष्णचन्द्रजी बतावोतो । ३४ । व सब प्राणियोंपर दयावान्, लज्जावान् महाशस्त्रास्त्र जाननेवाले, कोमल स्वभाव अतिसुकुमार, परम धर्मात्मा व हमारे प्राणप्यारे बड़े बाण चलानेवाले, अतिशूर, संग्रामकी

---

a thousand arms and with the five hundred of his arms used to work fire hundred arrows at once, but our Arjun, with only two arms shoots five hundred arrows at a time and is therefore like his name sake, He is like the sun in glory, like maharshis in the control of organs, like the Earth in forgiveness and like Indra in prowess 30.

He gained for the Kauravas the glorious title of the sovereign of all the kings. That best of warriors, of true prowess, is famous among all the Pandavas for the strength of his arms Tell me Krishn, how is your friend and brother Arjun from whom no one can escape with his life in battle, who conquers all, who is unconquerable by any one and who protects the Pandavas as Indra does gods. Tell me about the welfare of my darling Sahadev, the

सदैवसहदेवस्य भ्रातरोमधुसूदन । वृत्तंकल्याणवृत्तस्य पूजयन्तिमहात्मनः ॥ ३७ ॥ ज्येष्ठापचायिनं वीरंसहदेवं युधांपतिम् । शुश्रूषुंममवार्ष्णेय माद्रीपुत्रंप्रचक्ष्वमे ॥ ३८ ॥ सुकुमारोयुवाशूरो दर्शनीयश्चपाण्डवः । भ्रातृणाञ्चैवसर्वेषां प्रियःप्राणोवहिश्चरः ॥ ३९ ॥ चित्रयोधीचनकुलो महेष्वासोमहाबलः । कच्चित्सकुशलीकृष्ण वत्सोमम सुखैधितः ॥ ४० ॥ सुखोचितमदुःखार्हं सुकुमारंमहारथम् । अपिजातुमहाबाहो पश्येयंनकुलंपुनः ॥ ४१ ॥ पक्ष्मसम्पातजेकाले नकुलेनविनाकृता । नलभामिधृतिं वीर साद्यजीवामिपश्यमाम् ॥ ४२ ॥ सर्वैः पुत्रैः प्रियतरा द्रौपदीमे जनार्दन । कुलीना

शोभा करनेवाले अपने बड़े भाइयों के सेवक धर्म अर्थ में कुशल व जिसके भाई सदा जिसके कल्याण युक्त आचरणकी बड़ाई किया करतेहैं व जो अपने सब ज्येष्ठ युधिष्ठिरा- दि भाइयों के भ वको सदा बढ़ातेही रहते हैं व सवयोधों के पति हैं हे कृष्णचन्द्र, ऐसे माद्री के पुत्र व हमारे प्राण प्रिय सहदेव के समाचार कहो कैसे रहतेहैं । ३८ । व जो अति सुकुमारयुवावस्था को प्राप्त, अतिदर्शनीय रूप अपने सब भाइयोंके प्रिय वरन सब बाहर के रहने वालों के प्राण व चित्र विचित्र युद्ध करने वाले बड़े बाण चलाने वाले महाबलवान् ऐसे नकुल भला कुशलतो हैं, जो कि सदा सुखही से बढ़ाये गये । ४० । हे कृष्ण सुखकरने के योग्य, दुःख सहनेके अयोग्य सुकुमार स्वभाव व महारथ नकुल को फिर कभी हम देखेंगी । ४१ । हे वीर कृष्णचन्द्र जो पलक मारने के समय में भी नकुल हमारी आखों के सामने नहीं रहते थे तो हम नहीं रह सकती थीं पर इतने वर्ष बिना नकुल के देखेजीतीहैं हमको देखो । ४२ । व हे जनार्दन हमको सब पुत्रों से अति प्रियवर द्रौपदी हैं, जो महाकुलीन कुरुकी बेटी, व सबगुण सम्पन्न हैं व सबगुणों

---

the son of Madri, who is merciful to all, bashful, learned, warrior, delicate of temper, handsome, virtuous, dearer to me than life, great archer, exceedingly brave, glorious in battle, attending on his elder brothers, perfect in *dharm* and *arth*, praised of his brothers for his good behaviour, and promotor of the glory of his elder brothers. Tell me of the welfare of Nakul who was brought up in luxury and who is beautiful, young, handsome, dear to his brothers and out siders, great warrior, archer and powerful. 40 Shall I ever see Nakul who is fit for a life of ease and unworthy of suffering hardship. Nakul without whom I could not live for a moment, has been out of my sight for so many long years and I am still alive. Dearer to me than all my sons is Draupadi who born in a noble family, possesses all virtues and shines in them. She who has left

रूपसम्पन्ना सर्वैःसमुदिता गुणैः ॥ ४३ ॥ पुत्रलोकात् पतिलोकं वृण्वाना सत्यवादिनी । प्रियान् पुत्रान् परित्यज्य पाण्डवाननुरुध्यते ॥ ४४ ॥ महाभिजनसम्पन्ना सर्वकामैः सुपूजिता । ईश्वरी सर्वकल्याणी द्रौपदी कथमच्युत ॥ ४५ ॥ पतिभिः पञ्चभिःशूरै रग्निकल्पैः महारथैः । उपपन्ना महेष्वासैर्द्रौपदी दुःखभागिनी ॥ ४६ ॥ चतुर्दशमिदं वर्षं यन्नापश्यमरिन्दम। पुत्राधिभिःपरिद्यूनां द्रौपदीं सत्यवादिनीम्॥४७॥ ननूनं कर्मभिः पुण्यै रश्नुते पुरुषः सुखम् । द्रौपदी चेत्तथा वृत्ता नाश्नुते सुखमव्ययम् ॥ ४८ ॥ न प्रियो मम कृष्णाया बीभत्सुर्नयुधिष्ठिरः । भीमसेनो यमौवापि यद्पश्य सभागताम् ॥ ४९ ॥ न मे दुःखतरं किञ्चिद् भूतपूर्वं ततोधिकम् । स्त्रीधर्मिणीं द्रौपदीं यच्छ्वशुराणां समीपगाम् ॥ ५० ॥ आनायितामनार्य्येण क्रोधलोभानु

से प्रकाशित होरही है । ४३ । व जो अपने पुत्रोंको छोड़भी पतियों के संगको अंगीकार करतीहैं, व सदा सत्यहीबोलतीहैं, व प्राणप्रिय पुत्रोंका परित्यागकर पाण्डवोंकेहीसंग रहतीहैं ॥ ४४ ॥ व जो सदा महात्माजनोंकोही सेवा में युक्तरहतीं, व सदा सब अपने अभिलाषों से पूर्णही रहीं व यहां सबकी स्वामिनी रहीं व सबका कल्याण युक्तही बनी रहती थीं, कृष्णचन्द्र कहिये वेद्रौपदी कैसी रहती हैं ? ४५ ॥ हाय, शूरवीर, अग्नितुल्य तेजस्वी व दुराधर्ष, महायोधा, व महाधनुर्धर पांच पतियोंको पाकरभी द्रौपदी ऐसेदुःखको प्राप्तहुई४६ जिससे कि यह चौदहवां वर्ष बीतताहै व हमारे पुत्रादिकों के साथ दुःखित सत्यवादिनी द्रौपदी को हमने न देखा, इससे यही निश्चय होताहै कि पुण्यकर्म करने से पुरुष सुख नहीं पाता, क्योंकि द्रौपदीने सदा पुण्यही कर्म किये पर सुख न भोगे ॥ ४८ ॥ द्रौपदी से अधिक अर्जुन युधिष्ठिर भीमसेन नकुल व सहदेव हमको कोई प्रिय नहीं हैं, जिस रजोदर्शन को प्राप्त सभामें श्वशुरों के सामने आई हुई द्रौपदी को देख हमको जो दुःख हुआ वैसा जन्मसे ले उस दिनतक कभी नहीं हुआथा । ५० । हाय क्रोधी लोभी दुर्योधनकी आज्ञा से

---

her sons to live with her husbands, who is truthful, who is always attending on virtuous men, free from all desires and who ruled over all and did good while she was here. Alas! Draupadi has fallen into this great trouble in spite of having five husbands who are the bravest, glorious and dreadful like fire, great warriors and great archers. Since fourteen years I have not seen the distressed and truthful Draupadi together with my sons; this proves that happiness is not the result of good deeds, for Draupadi has always been virtuous. From my childhood I had never suffered such pangs of grief as on the day when Draupadi who is dearer to me than all my sons was brought in her monthly courses to the court in the presence

र्षिणा । सर्वे प्रेक्षन्त कुरवः एकवस्त्रां सभागताम् ॥ ५१ ॥ तत्रैव धृतराष्ट्रश्च महाराजश्च बाह्लिकः । कृपश्च सोमदत्तश्च निर्विण्णाः कुरवस्तथा ॥ ५२ ॥ तस्यां संसदि सर्वेषां क्षत्तारं पूजयाम्यहम् । वृत्तेनहि भवत्यार्यो न धनेन न विद्यया ॥ ५३ ॥ तस्य कृष्ण महाबुद्धेर्गम्भीरस्य महात्मनः । क्षत्तुः शीलमलङ्कारो लोकान् विष्टभ्य तिष्ठति ॥ ५४ ॥ वैशम्पायन उवाच । सा शोकार्ता च हृष्टा च दृष्ट्वा गोविन्द मागतम् । नानाविधानि दुःखानि सर्वाण्येवान्वकीर्तयत् ॥ ५५ ॥ पूर्वैराचरितं यत्तत् कुराजभिररिन्दम । अक्षद्यूतं मृगवधः कच्चिदेषां सुखावहम् ॥ ५६ ॥ तन्मां दहति यत् कृष्णा सभायां कुरुसन्निधौ । धार्तराष्ट्रैः परि क्लिष्टा यथा न कुशलं तथा ॥ ५७ ॥ निर्वास-

---

पकड़ आई हुई एकही केवल साड़ी पहिरेहुई द्रौपदी को सभा में सब कौरवों ने देखा ५१ वहीं धृतराष्ट्र, महाराज बाह्लिक, कृपाचार्य, सोमदत्त व सब और कौरव बैठेथे दुश्शासनादिकों को छोड़ सब उदासीन व दुःखित होगयेथे । ५२ । पर कुछ किसी ने कहा नहीं, हां उस सभामें सबों से अधिक हम विदुरजीकी बड़ाई करतीहैं, संसार में श्रेष्ठता आचरणही से होती है न विद्या से हो न धनसे । ५३ । हे कृष्ण, उन महात्मा, महाबुद्धि, गम्भीर, स्वभाव, विदुरका शील व अलंकार चौदहों लोकोंको नीचेकर विद्यमान है । ५४ । वैशम्पायनजी बोले कि श्रीगोविन्द भगवान्को आये देख शोकके मारे पीड़ितभी हुई व हर्षित भी होकर कुन्तीजी ने नानाप्रकार के सब दुःख वर्णन किये । ५५ । कि हे शत्रुसूदन कृष्णचन्द्र, आगे के बुरे राजाओं ने जो जुआ खेलने व शिकारमें मृगों के वधकरनेकी रीति निकाली है क्याकुछ ये सुखदायकहैं इनसे तो सबको दुःखही मिलाहोगा । ५६ । देखो इसी जुआखेलनेही के कारण धृतराष्ट्र के पुत्रोंकी खींची द्रौपदीको हमने सब कौरवों

---

of her fathers-in-law. 50. Alas! all the Kauravas in the court saw Draupadi in a single wrapper drgged by the orders of rash and avarioious Duryodhan. Dhritrashtra, Maharaj Vahlik, Kripacharya, Somdatta and other Kauravas present were grieved or indifferent with, the exception of Dusbasan and his party; but none interfered Above all was the conduct of Vidur praiseworthy: goodness is the result of good behaviour and not of learning or wealth. Vidur's greatness, "wisdom, gravity, behaviour and rhetoric are above all in the fourteen regions." Vaishampayan said that the distressed Kunti was pleased to see Shri Krishn and told him all her griefs, saying, 'Gambling and hunting, introduced by wicked kings of former days, can never bring happiness; they are a constant source of trouble. It was on account of gambling that I saw Draupadi dragged by the

नष्टञ्च नगराद् प्रव्रज्या च परन्तप । नानाविधानां दुःखानामभिज्ञास्मि जनार्द्दन ॥ ५८॥ अज्ञातचर्य्या बालानामवरोधश्च माधव । न मे क्लेशतमं तस्मात् पुत्रैः सह परन्तप ॥ ५९ ॥ दुर्य्योधनेन निकृता वर्षमद्य चतुर्द्दशम् । दुःखादपि सुखं नः स्यात् यदि पुण्यफलक्षयः ॥ ६० ॥ न मे विशेषो जात्वासीद्धार्त्तराष्ट्रेषु पाण्डवैः । तेन सत्येन कृष्ण त्वां हतामित्रं श्रियावृतम् । अस्माद्विमुक्तं संग्रामात् पश्ययं पाण्डवैः सह ॥ ६१ ॥ नैव शक्याः पराजेतुं सत्वह्येषां तथाविधम् । पितरन्त्वेव गर्हेयं नात्मानं न सुयोधनम् ॥ ६२ ॥ येनाहं कुन्तिभोजाय धनं वृत्तैरिवार्पिता । बालांपापार्थकरतुभ्यं

के सामने देखा व तौभी हमारा मरण न हुआ । ५७ । हे जनार्द्दन क्या हमने द्रौपदीही की यह दुर्द्दशा देखी है नानाप्रकार के दुःख हमने देखे व सब जानतीहैं, जैसे नगर से पुत्रोंका निकाला जाना व वन में भी चीर वल्कलादि धारणकर के । ५८ । फिर उस में भी गुप्तहोकर वर्षदिन रहना, व फिर अब राज्य न देनेसे पुत्रोंकी जीविकाकी रुकावट, परन्तु पुत्रों सहित हम इसको भी दुःख न क्लेश नहीं समझतीं । ५९ । दुर्य्योधन से निरादरित हमलोगों को चौदहवर्ष बीतगये, यदि सुखसे पुण्यकी क्षय होती है तो दुःख से पापकीभी क्षय होती होगी, इस से दुःख से भी हमको सुखहोगा क्योंकि जो कुछ पाप रहा होगा वह अब नष्टहोगया होगा । ६० । हमें ऐसे दुःख में भी पाण्डवों में व धृतराष्ट्र के पुत्रों में विशेषता नहीं आई, इसी सत्य से हे कृष्ण शत्रुओं को मार राजलक्ष्मीयुक्त इस संग्राम से छूटेहुये पाण्डवोंके संग तुमको देखेंगी । ६१ । क्योंकि इधर कोई ऐसा नहीं है जो तुमलोगों के समान पराक्रमियों को जीतसके, व हम तो अपने पिताही की निन्दा करती हैं न अपनी निन्दाकरें न दुर्य्योधनकी । ६२ । क्योंकि जिस हमारे पिताने हमको कुन्तिभोज राजाको ऐसे अक्रूरता से देदिया जैसे दानीलोग ब्राह्मणादिकों

---

sons of Dhritrashtra and yet I did not die. I have not only seen, Janardan, this misery of *Draupadi*, but have suffered many wrongs, such as the exile of the Pandavas in rags, their incognito residence for a year, the loss of their livelihood by withholding their kingdom from them; but *my sons and I donot care for them.* Duryodhan has been persecuting us for fourteen years. If merits are exhausted by a life of happiness, surely sins must come to an end by long endurance. We must be happy after such a long suffering, for our sins, if any, must come to an end. 60. Even after so many sufferings I see no difference between the sons of Dhritrashtra and mine and by virtue of this truthfulness I hope to see you and the Pandavas successful in battle. For there is none among the Kauravas that

क्रीडन्तीं कन्दुहस्तकाम् ॥ ६३ ॥ अदात्तु कुन्तिभोजाय सखा सख्ये महात्मने । साहं पित्रा च निकृता श्वशुरैश्च परन्तप । अत्यन्त दुःखिता कृष्ण किं जीवितफलं मम ॥ ६४ ॥ यन्मां वागब्रवीन्नक्तं सूतके सव्यसाचिनः । पुत्रस्ते पृथवीं जेता यशश्चास्य दिवंस्पृशेत् ॥ ६५ ॥ हत्वाकुरून्ग्रहाजन्ये राज्यंप्राप्यधनञ्जयः । भ्रातृभिः सह कौन्तेयस्त्रीन् मेधानाहरिष्यति ॥ ६६ ॥ नाहन्तामभ्यसूयामि नमोधर्मायवेधसे । कृष्णायमहतेनित्यं धर्मोधारयतिप्रजाः ॥ ६७ ॥ धर्मश्चेदस्ति वार्ष्णेय यथा

को धन देतेहैं, तुम्हारे पितामह व हमारे पिता शूरसेन ने बाल्यावस्थाही में गेंद हाथमें लिये खेलती हुई हमको, अपने महात्मा सखा राजाकुन्तिभोजको देदिया । ६३ हमको इसतरह प्रथम तो हमारे पिताही ने परित्यागकिया फिर भीष्मपितामह व हमारे पतिसे ज्येष्ठ होने के कारण धृतराष्ट्रभी श्वशुरही के समान हैं, इन से श्वशुरों ने भी परित्याग किया, इस से हम परम दुःखित हुईं कृष्ण हमारे जीनेका कौन फल है ।६४। जब अर्जुनका जन्म हुआथा तब रात्रिको आकाशवाणी ने हमसे कहाथा कि तुम्हारा यह पुत्र पृथ्वीभर को जीतलेगा व इसका यश स्वर्गको छूवेगा । ६५ । व महासंग्राम में यह सब कौरवों को मार राज्यपाय अपने भाइयों के संग तीन अश्वमेध यज्ञ करेगा । ६६। हम उस आकाशवाणीकी निन्दा नहीं करतीं, व विश्वके करनेवाले धर्मको नमस्कार करतीहैं कि उन्हींका किया सब कुछ होता है, व महात्मा कृष्ण कोभी नमस्कार करतीहैं जो साक्षात् ईश्वरभी है पर कुछ नहीं करसके व धर्म प्रजाओं को धारण करताहै इसीसे उसका धर्म नाम है वही भला । ६७ । व जैसा आकाश वाणीने कहाथा व धर्म वैसाही है तो हे कृष्ण

---

can conquer brave men like you. I blame my father and not myself or Duryodhan; for he so easily gave me to Kuntibhoj as charitable men give wealth to Brahmans. Your grandfather Shursen who was my father, gave me to his friend King Kuntibhoj while I was yet a child. I was thus given up by my father in the first instance and Bhishm and Dhritrashtra who being elder than my husband are like my fathers-in-law have given me up to my great misfortune. What is the use of my life Krishn? At the birth of Arjun a heavenly voice had informed me that he would conquer all the land, that his glory would touch the heavens and that having conquered all the Kauravas, he would get their kingdom and would perform three Ashwamedh sacrifices together with his brothers. I donot blame that heavenly voice. I bow to Dharm the creator of the world and belive him almighty. I also bow to Shree Krishn who is the Lord himself,

वागभ्यभाषत । त्वञ्चापितत्तथाकृष्ण सर्वंसम्पादयिष्यसि ॥ ६८ ॥ नमांवाधव्र वैधव्यं नार्थनाशोनवैरता । तथाशोकायदहति यथापुत्रैर्विनाभवः ॥ ६९ ॥ याहं गाण्डीवधन्वानं सर्वशस्त्रभृतांवरम् । धनञ्जयं न पश्यामि काशान्तिर्हृदयस्यमे । जीवनाशंप्रनष्टानांश्राद्धं कुर्वन्तिमानवाः ७१ अर्थतस्ते मनमृतास्तेषाञ्चाहजनार्दन । ब्रूयामाधवराजानं धर्मात्मानंयुधिष्ठिरम् ॥ ७२ ॥ भूयास्तेहीयतेधर्मो मापुत्रकवृथाकृथाः । पराश्रयावासुदेव या जीवतिधिगस्तुताम् ॥ ७३ ॥ वृत्तेःकार्पण्यलब्धाया अप्रतिष्ठवज्यायसी । अथोधनञ्जयंब्रूया नित्योद्युक्तवृकोदरम् ॥ ७४ ॥ यदर्थंक्षत्रियासूते

तुम ईश्वरभी सब सिद्ध करोगे इसमें कुछ सन्देह नहीं । ६८ । हे कृष्ण हमको न वैसा विधवाकाहोना जलाताहै न धनका नाश न कौरवों से बैरता, जैसा कि बिना पुत्रों के रहना भस्मकिये डालताहै । ६९ । जो हम सर्व शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन को कि जिनके गाण्डीव नाम धनुषहै नहीं देखतीं तो हमारे हृदयको कौन शान्ति है । ७० । व चौदह वर्ष बीता चाहते हैं व हमने युधिष्ठिर को नहीं देखा ।७१ । न अर्जुनको न भीमसेन को न नकुल सहदेव को, तो अब प्राण नाशही समझो, फिर जो मरजाते हैं मनुष्य उनकी भी तो श्राद्ध करतेहैं । ७२ । फिर अर्थसे तो हमारे लेखे वे सब मरगये व उन के अर्थ से हम मरगईं, इससे माधव धर्मात्मा राजायुधिष्ठिर से कहना ॥ ७३ ॥ कि हेपुत्र तुम्हारा बड़ाभारी धर्म नष्टहुआ जाता है वृथा अब क्या कररहेहो, जिसकी माता दूसरेकी आश्रय में रहकर जीती हो उस पुत्र व माता दोनोंको धिक रहै ॥ ७४ ॥ दीनताके साथ जीविका

---

but can do nothing at present. Dhram spports the world and hence his name. If the heavenly voice proves true, you will be able to accomplish all. Neither widowhood nor loss of wealth or the enmity with the Kauravas burn me so much as the separation from sons. How can I get peace of mind without seeing Arjun the wielder of the Gandiv bow. 70. I have not seen Yudhishthir for fourteen years nor Arjun, Bhim, Nakul or Sahadev. I shall live no longer, for people offer *Sradh* to those who are dead. They are already dead to me as I am dead to them. Please tell Yudhishthir the just that he shrinks from the greatest duty in doing useless things. The son whose mother lives in the house of another is worthy of blame and likewise the mother. Disrespect is better than living in poverty; respect is useless for him who lives in poverty. Tell Arjun and Bhimsen, who finds pleasure in fighting, that it is now time to show prowess for which a Kshatrya woman brings forth her sons

तद्यकालोऽयमागतः । अद्यैवचेद्‌गतेकाले मिथ्याचातिक्रमिष्यति ॥ ७५ ॥ लोकस म्भाविता सन्तः सुनृशंसंकरिष्यथ । नृशंसेनचवोयुक्तांस्त्यक्ष्येयं शाश्वतीःसमाः ॥ ७६ कालेहिसमनुप्राप्ते त्यक्तव्यमपिजीवनम् । माद्रीपुत्रौचवक्तव्यौ क्षत्रधर्मरतौसदा ॥ ७७ ॥ विक्रमेणार्जितान्भोगान् वृणीतंजीवितादपि । विक्रमाधिगताह्यर्थाः क्षत्रधर्मेण जीवतः ॥ ७८ ॥ मनोमनुष्यस्यसदा प्रीणन्तिपुरुषोत्तम । गत्वाब्रूहिमहाबाहो सर्वशस्त्र भृतांवरम् ॥ ७९ ॥ अर्जुनंपाण्डवंवीरं द्रौपद्याःपदवींचर । विदितौहितवात्यन्तं संक्रुद्धौतावियान्तकौ ॥ ८० ॥ भीमार्जुनौनयेताहि देवानपिपरांगतिम् । तयोर्येतद्वशानं

तिउनसे अप्रतिष्ठ ही अच्छी दीन से जीविका पाय पविष्ठाहुई वो क्या, व अर्जुन तथा नित्य युद्ध करनेही में उद्यत भीमसेन सेभी कहना, कि ॥ ७५ ॥ जिसके लिये क्षत्रिय की स्त्री पुत्र उत्पन्न करतीहै अब यह उसका काल आगयाहै, कदाचित् यह काल बीतगया व तुमने अकालमें विक्रम किया तो फिर क्या । ७६ । क्योंकि लोकमें प्रतिष्ठा पाय पण्डित हो, फिर अत्यन्त बीभत्सकर्म करोगे, जो अतिक्रूरता व बीभत्सता का काम करोगे तो जन्म २ के लिये तुमलोगों को छोडदेंगी । ७७ । क्षत्रियको चाहिये कि जब समय आजाय तोप्राणभी त्यागदे पर समय न जाने पावे, व क्षत्रियोंके धर्ममें तत्पर माद्रीके पुत्रोंसेभी कहनाकि । ७८ । प्राणोंके बदले में भी विक्रमही से इकट्ठे किये भोगोंका अंगीकार करें, क्योंकि क्षत्रियके धर्मसे जीतेहुए पुरुषके विक्रमहीसे प्राप्त अर्थ अर्थ के होतेहैं । ७९ । व वही मनुष्यके मनको तृप्त करतेहैं, व हे महाबाहु कृष्ण जाकर सर्व शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन वीर पाण्डव से कहना कि द्रौपदीकी पदवीको प्राप्तहो, क्योंकि आप जानतेहैं

---

and that their prowess will avail nothing if this time is lost; for having got respect and learning they will do ferocious deeds and if they act with cruelty and ferocity I shall forsake them for ever. A Kshatrya should not care for life if need be; but should not let an opportunity pass. Tell also the sons of Madri who are firm on the duties of Kshatryas, that they should accept nothing but what is earned by prowess; for things earned by Kshatrya prowess are worthy of enjoyment and pleasing to the human mind. Tell the brave Pandav Arjun the best of warriors to redress the wrongs of Draupadi; for you know that when she was dragged by her hair, Arjun and Bhim were angry like Yamraj. You also know that Bhim and Arjun who could destroy even gods if they wanted, have been much insulted by the disrespect of Draupadi. Dushasan and

यत्साकृष्णासभांगता ॥ ८१ ॥ दुःशासनश्चकर्णश्च परुषाण्यभ्यभाषताम् । दुर्योधनो भीमसेनमभ्यगच्छन्मनस्विनम् ॥ ८२ ॥ पश्यतांकुरुमुख्यानां तस्यद्रक्ष्यतियत्फलम् । नहिवैरंसमासाद्य प्रशाम्यतिवृकोदरः ॥ ८३ ॥ सुचिरादपिभीमस्य नहिवैरंप्रशाम्यति यावदन्तंननयति शात्रवाञ्छत्रुकर्षणः॥८४॥नदुःखंराज्यहरणं नचद्यूतेपराजयः। प्रव्रा जनन्तुपुत्राणां नमेतद्दुःखकारणम् ॥ ८५ ॥ यत्तुसाबृहतीश्यामा एकवस्त्रासभांगता अशृणोत्परुषावाचः किन्नुदुःखतरंततः ॥ ८६ ॥ स्त्रीधर्मिणीवरारोहा क्षत्रधर्मरतासदा नाभ्यगच्छत्तदानाथं कृष्णानाथवतीसती ८७ यस्याममसपुत्रायास्त्वं नाथोमधुसूदन

जब द्रौपदीके केश खींचे गयेहैं तबयमराजके समान अर्ज्जुन व भीमसेनने क्रोध कियाथा । ८१ । व यह भी तुम जानतेहो कि भीम व अर्ज्जुन जो चाहते तो देवताओंकोभी अन्तगतिको पहुँचादेते यह उन दोनोंका बड़ाभारी निरादर हुआहै जो द्रौपदी उसदुर्दशा के साथ सभामें खींचआई । ८२ । व उससमय दुश्शासन व कर्णने कितने कठोर वचन कहेथे, व दुर्योधनने मनस्वी भीमसेन को कौरवोंमें मुख्य भीष्मादिकोंके सामने जो वचन कहेहैं, उनका फल दुर्योधन अवश्यदेखेंगे क्योंकि भीमसेन वैर करके फिर कभी शान्त होतेही नहीं । ८४ । जबतक वे शत्रुओंका नाश नहीं करडालते चाहे बहुतभी दिन बीत जायँ पर भीमसेन तबतक वैरशान्तही नहीं करते, इनको राज्य हरजानेका कुछ दुःखनहीं न कुछदुःख जुआमें हारने काहै, व पुत्रोंका वनवासहुआ वहभी हमारे दुःख का कारण नहीं है । ८५ । किन्तु जो एकवस्त्र धारण किये द्रौपदीने सभा में आय ऐसे कठोर वचन सुने कि तुम्हारे पति तो अब हारगये मरेही समझो तुम अपने लिये और पति ढूंढो इससे अधिक हमको और दुःख नहींहै । ८६ । हाय नाथवतीभी सती द्रौपदी रजोदर्शन को प्राप्त व क्षत्रियोंके धर्ममें निरत पांचपतियोंकी भी उसकाभी कोई नाथ उससभामें न ठहरा । ८७ । हेकृष्ण पुत्र सहित जिस हमारे तुम ऐसे नाथ जिन्होंने मधुनाम दैत्यको

Karan said many harsh and cruel words. Duryodhan must suffer for the insulting language which he used for Bhimsen in the presence of Bhishm and Dhritrashtra; for Bhim never forgives an enemy without destroying him. I am neither grieved at the loss of the kingdom nor at the loss in gambling or the separation from my sons; but I am much grieved at the insulting language which they used to Draupadi, when they said, "Your husbands have lost in gambling; you must think them as dead and must seek another husband. 86. Alas! Draupadi in her monthly course was insulted in the court in spite of her having five brave husbands as if she had none. My sons and I, having you the destroyer of Madhu, Balram

रामश्चबलिनांश्रेष्ठः प्रद्युम्नश्चमहारथः ॥ ८८ ॥ साहमेवंविधंदुःखं सहेयंपुरुषोत्तम। भीमे जीवतिदुर्द्धर्षे विजयेचापलायिनि ॥ ८९ ॥ वैशम्पायनउवाच । ततआश्वासयामास पुत्राधिभिरभिप्लुताम् पितृष्वसारंशोचन्तीं शौरिःपार्थसखःपृथाम् ९० वासुदेवउवाच कानुसीमन्तिनीत्वादृक् लोकेष्वस्तिपितृष्वसः । शूरस्यराज्ञोदुहिता आजमीढकुलंगता ॥९१॥महाकुलीनाभवती ह्रदाद्ध्रदमिवागता । ईश्वरीसर्वकल्याणी भर्तापरमपूजिता ॥ ९२ ॥ वीरसूर्वीरपत्नीत्वं सर्वैःसमुदितागुणैः । सुखदुःखेमहाप्राज्ञे त्वादृशीसोढुमर्हति ॥ ९३ ॥ निद्रातन्द्रीक्रोधहर्षौ क्षुत्पिपासेहिमातपौ । एतानिपार्थानिर्जित्य नित्यं वीरसुखेरताः ॥ ९४ ॥ त्यक्तग्राम्यसुखाःपार्था नित्यंवीरसुखप्रिया । नतुस्वल्पेनतुष्ये

मारडाला, व सब बलवानों में श्रेष्ठ बलरामजी तथा महारथ प्रद्युम्न । ८८ । सो वे हम ऐसे दुःख सहैं हेपुरुषोत्तम, व भीमसेन व अर्ज्जुनकेभी जीतेजीते यह दुःख सहैं । ८९ । वैशम्पायनजी बोले कि इतनासुन अर्ज्जुनके सखा महाराज कृष्णचन्द्रजी, पुत्रोंके दुःखसे दुःखित कुन्तीजीको समझाने लगे । ९० । श्रीभगवान् बोले, कि हेफूफूजी तुम्हारे समान इसलोक में कौनसी स्त्री है जो कि शूरसेन राजाकी सोकन्या व परमपूज्यराजा अजमीढके कुलमें ब्याही गई । ९१ । इससे आप महाकुलीनाहैं, मानों समुद्र से निकल दूसरे समुद्र में आईहो, फिर यहां सबकी स्वामिनी हुई व पतिकी ओरसे महा प्रतिष्ठापाई । ९२ । फिर प्रथमतो वीरकी पत्नीहुई व फिर महावीर पुत्रोंको उत्पन्न किया इससे सब गुणोंसे प्रकाशित हुई, हेमहाप्राज्ञे सुख व दुःख सब तुम्हारे सदृश लोग सहनेकेयोग्यहैं । ९३ । निद्रा, तन्द्रा, क्रोध, हर्ष, क्षुधा, प्यास, धूप, और जाड़ा इनसबको जीतकर मनुष्य सुखभाग का अधिकारी होताहै । ९४ । सब पार्थ ग्राम्य सुखछोड़कर सुखकी इच्छा से थोड़ेपर सन्तोष न करें

---

the bravest of warriors and valliant Pradyumn for our protectors, *have fallen in misery. We are suffering all hardship in the life time* of Bhim and Arjun." Vaishampayan said that on hearing this, Krishn the friend of Arjun, consoled Kunti who was weeping at the distress of her sons. 90. "There is no woman like you *in the world,"* said Shree Krishn to Kunti, "you are the daughter of king Shursen; you were married in the family of Ajmirh. You are noble born and have been brought as it were from one sea to another. You were the mistress of house and were respected by your *husband.* You are a warrior's wife and have given birth to brave sons. You are therefore possessed of all qualities. Wise people like you can bear all sorts of pleasures and pains. Sleep, anger, joy, hunger, *thirst,*

युर्गहीतसाहायमहाबलाः ॥ ९५ ॥ अन्तंधीरानिषेवन्ते मध्यंग्राम्यसुखप्रियाः । उत्त
मांश्चपरिक्लेशानभोगांश्चातिमानुषान ॥ ९६ ॥ अन्तेषुरेमिरेधीरा नतेमध्येषुरेमिरे । अ
न्तप्राप्तिंसुखामाहुर्दुःखमन्तरमेतयोः ॥ ९७ ॥ अभिवादयन्तिभवतीं पाण्डवाःसहकृ
ष्णया । आत्मानञ्चकुशलिनं निवेद्याहुरनामयम् ॥ ९८ ॥ अरोगानसर्वसिद्धार्थान
क्षिप्रन्द्रक्ष्यसिपाण्डवान् । ईश्वरानसर्वलोकस्य हतामित्रान्श्रियावृतान ॥ ९९ ॥ एव
माश्वासिताकुन्ती प्रत्युवाचजनार्दनम् । पुत्राधिभिरभिध्वस्ता निगृह्याबुद्धिजंतमः १००
कुन्त्युवाच । यद्यत्तेषांमहाबाहो पथ्यंस्यान्मधुसूदन । यथायथात्वंमन्येथाः कुर्याः
कृष्णतथातथा ॥ १०१ ॥ अविलोपेनधर्मस्य अनिकृत्यापरन्तप । प्रभावज्ञास्मिते कृ
ष्ण सत्यस्याभिजनस्यच ॥ १०२ ॥ व्यवस्थायाञ्चमित्रेषु बुद्धिविक्रमयोस्तथा । त्व
मेवनःकुलेधर्मस्त्वं सत्यंत्वंतपोमहत् ॥ १०३ ॥ त्वंत्राता त्वंमहद्ब्रह्म त्वयिसर्वंप्रतिष्ठि

और पराक्रम करें । ९५ । बुद्धिमान लोग सेवा को सब से बुरा सुख भोग को मध्यम
और क्लेशों को उत्तम मानते हैं । ९६ । बुद्धिमान अन्त में प्रसन्न होते हैं मध्य में नहीं
होते अन्तकी प्राप्ति सुखकी देनेवाली है मध्य में दुःख है । ९७ । द्रौपदी और पांडवों को
अपना अपना नाम लेकर तुम्हें प्रणाम करते हैं । ९८ । तुम अपने सब पुत्रों को रोगरहित
अर्थ सिद्ध, श्रीयुक्त और सबलोकों के स्वामी देखोगी । ९९ । पृथा श्रीकृष्णसे यह सुन
कर बहुत प्रसन्न हुई और कहने लगी कि हे महाबाहु भगवान आप वह बात कहिये जो
पांडवों को सुखदायक और हितकारी हो जिस में धर्म का लोप न हो और छलरहित सत्य
हो । १०२ । बुद्धि विक्रम धर्म सत्य और तपमें तुम्हारे समान मेरे कुल में कोई नहीं १०३

---

heat and cold must be borne by a person wishing to gain happiness. Having given up vulgar pleasures and desiring for happiness, the Pandavas should not be satisfied with little and should do prowess. Wise men regard service the worst of all, the enjoyment of pleasures as middle and the suffering of hardships as the best. The wise are happy in the end and not in the middle; it is better to be happy in the end than being in misery. *Draupadi* and the Pandavas separately send you their greetings. You will soon see your sons safe and sound, successful, rich and ruler over the land." Pratha was pleased to hear these words from Krishn and said, "You must do what is beneficial and giver of happiness to the Pandavas. Your words should be constant with dharm, free from deceit and true. There is none equal to you in wisdom, prowess, dharm, truth and asceticism in our family. You are the protector and Brahm and all

तम् । यथैवास्थतथैवैतत् त्वयिसत्यंभविष्यति ॥ १०४ ॥ वैशम्पायनउवाच । ताम्राम न्त्र्यचगोविन्दः कृत्वाचाभिमदक्षिणम् । मातिष्ठतमहाबाहुर्दुर्योधनगृहान्प्रति ॥१०५॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कृष्णकुन्तीसंवादे नवतितमोऽध्यायः ॥ ९० ॥

वैशम्पायन उवाच । पृथामामन्त्र्यगोविन्दः कृत्वाचाभिमदक्षिणम् । दुर्योधन गृहं शौरिरभ्यगच्छदरिन्दमः ॥ १ ॥ लक्ष्म्यापरमयायुक्तं पुरन्दरगृहोपमम् । विचि त्रैरासनैर्युक्तं मविवेशजनार्दनः ॥ २ ॥ तस्यकक्ष्याव्यतिक्रम्य तिस्रोद्वाःस्थैरवारितः । ततोऽभ्रघनसङ्काशं गिरिकूटमिवोच्छ्रितम् ॥ ३ ॥ श्रियाज्वलन्तं मासादमारुरोह महायशाः । तत्र राजसहस्रैश्च कुरुभिश्चाभिसंवृतम् ॥ ४ ॥ धार्तराष्ट्रंमहाबाहुं ददर्श-

---

तुम रक्षक महाहो सबजगत् तुम्हींमें समाताहो और तुम निस्संदेह सत्यहो । १०४ । इस प्रकार कुन्ती को समझा और उस से विदाहो, दुर्योधन के महलको सबवृत्तान्त कहने को श्रीकृष्ण गये १०५ ॥

अध्याय ॥ ९१ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि कुन्तीकी आज्ञा ले व उनकी प्रदक्षिणा कर कृष्णचन्द्रजी दुर्योधन के गृहको गये । १ । व परमलक्ष्मी से युक्त विचित्र आसनों से भरे इन्द्रके गृह के समान उस मन्दिरमें श्रीकृष्णचन्द्रजीने प्रवेश किया । २ । उस मन्दिरके तीन फाटक नांघ चौथे फाटकके भीतर पहुँचे द्वारपालों ने कहीं कुछ रोक टोक नहीकी, देखातो घने बादल के समान व ऊँचाई में पर्वत के शृंग के समान विराजमान । ३ । व शोभा से प्रकाशित धवरहर दिखाई दिया उसपर महायशस्वी श्रीकृष्णचन्द्रजी चढ़े, वहां हजारों राजाओं व कौरवों से घिरेहुये । ४ । दुर्योधनको बड़े ऊंचे आसनपर बैठे देखा, व

---

the world unites in you; you are truth without doubt." Having consoled Kunti and taken leave of her, Krishn went to the palace of Duryodhan to render him the message.105.

CHAPTER XCI

Vaishampayan said that Krishn, after taking leave of Kunti, went to the palace of Duryodhan which was full of wealth and beautiful seats like Indra's palace. After crossing the four gates without any hinderance or questioning from the portors, he saw a building like dense clouds, lofty as a mountain peak and shining in beauty. On ascending higher up, he saw Duryodhan on a high seat surrounded by thousands of kings and Kauravas Dushasan, Karan and

सीनमासने । दुःशासनञ्चकर्णञ्चं शकुनिञ्चापि सौबलम् ॥ ५ ॥ दुर्योधनसमीपे तानासनस्थान् ददर्शसः । अभ्यागच्छतिदाशार्हे धार्त्तराष्ट्रोमहायशाः ॥ ६ ॥ उदतिष्ठत्सहामात्यः पूजयन्मधुसूदनम् । समेत्यधार्त्तराष्ट्रेण सहामात्येकेशवः ॥ ७ ॥ राजभिस्तत्रवार्ष्णेयः समागच्छद्यथावयः । तत्रजाम्बूनदमयं पर्य्यंकंसुपरिष्कृतम् ॥८॥ विविधास्तरणास्तीर्णमभ्युपाविशदच्युतः । तस्मिन्गां मधुपर्कञ्चाप्युदकञ्च जनार्दने ॥ ९ ॥ निवेदयामासतदा गृहानराज्यञ्चकौरवः । तत्रगोविन्दमासीनं प्रसन्नादित्यवर्चसम् ॥ १० ॥ उपासाञ्चक्रिरे सर्वेकुरवोराजाभिःसह । ततोदुर्योधनोराजा वार्ष्णेयंजयतांवरम् ॥ ११ ॥ न्यमन्त्रयद्भोजनेन नाभ्यनन्दच्चकेशवः । ततो

दुश्शासन कर्ण शकुनिको । ५ । दुर्योधन के समीप आसनपर बैठे देखा, कृष्णचन्द्रजीको आते देख धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधन । ६ । कृष्णचन्द्रजीकी पूजा करतेहुये अपनेमन्त्री कर्णादिकों समेत आसनपरसे उठ खड़ेहुये, कृष्णचन्द्रजी प्रथम दुर्योधन से मिले भेंटे फिर उनके मन्त्रियों से । ७ । तदनन्तर अवस्था व सम्बन्धके अनुसार सब राजालोगोंसे मिले भेंटे वहां एक सुवर्ण का आसन सुन्दर मणियोंसे जड़ा स्वच्छ । ८ । विविधप्रकार के घटापटी के बिछौने से संयुक्तथा कृष्णभगवान् उसपर जाय विराजमान हुये उसपर विराजमानहोतेही सुन्दर वचन जल शर्बत ताम्बूलादि भगवानके लिये । ९ । दुर्योधन ने अपने हाथसे धरकर दिया व कहा कि यह गृह व राज्य आपही का है लीजिये फिर वहां बैठेहुये कृष्णचन्द्रजी की उपासना सब कौरव लोग व अन्य राजालोगभी करने लगे १० तब राजा दुर्योधन ने श्रीकृष्णचन्द्रजी को भोजन करने के लिये निमन्त्रण किया परन्तु केशव भगवान्जी ने अंगीकार न किया । ११ । तब दुर्योधन कर्णकी ओर निहार सब

Shakuni sat near Duryodhan. Seeing Krishn coming towards him, Duryodhan and his courtiers stood up on their seats. Shree Krishn greeted Duryodhan and then spoke with his ministers and kings according to their respective ages and degree of acquaintance. He then occupied a golden seat studded with jewels and spread over with beautiful carpets. Duryodhan himself offered him sweet words, water, sherbet and betel leaves and said, "This house as well as the whole of the kingdom is at your service." The Kauravas and other kings praised Shri Krishn. 10. Duryodhan then invited Krishn to dinner; but the latter did not accept it. Duryodhan looked at Karan and spoke to Shree Krishn in the presence of all the Kauravas, words which were soft, but full of cunningness, saying, "Why did you

दुर्योधनःकृष्णमब्रवीत् कुरुसंसदि ॥ १२ ॥ मृदुपूर्वंशठोदर्कं कर्णमाभाष्यकौरवः। कस्मादन्नानिपानानि वासांसिशयनानिच ॥ १३ ॥ त्वदर्थमुपनीतानि नाग्रहीस्त्वं जनार्दन । उभयोश्चददत्साह्यमुभयोश्चहितेरतः ॥ १४ ॥ सम्बन्धीदयितश्चासि धृतराष्ट्रस्यमाधव । त्वंहिगोविन्दधर्मार्थौ वेत्थतत्त्वेनसर्वशः तत्र कारणमिच्छामि श्रोतुंच क्रगदाधर ॥ १५ ॥ वैशम्पायन उवाच । सएवमुक्तोगोविन्दः प्रत्युवाचमहामनाः । ओघमेघस्वनःकाले प्रगृह्यविपुलंभुजम् ॥ १६ अनम्बूकृतमग्रस्तमनिरस्तमसंकुलम् । राजीवनेत्रोराजानं हेतुमद्वाक्यमुत्तमम् ॥ १७ ॥ कृतार्थाभुञ्जतेदूताः पूजांगृह्णन्तिचैवहि । कृतार्थंमांसहामात्यं समर्चिष्यसिभारत ॥ १८ ॥ एवमुक्तःप्रत्युवाच धार्तराष्ट्रोजना

कौरव सभामें कृष्णचन्द्रजी से बोले कोमल वचन पर शठतायुक्त बोले । १२ । कि हे जनार्दन अन्नपान व विविध प्रकार के वस्त्र व आसन जो तुम्हारे लिये यहां से दिये गये उनको आपने क्यों नहीं अंगीकार किया । १३ । आपने तो हमको व अर्जुन को दोनोंको सहायता देनेको कहाथा व दोनों के हितकरने में निरतहो । १४ । धृतराष्ट्र के सम्बन्धी व प्रियभी आप सब प्रकार सेहो इस के सिवाय आप धर्म अर्थ दोनों अच्छी तरह से जानते हो । १५ । इस के न अंगीकार करने का कारण हम सुना चाहते हैं हे चक्रगदादि धारण करनेवाले कृष्णचन्द्रजी । १६ । वैशम्पायन ने कहा कि जब गोविन्द भगवान् से दुर्योधन ने ऐसा कहा तो प्रसन्न चित्तहो वर्षा काल के मेघ के समान गर्जते हुये कृष्णचन्द्रजी अपना दहिना हाथ उठाय बोले । १७ । वह वचन श्रीभगवान्जीका न तो बहुत शीघ्रता के साथ कहागया न उस में कोई अक्षर लुप्तहोगये न एकों उसके अक्षर मिलगये सब साफ २ व सब हेतुयुक्त व दुर्योधनही से कहाभी ऐसा नहीं कि जैसे दुर्योधनने कर्णकी ओर निहार भाषणकिये वह

---

refuse to accept the articles of food, drink and clothing which we had offered you? You promised to help both Arjun and me and you are a well-wisher to both parties. Besides, you are well acquainted with dharm and arth. I wish to know the reason of your non-acceptance, Krishn the wielder of discus and mace!" Vaishampayan said that on hearing the words of Duryodhan, Govind with a smiling face and a voice like thunder raised his right arm. The words of Shree Krishn were slow, clear, audible, logical and addressed directly. He said, "Messengers think of eating after they have finished the work for which they have been sent; I shall accept your invitation after finishing the work for which I am sent." On hearing the words of Shree Krishn, Duryodhan said, "You should not be bad

र्दनम् । नयुक्तंभवतास्मासु प्रतिपत्तुमसाम्प्रतम् ॥ १९ ॥ कृतार्थंचाकृतार्थञ्च त्वां वयंमधुसूदन । यतामहेपूजयितुं दाशार्हनचशक्नुमः ॥ २० ॥ नचतत्कारणंविद्मो यस्मिन्नोमधुसूदन । पूजांकृतां प्रीयमाणैर्नामंस्था पुरुषोत्तम ॥ २१ ॥ वैरंनोनास्ति भवता गोविन्दनचविग्रहः । सभवानप्रसमीक्ष्यैतन्नेदृशंवक्तुमर्हति ॥२२॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तःप्रत्युवाचधार्तराष्ट्रं जनार्दनः । अभिवीक्ष्यसहामात्यं दाशार्हःप्रहसन्निव ॥ २३ ॥ नाहंकामान्नसंरम्भान्न द्वेषान्नार्थकारणात् । नहेतुवादाल्लोभाद्वा धर्मंजह्यांकथञ्चन ॥ २४ ॥ सम्प्रीतिभोज्यान्यन्नानि आपद्भोज्यानिवापुनः । नच सम्प्रीयसेराजन्न चैवापद्गतावयम् ॥ २५ ॥ अकस्माद्द्विषसेराजन् जन्मप्रभृतिपाण्ड

था । १८ । कहा हे दुर्योधन दूतलोग जब जिसके लिये आते हैं वहकार्य करलेते हैं तब भोजन करते हैं इससे जब हम जिसके लिये आयेहैं वह कार्य करलें तो समाज सहित हम को भोजन कराना हम अंगीकार करेंगे । १९। जब श्रीभगवान्‌जीने ऐसा कहातो दुर्योधन बोले कि आपको हमलोगों के विषयमें अयुक्तकरना योग्य नहीं है । २० । हे मधुसूदन चाहे आप कार्य करचुकें वा न करचुकें पर हमलोग सदा आपकी पूजा करने में उद्यतहैं पर कर नहीं सके क्याकरें । २१ । हे मधुसूदन जो हमलोगोंने आपकी प्रसन्नता के लिये पूजाकी व उसको आपने अंगीकार नहीं किया व कारण उसका यह था कि दूत कार्यकरके तो पूजा अंगीकार करतेहैं हम यह कारण नहीं समझते २२ हे गोविन्द आपके संग हमारा कुछवैर नहीं है न कुछ हमसे आपसे विग्रहहै यहबात आप अच्छीतरह विचार देखकर ऐसा कहने के योग्य नहींहैं २३ वैशम्पायनजी बोले कि जब दुर्योधन ने ऐसा कहातो श्रीकृष्णचन्द्रजी मन्त्रियोंसहित दुर्योधनकीओर देख हँसतेही बोले । २४ । कि हम न काम से, न क्रोधसे, न वैरसे, न धनके लोभसे, न कपटसे व न और किसी लोभसे किसी प्रकार धर्म छोड़ेंगे किन्तु जो कहें कहेंगे धर्मही के अनुकूल कहेंगे । २५ । हे राजन् भोजन दोप्रकार से किया

on us, Madhusudan. We are always ready to pay you the tribute of our respect whether you have done your work or not. We offered you our humble present; but you did not accept it because you say that an ambassador cannot accept an offering before finishing his work; but this reason of yours is not strong. We have no enmity or quarrel with you and therefore you should not say so." Vaishampayan said that on hearing the words of Duryodhan, Shree Krishn thus addressed him and all the court with a smile, "I shall not forsake dharm for desire, anger, enmity, riches, deceit, or any other temptation: I shall speak in accordance with dharm. There are only two inducements to dine at another's house for the sake of friendship or in distress. But none of these inducements is present

वान । प्रियानुवर्तिनो भ्रातॄन्सर्वैः समुदितान्गुणैः ॥ २६ ॥ अकस्माच्चैव पार्थानां द्वेषणं नोपपद्यते । धर्मे स्थिताः पाण्डवेयाः कस्तान्किंचिद्वक्तुमर्हति ॥ २७ ॥ यस्तान्द्वेष्टि स मां द्वेष्टि यस्ताननु स मामनु । ऐकात्म्यं मां गतं विद्धि पाण्डवैर्धर्मचारिभिः ॥ २८ ॥ कामक्रोधानुवर्ती हि यो मोहाद्विरुरुत्सति । गुणवन्तश्च यो द्वेष्टि तमाहुः पुरुषाधमम् ॥ २९ ॥ यः कल्याणगुणाञ्ज्ञातीन्मोहाल्लोभाद्दिदृक्षते । सोऽजितात्माऽजितक्रोधो न चिरं तिष्ठति श्रियम् ॥ ३० ॥ अथ यो गुणसम्पन्नान् हृदयस्याप्रियानपि । प्रियेण कुरुते वश्यांश्चिरं यशसि तिष्ठति ॥ ३१ ॥ सर्वमेतदभोक्तव्यमन्नं दुष्टाभिसंहितम् । क्षत्तुरेकस्य भोक्तव्य-

---

जाता है एकतो अच्छी प्रीति के साथ दूसरे जब भोजन करनेवाले के ऊपर कोई विपत्ति पड़ीहो कि उसे भोजन मिलताही नहीं किसीतरह पेटभरने से कामहै सो इसमें दोनों बातें नहीं हैं नतो आप प्रीति के साथ भोजन करावेहो न हमलोगों के ऊपर कोई विपत्तिही पड़ी है कि भोजन करलें । २६ । हे राजन् आप जन्मसे ले आजतक अकस्मात् पाण्डवों से वैर करते हैं, वे तुम्हारे प्रियके अनुवर्ती, व भाईहैं, फिर सब शुभगुणों से युक्तहैं । २७ । अकस्मात् पाण्डवों से अप्रीति करना योग्य नहीं है क्योंकि जब वे अपने धर्म में टिके हैं तो उनको कोई क्या कहने के योग्य है । २८ । जिसने पांडवों से वैर किया उसने जानों हमसे वैर किया व जो उनका अनुयायी है वह हमाराभी अनुयायी है हमको व धर्मचारी पांडवोंको एकही रूप समझो । २९ । [illegible] वह काम क्रोधही का अनुगामी है जो हम से व पाण्डवों से विरोध करना चाहे । ३० । व जो पुरुष गुणवान् से वैर करता है वह अधम पुरुष कहाता है व जो कल्याण गुणयुक्त अपने भाई बन्धुओं को मोह या लोभ से दोषदृष्टि से देखा चाहता है । ३१ । वह अजितात्मा व अजित क्रोध पुरुष बहुत कालतक राज्यलक्ष्मी भोगने में नहीं स्थिर रहता व

---

in my case; for, neither you have offered me food out of love nor I am in distress. From your childhood you have borne enmity without any cause against the Pandavas who are your playmates and dear brothers and are endowed with all the good qualities. You have no cause of enmity against them and they are firm on their duty. The enemy of the Pandavas is my enemy and likewise their friends are mine also. You must consider the Pandavas and myself as one. He who bears enmity against the Pandavas and myself is a slave to anger and desires, 30. He who bears enmity against one wiser than himself is the worst sort of man and he who finds faults with his glorious kinsmen through avarice or foolishness, has no control over his organs and anger and does not live long in possession of kingdom

मितिमेधीयतेमतिः ॥ ३२ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहुर्दुर्य्योधनममर्षणम् । निश्चक्रामततः शुभ्राद्धार्त्तराष्ट्रनिवेशनात् ३३ ॥ निर्याय च महाबाहुर्वासुदेवो महामनाः । निवेशायययौवेश्म विदुरस्यमहात्मनः ॥ ३४॥ तमभ्यगच्छद्द्रोणश्च कृपोभीष्मोथबाह्लिकः। कुरवश्चमहाबाहुं विदुरस्यगृहेस्थितम् ॥ ३५ ॥ तऊचुर्माधवंवीरं कुरवोमधुसूदनम् । निवेदयामोवार्ष्णेय सरत्नांस्तेगृहानवयम् ॥३६॥तानुवाचमहातेजाः कौरवान्मधुसूदनः। सर्वेभवन्तोगच्छन्तु सर्वामेऽपचितिःकृता ॥ ३७॥ यातेषुकुरुषुक्षत्ता दाशार्हमपराजितम् । अभ्यर्चयामासतदा सर्वकामैःप्रयत्नवान् ॥ ३८ ॥ ततक्षत्ताऽन्नपानानिशुचीनि गुणवन्तिच । उपाहरदनेकानि केशवायमहात्मने ॥ ३९। तैस्तर्पयित्वाप्रथमं ब्राह्म-

वाहे हृदय से अप्रियगीरों पर जो पुरुष गुणवानों को प्रियकर अपने वश में करलेता है वह बहुत दिनोंतक यश में टिकता है इस से हम यह अन्नादि कुछ न अंगीकार करेंगे क्योंकि अब तुमलोग दुष्टोंका है यहां केवल अकेले विदुरजी का अन्न भोजन करने के योग्य है हमारी बुद्धिमें तो यही बात है । ३२ । महाबाहु कृष्णचन्द्रजी ऐसा दुर्योधन से कह उनके उस अत्युत्तम मंदिरसे उठकर चलदिये । ३३ । व प्रसन्न चित्तहो भगवान् वासुदेवजी निवास करने के लिये महात्मा विदुरजी के स्थानपर चले गये । ३४ । जब ये विदुरजी के स्थानपर आ उतरेतो द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य भीष्मपितामह व राजा बाह्लिक तथा औरभी सज्जन कौरवलोग उनके समीप आये । ३५ । व माधव मधुसूदन कृष्णचन्द्रजी से बोले कि हे वृष्णिवंशोद्भव कृष्णचन्द्रजी हमलोग रत्नादि युक्त गृह आपको निवेदन करतेहैं आपचलकर उनमें उतरिये । ३६ । महातेजस्वी कृष्णचन्द्रजी ने उनसबों से कहा कि आप सबलोग अपने २ स्थानको जायँ हमारी सब पूजा व सत्कार हाचुके । ३७ । यह सुन जब भीष्म द्रोणादि सब चलेगये तो विदुरजी ने बड़ी यत्न से अपराजित कृष्णचन्द्रजीकी पूजाकी ।३८। तब स्वादु खाने और पीनेकी चीजें विदुरने महात्मा मुरारि कोदीं और उन्होंने प्रसन्नतासे ग्रहणकीं वह सब वस्तु श्रीकृष्णने

and wealth. And he who overpowers virtuous men with love will long be the master of fame. I shall therefore not accept your offer of food which belong to you whom I think wicked." Having said this, Shree Krishn came out of Duryodhan's palace and went to stay at the house of Vidur When Shree Krishn was staying at the house of Vidur, there came to see him Dronacharya, Kripacharya, Bhishm the garndfather, king Vablik and other Kauravas and said to him, "We offer you, Krishnchandra of the Vrishni family, a house full of jewels to stay in " But Shri Krishn replied that he had no need of it. At this Bhishm and other Kauravas went away and Vidur worshipped Shree Krishn with due rites. 40. Vidur offered him delicious food and drink of different sorts and he accepted them with pleasure

णान्मधुसूदन। वेदविद्वयोददौकृष्णः प्रथमंद्रविणान्यपि ॥४०॥ ततोनुयायिभिःसार्द्धं मरुद्भिरिववासवः। विदुरान्नानिबुभुजे शुचीनिगुणवन्तिच ॥ ४१ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णदुर्योधनसंवादे एकनवतितमोऽध्यायः ॥ ९१ ॥

वैशम्पायनउवाच । तंभुक्तवन्तमाश्वस्तं निशायांविदुरोब्रवीत् । नेदंसम्यग्व्यवसितं केशवागमनंतव ॥ १ ॥ अर्थधर्मातिगोमन्दः संरम्भीचजनार्दन । मानघ्नोमानकामश्च वृद्धानांशासनातिगः ॥ २ ॥ धर्मशास्त्रातिगोमूढो दुरात्माप्रग्रहङ्गतः । अनेयःश्रेयसांमन्दो धार्तराष्ट्रोजनार्दन ॥ ३ ॥ कामात्माप्राज्ञमानीच मित्रध्रुक्सर्वशङ्कितः । अकर्ताचाकृतज्ञश्च त्यक्तधर्माप्रियानृतः ॥ ४ ॥ मूढश्चाकृतबुद्धिश्च इन्द्रियाणामनीश्वरः । कामानु

ब्राह्मणों और विद्यार्थियों को खिलाई और वे सब प्रसन्नहोकर चलेगये। ४० । श्रीकृष्ण अपने साथियों के मध्यमें इसप्रकार बैठे जैसे इन्द्र देवताओं के मध्यमें और विदुरने सबको बड़े प्रेम से खाना खिलाया ॥ ४१ ॥

अध्याय ॥ ९२ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि जब भोजनादिकर कृष्णचन्द्रजी स्वस्थचित्त हुये तो रात्रिमें विदुरजी ने कहा कि केशवजी आपका यहां आगमन अच्छा नहीं हुआ ।१। क्योंकि, अर्थ धर्मसे विमुख, मन्दबुद्धि, सदा क्रोधी औरों के मानका नाशक, आप औरों से मान चाहने वाला वृद्धोंकी शिक्षा का उल्लङ्घन करनेवाला, धर्मशास्त्र से विरुद्ध, महामूढ दुष्टात्मा, हठ में तत्पर, कल्याणकी बातों से बाहर रखने के योग्य ऐसा मन्द धृतराष्ट्र का पुत्र, महाकामी अपनेही को पंडित मानता मित्रों से भी द्रोह करता व सबसे सदा सशङ्क चित्त रहता आप किसी के सङ्ग न उपकार करे न दूसरे का उपकार माने, धर्म सदा छोड़ेही रहता, झूंठही सदा प्रिय मानता, महामूढ, बुद्धि कुछ रखताही नहीं, इन्द्रिय उसकी कोई वशके

Shree Krishn offered food to Brahmans and learned men who praised the food and went away well pleased. Shree Krishn then sat among his companions as indra docs among gods and Vidur gave them all delicious food to eat. 43.

CHAPTER XCII

Vaishampayan said that after the meal when Krishn was sitting at his ease in the evening Vidur said to him, "Your arrival here, Keshav, is of no use; for Duryodhan has turned his face against dharm and arth, is foolish, hot-tempered, disrespectful, ambitious, unmindful of the advice of his elders, enemy of religious books, foolish, wicked, stubborn, unworthy of good things, slave to desires, boastful of his learning, envious of his friends, distrustful, uncharitable and ungrateful, irreligious, lover of falsehood, unwise slave to sensual

सारीकृत्येषु सर्वेष्वकृतनिश्चयः ॥ ५ ॥ एतैश्चान्यैश्चबहुभिर्दोषैरेव समन्वितः । त्वयो च्यमानःश्रेयोपि संरम्भान्नग्रहीष्यति ॥ ६ ॥ भीष्मेद्रोणेकृपेकर्णे द्रोणपुत्रेजयद्रथे । भूयसींवर्त्ततेवृत्तिं नशमेकुरुतेमनः ॥ ७ ॥ निश्चितंधार्त्तराष्ट्राणां सकर्णानांजनार्दन । भीष्मद्रोणमुखान्पार्थाः नशक्ताःप्रतिवीक्षितुम् ॥ ८ ॥ सेनासमुदयंकृत्वा पार्थिवंमधुसूदन । कृतार्थमन्यतेबाल आत्मानमविचक्षणः ॥ ९ ॥ एकःकर्णःपरान्जेतुं समर्थइति निश्चितम् । धार्त्तराष्ट्रस्यदुर्बुद्धेः सशमंनोपयास्यति ॥ १० ॥ संविच्चधार्त्तराष्ट्राणां सर्वेषामेवकेशव । शमेप्रयतमानस्य तवसौभ्रात्रकांक्षिणः ॥ ११ ॥ नपाण्डवानामस्माभिः प्रतिदेयंयथोचितम् । इतिव्यवसितास्तेषु वचनंस्यान्निरर्थकम् ॥ १२ ॥ यत्रसूक्तं

वश नहीं, सदा कामही का अनुसारी बनारहताहै व कार्य करानेमें सबके विषय में निश्चय रहित, इतने व और भी बहुत से दोषों से युक्त दुर्योधन दुष्ट है आप कल्याणकी भी बात कहेंगे तोभी वह मारे क्रोध के ग्रहण न करेगा । ६ । वह भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, अश्वत्थामा व जयद्रथ में बड़ी भारी प्रीति इसलिये रखता है कि ये युद्धकर हमको राज्य दिलादेंगे व मिलाप करने को तो कभी स्वप्न में भी वह मन नहीं करता । ७ । व उसको यह निश्चय है कि कर्ण सहित धृतराष्ट्र के पुत्रों को व भीष्म द्रोण कृपाचार्यादिकों को पाण्डव युद्ध में देखभी नहीं सक्ते फिर लड़ने को कौन कहै । ८ । इतनी सेना इकट्ठी करली है इस से वह मूर्ख अपने को कृतार्थ मानता है । ९ । दुर्योधन दुष्ट के विचार से तो अकेला कर्णही पांचों पाण्डवों को जीतसक्ता है इस से मिलाप करना किसीप्रकार वह न मानेगा । १० । जितने धृतराष्ट्र के पुत्र हैं सबका यही सम्मत होगया है कि यद्यपि श्रीकृष्णचन्द्र चाहते हैं कि पाण्डवों कौरवों का मेल होजाय व इनका भाईपन बनारहै । ११ । परन्तु पाण्डवों को हमलोग उचितभाग क्या कुछभी न दें, जब उन लोगोंने ऐसा निश्चय करलिया है तो उन से आप कहेंगे

desires, unfit to form a firm opinion on any subject and full of vices. He will give no ear to your good advice out of anger. He loves Bhishm the grandfather, Dronacharya, Kripacharya, Ashwathama and Jayadrath, because he thinks that they will win his kingdom in battle. He never thinks of peace even in his dreams and believes that the Pandavas cannot face Karan, the sons of Dhritrashtra, Bhishm, Drona and Kripacharya in battle. He has collected a large army and thereby the fool hopes to win. Duryodhan the wicked thinks that Karan alone will suffice to conquer the five Pandavas and therefore he will not give ear to the proposal of peace. All the sons of Dhritrashtra have settled amongst themselves that in spite of your exertions to bring about peace between the Kauravas and the Pandavas and the continuation of fraternal feelings between

दुरुक्तञ्च समंस्यान्मधुसूदन । नतत्रप्रलपेत्प्राज्ञो बधिरेष्विवगायनः ॥१३॥ अविज्ञा-
स्सुमूढेषु निर्मर्यादेषुमाधव । नत्वंवाक्यंप्रब्रुवन् युक्तश्चाण्डालेषुद्विजोयथा ॥ १४॥
सोऽयंबलस्थोमूढश्च नकरिष्यतितेवचः । तस्मिन्निरर्थकंवाक्य मुक्तंसम्पत्स्यतेतव ।१५॥
तेषांसमुपविष्टानां सर्वेषांपापचेतसाम् । तवमध्यावतरणं ममकृष्णनरोचते ॥ १६॥
दुर्बुद्धीनामशिष्टानां बहूनांदुष्टचेतसाम् । प्रतीपंवचनंमध्ये तवकृष्णनरोचते ॥ १७॥
अनुपासितवृद्धत्वाच्छ्रियो दर्पाच्चमोहितः । वयोदर्पादमर्षाच्च नतेश्रेयोग्रहीष्यति ॥ १८॥
बलंबलवदप्यस्य यदिवक्ष्यसिमाधव । त्वय्यस्यमहतीशंका नकरिष्यतितेवचः ॥ १९॥
नेदमद्ययुधाशक्यं मिन्द्रेणापिसहामरैः । इतिव्यवसिताःसर्वे धार्तराष्ट्राजनार्दन ॥ २०॥

तो अवश्यही वचन निरर्थक होगा । १२ । हे मधुसूदन जहां अच्छा कहना व खराब कहना दोनों समान हों वहां पण्डित को चाहिये कि कुछ कहै नहीं, जैसे बहिरों के आगे गानेवाले गाते नहीं । १३ । इस से हे माधव, इन अज्ञानी मूढमर्य्यादा रहितों के सामने आप वचन कहने के योग्य नहीं हैं जैसे चांडालों के सामने ब्राह्मणलोग वेदवाणी नहीं उच्चारण करते । १४ । इस से यह बलवान् व मूढ दोनों हैं आपका वचन न मानेगा, उस से जो वाक्य आप कहेंगे निरर्थकही होगा । १५ । उन सब पापियों के बीच में कृष्णचन्द्रजी आपका बैठनाहमको नहीं अच्छालगता । १६ । व दुर्बुद्धि नीचस्वभाव व दुष्ट चित्त उन बहुतों के बीच में आप अकेले का जाना व उनके विपरीत वचन कहना हमको नहीं अच्छालगता । १७ । जिस से कि उस दुष्ट दुर्य्योधन ने कभी वृद्धों की सेवा नहीं की व राज लक्ष्मीके अहंकार से मोहित है, व अवस्था-का भी उसको घमंड है व असहनशील होना जानों उसका स्वाभाविक धर्म है, इससे वह कल्याणदायक आप के वचनों को न अंगीकार करेगा । १८ । हे माधव, जो आप यह कहेंगे कि युधिष्ठि-रादिकों के बल तुमसे अधिकहैं तो उसको आपके विषय में बड़ी भारी शंका होगी फिर किसी प्रकार आपका वचन न करेगा । १९ । क्योंकि सब इनों ने अपने मनों में

the two parties, they would not give the Pandavas the least portion in the kingdom and for this reason your words will go for nothing. A learned man should choose silence where good words have the same effect as bad ones as singers remain silent before the deaf. You should say nothing, Madhav, to these unwise, foolish and unprincipled men as Brahmans donot recite the Vedas before chandals. He is as strong as he is foolish and therefore he will give no ear to your advice and you will be throwing away your words. I dont like, Krishn, the idea of your sitting among those sinners, nor do I like that you should say aught against so many unwise, mean and wicked men. Wicked Duryodhan will not give ear to your words as he has never paid respect to old men, is insensible in the pride of

तेष्वेवमुपपन्नेषु कामक्रोधानुवर्तिषु । समर्थमपितेवाक्य मसमर्थंभविष्यति ॥ २१ ॥
मध्येतिष्ठन्हस्त्यनीकस्यमन्दो रथाश्वयुक्तस्यबलस्यमूढः । दुर्योधनोमन्यतेवीतभीतिः
कृत्स्नामयेयंपृथिवीजितेति ॥ २२ ॥ आशंसतेवैधृतराष्ट्रस्यपुत्रो महाराज्यमसपत्नंपृथि
व्याम् । तस्मिञ्शमःकेवलोनोपलभ्यो बद्धंसन्तंमन्यतेलब्धमर्थम् ॥ २३ ॥ पर्यस्तेयं
पृथिवीकालपक्वादुर्योधनार्थे पाण्डवान्योद्धुकामाः । समागताःसर्वयोधाःपृथिव्यां
राजानश्चक्षितिपालैःसमेताः ॥ २४ ॥ सर्वेचैतेकृतवैराःपुरस्तात् त्वयाराजानोहृतसा
राश्चकृष्ण । तवोद्वेगात्संश्रिताधार्तराष्ट्रान् सुसंहताः सहकर्णेनवीराः ॥ २५ ॥ त्यक्ता
त्मानःसहदुर्योधनेन हृष्टायोद्धुंपाण्डवान्सर्वयोधाः । तेषांमध्येप्रविशेथायदित्वं नतन्मत

यह निश्चय करलिया है कि हमारी सेना के सामने सब देवताओं समेत इन्द्रभी युद्ध करनेके लिये आवेंगे तो पराजितही होकर लौटेंगे । २० । इससे काम क्रोधके अनुयायी उन लोगों के सामने आपकी समर्थभी वाणी असमर्थही होजायगी । २१ । यह मन्द मूढ़ दुर्योधन हाथियों व रथों के बीच में बैठहुआ निर्भय यह मानता है कि हमने सब पृथ्वीभर जीतली । २२ । व यह धृतराष्ट्र का पुत्र सब से यह कहा करता है कि पृथ्वी में हमारा महाराज्य शत्रु रहित है फिर वह केवल शांत होना क्यों मानेगा, क्योंकि यद्यपि धन आपके अधीन है उस के अधीन कुछभी नहीं पर वह यही मानता है कि सब अर्थ हमींको मिलगया है । २३ । यह सब पृथ्वी काल समीप आजाने के कारण पकरही है इस से पतित होतीही है, इसी से दुर्योधन के लिये पाण्डवों से युद्ध करने के लिये पृथ्वीभर के योधा सब राजाओं समेत आये हैं । २४ । व जितने राजा दुर्योधन की ओर लड़ने को आये हैं वे सब आप से बहुत दिनों से बैर रखते हैं, व सबों ने अपनी जान सारांशरूप दुर्योधन को ग्रहणकिया है, व आपकी ओर से डरकर सब कर्ण सहित दुर्योधन के संग आमिले हैं । २५ । जितने योधा

---

wealth and youth and is naturally of a rash temper. He will doubt you, if you will say that the strength of the Pandavas is greater than his own; for he believes that even gods cannot withstand his huge army in battle. 20. Your powerful speech will prove ineffective to those slaves of desires and anger. Surrounded by elephants and chariots foolish Duryodhan thinks that he has conquered all the world. The son of Dhritrashtra often *says that his great kingdom is free from enemies; he will therefore not agree to peace as he thinks* himself the *master* of all wealth and *does not* know that it belongs to you. All the kings of the land have come together at the call of Duryodhan to fight against the Pandavas, because the time of their death has approached. All the kings that have come to Duryodhan, have long standing enmity with you and have united with Karan and

तंगमदाशार्हवीर ॥ २६ ॥ तेषांसमुपविष्टानां बहूनांदुष्टचेतसाम् । कथंमध्यंमपद्येथाः शत्रूणांशत्रुकर्षन ॥ २७ ॥ सर्वथात्वंमहाबाहो देवैरपिदुरुत्सहः । प्रभावंपौरुषंबुद्धिं जानामितवशत्रुहन् ॥ २८ ॥ यामेप्रीतिःपाण्डवेषु भूयःसात्वयिमाधव । प्रेम्णाच बहुमानाचसौहृदाच्चब्रवीम्यहम् ॥ २९ ॥ यामेप्रीतिःपुष्कराक्ष त्वद्दर्शनसमुद्भवा । साकिमाख्यायतेतुभ्य मन्तरात्मासि देहिनाम् ॥ ३० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्ण विदुरसंवादे द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

यहां आये हैं वे विद्यमान हैं सब दुर्योधन के साथ पांडवों से युद्धकर अपने प्राण देनेपर तयारहैं सो उनके बीचमें आप जाना चाहते हो, हे दाशार्हवीर हमारा यह मत नहीं है आप उनके बीच में न जावें । २६ । हे शत्रुनाशन, उन बहुत से दुष्टचित्त शत्रुओं के मध्य में आप अकेले कैसे जाया चाहते हैं । २७ । यद्यपि हम आपका प्रभाव पौरुष व बुद्धि सब जानतेहैं कि आप देवताओं के भी सहने के योग्य नहीं, वेभी आपके सामने आवेंतो पराजितही होकर जावें तोभी हमारा मत नहीं है कि आप उस समाज में जावें । २८ । मेरी प्रीति पांडवों में और तुममें बहुत है इससे प्रेम पूर्वक मैंने आपसे यह कहा है । २९ । हे कमल नयन अन्तर्यामी जो प्रीति मुझमें आपके दर्शनसे बढ़ती है वह मैं कह नहीं सक्ता ॥ ३० ॥

Duryodhan against you. They are ready to give up their lives in battle against the Pandavas and therefore I donot think it safe for you to go among them. Why do you intend to go alone amongst so many wicked enemies, destroyer of enemies? I donot advise you to go to them, although I know of your greatness and prowess as well as that you are unconquerable even by gods. I have great love for you and the Pandavas and therefore I have said this out of love. You know the thoughts of all men lotus-eyed one and therefore it is needless to express in words the great love which I entertain towards you."30.



श्रीभगवानुवाच। यथाब्रूयान्महाप्राज्ञो यथाब्रूयाद्विचक्षणः। यथावाच्यस्त्वद्विधेन भवतामद्विधःसुहृत् ॥ १ ॥ धर्मार्थयुक्तंतथ्यञ्च यथात्वय्युपपद्यते। तथावचनमुक्तोस्मि त्वयैतत्पितृमातृवत् ॥ २ ॥ सत्यंप्राप्तञ्च युक्तंचाप्येवमेव यथात्थमाम्। शृणुष्वागमने हेतुंविदुरावहितोभव ॥ ३ ॥ दौरात्म्यंधार्त्तराष्ट्रस्य क्षत्रियाणाञ्चवैरताम्। सर्वमेतदहंजानन् क्षत्तःप्राप्तोद्यकौरवान् ॥४॥ पर्य्यस्तांपृथिवींसर्वां साश्वांसरथकुञ्जराम्। योमोचयेन् मृत्युपाशात् प्राप्नुयाद्धर्ममुत्तमम् ॥ ५ ॥ धर्मकार्य्यंयतनशक्त्या नोचेत् प्राप्नोतिमानवः। प्राप्तोभवति तत्पुण्यमत्रमे नास्तिसंशयः ॥ ६ ॥ मनसाचिन्तयन् पापंकर्मणानाभिरोचयन्। नप्राप्नोतिफलं तस्येत्येवंधर्मविदोविदुः ॥ ७ ॥ सोहंयति-

अध्याय ९३ ॥

विदुरजी के वचन सुन श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दबोले कि, जैसा महाप्राज्ञ कहताहै व जैसा महाविचक्षण पंडित कहताहै, व जैसा तुम जैसे महात्माको हम ऐसे सुहृदसे कहना चाहिये, व धर्म अर्थयुक्त जैसा तुम्हारे हृदय में विद्यमान है, वैसाही वचन तुमने हमसे कहाहै जैसा कि मातापिता कहतेहैं, व जैसा तुमने हमसे कहा सत्य २ वैसाही प्राप्त है व वही हमको करनाभी चाहिये, परन्तु हमारे आनेका जो कारण है विदुरजी एकाग्र चित्त होकर सुनिये उसका तात्पर्य यों ही है। ३। हे विदुर दुर्योधनकी दुष्टता व जो राजालोग यहां आयेहैं उनकी वैरता हमदोनों जानतेहुये इससमय कौरवों के समीप आये हैं। ४। हाथी घोड़े रथ सहित यह पृथ्वी नाशहोने पर तैयार है इससे जो मृत्युकी फांसी से छुड़ावे वह उत्तम धर्मपावे ।५। व जो कोई अपनी शक्तिभर धर्मका कार्य करनेके लिये यत्नकरे पर उसे न करपावे तोभी उस धर्म कर्मही का फल पाजाता है इसमें कुछभी संशय नहीं है ।६। व जो मन से पाप करनेकी चिन्तना करे व कर्मसे पापकरना न रुचेतो पापका फल न पावे धर्मज्ञलोग ऐसा कहतेहैं, अर्थात् मनकी पुण्यका फल होता है व मनके पापका

CHAPTER XCIII

On hearing the words of Vidur, Shree Krishn said, "You have spoken like a wise man or as a learned and great man should say to a friend like me. Your words are expressive of your virtuous mind: You have given me a fatherly advice. It is true what you say and I should act upon your advice; be pleased to hear my reasons for my coming here. The object of my coming here in the spite of knowing the wickedness of Duryodhan and the enmity of other kings is that the people of this land together with horses, elephants and chariots are fated to die and he who releases them from the bondage of world will undoubtedly gain great merit. Wise men say that he who thinks of doing sins, but does not extend his thoughts into practice does not receive the punishment. The Kauravas and the

तगमदाशार्हवीर ॥ २६ ॥ तेषांसमुपविष्टानां बहूनांदुष्टचेतसाम्
शत्रूणांशत्रुकर्शन ॥ २७ ॥ सर्वथात्वंमहाबाहो देवैरपिदुरुत्सहः ।
जानामितवशत्रुघ्न ॥ २८ ॥ यामेप्रीतिःपाण्डवेषु भूयःसात्वयिमाधव ।
बहुमानाच्चसौहृदाच्चब्रवीम्यहम् ॥ २९ ॥ यामेप्रीतिःपुष्कराक्ष ...
साकिमाख्यायतेतुभ्य मन्तरात्मासि देहिनाम् ॥ ३० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्ण विदुरसंवादे
द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

यहां आये हैं वे विद्यमान हैं सब दुर्योधन के साथ पांडवों से युद्धकर अपने प्राण देने तयारहैं सो उनके बीचमें आप जाना चाहते हो, हे दाशार्हवीर हमारा यह मत नहीं आप उनके बीच में न जायँ । २६ । हे शत्रुनाशन, उन बहुत से दुष्टचित्त शत्रुओं मध्य में आप अकेले कैसे जाया चाहते हैं । २७ । यद्यपि हम आपका प्रभाव पैरुष बुद्धि सब जानतेहैं कि आप देवताओं के भी सहने के योग्य नहीं, वेभी आपके सा आवेंतो पराजितही होकर जायँ तौभी हमारा मत नहीं है कि आप उस समाज में ज । २८ । मेरी प्रीति पांडवों में और तुममें बहुत है इससे प्रेम पूर्वक मैंने आपसे कहा है । २९ । हे कमल नयन अन्तर्यामी जो प्रीति मुझमें आपके दर्शनसे बढ़ती वह मैं कह नहीं सक्ता ॥ ३० ॥

Duryodhan against you. They are ready to give up their lives battle against the Pandavas and therefore I donot think it safe f you to go among them. Why do you intend to go alone amongst many wicked enemies, destroyer of enemies? I donot advise you to g to them, although I know of your greatness and prowess as well that you are unconquerable even by gods. I have great love for yo and the Pandavas and therefore I have said this out of love. Yo know the thoughts of all men lotus-eyed one and therefore it is nee less to express in words the great love which I entertain towar you."30.



श्रीभगवानुवाच। यथाब्रूयान्महाप्राज्ञो यथाब्रूयाद्विचक्षणः। यथावाच्यस्त्वद्विधेन भवतामद्विधःसुहृत् ॥ १ ॥ धर्मार्थयुक्तंतथ्यञ्च यथात्वय्युपपद्यते। तथावचनमुक्तोस्मि त्वयैतत्पितृमातृवत् ॥ २ ॥ सत्यंप्राप्तञ्च युक्तंचाप्येवमेव यथात्थमाम्। शृणुष्वागमने हेतुंविदुरावहितोभव ॥ ३ ॥ दौरात्म्यंधार्त्तराष्ट्रस्य क्षत्रियाणाञ्चवैरताम्। सर्वमेतदहंजानन् क्षत्तःप्राप्तोद्यकौरवान् ॥४॥ पर्य्यस्तांपृथिवींसर्वां साश्वांसरथकुञ्जराम्। योमोचयेन् मृत्युपाशात् प्राप्नुयाद्धर्ममुत्तमम् ॥ ५ ॥ धर्मकार्य्यंयतनशक्त्या नोचेत् प्राप्नोतिमानवः। प्राप्तोभवति तत्पुण्यमत्रमे नास्तिसंशयः ॥ ६ ॥ मनसाचिन्तयन् पापंकर्मणानाभिरोचयन्। नप्राप्नोतिफलं तस्येत्येवंधर्मविदोविदुः ॥ ७ ॥ सोहंयति-

अध्याय ९३ ॥

विदुरजी के वचन सुन श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दबोले कि, जैसा महाप्राज्ञ कहताहै व जैसा महाविचक्षण पंडित कहताहै, व जैसा तुम जैसे महात्माओं हम ऐसे सुहृद्से कहना चाहिये, व धर्म अर्थयुक्त जैसा तुम्हारे हृदय में विद्यमान है, वैसाही वचन तुमने हमसे कहाहै जैसा कि मातापिता कहतेहैं, व जैसा तुमने हमसे कहा सत्य २ वैसाही प्राप्त है व वही हमको करनाभी चाहिये, परन्तु हमारे आनेका जो कारण है विदुरजी एकाग्र चित्त होकर सुनिये उसका तात्पर्य औरही है। ३। हे विदुर दुर्योधनकी दुष्टता व जो राजालोग यहां आयेहैं उनकी वैरता हमदोनों जानतेहुये इससमय कौरवों के समीप आये हैं। ४। हाथी घोड़े रथ सहित यह पृथ्वी नाशहोने पर तैयार है इससे जो मृत्युकी फांसी से छुड़ावे वह उत्तम धर्मपावे। ५। व जो कोई अपनी शक्तिभर धर्मका कार्य करनेके लिये यत्नकरे पर उसे न करपावे तोभी उस धर्म कर्महो का फल पाजाता है इसमें कुछभी संशय नहीं है। ६। व जो मन से पाप करनेकी चिन्तना करे व कर्मसे पापकरना न रुचेतो पापका फल न पावे धर्मज्ञलोग ऐसा कहतेहैं, अर्थात् मनकी पुण्यका फल होता है व मनके पापका

CHAPTER XCIII

On hearing the words of Vidur, Shree Krishn said, "You have spoken like a wise man or as a learned and great man should say to a friend like me. Your words are expressive of your virtuous mind: You have given me a fatherly advice. It is true what you say and I should act upon your advice; be pleased to hear my reasons for my coming here. The object of my coming here in the spite of knowing the wickedness of Duryodhan and the enmity of other kings is that the people of this land together with horses, elephants and chariots are fated to die and he who releases them from the bondage of world will undoubtedly gain great merit. Wise men say that he who thinks of doing sins, but does not extend his thoughts into practice does not receive the punishment. The Kauravas and the

संगपदाशार्हवीर ॥ २६ ॥ तेषांसमुपविष्टानां बहूनांदुष्टचेतसाम् । कथंमध्यंप्रपद्येथाः शत्रूणांशत्रुकर्षन ॥ २७ ॥ सर्वथात्वंमहाबाहो देवैरपिदुरुत्सहः । प्रभावंपौरुषंबुद्धिं जानामितवशत्रुहन् ॥ २८ ॥ यामेप्रीतिःपाण्डवेषु भूयःसात्वयिमाधव । प्रेम्णाच बहुमानाच्चसौहृदाच्चब्रवीम्यहम् ॥ २९ ॥ यामेप्रीतिःपुष्कराक्ष त्वद्दर्शनसमुद्भवा । साकिमाख्यायतेतुभ्य मन्तरात्मासि देहिनाम् ॥ ३० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्ण विदुरसंवादे द्विनवतितमोऽध्यायः ॥ ९२ ॥

यहां आये हैं वे विद्यमान हैं सब दुर्योधन के साथ पांडवों से युद्धकर अपने प्राण देनेपर उतारूहैं सो उनके बीचमें आप जाना चाहते हो, हे दाशार्हवीर हमारा यह मत नहीं है आप उनके बीच में न जायँ । २६ । हे शत्रुनाशन, उन बहुत से दुष्टचित्त शत्रुओं के मध्य में आप अकेले कैसे जाया चाहते हैं । २७ । यद्यपि हम आपका प्रभाव पौरुष व बुद्धि सब जानतेहैं कि आप देवताओं के भी सहने के योग्य नहीं, वेभी आपके सामने आवेंतो पराजितही होकर जायँ तोभी हमारा मत नहीं है कि आप उस समाज में जायँ । २८ । मेरी प्रीति पांडवों में और तुममें बहुत है इससे प्रेम पूर्वक मैंने आपसे यह कहा है । २९ । हे कमल नयन अन्तर्यामी जो प्रीति मुझमें आपके दर्शनसे बढ़ती है वह मैं कह नहीं सक्ता ॥ ३० ॥

Duryodhan against you. They are ready to give up their lives in battle against the Pandavas and therefore I donot think it safe for you to go among them. Why do you intend to go alone amongst so many wicked enemies, destroyer of enemies? I donot advise you to go to them, although I know of your greatness and prowess as well as that you are unconquerable even by gods. I have great love for you and the Pandavas and therefore I have said this out of love. You know the thoughts of all men lotus-eyed one and therefore it is needless to express in words the great love which I entertain towards you."30.



श्रीभगवानुवाच। यथाब्रूयान्महाप्राज्ञो यथाब्रूयाद्विचक्षणः। यथावाच्यस्त्वद्विधेन भवतामद्विधःसुहृत् ॥ १ ॥ धर्मार्थयुक्तंतथ्यञ्च यथात्वय्युपपद्यते। तथावचनमुक्तोस्मि त्वयैतत्पितृमातृवत् ॥ २ ॥ सत्यंप्राप्तञ्च युक्तंचाप्येवमेव यथात्थमाम्। शृणुष्वागमनेहेतुंविदुरावहितोभव ॥ ३ ॥ दौरात्म्यंधार्तराष्ट्रस्य क्षत्रियाणाञ्चवैरताम्। सर्वमेतदहंजानन् क्षत्तःप्राप्तोद्यकौरवान् ॥४॥ पर्यस्तांपृथिवींसर्वां साश्वांसरथकुञ्जराम्। योमोचयेन् मृत्युपाशात् प्राप्नुयाद्धर्ममुत्तमम् ॥ ५ ॥ धर्मकार्य्यंयतन्शक्त्या नोचेत् प्राप्नोतिमानवः। प्राप्तोभवति तत्पुण्यमत्रमे नास्तिसंशयः ॥ ६ ॥ मनसाचिन्तयन् पापंकर्मणानातिरोचयन्। नप्राप्नोतिफलं तस्येत्येवंधर्मविदोविदुः ॥ ७ ॥ सोहंयति-

अध्याय ९३ ॥

विदुरजी के वचन सुन श्रीभगवान् कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दबोले कि, जैसा महाप्राज्ञ कहताहै व जैसा महाविचक्षण पंडित कहताहै, व जैसा तुम जैसे महात्माओं हम ऐसे सुहृदसे कहना चाहिये, व धर्म अर्थयुक्त जैसा तुम्हारे हृदय में विद्यमान है, वैसाही वचन तुमने हमसे कहाहै जैसा कि मातापिता कहतेहैं, व जैसा तुमने हमसे कहा सत्य २ वैसाही प्राप्त है व वही हमको करनाभी चाहिये, परन्तु हमारे आनेका जो कारण है विदुरजी एकाग्र चित्त होकर सुनिये उसका तात्पर्य योंहीं है। ३। हे विदुर दुर्योधनकी दुष्टता व जो राजालोग यहां आयेहैं उनकी वैरता हमदोनों जानतेहुये इससमय कौरवों के समीप आये हैं। ४। हाथी घोड़े रथ सहित यह पृथ्वी नाशहोने पर तैयार है इससे जो मृत्युकी फांसी से छुड़ावे वह उत्तम धर्मपावे ।५। व जो कोई अपनी शक्तिभर धर्मका कार्य करनेके लिये यत्नकरे पर उसे न करपावे तोभी उस धर्म कर्महीका फल पाजाता है इसमें कुछभी संशय नहीं है ।६। व जो मन से पाप करनेकी चिन्तना करे व कर्मसे पापकरना न रुचेतो पापका फल न पावे धर्मज्ञलोग ऐसा कहतेहैं, अर्थात मनकी पुण्यका फल होता है व मनके पापका

CHAPTER XCIII

On hearing the words of Vidur, Shree Krishn said, "You have spoken like a wise man or as a learned and great man should say to a friend like me. Your words are expressive of your virtuous mind: You have given me a fatherly advice. It is true what you say and I should act upon your advice; be pleased to hear my reasons for my coming here. The object of my coming here in the spite of knowing the wickedness of Duryodhan and the enmity of other kings is that the people of this land together with horses, elephants and chariots are fated to die and he who releases them from the bondage of world will undoubtedly gain great merit. Wise men say that he who thinks of doing sins, but does not extend his thoughts into practice does not receive the punishment. The Kauravas and the

ण्येमशर्मक्षत्तः कर्तुमनामया । कुरूणांसृञ्जयानाञ्च संग्रामेविनशिष्यताम् ॥ ८ ॥ सेयमापन्महाघोरा कुरुष्वेवसमुत्थिता । कर्णदुर्योधनकृतासर्वे ह्येततदन्वयाः ॥ ९ ॥ व्यसनेक्लिश्यमानंहि योमित्रंनाभिपद्यते । अनर्थाययथाशक्ति तंनृशंसंविदुर्बुधाः १०॥ आकेशग्रहणान् मित्रमकार्य्यात् सन्निवर्त्तयन् । अवाच्यः कस्यचिद्भवति कृतयत्नो यथाबलम् ॥ ११ ॥ ततस्समर्थंशुभंवाक्यं धर्मार्थसहितंहितम् । धार्त्तराष्ट्रःसहामात्यो ग्रहीतुंविदुराहति ॥ १२ ॥ हितंहिधार्त्तराष्ट्राणां पाण्डवानांतथैवच । पृथिव्यांक्षत्रियाणांच यतिष्येहमनामया ॥ १३ ॥ हितेप्रयतमानंमां शङ्केद्दुर्योधनोयदि । हृदयस्यचमे प्रीतिरानृण्यंचभविष्यति ॥ १४ ॥ ज्ञातीनांहिमिथोभेदे यन्मित्रंनाभिपद्यते । सर्व

फल नहीं होता ।७। इससे कौरव सृञ्जयवंशी संग्राममें नाशहुआ चाहतेहैं हम निश्छलता से शांतहोजानेके लिये यत्न करेंगे फिर सिद्ध असिद्ध होना देख जायगा । ८ । सो यह विपत्ति महाघोर कौरवों के ही ऊपर कर्ण व दुर्योधनकी की हुई उत्पन्नहुई है क्योंकि ये सब दुर्योधनही के वंशकेहैं, पाण्डवों के ऊपर न आवेगी । ९ । व दुःखमें क्लेश पाते हुये मित्रके पास जाय जो कुछ सहायता नहीं करता व उसे समझाता बुझाता नहीं जिससे कि उसका दुःख छूटे पंडितलोग उसे क्रूर कहते हैं । १० । व जो पुरुष झोंटधरकरके भी मित्रको खराब कर्म करने से रोकता है उसको कोई बुरा नहीं कहता भलाही कहता है कि इन्होंने अपने बलभर रोका पर उन्होंने न माना तो ये क्या करें । ११ । इस से हे विदुरजी, हम धर्म अर्थ सहित समर्थ व शुभ वचन कहेंगे अमात्यों सहित दुर्योधन उसे ग्रहणकरने के योग्य हैं पर चाहे न ग्रहणकरें । १२ । हम अपनी ओर से निश्छल होकर धृतराष्ट्र के सम्बन्धियों व पाण्डवों व पृथ्वीभर के क्षत्रियों के हितहोने में यत्न करेंगे । १३ । व हित करने में यत्न करतेहुये हम में जो दुर्योधन शंका करेंगे तो हमारे तो हमारे हृदयकी प्रीति उनसे उऋण होजायगी । १४ । जहां कहीं आपस में भाई

Srinjayas are fated to die, but I shall honestly try to bring about peace although I am not sure of the result. Duryodhan and Karan are about to bring this calamity on the Kauravas who are his kith and kin; but it will have no effect on the Pandavas. He who does not help an enemy in distress and does not give him good advice is thought cruel by learned men. 10. He who checks a friend in doing ill is not blamed of flinching from his duty. I shall therefore say what is right whether Duryodhan and his ministens accept it or not. I shall honestly try for the good of the Kauravas, the Pandavas and all Kshatryas of the world and I shall have done my duty even if Duryodhan doubts my words. He who does not intercede in the quarrels of his friends and does not try to subdue it with all his might is not a true friend in the opinion of wise men. I have come here to do this

यत्नेनमाध्यस्थ्यं नतन्मित्रंविदुर्बुधाः ॥ १५ ॥ नमांब्रूयुरधर्मिष्ठा मूढाह्यसुहृदस्तथा । शक्तो नावारयत्कृष्णः संरब्धानकुरुपाण्डवान ॥ १६ ॥ उभयोः साधयन्नर्थमहमागत इत्युत । तत्रयत्नमहंकृत्वा गच्छेयंनृष्ववाच्यताम् ॥ १७ ॥ ममधर्मार्थयुक्तंहि श्रुत्वावाक्यमनामयम् । नचेदादास्यतेबालो दिष्टस्यवशमेष्यति ॥१८॥ अहापयन्पांडवार्थयथावच्छमंकुरूणां यदिचाचरेयम्। पुण्यञ्चमेस्याच्चरितंमहात्मन मुच्येरंश्चकुरवोमृत्युपाशात् ॥१९॥ अपिवाचंमापमाणस्य काव्यांधर्मारामामर्थवतीमहिंसाम् । अवेक्षेरनधार्तराष्ट्राःशमार्थे माञ्चमासंकुरवःपूजयेयुः ॥ २० ॥ नचापिममपर्याप्ताः सहिताः सर्वपार्थिवाः । क्रुद्धस्यप्रमुखेस्थातुं सिंहस्येवेतरेमृगाः ॥ २१ ॥ वैशम्पायनउवाच । इत्येवमुक्त्वावचनं वृष्णीनामृषभस्तदा । सयनेमुखसंस्पर्शे शिश्येयदुसुखावहः २२॥ इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये त्रिनवतितमोऽध्यायः९३

बिरादरी वालोंका झगड़ा बखेड़ा हो व उस के बीचमें सब यत्न से जो मित्रनहीं पड़ता व अपने बूतेभर दोनों को नहीं समझाता, पण्डितलोग उसे मित्रही नहीं कहते । १५ । हम यह कार्य्य इस लिये करते हैं जिसमें, अधर्म्मात्मा, मूर्ख जो कि हमारे वैरी हैं वे यह न कहें कि कृष्णचन्द्र रोकने में समर्थ थे पर युद्ध करतेहुये कौरवों पाण्डवों को उन्होंने नहीं रोका । १६ । हम से हमदोनों का अर्थ सिद्धकरनेकी इच्छासे यहां आये हैं अब इस विषय में यत्न करके हम अपना पीछा छुड़ाते हैं जिसमें हमको कोई पीछे से न कहे । १७ । धर्म्मार्थ युक्त कुशल कारक हमारा वचन जो मूर्ख दुर्य्योधन न अङ्गीकार करेगातो अपने भाग्यके वश में पड़ेगा । १८ । पांडवों का राज्य छोड़े बिना कौरवों से मेलनहीं होसक्ता मेलहोने से मुझको भारी पुण्यहोगा कौरव मृत्यु से छुटेंगें । १९ । मेरी अच्छी धर्मयुक्त बातें सुनकर मेरी प्रशंसा करेंगे और धृतराष्ट्र के पुत्र सब मेरा कहा मानेंगे । २० । सब राजा और कौरव मेरे सामने ऐसे होंगे जैसे मृग सिंह के सामने नहीं जाते । २१ । यह कह श्रीकृष्ण रत्नजटित शय्या पर सोरहे । २२ ।

---

lest my foolish and wicked enemies blame me of not trying to subdue *the quarrel between the Kauravas and the Pandavas. I come to do* good to both parties and to relieve myself of the blame which people would lay on the other hand. Duryodhan will suffer for it, if he does not give ear to my good advice. We will have peace, if the Kauravas give up the share of the Pandavas; in the case of peace, I shall have great merit and the Kauravas will not die. The Kauravas will praise me when they hear my words full of dharm and the sons of Dhritrashtra will act upon my advice. All the Kauravas and other kings cannot withstand me as deer cannot face a lion." Having said this Shree *Krishn* slept on a bed decked with jewels. 22 .

वैशम्पायनउवाच । तथाकथयतोरेव तयोर्बुद्धिमतोस्तदा । शिवानक्षत्रसम्पन्ना सात्यतीयायशर्वरी ॥ १ ॥ धर्मार्थकामयुक्ताश्च विचित्रार्थपदाक्षराः शृण्वतोविविधावाचो विदुरस्यमहात्मनः ॥ २ ॥ कथाभिरनुरूपाभिः कृष्णस्यामिततेजसः । अकामस्येव कृष्णस्य सात्यतीयायशर्वरी ॥ ३ ॥ ततस्तुस्वरसम्पन्ना बहवःसूतमागधाः । शंखदुन्दुभिनिर्घोषैः केशवंप्रत्यबोधयन् ॥ ४ ॥ ततउत्थायदाशार्ह ऋषभःसर्वसात्वताम् । सर्वमावश्यकंचक्रे प्रातःकार्यंजनार्दनः ॥५॥ कृतोदकानुजप्यः सहुताग्नि समलंकृत. ततश्चादित्यमुद्यन्त मुपातिष्ठतमाधवः ॥६॥ अथदुर्योधनःकृष्णं शकुनिश्चापिसौबल॥

अध्याय ॥ ९४ ॥

वैशम्पायनजी जनमेजयजी से बोले कि उन दोनों बुद्धिमानों के बतकावे २ कल्याण दायिनी नक्षत्रावायिनी हो वह रात्रि बीतगई । १ । उस रात्रि में धर्म अर्थ कामयुक्त, विचित्र अर्थ पद अक्षरसहित श्रीकृष्णचन्द्रजी की सुन्दरी वाणी सुनते २ महात्मा विदुरजी को तो नींदही न आई । २ । व वैसेही यद्यपि कृष्णचन्द्रजी अकाम थे तथापि अनुरूप कथा कहते सुनते उनको भी निद्रा न आई व रात्रि बीत गई । ३ । यद्यपि कृष्णचन्द्रजी जागतेही थे परन्तु नाना प्रकार के स्वरों से युक्त शंख नगाड़े आदि के शब्दों से सूत मागध व बन्दीगण आय श्रीभगवान् करुणानिधान को जगाने लगे ४ तब सब सात्वत वंशियों में श्रेष्ठ व भक्तों के हितकारी श्रीबिहारीजी उठकर प्रातःकाल के सब आवश्यक कार्य करनेलगे । ५ । प्रथम शौचादिकर आचमन स्नान विधानकर परम मन्त्रादि जपकर अग्नि में आहुति दे अच्छी तरह भूषित हुये इतने में अरुणोदय हुआ फिर सूर्योदय पर दयानिधान श्रीभगवान् सूर्य का उपस्थान करनेलगे । ६ । इस प्रकार

CHAPTER XCIV

Vaishampayan said to Janmejaya that the two wise men passed the whole night in conversation. Vidur could find no sleep that night in hearing the charming conversation of Shree Krishn who, although free from all desires, did not himself sleep on account of the interesting talk with Vidur. Though Shree Krishn was awake, bards and singers came up to awaken him with music and musical instruments playing in harmony. Then Shree Krishn the best of Satwats began to perform the morning duties. After ablutions and bathing *he recited Vedic hymns and poured libations on fire* and decked himself with ornaments. In the meantime the sun had risen up and he offered prayers to him. While he was thus engaged in worship

सन्ध्यांतिष्ठन्तमभ्येत्य दाशार्हमपराजितम् ॥ ७॥ आचख्यतान्तुकृष्णस्य धृतराष्ट्रंस-भागतम् । कुरूश्वभीष्मप्रमुखान राज्ञःसर्वांश्चपार्थिवान ॥८॥ त्वामर्थन्तेगोविंद दिवि शक्रमिवामराः । तावभ्यनन्दद्गोविन्दः साम्नापरमवल्गुना ॥ ९ ॥ ततोविमलआदित्ये ब्राह्मणेभ्योजनार्दनः । ददौहिरण्यंवासांसि गाश्चाश्वांश्चपरन्तपः ॥ १० ॥ विसृज्यबहुरत्नानि दाशार्हमपराजितम् । तिष्ठन्तमुपसंगम्य ववन्देसारथिस्तदा ॥ ११ ॥ ततोरथेनशुभ्रेण महताकिंकिणीकिना । हयोत्तमयुजाशीघ्रमुपातिष्ठतदारुकः ॥ १२ ॥ तमुपस्थितमाज्ञाय रथंदिव्यंमहामनाः । महाभ्रघननिर्घोषं सर्वरत्नविभूषितम् ११ ॥

श्रीहरि सन्ध्यावन्दन करते थे कि दुर्योधन व राजा सुबल के पुत्र शकुनि दोनोंने आय कहा । ७ । कि महाराज, राजाधृतराष्ट्र व भीष्मपितामहादि सब कौरव व सब राजालोग सभामें आगये हैं । ८ । आपके आनेकी प्रार्थना करते हैं जैसे सब देवगण इन्द्र के आगमनकी प्रार्थना करते हैं, यह सुन श्रीकृष्णचन्द्र ने बड़ी मधुरवाणी से समभ्राय उन से कहा हम सन्ध्या समाप्तकर आपसभा में आतेही हैं । ९ । इतनाकह उनको तो विदाकिया व इतने में सूर्य भगवान प्रकाशवान होआये कि ब्राह्मणों को बुलाय परमशोभावान् श्रीभगवान् जीने धेनुवस्त्र सुवर्ण भूषण व अदूषण भूषणसहित घोड़े व जोड़े उनको दिये व प्रणाम किये । १० । इस प्रकार नानाप्रकार के रत्नादि दे श्रीयदुनाथ मनाथनाथ खड़ेहुये थे कि सारथीने आय शिरनवाय वन्दनाकी । ११ । व आज्ञापाके ही किङ्किणीजाल मण्डित दोषाखण्डित रथमें शैब्य सुग्रीवादि घोड़े जोत दारुक आय आगे खड़ाहुआ । १२ । उस श्रावण के मेघके शब्दके समान शब्दसे शब्दित व सब रत्नों से विभूषित दिव्यरथको आया जान करुणानिधान महान् श्रीभगवान् । १३ ।

---

and meditation, Duryodhan and Shakuni came to him and said, '*King Dhritrashtra, Bhishm and other Kauravas are present in the* court and ask the favour of your presence there and are like gods waiting for Indra's arrival." To this Shree Krishn gave the following reply in very sweet words: "I shall attend the court directly after finishing the prayers. You may go." In the meantime the sun had risen. Shree Krishn sent for the Brahmans and gave them cattle, ornaments and horses and bowed to them. 10. When he had thus distributed wealth among Brahmans and was standing, the chariot-driver came to him and bowed down and by his permission brought out the faultless chariot drawn by Shaivya, Sugreev and other horses. Hearing the sound of the chariot wheels like thunder and being informed of the arrival of the chariot decked

अग्निंप्रदक्षिणंकृत्वा ब्राह्मणांश्चजनार्दनः । कौस्तुभंमणिमामुच्य श्रियापरमयाज्वलन्
॥ १४ ॥ कुरुभिःसंवृतःकृष्णो वृष्णिभिश्चाभिरक्षितः । आतिष्ठतरथंशौरिः सर्वया-
दवनन्दनः ॥ १५ ॥ अन्वारुरोहदाशार्हं विदुरःसर्वधर्मवित् । सर्वप्राणभृतांश्रेष्ठं सर्व
बुद्धिमतांवरम् ॥ १६ ॥ ततोदुर्योधनःकृष्णं शकुनिश्चापिसौबलः । द्वितीयेनरथेनैन
मन्वयातांपरन्तपम् ॥ १७ ॥ सात्यकिःकृतवर्माच वृष्णीनाञ्चापरे रथाः । पृष्ठतो
ऽनुययुःकृष्णं गजैरश्वैरथैरपि ॥ १८ ॥ तेषांहेमपरिष्कारैर्युक्ताः परमवाजिभिः गच्छतां
घोषिणश्चित्ररथाराजन् विरेजिरे ॥ १९ ॥ संमृष्टसंसिक्तरजः प्रतिपेदेमहापथम् ।
राजर्षिचरितंकाले कृष्णोधीमान् श्रियाज्वलन् ॥ २० ॥ ततःप्रयातेदाशार्हे प्राया-

---

अग्निकी प्रदक्षिणाकर व ब्राह्मणों को परिक्रमणकर कौस्तुभमणि धारणकर परमशोभा से
शोभितहो । १४ । कुरुवंशियों से वन्दित व वृष्णिवंशियों से रक्षित यदुनन्दनजी रथपर
सवारहुये । १५ । व जब सब प्राणियों में श्रेष्ठ सब बुद्धिमानोंमें प्रधान भगवान् रथपर
चढ़चुके तो सब धर्म्म जाननेवाले विदुरजी भी रथपर सवारहुये । १६ । यद्यपि
श्रीकृष्णचन्द्र जी दुर्योधन व शकुनि को विदाकरचुके थे पर वे दोनों खड़ेहीरहे इस से जब
श्रीभगवान्जी विदुरसहित रथपरचढ़ेतो दूसरे रथपर सवारहो वे दोनों भी कृष्णचन्द्रजी
के पीछे २ चले । १७ । व उस के पीछे और २ रथोंपर सवारहो सात्यकि कृतवर्मादि
वृष्णिवंशी कृष्णचन्द्रजी के पीछे चले व बहुत से हाथियों घोड़ों आदि पर चढ़कर भी
चले । १८ । उस समय सुवर्ण के भूषणों से भूषित दोषादूषित घोड़ों सहित चलेजाते
हुये शब्दायमान चित्रविचित्र रथ शोभित होतेथे । १९ । जिस राजमार्ग होकर जाना
था उसमें प्रथमही से झाड़बहार साफकर सुगन्धित जलसे छिड़काव होरहाथा जो राज-
र्षियों के चलने के योग्य मार्ग होकर कृष्णचन्द्र कृपाकर चले । २० । जब श्रीभग-

---

with jewels, Shree Krishn went round fire and the Brahmans and having put on the Kaustub jewel in great glory and being praised by the Kaur ivas and protected by the Vrishnis, he rode on the chariot Vidur the dharm knowing rode on the same chariot with that wisest and best of men and though Shree Krishn had dismissed Duryodhan and Shakuni they were standing outside and rode on their own chariot to follow Shree Krishn. On separate chariots, following those two, rode Satyaki, Kritvarma and other Vrishnis and were followed by a train of elephants and horses. The chariot decked with faultless jewels and drawn by good horses made a great noise in the way. The royal road was brushed and sprinkled over with sweet scented water and the way was worthy of royal sages. 20. Musical

घन्तैकपुष्कराः । शंखाश्चदध्मिरेतत्र वाद्यान्यन्यानियानिच ॥ २१ ॥ प्रवीराःसर्व लोकस्य युवानःसिंहविक्रमाः । परिवार्य्यरथंशौरेरगच्छन्त परन्तपाः ॥ २२ ॥ ततो न्येवहुसाहस्रा विचित्राऽद्भुतवाससः । असिप्रासायुधधराः कृष्णस्यासन्पुरःसराः २३ गजाःपञ्चशतास्तत्र रथाश्चासन्सहस्रशः । प्रायान्तमन्वयुर्वीरं दाशार्हमपराजितम् ॥ २४ ॥ पुरंकुरूणांसंवृत्तं द्रष्टुकामंजनार्दनम् । सबालवृद्धंसस्त्रीकं रथ्यागतमरिन्दम ॥ २५ ॥ वेदिकामाश्रितामिश्च समाक्रान्तान्यनेकशः । प्रचलन्तीवभारेण योषिद्भि र्भवनान्युत ॥ २६ ॥ सपूज्यमानःकुरुभिः संशृण्वन्मधुराःकथाः । यथार्हंप्रतिसत् कुर्वन् प्रेक्षमाणःशनैर्ययौ ॥ २७ ॥ ततःसभांसमासाद्य केशवस्यानुयायिनः ।

वान् चले नरसिंहा तुरही आदि बाजे पीछे से बजे व शङ्खभी बजे जिन्हें सुन और बाजे लाजे व सुननेवाले गाजे । २१ । व कृष्णचन्द्रजी के रथके समीप चारों ओर सब लोकके जो युवावस्था को प्राप्त बड़े वीरथे व जिनका सिंहोंके समान विक्रमथा वे लोग चले । २२ । उन के पीछे आगे बराबर और नानाप्रकार के चित्र विचित्र वस्त्र भूषण धारण किये सहस्रों वीर नानाप्रकार के आयुधलिये कृष्णचन्द्रजी के आगेचले । २३ । उस सवारी में उससमय श्रीकृष्णचन्द्रजी के पीछे पांचसौ तो हाथीथे व रथतो सहस्रों थे ।२४। उससमय कौरवोंके नगरनिवासी सब बालक युवा वृद्ध नर नारी हरिके दर्शनके लिये अपने घरों से आय राजमार्ग में प्रथमही से खड़े होरहे थे । २५ । व सब राजमार्ग के किनारे के मन्दिरों में नीचे ऊंचे स्त्रियां ऐसी भरीहुईथीं कि उनके भार से सब मन्दिर चलते से दिखाई देते थे । २६ । श्रीकृष्णचंद्रजीभी इसलिये कि ये सब हमारे दर्शनके लिये आये हैं कौरवों से पूजितहोते व उनकी मधुर कथायें सुनते बहुत धीरे २ इधर उधर देखते दिखाते चलेजाते थे । २७ । इसप्रकार जाते २ कृष्णचन्द्रजी के अनुचर लोग प्रथमराज

---

instruments and conchs were sounded behind them making the air resound. Shree Krishn was attended by young warriors of lion like prowess. Thousands of warriors decked in various sorts of ornaments and bearing all sorts of weapons followed him. He was followed by hundreds of elephants and many thousands of chariots. The citizens of Hasthinapur, young and old, men and women, came out of their houses to see Hari and stood on the road waiting for the coming of the retinue. All the houses by the roadside looked as if they were moving with the crowds of women over them on high and low places. Seeing that so many people had gathered to see him, Shree Krishn went on slowly, hearing sweet tales and receiving the greetings of the Kauravas. His attendants entered the royal

सशंखैर्वेणुनिर्घोषैर्दिशः सर्वा व्यनादयन् ॥ २८ ॥ ततः सा समितिः सर्वा राज्ञाममित तेजसाम् । समाकम्पत हर्षेण कृष्णागमनकांक्षया ॥ २९ ॥ ततोऽभ्याशगतं कृष्णं समहृष्यन्नराधिपाः । श्रुत्वा तं रथनिर्घोषं पर्जन्यनिनदोपमम् ॥ ३० ॥ आसाद्य तु सभाद्वारमृषभः सर्वसात्वताम् । अवतीर्य रथाच्छौरिः कैलासशिखरोपमात् ॥ ३१ ॥ नवमेघप्रतीकाशां ज्वलन्तीमिव तेजसा । महेन्द्रसदनप्रख्यां प्रविवेश सभां ततः ॥ ३२ ॥ पाणौ गृहीत्वा विदुरं सात्यकिं च महायशाः । ज्योतींष्यादित्यवद्राजन् कुरूनाच्छादयन् श्रिया ॥ ३३ ॥ अग्रतो वासुदेवस्य कर्णदुर्योधनावुभौ । वृष्णयः कृतवर्मा चाप्यासन् कृष्णस्य पृष्ठतः ॥ ३४ ॥ धृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य भीष्मद्रोणादयस्ततः । आसनेभ्योऽचलन्

सभा में पहुँचे व पहुँचतेही शंख बांसुरी आदि बाजे बजादिये कि उनके शब्दों से सब दिशायें शब्दितहोगईं। २८। इसके पीछे अमित तेजस्वी राजाओंकी वह सभा कृष्णचन्द्रजी के आगमनकी इच्छा से मारे हर्ष के कंपनेलगी। २९। जब कृष्णचन्द्रजी भी सभा के समीप पहुंचे तो मेघोंके गर्जने के समान रथका गर्जना सुन सब राजा लोग बहुत हर्षितहुये। ३०। फिर सभाके द्वारपर पहुँच सब भक्तों के स्वामी श्रीकृष्णचन्द्रजी कैलास पर्वत के कंगूरे के समान उज्ज्वल व ऊंचे रथपरसे उतर। ३१। नयेबादल के समान प्रकाशित व तेज से मानों चमकती इन्द्रके भवन के आकारकी महासभामें प्रविष्ट हुये। ३२। सभा के प्रवेश के समय भगवान् कृष्णचन्द्रजी एक हाथसे विदुरजी का हाथ पकड़े थे व दूसरे से सात्यकिजी का, व अपनी शोभासे कौरवों को ऐसा आच्छादित करतेथे जैसे सूर्यनारायण अपने तेजसे नक्षत्रों को आच्छादित करतेहैं। ३३। व वासुदेव भगवान् के आगे उससमय कर्ण व दुर्योधन थे, व वृष्णिवंशी व कृतवर्मा ये सब भगवान के समीपही पीछे २ चलेजाते थे। ३४। तब धृतराष्ट्र भीष्म द्रोणादि सब कृष्णचन्द्रजीको पूजाकरते हुये अपने २ आसनों

---

court in the meantime and announced his arrival with the sounds of musical instruments. The court full of glorious kings trembled as it were in the expectation and joy of Krishna's arrival. At the approach of Shree Krishn the kings present were overjoyed to hear the sound of the chariot wheels like lions' roar. 30. At the gate of the court, Shree Krishn the lord of devotees came down from the chariot which was shining and high as a peak of mount Kailas, and entered the court which shone like a new cloud or like the Indra's palace. Shree Krishn held a hand of *Vidur* in one of his hands and that of Satyaki in the other and shed his lustre on all the Kauravas as the sun does on stars. Karan and Duryodhan

सर्वे पूजयन्तोजनार्दनम् ॥ ३५ ॥ अभ्यागच्छतिदाशार्हे प्रज्ञाचक्षुर्नरेश्वरः । सहैव द्रोणभीष्माभ्यामुदतिष्ठन्महायशाः ॥ ३६ ॥ उत्तिष्ठतिमहाराज धृतराष्ट्रेजनेश्वरे । तानिराजसहस्राणि समुत्तस्थुःसमन्ततः ॥ ३७ ॥ आसनंसर्वतोभद्रं जाम्बूनदपरिष्कृतम् । कृष्णार्थेकल्पितंतत्र धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ ३८ ॥ स्मयमानस्तुराजानं भीष्मद्रोणौचमाधवः । अभ्यभाषतधर्मात्मा राज्ञश्चान्यान्यथावयः ॥ ३९ ॥ तत्रकेशवमानर्चुः सम्यगभ्यागतंसभाम् । राजानःपार्थिवाःसर्वे कुरवश्चजनार्दनम् ॥ ४० ॥ तत्रतिष्ठन्सदाशार्हो राजमध्येपरन्तपः । अपश्यदन्तरिक्षस्थानृषीन् परपुरञ्जय । ततस्तानभिसम्प्रेक्ष्य नारदप्रमुखानृषीन् ॥ ४१ ॥ अभ्यभाषतदाशार्हो भीष्मंशान्तनवं

से उठ२ आगेको बढ़े । ३५ । प्रज्ञाचक्षु धृतराष्ट्रजी श्रीभगवान्को आते देख द्रोणाचार्य व भीष्मपितामहके साथही अपने आसन से उठे व आगे को बढ़े । ३६ । जब महाराजाधिराज धृतराष्ट्रजी उठेतो सब राजालोग जो कि सहस्रों वहां वर्त्तमान थे अपने २ आसनों से उठखड़ेहुये । ३७ । उस सभामें धृतराष्ट्रजीकी आज्ञा से सुवर्ण से बनाहुआ एक गोल आसन कृष्णचन्द्रजी के लिये धराथा । ३८ । उसके समीप जाय कुछ हँसतेहुये कृष्णभगवान् राजा धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य से बोले व और राजाओं सेभी उनकी अवस्था के उचित कह उनसे बोले । ३९ । व आसन पर विराजमान हुये, तब सभामें बैठेहुये कृष्णचन्द्रजी को सब राजा व सब कौरवों ने वचन सत्कारादि से अच्छीतरह पूजित किया।४०। उससभामें आसनपर बैठेहुये कृष्णचन्द्रजीने अंतरिक्षकी ओर देखा तो सभा से थोड़ीही दूर ऊंचे सब ऋषि लोग खड़ेथे तब उन नारदादि ऋषियों को अच्छीतरह देख व पहिचान । ४१ । श्रीभगवान् धीरे से शंतनुजी के पुत्र भीष्मपितामहजी से बोले कि

---

preceded Shree Krishn and the Vrishnis with Kritvarma followed him. *Dhritrashtra with Bhishm and Drona stood up from their seats* out of respect for Shree Krishn and the blind king with his courtiers proceeded onward to receive him. Other kings present in the court followed the example of Dhritrashtra. By Dhritrashtra's order a round seat made of gold was placed there for Shree Krishn who went near it and with a smile spoke to Dhritrashtra, Bhishm and Droncharya and having exchanged greetings with other kings sat on it. The kings and the Kauravas present in the court expressed their respect for Shree Krishn in good words and civilities. 40. Shree Krishna then looked up from his seat and seeing Narad and other rishis standing at a distance said to Bhishm the son of Shantanu, " Devarishis have come to see the royal assembly; be pleased to

शनैः । पार्थिवाँसमितिं द्रष्टुमृषयोऽभ्यागतान्नृप ॥ ४२ ॥ निमन्त्र्यतामासनैश्च सत्कारेण चभूयसा । नैतेष्वनुपविष्टेषु शक्यंकेनचिदासितुम् ॥ ४३ ॥ पूजामप्युज्यतामाशु मुनीनांभावितात्मनाम् । ऋषीनशान्तनवोदृष्ट्वा सभाद्वारमुपस्थितान् ॥ ४४ ॥ त्वरमाणस्ततो भृत्यानासनानीत्यचोदयत् । आसनान्यथमृष्टानि महान्तिविपुलानिच ॥ ४५ ॥ मणिकाञ्चनचित्राणि समाजह्रुस्ततस्ततः । तेषुतत्रोपविष्टेषु गृहीतार्घ्येषु भारत ॥ ४६ ॥ निषसादासनेकृष्णो राजानश्चयथासनम् । दुःशासनःसात्यकये ददावासनमुत्तमम् ॥ ४७ ॥ विविंशतिर्ददौपीठं काञ्चनंकृतवर्मणे । अविदूरेतुकृष्ण-स्यकर्णदुर्योधनावुभौ ॥ ४८ ॥ एकासनेमहात्मानौ निषीदतुरमर्षणौ । गान्धारराजः शकुनिर्गान्धारैरभिरक्षितः ॥ ४९ ॥ निषसादासनेराजा सहपुत्रैर्विशाम्पते । विदुरो

राजसमाज देखने के लिये देवर्षि लोग विराजमान हुये हैं । ४२ । इससे इन लोगोंको आसनों से व अन्य बड़ेभारी सत्कार से बहुतही शीघ्रनिमंत्रण कीजिये क्योंकि बिना इनलोगोंके बैठे व सत्कार पाये कोईभी बैठ नहीं सक्ता । ४३ । इससे झटपट महाप्रतिष्ठित व पूजित ऋषियोंकी पूजा कीजिये व कराइये भीष्मजीने भी देखातो ऋषिलोग सभाके द्वारपर आगये थे, उनको देख । ४४ । भृत्यों को आज्ञादी कि बहुत शीघ्र आसन लावो, आज्ञा पावेही भृत्यवर्ग दौड़े व सुवर्णमय मणिजटित भांति २ के सैकड़ों आसनलाये, व उनपर सब मुनियों को बैठाय अर्घपाद्याचमनीय मधुपर्क दि दिया । ४६ । तब तक कृष्णचन्द्रजी व सब राजालोग अपने २ आसनोंपर खड़ेरहे जब उनका सत्कार होगयातो कृष्णचन्द्रजी अपने आसन पर बैठगये व राजालोग अपने २ आसनों पर, व दुश्शासन ने अपने हाथसे उठाय सात्यकिजी को आसन दिया । ४७ । व विविंशतिने सोनेकी चौकी उठाय कृतवर्माकोदी, कर्ण व दुर्योधन दोनों कृष्णचन्द्रजी के समीपही । ४८ । एकही आसनपर असहनशील महात्मा बैठे, व गान्धार देशका राजा शकुनि अपने देश निवासियों से

---

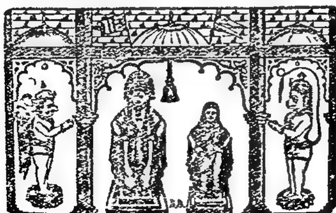
bring them in with respect, for no one will sit until they are seated. Please make haste to worship them with respect." Bhishm saw the rishis at the entrance of the court. He ordered the servants to fetch seats at once. The attendants brought at once hundreds of golden seats decked with jewels and having seated the rishis on them offered them water to sip and to wash their feet. In the meantime Shree Krishn and other kings stood on their seats and then sat down on their respective seats. Dushasan himself offered a seat to Satyaki and Vivinshati brought a golden seat for Kritvarma. Karan and Duryodhan the two proud and great men sat on the same seat near

मणिपीठेतु शुक्लस्यर्घ्याजिनोत्तरे ॥ ५० ॥ संस्पृशन्नासन शौरेर्महामतिरुपाविशत् । चिरस्यदृष्ट्वादाशार्हं राजानः सर्वएवते ॥ ५१ ॥ अमृतस्येवनातृप्यन् प्रेक्षमाणा जनार्दनम् । अतसीपुष्पसङ्काशः पीतवासाजनार्दनः ॥ ५२ ॥ व्यभ्राजतसभामध्ये हेम्नीवोपहितोमणिः ॥ ५३ ॥ ततस्तूष्णींसर्वमासीद् गोविन्दगतमासनम् । नतत्र कश्चित्किञ्चिद्वा व्याजहारपुमान्क्वचित् ॥ ५४ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णसभाप्रवेशे चतुर्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

रक्षित । ४९ । अपने पुत्रों सहित आसनपर बैठा, व महामतिमान विदुरजी शुक्ल मणियों से बनेहुये व मृगचर्म बिछेहुये एक आसनपर कृष्णचन्द्रजी के आसन के समीप बैठे । ५० । व राजालोग बहुत दिनोंके पीछे कृष्णचन्द्रजी को देख तृप्त न हुये बार २ देखतेही रहगये जैसे अमृत पानकरने से देवगण तृप्त नहीं होते । ५१ । पुष्प समान शोभायमान पीताम्बरधारी श्रीकृष्ण ऐसे शोभायमान थे जैसे सोने में मणि । ५२ । तब हरि को चिंतवन करते हुए सब राजा चुप होगये और कोई भी किसी से बात नहीं कर रहाथा ॥ ५३ ॥

Shri Krishn and Shakuni the king of Gandhar, protected by his own countrymen sat with his sons. Vidur the wise sat on a white seat decked with jewels spread over by a deer skin, near Shree Krishn. 50. The kings who had seen him after a long time looked at him untiringly and were not satisfied as gods from ambrosia. Handsome like flowers, wearing yellow dress, Shree Krishn looked like a jewel encased in gold. The kings sat silently meditating on Hari and none of them spoke a word with his neighbour. 53



वैशम्पायनउवाच । तेष्वासीनेषुसर्वेषु तूष्णींभूतेषुराजसु । वाक्यमभ्याददेकृ-ष्णः सदंष्ट्रोदुन्दुभिस्वनः ॥ १ ॥ जीमूतइवघर्मान्ते सर्वांसंश्रावयन्सभाम् । धृतराष्ट्-मभिप्रेक्ष्य समभाषतमाधवः ॥ २ ॥ श्रीभगवानुवाच । कुरूणांपाण्डवानांच शमःस्या-दितिभारत । अप्रणाशेनवीराणा मेतद्याचितुमागतः ॥३॥ राजन्नान्यत्प्रवक्तव्यं तव नैःश्रेयसंवचः । विदितंह्येवतेसर्वं वेदितव्यमरिन्दम ॥ ४ ॥ इदंह्यद्यकुलंश्रेष्ठं सर्वराजसु पार्थिव । श्रुतवृत्तोपसम्पन्नं सर्वैःसमुदितंगुणैः ॥ ५ ॥ कृपानुकम्पाकारुण्य मानृशं-स्यञ्चभारत । तथार्जवंक्षमासत्यं कुरुष्वेतद्विशिष्यते ॥ ६ ॥ तस्मिन्नेवंविधेराजन् क्षेमहातितिष्ठति । त्वन्निमित्तंविशेषेण नेहयुक्तमसाम्प्रतम् ॥७॥ त्वंहिवारयिताश्रेष्ठ

अध्याय ९५ ॥

वैशम्पायनने कहा कि जब वे सब राजालोग चुपहो अपने २ आसनों पर बैठे तब नगाड़ेके बाजेके समान गर्जतेहुये शब्दसे श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले ।१। जैसे वर्षाकालके प्रारम्भ में मेघ गर्जता है वैसेही गर्जतेहुये भगवान् सारी सभाको सुनाते हुये व धृतराष्ट्रजी की ओर देख उनको अपने सम्मुख कर बोले ।२। कि जिसमें इधर उधरके कोई वीर मारे न जावें व कौरवों पाण्डवोंका मेल मिलाप होजाय इस बातके सिद्ध करने के लिये हमयहां आयेहैं ।३। हे राजन् तुम्हारे कल्याणकी बातको छोड़ हमको और कुछ कथनीय नहीं है, जो कुछ हमको जनाना है वह सब आपको भी अच्छीतरह विदित है ४ हे राजन् शास्त्र पढ़ने व सदाचरण करने आदि शुभ गुणों से प्रकाशित होनेसे यह आपका कुल सब राजाओं में श्रेष्ठ गिनाजाताहै ५ व कृपा, अनुकम्पा, करुणा, अक्रूरता, सरलता, क्षमा व सत्य ये बातें कौरवों में विद्यमान हैं इसी से और राजाओंकी अपेक्षा इनमें विशेषता है ।६। हे राजन् इसप्रकार के महाकुलमें जो ऊपर के कहे गुणों से विपरीत हुआ फिर

CHAPTER XCV

Vaishampayan said that when all the kings were sitting silently on their respective seats, Shree Krishn, in a voice like that of rolling drums or like the roll of thunder which precedes the rains, addressed Dhritrashtra within hearing of all the court, saying, "I have come here to contract peace between the Kauravas and the Pandavas and to prevent bloodshed of the warriors on both sides. I have to say only that in which lies your welfare and I know as much as you do. For the reading of Shastras and for good conduct and other virtues your family is reckoned the best of all the royal families. The Kauravas are endowed with the qualities of kindness, compassion, mercy, want of cruelty, straightforwardness, forgiveness and truth

कुरूणां कुरुसत्तम । मिथ्याप्रचरतां तात बाह्येष्वाभ्यन्तरेषु च ॥८॥ ते पुत्रास्तव कौरव्य दुर्योधनपुरोगमाः । धर्मार्थौ पृष्ठतः कृत्वा प्रचरन्ति नृशंसवत् ॥९॥ अशिष्टा गतमर्यादा लोभेन हृतचेतसः । स्वेषु बन्धुषु मुख्येषु तद्वेत्थ पुरुषर्षभ । १०॥ सेयमापन्महाघोरा कुरुष्वेव समुत्थिता । उपेक्ष्यमाणा कौरव्य पृथिवीं घातयिष्यति ॥ ११ ॥ शक्या चेयं शमयितुं न चेदिच्छसि भारत । न दुष्करो ह्यत्र शमो मतो मे भरतर्षभ ॥ १२ ॥ त्वय्यधीनः शमो राजन् मयि चैव विशाम्पते । पुत्रान् स्थापय कौरव्य स्थापयिष्याम्यहं परान् ॥१३॥ आज्ञा तव हि राजेन्द्र कार्या पुत्रैः सहान्वयैः । हितं बलवदप्येषां तिष्ठतां तव शासने १४

झुककर आपके कारण विपरीतता हुईतो यह उचित नहीं है ।७। हेतात, बाहर व भीतर सब कहींसे मिथ्या आचरण करते हुये कौरवों के शिक्षक आपहीहो क्योंकि आपसबों में श्रेष्ठ व राजा हैं ।८। परन्तु औरों को कौन कहे दुर्योधनादि तुम्हारे पुत्र धर्म अर्थको पीछे कर क्रूरोंके समान कार्यकरते हैं ।९। क्योंकि ये लोग ऐसे अशिष्ट व मर्यादा रहित व लोभ ग्रस्त होगये हैं कि अपने मुख्यभाई पाण्डवों में अशिष्टतादिके काम करते हैं व यह आपभी जानते हैं ।१०। परन्तु यह बड़ीभारी महाघोर विपत्ति कौरवोंमें उठखड़ी हुई है जो इसकी उपेक्षाकी गई मिटानेकी युक्ति न कीगई तो कौरवोंको तो क्या पृथ्वीभरका नाशकर डालेगी । ११ । कदाचित् तुम कुलके नाश होनेकी इच्छा न करो तो इस विपत्तिको मिटासकेहो हमारे मतसे इसका शांत होजाना कुछ कठिन नहीं है । १२ । जो इसका शांतहोना तुम्हारे व हमारे अधीन है, इससे तुम अपने पुत्रों को शांतहोनेपर तयारकरो व हम पांडवों को करें तब शांत होजाय । १३ । आपकी आज्ञा अन्वय सहित आपके पुत्रोंको माननी चाहिये, यद्यपि ये बड़े बलवान्हैं पर आपकी आज्ञा माननेही में इनका हित है । १४ ।

---

and they possess all these more than other kings It was not well for your family to deviate from the above qualities and chiefly when it was done through your fault. You alone can prevent the Kauravas from doing ill, for you are their king and prince. Your own sons, Duryodhan and others are doing cruel deeds against dharm and wordly rules and they have become so wicked, immoral and avaricious as to harass their own brothers the Pandavas and you know this. 10. A great calamity is to befall the Kauravas which, if left to take its own course, will destroy not only them but all the world. If you desire to prevent the destruction of your family, you must avoid the calamity and in my opinion it is no difficult task. Its removals depend on you and on me you should instigate your sons to make peace and I shall do the same with the Pāndavas. Your

तवचैवहितंराजन् पाण्डवानामथोहितम् । धर्मेमथतवानस्य तवशासनकांक्षिणः १५॥ स्वयंनिष्फलमालक्ष्य संविधत्स्वविशाम्पते । सहायभूताभरतास्तवैवस्युर्जनेश्वर १६। धर्मार्थयोस्तिष्ठराजन पाण्डवैरभिरक्षितः । नहिशक्यास्तथाभूता यत्नादपिनराधिप ॥ १७ ॥ नाहिस्त्वांपाण्डवैर्जेतुं रक्ष्यमाणंमहात्मभिः । इन्द्रोपिदेवैःसहितः प्रसहेतकुतो नृपाः ॥१८॥ यत्रभीष्मश्चद्रोणश्च कृपःकर्णोविविंशतिः । अश्वत्थामाविकर्णश्च सोमदत्तोऽथबाह्लिकः ॥ १९ ॥ सैन्धवश्चकलिङ्गश्च काम्बोजश्चसुदक्षिणः । युधिष्ठिरोभीमसेनः सव्यसाचीयमौतथा ॥ २० ॥ सात्यकिश्चमहातेजा युयुत्सुश्चमहारथः । कोनु तान्विपरीतात्मा युध्येतभरतर्षभ ॥ २१ ॥ लोकस्येश्वरतांभूय शत्रुभिश्चाप्यधृष्य

व तुम्हारी आज्ञा में चलने से तुम्हारा व तुम्हारे पुत्रोंका व पाण्डवों का सबका हितहै, इस से अवश्य ये लोग तुम्हारीही आज्ञा में चलें । १५ । हे प्रजानाथ वैरको निष्फल जान आप शमही करें जो आप शान्तहोनेकी इच्छा करेंगेतो सब कौरव पाण्डव आपही के सहायक होजावेंगे । १६ । पाण्डवों से अभिरक्षितहो धर्म अर्थ दोनों में टिकिये, कदाचित् आप पाण्डवों का तिरस्कार करेंगेतो किसी यत्नसे वे तिरस्कार को नहीं प्राप्त होसक्ते । १७ । व जब तुम्हारे तेज बलको न सहसकेंगे फिर और राजाओंकी कौन गिनती है । १८ । क्योंकि जहां भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, कर्ण विविंशति, अश्वत्थामा, विकर्ण सोमदत्त, बाह्लिक, सैन्धव, कलिङ्ग, काम्बोज, सुदक्षिण, युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, महा तेजस्वी सात्यकि व महारथ, युयुत्सु, ये सबहोंगे ऐसाकौन अपने प्राणों से ऊबा है जो युद्धकरने को उद्यत होगा । २१ । जब आप कौरव व पाण्डव दोनों समेत

---

sons shuold act upon your advice, for though they are very strong, their safety lies in following your advice The safety of your sons as well as of the Pandavas lies in acting on your advice and therefore they must mind your words Knowing the evil of quarrelling, you should contrive to make peace and when you have made up your mind to do so, the Kauravas and the Pandavas will help you Your foothold on dharm as well as on worldly profits will be strong when you are protected by the Pandavas, but they will not bear insult if you wish to ill-treat them All the gods with Indra will not be able to withstand your power and glory when the Pandavas obey and protect you, for, who will dare to come forward in battle against you when you have on your side Bhishm the grandfather, Drona charya, Kripacharya, Karan, Vivinshati" Ashwathama, Vikarn, Som datta, Vahlik, Saindhau; Kaling, Kamboj, Sudakshin, Yudhishthir,

वाप् । भास्यासित्वमविग्रह्य सहित कुरुपाण्डवैः ॥ २२ ॥ तस्यवे पृथिवीपालास्त्वत् समाः पृथिवीपते । श्रेयांसश्चैवराजानः सन्धास्यन्तेपरन्तप ॥ २३ ॥ सत्त्वंपुत्रैश्च पौत्रैश्च पितृभिर्भ्रातृभिस्तथा । सुहृद्भिःसर्वतोगुप्तः सुखंशक्ष्यसिजीवितुम् ॥ २४ ॥ एतानेवपुरोधाय सत्कृत्यचयथापुरा । अखिलांभोक्ष्यसेसर्वां पृथिवींपृथिवीपते २५॥ एतैर्हिसहितःसर्वैःपाण्डवैःस्वैश्चभारत । अन्यान्विजेष्यसेशत्रूनेषःस्वार्थस्तवाखिलः२६ तैरेवोपार्जितांभूमिं भोक्ष्यसेचपरन्तप । यदिसम्पत्स्यसेपुत्रैः सहामात्यैर्नराधिप। २७ संयुगेवैमहाराज दृश्यतेसुमहान्क्षयः । क्षयेचोभयतोराजन् कंधर्ममनुपश्यसि ॥ २८ ॥ पाण्डवैर्निहतैःसंख्ये पुत्रैर्वापिमहाबलैः । यद्विन्देथा सुखं राजंस्तद्ब्रूहिभरतर्षभ २९॥

विराजमान होंगेतो एकतो लोकभर के स्वामी होजायँगे व लोक भरमें कोई भय से दिठाई भी न करसकेगा । २२ । किंतु पांडवों के तुम्हारे साथहोने से जो तुम्हारेही समान राजा लोगहैं व जो तुमसे अधिकभी हैं सब आय तुमसे मिलाप करेंगे । २३ । व तुम पुत्र पौत्र पितृव्य भाई व सुहृदों से सब ओरसे रक्षितहो सुख पूर्वक जीतेहोगे । २४ । इनलोगों को आगेकर जैसे कि अगाड़ी कियाथा, फिर सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्य भोगोगे । २५ । जब अपने सब कौरवों व पाण्डवों सहित आपहोंगे तो तुमअन्यशत्रुओंको जीतसकोगे यहीमेलकरने में तुम्हारा बड़ा स्वार्थहै । २६ । हे राजन् जो पुत्रों व अमात्योंके सारे एकत्र हुनेपावोगेतो इन्हीं पांडवोंकीही इकट्ठी कीहुई पृथ्वीकाराज्य बहुत दिनोंतक भोगोगे । २७ । हे महाराज और संग्राम करने में बड़ीभारी क्षयदिखाई देती है, फिरक्षय दोनों ओर होगी इससे क्षयहोने में आपकौन धर्म देखतेहैं । २८ । समरमें पांडवों के मारेजानेपर व महाबली अपने पुत्रों

Bhimsen, Arjun, Nakul, Sahadev, Satyaki of great glory, Yuyutsu of great valour and others. 21. You will be the master of the world and no one will be able to withstand you when Kauravas and Pandavas will join together in friendship. All the kings who are equal to or greater than you in power, will desire to join with you in friendship and you will live long in safety together with your sons, grandsons, brothers and friends and led by them you will again rule over the whole land. United with the Kauravas and the Pandavas you will be able to win other enemies in battle, peace with the Pandavas will be of great advantage to you. You will rule long over the kingdom won by the Pandavas and your sons and ministers will unite with you. There will be a great destruction on both sides in case of war; what good do you see in bloodshed? Tell me if there be any good in the destruction of the Pandavas and

शूराश्चाहितशास्त्राश्च सर्वेयुद्धाभिकांक्षिणः । पांडवास्तावकाश्चैव त्राह्मस्महतोभयात् ॥ ३० ॥ नपश्येयकृत्स्नसर्वान् पांडवानिवसंयुगे । क्षीणानुभयतःशूरान् रथिनो रथिभिर्हतान ॥ ३१ ॥ समवेताःपृथिव्यांहि राजानोराजसत्तम । अमर्षवशमापन्ना नाशयेयुरिमाः प्रजाः ॥ ३२ ॥ त्राहिराजन्निमंलोकं नश्येयुरिमाःप्रजाः । त्वयिप्रकृतिमापन्ने शेषःस्यात्कुरुनन्दन ॥ ३३ ॥ शुक्लावदान्याह्रीमन्त आर्य्याःपुण्याभिजातयः । अन्योन्यसचिवा राजंस्तान्पाहि महतोभयात् ॥ ३४ ॥ शिवेनेमेभूमिपालाः समागम्य परस्परम् । सहभुक्त्वाचपीत्वाच प्रतियान्तुयथागृहम् ॥ ३५ ॥ सुवाससःस्रग्विणश्च

केही मारजानेपर आपको जो मिले उसेबताइये क्यालाभ होगा । २९ । पांडवलोग व तुम्हारे कौरवलोग बड़ेभारी शूर वीरहैं व अस्त्रशस्त्र चलाने में बड़े निपुणहैं व सब युद्धकरने पर तैयार हैं, इससे आप इनसबों को इस बड़ीभारी भयसे बचाइये । ३० । समर होनेपर न आप फिरसब पांडवों को देखेंगे न सब कौरवों कोही देखेंगे, किंतु दोनों ओरके शूरोंको व महारथोंको शूरों व महारथोंसे मारेहुये देखोगे । ३१ । फिर जब कौरवों पांडवोंकी यह दशा होजायगी तो सबराजालोग इकट्ठे होकर व अलग २ भी इसदीन प्रजाका नाश करेंगे । ३२ । इससे हे राजन् इस मर्त्यलोककी रक्षाकीजिये, जिस में ये प्रजानष्ट नहों, जो आप अपनी प्रकृति पर आजावैंतो सब बचजायँ कोईभी न माराजाय ३३ आपके कौरव, पाण्डव शुक्ल से भी शुक्लहैं व महादानी हैं, सब लज्जावान्, श्रेष्ठ व पुण्यात्मा हैं व परस्पर एक दूसरेके मन्त्री होने के लायकहैं इससे इनदोनों को बड़ीभारी भयसे रक्षा कीजिये, ३४ जिससे ये राजालोग जो अपने प्राणदेनेपर उद्यतहैं कल्याण सहित आपस में मिलजुलकर व भोजन पानकर अपने घरको कुशलपूर्वक चलेजायँ ३५ यहांसे सुन्दर

---

in that of your own brave sons. The Pandavas as well as the Kauravas are exceedingly brave and dexterous in the use of weapons and the art of war. You should therefore save all from this great danger. 30. You will neither see all the Pandavas nor all the Kauravas after battle as warriors will be killed on both sides. During this condition of the Kauravas and Pandavas, other kings, singly or conjointly, will come forward to destroy your weakened subjects Be pleased to have mercy on the world, king, so that the people may not be destroyed. All the people can escape destruction if you do your duty. Kauravas and Pandavas are the most pure and charitable; they are bashful, best of all and good and are worthy to be the advisers of one another. Be pleased to protect them from the great danger so that these kings who are ready to lay down their lives may

सत्कृताभरतर्षभ । अपर्वश्वनिराकृत्य वैराणिच परन्तप ॥ ३६ ॥ हार्दयत्पाण्डवेष्वासीत् मात्रेसिन्नायुपः क्षये । तदेवतेभवत्वद्य सन्धत्स्वभरतर्षभ ॥ ३७ ॥ बालाविहीना:पित्राते त्वयैवपरिवर्धिताः । तानपालयथान्यायं पुत्रांश्चभरतर्षभ ॥ ३८ ॥ भवतैवहिरक्ष्यास्ते व्यसनेषुविशेषतः । मातेधर्मस्तथैवार्थो नश्येतभरतर्षभ ३९ ॥ आहुस्त्वांपाण्डवाराजन् भिवाद्यप्रसाद्यच । भवतःशासनाद्दुःख मनुभूतंसहानुगैः ४०॥ द्वादशेमानिवर्षाणि वनेनिर्व्युषितानिनः । त्रयोदशंतथाज्ञातैः सजनेपरिवत्सरम् ४१ ॥ स्थातान्‌नःसमयेतातपिता पितेतिकृतनिश्चयाः । नाहास्मसमयंतात तचनोब्राह्मणाविदुः ॥४२॥ तस्मिन्नःसमयेतिष्ठस्थितानांभरतर्षभ । नित्यंसंक्लेशिताराजन् स्वराज्यांशंलभ

सुन्दर वस्त्रपात्रें माल पहिराई जायँ, व और सब प्रकारके सत्कारहों, फिर अपना अनर्थ दूरकर व बैरछोड़ चलेजायँ ३६ जैसा कि पांडवोंका अभिप्रायहै कि किसीका नाश न होतो अच्छा है वैसाही आपकाभी अभिप्रायहो जिससे आपभी शांत होजायँ ३७ देखिये पांडवों के पिता पाण्डुजी उनलोगोंकी बाल्यावस्थाही में मृतक होगये फिर आपने पालन पोषणकर उन्हें बढ़ाया, इससे न्याय पूर्वक उनको पालिये व अपने पुत्रोंकोभी पालिये ३८ वे दोनों आपही के रक्षाकरने के योग्यहैं, इससे हे राजन् आपका धर्म व अर्थ नाश नहो ३९ आपको प्रणाम कर व आपको प्रसन्नकर पांडवोंने कहाहै कि आपकी आज्ञा से अब हमलोग बहुत दुःख पाचुके ४० देखिये १२ वर्षतकतो वनवास हमलोगोंने किया, व तेरहवांवर्ष अज्ञातवास किया उसमें औरभी अधिक दुःख पाया ४१ व यह हम लोगों ने निश्चय कर लियाथा कि अच्छा इतने दिन पीछे फिर हमारे पितृव्य जो पिताही हैं वेतो विद्यमानहीं हैं हमारा भाग हमको देहींगे इससे हम लोगोंने वह समय अच्छीतरह बिताया कुछकुतर्क नहीं किया, इसबातको सब ब्राह्मण लोग जानते हैं ४२ जो हम अपने

peacefully return to their respective houses with presents of clothes, ornaments and other good things. Let your purpose be in harmony with that of the Pandavas who desire to avoid bloodshed and to make peace. Pandu the father of the Pandavas died in their infancy and it was you who brought them up. Protect them like your sons, *for both are worthy of your protection.* *Donot let your dharm and* arth be destroyed. The Pandavas respectfully say that they have suffered great hardship by your order. 40. They suffered twelve years of exile and lived unknown throughout the thirteenth year, during which they underwent still greater hardships. They suffered all this without murmuring because they expected to receive justice at your hands. All the Brahmans know this fact. They are

शूराश्चहिकृतास्त्राश्च सर्वेयुद्धाभिकांक्षिणः । पांडवास्तावकाश्चैव तान्रक्षमहतोभयात् ॥ १० ॥ नपश्येमकुरून्सर्वान् पांडवांश्चैवसंयुगे । क्षीणानुभयतःशूरान् रथिनो रथिभिर्हतान् ॥ ११ ॥ समवेताःपृथिव्यांहि राजानोराजसत्तम । अमर्षवशमापन्ना नाशयेयुरिमाः प्रजाः ॥ १२ ॥ त्राहिराजन्निमंलोकं नश्येयुरिमाःप्रजाः । त्वयिप्रकृतिमापन्ने शेषःस्यात्कुरुनन्दन ॥ १३ ॥ शुक्लावदान्याह्रीमन्त आर्याःपुण्याभिजातयः । अन्योन्यसचिवा राजंस्तान्पाहि महतोभयात् ॥ १४ ॥ शिवेनेमेभूमिपाला समागम्य परस्परम् ।सहभुक्त्वाचपीत्वाच प्रतियान्तुयथागृहम् ॥ १५ ॥ सुवाससःस्रग्विणश्च

केही मारजानेपर आपको जो मिले उसेबताइये क्यालाभ होगा । २९ । पांडवलोग व तुम्हारे कौरवलोग बड़ेभारी शूर वीरहैं व अस्त्रशस्त्र चलाने में बड़े निपुणहैं व सब युद्धकरने पर तैयार हैं, इससे आप इनसबों को इस बड़ीभारी भयसे बचाइये । ३० । समर होनेपर न आप फिरसब पांडवों को देखेंगे न सब कौरवों कोही देखेंगे, किंतु दोनों ओरके शूरोंको व महारथोंको शूरों व महारथोंसे मारेहीहुये देखोगे । ३१ । फिर जब कौरवों पांडवोंकी यह दशा होजायगी तो सबराजालोग इकट्ठे होकर व अलग २ भी इसदिन प्रजाका नाश करेंगे । ३२ । इससे हे राजन् इस मर्त्यलोककी रक्षाकीजिये, जिस में ये प्रजानष्ट नहो, जो आप अपनी प्रकृति पर आजावैंतो सब बचजायँ कोईभी न माराजाय ३३ आपके कौरव पाण्डव शुक्ल से भी शुक्लहैं व महादानी हैं, सब लज्जावान्, श्रेष्ठ व पुण्यात्मा हैं व परस्पर एक दूसरेके मन्त्री होने के लायकहैं इससे इनदोनों को बड़ीभारी भयसे रक्षा कीजिये ३४ जिससे ये राजालोग जो अपने प्राणदेनेपर उद्यतहैं कल्याण सहित आपस में मिलजुलकर व भोजन पानकर अपने घरको कुशलपूर्वक चलेजायँ ३५ यहांसे सुन्दर

in that of your own brave sons. The Pandavas as well as the Kauravas are exceedingly brave and dexterous in the use of weapons and *the art of war. You should therefore save all from this great* danger. 30. You will neither see all the Pandavas nor all the Kauravas after battle as warriors will be killed on both sides. *During* this condition of the Kauravas and Pandavas, other kings, singly or conjointly, will come forward to destroy your weakened subjects Be pleased to have mercy on the world, king, so that the people may not be destroyed. All the people can escape destruction if you do your duty. Kauravas and Pandavas are the most pure and charitable; *they* are *bashful*, best of all and good and are worthy to be the advisers of one another. Be pleased to protect them from, the great *danger so that these kings who are ready to lay down their lives may*

सत्कृताभरतर्षभ । अमर्षञ्चनिराकृत्य वैराणिच परन्तप ॥ ३६ ॥ हार्दंयत्पाण्डवेष्वासीत् प्राप्तेस्मिन्नायुषः क्षये । तदेवतेभवत्वद्य सन्धत्स्वभरतर्षभ ॥ ३७ ॥ बालाविहीनाःपित्राते त्वयैवपरिवर्धिताः । तान्पालययथान्यायं पुत्रांश्चभरतर्षभ ॥ ३८ ॥ भवतैवहिरक्ष्यास्ते व्यसनेषुविशेषतः । मातेधर्मस्तवैवार्थो नश्येतभरतर्षभ ३९ ॥ आहुस्त्वांपाण्डवाराजन्नभिवाद्यप्रसाद्यच । भवतःशासनाद्दुःख मनुभूतंसहानुगैः ४० ॥ द्वादशेमानिवर्षाणि वनेनिर्व्युषितानिनः । त्रयोदशंतथाज्ञातैः सजनेपरिवत्सरम् ४१ ॥ स्थातानःसमयेतस्मिन् पितेतिकृतनिश्चयाः । नाहास्मसमयंतात तच्चनोब्राह्मणाविदुः ॥४२॥ तस्मिन्नःसमयेतिष्ठ स्थितानांभरतर्षभ । नित्यंसंक्लेशिताराजन स्वराज्यांशंलभ

सुन्दर वस्त्रपावें माल पहिराई जायँ, व और सब प्रकारके सत्कारहों, फिर अपना अमर्ष दूरकर व वैरछोड़ चलेजायँ ३६ जैसा कि पांडवोंका अभिप्रायहै कि किसीका नाश न होवो अच्छा है वैसाही आपकाभी अभिप्रायहो जिससे आपभी शांत होजायँ ३७ देखिये पांडवों के पिता पाण्डुजी उनलोगोंकी बाल्यावस्थाही में मृतक होगये फिर आपने पालन पोषणकर उन्हें बढ़ाया, इससे न्याय पूर्वक उनको पालिये व अपने पुत्रोंकोभी पालिये ३८ ये दोनों आपही के रक्षाकरने के योग्यहैं, इससे हे राजन् आपका धर्म व अर्थ नाश नहो ३९ आपको प्रणाम कर व आपको प्रसन्नकर पांडवोंने कहाहै कि आपकी आज्ञा से अब हमलोग बहुत दुःख पाचुके ४०, देखिये १२ वर्षतकतो वनवास हमलोगोंने किया, व तेरहवांवर्ष अज्ञातवास किया उसमें औरभी अधिक दुःख पाया ४१ व यह हम लोगों ने निश्चय कर लियाथा कि अच्छा इतने दिन पीछे फिर हमारे पितृव्य जो पिताही हैं वेतो विद्यमानहीं हैं हमारा भाग हमको देहींगे इससे हम लोगोंने यह समय अच्छीतरह बिताया कुछकुतर्क नहीं किया, इसबातको सब ब्राह्मण लोग जानते हैं ४२ सो हम अपने

---

peacefully return to their respective houses with presents of clothes, ornaments and other good things. Let your purpose be in harmony with that of the Pandavas who desire to avoid bloodshed and to make peace. Pandu the father of the Pandavas died in their infancy and it was you who brought them up. Protect them like your sons, for both are worthy of your protection. Donot let your dharm and arth be destroyed. The Pandavas respectfully say that they have suffered great hardship by your order. 40. They suffered twelve years of exile and lived unknown throughout the thirteenth year during which they underwent still greater hardships. They suffered all this without murmuring because they expected to receive justice at your hands. All the Brahmans know this fact. They are

महि ॥ ४३ ॥ त्वञ्चधर्ममर्थञ्चजानन् सम्यङ्नस्त्रातुमर्हसि । गुरुत्वंभवतिप्रेक्ष्य बहून्क्लेशा नतितिक्ष्महे ॥ ४४ ॥ समवान्मातृपितृ वदस्मासुप्रतिपद्यताम् । गुरोर्गरीयसीवृत्ति र्याचशिष्यस्यभारत ॥ ४५ ॥ वर्त्तामहेत्वयिचतां त्वञ्चवर्त्तस्वनस्तथा । पित्रास्था- पयितव्याहि वयमुत्पथमास्थिता ॥ ४६ ॥ संस्थापयपथिष्वस्मां स्तिष्ठधर्मेसुवर्त्मनि । आहुश्चेमांपरिषद पुत्रास्तेभरतर्षभ ॥ ४७ ॥ धर्मज्ञेषुसभासत्सु नेहयुक्तमसाम्प्रतम् । यत्रधर्मोह्यधर्मेण सत्यंयत्रानृतेनच ॥ ४८ ॥ हन्यतेप्रेक्षमाणानां हतास्तत्रसभासदः । विद्धोधर्मोह्यधर्मेण सभांयत्रप्रपद्यते ॥ ४९ ॥ नचास्यशल्यंकृन्तन्ति विद्धास्तत्रसभासदः । धर्मएतानारुजति यथानद्यनुकूलजान ॥५०॥ येधर्ममनुपश्यन्तस्तूष्णींध्यायन्तआसते ।

प्रणपर टिकेरहे आपभी अपने प्रणपर टिकिये अवश्य लोगोंको महाक्लेशहै इससे अपने राज्यका हिस्सा पावें ४३ आप धर्म अर्थ दोनों जानते हुये अच्छीतरह हमलोगों की रक्षा करने के योग्यहैं आपके गौरवसे हमलोगोंने बहुत दुःखसहे ४४ इससे अब आप हम लोगोंके विषय में माता पिता के समान वर्त्ताव करें, व शिष्य जैसी वृत्ति गुरुके विषय में करता है, हमलोग वैसा आपके विषयमें वर्त्तेंगे इससे आपभी गुरुकी वृत्तिका वर्त्ताव करें, हमलोग कुमार्ग में चलतेहों तो आपपिताहैं इससे हमलोगों को सुमार्ग पर स्थापित करें ४६ हमलोगों को मार्ग से बाहर न होने दीजिये, व आप अपने सुन्दर धर्ममार्ग में टिकिये, जिस में तुम्हारे पुत्र व हम पाण्डव लोग इस आपकी सभा को धर्मज्ञ सभा कहैं ४७ जिससभामें धर्मज्ञ सभासदरहें उसमें ऐसा अन्यायहोना उचित नहीं है । ४८ । क्योंकि जिससभा में धर्म अधर्म के साथ कियाजाय, व सत्य झुंठाई के साथ, वह सभा देखनेवालों का नाश करती है तो उसके सभासदतो जानों नष्टहीहुये ४९ व जिस सभा में अधर्म से बेधाहुआ धर्म होताहै सभासदलोग बाणसे छेदेजातेहैं व बाणों को काट नहीं

---

firm on their vows and you must be so on your own. They are still in great misery; be pleased to give them their share of the kingdom. Knowing dharm and arth you should receive them under your protection they have suffered a great deal on account of you. Behave with them like a parent or preceptor and they will be dutiful to you like sons or pupils and you will correct them if they are going wrong. Be firm on your dharm so that your sons as well as the Pandavas may be convinced of your justice. A court, the members of which know dharm should not decide so unjustly; for, where dharm and truth are decided with adharm and untruth the lookers on as well as the courtiers are destroyed. Where dharm is percied through by adharm, the courtiers are pierced through by arrows

तेसत्यमाहुर्धर्म्यंच न्यायञ्चभरतर्षभ ॥ ५१ ॥ शक्यंकिमन्यद्वक्तुंते दानादन्यज्जनेश्वर। ब्रुवन्तुवामहीपालाः सभायांयेसमासते ॥ ५२ ॥ धर्मार्थौसम्प्रधार्यैव यदि सत्यंब्रवीम्यहम्। प्रमुञ्चेमान्मृत्युपाशात् क्षत्रियान्पुरुषर्षभ ॥ ५३ ॥ प्रशाम्यभरतश्रेष्ठ मामन्युवशमन्वगाः। पित्र्यन्तेभ्यःप्रदायांशं पाण्डवेभ्योयथोचितम् ॥ ५४ ॥ ततःसपुत्रःसिद्धार्थो भुङ्क्ष्वभोगान्परन्तप। अजातशत्रुंजानीषे स्थितंधर्मेसतांसदा ५५ ॥ सपुत्रेत्वयिवृत्तिंच वर्त्ततेयांनराधिप। दाहितश्चनिरस्तश्च त्वामेवोपाश्रितःपुनः ॥ ५६ ॥ इन्द्रप्रस्थंत्वयैवासौ सपुत्रेणविवासितः। सतत्रनिवसन्सर्वान् वशमानीयपार्थिवान्

सक्ते. धर्म उनलोगों को ऐसे भंग करता है जैसे नदी अपने तीर के वृक्षों को भंग करती है. । ५० । हे राजन् जो पाण्डवलोग धर्म पर टिके अपने आसन पर चुप बैठे हैं उन्होंने जो कहा है सब न्याय व सत्य व धर्मही की बातकही है ।५१। हे राजन आपही कहें उनका राज्य उनको देदेने के सिवाय और आपही क्या कहसके हैं, नहीं जो कुछ और कहसकेहोतो तुम्हारी सभा में ये जो राजालोग बैठे हैं यही लोगकहें । ५२ । जो हम धर्म अर्थ दोनों को धारणकर यह सत्यही कहतेहों तो इन सब क्षत्रियों को आप मृत्युकी फांसी से छुड़ावें । ५३ । हे भरतश्रेष्ठ अब शान्तही हूजिये, क्रोधके वशीभूत न हूजिये, उनके पिताका राज्य पाण्डवों को दे दीजिये । ५४ । व उसके पीछे अपने पुत्रों के साथ अर्थ सिद्धकर नानाप्रकार के भोग भोगिये, यह तो आप जानतेही हो कि युधिष्ठिरजी सदा धर्मही पर टिके रहते हैं । ५५ । व पुत्र सहित तुममें जो उनकी वृत्ति है उसेभी आप जानते हैं देखो लाक्षाभवन में तुम्हारे पुत्रों ने उनको भस्म कराया, जुआखेलाय देशसे निकाला राज्यसे दूर करदिया तौभी वे आपकी शरण में हैं । ५६ । पुत्र सहित तुम ने हस्तिनापुर से निकाल युधिष्ठिर को इन्द्रप्रस्थ में बसाया व

---

which they cannot cut. 50, Dharm destroys them as a river destroys the trees on its bank. The Pandavas who are firm on their duty without murmuring, have made a request compatible with dharm, truth and justice. You yourself can do for them nothing better than the giving back to them of the share of their kingdom, nor, I think, will the other kings present in the court say aught against this. You will release all the Kshatryas from the bondage of death, if you think my words compatible with dharm and truth and act upon them. Be peaceful, best of Bharats, and subdue your anger. Give the Pandavas their patrimony and enjoy the good things of the world with your sons. You know well Yudhishthir's firmness on dharm and his love towards you. Your sons burnt the house of lac while

॥ ५७ ॥ त्वन्मुखानकरोद्राजन चत्वामत्यवर्त्तत । तस्यैवंवर्त्तमानस्य सौवलेनजिहीर्षता ॥ ५८ ॥ राष्ट्राणिधनधान्यञ्च प्रयुक्तःपरमोपधिः । सतामवस्थांसम्प्राप्य कृष्णांप्रेक्ष्य सभांगताम् ॥ ५९ ॥ क्षत्रधर्माद्देवयात्मा नाकम्पतयुधिष्ठिरः । अहन्तुतवतेषाञ्च श्रेय इच्छामिभारत ॥ ६० ॥ धर्मादर्थात्सुखाच्चैव माराजन्नीनशःप्रजाः । अनर्थमर्थमन्वानो ऽप्यर्थञ्चानर्थमात्मनः ॥ ६१ ॥ लोभेतिप्रसृतान्पुत्रान्निगृह्णीष्वविशाम्पते । स्थिताःशुश्रूषितुंपार्थाः स्थितायोद्धुमरिंदमाः । यत्तेपथ्यतमंराजंस्तस्मिंस्तिष्ठपरन्तप ॥ ६२ ॥

उन्होंने वहीं बसे २ सब राजाओं को अपनी वश में करलिया । ५७ । व उन सबोंको लेकर आपके सम्मुख हाजिर करादिया आपकी आज्ञाके प्रतिकूल कभी कुछ नहीं किया, इसी प्रकार तुम्हारी सेवकाई में वे बेचारे लगेरहे पर उसपर भी तुमको सन्तोष न हुआ, उनका राज्यधन लेने की इच्छा से । ५८ । शकुनि के द्वारा महाकपटका जुआ खेलवाया, सब में झूंठमूंठ जीतालिया, उस अवस्था में उन्होंने द्रौपदी की वह दुर्दशा सभा में देखी । ५९ । पर क्षत्रियों के धर्म पर टिककर महात्मा युधिष्ठिरजी ने कुछ नहीं कहा, वह जो हुआ सो हुआ अब हम तुम्हारा व उनका दोनों का कल्याण चाहते हैं ६१ अब धर्म अर्थ व सुखचाहो तो शान्त होजावो प्रजाओंका नाश वृथा न करो अब अपने अर्थ को अनर्थमान व अनर्थ को अर्थ मान । ६१ । व लोभ में फैले हुये अपने पुत्रों को रोको सब अपनेही वचन पर आरूढ़ाहैं पांडव सेवा और युद्ध करनेको उद्यत हैं जो आप चाहैं करैं चाहे शान्तिकरैं या युद्ध । ६२ । हरिके यह वचन सुन सब

---

the Pandavas were within it and sent them into exile after gambling and even now Yudhishthir is obedient to your orders. You sent him away from Hasthinapur to settle at Indraprasth. While there he subdued other kings and gave them up to you. He has never deviated from your order. In spite of their dutifulness you were not content and played with them a gambling match in order to deprive them of their kingdom and wealth and won from them deceitfully. Then they saw the disrespect of Draupadi. 59. Still they remained firm on their duty and Yudhishthir kept silent. But let bygones be bygones; I am desirous of the welfare of both parties. Make peace if you are desirous of dharm, arth and happiness and donot bring about the destruction of the people for nothing. Give up your false hopes of worldly profits and control your avaricious sons. Be firm on your word. The Pandavas are ready to fight as well as to obey, you may choose whichever you like." All the

वैशम्पायनउवाच । तद्वाक्यंपार्थिवाःसर्वे हृदयैःसमपूजयन् । नतत्रकश्चिद्वक्तुंहि वाचंमाक्रामदग्रतः ॥ ६३ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये
पञ्चनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ तस्मिन्नभिहितेवाक्ये केशवेनमहात्मना । स्तिमिताहृष्टरोमाण आसन्सर्वेसभासदः ॥ १ ॥ कश्चिदुत्तरमेतेषां वक्तुंनोत्सहतेपुमान् । इति सर्वे मनोभिस्ते चिंतयंतिस्मपार्थिवाः ॥ २ ॥ तथातेषुचसर्वेषु तूर्ष्णीभूतेषुराजसु । जामदग्न्यइदंवाक्य मब्रवीत्कुरुसंसदि ॥ ३ ॥ इमांमेसोपमांवाचं शृणुसत्यामशंकितः । तांश्रुत्वाश्रेयआदत्स्वयदिसाधिवतिमन्यसे ॥ ४ ॥ राजादम्भोद्भवोनाम सार्वभौम पुराभवत् । अखिलांबुभुजेसर्वां पृथिवीमितिनःश्रुतम् ॥ ५ ॥ सस्मानित्यंनिशा

राजाओं ने प्रशंसाकी परन्तु कोई बोल न सके और सब आह भरकर चुपरहे ६३ ॥

अध्याय ॥ ९६ ॥

वैशम्पायनजी ने कहा कि महात्मा केशव भगवान् ने जब ऐसा वचन कहातो सब सभासद लोग हर्षितहुये व सब के रोमखड़ेहुये ।१। इनलोगों में कोईभी पुरुष उत्तर नहीं देसका यह सब राजालोग अपने मनमें चिन्तना करनेलगे ।२। जब सब राजालोग यह विचार चुप होरहेतो कौरवोंकी सभामें परशुरामजी यह वचनबोले कि ।३। हे धृतराष्ट्र अशंकितहो उपमा सहित हमारी यहवाणी सुनो व उसे सुन जो अच्छीमानोतो कल्याणकी बातको ग्रहणकरो ।४। पूर्वसमयमें एक दम्भोद्भव नाम चक्रवर्ती राजाहुआ, उसने संपूर्ण पृथ्वीका राज्यभोगा यह हम ने सुनाहै ।५। वह जब रात्रि बीतजाय व प्रातःकालहोतो नित्य

---

kings praised the words of Hari but all kept silent with sighs. 63.

CHPTER XCVI

Vaishampayan said that all the courtiers were pleased to hear the words of Keshav and their hair stood on end, but none of them could give a reply. Seeing all the Kauravas silent, Parashuram spoke out from the midst of the assembly, saying, "Hear my words attentively, Dhrishtrashtra, and accept them if you see any good in them. In the days of yore there was an emperor named Dambodbhav who ruled over all the world. Every morning he inquired of Brahmans, Kshatryas and Vaishyas whether any one was better than or equal to him in prowess. He roamed over all

प्राये मातकृत्यायवीर्यवान । ब्राह्मणान्क्षत्रियांश्चैव पृच्छन्नारतेमहारथः ॥ ६ ॥ अस्तिकश्चिद्विशिष्टोवा मद्विधोवाभवेद्युधि । शूद्रोवैश्यःक्षत्रियोवा ब्राह्मणोवापिशस्त्र भृत् ॥ ७ ॥ इतिब्रुवन्नन्वचरत् सराजापृथिवीमिमाम् । दर्पेणमहतामत्तः कञ्चि- दन्यमचिंतयन् ॥ ८ ॥ तंचवैद्याअकृपणा ब्राह्मणाःसर्वतोऽभयाः । मत्स्येषन्तरा- जानं श्लाघमानंपुनःपुनः ॥ ९ ॥ निषिध्यमानोप्यसकृत् पृच्छत्येवंसवैद्विजान । अतिमानं श्रियामत्तं तमूचुर्ब्राह्मणास्तदा ॥ १० ॥ तपस्विनोमहात्मानो वेदमत्यय दर्शिनः । उदीर्यमाणंराजानं क्रोधदीप्ताद्विजातयः ॥ ११ ॥ अनेकजयिनौ संख्ये योवैपुरुषसत्तमौ । तयोस्त्वंनसमोराजन् भवितासिकदाचन ॥ १२ ॥ एवमुक्तःस राजातु पुनःपप्रच्छतान् द्विजान । क्वतौवीरौकजन्मानौ किंकर्माणौचकौचतौ ॥ १३ ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय व वैश्योंसे पूंछाकरे कि ।६। भला हमसे विशेष या हमारेसमान और कोईभी है जो हमारे सामने युद्धमें खड़ाहो, चाहेशूद्रहो वा वैश्य वा क्षत्रिय व अस्त्र धारण किये ब्राह्मणहीहो ।७। यही कहता हुआ वह मारे अहंकार के मत्त पृथ्वीपर नित्य घूमाकरे और किसी कार्य की चिन्तना न करे ।८। बार २ बड़ाई करते हुये उस राजाको, सब कहींसे अभय बड़े उत्साही विद्वान् ब्राह्मण लोगोंने रोका कि राजन् तुम ऐसा न पूंछते फिरो ।९। यद्यपि बार २ ब्राह्मणों ने उसेरोंका पर वह नित्य ब्राह्मणों से इसीप्रकार पूंछता ही रहता जब ब्राह्मणों ने जाना कि इसको बड़ामान् है व श्री के मारे मतवाला होगया है तो ब्राह्मण लोग बोले कि । १० । जो कि बड़े तपस्वी, महात्मा, वेद के विषयत्व परमेश्वर के जाननेवाले थे उनको जब बड़ाक्रोध आयातो राजासे कहनेलगे कि । ११ । हेराजन् जो दो पुरुष ऐसे हैं जिन्हों ने संग्राम में अनेक पुरुषोंको जीतलिया है उनके समान तुम कभी नहीं होसके । १२ । जब राजासे ब्राह्मणों ने ऐसा कहातो राजा फिर ब्राह्मणों

---

the world putting the same question to every one who met him and would think of nothing else in the pride of his power. Learned Brahmans advised him against doing this, but he gave no heed to their words. Thereupon knowing him to be insensible with the pride of power, the great ascetics who knew the Vedas and the Lord, said to him in great anger, "There are two persons, king, who have won many men in battle. You cannot be equal to them."12. On hearing this from the Brahmans, the king inquired of them of the whereabout of the two personages as well as about their parentage, *deeds and names and the Brahmans replied that* they knew them as the two ascetics named Nar and Narayan who had come into the world of men and whom the king should fight with. The two were

ब्राह्मणा ऊचुः ॥ नरोनारायणश्चैव तापसाविति नः श्रुतम् । आयातौमानुषेलोके ताभ्यांयुध्यस्वपार्थिव ॥ १४ ॥ श्रूयेतेतौमहात्मानौ नरनारायणावुभौ । तपोघोरमनिर्देश्यं तप्यतेगन्धमादने ॥ १५ ॥ सराजामहतींसेनां योजयित्वाषडंगिनीम् । अमृष्यमाणःसम्प्रायाद्यत्रतावपराजितौ ॥ १६ ॥ सपस्त्वाविषमंघोरं पर्वतंगन्धमादनम् । मृगयाणोन्वगच्छत्तौ तापसौवनमाश्रितौ ॥ १७ ॥ तौदृष्ट्वाक्षुत्पिपासाभ्यां कृशौधमनिसंततौ । शीतवातातपैश्चैव कर्शितौपुरुषोत्तमौ ॥ १८ ॥ अभिगम्योपसंगृह्य पर्यपृच्छदनामयम् । तमर्चित्वाफलैर्मूलै रासनेनोदकेनच ॥ १९ ॥ न्यमन्त्रयेतांराजानं किंकार्यं क्रियतामिति । ततस्तामानुपूर्वीस पुनरेवान्वकीर्त्तयत् ॥ २० ॥

ने बोला कि वे दोनों वीर कहां हैं, व उनका जन्म कहां हुआ है व उनके कर्म क्या हैं, व वे कौनहैं । १३ । यह सुन ब्राह्मण बोले कि वे दोनों नर नारायण नाम तपस्वीहैं यह हमलोगोंने सुनाहै, व मनुष्य लोकमें आगयेहैं बस तुम उन्हीं दोनोंजनों से युद्धकरो । १४ । यह सुना जाता है कि वे दोनों महात्मा नर व नारायण अतिघोर तप जिसके समान कोई दूसरा करी नहीं सक्ता गन्धमादन पर्व्वत पर तप करतेहैं । १५ । इस बातको सुन व न सहकर वह राजा बड़ीभारी षडङ्गिनी सेना इकट्ठी कर वहांगया जहां कि वे दोनों अपराजित महात्मा तपस्या करते थे । १६ । व विषम घोर गन्धमादन पर्व्वत पर जाय वह ढूंढनेलगा और २ वहां पहुंचा जहां वे दोनों महात्मा वनमें तपस्या कर रहे थे । १७ । उनदोनों महात्माओं को क्षुधापिपासा से दुर्व्वल नसें निकली हुई देख जो कि शीत वात घामसे दुर्व्वल होगये थे । १८ । व उनके समीपजाय राजाने कुशलपूंछी, तब उन दोनोंजनोंने मूल फलादि भोजन करनेके लिये व जल पीनेके लिये बैठनेके लिये आसन दिया । १९ । व फिर राजा से कहा राजन् तुम्हारा कौन कार्य हमकरें कहो, राजामूर्ख ने वही प्रश्न उनसे भी किया । २० । कि मैंने अपने बाहों से

---

then performing on mount Gandhmadan a severe asceticism as none else could. Hearing this and not being able to bear any longer, he collected a very large army and went to the place where the two unconquerable great men were performing asceticism, He searched for them over the hill and at last reached the place where they were performing asceticism. Seeing them lean there suffering the hardships of hunger and thirst as well as of heat and cold, the king went to them and inquired of their health. They offered him fruits and roots to eat, water to drink and a good seat to sit on and asked the purpose of their mission. But the foolish king put the same question to them. 20. "I have won all the land with the strength of my arms," said he,

बाहुभ्यामिमितामूमिर्निहताःसर्वशत्रवः । भवद्भयांयुद्धमाकांक्षन्नुपयातोस्मिपर्वतम् ॥ २१ ॥ आतिथ्यं दीयतामेतत् कांक्षितंमेचिरंप्रति । नरनारायणावूचतुः अपेतक्रो धलोभोय माश्रमोराजसत्तम ॥ २२ ॥ नह्यस्मिन्नाश्रमेयुद्धं कुतःशस्त्रंकुतोमृजुः । अ न्यत्रयुद्धमाकांक्ष्व बहवःक्षत्रियाःक्षितौ ॥ २३ ॥ रामउवाच ॥ उच्यमानस्तथा पि-स तु भूयएवाभ्यभाषत । पुनःपुनःक्षम्यमाणः सान्त्व्यमानश्चभारत ॥ २४ ॥ दंभो द्भवोयुद्ध मिच्छन्नाह्वयत्येवतापसौ । ततोनरस्त्विषीकाणां मुष्टिमादायभारत २५ ॥ अब्रवीदेहियुध्यस्व युद्धकामुकक्षत्रिय । सर्वशस्त्राणिचादत्स्व योजयस्वचवाहिनीम् ॥ २६ ॥ अहंहि ते विनेष्यामि युद्धश्रद्धा मितःपरम् । दम्भोद्भव उवाच ॥ यद्येत

पृथ्वी जीतली, व सब शत्रुओं को मारडाला अब आप दोनोंजनों से युद्ध करने की इच्छा से इस पर्व्वतपर आयाहूं । २१ । बस यही हमारा आतिथ्य दीजिये क्योंकि इस बातकी इच्छा हम बहुत दिनों से किये हैं । २२ । यह सुन नर नारायणजी बोले कि हे राजसत्तम यह आश्रम क्रोध लोभरहित है इस से इस आश्रम पर युद्ध नहीं होसका क्योंकि कहां यह पाल आश्रम है इससे तुम और कहीं जाय युद्धकी इच्छाकरो पृथ्वीपर बहुत से क्षत्रिय लोगहैं । २३ । परशुरामजी बोले कि नर नारायणजी ने ऐसा कहा तौ तोभी उस ने फिर युद्धही करने को कहा कोनकहे बार २ उन्होंने समझाया बुझाया व कहा कि यहां सर्व्वथा युद्ध अनुचितही है पर उसने न माना बार २ हठसे युद्धही युद्ध करता गया । २४ । व कहा कि जब आप हमसे युद्धकरो, तब उनमें से नरजी मुंठाभर सिरकियां ले । २५ । बोले कि हे युद्धकरनेकी इच्छा किये क्षत्रिय यहां आव युद्धकर, अपने सब शस्त्रलेले व सेना इकट्ठी कर । २६ । हम आज से तेरी युद्धकी श्रद्धादूर कर

"and have killed all my enemies. I have come to fight with you on this mountain: This is my greatest desire as well as the best hospitality *which you can offer me.*" *On hearing this, Nar and Narayan said,* "This place is free from anger and avarice and therefore you can have no fighting here. We have no weapons here at this rude abode and therefore you may go and seek some where else for fighting men. The earth is full of kshatryas." Parashuram said that in spite of their repeatedly telling him that the place was not proper for the purpose of fighting, the king would not hear them and would be satisfied with nothing else except fighting. He challenged them again and again to fight. Thereupon Nar took up a handful of reeds and said, "Make your weapons and army ready to fight with me, you who are so desirous of fighting; I shall satisfy your craving for war

दंस्त्रमस्माद्य युक्तंतापसमन्यसे ॥ २७ ॥ एतेनापित्वयायोत्स्ये युद्धार्थीह्यहमागतः । रामउवाच ॥ इत्युक्त्वाशरवर्षेण सर्वतःसमवाकिरत् ॥ २८ ॥ दम्भोद्भवस्तापसन्तं जिघांसुःसहसैनिकः । तस्यतानस्यतोघोरा निपूनपरतनुच्छिदः ॥ २९ ॥ कदर्थी कृत्यसमुनि रिषीकाभिःसमार्पयत् । ततोस्मैपासृजत्घोर मैषीकमपराजितः ॥ ३० ॥ अस्त्रमप्रतिसन्धेयं तदद्भुतमिवाभवत् । तेषामक्षीणिकर्णांश्च नासिकाश्चैवमायया ३१ निमित्तवेधीसमुनि रिषीकाभिःसमार्पयत् । सदृष्ट्वाश्वेतमाकाश मिषीकाभिःसमाचितम् ॥ ३२ ॥ पादयोन्यपतद्राजा स्वास्तिमेस्त्विविचाब्रवीत् । तमब्रवीन्नरोराजन शरण्यःशरणैषिणाम् ॥ ३३ ॥ ब्रह्मण्योभवधर्मात्मा माचस्मैवंपुनःकृथाः । नैतादृक्

देंगे, जिसमें फिर न किसी से तू युद्ध करने को कहै यह सुन दम्भोद्भव राजा बोला कि हे तापस जो यही अस्त्र हमलोगों से युद्ध करने के योग्य मानतेहो । २७ । तो अच्छा इसी से हम तुमसे युद्ध करेंगे हमतो युद्धही की इच्छा से तुम्हारे पास आयेहींहैं परशुराम जी बोले कि इतना कह दम्भोद्भवने चारोंओर से तपस्वी के ऊपर बाणोंकी वर्षा करदी व उसकी सेनाने भी मारे बाणों के आच्छादित करदिया । २९ । राजाके व उसकी सेना वालों के जितने बाणथे जो कि शत्रुओं के शरीरों के काटने वालेथे उन सबोंका अनादरकर तपस्वीजी ने उन्हीं सिरकियों से सैन्य सहित राजाको मार आच्छादित करदिया । ३० । व एकही एक सिरकी सेना भरे के मारी उस में बड़ीही अद्भुत बातहुई । ३१ । कि सेनाभरे के नेत्र कान नासिका सब काटडाले किसी के नेत्रादिकाको न रहे । ३२ । व आकाश भरमें सब सिरकीही सिरकी दिखाई देनेलगीं इस दशाको देख राजा दम्भोद्भव नरजी के पैरोंपर गिर कहने लगा कि महाराज अब मेरा कल्याण कीजिये व मेरे अपराध क्षमा कीजिये । ३३ । तब शरणागतों के रक्षक नरजी बोले कि अच्छा अब जा ब्रह्मण्यहो व धर्मात्माहो

---

and you will no longer challenge any one else to fight." On hearing this, the king replied, "If, ascetic, you have only these weapons to fight against me, I am ready before you." Parashuram said that at this Dambhodbhav showered a flight of arrows from all sides on the ascetic and his army covered the whole field with their missiles. But the ascetic disregarded all those swift arrows of the king and his army and beat down the king and his retinue with the handful of reeds. 30. With a single reed he did wonders. He cut down the noses, ears and eyes of the whole army and the sky looked as if it was covered with reeds. Seeing this state of affairs, king Dambodbhav fell at the feet of Nar and said, "Have mercy on me

पुरुषोराजन क्षत्रधर्ममनुस्मरन ॥ १४ ॥ मनसानृपशार्दूल भवेत्परपुरंजयः । माच दर्पसमाविष्टः क्षेप्सोःकाश्चित्कथञ्चन ॥ १५ ॥ अल्पीयासं विशिष्टंवा तचेराजन समाहितम् । कृतप्रज्ञोवीतलोभो निरहंकारआत्मवान् ॥ १६ ॥ दांतःक्षांतोमृदुःसौम्यः प्रजाःपालयपार्थिव । मास्मभूयःक्षिपःकञ्चि दविदित्वाबलाबलम् ॥ १७ ॥ अनुज्ञातःस्वस्तिगच्छ मैवंभूयःसमाचरेः । कुशलंब्राह्मणानपृच्छे रावयोर्वचनान्नृपम् ॥ १८ ॥ ततोराजातयोःपादा वभिवाद्यमहात्मनोः । प्रत्याजगामस्वपुरं धर्मं चैवाचरन्भृशम् ॥ ३९ ॥ सुमहच्चापितत्कर्म यन्नरेण कृतंपुरा । ततोगुणैःसुबहुभिःश्रेष्ठो नारायणोभवत् ॥ ४० ॥ तस्माद्यावद्धनुःश्रेष्ठे गाण्डीवेस्त्वंनयुज्यते । तावत्त्वंमानमुत्सृज्य गच्छराजन्धनंजयम् ॥ ४१ ॥ काकुदींकंशुकंनाक मक्षिसन्तर्जनं तथा ।

ऐसा अब कभी किसी के संग न करना । ३४ हे नृप शार्दूल ऐसा पुरुष क्षत्रियों के धर्मको स्मरण कर कोई नहीं होता जो अपने मनही से सबको जीतले । ३५ । इससे अहंकारमें आय अब किसी से ऐसे वचन न कहना जैसे हमसे कहेहैं, चाहे कोई छोटाहो या बड़ाहो किसी से ऐसा न कहना । ३६ । अबतो व प्रज्ञावान्हो लोभरहित, अहंकारहीन, व आत्मज्ञानीहो, इन्द्रियोंको जीत, क्षमाकर, कोमल स्वभावहो, व सौम्यस्वभावहो, प्रजापालन करो । ३७ । अब बिना बल अबल जान लिये किसीको कभी न छेड़ना । ३८ । अच्छा जाव आज्ञा है कल्याणहो ऐसा कभी किसी के साथ न करना हमदोनों जनोंकी ओरसे जो कोई ब्राह्मण तुमको मिलें उनसे कुशल पूंछाकरना । ३९ । इतनासुन उन दोनोंजन नर नारायणजी के चरणों में प्रणामकर राजा दम्भोद्भव वहांसे गया व उस दिनसे धर्म ही करनेलगा । ४० । इससे जो कर्म नर जीनेकिया वह महाकर्म है व नरसे बहुतों गुण

---

and forgive my faults." To this Nar the protector of refugees gave the following reply, "*Go and pay respect to Brahmans. Be firm on* your duty and do not behave like this with any one else. A person knowing the duties of kshtryas should not be so proud as to think others conquered without actually conquering them. You should therefore not boast of your power before the young or old. Go and be wise. Be free from pride and avarice. Know yourself, have control over your organs and be forgiving, good-natured and noble minded. Protect your subjects and never tease any one without knowing his strength and weakness. *Go in peace and be careful for the future. For our sake you will ask the welfare of every Brahman you will* meet with." Having heard this, the king bowed at the feet of both Nar and Narayan and having taken leave of them passed the rest of his

सन्तानंनर्तकं घोरमास्यपादकमष्टमम् ॥४२॥ एतैर्विद्धाःसर्वएव मरणंयान्तिमानवाः। कामक्रोधौलोभमोहौ मदमानौतथैवच ॥ ४३ ॥ मात्सर्याहंकृतीचैव क्रमादेतउदाहृताः। उन्मत्ताश्वविचेष्टन्ते नष्टसंज्ञाविचेतसः ॥४४॥ स्वपंतिचप्लवन्तेच छर्दयन्तिचमानवाः। मूत्रयन्तेचसततं रुदन्तिचहसन्तिच ॥४५॥ निर्मातासर्वलोकानां मीश्वरःसर्वकर्मवित्। यस्यनारायणोबन्धु रर्जुनोदुःसहोयुधि ॥ ४६ ॥ कस्तमुत्सहतेजेतुं त्रिषुलोकेषुभारत। वीरंकपिध्वजंजिष्णुं यस्यनास्तिसमोयुधि ॥४७॥ असंख्येयागुणाःपार्थेतद्विशिष्टोजनार्दनः। त्वमेवभूयोजानासि कुन्तीपुत्रंधनञ्जयम् ॥४८॥ नरनारायणौयौतौ तावेवार्जुनकेशवौ। विजानीहिमहाराज प्रवीरौपुरुषोत्तमौ ४९ यद्येतदेवंजानासि नचमामभिशङ्कसे

अधिक नारायणमेंहैं ।४१। इससे हे राजन् धृतराष्ट्र जबतक गाण्डीवपर अर्जुन बाण न चढ़ावैं उसके प्रथमही मानछोड़ तुम अर्जुनके शरणको जाव । ४२ । इनसब काकुदीक आदि ८अस्त्रोंके लगने से सब मनुष्य मरिजावेहैं, व काम क्रोध लोभ मोह मद मान मात्सर्य अहंकार ये सब क्रमसे उदाहरणहैं ये सब इन अस्त्रों के लगनेसे होतेहैं । ४३ । व इन्हींके लगने से लोग उन्मत्तहो लेटने लगतेहैं, व कभी सोने लगते कभी ऊपरको उछलते व कभी हाकने लगते कभी मूत्र पुरीषोत्सर्ग करते, कभी रोते कभी हँसते । ४५ । व फिर सबलोकों के बनाने वाले व सब के ईश्वर सब कर्म जाननेवाले नारायण कृष्णचन्द्रभी जिनके बन्धु हैं ऐसे अर्जुन युद्ध में दुस्सह हैं । ४६ । हे धृतराष्ट्र तीनों लोकों में उन अर्जुनजी को कौन जीतसक्ता है इन कपिध्वज वीर जीतने के स्वभाववाले अर्जुनजी के समान युद्धमें कोई नहीं है । ४७ । अर्जुन में असंख्यगुणहैं उनसे विशेष गुण जनार्दनही में हैं और किसी में नहीं व तुमभी राजन् कुन्ती के पुत्र अर्जुनजी को जानते हो । ४८ । व जो नर व नारायण बताये थे वही अर्जुन व केशव हैं हे महाराज इस बातको अच्छीतरह जानो । ४९ । जो ऐसाजानते हो तो हमारी बात

---

days in doing justice. 40. The deed done by Nar was very great, but Narayan possessed qualities which were thousands of times greater than those of Nar. Subdue your pride, Dhritrashtra, and seek the protection of Arjun before his putting arrows to the Gandiv. The eight missiles, kakudik and others, destroy mankind, producing desires, anger, avarice, insensibility, pride and deceit by their touch, causing insensiblity, sleep, jumping, weeping and laughter among the victims. No one withstand Arjun who has Narayan or Krishn the creator and lord of the world for his kinsman. None in the three worlds can conquer Arjun. Arjun the great conquerer who has a monkey on his standard, has no match in battle. He possesses numerous qualities such as are possessed by none else except Janardan and you know Arjun the son of Kunti well. The Nar and Narayan formerly alluded

आर्य्यामतिंसमास्थाय शाम्यभारतपाण्डवैः ॥ ५० ॥ अथचेन्मन्यसेश्रेयो नमेभेदोभव दिति। मशाम्यभरतश्रेष्ठ माचयुद्धेमनःकृथाः ॥ ५१ ॥ भवताभ्यकुरुश्रेष्ठ कुलंबहुमतंभुवि तत्तथैवास्तुभद्रंते स्वार्थमेवोपचिन्तय ॥ ५२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि दंभोद्भवोपाख्याने पण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

वैशम्पायनउवाच। जामदग्न्यवचःश्रुत्वा कण्वोपिभगवानृषिः। दुर्योधनमिदं वाक्य मब्रवीत्कुरुसंसदि ॥ १ ॥ कण्वउवाच। अक्षयश्चाव्ययश्चैव ब्रह्मालोकपितामहः। तथैवभगवन्तौतो नरनारायणावृषी ॥२॥ आदित्यानांहिसर्वेषां विष्णुरेकःसनातनः। अजय्यश्चाव्ययश्चैव शाश्वतःप्रभुरीश्वरः ॥ ३ ॥ निमित्तमरणाश्चान्ये चन्द्रसूर्यौमहीजल

में शंका न करो श्रेष्ठमति पर टिककर पाण्डवों से मिलापकरलो। ५० , जो अपना कल्याण मानतेहो तो इसमें भेद न समझो बस शान्तही होजाव युद्ध करनेको मन न करो। ५१ । हे कुरुश्रेष्ठ भूतल में आपके कुलकी बड़ी प्रशंसा है इस से वह वैसाही बनारहे तो अच्छा है अपना स्वार्थ अच्छीतरह बिचारो युद्ध न करो। ५२ ।

अध्याय ९७ ॥

वैशम्पायनजी ने कहा कि परशुरामजी के वचन सुन भगवान कण्वऋषि भी कौरवों कीसभामें दुर्योधन से यह वचनबोले। १ । कि अक्षय व अव्ययलोक के पितामह ब्रह्माजी हैं वैसेही, भगवान नर व नारायण दोनों ऋषि हैं। २ । जैसे बारह आदित्यों में विष्णु सनातनहैं, इनका न कभी नाश होता है न इन में कुछ कमी पड़ती है, ये निरन्तर बनेरहते व सब के प्रभु ईश्वरहैं। ३ । व और सब कारण पाय मरजातेहैं, चाहे चन्द्रमाहों व सूर्य

---

to by me are Arjun and Keshav. Knowing all this you should not hesitate to believe my words. Take my good advice and make peace with the Pandavas. 50. If you desire your welfare, be sure to make peace and donot engage in war on any account. Best of Kurus, your family is much praised all over the earth. Donot tarnish its fame by your engagement in useless warfare."52.

CHAPTER XCVII

Vaishampayan said that having heard the words of Parashuram, Kanwa Rishi addressed Duryodhan as follows:—"Brahma is the eternal father of this world and so are Nar and Narayan the two rishis. They are the lords of all and eternal like Vishnu one of the twelve Adityas, while others like the moon, the sun, the earth, water,

म् । वायुरग्निस्तथाकाशं ग्रहास्तारागणास्तथा ॥ ४ ॥ तेचक्षयान्तेजगतो हित्वालोक-त्रयंसदा । क्षयंगच्छन्तिवैसर्वे सृज्यन्तेचपुनःपुनः ॥ ५ ॥ मुहूर्त्तमरणास्त्वन्ये मानुषा मृगपक्षिणः । तैर्य्यग्योन्यश्चयेचान्ये जीवलोकचरास्तथा ॥ ६ ॥ भूयिष्ठेनतुराजानः श्रियंभुक्त्वायुषःक्षये । तरुणाःप्रतिपद्यन्ते भोक्तुंसुकृतदुष्कृते ॥ ७ ॥ सभवानधर्म्मपुत्रेण शमंकर्त्तुमिहार्हति । पाण्डवाःकुरवश्चैव पालयन्तुवसुन्धराम् ॥ ८ ॥ बलवानहमित्येव नमन्तव्यंसुयोधन । बलवन्तोबलिभ्योहि दृश्यन्तेपुरुषर्षभ ॥ ९ ॥ नबलंबलिनांमध्ये बलंभवतिकौरव । बलवंतोहितेसर्वे पाण्डवादेवविक्रमाः ॥ १० ॥ अत्राप्युदाहरंतीम मितिहासंपुरातनम् । मातलेर्दातुकामस्य कन्यांमृगयतोवरम् ॥ ११ ॥ मतलि

पृथ्वी जल वायु अग्नि आकाश यह तारागण । ४ । ये सब जगत् के प्रलयके समय तीनों लोकों को छोड़ नष्टहोजावेहैं फिर जगत्की रचनाके साथ बनाये जाते हैं । ५ । व अन्य मनुष्य मृग पक्षीतो मुहूर्त्तमात्र में मरजावेहैं, इसीतरह औरभी चर अचर जीवजन्तु मरते रहतेहैं । ६ । बनों राजालोग बहुधा राज्य श्री भोगकर आयुर्दाय के अन्त में मरतेहैं व जबतक युवावस्थाको प्राप्तरहते तबतक अपने किये पाप पुण्य भोगते रहतेहैं इससे तुम्हारी अभी युवावस्था है यह भोग करनेका समय है युद्ध करके क्यों प्राण देतेहो । ७ । इससे दुर्योधन आप युधिष्ठिरजी के संग मिलापही करने के योग्यहैं पाण्डव व कौरव दोनों मिलकर पृथ्वीका पालनकरें । ८ । हे सुयोधन तुम यह कभी न मानना कि हम बलवान हैं क्योंकि बलवानों के संग रहने से लोग बलवान् दिखाई देने लगतेहैं । ९ । हे कौरव जिनलोगों के शारीरक बल अधिक है उनके सामने सेना का बल काम नहीं करता, फिर पांडव सबके सब बलवान्हैं क्योंकि उनके देवताओंके समान बल है । १० । इस विषय में एक यह पुराना इतिहास कहा जाता है, जो कि अपनी कन्या का विवाह करने के लिये इन्द्रके सारथि मातलिका है । ११ । त्रिलोकीके राजा इन्द्रजी के सारथिका मातलि

air fire, sky and stars die out at Pralaya and are created again with the world. Human beings, quadrupeds and birds as well as other moveables and immoveables die very day. Out of these, kings often enjoy the wealth during the latter portion of their life while during the former portion of their life, they undergo the results of their own merits and sins. You should enjoy life in your youth and not to give it up in war. You should make peace with Yudhishthir so that both Kauravas and Pandavas may rule the earth together. Donot be vain of your power, Duryodhan; for people look powerful while they are in the society of the strong. Those who possess bodily strength more than others, donot care much for the army. The Pandavas are strong like gods. I0. There is an old story which bears on the fact. It relates to Matali the chariot driver of Indra. Matali

म् । दृष्ट्वात्र वरं कञ्चिद्रोचयिष्याव मातले ॥ ५ ॥ अवगाह्य ततो भूमिमुभौ मातलिनारदौ । ददृशाते महात्मानौ लोकपालमपाम्पतिम् ॥ ६ ॥ तत्र देवर्षिसदृशीं पूजां स प्राप नारदः । महेन्द्रसदृशीं चैव मातलिः प्रत्यपद्यत ॥ ७ ॥ तावुभौ प्रीतमनसौ कार्यवन्तौ निवेद्य ह । वरुणेनाभ्यनुज्ञातौ नागलोकं विचेरतुः ॥ ८ ॥ नारदः सर्वभूतानामन्तर्भूमिनिवासिनाम् । जानंश्चकार व्याख्यानं यन्तुः सर्वमशेषतः ॥ ९ ॥ नारद उवाच ॥ दृष्टस्ते वरुणः सूत पुत्रपौत्रसमावृतः । पश्योदकपतेः स्थानं सर्वतोभद्रमृद्धिमत् ॥ १० ॥ एष पुत्रो महाप्राज्ञो वरुणस्येह गोपतेः । एष वै शीलवृत्तेन शौचेन चाविशिष्यते ॥ ११ ॥ एषोऽस्य पुत्रोऽभिमतः पुष्करः पुष्करेक्षणः । रूपवान्दर्शनीयश्च सोमपुत्र्या वृतः पतिः ॥ १२ ॥ ज्योत्स्नाकालीति यामाहुर्द्वितीयां रूपतः श्रियम् ।

है । ४ । हम सब पृथ्वीतल तुमको दिखाते हुये बताते जाँयगे व देखकर दोनोंजने कोई न कोई वर पसन्दही करेंगे । ५ । इतना कह भूलोकहोते हुये इसके नीचे वरुणलोक में जायदोनों महात्माओंने वरुणजीको देखा । ६ । वहां नारदजीनेतो देवर्षिके योग्य पूजापाई व मातलिने इन्द्रके सम्बन्धियों कीसी पाई । ७ । पर ये दोनों कार्य्य के लिये जातेथे इससे वरुणजीसे अपना कार्य्य कह व उनकी भी आज्ञाले नागलोकको चलेगये । ८ । पर नारदजी तो पातालके निवासियोंके भी सब वृत्तान्त जानतेहैं, इससे मातलि से सब वहां के रहने-वालों का व्याख्यान करते गये । ९ । व वरुणलोकभी अच्छी तरह देख मातलि से कहने लगे कि मातलि पुत्र पौत्रादि सहित वरुणजीको तुमने देखा, अब सर्व ओर से कल्याणरूप व सब ऋद्धि युक्त वरुणजीका स्थान देखो । १० । जलपति वरुणजी का यहमहाप्राज्ञ पुत्र है जोकि शील व वृत्त व शौचके कारण सबसे विशेषहै । ११ । व इसके कमल समान तो नेत्रहैं व सबको अतिप्रियहै व पुष्कर इसका नामहै, रूपवान् होनेके कारण ऐसा दर्शनी-यहै कि चन्द्रमाकी कन्याने अपने लिये इसे वर अंगीकार कियाहै । १२ । व दूसरी लो-

together; for, I too am going to see Varun. In our way I shall show you the nether regions and we shall select a bridegroom for your daughter. They passed through the world of men on their way to Varun. Narad was worshipped there as a divine rishi and Matali as relation of Indra. They told Varun the purpose of their mission and with his permission went to the region of Naga. Narad who know all about the nether world, informed Matali all that was worth knowing about the inhabitants of that region. Having seen the region of Varun he said to Matali, " You have seen Varun with his sons and grandsons, now see his palace full of wealth. 10. This is the wise son of Varun the lord of waters. He is the best of all in good manners and purity. His eyes are like lotus and he is dear to all. His name is Pushkar and he is so beautiful and good looking

अदित्याश्चैवयःपुत्रो ज्येष्ठःश्रेष्ठःकृतःस्मृतः ॥ १३ ॥ भवनंपश्यवारुण्यं यदेतत्सर्वकांचनम् । यत्प्राप्यसुरतांप्राप्ताः सुराःसुरपतेःसखे ॥ १४ ॥ एतानिहृतराज्यानां दैतेयानांस्मप्रातले । दीप्यमानानिदृश्यन्ते सर्वप्रहरणान्युत ॥ १५ ॥ अक्षयाणिकिलैतानि विवर्त्तन्तेस्मप्रातले । अनुभावप्रयुक्तानि सुरैरवजितानिह ॥ १६ ॥ अत्र राक्षसजात्यश्च दैत्यजातयश्चप्रातले । दिव्यप्रहरणाश्चासन् पूर्वदैवतनिर्मिताः ॥१७॥ अग्निरेषमहार्चिष्मान् जागर्त्तिवारुणेह्रदे । वैष्णवंचक्रमाविद्धं विधूमेनहविष्मता १८ एषगाण्डीवमयश्चापो लोकसंहार संभृतः । रक्ष्यतेदैवतैर्नित्यं यतस्तद्गाण्डिवंधनुः १९ एषकृत्येसदृत्पन्ने तत्तद्धारयतेबलम् । सहस्रशतसंख्येन प्राणेनसततंध्रुवः ॥ २० ॥

मयुकी उपेष्ठा ज्योत्स्ना काली नामहै जोकि रूप से लक्ष्मीहीके समान है इसने अदिति के पुत्र सूर्यजीको अपना श्रेष्ठ पति कियाहै । १३ । व यह जो सब सुवर्णहीसे बनाहै वारुणी मदिराका भवन है इसी के कारण देवताओं का एक सुरनामहै व उसका अर्थ यह है कि सुरा कहे मदिरा विद्यमान हो जिसके उनको सुर कहतेहैं । १४ । व हे मातलिजी ये सबराज्य हरेहुये दैत्यों के दीप्यमान आयुधहैं दिखाई देतेहैं । १५ । ये आयुध अक्षयहैं कभी चुकते नहीं क्योंकि इनमें ऐसा प्रभाव है कि चलानेवाले के पास फिर२ लौटआतेहैं, इससे देवता लोग किसीसे हारते नहीं हैं । १६ । व इन्हीं आयुधों से दैत्यों की बहुतसी जातें व राक्षसों की देवताओं ने पूर्व कालमें जीतीहैं, क्योंकि देवतालोग इन्हीं दिव्य आयुधों को धारण करते हैं । १७ । व वरुणजी के कुण्डमें जो यह अग्नि वर्त्तमान है सदा इस में ज्वाला निकला करतीहैं, यहां तक कि यह ऐसा प्रज्वलित रहता कि विष्णु भगवान् के चक्र का भी तेज इसपर नहीं चलसका । १८ । व यह गाण्डीवमय अर्थात् गैंडे शृङ्ग से धनुष बनाहै इसके चढ़ाने से लोगों का संहार होजाता है, इससे देवतालोग इसकी रक्षा सदा किये रहते हैं, व इसीसे गाण्डीव नाम धनुष बनाहै । १९ । यह गाण्डीव धनुष कार्य के

that the daughter of Chandra has selected him for her husband. The second daughter of Chandra named Jyotsnakali is beautiful like Lakshmi and has made the son of Aditya her husband. This palace made of gold is the wine cellar of Varun and from the possession of this wine or sura the gods are called surs. These are the glorious weapons of Daityas won in fighting. These weapons are inexhaustible as they return to the person by whom they are discharged and it is for this reason that the gods are never vanquished. With these weapons the gods won many battles and destroyed innumerable asuras in former days. This fire in the tank of Varun never ceases to burn and is more glorious than the discus of Vishnu. This bow which is made of the horn of a rhinoceros is the destroyer of the world. It is guarded by gods and the bow Gandiv is made out of

अत्रास्थानिशिरास्तेव रक्षोबन्धुपुराजसु । सृष्टःप्रथमतश्चण्डो ब्रह्मणाब्रह्मवादिना २१ एतच्छत्रंनरेंद्राणां महच्चक्रेणभाषितम् । पुत्राःसलिलराजस्य धारयन्तिमहोदयम् २२ एतत्सलिलराजस्य छत्रंछत्रगृहेस्थितम् । सर्वतःसलिलंशीतं जीमूतइववर्षति २३ ॥ एतच्छत्रात्परिभ्रष्टं सलिलंसोमनिर्मलम् । तमसामूर्छितंभाति येननार्च्छतिदर्शनम् ॥ २४ ॥ बहून्यद्भुतरूपाणि द्रष्टव्यानीहमातले । तवकार्योपरोधस्तुतस्मात्गच्छावमाचिरम् ॥ २५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे अष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

अनुसार बलको धारण करता है, सहस्रों व सैकड़ों लक्षों धनुषों का बल इसमें है वरन पड़ा कामपड़े तो अनन्त बलहोजाता है । २० । व यह धनुष जो लोग अभेद्य हैं उनका भी भेदन करता है, जो राजालोग राक्षसोंके तुल्य बल रखते उनके ऊपरभी जब,चढ़ाया जाता मारही डारता है, इसी विचार से प्रथम सृष्टि में ब्रह्मवादी ब्रह्माजी ने इसे बनाया है । २१ । यह शस्त्र राजाओं के बड़ेभारी चक्रसे भाषितहै व इसे वरुणजी के पुत्र सदा धारण करते हैं । २२ । व यह वरुणजी का छत्र है जो छत्र गृह में स्थापितहै यह सब ओरसे शीतल जल मेघके समान बरसाया करताहै । २३ । इस छत्र से जो जलबरसा करता है यद्यपि चन्द्रमा के समान निर्मलहोता है पर अन्धकारसे ऐसा आच्छादितरहताहै जिससे किसी को दिखाई नहीं देता । २४ । यह बड़े दर्शनीय और अद्भुत हैं परन्तु आप के काम में देरहोती है इस से चलो यहांसे चलें २५ ॥

---

it. The latter assumes as much strength as the occasion requires; it possesses the strength of thousands of bows and its strength is unlimited at the time of need. 20. This bow can cut down the strongest men and can kill those kings who possess the strength of rakshases. It was for this very purpose that Brahma made it. It can cope with all the kings and is wielded by the son of Varun. Yonder is Varun's umbrella which drops cold water like rain on all sides. The water from it is as pure as the rays of the moon; but being constantly surrounded by darkness it can be seen by none. There are numerous wonderful things like these but your business urges us to go on.'



नारदउवाच । एतत्तुनागलोकस्य नाभिस्थानेस्थितंपुरम् । पातालमितिविख्या तं दैत्यदानवसेवितम् ॥१॥ इदमद्भिःसमंप्राप्ता येकेचिज्जङ्गमाः । प्रविशन्तोमहाना दं नदन्तिभयपीडिताः ॥ २ ॥ अत्रासुरोग्निःसततं दीप्यतेवारिभोजनः । व्यापारेण धृतात्मानं निबद्धंसमबुध्यत ॥ ३ ॥ अत्रामृतंसुरैःपीत्वा निहितंनिहतारिभिः । अतः सोमस्यहानिश्च वृद्धिश्चैवमदृश्यते ॥ ४ ॥ अत्रादित्योहयशिराः कालेपर्वणिपर्वणि । उत्तिष्ठतिसुवर्णाख्यं वाग्भिरापूरयन्जगत् ५ यस्मादलंसमस्तास्ताः पतन्तिजलमूर्तयः । तस्मात्पातालमित्येव ख्यायतेपुरमुत्तमम् ॥६॥ ऐरावणोस्मात्सलिलं गृहीत्वाजगतो

अध्याय ९९ ॥

नारदजी बोले कि मातलि यह पुर नागलोकके नाभिस्थानमें स्थित है, व पाताल इसका नामहै दानव दैत्यही इसमें रहतेहैं । १ । यहां जो प्राणी कभी जलके वेगमें पड़कर चले आतेहैं वे सारे भयके पीडितहो चिल्लाने व पुकारने लगतेहैं । २ । यहां असुररूप अग्नि सदा जल पान करता हुआ प्रकाशित रहताहै, व देवताओंने उसे ऐसा बन्धन में डाल रक्खाहै कि वह मर्य्यादा से बाहर नहीं होता क्योंकि अपने को बँधुआ समझताहै । ३ । इसी पाताल में टिककर देवगण चन्द्रमा का अमृत पान किया करतेहैं इसीसे कृष्णपक्ष में प्रतिदिन एक २ कला कम हुआ करती व शुक्ल पक्षमें बढ़तीहै यही चन्द्रमाकी हानि व वृद्धि दिखाई देतीहै । ४ । व यहीं अदितिके पुत्र हयग्रीव भगवान् समयपर पर्व्व २ में वेदपाठियों की वेदध्वनि सुननेके लिये व बढ़ानेके लिये प्रकट होतेहैं । ५ । जिससे कि यहां चन्द्रादि सब जलहीके रूपसे पतित होतेहैं इससे इस पुरका उत्तम पाताल नामहै । ६ । व इसी पातालसे ऐरावण नाम मेघ जगतके हितके लिये जल ले-

CHAPTER XCIX

"This is the centre of the reg'on of Nagas," said Narad to Matali "it is known as the nether world and is inhabited by daityas and danavas. Those who are brought here by flowing waters, shriek with terror. Here Agni in the shape of Asurs is always drinking water and burns brightly; but the gods have so captivated him that he can not break through his bounds, so concious of his captivity is he. Here the gods drink the ambrosia dropped from the moon and it is for this reason that she wanes gradually in the dark fortnight and increases in the lighted one. It is here that Bhagwan Hayagriv the son of Aditi appears to hear the *Vedic hymns and to* encourage them. This place in called Patal (falling) because all beings fall here like water. The cloud named Airavan takes water

हित । मेघेष्वागुश्चतेशीत यन्महेन्द्रःप्रवर्षति ॥ ७ ॥ अत्रनानाविधाकारा स्तिमयोनैकरूपिण । अप्सुसोमप्रभांपीत्वा वसन्तिजलचारिणः ॥ ८ ॥ अत्रसूर्य्यांशुभिर्भिन्नाः पातालतलमाश्रिताः । मृताहिदिवसेसूत पुनर्जीवन्तिवैनिशि ॥ ९ ॥ उदयन्नित्यशश्चात्र चन्द्रमारश्मिबाहुभिः । अमृतस्पृश्यसस्पर्शात् सञ्जीवयतिदेहिनः ॥ १० ॥ अत्रतेधर्मनिरता बद्धाःकालेनपीडिताः । दैतेयानिवसन्तिस्म वासवेनहृतश्रियः ॥ ११ ॥ अत्रभूतपतिर्नाम सर्वभूतमहेश्वर । भूतयेसर्वभूताना मचरत्तपउत्तमम् ॥ १२ ॥ अत्रगोव्रतिनोविप्राः स्वाध्यायाम्नायकर्शिता । त्यक्तप्राणाजितस्वर्गा निवसन्तिमहर्षयः ॥ १३ ॥ यत्रतत्रशयोनित्य येनकेनचिदाश्रित । येनकेनचिदाच्छन्नः सगोव्रतइहोच्य

जाता है व सब बादलोंमें भर देताहै फिर इन्द्रकी आज्ञा से बादल बरसतेहैं । ७ । व यहां अनेक रूपके सौ२ योजनके व इससे बड़े भी तिमि आदि नामों से प्रसिद्ध मत्स्य रहते हैं, व यहां चन्द्रमाके किरण पीकर जल में बिचरा करतेहैं । ८ । यहां से अन्य स्थानपर जाय नारदजी फिर मातलिसे बोले कि हे सूत, यहां सूर्य के किरणोंसे भिन्नहो पातालके नीचेके भागमें आय हमलोगोंकी रात्रिमें जानो मृतकही होकर व फिर हमलोगोंके दिनमें सब प्राणी फिरजी उठतेहैं । ९ । व यहां चन्द्रमा सदा उदय बनेरहते हैं व अमृतका स्पर्शकराय सब प्राणियों को जिलाते हैं । १० । व यहीं जिन दैत्यों की राज्यलक्ष्मी इन्द्रने छीनली है वे कालसे पीड़ितहोकरभी अपने धर्म में टिके हुये बसे रहते हैं । ११ । व यहीं सब प्राणियों के महेश्वर भूतपति भगवान ने सब प्राणियों के ऐश्वर्य्य के लिये उत्तम तप किया है । १२ । व यहीं वेदाध्ययन करने से दुर्बलहो गोव्रती महर्षिलोग प्राण त्याग स्वर्गको जीतेहुये बसतेहैं । १३ । गोव्रत ऋषि वह कहलाते हैं जो कभी दोरात एक जगह नहीं

---

from here to distribute it throughout the world It fills other *clouds with water and they fall as rain* by the order of Indra Timi and other very large fishes live here and float over water drinking the moon beams' Futher on Narad said to Matali the chariot driver ' Deprived of the rays of the sun, people come here during our night after death and come again to life when it is again day with us The moon always shines here and keeps all the beings alive by her ambrosia 'Here live the daityas who have been deprived of their wealth and kingdom by Indra and are still firm on their duty. Here Bhutpati the lord of all beings performed severe asceticism for the good of all Here live the rishis who are lean on account of the study of the Vedas and who have won the paradise after death They lead the life of a *gobrit* which means that they never sleep fo

ते ॥ १४ ॥ ऐरावणोनागराजो वामनःकुमुदोञ्जनः । प्रसूताःसुप्रतीकस्य वंशेवारणसत्तमाः ॥१५॥ पश्ययद्यत्रते कश्चिद्रोचतेगुणतोवरः । वरयिष्यामितंगत्वा यत्नमास्थाय मातले ॥ १६ ॥ अण्डमेतज्जलेन्यस्तं दीप्यमानमिवश्रिया । आप्रजानांनिसर्गाद्वै नोद्भिद्यतिनसर्पति ॥ १७ ॥ नास्यजातिंनिसर्गंवा कथ्यमानंश्रृणोमिवै । पितरंमातरञ्चापि नास्यजानातिकश्चन ॥१८॥ अतःकिलमहानग्नि रन्तकालेसमुत्थितः । धक्ष्यतेमातलेसर्वं त्रैलोक्यंसचराचरम् ॥ १९ ॥ मातलिस्त्वब्रवीच्छ्रुत्वा नारदस्याथभाषितम् । नमेत्ररोचतेकश्चिदन्यतोव्रजमाचिरम् ॥ २० ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे ऊनशततमोऽध्यायः ९९ ॥

रहते जो मिलताहै सोखावे और पहरते हैं । १४ । व ऐरावण, गजराज, बामन, कुमुद, व अञ्जननाम गजराज सुप्रतीक नाम हस्तिराजके वंशमें यहीं उत्पन्नहुयेहैं । १५ । हे मातलिजी अब यहां देखो जो कोई वर तुमको रुचै उसके पास जाय यत्न पूर्वक उसको अङ्गीकार करावें । १६ । व यहीं इसी जलमें शोभासे प्रकाशित अण्ड परमेश्वरने स्थापित किया है जब से प्रजाओंकी उत्पत्तिहुई है तबसे यहीं स्थितहै न कभी फूटताहै न ठौरपर से चलता है । १७ । इस अंडकी जाति व उत्पत्ति हमने किसी से कहते नहीं सुनी, व इसके पिता माताकोभी कोई नहीं जानता, क्योंकि इसके प्रथमतो कुछ उत्पन्नही न था । १८ । व इसी अण्डसे प्रलयके समय महाअग्नि उत्पन्नहोता है वह चराचर तीनोंलोकों को भस्मकर देताहै । १९ । नारदके यह वचन सुनकर मातलिने कहा कि हमको इनमें से कोईभी नहीं रुचता चलो और कहीं चलें ॥ २० ॥

---

any one place for two nights consecutively and eat and wear what they get. Airavan, Baman, *Kumud* and Anjan of the *family* of Supratik the king of elephants, were born here. Look here for a bridegroom for your daughter, Matali. We shall go and request him to accept your daughter in marriage. Here the Lord has stablished the exceedingly glorious egg which remains here stationary, without breaking, from the beginning of the world. I have heard from none about the production of this egg, nor has any one told me about its father or mother, for there is none older than this egg. The great fire comes out of it at the time of Pralaya and consumes all the moveables and immoveables." Having heard these words of Narad, Matali said, "I can select none of the people here. Let us go elsewhere."20.

नारदउवाच । हिरण्यपुरमित्येतत् ख्यातंपुरवरंमहत् । दैत्यानांदानवानाञ्च माया शतविचारिणाम् ॥१॥ अनल्पेनप्रयत्नेन निर्मितंविश्वकर्मणा । मयेनमनसासृष्टं पाताल तलमाश्रितम् ॥ २ ॥ अत्रमायासहस्राणि विकुर्वाणा महौजसः । दानवानिवसन्तिस्म शूरादत्तवराःपुरा ॥ ३ ॥ नैतेशक्रेणनान्येन यमेनवरुणेनवा । शक्यन्तेवशमानेतुं त-थैवधनदेनच ॥ ४ ॥ असुराःकालखञ्जाश्च तथाविष्णुपदोद्भवाः । नैर्ऋतायातुधानाश्च ब्रह्मपादोद्भवाश्चये ॥ ५ ॥ दंष्ट्रिणोभीमवेगाश्च वातवेगपराक्रमाः । मायावीर्य्यो पसम्पन्ना निवसन्त्यत्रमातले ॥ ६ ॥ निवातकवचानाम दानवायुद्धदुर्मदाः । जाना सियथाचशक्रो नैतानशक्नोतिबाधितुम् ॥ ७ ॥ बहुशोमातलेत्वञ्च तवपुत्रश्चगोमुखः ।

अध्याय १०० ॥

नारदजीने कहा कि यह सैकड़ों सहस्रोंमाया जाननेवाले दैत्यों व दानवोंका अति उत्तम हिरण्यपुरनाम स्थान है । १ । इसे विश्वकर्मा ने बड़े प्रयत्न से बनाया है, व मयदानवने पाताल में आय इसे फिर अपने मनसे बनायाहै । २ । यहां बड़े पराक्रमी व सहस्रोंमाया जाननेवाले शूर वीर व वरदानपाये दानव दैत्य बहुत दिनों से बसतेहैं । ३ । इन दानवों व दैत्यों को न इन्द्र अपनी वशमें करसक्ते हैं न औरही कोई यम, वरुण, व कुबेरही करसक्तेहैं । ४ । व यहीं कालखंजनाम असुर रहते हैं जो कि श्रीविष्णु भगवान् के चरणों से उत्पन्नहुयेहैं, व और नैर्ऋतयातुधानभी रहतेहैं जोकि ब्रह्माजीके चरणों से उत्पन्नहुयेहैं । ५ । व औरभी बहुतसे बड़े २ दांतवाले भयंकर वेगयुक्त व पवन वेग के समान पराक्रमी, माया वीर्यसे उत्पन्न दैत्यगण बसतेहैं । ६ । व युद्धमें महादुर्मद निवात कवचनाम दानवभी यहीं बसतेहैं, उनको तुम जानतेहीहो कि इन्द्र जिसप्रकार उन्हें बाधित

CHAPTER C

"This is Hiranyapur inhabited by hundreds and thousands of Daityas and Danavas who know magical arts," Said Narad, "It was made by Vishwakarma and Maya with great labour. It is inhabited by thousands of Danavas and Daityas who know magic and are brave and strong with the boons which they have got long since. Neither Indra nor Yam, Varun or Kuver can conquer them. The Asurs known as kalkhanjes live here. They were born of the feet of Vishnu. It is also inhabited by Nairits and Yatudhans who were born of the feet of of Brahma and by many other Daityas having long teeth and great velocity like that of the wind. The great warriors known as Nivat kavaches also live here and you know that

निर्भग्नोदेवराजश्च सहपुत्रःशचीपतिः ॥ ८ ॥ पश्यवेश्मानिरौक्ममाणि मातले राजतानिच । कर्मणाविधियुक्तेन युक्तान्युपगतानिच ॥ ९ ॥ वैदूर्य्यमणिचित्राणि प्रवालरुचिराणिच । अर्कस्फटिकशुभ्राणि वज्रसारोज्ज्वलानिच ॥ १० ॥ पार्थिवानीवचाभान्ति पद्मरागमयानिच । शैलानीवचदृश्यन्ते दारवाणीवचाप्युत ॥ ११ ॥ सूर्य्यरूपाणिचाभान्ति दीप्ताग्निसदृशानिच । मणिजालविचित्राणि प्रांशूनिनिबिडानिच ॥१२॥ नैतानिशक्यंनिर्देष्टुं रूपतोद्रव्यतस्तथा । गुणतश्चैवसिद्धानि प्रमाणगुणवन्तिच ॥ १३ ॥ आक्रीडानपश्यदैत्यानां तथैवशयनान्युत । रत्नवन्तिमहार्हाणि भाजनान्यासनानिच ॥ १४ ॥ जलदाभांस्तथा शैलांस्तोयप्रस्रवणानिच । कामपुष्पफलांश्चापि पादपान्कामचारिणः ॥ १५ ॥ मातलेकश्चिदत्रापि रुचिरस्तेवरोभवेत् ।

नहीं कर सके । ७ । व बहुत बार तुम व तुम्हारा पुत्र गोमुख व जयन्त सहित देवराज इनके सामने से भाग खड़ेहुयेहो । ८ । हे मातलिजी देखो कैसे २ सोने व चांदीके अद्भुत२ मन्दिर यहांबनेहैं व सब विधिपूर्वक बनायेगये हैं इससे सब समयों में सुखदायी है । ९ । व सब वैदूर्य्यमणि से चित्र विचित्र बनेहैं, व मूंगों से रुचिरहैं सूर्य्यमणि व स्फटिकमणि के समान उजले हैं, व हीराके सारसे भी श्वेतरंगकेहैं । १० । व पानी इनके ऊपर पद्मराग मणिके समान झलझलाताहै, कोई २ शिलामय व कोई२ काठोंसे बनेसे दिखाई देते हैं । ११ । व कोई २ सूर्य्य के रूपसे शोभितहोते कोई २ प्रज्वलित अग्निके तुल्य, व सब मणि समूहों से विचित्र इनमें धूलिका कहीं नामभी नहीं सुनाई देता । १२ । इनकी उपमा रूपसे गुणसे व धनसे किसी से नहीं देसक्ते क्योंकि इनके समान इन्हींमें गुणहैं । १३ । अब दैत्योंकी क्रीड़ाके व शयन करने के रत्न युक्त बड़े मोलके स्थान व नाना प्रकार के बर्तन आसन देखो । १४ । पर्वत सब यहांके बादलों के रंगकेहैं, व सबोंसे जलके झरने झरते हैं वृक्ष यहांके सब समयों में फूल फल पल्लवयुक्त बने रहतेहैं, व सब

---

even Indra cannot conquer them. You and your sons Gomukh and Jayant have often fled with Indra from before them. See, Matali, how beautiful are the wonderful palaces made of gold and silver. They are furnished with the requirements of every season. They are studded here and there with jewels and coral; they sparkle like crystal in the sun and are whiter than diamonds. 10. Water shines over them like the jewel known as Padmrag. Some are made of stone and others of wood. Some sparkle like the sun others like fire or jewels. There is no trace of dust here. They are not to be matched in beauty, quality or wealth. See the pleasure houses and rest houses of Daityas studded with jewels. The mountains here

अपनान्यां दिशमुर्गच्छावयदि मन्यसे ॥ १६ ॥ मातलिस्त्वब्रवीदेनं भाषमाणं तथाविधम् दर्वेषेनैवमकार्यं विमिथत्रिदिवौकसाम् ॥ १७ ॥ नित्यानुषक्त वैराहि भ्रातरो देवदानवा । परपक्षगसम्बन्ध रोचयिष्याम्यहं कथम् ॥ १८ ॥ अन्यत्रसाधुगच्छाव द्रष्टुनार्हामिदानवान् । जानामितवचात्मानं हिंसात्मकमनं तथा ॥ १९ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे शततमोऽध्यायः १०० ॥

नारदउवाच । अयलोकः सुपर्णानां पक्षिणांपन्नगाशिनाम् । विक्रमेगमनेभारे, नैषामस्ति परिश्रमः ॥ १ ॥ वैनतेयसुतैः सूत षड्भिस्ततमिदंकुलम् । सुमुखनसुनाम्नाच सुनेत्रेणसुवर्चसा ॥ २ ॥ सुरुचापक्षिराजेन सुबलेनचमातले । वर्द्धितानिप्रसूत्यावै

जैसा चाहते वैसा रूप धारण करलेतेहैं । १५ । हे मातलिजी भला यहां कोई वर तुम को प्रसन्नहुआ व नहीं जो न प्रसन्नहो तो चलो पृथ्वीकी ओर किसी दिशाको चलें । १६ । ऐसा कहते हुये नारदजी से मातलिजी बोले कि नारदजी यहांतो हमारा कुछभी काम नहीं चलसक्ता क्योंकि ये सबतो देवताओंके बैरी हैं । १७ । देवता और दानव दोनों भाई होकरभी नित्य वैर करतेहैं इसलिये यह हमारे पक्षके नहीं हैं हे देवर्षि और कहीं चलो इन हिंसायुक्त आत्माओंसे विवाहकर के क्या हर्षहोगा । १९ ।

अध्याय ॥ १०१ ॥

नारदजी बोले कि मातलिजी यह सर्पोंके खाने वाले गरुडनाम पक्षियोंका है, इन को विक्रम करने व चलनेमें व भारलादनेमें कुछभी परिश्रम नहीं करना पड़ता । १ । यह कुल गरुडजी के ६ पुत्रों से व्याप्त रहताहै, उनके पुत्रोंके नाम यहहैं, सुमुख, सुनाम सुनेत्र, सुवर्चस, । २ । व सुरुच, व सुबल, ये सब विनताके कुल के कर्त्ता गरुडों से

are like clouds and abound in cataracts The trees bear foliage and fruits of every season and are seen in every conceivable colour Can you select any bridegroom here ? If not, let us go in some other direction ' But Matali replied, "My work is not here among the enemies of gods and Asurs, for, although they are the sons of the same father they are enemies of one another You should not look for a bridegroom among these danavas who are cruel by nature. Let us go elsewhere "19

CHAPTER CI

" Yonder is the country inhabited by serpent eater garurs who are never tired of carrying heavy burdens and doing hard work." said Narad to Matali, "These are the families sprung up from the six sons of Garur named Sumukh Sunam, Sunetra. Subarchas, Suruch

विनताकुलकर्तृभिः ॥ ३ ॥ पक्षिराजाभिजात्यानां सहस्राणिशतानिच । कश्यपस्यततोवंशे ज्ञातिभूतिविवर्द्धनैः ॥ ४ ॥ सर्वेह्येतेश्रियायुक्ताः सर्वेश्रीवत्सलक्षणाः । सर्वेश्रियमभीप्सन्तो धारयन्तिवलान्युत ॥ ५ ॥ कर्मणाक्षत्रियाश्चैते निर्घृणाभोगिभोजिनः । ज्ञातिसंक्षयकर्तृत्वाद् ब्राह्मण्यंनलभन्तिवै ॥ ६ ॥ नामानिचैषांवक्ष्यामियथाप्राधान्यतःशृणु । मातलेश्लाघ्यमेतद्धि कुलंविष्णुपरिग्रहम् ॥ ७ ॥ दैवतंविष्णुरेतेषां विष्णुरेवंपरायणम् । हृदिचैषांसदा विष्णुर्विष्णुरेवसदागतिः ॥८॥ सुवर्णचूडोनागाशी दारुणश्चण्डतुण्डकः । अनिलश्चानलश्चैव विशालाक्षोथकुण्डली ॥ ९ ॥ पङ्कजिद्वज्रविष्कम्भो वैनतेयोथवामनः । वातवेगो दिशाचक्षुर्निमेषोऽनिमिषस्तथा ॥ १० ॥ त्रिरावःसप्तरावश्च वाल्मीकिर्द्वीपकस्तथा । दैत्यद्वीपःसरिद्वीपः सारस पद्मकेतनः ११-

---

अति वेगवानहैं । ३ । इनकी जातिके ग्यारहसौ और हैं ये सब कश्यप ऋषिहीके ऐश्वर्य बढ़ाने वालेहैं । ४ । ये सबशोभायुक्तहैं व सबके श्रीविष्णुजीका लक्षण होताहै, व सब शोभाहीकी इच्छाकिये बलको धारण करतेहैं । ५ । ये सब कर्मसे क्षत्रियहैं, क्योंकि सब क्षत्रियोंके समान निर्दयी होतेहैं इसीसे सर्पोंको पकड़ २ खाजातेहैं, अपने भाई बंधु सर्पोंको खाजानेके कारण ब्राह्मणता को कभी नहीं प्राप्तहोते ६ इन में जो २ प्रधानहैं उनके नाम तुमसे बताते हैं, इनकाकुल विष्णु भगवान्के ग्रहण करनेसे प्रशंसा के योग्यहै इस से कहतेहैं७इन लोगोंके विष्णुहीदेवताहैं, व विष्णुही इनके परायणहैं, व इनके हृदयमें सदा विष्णुहीनिवासकरतेहैं व विष्णुही इनकी सदागतिहैं ८ सुवर्णचूड,नागाशी,दारुण,चण्डतुण्डक, अनिल,अनल,विशालाक्ष,कुण्डली ९ कम्पाजित्,वज्रविष्कम्भ,वैनतेय,वामन,वातवेग, दिशाचक्षु,निमिष,अनिमिष । १० । त्रिवार,सप्तवार,वाल्मीकि,द्वीपक,दैत्यद्वीपक,परिद्वीप,सारस,

---

and Subal. These are Vinata's descendants of great velocity. They are eleven hundred in number and increase the greatness of Kashyap. They are beautiful to look at and each and every individual of them bears the mark of Shree Krishn. They are all beautiful and brave like Kshatrys; for like them, they are cruel by nature and devour serpents. From eating their own brothers the serpents they cannot rank with Brahmans. The names of the principal garurs are given below. Their family is celebrated on account of their being devoted to Vishnu *who is worshipped by them and they are protected by him.* Vishnu always resides in their hearts and is their *refuge.* Their names are:—Subarnchur, Nagashi, Darun, Chandtundak, Anil, Anal Vishalaksh. Kundali, Kamjit, Vajrabishkambh, Vainateya, Baman, Batveg, Dishachakshu, Nimish, Animish. 10. Trivar, Saptvar,

सुमुखश्चित्रकेतुश्च चित्रबर्हस्तथानघः । मेघहृत्कुमुदोदक्षः सर्पान्तःसोमभोजनः १२॥ गुरुभारःकपोतश्च सूर्यनेत्रश्चिरान्तकः । विष्णुधर्माकुमारश्च परिबर्होहरिस्तथा ॥१३॥ सुस्वरोमधुपर्कश्च हेमवर्णस्तथैवच । मलयोमातरिश्वाच निशाकरदिवाकरौ ॥ १४ ॥ एतेप्रदेशमात्रेण मयोक्तागरुडात्मजाः । प्राधान्यतस्तेयशसा कीर्तिताःप्राणतश्चये ॥ १५ ॥ यद्यत्रनरुचिःकाचि देहिगच्छावपातले । तंनयिष्यामिदेशंत्वां वरंयत्रो-पलप्स्यते १६ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे
एकाधिकशततमोऽध्यायः १०१ ॥

पद्मकेतन ।११। सुमुख,चित्रकेतु,चित्रबर्ह,अनघ,मेघहृत, कुमुद, दक्ष,सर्पान्त,सोमभोजन, । १२ । गुरुभार, कपोत, सूर्यनेत्र, चिरान्तक, विष्णुधर्मा, कुमार, परिबर्ह, हरि । १३ । सुस्वर, मधुपर्क, हेमवर्ण, मलय, मातरिश्वा, निशाकर व दिवाकर । १४ । ये प्रकरण वशसे हमने गरुड के पुत्र गिनाये, जोकि यशसे व प्राणसे प्रधानहैं । १५ । जो इनमें आपकी रुचि नहीं है तो आइये वहां चलें जहां तुम अपनी कन्याके योग्य वरपावोगे १६ ।

Valmiki, Dipak, Daityadwipak, Paridwip, Saras, Padmketan, Sumukh, Chitraketu, Chitravarsh, Anagh, meshehrit, Kumud, Daksh, Sarpant, Sombhojan, Gurubhar, Kapot, Suryanetra, Chirantak, Vishnudharma, Kumar, Parivarh, Hari, Suswar, Madhupark, Hemvarn, Malaya,.Matarishwa, Nishakar and Divakar. These are the chief descendants of gurur. I have named them because they came in our way; but if you have no interest in them, we shall go to some other place where you can find a bridegroom for your daughter." 16.



नारदउवाच । इदंरसातलंनाम सप्तमंपृथिवीतलम् । यत्रास्तेसुरभिर्माता गवाम मृतसम्भवा ॥ १ ॥ क्षरन्तीसततंक्षीरं पृथिवीसारसम्भवम् । षण्णांरसानांसारेण रस मेकमनुत्तमम् ॥ २ ॥ अमृतेनाभितृप्तस्य सारमुद्गिरतःपुरा । पितामहस्यवदना दुदति ष्ठदनिन्दिता ॥ ३ ॥ यस्याःक्षीरस्यधाराया निपतन्त्यामहीतले । ह्रदःकृतःक्षीरनिधिः पवित्रंपरमुच्यते ॥ ४ ॥ पुष्पितस्येवफेनेन पर्यन्तमनुवेष्टितम् । पिबन्तोनिवसन्त्यत्र फेनपामुनिसत्तमाः ॥ ५ ॥ फेनपानामतेख्याताः फेनाहाराश्चमातले । उग्रेतपसिवर्त न्ते येषांबिभ्यतिदेवताः ॥ ६ ॥ अस्याश्चतस्रोधेन्वोऽन्या दिक्षुसर्वासुमातले । निवस न्तिदिशांपाल्यो धारयन्त्योदिशःस्मृताः ॥ ७ ॥ पूर्वांदिशंधारयते सुरूपानामसौरभी दक्षिणांहंसिकानाम धारयत्यपरांदिशम् ॥ ८ ॥ पश्चिमावारुणीदिक्च धार्यतेवै

अध्याय ॥ १०२ ॥

नारदजीने कहा कि यह रसातलनाम पृथ्वी से नीचे सातवां लोकहै जहां कि गाइयों की माता अमृतसे उत्पन्न सुरभी रहती है । १ । व छवों रसों के सारसेभी उत्तम व पृथ्वी के सारसे उत्पन्न दूध सदा उससे चुआ करताहै । २ । यह सुरभी अमृत पानकर तृप्त हुये ब्रह्माजी के मुखसे सारांश गिरा उससे उत्पन्नहुई है । ३ । व इसी के दुग्धकी धारा पृथ्वीपर गिरी उसीका कुण्ड क्षीरसागरहै जोकि परमपवित्र कहाताहै । ४ । व उस कुण्ड के निकट मुनिलोग बैठेरहतेहैं जो फेना निकलताहै वे पियाकरते इससे उनका फेनपानाम पड़ा है । ५ । हे मातलिजी उन फेनपा नाम ऋषियोंके फेनही आहारहै वे लोग ऐसे उम्र तपमें टिकेहैं उनसे देवतालोग भय मानतेहैं । ६ । इस सुरभी से चार सुरभियां और उत्पन्न हुईहैं जो कि सब दिशाओं में बसतीहैं, व वही चारों दिशाओं का पालन करतीहैं इससे उनकी स्वामिनी कहलातीहैं ७ उनमें जो पूर्वदिशाको धारणकरती है उसका सुरूपासौरभी नामहै, व जो दक्षिणदिशाको धारणकरतीहै उसका हंसिका नामहै ।८। व सुभद्रानाम सौरभी पश्चिम

CHAPTER CII

" This is Rasatal," said Narad, " the seventh region, beneath the earth, where Surbhi the outcome of ambrosia resides. From her drops milk which is better than the six tasteful things and other produce of the earth. Surbhi was born of the surplus of ambrosia which Brahma had drunk to his satisfaction. A stream of her milk which dropped down on earth from her is famous as the ocean of milk of great holiness. Munis sit on the banks of this tank and drink the scum which rises above it. They are hence called Phenpas. They live upon the foam and are the terror of gods on account of their severe asceticism. Surbhi has given birth to *four others of the same* name who stay in the four directions and protect the world. The one that lives in the east is called Surupa-Surabhi; that of the south *is*

सुभद्रया। महानुभावयानित्यं मातलेविश्वरूपया ॥ ९ ॥ सर्वकामदुघानामधेनुर्धारयतेदिशम्। उत्तरांमातले धर्म्यातथैलविलसंज्ञिताम् ॥ १० ॥ आसान्तुपयसामिश्रं पयोनिर्मथ्यसागरे। मन्थानंमन्दरंकृत्वा देवैरसुरसंहितैः ॥ ११ ॥ उद्धृतावारुणी लक्ष्मीरमृतञ्चापिमातले। उच्चैःश्रवाश्वराजो मणिरत्नञ्चकौस्तुभम् ॥ १२ ॥ सुधाहारेषुचसुधां स्वधाभोजिषुचस्वधाम्। अमृतञ्चामृताशेषु सुरभीक्षरतेपयः १३॥ अत्रगाथापुरागीता रसातलनिवासिभिः । पौराणीश्रूयतेलोके गीयतेयाबुधैर्भिः ॥ १४ ॥ ननागलोके नस्वर्गे न नविमानेत्रिपिष्टपे। परिवासःसुखस्तादृकरसातल तलेयथा ॥ १५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे
द्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२ ॥

दिशाको धारण करती है, यह पश्चिम दिशा वरुणजीकी है, इसकुभद्राका महानुभाव है, व विश्वरूपाभी इसीका नामहै। ९। व उत्तर दिशाको सर्वकाम दुघा नाम धेनु धारण करती है, इस उत्तरदिशाका ऐलविलाभी नाम है। १०। इन्हीं सबोंका दुग्ध मिलाय क्षीरसागरमें मन्दराचलको मथानी बनाय देवता व दानवोंने मथा था। ११। तब क्षीर सागरसे वारुणी मदिरा देवी, लक्ष्मीजी निकली थीं, व अमृतभी निकलाथा, व उच्चैःश्रवा नाम अश्वराज निकला, व मणियों में श्रेष्ठ कौस्तुभमणि। १२। व सुधाहारी सर्पों के लिये सुधा निकली, व पितरों के लिये स्वधा निकली क्योंकि वे लोग बिना स्वधाके भोजनही नहीं करते, व देवताओं के लिये अमृत निकला, व कामधेनुनाम एकगायभी निकली जो देवताओं को दुग्धदेती है। १३। रसातलके निवासियों ने एक पुरानी गाथा गाई है जोकि पण्डितोंकी गाई हुई है व पुराणकी है ऐसी सुनीजाती है। १४। नागलोक और सुरलोकमें विमान पर चढ़ने से ऐसा सुख नहीं मिलता जैसा रसातल में मिलता है ॥ १५ ॥

---

named Hansika; Subhadra resides in the west where Varun has his sway and is also known as Vishwarupa and Sarvakamdudha, also known as Ailvila, protects the North. 10. The milk of all these was mixed with the water of the Ocean when it was churned with Mandarachal by the gods and danavas. The outcomes of the churning were Varuni the goddess of wine, the goddess Lakshmi, ambrosia, *Uchaishrawa the prince of horses, nectar for serpents*, swadha for pitris, ambrosia for gods and Kamdhenu the cow which supplies milk to gods. 'A learned man has turned a story into verse which describes this region as follows—"There is not so much pleasure to those who *ride celestial cars in the region of* [illegible] gods as to the people of Rasatal."15.

नारद उवाच । इयंभोगवतीनाम पुरीवासुकिपालिता । यादृशीदेवराजस्यपुरी वर्यामरावती ॥ १ ॥ एषशेषःस्थितोनागो येनेयंधार्यतेसदा । तपसालोकमुख्येन प्रभावसहितामही ॥ २ ॥ श्वेताचलनिभाकारो दिव्याभरणभूषितः । सहस्रंधारय-न्मूर्ध्ना ज्वालाजिह्वोमहाबलः ॥ ३ ॥ इहनानाविधाकारा नानाविधविभूषणाः । सुरसायाःसुतानागा निवसन्तिगतव्यथाः ॥ ४ ॥ मणिस्वस्तिकचक्रांकाः कमण्डलुक-लक्षणाः । सहस्रसंख्याबलिनः सर्वेरौद्राःस्वभावतः ॥ ५ ॥ सहस्रशिरसःकेचित् केचित्पञ्चशताननाः शतशीर्षास्तथाकेचित् केचित्त्रिशिरसोऽपिच ॥ ६ ॥ द्विपञ्च शिरसःकेचित् केचित्सप्तमुखास्तथा । महाभोगामहाकायाः पर्वताभोगभोगिनः ॥७॥

अध्याय ॥ १०३ ॥

नारदजीने कहा कि यह वासुकि नाम नागराजकी पालित भोगवती नाम पुरी है, जैसे इन्द्रकी पुरी अमरावती सब पुरियों में श्रेष्ठ है वैसीही यह नीचेकी सब पुरियों में श्रेष्ठ है । १ । व देखो ये शेषनाम नागराजजी बैठे हैं जोकि अपने तपोबल से प्रभाव युक्त इतनी बड़ी पृथ्वी को अपने शिरपर धारणकियेहैं । २ । इनका स्वरूप श्वेताचलके आकारका है, व सदा दिव्य भूषणों से भूषित रहतेहैं, व शिर इनके सहस्रहैं, व इनकी जीभों से ज्वालाओंकी माला निकला करतीहैं व ये महाबली हैं । ३ । व यहां नानाप्रकार के आकारों के, व नानाप्रकार के भूषण धारण किये, सुरसाके पुत्र नागलोग व्यथा रहित बसते हैं । ४ । यहां के सर्प कोई २ तो मणिके चिह्नके, कोई २ स्वस्तिकके चिह्नके, कोई २ चक्रके चिह्नके, कोई २ पात्र पत्रके चिह्नके, ऐसे सहस्रोंबली नागहैं व स्वभावके सब महारौद्र । ५ । यहां कोई २ सर्पतो सहस्र शिरवाले हैं व कोई पांचसौ शिरवाले, कोई सौ शिरवाले, व कोई तीन शिरके । ६ । कोई दोशिरके, कोई पांच शिर

CHAPTER CIII

Narad said, "This is Bhogwati ruled by Vasuki the prince of snakes. It is the best of cities in the lower regions like Amravati the city of Indra. See, yonder is sitting Shesh the prince of snakes who with the power of his asceticism bears the burden of the whole earth over his head. He looks like a white mountain and is always decked with divine ornaments. He has a thousand heods, a wreathe of fire comes out of his tongues and he is very powerful. Here live in safety, the children of Surasa, the nagas. Some of them bear traingular marks, others like that of dicus and others like that of betal leaf. There are thousands of such snakes of veryeruel temper. Some

बहूनीहसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच । नागानामेकवंशानां यथाश्रेष्ठन्तुमेशृणु ॥ ८ ॥ वासुकिस्तक्षकश्चैव कर्कोटकधनञ्जयौ । कालीयोनहुषश्चैव कम्बलाश्वतरावुभौ ॥ ९ ॥ बाह्यकुण्डोमणिर्नागस्तथैवापूरणः खगः । वामनश्चैलपत्रश्च कुकुरःकुकुणस्तथा ॥१०॥ आर्य्यकोनन्दकश्चैव तथाकलशपोतकौ । कैलासकःपिञ्जरको नागश्चैरावतस्तथा ११ सुमनोमुखोदधिमुखःशंखो नन्दोपनन्दकौ । आप्तःकोटरकश्चैव शिखीनिष्ठूरिकस्तथा ॥ १२ ॥ तित्तिरिर्हस्तिभद्रश्च कुमुदोमाल्यपिण्डकः । द्वौपद्मौपुण्डरीकश्च पुष्पोमुद्गर पर्णक ॥ १३ ॥ करवीरःपीठरकः सम्वृत्तोवृत्तपवच । पिण्डारोविल्वपत्रश्च मूषिकादःशिरीपकः ॥ १४ ॥ दिलीपःशंखशीर्षश्च ज्योतिष्कोथापराजितः । कौरव्यो धृतराष्ट्रश्च कुहरःकृशकस्तथा ॥ १५ ॥ विरजाधारणश्चैव सुबाहुर्मुखरोजयः । बधि-

---

के, कोई सात मुखके, इन सबकी बड़ी भारी लम्बीडाढ व बड़ेकाय वाले व पर्वताकार किसी २ का शरीरहै । ७ । यहां बहुत सहस्रों लाखों अर्बुदों एक वंशके नागहैं परन्तु जो उनमें श्रेष्ठ वंशवाले हैं उनके नाम हम बताते हैं सुनो । ८ । वासुकि, तक्षक, कर्कोंटक, धनञ्जय, कालीय, नहुष, कम्बल, अश्वतर । ९ । बाह्यकुण्ड, मणि नाग, अपूरण, खग, वामन, ऐलपत्र, कुकुर, व कुकुण । १० । आर्य्यक, नन्दक, कलश, पोतक, कैलासक, पिंजरक, व ऐरावत । ११ । सुमनोमुख, दधिमुख, शंख, नन्द, उपनन्द, आप्त, कोटरक, शिखी, व निष्ठूरिक । १२ । तित्तिरि, हस्तिभद्र, कुमुद, माल्य पिण्डक, पद्म, पुण्डरीक, पुष्प, मुद्गर, व अपर्णक । १३ । करवीर, पिठरक, संवृत्त, वृत्तपिंडार, बिल्व पत्र, मूषिकाद, व शिरीपक । १४ । दिलीप, शंखशीर्ष, ज्योतिष्क, अपराजित, कौरव्य, धृतराष्ट्र, कुहर, व कृशक । १५ । विरजा, धारण, सुबाहु, मुखर, जय, बधिरान्ध,

---

have a thousand heads, some five hundreds, some five and others seven. They have long teeth and large bodies like those of mountains. Here are hundreds of thousands snakes of different families, but I shall tell you the names of the chief among them. They are Vasuki, Takshak, Karkotak, Dhananjaya, Kaliya, Nahush, Kambal, Ashwatar, Vahya kund, Maninag, Apuran, Khag, Baman, Elapatra, Kukur, Kukun, 10. Aryak, Nandak, Kalash, Potak, Kailasak, Pinjarak, Airavat, Samanemukh, Shankh, Nand, Upnand, Apta, Katarak, Shikhi, Nishthoorik, Tittir, Hastibhadra, Kumud, *Malyapindik, Padma, Pundarik, Pushp, Mudgar*, Aparnak, Karvir, Pitharak, Samvritha, Vrithapindar, Vilwapatra, Mushikad, Shirshak, Dilip, Shankhshirsh, Jyotishk, Aparjit, Kauravya, Dhritrashtra, Kuhar, Krishak, Biraja, Dharan, Sulahu, Mukhar, Jaya,

रान्धौविशुण्डिश्च विरसःसुरसस्तथा १६ एतेचान्येचबहवः कश्यपस्यात्मजाःस्मृताः मातलेपश्ययद्यत्र कश्चित्तेरोचतेवरः ॥ १७ ॥ कण्व उवाच । मातलिस्त्वेकमव्यग्रः सततंसन्निरीक्ष्यवै । पप्रच्छनारदंतत्र प्रीतिमानिवचाभवत् १८ मातलिरुवाच स्थितो यएषपुरतः कौरव्यस्यार्य्यकस्यतु । द्युतिमान्दर्शनीयश्च कस्यैषकुलनन्दनः ॥ १९ ॥ कःपिताजननीचास्य कतमस्यैषभोगिनः । वंशस्यकस्यैषमहान् केतुभूतइवास्थितः २० प्रणिधानेनधैर्य्येण रूपेणवयसाचमे । मनःप्रविष्टोदेवर्षे गुणकेश्याःपतिर्वरः ॥ २१ ॥ कण्व उवाच । मातलिंप्रीतमनसंदृष्ट्वा सुमुखदर्शनात् । निवेदयामासतदामाहात्म्यं जन्मकर्मच ॥ २२ ॥ नारद उवाच । ऐरावतकुलेजातः सुमुखोनामनागराट् । आर्य्यकस्यमतःपौत्रो दौहित्रोवामनस्यच ॥ २३ ॥ एतस्यहिपितानागश्चिकुरोनाममातले । नचिराद्वैनतेयेन पञ्चत्वमुपपादितः ॥ २४ ॥ ततोऽब्रवीत्प्रीतमना मातलिर्नारदंवचः ।

बिशुण्डि, बिरस, व सुरस, । १६ । इतने ये व बहुतसे औरभीहैं पर सब कश्यपहीजी के पुत्रहैं, हे मातलिजी देखो तो इनमेंकोई वर तुमको रुचता है । १७ । कण्वजीबोले कि मातलि इनने में निरन्तर, निरीक्षणकर सावधान चित्तहो व प्रीतिमानहो नारदजीसेबोले कि । १८ । यह जो कौरव्य व आर्य्यक के आगे खड़ाहै व बड़ा द्युतिमान व दर्शनीय है यह किसके कुलका नन्दनहै । १९ । व इसके पिता माताका क्यानाम है, व किसके बंश का यह पताकारूप स्थित है । २० । धैर्य, रूप, प्रणिधान और अवस्था में यह सबप्रकार गुण केशी के योग्य वर है कण्वजी बोले कि मातलिको सुमुखनाम नागके देखनेसे प्रसन्न मन देख नारदजीने उनके जन्म कर्मादि कहे । २२ । ये ऐरावतकेवो कुलमें उत्पन्नहै, सुमुख इन नागराजका नामहै, व आर्य्यक इनके प्रपिताका नामहै व वामननाम नागराजकी कन्या के पुत्र हैं । २३ । व इनके पिताका चिकुरनामथा उनको गरुड़जीने थोड़ेदिन हुये कि खालिया । २४ । मातलिने प्रसन्न चित्तहोकर कहा कि यह वर हमको अच्छा लगताहै

Badhirandh, *Bishundi, Viras Suras, and others. They are all sons of* Kashyap. See, Matali, if you can select any one of them." kanwa said that having carefully looked at them, he said to Narad, "He who is standing before Kauravya and Aryak, is very glorious and beautiful. What family does he belong to? Who are his parents? In beauty, wisdom and age, he appears to me suited for Gunkeshi." Kanva said that seeing Matali pleased at the sight of Sumukh, Narad informed him saying, "He is of the family of Airavat; his name is Sumukh; his grand father is named Aryak and his mother is the daughter of Baman the prince of snakes. His father named Chibur was eaten up by Garur a few days ago." At this Matali was well pleased and

एषमेरुचितस्तात जामाताभुजगोत्तमः ॥ २५ ॥ क्रियतामत्रयत्नोवै प्रीतिमानस्म्यनेनवै । अस्मैनागायवैदातु प्रियांदुहितरंमुने ॥ २६ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे त्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३ ॥

नारद उवाच । सुतोयंमातलिर्नाम शक्रस्यदयितःसुहृत् । शुचिःशीलगुणोपेतस्तेजस्वी वीर्य्यवान्वली ॥ १ ॥ शक्रस्यायंसखाचैव मन्त्रीसारथिरेवच । अल्पान्तरप्रभावश्च वासवेनरणेरणे ॥ २ ॥ अयंहरिसहस्रेण युक्तंजैत्रंरथोत्तमम् । देवासुरेषुयुद्धेषु मनसैवनियच्छति ॥ ३ ॥ अनेनविजितानश्वैर्दोर्भ्यां जयतिवासवः । अनेनबलभित्पूर्वं प्रहृतेप्रहरत्युत ॥ ४ ॥ अस्यकन्यावरारोहा रूपेणासदृशीभुवि ।

यह नागों में उत्तम और सुन्दर स्वरूप वाला है । २५ । मेरा यत्नकीजिये कि इस इसको अपनी कन्या दें हमने यही निश्चय कियाहै । २६ ।

अध्याय ॥ १०४ ॥

नारदमुनि बोले कि ये मातलिनाम इन्द्रजी के सूतहैं, व इन्द्रके बड़े प्रिय सुहृद् हैं व सदा पवित्र, शीलगुणयुक्त, तेजस्वी, वीर्य्यवान्, बलीहैं । १ । ये इन्द्रजी के सखा मंत्री व सारथि हैं, व सबरणों में इनके व इन्द्रके प्रभावमें थोड़ाही अन्तर रहा है । २ । ये ऐसे हैं कि जहां देवताओं व असुरों का संग्राम होता है तो सहस्र घोड़े लगा इन्द्रका रथ मनके वेग से चलाते हैं । ३ । इन्होंने इन्द्रजी के घोड़ोंको ऐसा जीत रक्खा है कि इन्द्रजी अपने बाहों से तुरन्त शत्रुओं को जीतलेतेहैं, व प्रथम शत्रुओं के ऊपर मातलि बाणादि चलालेते हैं फिर इन्द्र चलाते हैं । ४ । इन मातलि के एककन्या ऐसी उत्तमहै कि रूपमें

---

said, "I like this youth. Among the nagas he is the best and most beautiful. Please make arrangements with his elders to secure him for my daughter."26 .

CHAPTER CIV

Narad the sage said, "This is Matali the chariot driver of Indra. He is very dear to Indra and is famous for his purity, good manners, glory, prowess and strength. He is Indra's companion, adviser and charioteer and in all the battles, his prowess was nearly equal to that of Indra. Whenever a war takes place between the gods and the danavas he guides the thousand horses of Indra's chariot with great ease. He has a perfect control over them and thus enables Indra to win his enemies in an instant. Matali shoots the enemy

शत्यशीलगुणोपेता गुणकेशीतिविश्रुता ॥ ५ ॥ तस्यास्य यत्नाच्चरतस्त्रैलोक्यममरद्युते। सुमुखोभवतःपौत्रो रोचतेदुहितुःपतिः ॥ ६ ॥ यदितेरोचते सम्यगभुजगोत्तममाचिरम् । क्रियतामार्यकाक्षिप्रं बुद्धिःकन्यापरिग्रहे ॥ ७ ॥ यथाविष्णुकुले लक्ष्मीर्यथा स्वाहा विभावसोः । कुलेतवतथैवास्तु गुणकेशीसुमध्यमा ॥ ८ ॥ पौत्रस्यार्थेभवांस्तस्माद् गुणकेशींप्रतीच्छतु । सदृशींप्रतिरूपस्य वासवस्यशचीमिव ॥ ९ ॥ पितृहीनमपिह्येनं गुणतोवरयामहे । बहुमानाच्च भवतस्तथैवैरावतस्यच ॥ १० ॥ सुमुखस्यगुणैश्चैव शीलशौचदमादिभिः । अभिगम्यस्वयं कन्यामयंदातुं समुद्यतः ॥ ११ ॥ मातलिस्तस्यसम्मानं कर्तुमर्होभवानपि । कण्व उवाच । सतुदीनःप्रहृष्टश्च प्राहना-

---

पृथ्वीपर दूसरी और उसके समान नहीं है व सत्यशीलादि गुणों से संयुक्त है, व गुणकेशी उसका नाम है। ५ । ये उसके लिये तीनों लोकों में यत्न से घूमआये पर इनको उसके योग्य वर कहीं न मिला देखते २ आप के पौत्र सुमुखको इन्होंने अपनी कन्या के लिये पति प्रसन्न कियाहै । ६ । हे आर्यक जो तुमको यहबात रुचतीहोतो अब विलम्ब न कीजिये अपने पौत्रके लिये इस कन्याको ग्रहणकीजिये । ७ । जैसे विष्णु भगवान्के कुल में लक्ष्मी व जैसी अग्नि के यहां स्वाहा, वैसीही तुम्हारे कुल में गुणकेशीहो । ८ । इससे आप अपने पौत्रके लिये गुणकेशी को ग्रहण करें, सुमुखके सदृश गुणकेशी है जैसे इन्द्रके सदृश इन्द्राणी शची । ९ । यद्यपि इस तुम्हारे पौत्रके पिता नहीं है तथापि इसमें बहुत गुणों के कारण हमलोग इनको अंगीकार करते हैं, इसमें आपका व ऐरावतकाभी बड़ामान समझते हैं । १० । व सुमुखके शील शौच दमादि गुणोंसेभी अपने आप कन्या देनेको ये उद्यत हुये हैं । ११ । इससे इन मातलि का सम्मान करने के योग्य आप हैं । १२ ।

---

with his arrowos and thus clears the way for Indra's success. He has a very beautiful daughter who possesses truth, good manners and other virtues. She is known as Gunkeshi. He searched for her a bridegroom in the three words, but could find none. He has selected your grandson Sumukh to be her daughter's husband. Be pleased to accept her for your family like Lakshmi in the house of Vishnu or Swaha in the house of Arjun. Plesse accept her for your grandson. Gunkeshi is worthy of Sumukh as Indrani is worthy of Indra. We accept your grandson for his good qualities though his father is dead. You and Airavat will be honored by this connection. 10. We have consented to give our daughter to your grandson on account of his virtues and you should honor Matali." Kanva said that Aayak the prince of Nagas was much grieved and

रदमार्य्यकः ॥ १२ ॥ त्रियमाणेतथापौत्रे पुत्रेचनिधनंगते । कथमिच्छामिदेवर्षे गुणकेशींस्नुषांप्रति ॥ १३ ॥ आर्य्यक उवाच । नमेनैतद्बहुमतं महर्षेवचनंतव । सखा शक्रस्यसंयुक्तः कस्यायंनेप्सितोभवेत् ॥ १४ ॥ कारणस्यतुदौर्बल्या च्चिंतयामिमहामुने । अस्यदेहकरस्तात ममपुत्रोमहाद्युते ॥ १५ ॥ भक्षितोवैनतेयेन दुःखार्त्तास्तेनवैवयम् । पुनरेवचतेनोक्तं वैनतेयेनगच्छता । मासेनान्येनसुमुखं भक्षयिष्यइतिमभो ॥ १६ ॥ ध्रुवंतथातद्भविता जानीमस्तस्यनिश्चयम् । तेनहर्षःप्रनष्टोमे सुपर्णवचनेनवै ॥ १७ ॥ कण्व उवाच । मातलिस्त्वब्रवीदेनं बुद्धिरत्रकृतामया । जामातृभावेनवृतः सुमुखस्तवपुत्रजः ॥ १८ ॥ सोयंमयाचसहितो नारदेनचपन्नगः । त्रिलोकेशंसुरपतिं

कण्वजी बोले कि आर्य्यक नाम नागराज प्रथम बहुत दुःखी हुये फिर प्रसन्नभी होकर नारदजीसे बोले कि हमारे पौत्रकाभी तुम विवाह करने को कहते हो व हमारा पुत्र अभी थोड़ेही दिनहुये मारागयाहै तो नारदजी ऐसे अवसरमें गुणकेशी को स्नुषा बनाना हम कैसेचाहें । १३ । हे नारद महर्षि क्या हम आपका वचन न मानते फिर ये इन्द्रके सखा इनका सम्बन्ध किसको न अच्छालगेगा । १४ । पर इसमें एक कारणकी दुर्बलता है इसीसे हम चिंतना करते हैं, वह यहहै कि इस सुमुखका पिता मेरा पुत्रथा । १५ । उसे थोड़ेही दिनहुये कि गरुड़जीने भक्षण करलिया है उसीदुःख से हमलोग दुःखी हैं, व फिर चलने के समय गरुड़ने यह कहा है कि । १६ । अगले महीना में इसके पुत्र सुमुखको भी हम भक्षण करलेंगे, सो हमलोग यह निश्चय जानते हैं कि यह बात जो गरुड़ने कही है वे जरूर अपने वचन करेंगे अगले मास में इसेभी खा लेंगे । १७ । कण्वजी बोले कि यहसुन मातलिबोले इस विषयमें हमने बुद्धि करली है तब तुम्हारे पुत्र के पुत्र सुमुखको अपना दमाद बनाया चाहा है । १८ । वह युक्ति यह है कि ये सुमुख

---

pleased at this and said to Narad, "You have selected my grandson for marrige while my son has died only a few days ago; how can I wish to make Gunkeshi my daughter-in-law under these circumstances? I cannot deny you, Narad, and besides, who will not like to make the friend of Narad his kinsman. There is only one drawback: Sumukh's father who was my son, has lately been devoured by Garur; we are lamenting for his untimely death and besides, at the time of his departure, Garur said that he would eat up Sumukh next month. We know that Garur has spoken the truth and he is sure to devour Sumukh next month." Kanwa said that on hearing this, Matali said, "We have decided to make your grandson my son-in law after taking into consideration this point also.

गत्वापश्यतुवासवम् ॥ १९ ॥ देवेणैवास्यकार्य्येण मज्ञास्याम्यहमायुषः । सुपर्णस्य विघातेच मयतिष्यामिसत्तम ॥ २० ॥ सुमुखश्चमयासार्द्धं देवेशमभिगच्छतु । कार्य्यसंसाधनार्थाय स्वस्तितेस्तुभुजङ्गम ॥ २१ ॥ ततस्तेसुमुखंगृह्य सर्वएवमहौजसः। ददृशुःशक्रमासीनं देवराजंमहाद्युतिम् २२ सङ्गत्यातत्रभगवान विष्णुरासीच्चतुर्भुजः। ततस्तत्सर्वमाचख्यौ नारदोमातलिंप्रति ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततःपुरन्दरं विष्णु रुवाच भुवनेश्वरम् । अमृतंदीयतामस्मै क्रियतामपरैःसमः ॥ २४ ॥ मातलिर्नारदश्चैव सुमुखश्चैववासव । लभंतांभवतःकामात् कामात्मेतंयथेप्सितम् ॥ २५ ॥ पुरन्दरोथसञ्चिन्त्य वैनतेयपराक्रमम्। विष्णुमेवाब्रवीदेनं भवा नेवददात्विति ॥ २६ ॥

नाम नाग हमारे व नारदजी के संगचले इंद्रजी के दर्शन करें । १९ । इनके आयुर्दाय के समाचार हम वहां सम्पूर्ण जानलेंगे जो इनकी आयुष अभी होगी केवल गरुड़ही मारे लेते होंगेतो उनकेभी मारने का प्रबन्ध किया जायगा । २० । अब यह कार्य सिद्ध करने के लिये सुमुख हमारे साथ चलें, व इन्द्रके दर्शनकरें आपकी स्वस्तिहो । २१ । यह सम्मत कर सुमुखको संगले मातलि नारद व आर्यक सबोंने बैठेहुये इन्द्रजी को देखा । २२ । वहां इन्द्रजी के अर्द्ध सिंहासनपर उससमय भगवान् विष्णुजी भी चतुर्भुजी मूर्त्तिको धारण किये विराजते थे, नारदजी ने मातलि से कहा कि अच्छा है इसी बीचमें सब वृत्तान्त इन्द्र जी से कहो जिसमें श्रीभगवानभी सुनें । २३ । वैशम्पायनजी ने कहा कि यह सुन मातलिने सब वृत्तान्त कहा तब श्रीविष्णुजी ने इन्द्र से कहा कि अब इस सुमुखको भी अमृत देकर झटपट देवताओं के समान बनालो । २४ । जिसमें आपकी इच्छासे मातलि सुमुख व नारद तीनोंजने अपना अभीष्टपायें विवाह होजाय । २५ । इन्द्रजी ने गरुड़का विक्रम बड़ाभारी समझ जाना कि हमयुद्धमें उनसे न जीतेंगे श्रीविष्णुजी से

Let Sumukh go with Narad and me in the presence of Indra and we will know all about his longevity there. If the days of his life have not expired we shall contrive to save him from Garur. 20. Let Sumukh go with us to perform this work. In his seeing Indra lies your welfare." Having thus decided, Sumukh and Aryak went in company with Narad and Matali and saw Indra sitting on the same seat with Vishnu of four arms. Narad directed Matali to mention his case to Indra within hearing of Vishnu. Vaishampayan said that on hearing the same from Matali, Vishnu asked Indra to make *Sumukh immortal like gods by giving him a dose of ambrosia in* order that Matali, Sumukh and Narad may gain their desire. Knowing the great prowess of Garur, and his inconquerability in battle,

विष्णुरुवाच । ईशस्त्वंसर्वलोकानां चराणामचराश्चये । त्वयादत्तमदत्तंक कर्त्तुमुत्सहतेविभो ॥ २७ ॥ पादाच्छक्रस्ततस्तस्मै पन्नगायायुरुत्तमम् । नत्वेनममृतमाश्च चकारवलहृत्तदा ॥ २८ ॥ लब्ध्वावरन्तुसुमुख सुमुखःसम्बभूवह । कृतदारोयथाकामं जगामचगृहान्प्रति ॥ २९ ॥ नारदस्त्वार्यकश्चैव कृतकार्योमुदायुतौ । अभिजग्मतु रभ्यर्च्य देवराजंमहाद्युतिम् ॥ ३० ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे चतुरधिकशततमोऽध्याय १०४ ॥

कण्वउवाच॥ गरुडस्तमशुश्राव यथावृत्तंमहाबलः । आयुःप्रदानंशक्रेण कृतनागस्यभारत ॥ १ ॥ पक्षवातेनमहतारुद्ध्वा त्रिभुवनंखगः । सुपर्णःपरमक्रुद्धो वासवं समुपाद्रवत् ॥ २ ॥ गरुड उवाच । भगवन् किमवज्ञानात्क्षुधि॰ प्रतिहतामम । काम

कहा कि अब हम क्या इनको अमृतदें आपही अपने हाथसे दीजिये । २६ । श्रीभगवान् जीबोले कि तुम सब चराचरों के स्वामीहो तुम्हारे दियेको बिना दिया कौन करसकेगा । २७ । यहसुन इन्द्र ने सुमुखको चिरंजीवी करदिया पर अमृत न पिलाया । २८ । तब मातलिकी कन्या के संग सुमुखका विवाह हुआ व अपनी स्त्री संगलेकर सुमुख अपने घर को चलेगये । २९ । व नारद आर्यक दोनोंजने कार्य सिद्ध होजाने से परमानन्दितहो महाद्युति देवराजकी पूजा कर अपने २ स्थान को गये ३० ॥

अध्याय ॥ १०५ ॥

कण्वमुनि बोले कि जिस प्रकार इन्द्रजीने सुमुखनाम नागको आयुर्बल दिया वह महाबली गरुड़जीने कहीं सुना । १ । व अपने पक्षों के पवनसे तीनोंलोकों को रूंध परम क्रोधकर गरुड़जी इन्द्र के पासको दौड़े । २ । व आयबोले कि हे भगवन् इन्द्र

Indra asked Vishnu to give Sumukh a draught of Ambrosia with his own hands, but Vishnu said, "You are lord of moveables and immoveables, who can object to your giving him a share of ambrosia!" At this Indra granted long life to Sumukh without a drink of ambrosia. Sumukh was then married to the daughter of Matale and he returned home with her Aryak and Narad were much pleased at this and having worshipped the glorious prince of gods went to their respective homes 30.

CHAPTER CV

Kanwa Muni said that Indra thus gave long life and strength to Sumukh. The news of his so doing reached the ear of Garur who, *agitating the three worlds with the air produced by his wings, flew*

कारवरंदत्त्वा पुनश्चालितवानसि ॥ ३ ॥ निसर्गात्सर्वभूतानां सर्वभूतेश्वरेणमे । आहारोविहितोधात्रा किमर्थंवार्य्यतेत्वया ॥ ४ ॥ वृतश्चैषमहानागः स्थापितःसमयश्च मे । अनेनचमयादेव भर्त्तव्यःप्रसवोमहान् ॥ ५ ॥ एतस्मिंस्तुतथाभूते नान्यंहिंसितु मुत्सहे । क्रीडसेकामकारेण देवराजयथेच्छकम् ॥ ६ ॥ ॥ सोहंमाणानविमोक्ष्यामि तथापरिजनोमम । येचभृत्यामममगृहे प्रीतिमान्भवचासव ॥ ७ ॥ एतच्चैवाहमर्हामि भूपश्चवलवृत्रहन् । त्रैलोक्यस्येश्वरोपोहं परभृत्यत्वमागतः ॥ ८ ॥ त्वयितिष्ठतिदेवेश नाविष्णुःकारणंमम । त्रैलोक्यराजराज्यंहि त्वयिवासवशाश्वतम् ॥ ९ ॥ ममापि

हमारा निरादरकर आपने हमारी जीविका क्यों हरली, जोमानी उसनाग को विनाविचारे वरदे अब कहां जावेहो । ३ । देखो सब प्राणियोंके ईश्वर ब्रह्माजी अपने स्वभावही से जैसे सबका आहार बनाते हैं वैसेही हमारा आहार सर्पोंको बनाया है फिर आपक्यों रोंकते हो । ४ । इस नागको हमने अंगीकार करलिया था व समयभी मुकर्रदियाथा कि अगिले मासमें भक्षण करेंगे, इससे उस मासमें इसी के शरीर से हमारा भरण पोषण होसक्ता है और दूसरे से नहीं । ५ । अब इसकी तो आपने आयु बढ़ादी हम दूसरेको मार नहीं सक्ते व तुमतो अपने आनन्द से क्रीड़ा कर रहेहो व हम भूखों मरेंगे । ६ । इस से अब हम आपके खिरे मरजायँगे व हमारे भाई बन्धुभी मरेंगे, व जो हमारे घरमें सेवकलोग हैं वेभी मरेंगे इन्द्र तुम प्रीतिमान रहो । ७ । हे बल व वृत्रासुर के मारने वाले, अब हम इस के योग्यहुये कि प्रथमतो तीनों लोकोंके ईश्वर रहे अब भृत्यत्वको प्राप्तहुये । ८ । क्योंकि तुम्हारेहोते विष्णुजी हमारे भी कारण नहीं है, क्योंकि तीनों लोकों के राजाओं का राज्य निरन्तर तुम्हारेही अधीन है । ९ । सो आपने अपनेही

---

towards Indra in great anger. On coming there he said, "Bhagwan why did you insult me by depriving me of my food? Where will you escape from me after giving the boon to that proud nag. Brahma has made the serpents my natural food; why do you hinder me? I had selected that nag for my food and had fixed the time of one month for doing so. I can live upon the body of that snake and on none other's. I cannot kill him because you have given him a long life and consequently I shall starve while you will be passing your days in pleasure. I shall die with my family and attendants for your fault, Be kind to me, Indra the destroyer of Bal and Vritrasur. Being the lord of the three worlds I am reduced to a state of slavery. Vishnu will not protect me against you, because the kingdom of the three worlds is vested in you. How can you think yourself

दक्षस्यसुता जननीकश्यपःपिता । अहमप्युत्सहेल्लोकान् समस्तान्वोढुमञ्जसा ॥ १० ॥
असह्यंसर्वभूतानां ममापिविपुलंबलम् । मयापिसुमहत्कर्म कृतंदैतेयविग्रहे ॥ ११ ॥
श्रुतश्रीःश्रुतसेनश्च विवस्वान् रोचनामुखः । प्रसृतःकालकाक्षश्च ममापिदितिजाहताः
॥ १२ ॥ यत्तुध्वजस्थानगतो यत्नात्परिचराम्यहम् । वहामिचैवानुजन्ते तेनमामव
मन्यसे ॥ १३ ॥ कोन्योभारसहो ह्यस्तिकोन्योऽस्तिबलवत्तरः । मयायोहंविशिष्टः
सन्वहामीमं सबान्धवम् ॥ १४ ॥ अवज्ञायत्वयाचेहं भोजनाद्व्यपरोपितः । तेनमे
गौरवंनष्टं त्वत्तश्चास्यच्च वासव ॥ १५ ॥ आदित्यायइमेजाता बलविक्रमशालि-
नः । त्वमेषांकिल सर्वेषां बलेनबलवत्तरः ॥ १६ ॥ सोहंपक्षैकदेशेन वहामित्वांग-

---

को कैसे बड़ा समझलिया क्योंकि हमारी भी माता दक्षही की कन्या है व कश्यपही
हमारे पिता हैं, व हमभी तीनों लोकों को अनायास अपने ऊपर उठाकर लादसक्ते हैं
। १० । व हमारे भी सब प्राणियों को असह्य बड़ा भारी बल है, व दैत्योंके विग्रह
में हमने भी बड़ाभारी कर्म किया है । ११ । व श्रुतश्री, श्रुतसेन, विवस्वान्, रोचना-
मुख, प्रसृत, व कालकाक्षादि हमने भी दैत्यमारे हैं । १२ । जो कि हम तुम्हारे छोटे
भाई वामनजीकी ध्वजामें टिककर घूमते फिरते व उनको अपनी पीठपर लादते हैं इसीसे
तुमने हमारा अनादर किया कि ये लघुतो हुईहैं क्या करेंगे, । १३ । भला यहतो बताइये
कि हमको छोड़ और दूसरा कौन इतना भार सहसक्ताहै, व हमारी बराबर और कौन
बलवत्तरहै, नहीं सबसे बलवान् हमीहैं क्योंकि भाई सहित तुमकोभी लादे फिरतेहैं १४
व जिससे कि तुमने अनादर कर हमको भोजन करने से दूर करदिया उससे हमारा
गौरव नष्ट होगया, व तुमसेभी हमारा गौरव जातारहा । १५ । व जो ये सब अदिति
जी से उत्पन्नहुये इन सबोंमें तुम बलवत्तरहो, यद्यपि और देवगणभी बलवान्हैं पर तुम्हारी
समता को कोई नहीं पाता । १६ । सो हम तुमको अपने पंखपर चढ़ाय जहां चाह

---

greater than me when I have the daughter of Daksh for my mother and Kashyap for my father and I can carry the three worlds on my back. 10. *My great strength is unbearable by all beings and I have done great work in the war with the Daityas.* I have killed Shrutshree, Shrutasen, Vivaswan, Roochanamukh, Prashrut, Kalkash and other Daityas. You have insulted me because I go along with and stay in the banner of your younger brother and carry him on my back. Tell me if any one else can bear such a burden or if there be any one greater in strength than myself. No one is my equal in strength, because I carry your younger brother and yourself. You have *insulted* me by *depriving me of my food.* You have had no

तक्रमः । विमृशत्वंशनैस्तात कोन्वत्रबलवानिति ॥ १७ ॥ कण्व उवाच । सतस्यवचनंश्रुत्वा खगस्योदर्कदारुणम् । अक्षोभ्यंक्षोभयंस्तार्क्ष्यमुवाच रथचक्रभृत् ॥ १८ ॥ गरुत्मन्मन्यसेत्मानं बलवन्तं सुदुर्बल । अलमस्मत्समक्षन्ते स्तोतुमात्मानमण्डज ॥ १९ ॥ त्रैलोक्यमपिमे कृत्स्नमशक्तं देहधारणे । अहमेवात्मनात्मानं वहामित्वाञ्च धारये २० इमंतावन्ममैकंत्वं बाहुंसव्येतरंवह । यद्येनंधारयस्येकंसफलंतेविकत्थितम् २१ ततःसभगवांस्तस्य स्कन्धेबाहुंसमासजत् । निपपातसभारार्तो विह्वलोनष्टचेतनः ॥२२॥ यावान्हिभारःकृत्स्नायाः पृथिव्याःपर्वतैःसह । एकस्यादेहशाखाया स्तावन्तं भारममन्यत ॥ २३ ॥ नत्वेनंपीडयमास बलेनबलवत्तरः । ततोहिजीवितंतस्य नव्यनी

ते वहां लेजाते हैं सो तुम्हीं धीरेसे विचारो तो हमारे समान दूसरा औरकोई कौन बलवत्तर है ।१७। कण्वजी बोले कि गरुड़के ऐसे दारुण व बलयुक्त वचन सुन क्षोभ रहित गरुड़जी को क्षोभ कराते हुये श्रीविष्णु भगवान्बोले । १८ । हे गरुड़, तुमहोतो बड़े दुर्बल पर अपनेको बड़े बलवान मानते हो, परन्तु हमारे सामने अपनी ऐसी बड़ाई करनी न चाहिये यहहोचुका अब ऐसा न समझना । १९ । क्योंकि यह सम्पूर्ण त्रिलोक हमारे देहको नहीं उठा सक्ता, हमीं अपने को धारण किये रहते व तुमको भी हमीं लेचलतेहैं तुम बेचारे हमको क्या लेचलोगे । २० । अब तुम तबतक हमारा दाहिना एकहाथ अपने ऊपर रखकर चलो, सो इस एकको धारण करलोगे तो तुम्हारा यह बकना सफलहोगा । २१ । इतना कह श्रीभगवान ने अपना एकहाथ गरुड़के ऊपर धरदिया कि मारे भारके पीड़ितहो गरुड़ पृथ्वी पर गिरपड़े व विह्वल होकर मूर्च्छित होगये श्वास चलनाभी बन्द होगया । २२ । जितना पर्वतों समेत सम्पूर्ण पृथ्वीका भारहै उतना भगवान्के देहकी एकशाखाका भार गरुड़ ने माना । २३ । भगवान् विष्णुजी ने जोरसे गरुड़ के ऊपर हाथ दे नहींमारा केवल धीरेसे

---

respect for me and I entertain no respect for you. You are the most powerful; but none are more powerful than you. I can carry you on my wing wherever I like; is there any one who can be my match in strength?" Kanwa said that having heard such harsh and terrible words of Garur, Vishnu spoke out, disturbing the firm mind of Garur. "You are a very weak creature and yet you think yourself so powerful," said Vishnu, "you should no longer boast of your strength before me; for the three worlds cannot bear the weight of my body. I myself bear my own weight; you cannot bear it. 20. Try to bear the weight of my right hand. Your boasting will not be out of place if you can bear the weight." Having said this,

नशद्च्युतः ॥ २४ ॥ व्यात्तास्यःस्रस्तकायश्च विचेताविह्वलःखगः । मुमोचपत्राणि तदा गुरुभारप्रपीडितः ॥ २५ ॥ सविष्णुंशिरसापक्षी प्रणम्यविनतासुतः । विचेता विह्वलोदीनः किञ्चिद्वचनमब्रवीत् ॥ २६ ॥ भगवन्लोकसारस्य सदृशेनवपुष्मता भुजेनस्वैरमुक्तेन निष्पिष्टोस्मिमहीतले ॥ २७ ॥ क्षन्तुमर्हसिमेदेव विह्वलस्याल्पचेतसः । बलदाहविदग्धस्य पक्षिणोध्वजवासिनः ॥ २८ ॥ नहिज्ञातंबलंदेव मयातेपरमं विभो । तेनमन्याम्यहंवीर्यं मात्मनोनसमंपरैः ॥२९॥ ततश्चक्रेसभगवान्प्रसादंवैगरुत्मतः । मैवंभूयइतिस्नेहात् तदाचैनमुवाचह ॥ ३० ॥ पादाङ्गुष्ठेनचिक्षेप सुमुखंगरुडो

रखदिया था इससे उनका प्राण नहीं निकला क्योंकि भगवान्‌को गरुड़का नाशकराना अङ्गीकार नहींथा । २४ । परंतोभी ऐसा हुआ कि मुँहबाय, सब शरीर शिथिलकर विचेत व विह्वलहो, बड़े गरू भारसे पीड़ितहो गरुड़ने अपने सब पङ्ख छोड़दिये । २५ । फिर विनताके पुत्र गरुड़ विष्णुभगवान् को शिरसे प्रणामकर अचेत विह्वल व दीनहो कुछ धीरे से बोले । २६ । हे भगवन्, आपने तो धीरेही से अपनी जानमेंरे ऊपर हाथधरा परन्तु वहतो लोकभरके सारांश के तुल्यथा इससे मैं पृथ्वीपर गिरकर पिसगया । २७ । अब हे भगवान्, विह्वल व अल्पतेजस्वी व बलदर्प से विहीन व आपके ध्वज में बसने वाले मुझ पक्षी के अपराध क्षमा कीजिये । २८ । हे विभो मैंनेआपका परमबल नहीं जाना, इसीसे मैं मानता था कि मेरे समान कोई और बलवान् नहीं है । २९ । यह सुन श्रीभगवान्‌जी ने गरुड़ के ऊपर प्रसाद किया, व अब ऐसा कभी न करना यह कह गरुड़ से बोले ३० व अपने चरण के अँगूठे से उठाय उसी सुमुख नाम नागको गरुड़की छाती में पटक दिया

Vishnu put one of his hands on the back of Garur who fell down in a swoon as he was unable to bear the weight. His breath stopped and he felt the burden as that of the whole earth together with its mountains. Vishnu put his hand gently on the back of Garur and not with a force as he did not wish to kill him; and yet he opened his mouth wide, the joints of his whole body became loosened and he spread out his wings under the great weight. Garur then bowed down his head at the feet of Vishnu and said gently and humbly, "You put your hand gently over my body; but I fell down on earth as it fell on me as if it were with the burden of the whole earth. Pardon the fault of a weakened, inglorious bird deprived of his boastful strength who resides in your banner. I did not know your great strength and therefore was under the impression that no body was

रसि । ततःप्रभृतिराजेन्द्र सहसर्पेणवर्त्तते ॥ ३१ ॥ एवंविष्णुबलाक्रान्तो गर्वनाशमु
पागतः । गरुडोबलवान्राजन् वैनतेयोमहायशाः ॥ ३२ ॥ कण्वउवाच । तथात्वमपि
गान्धारे यावत्पाण्डुसुतान्रणे । नासादयसितान् वीरांस्तावज्जीवसिपुत्रक ॥ ३३ ॥
भीमःप्रहरतांश्रेष्ठो वायुपुत्रोमहाबलः । धनञ्जयश्चेन्द्रसुतो नहन्यातांतुकंरणे ॥ ३४ ॥
विष्णुर्वायुश्चशक्रश्च धर्मस्तौचाश्विनावुभौ । एतेदेवास्त्वयाकेन हेतुनावीक्षितुंक्षमाः ३५
तदलन्तेविरोधेन शमंगच्छनृपात्मज । वासुदेवेनतीर्थेन कुलंरक्षितुमर्हसि ॥ ३६ ॥ प्रत्य
क्षदर्शीसर्वस्य नारदोयमहातपाः । माहात्म्यस्यतदाविष्णोः सोयंचक्रगदाधरः ॥३७॥
वैशम्पायनउवाच । दुर्योधनस्तुतच्छ्रुत्वा निःश्वसन्भ्रुकुटीमुखः । राधेयमभिसम्प्रेक्ष्य

कि सबसे गरुड़ सर्प युक्त होगये । ३१ । इसप्रकार श्रीविष्णु के बल से आक्रान्तहोने के कारण गरुड़ का गर्व नष्ट होगया यद्यपि वे बड़े बलवान् व महायशस्वीभी थे पर क्षण मात्र में सब बल कहीं जातारहा । ३२ । कण्वजी दुर्योधनसेबोले कि हे गान्धारी के पुत्र दुर्योधन वैसेही जबतक रण में तुम पाण्डवों के सामने नहीं जाते तभीतक जीतेहो । ३३ । क्योंकि पवनके पुत्र महाबली भीमसेन व इन्द्रके पुत्र अर्जुन वीर रणमें किसको नमारडा-लेंगे । ३४ । भला दुर्योधन, विष्णु, वायु, इन्द्र, धर्म, व अश्विनीकुमार इन इतनेदेव मुख्यों को तुम किस हेतुसे देखने को समर्थहो । ३५ । इससे हे राजकुमार अब विरोधकरने से कुछभी सिद्ध नहीं है पस पाण्डवों से मिलापकरलो, अब अच्छीयुक्ति लगगई है वासुदेवकी द्वारा कुलकी रक्षाकरलो । ३६ । ये महातपस्वी नारदजी सबके प्रत्यक्ष देखनेवालेहैं उस में भी विष्णुका माहात्म्यतो ये प्रत्यक्ष देखाही करते ये जानते हैं वही शंख चक्र गदाधारी विष्णुही ये कृष्णभगवान्हैं । ३७ । वैशम्पायनजीबोले कि मुनिकी वाणी सुनकर दुर्योधन

equal to me in strength." At this Vishnu was pleased with Garur and warning him to be careful in future he spoke to him kindly. 30. Then lifting Sumukh with his toe he flung him on the breast of Garur and from that time the latter bears the mark of a serpent. Being thus pressed by the the strength of Vishnu, Garur's pride was subdued. Kanwa then said to Duryodhan, "You live as long as you are not engaged in war with the Pandavas; Bhimsen the son of Vayu and brave Arjun the son of Indra will leave nobody alive in battle. How can you cope with Vishnu, Vayu, Indra, Dharm and Ashwinikumars, Duryodhan? You will gain nothing by fighting. Make peace with the Pandavas. You have got a good opportunity for protecting your family through Vasudev. This great ascetic Narad sees all things. He is specially familiar with the greatness of

जहासस्तनवत्तदा ॥३८॥ कदर्थीकृत्यतद्वाक्य मृषेःकण्वस्यदुर्मतिः । ऊरुंगजकराकारं ताडयन्निदमब्रवीत् ॥३९॥ तथैवेश्वरसृष्टोस्मि यद्भावियाचमेगतिः । तथामहर्षेवर्त्तामि किंप्रलापःकरिष्यति ॥ ४० ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि मातलिवरान्वेषणे पंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५ ॥

जनमेजयउवाच । अनर्थेजातनिर्बन्धं परार्थेलोभमोहितम् । अनार्यकेष्वभिरतं मरणे कृतनिश्चयम् ॥ १ ॥ ज्ञातीनांदुःखकर्त्तारं बन्धूनांशोकवर्धनम् । सुहृदांक्लेशदातारं द्विषतांहर्षवर्धनम् ॥ २ ॥ कथंनैनंविमार्गस्थं वारयन्तीहबान्धवाः । सौहृदाद्वासुहृत्स्निग्धो भगवान्वापितामहः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । उक्तंभगवता वाक्यमुक्तंभीष्मेणयत्क्षमम् । उक्तंवहुविधञ्चैव नारदेनापि तच्छृणु ॥ ४ ॥ नारदउवाच

ने क्रोध पूर्वक कहा कि मुनिलोग युद्धकी बातें क्या जानें मुनिकी यहबात सुनकर दुर्योधन ने अपनी जंघापर हाथमारा और कहा कि जिस ईश्वरने हमें पैदा किया है वह जैसा करेगा वैसाहोगा तुम बेकार बात मत करो ४० ॥

अध्याय १०६ ॥

इतनीकथा सुन जनमेजयजीने पूंछा कि मुनिराज, अनर्थ में, हठकिये, परधनके लिये लोभसे मोहित, नष्ट कर्म्मों में तत्पर, मरणमें, निश्चयकिये, ज्ञातिवालों के दुःखकर्त्ता, बन्धुओं के शोक बढ़ानेवाले, सुहृदोंको क्लेश देनेवाले, शत्रुओं के हर्ष बढ़ानेवाले, व कुमार्गाही में सदा चलनेवाले इन दुर्योधनको भाई बन्धुओं ने क्यों नहीं रोका, फिर और किसीने रोका व न रोका परम सुहृद व ज्ञानी भीष्मपितामहजीने सौहार्दकी रीतिसे क्यों नहीं ऐसे असत्यकर्म्मों से उन्हें रोका । ३ । वैशम्पायनजी बोले कि प्रथमतो श्रीभगवान्

Vishnu. He knows that Krishna is Vishnu the wielder of conch, discus and mace." Vaishampayan said that having heard the above Duryodhan said in anger, "What do ascetics know of war?" He tapped his thigh with his hand and said, "Let the will of the Lord who has created me, be done and donot indulge in useless talk."40.

CHAPTER CVI

Having heard this, Janamejaya said to Vaishampayan, "Why did the Kauravas not check Duryodhan who persisted in doing wrong, was greedy of others' wealth, intent on doing wickedness, ready to die, cause of grief to his kinsmen, relations and friends and joy to his enemies and who stayed in the wrong path. Why did wise Bhishm the grand father and best of friends not check his wrong doings?"

दुर्लभोवैसुहृच्छ्रोता दुर्लभश्चहितः सुहृत् । तिष्ठतेहि सुहृद्यत्र नवन्धुस्तत्र तिष्ठते ॥ ॥ ५ ॥ श्रोतव्यमपिपश्यामि सुहृदांकुरुनन्दन । नकर्त्तव्यश्चनिर्बन्धो निर्बन्धो हिसुदारुणः ॥ ६ ॥ अत्राप्युदाहरन्तीम मितिहासंपुरातनम् । यथानिर्बन्धतःप्राप्तो गालवेनपराजयः ॥ ७ ॥ विश्वामित्रंतपस्यन्तं धर्मोजिज्ञासयाप्रभुः । अभ्य गच्छत्स्वयंभूत्वा वसिष्ठोभगवानृषिः ॥ ८ ॥ सप्तर्षीणामन्यतमं वेषमास्थायभारत । बुभुक्षुःक्षुधितो राजन्नाश्रमंकौशिकस्यतु ॥ ९ ॥ विश्वामित्रोथसम्भ्रान्तः श्रपया मासवैचरुम् । परमान्यस्ययत्नेन नचतंमत्यपालयत् ॥१०॥ अन्नंतेनयदाभुक्त मन्यैर्दत्तं

कृष्णचन्द्रहीने बहुत कहा फिर भीष्मपितामहजी ने भी कहा फिर नारदजीने जो कहा हम कहतेहैं सुनिये । ४ । नारदजी बोले कि सुहृद सुननेवाला इस संसारमें दुर्लभ है, व सुहृद हितकारीभी दुर्लभही है, क्योंकि जहां सुहृद टिकताहै वहां कोई बन्धु नहीं खड़ाहोसक्ता । ५ । व हमारे विचारसे सुहृदोंकी कही बात सुनने के ही योग्य होतीहै इससे तुम्हें भी सुननी चाहिये व फिर सुनकर करनी चाहिये हठ न करना चाहिये क्योंकि हठकरना नाशकारी होता है । ६ । इस हठ करने के विषयमें एक पुराना इतिहास पण्डित लोग कहते हैं जैसे हठकरने से गालव महर्षिकी पराजयहुई है सुनातेहैं सुनो । ७ । विश्वामित्रजी तपस्या करते थे तब भगवान् वसिष्ठजी का रूपबनाय धर्मजी उनके मनका अभिप्राय जानने के लिये वहांआये । ८ । रूप अपना सप्तऋषियोंसे पृथक् धारण करलियाथा, बहुत भूखे प्यासे बन कौशिकजी के आश्रम पर पहुँचे । ९ । विश्वामित्रजी उनको देख चकित चित्तहो उनके लिये खीर बनाने लगे कि अच्छा अब इनको भोजन करावें परन्तु धर्मने उनके खीरबनानेकी राह न देखी । १० । तब अन्य तपस्वी लोग अन्नलाये उन्होंने

To this Vaishampayan replied that Bhishm the grandfather seconded Shree Krishn; but to no purpose. Narad then admonished him as follows:-It is as difficult in the world to find a friend that can hear a friend's advice as a faithful friend; for no kinsman can stay where a *friend does. A friendly advice must be acted upon* and you ought to hear and act upon it without obstinacy which leads to destruction. Learned men say an old story on this subject in which mention is made of the grief of the rishi Galav: when Vishwamitra was performing asceticism, Dharm in the disguise of Vashishth came to him to know the state of his mind. He looked unlike the seven rishis and reached the hermitage of Vishwamitra like a very hungry and thirsty man. Vishwamitra was much amazed to see him and began to boil rice and milk for him; but Dharm did not see this. 10.

तपस्विभिः। अथगृह्यान्नमत्युष्णं विश्वामित्रोप्युपागमत् ॥ ११ ॥ भुक्तंमेतिष्ठतावत्त्व मित्युक्त्वाभगवान्ययौ । विश्वामित्रस्ततोराजन् स्थितएवमहाद्युतिः॥१२॥भक्तंमगृह्य मूर्ध्नावै बाहुभ्यांसंशितव्रतः । स्थितःस्थाणुरिवाभ्याशे निश्चेष्टोमारुताशनः ॥ १३ ॥ तस्यशुश्रूषणेयत्न मकरोद्गालवोमुनिः। गौरवाद्बहुमानाच्च हार्देनप्रियकाम्यया ॥ १४ ॥ अथवर्षशतेपूर्णे धर्मःपुनरुपागमत् । वासिष्ठंवपुरास्थाय कौशिकंभोजनेप्स या ॥ १५ ॥ सदृष्ट्वाशिरसाभक्तं ध्रियमाणंमहर्षिणा । तिष्ठतावायुभक्षेण विश्वामि- त्रेणधीमता ॥१६॥ प्रतिगृह्यततोधर्मस्तथैवोष्णंतथानवम् । भुक्त्वाप्रीतोस्मिविप्रर्षे तमु क्त्वासमुनिर्गतः ॥१७॥ क्षत्रभावादपगतो ब्राह्मणत्वमुपागतः । धर्मस्यवचनात्प्रीतो

भोजन करलिया, उसके पीछे जब खीर तैयारहुई तो वैसीही गर्महो खीर विश्वामित्रजीभी लेकरआये । ११ । धर्मजी ने कहा अबतो हम भोजन करचुके तबतक ठहरो फिर देखा जायगा इतना कह धर्म चलेगये, व विश्वामित्रजी वैसेही खीर का पात्र हाथमें लिये खड़े ही रहगये । १२ । जब देरहुई धर्म न आयेतो खीरका पात्र उठाय शिरपरधर श्वास चढ़ाय वृक्षके ठूंठके समान निश्चल व निश्चेष्टहो उसी स्थानपर खड़ेरहे । १३ । जब विश्वा- मित्रजी इसप्रकार कठिन तपधारी धर्मके लिये हव्य शिरपर धर तप करनेलगे तो उनका गौरव बहुसमान, सौहार्द, व प्रियकी कामनासे गालवमुनि शुश्रूषा करने लगे । १४ । इस प्रकार सौ वर्ष पूरे होनेपर धर्मजी फिर आये, व फिर वसिष्ठही का रूप धारण करके व भोजनही करनेकी इच्छा से । १५ । देखातो महर्षि विश्वामित्रजी वायु भक्षण करतेहुये शिरपर वही खीरका पात्रधरे खड़े हैं । १६ । धर्मजी ने जो मुनि के शिरपरसे खीर उतारी तो वह वैसीही गर्म व वैसीही नई विदित हुई इससे भोजनकर व प्रसन्नहो मुनि चलेगये । १७ । व प्रसन्न होकर कहगये कि जाव अब क्षत्रियका भाव तुम्हारा जाता रहै व ब्राह्मण-

---

He took the food brought by other ascetics. In the meantime Viswamitra brought him the hot dish of rice. Dharm asked him to stay as long as he was dining Having said this Dharm went away, but Vishwamitra stood with the vessel of rice in his hand. After a long time when Dharm did not return, Vishwamitra with the vessel of rice in his hand suppressed his breath and stood up there like an immoveable wood. When Vishwamitra was thus performing severe asceticism, Galav muni looked after his comforts. After a hundred years Dharm came again in the disguise of Vishishth and saw Vishwamitra with the vessel of rice on his head subsisting on air. He took down the vessel of milk and rice from the head of

विश्वामित्रस्तथाभवत् ॥ १८ ॥ विश्वामित्रस्तुशिष्यस्य गालवस्यतपस्विनः । शुश्रूषयाचभक्त्याच प्रीतिमानित्युवाचह ॥ १९ ॥ अनुज्ञातोमयावत्स यथेष्टंगच्छगालव। इत्युक्तःप्रत्युवाचेदं गालवोमुनिसत्तमम् ॥ २० ॥ प्रीतोमधुरयावाचा विश्वामित्रंमहाद्युतिम् । दक्षिणाःकाःप्रयच्छामि भवतेगुरुकर्मणि ॥ २१ ॥ दक्षिणाभिरुपेतंहि कर्मसिध्यतिमानद । दक्षिणानांहिदातावै अपवर्गेणयुज्यते ॥ २२ ॥ स्वर्गेक्रतुफलंतद्धि दक्षिणाशान्तिरुच्यते । किमाहरामिगुर्वर्थं ब्रवीतुभगवानिति ॥ २३ ॥ जानानस्तेन भगवान् जितःशुश्रूषणेनवै । विश्वामित्रस्तमसकृद्गच्छगच्छेत्यचोदयत् ॥ २४ ॥ असकृद्गच्छगच्छेति विश्वामित्रेणभाषितः । किंददानीतिबहुशो गालवःप्रत्यभाषत ॥ २५ ॥ निर्बन्धतस्तुबहुशोगालवस्यतपस्विनः । किञ्चिदागतसंरम्भो विश्वामित्रोऽब्र

त्वको प्राप्त होजावो, तबसे धर्मकी आज्ञा से विश्वामित्रजी ब्राह्मणत्वको प्राप्तहोगये । १८ । व विश्वामित्रजी अपने तपस्वी शिष्य गालवकी शुश्रूषा से बहुत प्रसन्न होकरबोले । १९ । कि गालव अब हमारी आज्ञाहै जाव यथेष्ट घूमो तुमको कहींसे कुछ भयनहीं, इतना सुन गालव विश्वामित्रजी से बोले कि महाराज आपको गुरुठहरे बताइये गुरुदक्षिणा कौन २ वस्तु आपके लिये लावें । २० । क्योंकि दक्षिणाओं के सहित मनुष्य के कर्म सिद्धहोते हैं, व दक्षिणाओं के देनेवालापुरुष मोक्षपाताहै । २२ । स्वर्ग में यज्ञफल भोगकरने के लिये दक्षिणा शान्ति कहातीहै इससे आप अपने मुखसे कहें कौनवस्तु गुरुदक्षिणालावें । २३ । गालवकी सेवाही से अपने को वशपराभू विश्वामित्रजी ने कहा जाव २ सब हम दक्षिणापाचुके । २४ । इसप्रकार बारम्बार विश्वामित्रजी ने कहा जाव २ व बारम्बार गालव कहते रहे बतावो क्या दें । २५ । जब गालव ने बड़ाही हठकिया किवारह विश्वा

Vishwamitra and found it as fresh and hot as it was when it was brought. He ate of it and went away well pleased, saying, "Leave your Kshatryahood and become a Brahman." From that time Vishwamitra became a Brahman and being pleased with the attendance of his disciple, Galav, he said to him, "I bid you to depart from me wherever you please without fear." At this Galav inquired of him what he should bring as his fee. 20. "For" said he, "he who pays the fee, has all his desires accomplished and he goes to heaven. To enjoy the merit of sacrifices in heaven, *donations* are beneficial. Let me therefore, know, what thing should I offer you as your fee." But thinking the attendance of Galav a sufficient fee he said that he did not require any fee from him. But Galav insisted in his request and continued telling the same thing over and over again *till*

धींदिदम् ॥ २६ ॥ एकतःश्यामकर्णानां हयानांचन्द्रवर्चसाम् । अष्टौशतानिमेदेहि गच्छगालवमाचिरम् ॥ २७ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते
षडधिकशततमोऽध्यायः १०६ ॥

नारदउवाच । एवमुक्तस्तदातेन विश्वामित्रेणधीमता । नास्तेनशेतेनाहारं कुरुतेगालवस्तदा ॥ १ ॥ त्वगस्थिभूतोहरिण श्चिन्ताशोकपरायणः । शोचमानोऽतिमात्रंस दह्यमानश्चमन्युना । गालवोदुःखितोदुःखा द्विललापसुयोधन ॥ २ ॥ कुतःपुष्टानिमित्राणिकुतोर्थाःसञ्चयःकुतः । हयानाञ्चन्द्रशुभ्राणां शतान्यष्टौकुतोमम ॥ ३ ॥ कुतोमेभोजनेश्रद्धा सुखश्रद्धाकुतश्चमे । श्रद्धामेजीवितस्यापि छिन्नाकिंजीवितेनमे ४॥

मित्रजीका कहा न मानाथो विश्वामित्रजी को कुछ क्रोध आगया व बोले कि । २६ । एक कान काला और बाकी सब चंद्रमाकी सदृश श्वेतरंग वाले आठसौ घोड़े हमकोदो २७ ॥

अध्याय ॥ १०७ ॥

नारद मुनि बोले जब धीमान् विश्वामित्रजी ने ऐसाकहा तो तब से नतो गालवसे बैठतेबने न सोतेबने न खाते बस बड़ी चिन्ता में लगगये ।१। यहांतक कि मारे चिन्ताके शरीरमें हाड़ व चाम रहगया मांस रक्त सब सूखगया मारेशोक के रात्रि दिन जलनेलगे, बार २ सोच करते शरीर मारेक्रोधके जलनेलगा ।२। ऐसे पुष्ट मित्र कहां मिलें जिन से इतना धनका संचयहो कि आठसौ एक श्यामकर्ण व सर्वांग चन्द्रमाके समान उजलाहो ऐसे घोड़े जिनकहीं हाय अब हमको घोड़े कहां से मिलेंगे । ३ । अब हमको भोजन में श्रद्धाकहां हो व सुखकी श्रद्धा कहांहो अब तो हमारे प्राण रखनेहीकी श्रद्धा टूटगई

---

he had exasperated Viswamitra, who said, "Well, bring me eight hundred horses with only one ear black and the rest of the body white like the moon."27.

CHAPTER CVII

Narad said that on hearing the words of Viswamitra the wise Galav became uneasy and could find no rest or sleep and had no pleasure in any thing. He became lean day by day till there was only skin and bones left on his body. His body was always burning with *the fever of anger. He had no wealthy friends to help him in* the matter and was wondering where to get eight hundred white horses with only one ear black. He could get no *pleasure in food* and sleep and found life a burden to him. He intended to cross the

अहंपारेसमुद्रस्य पृथिव्यानापरंपरात् । गत्वात्मानंविमुञ्चामि किंफलंजीवितेनमे ॥ ५ ॥ अधनस्याकृतार्थस्य त्यक्तस्यविविधैःफलैः। ऋणधारयमात्रस्य कुतःसुखमनीहया ॥ ६ ॥ सुहृदांहिधनंमुक्त्वा कृत्वाप्रणयमीप्सितम् । प्रतिकर्तुमशक्तस्य जीवितान्मरणंवरम् ॥ ७ ॥ प्रतिश्रुत्यकरिष्येतिकर्तव्यंतदकुर्वतः । मिथ्यावचनदग्धस्य इष्टापूर्तंप्रणश्यति ॥ ८ ॥ नरूपमनृतस्यास्ति नानृतस्यास्तिसन्ततिः । नानृतस्याधिपत्यञ्चकुतएवगतिःशुभा ॥ ९ ॥ कुतःकृतघ्नस्ययशः कुतःस्थानंकुतःसुखम् । अश्रद्धेयःकृतघ्नोहि कृतघ्नेनास्तिनिष्कृतिः ॥ १० ॥ नजीवत्यधनःपापः कुतःपापस्य तन्त्रणम् । पापोध्रुवमवाप्नोति विनाशंनाशयन्कृतम् ॥ ११ ॥ सोऽहंपापःकृतघ्नश्चकृप

व हमजीकर क्याकरेंगे । ४ । अवहम यातो समुद्रके उसपार जाय व पृथ्वी के उसपार कहीं लोकालोकके पास पारजाय प्राणछोड़ें क्योंकि हमारेजीनेसे अब क्याहै । ५ । जो पुरुष निर्द्धन होनेसे अर्थ नहीं सिद्धकरता व विविध प्रकारके फलोंसे त्यागादियागया व उसकेऊपर किसीका ऋणरहाहै उसको सुखकहांहै । ६ । सुहृदोंका धनखाय व वांछित अपने उनसे पूर्णकराय जिसने उसके बदलेमें सुहृदों का प्रत्युपकार न किया उसके जीनेसे मरना श्रेष्ठहै । ७ । व जिसने प्रतिज्ञाकी कि हम तुम्हारा कार्य्यकरेंगे व प्रत्युपकार न करसका वह मिथ्या वचनसे जलजाता है व उसका यज्ञ ताल खुदाना बाग लगाना इंदारा बँधाना आदि कर्म सब नष्टहोजाता है । ८ । झूठ कहनेवाले का न तो रूप रहजाय व न उसके सन्तति रहै, न उसके राज्यादि अधिकार रहें फिर शुभगति उसकी कहांसेहो । ९ । व जो पुरुष नेकी करनेवाले की नेकी नहीं मानता उसको कृतघ्न कहते हैं उसको यश कहां होसक्ता है व स्थान कहां मिल सक्ता व सुखभी उसे कहांहै कृतघ्न विश्वास करने के योग्य नहीं इस से वह पापोंसे नहींछूटसक्ता । १० । निर्द्धनी पापी नहीं जीता, व पापी कुटुम्बका धारण कहां करसक्ताहै, व पापीनिश्चय है कि नाशको प्राप्तहोजाताहै क्योंकि उसने

---

ocean and to die on the other side of it. He said within himself, "Where can a man find happiness who is deprived of the pleasures and enjoyments of the world ? Life is better than death when one cannot do good to his friends and he who cannot fulfil his promise burns with the falsity of his promise, and all his good works are useless. A liar loses his beauty, progeny, kingdom and virtue and cannot get the merit of his good deeds. He who is not grateful for the good done to him, loses his fame here and merit in the next world. He has no happiness. Such an ungrateful being is not worthy of trust and can not be free from sins. 10. A poor sinful man cannot live; for he cannot maintain his family and is surely a

पश्चात्तापोपिच । गुरोर्यःकृतकार्य्यः संस्तत्करोमिनभाषितम् ॥ १२ ॥ सोहंप्राणान विमोक्ष्यामि कृत्वायत्नमनुत्तमम् । अर्थितानमयाकाचित् कृतपूर्वादिवौकसाम् ॥१३॥ मानयन्तिचमांसर्वे त्रिदशायज्ञसंस्तरे । अहन्तुविबुधश्रेष्ठ देवत्रिभुवनेश्वरम् ॥ १४ ॥ विष्णुगच्छाम्यहंकृष्णं गतिंगतिमतांवरम् । भोगायस्मात्प्रतिष्ठन्ते व्याप्यसर्वानसुरा सुरान् । प्रणतोद्रष्टुमिच्छामि कृष्णंयोगिनमव्ययम् ॥ १५ ॥ एवमुक्तेसखातस्य गरुडो विनतात्मजः । दर्शयामासतमाह संहृष्टःप्रियकाम्यया ॥ १६ ॥ सुहृद्भवानममतः सुहृदांञ्चमतःसुहृत् । ईप्सितेनाभिलाषेण योक्तव्योविभवेसति ॥ १७ ॥ विभवश्चा स्तिमेविप्र वासवावरजाद्द्विज । पूर्वमुक्तस्त्वदर्थञ्चकृतः कामश्चतेनमे ॥ १८ ॥ समवा ने गच्छत्वं नयिष्येत्वांयथासुखम् । देशंपारंपृथिव्यावा गच्छगालवमाचिरम् १९॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते
सप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७ ॥

उपकारका नाश कियाहै । ११ । सो हम पापीहैं व कृतघ्नभीहैं व कृपण और झूठेभी हैं क्योंकि गुरुका कार्य्य करनेको कहा अब नहीं करते । १२ । इस से हम कुछ उत्तम यत्नकर प्राणछोड़ेंगे क्योंकि आजतक हमने देवताओं सेभी कभी कुछ नहीं मांगाहै मनुष्योंकी कौन गणनाहै । १३ । व सब देवगण यज्ञादि कराने के समय हम को मानते हैं इससे अब हम देवताओं में श्रेष्ठ तीनों भवनों के ईश्वर गतिमानों में श्रेष्ठ कृष्ण भगवान्की शरणको जायँगे । १४ । जिस में सब लोग टिके हैं जिनके समान सुर असुर किसी में भोग नहीं है, इससे प्रणतहो अव्यय योगी कृष्णचन्द्रहीके दर्शनको जायँगे । १५ । ऐसा गालवने कहा है कि उनके सखा विनता के पुत्र गरुड़जी वहां आये व दर्शन दे उनसे प्रिय करनेकी इच्छा से बोले । १७ । इन्द्रके छोटे भाई ने मेरेकहने से तुम्हारा काम करना स्वीकार किया है इससे तुम शीघ्र मेरेसाथ चलो । १९ ।

---

sinner as he is ungrateful. I am sinful, ungrateful, miserly and a liar, for I have not done the work of my preceptor, I shall therefore lose my life in doing some good deed; for I have never begged anything even from gods nothing to say of men. The gods pay me respect in the work of sacrifices I shall therefore seek refuge with Krishn the lord of the three worlds, the refuge of gods, who has no equal among gods and asurs.' While he was amidst these thoughts, Garur the son of Vinata came to him and said, "The younger brother of Indra has consented at my request to do your work. You must therefore go with me without delay to the country of Jaladhabar."19.

सुपर्ण उवाच । अनुशिष्टोस्मिदेवेन गालवज्ञानयोनिना । ब्रूहिकामन्तुकांवा पि द्रष्टुंप्रथमतोदिशम् ॥ १ ॥ पूर्वांवादक्षिणांवाहं मथवापश्चिमांदिशम् । उत्तरांवा द्विजश्रेष्ठकुतोगच्छामिगालव ॥ २ ॥ यस्यामुदयतेपूर्वं सर्वलोकप्रभावनः । सविता यत्रसन्ध्यायां साध्यानांवर्त्ततेतपः ॥ ३ ॥ यस्यांपूर्वंमतिर्याता ययाव्याप्तमिदंजगत् । चक्षुषीयत्रधर्मस्य यत्रचैवप्रतिष्ठिते ॥ ४ ॥ हुतंयतोहुतंहव्यं सर्पतेसर्वतोदिशम् । एतद् द्वारंद्विजश्रेष्ठ दिवसस्यतथाध्वनः ॥ ५ ॥ अत्रपूर्वंप्रसूताव दाक्षायण्यःप्रजाःस्त्रियः । यस्यांदिशिप्रवृद्धाश्च कश्यपस्यात्मसम्भवाः ॥ ६ ॥ अतोमूलंसुराणां श्रीर्यत्रशक्रो

अध्याय ॥ १०८ ॥

गरुड़जी बोले कि हे गालव ज्ञानकी योनि श्रीविष्णु भगवान् ने हमको आज्ञादेदी है कि तुम गालव का अभीष्ट करो इससे बताओ प्रथम किस दिशाको देखने चलें । १ । हे गालव प्रथम पूर्वदिशाको चलें वा दक्षिणको व पश्चिमको व उत्तरको बताइये । २ । जिस दिशा में सबलोक के प्रकाशक सूर्य प्रथम उदयहोतेहैं व सन्ध्यासमय साध्यगण जहां तप करते हैं । ३ । व जिस दिशामें पूर्व समय में बुद्धिजाती है जिससे यह सब जगत व्याप्त है, व जहां यम के आज्य भाग टिकते हैं । ४ । जिस दोनों आज्यभागों के मध्य में खीर वनाय होम करने से सब दिशाओं में पहुँचताहै, व यही दिनका तथा देवयान का द्वारहै । ५ । इसी दिशामें दक्षकी कन्या अदिति दनुकाष्ठा-दिकोंने पूर्व समय में प्रजाओं को उत्पन्न किया, व इसी दिशा में कश्यपजी के देहसे उत्पन्न सब प्रजा प्रथम बढ़ीहैं । ६ । व यही देवताओं की जड़है व यहीं इन्द्रका अभि-

CHAPTER CVIII

"Vishnu the seat of wisdom," said Garur to Galav, "has ordered me to accomplish your desire. Tell me where to go first. Whether we should go to the East, West, South or North. Shall we go in the direction in which the sun rises first in the morning, where the Sadhyas perform their asceticism in the evening, where wisdom goes in the first instance, filling the whole world? Do you wish to go to the region where stay the sacrificial portions of clarified butter, where rice boiled with milk and poured in fire is distributed in all directions and which is the entrance of the divine road? That is the place in which Aditi, Danu and other daughters of Daksh produced all the living beings who had Kashyap for

ऽभ्यषिच्यत । सुरराज्येनविप्रर्षे देवैश्चात्रतपश्चितम् ॥७॥ एतस्मात्कारणाद्ब्रह्मन पूर्वे त्सेषादिगुच्यते । यस्मात्पूर्वतरेकाले पूर्वमेवावृतासुरैः ॥ ८ ॥ अतएवचपूर्वेषां पूर्वा माशांविचक्षते । पूर्वसर्वाणिकार्य्याणि दैवानिसुखमीप्सिताम् ॥ ९ ॥ अत्रदेवानजगौ पूर्वं भगवान्लोकभावनः । अत्रैवोक्तासवित्रासीत् साविभ्रीवह्मवादिषु ॥ १० ॥ अत्र दत्तानिसूर्य्येण यजूंषिद्विजसत्तम । अत्रलब्धवरःसोमः सुरैःक्रतुषुपीयते ॥ ११ ॥ अत्रतृप्ताहुतवहाः स्वांयोनिमुपभुञ्जते । अत्रपातालमाश्रित्य वरुणःश्रियमापच ॥१२॥ अत्रपूर्ववसिष्ठस्य पौराणस्यद्विजर्षभ । सूतिश्चैवप्रतिष्ठाच निधनञ्चप्रकाशते ॥ १३ ॥ ओङ्कारस्यात्रजायन्ते सृतयोदशतीर्दश । पिवन्तिमुनयोयत्र हविर्धूमंस्मधूमपाः ॥१४॥

षेकहुआ है, व यहीं इन्द्रने व सब देवताओंने भी तपस्याकी है । ७ । इसीकारण से यह पूर्वदिशा कहाती है, जिससे कि पूर्वकालमें देवताओं ने प्रथम इसी दिशाको अङ्गीकार किया है ।८। इसीसे इसको पूर्वजों की पूर्वदिशा कहते हैं, इससे जो सुखकी इच्छाकरे तो प्रथम सब कार्य्य पूर्वही दिशाकी ओर मुखकर करे ।९। व ब्रह्माजी ने इसी दिशाकी ओर मुखकर वेद पहिले बनाया है, व सूर्य्य नारायणजी ने भी ब्रह्मवादियों से इसी दिशामें गायत्री कही है । १० । व यहीं सूर्य्य भगवान् ने यजुर्वेद याज्ञवल्क्यजी को दिया है, व यहीं वरदान पाय देवतालोग यज्ञों में सोमनाम लता पीते हैं । ११ । व यहीं तृप्तहोकर अग्निलोग घृत दुग्ध जलादि को भोगते हैं व यहां पाताळको प्राप्तहो वरुणजी ने श्रीपाई है । १२ । व इसी दिशा में पूर्वकाल में जब निमि के शाप से वशिष्ठजी का शरीर त्यागहुआ तो मित्रावरुण के यज्ञ में फिर कुम्भ में उत्पन्नहुये।१३। व यहीं ओंकार के दशसहस्र मार्ग उत्पन्न हुये, जिन मार्गों में मुनिलोग हवि भोजन

---

their father. It is the birth place of gods; Indra was installed there and there Indra and other gods performed ascoticism. It is therefore called Poorva or first direction. It is also called the first direction of the forefathers. One should therefore stand with his face towards the East in the commencement of every action, Brahma had commenced the composition of the Vedas with his face towards the East and Surya promulgatad the Gayatri among learned men in this very direction. 10. It was here that Surya gave the Yajur-ved to Yagyavalk. It is here that the gods drink Som juice and Agni is gratified with the libations of butter, milk and water. From this place Varun went to the nother world and got so much wealth. It was here that when Vashisth had died of the curse of Nimi, he was born again from the sacrificial jar of Mitravarun. Here were

प्रोक्षितायत्रबहवो वराहाद्यामृगावने । शक्रेणयज्ञभागार्थे दैवतेषुप्रकल्पिताः ॥ १५ ॥ अत्राहिताःकृतघ्नाश्च मानुषाश्चासुराश्चये । उदयंस्तानहिसर्वान्वै क्रोधाद्धन्तिविभावसु ॥ १६ ॥ एतद्द्वारंत्रिलोकस्य स्वर्गस्यचसुखस्यच । एषपूर्वोदिशांभागो विशावोत्रय दीच्छसि ॥ १७ ॥ प्रियंकार्यंहिमेतस्य यस्यास्मिवचनेस्थितः । ब्रूहिगालवयास्यामि शृणुचाप्यपरांदिशम् ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते अष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८ ॥

करते व धूमपा अर्थात् धुआं पीनेवाले मुनिलोग धुआं पीते हैं । १४ । व जिन ओङ्कार के मार्गों में इन्द्रजी ने बाराहादि सैकड़ों मृग बनमें प्रोक्षित किये हैं, व वे सब यज्ञों में देवगणों के भाग के अर्थ कल्पित हैं । १५ । व इसी दिशा में उदयहो शत्रु कृतघ्न मनुष्य व असुर जो कोई हों सबकी आयुर्बल सूर्यनारायण नाश करते हैं । १६ । व यही स्वर्ग सुख व लोकका द्वारहै व यही पूर्व दिशाका भागहै जो इच्छाहो तो प्रथम हम तुमभी इसी में प्रवेश करें । १७ । हमको आज्ञाहुई है कि हम आपको कार्य करें इस लिये हे गालव जिधर तुम कहो वहीं चलें १८ ॥

---

made the ten thousand ways of Om, in which the Munis eat of the sacrificial things and the smoke-drinkers live upon smoke. It was in the above-mentioned ways that Indra sprinkled over hundreds of boars and deer and made them the sacred beasts for sacrifices. It is in this direction that the sun lessens the life of envious and ungrateful men and asurs. It is the entrance to heaven and happiness. Yonder is that direction, the east. Let us go there if you like. I am ready to do your work Galav and shall go wherever you will like me to go." 18.



सुपर्ण उवाच । इयंविवस्वतापूर्वं स्रौतेनविधिनाकिल । गुरवेदक्षिणाद्त्तादक्षिणेत्युच्यतेचादिक् ॥ १ ॥ अत्रलोकत्रयस्यास्य पितृपक्षःप्रतिष्ठितः । अत्रोष्मपाणांदेवानां निवासःश्रूयतेद्विज ॥ २ ॥ अत्रविश्वेसदादेवाः पितृभिःसार्द्धमासते । इज्यमानाःस्मलोकेषु सम्प्राप्तास्तुल्यभागताम् ॥ ३ ॥ एतद्द्वितीयंद्धर्मस्य द्वारमाचक्षतेद्विज । त्रुटिशोलवशश्चापि गण्यतेकालनिश्चयः ॥ ४ ॥ अत्रदेवर्षयोनित्यं पितृलोकर्षयस्तथा । तथाराजर्षयःसर्वे निवसन्तिगतव्यथाः ॥ ५ ॥ अत्रधर्मश्चसत्यञ्च कर्मचात्रनिगद्यते । गतिरेषाद्विजश्रेष्ठ कर्मणामवसायिनाम् ॥ ६ ॥ एषादिक्साद्विजश्रेष्ठ यांसर्वंप्रतिपद्यते । वृतात्वनवबोधेन सुखन्तेननगम्यते ॥ ७ ॥ नैर्ऋतानांसहस्राणि

अध्याय १०९ ॥

गरुड़जी बोले कि यह दिशा पूर्वकाल में सूर्यनारायण ने यज्ञकराके अपनेगुरु कश्यपजी को दक्षिणादी है इससे यहदक्षिणदिशा कहलाती है । १ । इसी दिशामें तीनोंलोक के पितरलोग टिकेरहते हैं व यहीं उष्णअन्न खीरादि भोजन करनेवाले पितरलोगों का निवास सुनाजाता है । २ । व यहीं आर्यमादि पितरों के साथ तेरह विश्वेदेव गण सदा बसतेहैं, जो कि सब लोकों में पूजितहोने के कारण तुल्य भागपाने के अधिकारी होगये हैं । ३ । यह धर्म का दूसरा द्वार कहा जाताहै, व यहीं त्रुटिलव से ले सबकालकी गिनती होती है । ४ । व यहीं सब देवर्षि पितृलोकर्षि व राजर्षिलोग निर्भयहोकर सदा बसते हैं । ५ । व धर्म सत्य व कर्म सब यहीं कहाजाता है, व कर्म करनेवालोंकी गति यहीं होती है । ६ । हे द्विज श्रेष्ठ यह वह दिशा है जिसमें सबलोग प्राप्तहोतेहैं, क्योंकि मरण समय में अन्धकार से सब आच्छादित होजाते हैं इससे जितने मरतेहैं सबको प्रथम इस दिशा में आना पड़ता है । ७ । व हे द्विज श्रेष्ठ यहां सहस्रों लाखों राक्षस भरेपड़ेहैं, व वे सब का प्रतिकूलही करने के लिये बनाये गये हैं परन्तु जिन्होंने भगवद्भजनादि से अपना

CHAPTER CIX

Garur said, "This is the direction that Surya gave as fee for sacrifice to his preceptor, Kashyap, and therefore it is called Dakshin (given) South. Pitars of the three worlds who dine upon hot food reside in this direction. Here live the thirteen Vishwedevas with the pitars who are respected by the three worlds and receive equal shares with them. This is the second entrance of dharm and the divisions of time are computed at this place. Here live all the rishis whether gods, pitris or kings, free from fear. It is here that dharm, truth and deeds bear fruit This is the place where all men go after death when they are surrounded by darkness. This direction is full of hundreds of thousands of rakshasas who are the enemies of mankind; but they are visible only to the ungodly. Here are the ravines of

वहून्यत्रद्विजर्षभ । सुप्तानिप्रतिकूलानि द्रष्टव्यान्यकृतात्मभिः ॥ ८ ॥ अत्रमन्दरकुञ्जेषु विप्रर्षिसदनेषुच । गायन्तिगाथागन्धर्वाश्चित्तबुद्धिहराद्विज ॥ ९ ॥ अत्रसामानिगाथाभिः श्रुत्वागीतानिरैवतः । गतदारोगतामात्यो गतराज्योवनंगतः ॥ १० ॥ अत्रसावर्णिनाचैवयवक्रीतात्मजेनच । मर्यादास्थापितात्रह्मन्यांसूर्योनातिवर्त्तते ११॥ अत्रराक्षसराजेन पौलस्त्येनमहात्मना । रावणेनतपश्चीर्त्वा सुरेभ्योऽमरतावृता १२॥ अत्रवृत्तेनवृत्रोपि शक्रशत्रुत्वमीयिवान् । अत्रसर्वासवःप्राप्ताः पुनर्गच्छन्तिपञ्चधा ॥ १३ ॥ अत्रदुष्कृतकर्माणो नराःपच्यन्तिगालव । अत्रवैतरणीनाम नदीवितरणैर्वृता ॥ १४ ॥ अत्रगत्वासुखस्यान्तं दुःखस्यान्तंप्रपद्यते । अत्रावृत्तोदिनकरः सुरसं

मन अपने अधीन नहीं किया उन्हीं को वे राक्षस दिखाई देते हैं औरों को नहीं दिखाई देते । ८ । व यहीं मन्दराचलके कुञ्जों में व विप्रर्षियों के स्थानों में गन्धर्वलोग चित्तबुद्धि हरने वाली पुरानी कथा गातेहैं । ९ । यहीं कथाओं से सामवेद गातेहुये सुनकर अपने को मरेहुये न जानकर राजा रैवत अपने स्थानको आये वहां अमात्य पुत्र स्त्री बन्धुओं को मरे देख जान फिर वनको चलेगये । १० । यहीं यवक्रीतके पुत्र सावर्णिमनु ने सूर्य रथकी पहियों के चाहक्रोंकी मर्य्यादा बनादी है उस मर्य्यादाको सूर्यभी उल्लंघन नहीं करसक्ते । ११ । व यहीं पुलस्त्यजी के पौत्र महात्मा राक्षसों के राजा रावणने तपकर देवताओं से मारे न जानेके लिये अमरताका वरदान पाया है । १२ । व यहीं अपने सदाचारसे वृत्रासुरभी इन्द्रजीकी शत्रुताको प्राप्तहुआ, व यहीं सब प्राण पहुँचकर फिर प्राण, अपान, समान उदान, व्यान, इनपांच संज्ञाओं को प्राप्तहोते हैं । १३ । हे गालव पापकर्म करनेवाले मनुष्य अपने पापों से पचतेहैं, व वैतरणीनाम नदी में पड़ने वाले मनुष्यों के लिये यहां वैतरणीनाम नदी बनाई है । १४ । यहीं जाय पुरुष नरकको प्राप्तहोता है व इसी मार्ग होकर स्वर्ग कोभी जाता है व यहीं कर्कायनको प्राप्तहो सूर्य आर्द्रा नक्षत्रमें सुन्दर रसको

Mandarachal where Brahman sages dwell, the Gandharvas sing the heart enchanting stories of old. On hearing those Vedic hymns, king Raivat was led to think himself not dead and returned home; but finding his ministers, sons, wife and kinsmen dead went to forest. 10 Savarn-muni the son of Yavakrit has made this place a boundary which the chariot of sun can not break through. Here Ravan the king of Rakshases and grandson of Pulastya performed ascesticism and got the boon of being indestructible by gods. By his good deeds Vritrasur was strong enough to raise himself the enemy of Indra. Here the vital air gets the five names of Pran, Apan, Saman, Udan and Vyan. Here, Galav, the sinners are punished for their sins and fall into the Vaitarni. From here people go into hell and heaven and it is here that sun meets the Tropic of Cancer and

सरत्तोयः ॥ १५ ॥ काष्ठाञ्चसाग्रवासिष्ठीं हिममुत्सृजतेपुनः । अत्राहंगालवपुरा क्षुधार्त्तःपरिचिन्तयन् ॥ १६ ॥ लब्धवानयुध्यमानौद्वौ बृहन्तौगजकच्छपौ । अत्रच क्रधनुर्नामसूर्याज्जातोमहानृषिः ॥ १७ ॥ विदुर्यंकपिलंदेवं येनार्त्ताःसगरात्मजाः । अत्रसिद्धाःशिवानाम ब्राह्मणावेदपारगाः ॥ १८ ॥ अधीत्यसकलान्वेदाँल्लेभिरे मोक्षमक्षयम् । अत्रभोगवतीनाम पुरीवासुकिपालिता ॥ १९ ॥ तक्षकेणचनागेन तथैवैरावतेनच । अत्रनिर्याणकालेपि तमःसम्प्राप्यतेमहत् ॥ २० ॥ अभेद्यंभास्करे णापि स्वयंवाकृष्णवर्त्मना । एषतस्यापितेमार्गः परिचार्यस्यगालव । ब्रूहिमेयदिगन्त व्यं प्रतीचीं शृणुचापराम् ॥ २१ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते नवाधिकशततमोऽध्यायः १०९ ॥

जल वर्षाकालों बरसाते हैं । १५ । व फिर जब यहां से उत्तरदिशाको चलेजाते हैं तो फिर सूर्यनारायण हिम छोड़ने लगतेहैं, व हे गालव इसी दिशामें एक समय हमने भूखों के मारे चिन्तनाकीथी तो । १६ । आपसमें युद्ध करतेहुये दो बड़ेभारी हाथी व कछुआ पाये थे, व यहीं चक्रधनुनाम बड़ेभारी ऋषि सूर्य से उत्पन्न हुये । १७ । जिनको लोग कपिलदेव कहते हैं जिन्होंने राजासगरके पुत्रों को भक्षण करलिया, व यहीं शिवनाम वेदवादी ब्राह्मणलोग सिद्ध हुये हैं । १८ । व सब वेद पढ़ नाशरहित मोक्ष उन्होंने पाया, व यहीं वासुकि नागकी पाली भोगवतीनाम पुरी है । १९ । व उसकी रक्षा तक्षकनाग व ऐरावतनागभी करता है, व यहां मरणकाल में बड़ा अंधेरा रहताहै । २० । उस अंधेरे को न सूर्य मिटासके हैं न अग्नि, हे गालव यह भी मार्ग तुम्हारे सेवाकरने के योग्य है जो इसमें चलना अंगीकारहो तो हमसे कहो नहीं तो अब हमसे पश्चिमदिशा सुनो ॥ २१ ॥

---

brings showers of refreshing rain and again turning towards north he lets fall the shower of snow. It was here that when I was thinking of how to appease my excessive hunger I found a large elephant and a tortoise fighting together. Here Chakradhanu a great rishi was born of Surya. He is known as Kapildev who destroyed the sons of king Sagar. Here the Brahmans who have read the Vedas, get salvation. In this direction is Bhogwati the city of Nagas ruled over by Takshak and Airawat. Here people go in excessive darkness after death. The sun and fire cannot drive away that darkness. I am ready to go with you Galav through this way, if not, I shall mention the west. 21.

सुपर्ण उवाच । इयंदिग्दयिताराज्ञो वरुणस्यतुगोप्पतेः । सदासलिलराजस्यप्रतिष्ठाचादिरेवच ॥ १ ॥ अत्रपश्चादहःसूर्यो विसर्जयतिगाःस्वयम् । पश्चिमेत्यभिविख्याता दिगियंद्विजसत्तम ॥ २ ॥ यादसामत्रराज्येन सलिलस्यचगुप्तये । कश्यपो भगवान्देवो वरुणस्याभ्यषेचयत् ॥ ३ ॥ अत्रपीत्वासमस्तान्वै वरुणस्यरसांस्तुषट् । जायतेतरुणःसोमः शुक्लस्यादौतमिस्रहा ॥ ४ ॥ अत्रपश्चात्कृतादैत्या वायुनासंयतास्तदा । निःश्वसन्तोमहावातै रर्दिताःसुषुपुर्द्विज ॥ ५ ॥ अत्रसूर्यंप्रणयिनं प्रतिगृह्णातिपर्वतः । अस्तोनामयतःसन्ध्या पश्चिमामतिसर्पति ॥ ६ ॥ अतोरात्रिश्चनिद्राच निर्गतादिवसक्षये । जायतेजीवलोकस्य हर्तुमर्धमिवायुषः ॥ ७ ॥ अत्रदेवींदितिंसुप्ता

अध्याय ॥ ११० ॥

गरुड़जी बोले कि यह दिशा जलके स्वामी वरुण देवताको बहुत प्रियहै, व सूर्यनारायण इसी दिशामें प्रतिष्ठित होजाने पर फिर यहां के लोगों को नहीं दिखाई देते । १ । व यहीं सूर्य सन्ध्याके समय अपने किरणोंका विसर्जन करतेहैं, इसीसे यह पश्चिमा कहाती है । २ । व इस दिशामें जल जन्तुओं के राजा जलकी रक्षाके लिये कश्यप भगवान्ने वरुणजी का अभिषेक किया । ३ । यहां वरुणके छवोंरस पानकर चन्द्रमा तरुण होजाते हैं इससे शुक्लपक्षके आदिमें अन्धकारको दूर करदेते हैं । ४ । यहां अच्छीतरह सम्बद्ध दैत्यों को पवनदेवने पीड़ित करदिया इस से प्रचण्ड पवनके लगनेसे बार २ श्वासें लेतेहुये पीड़ित हुये इस से सब सोगये । ५ । यहांपर झुकेहुये सूर्य्यको अस्तनामापर्वत आड़करता है इसीसे पश्चिमा सन्ध्या आजाती है । ६ । व इसी सन्ध्याही के होनेके कारण रात्रिहोजाती है तब लोगोंको निद्रा आने लगती है वह जानों प्राणियोंकी आधी आयुर्बल हरनेके लिये प्राप्तहोती है । ७ । व इसी सन्ध्यामें सोई गर्भवती दितिके

CHAPTER CX

"This direction is much liked by Varun the lord of waters," said Garur, "the sun is too much exalted here and is not seen to the people of this region. Here the sun distributes his rays in the evening and hence its name Pashchima. In this direction Varun was anointed king by Kashyap for the protection of the aquatic animals. Here the moon gets her youth by drinking the six tastes of Varun and during the *lighted fortnight* dispels the darkness of the earth. Here the Daityas were defeated by Pavandev who blew over them a fresh gale and brought upon them sleep. In this direction the sun goes behind Astachal in the evening and brings forth night and sleep which comes to men to deprive them of half their life and strength. Indra entered the womb of *Diti* who was sleeping in the

नात्मवस्तधारिणीम् । विगर्भाकरोच्छक्रो यत्रजातोमरुद्गण ॥ ८ ॥ अत्रमूलंहिम वतो मन्दरंयातिशाश्वतम् । अपिवर्षसहस्रेण नचास्यान्तोधिगम्यते ॥ ९ ॥ अत्रका ञ्चनशैलस्य काञ्चनाम्बुरुहस्यच । उदधेस्तीरमासाद्य सुरभि क्षरतेपयः ॥ १० ॥ अत्रमध्येसमुद्रस्य कबन्धः प्रतिदृश्यते । स्वर्भानोःसूर्य्यकल्पस्य सोमसूर्य्यौजिघांसतः ॥ ११ ॥ सुवर्णशिरसोप्यत्र हरिरोम्णःप्रगायतः । अदृश्यस्याप्रमेयस्य श्रूयतेविपु लोध्वनिः ॥ १२ ॥ अत्रध्वजवतीनाम कुमारीहरिमेधसः । आकाशेतिष्ठतिष्ठेति तस्थौ सूर्य्यस्यशासनात् ॥ १३ ॥ अत्रवायुस्तथावह्निरापः खञ्चापिगालव । आह्निकञ्चै वनैशञ्च दुःखस्पर्शंविमुञ्चति ॥ १४ ॥ अतःप्रभृतिसूर्य्यस्य तिर्य्यगावर्त्ततेगतिः । अत्रज्योतींषिसर्वाणि विशन्त्यादित्यमण्डलम् ॥ १५ ॥ अष्टाविंशतिरात्रञ्च चंक्रम्य सहभानुना । निष्पतन्तिपुनःसूर्य्यात् सोमसंयोगयोगतः ॥ १६ ॥ अत्रनित्यंस्रव

पेटके भीतर जाय इन्द्रने उनको गर्भ रहित करादिया इसीसे ४९ पवन उत्पन्न हुये । ८ । व इसी दिशामें हिमवान् पर्वतका मूल मन्दराचल समुद्र में डूबगयाहै जिस हिमवान्के मूलका व समुद्रका अन्त सहस्रों वर्षोंमेंभी नहीं मिलसक्ता । ९ । यहां सुवर्णमय कमल युक्त सुवर्ण के सुमेरुपर्वतके समीपवर्ती समुद्रके तुल्य सरोवर में कामधेनु दुग्ध चुआतीहै । १० । व यहीं समुद्र के मध्य में सूर्य्य चन्द्रमाको मारनेकी इच्छा से सूर्य्यही के तुल्य प्रतापी राहुका कबन्ध दिखाई देता है । ११ । व यहां श्यामकेश युक्त सुवर्ण शिरोनाम मुनिका गाना सुनाई देताहै पर उनकारूप नहीं दिखाईदेता न उसका प्रमाण मिलसक्ताहै।१२।यहां हरि मेधानाम मुनिकी ध्वजवतीनाम कुमारी सूर्य्यकी आज्ञासे खड़ेरहो खड़ेरहो ऐसा कहती आकाशमें खड़ी रहतीहै ।१३। व यहां पवन, अग्नि, जल व आकाश, रात्रिका व दिनका दुःखस्पर्श छोड़ते हैं ।१४। यहांसे फिर सूर्य्यकीचाल तिरछी होजातीहै व यहां सूर्य्यका मण्डल आदित्यादि चमकनेवाले पदार्थों में प्रवेशकर जाताहै । १५ । जैसे चन्द्रमा २८ रात्रियों के पीछे अमावास्या रात्रिमें सूर्य्य के संग रह अस्तहोजाता फिर

evening and destroyed her embryo, bringing forth Pavan. Here Mandarachal the seat of snow went down into the ocean and no trace of it has been found for thousands of years. Here the golden lotus is produced in sea like lakes which lies beside the golden Sumeru and in which Kamdhenu drops her milk. 10. Here in the midst of the sea Rahu is seen rising to destroy the sun and the moon. Here are heard the songs of Suvarn-shira the ascetic with black-hair, but he is seen by none. Here Dhwajwati, the daughter of Harimedha the ascetic, stands in the air, asking every one to stand still. Here air, fire, water and space are not afflicted by the touch of day and night. From here the sun's course again becomes oblique and his rays enter all the shining substances like fire. Like the moon who sets

न्वीनां प्रभवः सागरोदयः । अत्रलोकत्रयस्यापरिहिमुन्तिवरुणालये ॥ १७ ॥ अत्र पन्नगराजस्या प्यनन्तस्यनिवेशनम् । अनादिनिधनस्यात्र विष्णोःस्थानमनुत्तमम् ॥ १८ ॥ अत्रानलसखस्यापि पवनस्यानिवेशनम् । महर्षेःकश्यपस्यात्र मारीचस्यनिवेशनम् ॥ १९ ॥ एषतेपश्चिमोमार्गो दिग्द्वारेणप्रकीर्तितः । ब्रूहिगालवगच्छावो बुद्धिःकाद्विजसत्तम ॥ २० ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते
दशाधिकशततमोऽध्यायः ११० ॥

सुपर्ण उवाच । यस्मादुत्तार्यतेपापाद्य स्मान्निःश्रेयसोश्नुते । अस्मादुत्तारणबलादुत्तरेत्युच्यतेद्विज ॥१॥ उत्तरस्यहिरण्यस्य परिवापश्चगालव । मार्गपश्चिमपूर्वाभ्यां

अलग होजाता वैसेही सब नक्षत्र सूर्य के योगसे अस्त होजाते हैं पीछे निकल आते हैं । १६ । यहां नित्य बहतीहुई नदियों से समुद्र पूर्ण होता है व यहां तीनलोक के जल समुद्रमें टिकते हैं । १७ । यहां अग्निके सखा पवनका स्थानहै व मरीचि के पुत्र महर्षि कश्यपजी का स्थान यहीं है । १९ । यह हमने पश्चिम दिशाके मार्गका वृत्तान्त तुम से कहा यदि इधर चलनेकी इच्छा होतो चलो । २० ।

अध्याय १११ ॥

गरुड़जी ने कहा कि हे ब्राह्मण देव जिससे कि यह दिशा पापसे उतारती है व जिस से कि इस दिशा के जानेवालों को कल्याण भोगना होताहै व पापसे उबार जिससे लोगोंको स्वर्गपर चढ़ाती है इसीसे यह उत्तरदिशा कहाती है । १ । हे गालव उत्तर दिशामें जो निधियों का स्थानहै उसीमें होकर स्वर्गका मार्ग है व यह मार्ग पश्चिम पूर्व दिशाओंके

---

with the sun every twentyninth night, all the stars set with the sun and come out again. Here the Ocean is filled by the ever-flowing streams and the waters of the three worlds are collected here. It is the dwelling place of Pavan the companion of Agni and Kashyap, the son of Marichi also dwells here. I have told you all about the west. Tell me Galav if you wish to go in this direction."20.

CHAPTER CXI

Garur said to the Brahman, "This direction (North) is called Uttar because it removes sins and leads to heaven. The way to heaven lies through the northern Ocean. It is midway between the East and the West. The best feature of this direction is that neither the people of bad nature nor those having no control over their minds or irreligious ones live there. In this direction live Narayan, Krishn, Vishnu, Nar and Brahma at Badrikashram. In

दिग्भ्यांवैध्यमःस्मृतः ॥२॥ अस्यांदिशिवरिष्ठायां मुत्तरायांद्विजर्षभ । नासौम्योना विधेयात्मा नाधर्मोवसतेजनः ॥ ३ ॥ यत्रनारायणःकृष्णो जिष्णुश्चैवनरोत्तमः । ब दर्य्यामाश्रमपदे तथाब्रह्माचशाश्वतः ॥ ४ ॥ अत्रवैहिमवत्पृष्ठे नित्यमास्तेमहेश्वरः । प कृत्यापुरुषःसार्द्धं युगान्ताग्निसमप्रभः ॥ ५ ॥ नसदृश्योमुनिगणै स्तथादेवैसवासवैः । गन्धर्वयक्षसिद्धैर्वा नरनारायणादृते ॥ ६ ॥ अत्रविष्णुःसहस्राक्षः सहस्रचरणोव्ययः सहस्रशिरसःश्रीमानेकः पश्यतिमायया ॥ ७ ॥ अत्रराज्येनविप्राणां चन्द्रमाश्चाभ्य षिच्यत । अत्रगङ्गांमहादेवः पतन्तींगगनाच्युताम् ॥ ८ ॥ प्रतिगृह्यददौलोके मानुषे ब्रह्मवित्तम । अत्रदेव्यातपस्तप्तं महेश्वरपरीप्सया ॥ ९ ॥ अत्रकामश्चरोषश्च शैलश्चो माचसम्बभुः । अत्रराक्षसयक्षाणां गन्धर्वाणाञ्चगालव ॥ १० ॥ आधिपत्येनकैलासे

मध्यमें है । २ । हे द्विजश्रेष्ठ, इस सब से अतिशय श्रेष्ठ उत्तर दिशामें न असौम्य मनुष्य बसते, न अजित चित्त पुरुष बसते न अधर्मात्मा बसतेहैं । ३ । किन्तु इस दिशामें नारायण कृष्ण विष्णु भगवान् व नरजी व ब्रह्माजी बदरिकाश्रम में सदा बसे रहते हैं ।४। व इसी दिशा में हिमवान् पर्व्वतके पृष्ठपर महेश्वर महादेवजी नित्यही टिके रहतेहैं व सदा पार्व्वतीही के संग रहतेहैं, प्रकाश उनका युगान्त के अग्नि के समानहै । ५ । इन महादेवजी को नर नारायणजी को छोड़ और कोई मुनिगण व इन्द्र सहित देवतागण व यक्ष गन्धर्व्व सिद्धादि नहीं देखते । ६ । व यहां जिनके सहस्र चरण सहस्र नेत्र, सहस्र शिर नाश रहितहैं वे एक श्रीविष्णुजी माया युक्त शिवको देखतेहैं । ७ । व इस दिशामें ब्राह्मणों के राजा बनाय चन्द्रमाजी अभिषेकित हुये हैं, व इसी दिशामें आकाशसे गिरतीहुई गंगाजीको महादेवजी ने अपनी जटामें लिया फिर पृथ्वीतलपर छोड़दिया । ८ । तब से गंगाजी मानुषलोक में आईं, व इसी दिशामें महादेवजी के पानेके लिये पार्व्वती देवीने तप किया था । ९ । व यहां कामरोषपर्व्वत व पार्व्वती ये सब शोभित होतेहैं, व यहीं राक्षस

the same direction lives Shiv the god of gods on the back of the Himalayas and is always accompanied by Parvati. His glory is *like that of the fire at the termination of the world's life. Except* Nar and Narayan no Munis, Indra and other gods, yakshes, Gandharvas, sidhas and others can see *Mahadev. Only Vishnu* who has a thousand feet, eyes and heads and who is attended by Maya, can see Shiv. There Chandra was anointed king of the Brahmans. Shiv received in his locks the Ganges as she fell from heaven and left her to flow on earth. From that time the Ganges has come into the world of men. Parvati performed a severe asceticism to obtain Shiv. Kamrosh hill and Parvati beautify that direction and *Kuver is made king over Rakshases, yakshes and Gandharvas.* He was anoined king at Kailas and there is situated his forest known

धनदोप्यभिषेचितः । अत्रचैत्ररथंरम्य मत्रवैखानसाश्रमः ॥ ११ ॥ अत्रमन्दाकिनीचैव मन्दरश्चद्विजर्षभ । अत्रसौगन्धिकवनं नैर्ऋतैरभिरक्ष्यते ॥ १२ ॥ शाद्वलंकदलीस्कन्ध मत्रसन्तानकानगाः । अत्रसंयमनित्यानां सिद्धानांस्वैरचारिणाम् ॥ १३ ॥ विमानान्यनुरूपाणि कामभोग्यानिगालव । अत्रतेऋषयःसप्त देवीचारुन्धतीतथा १४ अत्रतिष्ठतिवैस्वाति रत्रास्याउदयःस्मृतः । अत्रयज्ञंसमासाद्यध्रुवंस्थाता पितामहः१५ ज्योतींषिचन्द्रसूर्यौच परिवर्तन्तिनित्यशः । अत्रगङ्गामहाद्वारं रक्षन्तिद्विजसत्तम ॥ १६ ॥ धामानामममहात्मानो मुनयःसत्यवादिनः । नतेषांज्ञायतेमूर्तिर्नाकृतिर्नतपश्चितम् ॥ १७ ॥ परिवर्तःसहस्राणि कामभोज्यानिगालव । यथायथाप्रविशति

यक्ष गंधर्वों के । १० । स्वामी कुबेरजी किये गये हैं व उनका अभिषेकभी इसी दिशामें कैलाश पर्व्वतपर हुआहै, व यहीं कुबेरजी का चैत्ररथ नाम वनहै, व यहीं वैखानसोंका आश्रम है । ११ । व यहीं मन्दाकिनी गंगा व मन्दराचल है, व यहां सौगन्धिक नाम वनहै जिसकी रक्षा राक्षसलोग करते हैं । १२ । व यहां हरी २ सुन्दर घास होती है व केलेभी बहुतहोतेहैं, व वृक्ष ऐसे यहां हैं जिनके भोजन से सन्तान होती है, व यहां संयम करनेवाले यथेच्छाचारी सिद्धोंके । १३ । काम भोगादियुक्त विमान घूमाकरतेहैं, व यहींवशिष्ठ कश्यपादि सप्तर्षि व वशिष्ठजीकीस्त्री अरुंधती रहतीहैं । १४ । व यहीं स्वातीनक्षत्र रहता व यहीं उसका उदयभी होता, व यहीं यज्ञकर ब्रह्माजीने ध्रुवको स्थापित कियाहै ।१५। व यहीं सब नक्षत्रगण व सूर्य्य चन्द्रमा नित्य भ्रमण करतेहैं, व हे द्विजसत्तम यहीं धामानाम महात्मा ब्राह्मणलोग गंगाद्वारकी रक्षा करतेहैं, व वे लोग बड़ेसत्यवादीहैं, नतो उनकी मूर्त्ति जानीजाती है न कुछ आकृति न उनका किया हुआ तपही कुछ दिखाई देताहै । १७ । व हे गालव यहां यज्ञमें यथेच्छ भोजन करने के लिये पात्रभी नहीं दिखाई देते न उन

---

as Chaitrarath. The dwelling of Vaikhanas rishis is also situated there. 10. *In the same direction* are Mandakini Ganga, Mandrachal and the Saugandhik forest guarded by rakshases. The place abounds in green grass, plantain trees and the plants which are eaten for the production of offspring. Here roam the cars of Sidhas who enjoy their life of ease and plenty Here live the seven rishis, Vishisth, Kshyap and others and Arundhati the wife of Vashishth. It is the home of the Nakshatra known as Swati who rises from there. Here Brahma performed sacrifices and stablished the pole star. Here roam all the constellations with the sun and the moon. Dhamas who are Bramans of great respect, protect the entrance of the Ganges. *They are very truthful; but none can see their faces,*

तस्मात्परतरंनरः ॥ १८ ॥ तथातथाद्विजश्रेष्ठ प्रविलीयन्तिगात्रव । नैतत्केनचिदन्येन गतपूर्वंद्विजर्षभ ॥ १९ ॥ ऋतेनारायणंदेवं नरंवाजिष्णमव्ययम् । अत्रकैलासमित्युक्तं स्थानमैलविलस्यतत् ॥ २० ॥ अत्रविद्युत्प्रभानाम जज्ञिरेऽप्सरसोदश । अत्रविष्णुपदंनाम क्रामताविष्णुनाकृतम् ॥ २१ ॥ त्रिलोकविक्रमे ब्रह्मन्नुत्तरां दिशमाश्रितम् । अत्राजामरुत्तेन यज्ञेनेष्टंद्विजोत्तम ॥ २२ ॥ उशीरबीजेविमर्षे यत्रजाम्बूनदंसरः । जीमूतस्यात्रविमर्षे रूपतस्थमहात्मनः ॥ २३ ॥ साक्षाद्धैमवतःपुण्यो विमलःकनकाकरः । ब्राह्मणेषुचयत्किञ्चित् स्वंतंकृत्वाधनंमहत् ॥ २४ ॥ वव्रेधनंमहर्षिः सजैमूतं

लोगों का आना जाना ही स्थूलदृष्टि वाले पुरुषों को दिखाई देताहै, व उस हिमस्थानसे परे कोई नर वहां नहीं दिखाई देता । १८ । क्योंकि वहां जानेसे शीत मारे जीवके प्राणी मर कर गलजावेहैं, इससे आजतक धन धामानाम ब्राह्मणों के सिवाय औरकोई नहींगया १९ या नारायणदेव व नरजी वहांको गये हैं क्योंकि वे तो नाश रहितहोने के कारण कभी नष्ट होतेही नहीं, व यहीं कुबेरजी का कैलासनाम स्थानहै । २० । व यहीं विद्युत्प्रभा नाम दश अप्सरा उत्पन्न हुईहैं, व यहीं वामनजीका विष्णुपद नाम स्थानहै । २१ । जब बलि के छलने के लिये उन्हों ने तीनोंलोकों को नापाथा तब इसी उत्तरदिशामें वह स्थान बन गया है, व इसी उत्तरदिशामें राजा मरुत्तने महायज्ञ कियाहै । २२ । व उनके यज्ञकरनेका स्थान उशीर बीजस्थानहै जहां कि सोनेका तड़ाग बनाहै, व वह स्थान जीमूतनाम विप्रर्षि के समीप विद्यमान है । २३ । उसका कनकाकरभी नाम है यह हिमवान् पर्वतपर बहुत पुण्यस्थान गिना जाताहै, व ब्राह्मण लोगों में जो कुछ बहुत धन दिखाई देताहै । २४ । वह उन्हीं जीमूत ब्राह्मणही का अंगीकार कियाहै इसीसे जैमूत धन कहाताहै, व यहां

bodies and sacrifices. No sacrificial vessels are seen there, nor are the movements of those people seen by worldly eyes. No human being is seen beyond the abode of snow; for those attempting to pass it die of excessive cold and none except the Dhamas have yet gone beyond it. Of course, Nar and Narayan have been beyond that place, for they are immortal and therefore free from death. Kailas the abode of Kuver is also situated there. 20. There are born the ten apsaras known as Vidyutprabhas at Vishnupad a place sacred to the Dwarf is also situated there from the time when he measured the three regions to deceive Vali. King Marut performed a grand sacrifice in the North at Vshirbij where the golden tank is situated near the house of Jimut the Brahman sage. It is also known as Kanakakar and is reckoned as the holiest place on the Himalayas.

तद्धनंततः । अत्रनित्यंदिशापालाः सायंप्रातर्द्विजर्षभ ॥ २५ ॥ कस्यकार्य्यंकिमिति वै परिक्रोशन्तिगालव । एवमेषाद्विजश्रेष्ठ गुणैरन्यैर्दिगुत्तरा ॥ २६ ॥ उत्तरेतिपरिख्याता सर्वकर्मसुचोत्तरा । एताविस्तरशस्तात तवसंकीर्तितादिशः ॥ २७ ॥ चतस्रः क्रमयोगेन कामाशांगन्तुमिच्छसि । उद्यतोऽहंद्विजश्रेष्ठ तवदर्शयितुंदिशः । पृथिवीञ्चाखिलां ब्रह्मंस्तस्मादारोहमांद्विज ॥ २८ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते एकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११ ॥

गालव उवाच । गरुत्मन्भुजगेन्द्रारे सुपर्णविनतात्मज । नयमांताक्ष्यपूर्वेणय त्रधर्मस्यचक्षुषी ॥ १ ॥ पूर्वमेतांदिशंगच्छ यापूर्वंपरिकीर्तिता । देवतानांहिसान्निध्यं

नित्यही दिशाओं के रक्षक ब्राह्मण श्रेष्ठ लोग सन्ध्या समय व प्रातःकाल । २५ । किसका कौन कार्यहै यह सब से पुकार २ कहा करतेहैं, हे द्विज श्रेष्ठ इसतरह इन गुणों से व अन्यगुणोंसे भी यह दिशा उत्तर कहाती है । २६ । जिससे इसका उत्तर नामहै इससे सब कर्मों के विषय में यह उत्तरा अर्थात् उत्कृष्टतर है, हे तात ये विस्तार पूर्वक तुम से, क्रमसे चारोंदिशा हमने बताईं अब बताइये आप किस दिशाको चलना चाहतेहैं, हम तुम को सब दिशा दिखाने को उद्यत हैं, व सब पृथ्वीभर दिखाने को उद्यतहैं इससे हमारे ऊपर चढ़ो ॥ २८ ॥

अध्याय ॥ ११२ ॥

पूर्व अध्यायकी कथा सुन गालवजी गरुड़ से बोले कि हे गरुड़ भुजगेन्द्र नाशन, सुपर्ण, विनतातनय बताक्ष्र्य, जहां यज्ञ के आज्यभागाख्य स्थानहैं पूर्व मार्ग होकर ।१।

The great wealth possessed by Brahmans once belonged to Jimut and is hence known as Jimut's wealth. Here good Brahmans announce the morning and evening duties in a loud voice and hence the direction is called Uttar and is the best of directions. I have given you an account of all the four directions in detail. Please tell me, where you wish to go. I am ready to show you all the directions on the earth. You may sit on my back." 27. २८

CHAPTER CXII

Having heard the above from Garur said, "Carry me, destroyer of snakes, son of Vinata, towards the East where, as you said, the gods are to be met with and where true dharm is to be found. I wish to

मत्रकीर्तितवानासि ॥ २ ॥ अत्रसत्यञ्चधर्मश्च त्वयासम्यक्प्रकीर्तितः । इच्छेयन्तुसमागन्तुं समस्तैर्दैवतैरहम् । भूयश्चतान्सुरानद्रष्टु मिच्छेयमरुणानुज ॥ ३ ॥ नारद उवाच । तमाहविनतासूनु रारोहस्वेतिवैद्विजम् । आरुरोहाथसमुनिर्गरुडंगालवस्तदा ॥ ४ ॥ गालव उवाच । क्रममाणस्यतेरूपं दृश्यतेपन्नगाशन । भास्करस्येवपूर्वाह्णे सहस्रांशोर्विवस्वतः ॥ ५ ॥ पक्षवातप्रणुन्नानां वृक्षाणामनुगामिनाम् । प्रस्थितानामिवसमं पश्यामीहगतिंखग ॥ ६ ॥ ससागरवनामुर्वी सशैलवनकाननाम् । आकर्षन्निवचाभासि पक्षतानेनखेचर ॥ ७ ॥ समीननागनक्रञ्च खमिवारोप्यतेजलम् । वायुना चैवमहता पक्षवातेनचानिशम् ॥ ८ ॥ तुल्यरूपाननान्मत्स्यांस्तथातिमितिमिङ्गिलान् ।

प्रथम हमको पूर्वही दिशामें लेचलो जिसका वर्णन तुम ने सबसे पहिले कियाहै, क्योंकि इस दिशामें तुमने देवताओंकी सान्निध्य बताई है ।२। व यहां सत्य धर्म तुमने अच्छीतरह बतायाहै, वहां चल हम सब देवताओं से मिला चाहते हैं, क्योंकि बार२ हम सब देवताओं के दर्शन किया चाहते हैं । ३ । नारदजीबोले कि यह सुन गरुड़ गालव ब्राह्मण देव से बोले कि अच्छा हमारे ऊपर चढ़ो, तब गालव मुनि गरुड़ के ऊपर चढ़े व उनसेबोले । ४ । कि हेगरुड़ चढ़नेमें जो तुम्हारारूप प्रातः कालके सूर्यनारायणहीके समान प्रकाशित होताहै । ५ । व तुम्हारी चाल ऐसे वेगसे होती है उस के कारण जिन पीछेवाले वृक्षों में तुम्हारे पंखोंकी पवन लगती है जानों वे उखड़ेहुये पीछेपीछे चलेहीआते हैं इससे तुम्हारी चालहीके संग दिखाईदेते हैं । ६ । व हे गरुड़, समुद्र पहाड़ बनादि सहित पृथ्वीको तुम पक्षोंके पवन से खींचतेही से विदित होतेहो । ७ । व तुम्हारे पक्षोंके पवनसे प्रेरित मछली, सर्प नाकादि सहित जल जानों आकाशही में आरोपित होताहै ।८। व एकही से रूप मुखवाले मत्स्य तथा तिमि व तिमिंगिलनाम मछलियों को व मनुष्यके मुखके आकार

---

see all the gods there as I have long felt the desire of it" Narad said that having heard thus Garur took Galav on his back and the latter said to the former, "You look like the rising sun in your flight and your velocity is so great that the trees which are touched by the wind from your wings, seem to be dragged behind you. You look as if you were dragging behind you the whole earth together with her seas, mountains and forests. Agitated with the wind of your wings, the waters together with the fishes, serpents and crocodiles appear to be touching the sky. The large and small fish as well as the serpents which bear human faces look as if they were agitated. My ears are so filled with the noise of the Ocean that I

नागाश्वनरवक्त्रांश्च पश्याम्युन्मथितानिव ॥ ९ ॥ महार्णवस्यचरवैः श्रोत्रेमेवधिरीकृते । नशृणोमिनपश्यामि नात्मनोवेद्मिकारणम् ॥१०॥ शनैःसतुभवान्यातु ब्रह्मवध्यामनुस्मरन् । नदृश्यतेरविस्तात नदिशोनचखंखग ॥ ११ ॥ तमएवतुपश्यामिशरीरं तेनलक्षये । मणीवजात्यौपश्यामि चक्षुषीतेऽहमण्डज ॥ १२ ॥ शरीरन्तुनपश्यामि तवचैवात्मनश्चह । पदेपदेतुपश्यामि शरीरादग्निमुत्थितम् ॥ १३ ॥ समेनिर्वाप्यसहचक्षुषीश्राम्यतेपुनः । तन्नियच्छमहावेगं गमनेविनतात्मज ॥ १४ ॥ नमेप्रयोजनंकिञ्चिद्गमने पन्नगाशन । सन्निवर्त्तमहाभाग नवेगंविषहामिते ॥ १५ ॥ गुरवेसंश्रुतानीह शतान्यष्टौहिवाजिनाम् । एकतःश्यामकर्णानां शुभ्राणांचन्द्रवर्चसाम् ॥ १६ ॥ तेषांश्चैवापवर्गाय मार्गंपश्यामिनाण्डज । ततोयंजीवितत्यागे दृष्टोमार्गोमयात्मनः

के मुखवाले सर्पोंको उन्मथितही से देखते हैं । ९ । व समुद्रके शब्दों से हमारे कान ऐसे बहिरे होगयेहैं कि हम कुछ न सुनतेहैं न कुछ देखतेहैं न अपने प्रयोजनकी सुधि हमको आती है । १० । इसब्रह्मवधका स्मरण करतेहुये आप धीरे २ चलें क्योंकि अब हमको न सूर्य्य दिखाई देते हैं न दिशा जान पड़ती न आकाश दिखाई देताहै । ११ । खाली अन्धकारही दिखाई देताहै शरीर उसीसे लक्षित करते हैं, व तुम्हारे नेत्रखानिसे उत्पन्न उत्तम मणियोंके समान चमकते दीखते हैं । १२ । व शरीर तो न हम तुम्हाराही देखते न अपनाही, देखते हैं, पैर २ पर शरीर से अग्नि उठता दिखाई देताहै । १३ । इस से हमको मन्दकर वह हमारे नेत्र बन्द किये देताहै, इससे हे गरुड़जी अब बड़ेवेगसे न चलो । १४ । हे पन्नगाशन चलने में अब हमारा कुछ प्रयोजन नहीं है इस से लौटचलिये हम आपका वेग नहीं सहसक्ते । १५ । व जो गुरुजी को हमने चन्द्रमा के समान उजले व एककान के काले आठसौ घोड़े देनेको कहे हैं । १६ । उनसे उऋण होनेका मार्ग अब हमनहीं देखते, इस से यह प्राणत्याग होने का मार्ग

---

can neither hear or see anything nor can I remember the purpose of my coming here. 10. Be mindful of the great destruction and move slowly; for, I can neither see the sun nor discern the directions nor the sky. I see darkness on all sides, though your eyes shine like jewels in a mine. I see neither your body nor mine; but sparks of fire come out of your body at every step and dazzle my eyes. Be pleased to lessen your velocity a little. I find no pleasure in this journey; move back destroyer of snakes, as I cannot bear your velocity. I promised to give my preceptor eight hundred white horses with only one ear black; but I find no way to be *able to fulfil*

गतेनोक्तौ विष्टरेसंन्निषीदतुः ॥ २ ॥ सिद्धमन्नतयादत्तं बलिमन्त्रोपबृंहितम् । भुक्त्वा तृप्तावुभौभूमौ सुप्तौतावनुमोहितौ ॥ ३ ॥ मुहूर्त्तात्प्रतिबुद्धस्तु सुपर्णोगमनेप्सया ; अथभ्रष्टतनूजाङ्गमात्मानं ददृशेखगः ॥ ४ ॥ मांसपिण्डोपमोऽभूत्स मुखपादान्वितः खगः । गालवस्तंतथादृष्ट्वा विमनाःपर्यपृच्छत ॥ ५ ॥ किमिदंभवताप्राप्त मिहागमनजंफलम् । वासोयमिह कालन्तु कियन्तंनौभविष्यति ॥ ६ । किन्नुतेमनसा ध्यातमशुभं धर्मदूषणम् । नह्ययंभवतःस्वल्पो व्यभिचारोभविष्यति ॥ ७ ॥ सुपर्णो थाब्रवीद्विप्रं प्रध्यातंवैमयाद्विज । इमांसिद्धामितोनेतुं तत्रतत्रप्रजापतिः ॥ ८ ॥ यत्रदेवोमहादेवो यत्रविष्णुःसनातनः । यत्रधर्मश्चयज्ञश्च तत्रेयंनिवसेदिति ॥ ९ ॥

करके खड़ेहोगये तब उस तपस्विनी ने आगतस्वागत पूँछ आसन बताया उसपर दोनों बैठ गये । २ । व बलिमन्त्र से बढ़ाया हुआ बना बनाया अन्न उसने दिया भोजनकर तृप्तहो दोनों भूमिपरलेट सोरहे । ३ । एक मुहूर्त भरके पीछे चलनेकी इच्छासे गरुड़जागे, देखातो अपने सब पंख व अंग भ्रष्ट होगये थे । ४ । केवल मुख पैर रहगये और मांसके पिंडके समान सब अंगहोगये गालवने उनकी यह दशा देख उदासीनहो गरुड़से पूँछा । ५ । कि आपने यहां आनेसे यह कौन फलपाया, अबयहां हम तुम कितने समयतक रहेंगे । ६ । तुमने प्रत्यक्षमेंतो कुछ पापकियाही नहीं पर मनसे कौन धर्म दूषण पापकिया इस में आपका थोड़ा धर्मातिक्रमण न होगा बहुतही कुछ मानसी पाप किया है जिससे तुरन्त ऐसी दशा हुई । ७ । गरुड़बोले हे ब्राह्मण देव हमने अपने मनमें यह विचाराथा कि इस सिद्ध तपस्विनीको यहां से वहां उठाकेचलें जहां ब्रह्माजी रहतेहैं, व जहां महादेव व सनातन भगवान् श्री विष्णुजी रहते हैं व जहां धर्म व यज्ञहैं वहीं यह तपस्विनी भी चलकेबसे यहां

---

great sanctity named Shandili and stood before her with great respect. She welcomed them kindly and after mutual greetings she pointed them to a seat. They sat there and took the sacrificial food offered to them by her. After a little rest Garur woke up and intended to go on his journey, but found his wings and limbs destroyed. Only his mouth and legs were whole, the rest appeared like a mass of flesh. Galav saw him in this plight and said, "For what are you thus punished here and how long shall we have to remain here? You have committed here no sin apparently, but you must have committed some great sin within your mind for which you are thus punished." "I thought," said Garur, "of taking this ascetic woman to the place where Brahma Vishnu, Shiv, Dharm and Yagyas live and intended to release her from this forest life."

॥ १७ ॥ नैवमेस्तिधनंकिञ्चिन्न धनेनान्वितःसुहृत् । नचार्थेनापिमहता शक्यमेतद्व्यपोहितुम् ॥ १८ ॥ नारद उवाच । एवंबहुचदीनञ्चब्रुवाणं गालवंतदा । प्रत्युवाचव्रजन्नेव प्रहसन्विनतात्मजः ॥ १९ ॥ नातिप्रज्ञोसि विप्रर्षेयोत्मानं त्यक्तुमिच्छसि । नचापिकृत्रिमःकालः कालोहिपरमेश्वरः ॥ २० ॥ किमहंपूर्वमेवेहभवता नाभिचोदितः । उपायोत्रमहानस्ति येनैतदुपपद्यते ॥ २१ ॥ तदेषऋषभोनाम पर्वतः सागरान्तिके । अत्रविश्रम्यभुक्त्वाच निवर्तिष्यावगालव ॥ २२ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते
द्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

नारद उवाच । ऋषभस्यततःशृंगं निपत्यद्विजपक्षिणौ । शाण्डिलींब्राह्मणींतत्र ददृशातेतपोन्विताम् ॥ १ ॥ अभिवाद्यसुपर्णस्तु गालवश्चाभिपूज्यताम् । तयाचस्वा-

हमको दिखाई देता है । १७ । नतो हमारे कुछधन है न हमारा मित्रही कोई धनवान् है, व न बहुतधनसेभी यह ऋण छूटसक्ता है क्योंकि आठसौ श्यामकर्ण घोड़े कोई कितनाभी धनखर्च करे तोभी कहां पासक्ता है । १८ । नारदजी दुर्य्योधनसे बोले कि इसप्रकार बहुतदीन वचन कहकर गालवसे हँसकर गरुड़ ने कहा तुम बुद्धि हीनहो इस लिये मरजाना चाहते हो मृत्यु अकाल नहीं होसक्ती । २० । तुमने हम से पहलेही यह क्यों नहीं कहा इसका एक अति उत्तम उपायहै सागरके पास गिरिराज पर चलकर भोजन करो और फिर हम तुम्हारे कार्य के लिये चलेंगे । २२ ।

अध्याय ॥ ११३ ॥

नारदजीबोले कि यह कह सुन गरुड़ व गालव दोनों ने ऋषभ पर्वत पर उतर महा तपस्विनी शाण्डिली नाम ब्राह्मणी को वहां देखा । १ । व गरुड़ गालव दोनों प्रणाम पूजा

my promise and therefore this way looks fatal to me. I have neither wealth nor a wealthy friend. Nor can this debt be satisfied by a large sum of money; for eight hundred horses with only one ear black cannot be bought with money." Narad then said to Duryodhan that when Galav was thus speaking humbly with Garur, the latter said to him with a smile, "You are a fool that you wish to die. None can die before time. Why did you not say this to me before? I have an easy remedy for this. Let us stop at the mountain near the sea shore and then, after taking some food, I shall go on for your work."22.

CHPTER CXIII

Narad said that after these words both Garur and Galav alighted on the Rishabh mountains. They saw there a Brahman woman of

गतेनोक्तौ विष्टरेसान्निषीदतुः ॥ २ ॥ सिद्धमन्नंतयादत्तं बलिमन्त्रोपबृंहितम् । भुक्त्वा तृप्तावुभौभूमौ सुप्तौतावन्नमोहितौ ॥ ३ ॥ मुहूर्तात्प्रतिबुद्धस्तु सुपर्णोगमनेप्सया । अथभ्रष्टतनूजाङ्गमात्मानं ददृशेखगः ॥ ४ ॥ मांसपिण्डोपमोऽभूत्स मुखपादान्वितः खगः । गालवस्तंतथादृष्ट्वा विमनाःपर्यपृच्छत ॥ ५ ॥ किमिदंभवताप्राप्तमिहागमनजंफलम् । वासोयमिह कालन्तु कियन्तंनौभविष्यति ॥ ६ ॥ किन्नुतेमनसाध्यातमशुभं धर्मदूषणम् । नह्ययंभवतःस्वल्पो व्यभिचारोभविष्यति ॥ ७ ॥ सुपर्णोथाब्रवीद्विप्रं मध्यातंवैमयाद्विज । इमांसिद्धामितोनेतुं तत्रतत्रप्रजापतिः ॥ ८ ॥ यत्रदेवोमहादेवो यत्रविष्णुःसनातनः । यत्रधर्मश्चयज्ञश्च तत्रेयंनिवसेदिति ॥ ९ ॥

करके खड़ेहोगये तब उस तपस्विनी ने आगतस्वागत पूँछ आसन बताया उसपर दोनों बैठ गये । २ । व बलिमन्त्र से बढ़ाया हुआ बना बनाया अन्न उसने दिया भोजनकर तृप्तहो दोनों भूमिपरलेट सोगये । ३ । एक मुहूर्त भरके पीछे चलनेकी इच्छासे गरुड़जागे, देखातो अपने सब पंख व अंग भ्रष्ट होगये थे । ४ । केवल मुख पैर रहगये और मांसके पिंडके समान सब अंगहोगये गालवने उनकी यह दशा देख उदासीनहो गरुड़से पूँछा । ५ । कि आपने यहां आनेसे यह कौन फलपाया, अबयहां हम तुम कितने समयतक रहेंगे । ६ । तुमने प्रत्यक्षमेंतो कुछ पापकियाही नहीं पर मनसे कौन धर्म दूषण पापकिया इससे आपका थोड़ा धर्मातिक्रमण न होगा बहुतही कुछ मानसी पाप किया है जिससे तुरन्त ऐसी दशा हुई । ७ । गरुड़बोले हे ब्राह्मण देव हमने अपने मनमें यह विचाराथा कि इस सिद्ध तपस्विनीको यहां से वहां उठालेचलें जहां ब्रह्माजी रहतेहैं, व जहां महादेव व सनातन भगवान श्री विष्णुजी रहते हैं व जहां धर्म व यज्ञहैं वहीं यह तपस्विनी भी चलकेबसे यहां

---

great sanctity named Shandili and stood before her with great respect. She welcomed them kindly and after mutual greetings she pointed them to a seat. They sat there and took the sacrificial food offered to them by her. After a litule rest Garur woke up and intended to go on his journey, but found his wings and limbs destroyed. Only his mouth and legs were whole, the rest appeared like a mass of flesh. Galav saw him in this plight and said, "For what are you thus punished here and how long shall we have to remain here? You have committed here no sin apparently, but you must have committed some great sin within your mind for which you are thus punished." "I thought," said Garur, "of taking this ascetic woman to the place where Brahma Vishnu, Shiv, Dharm and Yagyas live and intended to release her from this forest life."

सोऽहंभगवतींयाचे प्रणतःप्रियकाम्यया । मयैतन्नाममध्यातं मनसाशोचताकिल ॥१०॥ तदेवंबहुमानात्ते मयेहानीप्सितंकृतम् । सुकृतंदुष्कृतंवात्वं माहात्म्यात् क्षन्तुमर्हसि ११ सातौतदाब्रवीत्तुष्टा पतगेन्द्रद्विजर्षभौ । नभेतव्यंसुपर्णोऽसि सुपर्णत्यजसम्भ्रमम् १२॥ निन्दितास्मित्वयावत्स नचनिन्दांक्षमाम्यहम् । लोकेभ्यःसपदिभ्रश्येद्योमांनिन्देत पापकृत् ॥ १३ ॥ हीनयाऽलक्षणैः सर्वैस्तथाऽनिन्दितयामया । आचारंप्रतिगृह्णन्त्या सिद्धिःप्राप्तेयमुत्तमा ॥ १४ ॥ आचारःफलतेधर्ममाचारःफलतेधनम् । आचारा-च्छ्रियमाप्नोति आचारोहन्त्यलक्षणम् ॥ १५ ॥ तदायुष्मन्खगपते यथेष्टंगम्यतामितः । नचतेगर्हणीयाऽहं गर्हितव्याःस्त्रियःक्वचित् ॥ १६ ॥ भवितासियथापूर्वं बलवीर्यस-

वनमें क्यापड़ी रहे । ९ । इतना गालवसे कह फिर तपस्विनीसेबोले को अब प्रणामकर हम आपसे यह पूंछतेहैं कि हमने आपके प्रिय करनेकी इच्छा से यह विचाराथा कि तुम बेचारी अकेली यहां क्यों पड़ीरहो इस से तुम्हें वहां पहुँचावें । १० । हमने तो आपके मान के लिये ऐसा चाहाथा पर उसको आपने अप्रिय समझा अब चाहे हमने अच्छा किया व खराब किया अपने माहात्म्य से आप क्षमा करें । ११ । यहसुन वह तपस्विनी गरुड़ व गालव दोनों से सन्तुष्ट होकर बोली कि सुपर्ण तुम्हारे अच्छे पक्षथे अब बिना पक्षके होनेसे न डरो व सन्देह छोड़ो । १२ । हे वत्स तुमने मनसे हमारी निन्दाकी थी व निन्दाको हम सह नहीं सकीं, इससे जो पापी हमारी निन्दा करताहै, वह लोकसे भ्रष्ट होजाताहै । १३ । यद्यपि हम सब लक्षणों से हीनहैं व निन्दा करने के योग्यहैं परतोभी हमने आचार ऐसा ग्रहण कियाहै जिससे हमको यहसिद्धि मिली है कि जो तुम्हारी निन्दाकरे वह लोकसे भ्रष्ट होजाय । १४ । धर्म और धन आचारसे फलताहै आचारसे श्रीमिलतीहै और आचारही बुराई को दूरकरताहै इस से हे खगपति तुमजहां चाहे वहां जाओ हम तुम्हारी निन्दाके योग्य नहीं है । १६ । तुम फिर बलवीर्य युक्त होजाओ जैसे

Having said this to Galav, Garur turned towards the ascetic woman and said, "I intended *to do* this for your good *and felt* pity on your lonely life. I would have done this out of respect for you; but, it appears that you are displeased. Whether right or wrong I beg *your pardon." At this the woman was pleased with Garur and Galiv* and said, "You have lost your beautiful feathers, but you need not fear and must entertain no anxiety. You insulted me in mind and I *could* not bear it. *He who thinks ill of me, is deprived of worldly* enjoyments. Although I possess no outward qualifications, yet on account of my asceticism I have got the boon. Dharm and wealth *increase with good conduct and Virtue destroys wickedness.* You

मन्वितः । बभूवतुस्ततस्तस्य पक्षौद्रविणवत्तरौ ॥ १७ ॥ अनुज्ञातस्तुशाण्डिल्या यथागतमुपागमत् । नैवचासादयामास तथारूपांस्तुरङ्गमान् ॥ १८ ॥ विश्वामित्रोथ तंदृष्ट्वागालवञ्चाध्वनिस्थितः । उवाचवदतांश्रेष्ठो वैनतेयस्यसन्निधौ ॥ १९ ॥ यस्त्व यास्वयमेवार्थः प्रतिज्ञातोममद्विज । तस्यकालोऽपवर्गस्य यथावामन्यतेभवान् ॥ २० ॥ प्रतीक्षिष्याम्यहंकाल मेतावन्तं तथापरम् । यथासंसिध्यतेविप्र समार्गस्तुनिशम्यताम् ॥ २१ ॥ सुपर्णोथाब्रवीद्दीनं गालवंभृशदुःखितम् । प्रत्यक्षंखल्विदानींमे विश्वामित्रोयदुक्तवान् ॥ २२ ॥ तदागच्छद्विजश्रेष्ठ मन्त्रयिष्यावगालव । नादत्वागुरवेशक्यं कृत्स्नमर्थंत्वयासितुम् ॥ २३ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते त्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११३ ॥

पहले थे वह कहते गरुड़के पंख फिर निकल आये शांडिलिकी आज्ञा पाकर गालव और पक्षी आगे बढ़े परन्तु जहां तक देखा उसप्रकार के घोड़े न मिले । १८ । यह देखकर गालवने मार्ग में गरुड़ से कहा कि हेद्विज मुझेदेने का जो कुछ तुमने करार कियाथा उसको पूरा करो । २० । जिसको हमने पहले परखा था उसको फिर परखेंगे जिस से तुम को घोड़े मिलजावें अति दुखित और दीन मन होकर गालवने खगराज से कहा कि हम को गुरुके मनकी बात विदित होतीहै इस से जोकुछ करना हो विचार कर करो बिना गुरु धन के दिये पीछा न छूटेगा । २३ ।

---

may go, king of birds, wherever you like; regain your former power and strength." Garur regained his feathers as soon as she said this. Both took leave of Shandili and proceeded, onward; but could find no trace of the horses as far as their eyes could reach. Galav then told Garur to help him in the matter. 20. He told him to take him to a place where he could get the object of his desire. Galav was much distressed in his mind and thought of the promise which he had made to his preceptor as he saw no way of releasing himself from the debt without paying his preceptor's fee. 23.



नारद उवाच । अथाहगालवंदीनं सुपर्णःपततांवरः । निर्मितंवह्निनाभूमौ वायुना शोधितंतथा । यस्माद्धिरण्मयंसर्वं हिरण्यन्तेनचोच्यते ॥ १ ॥ धत्तेधारयतेचेदं मेत स्मात्कारणाद्धनम् । तदेतत्त्रिषुलोकेषु धनंतिष्ठतिशाश्वतम् ॥२॥ नित्यंप्रोष्ठपदाभ्यांच शुक्रे धनपतौतथा । मनुष्येभ्यःसमादत्ते शुक्रश्चिवार्जितंधनम् ॥ ३ ॥ अजैक पादहिर्बुध्न्यै रक्ष्यतेधनदेनच । एवंनशक्यतेलब्धु मलब्धव्यंद्विजर्षभ ऋतेचधनमश्वा नां नावाप्तिर्विद्यतेतव ॥ ४ ॥ सत्वंयाचात्रराजानं कञ्चिद्राजर्षिवंशजम् । अपीड्य

अध्याय ॥ ११४ ॥

नारदमुनि बोले कि उड़नेवालों में श्रेष्ठ गरुड़जी अतिदीन गालव से बोले कि हिरण्य अग्नि के सन्तप्त करने से व उसबमय पवन की प्रेरणा से अग्नि से उत्पन्न व पवन से बढ़ायाहुआ समझाजाता है व जिससे कि यह जगत् हिरण्यमय अर्थात् सुवर्ण युक्तहै इसी से सुवर्ण को हिरण्य कहते हैं । १ । व जिससे कि सबकहीं धराजाता व धराया जाता इससे धन कहाताहै सो यह धन बहुत दिनोंसे तीनों लोकों में टिकाहै ।२। सो वह धन जब शुक्रवार को पूर्वभाद्रपदा व उत्तरभाद्रपदा नक्षत्र होते हैं उनमें अग्नि साथ उसकी पूजाकर धनीलोग इकट्ठा करते हैं व अग्नि भी इस योगमें कुबेरके यहां से धनलाय मनुष्योंको देते हैं उस को यज्ञादि कर भूमिमें गाड़नाचाहिये, व जो इसरीतिसे उसकी रक्षा नहीं कीजातीः तो वह सब धन फिर कुबेरके समीप चलाजाताहै । ३ । व फिर पूर्वाफाल्गुनी व उत्तराफाल्गुनी दोनोंनक्षत्रोंमें कुबेरजी उसधनकी रक्षाकरतेहैं इस से जो इनदोनों नक्षत्रों व कुबेरकी प्रार्थना करतेहैं उन्हींको धन मिलताहै औरोंको नहीं, बस इसी उपाय से लोग धनपाते हैं व उपाय न करनेसे नहीं पाते ।४। व विनाधन पाये तुमको घोड़े किसीप्रकार नहीं मिलसक्ते ।५। इससे अब तुम किसी अच्छेवंशके राजर्षिके पासचल

CHAPTER CXIV

Narad muni said that Garur the best of birds thus addressed Galava who was very uneasy in his mind.—" Gold melted over fire takes its proper form by the contact of air and is known as Hiranya because all the world is full of it. It is also called Dhana because it is kept every where in the three worlds. Rich people pour libations over fire when the constellations named Poorva-bhadrapad and Uttara-bhadrapad occur on Fridays in order to increase their wealths and Agni brings them wealth from the house of Kuver. Kuver protects his wealth on those occasions; but those who propitiate the stars and Kuver get wealth and not by any other way. You cannot

राजापौरानहि योनौकुर्यात्कृतार्थिनौ ॥ ५ ॥ अस्तिसोमान्ववायेमे जातःकश्चिन्नृपः सखा । अभिगच्छावहेतंवै तस्यास्तिविभवोभुवि ॥ ६ ॥ ययातिर्नामराजर्षिर्नाहुषः सत्यविक्रमः । सदास्यतिमयाचोक्तो भवताचार्थितःस्वयम् ॥ ७ ॥ विभवश्चास्यसुमहानासीद्धनपतेरिव । एवंगुरुधनंविद्वन् दानेनैवविशोधय ॥८॥ तथातौकथयान्तौच चिन्तयन्तौचयरक्षमम् । प्रतिष्ठानेनरपतिं ययातिंमत्युपस्थितौ ॥ ९ ॥ प्रतिगृह्यच सत्कारं रर्घ्यंपाद्यादिकंवरम् । पृष्टश्चागमनेहेतु मुवाचविनतासुतः ॥ १० ॥ अयंमे नाहुषसखा गालवस्तपसोनिधिः । विश्वामित्रस्यशिष्योभूद्वर्षाण्ययुतशोनृप ॥११॥ सोयंतेनाभ्यनुज्ञात उपकारेप्सयाद्विजः । तमाहभगवान्काले ददानिगुरुदक्षिणाम् ॥ १२ ॥ असकृत्तेनचोक्तेन किञ्चिदागतमन्युना । अयमुक्तःमयच्छेति जानतोविभवं

उस से प्रथम धनमांगो जो कि हमारी तुम्हारी यांचाको पूर्णकरे उसको कुछभी कठिनता न होगी क्योंकि राजाओं के तो धन रहताही है । ६ । आजकल जो सोमवंशी राजाहै हमारासखाहै इससे आवो हम तुम उसीके यहां चलें व मांगें क्योंकि पृथ्वी में उसी के विभव है । ७ । उस राजाका ययातितो नामहै व नहुषकापुत्रहै व बड़ा सत्यविक्रम राजाहै उस से जब तुम मांगोगे व हमभी कहेंगे तो वह अवश्य धनदेगा इसमें कुछभी सन्देह नहीं है । ८ । हमजानते हैं आगे तो इसके कुबेरहीके समान ऐश्वर्यथा पर अबभी होहीगा, इससे विद्वन् गुरूकाधन इसप्रकार से लेकर देनाचाहियें । ९ । इसप्रकार कहते व जो कुछ राजाके सामने आप कहने के योग्यथा उसकी चिन्तना करते २ प्रतिष्ठानपुर में जाय राजा ययातिजी के समीप पहुँचे ।१०। राजाने अर्घ्यपाद्याचमनीयादि से सत्कार कर आनेके हेतु पूंछातो गरुड़जी बोले । ११ । कि हे राजन् ये महातपस्वी गालवजी हमारे सखाहैं इन्होंने विश्वामित्रजी की सेवाकर हजारों वर्षतक वेदादिपढ़ा । १२ । जब इन्होंने

---

get the horses without wealth. You must beg wealth of some king of a noble family if you care for the fulfilment of your desire. The king of the Som family is a friend of mine. Let us go to him; for he is very rich. He is Yayati the son of Nahush and possesses true prowess. He is sure to give you wealth at my recommendation. He was as wealthy as Kuver when I knew him and he must be so even now." You must do the work of your preceptor with the wealth thus obtained." With this resolution they went to king Yayati at Pratishthanpur. The king welcomed them with an offering of water and asked the purpose of their mission. Garur then said: " This ascetic, Galav, is my friend; he has learnt the Vedas

लघु ॥ १३ ॥ एकतःश्यामकर्णानां शुभ्राणांशुद्धजन्मनाम् । अष्टौशतानिमेदेहि हयानांचन्द्रवर्चसाम् ॥ १४ ॥ गुर्वर्थोदीयतामेष यदिगालवमन्यसे । इत्येवमाहस क्रोधो विश्वामित्रस्तपोधनः ॥ १५ ॥ सोयंशोकेनमहता तप्यमानोद्विजर्षभः । अश क्त प्रतिकर्त्तुं तद्भवन्तंशरणंगतः ॥ १६ ॥ प्रतिगृह्यनरव्याघ्र त्वत्तोभिक्षांगतव्यथः । कृत्वापवर्गंगुरवे चरिष्यतिमहत्तपः ॥ १७ ॥ तपसःसंविभागेन भवन्तमपियोक्ष्यते । स्वेनराजर्षितपसापूर्णं त्वांपूरयिष्यति ॥ १८ ॥ यावन्तिरोमाणिहये भवन्तीहनरे- श्वर । तावन्तोवाजिनोलोकान प्राप्नुवन्तिमहीपते ॥ १९ ॥ पात्रं प्रतिग्रहस्यायं दातुं

उनकी बड़ी सेवाको तो प्रसन्नहो उन्हों ने इनसे कहा अब तुम जाव हम तुम्हारे ऊपर बहुत प्रसन्नहैं तब इन्होंने कहा हमने आपसे विद्यापढ़ी है इससे गुरु दक्षिणा देंगे, जो चाहिये मांगिये । १३ । उन्होंने कईबार कहा हम तुम्हारी सेवाही से प्रसन्नहैं गुरु दक्षिणाकी आवश्यकता नहीं पर जब इन्होंने बार २ हठ किया कि जरूर मांगो तो उनको कुछ क्रोध आगया इससे उन्होंने कहा अच्छा जो तुम्हारे गुरुदक्षिणा देने को बहुतही धनहै तो । १४ । जिनघोड़ोंका एककानतो श्यामहो और सब अंग श्वेतरंगहो व अच्छी कुलीन जातिमें उत्पन्नहों व चन्द्रमाकी ऐसी दीप्तिहो ऐसे आठसौ घोड़े गुरुदक्षिणा में दो । १५ । तपोधन विश्वामित्रजी ने यही कहा कि गालव बस यही हमारी गुरुदक्षिणा है । १६ । सो ये ब्राह्मण श्रेष्ठ बड़े भारी शोकसे सन्तप्त हुये क्योंकि ऐसी गुरुदक्षिणा देने में असमर्थ हैं इससे आपके शरणमें आये हैं । १७ । सो ये आपसे भिक्षापाय निर्व्यथितहो गुरु जीको दक्षिणा दे फिर बड़ा भारी तपकरेंगे । १८ । उस तपस्याकी पुण्य आपकोभीदेंगे यद्यपि आप अपनीही तपस्याके पूर्णहैं पर ये अपनी तपस्यासे भी पूर्ण करेंगे । १९ । घोड़े

---

from Viswamitra His preceptor was much pleased with his conduct and gave him leave to depart: but Galav wanted to give his preceptor his fee for teaching. The teacher said that he was pleased with his good work and requ'red no fee; but Galav insisted on his naming something for fee. Thereupon the preceptor became angry and said, "Well! if you possess wealth in excess and would give me something, give me eight hundred horses with one car black and the rest of the body white like the moonbeams The great ascetic Viswamitra has asked him to bring the horses and nothing else. This *Brahman is therefore much distressed* and being unable to pay the fee has come under your protection. He is desirous of giving his preceptor the above mentioned fee and then to engage in severe asceticism. He will give you a share of his great asceticism,

पात्रंतपाभवान् । संलेक्षीरापित्रासक्तं भवत्स्वेतथ्योपमम् ॥ २० ॥ * * *

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरित्रे
चतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४ ॥

नारद उवाच । एवमुक्तःसुपर्णेन तथ्यंवचनमुत्तमम् । विमृश्यावहितोराजा नि-
श्चित्यचपुनःपुनः ॥ १ ॥ यष्टाक्रतुसहस्राणां दातादानपतिःप्रभुः । ययातिःसर्वका
शीश इदंवचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ दृष्ट्वाप्रियसखंतार्क्ष्यं गालवञ्चद्विजर्षभम् । निदर्श
नञ्चतपसो भिक्षांश्लाघ्यांञ्चकीर्त्तिताम् ॥ ३ ॥ अतीत्यच नृपानन्यानादित्यकुलस-
म्भवान् । मत्सकाशमनुप्राप्तौ वेतांबुद्धिमवेक्ष्यच ॥ ४ ॥ अद्यमेसफलंजन्म तारित-

---

के जितने बाल होते हैं दाता उतनेही महान लोक पाता है यह विप्रवर दान पात्रहै
और आप दाताहैं यह अच्छा संयोगहै ॥ २० ॥

अध्याय ॥ ११५ ॥

नारदजी बोले कि जब गरुड़ने ऐसे सत्य व उत्तम वचन कहेतो विचारकर व फिर
निश्चयकर एकाग्र चित्तहो, सहस्रों यज्ञों के करनेवाले व दानादानके पति व के प्रभु
व काशी के ईश राजा ययातिजी बोले । २ । राजाने देखा कि एकतो प्रियसखा गरुड़जी
आयेहैं, फिर ब्राह्मणों में श्रेष्ठ गालवजी याचक, जो कि सब तपस्याने के उदाहरण,
व फिर भिक्षाभी बड़ी बड़ाई की मांगी है । ३ । फिर सब सूर्यवंशी राजाओं को छोड़
हमारेही पास ये दोनों आये हैं इसकोभी विचारकर । ४ । कहा गरुड़जी आज हमारा

---

although you possess the wealth of asceticism already in abundance. The donor gets as many good regions as there are hair on a horse. You are a donor, king, and this good Brahman is a fit person to receive help from you." 20.

CHAPTER CXV

Narad said that on hearing the good and true words of Garur, Yayati the king of Kashi who had performed thousands of sacrifices, considered over the matter and said within himself, "My dear friend Garur has brought with him this best of Brahmans who is a good ascetic and begs a goodly donation. They have come to me leaving the kings of the solar dynasty." Having considered this he said to Garur, "The aim of my life is accomplished to day. You

ञ्चाद्यपेकुलम् । अद्यापंतारितोदेशो ममतार्क्ष्यत्वयानघ ॥ ५ ॥ वक्तुमिच्छामितुसखे यथाजानासिमांपुरा । नतथावित्तवानस्मि क्षीणंवित्तञ्चमेसखे ॥ ६ ॥ नचशक्तोस्मि तेकर्त्तुं मोघमागमनंखग । नचाशामस्य विप्रर्षेर्वितथीकर्त्तुमुत्सहे ॥ ७ ॥ तत्तुदास्यामि यत्कार्य्यमिदंसम्पादयिष्यति । अभिगम्यहताशोहि निवृत्तोदहतेकुलम् ॥ ८ ॥ नातःपरंवैनतेय किञ्चित्पापिष्ठमुच्यते । यथाशानाशनाल्लोके देहिनास्तीतिवावचः ॥ ९ ॥ हताशोह्यकृतार्थःसन् हतःसम्भावितानरः । हिनस्तितस्यपुत्रांश्च पौत्रांश्चकुर्वतोहितम् ॥ १० ॥ तस्माच्चतुर्णांवंशानां स्थापयित्रीसुतामम । इयंसुरसुतप्रख्या सर्वधर्मोपचायिनी ॥ ११ ॥ सदादेवमनुष्याणामसुराणाञ्च गालव । कांक्षितारूपतोबाला सुता

जन्मसफलहुआ व आज हमारे कुलको आपने तार दिया व आज इस देशको आप तारा । ५ । पर हे सखे हम आप से एकबात कहा चहते हैं कि जैसा हमको आप जानते हैं अब हम वैसे धनवान् नहीं हैं प्रथम थे पर अबतो हमारा सब धन क्षीण होगयाहै ।६। व तुम्हारा आगमन भी हम निष्फल नहीं करसके व न इन विप्रर्षिजी की आशाही विफल करना चाहते हैं । ७ । इससे वह वस्तुदेंगे जिस से यह कार्य्य सिद्धहो जाय । ८ । क्योंकि जिसके द्वारपर आय अतिथि निराशहो लौटजाता उस के कुलकानाश करदेता है इससे हे गरुड़ इससे अधिक पापी कोई नहीं जिसके यहांसे अतिथि विमुखहो जाय ।९। व उसने जो आयकही आशा से मांगा व उसने उसकी आशाका नाश कर कहदिया कि हमारे पास कुछ है नहीं तो जिसकी आशा हतहोगई वह बड़ा प्रतिष्ठितहो जानों तुरन्त ही मृतक होगया । १० । व फिर वह जिसने उसका हित नहीं किया उसके पुत्र पौत्रादिकोंका नाश करता है, इससे अब हमारी यह एक कन्याहै जो कि चार वंशोंका स्थापन करेगी । ११ । यह देवकन्याओंकेही समानहै व सब धर्म्म बढ़ानेवाली है व देवता मनुष्य

---

have brought salvation to our family and the kingdom. But I say one thing: I am not so rich now as I once was and have lost all my wealth. I cannot however turn your back empty handed nor can I let this Brahmin go without accomplishing his purpose. I shall give you something which will help you in accomplishing your purpose; for he from whose door a guest turns back empty handed brings about the destruction of his family. There is no greater sinner than him who turns a guest back without accomplishing his purpose. He who turns back a petitioner and pleads poverty, loses his fame. 10. A disappointed guest brings ruin on the man by whom he is disappointed. I have a daughter who will be the mother of

पेमतिगृह्यताम् ॥ १२ ॥ अस्याःशुल्कंमदास्यन्ति नृपाराज्यमपिध्रुवम् । किंपुनःश्यामकर्णानां हयानांद्वेचतुःशते ॥ १३ ॥ सभवान्प्रतिगृह्णातु ममैतांमाधवींसुताम् । अहंदौहित्रवान्स्यांवैवरमेषममप्रभो ॥१४॥ प्रतिगृह्यचतांकन्यां गालवःसहपक्षिणा । पुनर्द्रक्ष्यावइत्युक्त्वा प्रतस्थेसहकन्यया ॥ १५ ॥ उपलब्धमिदं द्वारमश्वानामितिचाण्डजः । उक्त्वागालवमापृच्छय जगामभवनंस्वकम् ॥ १६ ॥ गतेपतगराजेतुगालवः सहकन्यया । चिन्तयानःक्षमंदाने राज्ञांवैशुल्कतोऽगमत् ॥ १७ ॥ सोगच्छन्मनसेक्ष्वाकु हर्यश्वंराजसत्तमम् । अयोध्यायांमहावीर्यं चतुरङ्गबलान्वितम् ॥ १८ ॥ कोशधान्य

असुर सबोंके वर्णको बढ़ासकी है । १२ । इससे इसके रूप व गुणसे सबदेवता मनुष्य व दैत्योंने इसे चाहाथा पर किसी को दी नहीं गई गालवजी आप इसे लेजायँ, इसके मोल में राजालोग अपना राज्य भी देवेंगे फिर धनकी कौन गणनाहै । १३ । व आठसौ श्यामकर्ण घोड़ोंकी कौन गिनती है इस से आप माधवीनाम यह हमारी कन्याही लेजायँ । १४ । व हम यह वरदान मांगतेहैं कि इस कन्याके जो पुत्रहोंगे वे हमारे दौहित्रहोंगे पुण्य कुछ हमको भी देतेरहेंगे, ऐसा सुन गरुड़ समेत, गालवजी यह कह कि फिर आपके दर्शन करेंगे कन्याको लेकर चलदिये व गरुड़ने जाना कि बस घोड़ोंके मिलनेका यह कन्या द्वारहै । १६ । इस से गालवसे गरुड़जीने कहा कि भाई अवतो तुमको घोड़ोंके मिलनेकी युक्ति लगीगई अब हम जाते हैं ऐसा पूंछ विदाहो गरुड़तो अपने घरको गये व उनके जाने पर कन्या सहित गालवजी । १७ । राजाओं में अधिक दाम देनेवाले को विचारतेहुये इधर उधर घूमनेलगे विचारते २ उन्होंने विचारा कि हर्यश्वनाम इक्ष्वाकुवंशी राजा आजकल बड़ा प्रतापी है उसके यहां जावँ । १८ । क्योंकि वह अयोध्याका राजा महावीर्य, व

---

four families. She is like the daughter of gods. She is virtuous and is worthy of making gods, men and asurs like her. Many gods and men wooed her; but she has been given to none. You may take her, Galav. You will find many kings ready to give up their kingdoms and wealth for her sake. You can easily get eight hundred black-eared horses through my daughter Madhavi. Let her sons who will be my grandsons, give me a share of the merits of their good deeds." Having heard this Garur and Galav took the king's daughter with them and promised to meet again. Garur thought that he would be successful to get the eight hundred horses through her. Garur then said to Galav, "You have got the means of getting the horses and therefore you will be pleased to let me go." Thus, Garur took leave of Galav who roamed about thinking of how to part with the king's

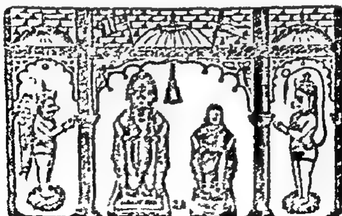
बलोपेतं प्रियपौरंद्विजप्रियम् । प्रजाभिकामंशाम्यन्तं कुर्वाणंतपउत्तमम् ॥ १९ ॥ तमुपागम्यविप्रःस हर्यश्वंगालवोऽब्रवीत् । कन्येयंममराजेन्द्र प्रसवैः कुलवर्धिनी ॥ २० ॥ इयंशुल्केनभार्यार्थं हर्यश्वप्रतिगृह्यताम् । शुल्कंतेकीर्तयिष्यामि तच्छ्रुत्वा सम्प्रधार्यताम् ॥ २१ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते पञ्चदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५ ॥

चतुरंग सैन्य युक्त है, व कोश अन्न धनसे भरापुरा है व ब्राह्मणोंका बड़ाभक्तभी है । १९ । वह राजा पुत्रहोनेकी इच्छा से बड़ाभारी तप कररहा था व सब इन्द्रियों को उसने उनके विषयों से निवृत्त कररक्खाथा ऐसे हर्यश्वके पास जाय गालवजी बोले कि । २० । हे राजेन्द्र यह हमारी कन्या पुत्रोंसे कुलके बढ़ानेवाली है इससे हे हर्यश्व इसे अपनी भार्या बनाने के लिये दामदेकर हम से मोललेलो इसका मोल तुम से हम कहेंगे वह देकर तुम इसे ग्रहण करलो ॥ २१ ॥

---

daughter to the highest bidder. At last he remembered of a king named Haryashwa of the family of Ikshwaku, of great prowess who *was the king of Ayodhia, of great prowess and wealth and friendly to* Brahmans. The king was performing a severe asceticism to get a son and had his organs under complete control. Galav went to king Haryashwa and said to him, "This girl of mine is sure to increase a family with sons and daughters. Make her your wife and give me the price which I ask for her."21.



नारदउवाच ॥ हर्यश्वस्त्वब्रवीद्राजा विचिन्त्यबहुधाततः । दीर्घमुष्णञ्चनिःश्वस्य प्रजाहेतोर्नृपोत्तमः ॥ १ ॥ उन्नतेषून्नतापट्सु सूक्ष्मासूक्ष्मेषुसप्तसु । गम्भीरात्रिषुगम्भीरे ष्विर्यरक्ताचपञ्चसु ॥ २ ॥ बहुदेवासुरालोका बहुगन्धर्वदर्शना । बहुलक्षण संपन्ना बहुप्रसवधारिणी ॥ ३ ॥ समर्थेयंजनयितुं चक्रवर्त्तिनवात्मजम् । ब्रूहिशुल्कं द्विजश्रेष्ठ समीक्ष्यविभवंमम ॥ ४ ॥ गालव उवाच । एकतःश्यामकर्णानां शतान्यष्टौप्रयच्छमे । हयानांचन्द्रशुभ्राणां देशजानांवपुष्मताम् ॥ ५ ॥ ततस्तवभविश्रीयं पुत्राणांजननीशुभा । अरणीवहुताशानां योनिरायतलोचना ॥ ६ ॥ नारदउवाच॥

अध्याय ॥ ११६ ॥

नारदजी बोले कि बहुत प्रकार राजा हर्यश्व सन्तान के लिये ऊधीश्वासेके गालव जीसे बोले कि । १ । ब्राह्मणदेव इस कन्याके दोनों हाथोंकी पीठ व दोनों चरणोंकी पीठ व कुचोंका ऊपर व नितम्ब व नेत्रोंके बीच ये ६ स्थान तो ऊंचे हैं, व शरीर का चर्म केश, दांत, हाथ पैरोंकी अंगुलियां व अंगुलियोंके जोड़ ये सात स्थान सूक्ष्म हैं, व बोल सत्व व नाभी ये तीन स्थान गहिरे हैं, व वह थोड़ी नेत्रोंकी कोरें तालु जीभ व ओष्ठ इतने पांचस्थान लाल हैं । २ । व बहुतसे देवता दैत्य गन्धर्वों के देखने के योग्य है व बहुत लक्षणों से सम्पन्नहै व इसके पुत्र बहुतहोंगे । ३ । व यह चक्रवर्ती पुत्रके उत्पन्न करने में समर्थ है, इससे आप हमारा विभव देख उस के अनुकूल इस कन्याका मोलकहो । ४ । गालवजीबोले कि बस हमको बहुत दामन्हीं चाहिये नहीं जिनके एक कान तो श्यामहों व सब अंग चन्द्रमाकी किरण के समान श्वेतहों व वे किसी अच्छेदि उत्तम देशकेहों ऐसे आठसौ घोड़े हमें चाहिये ।५। तब यह तुम्हारे पुत्रोंके उत्पन्न करने वाली होगी, जैसे अग्नियों के उत्पन्न करनेके लिये अरणी नाम लकड़ी होतीहै । ६ ।

CHAPTER CXVI

Heaving deep sighs for want of progeny, king Haryashwa said to Galav, "It is true, Brahman, that the back of her hands and feet, the upper part of her breast, lips, and the portion of the face between her two eyes are prominent; her skin, hair, teeth, fingers, toes and the joints of her fingers are small; her voice and navel are deep; the palms of her hands, the corners of her eyes, palate, tongue and lips are red; she will attract the eyes of gods, Daityas and Gandharvas and possesses many virtues. She will bring forth many sons and can produce a son fit to rule the whole earth. Be good enough, therefore, to ask a price for her according to my means." To this Galav replied, "I shall not charge an exorbitant price for

एतच्छ्रुत्वावचोराजा हर्यश्वःकाममोहितः । उवाचगालवंदीनो राजर्षिर्ऋषिसत्तम म् ॥ ७ ॥ द्वेमेशतेसन्निहिते हयानांयद्विधास्तव । एष्टव्याःशतशस्त्वन्ये चरन्तिममवा जिनः ॥ ८ ॥ सोऽहमेकमपत्यं वै जनयिष्यामिगालव । अस्यामेतंभवान्कामं सम्पा दयतुमेवरम् ॥ ९ ॥ एतच्छ्रुत्वातुसाकन्या गालवंवाक्यमब्रवीत् । ममदत्तोवर कश्चि त् केनचिद्ब्रह्मवादिना ॥ १० ॥ प्रसूत्यंतेप्रसूत्यन्ते कन्यैवत्वंभविष्यसि । सत्वंदद स्वमांराज्ञे प्रतिगृह्यहयोत्तमान् ॥ ११ ॥ नृपेभ्योहिचतुर्भ्यस्ते पूर्णान्यष्टौशतानिमे । भविष्यन्तितथापुत्रा ममचत्वारएवच ॥ १२ ॥ क्रियतांममसंहारो गुर्वर्थोद्विजसत्तम । एषातावन्ममप्रज्ञा यथावामन्यसेद्विज ॥ १३ ॥ एवमुक्तस्तुसमुनिः कन्ययागालव

नारदजी बोले कि गालवजी का ऐसा वचन सुन राजर्षि हर्यश्व काममोहितहो ब्रह्मर्षि गालव जीसे बोले । ७ । कि जैसे घोड़े आप बताते हैं वैसे दोसौ तो हमारे बँधे हैं और सहस्रों घोड़े हैं उनमें ढूंढ़लीजिये शायद औरभी कुछ निकल आवें । ८ । इससे हम एकही पुत्र इसमें उत्पन्न करेंगे व दोसौघोड़े देंगे आप इसमें हमारा यह काम अंगीकार कर सकें । ९ । इतना सुन वह कन्या गालवजी से बोली कि हमको एक ब्रह्मवादी ब्राह्मणने वरदान दियाहै कि । १० । लड़का होनेके पीछे फिर तुम कन्याहो जावगी इससे तुम राजाको हमें देदो व दोसौ घोड़े लेलो । ११ । इसतरह चार राजाओं को हमें देना तुम्हारे आठसौ घोड़े पूरे होजायँगे व हमारे चारजनोंसे चार चक्रवर्ती प्रतापी पुत्र उत्पन्न होजायँगे । १२ । सब धन बटोरकर अपने गुरुजी को देदेना, हमारी बुद्धिसे तो इसतरहमें तुम्हारा कार्य सिद्ध होजायगा फिर जैसा आप इच्छा मानतेहो वैसाही करो । १३ । जब कन्याने

---

her; but shall be content if you will give me eight hundred horses with only one ear black and the rest of the body white like the rays of the moon The horses must be of good breed and you will have the girl for your wife. She will bring forth sons for you as wood produces fire." Narad said that on hearing the words of Galav, the king with his mind distracted by love, thus addressed him, "I have in my stables two hundred horses as described by you I have thousands of horses from which it is possible to find out more of the sort. Accept two hundred horses from me and let me produce only one son on her. On hearing this, the girl said to Galv, "Take two hundred horses from the king and give me to him for a time; for a good saint has granted me a boon that I shall bring forth four glorious sons if you will give me to four kings taking two hundred horses from each, and thus your tale of horses will be

रंतदा । हर्यश्वंपृथिवीपाल मिदंवचनमब्रवीत् ॥ १४ ॥ इमांकन्यानरश्रेष्ठहर्यश्वप्रतिगृ ह्यताम् । चतुर्भागेनशुल्कस्य जनयस्वैकमात्मजम् ॥ १५ ॥ प्रतिगृह्यसतांकन्यां गाल वंप्रतिनन्द्यच । समयेदेशकालेच कब्धवान्सुतमीप्सितम् ॥ १६ ॥ ततोवसुमनानाम वसुभ्योवसुमत्तरः । वसुमख्योनरपतिः सबभूववसुप्रदः ॥ १७ ॥ अथकालेपुनर्धीमा न् गालव प्रत्युपस्थितः । उपसङ्गम्यचोवाच हर्यश्वंप्रीतमानसम् ॥ १८ ॥ जातोनृप सुतस्तेयं बालोभास्करसन्निभः । कालोगन्तुंनरश्रेष्ठ भिक्षार्थमपरंनृपम् ॥ १९ ॥ हर्यश्व सत्यवचने स्थितःस्थित्वाचपौरुषे । दुर्लभत्वाद्धयानाञ्च प्रददौमाधवींपुनः ॥ २० ॥ माधवीचपुनर्दीप्तां परित्यज्यनृपश्रियम् । कुमारीकामतोभूत्वा गालवंपृष्ठतो

गालव मुनि से ऐसा कहातो वे राजा हर्यश्वजी से यह वचनबोले कि । १४ । हे हर्यश्व इस कन्याको तुमलो व तुम चौथाईही दामदेतेहो व इसमें चारपुत्र होसक्ते हैं इस से तुम एक पुत्र उत्पन्न करलो । १५ । राजाने दोसौ श्यामकर्ण घोड़े दे गालवकी बड़ाईकर कन्याको ग्रहणकर उसे अपनी भार्या बनाय समयपर,एक पुत्र उत्पन्न किया । १६ । उस पुत्रका वसुमना नामधरा क्योंकि वह आठों वसुओं से वसुमत्तर हुआ, इससे वसुओंके समान तेजस्वी राजाने ब्राह्मणादिकोंको बहुतसा वसु दान किया ।१७। कुछदिनों के पीछे गालवजी फिर वहां आये, व प्रसन्नमन राजा हर्यश्वसे बोले । १८ । हे राजन सूर्यवत् प्रकाशित आप के पुत्रतो यह हुआ अब हमको और राजासे भीख मांगनेका काल आगयाहै, इससे कन्या हमें देदो । १९ । राजाहर्यश्वजी बड़े सत्यवक्ता थे इस से अपने पौरुषपरस्थित व जाना कि दोसौ के सिवाय और घोड़ोंका इकट्ठाहोना बड़ा दुर्लभहै इस से माधवी को फिर गालव जीको देदिया । २० । तब माधवी फिर राजाश्रीको छोड़ अपनी इच्छा से कुमारी

---

complete. You will thus be able to accomplish the desire of your preceptor. This course seems to me practicable or you may do as you like." At these words of the girl, Galav said to king Haryashwa, "Bring forth only one son on this girl for the one fourth price you have offered me." The king gave two hundred black-eared horses to Galav and made the girl his wife. In time she brought forth a son named Vasumana. The glorious king gave large donations to Brahmans at the birth of an heir. After some time Galav came again to the king and said, "You have got a son glorious like the sun and the time has now come that I should try another king. Please return me the girl." The king was firm on his words and knowing that he could not get more horses of the sort, he returned Madhavi to Galav. 20. She turned herself again into a maiden as

न्वगात् ॥ २१ ॥ स्वयंवरतावत्तिष्ठन्तु इत्याहत्युक्त्वानाद्विजः । मगपौकन्यमासार्द्धं दिवोदासंप्रजेश्वरम् ॥ २२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते षोडशाधिकशततमोऽध्यायः ११६ ॥

गालव उवाच । महावीर्योमहीपालः काशीनामीश्वरःप्रभुः । दिवोदासइति ख्यातो भैमसेनिर्नराधिपः ॥ १ ॥ तत्रगच्छावहेभद्रेशनैरागच्छमाशुचः । धार्मिकः संयमेयुक्त सत्येचैवजनेश्वरः ॥ २ ॥ नारद उवाच । तमुपागम्यसमुनिर्न्यायतस्तं नसत्कृतः । गालवःप्रसवस्यार्थे तंनृपंप्रत्यचोदयत् ॥ ३ ॥ दिवोदास उवाच । श्रुत मेतन्मयापूर्वं किमुक्त्वाविस्तरंद्विज । कांक्षितोहिमयैषोर्थः श्रुत्वैतद्द्विजसत्तम ॥ ४ ॥

कन्या होगई व गालव जी के पीछे २ चली । २१ । गालवजी राजा हर्यश्वसे यह कहा कि तबतक हमारे ये घोडे घोडे अपनेही यहां रहनेदो कन्याको संगले राजादिवोदास के यहां को चले गये ॥ २२ ॥

अध्याय ॥ ११७ ॥

गालवमुनि बोले कि काशिपुरी आदिका राजा महावीर्यवान जिसका दिवोदास नाम है वह राजा भीमसेनका पुत्रहै । १ । हे भद्रे अब उसके यहां चलतेहैं पीछे २ चली आवो शोच न करो क्योंकि वह राजा बड़ा धर्मात्मा है, व सत्यही सदा बोलताहै संयम में तत्पर रहताहै । २ । नारदजी बोले कि गालवमुनि न्याय पूर्वक राजा दिवोदास के पास पहुँचे राजा ने बड़ा आदर सत्कार मुनि का किया तब गालवजी ने राजासे कहा राजा तुम्हारे पुत्र नहीं है इससे इसकन्या को अपनी भार्या बनाय इसमें पुत्र उत्पन्न करो । ३ । दिवोदास बोले कि ब्राह्मणदेव हम इस वृत्तान्तको बहुत दिनों से सुनचुकेहैं इससे बहुत

---

soon as she left the king and followed *Galav*. The rishi took the maiden with him and leaving the horses with king Haryashwa, went with her to king Divodas 22

CHAPTER CXVII

Galav said to her, "Divodas the son of Bhimsen is the king of Kashi and is very powerful. Let us go to him. Follow me gently without hesitation, for he is very virtuous and truthful and has control over his *organs*." Narad says that Galav reached in due time in the court of king Divodas and was welcomed there with great respect. Galav then said to the king, 'Make this girl your wife, and as you are childless, bring forth in her a son" "I have heard all about her,"

एवम्बहुमतं यदुत्सृज्यनराधिपान् । मामेवमुपयातोसि भाविचैतदसंशयम् ॥ ५ ॥ सएवविभवोस्माकं मश्वानामपिगालव । अहमप्येकमेवास्यां जनयिष्यामिपार्थिवम् ॥६॥तथेत्युक्त्वाद्विजश्रेष्ठः प्रादात्कन्यांमहीपतेः विधिपूर्वांचतांराजा कन्यांप्रतिगृहीतवान् ॥ ७ ॥ रेमेसतस्यांराजर्षिः प्रभावत्यांयथारविः । स्वाहायाञ्चयथावह्नि र्यथाशच्यांचवासवः ॥ ८ ॥ यथाचन्द्रश्चरोहिण्यां यथाधूमोर्णयायमः । वरुणश्चयथागौर्यां यथाचर्द्ध्यांधनेश्वरः ॥ ९ ॥ यथानारायणोलक्ष्म्यां जाह्नव्याञ्चयथोदधिः । यथारुद्रश्चरुद्राण्यां यथावेद्यांपितामहः ॥ १० ॥ अदृश्यन्त्याञ्चवासिष्ठो वसिष्ठश्चाक्षमालया । च्यवनश्चसुकन्यायां पुलस्त्यःसन्ध्ययायथा ॥ ११ ॥ अगस्तश्चापिवैदर्भ्यां

कहनेकी कुछ आवश्यकता नहीं सुनतेही हमने भी उस अर्थकी कांक्षाकी है । ५ । हम इसको बहुत समझतेहैं जो कि तुम और राजाओं को छोड़ हमारेही पासको आयेहो इस से हम जानते हैं कि इस तुम्हारी कन्यामें पुत्र अवश्यही होगा । ५ । हमारेभी राजा हर्यश्व ही के समान विभवहै इससे हमभी दोहीसौ घोड़े देंगे व एकपुत्र इसमें उत्पन्न करेंगे, जो कि हमारे पीछे राजाहोगा । ६ । गालवने अच्छाकह राजा को कन्यादेदी, व राजाने वेदविधानसे कन्याको ग्रहणकिया । ७ । व उसके साथ राजा दिवोदास ऐसाविहार करने लगे जैसे प्रभावतीके साथ सूर्य विहार करतेहैं, व स्वाहाके साथ जैसे अग्नि, व जैसे इन्द्राणी के साथ इन्द्र । ८ । व जैसे रोहिणी के साथ चन्द्रमा, व जैसे धूमोर्णाके संग यमराज व जैसे गौरी के संग वरुण, व जैसे ऋद्धि के संग कुबेर, व जैसे लक्ष्मीजीके संग नारायण जी, व जैसे गंगाजी के साथ समुद्र, व जैसे रुद्राणी के साथ रुद्र, व जैसे वेदी के संग ब्रह्माजी । ९ । व जैसे अदृश्यन्ती के संग वासिष्ठ, व जैसे अक्षमालाके संग वसिष्ठजी, सुकन्या के संग च्यवन व सन्ध्या के संग जैसे पुलस्त्य । ११ । व वैदर्भी के संग जैसे

---

said the king, "you need not say anything more about her as I have set my mind on her. I thank you because you have honoured me by your visit and I am sure that this maiden of yours will bring forth a son. I have as much wealth as king Haryashwa and shall therefore give you two hundred horses for bringing forth a son in her and he will be my heir." Galav consented to the king's proposal and gave him the girl. The king married her according to the Vedic rites and lived in her company as Surya with Prabhavâti, Agni with Swaha, Indra with Indrani, Chandra with Rohini, Yamraj with Dhumorn, Varun with Gauri, Kuver with Vridhi, Narayan with Lakshmi, the Ocean with the Ganges, Rudra with Rudrani, Brahma

सावित्र्यांसत्यवान्यथा । यथाभृगुःपुलोमायां मादित्यांकश्यपोयथा ॥ १२ ॥ रेणुकायांयथार्चीको हैमवत्याञ्चकौशिकः । बृहस्पतिश्चताराणां शुक्रश्चशतपर्वणा ॥१३॥ यथाभूम्यांभूमिपतिः रुर्वश्यांचपुरूरवाः । ऋचीकःसत्यवत्याञ्च सरस्वत्यांयथामनुः ॥ १४ ॥ शकुन्तलायांदुष्यन्तो धृत्यांधर्मश्चशाश्वतः । दमयन्त्यांनलश्चैव सत्यवत्याञ्चनारदः ॥ १५ ॥ जरत्कारुर्जरत्कार्वां पुलस्त्यश्चप्रतीच्यया । मेनकायांयथोर्णायु स्तुम्बुरुश्चैवरम्भया ॥ १६ ॥ वासुकिःशतशीर्षायां कुमार्याञ्चधनञ्जयः । वैदेह्याञ्चयथारामो रुक्मिण्याञ्चजनार्दनः ॥ १७ ॥ तथातुरममाणस्य दिवोदासस्यभूपतेः । माधवीजनयामास पुत्रमेकंप्रतर्दनम् ॥ १८ ॥ अथाजगामभगवान् दिवोदासंसगालव

अगस्त्य व जैसे सावित्री के संग सत्यवान, व जैसे पुलोमा के संग भृगु, व जैसे अदिति के संग कश्यपजी । १२ । व जैसे रेणुका के संग जमदग्नि, व जैसे हैमवती के संग कौशिक, व जैसे तारा के संग बृहस्पति, व जैसे शतपर्वा के संग शुक्राचार्य ।१३। व जैसे पृथ्वी के संग राजा, व जैसे उर्वशी के संग पुरूरवा, व जैसे सत्यवती के संग ऋचीक व जैसे सरस्वती के संग मनु ।१४। व जैसे शकुन्तला के संग दुष्यन्त, व धृति के संग जैसे धर्मराज, व जैसे दमयन्ती के संग नल, व जैसे सत्यवती के संग नारद । १५ । व जैसे जरत्कारु के संग जरत्कारु, व जैसे प्रतीची के संग पुलस्त्य व जैसे मेनका के संग ऊर्णायु, व रम्भा के संग जैसे तुम्बुरु । १६ । व जैसे शतशीर्षा के संग वसुकि, व कुमारी के संग जैसे धनंजय । १७ । व जैसे जानकीजी के संग श्रीरामचन्द्रजी, व जैसे रुक्मिणी के संग जनार्दन कृष्णचन्द्रजी वैसेही माधवी के संग विहार करते हुये राजा दिवोदास को बहुत समय बीता । १८ माधवी ने प्रतर्दन नाम एक पुत्र उत्पन्न किया तब भगवान् गालवजी राजा

with Devi, Vashisth's son with Adrishyanti, Vashisth with Akshmala, *Chyavan with the daughter of Vasu, Pulastya with Sandhya, Agastya* with Vaidarbhi, Satyavan with Savitri, Bhrigu with Puloma, Kashyap with Aditi, Jamadagni with Renuka, Kaushik with Hemvati, Vrihaspati with Tara, Shukracharya with Shatparva, a king with his subjects, Pururava with Urvashi, Richik with Satyavati, Manu *with Saraswati, Dushyant with Shakuntala, Dharmraj with Dhriti,* Nal with Damayanti, Narad with Satyavati, Jaratkaru with Jaratkaru, Pulastya with Pratichi, Urnayu with Menika, Tumburu with Rambha, Vasuki with Shatshirsha, Dhananjaya with Kumari,, Ramchandra with Janaki, Janardan Krishn with Rukmini. So Divodas lived with Madhavi for many days till she gave birth to a

मः। समयेसमनुमाते वचनञ्चेदमब्रवीत् ॥ १९ ॥ निर्यातयतुमेकन्यां भवांस्तिष्ठन्तु वाजिनः। यावदन्यत्रगच्छामि . शुल्कार्थंपृथिवीपते ॥ २० ॥ दिवोदासोयधर्मात्मा समयेगालवस्यतम्। कन्यांनिर्यातयामास स्थितःसत्येमहीपतिः ॥ २१ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते सप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७ ॥

नारद उवाच। तथैवतांश्रियंत्यक्त्वा कन्याभूत्वायशस्विनी। माधवीगालवं विप्र मभ्ययात्सत्यसङ्गरा ॥ १ ॥ गालवोविमृशन्नेव स्वकार्यगतमानसः। जगामभोजनगरं द्रष्टुमौशीनरंनृपम् ॥ २ ॥ तमुवाचाथगत्वास नृपतिंसत्यविक्रमम्। इयंकन्यासुतौद्वौते जनयिष्यतिपार्थिवौ ॥ ३ ॥ अस्यांभवानवाप्तार्थो भवितामेत्यचेहच। सो

दिवोदासजी के समीप आये। १९। व समयसे आपही गया था इससे गालवजी बोले भी आप अब हमारी कन्यादें, व जब तक हम कन्या के मोल के लिये यत्न करते को अन्यत्रजायँ तब तक हमारे घोड़े आपहीं के यहां रहें हम फिर लेजायँगे। २०। दिवोदासभी धर्मात्मा होनेके कारण गालवके कहनेपर माधवी को गालवको दे दिया २१॥

अध्याय ११८॥

नारदजी बोले कि वसी तरह राजा दिवोदासकी भी राज्य श्री को छोड़ वह माधवी फिर कन्या होगई, व अपनी सत्य प्रतिज्ञा के कारण गालवजी के पीछे२ चली।१। व गालव भी उस कन्याको संगलिये अपने कार्य्य में मनलगाये राजा उशीनरको देखने के लिये भोजनगर को गये। २। व सत्य विक्रमी उस राजा के समीप जाय बोले कि यह कन्या तुम्हारे यहां दो पुत्र उत्पन्न करेगी दोनों बड़े भारी राजा होंगे। ३। अप

son named Pratardan. Ga'av then came to the king and demanded back the girl from him so that he might go to some other place to complete her price. He left the horses with the king and went away. Divodas the virtuous gave Madhavi back to Galav. 21.

CHAPTER CXVIII

Narad said that again, on leaving Divodas, Madhvi became a maiden and followed Galav according to her promise. Intent on doing his work, Galav took the girl to king Ushinar at Bhojnagar and said, "This girl will bring forth two glorious sons like the sun and moon and you will gain the object of your desire. You will be happy here as well as in the next world by removal of the defect of

मार्कपतिसङ्काशौ जनयित्वा सुतौ नृप ॥ ४ ॥ शुल्कन्तु सर्वधर्मज्ञ हयानाञ्चन्द्रवर्चसाम् । एकतःश्यामकर्णानां देयंमह्यं चतुःशतम् ॥ ५ ॥ गुर्वर्थोऽयंसमारम्भो नहयैःकृत्यमस्ति मे । यदिशक्यंमहाराज क्रियतामविचारितम् ॥ ६ ॥ अनपत्योसिराजर्षे पुत्रौजनय पार्थिव । पितॄनपुत्रप्लवेन त्वमात्मानञ्चैवतारय ॥ ७ ॥ नपुत्रफलभोक्ताहि राजर्षे पात्यतेदिवः । नयातिनरकंघोरं यथागच्छन्त्यनात्मजाः ॥ ८ ॥ एतच्चान्यच्चविविधं श्रुत्वागालवभाषितम् । उशीनरःप्रतिवचो ददौतस्यनराधिपः ॥ ९ ॥ श्रुतवानस्मिते वाक्यं यथावदसिगालव । विधिस्तुबलवान्ब्रह्मन् प्रवणंहिमनोमम ॥ १० ॥ शतेद्वे तुममहयानामीदृशानांद्विजोत्तम । इतरेषांसहस्राणि सुबहूनिचरन्तिमे ॥ ११ ॥ अहम

इस कन्या में, चन्द्रमा व सूर्य के समान प्रकाशित दोपुत्र उत्पन्न कर अपने अर्थको प्राप्तहोंगे, व मरणान्त में भी सुखी रहेंगे, क्योंकि अपुत्र दोष जो आपमें है वह जाता रहेगा । ४ । व इसके मोल में एक श्यामकर्ण व सर्वांग उजले ऐसे चारसौ घोड़े दीजिये सब हे सर्व धर्मज्ञ, हमको और कुछ न चाहिये । ५ । गुरू के लिये हमको यह कर्म करना पड़ा नहीं तो घोड़ों से हमारा कुछ प्रयोजन नहीं है इससे हे महाराज यदि आप से होसके तो बिना विचारेही यह कार्य्य शीघ्रही कीजिये । ६ । हे राजन् आप के कोई पुत्र कन्या नहीं है, इससे दोपुत्र अवश्य उत्पन्न करलीजिये, व अपने को तथा अपने पितरों को इस पुत्र रूप जहाजपर चढ़ाय भवसागर से तारिये । ७ । हे पार्थिव जैसे बिन पुत्र वाले लोग स्वर्ग से गिराय नरक में डालेजाते हैं वैसे पुत्रवान् लोग स्वर्गसे नहीं गिराये जाते व न कभी घोर नरकही को जाते हैं । ८ । इतना यह व और भी गालव का वचन सुन उशीनर राजाने गालवको प्रत्युत्तरदिया । ९ । कि गालव जैसा आपने कहा वह वचन हमने सुना व यह भी जाना कि विधि बड़ा बलवान है क्योंकि हमारा भी मन पुत्र उत्पन्न करने में तत्परहै । १० । पर क्याकरें, ब्राह्मण देव हमारे ऐसे घोड़े दोहीसौ

---

childlessness which is in you. Give me four hundred white horses with only one ear black and nothing more. I shall give them to my preceptor. Grant my request, king, if you can without hesitation. You have no son or daughter and therefore you must produce in her two sons and secure the salvation of your forefathers as well as your own. People with children are not cast out of heaven like childless ones, nor do they ever go to hell." Having heard these and other words of Galav, king Ushinar gave him the following reply, "I have heard your words, Galav, and know that fate is powerful and that I am very anxious to secure sons. 10. But, Brahman, I possess only

ह्येकमेवास्यां जनयिष्यामिगालव । पुत्रंद्विजगतंमार्गं गमिष्यामिपरैरहम् ॥ १२ ॥
मूल्येनापिसमंकुर्य्यां तवाहंद्विजसत्तम । पौरजानपदार्थंतु ममार्थोनात्मभोगतः ॥१३॥
कामतोहिधनंराजापारक्यंयःप्रयच्छति । नसधर्मेणधर्मात्मन युज्यतेयशसानच ॥१४॥
सोहंप्रतिगृहीष्यामि ददात्वेतांभवान्मम । कुमारींदेवगर्भाभामेकपुत्रभवायमे ॥१५॥
तथातुबहुधाकन्यामुक्तवन्तंनराधिपम् । उशीनरंद्विजश्रेष्ठो गालवःप्रत्यपूजयत् ॥१६॥
उशीनरंप्रतिग्राह्यगालवः प्रययौवनम् । रेमेसतांसमासाद्य कृतपुण्यइवाश्रियम् ॥ १७॥
कन्दरेषुचशैलानां नदीनांनिर्झरेषुच । उद्यानेषुविचित्रेषु वनेषूपवनेषुच ॥ १८ ॥

हैं, व और २ तरह के तो हजारों लाखों धरते हैं । ११ । इससे हे गालव, इसमें हम भी एकही पुत्र उत्पन्न करें, व जिस मार्ग में हमारे पूर्वज गये हैं उसी मार्गपर हमभी चलेंगे । १२ । हम और बहुतसा धनदे कहीं से दोसौ घोड़े और भी तुम्हें दिला देते व इसमें दो पुत्र उत्पन्न करलेते परन्तु हमारे यहां और जितना कोश खजाना है सब राज्यवालों व पुरवलोंकी रक्षा के लिये है अपने भोग के लिये नहीं है इससे उसे अपने कार्य में नहीं लगा सके । १३ । व जो राजा परलोक के लिये जो धन है उसे कामगें लगादेता है, वह न धर्मही से युक्तहोता न यशही से । १४ । इससे हम इसे ग्रहण करें गे आप दीजिये, पर यह देवताओं के गर्भही से उत्पन्नभी कुमारी हमको केवल एकही पुत्रके उत्पन्न करने के लिये दीजिये व अपने दोसौ घोड़े लीजिये । १५ । इसप्रकार बहुत बार जब राजा ने कहा तो गालव ने कहा अच्छा इस कन्याको लो, एकही पुत्र उत्पन्नकरो । १६ । इस प्रकार उशीनर राजाको कन्यादे गालव वनको चलेगये, व राजा उसको पाय उस के संग भोग विलास करनेलगे, जैसे बहुतविधाय लोग भोगने लगते हैं । १७ । उस के संग नानाप्रकार के पर्व्वतों की कन्दराओं में व नदियों के झरनों के किनारे व पवन पर

---

two hundred horses of the sort, though I possess thousands of other sorts. I shall therefore produce in her only one son as my predecessors have done. I could buy two hundred horses more and would produce two sons on her; but all the wealth in my treasury is meant for the protection of my subjects and citizens and I cannot spend on my own enjoyments. A king who spends the wealth which does not belong to him cannot attain to virtue and fame. So let me take this divinely beautiful girl to produce only one son and take two hundred horses. Thus at the repeated request of the king consented to part with her for the production of only one, having left her with Ushinar himself went to forest. enjoyed her society as people enjoy the wealth which

हर्म्येपुरमणीयेषु प्रासादशिखरेषुच । वातायनविमानेषु तथागर्भगृहेषुच ॥ १९ ॥ ततोस्यसमयेजज्ञे पुत्रोबालरविप्रभः । शिविर्नाम्नाभिविख्यातो यासपार्थिवसत्तमः ॥ २० ॥ उपस्थायसतंविप्रो गालवःप्रतिगृह्यच । कन्यांप्रयातस्तांराजन् दृष्टवान विनतात्मजम् ॥ २१ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते अष्टादशाधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

नारद उवाच । गालवंवैनतेयोथ प्रहसन्निदमब्रवीत् । दिष्ट्याकृतार्थंपश्यामि भवन्तमिहवैद्विज ॥ १ ॥ गालवस्तुवचःश्रुत्वा वैनतेयेनभाषितम् । चतुर्भागावशिष्टन्त दाचख्यौकार्यमस्यहि ॥ २ ॥ सुपर्णस्त्वब्रवीदेनं गालवंवदतांवरः । प्रयत्नस्तेनकर्त

चलनेवाले विमानों पर व औरभी भीतरवाले गुप्त मन्दिरों के भीतर । १८ । व विचित्र फुलवाड़ियों में, व वनोंमें, उपवनोंमें व पाईं बागोंमें व रमणीय व भवरहरोंपर, भवरहरों के ऊंचे २ शिखरोंपर । १९ । इसके पीछे उस स्त्री में राजा उशीनर से प्रातःकाल के सूर्य के समान प्रकाशित एकपुत्र उत्पन्नहुआ, व राजाओंमें उत्तम महाराज शिविनाम प्रसिद्धराजा हुआ । २० । तब गालव आकर उस कन्याको लेगये जाते समय मार्ग में उनको खगपति मिले और हँसकर बोले । २१ ।

अध्याय ११९ ॥

नारदजीबोले कि गरुड़ गालवसे हँसतेहीसे बोले कि बड़े आनन्दकी बातहै जो गालवजी तुमको कार्य्य सिद्धहम देखते हैं । १ । गरुड़ के ऐसे वचनसुन गालव बोले भाई अभी सब कार्य्य कहां सिद्धहुआ चौथाई तो बाकीही पड़ाहै । २ । तब कहनेवालों में बड़ेचतुर

---

of a sudden. He roamed with her over hills and dales, by the sides of rivers and fountains, on the cars flying in air, in many a secret nooks, in palaces, in orchards, forests, gardens and lawns and over high places. In time, king Ushinar produced in her a son, glorious like the morning sun, who was the best of kings and was known as Shivi. In the mean time Galav came again and took the girl with him; but when he was on his way he was met by the king of birds who spoke to him with a smile. 21.

CHAPTER CXIX

Narad said that Garur spoke to Galav with a smile, saying, "It is a happy day that I see you successful in your enterprise." To this Galav replied, "One fourth of my work still remains undone."

ह्योनैवसम्पत्स्यतेतव ॥ ३ ॥ पुराहिकान्यकुब्जेवै गाधेःसत्यवतींसुताम् । भार्य्यार्थे वरयत्कन्या मृचीकस्तेनभाषितः ॥ ४ ॥ एकतःश्यामकर्णानां हयानाञ्चन्द्रवर्चसाम् भगवन्दीयतांमह्यं सहस्रमितिगालव ॥ ५ ॥ ऋचीकस्तुतथेत्युक्त्वा वरुणस्यालयंगतः । अश्वतीर्थेहयान्लब्ध्वा दत्तवान्पार्थिवायवै ॥ ६ ॥ इष्ट्वातेपुण्डरीकेण दत्ता राज्ञाद्विजातिषु । तेभ्योद्वेद्वेशतेक्रीत्वा मासुतैःपार्थिवैःसदा ॥ ७ ॥ अपराण्यपिचत्वारि शतानिद्विजसत्तम । नीयमानानिसन्तारे हृतान्यासन्वितस्तया ॥ ८ ॥ एवंनश क्यममाप्यं मासुंगालवकर्हिचित् । इमावश्वशताभ्यांवै द्वाभ्यांतस्मैनिवेदय ॥ ९ ॥

गरुड़ बोले कि अब तुम इतनेके लिये प्रयत्न न करो क्योंकि अब तो थोड़ाहीसा कार्य रहगयाहै, वहभी सिद्ध होजायगा । ३ । क्योंकि पुरानी कथाहै कि कान्यकुब्जदेश के राजा गाधिकी सत्यवती नाम कन्याको ऋचीकमुनिने अपने साथ विवाह करनेकोमांगी तब राजागाधिने कहा कि । ४ । हे भगवन् हम अपनीकन्याका विवाह तब तुम्हारे संगकरेंगे जब कि तुम इसके मोलमें हमको जिन घोड़ों के एक कान तो श्यामहों व सब अंग चन्द्रमाके समान उज्ज्वलहों ऐसे एक हजारदो । ५ । इस बातको सुन बहुत अच्छा यह कह ऋचीकमुनि वरुणजी के यहां चलेगये व उनके यहां से हजारघोड़े उसीप्रकार के मांग राजागाधि को देदिये । ६ । व राजा ने कन्या तो ऋचीकको देदी, व अपने पुण्डरीक नाम यज्ञकर हजारों घोड़े ब्राह्मणोंको दक्षिणामें देदिये, उन्हीं ब्राह्मणों से इन राजाओंने दो २ सौ घोड़े मोललियेथे वही उनलोगोंने दो २ सौ तीनोंने तुमकोदिये । ७ । व और भी जो चारसौ बाकीरहे उन्हें ब्राह्मणलोग लियेचले आतेथे मार्गमें इधर उधर लोगोंने छीनलिये, इससे यत्रतत्रहोगये इकट्ठे न रहे ।८। इससे गालव ऐसीवस्तु कोईभी नहीं है जो न मिलसके अबचलो ये छसौघोड़े व दोसौघोड़ोंकेस्थानमें यहकन्या उन्हीं विश्वामित्रही

"Donot be anxious for a trifling matter" said Garur the best of speakers, "The rest of the work is easy to do. There is an old story: Richik asked Satyavati the daughter of king Gadhi of Kanyakubj in marriage; but the king asked him in return to give a thousand white horses with only one ear black. At this Richik went to Varun and brought the king a thousand horses of the sort. The king gave his daughter in marriage to the ascetic and gave the thousand horses as donation to Brahmans after performing the sacrifice known as Pundarik. The Brahmans sold two hundred horses to each of the three kings from whom you have got them. The remaining four hundred horses were seized from them by robbers in the way and were scattered at different places and are not so difficult to get. But you should offer the six hundred horses you have got to Viswamitra and

विश्वामित्रायचर्मात्मन षड्भिरश्वशतैःसह । ततोसिगतसम्मोहः कृतकृत्योद्विजोत्तम ॥ १० ॥ गालवस्तंतथेत्युक्त्वा सुपर्णसहितस्ततः । आदायाश्वांश्चकन्यांश्च विश्वामित्र मुपागमत् ॥ ११ ॥ अश्वानांकांक्षितार्थानां षडिमानिशतानिवै । शतद्वयेनकन्येयं भवतागतिगृह्यताम् ॥ १२ ॥ अस्यांराजर्षिभिःपुत्रा जातावैधार्मिकास्त्रयः । चतुर्थं जनयत्वेकं भवानपिनरोत्तमम् ॥ १३ ॥ पूर्णान्येवंशतान्यष्टौ तुरगाणांभवन्तुते । भवतोह्यनृणोभूत्वा तपःकुर्यांयथासुखम् ॥ १४ ॥ विश्वामित्रस्तुतंदृष्ट्वा गालवंसहपक्षिणा । कन्यांचतांवरारोहा मिदमित्यब्रवीद्वचः ॥ १५ ॥ किमियंपूर्वमेवेह नदत्ता ममगालव । पुत्रामयैवचत्वारो भवेयुःकुलभावनाः ॥ १६ ॥ प्रतिगृह्णामितेकन्या मे कपुत्रफलायवै । अश्वाश्चाश्रममासाद्य चरन्तुममसर्वशः ॥ १७ ॥ सतयारममाणोथ

को देदे । ९ । तो फिर तुम्हारा मोहजाता रहे व कृतकृत्य होजाव, कोई खुटका न रहै । १० । यह बातसुन व अंगीकार कर छवों घोड़े व कन्याले गरुड़ सहित गालव विश्वामित्रजी के समीपगये । ११ । व बोले कि हे भगवान् आठसौ घोड़ों के लिये आपने आज्ञा दीथी सो वनमें छःसौतो ये घोड़े लीजिये, व बाकी रहे दोसौ सो उनके बदले में यह कन्या लीजिये । १२ । इसमें, तीन राजर्षियों से तीन बड़े धार्मिक पुत्र उत्पन्न होचुके हैं चौथा सब पुरुषों में उत्तम पुत्र आपभी उत्पन्न करलीजिये । १३ । ऐसा करनेसे आप के आठो सौ घोड़े पूरे होजावेंगे व हमभी आपसे उऋणहो सुख पूर्वक तप करेंगे । १४ । तब विश्वामित्रजी गरुड़ सहित गालवको व उस कन्याको देख यह वचनबोले कि । १५ । गालव पहिलेही यह कन्या तुमने हमीको क्यों न देदी, कि हमारेही कुलके बढ़ानेवाले चार पुत्र होजाते । १६ । अच्छा अब एक पुत्र इसमें उत्पन्न करलेने के लिये यह तुम्हारी कन्या हम ग्रहण करते हैं, व ये छवों सौ घोड़ेभी हमारे आश्रम पर सदा चरा करेंगे । १७ । यह कह

give him girl instead of the remaining two hundred. He will be pleased with your offering and you will have no anxiety left. 10. Galav gladly heard this proposal of *Garur* and went with him to Viswamitra together with the girl and the horses and said, "You had ordered me, Sir, to bring eight hundred horses, and this girl but I have brought you six hundred instead of the remaining two hundred. Three great kings have produced three virtuous sons in her and you are to produce the fourth. Thus your tale of eight hundred horses will be complete, and being relieved from the burden of your debt I shall go to perform asceticism." Seeing Galav with Garur and the girl, Viswamitra said, "Why did you not give her to me before? I might have increased my family by production of four sons. I shall now accept her to produce only one son. You may set free these six hundred

विश्वामित्रोमहाद्युतिः । आत्मजंजनयामास माधवीपुत्रमष्टकम् ॥ १८ ॥ जातमात्रं सुतंतञ्च विश्वामित्रोमहामुनिः । संयोज्यार्थैस्तथाधर्मै रश्वैस्तैःसमयोजयत् ॥ १९ ॥ अथाष्टकःपुरंप्रायात् तदासोमपुरप्रभम् । निर्य्यात्यकन्यांशिष्याय कौशिकोपिवनंययौ ॥ २० ॥ गालवोपिसुपर्णेन सहनिर्य्यात्यदक्षिणाम् । मनसाऽतिप्रतीतेन कन्यामिदमुवाचह ॥ २१ ॥ जातोदानपतिःपुत्र स्त्वयाशूरस्तथापरः । सत्यधर्मरतश्चान्यो यज्वाचापितथापरः ॥ २२ ॥ तदागच्छवरारोहे तारितस्तेपितासुतैः । चत्वारश्चैवराजानस्तथाचाहंसुमध्यमे ॥ २३ ॥ गालवस्त्वभ्यनुज्ञाय सुपर्णंपन्नगाशनम् । पितुर्निर्य्यात्यतांकन्यां प्रययौवनमेवह ॥ २४ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते
एकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः ११९ ॥

विश्वामित्रजी उसके संग भोग करने लगे कि जिस से समयपर उसमाधवी के अष्टकनाम पुत्र उत्पन्न हुआ । १८ । जैसेही वह पुत्र उत्पन्न हुआ कि विश्वामित्रजी सब अर्थ धर्म को कुछधन सबे दे फिर छओसौ घोड़ेभी उसीको उन्हों ने देदिये । १९ । तब अष्टक पुत्र तो सोमपुर के समान प्रकाशित विश्वामित्रजी के पुरको आया व विश्वामित्रजी वह माधवी नाम कन्या फिर गालवको दे आप वनको तप करने चलेगये । २० । व गालवभी गरुड़ के साथ गुरूकी दक्षिणा दे व प्रसन्नहो उस कन्यासे यह बोले कि । २१ । तुम से प्रथम जो पुत्र उत्पन्न हुआ वहतो दानपति हुआ, दूसरा महाशूरवीर, तीसरा सत्य धर्म में तत्पर व चौथा महायज्ञ करने वाला । २२ । इससे हे कल्याणिनि तुमने अपने पुत्रों से अपने पिताको तारा व उनचारों राजाओं को तारा जिनसे तुममें पुत्र हुये, व हमकोभी तारा कि गुरू से उऋण हुये ।२३। खगपतिसे विदाहोकर गालव उस कन्याको उसके पिता के घर लेगये और सबे छोड़कर वनको चलेगये । २४ ।

horses to roam round my hermitage." Having said this Viswamitra made her his wife and she in time gave birth to a son named Ashtak. Viswamitra gave his son all his wealth together with the six hundred horses. Ashtak came to the country of Viswamitra which was glorious like Sompur and Viswamitra gave Madhavi back to Galav and himself went out to forest to perform asceticism. 20. Having pleased his preceptor, Galav said to the girl, "Your first son will be the greatest donor; the second will be exceedingly brave; the third will be famous for his virtues and the fourth will perform great sacrifices. You have secured the salvation of your father by these four sons and released me from the debt of my preceptor." Having taken leave of Garur, Galav returned the girl to her father and himself went to forest to perform asceticism. 24.

नारद उवाच । सतुराजापुनस्तस्याः कर्तुकामःस्वयंवरम् । उपगम्याश्रमपदं गङ्गायमुनसङ्गमे ॥ १ ॥ गृहीतमाल्यदामान्तां रथमारोप्यमाधवीम् । पूरुर्यदुश्चभगिनी माश्रवेपर्यधावताम् ॥ २ ॥ नागयक्षमनुष्याणां गन्धर्वमृगपक्षिणाम् । शैलद्रुमवनौ कानां मासीत्तत्रसमागमः ॥ ३ ॥ नानापुरुषदेश्यानां मीश्वरैश्चसमाकुलम् । ऋषिभि र्ब्रह्मकल्पैश्च समन्तादावृतंवनम् ॥ ४ ॥ निर्दिश्यमानेषुतुसा वरेषुवरवर्णिनी । वरा नुत्क्रम्यसर्वास्तान् वरंवृतवतीवनम् । ५ ॥ अवतीर्यरथात्कन्या नमस्कृत्यचबन्धुषु । उपगम्यवनंपुण्यं तपस्तेपेययातिजा ॥ ६ ॥ उपवासैश्चविविधैर्दीक्षाभिर्नियमैस्तथा । आत्मनोलघुतांकृत्वा बभूवमृगचारिणी ॥ ७ ॥ वैदूर्याङ्कुरकल्पानि मृदूनिहरितानिच

॥ अध्याय १२० ॥

नारदमुनिबोले कि राजाययाति ने जब अपनीकन्या फिरपाई तो उसका फिर स्वयंवर करना चाहा इसलिये जहां गंगा यमुना एक में मिली हैं वहां प्रयागराज में जाय स्वयंवर किया । १ । इसलिये उस कन्याके भाई पूरु व यदु दोनों माधवी के हाथमें फूलोंकी माल दे व उसे रथपर चढ़ाय वसस्थानपरलाये । २ । वहां नाग,यक्ष, मनुष्य, गंधर्व,मृग, पक्षी, व सब औरभी पर्वत वृक्ष बनों के रहनेवाले लोग, सुंदर रूप बनाय आये । ३ । व बड़े बड़े उत्तम पुरुषों के ईश्वर नाना देशों के राजालोग, व ऋषि ब्राह्मण लोग भी आये, यहांतक कि वह स्थान सब पूर्ण होगया । ४ । जब वह माधवी कन्या उन सब राजादिकों को देखने लगी तो उसे कोई भी वर पसन्द न आया इस से सबों को छोड़ उस ने बनवास लेनाही अंगीकार किया । ५ । इस से रथसे उतर अपने पिताआदि बंधुओं के प्रणाम कर वह ययाति जीकी कन्या पुण्य बनमें जाय तप करनेलगी । ६ । वहां उस ने इतने उपवास नियम संयम दीक्षादि किये जिनसे उसके अंग ऐसे हलकेहोगये कि वोह मृगोंके संग फिरनेलगी।७।व वैदूर्यमणिके समान हरी कोमल चिकनी कडुवी व मीठी घास

CHAPTER CXX

Narad muni said that when king Yayati got back his daughter, he wanted to celebrate a meeting for the selection of a husband to her at Prayag which is situated at the meeting of the Ganges and Yamuna. Her two brothers Puru and Yadu brought her in a chariot with a garland of flowers in her hand. Nagas, Yakshes, men, Gandharvas, animals, birds and the residents of hills, trees and forests gathered there in beautiful forms. There was a large gathering of princes, rishis and Brahmans there till the place was full. She looked at all the assembly gathered there, but did not choose any.

चरन्तीश्लक्ष्णशष्पाणि तिक्तानिमधुराणिच ॥ ८ ॥ स्रवन्तीनाञ्चपुण्यानां सुरसानिशुचीनिच । पिबन्तीवारिमुख्यानि शीतानिविमलानिच ॥ ९ ॥ वनेषुमृगराजेषु व्याघ्रविप्रोषितेषुच । दावाग्निविप्रयुक्तेषु शून्येषुगहनेषुच ॥ १० ॥ चरन्तीहरिणैःसार्द्धं मृगीववनचारिणी । चचारविपुलंधर्मं ब्रह्मचर्य्येणसंवृतम् ॥ ११ ॥ ययातिरपिपूर्वेषां राज्ञांवृत्तमनुष्ठितः । बहुवर्षसहस्रायुर्युयुजेकालधर्मणा ॥ १२ ॥ पूरुर्यदुश्चद्वौवंशे वर्द्धमानौनरोत्तमौ । ताभ्यांप्रतिष्ठितोलोके परलोकेचनाहुषः ॥ १३ ॥ महीपतेनरपतिर्ययातिःस्वर्गमास्थितः । महर्षिकल्पोनृपतिः स्वर्गाग्र्यफलभुग्विभुः ॥ १४ ॥ बहुवर्षसहस्राख्ये कालेबहुगुणेगते । राजर्षिषुनिषण्णेषु महीयःसुमहर्षिषु ॥ १५ ॥ अवमेनेनरान्सर्वान् देवानृषिगणांस्तथा । ययातिर्मूढविज्ञानो विस्मयाविष्टचेतनः ॥१६॥ ततस्तंबुबुधेदेवः शक्रोवलनिषूदनः । तेचराजर्षयःसर्वे धिग्धिगित्येवमब्रुवन्

मृगों के संग चरनेलगी । ८ । व वनमें नदियों का सरस पवित्र शीतल व विमल जल पीनेलगी । ९ । व सिंह व्याघ्र युक्त दावाग्नि लगेहुये व निर्जन वनों में । १० । हरिणोंके सग हरिणियों के समान घूमती हुई ब्रह्मचर्य्य कर्म को धारण किये उसने विविध प्रकार के धर्म किये । ११ । व राजा ययातिजीभी अपने पूर्वजोंके समान सहस्रों वर्ष तक राजकर मृतक हुये । १२ । उनके पीछे पूरु व यदु बढ़तेहुये दो नरोत्तम वंशमें महाप्रतापी रहगये उन्हीं दोनों ने परलोक में ययातिजीको स्थापित किया । १३ हे राजन्, महाराज ययातिजी जब स्वर्गकोगये तो महर्षियों केही समान थे इससे स्वर्ग में भीजो उत्तम २ पदार्थ थे उन्हीं को भोगते । १४ । इस प्रकार हजारोंवर्ष उनको वहां उत्तम भोग भोगते बीतगये, व जब जहां बड़ेपलवान् धर्मात्मा राजा बैठतेथे वहीं येभी बैठते रहते भोग करतेथे । १५ । परन्तु इनको वहां ऐसा मूढ़ विज्ञानहोगया कि जिससे इनकाचित्त ऐसा विस्मययुक्त हुआ कि ये सब देवताओं मनुष्यों व राजर्षियों का अपमान करने लगे । १६ । तब बल के नाश करने

She at last resolved to lead the life of a forester and with the permission of her father and other kinsmen she began to perform a severe asceticism in a holy forest. With the observance of fasts and vows her body became so light that she could roam with the deer of the forest and lived on soft and green grass of sweet and bitter taste along with the deer. She drank of the pure and cold waters of the forest rills and roamed in forests full of lions, tigers and fire, observing the vow of celibacy and doing other holy deeds. 11. King Yayati died after ruling the kingdom for many years like his forefathers and left after him his two sons, Puru and Yadu, of great

॥ १७ ॥ विचारश्चसमुत्पन्नो निरीक्ष्यनहुषात्मजम् । कोन्वयंकस्यवाराज्ञः कथंवास्वर्गमागतः ॥ १८ ॥ कर्मणाकेनसिद्धोयं क्वानेनतपश्चितम् । कथंवाज्ञायतेस्वर्गे केनवाज्ञायतेप्युत ॥ १९ ॥ एवंविचारयन्तस्ते राजानंस्वर्गवासिनः । दृष्ट्वापप्रच्छुरन्योन्यं ययातिंनृपतिंप्रति ॥ २० ॥ विमानपालाःशतशः स्वर्गद्वाराभिरक्षिणः । पृष्टाआसनपालाश्च नजानीमेत्यथाब्रुवन् ॥ २१ ॥ सर्वेतेह्यावृतज्ञाना नाभ्यजानंततंनृपम् । सम्रुहूर्तादथनृपो हतौजाश्चाभवत्तदा ॥ २२ ॥

इतिमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते ययातिमोहे विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२० ॥

थोड़े इन्द्रदेव ने इनके समाचार जाने व राजर्षिलोग इनको धिक्कारहै धिक्कारहै ऐसा कहने लगे।१७। व ययातिको देख विचारहोनेलगा कि यह कौनहै व किस राजाका पुत्रहै व स्वर्ग को कैसे यह आया। १८। व किसकर्म से यह सिद्धहुआ व इसने कहां तपकिया कैसे यह स्वर्गमें जानाजाय व किस हेतु यह जानने के योग्य समझाजाय। १९। इसप्रकार सब स्वर्गनिवासी लोग आपस में विचार करते हुये राजाययाति को देख परस्पर पूँछनेलगे कि भाई तुम जानतेहो यह कौनहै। २०। जब सब देवताओंसे पूछागया व जितने राजा लोग स्वर्ग वास करते थे उन से पूंछागया कि कोई जानताहै यह कौनहै सबों ने कहा हम इस को नहीं जानते। २१। जब सबलोगोंका ज्ञान ऐसा आच्छादितहोगया कि किसीने भी न जाना तब एकमुहूर्तही भरमें राजाययातिका सब पराक्रम जातारहा। २२।

---

prowess, who helped him in gaining heaven. King Yayati, when he went to heaven, was like a great rishi and enjoyed all good things there. He lived there for thousands of years among virtuous kings. He was however so vain of his greatness as to insult royal and Brahman sages. Indra the destroyer of Bal heard that Yayati was disliked by great rishis and ascertained all about his former doings, parentage, the manner of his coming to heaven, his virtues, asceticism and other things. The residents of heaven asked each other about him. 20. All the gods and other people who resided there said that they did not known him. When they had forgotten his very name, his merits disappeared all of a sudden. 22.



नारद उवाच । अथ च्युतैतःस्थानात् आसनाच्च परिच्युतः । कम्पितेनैव मनसा धर्षितः शोकवह्निना ॥ १ ॥ म्लानस्रग्भ्रष्टविज्ञान प्रभ्रष्टमुकुटाङ्गदः । विघूर्णन्स्रस्तसर्वाङ्गः प्रभ्रष्टाभरणाम्बरः ॥२॥ अदृश्यमानस्तान्पश्यन्नपश्यंश्च पुनःपुनः । शून्यःशून्येन मनसा प्रपतिष्यन्महीतलम् ॥ ३ ॥ किंमयामनसाध्यातं अशुभं धर्मदूषणम् । येनाहंचलितःस्थाना दितिराजाभ्यचिंतयत् ॥ ४ ॥ तेतुतत्रैवराजानः सिद्धाश्चाप्सरसस्तथा । अपश्यन्तनिरालम्बं तंययातिंपरिच्युतम् ॥ ५ ॥ अथैत्यपुरुषःकश्चित् क्षीणपुण्यानि

अध्याय ॥ १२१ ॥

नारदमुनि बोले कि जब राजा का सब पराक्रम जातारहा तो स्थानसे चलायमान हुये व आसन से गिरपड़े व मन कँपनेलगा शोकानलने जलाने का प्रारम्भ करदिया । १ । व जो फूलोंकी माला पहिने थे जोकि कभी न सूखतीथी उस के सब फूल सूखगये, सब विज्ञान भ्रष्टहोगया मुकुट बहूँटा इत्यादि भूषण जो धारण कियेथे सब अपने आप अंगोंसे अलगगिरे राजाका शरीर घूमने लगा, व सब अंग ढीलेपड़गये मानों नीचेको गिरेपरतेथे, वस्त्राभूषण जितने पहिनेथे सब अंगोंसे अलग होगये । २ । अब अपना शरीर तो राजाको न दिखाई दे व और लोगों को देखें कभी उनकोभी न देखें यहांतक कि मन पहिले तो शून्य होगया फिर क्या जानें कहां चलागया इस से मनसेभी शून्य होगये, यहांतक कि पृथ्वीकी ओरको गिरने लगे । ३ । तब राजा चिन्तना करने लगे कि हमने अपने मन से कौन ऐसा पाप किया जिससे हमारे सब धर्मों का नाश होगया, जिससे कि हम स्थानपरसे चलायमान हुये । ४ । ययाति अपने मन में यह सोचतेहीथे कि वहां के रहनेवाले राजालोग व सिद्ध व अप्सराओं ने देखा कि ययाति सब निराश्रय होगये गिरतेही घर हुए हैं । ५ । उसी बीचमें एक पुरुष आया जो कि पुण्य क्षीण होनेपर पुरुषों को

CHAPTER CXXI

Narad said that when all the glory of king Yayati was gone, he moved from his seat and fell down from it His heart trembled and began to burn with grief The flowers of his garland which had never faded before withered, he lost his consciousness, the ornaments on his body became loose and fell down, his body reeled and all the joints became loose. He lost sight of his own body and for a time other beings were visible to him, till at last his mind became void and he lost all consciousness and began to fall down towards the Earth. In the way he considered of his sin which had led to his fall and loss of merits. While he was thus thinking, he was seen by the kings, sidhas and apsaras of that place They saw him about to

पातकः। ययातिमब्रवीद्राजन् देवराजस्यशासनात् ॥ ६ ॥ अतीवमदमत्तस्त्वं नकं चिन्नावमन्यसे । मानेनभ्रष्टः स्वर्गस्ते नार्हस्त्वंपार्थिवात्मज ॥ ७ ॥ नचप्रज्ञायसेगच्छ पतस्वेतितदाब्रवीत् । पतेयंसत्स्वितिवच स्त्रिरुक्त्वानहुषात्मजः ॥ ८ ॥ पतिष्यं श्चिन्तयामास गतिंगतिमतांवरः । एतस्मिन्नेवकालेतु नैमिषेपार्थिवर्षभान् ॥ ९ ॥ चतुरोऽपश्यतनृपस्तेषां मध्येपपातह । प्रतर्दनोवसुमनाः शिबिरौशीनरोऽष्टकः ॥ १० ॥ वाजपेयेनयज्ञेन तर्पयन्तिसुरेश्वरम् । तेषामध्वरजंधूमं स्वर्गद्वारमुपस्थितम् ॥ ११ ॥ ययातिरुपजिघ्रन्वै निपपातमहींप्रति । भूमौस्वर्गेचसम्बद्धां नदींधूममयीमिव । गङ्गां

नीचे ढकेलता है वह इन्द्रकी आज्ञा से ययाति से बोला कि । ६ । तुम मद से अतीव मत वाले होगये हो। मानके मारे तुम किसी को कुछ मानतेही नहीं हो इस से तुम्हारा स्वर्ग भ्रष्टहोगया जाव तुम यहांके योग्य नहींहो । ७ । तुम्हारा तेज अब जातारहा इससे तुम दिखाईही नहींदेते जाव गिरो यह राजासे बोला, तब नहुषके पुत्र ययातिने तीनबार कहा कि अच्छा हम गिरेंगे । ८ । जब गिरनेलगेतो चिन्ताकी कि देखें अब कहां गिरतेहैं, उसीसमयमें राजाने स्वर्गही से देखा कि चार राज श्रेष्ठ नैमिषारण्य में टिकेहैं । ९ । सब उनको देख उन्हीं चारों के मध्यमें राजा आयगिरे, उन राजाओं में एकतो, प्रतर्दनथे, दूसरे वसुमना, तीसरे उशीनरके पुत्र शिवि चौथे विश्वामित्र के पुत्र अष्टक । १० । ये सब वाजपेय यज्ञसे परमेश्वरको वहां तृप्त करातेथे, व उनलोगोंके यज्ञका धूम स्वर्ग के द्वारतक पहुँच गयाथा । ११ । सब धूमको सूंघते हुये ययाति पृथ्वीपर गिरे, वहतो धुआंकी

---

fall down for want of support. In the meantime a person whose business it was to hurl down those who had lost their merits, came there by indra's order and said, "You have become *mad with self* conceit and insult other people; you have lost your right to stay here and are no longer worthy of staying at this place. Your glory is gone and therefore you are not seen. Fall down." At this, Yayati the son of Nahush said three times that he would fall down. When he was falling down, he thought of the place of landing and saw four royal sages sitting in the forest of Naimish He fell down among them. One of them was Pratardan, the second was Vasumana; the third was Shivi the son of Ushinar and the fourth was Ashtak the son of Viswamitra 10. They were gratifying the Lord with Vajpeya sacrifices and the smoke of their Yagya reached the door of paradise. With the smell of that smoke which formed a line from earth to heaven, Yayati came down on earth. The smoke

गामिव गच्छन्तीं गाङ्गमम्बरजगतीपतिः ॥ १२ ॥ श्रीमत्स्ववभृताग्र्येषु चतुर्ष्वप्रतिम न्धुषु । मध्येनिपतितोराजा लोकपालोपमेषुसः ॥ १३ ॥ चतुर्षुहुतकल्पेषु राजसिंहमहाग्निषु । पपातमध्येराजर्षिर्ययातिःपुण्यसंक्षये ॥ १४ ॥ तमाहुःपार्थिवाःसर्वे दीप्यमान मिवश्रिया । कोभवानकस्यवावन्धुर्देशस्यनगरस्यवा ॥ १५ ॥ यक्षोवाप्य थवादेवो गन्धर्वोराक्षसोपिवा । नहिमानुषरूपोसि कोवार्थःकांक्षतेत्वया ॥ १६ ॥ ययातिरुवाच । ययातिरस्मि राजर्षिः क्षीणपुण्यश्च्युतोदिवः । पतेयंसत्स्विति ध्यायन्भवत्सु पतितस्ततः ॥ १७ ॥ राजान ऊचुः। सत्यमेतद्भवतु ते कांक्षितंपुरुषर्षभ।

पाति पृथ्वी से स्वर्गतक बराबर लगीथी । १२ । जान पड़ताथा मानों यह धुवांकी गंगा नदी है जो स्वर्गसे पृथ्वीपर तक बराबर लगातार धारासे बहती है राजा उसीके सहारे पृथ्वीपर गिरे, पर दैवयोगसे वहींगिरे जहां कि यज्ञ करते हुये चारों उन्हींकी कन्या माधवी के पुत्रही विद्यमानथे । १३ । ये चारों महात्मा लोकपालोंके समानथे व चारों राजसिंह अग्नि के तुल्य थे वरन राजसिंहोंमें महा अग्निरूपथे उन्हीं के बीचमें गिरे । १४ । जब पुण्य क्षयहोनेपर राजर्षि ययाति वहां गिरेतो शोभासे प्रकाशित राजासे वे चारो राजा बोले कि आप कौनहैं व किसके बन्धुहैं देशके वा नगरके । १५ । व यक्षहो व देवहो व गन्धर्व हो अथवा राक्षस, मनुष्य कासातो आपका रूप है नहीं आप क्या चाहतेहो जिसके लिये आयेहो । १६ । तब ययाति बोले कि हम राजर्षि ययाति हैं हमारे पुण्य क्षीण होगये हैं इससे स्वर्ग से गिरे हैं, जब हमने कहा गिरेंगे तब गिरनेलगे इतने में आपलोगों को देखा इससे यहीं गिरे । १७ । तब सब राजालोग बोले कि हे पुरुष श्रेष्ठ तुम्हारा गिरना सफलहो

---

looked like the current of the Ganges coming down from heaven to Earth. Yayati came down through that smoke and by a stroke of good luck came down on the very place where the four sons of his own daughter Madhavi were sitting together. All the four were great beings like the protectors of the world and were glorious like fire. When at the loss of his merits, Yayati fell among them, they said to him, "Who are you ? Where do you live ? Are you a yaksh, god, Gandharva *or* rakshas ? You donot look like a human being. What is the purpose of your coming here." "I am Yayati the royal sage," said he, "the merits of my good deeds have expired and therefore I am cast out of heaven. I fell as I said "I shall fall" and at the time of my falling down I saw you sitting here and have fallen down among you." "Let your fall here bring good fruit," said they, "receive the merit of our sacrifices and good deeds." "I am not one

सर्वेषां नाकतुफलंधर्मश्च मतिगृह्यताम् ॥ १८ ॥ ययातिरुवाच । नाहमतिग्रहधनो ब्राह्मणःक्षत्रियोऽहम् । नचमेमवणाबुद्धिः परपुण्यविनाशने ॥ १९ ॥ नारद उवाच। एतस्मिन्नेवकालेतु मृगचर्य्याक्रमागताम् । माधवींवेक्ष्यराजानस्तेभिवाद्येदमब्रुवन् २० किमागमनकृत्यन्ते किंकुर्म शासनंतव । आज्ञाप्याहिवयंसर्वे तवपुत्रास्तपोधने ॥२१॥ तेषांतद्भाषितं श्रुत्वामाधवी परयामुदा । पितरंसमुपागच्छद्ययातिंसाववन्दच ॥२२॥ स्पृष्ट्वामूर्द्धनितान पुत्रांस्तापसी वाक्यमब्रवीत् । दौहित्रास्तवराजेन्द्र ममपुत्रानतेपराः ॥ २३ ॥ इमेत्वांतारयिष्यन्ति दृष्टमेतत्पुरातने । अहंतेदुहिताराजन् माधवीमृगचारिणी ॥ २४ ॥ मयाप्युपचितो धर्मस्ततोर्द्धं मतिगृह्यताम् । यस्माद्राजन्नराःसर्वे

इन चारोंजनों के यज्ञका फल व सब धर्म आपलें। १८ । ययातिजी ने कहा कि, हम दान लेनाही जिनके धन होता ब्राह्मण नहीं हैं हमतो क्षत्रियहैं हमारी ऐसी बुद्धि नहीं है कि हम दूसरे की पुण्य का नाशकरें । १९ । नारदजीबोले कि वसीसमय मृगोंकासा आचरण किये माधवी उनकी माता आई, उसे देख राजा लोगों ने प्रणामकर यह कहा कि ।२०। कि आप के आनेका कौन कार्य है व आपकी कौन आज्ञा हम लोगकरें, हमसबतो आज्ञा पानेहीके योग्यहैं क्योंकि आपहीके पुत्रहैं ।२१। उनलोगोंके वैसे वचनसुन माधवी परमानन्दितहो अपने पिता ययातिजीके निकट गई व जाय प्रणाम किया । २२ । व उन अपने पुत्रोंका मस्तक छूकर वह माधवी तापसी बोली कि राजेन्द्र ये चारो हमारे पुत्रहैं इससे आप के दौहित्रहैं कोई अनारी नहीं हैं ।२३। ये तुमको तारेंगे क्योंकि वेदमें लिखाहै कि दौहित्र मातामह को तारतेहैं, व राजन् हम आपकी कन्या माधवी हैं तपस्याकरनेके लिये मृगोंकासा आचरण किये हैं । २४ । हमने भी बहुतसा धर्म इकट्ठा किया है उसमेंभी

---

of those Brahmans who live upon alms," said Yayati, "I am a *Kshatrya* and *donot like to deprive other man's merits.*" *Narad* said that in the meantime came there Madhavi their mother in the habit of a deer. They bowed down to her and said. 20. "What is the purpose of your coming here and what should we do for you? We are your dutiful sons and you may cammand us in all respects." Madhavi was much pleased to hear those words and came near Yayati her father. She bowed down to him and having touched the foreheads of her sons she said, "King, these are my sons and your grandsons. They are not strangers. They will secure your salvation; for, according to the Vedas, daughter's sons are sure to secure one's salvation. I am your daughter Madhavi and have turned

अपत्यफलभागिनः ॥ २५ ॥ तस्मादिच्छन्ति दौहित्रान् यथात्वंवसुधाधिप। ततस्ते पार्थिवाः सर्वे शिरसाजननींतदा ॥ २६ ॥ अभिवाद्यनमस्कृत्य मातामहमथाब्रुवन् । उच्चैरनुपमैःस्निग्धैः स्वरैरापूर्यमेदिनीम् ॥ २७ ॥ मातामहंनृपतयस्तारयन्तो दिवश्च्युतम् । अथतस्मादुपगतो गालवोऽप्याह पार्थिवम् । तपसोमेऽष्टभागेन स्वर्गमारोहतांभवान् ॥ २८ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि ययातिस्वर्गभ्रंशे एकविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२१ ॥

नारद उवाच । प्रत्यभिज्ञातमात्रोऽथ सद्भिस्तैर्नरपुङ्गवः । समारुरोह नृपतिरस्पृशन् वसुधातलम् । ययातिर्दिव्यसंस्थानो बभूवविगतज्वरः ॥ १ ॥ दिव्यमाल्या-

---

आधा आपको, क्योंकि सब पुरुष अपने सन्तान के फलके भागी होते हैं । २५ । इसी से सब अपने दौहित्रों की इच्छाकरते हैं जैसे आप इच्छाकरते हैं, यहसुन वे राजालोग अपनी माताको प्रणामकर । २६ । व अभिवादन नमस्कार कर अपने मातामह से बड़े ऊंचे स्वर से व बड़े मीठे अनुपम शब्दों से बोले । २७ । व सब चाहते थे कि स्वर्ग से गिरेहुये अपने मातामहको तारें, उसी बीचमें गालवभी आये व राजा ययाति से बोले कि हमने जितनी तपस्या की है उसका अष्टमांश आप को देते हैं उस से फिर आप स्वर्ग को अभी चलेजाइये २८ ॥

अध्याय १२२ ॥

नारदमुनि बोले कि जैसेही उन सज्जनों ने ऐसा कहा है कि राजा ययाति जी पृथ्वी को बिनाछुये ही फिर स्वर्गको चले, उससमय ययाति जी भी दिव्य मान हुये । १ ।

---

into a deer to perform asceticism. I have collected a large store of dharm out of which you can take one half for all people can share the fruits of their children and therefore like you they desire to have sons born to their daughters." Having heard these words, the four kings greeted their mother and spoke sweet words to their grandfather. They wanted to help their fallen grandfather, but in the meantime Galav came there and said to Yayati, "I give you the eighth part of my asceticism and with it you will again go to paradise." 28.

CHAPTER CXXII

Narad said that as soon as those good men had finished the above conversation, Yayati reascended heaven without touching the earth.

म्बरधरो दिव्याभरणभूषितः । दिव्यगन्धगुणोपेतो नपृथ्वीमस्पृशत्पदा ॥ २ ॥ ततोवसुमना:पूर्व मुच्चैरुच्चारयन्वचः । ख्यातोदानपतिर्लोके व्याजहारनृपंतदा ॥३॥ प्राप्तवानस्मियल्लोके सर्ववर्णेष्वगर्हया । तदप्यथचदास्यामि तेनसंयुज्यतांभवान् ॥४॥ यत्फलंदानशीलस्य क्षमाशीलस्ययत्फलम् । यच्चमेफलमाधाने तेनसंयुज्यतांभवान् ॥ ५ ॥ ततःप्रतर्दनोप्याह वाक्यंक्षात्रपर्षभः । यथाधर्मरतिर्नित्यं नित्यंयुद्धपरायणः ॥ ६ ॥ प्राप्तवानस्मियल्लोके क्षत्रवंशोद्भवंयशः । वीरशब्दफलञ्चैव तेनसंयुज्यतां भवान् ॥ ७ ॥ शिविरौशीनरो धीमानुवाचमधुरांगिरम् । यथाबालेपुनारीषु वैहा-

वैसेही दिव्यमाला वस्त्र धारण किये व दिव्यही भूषण पहिने, दिव्य चन्दनादि लगाये, राजा ययाति ने पैर से पृथ्वी न छुई । २ । पर थोड़ी ही दूर ऊपर खड़े रहे तब राजा हर्य्यश्वजी के पुत्र वसुमनाजी बड़े जोरसे उच्चारण करतेहुये राजा से बोले ये वसुमना दानपति के नाम से पृथ्वीपर रूयात थे ।३। कि हमने लोकमें किसी वर्णवालेकी आजतक निन्दा नहीं की उस से लोकमें जो पुण्य व धर्म्म हमको मिलाहै वहभी आप देंगे उससे आप संयुक्तहो । ४ । व सदा दानही हम दिया करतेथे उससे जो फलहो व क्षमा करनेका जो हमारा स्वभावहै उस से जो फल मिलाहो व जो फल अग्न्याधान नाम वेदकर्म्म के करने से हमें मिलाहो वह सब आपको मिले । ५ । उस के पीछे माधवी व दिवोदास के पुत्र प्रतर्दनजी बोले कि हमारी जैसे नित्य धर्म्म में प्रीति है व नित्यही जैसे हम युद्ध करने में परायण हैं । ६ । व हमने लोकमें जो क्षत्रिय के वंशसे यश पाया है व जो वीर शब्दका फलपाया है उस फल से आप संयुक्तहो । ७ । उस के पीछे माधवी व उशीनर राजाके पुत्र राजा शिविजी मधुर वाणी से बोले कि जैसे कि हमने बालकों के दुलराने के समय में व स्त्रियों के संग हँसने में व, श्यालादि गाली देनेवाले सम्बन्धियों

Decked with divine garlands, clothes, ornaments and sandal, king Yayati went up to paradise without touching the earth with his feet, But he stopped a little higher and then Haryashwa's son Vasumana who was famous for his charity, said in a loud voice, "I have never spoken ill of any one all my life and I shall give you the merit of it. You may have all that as well as the merits of my charity, forgivness and pouring libations to fire" After him spoke out Pratardan the son of Divodas and Madhavi, saying, "I have always loved dharm and fighting and have got fame and merit from my warlike deed. I give you all the fruits of my good deeds." After him spoke out Shivi the son of Madhavi and Ushinar saying in a sweet voice, I have never told a lie in fondling children, joking with women and

द्येंपुतथैवच ॥ ८ ॥ सङ्करेषुनिपातेषु तथापद्व्यसनेषुच । अनृतंनोक्तपूर्वंमे तेनसत्येन खंव्रज ॥ ९ ॥ यथाप्राणांश्चराज्यञ्च राजन्कामसुखानिच। त्यजेयंनपुनःसत्यंतेन सत्येनखंव्रज॥१०॥यथासत्येनमेधर्मो यथासत्येनपावकः । प्रीतःशतक्रतुश्चैवतेनसत्येन खंव्रज ११ अष्टकस्त्वथराजर्षिः कौशिकोमाधवीसुतः॥ अनेकशतयज्वानं नाहुषंप्राप्य धर्मवित् १२ शतशःपुण्डरीकामे गोसवाश्चरिताःप्रभो । क्रतवोवाजपेयाश्चतेषांफलमवा प्नुहि॥१३॥ नमेरत्नानिनधनं नतथान्येपरिच्छदाः । क्रतुष्वनुपयुक्तानि तेनसत्येनख व्रज ॥ १४ ॥ यथायथाहिजल्पन्ति दौहित्रास्तंनराधिपम् । तथातथावसुमतीं त्यक्त्वा राजादिवंययौ ॥ १५ ॥ एवंसर्वेसमस्तैस्ते राजानःसुकृतैस्तदा । ययातिंस्वर्गतोभ्रष्टं

के आगे । ८ । व प्राणादि के संकट पड़नेपर व कहीं गिरपड़ने पर व जुआ आदि खेलने में भी कभी झूठ नहीं कहा उस पुण्य से आप स्वर्गको जायँ । ९ । व जैसे हमने प्राणराज्य काम के सुख छोड़दिये पर सत्यबोलना न छोड़ा उस सत्यसे आप स्वर्ग को जायँ । १० । व जैसे हमारा सत्यसे धर्महै व जैसे हमने सत्य से अग्निको प्रसन्न किया है, व जैसे हमारे सत्य से इन्द्र हमारे ऊपर प्रसन्न हुये हैं उस सत्य से आप स्वर्ग को जायँ । ११ । व विश्वामित्रजी के व माधवी के पुत्र अष्टक राजर्षि अनेक शत यज्ञकिये हुये राजा ययातिजी को पाय । १२ । बोले कि, हमने सैकड़ोंसे पुण्डरीक यज्ञ किये हैं व सैकड़ोंही गोमेध यज्ञ किये हैं, व इसीप्रकार वाजपेय यज्ञकिये हैं, इन सब यज्ञोंका फल आपपावें । १३ । हमने यज्ञोंके करने के समय में नतो रत्न धारणकिये हैं देही दियेहैं व धनभी सिवाय देडालने के अन्य किसी काममें नहीं लगाया न और वस्त्र भूषणादि भी धारणकिये देहीदिये हैं इससत्य से आप स्वर्गको जायँ । १४ । इसप्रकार जैसेही उनके दौहित्रों ने बार २ पुकार अपने दानपुण्यादि राजाको दिये वैसेही राजाययाति स्वर्ग चलेगये । १५ । इस प्रकार अपने सुकृत देकर स्वर्गसे भ्रष्ट

---

kinsmen, in troublous times, falls and gambling. By the virtue of my truth you may go to paradise and as I have forsaken the enjoyments of life and wealth for the sake of truth, you may reap the benefit of it. 10. You will go to paradise by the virtue of the truth which has been my dharm and with which I have gratified Agni and Indra." Then Ashtak, the son of Viswamitra and Madhavi, who had performed a hundred sacrifices said to Yayati, "I have performed hundreds of Pundarik sacrifices, Gomedhs and Vajpeyas and you may reap the benefit of it. I never put on my person ornaments and gave away wealth at the time of perfoming sacrifices; by virtue of these things you will go to paradise." As soon as the grandsons of king Yayati gave away the merits of their good deeds, he ascended

तारयामासुरथसा ॥ १६ ॥ दौहित्राःस्वेनधर्मेण यज्ञदानकृतेनवै । चतुर्षुराजवंशेषु सम्भूताःकुलवर्द्धनाः । मातामहंमहाप्राज्ञं दिवमारोपयन्तवै ॥ १७ ॥ राजानऊचुः । राजधर्मगुणोपेताः सर्वधर्मगुणान्विताः दौहित्रास्तेवयंराजन् दिवमारोहपार्थिव ॥१८॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि ययातिस्वर्गारोहणे द्वाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२२ ॥

नारदउवाच । सद्भिरारोपितःस्वर्गं पार्थिवैर्भूरिदक्षिणैः । अभ्यनुज्ञायदौहित्रान् ययातिर्दिवमास्थितः ॥ १ ॥ अभिवृष्टश्चवर्षेण नानापुष्पसुगन्धिना । परिष्वक्तश्च पुण्येन वायुनापुण्यगन्धिना ॥ २ ॥ अचलंस्थानमासाद्य दौहित्रफलनिर्जितम् । कर्मभिःस्वैरुपचितो जज्वालपरयाश्रिया ॥ ३ ॥ उपगीतोपनृत्तश्च गन्धर्वाप्सरसांग

ययातिको फिर वाता यज्ञ दान और धर्म कार्यो दौहित्रोंने अपने माता मह को तार कर अपने वंशको उद्धार किया । १७ । फिर सबने कहा कि राजधर्म गुणयुक्त नृप हम सब धर्म युक्त हैं । १८ । और सब तुम्हारे दौहित्र हैं इस लिये अपने सुकृत तुमको देते हैं इस लिये सुरपुर जाकर तुम भलीभांति भोग करो १९ ॥

अध्याय ॥ १२३ ॥

नारदजी बोले कि राजा ययातिजी बहुत २ दक्षिणा दे २ यज्ञ करनेवाले अपनी कन्या के पुत्र महात्मा चार राजाओं के पुण्य से उनलोगों से बिदाहो स्वर्ग को चले गये । १ । व फिर ययातिजी के ऊपर देवताओं ने सुगन्धित पुष्पों की वर्षा की, व पुण्य गन्ध युक्त पवन उनके अंगोंमेंलगा । २ । व अपने दौहित्रों के फलों से जीतेहुये अचल स्थानपर विराजमान हुये, व उसपर फिर अपने कर्मों से बढ़े हुये परमशोभा से प्रकाशितहुये । ३ । व जैसेही स्वर्ग में पहुँच कि समीप आय गन्धर्वगण व अप्सरा गाने

to heaven. Thus the grandsons of Yayati helped him with their good deeds. The four grandsons of Yayati brought about his salvation at the expense of the merits of their sacrifices and good deeds and then said to him, "We have laid by a large store of virtues and Dharm. We are all your grandsons and therefore give you a share of our merits to enable you to enjoy the residence in paradise." 19.

CHAPTER CXXIII

Narad said that king Yayati went to paradise with the help of his four virtuous grandsons. Gods from heaven poured forth a shower of sweet scented flowers on him and his body felt the holy air charged with sweet scents. He was reestablished on his former immoveable seat by the merits of his grandsons and gained great glory by his own good deed. Gandharvas and apsaras began to

णैः । प्रीत्याप्रतिगृहीतश्च स्वर्गदुन्दुभिनिःस्वनैः ॥ ४ ॥ अभिष्टुतश्चविविधै देवराजर्षिचारणैः । अर्चितश्चोत्तमार्घ्येण दैवतैरभिनन्दितः ॥ ५ ॥ प्राप्तःस्वर्गफलञ्चैव तमुवाचपितामहः । निर्वृतंशान्तमनसं वचोभिस्तर्पयन्निव ॥ ६ ॥ चतुष्पादस्त्वयाधर्मश्चितोलोक्येनकर्मणा । अक्षयस्तवलोकोयं कीर्त्तिश्चैवाक्षयादिवि ॥ ७ ॥ पुनस्त्वयैवराजर्षे सुकृतेनविघातितम् । आवृतंतमसाचेतः सर्वेषांस्वर्गवासिनाम् ॥ ८ ॥ येन त्वांनाभिजानन्ति ततोऽज्ञातोसिपातितः । प्रीत्यैवचासिदौहित्रैस्तारितस्त्वमिहागतः ॥ ९ ॥ स्थानञ्चप्रतिपन्नोसि कर्मणास्वेननिर्जितम् । अचलंशाश्वतंपुण्य मुत्तमंध्रुव

नाचनेलगीं, व प्रीतिसे सब स्वर्गवासियोंने नगारे बजाय इनको प्रसन्नकिया ।४। व देवता राजर्षि चारणों ने आय बड़ी स्तुतिकी व देवताओं ने उत्तम अर्घ्यपाद्याचमनीयादि से बड़ी पूजाकर अभिनन्दित किया । ५ । जब इसप्रकार ययातिजी ने स्वर्गका फल फिर पाया तो ब्रह्माजी ने आय शान्तमन व सब शोकादिकों से निवृत्त ययातिजी को वचनोंसे हर्षित करातेही ये कहा । ६ । राजन् तुमने तप यज्ञ ज्ञान व दान इन चारपादों से युक्त व अहिंसा सत्य चोरी न करना व किसी के ऋणी न रहना इन चारपादों से युक्त धर्म्म बहुत इकट्ठा किया है, व स्वर्गलोक व मर्त्यलोकमें तुम्हारी अक्षय कीर्त्ति फैली है । ७ । पर ऐसा होकर फिर तुमने अपने पुण्य नाशकरनेके लिये सब स्वर्गनिवासियों का चित्त अपने पापरूप अन्धकार से ऐसा आच्छादित किया । ८ । कि जिससे उनलोगों ने तुमको चीन्हही न पाया कि कौनहो इस से अज्ञात पुरुष तो स्वर्ग में रहनेही नहीं पाता तुम नीचे गिरादियेगये फिर तुम्हारे दौहित्रोंने प्रीति से तुमको तारा तो यहां आगये ।९। अपने अर्जित कर्म्मोंसे अचल निरन्तर रहनेवाले पुण्यरूप उत्तम निश्चय व नाशरहित स्थानको

---

dance and sing as soon as he reached paradise and the residents of heaven beat drums as a token of his love. Gods, sages and charans sang his praises and with offerings of water, the gods worshipped and respected him. When Yayati had thus got again the enjoyments of paradise, Brahma pleased the already joyful mind of Yayati *with the following words.—"You collected a vast store of* dharm by your asceticism, learning, charity, want of cruelty, truth, want of avarice *and freedom from* all debts. *Your fame has spread* through the world of mortals as well as this world; but in spite of this, you so covered the minds of the residents of heaven by your sins that they could not recognise you and as no unknown person can live here in paradise, you had to fall down. You have now come up again here with the help of your grandsons and by your

मव्ययम् ॥ १० ॥ ययातिरुवाच । भगवन्संशयोमेस्ति कश्चित्तंछेत्तुमर्हसि । नह्यन्य महमर्हामि प्रष्टुंलोकपितामह ॥ ११ ॥ बहुवर्षसहस्रान्त प्रजापालनवर्द्धितम् । अनेक क्रतुदानौघै रर्जितंमेमहत्फलम् ॥ १२ ॥ कथंतदल्पकालेन क्षीणंयेनास्मिपातितः । भगवन्वेत्स्यलोकांश्च शाश्वतान्ममनिर्मितान् । कथंनुममतत्सर्वं विप्रनष्टंमहाद्युते ॥ १३॥ पितामहउवाच ॥ बहुवर्षसहस्रान्तं प्रजापालनवर्द्धितम् । अनेकक्रतुदानौघैर्यत्त्वयो पार्जितंफलम् ॥ १४ ॥ तदनेनैवदोषेण क्षीणंयेनासिपातितः । अभिमानेनराजेन्द्र धिक्कृतःस्वर्गवासिभिः ॥ १५ ॥ नायंमानेनराजर्षे नबलेननहिंसया । नशाठ्येनन

प्राप्तहुये । १० । इतना सुन ययातिजी बोले कि हे भगवन् हमारे कुछ संशय है उसे आप काटने के योग्यहैं, व आपको छोड़ और किसीसे हम पूँछभी नहीं सके क्योंकि आपतो तीनों लोकोंके पितामह ठहरे इससे आपसे सबकोई पूँछसक्ता है । ११ । वह यहहै कि सहस्रों वर्षतक धर्महीसे प्रजा पालनकर हमने धर्म बढ़ाया व अनेक यज्ञ दान समूहों से हम ने जो धर्म इकट्ठाकिया । १२ । वहसब धर्म थोड़ेही समय में हमारा कैसे क्षीण होगया कि जिससे हम स्वर्ग से पृथ्वीपर गिराये गये, हे भगवान आप अच्छीतरह जानतेहैं कि हमने बहुत दिनोंतक रहने के लिये बहुतसे लोक जीतेथे वे सब हमारे एकाएकी कैसे नष्ट होगये । १३ । ब्रह्माजी इतना सुनकर बोले कि राजन् सहस्रों वर्षतक धर्म पूर्वक प्रजापालन करने से जो धर्म तुमने इकट्ठाकिया, व अनेक यज्ञदान समूहों से जो फल इकट्ठा किया । १४ । वह सब तुम्हारा धर्म व फल इसीदोषसे नष्टहोगया जोकि तुमको बड़ा अभिमानी जान सब स्वर्गवासियों ने धिक्कारा जिससे कि तुम फिर नीचेगिराये गये । १५ । क्यों- कि यह स्वर्गलोक निरन्तर बसने के लिये नतो मान करने से मिलता न बलसे न जीवोंकी

---

own good deeds you have earned this holy, eternal, sure and best place."20. "I have a doubt," said Yayati, "which no one except you can remove. You are the father and mother of all the world and therefore everyone has a right to ask of you. I ruled with justice for thousands of years and performed many *sacrifices*, *gave in charity* and thus laid by a vast store of dharm. Please tell me how it all vanished away in an instant and I had to fall from heaven down on earth. You know well, Bhagwan, that I had earned many regions to live in for many days; how did I lose them all in an instant!" To this Brahma gave the following reply, "The *merit which* you had earned by thousands years of good rule, Yagyas and charity was lost because all the residents of paradise disdained you on account of

मायाभि र्लोकोभवतिशाश्वतः ॥ १६ ॥नावमान्यास्त्वया राजन्नवमोत्कृष्टमध्यमाः। नहिमानप्रदग्धानां कश्चिदस्तिसमःक्वचित् ॥ १७ ॥ पतनारोहणमिदं कथयिष्यन्ति येनराः। विषमाण्यपितेप्राप्य स्तरिष्यन्तिनसंशयः ॥ १८ ॥ नारद उवाच। एषदोषोभिमानेन पुरापासोययातिना। निर्बन्धातातिमात्रञ्च गालवेनमहीपते ॥ १९ ॥ श्रोतव्यंहितकामानां सुहृदांहितमिच्छता। नकर्तव्योहिनिर्बन्धो निर्बन्धोहिक्षयोदयः ॥ २० ॥ तस्मात्त्वमपिगान्धारे मानंक्रोधञ्चवर्जय। सन्धत्स्वपाण्डवैर्वीर संरम्भं त्यजपार्थिव ॥ २१ ॥ ददातियत्पार्थिवयत्करोति यद्वातपस्तप्यातियज्जुहोति। नतस्यनाशोस्तिनचापकर्षो नान्यस्तदश्नातिसएवकर्ता ॥ २२ ॥ इदंमहाख्यानमनुत्तमं

हिंसाकरनेसे न विश्वासघात से, न और लोगों को छलसे वंचित करने से, । १६ । इससे हे राजन् अब यहां अधम उत्तम व मध्यम सब प्रकारके स्वर्गवासी हैं पर तुम किसी का अपमान न करना, क्योंकि जो मानसे भस्म होजाते हैं उनके समान पापी कोई किसी लोक में कहीं नहीं है । १७ । व आपका स्वर्ग से पतन होना व फिर स्वर्ग में आना जो कोई पुरुष कहेंगे वे विषम स्थान नरकादिकों में प्राप्तभी होगयेहोंगे तो फिर तरजायँगे इसमें कुछभी संशय नहीं है । १८ । नारदजी दुर्योधन से बोले कि आगे अभिमान करने से ययातिने यह दोष पाया, व हठकरने से गालवने बड़ाभारी कष्टपाया । १९ । इससे हित चाहनेवाले व हितहीकी इच्छा किये सुहृदों के वचन अवश्य सुनने चाहिये व बार २ हठतो कभी करनाही न चाहिये, क्योंकि हठ करने से क्षयकी उदय होती है । २० । इस से हे दुर्योधन तुमभी मान व क्रोधको छोड़ो व पांडवों के सङ्ग मेलकरलो क्रोध त्यागो । २१ । क्योंकि जो दान देता और अग्निमें आहुति चढ़ाता है वह कभी नाश नहीं होता

---

your pride and you had to fall down; for, the eternal residence of heaven cannot be obtained by pride, strength, cruelty, treachery or deceit. People of low, middling and high classes live here in paradise; but you should never look down upon any one, for those who are burnt with pride are the geatest *sinners in the world.* Whoever will read of your fall and reascension will gain salvation though he be worthy of falling into hell." Narad then said to Duryodhan, "Such was the punishment which Yayati had to undergo on account of his pride and you have also heard how much Galav had to suffer for his stubbornness. You should therefore hear the good advice of your well-wishers without stubbornness which is sure to lead to destruction. You must give up pride and anger and should make peace with the Pandavas. He who gives in charity

हितं यद्बुधतानागतरोपरागिणाम् । समीक्ष्यलोकेबहुधाभ्यधारितं त्रिवर्गदृष्टिपृथिवीश पाधुते ॥ २३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते त्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । भगवन्नेवमेवैतद्यथावदसिनारद । इच्छामिचाहमप्येवं न त्वीशोभगवन्नहम् ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वाततःकृष्ण मभ्यभाषतकौरवः । स्वर्ग्यंलोक्यमामात्थ धर्म्यंन्याय्यञ्चकेशव ॥ २ ॥ नत्वहंस्ववशस्तात क्रियमाणंनतेप्रियम् । अंगदुर्योधनंकृष्ण मन्दंशास्त्रातिगंमम ॥ ३ ॥ अनुनेतुंमहाबाहो यतस्वपुरुषोत्तम । नश्रृणोतिमहाबाहो वचनंसाधुभाषितम् ॥ ४ ॥ गान्धार्याश्चहृषी

न कभी नीचे गिरता है । २२ । यह महा आख्यान सब वेद और पुण्य जानने वालों को अच्छा लगता है ॥ २३ ॥

अध्याय १२४ ॥

नारदजी के वचन सुन दुर्योधनतो कुछबोले नहीं पर धृतराष्ट्रजी बोले कि हे भगवन् नारद यह ऐसाही है जैसा आप कहतेहैं हमभी यही चाहते हैं, पर क्या करें हमकुछ करनहीं सके । १ । वैशम्पायनजी बोले कि नारदजी से ऐसाकह धृतराष्ट्रजी कृष्णचन्द्रजी से बोले कि हे केशवजी आपने जो हमसे कहा सब स्वर्ग में उपकारक, व लोक में उपकारी व सब धर्मयुक्त व सब न्याययुक्तहैं । २ । परन्तु हेतात हम अपने वशमें नहीं हैं व न हमको जो किया जाता है प्रियहै इससे हे कृष्णचन्द्र आप कृपाकर इस मूर्ख मन्द व शास्त्रसे भिन्न चलनेवाले दुर्योधनको समझाइये हे महाबाहु कृष्णजी यह साधुओंका कहा वचन नहीं सुनता । ४ । न गान्धारी अपनी माता के वचन सुनताहै न महामति मान

---

and pours libations to fire never sees his destruction and never falls. This great history is pleasing to the minds of those who are learned in the Vedas and Purans. 23.

CHAPTER CXXIV

Duryodhan heard the words of Narad but gave no reply. Dhrishtra then spoke out as follows:— " It is as you say, Narad, I wish to do as you say but have no power." Having said this to Narad, Dhritrashtra turned towards Shree Krishn and said, " Your words are true, just and beneficial for this world as well as the next; but I am not independent nor do I like what is being done. Be pleased Krishnacandra to admonish this foolish Duryodhan who is going against the dictates of religious books and the advice of good men.

केश विरस्यचधीपतः । अन्येषाञ्चैवसुहृदांभीष्मादीनां हितैषिणाम् ॥ ५ ॥ सत्वंपा
पमतिंक्रूरं पापचित्तमचेतनम्। अनुशाधिदुरात्मानं स्वयंदुर्य्योधनंनृपम् ॥ ६ ॥ सु
हृत्कार्यन्तु सुमहत्कृतन्तेस्याज्जनार्दन । ततोऽभ्यावृत्यवार्ष्णेयो दुर्य्योधनममर्षणम् ॥७॥
अब्रवीन्मधुरांवाचं सर्वधर्मार्थतत्त्ववित् । दुर्य्योधननिबोधेदं मद्वाक्यंकुरुसत्तम ॥ ८ ॥
शर्मार्थंतेविशेषेण सानुबन्धस्य भारत । महाप्रज्ञकुलेजातः साध्वेतत्कर्त्तुमर्हसि ॥ ९ ॥
श्रुतवृत्तोपसम्पन्नः सर्वैःसमुदितोगुणैः । दौष्कुलेयादुरात्मानो नृशंसानिरपत्रपाः
॥ १० ॥ तएतदीदृशंकुर्य्युर्यथात्वं तातमन्यसे । धर्मार्थयुक्तालोकेस्मिन् प्रवृत्तिर्लक्ष्य

विदुरजी के वचन सुनता व औरभी जो हित चाहने वाले सुहृदलोग भीष्मपितामहादि हैं उनके भी नहीं सुनता । १५ । इससे अब आप अपने बूते इस पापी अतिक्रूर पाप चित्तवाले, अचेत, दुष्टात्मा दुर्योधनको जो राजा बना बैठ है समझाइये । ६ । जो आप इसको समझावेंगे तो जानों सुहृदों का सब कार्य आपने किया, यहसुन श्रीकृष्णचन्द्रजी ने दुर्योधनकी ओर निहारा जो कि महा असहनशील व दुष्टथा । ७ । व सब धर्म अर्थ के निश्चय जानने वाले भगवान बड़ी मधुर वाणी से बोले, हे कुरुसत्तम दुर्योधन हमारी यहबात चित्तलगाय सुनो । ८ । यह हमारी बात सपरिवार तुम्हारे शान्तहोने के विषय में है, इस से हे महाप्राज्ञ, तुम्हारा जन्म बड़े कुलमें है इस हमारे कहने को अच्छा समझो व करो । ९ । क्योंकि तुम अच्छीतरह वेद शास्त्र पढ़े लिखे चतुरहो, व जितने अच्छे २ गुण हैं सब तुम में विद्यमान हैं, परन्तु जो लोग खराबकुलों में जन्मे हैं, व दुरात्मा हैं व क्रूरस्वभाव निर्लज्ज हैं । १० । वे लोग ऐसा काम करते हैं जैसा कि तुम मानते हो हे तात, यह तुमको उचित नहीं है क्योंकि लोक

He gives no ear to the advice of his mother Gandhari nor to that of wise Vidur or Bhishm and other friends. You should therefore admonish this sinful, cruel, ill-natured, senseless and wicked Duryodhan, who has made himself a king. You will perform the duties of a friend if you will bring him round." At this Shree Krishn looked at Duryodhan the wicked and unbearable and the wise and learned Bhagwan spoke to him as follows.— " Hear my words attentively, best of Kurus ! My words concern the peace of your family which is noble and great. Hear my advice and act upon it; for you are learned in the Vedas and shastras and possess all the good qualities. Those who are born in ignoble families are bad natured, cruel and shameless. 14. They alone work like you. You should not do such deeds; for good nature always leans towards

हितं वहुश्रुतानांगतरोषरागिणाम् । समीक्ष्यलोकेवहुधामधारितं त्रिवर्गदृष्टिःपृथिवीमु पाश्नुते ॥ २३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गालवचरिते त्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । भगवन्नेवमेवैतद्यथावदसिनारद । इच्छामिचाहमप्येवं न त्वीशोभगवन्नहम् ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वाततःकृष्ण मभ्यभाषतकौरवः । स्वर्ग्यंलोक्यमाभात्थ धर्म्यंन्याय्यञ्चकेशव ॥ २ ॥ नत्वहंस्ववशस्तात क्रियमाणंनतेप्रियम् । अंगदुर्योधनंकृष्ण मन्दंशास्त्रातिगंमम ॥ ३ ॥ अनुनेतुंमहावाहो यतस्वपुरुषोत्तम । नशृणोतिमहावाहो वचनंसाधुभाषितम् ॥ ४ ॥ गान्धार्याश्चहृषी

न कभी नीचे गिरता है । २२ । यह महा आख्यान सब वेद और पुण्य जानने वालों को अच्छा लगता है ॥ २३ ॥

अध्याय १२४ ॥

नारदजी के वचन सुन दुर्योधनको कुछबोले नहीं पर धृतराष्ट्रजी बोले कि हे भगवन् नारद यह ऐसाही है जैसा आप कहतेहैं हमभी यही चाहते हैं, पर क्या करें हमकुछ करनहीं सके । १ । वैशम्पायनजी बोले कि नारदजी से ऐसाकह धृतराष्ट्रजी कृष्णचन्द्रजी से बोले कि हे केशवजी आपने जो हमसे कहा सब स्वर्ग में उपकारक, व लोक में उपकारी व सब धर्मयुक्त व सब न्याययुक्तहैं । २ । परन्तु हेतात हम अपने वशमें नहीं हैं व न हमको जो किया जाता है प्रियहै इससे हे कृष्णचन्द्र आप कृपाकर इस मूर्ख मन्द व शास्त्रसे भिन्न चलनेवाले दुर्योधनको समझाइये हे महाबाहु कृष्णजी यह साधुओंका कहा वचन नहीं सुनता । ४ । न गान्धारी अपनी माता के वचन सुनताहै न महामति मान

---

and pours libations to fire never sees his destruction and never falls This great history is pleasing to the minds of those who are learned in the Vedas and Purans. 23.

CHAPTER CXXIV

Duryodhan heard the words of Narad but gave no reply. Dhrishtra then spoke out as follows;— "It is as you say, Narad, I wish to do as you say but have no power." Having said this to Narad, Dhritrashtra turned towards Shree Krishn and said, "Your words are true, just and beneficial for this world as well as the next; but I am not independent nor do I like what is being done. Be pleased Krishnacandra to admonish this foolish Duryodhan who is going against the dictates of religious books and the advice of good men.

केच चिरस्यचधीमतः । अन्येपाञ्चैवसुहृदांभीष्मादीनां हितैषिणाम् ॥ ५ ॥ सत्वंपापमतिंक्रूरं पापचित्तमचेतसम् । अनुशाधिदुरात्मानं स्वयंदुर्य्योधनंनृपम् ॥ ६ ॥ सुहृत्कार्यन्तु सुमहत्कृतन्तेस्याज्जनार्दन । ततोभ्यावृत्यवार्ष्णेयो दुर्य्योधनममर्षणम् ॥७॥ अब्रवीन्मधुरांवाचं सर्वधर्मार्थतत्ववित् । दुर्य्योधननिबोधेदं मद्वाक्यंकुरुसत्तम ॥ ८ ॥ शर्मार्थंतेविशेषेण सानुबन्धस्यभारत । महाप्रज्ञकुलेजातः साध्वेतत्कर्त्तुमर्हसि ॥ ९ ॥ श्रुतवृत्तोपसम्पन्नः सर्वैःसमुदितोगुणैः । दौष्कुलेयादुरात्मानो नृशंसानिरपत्रपाः ॥ १० ॥ तएतदीदृशंकुर्य्युर्यथात्वं तातमन्यसे । धर्मार्थयुक्तालोकेस्मिन प्रवृत्तिर्लक्ष्य

विदुरजी के वचन सुनता व औरभी जो हित चाहने वाले सुहृद्लोग भीष्मपितामहादि हैं उनके भी नहीं सुनता । १५ । इससे अब आप अपने बूते इस पापी अतिक्रूर पाप चित्तवाले, अचेत, दुष्टात्मा दुर्योधनको जो राजा बना बैठा है समझाइये । ६ । जो आप इसको समझावेंगे तो जानों सुहृदों का सब कार्य आपने किया, यहसुन श्रीकृष्णचन्द्रजी ने दुर्योधनकी ओर निहारा जो कि महा असहनशील व दुष्टथा । ७ । व सब धर्म अर्थ के निश्चय जानने वाले भगवान् बड़ी मधुर वाणी से बोले, हे कुरुसत्तम दुर्योधन हमारी यहबात चित्तलगाय सुनो । ८ । यह हमारी बात सपरिवार तुम्हारे शान्तहोने के विषय में है, तुम से हे महाप्राज्ञ, तुम्हारा जन्म बड़े कुलमें है इस हमारे कहने को अच्छा समझो व करो । ९ । क्योंकि तुम अच्छीतरह वेद शास्त्र पढ़े लिखे चतुरहो, व जितने अच्छे २ गुण हैं सब तुम में विद्यमान हैं, परन्तु जो लोग खराबकुलों में जन्मे हैं, व दुरात्मा हैं व क्रूरस्वभाव निर्लज्ज हैं । १० । वे लोग ऐसा काम करते हैं जैसा कि तुम मानते हो हे तात, यह तुमको उचित नहीं है क्योंकि लोक

He gives no ear to the advice of his mother Gandhari nor to that of wise Vidur or Bhishm and other friends. You should therefore admonish this sinful, cruel, ill-natured, senseless and wicked Duryodhan, who has made himself a king. You will perform the duties of a friend if you will bring him round." At this Shree Krishn looked at Duryodhan the wicked and unbearable and the wise and learned Bhagwan spoke to him as follows.—" Hear my words attentively, best of Kurus ! My words concern the peace of your family which is noble and great. Hear my advice and act upon it; for you are learned in the Vedas and shastras and possess all the good qualities. Those who are born in ignoble families are bad natured, cruel and shameless. 14. They alone work like you. You should not do such deeds; for good nature always leans towords

तेसतांम् ॥ ११ ॥ असतांविपरीतातु लक्ष्यतेभरतर्षभ । विपरीतात्वियंवृत्ति रसकृत्त्वत्तेत्वपि ॥ १२ ॥ अधर्मश्चानुबन्धोत्र घोरःप्राणहरोमहान् । अनिष्टश्चानिमित्तश्च नचशक्यश्चभारत ॥ १३ ॥ तमनर्थपरिहरन्नात्म श्रेयःकरिष्यसि । भ्रातृणामथभृत्यानां मित्राणाञ्चपरन्तप ॥ १४ ॥ अधर्म्यादयशस्याच्च कर्म्मणस्त्वंप्रमोक्ष्यसे । प्राज्ञैः शूरैर्महोत्साहै रात्मवद्भिर्बहुश्रुतैः ॥ १५ ॥ सन्धत्स्वपुरुषव्याघ्र पाण्डवैर्भरतर्षभ । तद्धितञ्चप्रियञ्चैव धृतराष्ट्रस्यधीमतः ॥ १६ ॥ पितामहस्यद्रोणस्य विदुरस्यमहामतेः । कृपस्यसोमदत्तस्य बाह्लीकस्यचधीमतः ॥ १७ ॥ अश्वत्थाम्नोविकर्णस्य सञ्जयस्यविविंशतेः । ज्ञातीनाञ्चैवभूयिष्ठं मित्राणाञ्चपरन्तप ॥ १८ ॥ शमेशर्मभवेत्तातसर्व

में सज्जनों की प्रवृत्ति धर्म अर्थयुक्त दिखाई देती है । ११ । व असज्जनों की इस से विपरीत दिखाई देती है परन्तु वह विपरीत प्रवृत्ति तुममें बार बार दिखाई देती है । १२ । इस धर्म अर्थसे विपरीत प्रवृत्तिमें सर्वथा घोर अधर्म है जो कि सब के प्राणों के हरने वाला महाभयंकर है व वह महाअशुभ है क्योंकि अकारण देखा कियाजाता है वह किसी के सहने के मानका नहीं है हे भारत । १३ । इस से जो तुम इस अनर्थ को छोड़ना चाहोगे तो अपना परम कल्याण करोगे, व अपने भाई बन्धु भृत्य मित्रादिकों का भी कल्याण करोगे । १४ । व अधर्म युक्त व अयश करनेवाले कर्म्मसे भी छूटोगे, वह यह है कि बड़ेप्राज्ञ, व शूर, महाउत्साही, आत्मज्ञानी, व बहुत पढ़ेसुने । १५ । पाण्डवों से मिलाप करलो हेपुरुषर्षभ, यह बात धृतराष्ट्रजीको भी प्रिय है व सबको हित है । १६ । व भीष्मजी द्रोणाचार्यजी व महामति विदुरजी, कृपाचार्य, सोमदत्त, महाधीमान राजा बाह्लिकजी को । १७ । अश्वत्थामा, व विकर्ण, व संजय, व विविंशति को व सब जाति बिरादरी वालोंको व मित्रोंको तो बहुतही प्रिय है । १८ । इस तुम्हारे कौरव पाण्डव के

---

virtue. On the other hand, wicked nature turns *towards sin.* You often do work contrary to your nature and are falling into sinful ways which are very dreadful; for it is done without reason and is bearable by none. You will do yourself good if you will leave your wickedness and will benefit your kinsmen and friends. You will be *free from* adharm, and infamy. Make peace with the wise, brave, learned and virtuous Pandavas. Dhritrashtra and other people approve of this course. Bhishm, Dronacharya, Vidur the wise, Kripacharya, Somdatta, Valhik the wisest of kings, Ashwathama, Vikarn, Sanjaya, Vivinshati and all your kinsmen, castefellows and friends are of the same opinion. In the peace of the Kauravas and

स्पजगतस्तथा । हृमिनासिकुलेजातः श्रुतवाननृशंसवान । तिष्ठतातपितुःशास्त्रेमातुश्च भरतर्षभ ॥ १९ ॥ एतत्श्रेयोहिमन्यन्ते पितायच्छास्तिभारत । उत्तमापद्गतःसर्वः पितुःस्मरतिशासनम् ॥ २० ॥ रोचतेतेपितुस्तातपाण्डवैः सहसङ्गमः । सामात्यस्यकुरुश्रेष्ठ तत्तुभ्यंतातरोचताम् ॥ २१ ॥ श्रुत्वायःसुहृदांशास्त्रं मर्त्योनप्रतिपद्यते । विपाकान्ते दहत्येनं किम्पाकमिवभक्षितम् ॥ २२ ॥ यस्तुनिःश्रेयसंवाक्यं मोहान्नप्रतिपद्यते । सदीर्घ सूत्री हीनार्थः पश्चात्तापेनयुज्यते ॥ २३ ॥ यस्तुनिःश्रेयसंश्रुत्वा प्राक्तदेवाभिपद्यते । आत्मनोमतमुत्सृज्य सलोकेसुखमेधते ॥ २४ ॥ योर्थकाम-

---

मिलाप होने में सब जगत्भरका कल्याण है, व तुम उज्जवलान्हो व महाकुल में तुम्हारा जन्म है सकल शास्त्र वेद अच्छीतरह पढ़ेहो व जानते हो व अक्रूरता तुम में विद्यमान है इससे हे तात अपने पिताजी व माताजी के कहने पर टिको । १९ । हे भारत लोग इसीको कल्याणकी बात मानते हैं जोकि पिता सिखलाता है, क्योंकि सबलोग आपत्कालमें भी पिता ही की आज्ञा व शिक्षाको स्मरण करते हैं । २० । जो हे तात तुम्हारे पिताजी को पाण्डवों के साथ संगमहोना रुचता है, इस से हेतात वह तुमकोभी रुचे क्योंकि तुम्हारे पिताके ममात्यवर्गभी इसीको प्रसन्न करते हैं । २१ । जो पुरुष सुहृदोंका सिखाना सुन उसको नहीं मानता अन्तमें वह उसको भस्म करता है, जैसे कुत्सित वस्तु भोजन करलेने पर पीछे से भोजन करनेवाले को जलाती है । २२ । व जो पुरुष अपने कल्याण की बात मोहसे नहीं ग्रहण करता, वह मन्द अर्थहीन हो पीछे पछिताता है । २३ । व जो अपने कल्याण की बातों प्रथम सुनता व फिर वही करता है व अपने मतको छोड़देता वह लोकमें सुख बढ़ाता है । २४ । व जो पुरुष धनादिकी इच्छा

Pandavas lies the welfare of all the world. You are of noble birth, learned in shastras and free from cruelty, you should therefore act upon the advice of your parents. The advice of a father is very salutary; for in the time of trouble people take the advice of their elders. 20. Your father loves peace with the Pandavas; you must conform with his opinion, and the ministers of your father also like the same course. He who does not act upon the advice of his friends destroys himself as an unwholesome food hurts the person who eats it. And he who foolishly disregards good advice loses his wealth and then repents of his folly; but he who hears and acts upon good advice and is not self-willed, becomes happy in this world. He who out of avarice gives no ear to good advice and acts against it, falls in the possession of his enemies. He who does not mind the

-पचरितास्तान् जन्मप्रभृतिबान्धवाः । त्वयिसम्यङ्महाबाहो मतिपन्नायशस्विनः १२॥ त्वयापिप्रतिपत्तव्यं तथैवभरतर्षभ ; स्वेषुबन्धुषुमुख्येषु मामन्युवशमन्वगाः ॥ १३ ॥ त्रिवर्गयुक्तःप्राज्ञानामारम्भो भरतर्षभ । धर्मार्थावनुरुध्यन्ते त्रिवर्गासम्भवेनराः १४ पृथक्चविनिविष्टानां धर्मंधीरोनुरुध्यते । मध्यमोर्थंकलिंबालः काममेवानुरुध्यते ॥ १५ ॥ इन्द्रियैःप्राकृतो लोभाद्धर्मंविप्रजहातियः । कामार्थावनुपायेन लिप्समानो विनश्यति ॥ १६ ॥ कामार्थौलिप्समानस्तु धर्ममेवादितश्चरेत् । नहिधर्मादपैत्यर्थः

तौभी धर्मात्मा पाण्डव लोग तुम्हारे ऊपर कोप नहीं करते । ११ । हे तात तुम जन्मसे ले आजतक मिथ्याही उनको छलतेही डालते चलेआये पर तौभी वे लोग ऐसे यशस्वी महात्मा हैं कि तुम्हारे विषय में कुछ वैरनहीं करते वरन तुम्हारीही शरणमें रहना चाहतेहैं । १२ । इससे तुमको भी यही चाहिये कि अपने मुख्य भाई बन्धु पांडवों में वही भाव राखो जो वे तुममें रखतेहैं, प्राणप्रिय क्रोधके वशीभूत न होवो । १३ । हे भरत श्रेष्ठ पण्डित लोग जिस कार्यको करते हैं उसमें धर्म अर्थ व काम तीनों युक्त रहते हैं पर जब कामका होना असम्भव जानते हैं तो धर्म अर्थ युक्तको करतेहीहैं इनदोनों को तो कभी छोड़तेही नहीं १४ व जब धर्म अर्थ काम तीनों अलगही अलगहोते देखतेहैं तो धीरलोग वह कर्म करते जिस में धर्म रहताहै व मध्यम पुरुष कलहका हेतु अर्थ है उसको ग्रहण करतेहैं व अनारी पुरुष कामही का सेवन करताहै । १५ । व जो प्राकृत पुरुष लोभसे इन्द्रियोंकी द्वारा धर्मको छोड़ देताहै, व काम अर्थकी इच्छा बिना उपायही के करताहै वह नष्ट होजाताहै । १६ । इससे जो काम अर्थ दोनोंकी इच्छा करे वह धर्म प्रथमही से करे, क्योंकि धर्म करने से

childhood and yet the virtuous Pandavas are not angry with you. From your early years you have been false to them and have often deceived them; yet they are too great to resent the wrongs done by you and still wish to live under your protection. You should therefore have the same regard for your kinsmen the Pandavas as they have for you. Donot be a slave to anger. Learned men have regard for *dharm*, *arth* and *kam* in whatever they do and they never give up *dharm* and *arth* in the case of failure. They donot leave dharm when they find it impossible to connect the three. In short, wise men have the greatest regard for dharm, the middle ones for wealth the root of strife and the foolish have regard only for *kam* or sensual desires. A vulgar man who, out of avarice and sensual desires, gives up dharm, is sure to be destroyed. He who is desirous of *kam* and *arth* should have regard for dharm from the beginning;

स्ववचनं माप्तिकूलवनंमृष्यते । शृणोतिप्रतिकूलानि द्विषतांवशमेतिसः ॥ २५ ॥ सतांमतमतिक्रम्यय योसतांवर्त्ततेमते । शोचन्तेव्यसनंतस्य सुहृदोनचिरादिव ॥ २६ ॥ मुख्यानमात्यानुत्सृज्य योनिहीनान्निषेवते । सघोरामापदंमाप्य नोत्तारमधिगच्छति ॥ २७ ॥ योऽसत्सेवीवृथाचारो नश्रोतासुहृदांसताम्। परान्वृणीतेस्वान्द्वेष्टितंगौस्त्यजतिभारत ॥ २८ ॥ सत्वंविरुध्यतैर्वीरैरन्ये भ्यस्त्राणमिच्छसि। अशिष्टेभ्यःसमर्थेभ्यो मूढेभ्यो भरतर्षभ ॥ २९ ॥ कोहिशक्रसमानज्ञातीनतिक्रम्य महारथान् । अन्येभ्यस्त्राणमाशंसेत्त्वदन्योभुवि मानवः ॥ ३० ॥ जन्मप्रभृतिकौन्तेया नित्यंविनिकृतास्त्वया।नचतेजातुकुप्यन्ति धर्मात्मानोहिपाण्डवाः ॥ ३१ ॥ मिथ्यो

कियेहुये अपने मतलब की बातें सुनकर उसको अनुचित नहीं समझता, सदा प्रतिकूलही सुनाही करता है वह शत्रुओं के वशमें रहता है । २५ । व जो सज्जनों के मतको छोड़ असज्जनों के मतपर चलता है उसके सुहृदलोग भी बहुतही शीघ्र उसके क्लेशमें शोच करते हैं। २६ । व जो मुख्य• मन्त्रियों को छोड़ हीन अमात्यों की सेवा करता है वह घोर आपत् को पाता जिस से कभी उत्तीर्णही नहीं होता । २७ । व जो असज्जनोंकी ही सेवा करता व वृथाही आचरण करता अपने सुहृद सज्जनोंकी बात नहीं सुनता व शत्रुओं को अंगीकार करता अपने लोगों से बैर करता है भारत उसे पृथ्वी अपने आप छोड़ देती है । २८ । हे भरतर्षभ सो तुम उन अपने भाईवीर पांडवों से विरोधकर अन्य लोगों से अपनी रक्षा चाहतेहो जोकि अशिष्ट व असमर्थ व महामूढ़ हैं वे तुम्हारी क्या रक्षा करेंगे । २९ । तुमको छोड़ और पृथ्वी पर ऐसा कौन मनुष्य है जो इन्द्र समान प्रतापी महारथ अपने ज्ञातिवालों का अतिक्रमणकर अपनी रक्षा औरों से चाहे । ३० । जन्म समयसे ले आजतक पांडवों का तुमने अपकारही किया, परन्तु

---

advice of good men and acts upon the advice of the wicked, causes anxiety to his friends. He who acts upon the advice of low people and does not care for that of his good ministers falls into eternal troubles from which he cannot extricate himself. The world leaves him who follows the wicked, does useless thing, does not hear the advice of good friends, accepts the advice of his enemies and does ill to his own people. You make enemies of your brave brothers the Pandavas and rely on the protection of strangers who are wicked, incapable and foolish. Who except you is so foolish in the world as as to make war on his kinsmen valliant like Indra on the strength of stangers. 30. You have been doing ill to the Pandavas from your

-पचरितास्तान जन्मप्रभृतिवान्धवाः । त्वयिसम्यमहाबाहो प्रतिपन्नायशस्विनः १२॥ त्वयापिप्रतिपत्तव्यं तथैवभरतर्षभ ; स्वेषुबन्धुषुमुख्येषु मामन्युवशमन्वगाः ॥ १३ ॥ त्रिवर्गयुक्तःप्राज्ञानामारम्भो भरतर्षभ । धर्मार्थावनुरुध्यन्ते त्रिवर्गासम्भवेनराः १४ पृथक्चविनिविष्टानां धर्मंधीरोनुरुध्यते । मध्यमोर्थंकलिंबालः काममेवानुरुध्यते ॥ १५ ॥ इन्द्रियैःप्राकृतो लोभाद्धर्मंविप्रजहातियः । कामार्थावनुपायेन लिप्समानो विनश्यति ॥ १६ ॥ कामार्थौलिप्समानस्तु धर्ममेवादितश्चरेत् । नहिधर्मादपैत्यर्थः

तौभी धर्मात्मा पाण्डव लोग तुम्हारे ऊपर कोप नहीं करते । ११ । हे तात तुम जन्मसे ले आजतक मिथ्याही उनको छलतेंही डालते चलेआये पर तौभी वे लोग ऐसे यशस्वी महात्मा हैं कि तुम्हारे विषय में कुछ वैरनहीं करते वरन तुम्हारीही शरणमें रहना चाहतेहैं । १२ । इससे तुमको भी यही चाहिये कि अपने मुख्य भाई बन्धु पांडवों में वही भाव राखो जो वे तुममें रखतेहैं, प्राणप्रिय क्रोधके वशीभूत न होवो । १३ । हे भरत श्रेष्ठ पण्डित लोग जिस कार्यको करते हैं उसमें धर्म अर्थ व काम तीनों युक्त रहते हैं पर जब कामका होना असम्भव जानते हैं तो धर्म अर्थ युक्तको करतेहीहैं इनदोनों को तो कभी छोड़तेही नहीं १४ व जब धर्म अर्थ काम तीनों अलगही अलगहोते देखतेहैं तो धीरलोग वह कर्म करते जिस में धर्म रहताहै व मध्यम पुरुष कलहका हेतु अर्थ है उसको ग्रहण करतेहैं व अनारी पुरुष कामही का सेवन करताहै । १५ । व जो प्राकृत पुरुष लोभसे इन्द्रियोंकी द्वारा धर्मको छोड़ देताहै, व काम अर्थकी इच्छा बिना उपायही के करताहै वह नष्ट होजाताहै । १६ । इससे जो काम अर्थ दोनोंकी इच्छा करे वह धर्म प्रथमही से करे, क्योंकि धर्म करने से

childhood and yet the virtuous Pandavas are not angry with you. From your early years you have been false to them and have often deceived them; yet they are too great to resent the wrongs done by you and still wish to live under your protection. You should therefore have the same regard for your kinsmen the Pandavas as they have for you. Donot be a slave to anger. Learned men have regard for *dharm*, *arth* and *kam* in whatever they do and they never give up *dharm* and *arth* in the case of failure. They donot leave dharm when they find it impossible to connect the three. In short, wise men have the greatest regard for dharm, the middle ones for wealth the root of strife and the foolish have regard only for *kam* or sensual desires. A vulgar man who, out of avarice and sensual desires, gives up dharm, is sure to be destroyed. He who is desirous of *kam* and *arth* should have regard for dharm from the beginning;

कामोवापिकदाचन ॥ ३७ ॥ उपायंधर्ममेवाहुस्त्रिवर्गस्य विशाम्पते । छिप्समानोहि तेनाशुकक्षेऽग्निरिवबर्द्धते ॥ ३८ ॥ सत्वंवातानुपायेन लिप्ससेभरतर्षभ । आधिराज्यंमहद्दीप्तं प्रथितंसर्वराजसु ॥ ३९ ॥ आत्मानंतक्षति ह्येषवनंपरशुनायथा । यःसम्यग्वर्त्तमानेषु मिथ्याराजन्प्रवर्त्तते । नतस्याहमतिंछिन्द्यात् यस्यनेच्छेत्पराभवम् ॥ ४० ॥ अविच्छिन्नमतेरस्य कल्याणेधीयतेमतिः । आत्मवाञ्नावमन्येत त्रिषु लोकेषुभारत ॥ ४१ ॥ अप्यन्यंप्राकृतंकिंचित् किमुतान्पाण्डवर्षभान् । अमर्षवशमापन्नो नकिञ्चिद्बुध्यतेजनः ॥ ४२ ॥ छिद्यतेह्याततंसर्वं प्रमाणंपश्यभारत । श्रेय-

---

काम अर्थ कहीं जाते नहीं रहते बरन और पुष्ट होजाते हैं । ३७ । क्योंकि धर्म्म अर्थ व काम इन तीनों के सिद्ध करने का उपाय धर्म्म ही है इससे जो धर्म्म ही की द्वारा कामार्थ की इच्छा करता है उसके ये ऐसे बढ़ते हैं जैसे सूखे तृण में फूंक देने से आग बढ़ती है । ३८ । हे तात जो तुम विना उपाय ही किये सब राजाओं में विख्यात व प्रकाशित सब से श्रेष्ठ यह कौरवों का राज्य चाहतेहो व धर्म नहीं किया चाहते । ३९ । हे राजन्, जो पुरुष अच्छेमार्ग पर चलने वाले पुरुषों में झूठा बर्त्ताव वर्त्तता है वह जानों अपने को अपने हाथों से काटता है जैसे कुल्हारी से वन काटा जाता है । ४० । व जिसका अनादर न करना हो उसकी मति को लोभादि से दूषित न करना चाहिये, क्योंकि जब उसकी मति लोभादि से दूषित न होगी तो कल्याणही में लगेगी । ४१ । हेभारत जो आत्मज्ञानी पुरुष होताहै वह किसी प्राकृत मनुष्य का अपमान नहीं करता फिर ऐसे लोगोंका जैसे कि पाण्डव लोगहैं । ४२ । बड़े शोककी बात है कि अमर्ष के वशमें आय पुरुष कुछभी नहीं समझता, सबको काटनाही चाहता है इस से तुम

---

for dharm, far from doing any harm to them makes them strong. By means of dharm all the three are improved and he who wishes to improve his *kam* and *arth* with the help of dharm advances them like fire in dry straw. You desire to rule over the far famed and extensive Kaurav empire without doing dharm He who behaves falsely with virtuous men, cuts himself with his own hand as an axe cuts a forest, 40. Donot find fault with the good opinion of him whom you donot wish to insult. He who knows self never insults a vulgar man even, *nothing to say of people like the Pandavas.* It is a matter of great regret that people blinded by anger attempt to bite others; act upon the dictates of the Vedic and lay books and donot attempt to bite the Pandavas out of anger. Your good lies in

स्वेदुर्ज्जनाचात पाण्डवैःसहसङ्गतम् ॥ ४३ ॥ तैर्हिसम्प्रीयमाणस्त्वं सर्वान कामान वाप्स्यसि। पाण्डवैर्निर्ज्जितांभूमिं भुञ्जानोराजसत्तम ॥ ४४ ॥ पाण्डवानपृष्ठतःकृत्वा त्राणमाशंससेऽन्यतः । दुःशासनेदुर्विषहे कर्णेचापिससौवले ॥ ४५ ॥ एतेष्वैश्वर्य्य माधाय भूमिमिच्छसिभारत । नचैतेतवपर्य्याप्ता ज्ञानेधर्मार्थयोस्तथा ॥ ४६ ॥ विक्रमेचाप्यपर्य्याप्ताः पाण्डवानप्रतिभारत। नहीमेसर्वेराजानःपर्य्याप्ताःसहितास्त्वया ॥ ४७ ॥ क्रुद्धस्यभीमसेनस्य प्रेक्षितुंमुखमाहवे । इदंसन्निहितंतात समग्रंपार्थिवं बलम् ॥ ४८ ॥ अयंभीष्मस्तथाद्रोणः कर्णश्चायंतथाकृपः । भूरिश्रवाः सौमदत्तिर-

---

लोक वेदमें प्रसिद्ध प्रमाण देखो अमर्ष के वशमें आय पांडवों को काटना न चाहो। ४३। दुर्जनों के संगकी अपेक्षा तुम्हारा कल्याण पाण्डवों के मेलही में है क्योंकि जब पाण्डव लोगभी प्रसन्न रहेंगे तो तुम सब अपने इच्छित पावोगे । ४४ । क्योंकि पाण्डव लोग सब ओरसे पृथ्वी जीत २ इकट्ठी करेंगे व तुम भोग करोगे । ४५ । व तुम पाण्डवों को पीछे डाल अपनी रक्षा औरों से चाहते हो व दुश्शासन दुर्विषह कर्ण व शकुनि इनलोगोंकी सम्मतिकर व सबभार इनको सौंप तुम ऐश्वर्य्य चाहते हो भला यह कभी होसक्ता है । ४६ । ये दुश्शासनादि तुमको ज्ञान देने में समर्थ नहीं हैं व न धर्म अर्थही तुमको बतासके हैं, व ये लोग विक्रममें भी पांडवों के सामने कुछभी नहीं हैं व सब राजाओं समेत तुमभी पाण्डवों के सामने कुछ विक्रम करने में समर्थ नहीं हो । ४७ । क्योंकि जब भीमसेन क्रोध करेंगे तो संग्राम में तुम लोग उनके मुखकी ओर भी न देख सकोगे फिर युद्ध करने को कौन कहे, जो कुछ तुम्हीं नहीं यह जितनी तुम्हारी सेनाहै व जितने राजालोग हैं कोई भी उनके सामने न खड़ेहोंगे । ४८ । व ये भीष्मपितामह, व ये द्रोणाचार्य्य, व यह कर्ण, व ये कृपाचार्य्य, व भूरिश्रवा, व

---

your peace with the Pandavas and not with other wicked men, for you will gain the object of your desire by pleasing the Pandavas who will conquer the land on all sides and you will enjoy it. Is it possible for you to enjoy wroldly greatness without the Pandavas when you have entrusted the burden of your kingly affairs to Dushasan, Durvish, Karan, Shakuni and others? Dushasan and others are not worthy advisers of *dharm* and *arth*, nor are they more powerful than the Pandavas; for you will not be able to look Bhimsen in the face when he will be fighting and your army will not be able to withstand the fury of his attack. Bhishm the grandfather, Drona-charya, Karan, Kripacharya, Bhurishrava, Somdatti, Ashwhthama

तमजेयमनाधृष्यं विजेतुंजिष्णुमच्युतम् । आशंससीहसमरे वीरमर्जुनमूर्जितम् ॥५५॥ मद्द्वितीयंपुनःपार्थं कःप्रार्थयितुमर्हति । युद्धेप्रतीपमायान्तं मपिसाक्षात्पुरन्दरः ॥५६॥ बाहुभ्यामुद्धरेद्भूमिं दहेत्क्रुद्धइमाःप्रजाः । पातयेत्त्रिदिवाद्देवान् योऽर्जुनंसमरेजयेत् ॥ ५७ ॥ पश्यपुत्रांस्तथाभ्रातॄन् ज्ञातीन्सम्बन्धिनस्तथा । त्वत्कृतेन विनश्येयुरिमे भरतसत्तमाः ॥ ५८ ॥ अस्तुशेषंकौरवाणां मापराभूदिदंकुलम् । कुलघ्नइतिनोच्येथा नष्टकीर्तिर्नराधिप ॥ ५९ ॥ त्वामेवस्थापयिष्यन्ति यौवराज्येमहारथाः । महाराज्येपि पितरं धृतराष्ट्रंजनेश्वरम् ॥ ६० ॥ मातातश्रिय मायान्तीमवमंस्थाः सहुपताम् । अर्धं

फिर जिन अर्जुनने साक्षात् महादेव शिवजी का सन्तोष समरमें करदिया, उन अजेय, व ढिठाई करने के अयोग्य व अच्युतको जीतनेको कहतेहो ऐसे वीरको कौन जीतसक्ताहै ५५ फिर अकेलेही अर्जुनको कोई नहीं जीतसक्तातो उन्हींके सहायक व सङ्गही उसी रथपर हमभीहोंगेतो ऐसा कौन है जो युद्धमें सामने जाय लड़नेकी प्रार्थना करै, व है वह साक्षात् इंद्रहीहो पर सामनेतो न आसकेगा । ५६ ॥ जो अर्जुनको समरमें जीते वहतो अपनी बाहों से भूमिकोभी उठाले, व क्रोधकर इस संसारको भस्मकरडाले व स्वर्ग से देवताओंको नीचे गिरावै । ५७ । अरे दुर्योधन देखो तुम्हारेही कारण ये तुम्हारे पुत्र, भाई, ज्ञातिबन्धु, नातेदार, व ये भीष्मपितामहादि भरत सत्तम सब नाशको प्राप्तहोंगे । ५८ । कौरवोंका शेष अभी रहै, यह कुल नष्ट नहो, व तुम कुलनाशक न कहावो, व तुम्हारी कीर्ति नष्ट नहो हे राजन् ऐसाकरो जिसमें ऊपर कही बातें हों उनके विपरीत नहो । ५९ । तुम यौवराज्य पदपर रहो और तुम्हारे पिता धृतराष्ट्र राज्य करें पांडवों को आधा राज्यदेदो और बाकी

away the cows against all the Kauravas and this example must be sufficient. That Arjun who pleased Mahadev Shiv in battle, cannot be conquered by any one else. When no one can defeat Arjun alone, who will conquer him in battle while I shall be sitting on the same chariot with him. I think even Indra can not aspire to come *forth in front of him.* The *conquerer of Arjun must* be able to lift up the whole earth on his arm and should, when angry, be able to burn down heaven and earth. You must see, Duryodhan, that on account of your own fault these sons, brothers, kinsmen, Bhishm the grandfather and others will meet their death. Let the the Kauravas live. Donot gain yourself the name of the destroyer of your faimily. Donot destroy your fame. Be yourself heir apparent and let your father be the emperor. Give half the kingdom to the Pandavas and enjoy the rest. Act upon the advice of your

श्वत्थामाजयद्रथः ॥ ४९ ॥ अशक्ताःसर्वएवैते प्रतियोद्धुं धनञ्जयम् । अजेयोह्यर्जुनः संख्ये सर्वैरपिसुरासुरैः । मानुषैरपिगन्धर्वैर्मा युद्धेचेतआधिथाः ॥ ५० ॥ दृश्यतांवा पुमान् कश्चित्समग्रेपार्थिवेबले । योऽर्जुनंसमरेप्राप्य स्वस्तिमानाव्रजेद्गृहान् ॥५१॥ किन्तेजनक्षयेणेह कृतेनभरतर्षभ । यस्मिन्जितेजितंतत्स्यात् पुमानेकः सदृश्यताम् ॥ ५२ ॥ यःसदेवान्सगन्धर्वान् सयक्षासुरपन्नगान् । अजयत्खाण्डवप्रस्थे कस्तं युद्धेचमानवः ॥ ५३ ॥ तथाविराटनगरे श्रूयतेमहदद्भुतम् । एकस्यचबहूनांच पर्याप्तंतन्निदर्शनम् ॥ ५४ ॥ युद्धेयेनमहादेव साक्षात्सन्तोषितः शिवः ।

सोमदत्त, व ये अश्वत्थामा, व जयद्रथ । ४९ । ये सब एकहीसाथ जो इसमोरसे लड़नेजावें तौभी अर्जुन के संग युद्ध करने में अशक्तहैं फिर एक २ की कौनगिनती है, क्योंकि मनुष्यों को कौनकहे अर्जुनको संग्राम में सब देवता व सब दैत्यभी नहीं जीतसक्ते व न कोई गन्धर्व्वादिकही जीत सक्तेहैं इस से दुर्योधन युद्ध करने में चित्त न लगावो । ५० । नहींतो जितनी समाज घरकी व राजालोगोंकी है उसमें किसीको दिखा-वोवो जो समर में अर्जुन के सामने जाय व फिर कल्याणयुक्तही अपने घरको लौटआवे । ५१ । हे भरतर्षभ सब जनोंकी क्षय करने से कौन प्रयोजनहै बस एकही ऐसा पुरुष अपनी समाज में दिखावो जो समरमें अर्जुनको जीतसके क्योंकि उनको जिसने जीत लिया फिर औरों से युद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं बस सबकी जय होजायगी । ५२ । हमारी जानमें, जिन अर्जुनने खांडवप्रस्थमें सबदेवता गन्धर्व यक्ष असुर व नागोंको अकेले ही जीतलिया उनके संग अब इस समाजमें कोई न युद्ध करसकेगा । ५३ । व इसीप्रकार हमने देखातो नहीं पर सुनते हैं कि विराटनगर में तुम सबजने बहुतसे इकट्ठेथे व अर्जुन अकेलेही आयेथे पर तुम सबोंको हराय गाइयां उन्होंने छीनलीं यह उदाहरण बहुतहै ५४

---

and Jayadrath, put together, cannot withstand Arjun in battle. All the gods, Daityas and Gandharvas cannot vanquish Arjun in battle; you must not therefore think of war, Duryodhan. 50. Can you show me any one, out of your household or outsiders, who can face Arjun and then *return unscathed? What good will come out of the* destruction of all. Show me only one person that can conquer Arjun; for if he wins Arjun, there will be no need of fighting against others. In my opinion, he who conquered alone all the gods, Gandharvas and Asurs in the forests of Khandav, cannot suffer defeat from any *one present here. In the same manner,* though I was not an eye witness, I have heard that at the city of Virat, Arjun alone bore

तमजेयमनाधृष्यं विजेतुंजिष्णुमच्युतम् । आशंससीहसमरे वीरमर्जुनमूर्जितम् ॥५५॥ मद्द्वितीयंपुनःपार्थं कःप्रार्थयितुमर्हति । युद्धेप्रतीपमायान्तं मपिसाक्षात्पुरन्दर ॥५६॥ बाहुभ्यामुद्वहेद्भूमिं दहेत्क्रुद्धइमाःप्रजाः । पातयेत्त्रिदिवाद्देवान् योऽर्जुनंसमरेजयेत् ॥ ५७ ॥ पश्यपुत्रांस्तथाभ्रातॄन् ज्ञातीन्सम्बन्धिनस्तथा । त्वत्कृतेन विनश्येयुरिमे भरतसत्तमाः ॥ ५८ ॥ अस्तुशेषंकौरवाणां मापराभूदिदंकुलम् । कुलघ्नइतिनोच्येथा नष्टकीर्त्तिर्नराधिप ॥ ५९ ॥ त्वामेवस्थापयिष्यन्ति यौवराज्येमहारथाः । महाराज्येपि पितरं धृतराष्ट्रंजनेश्वरम् ॥ ६० ॥ मातातश्रिय मायान्तीमवमंस्थाः सहुथताम् । अर्द्धं

फिर जिन अर्जुनने साक्षात महादेव शिवजी का सन्तोष समरमें करदिया, उन अजेय, व ढिठ ई करने के अयोग्य व अच्युतको जीतनेको कहतेहो ऐसे वीरको कौन जीतसक्ता है ५५ फिर अकेलेही अर्जुनको कोई नहीं जीतसक्तातो उन्हीं के सहायक व सङ्गही उसी रथपर हमभीहोंगेतो ऐसा कौन है जो युद्धमें सामने आय सहनेकी प्रार्थना करे, व है वह साक्षात् इंद्रहीहों पर सामनेतो न आसकेगा । ५६ ॥ जो अर्जुनको समरमें जीत सकतो अपनी बाहों से भूमिकोभी उठाले, व क्रोधकर इस संसारको भस्मकरडाले व स्वर्ग से देवताओंको नीचे गिरावे । ५७ । अरे दुर्योधन देखो तुम्हारेही कारण ये तुम्हारे पुत्र, भाई, ज्ञातिबन्धु, नातेदार, व ये भीष्मपितामहादि भरत सत्तम सब नाशको प्राप्तहोंगे । ५८ । कौरवोंका शेष अभी रहै, यह कुल नष्ट नहो, व तुम कुलनाशक न कहावो, व तुम्हारी कीर्ति नष्ट नहो हे राजन् ऐसाकरो जिसमें ऊपर कही बातेंहों उनके विपरीति नहो । ५९ । तुम यौव राज्य पदपर रहो और तुम्हारे पिता धृतराष्ट्र राज्य करें पांडवों को आधा राजदेदो और बाकी

---

away the cows against all the Kauravas and this example must be sufficient. That Arjun who pleased Mahadev Shiv in battle, cannot be conquered by any one else. When no one can defeat Arjun alone, who will conquer him in battle while I shall be sitting on the same chariot with him. I think even Indra can not aspire to come forth in front of him. The conquerer of Arjun must be able to lift up the whole earth on his arm and should, when angry, be able to burn down heaven and earth. You must see, Duryodhan, that on account of your own fault these sons, brothers, kinsmen, Bhishm the grandfather and others will meet their death. Let the the Kauravas live. Donot gain yourself the name of the destroyer of your faimily. Donot destroy your fame. Be yourself heir apparent and let your father be the emperor. Give half the kingdom to the Pandavas and enjoy the rest. Act upon the advice of your

प्रदायपार्थेभ्यो महतींश्रियमाप्नुहि ॥ ६१ ॥ पाण्डवैःसंशमंकृत्वा कृत्वाचसुहृदांवचः । सप्रीयमाणोमित्रैश्च चिरंभद्राण्यवाप्स्यसि ॥ ६२ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भगवद्वाक्ये चतुर्विंशाधिकशततमोऽध्यायः १२४ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततःशान्तनवोभीष्मो दुर्य्योधनममर्षणम् । केशवस्यवचः श्रुत्वा प्रोवाचभरतर्षभ ॥ १ ॥ कृष्णेनवाक्यमुक्तोसि सुहृदांशममिच्छता । अन्वपद्यस्वतत्तात मामन्युवशमन्वगाः ॥ २ ॥ अकृत्वावचनंतात केशवस्यमहात्मनः । श्रेयो नजातुनसुखं नकल्याणमवाप्स्यसि ॥ ३ ॥ धर्म्यमर्थ्यं महाबाहुराहत्वांतातकेशवः । तदर्थमभिपद्यस्व माराजन्नीनशःप्रजाः ॥ ४ ॥ ज्वलितांत्वमिमांलक्ष्मीं भारतींसर्व

पर तुम राज्य करो पांडवोंके साथ मेळकरो और मित्रोंके वचन मानो और चिरकालतक मित्रों के साथ प्रसन्नतासे रहो ॥ ६२ ॥

अध्याय १२५ ॥

वैशम्पायन बोले कि कृष्णचन्द्रजीके वचनसुन उसके पीछे शान्तनुजीके पुत्र भीष्मपितामहजी असहनशील दुर्योधन से बोले कि । १ । हे तात, सुहृदों के मेल होनेकी इच्छा से कृष्णचन्द्रजी ने जो तुम से कहा है वही करो क्रोध के वशमें पर अनुगतिको न पहुँचो । २ । क्योंकि हे तात महात्मा कृष्णचन्द्रजी के वचन बिनाकिये कभी न तो श्रेयको पावोगे, न सुख न कल्याणही पावोगे । ३ । हे तात हे राजन् महाबाहु केशव भगवान् ने तुम से धर्म्म व अर्थ युक्तही सब वचन कहे हैं इससे उनको करो इन प्रजाओं का नाश न करावो । ४ । यदि इनके वचन न मानोगे तो सब राजाओं से अधिक प्रकाशित

---

friends; make peace with the Pandavas and be happy with your friends for a long time. 62.

CHAPTER CXXV

Vaishampyan said that at the close of Shree Krishna's speech, Bhishm the son of Shantanu spoke to Duryodhan of unbearable temper as follows:—" Do, my son, as Krishn has advised regarding peace and donot rashly destroy yourself. For, without acting on Shree Krishna's advice you can come to no good or happiness. The words of brave Bhagwan Keshav were full of Dharm and arth and you must act accordingly. Donot cause the destruction of the whole world. You will destroy the whole kingdom and wealth during

राजस्तु । जीवतोधृतराष्ट्रस्य दौरात्म्याद् भ्रंशयिष्यसि ॥ ५ ॥ आत्मानञ्चसहामात्यंसपुत्रभ्रातृबान्धवम् । अहमित्यनयाबुद्ध्या जीवितादभ्रंशयिष्यसि ॥ ६ ॥ अतिक्रामन्केशवस्य तथ्यंवचनमर्थवत् । पितुश्चभारतश्रेष्ठ विदुरस्यचधीमतः ॥ ७ ॥ माकुलघ्नःकुपुरुषोदुर्मतिः कापथंगमः । मातरंपितरञ्चैव मामज्जीःशोकसागरे ॥ ८ ॥ अथद्रोणोब्रवीत्तत्र दुर्योधनमिदंवचः । अमर्षवशमापन्न निःश्वसन्तंपुनःपुनः ॥ ९ ॥ धर्मार्थयुक्तंवचनमाह त्वांतातकेशवः । तथाभीष्मः शान्तनवस्तज्जुषस्व नराधिप १०॥ प्राज्ञौमेधाविनौ दान्तावर्थकामौ बहुश्रुतौ । आहतुस्त्वांहितंवाक्यं तज्जुषस्वनराधिप ॥ ११ ॥ अनुतिष्ठमहाप्राज्ञ कृष्णभीष्मौयदूचतुः । माधवंबुद्धिमोहेन मावमंस्थाःपरन्तप ॥ १२ ॥ येत्वांप्रोत्साहयन्त्येते नैतेकृत्यायकर्हिचित् । वैरंपरेषांग्रीवायां प्रति

इस कौरवों की राजलक्ष्मी को धृतराष्ट्र के जीतेही जीते तुम अपनी दुरात्मता से भ्रष्ट करोगे । ५ । व हमी सब कुछ हैं इस अहंकार बुद्धिसे अपने को, व अपने अमात्य पुत्र भाई बान्धवों को प्राणों से भ्रष्ट करावोगे । ६ । व सत्य व अर्थयुक्त केशव के वचन को उल्लंघनकर व अपने पिता व सब भारतों में श्रेष्ठ धीमान विदुरजी के वचनोंका उल्लंघनकर । ७ । कुलनाशकहो कुपुरुष दुर्मति कहाय कुमार्ग में न चलो, व अपनी माता व पिताको शोकसागर में न डुबोवो । ८ । इसके पीछे अमर्षके वशीभूत व बार बार ऊर्ध्वश्वासें लेतेहुये दुर्योधन से द्रोणाचार्यजी यह वचनबोले । ९ । कि हे नराधिप केशव भगवान् ने व भीष्मजी ने धर्म अर्थ युक्त वचन तुमसे कहा है उसका सेवनकरो । १० । ये दोनोंजने बड़ेप्राज्ञ व मेधावी, व इन्द्रियों को दमन किये अर्थ काम में तत्पर व बहुत वेद शास्त्र पढ़ेहैं, व तुमसे तुम्हारे हितही का वचन इन्होंने कहा है इससे हे नराधिप उस वचनको प्रीति सहित ग्रहणकरो ११ हेमहाप्राज्ञ कृष्णचन्द्रजी व भीष्मजी ने जो कहा है उसीपर टिको बुद्धिके मोहसे माधव भगवान् का अपमान न करो । १२ । व

the lifetime of Dhritrashtra if you will not act upon those words. You will cause the destruction of your ministers, sons, brothers and kinsmen by your selfconceit. By acting contrary to the words of Keshav and those of wise Vidur you will bring about the ruin of your family. Do not act unwisely and donot emerge your parents in the sea of regret." After this, with deep sighs, Dronacharya said to Duryodhan, "Act upon the good advice of Krishn and Bhishm, Prince! 10. The two men are very wise, have control over their organs and are very experienced and learned. They have said all those things for your good and you must act upon their advice with good will. Be firm on the path shown to you by Shree Krishn

मोक्ष्यन्तिसंयुगे ॥ १३ ॥ माजीघनःप्रजाःसर्वाः पुत्रान्भ्रातृंस्तथैवच । वासुदेवार्जुनौ यत्र विद्ध्यजेयानलं हितान् ॥ १४ ॥ एतच्चैवमतंसत्यं सुहृदोः कृष्णभीष्मयोः । यदि नादास्यसेतात पश्चात्तप्स्यसिभारत ॥ १५ ॥ यथोक्तंजामदग्न्येन भूयानेपततोऽर्जुनः । कृष्णोहिदेवकीपुत्रो देवैरपिसुदुःसहः ॥ १६ ॥ किन्तेसुखप्रियेणेह प्रोक्तेन भरतर्षभ । एतत्तेसर्वमाख्यातं यथेच्छसितथाकुरु । नहित्वामुत्सहेवक्तुं भूयोभरतसत्तम ॥ १७ ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्मिन्वाक्यान्तरेवाक्यं क्षत्तापिविदुरोऽब्रवीत् । दुर्योधनमभिप्रेक्ष्य धार्त्तराष्ट्रममर्षणम् ॥ १८ ॥ दुर्योधननशोचामि त्वामहंभरतर्षभ । इमौतुवृद्धौशोचामि गान्धारींपितरञ्चते ॥ १९ ॥ यावनाथौचरिष्येते त्वयानाथेनदु

जो ये कर्णादिक तुमको युद्ध करने के लिये प्रोत्साहित करतेहैं कोईभी विजय न करासकेंगे, किन्तु समरमें यह वैर हमलोगों के गलेमें छोड़देंगे । १३ । दुर्योधन इन सब प्रजाओं को व अपने पुत्रों भाइयों को न मरवाओ, क्योंकि जिस सैन्यमें वासुदेव व अर्जुनहैं उसी सैन्य को जीतनेवाली समझो । १४ । हे तात, परम सुहृद कृष्णचन्द्रजी व भीष्मजी का मत जो न मानोगे तो पीछे पछिताओगे । १५ । जैसा कि परशुरामजी ने कहा है ये अर्जुन उससे भी अधिक हैं, व ये देवकीजी के पुत्र कृष्णचन्द्रजी देवताओं कोभी दुस्सहहैं ।१६। हे भरतर्षभ, तुम से सुख व प्रिय कहने से क्याहै, यह सब तुम से कहा तुम जैसा चाहो वैसाकरो, हेभारत सत्तम अब हम फिर और कुछ आप से नहीं कहसके ।१७। वैशम्पायन जी बोले, इस बातके बीच में असहनशील दुर्योधनको ओर देख महामतिमान् विदुरजीभी उनसे बोले । १८ । हे भरतर्षभ दुर्योधन हम तुम्हारा कुछ शोचनहीं करते, इन दोनों वृद्ध गान्धारी व धृतराष्ट्र का शोच करते हैं । १९ । जो कि तुम दुष्टनाथ के कारण मित्र

---

and Bhism and donot foolishly insult Madhav. Karn and others who induce you to fight will not be able to secure your victory, they will only leave us in the lurch at the time of battle. Donot bring about the destruction of your sons and brothers, Duryodhan; for the army which has Krishn and Arjun on its side, is sure to win. You will repent if you will not act upon the advice of Shree Krishn and Bhishm your best friends. Arjun is more than what Parashuram has described him to be and Krishn the son of Devaki is unconquerable by gods. I have told this for your good and shall say no more." Vaishmpayan said that having looked at Duryodhan, Vidur the wise spoke to him as follows, "I am not sorry for you, Duryodhan; I am grieved for the sake of old Dhritrashtra and Gandhari who through your fault will roam hither and thither like birds with

हृदा हतमित्रौहतामात्यौ लूनपक्षाविवाण्डजौ ॥ २० ॥ भिक्षुकौविचरिष्येते शोचन्तौ पृथिवीमिमाम्। कुलघ्नमीदृशंपापं जनयित्वाकुपूरुषम् ॥ २१ ॥ अथदुर्योधनंराजा धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत। आसीनंभ्रातृभिःसार्द्धं राजभिःपरिवारितम् ॥ २२ ॥ दुर्योधननिबोधेदं शौरिणोक्तंमहात्मना। आदत्स्वशिवमत्यन्तं योगक्षेमवदव्ययम् ॥ २३ ॥ अनेन हिसहायेन कृष्णेनाक्लिष्टकर्मणा। इष्टान्सर्वानभिप्रायान् प्राप्स्यामःसर्वराजसु ॥ २४ ॥ सुसंहतःकेशवेन तातगच्छयुधिष्ठिरम्। चरस्वस्त्ययनंकृत्स्नं भरतानामनामयम् ॥२५॥ वासुदेवेनतीर्थेन तातगच्छस्वसंशयम्। कालप्राप्तमिदंमन्ये मात्वंदुर्योधनातिगाः २६ शमंचेद्याचमानंत्वं प्रत्याख्यास्यसिकेशवम्। त्वदर्थमभिजल्पन्तं नतवास्त्यपराभवः २७

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीष्मादिवाक्ये पंचविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२५ ॥

बान्धव अमात्यादि व पुत्रों के मारेजाने पर पख उखाड़डाले हुये दो पक्षियों के समान अनाथ इधर उधर मारे २ घूमेंगे। २०। व तुम्हें ऐसे कुलनाशक पापी कुपुरुषको उत्पन्नकर भीख मांगतेहुये व शोच करते इस पृथ्वीपर घूमेंगे। २१। इसके पीछे राजा धृतराष्ट्रजी, भाइयों के साथ राजाओं के बीचमें बैठेहुये दुर्योधन से बोले। २२। हे दुर्योधन जो महात्मा कृष्णचन्द्रजी ने कहा है उसे अच्छीतरह समझो, व उसको ग्रहणकरो क्योंकि यह अति कल्याणकारक योग क्षेमयुक्त व नाश रहित वचन है। २३। सहजही में सब कार्य करने वाले इन कृष्णचन्द्रजी की सहायसे सब राजाओं के बीच में हमलोग अपने सब इष्टकाम पावेंगे। २४। इससे अब इन्हीं कृष्णचन्द्रजीकेही साथ हे तात तुम युधिष्ठिरजी के समीप चलेजाव, व सब भारतोंका कल्याण करो। २५। अच्छा है वासुदेवजी को बीच में कर दे तात पांडवों से मेल करलो, हम इससमयको समयपर हाथ लगगई समझते हैं, हे दुर्योधन इसका अतिक्रमण तुम अब न करो ॥ २७ ॥

cut feathers after the destruction of their sons, kinsmen and friends. 20. And having given birth a sinner and destroyer of family like you, they will roam on the earth begging their food and feeling sorrow on their condition." After this, king Dhritrashtra spoke to Duryodhan who was sitting with his brothers in the midst of kings, "Ponder well on the words of Shree Krishna, Duryodhan, and act upon them; for they are beneficial and salutary. We will gain our desires with the help of Shree Krishn who does everything with the utmost ease. Go, therefore, with Shree Krishn, my son, and do good to all the Kauravas. Make peace with the Pandavas through the intervention of Shree Krishn. This good opportunity has come to us by chance, donot lose it, Duryodhan. If you do not hear the good advice of Shree Krishn for peace, how can you gain victory?" 27.

वैशम्पायन उवाच । धृतराष्ट्रवचःश्रुत्वा भीष्मद्रोणौसमव्यथौ । दुर्योधनमिदं वाक्य मूचतुःशासनातिगम् ॥ १ ॥ यावत्कृष्णावसनद्धौ यावत्तिष्ठतिगाण्डिवम् । यावद्धौम्योनवेधाग्नौ जुहोतीहद्विषद्बलम् ॥२॥ यावन्नप्रेक्षतेक्रुद्धः सेनांतवयुधिष्ठिरः । ह्रीनिषेवोमहेष्वासस्तावच्छाम्यतु वैशसम् ॥ ३ ॥ यावन्नदृश्यतेपार्थः स्वेव्यनीके व्यवस्थित. । भीमसेनोमहेष्वासस्तावच्छाम्यतु वैशसम् ॥ ४ ॥ यावन्नचरतेमार्गान् पृतनामभिधर्षयन् । भीमसेनोगदापाणिस्तावत्संशाम्यपाण्डवैः ॥ ५ ॥ यावन्न शातयत्याजौ शिरांसिगजयोधिनाम् । गदयावीरघातिन्या फलानीववनस्पतेः ॥६॥ कालेनपरिपक्वानि तावच्छाम्यतुवैशसम् । नकुलःसहदेवश्च धृष्टद्युम्नश्चपार्षतः ॥ ७ ॥

अध्याय १२६ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि समान दुःख युक्त भीष्म पितामह व द्रोणाचार्यजी धृतराष्ट्र के वचन सुन, पिता आदिकी शिक्षा के प्रतिकूल चलनेवाले दुर्योधनसे यह वचनबोले कि । १ । जबतक कृष्णचन्द्र व अर्जुन युद्ध करनेको सन्नद्ध नहीं, व जबतक गांडीवधन्वा विद्यमान है, व जबतक पाडवों के पुरोहित धौम्यजी शत्रु की सेनाको यज्ञाग्निमें नहीं आहुति करते ।२। व जबतक लज्जावान् महा धनुर्द्धर युधिष्ठिरजी क्रोधकर तुम्हारी सेनाको नहीं देखते तबतक यह बैर शान्त होजाय । ३ । व जबतक महाधनुर्द्धर कुन्तीजी के पुत्र भीमसेनजी इनलोगों की सेनाओंके बीचमें युद्ध करने के लिये न उद्यतहों तबतक यह बैर शान्तहोजाय । ४ । व जबतक भीमसेन गदा हाथमें लिये सेनाको भयभीत करातेहुये पैंतड़े भरते हुये मार्गों में नहीं घूमते तबतक पांडवों के संग मेल करलो । ५ । व जबतक भीमसेन समरमें अपनी वीरघातिनी गदासे, समयपर पकेहुये वृक्षके फलों के समान, हाथियोंपर चढ़कर युद्ध करनेवाले लोगोंके शिर नहीं फोड़डालते तबतक बैर शान्तहोजाय । ६ । व जबतक, नकुल सहदेव, धृष्टद्युम्न, पार्षत, विराट, शिखण्डी, व शिशुपाल के पुत्र धृष्टकेतु ये लोग कवच बख्तर आदि धारणकर, समरमें अस्त्रचलानेकी कुशलता दिखातेहुये, बड़ी शीघ्रताके साथ

CHAPTER CXXVI

Vaishampayan said that Bhishm the grandfather and Drona were equally grieved to hear the words of Dhritrashtra and spoke as follows to Duryodhan who was acting against the advice of his father and other elders. "Let the strife subside before Krishn and Arjun are ready to fight, the bow Gandev appears, Dhauma the priest of the Kauravas pours libations of your army into the sacrificial fire and great archer Yudhisthir looks with angry eyes towards your army. Make peace ere Kunti's son the great archer Bhimsen enters our army to fight. Make peace with the Pandavas before the arrival of Bhimsen with mace in his hand, terrifying the army with his long strides, and before the time when with his destructive mace

विराटश्च शिखण्डीच शैशुपालिश्च दंशिताः । यावन्न प्रविशन्त्येते नक्राइव महार्णवम् ८॥ कृतास्त्राःक्षिप्रमस्यन्तस्तावच्छाम्यतु वैशसम् । यावन्न सुकुमारेषु शरीरेषु महीक्षिताम् ॥ ९ ॥ गार्ध्रपत्राःपतन्त्युग्रास्ता वच्छाम्यतु वैशसम् । चन्दनागुरुदिग्धेषु हारनिष्कधरेषुच । नोरस्सुयाव द्योधानां महेष्वासैर्महेषव ॥ १० ॥ कृतास्त्रैःक्षिप्रमस्यद्भिर्दूरपातिभिरायसाः । अभिलक्ष्यैर्निपात्यन्ते तावच्छाम्यतु वैशसम् ॥ ११ ॥ अभिवादयमानंत्वां शिरसा राजकुञ्जर । पाणिभ्यां प्रतिगृह्णातु धर्मराजो युधिष्ठिर ॥ १२ ॥ ध्वजांकुशपताकांक दक्षिणंते सुदक्षिणः । स्कन्धेनिक्षिपतां बाहुं शान्तये भरतर्षभ १३॥ रत्नौषधिसमेतेन रत्नांगुलितलेनच । उपविष्टस्यपृष्ठन्ते पाणिनापरिमार्ज्जतु ॥ १४ ॥ शालस्कंधोमहाबाहुस्त्वां स्वजानो वृकोदर । साम्नाऽभिवदतांश्चापि शान्तये भरतर्षभ

अस्त्र शस्त्र चलाते हुये, समुद्रमें नाकों के समान सेनामें न पैठें तबतक बैर शान्तहोजाना चाहिये । ८ । व जबतक राजाओंके सुकुमार शरीरोंमें बड़े तीक्ष्ण न पैठें तबतक बैर शान्त होजाना चाहिये । ९ । व जबतक, बहुतशीघ्र बाण चलानेवाले, व दूरही से निशानामें बाणादि लगानेवाले महा धनुर्द्धर लोगोंके चलाये लोहे के बड़े २ बाण, चन्दन अगर लगाये हुये, व हारकंठादि धारण किये योधालोगों की छातियोंमें निशाना बनाय न लगाये जायँ तबतक यह बैर शान्तही होजाना चाहिये नहीं तो फिर अच्छा न होगा । ११ । परमेश्वरकरे कि राजकुञ्जर धर्मराज युधिष्ठिरजी अपने दोनों हाथोंसे, शिर झुकाय प्रणाम करते हुये तुमको ग्रहणकरें । १२ । व प्रसन्नहोकर, ध्वजा, वज्र, पताका, के चिह्नों से चिह्नित अपना दहिना हाथ, तुम्हारे कन्धेपर शान्तहोनेके लिये धरें । १३ । व रत्नयुक्त औषधि समेत व अंगुलियों में रत्नधारण किये अपने हाथसे, समीप बैठेहुये तुम्हारी पीठ सुहरावें । १४ । व शाल समान स्कन्धवाले, महाबाहु भीमसेन तुमको छाती में लपटावें

---

he breaks down the heads of the elephant riders like ripe fruits. The quarrel must come to an end before Nakul, Sahadev, Dhrishtadyumn, Parshat, Virat, Shikhandi and Dhrishtaketu the son of Shishupal come protected with armour, hurling their weapons, showing their skill in arms and entering the ocean of your army like crocodiles. You must contrive peace before the sharp arrows pierce through the delicate bodies of kings. The enmity must come to an end before the swift iron arrows of great archers find their mark on the breasts of your warriors decked with garlands, necklaces and perfumes. 11 . May Prince Yudhishthir the just grasp you within his arms with his head bowed down and may he place in peace his right hand decked with the signs of banner, mace, flag and other lucky things. May he gently pass over your back his hand decked with precious rings and may Bhim with shoulders like the sal tree embrace

॥ १५ ॥ अर्जुनेनयमाभ्याञ्च त्रिभिस्तैरभिवादितः । मूर्ध्नितान्समुपाघ्राय प्रेम्णाभिवदपार्थिव ॥ १६ ॥ दृष्ट्वात्वांपाण्डवैर्वीरैर्भ्रातृभिःसहसङ्गतम् । यावदानन्दजाश्रूणि मुञ्चन्तुनराधिपाः ॥ १७ ॥ घुष्यतांराजधानीषु सर्वसम्पन्महीक्षिताम् । पृथिवीभ्रातृभावेन भुज्यतांविज्वरोभव ॥ १८ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीष्मद्रोणवाक्ये षड्विंशाधिकशततमोऽध्यायः १२६ ॥

वैशम्पायन उवाच। श्रुत्वादुर्योधनोवाक्य मप्रियंकुरुसंसदि । प्रत्युवाचमहाबाहुं वासुदेवंयशस्विनम् ॥ १ ॥ प्रसमीक्ष्यभवानेतद्वक्तुमर्हतिकेशव । मामेवहिविशेषेण विभाष्यपरिगर्हसे ॥ २ ॥ भक्तिवादेनपार्थाना मकस्मान्मधुसूदन । भवान्गर्हयतेनित्यं किंसमीक्ष्यबलाबलम् ॥ ३ ॥ भवान्क्षत्ताचराजाचाप्याचार्यो वापितामहः । मामे

हुये शान्तिहोजानेके लिये समझावें । १५ । व हे राजन्, अर्ज्जुन नकुल व सहदेव से अभिवादित होकर उनके शिरसूंघ प्रेमसे उनसे बोलो । १६ । व तुमको तुम्हारे वीरभाई पांडवों के संगमिले देख, सब राजालोग आनन्दके आंसुओंकी वर्षाकरें । १७ । व तुम्हारी परस्पर की प्रीति सब राजालोग अपनी२ राजधानियों में बखानें, व तुम भाइयोंके साथ आनन्दसे पृथ्वी का राज्यभोगो, व ज्वर रहितहोओ ॥ १८ ॥

अध्याय ॥ १२७ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि दुर्योधन कौरवोंकी सभामें यह अप्रिय वाक्यसुन, यशस्वी महाबाहु श्रीकृष्णचन्द्रजी से बोले । १ । हे कृष्णचन्द्र विचारके साथ आप बोलें क्योंकि विशेष हमींको कटुवचन कह निन्दित करतेहो । २ । क्या आप बलाबल देखकर नित्य हमारी निन्दाकरतेहैं नहीं पांडवोंकी भक्ति के वादसे अकस्मात् हमारी निन्दाकरतेहैं । ३ । आप, व बिदुर, राजा, द्रोणाचार्य्य, व भीष्मजी सब हमींको नींदतेहैं और किसी राजाकी

you in peace. May you be respected by Arjun, Nakul and Sahadev and may you smell their foreheads and have with them an affectionate talk. Seeing *you united with your brave brothers the Pandavas, may* all the kings shed tears of joy and talk of your mutual love in their kingdoms. May you enjoy peacefully the kindom of the world along with your brothers !"18.

CHAPTER CXXVII

Vaishampayan said that having heard those unwelcome words *in the court of the Kauravas*, Duryodhan said to Shree Krishn, "You have chiefly aimed your harsh words towards me, Shree Krishn, and therefore I beg you to tell me after due considaration whether you speak ill of me after fully considering our weakness and strength or

वशरिगई-ते नान्यकञ्चनपार्थिवम् ॥ ४ ॥ नचाहन्कश्चनकश्चिद्व्यभिचारं विद्य ननः । अथसर्वेभवन्तोमां विद्विषन्तिसराजकाः ॥ ५ ॥ नचाहकञ्चिद्व्यर्थ मपराधमरिंदम । विचिन्तयन्प्रपश्यामि सुसूक्ष्ममपिकेशव ॥ ६ ॥ प्रिया भ्युपगतेद्यूते पाण्डवामधुसूदन । जिता शकुनिनाराज्य तत्रकिंममदुष्कृतम् ॥ ७ ॥ यत्पुनर्द्रविणंकिंचित्तत्राजीय न्तपाण्डवाः । तेभ्यएवा भ्यनुज्ञात तत्तदामधुसूदन ॥ ८ ॥ अपराधोनचास्माक यच्चे यक्षैः पराजिताः । अजेयाजयतांश्रेष्ठ पार्थाःप्रव्राजितावनम् ॥ ९ ॥ केनचाप्यपवादेन विरुध्यन्त्यरिभिःसह । अशक्ताःपाण्डवाः कृष्ण प्रहृष्टाःप्रत्यमित्रवत् ॥ १० ॥ कि मस्माभि कृतंतेषा कस्मिन्वापुनरागसि । धार्तराष्ट्राञ्जिघांसन्ति पाण्डवाः सृञ्जयैःसह ॥ ११ ॥ नचापिवयमुग्रेण कर्मणावचनेनवा । प्रभ्रष्टा प्रणमामेह भयादपिशतक्रतुम्

निंदा नहीं करते । ४ । परंतु हम अपना कोईभी अन्याय नहीं लक्षित करते, हा आप सब नाहक हमसे अप्रीति करतेहैं व ये सब राजा लोगभी आप लोगोंकी देखी दुखा देकरते हैं । ५ । परन्तु हे केशव हम जो विचार कर देखतेहैं तो अपना कुछभी अपराध व अन्याय नहीं देखते । ६ । क्योंकि जब प्रीति से स्त्रीको बाजीलगाय पाडवोंने जुआखेला उसमें शकुनिके अपनीस्त्री व राज्य दोनों हारगये तो उसमें हमारा क्यापाप है । ७ । व उस में जो कुछधन पाडवोंने जीता तुरन्त उनलोगोंको यहां से देदिया गया, हे मधुसूदन । ८ । फिरभी वे जुआमेंहारगये तो हमारा उसमें कुछ अपराध नहीं है यद्यपि पार्थ लोग ऐसेहैं किसीके जीतने के योग्य नहींहैं पर खेलमसबतो हार ही गये इससेवनको चलेगये हमक्याकरें । ९ । फिर अब वे लोग किस अपवादसे हमलोगोंको शत्रुसमान विरोधकरते हैं, तो सब पाण्डव अशक्त पर प्रहृष्टहो शत्रुओंकासा कामकरते हैं । १० । हमलोगोंने उनका कौन अपराध किया जिसपापमें सृञ्जयसहित पाडवलोग धृतराष्ट्रके संबंधियोंको मारडालना चाहते हैं । ११ । परंतु हमलोग वज्रहस्त व व कठुवचनसे

you say so out of the love which you bear towards the Pandavas. You as well as Vidur, the king, Dronacharya and Bhishm are always speaking ill of me, but I donot find any fault in me. You bear me animosity for no reason and all the kings follow your example. I have fully considered over the matter and donot find any fault on my side, for when the Pandavas willingly put their wife on the stake and lost her as well as the kingdom, I could not be in the fault. The Pandavas too won some wealth but it was given to them at once from our treasury. What fault is there of mine if they lost in gambling? Although the sons of Kunti are inconquerable, yet they lost the game and had to go into exile. How can they blame us now and bear enmity with us? 10 What have we done for which the Pandavas would kill the kinsmen of Dhritrashtra? But we will not

॥ १२ ॥ नचनकृष्णपश्यामि क्षत्रधर्मणमनुष्ठितम्। उत्तलहेतयुधाजेतु योनःशत्रुनिबर्हणम् ॥ १३ ॥ नहिभीष्मकृपद्रोणाः सकर्णामधुसूदन। देवैरपियुधाजेतुं शक्याःकिमुतपाण्डवैः ॥ १४ ॥ स्वधर्ममनुपश्यन्तो यदिमाववसयुगे। अस्त्रेणनिधनंकाले माप्स्यामः स्वर्ग्यमेवतत् ॥ १५ ॥ मुख्यचैवैषनोधर्मः क्षत्रियाणांजनार्दन। यच्छयीमहिसंग्रामे शरतल्पगतावयम् ॥ १६ ॥ तेवयंवीरशयनं माप्स्यामोयदिसंयुगे। अप्रणम्यैवशत्रूणां ननस्तप्स्यतिमाधव। १७ ॥ कश्चजातुकुलेजातः क्षत्रधर्मेणवर्तयन भयाद्वृत्तिसमीक्ष्यैव प्रणमेदिहकर्हिचित् ॥ १८ ॥ उद्यच्छेदेवननमे दुद्यमोह्येवपौरुषम्। अप्यपर्वणि भज्येत ननमेदिहकर्हिचित् ॥ १९ । इतिमातङ्गवचनं परीप्सन्तिहितेप्सवः। धर्माय चैवमणमेद् ब्राह्मणभ्यश्चमद्विधः ॥ २० ॥ अचिन्तयन्कञ्चिदन्यं यावज्जीवन्तथाचरेत्

प भय से पण्डवों की कौन गिनती है जो साक्षात् इंद्रभी आवें तो उनके भी प्रणाम न करें । १२ । हेकृष्ण, हम क्षत्रियोंके धर्ममें निपुण ऐसा किसी को नहीं देखते जो समरमें युद्धसे शत्रुनाशक हमको जीतके । १३ । हेकृष्ण भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य व कर्णको समर में देवगणभी नहीं जीतसके फिर पाण्डवों की कौन गिनती है । १४ । हमलोग अपने क्षत्रियके धर्मपर टिके हैं जो संग्राममें अस्त्र से मरभी जायँगे तो भी स्वर्गही पावेंगे नरकको न जावेंगे । १५ । हे कृष्ण, हमलोग क्षत्रियों का तो यही मुख्य धर्मही है जो कि संग्राम में बाणों की सेजपर सोवें । १६ । हे माधव, वे हमलोग क्षत्रिय, यदि समरमें वीरशय्याका शयन पावेंगे, तो शत्रुओंके बिनाप्रणामही करनेसे पावेंगे बस में हमलोगोंका मन सन्तप्त न होगा । १७ । भला ऐसा कौनपुरुष है जो क्षत्रियके कुलमें उत्पन्न होकर व धर्मका बर्ताव करके वर्त्तकर जीविकाकी ओर देख भय से कभी किसीके प्रणाम करे । १८ । उद्यमहीकरे नम्र कभी न हो क्योंकि उद्यमही पौरुषहै, पर्व टूट जाय पर नवे भी न । १९ । मातङ्ग मुनिके इसवचनको हित चाहनेवाले लोग चाहा करते हैं हां पर कहीं का यह व्यवहार नहीं है, हमारे सदृश जो पुरुषहैं धर्म के लिये ब्राह्मणों के

be terrified with harsh words of the Pandavas; we will not bow to Indra if he comes to menace us. We can see no kshatrya, firm on his duty, who can win us in battle. Bhishm the grandfather, Dronacharya and Karan can not be overcome by gods; nothing to say of the Pandavas. We are firm on our duty and will go to heaven if we are killed in battle. It is the greatest happiness for a kshatrya to lie on the bed of arrows. We shall rather die in battle than bow to our enemies with whom we can never be happy. Who is there among warlike people who should, for fear of the loss of livelihood, bow down to any one? A kshatrya should be brave and should never bow although he may break in two. These words of Matang are liked by all. It is however not necessary to follow them on every

एष धर्मः क्षत्रियाणां मतमेतच्च मे सदा ॥ २१ ॥ राज्यांशश्चाभ्यनुज्ञातो योऽसौ पित्रा पुरा मम । न स लभ्यः पुनर्जातु मयि जीवति केशव ॥ २२ ॥ यावच्च राजा ध्रियते धृतराष्ट्रो जनार्दन । न्यस्तशस्त्रा वयं ते वाप्युपजीवाम माधव ॥ २३ ॥ अज्ञानाद्वा भयाद्वापि मयि बाले जनार्दन । न तदद्य पुनर्लभ्यं पाण्डवैर्वृष्णिनन्दन ॥ २४ ॥ ध्रियमाणे महाबाहौ मयि सम्प्रति केशव । यावद्धि तीक्ष्णया सूच्या विध्येदग्रेण केशव । तावदप्यपरित्याज्यं भूमेर्नः पाण्डवान्प्रति ॥ २५ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि दुर्योधनवाक्ये सप्तविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२७ ॥

नहीं तो नमस्कार करते हैं। २०। हम ब्राह्मणों के आगे नमस्कार व अन्यलोगों के आगे कभी न झुकना इन दो कामोंको छोड़ और किसीकी चिन्ता न करना यह क्षत्रियोंका धर्म है व यही हम सभी करते हैं।२१। व जो राज्य हमारे पिताकी आज्ञा से पाण्डवोंने इकट्ठा किया है वे हमारे जीतेजी पाण्डवोंको कभी नहीं मिलसक्ता। २२। इस से हे जनार्दन जबतक राजा धृतराष्ट्र जीते हैं तबतक हम व पाण्डवलोग अपने क्षत्रियोंका धर्म छोड़ अस्त्र शस्त्र छोड़ भोजन देशाटन भिक्षुकोंकेसमान बैठ भोजन करेंगे और किसी बात के लायक नहीं हैं। व इनको अभी पालते हैं अगर किसी को दे देवें सकै हैं ।२३। इस से हे जनार्दन चाहे अज्ञान से चाहे भय से अगले पुरुष छोटे होते हुये हम बालक हैं व पाण्डवलोग व बड़े हैं इस से पाण्डवों को राज्य मिलै नहीं सक्ता।२४। व जब महाराज धृतराष्ट्रजी हमको राज्य और देवें तबभी मैं पाण्डवोंको इतनी भी पृथ्वी नहीं दूंगा जितनी कि सुई की नोक से दबी जाती है।२५।

---

occasion; for example, we, kshatriyas bow down to Brahmans and before none else, this is the rule to be followed by kshatriyas. The kingdom which the Pandavas extended by the permission of our father cannot be returned to them during my life time. Therefore, Janardan, as long as king Dhritrashtra lives, the Pandavas and I should beg our food rather than fighting for the kingdom; for I am dependent on my father and cannot part with the kingdom without his permission. We as well as the Pandavas are like children before Dhritrashtra and therefore they cannot get the kingdom, but when, Dhritrashtra gives it to me I shall not give the Pandavas as much land as is covered with the point of a sharp needle." 25.



॥ १२ ॥ नचत्वकृष्णपश्यामि क्षत्रधर्मेणवर्त्तिनम् । उत्सहेतयुधाजेतुं योनःशत्रुनिबर्हणम् ॥ १३ ॥ नहिभीष्मकृपद्रोणाः सकर्णामधुसूदन । देवैरपियुधाजेतुं शक्याःकिमुतपाण्डवैः ॥ १४ ॥ स्वधर्ममनुपश्यन्तो यदिशास्त्रसंयुगे । अस्त्रेणनिधनंकाले प्राप्स्यामः स्वर्ग्यमेवतत् ॥ १५ ॥ मुख्यश्चैवैषनोधर्मः क्षत्रियाणांजनार्दन । यच्छयीमहिसंग्रामे शरतल्पगतावयम् ॥ १६ ॥ तेवयंवीरशयनं प्राप्स्यामोयदिसंयुगे । अप्रणम्यैवशत्रूणां ननस्तप्स्यतिमाधव । १७ ॥ कथजातुकुलेजातः क्षत्रधर्मेणवर्त्तयन् भयाद्वृत्तिसमीक्ष्यैव प्रणमेदिहकर्हिचित् ॥ १८ ॥ उद्यच्छेदेवननमे दुद्यमोह्येवपौरुषम् । अप्यपर्वणि भज्येत ननमेदिहकर्हिचित् ॥ १९ । इतिमातङ्गवचनं परीप्सन्तिहितेप्सवः । धर्माय चैवप्रणमेद् ब्राह्मणेभ्यश्चमद्विधः ॥ २० ॥ अचिन्तयन्कञ्चिदन्यं यावज्जीवंतथाचरेत्

य भय से पण्डवों की कौन गिनती है जो साक्षात् इंद्रभी आवें तो उनके भी प्रणाम न करें । १२ । हेकृष्ण, हम क्षत्रियोंके धर्ममें निपुण ऐसा किसी को नहीं देखते जो समरमें युद्धमें शत्रुनाशक हमको जीतसके । १३ । हेकृष्ण भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य व कर्णको समर में देवगणभी नहीं जीतसके फिर पाण्डवों की कौन गिनती है । १४ । हमलोग अपने क्षत्रियके धर्मपर टिके हैं जो संग्राममें अस्त्र से मरभी जावेंगे तो भी स्वर्गही पावेंगे नरकको न जावेंगे । १५ । हे कृष्ण, हमलोग क्षत्रियों का तो यही मुख्य धर्मही है जो कि संग्राम में बाणों की सेजपर सोवें । १६ । हे माधव, वे हमलोग क्षत्रिय, यदि समरमें वीरशय्याका शयन पावेंगे, तो शत्रुओंके विनाप्रणामही करनेसे पावेंगे उस में हमलोगोंका मन सन्तप्त न होगा । १७ । भला ऐसा कौनपुरुष है जो क्षत्रियके कुलमें उत्पन्न होकर व उसीका वर्त्ताव सर्वत्र वर्त्तकर जीविकाकी ओर देख भय से कभी किसीके प्रणाम करे । १८ । उद्यमहीकरे नम्र कभी न हो क्योंकि उद्यमही पौरुषहै, चाहे टूटजाय पर नवे नहीं । १९ । मातङ्ग मुनिके इसवचनको हित चाहनेवाले लोग चाहा करते हैं हां सब कहीं का यह व्यवहार नहीं है, हमारे सदृश जो पुरुषहैं धर्म के लिये ब्राह्मणों के

be terrified with harsh words of the Pandavas; we will not bow to Indra if he comes to menace us. We can see no kshatrya, firm on his duty, who can win us in battle. Bhishm the grandfather, Dronacharya and Karan can not be overcome by gods; nothing to say of the Pandavas. We are firm on our duty and will go to heaven if we are killed in battle. It is the greatest happiness for a kshatrya to lie on the bed of arrows. We shall rather die in battle than bow to our enemies with whom we can never be happy. Who is there among warlike people who should, for fear of the loss of livelihood, bow down to any one? A kshatrya should be brave and should never bow although he may break in two. These words of Matang are liked by all. It is however not necessary to follow them on every

एषधर्मःक्षत्रियाणां मतमेतच्चमेसदा ॥ २१ ॥ राज्यांशश्चाभ्यनुज्ञातो योमेपित्रापुरा भवत् । नसलभ्यःपुनर्जातुमयिजीवतिकेशव ॥ २२ ॥ यावच्चराजाध्रियते धृतराष्ट्रो जनार्दन । न्यस्तशस्त्रावयंतेवा प्युपजीवाममाधव । अपदेयंपुराद्त्त राज्यपरवतोमम ॥ २३ ॥ अज्ञानाद्वाभयाद्वापि मयिबालेजनार्दन । नतदद्यपुनर्लभ्यं पाण्डवैर्वृष्णिनन्दन ॥ २४ ॥ ध्रियमाणेमहाबाहो मयिसम्प्रतिकेशव यावद्धितीक्ष्णयासूच्या विध्येदग्रेणकेशव । तावदप्यपरित्याज्यं भूमेर्नःपाण्डवान्प्रति ॥ २५ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि दुर्योधनवाक्ये सप्तविंशाधिकशततमोऽध्यायः १२७ ॥

अलबत्ता पणामही करते हैं । २० । बस ब्राह्मणों के आगे नम्रहोजाना व अन्यलोगों के आगे कभी न झुकना इन दो काजोंको छोड़ और किसीकी चिन्ता न करना यहीक्षत्रियोंका धर्महै व यही हम सभी का मतहै ।२१। व जो राज्य हमारेपिताकी आज्ञा से पाण्डवोंनेभी इकट्ठा कियाहै वोहमी हमारे जीतेजी पाण्डवोंको कभी नहीं मिलसक्ता । २२ । इस से हे जनार्दन जबतक राजाधृतराष्ट्र जीतेहैं तबतक हम व पाण्डवलोग सबकेसब क्षत्रियोंका धर्म छोड़ अस्त्र शस्त्र छोड़ भोजन तैयारहोनेपर भिक्षुकोंकेसमान बैठ भोजन करलें और किसी बात से काम नहींहै, व हमतो अभी पराधीनहैं राज्य किसी को दे कैसे सकेंहैं । २३ । इस से हेजनार्दन चाहे अज्ञान से समझो चाहे भय से अभीतो धृतर राष्ट्र के होते हुये हम बालकहीहैं व पाण्डवभी व लडकेहैं इस से पाण्डवों को राज्य मिली नहीं सक्ता । २४ । व जब महाबाहु धृतराष्ट्रभी हमको राज्य सौंप देंगे तबतो भी मैं पाण्डवोंको इतनी भी पृथ्वी नहीं दूंगा जितनी तीक्ष्ण सुईकी नोक से ढकी जातीहै । २५ ।

---

occasion; for example, we, kshatryas bow down to Brahmans and before none else, this is the *rule* to be *followed* by *kshatryas*. The kingdom which the Pandavas extended by the permission of our father cannot be returned to them during my life time. Therfore, Janardan, as long as king Dhritrashtra lives, the Pandavas and I should beg our food rather than *fighting for the kingdom*; *for I am* dependent on my father and cannot part with the kingdom without his permission. We as well as the Pandavas are like children before Dhritrashtra and therefore they cannot get the kingdom; but when, Dhritrashtra gives it to me I shall not give the *Pandavas* as much land as is covered with the point of a sharp needle." 25.



वैशम्पायन उवाच । ततस्तमब्रवीद्दाशार्हः क्रोधपर्याकुलेक्षणः । दुर्योधनमिदंवाक्यमब्रवीत्कुरुसंसदि ॥ १ ॥ लप्स्यसेवीरशयन काममेतदवाप्स्यसि । स्थिरोभव सहामात्यो विमर्दोभवितामहान् ॥ २ ॥ यच्चैवंमन्यसेमूढ नमेकश्चिद्व्यतिक्रमः । पाण्डवेष्वितितत्सर्वं निबोधतनराधिपाः ॥ ३ ॥ श्रियासन्तप्यमानेन पाण्डवानांमहात्मनाम् । त्वयादुर्मन्त्रितंद्यूतं सौबलेनचभारत ॥ ४ ॥ कथञ्चज्ञातयस्तात श्रेयांसःसाधुसम्मताः । अथान्याय्यमुपस्थातुं जिह्मेनाजिह्मचारिणः ॥ ५ ॥ अक्षद्यूतंमहाप्राज्ञ सतांमतिविनाशनम् । असतांतत्रजायन्ते भेदाश्चव्यसनानिच ॥ ६ ॥ तदिदंव्यसनं घोरं त्वयाद्यूतमुखंकृतम् । असमीक्ष्यसदाचारैःसार्धंपापानुबन्धनैः ॥७॥

अध्याय १२८ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे कृष्णचन्द्रजी बहुत विचार कर मारे क्रोध के व्याकुल नेत्र हो कौरवोंकी सभा के बीचमें दुर्योधनसे यह वचन बोले कि । १ । अच्छा वीरशय्यापर तो शयनकरोगे यह तुम अपना इच्छित फल पावोगे अपने मन्त्रियों अमात्यों सहित स्थितहोगे बड़ाभारी संग्राम होगा । २ । व हे मूढ़ जो तुम ऐसाजानतेहो कि पाण्डवों के विषयमें हमारा कुछ अन्यायही नहीं है उसको तुम व ये सब राजा लोग भी सुनें । ३ । हे भारत महात्मा पाण्डवोंकी श्रीसे सन्तप्तमान होकर तुमनेही शकुनि से छल युक्त जुआ सिखाया है । ४ । नहीं तो हे तात, कल्याणयुक्त साधु सम्मत तुम्हारे भाई निश्छल पाण्डव लोग इसछली शकुनिके संग जुआखेलने पर क्या उतारू होते । ५ । हे महाप्राज्ञ जुआखेलना सज्जनोंकी मतिका विनाशही करताहै उस के भेद असज्जनलोगही जानते व उन्हीं को उसके खेलनेमें अभ्यास भी होताहै । ६ । व यह स्वभाव जो पाण्डवोंका हुआ कि उन्हों ने जुआखेला यह तुम्हींने कराया नहीं तो वे महात्मा जुआखेलना, कैसे जानते व तुमने जानबूझकर पापियोंके संग उनको खिलवाया कि ये तो खेलनाजानतेही

CHAPTER CXXVIII

Vaishampayan said that after this, Shree Krishan with a mind full of thought and eyes red in anger spoke to Duryodhan in the midst of the Kauravas, saying, "Well, you will sleep on the bed of warriors and thus will gain the object of your desire; but be careful with your ministers and advisers, for a great war will take place. You say that you have done no wrong to the Pandavas but I shall tell you all about it. Let the audience hear it: being envious of the wealth of the Pandavas you played a deceitful game of dice with the help of Shakuni, or, the simple minded Pandavas would not consent to play with him. Gambling destroys the wisdom and wicked people knows not its secrets and are practiced in it. You induced the Pandavas to play, that the inexperienced Pandavas would surely lose kingdom.

कथान्योभ्रातृभार्यांवै विप्रकर्तुंतथार्हति । आनीयचसभांव्यक्तं यथोक्ताद्रौपदीत्वया ॥ ८ ॥ कुलीनाशीलसम्पन्ना प्राणेभ्योपिगरीयसी । महिषीपाण्डुपुत्राणां तथा विनिकृतात्वया ॥ ९ ॥ जानन्तिकुरवःसर्वे यथोक्ताःकुरुसंसदि । दुःशासनेनकौन्तेयाः प्रव्रजन्तःपरन्तपाः ॥ १० ॥ सम्यग्वृत्तेष्वलुब्धेषु सततंधर्मचारिषु । स्वेषु बन्धुषुकःसाधुश्चरेदेवमसाम्प्रतम् ॥ ११ ॥ नृशंसानामनार्याणां पुरुषाणांचभाषणम् । कर्णदुःशासनाभ्यांच त्वयाचबहुशःकृतम् ॥ १२ ॥ सहमात्रामदग्धुन्तान् बालकान्वारणावते । आस्थितःपरमंयत्नं नसमृद्धन्चतत्तव ॥ १३ ॥ ऊषुश्चसुचिरं कालं प्रच्छन्नाःपाण्डवास्तदा । मात्रासहैकचक्रायां ब्राह्मणस्यनिवेशने ॥ १४ ॥

नहीं जरूरहोंगे । ७ । जो तुम्हारा सम्मत व तुम्हारी प्रेरणा न होती तो भला जैसे तुमने अपने भाइयोंकी स्त्री द्रौपदी को उसदुर्दशाके साथ सभामेंमँगाय अवाच्य वचनकहेथे वैसा औरभी कोई कहसक्ताहै ।८। व महाकुलीन,शील,सम्पन्न प्राणोंसेभी अधिकप्यारी पाण्डु के पुत्रोंकी पट्टरानी द्रौपदी की तुमने ऐसी दुर्दशाकी कि केशपकड़े घसीटतेहुये सभा में मँगाया ।९। व इसबातको ये सब कौरवलोग जानतेहैं कि बनके चलनेके समय पाण्डवोंको दुश्शासन ने जैसे कुवाच्यकहे हैं । १० । ऐसा कौन साधु है जो सदाचार युक्त अ-लोभी निरन्तर धर्मचारी व उत्तम स्वभाववाले अपने बन्धुओं में ऐसा अन्याय करे । ११ । कर्ण दुश्शासन व तुमने क्रूर अनार्य पुरुषोंकीसी बातें बहुतसी उससमय पाण्डवोंको कहीं । १२ । तुमने, माता सहित पाण्डवोंके भला डालनेके लिये वारणावत में लाक्षाभवन बन-वाय अग्नि लगवाया था पर क्या करो तुम्हारा वह बल नहीं सिद्ध हुआ वे अपने भाग्यसे बचगये । १३ । व अपनी माता सहित पाण्डव लोग एक चक्रामें ब्राह्मण के घरमें बहुत

All this was premeditated by you, for none else could thus drag his sister-in-law and speak harshly to her as you did. You dragged by hair Draupadi the noble, virtuous and dear queen of the Pandavas. All the Kauravas know how harshly did Dushasan treat the Pandavas at the time of their exile. 10. What good man would thus ill-treat his virtuou. and good natured kinsmen as you have done. You as well as Karan and Dushasan spoke many harsh words to the Pandavas at that time. You set fire to the house of lac at Varnavat to burn down the Pandavas and their mother; but you remained unsuccessful in your enterprise and they escaped by their own good luck and remained long concealed at Ekchakra at the house of a Brahman. You poisoned the Pandavas, made the

वैशम्पायन उवाच । ततःप्रहस्यदाशार्हः क्रोधपर्याकुलेक्षणः । दुर्योधनमिदंवाक्य मब्रवीत्कुरुसंसदि ॥ १ ॥ लप्स्यसेवीरशयनं काममेतदवाप्स्यसि । स्थिरोभव सहामात्यो विमर्दोभविता महान् ॥ २ ॥ यच्चैवंमन्यसेमूढ नमेकश्चिद्व्यतिक्रमः । पाण्डवेष्वितितत्सर्वं निबोधतनराधिपाः ॥ ३ ॥ श्रियासन्तप्यमानेन पाण्डवानांमहात्मनाम् । त्वयादुर्मन्त्रितंद्यूतं सौबलेनचभारत ॥ ४ ॥ कथञ्चज्ञातयस्तात श्रेयांसःसाधुसम्मताः । अथान्याय्यमुपस्थातुं जिह्मेनाजिह्मचारिणः ॥ ५ ॥ अक्षद्यूतंमहाप्राज्ञ सतांमतिविनाशनम् । असतांतत्रजायन्ते भेदाश्चव्यसनानिच ॥ ६ ॥ तदिदंव्यसनं तदिदंव्यसनंघोरं त्वयाद्यूतमुखंकृतम् । असमीक्ष्यसदाचारैःसार्धंपापानुबन्धनैः ॥७॥

अध्याय १२८ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे कृष्णचन्द्रजी बहुत विचार कर मारे क्रोध के व्याकुल नेत्र हो कौरवोंकी सभा के बीचमें दुर्योधनसे यह वचन बोले कि । १ । अच्छा वीरशय्यापर तो शयनकरोगे यह तुम अपना इच्छित फल पावोगे अपने मन्त्रियों अमात्यों सहित स्थिरहोओ बड़ाभारी संग्राम होगा । २ । व हे मूढ़ जो तुम ऐसाजानतेहो कि पाण्डवों के विषयमें हमारा कुछ अन्यायही नहीं है उसको तुम व ये सब राजा लोग भी सुनें । ३ । हे भारत महात्मा पाण्डवोंकी श्रीसे सन्तप्यमान होकर तुमनेही शकुनि से छल युक्त जुआ खिलवाया है । ४ । नहीं तो हे तात, कल्याणयुक्त साधु सम्मत तुम्हारे भाई निश्छल पाण्डव लोग इसछली शकुनिके संग जुआखेलने पर न उतारूहोते । ५ । हे महाप्राज्ञ जुआखेलना सज्जनोंकी बुद्धिका विनाशही करताहै उस के भेद असज्जनलोगही जानते व उन्हीं को उसके खेलनेमें अभ्यास भी होताहै । ६ । व यह स्वभाव जो पाण्डवोंका हुआ कि उन्हों ने जुआखेला यह तुम्हीने कराया नहीं तो वे महात्मा जुआखेलना, कैसे जानते व तुमने जानबूझकर पापियोंके संग उनको खिलवाया कि ये तो खेलनाजानतेही

CHAPTER CXXVIII

Vaishampayan said that after this, Shree Krishan with a mind full of thought and eyes red in anger spoke to Duryodhan in the midst of the Kauravas, saying, "Well, you will sleep on the bed of warriors and thus will gain the object of your desire; but be careful with your ministers and advisers, for a great war will take place. You say that you have done no wrong to the Pandavas but I shall tell you all about it. Let the audience hear it: being envious of the wealth of the Pandavas you played a deceitful game of dice with the help of Shakuni, or, the simple minded Pandavas would not consent to play with him. Gambling destroys the wisdom and wicked people know its secrets and are practiced in it. You induced the Pandavas to play, that the inexperienced Pandavas would surely lose kingdom.

कथान्योभ्रातृभार्यांवै विप्रकर्तुंतथार्हति । आनीयचसभांव्यक्तं यथोक्ताद्रौपदीत्वया ॥ ८ ॥ कुलीनाशीलसम्पन्ना प्राणेभ्योपिगरीयसी । महिषीपाण्डुपुत्राणां तथा विनिकृतास्त्वया ॥ ९ ॥ जानन्तिकुरवःसर्वे यथोक्ताःकुरुसंसदि । दुःशासनेनकौन्तेयाः प्रव्रजन्तःपरन्तपाः ॥ १० ॥ सम्यग्वृत्तेष्वलुब्धेषु सततंधर्मचारिषु । स्वेषु बन्धुषुकःसाधुश्चरेदेवमसाम्प्रतम् ॥ ११ ॥ नृशंसानामनार्याणां पुरुषाणांचभाषणम् । कर्णदुःशासनाभ्यांच त्वयाचबहुशःकृतम् ॥ १२ ॥ सहमात्राप्रदग्धुन्तान् बालकान्वारणावते । आस्थितःपरमंयत्नं नसमृद्धञ्चतत्तव ॥ १३ ॥ ऊषुश्चसुचिरं कालं प्रच्छन्नाःपाण्डवास्तदा । मात्रासहैकचक्रायां ब्राह्मणस्यनिवेशने ॥ १४ ॥

नहीं जरूरहोंगे । ७ । जो तुम्हारा सम्मत व तुम्हारी प्रेरणा न होती तो भला जैसे तुमने अपने भाइयोंकी स्त्री द्रौपदी को उसदुर्दशाके साथ सभामेंमँगाय अवाच्य वचनकहेथे वैसा औरभी कोई कहसक्ताहै ।८। व महाकुलीन,शील,सम्पन्न प्राणोंसेभी अधिकप्यारी पाण्डु के पुत्रोंकी पट्टरानी द्रौपदी की तुमने ऐसी दुर्दशाकी कि केशपकड़े घसीटतेहुये सभा में मँगाया ।९। व इसबातको ये सब कौरवलोग जानतेहैं कि वनके चलनेके समय पाण्डवोंको दुश्शासन ने जैसे कुवाक्यकहे हैं । १० । ऐसा कौन साधु है जो सदाचार युक्त अलोभी निरन्तर धर्मचारी व उत्तम स्वभाववाले अपने बन्धुओं में ऐसा अन्याय करे । ११ । कर्ण दुश्शासन व तुमने क्रूर अनारी पुरुषोंकीसी बातें बहुतसी उससमय पाण्डवोंको कहीं । १२ । तुमने, माता सहित पाण्डवोंके जला डालनेके लिये वारणावत में लाक्षाभवन बनवाय अग्नि लगवायाथा पर क्या करो तुम्हारा वह यत्न नहीं सिद्ध हुआ वे अपने भाग्यसे बचगये । १३ । व अपनी माता सहित पाण्डव लोग एक चक्रामें ब्राह्मण के घरमें बहुत

All this was premeditated by you, for none else could thus drag his sister-in-law and speak harshly to her as you did. You dragged by hair Draupadi the noble, virtuous and dear queen of the Pandavas. All the Kauravas know *how harshly did Dushasan treat* the Pandavas at the time of their exile. 10. What good man would thus ill-*treat* his *virtuous* and *good* natured kinsmen as you have done. You as well as Karan and Dushasan spoke many harsh words to the Pandavas at that time. You set fire to the house of lac at Varnavat to burn down the Pandavas and their mother; but you remained unsuccessful in your enterprise and they escaped by their own good luck and remained long concealed at Ekchakra at the house of a Brahman. You poisoned the Pandavas, made the

विषेणसर्पबन्धैश्च यातितास्पाण्डवास्त्वया । सर्वोपायैर्विनाशाय नसमृद्धञ्चतत्तव१५ एवंबुद्धिःपाण्डवेषु मिथ्यावृत्तिःसदाभवान । कथन्तेनापराधोऽस्ति पाण्डवेषु महात्मसु ॥ १६ ॥ यश्चैभ्यो याचमानेभ्य· पित्र्यमंशं न दित्ससि । तच्चपाप मदात्तासि भ्रष्टैश्वर्यो निपातितः ॥ १७ ॥ कृत्वा बहून्यकार्याणि पाण्डवेषु नृशंसवत् । मिथ्यावृत्तिरनार्य्यः सन्नद्य विप्रतिपद्यसे ॥ १८ ॥ मातापितृभ्यां भीष्मेण द्रोणेनविदुरेणच । शाम्येतिमुहुरुक्तोसि नचशाम्यसिपार्थिव ॥ १९ ॥ शमेहिसुमहाल्लाभस्तवपार्थस्य चोभयो। । नचरोचयसेराजन् किमन्यद्बुद्धिलाघवात् ॥ २० ॥

दिनों तक गुप्त होकर रहे । १४ । व तुमने पाण्डवोंको विष खिलाया सर्पोंसे कटवाया व बन्धन में डाला अब उपायोंसे उनका विनाशही करना चाहा पर क्याकरो तुम्हारा कोई कार्य्य सिद्ध न हुआ । १५ । सो पाण्डवोंके विषयमें इस प्रकार की मिथ्यावृत्ति बुद्धि आपकी सदारही फिर महात्मा पाण्डवों के विषय में आपका अपराध कैसे नहींहै । १६ । व अब जो कि वे बेचारे अपने पिताका हिस्सा तुमसे मांगतेहैं कुछ अधिक नहीं चाहते पर तुम वह भी नहीं दिया चाहते, इससे तुम्हारा ऐश्वर्य भ्रष्टही होगा क्योंकि तुम दूसरोंको नीचे गिराना चाहते हो । १७ । व फिर तुम्हारे पिता माता व भीष्म व विदुरजीने बार २ कहा कि शान्त होजाव युद्ध न करो पाण्डवों से मेल करलो पर तुम शान्त नहीं होते। १८ । इस प्रकार बहुतसे क्रूर कैसे अकार्य्य पाण्डवोंके साथ मिथ्या वृत्ति होकर तुम माता पिता आदि का कहा नहीं मानते यह तुम्हारे लिये अच्छा नहीं । १९ । हमारे मतसे तुम्हारा व पाण्डवोंका मेल होजाना दोनों जनों को महा लाभकारी है पर तुमको नहीं रुचता फिर यह

---

serpents bite them, set them in confinement and wanted to destroy them in other ways, but you were unsuccessful in all your attempts. You have always thought ill of the Pandavas, how can *you say that you are faultless?* They want only their father's share and nothing more, but you donot wish to give them that much. You will lose your greatness since you wish to contrive the fall of others. Your parents as well as Bhishm and Vidur have often told you to make peace and to shun from fighting, but you donot mind their advice. Having done so many wrongs to the Pandavas, you donot mind the words of your parents and this will be ruinous to your cause. According to my opinion the peace between the Kauravas and the Pandavas will be beneficial to both sides, but you donot like it, we can ascribe it to nothing but want of common sense. 20. By acting against the advice of your friends you will

नशर्मप्राप्स्यसेराज न्नुत्क्रम्यसुहृदांवचः । अधर्म्यमयशस्यञ्च क्रियतेपार्थिवत्वया २१ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तविदाशार्हे दुर्योधनममर्षणम् । दुःशासनइदंवाक्य मब्रवी त्कुरुसंसदि ॥ २२ ॥ नचेत्सन्धास्यसेराजन् स्वेनकामेनपाण्डवैः । बध्वाकिलत्वां दास्यन्ति कुन्तीपुत्रायकौरवाः ॥ २३ ॥ वैकर्त्तनंत्वाञ्चमाञ्चत्री नेतान्मनुजर्षभ । पाण्डवेभ्यःप्रदास्यन्ति भीष्मोद्रोणःपिताचते ॥ २४ ॥ भ्रातुरेतद्वचःश्रुत्वा धार्त्तरा ष्ट्रःसुयोधनः । क्रुद्धःप्रातिष्ठतोत्थाय महानागइवश्वसन ॥ २५ ॥ विदुरंधृतराष्ट्रञ्च महाराजञ्चबाल्हिकम् । कृपञ्चसोमदत्तञ्च भीष्मंद्रोणंजनार्दनम् ॥ २६ ॥ सर्वाने ताननादृत्य दुर्मतिर्निरपत्रपः । अशिष्टवदमर्यादो मानीमान्यावमानिता ॥ २७ ॥ तंप्रस्थितमभिप्रेक्ष्य भ्रातरोमनुजर्षभम् । अनुजग्मुःमहामात्या राजानश्चापिसर्वशः

बुद्धिकी लघुताके सिवाय और क्याहै । २० । हे राजन् सुहृदों के वचनों का उल्लंघन करके सुख न पावोगे यह तुम अधर्म व अयशही का कर्म करते हो । २१ । वैशम्पायनजी बोले कि असहन शील दुर्योधन से जब कृष्णचन्द्र जी ने ऐसा कहा तो उसी कौरवोंकी सभाके बीचमें दुर्योधन से दुश्शासन ने यह वचन कहा कि । २२ । हेराजन् जो अपनी इच्छा से तुम पाण्डवों से मेल न करोगे तो कौरवलोग तुमको बँधुआकर युधिष्ठिरको राज्य देदेंगे । २३ । सो तुम्हीं को नहीं कर्ण व तुम व हम तीनों को बांधकर भीष्म द्रोण व तुम्हारे पिता पाण्डवों को राज्य देदेंगे । २४ । वैशम्पायनजी बोले कि अपने भाई के ऐसे वचनसुन धृतराष्ट्रका पुत्र दुर्योधन क्रुद्धहोकर बड़े मतवाले हाथीके समान श्वासलेताहुआ सभासे उठखड़ाहुआ । २५ । व विदुर धृतराष्ट्र महाराज बाल्हिक कृपाचार्य्य, सोमदत्त, भीष्म, द्रोणाचार्य्य, व जनार्दन । २६ । इन सबोंका अनादर, कर निर्लज्ज, अनार्य्य मानी व मान्यलोगोंका अपमान करनेवाला दुर्योधन अशिष्टलोगों के समान चलादिया । २७ । दुर्योधन के उठतेही सब उसके भाई अमात्य वर्ग व

---

gain nothing except infamy and loss of virtue." Vaishampayan said that when Shree Krishn had finished his speech, Dushasan spoke out in the midst of the Kauravas and said to Duryodhan, "The Kauravas will deprive you of your liberty and will place the Pandavas on the throne if you will not consent to peace. Bhishm, Drona and your father will make you as well as Karan and myself captive and will instal Yudhishthir on the throne." Vaishampayan said that on hearing the words of his brother, Duryodhan the son of Dhritrashtra rose up from the court, heaving deep sighs like a mad elephant, and went out like a shameless wicked creature as he was, insultinng Vidur, Dhritrashtra, Vahlik, Kripacharya, Somdatta,

॥ २८ ॥ सभायास्तुत्थितंक्रुद्धं प्रस्थितंभ्रातृभिःसह । दुर्योधनमभिप्रेक्ष्य भीष्मःशान्तनवोब्रवीत् ॥ २९ ॥ धर्मार्थावभिसंत्यज्य संरम्भंयोनुमन्यते । हसन्तिव्यसनेतस्य दुर्हृदोनचिरादिव ॥ ३० ॥ दुरात्माराजपुत्रोयं धार्तराष्ट्रोनुपायवित् । मिथ्याभिमानीराज्यस्य क्रोधलोभवशानुगः ॥ ३१ ॥ कालपक्वमिदंमन्ये सर्वक्षत्रंजनार्दन । सर्वेह्यनुसृतामोहात् पार्थिवाःसहमंत्रिभिः ॥ ३२ ॥ भीष्मस्याथवचः श्रुत्वा दाशार्हःपुष्करेक्षणः । भीष्मद्रोणमुखान्सर्वा नभ्यभाषतवीर्यवान् ॥ ३३ ॥ सर्वेषांकुरुवृद्धानां महानयमतिक्रमः । प्रसह्यमन्दमैश्वर्येननिच्छतयन्नृपम् ॥ ३४ ॥ तत्रकार्यमहंमन्ये कालप्राप्तमरिंदमा । क्रियमाणेभवेच्छ्रेयस्तत्सर्वंशृणुतानघाः ॥ ३५ ॥ प्रत्यक्षमेतद्भवतां य द्वक्ष्यामिहितंवचः । भवतामानुकूल्येन यदिरोचेतभारताः ॥ ३६ ॥ भोजराजस्यवृ

सब राजा लोगभी उठकर उसके पीछे २ चलदिये । २८ । जब क्रोधकरके अपने भाइयों समेत दुर्योधन चलेगये तो शान्तनुके पुत्र भीष्मजीबोले कि ।२९। धर्म्म अर्थको छोड़ जो पुरुष क्रोधहीको अच्छा मानताहै उस के इष्टदुर्व्यसनको दुर्जनलोग बहुतहीशीघ्र हँसतेहैं । ३० । देखो यह दुरात्मा राजपुत्र दुर्य्योधन उपाय कुछ नहीं जानता मिथ्याभिमानीहो राज्यकेलिये क्रोधलोभके वशहोगयाहै । ३१ । इससे हे जनार्दन हम सब क्षत्रियोंको कालसे पकेहुये समझतेहैं क्योंकि मारे मोहके उस के सबमंत्री व सबराजालोगभी उसीके अनुगामी हैं । ३२ । भीष्मजीके ऐसे वचनसुन महावीर्य्यवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी भीष्म द्रोण धृतराष्ट्रादिकों से यह वचन बोले कि । ३३ । जो कि अपरवश्ती ऐश्वर्यमें मन्दमति दुर्योधनको आपलोग नहीं रोकते यह सब कुरुवृद्धोंका बड़ाभारी अन्यायहै । ३४ । हे शत्रुसूदनलोगो इस विषयमें हमको करनेके योग्य समझते हैं उसके करनेपर कल्याणहोगा उसे चित्त लगाय सुनो ।३५। जो हम वचनकहेंगे वह आपलोगोंकोभी प्रत्यक्षहै व आपलोगोंकोभी

Bhishm Dronacharya and Janardan by his conduct. Duryodhan's brothers, ministers and all the kings followed him. After the departure of Duryodhan, Bhishm the son of Shantanu said, "He who prefers anger to dharm and worldly profits, is laughed at by good people. 30. See, this wicked prince, Duryodhan possesses no ability and being vain of his kingdom has come under the sway of anger and avarice. I am therefore of opinion, Janardan, that the time is approaching when all the Kshatryas will be killed; for the kings and ministers are foolish enough to follow him." Having heard the words of Bhishm, Krishn addressed Bhishm, Dronacharya and Dhritrashtra as follows:—"It is the fault of the elder Kauravas that they donot check Duryodhan who has lost his senses

द्स्य दुराचारोऽज्ञानात्पवान । जीवतःपितुरैश्वर्यं हृत्वामृत्युवशङ्गतः ॥ ३७ ॥ उग्रसेन सुतःकंसः परित्यक्तःसवा यवैः । ज्ञातीनांहितकामेन मयाशस्तोमहामृधे ॥ ३८ ॥ आहुकःपुनरस्माभिर्ज्ञातिभिश्चापिसत्कृतः । उग्रसेनःकृतोराजा भोजराजन्यवर्द्धनः॥३९॥ कंसमेकंपरित्यज्य कुलार्थेसर्वयादवाः । सम्भूयसुखमेधन्ते भारतान्धकवृष्णयः॥४०॥ अपिचाप्यवदद्राजन परमेष्ठीप्रजापतिः । व्यूढदेवासुरेयुद्धे ष्युद्यतेष्वायुधेषु ॥ ४१ ॥ द्वैधीभूतेषुलोकेषु विनश्यत्सुचभारत । अब्रवीत्सृष्टिमान्देवो भगवानलोकभावन ४२ पराभविष्यन्त्यसुरा दैतेयादानवैःसह । आदित्यावसवोरुद्रा भविष्यन्तिदिवौकसः ॥ ४३ ॥ देवासुरमनुष्याश्च गन्धर्वोरगराक्षसाः । अस्मिन्युद्धेसुसंक्रुद्धा हनिष्यन्तिपर

जो अनुकूलताके साथरचे वोकरो ।३६। देखो वृद्ध भोजराजके जीवेहीजी दुराचारी अज्ञानी अपने पिताका राज्य हरने से मृत्युके वशीभूतहुआ । ३७ । वह जानतेहीहो कि उग्रसेनका पुत्र कंस अपने बान्धवों से त्याग दियागयाथा इस लिये ज्ञातिवालों के हितकरने के लिये हम ने उसे मारडाला । ३८ । व फिर हमलोग ज्ञातिवालोंने मिलकर भोजराज्य के बढ़ानेवाले आहुक उग्रसेनजीको राजाबनाया । ३९ । अब कुलभरके अर्थ अकेले कंसका परित्यागकर सबयादव अन्धकवंशी व वृष्णिवंशी इकट्ठेहो सुखसे रहते हैं । ४० । व यहीबात प्रजाओं के पति परमेष्ठी ब्रह्माजीने भी कही है, जब कि देवासुर संग्राम होनेपरहुआ सबलोग अपने अपने आयुधले उद्यत हुये । ४१ । व सब लोकों में दुविधा पड़गया व नाशहोनेपर सब वैयाहुयेतो बड़े दूरदर्शी भगवान् देव ब्रह्माजीबोले कि । ४२ । ये दैत्य, दानव, असुर, आदित्य, वसु, रुद्र व और सब देवगण युद्धकर निरादरको प्राप्तहोंगे । ४३ । व देवता असुर

---

on account of pride. The right thing to do under such circumstances is that which I shall tell you and which you already know. You will act on it if you like. See, during the life time of old king Bhoj, his wicked son seized the kingdom and had to die. You know how Kans the son of Ugrasen was shunned by his kinsmen and I killed him for the good of the kinsmen. We then united to give the kingdom of Bhoj to Ugrasen. You know how happy are the Yadavas, the Andhaks and the Vrishnis, because they gave up one only i. e. Kans for the sake of the whole family.40. Prajapati Brahma says that when the war between the gods and asurs broke out and all were ready to fight and die, Brahma advised them against fighting and said that the Daityas, Danavas, asurs, Adityas, Vasus, Rudras and gods would come to grief; for the gods, asurs, men, Gandharvas, Nagas and rakshases would all die. With this conclusion, *Brahma ordered*

स्वरम् ॥ ४४ ॥ इतिमत्वाब्रवीद्धर्मं परमेष्ठीप्रजापतिः । वरुणायप्रयच्छैतान् बध्वादैतेयदानवान् ॥ ४५ ॥ एवमुक्तस्ततोधर्मो नियोगात्परमेष्ठिनः । वरुणायददौसर्वान् बध्वादैतेयदानवान् ॥ ४६ ॥ तान्बध्वाधर्मपाशैश्च स्वैश्चपाशैर्जलेश्वरः । वरुणःसागरेयत्तो नित्यंरक्षतिदानवान् ॥ ४७ ॥ तथादुर्योधनंकर्णं शकुनिञ्चापिसौबलम् । बध्वादुःशासनंचापि पाण्डवेभ्यःप्रयच्छत ॥ ४८ ॥ त्यजेत्कुलार्थेपुरुषं ग्रामस्यार्थे कुलंत्यजेत् । ग्रामंजनपदस्यार्थे आत्मार्थेपृथिवींत्यजेत् ॥ ४९ ॥ राजन्दुर्योधनंबध्वा ततःसंशाम्यपाण्डवैः । त्वत्कृतेनविनश्येयुःक्षत्रियाःक्षत्रियर्षभ ॥ ५० ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कृष्णवाक्ये
अष्टाविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२८ ॥

मनुष्य गन्धर्व नाग राक्षस सबके सब इस महायुद्ध में परस्पर लड़मरेंगे कोईभी न बचेगा । ४४ । यह मान ब्रह्माजी ने धर्मजी से कहा कि सब दैत्यों को पकड़ वरुणके हवाले करो । ४५ । इसप्रकार ब्रह्माजीकी आज्ञासे धर्मजी ने सब दैत्यदानवों को बँधुआकर वरुणके हवाले करदिया । ४६ । वरुणजी ने उन दैत्यों को धर्मपाशों से व अपने वरुणपाशों से बांध जाय समुद्रमें करदिया व अब नित्य वहां उनकी रक्षा करते रहतेहैं । ४७ । इसी प्रकार आपलोग दुर्योधन, कर्ण, दुश्शासन, शकुनिको बँधुआ कर राज्यपाण्डवों को देदो । ४८ । क्योंकि लिखाहै कि कुलके लिये एकको, ग्रामके लिये कुलको, देशके लिये ग्रामको और अपने लिये सब भूमिको छोड़ना चाहिये । ४९ हे नृप दुर्योधन को बांधकर पांडवोंको राज्यदो यदि तुम सब क्षत्रियोंका मरना न चाहते हो ॥ ५० ॥

Dharm to seize all the Daityas and to give them to Varun. Dharm did accordingly. Varun bound them and threw them into the Ocean and watches them up to the present time. In the same manner you should make Duryodhan, Karan, Dushasan and Shakuni captives and should give the throne to the Pandavas. For it is said "Give up one for the good of a family, the family for the good of a village, the village for the good of country and all the earth for the sake of self." Having imprisoned Duryodhan make peace with the Pandavas, if you would avoid the destruction of the whole Kshatrya race."50 .



वैशम्पायन उवाच। कृष्णस्यतुवचः श्रुत्वाधृतराष्ट्रोजनेश्वरः। विदुरंसर्वधर्मज्ञं त्वरमाणोऽभ्यभाषत ॥ १ ॥ गच्छतातमहाप्राज्ञां गान्धारींदीर्घदर्शिनीम्। आनयेह तयासार्द्धमनु नेष्यामिदुर्मतिम् ॥ २ ॥ यदिसापिदुरात्मानं शमयेद्दुष्टचेतसम्। अपिकृष्णस्य सुहृदस्तिष्ठेमवचनेवयम् ॥ ३ ॥ अपिलोभाभिभूतस्य पन्थानमनुदर्शयेत्। दुर्बुद्धेर्दुःसहायस्य समार्थमुवतीवचः ॥ ४ अपिनोव्यसनंघोरं दुर्य्योधनकृतंमहत्। शमयेच्चिररात्राय योगक्षेमवदव्ययम् ॥ ५ ॥ राज्ञस्तुवचनंश्रुत्वा विदुरो दीर्घदर्शिनीम्। आनयामासगान्धारीं धृतराष्ट्रस्यशासनात् ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्रउवाच ॥ एषगान्धारिपुत्रस्ते दुरात्माशासनातिगः। ऐश्वर्य्यलोभादैश्वर्यं जीवितञ्चमहास्यति

अध्याय ॥ १२९ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्रजी के वचन सुन राजा धृतराष्ट्र सब धर्म्म जाननेवाले विदुरजीसे बहुत शीघ्रताके साथ बोले। १। हे तात विदुर जाव, महाचतुर व बहुत दूरकी बातें विचारनेवाली गान्धारीको यहां लिवालावो उनके साथ हम उस दुष्टमति दुर्य्योधनको समझावें। २। कदाचित् वही उस दुष्टात्मा दुष्टचित्त को समझाय शान्तकरें तो सुहृद कृष्णचन्द्रके वचनपर हमलोग टिकें। ३। क्या आश्चर्य्य कि दुर्बुद्धि दुष्टसहाय के उस दुष्ट के शान्त होनेके वचन कहतीहुई गान्धारी उस महालोभीको कोई सुमार्गही दिखावें। ४। कदाचित् यह जो दुर्य्योधनका किया घोरदुर्व्यसन हमलोगों को बड़ाभारी आनपड़ाहै उसे वे शान्तही करादें कि वह बहुत दिनोंके लिये योग क्षेमकारकहो व जो राज्यादि सुखहैं बनेहीरहें। ५। धृतराष्ट्रजी के वचनसुन विदुरजी उनकी आज्ञा से दूरदर्शिनी गांधारीजीको जाय झट बुलालाये। ६। तब धृतराष्ट्रजी गान्धारीसे बोले हेगांधारी

CHAPTER CXXIX

Vaishampayan said that having heard the words of Shree Krishn, Dhritrashtra spoke hastily to Vidur the wise, saying, "Go, Vidur, and bring the wise and far seeing Gandhari here; she and I together will remonstrate with wicked Duryodhan. If perchance she can pacify the wicked soul of that misguided fool, we shall be able to act upon the advice of Shree Krishn. She will do wonders if she can turn the wicked mind of that avaricious man towards the path of virtue. May we escape from the punishment which is about to betake us for the sins of Duryodhan and may we live a long life of peace and prosperity for a long time." By the king's order, Vidur at once brought the wise Gandhari and Dhritrashtra said to her, "This wicked son of yours, does not mind good advice out of avarice and

॥ ७ ॥ अशिष्टवदमर्य्यादः पापैः सहदुरात्मवान् । सभायानिर्गतोमूढो व्यतिक्रम्य सुहृद्वचः ॥ ८ ॥ वैशम्पायन उवाच । साभर्तृवचनंश्रुत्वा राजपुत्रीयशस्विनी । अन्विच्छन्तीमहच्छ्रेयो गान्धारीवाक्यमब्रवीत् ॥ ९ ॥ गान्धार्य्युवाच । आनायय सुतंक्षिप्रं राज्यकामुकमातुरम् । नहिराज्यमशिष्टेन शक्यंधर्मार्थलोपिना ॥ १० ॥ आप्तुमाप्तंतथापीदं मविनीतेनसर्वथा । त्वंह्येवात्रभृशंगर्ह्यो धृतराष्ट्रसुतप्रियः ॥ ११ ॥ योजानन्पापतामस्य तत्प्रज्ञामनुवर्त्तसे । सएषकाममन्युभ्यां प्रलब्धोलोभमास्थितः ॥ १२ ॥ अशक्योद्यत्वयाराजन् विनिवर्त्तयितुंबलात् । राष्ट्रप्रदानेमूढस्यबालिशस्य दुरात्मनः ॥ १३ ॥ दुःसहायस्यलुब्धस्य धृतराष्ट्रोश्नुतेफलम् । कथंहिस्वजनेभेद मुपेक्षेतमहीपतिः ॥ १४ ॥ भिन्नंहिस्वजनेनत्वां प्रहसिष्यन्तिशत्रवः । याहिशक्या

यह तुम्हारा दुष्टात्मापुत्र ऐश्वर्यके लोभसे शिक्षा नहीं मानता इससे ऐश्वर्य व प्राणदोनों छोड़ेगा । ७ । देखो यह मूढ़ सुहृदों के वचनोंका उल्लंघनकर अशिष्ट नीचके समान अपने पापी साथियों सहित सभासे उठकर चलागया । ८ । वैशम्पायनजी बोले कि यशस्विनी राजपुत्री गान्धारीजी अपनेपतिके ऐसे वचन सुन महाकल्याणकी चाहनाकिये बोलीं कि ९ बहुत शीघ्र राज्यकी इच्छा किये आतुर अपने पुत्रको आज्ञादो कि धर्म लोप करनेवाले अशिष्ट पुरुषको अधिक राज्य नहीं मिलसक्ती । १० । व जो उसके पास रहताहै वहभी नष्टहोजाताहै क्योंकि उसकी अविनीतताही उसकी राज्यका लोप करती है । ११ । धृतराष्ट्र तुमभी अत्यन्त लोभीहो इसीसे ऐसे पुत्रको प्रिय समझतेहो कि यह बड़ाकमाऊ है व यह बात जानकर तुम उसकी बुद्धिके पीछे चलतेहो । १२ । और यह लोभ काम क्रोध सहित तुममें टिकाहै उसे तुम अपने बलसे निवृत्त नहीं करसके । १३ । ऐसेमूढ़, अज्ञ, दुष्टात्मा, लोभी, दुस्संगीको राज्य देकर अबधृतराष्ट्र तुम फलभोगवेहो । १४ । क्योंकि प्रथमतो

---

therefore he will have to give up both wealth and life. He gave no heed to the words of his friends and like a wicked and mean fellow went away with his attendants from the court." Vaishampayan said that on hearing the words of her husband the glorious princess of Gandhar spoke these words for the good of all, "Tell your avaricious son at once that a wicked and irreligious man is not worthy to rule a kingdom. 10. Tell him that all his companions will be destroyed as his pride is sure to cause him the loss of kingdom. You yourself are very greedy, king, as you love such a son and think that he will bring you wealth. Knowing all this you help him in his wickedness and cannot check him though he is dependent on you. You will suffer for your giving the reigns of government

महाराज साम्नाभेदेनवाधुनः । निस्तर्तुमापदःस्वेषु दण्डकस्तत्रपातयेत् ॥ १५ ॥ वैशम्पायन उवाच । शासनाद्धृतराष्ट्रस्य दुर्योधनममर्षणम् । मातुश्चवचनात्क्षत्ता समांप्रवेशयत्पुनः ॥ १६ ॥ समातुर्वचनाकांक्षी प्रविवेशपुनःसभाम् । अभिताम्रेक्षण क्रोधान्निः श्वसन्निवपन्नग ॥ १७ ॥ तंप्रविष्टमभिप्रेक्ष्य पुत्रमुत्पथमास्थितम् । विगर्हमाणागान्धारी शमार्थंवाक्यमब्रवीत् ॥ १८ ॥ दुर्योधननिबोधेदं वचनंममपुत्रक । हितंतेसानुबन्धस्य तथायत्यांसुखोदयम् ॥ १९ ॥ दुर्योधनयदाहत्वां पिताभरतसत्तम । भीष्मोद्रोण कृपः क्षत्ता सुहृदांकुरुतद्वच. ॥ २० ॥ भीष्मस्यतुपितु श्चैव ममचापचितिःकृता । भवेद्द्रोणमुखानाञ्च सुहृदांशाम्यतात्वया ॥ २१ ॥ नहि

बड़े राजपद बैठे अब उस अपने पुत्रकी उपेक्षा कैसे करसकेहो क्योंकि जो स्वजनसे भिन्न होजावोगेतो शत्रुलोग पीछे हँसेंगे । १५ । हे महाराज जो पुरुष समझाने से व भेदकराने से आपदोंसे बचसक्ता है वह अपने लोगोंके ऊपर दण्डपात कैसे करै इससे प्रथम समझानाही चाहिये फिर भेदकरना फिर दान व दण्डदेना अपनेके ऊपरहोही नहींसक्ता १६ वैशम्पायनजी बोले, कि धृतराष्ट्रकी आज्ञा से व उनकी माताकी जबानी दुर्योधनको बिदुरजी फिर सभामें बुलाये १७ व माताके वचन सुननेकी इच्छा से दुर्योधन क्रोध के मारे नेत्र लाल किये व सर्प के समान श्वास लेते फिर सभा में आये । १८ । उसकुमार्गगामी पुत्रको सभा में बैठदेख शमनकराने के अर्थ गांधारीजीबोलीं । १९ । हे दुर्योधन तुम से जो तुम्हारे पिता ने कहा व भरतवंश में उत्तम भीष्मजीने कहा व द्रोणाचार्य कृपाचार्य बिदुर ने कहा इनसब सुहृदों के वचनकरो । २० । जो तुम अपने सुहृदों से मेलकरोगेतो भीष्म

---

to such a foolish, disobedient, wicked and avaricious son who has wicked men for his advisers. *Having given him the kingdom, you* can do nothing against him, for disunion among kinsmen leads to the laughter of enemies. You can escape difficulties by remonstrance and causing disunion among your enemies, but you cannot punish your friends." Vaishampayan said that by the order of Dhritrashtra and Gandhari, Vidur brought Duryodhan again in the court and expecting to hear the rebukes of his mother, Duryodhan came with *his eyes red in anger and heaving deep sighs like a serpent.* When he was seated in the court Gandhari, desirous of securing peace, said to his wicked son, "Act Duryodhan, upon the advice of your father as well as that of Bhishm, Dronacharya, Kripacharya, Vidur and other friends. 20 You will pay respect to your father and me if you

राज्यमहाप्राज्ञ स्वेच्छामेनलभ्यते। अथाप्युरक्षितुंवापि भोक्तुंभरतसत्तम ॥ २२ ॥ नह्यवश्येन्द्रियोराज्य मश्नीयाद्दीर्घमन्तरम् । विजितात्मातुमेधावी सराज्यमभिपालयेत् ॥२३॥ कामक्रोधौहिपुरुष मर्थेभ्योव्यपकर्षतः । तौतुशत्रूविनिर्जित्यराजा विजयते महीम् ॥ २४॥ लोकेश्वरप्रभुत्वंहि महदेतद्दुरात्मभिः।राज्यनामेप्सितंस्थान नशक्यम भिरक्षितुम् ॥ २५ ॥ इन्द्रियाणिमहत्प्रेप्सु र्नियच्छेदर्थधर्मयोः। इन्द्रियैर्नियतैर्बुद्धि र्वर्द्धतेग्निरिवेन्धनैः॥ २६ ॥ अविधेयानिहीमानि व्यापादयितुमप्यलम् । अविधेया इवादान्ता हया पथिकुसारथिम् ॥ २७ ॥ अविजित्ययआत्मानममात्यान् विजिगीष

पितामह व अपने पिता व हमारेभी जानों तुमने पूजाकी व द्रोणाचार्यादि सबकी पूजा इसीसे होगी । २१ । हेमहाप्राज्ञ हे भरतसत्तम राज्य अपनी इच्छा से नहीं मिलसक्ती न रक्षाहीहोती न इच्छा से भोगनेही को मिलती है । २२ । अजितेन्द्रिय पुरुष बहुत दिनोंतक राज्य नहीं भोगसक्ता, व जितेन्द्रिय व बुद्धिमान् पुरुष बहुत दिनोंतक राज्यका पालन करसक्ता है । २३ । जिससे कि काम व क्रोध ये दोनों पुरुषको अर्थों से खींच लेते हैं इससे इनदोनों शत्रुओं को जीतकर राजा पृथ्वी जीतताहै । २४ । राज्य क्या लोकभरका स्वामीहोजाय तोभी दुष्टात्मा उसकी रक्षा नहींकरसक्ता । २५ । जो अपना महत्त्व चाहे प्रथम इन्द्रियोंको अर्थ धर्म दोनोंसे रोके क्योंकि जिसकी इन्द्रियां वश में रहती हैं, उसकी बुद्धिबढ़ती है, जैसे कि ईंधन से अग्नि। २६ । व बिना वशकी इन्द्रियां पुरुष को मारडालभी सक्ती हैं जैसे जो घोड़े कट्टरहोते व अच्छीतरह सिखायेभी नहीं जाते वे मार्गमें अनारी हाकनेवाले को मारडालतेहैं । २७ । व जो राजा प्रथम अपनेको बिनाजीते मन्त्रादिकों को जीता चाहताहै व बिना अमात्यों के जीते शत्रुओं को जीतना चाहता वह

---

make peace. One can not get a kingdom nor can one enjoy or protect it at will. One having no control over one's organs cannot long rule over the kingdom, while one having control over his organs rules for a long time. Sensual desires and anger deprive people of success in worldly affairs and hence a king who conquers the two enemies conquers the earth. A wicked man though master of the whole world cannot keep his prestige. One desiring greatness should control his organs with *dharm* and *arth*, for he who has control over organs increases his wisdom as fuel does fire. The organs of senses uncontrolled lead to ruin as a restive steed which cannot be well trained kills the driver in the way. A king who having no control over his organs and ministers wishes to keep his secrets and

ते। अमित्रानवाजितामात्यः सोवशःपरिहीयते ॥ २८ ॥ आत्मानमेवप्रथमं द्वेष्यरूपेणयोजयेत्। ततोऽमात्यानमित्रांश्च नमोघंविजिगीषते ॥ २९ ॥ वश्येन्द्रियंजितामात्यं धृतदण्डं विकारिषु। परीक्ष्यकारिणंधीरं मत्यर्थं श्रीर्निषेवते ॥ ३० ॥ क्षुद्राक्षेणेव जालेन झषावपि हितावुभौ। कामक्रोधौशरीरस्थौ प्रज्ञानन्तौ विलुम्पतः ॥ ३१ ॥ याभ्यांहिदेवाःस्वर्यातुः स्वर्गस्यपिदधुर्मुखम्। बिभ्यतोनुपरागस्य कामक्रोधौस्मवार्द्धितौ ॥ ३२ ॥ कामंक्रोधञ्चलोभञ्च दम्भंदर्पंचभूमिपः। सम्यग्विजेतुंयोवेद समहीमभिजायते ॥ ३३ ॥ सततं निग्रहेयुक्त इन्द्रियाणांभवेन्नृपः। ईप्सन्नर्थञ्चधर्मंचाद्वि

अथवाहो अपने स्थानसे हीनहोजाता। २८। जो प्रथम अपने मनकोही वैरीसमझ उसेजीते फिर अमात्यों को फिर शत्रुओं को जीते उसकी जीतनेकी इच्छा निष्फल नहीं होती २९ व जो पुरुष अपनी इन्द्रियोंको वशमें रखता व अपनेमनको जीतता व जोलोग विकारकरते उनको दण्डदेता व जो करता व परीक्षा लेकर करता व धीर रहता उसकी सेवा लक्ष्मीजी करतीहैं। ३०। जैसे छोटे २ छेदोंके जाल में दो मछलियां फँसजातीं फिर निकल नहीं सकतीं ऐसेही, काम व क्रोध जब शरीरके भीतर रहते हैं तो बुद्धिका लोप करदेते हैं। ३१। व कामक्रोध युक्त पुरुष चाहै बहुत वनमें आयाकभी नहो पर जब स्वर्गको जानेलगता है तो देवतालोग स्वर्गके दरवाजे बन्दकरलेतेहैं क्योंकि इसबातसे भयखातेहैं कि जो यह पुरुष यहां आवेगातो यहां भी काम क्रोध बढ़जावेंगे। ३२। इससे जो राजा, काम, क्रोध, लोभ दम्भ, व दर्प को अच्छीतरह जीतना जानता है वह पृथ्वीका राज्य करताहै नहीं तो नहीं। ३३। धर्म अर्थकी इच्छा किये व शत्रुओंका अनादर चाहता हुआ व इन्द्रियोंको दमन

---

enemies under control, falls helplessly in his own kingdom. *He who* conquers *his own mind* and *ministers* is sure to succeed in the conquest of his enemies. He who has control over his organs and mind who punishes the wrongdoers; who acts after careful examination and is wise, is attended by Lakshmi the goddess of wealth. 30. Sensual desires and anger stifle the intellect as the small fish caught in the narrow meshes of a net cannot go out. A person having sensual desires and anger, though not a slave to them, is shut out from heaven by gods, because they are afraid of him. A king who knows how to conquer sensual desires, anger, avarice, deception and arrogance, rules the earth. He who is desirous of dharm, arth, conquest over enemies and control over organs, can become a king and he who being under the influence of sensual

यतांचपराभवम् ॥ ३४ ॥ कामाभिभूतःक्रोधाद्वा योमिथ्याप्रतिपद्यते । स्वेषुचान्येषुवातस्य नसहायाभवन्त्युत ॥ ३५ ॥ एकीभूतैर्महाप्राज्ञैः शूरैररिनिबर्हणैः । पाण्डवैःपृथिवींतातभोक्ष्यसेसहितःसुखी ॥ ३६ ॥ यथाभीष्मःशान्तनवो द्रोणश्चापि महारथः । आहतुस्तावतत्सत्य मजेयौकृष्णपाण्डवौ ॥ ३७ ॥ प्रपद्यस्वमहाबाहुं कृष्णमक्लिष्टकारिणम् । प्रसन्नोहिसुखायस्या दुभयोरेवकेशवः ॥ ३८ ॥ सुहृदामर्थकामानां योनतिष्ठतिशासने । प्राज्ञानांकृतविद्यानां सनरःशत्रुनन्दनः ॥ ३९ ॥ न युद्धेतातकल्याणं नधर्मार्थौकुतःसुखम् । नचापि विजयो नित्यं मायुद्धेचेतआधिथाः ॥ ४० ॥ भीष्मेणहिमहाप्राज्ञ पित्रातेबाह्लिकेनच । दत्तोंशःपाण्डुपुत्राणां भेदाद्भीतै

किये जो पुरुषहोता वही राजाहोसक्ता है । ३४ । व जो काम युक्तहोकर क्रोधसे अपने लोगोंके विषयमें व अन्यलोगों के विषयमें मिथ्या प्रवर्त्तितहोता उसके सहायक कोईभी नहीं होवे । ३५ । इससे हे तात, जो तुम, शूरवीर महाप्राज्ञ, व शत्रु नाशक पांडवों से मेलकरलोगेतो उनके साथ सुखीहोकर पृथ्वीको भोगोगे ।३६। व हे तात जैसा कि भीष्म पितामहजी व द्रोणाचार्य्यजी ने कहा है सत्य २ अर्जुन व कृष्णचन्द्र किसी के जीतनेके मानके नहीं हैं । ३७ । इससे अब सहज में सब कार्य करने वाले महाबाहु कृष्णचन्द्र के शरण में प्राप्तहोवो क्योंकि ये कौरव पाण्डव दोनों के सुखके लिये प्रसन्नहैं । ३८ । व सब विद्याओं में निपुण, महाप्राज्ञ सुहृद जो कि अर्थ व कामहीकी बातें कहतेहैं इनकी शिक्षा जो नहीं मानता वह पुरुष शत्रुही अपने शत्रुओं को हर्षदाता है । ३९ । हे तात, युद्ध में कल्याण नहीं है, व न धर्म अर्थ, फिर सुख कहांसेहो, व विजयभी नित्य नहीं होती क्योंकि वह दैवाधीन है इससे युद्धमें चित्त न लगावो । ४० । हे शत्रुसूदन, देखो भीष्म

---

desires and anger plays false with regard to himself, gets no helpers. Therefore, my son, you will reign happily over the land, if you will make peace with the Pandavas who are brave, wise and destroyers of enemies. Shree Krishn and Arjun are indefatigable to be sure as Bhishm and Dronacharya have told you. Seek the protection of almighty Shree Krishn, for he is the well wisher of both Kauravas and Pandavas. He who does not act upon the advice of learned, wise and experienced Shree Krishn, increases the joy of his enemies. There is no religious and worldly profit in war and therefore there can be no happiness attending it. Conquest too is not sure, because it is in the hands of God; you should therefore not give your mind to war 10. To avoid quarrel your father as well as Bhishm the

रिन्दम ॥ ४१ ॥ तस्यचैतत्प्रदानस्य फलमद्यानुपश्यसि । यन्नृपैःपृथिवीकृत्स्ना शूरैर्निहतकण्टकाम् ॥ ४२ ॥ प्रयच्छपाण्डुपुत्राणां यथोचितमरिंदम । यदीच्छसिस हामात्योभोक्तुमर्द्धमहीपताम् ॥ ४३ ॥ अलमर्द्धंपृथिव्यास्तं सहामात्यस्यजीवितुम् । सुहृदांवचनेतिष्ठन् यशःप्राप्स्यसि भारत ॥ ४४ ॥ श्रीमद्भिरात्मवद्भिस्तै र्बुद्धिमद्भि र्जितेन्द्रियैः । पाण्डवैर्विग्रहस्तात भ्रंशयेन्महतःसुखात् ॥ ४५ ॥ निगृह्यसुहृदांमन्युं शाधिराज्यंयथोचितम् । स्वमंशंपाण्डुपुत्रेभ्यः प्रदायभरतर्षभ ॥ ४६ ॥ अलमङ्गवि कारोयं त्रयोदशसमाःकृतः । शमयैनंमहाप्राज्ञ कामक्रोधसमेधितम् ॥ ४७ ॥ नचै

पितामहजी ने व तुम्हारे पिताने व राजाबाह्लिकजी ने भेद पड़जाने के भय से प्रथम पांडवों को आधा राज्यदेदिया था । ४१ । उस राज्यके देनेका फल अब तुम देखतेहो कि उन शूरोंने पृथ्वीपर शत्रुनहीं रहने दिया था इसीसे तुम निष्कण्टक पृथ्वीका राज्य भोगतेहो । ४२ । इससे जो अपने मन्त्रियों सहित अभी कुछ दिन राज्यभोग करना चाहतेहोतो पाण्डुके पुत्रोंको आधा राज्यदेदो क्योंकि यह उचितहै । ४३ । आधी पृथ्वी अमात्यों सहित तुम्हारी जीविका के लिये बहुत है व सुहृदों केवचनपर टिकनेसे यशपावो गे । ४४ । व हे तात, श्रीमान् , आत्मज्ञानी, बुद्धिमान् व जितेन्द्रिय पांडवों के संग विग्रह करना बड़ेभारी सुखसे भ्रंशकरादेगा । ४५ । इससे पांडवोंका अंश पांडवोंको देकर सुहृदोंका क्रोधमिटाय यथोचित अपना आधाराज्य सुखसे करो । ४६ । हे प्रिय, यही बड़ा अनर्थ होचुका जो तेरहवर्षतक बेचारे पाण्डुपुत्रोंको तुमने बनवास दिया, इससे हे महाप्राज्ञ अब कामक्रोधसे बढ़ेहुये इस बिगाड़को शान्त करावो अपना आधाराज्य पाय-

---

grandfather and Valhik gave half the kingdom to the Pandavas and as the result of their doing so you see that the Pandavas have cleared the the land of enemies and you are ruling over the whole land fearlessly. You should give the Pandavas half the kingdom, if you wish to rule longer. Half the land is sufficient for you and your ministers and besides, you will gain glory by acting upon the advice of your friends. Your quarrel with the glorious, self-knowing and wise Pandavas who have their senses under control, will deprive you of the great happiness. You should therefore please your friends by giving the Pandavas their share of the kingdom and should rule happily over the remaining half. The exile of the Pandavas for thirteen years has been cruelty enough and therefore you should suppress the quarrel which you have raised by your sensual desires and anger.

यशक्तःपार्थानां यस्त्वमर्थमभीप्ससि । सूतपुत्रोद्दृढक्रोधो भ्रातादुःशासनश्चते ॥४८॥ भीष्मेद्रोणेकृपेकर्णेभीमसेने धनञ्जये । धृष्टद्युम्नेचसंक्रुद्धे नश्युःसर्वाःप्रजाध्रुवम् ॥ ४९ ॥ अमर्षवशमापन्नो माकुरूंस्तातजीघनः । एषाहिपृथिवीकृत्स्ना मागमत्त्वत्कृतेवधम् ॥ ५० ॥ यच्चत्वंमन्यसेमूढ भीष्मद्रोणकृपादयः । योत्स्यन्तेसर्वशक्त्येति नैतदद्योपपद्यते ॥ ५१ ॥ समंहिराज्यंप्रीतिश्च स्थानंहिविदितात्मनाम् । पाण्डवेष्वथ युष्मासु धर्मस्त्वभ्यधिकस्ततः ॥ ५२ ॥ राजपिण्डभयादेते यदिहास्यन्तिजीवितम्

जायँगे तो फिर इसको भूलजायँगे । ४७ । व जो अर्थ तुम चाहतेहो कि पांडवोंको जीत तुम अकेले सब राज्यकरो इस बातको कर्ण दुश्शासन व तुम किसी प्रकार सेभी नहीं कर सके। ४८ ।क्योंकि, भीष्म, द्रोणाचार्य,कृपाचार्य, कर्ण, भीमसेन, अर्जुन व धृष्टद्युम्न के क्रोध करने पर सब प्रजाका नाशही होजायगा तुम राज्य किसका करोगे । ४९ । हे तात अमर्षके वशहोकर कौरवोंका नाश न करावो, यहसब पृथ्वी तुम्हारे निमित्त नाशके न प्राप्तहो । ५० । व हे मूढ़ जो तुम अपने मनसे समझतेहो कि भीष्म द्रोण कृपाचार्यादि ये सब अपनी शक्ति से हमारी ओर होकर लड़ेंगे यह बातभी अब नहीं होसकी । ५१ । क्योंकि इनलोगों के लेखे पांडवों का व तुम्हारा राज्य समान है व प्रीतिभी इन की तुममें व उन में है व स्थान भी इनलोगों को तुम्हारे यहां है व उनके यहांभी है, इस बातको ये लोग अच्छीतरह जानते हैं, व इनलोगों को उचितभी यही है कि तुम को उनको समान जानें परन्तु पाण्डवों में धर्म अधिक है इसलिये ये सब उनका प्रेम तुम से अधिक करते हैं फिर तुम्हारे लिये उनको क्यों मारनेलगें । ५२ । हां तुम्हारे

They will forget all the wrongs after receiving their moity of the kingdom. To conquer the Pandavas and to be the sole monarch of the whole empire is beyond your power as well as of Karan and Dushasan; for the anger of Bhishm, Dronacharya, Kripacharya, Karan, Bhimsen, Arjun and Dhrishtadyumn will annihilate all the people and there will be none left to rule over. Donot bring about the ruin of the Kauravas as well as of all the land. 50. You think that Bhishm and Dronacharya and Kripacharya will leave no stone unturned to defeat the Pandavas for your sake; but this idea of yours is an idle dream, for to them it is all the same whether you or the Pandavas rule the land. They have equal love for both parties and they know well that they will lose nothing whether they join you or the Pandavas. The Pandavas are more virtuous and therefore their love

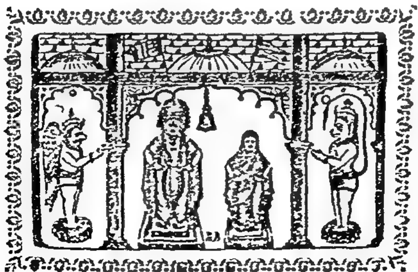
नहिशक्ष्यन्तिराजानं युधिष्ठिरमुदीक्षितुम् ॥ ५३ ॥ नलोभादर्थसम्पत्तिर्नराणामिह दृश्यते । तदलंतातलोभेन प्रशाम्यभरतर्षभ ॥ ५४ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि गांधारीवाक्ये ऊनत्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १२९ ॥

यहांपर अन्न पे लोगखाते हैं इस भयसे जो अपने प्राणभी छोड़ा चाहेंगे समरमें यदि भी होजायँगे तो यहभी है कि राजायुधिष्ठिर के सामने देखभी न सकेंगे मानाही मरना हाथलगेगा । ५३ । लोभसे किसी को सम्पत्ति नहीं मिलसक्ती इस लिये लोभ छोड़-कर शान्ति करो । ५४ ।

---

for them is greater. They will never destroy the Pandavas for your sake. They eat your bread and will therefore die fighting on your side without looking Yudhishthir in the face. You will gain nothing except the death of these great men. Be therefore free from avarice, my son, and make peace. 54 .



वैशम्पायन उवाच ॥ तद्वाक्य मनादृत्य सोर्थवन्मातृ भाषितम् । पुनः प्रतस्थेसं रंभात्सकाशम कृतात्मनाम् ॥ १ ॥ ततःसभाया निर्गम्य मंत्रयामा सकौरवः । सौबलेन मताक्षेणराज्ञा शकुनिनासह ॥ २ ॥ दुर्योधनस्य कर्णस्य शकुनेः सौबलस्यच । दुःशासनचतुर्थो ना मिदमासी द्विचेष्टितम् ॥३॥ पुरायमस्मान् गृह्णाति क्षिप्रकारीजनार्दनः । सहितो धृतराष्ट्रेण राज्ञाशांतनवे नच ॥ ४ ॥ वयमेवहृषीकेशं निगृह्णीमबलादिव । प्रसह्यपुरुष व्याघ्र मिंद्रोवैरोचनिंयथा ॥ ५ ॥ श्रुत्वागृहीतं वार्ष्णेयं पांडवाहत चेतसः । निरुत्साहा भविष्यंति भग्नदंष्ट्राइवोरगाः ॥ ६ ॥ अयंह्येषां महाबाहुः सर्वेषांशर्मवर्मच । अस्मिन्गृहीते वरदे ऋषभे सर्वसात्वताम् ॥७॥ निरुद्यमा भविष्यंति पांडवाः सोमकैः

अध्याय १३० ॥

वैशम्पायन जी बोले कि अपनी माता के अर्थयुक्त वचन सुन उसका अनादरकर मारे क्रोधके उन्हीं अपने अज्ञानी मन्त्रियों के पास फिर दुर्य्योधन चलागया । १ । व सभा से निकल अपने स्थान पर जाय महा जुआरी राजा सुबल के पुत्र शकुनि से उसने सम्मत किया । २ । सम्मत में दुर्य्योधन, कर्ण, शकुनि व दुश्शासन इन चारों की एकान्त में यह कुमति ठहरी । ३ । कि ये शीघ्रकारी श्रीकृष्णचन्द्र धृतराष्ट्र राजा व भीष्मपितामह को मिलकर हमलोगों को पहलेही बँधुआ किया चाहते हैं । ४ । इससे हमींलोग जबरदस्ती श्रीकृष्णचन्द्र को बँधुआ करलें जैसे पुरुषसिंह राजाबलि को इन्द्रमी ने बँधुआ कर लियाथा । ५ । फिर कृष्णचन्द्र को बँधुआ सुन पाण्डवों का चित्त हतहोजायगा इससे वे लोग उत्साह हीन होजायँगे जैसे दाँत टूट जानेपर सर्प्प निरुत्साह होजाते हैं । ६ । ये महाबाहु कृष्णचन्द्र इन सब पाण्डवों के सुखदाता व कवच रूप हैं, इससे इनके बँधुआ होनेपर सब चन्द्रवंशी व पाण्डव लोग निरुद्यम होजायँगे क्योंकि ये सात्वत वंशियों में श्रेष्ठ कृष्णही

CHAPTER CXXX

Vaishampayan said that Duryodhan gave no heed to the good advice of his mother and returned in anger to his foolish companions. He went to Subal's son Shakuni the prince of gamblers and in consultation with Karan, Shakuni and Dushasan he resolved that as Krishn wanted to make them captive with the help of Dhritrashtra. and Bhishm they should prevent him from doing so by throwing him into prison as Indra had done with king Bali of great prowess. They thought that by doing so the Pandavas would lose heart like serpents with broken teeth. They formed this resolution because they knew that for want of the help of Shree Krishn the Pandavas and their

सह । तस्माद्वयमिहैवैनं केशव क्षिप्रकारिणम् ॥ ८ ॥ क्रोशतो धृतराष्ट्रस्य बध्वायोत्स्यामहेरिपून् । तेषांपापमभिप्रायं पापानां दुष्टचेतसाम् ॥ ९ ॥ इङ्गितज्ञ कविः क्षिप्रमन्वबुध्यत सात्यकिः । तदर्थमभिनिष्क्रम्य हार्दिक्येन सहास्थित ॥ १० ॥ अब्रवीत् कृतवर्माणं क्षिप्रंयोजय वाहिनीम् । व्यूढानीकः सभाद्वार मुपतिष्ठस्व दंशितः ॥ ११ ॥ यावदाख्याम्यहञ्चैतत् कृष्णायाक्लिष्टकारिणे । सप्रविश्यसभांवीर सिंहो गिरिगुहामिव ॥ १२ ॥ आचष्टतमभिप्रायं केशवायमहात्मने । धृतराष्ट्रन्ततश्चैव विदुरञ्चान्वभाषत ॥ १३ ॥ तेषामेतमभिप्राय माचचक्षेस्मयन्निव । धर्मादर्थाच्च कामाच्च कर्म्मसाधु विगर्हितम् ॥ १४ ॥ मन्दा कर्त्तुं मिहेच्छन्ति नचावाप्यं कथञ्चन । पुरापिकुर्वतेमूढाः पापात्मानः समागताः ॥ १५ ॥ धर्षिताःकाम मन्युभ्यां क्रोध लोभवशानुगा । इमांह-

इनको वरदान देने वाले हैं । ७ । इस से हमलोग शीघ्रकारी कृष्णचन्द्रको धृतराष्ट्र के बकतेही बकते बँधुआकर शत्रुओंसे युद्ध करेंगे । ८ । उन दुष्ट पापी दुर्योधनादिकोंका अभिप्राय मनकी बात जाननेवाले सात्यकि जीने चट जान लिया । ९ । व उसके लिये सभासे बाहर आय हार्दिक्य के संगहो कृतवर्मा से बोले कि शीघ्र ही सेना तैयार करो । १० । व अपनी सेना तैयार किये तबतक सभा के द्वार पै खड़ेरहो जबतक कि ये समाचार हम कृष्णचन्द्रजी से कह न आवें । ११ । यह कह महाप्रतापी सात्यकि जी सभा में पर्वत की गुहा में सिंहके समान प्रवेश कर महात्मा केशव भगवान जी से दुर्योधनादिकोंका अभिप्राय कहा । १२ । उसके पीछे धृतराष्ट्र जी व विदुर जीसे भी सब अच्छी तरह कहा । १३ । कि धृतराष्ट्र धर्म्म अर्थ व कामसे भी निन्दित यह कर्म्म तुम्हारे पुत्र किया चाहते हैं । १४ । परन्तु वे मन्द इसकार्य को किसी प्रकार नहीं करसक्ते व प्रथम ये मूर्ख कलह करनेही पर उतारू हुये हैं तो महामूढ़ हैं । १५ । व काम क्रोधने इन मूर्खोंका

allies would be able to accomplish nothing. Satyaki the wise guessed out what was passing in their minds. He at once came out of the court with Hardikya and ordered Kritvarma to prepare the army at once. 10. He ordered Kritvarma to stand in readiness together with his army at the gate of the court, intending in the meantime to inform Shree Krishn. He entered like a lion of the cave and informed Shri Krishn with the resolution of Duryodhan and others and said to Dhritrashtra, "Your sons are about to commit a wicked deed, but they will not be successful in their wickedness which they have so foolishly resolved. They have become blind with desire and anger and therefore they have resolved to take Shree Krishn prisoner.

पुण्डरीकाक्षं जिघृक्षन्त्यल्पचेतसः ॥ १६ ॥ पटेनाग्निं प्रज्वलितं यथा बालायथाजडाः । सात्यकेस्तद्वचःश्रुत्वा विदुरो दीर्घदर्शिवान् ॥ १७ ॥ धृतराष्ट्रं महाबाहु मब्रवीत् कुरुसंसदि । राजन्परीत कालास्ते पुत्राः सर्वेपरन्तप ॥ १८ ॥ अशक्यमयशस्यञ्च कर्तुंकर्मसमुद्यताः । इमंहिपुण्डरीकाक्ष मभिभूयप्रसह्यच ॥ १९ ॥ इच्छन्तिसहिता वासवानुजम् । इमंपुरुषशार्दूल मप्रधृष्यंदुरासदम् ॥२०॥ आसाद्य भविष्यन्ति पतङ्गाइव पावकम् । अयमिच्छन्नहि तान्सर्वान् युध्यमानान् जनार्दनः ॥ २१ ॥ सिंहोनागानिव क्रुद्धो गमयेद्यमसादनम् । नत्वयंनिन्दितंकर्म कुर्यात्पापंकथञ्चन ॥२२॥ नचधर्मादपक्रामे दच्युतः पुरुषोत्तमः । विदुरेणैवमुक्तेतु केशवोवाक्यमब्रवीत् ॥ २३ ॥ धृतराष्ट्रमभिप्रेक्ष्य सुहृदांशृण्वतांमिथः । राजन्नेते यदिक्रुद्धामां निगृह्णीयुरोजसा ॥२४॥

निरादर करडाला है इसीसे ये अल्पबुद्धि वाले दुष्ट कृष्णचन्द्रजी को बँधुआ करना चाहते हैं । १६ । जैसे कि बालक व जड़लोग जलती हुई आगको कपड़ेमें बांधकर लेचलना चाहते वैसेही ये लोग यह कार्य किया चाहते हैं सात्यकिजी के ऐसे वचन सुन दीर्घदर्शी विदुरजी । १७ । कौरवों की सभा में महाबाहु धृतराष्ट्र जी से बोले हे राजन तुम्हारे सब पुत्रों को कालने आय घेर लिया है । १८ । क्योंकि ये सब ऐसे कर्म के करने में उद्यत हुये हैं जिसे न करही सक्ते हैं, व यशके नाश करने वालाभी है वह यह है कि इन पुंडरीकाक्ष भगवानजीका अनादरकर । १९ । जबरदस्ती बँधुआ किया चाहते हैं, सब उनके मंत्रियोंकी सलाह होचुकी है, जब इन पुरुष शार्दूल कृष्णचन्द्रजीको प्राप्त होंगे तो । २० । नष्टही होजायँगे जैसे पांखियां अग्निको प्राप्त भस्म होजाती हैं क्योंकि जब वे युद्ध करने पर उतारू होंगे व ये चाहेंगे तो । २१ । जैसे क्रुद्धसिंह हाथियोंको मार डालता है वैसेही ये उनको यमपुरको भेजदेंगे, परन्तु ये कभी निंदित कर्म करहींगे नहीं । २२ । क्योंकि अच्युत पुरुषोत्तम धर्म से पृथक चलतेही नहीं, जब विदुर जीने ऐसा कहा तो कृष्णचन्द्रजी । २३ । धृतराष्ट्रकी ओर देख व सब सुहृदोंको

This resolution of theirs is like carrying fire tied up in a cloth. Having heard these words from Satyaki, Virdur the wise said to Dhritrashtra in the court of the Kauravas, "All your sons, king, are in the jaws of death; for they have engaged themselves in a work which is the destroyer of fame and beyond their power. They intend to insult Janardan and to take him prisoner. They have made their plan for the purpose; but when they will meet him, they will meet their death like insects on fire. For, Krishn will send them to the region of Yam, if they will fight with him as an angry lion kills an elephant. But Krishn will never do such an objectionable deed as he never separates himself from Dharm." When Vidur

एतेयामामहं वैनाननुजानीहि पार्थिव । एतान्हिसर्वान् संरब्धान्नियन्तु मद्दमुत्सहे ॥ २५ ॥ नत्वहंनिन्दितंकर्म कुर्य्यांपापं कथञ्चन । पाण्डवार्थे हिलुभ्यन्तः स्वार्थान् हास्यन्तिते सुताः ॥ २६ ॥ एतेचेदेवमिच्छन्ति कृतकार्य्यो युधिष्ठिरः । अद्यैवह्यह मेनांश्च येचैनानतुभारत ॥ २७ ॥ निगृह्यराजन् पार्थेभ्यो दद्यां किंदुष्कृतंभवेत् । इदन्तुनप्रवर्त्तेयं निन्दितंकर्मभारत ॥ २८ ॥ सन्निधौते महाराज क्रोधजं पापबुद्धिजम् । एषदुर्योधनोराजन् यथेच्छति तथास्तुतत् ॥ २९ ॥ अहन्तुसर्वांस्त नयाननुजानामि तेनृप । एतच्छ्रुत्वातुविदुरं धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत । क्षिप्रमानयतंपापं राज्यलुब्धं सुयोधनम्

सुनतेही सुनते यह बोले कि हेराजन ये लोग क्रोधकर जो हमको पराक्रमसे पकड़ें तो । २४ । यही लोग हमारे पीछे चले जायँगे वा हमीं इनके पीछे चले जायँगे परन्तु हम यह कहतेहैं कि ये सब क्रोधकरके हमारे सामने आवें तो हम इनसबों को अच्छी तरह सिखा सक्तेहैं । २५ । परन्तु हम निंदित पाप कर्म किसी प्रकार से करहींगे नहीं, व तुम्हारे पुत्र पाण्डवों का वध किया चाहते इस लोभमें परेहैं इससे ये अपना भी अर्थ त्यागेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है । २६ । व जो ये तुम्हारे पुत्र ऐसा न करना चाहतेहैं तो बस युधिष्ठिर जी के सब कार्य सिद्ध होगये क्यों- कि आजही हम इनको व इनके अनुयायी कर्णादिकों को पकड़ । २७ । पाण्डवों को सौंप देंगे यह कुछ हमको दुष्कर नहीं है परन्तु हम ऐसा निन्दित कर्म करने में महापही न होंगे। २८। व हमतो आपके समीप बैठेहैंहैं कुछ पाप कर्म करेंहींगे नहीं पर यह पापी दुर्योधन जो कुछ किया चाहताहो सोकरे उसे करकभी देखले । २९ । हमतो यही जानते हैं कि पाण्डव व दुर्योधनादि सब तुम्हारेही पुत्रहैं यह सुन धृत- राष्ट्रजी विदुरजी से बोले, कि उसराज्यके लोभी पापी दुर्योधनको अभी हमारे

had said as above, Shri Krishn looked towards Dhritrashtra and said within hearing of all his friends, "Either I shall follow them or they will follow me when they intend to take me prisoner by force; but I say that I shall teach them a lesson if they will oppose me. I shall never do an objectionable and sinful deed. Your sons are avaricious and desire to kill the Pandavas. They will lose their own wealth in so doing and there is no doubt about it. Yudhishthir's desire will be accomplished if they will insist in their wickedness; for, I shall seize them and their followers, Karan and others and will give them up to the Pandavas. But I shall not do such a hateful thing. I am sitting by you and will do nothing sinful. Let Duryodhan do what he will. I think that the Pandavas are your sons like Duryodhan and others." Having heard this, Dhritrashtra

॥ ३० ॥ सहमित्र सहामात्य ससोदर्य सदानुगम् । शक्नुयां यदि पन्थानमवतारयितुं पुनः ॥ ३१ ॥ ततोदुर्योधनं क्षत्ता पुनः प्रावेशयत् सभाम् । अकामं भ्रातृभिः सार्द्धं राजभिः परिवारितम् ॥ ३२ ॥ अथदुर्योधनं राजा धृतराष्ट्रोऽभ्यभाषत । कर्ण दुःशासनाभ्याञ्च राजभिश्चाभिसंवृतम् ॥ ३३ ॥ नृशंसपापभूयिष्ठ क्षुद्रकर्मसहायवान् । पापैः सहायैः संहत्य पापकर्म चिकीर्षसि ॥ ३४ ॥ अशक्यमयशस्यञ्च सद्भिश्चापि विगर्हितम् । यथात्वादृशको मूढो व्यवस्येत् कुलपांसनः ॥ ३५ ॥ त्वमिमं पुण्डरीकाक्षमप्रधृष्यं दुरासदम् । पापैः सहायैः संहत्य निग्रहीतुं किलेच्छसि ॥ ३६ ॥ योनशक्यो बलात् कर्त्तुं देवैरपि सवासवैः । तं त्वंप्रार्थयसे मन्द बालश्चन्द्रमसं यथा ॥ ३७ ॥ देवैर्मनुष्यैः

पास लावो । ३० । उसके मित्र, मन्त्री, व दुश्शासनादि सहोदरोंको भी लावो कदाचित् हम इसकुमार्ग से हटाय सुमार्गही पर चलासकें । ३१ । तब विदुरजी सब राजाओं व भाई मित्रादिकों समेत विना इच्छा कियेहुये दुर्योधनको फिर युक्ति से सभामें लाये । ३२ । तब कर्ण, दुश्शासन सहित व राजाओं के बीचमें घिरे हुये दुर्योधन से धृतराष्ट्रजी बोले । ३३ । कि हे क्रूर निर्लज्ज, बहुत पाप करनेवाले, नीच, व नीचकर्म्मकारी सहायक युक्त, तू पापी सहायकों के संग पापकर्म किया चाहताहै । ३४ । जैसा कर्म तेरेसमान कुलनाशक किया चाहता है वह प्रथमतो असाध्य है तू करी नहीं सक्ता फिर अयश करनेवाला है व सज्जनलोगों से निन्दितभी है । ३५ । अरे किसी के भी ढिठाई करने के अयोग्य बड़े दुःखसे भी विजयी होनेके अयोग्य, व इन पुंडरीकाक्ष भगवान को अपने पापी सहायकों के साथ बँधुआ करनेकी इच्छा करताहै । ३६ । जो कृष्णचन्द्र इन्द्रादि देवताओंके मानके भी नहीं हैं कि वे भी इनके सामने अपना कुछभी पराक्रम दिखासकें हे मन्द तिनको तू पकड़ना चाहता है जैसे बालक चन्द्रमाको पकड़ाचाहै । ३७ । जिन कृष्णचन्द्रजी

said to Vidur, "Bring that avaricious and sinful Duryodhan to me at once. 30. Bring also his friends, ministers and brothers so that I may try once more to lead them to the right path" Vidur brought with him again unwilling Duryodhan with his brothers, friends and kings Dhritrashtra then said to Duryodhan who was then surrounded by Karan, Dushasan and kings, "Cruel, shameless and sinful Duryodhan, you wish to do a wicked deed in company with your wicked associates The work which a destroyer of family like you wishes to do is impossible for you and will lead to your infamy. You wish to captivate Bhagwan Pundarikash whom no one can look in the face. You wish to captivate him whom Indra and other gods cannot reach like a child who wishes to catch the moon.

गन्धर्वैं रसुरैरुरगैश्च्य । नसोढुसमरे शक्यस्तंन बुध्यसि केशवम् ॥ ३८ ॥ दुर्ग्राह्यः पाणिना वायुर्दुस्पर्शः पाणिनाशशी । दुर्द्धरापृथिवी मूर्ध्ना दुर्ग्राह्य केशवोबलात् ॥ ३९ ॥ इत्युक्ते धृतराष्ट्रेण क्षत्तापिविदुरो ब्रवीत् । दुर्य्योधनमभिप्रेक्ष्य धार्त्तराष्ट्रममर्षणम् ॥ ४० ॥ विदुर उवाच । दुर्य्योधन निबोधेदंवचन ममसाम्प्रतम् । सौभद्वारे वानरेन्द्रो द्विविदोनाम नामत । शिलावर्षेण महता छादयामास केशवम् ॥ ४१ ॥ ग्रहीतु कामो विक्रम्य सर्वयत्नेन माधवम् । ग्रहीतुंनाशकच्चैन तत्वमार्थयसे बलात् ॥ ४२ ॥ प्राग्ज्योतिषगतं शौरिं नरकः सहदानवैः । ग्रहीतु नाशकत्तत्र त त्वमार्थयसे बलात् ॥ ४३ ॥ अनेकयुगवर्षा युर्निहत्यनरकंमृधे । नीत्वाकन्यासहस्राणि उपयेमे यथाविधि ॥ ४४ ॥ निर्मोचने षट्सहस्राः पाशैर्बद्धा महासुराः । ग्रहीतुनाशकच्चैन त त्वमार्थयसे

को समरमें देवता, दैत्य, मनुष्य, गन्धर्व्व, व सर्प्प नहीं सहसक्के, तिन केशवजीको तू नहीं जानता । ३८ । कोई प्राणी न पवनको पकड सकता है न चन्द्रमाको छू-सकता है न पृथ्वीको उठा सकताहै जव धृतराष्ट्रने यह कहा तव विदुरजी ने दुर्योधन की ओर देखकर कहा विदुरजी बोले कि हे दुर्योधन इससमय हमारा यह वचन सुनो, सौभके द्वारपर एक द्विविदनाम वड़ापराक्रमी वानरथा उसने वड़ीभारी शिला-ओंकी वर्षा से कृष्णचन्द्रजी को आच्छादित करदिया । ४१ । व उसने चाहा कि जवरदस्ती कृष्णचन्द्रजीको पकडलू परन्तु वह इनको नहीं पकडसका तिनको तुम जवरदस्ती वंधुआ करना चाहतेहो । ४२ । व प्राग्ज्योतिषपुर में पहुँचे हुये कृष्ण-चन्द्रजी को असुरों समेत नरकासुरने ग्रहणकरना चाहा पर नहीं ग्रहण करसका तिन को तुम वलसे ग्रहण किया चाहतेहो । ४३ । देखो अनेक युग वर्षोंकी आयुवाले कृष्णचन्द्रजीने नरकासुरको मार सोलह सहस्र एकसौ कन्या अपने यहांलाय विधि पूर्वक अपने संग एकही मुहूर्त्त में नानाप्रकार के मन्दिरों में विवाह करलिया, तिन को तुम वलसे वन्धन में डाला चाहतेहो । ४४ । व निर्म्मोचन नगरमें छः सहस्र

You donot know Krishn who is unbearable in battle by gods, Daityas, men, Gandharvas, and Nagas. A living being cannot catch the wind nor he can touch the moon or lift up the Earth" Having heard this *from Dhritrashtra* Vidur again spoke to Duryodhan as follows. 40. "At the gate of Saubh there was a very powerful Vanar, named Dwivid who covered Shree Krishn with a shower of stones and intended to seize him by force, but could not do so. The asurs tried to captivate him at Pragjyotishpur, but were unsuccessful. Shree Krishn of long life killed Narkasur and having released from his bondage sixteen thousand girls married them at one and the same time in different houses. You wish to seize such a person by

बलात् ॥ ४१ ॥ अनेनहिंसता बाल्ये पूतना शकुनीतथा । गोवर्द्धनोधारितश्च गवार्थे भरतर्षभ ॥ ४६ ॥ अरिष्टो धेनुकश्चैव चाणूरश्च महाबलः । अश्वराजश्चान,तः कंस श्चारिष्टमाचरन् ॥ ४७ ॥ जरासन्धश्च वक्रश्च शिशुपालश्च वीर्य्यवान् । बाणश्च निहत संख्ये राजनाश्च निषूदिता ॥ ४८ ॥ वरुणोनिर्जितोराजा पावकश्चामितौजसा। पारिजातञ्च हरता जित साक्षाच्छचीपति ४९ एकार्णवेच स्वपता निहतौमधुकैटभौ जन्मान्तरमुपागम्य हयग्रीवस्तथाहत ॥ ५० ॥ अयंकर्त्तानक्रियते कारणञ्चापिपौरुषे यद्यदिच्छेदयं शौरि स्तत्तत् कुर्य्यादयत्नत ॥ ५१ ॥ तंनबुध्यासि गोविन्दं घोरविक्रम मच्युतम् । आशीविषमिव क्रुद्धतेजोराशिमनीन्दितम् ॥ ५२ ॥ प्रधर्षयन्महाबाहुं कृष्ण मक्लिष्टकारिणम् । पतङ्गोग्निमिवासाद्य सामात्योनभविष्यसि ॥ ५३ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विदुरवाक्ये

त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३० ॥

महादैत्य पाशोंसे बँधेथे उन्होंने भी इनको ग्रहणकरना चाहाथा पर नहीं करसके तिनको तुम बलसे बन्धन में डाला चाहतेहो । ४५ । व हे भरतर्षभ, इन्होंने बाल्यावस्थाही में पूतनाको मारडाला बकासुरकोमारा, व गाइयोंकी रक्षाके लिये गोवर्द्धन पर्वत उठालिया । ४६ । व वृषभासुर, महाबली चाणूर, केशी, व कंस को भी मार डाला । ४७ । व जरासंध, दंतवक्र, वीर्य्यवान् शिशुपाल बाणासुर तथा अन्य राजा लोगों को भी जीता । ४८ । राजावरुण को जीता व अमित पराक्रमी अग्निजीको जीता, व पारिजात हरनेके समय साक्षात् इन्द्रजी कोभी जीत लिया । ४९ । व दूसरे जन्ममें इन्होंने मधुकैटभ नामदो दैत्योंको मारा अन्य जन्ममें हयग्रीव नाम दैत्यको मारा । ५० । य पौरुष के कारणहैं व कर्त्ताभीहैं पर करते नहींहैं, व जोर करना चाहते वहर विना यत्नही किये करडालतेहैं । ५१ । तिन गोविन्द भगवान को क्रोध कियेहुये महाविषधर सर्प के समान नहीं जानते जो कि तेजकी राशिहैं । ५२ । महाभुज सहजकारि हरि को तुम डरा नहीं सकते पारे पतंग की भांति अग्नि में गिरकर मरजाओगे ५३ ॥

---

force. He killed in his childhood Pootna and Vakasur and lifted up Gobardhan for the protection of cows. He killed *Vrishabhasur*, Dhenukasur, Chanur, Keshi, Kans, Jarasandh, Dantvakra, Shishupal, Banasur and other kings. He defeated king Varun and Agni of great prowess and conquered Indra at the time of seizing Parijat. He killed Madhu and Kaitabh the two Daityas of great prowess and killed the Daityas known as Hayagriv in his former birth. He is the cause and maker of prowess and does everything without difficulty. You donot know Bhagwan who in anger is like a venomous serpent and is the heap of glory. Hari of great prowess does things easily and *can not be intimidated; you will die like an insect falling* in fire."53.

वैशम्पायन उवाच । विदुरेणैवमुक्तस्तु केशवः शत्रुपूगहा । दुर्य्योधनंधार्त्तराष्ट्र मभ्यभाषतवीर्य्यवान् ॥ १ ॥ एकोहमितियन्मोहान्मन्यसे मांसुयोधन । परिभूयसुदुर्बुद्धे ग्रहीतुंमांचिकीर्षसि ॥ २ ॥ इहैवपाण्डवाःसर्वे तथैवान्धकवृष्णय । इहादित्याश्च रुद्राश्चवसवश्च महर्षिभिः ॥ ३ ॥ एवमुक्त्वाजहासोच्चैः केशव परवारहा । तस्य संस्मयतः सौरेर्विद्युद्रूपा महात्मनः ॥ ४ ॥ अङ्गुष्ठमात्रास्त्रिदशा मुमुचुःपावकार्चिषः अस्यब्रह्मा ललाटस्थो रुद्रोवक्षसि चाभवत् ॥ ५ ॥ लोकपाला भुजेष्वासन्नग्नि रास्यादजायत । आदित्याश्चैव साध्याश्च वसवोथाश्विनावपि ॥ ६ ॥ मरुतश्चसहे-

---

अध्याय १३१ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि जब विदुरजीने दुर्य्योधनसे ऐसाकहा तो शत्रुसमूह के नाशक केशव भगवान् वीर्य्यवान् व महान् धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनसेबोले । १ । हे दुर्योधन हमको अकेलेजान अनादरकर तुममोहसे हमें बन्धुआकिया चाहतेहो बड़ेदुर्बुद्धिहो ।२। क्योंकि यहांहीं सबपाण्डव व यहांहीं सब वृष्णिवंशी अन्धकवंशी व बारहसूर्य्य ग्यारहरुद्र व आठवसु व सबमहर्षि विद्यमानहैं हम अकेलेनहीं हैं ।३। इतनाकह शत्रुओंके नाशक कृष्णचंद्रजी बड़े जोरसे ठठाकहँसे कि उनमहात्मा के हँसते सबअंगों में बिजुली के समान चमकते । ४ । सब ब्रह्मादि देवगण दिखाई दिये, व सब अंगुष्ठमात्रकी मूर्ति धारण किये अग्निसमान प्रकाशितथे ब्रह्माजीतो मस्तक में दिखाई दिये व महादेवजी छाती में । ५ । व सब लोकपाल भुजों में दिखाई दिये मुखसे अग्निजी उत्पन्नहुये, आदित्य, साध्य, वसु, अश्विनीकुमार ।६।

CHAPTER CXXXI

Vaishampayan said that when Vidur had spoken as above to Duryodhan, Bhagwan Keshav of great prowess and destroyer of enemies said to Duryodhan the son of Dhritrashtra, "You are a fool Duryodhan to think that I am alone and that you can captivate me; for all the Pandavas, the Vrishnis, the Andhaks, the twelve Suryas, the eleven Rudras, the eight Vasus and all the great rishis are present here and I am not alone." Having said these words Shree Krishn laughed loudly and as he laughed Brahma and other gods were seen in all parts of his body, shining like lightning. They shone like fire with their bodies of the size of a thumb. Brahma was seen on his forehead, Shiv in his breast, all the lokpals on his arms. Agni came out from his mouth; the Adityas,Sadhyas, Vasus, the Ashwinikumars and Indra with Pavan and other gods as well as Yakshas, Gan-

न्द्रेण विश्वेदेवास्तथैवच । बभूवुश्चैकरूपाणि यक्षगन्धर्वरक्षसाम् ॥ ७ ॥ प्रादुरास्तां तथा दोर्भ्यांसङ्कर्षण धनञ्जयौ । दक्षिणेर्ज्जुनो धन्वी हली रामश्चसव्यतः ॥ ८ ॥ भीमोयुधिष्ठिरश्चैव माद्रीपुत्रौचपृष्ठत । अन्धकावृष्णयश्चैव प्रद्युम्नप्रमुखास्ततः ॥ ९ ॥ अग्रेबभूवु कृष्णस्य समुद्यतमहायुधा । शङ्खचक्रगदाशक्ति शार्ङ्गलाङ्गलनन्दकाः ॥१०॥ अदृश्यन्तोद्यतान्येव सर्वप्रहरणानिच । नानाबाहुषुकृष्णस्य दीप्यमानानिसर्वशः ॥११॥ नेत्राभ्यानस्ततश्चैव श्रोत्राभ्याञ्चसमन्ततः । प्रादुरासन्महारौद्राः सधूमाःपावकार्चिषः ॥ १२ ॥ रोमकूपेषुचतथा सूर्यस्येवमरीचयः । तदृष्ट्वाघोरमात्मान केशवस्य महात्मन ॥ १३ ॥ न्यमीलयन्तनेत्राणि राजानस्त्रस्तचेतस । ऋतेद्रोणञ्चभीष्मञ्च

व इन्द्रसहित ४९ पवन, सब देवगण, विश्वेदेव, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, राक्षस सबके सब अपना २ रूप धारणकर कृष्णचन्द्रजीके सब अंगोंसे निकल आगे खड़ेहोगये ।७। हरि की दोनों भुजाओंसे बलदेवजी व अर्जुनजी प्रकटहुये, उन में धनुर्बाण धारण किये अर्जुनजी तो दहिनी ओर खड़ेहुये व हल मुशल हाथोंमें लिये बलरामजी बाईओर । ८ । व भीमसेन युधिष्ठिर नकुल सहदेव पीठ से उत्पन्नहुये, प्रद्युम्नादि सब अन्धक वृष्णिवंशीभी पीठहीसे निकले । ९ । अपने २ अस्त्र शस्त्र ऊपरको उठाये कृष्णचन्द्रजी के आगे खड़ेहोगये, व शंख चक्र गदा शार्ङ्ग धनुष शक्ति हल आदि सबके सब आयुध । १० । सब युद्ध करनेको उद्यत दिखाई दिये, भगवान की उससमय सहस्रों बाहें दिखाईदीं तिनमें सबोंमें भिन्न २ प्रकारके आयुध दिखाई दिये ।११। ये सबआयुध काई तो मुखसे उत्पन्नहुये कोई नेत्रोंसे कोई नासिकासे कोई कानोंसे, सबोंमें धुआं निकलताहुआ दिखाई देता व सब अग्नि समान प्रकाशितथे १२ व सबरोंवों से सूर्यकेसे किरण चमकतेहुये दिखाईदिये, महात्मा केशवजीका ऐसा घोररूप देख । १३ । मारेभय के व्याकुलचित्तहो सबराजाओंने अपने नेत्र

dharvas, Kinnars, Rakshases came out of his body and stood before him. From the *two arms of Hari came* out Baldev and Arjun the latter with bow and arrow stood to his right and the former, armed with *Hal* and *Mushal* stood on his left. Bhimsen, Yudhishthir, Nakul and Sahadev came out of his back like Pradyumn, and the Andhaks and the Vrishnis. They all stood in their places armed with various weapons. The conch, the *discus*, the mace and the Sharang bow of the lord were at hand. 10. He looked as if he had thousands of arms, each holding a different sort of weapon. Weapons came out from his mouth, nostrils and ears together with fire and smoke. the hair of his body shone like the rays of the sun. At the sight of the dreadful form of great Keshav, all the kings shut

विदुरञ्चमहामतिम् ॥ १४ ॥ सञ्जयञ्चमहाभागमृषींश्चैव तपोधनान्। प्रादात्तेषांस भगवान् दिव्यञ्चक्षुर्जनार्दनः ॥ १५ ॥ तद्दृष्ट्वामहदाश्चर्य्यं माधवस्य सभातले। देवदुन्दुभयो नेदुः पुष्पवर्षं पपातच ॥ १६ ॥ धृतराष्ट्रउवाच। त्वमेवपुण्डरीकाक्ष सर्वस्यजगतोहितः। तस्मात्त्वंयादवश्रेष्ठ प्रसादंकर्त्तुमर्हसि ॥ १७ ॥ भगवन्मम नेत्राणामन्तर्धानं वृणेपुनः। भवन्तं द्रष्टुमिच्छामि नान्यंद्रष्टुमिहोत्सहे ॥ १८ ॥ ततो ब्रवीन्महाबाहुर्धृतराष्ट्रं जनार्दन.। अदृश्यमाने नेत्रे द्वे भवेतां कुरुनन्दन ॥ १९ ॥ तत्राद्भुतंमहाराज धृतराष्ट्रस्य चक्षुषी। लब्धवान् वासुदेवाच्च विश्वरूपदिदृक्षया ॥ २० ॥ लब्धचक्षुरमासीनं धृतराष्ट्रंनराधिपाः। विस्मितास्त्वृषिभिः सार्धं तुष्टुवुर्मधुसूदनम् ॥२१॥

मूंदलिये, पर द्रोणाचार्य्य, भीष्मपितामह, महामतिमान् धृतराष्ट्र विदुरजी। १४। व महाभाग संजयजी व सबतपोधन ऋषिलोग इनलोगों ने नेत्र नहीं मूंदे क्योंकि भगवान् कृष्णजीने इनसबोंको दिव्य दृष्टिदंदी। १५। सभामें महात्मा माधवजी की यह महाआश्चर्य्य देख देवताओंने नगाड़े बजाये व पुष्पोंकी वर्षाकी। १६। तब धृतराष्ट्रजी बोले हे यादव श्रेष्ठ हे पुण्डरीकाक्ष तुम्हीं सब संसार के हितहो इससे आप प्रसन्न होने योग्य हैं। १७। व हे भगवन आप के अनुग्रहसे जो मेरे बहुत दिव्यनेत्रहो आयेहैं अब मैं चाहताहूँ कि फिर येनेत्र जातेरहैं क्योंकि जिननेत्रोंसे आपको मैंने देखा उनसे अब दूसरे को देखा नहीं चाहता। १८। इतनासुन जनार्दन भगवान धृतराष्ट्र से बोले कि अच्छा हे कुरुनन्दन और नेत्रतो अब न रहैंगे पर दोनेत्र बनेरहैंगे जिनको अभीतो सबलोग देखेंगे फिर कोई उन्हेंभी न देखेंगे।१९। उससमय यह महाअद्भुतहुआ कि भगवान् के विश्वरूप दर्शनकी केइच्छासे धृतराष्ट्र ने दोनेत्र सदा के लिये। २०। पाये धृतराष्ट्रजीको सभामें विराजमान

---

their eyes with fear; but Dronacharya, Bhishm the grandfather, Dhritrashtra the wise, Vidur, fotunate Sanjaya and all the rishis *stood with open eyes; for Bhagwan* Krishn had endowed them with divine eyes. At the sight of this wonderful deed of Madhav, the gods beat drums and showered flowers. At this Dhritrashtra thus addressed Shree Krishn, "Best of Yadavas, Pundarikash, you are *the benefactor of all this world; have mercy on us.* Take back the divine eyes which you have granted me by your kindness; for I donot wish to see any one else with the eyes I have seen you with." On hearing this Janardan said to Dhritrashtra, "You will retain only two eyes for a short time the others will vanish." It was a great wonder that both the eyes Dhritrashtra were opened for ever after seeing

चचालचमहीकृत्स्ना सागरश्चापिचुक्षुभे। विस्मयपरमंजग्मुः पार्थिवाभरतर्षभ २२॥ ततःस पुरुषव्याघ्रः सञ्जहार वपुः स्वकम्। तांदिव्यामद्भुतां चित्रामृद्धिमत्तामरिन्दमः ॥ २३ ॥ ततः सात्यकिमादाय पाणौ हार्दिक्यमेवच। ऋषिभिस्तैरनुज्ञातो निर्ययौ मधुसूदनः ॥ २४ ॥ ऋषयोन्तर्हिता जग्मुस्ततस्ते नारदादयः। तस्मिन्कोलाहले वृत्तेतदद्भुत मिवाभवत ॥ २५ ॥ तंप्रस्थितमभिप्रेक्ष्य कौरवाःसहराजभिः। अनुजग्मुर्नरव्याघ्रं देवाइवशतक्रतुम् ॥ २६ ॥ अचिन्तयन्नमेयात्मा सर्वंतद्राजमण्डलम्। निश्चक्रामततः शौरिः सधूमइवपावकः ॥ २७ ॥ ततोरथेनशुभ्रेण महता किङ्किणीकिना। हेमजालविचित्रेण लघुनामेघनादिना ॥ २८ ॥ ॥ सूपस्करेणशुभ्रेण वैयाघ्रेणवरूथि-

देख सब राजालोग व ऋषिलोग विस्मितहो कृष्णचन्द्रजीकी बड़ीस्तुति करने लगे। २१। व उससमय सब पृथ्वी चलउठी समुद्र खलभलाय उठा व जितने राजा थे सब अति विस्मित हुये। २२। तब सबशत्रुओं के नाशक कृष्णचन्द्र महाराजने अपनी वह दिव्य अद्भुत चित्रविचित्र व ऋद्धिमत्ताको व दिव्य देहको हरलिया जैसे प्रथम थे वैसेही फिर होगये। २३। इस के पीछे ऋषियोंकी आज्ञासे सात्यकि व हार्दिक्यके हाथ पकड़ कृष्णभगवान सभा से बाहर निकलगये। २४। व फिर नारदादि ऋषिलोग भी उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगये इसप्रकार यह महाकोलाहल एक अद्भुतसा होगया। २५। व जब कृष्णचन्द्रजी चले तो सबकौरव व राजालोगभी उन के पीछेचले जैसे देवगण इन्द्रजीके पीछे चलते हैं। २६। व सब राजमण्डलको मृत्यु के वशीभूतजान धुआं सहित अग्निके समान कृष्णभगवान वहांसे चले। २७। चलनेके समय किङ्किणीयुक्त उज्ज्वल, सुवर्ण की झालर लगेहुये व मेघकासा शब्द होतेहुये सब सामग्रीयुक्त व्याघ्रके चमड़े से मढ़ेहुए शैब्य सुग्रीव मेघपुष्प

the world-containing form of Shree Krishn. 20. The kings and *rishis were surprised to see Dhritrashtra and praised Shree Krishn.* At that time the earth moved, the sea rose and all the kings were much surprised. Shree Krishn the destroyer of enemies then withdrew all that wealth of wonder as well his divine form and became as he was before, and with the permission of rishis came out, holding Satyaki and Hardikya by the hand. Narad and other rishis too vanished away. All this was a wonder. All the Kauravas and kings followed Shree Krishn as gods do Indra. Knowing that the death of the Kauravas was near Shree Krishn went out of their court like fire from smoke. At the time of his departure, Daruk the driver appeared with the chariot furnished with bells and gold frill,

ना। शैव्यसुग्रीवयुक्तेन प्रत्यदृश्यतदारुकः ॥ २९ ॥ तथैवरथमास्थाय कृतवर्मामहारथः। वृष्णीनां सम्मतोवीरो हार्दिक्यः समदृश्यत ॥ ३० ॥ उपस्थितरथंशौरिं प्रयास्यन्तमरिन्दमम्। धृतराष्ट्रोमहाराजः पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ३१ ॥ यावद्बलंमे पुत्रेषुपश्यतस्ते जनार्दन। प्रत्यक्षन्तेततेकिंचित्परोक्षं शत्रुकर्शन ॥ ३२ ॥ कुरूणां शममिच्छन्ते यतनानस्य केशव। विदित्वैतामवस्थांमे नाभिशङ्कितुमर्हसि ॥ ३३ ॥ नमेपापोस्त्यभिप्रायः पाण्डवान्प्रतिकेशव। ज्ञातमेवाहितंवाक्यं यन्मयोक्तः सुयोधनः ॥ ३४ ॥ जानन्तिकुरवःसर्वे राजानश्चैव पार्थिवाः। शमेप्रयतमानंमां सर्वबलेनमाधव ॥ ३५ ॥ वैशम्पायन उवाच। ततोब्रवीन्महा बाहुर्धृतराष्ट्रंजनार्दनः। द्रोणंपितामहं

बलाहक नाम घोड़ेमचे रथकोले दारुकनाम सारथि दिखाई दिया। २९। उसीतरह वृष्णिवंशियों में श्रेष्ठ कृतवर्माजी व हार्दिक्यजी भी अपने रथों पर चढ़ेहुये दिखाई दिये। ३०। रथके समीप जब कृष्णचन्द्रजी जाय सवार होनेपर हुये तो महाराज धृतराष्ट्रजी बोले। ३१। हे जनार्दन हे शत्रुनाशक, पुत्रों के विषय में जो कुछ हमारा बल है आप के सामने भी कहा सुना वह आपको प्रत्यक्षही विदित हुआ, व परोक्ष जानों आप को कुछहैही नहीं सब जानतेही हो। ३२। हम कौरवों व पाण्डवों के मेलही होने के विषयमें बराबर यत्न करतेरहे हमारी इस अवस्थाको जान अब आप हमारे विषय में शंकाकरने के योग्य नहीं हैं। ३३। व पाण्डवों के विषय में पाप करनेका अभिप्राय हमारा नहीं है वह आप जानतेहीहो जैसा हमने दुर्य्योधनसे कहा। ३४। व आपके आने के प्रथम जो कुछ हमने उस दुष्टसे कहा उसे सब कौरव व राजालोग जानते हैं, कि ये सब प्रकारसे मिलापही करने में यत्न करतेरहे परन्तुवाकरें उसने नहीं माना। ३५। वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे महाबाहु जनार्दन भगवान्, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य्य, भीष्मपितामह विदुरजी

---

covered with the lion's skin and drawn by Shaivya, Sugreve, Megh and Valahak. Kritvarma the best of the Vrishnis and Hardikya too were seen mounting on their chariots. 30. When Shree Krishn was about to ride his chariot, king Dhritrashtra said to him,, "Janardan destroyer of enemies! you have seen how little influence I have over my sons and nothing is hidden from you. I have always been trying to bring about the peace between the Kauravas and Pandavas and hope you will entertain no doubt about my words. I donot wish ill to the Pandavas and you know all that I said in your presence to Duryodhan. All the Kauravas and kings know what I said to him before you came here; but he gives no ear to my words." Vaisham-

भीष्मंक्षत्तारं बाह्लिकंकृपम् ॥ ३६ ॥ प्रत्यक्षमेतद्भवतां यद्वृत्तंकुरुसंसदि । यथा चाशिष्टवन्मन्दो रोषादद्यसमुत्थित. ॥ ३७ ॥ वदत्यनीशमात्मान धृतराष्ट्रोमहीपतिः। आपृच्छेभवतः सर्वान गमिष्यामि युधिष्ठिरम् ॥ ३८ ॥ आमन्त्र्यप्रस्थितंशौरिं रथस्थं पुरुषर्षभ । अनुजग्मुर्महेष्वासाः प्रवीराभरतर्षभाः ॥ ३९ ॥ भीष्मोद्रोणःकृपः क्षत्ता धृतराष्ट्रोथबाह्लिकः । अश्वत्थामा विकर्णश्च युयुत्सुश्च महारथः ॥ ४० ॥ ततोरथेन शुभ्रेणमहता किङ्किणीकिना । कुरूणांपश्यतां द्रष्टुंस्वसारं स्वपितुर्ययौ ॥ ४१ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विश्वरूपदर्शने एकत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १११ ॥

व महाराज बाह्लिकजी व कृपाचार्य्यजी से बोले । ३६ । कि जिसप्रकार मन्द दुर्य्योधन मारेरोषके अशिष्ट पुरुषके समान सभा से उठगया व जैसे २ सब झगड़ा गया सब आपलोगोंको प्रत्यक्षहै । ३७ । व यहभी आपलोग सुनते हैं कि राजा धृतराष्ट्र अपने को इस विषय में असमर्थ बताते हैं, इससे अब हम आपलोगों से बिदा होते हैं व युधिष्ठिरजी के समीप को जायँगे । ३८ । जब सबसेपूछ कृष्णचंद्रजी रथपरचढ़े तो पीछे २ सब कौरवलोग चले । ३९ । भीष्म, द्रोण, कृप, विदुर, धृतराष्ट्र, बाह्लिक, अश्वत्थामा, विकर्ण, और युयुत्सु के देखते हरि अपनी बुआके घर गये ४१॥

---

payan said that Bhagwan Janardan of long arms said, on hearing that, to *Dhritrashtra*, *Dronacharya*, Bhishm the *grandfather*, Vidur, king Vahlik and Kripacharya, "You know how much I reasoned with foolish Duryodhan and how rudely he left the court. You hear that king Dhritrashtra owns that he has no power in this matter. I therefore take leave of you all to go to Yudhishthir." Having said this, Shree Krishn went on and all the Kauravas *followed him. Shree Krishn then left* Bhishm, Drona, Krip, Vidur, Dhritrashtra, Vahlik, Ashwathama, Vikarn and Yuyutsu and went to see his father's sister.



वैशम्पायन उवाच ॥ प्रविश्याथ गृहं तस्याश्चरणावभिवाद्य च । आचख्यौ तत् समासेन यद्वृत्तं कुरुसंसदि ॥ १ ॥ वासुदेव उवाच ॥ उक्तं बहुविधं वाक्यं ग्रहणीयं सहेतुकम् । ऋषिभिश्चैव च मया न चासौ तद्गृहीतवान् ॥ २ ॥ कालपक्वमिदं सर्वं दुर्योधन वशानुगम् । आपृच्छे भवतीं शीघ्रं प्रयास्ये पाण्डवान्प्रति ॥ ३ ॥ किं वाच्यः पाण्डवेयास्ते भवत्या वचनान्मया । तद्ब्रूहि त्वं महाप्राज्ञे शुश्रूषे वचनं तव ॥४॥ कुन्त्युवाच ॥ ब्रूयाः केशव राजानं धर्मात्मानं युधिष्ठिरम् । भूयांस्ते हीयते धर्मो मा पुत्रक वृथा कृथाः ॥ ५ ॥ श्रोत्रियस्येव ते राजन् मन्दकस्याविपश्चितः । अनुवाकहता बुद्धिर्धर्ममेवैकमीक्षते ॥ ६ ॥ अङ्गावेक्षस्व धर्मं त्वं यथा सृष्टः स्वयम्भुवा । बाहु-

अध्याय १३२ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्रजी कुन्तीजी के स्थानपर जाय प्रणाम कर कौरवोंकी सभा में जो वृत्तान्त हुआ सब कहने लगे कि । १ । हमने बहुत से हेतुयुक्त व ग्रहण करने के योग्य बचन कहे व परशुराम कण्व नारदादि ऋषियों ने भी बहुत समझाया व कहा पर दुर्योधन ने कुछभी नहीं माना । २ । इससे ये सब दुर्योधन के वशानुगामी कालसे पकरहे हैं बही होगा अब हम आपसे बिदा हो पाण्डवों के समीप जाते हैं । ३ । आपकी जबानी हम सब पाण्डवों से क्या कहेंगे वह कहिये हम तुम्हारे वचन सुना चाहते हैं । ४ । कुन्तीजी बोलीं कि, हे केशव धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर से कहना कि पृथ्वीपालन से उत्पन्न तुम्हारा बड़ा भारी धर्म हीन हुआ जाता है हे पुत्र उसे वृथा न करो । ५ । हे राजन् जैसे अर्थ ज्ञान शून्य अपण्डित वेदपाठी ब्राह्मणकी बुद्धि अत्यन्त बेदाक्षरोंकी वृत्ति से हतहो केवल धर्महीको देखती है वैसेही तुम्हारी बुद्धि सबछोड़ केवल धर्महीको देखती है । ६ । हे प्रिये जैसे ब्रह्माने तुमको बनाया है उस अपने धर्म को

CHAPTER CXXXII

Vaishampayan said that on reaching the house of Kunti, Shree Krishn bowed to her and talking of the Kauravas he said, "I reasoned with Duryodhan and Parashuram, Kanwa, Narad and other rishis seconded me; but Duryodhan gave no ear. All the followers of Duryodhan will soon die. I am going to the Pandavas. Please tell me what I am to say to the Pandavas from you." "Tell king Yudhisthir," said Kunti to Keshav, "that his work of ruling over the kingdom is suffering and that he must not spoil it. Tell him that his wisdom sees only dharm as a scholar of the Vedas thinks of dharm in the words of the Vedas. Let him be firm on the Kshatrya

भ्यां क्षत्रियाः सृष्टा बाहुवीर्योपजीविनः ॥ ७ ॥ क्रूराय कर्मणे नित्यं प्रजानांपरिपालने। शृणु चात्रोपमामेकां या वृद्धेभ्यः श्रुता मया ॥ ८ ॥ मुचुकुन्दस्यराजर्षे रददत्पृथिवीमिमाम्। पुरा वै श्रवणः प्रीतो न चासौ तद्गृहीतवान् ॥९॥ बाहुवीर्यार्जितंराज्य मश्नीयामिति कामये। ततो वैश्रवणः प्रीतो विस्मितः समपद्यत ॥ १० ॥ मुचुकुन्दस्ततो राजा सोन्वशासद्वसुन्धराम्। बाहुवीर्यार्जितां सम्यक् क्षत्रधर्ममनुव्रतः ॥ ११ ॥ यं हि धर्मं चरन्तीह प्रजा राज्ञा सुरक्षिताः। चतुर्थं तस्य धर्मस्य राजा विन्देत भारत ॥ १२ ॥ राजा चरति चेद्धर्मं देवत्वायैव कल्पते। सचेदधर्मंश्चरति नरकायैव गच्छति

देखो क्षत्रिय को उन्होंने अपने दोनों बाहों से उत्पन्न किया है इसी से क्षत्रिय बाहोंके ही वीर्य्य से अपनी जीविकाकरतेहैं। ७। उसमें प्रजाओंके पालन करने में बहुधा सब क्रूरही कर्म्म करते हैं इस विषय में हमने वृद्धों के मुखसे एक उपमा सुनी है उसे सुनो। ८। पूर्व कालकी वार्त्ता है कि राजर्षि मुचुकुन्दजी को कुबेरजीने यह सब पृथ्वी देदी, परन्तु राजाने न ग्रहण करी। ९। कहा कि हम अपने बाहों केही बल से जीते हुये राज्यकी इच्छा करतेहैं किसी की दीहुई पृथ्वी नहीं चाहते, यह सुन कुबेरजी बहुत प्रसन्न हुये व विस्मित हुये, व उसके पीछे राजा मुचुकुन्दने बाहु वीर्य्यही से सब पृथ्वीभरका राज्य क्षत्रियों के धर्म्म पर टिककर किया। ११। व जिस राजा से अच्छी तरह रक्षित हो प्रजा जितना धर्म्म किया करती है उस धर्म्म का चतुर्थांश राजा को मिलता है। १२। कदाचित् राजा अपने चूनेभी कुछ धर्म्म करे तो वह तो अमृतत्वही को प्राप्त होजाय, व जो राजा अधर्म्म करे तो फिर नरक ही को जाय इस में कुछ भी सन्देह नहीं है

---

duty. Brahma has made the Kshatryas from his arms and therefore they earn their living by the exercise of the strength of their arms. They are often cruel on their subjects. I have heard a story from an old man. It runs thus. In former days Kuver gave this whole earth to a rishi named Muchkand but the latter did not accept it, saying, "I wish to rule over the kingdom won by the strength of my arms and would not accept a donation." At this Kuver was much pleased and amazed and Muchkard ruled justly over the land which he had won with the strength of his arms. 11. People if well protected by a king, perform virtuous deeds and the king gets a quarter of the merits. If the king himself is virtuous he becomes immortal but if he is wicked he goes to hell. The punishment which a king gives to his subjects is lawful and good in itself; for people

॥ १३ ॥ दण्डनीतिश्च धर्मेभ्यश्चातुर्वर्ण्यं नियच्छति । प्रयुक्ता स्वामिना सम्यग धर्मेभ्यश्च प्रयच्छति ॥१४॥ दण्डनीत्यां यदाराजा सम्यक्कात्स्न्र्येनवर्त्तते । तदा कृतयुगंनाम कालः श्रेष्ठःप्रवर्त्तते ॥१५॥ कालो वा कारणं राज्ञो राजा वा कालकारणम् । इतितेसंशयो माभू द्राजाकालस्यकारणम् ॥१६॥ राजाकृतयुगस्रष्टा त्रेतायाद्वापरस्यच । युगस्यच चतुर्थस्य राजा भवति कारणम् ॥ १७ ॥ कृतस्यकरणाद्राजा स्वर्गमित्यन्तमश्नुते । त्रेतायाः करणा- द्राजा स्वर्गनात्यन्तमश्नुते ॥१८॥ प्रवर्त्तनाद्द्वापरस्य यथाभागमुपाश्नुते । कलेः प्रवर्त्त नाद्राजा पापमत्यन्तमश्नुते ॥१९॥ ततो वसति दुष्कर्मा नरके शाश्वतीःसमाः । राजदो पेणहिजगत् स्पृश्यतेजगतःसच ॥२०॥ राजधर्मा नवेक्षस्व पितृपैतामहो चितान् । नैत-

---

। १३ । व जो धर्म्म करने के लिये राजा प्रजाओं को दण्ड देताहै वह दंडनीति है अनुचित नहीं है, क्योंकि दण्डपानेसे प्रजा धर्म्म करने लगतीहैं । १४ । व जब राजा अच्छी तरह दण्डनीतिही पर बर्त्ताव करता है तब परम श्रेष्ठ सत्युग का काल प्रवर्त्तित होजाताहै । १५ । काल राजा का कारण होताहै कि राजा काल का कारण होता है यह तुमको संशय न होना चाहिये क्योंकि राजाही कालका कारण होता काल राजाका कारण नहीं होता । १६ । राजाही सत्ययुग त्रेता द्वापर व कलियुग सब युगों का कारण होता है क्योंकि इन सबों के उत्पन्न करने वाला राजाही होता है । १७ । सत्ययुगका कारण होनेसे राजा अत्यन्त स्वर्ग वास कर ता है व त्रेताका कारण होनेसे अत्यन्त स्वर्ग नहीं भोगता । १८ । व द्वापर के प्रवर्त्तन करने से कुछ स्वर्ग का भोग उसे मिलता है, व कलियुगका बर्त्ताव करने से वह अत्यन्त पाप भोगता है । १९ । उससे वह पापी दुष्कर्म करने वाला राजा बहुत दिनोंतक नरक में बसता है, राजा का दोष प्रजा को लगता है व प्रजा का दोष राजा को । २० । इस से पिता पितामहादिकों के उचितरूप भी राज धर्म्मों

---

incline towards virtue with the fear of punishment. Satya-yug the best of times prevails when a king deals punishment according to law. A king regulates time and not *vice versa*. A king is the cause and maker of *Satya-yug, Treta, Dwapar* and *Kali.* When a king makes his time like Satayug, he lives long in paradise. A maker of Treta does not live long in paradise; the maker of Dwapar gets only a small share of paradise and that of Kali-yug suffers the punishment of his sins and lives long in hell. The subjects share the sins of the king and *vice versa.* 20. *Yudhishthir must rule the* subjects like his ancestors; the life he is now leading is not worthy of royal sages. A king does not reap the fruit of his rule, if he is ill at

द्राजर्षिवृत्तं हि यत्त्वं स्थातु मिच्छसि ॥ २१ ॥ नहि वैक्लव्यसंसृष्ट आनृशंस्यव्यव-स्थितः । प्रजापालनसंभूतं फलं किञ्चनलब्धवान् ॥२२॥ नह्येतामाशिष पाण्डुर्न चाहं न पितामहः । प्रयुक्तवन्त पूर्वन्ते यया चरसि मेधया ॥ २३ ॥ यज्ञो दानं तपः शौर्यं प्रज्ञा सन्तानमेवच । माहात्म्यं बलमोजश्च नित्यमाशंसितं मया ॥ २४ ॥ नित्यं स्वाहा स्वधा नित्यं दद्युर्मानुष देवताः । दीर्घमायुर्धनं पुत्रान् सम्यगाराधिताः शुभाः ॥ २५ ॥ पुत्रे-ष्वाशासते नित्यं पितरो दैवतानि च । दानमध्ययनं यज्ञ प्रजानां परिपालनम् ॥ २६ ॥ एतद्धर्ममधर्मं वा जन्म नैवाभ्यजायथाः । तेतु वैद्याः कुले जाता अवृत्त्या तातपीडिताः ॥ २७ ॥ यत्र दातपतिं शूरं क्षुधिता पृथिवीश्वराः । प्राप्य तुष्टाः प्रतिष्ठन्ते धर्मः कोऽन्य-

---

को ही देखो। जिस आचरण पर तुम टिकेहो वह राजर्षियों का आचरण नहीं है । २१ । क्योंकि जो राजा विकलता को प्राप्त हो क्रूरता कुछ भी नहीं करता वह प्रजा पालन से उत्पन्न फल कुछभी नहीं पाता । २२ । अब जिस बुद्धि से तुम ऐसा सन्तोप किये बैठेहो वह न तो पाण्डुजी ने तुम्हें सिखाई न हमने न तुम्हारे पितामह व्यास भगवान् जी ने । २३ । हमने तो नित्य यही तुम को सिखाया था कि नित्य यज्ञ करना, दान देना, तपकरना, शूरता रखना, प्रज्ञवान होना, सन्तान बढ़ाना, माहात्म्य करना, पराक्रम करना, व बल करना । २४ । व नित्य स्वाहा स्वधाका प्रयोग करना क्योंकि ये देवता व मनुष्यों की देवताहैं इस से दीर्घ आयु, धन व पुत्र देतेहैं पर जब इन स्वाहा स्वधाका अच्छी तरह आराधन होता है।२५। माता व पिता व देवता सब पुत्रों को यही सिखातेहैं, दान करना वेद शास्त्र पढ़ना, यज्ञ करना, व प्रजाओं का पालन करना बस यही करना। २६ । यह चाहे धर्महो व अधर्म पर जब क्षत्रिय के वंशमें जन्महुआ तो जन्महोते के साथही यह कर्म सिखादिये गये, परन्तु तुम विद्वान होकर भी व कु-लीन कुलमें जन्म पाय भी अपनी वृत्तिपर नहीं चलते इस से पीड़ितहो । २७ ।

---

ease and is not hard on the wicked people. Neither Pandu nor *Vyas have taught Yudhishthir a life of contentment as he is leading.* I taught him to perform sacrifices, to give in charity, to perform asceticism, to be brave and wise, to increase progeny, to do great deeds of prowess and strength, to pour libations to fire with Vedic hymns which give everything to - man. It is the duty of the parents to teach their children, to be charitable, to learn the Vedas and shastras, to perform sacrifices and to take care of the subjects. These are the duties of Kshatryas whether they be right or wrong; but Yudhishthir does not perform his duty though he is born in a noble Kshatrya family. What virtue can be greater than charity on

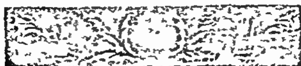
धिकस्ततः ॥ २८ ॥ दानेनान्य बलेनान्यं तथा सूनृ तया परम् । सर्वतः प्रतिगृह्णीया द्राज्यं प्राप्येह धार्मिकः ॥ २९ ॥ ब्राह्मणःप्रचरेद्भैक्षं क्षत्रियःपरिपालयेत् । वैश्यो धनार्जं न कुर्याच्छूद्रः परिचरेच्च तान् ॥ ३० ॥ भैक्षं विप्रति पिद्धन्तेकृपिर्नैवोपपद्यते । क्षत्रियोसि क्षतात् त्राता बाहुवीर्योपजीविता ॥ ३१ ॥पित्र्यमंशं महाबाहो निमग्नं पुनरुद्धर। साम्नाभेदेनदानेन दण्डेनाथनयेनवा ॥ ३२ ॥ इतोदुःखतरंकिन्नु यदहंहीनबान्धवा। परापण्डमुदाचैवे त्वांसूत्वामित्रनन्दन ॥ ३३ ॥ युध्यस्वराजधर्मेण मानिमज्जीः पितामहान् । मागमःक्षीणपुण्यस्त्वं सानुजःपापिकांगतिम् ॥ ३४ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कुन्तीवाक्ये द्वात्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

व जिस दानपति व शूर के समीप जाय भूखे व रक्षा की इच्छा किये लोग भोजन पाते व रक्षित होतेहैं उससे फिर संतुष्ट होतेहैं इससे अधिक और कौनधर्म पृथ्वी पर है । २८ । धर्मात्मा पुरुषको चाहिये कि राज्यपाय दान देनेसे व बलसे व सत्यबोलने से सब कहींसे ग्रहणकरे । २९ । ब्राह्मणका धर्म भिक्षाटन करना है, व क्षत्रिय का पालन करना व वैश्यका धन इकट्ठा करना, व शूद्र का इन तीनोंकी सेवा करना । ३० । सो भीख मांगनेका जानों तुमको निषेधहै। ठहरा, व वैश्यों का कर्म होनेसे खेतीभी कर नहीं सक्ते क्योंकि तुम क्षत्रियहो । ३१ । हेमहाबाहु पिताका अंश डूबगयाहै उसे फिर उतारो, चाहे सामसे, व भेदसे, व दानसे, व दण्डसे, व न्यायसे । ३२ । तुम्हें जन्म देकर हमको मित्र मित्र दीनबन्धु कहते हैं पर इससे अधिक और क्या दुख होगा कि मैं परतन्त्रहूं राजधर्म से लड़ो पितरों को क्यों डुबोते हो क्षीण पुण्य होकर उनकी गति न होगी ३४ ॥

---

earth; for hungry and distressed people get food and protection from a charitable man. A virtuous king should earn wealth by truth and strength of arms. Brahmans live on alms, Kshatryas protect their subjects, Vaishyas collect wealth and Shudras serve the above three classes. 30. Kshatryas are forbidden to beg, nor can they cultivate land which is the work of Vaishyas. Tell Yudhishthir to revive the practice of his forefathers by whatever means he can. What trouble can be greater than that having given birth to Yudhishthir I am living here on the bounty of others? Let him fight for his kingdom and not cause the fall of his pitars with the loss of his virtue."34.



कुन्त्युवाच । अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् । विदुलायाश्च संवादं पुत्रस्य च परन्तप ॥ १ ॥ तत श्रेयश्च भूयश्च यथावद्वक्तुमर्हसि । यशस्विनी मन्युमती कुले जाता विभावरी ॥ २ ॥ क्षत्रधर्मरता दान्ता विदुला दीर्घदर्शिनी । विश्रुता राजसंसत्सु श्रुतवाक्या बहुश्रुता ॥ ३ ॥ विदुला नाम राजन्या जगर्हे पुत्रमौरसम् । निर्जितं सिन्धुराजेन शयानं दीनचेतसम् ॥ ४ ॥ विदुलोवाच । अनन्दनमया जात द्विषतां हर्षवर्द्धन । न मया त्वं च पित्रा च जात क्वाभ्यागतो ह्यसि ॥ ५ ॥ निर्मन्युश्चाप्यसंख्येय पुरुषः क्लीवसाधन । यावज्जीवं निराशोऽसि कल्याणाय धुरं वह ॥ ६ ॥ मात्मानमवमन्यस्व मैनमल्पेन बीभर ।

अध्याय १३३ ॥

कुन्तीजी बोलीं कि, इस विषयमें विदुला नाम एक क्षत्रियकी स्त्री व उसके पुत्रका सम्वाद पुराना इतिहास कहाजाताहै । १ । उस इतिहासको कई बहुत प्रकार से कल्याणकी बात युधिष्ठिर से कहना, वह इतिहास यह है, कि यशस्विनी, क्रोधवती, व बड़े कुलमें उत्पन्न । २ । क्षत्रियोंके धर्मोंमें रत, इन्द्रियोंको दमन किये, बहुत आगेकी बातें जाननेवाली, व बहुत सुनी पढ़ी लिखी राजसमाज में प्रसिद्ध । ३ । जिसका विदुला नाम था व क्षत्रियकी स्त्री थी उसने अपने औरस-पुत्रकी बड़ी निन्दाकी जोकि सिन्धुदेशके राजसे युद्धमें हार अचेतहो सोरहाथा ४। विदुलाबोली कि हेअनन्दन कुपुत्र शत्रुओंको हर्षितकरानेवाले तू न हमसे उत्पन्नहुआ न पितासे यहां कहां से आगया । ५ । क्योंकि तू क्रोधहीन है इससे तेरी गिनती क्षत्रियोंमें नहींहै, तेरे सबसाधन नपुंसक के हैं और जबतक तेरा जीवनाहै तबतक निराशहो बैठाहै, कल्याणके लिये अपने बोझको उठा ।६। और अपना अपमान न कर,

CHAPTER CXXXIII

Kunti said, "There is an old dialogue between Vidula a Kshtrya woman and her son Please repeat it before Yudhishthir together with other useful things History says that there was a glorious, hot tempered Kshatrya woman, named Vidula who was born of a very noble family, was firm on the duties of Kshatryas, had control over her organs of senses, knew many events of the future, had read much and was famous among kings. She reviled much her own son who was sleeping soundly after suffering a defeat from the king of Sindhu. She said to him, "Where have you come from, wicked man, giver of joy to your enemies? You are neither born from me nor from your father, for you are destitute of anger and can not be counted among Kshatryas You are endued with all the marks

मनःकृत्वाह्युकल्याण माभैस्त्वंप्रतिसहर ॥ ७ ॥ उत्तिष्ठहेकापुरुष माशेष्वैवपराजित । अमित्रान्नन्दयन्सर्वान्निर्मानो बन्धुशोकदः ॥८॥ सुपूरावैकुनदिका सुपूरोमूषिकाञ्जलि । सुसन्तोष कापुरुष स्वल्पकेनैव तुष्यति ॥ ९ ॥ अप्यहेराज्जन् दष्ट्राम्स्वेवनिधनंव्रज । अपिवास्यसशयंप्राप्य जीवितेपिपराक्रमे ॥१०॥ अप्यरे:श्येनवच्छिद्र पश्येस्त्वविपरिक्रमन्। विचदन्वाथवातूष्णीं व्योम्नीवापरिशाङ्कितः ॥ ११ ॥ त्वमेवप्रेतवच्छेषे कस्माद्वज्रहतो यथा। उत्तिष्ठहेकापुरुष मास्वाप्सीः शत्रुनिर्जितः ॥ १२ ॥ मास्तंगमस्त्वं कृपणोविश्रूय-

व इस आत्माको अल्पवस्तुसे न पाल, व कल्याण युक्त मनकर तू न डर, व भय को छोड़दे। ७। हे कुपुरुष उठ खड़ाहो, उद्योगहीनहो क्यों सोताहै, अरे पराजितहो कोई तेरे समान सुस्त होकर सोता है, तू सब अमित्रोंको आनन्दित कराता हुआ मानरहितहो बन्धुओंको शोक देरहाहै ।८। छोटी नदी थोड़ेही जलसे भरी रहती है, व चोरकी अंजलि थोड़ेमें पूरी होजाती है व कुपुरुष थोड़ेही में सन्तोष कररहते हैं । ९ । जैसे कोई सर्प्प के दांत तोड़ने लगता व नाशको प्राप्तहोजाता इसीप्रकार तूभी चाहे मरेपर युद्ध अवश्यही कर चाहे प्राणके रहनेमें संशय भीहो पर पराक्रम अवश्यही तू कर। १०। जैसे आकाश में घूमतेहुये बाजको यद्यपि बड़ी भय रहती पर वह शत्रुओं के मारने को युक्तिपूर्वक घूमता रहता है ऐसेही तूभी शत्रुओं को पराजित करने के लिये चुप्पे उनके छिद्र देखताहुआ घूमता फिरतारह शंका न कर। ११। अरे तू क्या वज्र से मारागया है जो मरे पुरुषके समान सोरहाहै अरे हे कुपुरुष उठ शत्रुसे हार अब क्या सोरहाहै। १२। अरे कृपणहो अस्त न हो, अपने कर्म्म से विख्यातहो, अरे साम व भेद ये मध्यम व निकृष्ट हैं इनमें न टिक,

of a eunuch. Why have you lost heart in your lifetime ? Bear your burden for the sake of goodness. *Donot make thyself low. Donot* be content with small things, take courage and have no fear. Rise up coward; why are you sleeping in idleness Who can sleep soundly like you after suffering a defeat ! You increase the joy of your enemies and the sorrow of your friends by your loss of respect. A small river overflows with a little water; a thief fills his hand with a trifle and a coward is content with a small thing. You must fight although you die in the attempt, for he who breaks the teeth of a serpent dies 10. A hawk flies fearlessly in the air and so should you roam about seeking the weaknesses of the enemy and trying to defeat him. You are sleeping like one struck with a mace, rise up coward! Why are you sleeping after defeat ? Donot annihilate

स्वस्वकर्मणा। मामध्येमाजघन्येत्व माधोभूयिस्तिष्ठगर्जित ॥१३॥ अलाततिन्दुकस्येव मुहूर्त्तमपिह्विज्वल। मातुषाग्न्नरिवानर्चिर्धूमायस्व जिर्जीविषु ॥ १४ ॥ मुहूर्त्तंज्वलितं श्रेयोनचधूमायितंचिरम्। माद्दस्मकस्यचिद्देहे जनीराज्ञ खरोमृदु ॥ १५ ॥ कृत्वामानुष्यक कर्म सृत्वाजियावदुत्तमम्। धर्मस्यानृण्यमाप्नोपि नचात्मान विगर्हते ॥ १६ ॥ अलब्ध्वायदिवालब्ध्वा नानुशोचति पण्डितः। आनन्तर्यंचारभते न प्राणानाधनायते ॥ १७ ॥ उद्भावयस्ववीर्यं वातांवागच्छ ध्रुवा गतिम्। धर्मं पुत्राग्रत कृत्वा किंनिमित्तंहि जीवसि ॥ १८ ॥ इष्टापूर्त्तं हि ते क्लीव कीर्त्तिश्च सकला हता। विच्छिन्न भोग

व दान अधम है उसमें भी न टिक, दण्ड सब में उत्तम है इस से गर्ज्जताहुआ उठ शत्रुको दण्डदे। १३। तिंदुआकी लकड़ी के समान मुहूर्त्तही मात्रमें धधक बलनेलग, व जीनेकी इच्छासे भूसीकी आगके समान बिना चिनगारियों का न होजाय। १४। एक मुहूर्त्तभरमें बर उठना कल्याणकारक है, बड़ी देरतक धुआंता रहना अच्छा नहीं, और राजा के घरमें तीक्ष्णही होकर जन्मले कोमल स्वभावहो न जन्मके। १५। मनुष्य मनुष्य का कर्मकर व उत्तम संग्राम उत्पन्नकर धर्म्मसे उऋण होताहै भयभीतहो अपनी निंदा नहीं कराता। १६। कार्य्य करनेपर उसका फल पाने न पानेपर पंडित शोच नहीं करता किंतु निरंतर कार्य्य करताही रहताहै अपने प्राण व धनकी इच्छासे बैठा नही रहता। १७। यातो वीर्य्यको बढ़ाय युद्धकर वा मृतकही होजा जिसमें तेरा मुख न देखूं, हे पुत्र धर्म्म को आगे कर किस लिये जीता है वीर्य्य नहीं करता। १८। हे नपुंसक तूने जो कूप तडागादि खुदाये व बाग लगवाये वे नष्ट होगये, व सब तेरी कीर्त्ति हतहोगई, क्योंकि भोगका निमित्त

---

yourself by doing nothing. *Sam, bhed* and *dand* are despicable courses, *dand* is the best and so you must rise up roaring to destroy your enemies Burn with a flame like dry wood and donot smoulder like straw to live longer Burning at once is better than smouldering for a long time, one born in the house of a Kshatrya should be of a sharp temper. One satisfies the debt of Dharm by doing manly work in fighting and not by flight and infamy. Learned men donot repent of doing a work whether they be successful in it or not, they continue to do it regardless of their life and wealth. You must fight valliantly or die so that I may not see your face again. Why do you not fight for *dharm, my son?* The wells, tank, orchards and other things built by you have all been useless and you have lost your fame, for you have lost your kingdom with which you could

मूल ते किंनिमित्तं हि जीवसि ॥ १९ ॥ शत्रुर्निमज्जता ग्राह्यो जंघयां प्रपतिष्यता । विप-रिच्छिन्नमूलोपि न विषीदेत् कथञ्चन ॥ २० ॥ उद्यम्य धुरमुत्कर्षेदाजानेयकृत स्मरन्। कुरुसत्त्वञ्चमानञ्च विद्धि पौरुषमात्मनः ॥ २१ ॥ उद्भावय कुलं मग्न त्वत्कृते स्वय मेव हि । यस्य वृत्तं न जल्पन्ति मानवा महदद्भुतम् ॥ २२ ॥ राशिवर्द्धनमात्र स नैव स्त्री न पुन पुमान्। दाने तपसि सत्ये च यस्य नोचारितं यशः ॥ २३ ॥ विद्यायामर्थ लाभे वा मातुरुच्चार एवसः । श्रुतेन तपसा वापि श्रिया वा विक्रमेण वा ॥ २४ ॥ जनान् योभिभवत्यन्यान् कर्मणा हि स वै पुमान् । नत्वेव जाल्मीं कापालीं वृत्तिमेषि तुमर्हसि ॥२५॥ नृशंस्यामयशस्याञ्च दुःखां कापुरुषोचिताम् । यमेनमभिनन्देयुरमित्राः पुरुषं कृशम् ॥ २६ ॥ लोकस्य समवज्ञातं निहीनासनवाससम् । अहो लाभकरं हीन

राज्यतो तेरा छिन्नहोगया फिर अब किस निमित्त जीता है । १९ । शत्रुको जांघ ही में बांधे रहे उसके साथही चाह गिरे व बूड़े पर छूटने न पावे निरुद्यमहो क-भी न बैठे, चाहे राज्य धन जाताभी रहे पर हाथपर हाथ धरे बैठा न रहे करता कुछ अवश्य रहे । २० । कुलीन घोड़ों के समान भार को उठानाही चाहिये, अरे अपने पौरुषको प्राप्तहो पराक्रम व मानकर क्या पड़ाहै । २१ । अरे यह कुल तेरेही लिये डूबता है इसे क्यों नहीं उतारता क्योंकि जिस पुरुषका यहा अद्भुत समाचार पुरुष सर्वत्र बकते न फिरे । २२ । वह न पुरुष है न स्त्री किन्तु नपुंसकहीहै दान, तपस्या, सत्य, विद्या, और धन में जिस को यश नहीं वह मृतक समानहै । २३ । विद्या, तप, श्री, विक्रम और सत्पुरुषों के कर्म्म जो कोई करता है वही नरोत्तमहै । २४ । इससे हे पुत्र तू स्त्री तुल्य पुरुषोंकी व भिक्षा मांगनेकी वृत्तिके योग्य नहीं है । २५ । क्योंकि वह वृत्ति क्रूर निर्लज्ज अयशस्वी पुरुषों केही योग्य होती है, व जिस कुत्सित दुर्बल पुरुषकी प्रशंसा शत्रुलोग करें कि यह बेचारा अच्छाहै । २६ ।

---

maintain those things. What for do you live? One should tie the leg of his enemy with his own and should persevere in his work whether he fall or drown One should not sit idle after the loss of kingdom and wealth.20. It is better to carry the burden like a noble horse. Be up and doing; why are you lying in laziness? Why do you not raise your family which is being drowned. One devoid of fame is neither a man nor woman. Charity, asceticism, truth, know-ledge and wealth are things worth having; he who has no love for them is like one dead. He is the best of men who is engaged in learning, asceticism, acquirment of wealth, prowess and doing good deeds. You are not fit for the life of women or beggars; for cruel,

मल्पजीवनमल्पकम् ॥ २७ ॥ नेदृश बन्धुमासाद्य बान्धव सुखमेधते। अवृत्त्यैव विनङ्क्ष्यामो वय राष्ट्रात् प्रवासिता ॥ २८ ॥ सर्वकामरसैर्हीना स्थानभ्रष्टा अकिञ्चनाः। अवल्गुकारिणं सत्सु कुलवंशस्य नाशनम् ॥ २९ ॥ कलिं पुत्रप्रवादेन सञ्जय त्वामजीजनम्। निरमर्षं निरुत्साहं निर्वीर्यमरिनन्दनम् ॥ ३० ॥ मास्म सीमन्तिनी काचिज्जनयेत् पुत्रमीदृशम्। मा धूमाय ज्वलात्यन्तमाक्रम्य जहि शात्रवान् ॥ ३१ ॥ ज्वल मूर्द्धन्यमित्राणां मुहूर्त्तमपि वा क्षणम्। एतावानेव पुरुषो यदमर्षी यदक्षमी ॥ ३२ ॥ क्षमावान्निरमर्षश्च नैव स्त्री न पुन पुमान्। सन्तोषो वै श्रियं हन्ति तथानुक्रोश एव च

व लोक में सब उसका अनादर करें—बैठने उठने का स्थान पहिरने को वस्त्र न मिलें, व थोड़ भी लाभ को बहुत माने, व सब से हीन बना रहै, व थोड़ेही में अपनी जीविका करले, व अपने को अल्पही जाने। २७। ऐसे बन्धु को पाय उस भाई बान्धव सुख नहीं पाते, क्योंकि वे लोग कहतेहैं कि हमारी कोई जीविका तो हैही नहीं इस से अवश्यही मरेंगे, क्योंकि देशसे निकाल दिये जायेंगे। २८। व उसकी जाति वाले सब कामरसों से हीन होजातेहैं, क्योंकि स्थान से भ्रष्ट होनेसे उन के पास कुछ रहतो जाताही नहीं, हे सञ्जय नाम पुत्र सज्जनों के सामने अमंगलकारी, व कुलवंशमें नाशक, कलिरूप तुझ पुत्रको हमने पुत्रके अपवादहीसे उत्पन्न किया, कोई स्त्री, अमर्षशून्य, उत्साहरहित, वीर्यहीन, व शत्रुओंका आनन्द दायी तुझ सदृश पुत्र उत्पन्न न करे। ३०। धुआं सहित शत्रुकी अग्नि को नाशकर र शत्रुके सिरपर चढकर क्षणभर में जलादे क्षमा रहित अमर्षवान पुरुष होना चाहिये क्षमावान और अमर्ष रहित न पुरुष है न नारी है। ३२। सन्तोष और द-

shameless and infamous people may lead such a life. People donot like to have for their relation a weakling who is praised by his enemies, is disliked by all, has neither a place to sit on nor clothes to wear, is content on small gain, mixes with low people, lives on poor diet and humiliates himself. They cannot look favourably on him, for they are afraid to lose their living, country and enjoyments. I am ashamed of giving birth to a son who is good for nothing, and destroyer of the family like Kali. May no woman give birth to a son who is destitute of anger, courage and prowess like you and who is the cause of joy to his enemies 30. Burn down your enemies and extinguish their fire in an instant. You should rather be cruel and merciless, for one who is merciful without anger is neither a man nor woman. Contentment and mercy destroy wealth and

॥ २३ ॥ अनुत्थाने भये चोभे निरीहो नाश्नुते महत् । पश्यो निकृति पापेभ्यः प्रमुञ्चा त्मानमात्मना ॥ ३४ ॥ आयसं हृदयं कृत्वा मृगयस्व पुनः स्वकम् । पर विषहते यस्मात् तस्मात् पुरुष उच्यते ॥ ३५ ॥ तमाहुर्व्यर्थं नामानं स्त्री वद्य इह जीवति । शूरस्योर्जितसत्वस्य सिंहविक्रान्तचारिणः ॥ ३६ ॥ दिष्टभावं गतस्यापि विषये मोदते प्रजा । य आत्मानः प्रियसुखे हित्वा मृगयते श्रियम् ॥ ३७ ॥ अमात्यानामथो हर्षमादधात्याचिरेण सः ॥ ३८ ॥ पुत्र उवाच । किं नु ते मामपश्यन्त्याः पृथव्या अपि सर्वया । किमाभरणकृत्यन्ते किं भोगैर्जीविते नवा ॥ ३९ ॥ मातोवाच । किमद्यकानां ये लोका द्विषन्त

या श्री का नाश करतेहैं दोनों भयदायक और सुख नाशक हैं सब पराभव के दोषों से अपने को छुड़ाकर हृदय को कड़ा करके और मोहको छोड़ कर धन और राज्यको बढ़ाओ । १४ । जिस से पुरुषों को नहीं सह सक्ता इसी से पुरुष कहाताहै, व जो स्त्री के समान घर में छुका बैठा है जीताहै उसका पुरुष नाम व्यर्थहै । १५ । व जो पुरुष सिंह समान विक्रमी हो शूरता से पराक्रम बढ़ाय सब को दिखाता चाहे वह भाग्य के भरोसे भी रहताहो तो भी उसकी प्रजा आनन्दित रहतीहै । १६ । व जो पुरुष अपने प्रिय व सुखको छोड़ श्री होने कोही ढूंढ़ता रहता है वहुतही शीघ्र अपने मन्त्री दीवान आदि अमात्यों को हर्षित कराता है । १८ । यह सुन विदुलाका पुत्र सञ्जयबोला, कि जब हमको तुम न देखोगी तो तुमको सारी पृथ्वीका राज्य मिलनेसे क्या सुख होगा, व भूषण वस्त्रादिकों से क्याहोगा, व भोगविलासकी वस्तुओं सेही क्याहोगा, व प्राणहीसे क्याहोगा । १९ । इतना सुन माता बोली कि, हां जो पुरुष निर्द्धनहो ऐसा कहतेहैं कि आज क्याखायँगे

---

happiness and produce fear. Increase your wealth and kingdom by your prowess and courage. *A purush (man) is one who cannot* bear others; he is not a man who hides himself in the house like a woman. The subjects of him are happy who shows his prowess and courage like a lion although he relies on fate. He who gives up his pleasures and likings in search of wealth, soon makes his ministers and courtiers happy." Having heard these words, Sanjaya the son of Vidula said to his mother, "What happiness will the kingdom of the whole earth as well as the possession of jewels, clothes, enjoyments and life itself will give you when I am dead!" To this the mother replied, "Let our enemies get the regions obtainable by those who having lost their wealth say "what shall we eat today and what shall we enjoy!" and let our friends get those regions

स्तानवाप्नुयु । ये त्वाहतात्मना लोका सुहृदस्तान् व्रजन्तुन ॥ ४० । भृत्यैर्विहीय मा नाना पर पिण्डोप जीविनाम् । कृपणानामसत्वानां मावृत्तिमनुवर्त्तिथा ॥ ४१ ॥ अनु-त्वा तात जीवन्तु ब्राह्मणा सुहृदस्तथा । पर्ज्जन्य मिव भूतानि देवा इव शतक्रतुम् । ४२ ॥ यमा जीवन्त पुरुष सर्व भूतानि सञ्जय । पक्वद्रुममिवासाद्य तस्य जीवित मर्थवत् । ४३ ॥ यस्य शूरस्य विक्रान्ते रेधन्ते बान्धवा सुखम् । त्रिदशा इव शक्रस्य साधु तस्येह जीवितम् ॥ ४४ ॥ स्वबाहुबलमाश्रित्य योऽभ्युज्जीवति मानव । स लो-के लभते कीर्त्तिं परत्रच शुभा गतिम् ॥ ४५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विदुलापुत्रानुशासने त्रयस्त्रिंशाधिकशततमोऽध्यायः १३३ ॥

यथा भागकरेंग उनको जोलोक मिलतेहैं न तो हमारे शत्रुओं को मिलें, व जो शस्त्रोंसे विना मारेहुये विजयी भूपोंको लोक मिलतेहैं वे हमारे सुहृदों को मिलें ।४०। इससे हे पुत्र भृत्योंसे त्याग, पराये अन्नसे जीने, व पराक्रम रहित कृपणोंकी जीविका न ग्रहण करो ।४१। हे तात तुम्हारे पीछे ब्राह्मणलोग व सुहृदलोग जियें, जैसे बादलके पीछे सबप्राणी जीते व इन्द्रके पीछे सब देवगण । ४२ । हे सञ्जय, जैसे पके फल लगे वृक्षको पाय सब प्राणी जीते हैं वैसेही जिस पुरुषको पाय सब लोग जीतेहैं उसका जीवन सफलहै । ४३ । जिस शूरके विक्रमोंसे बढ़हुये बान्धव लोग सुख से जीतेहैं, जैसे देवगण इन्द्रके विक्रमसे जीते हैं उस पुरुष का जीवन इस ससारमें अच्छा है । ४४ । जो नर अपने बाहुबलके भरोसे जीताहै वही महा कीर्तिपाता है और उसीकी शुभगति होतीहै ॥ ४५ ॥

---

which are obtainable by the conquerers who are not killed by any weapon 40 Donot lead the life of being forsaken by attendants, absence of prowess and living on the alms of others like beggars. Let Brahmans and friends live upon your bounty as people live on the bounty of clouds and gods on that of Indra. The life of that man is useful who gives maintenance to others like fruit bearing trees. Happy is the birth and life of that man by whose bravery and prowess the relations live in ease and plenty as gods do by the prowess of Indra He who relies on his own strength gets fame here in this world and happiness in the next 45 .



विदुलोवाच । अथैतस्यामवस्थायां पौरुषं हातुमिच्छसि । निहीनसेवितं मार्गं गमिष्यस्य चिरादिव ॥ १ ॥ योहि तेजो यथाशक्ति न दर्शयति विक्रमात् । क्षत्रियो जीविताकांक्षी स्तेनइत्येवतं विदुः ॥ २ ॥ अर्थवन्त्युप पन्नानि वाक्यानि गुणवन्ति च । नैव सम्प्राप्नुवन्ति त्वां मुमूर्षुमिव भेषजम् ॥ ३ ॥ सन्तिवै सिन्धुराजस्य सन्तुष्टान तथाजनाः । दौर्बल्यादासते मूढाव्यसनौघ प्रतीक्षिणः ॥ ४ ॥ सहायोपचितिं कृत्वा व्यवसाय्य ततस्ततः । अनुदुष्येयुरपरे पश्यन्तस्तव पौरुषम् ॥ ५ ॥ ते कृत्वा सह संघातंगिरिदुर्गालयश्चर । कालेव्यसनमाकांक्ष नैवायमजरामरः ॥ ६ ॥ सञ्जयोनाम तश्चत्वंनचपश्यामि तत्त्वयि । अन्वर्थनामा भवमेपुत्रमाव्यर्थनामकः ॥ ७ ॥ सम्यग्दृष्टि

अध्याय ॥ १३४ ॥

विदुला फिर बोलीं कि इस अवस्थामें जो पुत्र पौरुष त्यागना चाहतेहो तो हीन पुरुषोंसे सेवित मार्ग में बहुतही शीघ्र चलोगे । १ । जो क्षत्रिय अपने जीने की इच्छा करताहो पर विक्रमसे यथाशक्ति अपना पौरुष नहीं दिखाता पण्डित लोग उसे चोरकहतेहैं क्षत्रिय नहीं कहते । २ । क्याकहें, अर्थयुक्त, सिद्ध, व गुण-वान् वाक्य तुमको कैसे नहीं प्राप्त होवे,जैसे मरनेकी इच्छा किये हुये पुरुषको औषध नहीं पहुँचती । ३ । । सब जन सिन्धुदेशके राजा से वैसे सन्तुष्ट नहीं हैं जैसे तुम से रहतथे, परन्तु क्याकरें मारे दुःखसमूहोंसे पीड़ितहो दुर्बलता के कारण समय परखते परे हैं । ४ । व बहुतसे लोग अन्यलोगों को सहाय बनाए तुम्हारे पौरुषकी राह देखते हुये दुःखितहोरहेहैं । ५ । इससे उनलोगोंको इकट्ठेकर पर्व्वत पर किला बनाय जाय धाय अगुआय वहां बसो, व समयपाय शरीरको दुःखदे युद्धकरो यह शरीर अजर अमर नहीं है कभी न कभी मरीजायगा । ६ । हे पुत्र तुम्हारा संजय नामहै जिसका अर्थ अच्छीतरह जीतनेवाला है पर वह बात तुममें नहीं पाई जाती इससे अपना नाम सार्थककरो जाय शत्रुको जीतो हे पुत्र यह नाम

CHAPTER CXXXIV

"You will soon go the way of low people, if you give up manliness at this age," said Vidula, "the kshatrya who wishes to live, but does not show his manliness and prowess, is called a thief by learned men. It is a wonder that you give no ear to good advice which is thrown on you as medicine on him who will die. People are not so happy in the reign of the king of Sindhu as they were in yours and they are waiting yet for time and suffering hardships because they are weak. Many of them have secured helpers and are waiting for you to rise against your enemies. You must collect all such people and should lead them to a hill fortress to sally forth from it in time. This body is not immortal and will die sooner or later. Your name

महाप्राज्ञो बालंत्वांब्राह्मणोऽब्रवीत् । अयंप्राप्यमहत्कृच्छ्रं पुनर्वृद्धिं गमिष्यति ॥ ८ ॥ तस्यस्मरन्तीवचनमाशंसे विजयंतव । तस्मात्तातब्रवीमित्वां वक्ष्यामिचपुनःपुनः ॥९॥ यस्यह्यर्थाभिनिर्वृत्तौभवन्त्याप्यायिताः परे । तस्यार्थसिद्धिर्नियता नयेष्वर्थानुसारिणः ॥ १० ॥ समृद्धिरसमृद्धिर्वा पूर्वेषांममसञ्जय । एवंविद्वान् युद्धमना भवमाप्रत्युपाहरः ॥ ११ ॥ नातः पापीयसीं काञ्चिदवस्थांशम्बरोऽब्रवीत् । यत्रनैवाद्यनप्रातर्भोजनं प्रतिदृश्यते ॥ १२ ॥ पतिपुत्रवधादेतत् परमं दुःखमब्रवीत् । दारिद्र्यमिति यत् प्रोक्तं पर्यायमरणं हि तत् ॥ १३ ॥ अहं महाकुले जाता ह्रदात् ह्रदमिवागता । ईश्वरी सर्वकल्या-

---

व्यर्थ न करो । ७ । एक महाप्राज्ञ ज्योतिर्विद् ब्राह्मणजीने बालपनमें तुम्हें देख कहाथा कि यह बालक महा कष्टपाय फिर बढ़तीको पावेगा । ८ । हम उन्हीं ब्राह्मण देवके वचन का स्मरण करतीहुई बार२ तुम्हारी विजय कहती हैं व इसीसे तुमको युद्ध करनेको कहतीहैं व बार २ कहेंगी । ९ । व जिसके प्रयोजनकी सिद्धि के विषयमें उसके सम्बन्धीलोग जोकि उससे बड़ेहैं उद्यतहोते हैं, उसके अर्थकी सिद्धि जरूर होती है क्योंकि वह नीतिपर चलताहोगा इसी से वेलोग उसकी बढ़ती मनातेहैं । १० । हे सञ्जय अपने मनमें यह विचारलो कि चाहे इसमें लाभहो व अलाभ पर हमारे पूर्वजोंका यह राज्य है इसे न छोड़ना चाहिये, युद्धहीकरो राज्य न छोड़ो । ११ । शम्बरासुरने कहा है इससे पापिनी और अवस्था नहीं है जिसमें न आज भोजनमिला है न प्रातःकाल मिलने की आशा है । १२ । पति पुत्रके मरणसे भी यह दारिद्र्यरूप मरण अधिक दुःखदायी है क्योंकि दारिद्र्यभी मर जानेही का दूसरा नामहै वह बिना युद्ध किये मिटेहोगा नहीं । १३ । देखो हमारा बड़े कुलीनके यहां तो जन्महुआ, व फिर मानों कुण्डसे निकल फिर उसीप्रकारके कुण्डमें आई कि उत्तम कुलमें विवाहहुआ, फिर सब कल्याण सहित सबकी स्वामिनी

Sanjaya means a good conquerer; but practice shows you otherwise. Verify the meaning of your name. *Go and* conquer your enemies. A wise Brahman, who was a good *astrologer*, said *on seeing you in your childhood that you would rise again* after suffering trouble. On the strength of his words I say again and again that you will win. I am instigating you to fight and will do so again and again. He whose elders are ready to lead him to success, must be sure of success. You must fight for the kingdom of your ancestors whatever be the result of it. Shamvarasur says that the worst state of a man is that in which he has neither had food today nor has any hope of getting it tomorrow. *Poverty* is more troublesome than the death of a husband *or a son; for poverty is another name of death* and can not be removed without fighting. I was born in a noble family and

णी भर्त्रा परमपूजिता ॥ १४ ॥ महार्हमाल्याभरणां सुमृष्टां वरवाससम् । पुरा दृष्ट्वा सुहृद्वर्गो मामपश्यत् सुहृद्गताम् ॥ १५ ॥ यदा माञ्चैव भार्याञ्च द्रष्टासि भृशदुर्बलाम् । न तदा जीवितेनार्थो भविता तव सञ्जय ॥ १६ ॥ दासकर्मकरान् भृत्यानाचार्य्यर्त्विक् पुरोहितान् । अवृत्यास्मान् प्रजहतो दृष्ट्वा किंजीवितेनते ॥ १७ ॥ यदिकृत्यं न पश्यामि तवाद्याहं यथापुरा । श्लाघनीयं यशस्यञ्चका शान्तिर्हृदयस्य मे ॥ १८ ॥ नेति चेद्ब्राह्मणं ब्रूयां दीर्य्येत हृदयंमम । नह्यहंनचमेभर्त्ता नेति ब्राह्मणमुक्तवान् १९ ॥ वयमाश्रयणीयाः स्मनश्रोतारः परस्यच । सान्यमासाद्य जीवन्ती परित्यक्ष्यामि जीवितम् ॥ २० ॥ अपारेभवनः पारमप्लवे भवनः प्लवः । कुरुष्व स्थानमस्थाने मृतान्

हुई व पतिने बहुत आदर से रक्खी ।१४। व पूर्वसमयमें बड़ेमोल के भूषण पहिरे व सुन्दर चिकने महीन रेशमी आदि वस्त्र धारणकिये, सुहृदों के बीचमें सब से अधिक प्रसन्न देखतेथे । १५ । व अब जब हमको व अपनी स्त्रीको मारे भूंखोंके अत्यन्त दुर्बल तो देखोगे सञ्जय फिर अपने जीनेसे कुछ अर्थ न समझोगे । १६ । जब जीविका न पानेसे कामकाजी नौकर चाकर आचार्य्य ऋत्विक् पुरोहितलोग हमको छोड़ अपने २ स्थान को चलेजाएँगे वैसी हमें देख फिर तुमको जीवन से कौन प्रयोजन रहेगा । १७ । जो हम बड़ाई करने व यशके योग्य तुम्हारे कर्म पहिलेकेसे नहीं देखती तो हमारे जीको कौन शान्ति है । १८ । जब हम ब्राह्मणसे कहेंगी कि हमारे पास नहीं है तब तो हमारा हृदय फटजायगा, क्योंकि आजतक कभी न हमने ब्राह्मणसे नहीं यह कहा न हमारे पतिने कभी कहा । १९ । अबतक हमलोग ऐसी रहीं कि सबलोग हमारे आश्रयी होतेथे, इस से हमलोगों ने कभी किसी की आज्ञा सुनीही नहीं, वही हम जो दूसरेकी आश्रयपाय जीवेंगी तो प्राणही छोड़देंगी उस दशाको न सहेंगी । २० । कदाचित् तुमजीनेकी आशा

was brought as it were from one lake to another in as much as *I* was *married in a noble family.* I became mistress over all and was loved by my husband. I alway put on precious ornaments and fine silk clothes and was happy; *you will curse your life, Sanjav, when you* will see your wife and myself starving. You will have no desire to live any longer when all your servants, preceptors and priests will leave you for want of their livelihood and you will see us unattended by any one. How can we be happy when we donot see you doing great and noble deeds as you used to do formerly. Our hearts will break when we shall have to refuse giving alms to Brahmans; for neither my husband nor I did ever disappoint a Brahman. Up to this time all the people used to take refuge with us and we had never had to obey the orders of anyone else. We shall rather die than obey other people. 20. You will conquer your enemies if you will

सञ्जीवयस्चन ॥ २१ ॥ सर्वेशत्रव सक्यान चेज्जीवितुमर्हसि । अथचेदीदृशी वृत्तिक्लीबामभ्यु पपद्यसे ॥ २२ ॥ निर्विण्णात्मा हतमना मुञ्चैतां पापजीविकाम् । एकशत्रुवधेनैव शूरोगच्छति विश्रुतिम् । २३ ॥ इन्द्रो वृत्रवधेनैव महेन्द्र समपद्यत। माहेन्द्रंचग्रह लेभे लोकानाञ्चेश्वरो भवत् ॥ २४ ॥ नाम विश्राव्यवै सङ्ख्ये शत्रूनाहूय दंशितान् । सेनाग्रञ्चापि विद्राव्यहत्वा वा पुरुषवरम् ॥ २५ ॥ यदैवलभते वीर सुयुद्धेन महद्यशः । तदैव प्रव्यथन्तेऽस्य शत्रवो विनमन्तिच ॥ २६ ॥ त्यक्त्वात्मान रणेदक्षशूरं कापुरुषाजनाः । अवशास्तर्पयन्तिस्म सर्वकामसमृद्धिभिः ॥ २७ ॥ राज्यंवाप्युग्रविभ्रंशं संशयो जीवितस्यवा । नलब्धस्यहि शत्रोर्वै शेषं कुर्वन्ति साधवः

छोडदो तो सब तुम्हारे शत्रु तुम्हारेविशमें होजायें, व जो यही नपुसकोंकी वृत्ति अच्छी समझोगे तो काहेको शत्रुओंको जीतोगे । २२ । इससे उदासहो व मन अलगकर इस पाप जीविकाको छोडदो, क्योंकि शूर केवल एक शत्रुही के मारन से प्रसिद्ध होजाता है । २३ । देखो इन्द्रने जबमे वृत्रासुर को मारा तबसे उनका महेन्द्र नाम होगया, व तबसे यज्ञों में अपना माहेन्द्र भाग पानेलगे व सबके ईश्वर हुये । २४ । व जब पुरुष समरमें अपना नाम सुनाय अस्त्र शस्त्र धारण किये शत्रुओंको युद्धकेलिये ललकार, सेनाके मुख्य २ वीरोंको फटकार व मार, शत्रुको सहार युद्धसे महायश पाता है तभी उसके शत्रु व्यथितहोते व आय पैरोंपर झुकते । २५ । जो पुरुष रणमें दक्षहोते व शूर होते कुपुरुष लोग अवशहो उनके आग देह छोड अपनी सब समृद्धियोंसे उसे पूरित करते हैं । २६ । चाहे राज्य मिल व उग्रनाशहो, व प्राणके रहनेमें संशयहो परन्तु जब शत्रुको पाय जाते हैं तो साधुलोग फिर उसका शेष नहीं रखते मार उजाड तहस नहस करदेते हैं । २७ । यह राज्य स्वर्गद्वार व अमृत के तुल्यहै इससे स्वर्ग व राज्यका एकही दरवाजा जान जाय उल्मुकके समान प्रकाशितहो युद्धकरो कितो राज्यही पावोगे व स्वर्गही

not care for your life, but nothing can be done if you are a coward. *Leave all things and give up this sinful life, for a brave man can only* be famous by killing his enemy. You know how Indra gained the appellation of Mahendra when he killed Vritrasur From that time he began to take his share of the sacrifices and became the lord of all. *The enemies fall on the feet and are distressed when one challenges* them to fight and destroys the brave men of their armies. Cowards give up all their wealth to and fly with their lives from those who are skilful in fighting and brave Great men never spare an enemy when *they get him under power, they donot care for the loss of kingdom,* destruction or loss of their own life The same way leads to kingdom and paradise, burn like a torch and destroy your enemies.

॥ २८ ॥ स्वर्गद्वारोपमं राज्यमथवाप्यमृतोपमम् । रुद्रमेकायनं मत्वा पतोत्मुक इवारिषु ॥ २९ ॥ जहि शत्रून् रणे राजन् स्वधर्ममनुपालय । मात्वादृशं सुकृपणं शत्रूणां भयवर्द्धनम् ॥ ३० ॥ अस्मदीयैश्च शोचद्भिर्नदद्भिश्च परैर्वृतम् । अपि वा नानुपश्येय दीनाद्दीनमिव स्थितम् ॥ ३१ ॥ हृष्य सौवीरकन्याभिः श्लाघस्वार्थैर्यथा पुरा । मा च सैन्धवकन्याभिरवसन्नो वशङ्गमः ॥ ३२ ॥ युवा रूपेण सम्पन्नो विद्ययाभिजनेन च । यस्त्वादृशो विकुर्वीत यशस्वी लोकविश्रुतः ॥ ३३ ॥ अधुर्यवच्च वोढव्ये मन्ये मरणमेव तत् । यदि त्वामनुपश्यामि परस्य प्रियवादिनम् ॥ ३४ ॥ पृष्ठतोनुव्रजन्तं वा का शान्तिर्हृदयस्य मे । नास्मिन् जातु कुले जातो गच्छेद्योन्यस्य पृष्ठतः ॥ ३५ ॥ नत्व

। २८ । हे राजन् रणमें शत्रुओंको मारो । अपने क्षत्रिय के धर्मको पालो, जिसमें तुम सरीखे कृपण शत्रुओं के शोक बढ़ानेवाले का और कृपणको अपने लोगोंको शोचते व शत्रुओंको गर्जतेहुये व इन दोनोंसे घेरेहुये तुमको अनाथके समान पड़े अनाथ व दीनहो हम न देखें । ३० । अपनी स्त्रियोंके संग हर्षितहोवो, व जैसे आगे अपने अर्थों से बड़ाई पातेथे वैसेही फिर पावो, अवश व पीडितहो सिन्धुदेश की कन्याओं के वशमें न पड़ो । ३१ । तुम्हारी युवातो अवस्थाहै, व रूपसे सम्पन्नहो विद्यासे भी युक्त व परिवारभी सब विद्यमान, ऐसाभी यशस्वी व लोकमें प्रसिद्ध पुरुष जो समरसे भागे वो । ३२ । जैसे नवनिकार बैल जुआ नहीं लेता वैसाही ठहरे फिर उससे तो मरण अच्छा, व जब हम तुमको शत्रुसे प्रिय वचन बोलते देखेंगी । ३३ । व शत्रुके पीछे चलते वो हमारे हृदयको कौनसी शान्ति-होगी, क्योंकि इस कुलमें कभी ऐसा कोई उत्पन्नही नहीं हुआ जो शत्रुके पीछे २ चलाहो । ३४ । हे तात, इससे तुम शत्रुके अनुचरहो जीने के योग्य नहींहो, क्योंकि हम क्षत्रियका हृदय जानती हैं, जैसा निरन्तर रहना है । ३५ । पहचान

you will thus get either the kingdom or paradise. Destroy your enemies in battle and be firm on your duty, so that we may see your enemies in grief and may not see you surrounded helplessly by roaring enemies and your friends in distress. 30. You will thus be happy with your women and will gain fame from your great deeds as you did in former days. Donot fall helplessly in the power of the girls of Sindhu. You are young, beautiful, learned and born in a noble family, a glorious and famous man like you, flying from battle, is like a strong ox who does not support the yoke. Death is preferable to such life. We cannot be happy when we shall see you following and flattering your enemies, for none in this family has ever followed an enemy. You are not worthy of serving your enemies, for we know how independent a Kshatrya is by nature. We

परस्यानुचरस्तात जीवितुमर्हसि । अहहि क्षत्रहृदयं वेदयत् परिशाश्वतम् ॥ ३६ ॥ पूर्वैः पूर्वतरैः प्रोक्तं परैः परतरैरपि । शाश्वतञ्चाव्ययञ्चैव प्रजापतिविनिर्मितम् ॥ ३७ ॥ यावैकश्चिदिहाजातः क्षत्रिय क्षत्रकर्मवित् । भयाद्वृत्तिसमीक्षोवा ननमेदिह कस्यचित् ॥ ३८ ॥ उद्यच्छेदेव ननमे दुद्यमो ह्येवपौरुषम् । अप्यपर्वणि भज्येत न नमेतेह कस्यचित् ॥ ३९ ॥ मातङ्गो मत्तइव च परीयात् स महामनाः । ब्राह्मणेभ्यो नमेन्नित्यंधर्मायैव च सञ्जय ॥ ४० ॥ नियच्छाञ्छितरान् वर्णान् विनिघ्नन् सर्वदुष्कृतः । ससहायोऽसहायो वा यावज्जीवं तथा भवेत् ॥ ४१ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विदुलापुत्रानुशासने चतुर्स्त्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ११४ ॥

अपने वंशज पुरुषोंने कही है व अन्य वंशवालोंने भी व सब श्रेष्ठोंने भी, कि क्षत्रियोंका हृदय नाशरहित व निरन्तर रहनेवाला ब्रह्माजी ने बनाया है । ३६ । इससे क्षत्रिय कर्मोंका जानने वाला जो कोई क्षत्रिय के यहां उत्पन्न हुआ व अपनी वृत्तिको देखता वह चाहे प्राण.जातेरहे पर किसीके आगे झुँकता नहीं । ३७ । उद्यमही कर नम्र कभी न हो, क्योंकि उद्यमहीका पौरुष नामहै, चाहे बीचसे टूटजाय पर झुँके कभी न ।३८। सर्वत्र क्षत्रिय मतवाले हाथीके समान महामनस्वी होकर चले, पर हे संजय ब्राह्मणोंके सदा.नमस्कार करे व धर्म के नमस्कार करे । ३९ । व अन्य वर्णोंको सदा शान्त करतारहै व सबके पाप मिटातारहै, चाहे सहाय सहितहो व सहाय रहित जबतक जिये इसी वृत्तिसे दूसरी से नहीं ४१ ॥

---

have heard it from the good people of our own family as well as those of others that the mind of a Kshatrya is made immortal and eternal by Brahma. He who is born in a Kshatrya family and who knows his duty and mode of living, will never bow to any one. He always minds his business and never humiliates himself; for *business is another name for prowess. He will never bow though he* may break in twain. Kshatryas always walk like mad elephants; they bow only to Brahmans and Dharm. He must always be engaged in pacifying other classes and subduing sin and must never deviate from his duty whether he has any helpers in his work or not."10.



पुत्रउवाच। कृष्णायसस्येव च ते संहत्य हृदयकृतम्। मम मातस्त्वकरुणे वीरप्रज्ञे ह्यमर्षणे ॥ १ ॥ अहो क्षत्रसमाचारो यत्र मामितरं यथा। नियोजयसि युद्धाय परमातेव मान्तथा ॥ २ ॥ ईदृशं वचनं ब्रूयाद् भवती पुत्र मेकजम्। किन्नु ते मामपश्यन्त्याः पृथिव्या अपिसर्वया ॥ ३ ॥ किमाभरणकृत्येन किम्भोगैर्जीवितेनवा। मयिवा सङ्गरहिते प्रियपुत्रे विशेषतः ॥ ४ ॥ मातोवाच। सर्वावस्थाहि विदुषां तात धर्मार्थकारणात्। तावेवाभिसमीक्ष्याहं सञ्जयत्वामचूचुदम् ॥ ५ ॥ स समीक्ष्य क्रमोपेतो मुख्यः कालोऽयमागतः। अस्मिन्श्चेदागते काले कार्यं न प्रतिपद्यसे ॥ ६ ॥ असम्भावितरूपस्त्वमानृशंस्यं करिष्यसि। तंत्वामयशसा स्पृष्टं न ब्रूयां यदि

अध्याय ॥ ११५ ॥

पुत्र अपनी मातासे बोला कि हे असहनशील करुणाहीन व वीर बुद्धिवाली माताजी तुम्हारा हृदय तो कालेलोहे के पिण्डी के समान कठोरहै। १। क्षत्रियों के समाचार बड़े आश्चर्ययुक्त होते हैं जिनके कारण हमको युद्धकरनेको कहती हो जैसे कोई दूसरेकी माता किसी अन्यपुरुषको समर करने के लिये प्रेरणा करती है। २। हम अकेले पुत्रको आप ऐसा वचन कहती हैं, हमारे न होनेपर जो तुमको संपूर्ण पृथ्वीका भी राज्य मिलजायगातो क्याहोगा। ३। व जब प्राणप्रिय पुत्र हम न रहेंगे तो तुमको भूषण भोग व प्राणों से भी क्या होगा। ४। इतना सुन माता बोली कि हे पुत्र पंडितोंकी सब अवस्था धर्म व अर्थही के निमित्त होती है उन्हीं धर्म अर्थोंको देखकरके हमने तुमको युद्ध करनेको प्रेरणाकी। ५। व यह काल देखने के योग्य पराक्रमसे युक्तहै, जो इससमय करने के योग्य युद्ध तुम न करोगे तो। ६। जो तुम अपनी देहके विषय में व शत्रुओं के विषय में दया-करोगे, तो तुम ऐसे अयश से संयुक्त होजावोगे, कि हम फिर कुछ भी न तुम से

CHAPTER CXXXV

"Your heart, merciless and brave mother," said the son "is like iron. The deeds of Kshatryas are often very wonderful. You instigate me to fight as one does the son of another woman. What will the kingdom of the whole world avail you when I am dead and gone? How will you enjoy ornaments, pleasure and life in the absence of your dear son?" "All the life of a wise man is given to dharm and worldly profits and it is with a view to these things that I instigate you to fight," said the mother in reply, "This is time for showing prowess. You will lose your fame irrecoverably, if you will not fight out of mercy to your enemy as well as to your own body. The bringing up of a coward son is like the affection of a she-ass towards her colt. Give up this foolish way of living which is

सञ्जय ॥ ७ ॥ खरीवात्सल्य माहुस्तन्नि सामर्थ्यमहेतुकम् । सद्भिर्विगर्हितं मार्गंत्यज मूर्खनिषेवितम् ॥ ८ ॥ अविद्यावै महत्यास्ति यामिमां संश्रिता प्रजाः । तवस्याद्यदि सद्वृत्तं तेनमेत्व प्रियोभवे ॥ ९ ॥ धर्मार्थ गुणयुक्तेन नतरेण कथञ्चन । दैवमानुष युक्तेन सद्भिराचरितेनच ॥ १० ॥ यो ह्येवमचनीतेन रमते पुत्रनप्तृणा । अनुत्थानवता चापि दुर्विनीतेन दुर्धिया ॥ ११ ॥ रमतेयस्तु पुत्रेण मोघं तस्य प्रजाफलम् । अकुर्वन्तो इह कर्माणि कुर्वन्तो निन्दिता नच ॥ १२ ॥ सुखं नैवेह नामुत्र लभन्ते पुरुषाधमाः । युद्धायक्षत्रिय सृष्ट सञ्जयेह जयाय च ॥ १३ ॥ जयन् वा वध्यमानो वा प्राप्नोतीन्द्र

कहतेंगी । ७ । जो सामर्थ्य हीन पुत्रके लिये निरर्थक वत्सलता कीजाती है वह गधीकीसी वत्सलता कहाती है जैसे उसका बच्चा करतो कुछभी नहीं सक्ता पर वह मम करतीही है, इस से अब सज्जन निन्दित व मूर्ख सेवित इस मार्ग को छोडो । ८ । जिस में यह सब प्रजा टिकी है कि इस देहही के नाशको आत्मनाश समझती है वह बडी भारी अविद्याहै, यदि तुमको भी वही अविद्या है तो बहुतही अच्छा यहतो शीलहीहै इसको मियही शाग, । ९ । इससे धर्म अर्थ गुणयुक्त, सज्जनों के कियेहुये व देवता मनुष्यों के भी करने के योग्य गुणों को धारण करो इनके विपरीत गुणोंको कभी न अंगीकार करो । १० । क्योंकि जो पुरुष अनम्र, दुर्बुद्धि दुर्विनीत पुत्र व नाती से युक्तहोता उसकी प्रजाका फल निष्फल होजाताहै जो पुरुष कर्म करतेही नहीं अथवा । ११ । जो निन्दित कर्म करतेहैं वे अधम पुरुष न यहां सुखपातेहैं न अन्त होनेपर स्वर्गादिही में सुखपातेहैं । १२ । हे संजय युद्ध करने के लिये व जीतने के निमित्त क्षत्रिय बनाये गयेहैं, इससे युद्ध में जीतने से व मारजानेपर भी इन्द्रके लोकको जातेहैं । १३ । अमित्रों

---

despised by wise men. It is the greatest ignorance that people believe the destruction of the soul with that of the body. It is well if you are beset with the same ignorance. My affection for you is natural without any regard for your conduct, but it is better to acquire habits that are worthy of men and gods and not to acquire bad ones 10. For he who has rude, unwise and proud sons and grandsons leads a useless life. Those who donot work or do sinful deeds, are not happy either here or in the next world. Kshatryas are made to fight and win and in case of death they go to region of Indra. The joy which a Kshatrya feels at conquering an enemy cannot be compared by that of residence in the holy palace of Indra. A person burning with anger should try to conquer his enemies however much he might have been insulted, for he cannot get peace

सलोकताम् । नशक्रभवने पुण्ये दिवि तद्विद्यते सुखम् । यदमित्रान् वशेकृत्वा क्षत्रियः सुखमेधते ॥ १४ ॥ मन्युना दह्य मानेन पुरुषेण मनस्विना । निकृते नेह बहुशः शत्रून्प्रति जिगीषया । १५॥ आत्मानं वा परित्यज्य शत्रुंवा विनिपात्यच । अतोन्येनप्रकारेण शांति रस्यकुतोभवेत् ॥१६। इहप्राज्ञोहिपुरुषः स्वल्पमप्रियमिच्छति । यस्यस्वल्पंप्रियंलोके ध्रुवं तस्याल्पमप्रियम् ॥१७॥प्रियाभावाच्च पुरुषो नैवप्राप्नोति शोभनम् । ध्रुवंश्चाभावमभ्येति गत्वागङ्गेवसागरम्॥१८॥ पुत्रउवाच। नेयमतिस्त्वया वाच्यामातः पुत्रेविशेषतः॥ कारुण्य मेवात्रपश्य भूत्वेहजडमूकवत्॥१९॥ मातोवाच।अतोमेभूयसी नन्दिर्यं देवमनुपश्यसि । चोद्यमाचोद्यस्येतद् भृशयेचोदयामिते ॥ २० ॥ अथत्वां पूजयिष्यामि हत्वा वै

को अपने वशमेंकर क्षत्रिय जो सुखपातेहैं, वह स्वर्गलोक में अतिपुण्य इन्द्र के मन्दिरमें भी नहीं है । १४ । क्रोधसे जलते हुये मनस्वी पुरुषको चाहिये कि उसका बड़ाभारी अपमानभी होगयाहो तो भी शत्रुओं के जीतनेही की इच्छा किये रहै । १५ । क्योंकि विना अपने मरजाने वा शत्रु का नाश किये अन्य उपायसे उसकी शान्ति कैसे होसक्ती है । १६ । इससंसार में प्राज्ञ पुरुष थोड़ा अप्रिय चाहतेहैं, व जो लोग थोड़ा प्रियं चाहते हैं, उनको वह अप्रिय होजाताहै, अर्थात् राजाको थोड़ेही में सन्तुष्ट न होजाना चाहिये । १७ । व प्रियके अभाव में पुरुष अच्छे पदार्थ को नहीं पाता, किन्तु फिर उसका अभावही होजाता है जैसे समुद्र में जाने से गंगाजीका अभावही होगया । १८ । इतना सुन पुत्र बोला, हे मातः ऐसी मति तुमको उचित नहीं है फिर मुझ पुत्र के विषयमें तो विशेष ऐसी मति न चाहिये, इससे जड़ व मूर्खों के समान करुणाही परदिको ।१९। यह सुन माता बोली कि इस वचन से हमारी बड़ीही समृद्धि हुई जो कि तुम ने हमको करुणा कर ने को कहा परन्तु हमारा वज्रका हृदय है इस से हम तुम्हें युद्धही करनेको कहती हैं । २० । जब तुम सब सिन्धुदेश निवासियों को जीत आओगे तब हम तुम्हा-

of mind without his own death or that of his enemy. Wise men seldom do ill to others and therefore they are despised by the wicked For want of his likings one does not get good things and is himself annihilated as the Ganges becomes extinct by mixing with the Ocean." But the son on hearing this said, "Mother, this opinion of yours is not good, especially as regards me your son. It were good for you to stay on mercy like a dumb man or an inanimate object " On hearing this the mother replied, "You show me respect by asking me to feel pity on you, but my heart is hard like vajra and therefore I bid you *fight* 20. I shall *give you praise* when you will have conquered the people of Sindh. The conquest is not impossible for you, it requires only exertion on your part.' "I

सर्वसैन्यधान्। अहं पश्यामि विजय कृच्छ्रभावितमेवते ॥ २१ ॥ पुत्रउवाच। अकोशस्यासहायस्य कुतः सिद्धिर्जयो मम। इत्यवस्थां विदित्वैतामात्मनात्मनि दारु-णाम् ॥ २२ ॥ राज्याद्भावो निवृत्तोमे त्रिदिवादिव दुष्कृतः। ईदृश्यांभवती पश्चि-दुपायमनुपश्यति ॥ २३ ॥ तन्मे परिणतप्रज्ञे सम्यक् प्रब्रूहि पृच्छते। करिष्यामि हि तत् सर्वं यथावदनुशासनम् ॥ २४ ॥ मातोवाच। पुत्र नात्मावमन्तव्य पूर्वाभिः समृद्धिभिः। अभूत्वाहिभवन्त्यर्था भूत्वा नश्यन्ति चापरे। अमर्षेणैव चाप्यर्था नारब्धव्या सुबालिशैः ॥ २५ ॥ सर्वेषां कर्मणां तात फले नित्यमनित्यता। अनित्य-मिति जानन्तो न भवन्ति भवन्ति च ॥ २६ ॥ अथ येनैव कुर्वन्ति नैव जातु भवन्ति ते। ऐकगुण्यमनीहाया अभावः कर्मणां फलम् ॥२७॥ अथ द्वैगुण्यमीहायां फलं भवति

री चढ़ाई करेंगी, सो कुछ कठिन नहीं है तुम्हारी विजय होगी परन्तु कष्टसाध्य है। २१। पुत्र बोला, कि न तो हमारे पास धन है न कोई सहायक है फिर हमारी जय कैसे होगी, अपनी इसी दारुण अवस्था को जान। २२। राज्यसे हम निवृत्त होगये जैसे पापी पुरुष स्वर्ग से निवृत्त होजाता है, अब इस विषयमें कोई उपाय आप देखती होंतो। २३। हम पूंछते हैं बताइये, जैसा आप कहेंगी हम सब करें गे, कुछभी अंतर न पड़ेगा। २४। माता बोली, हे पुत्र जिसके पास धन राज्यादि की समृद्धि न रहजाय उसे अपने आत्मा का अनादर न करना चाहिये, क्योंकि अर्थ धर्म कामादि कहीं नहीं होते पर हो जाते हैं और कहीं होते हैं वे भी नष्ट होजातेहैं। २५। परन्तु अमर्षही के साथ अनाड़ियों को भी अर्थादि सिद्ध करने का उपाय न करना चाहिये किन्तु आदरहीके साथ करना चाहिये, य हेतात सब कर्मों के फल में अनित्यताही है, इस से जो पण्डित लोगहैं वे अनित्य जानते हैं कभी ऐश्वर्य्य पाजातेहैं व कभी उन के अर्थ नहीं सिद्ध होते। २६। इस से जो कर्म फलको अनित्य जान कर्म्मही नहीं करते वेतो किसी प्रकार फल पातेही न हीं, क्योंकि न करनेका तो यही एकही फलही है कि फल न पावे। २७। व जो

have neither wealth nor helpers," said the prince, "how can I win? I have therefore given up the idea of ruling over the kingdom as a sinful man cannot hope for paradise. Tell me if you know any remedy to this and I shall do accordingly." He who has lost all wealth and kingdom," said the mother, "should never think ill of self, for worldly things come and go and are not stationary. Inexperienced men should not try to acquire wealth by harsh means, they should try gentle ways. The results of all actions are of short duration. Wise men know that wealth comes and goes. Those who donot begin a work because they know that the results of works are not stationary cannot get the fruit, but those who exert them-

वा न वा। यस्य प्रागेव विदिता सर्वार्थानाम नित्यता ॥ २८ ॥ नुदेद्वृद्धिसमृद्धीस प्रतिकूले नृपात्मज । उत्थातव्य जागृतव्य योक्तव्य भूतिकर्मसु ॥ २९ ॥ भविष्यतीत्येव मन कृत्वा सततमव्यथै । मङ्गलानि पुरस्कृत्य ब्राह्मणाश्चेश्वरे सह ॥ ३० ॥ प्राज्ञस्य नृपतेराशु वृद्धिर्भवति पुत्रक । अभिवर्तति लक्ष्मीस्त प्राचीमिव दिवाकर । ॥ ३१ ॥ निदर्शनान्युपायाश्च बहून्युद्धर्षणानि च । अनुदर्शितरूपोसि पश्यामिकुरु पौरुषम् । पुरुषार्थमभिप्रेत समाहर्तुमिहार्हसि । क्रुद्धान् लुब्धान् परिक्षीणा नवक्षितान् विमानितान् ॥ ३२ ॥ स्पर्धिनश्चैव ये केचित्तान् युक्त उपधारय । एतेनत्व प्रकारेण महतो भेत्स्यसे गणान् ॥ ३४ ॥ महावेग इवोद्भूतो मातरिश्वा वलाहकान् । तेषाम

लोग हाथ पैर चलाय कुछकर्म्म करते हैं उस में दोफल होतेहैं कभी सिद्धि कभी असिद्धि, व जिसको सब अर्थोंकी अनित्यता प्रथमही से विदितहै । २८ । हे राजकुमार वह अपनी पीडा व शत्रुका ऐश्वर्य्य दोनों का दूरकरै इस से युद्धादि कर्म्म करनेके लिये उठखडे होना चाहिये, जाग उठनाचाहिये व बहुतसे कर्म्मों के करने में तैयार रहना चाहिये । २९ । व यह कार्य्य सिद्धही होगा एसा अपने मनमें कर जो पुरुष मङ्गल वस्तुओं को आगेकर ब्राह्मणों व देवताओंकी सहायसे करता है । ३० । उस भाग्यराजाकी वृद्धि बहुतही शीघ्रहोती है व उसको लक्ष्मी प्राप्त होती है जैसे सूर्य्य पूर्व्व दिशा में उदय होतेही हैं । ३१ । बहुतसे दृष्टान्त व उपाय व उत्कर्षताकी बातें तुमसीखेहो सीखनेकी आवश्यकता नहीं अब पौरुष करो हाथपर हाथधरे बैठनेसे कुछ न होगा । ३२ । अब पुरुषार्थहीं को अपना अभीष्ट जान उसको ग्रहणकरो, व जो लोग क्रोधी लोभी क्षीणबल अहङ्कारी, अपमानयुक्त । ३३ । व स्पर्द्धा रखतेहों उन को योग्य हो युक्तिसे अपने वशमें लावो, इस प्रकार से तुम बडे २ गणोंको मारडालोगे । ३४ । व जितने वीर तुम्हारी ओर हैं सब को मासिक मथन देदिया करो व उनको भोजन कराय पीछे तुम करते रहो

---

selves are either successful or unsuccessfu. He who knows the fickleness of fortune must remove his own troubles by depriving the enemy of his wealth You must rise up to fight Awake and be ready to do great deeds of prowess. He who is sure of his success and does his work along with propitious things and the help of Brahmans and gods, is as sure of getting wealth and greatness as the sun rises in the east You have learnt many a parable, remedy and history of great deeds and want no more training Do deeds of prowess, to sit idle is quite useless Let prowess be your watch word and contrive wisely to bring those who are angry, avaricious, weak, self conceited, low and envious under your power Thus you will be able to destroy large numbers. Pay your warriors their salaries regularly, take

अग्रदायी स्या कल्पोत्थायी प्रियवद । तेत्वाप्रिय करिष्यन्ति पुरोधास्यान्तिच ध्रुवम् ३५ यदेव शत्रुर्जानीयात् सपत्नत्यक्त जीवितम् । तदैवास्मादुद्विजते सर्पाद्वेश्मगतादिव ॥ ३६ ॥ तविदित्वा पराक्रान्त वशेन कुरुते यदि । निर्वादैर्निर्वदेदेनमन्त तस्तद्भ विष्यति ॥ ३७ ॥ निर्वादादास्पद लब्धा धनवृद्धिर्भविष्यति । धनवन्तहि मित्राणि भजन्ते चाश्रयन्ति च ॥ ३८ ॥ स्खलितार्थं पुनस्तानि सत्यजन्ति च बान्धवा । अप्यास्मिन्नाश्वसन्ते च जुगुप्सन्ते च तादृशम् ॥ ३९॥ शत्रु कृत्वाय सहाय विश्वास मुपगच्छति । अत- सम्भाव्यमेवैतय द्राज्य प्राप्नुयादिति ॥ ४० ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विदुलापुत्रानुशाने पंचत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३५ ॥

प्रातःकाल सबसे प्रियही वचन कहो, ऐसा करने से तुम शत्रुओंको ऐसा हटाओ गे जैसा कि पवन बादलोंको हटाताहै । ३५ । वे लोग तुम को अवश्य प्रिय समझ तुम्हारे आगे युद्ध करने को चलेंगे जब जीने की इच्छा किये हुआ शत्रु अपने शत्रु को मरने पर उतारू देखता है तो उस से भय खाता है, जैसे जिस घर में सर्प रहता है उस से लोग भय खातेहैं । ३६ । व जो शत्रुबलवान् हो अशक्ति के कारण वश में न करसके तो अच्छे दूतों की द्वारा साम दाम भेदसे उसे अपने वशमें लावे ऐसा करने से अवश्य शत्रु वश में आजायगा । ३७ । इस प्रकार परिनिष्ठित होने से स्थान मिलजाता है व जब स्थान मिलता तो धन वृद्धि भी होती है, व फिर धनवान पुरुष के समीप मित्रलोग आते व आश्रयी होतेहैं । ३८ । व जब उस के पास धन नहीं रहजाता तो मित्रवर्ग व बन्धुवर्ग सब उसे छोड़ देते हैं, व उसका विश्वास नहीं करते वरन उसकी निन्दा करने लगतेहैं । ३९ । जो पुरुष रिपु की सहाय पर विश्वास रखता है उसको राज्य की आशा नहीं करनी चाहिये । ४० ।

your food after feeding them and speak kindly to all. By so doing you will turn back your enemies as the wind drives away the clouds and your men will pleasantly fight your battles. An enemy caring for his own life, is afraid to see his opponent ready to lay down his life as people are afraid of a serpent creeping in their homes. A powerful enemy should be brought into subjection by means of *Sam*, *dam* and *bhed* through skilful spies You are sure to have your enemy under your power by this method By firmness you will gain possession over a place, your wealth will increase and friends will gather round you. Friends and relations will leave a person who has lost his wealth and will have no longer trust in him He who relies upon the help of his enemy can have no hope of success."10.

मातोवाच ।नैवराज्ञादरःकार्य्यो जातुकस्याञ्चिदापदि । अथचेदपिदीर्णःस्यान्नैववर्त्तेत दीर्णवत्॥१॥दीर्णंहि दृष्ट्वा राजानं सर्वमेवानुदीर्य्यते। राष्ट्रबलममात्याश्च पृथक्कुर्वन्तिते मतीः॥२॥ शत्रूनेके प्रपद्यन्ते प्रजहत्यपरे पुनः । अन्येतु प्रजिहीर्षन्तिये पुरस्ताद्विमानिताः ॥३॥ य एवात्यन्तसुहृदस्त एनं पर्य्युपासते । अशक्तयः स्वस्तिकामा बद्धवत्सा इला इव ॥ ४ ॥ शोचन्तमनुशोचन्ति पतितानिव बान्धवान् । अपि ते पूजिताः पूर्व मपि ते-सुहृदो मताः ॥ ५ ॥ ये राष्ट्रमभिमन्यन्ते राज्ञो व्यसनमीयुषः । मा दीदरस्त्वं सुहृदो मा

अध्याय १३६ ॥

मातावोली कि राजाको किसीभी विपत्ति में भय न करनी चाहिये व जो कभी भयभीतहो तोभी भीतों के समान आचरण न करै अच्छी तरह ढाढ़स बांधेरहे जिसमें शत्रु आदि न जान पावें कि यहडरगयाहै । १ । क्योंकि राजाको भयभीत देख सब निर्भय होजाते हैं इससे देशनिवासी सेनाके लोग व मन्त्री दीवान आदि सब पृथ्वी उससे छीन अपने २ वशमें पृथक् २ करलेते हैं । २ । इन अमात्यादिकों में कोई २ तो जाय शत्रुओंको मिलजातेहैं, व कोई २ उसे छोड़ अन्यत्र चलेजातेहैं व जिन लोगोंका पूर्वसमय में अपमान हुआहै वे राज्यादि लेलेनेही का विचार करते हैं, । ३ । उससमयमें जो कोई अत्यन्तही सुहृद होते वही लोग उसके पास रहजातेहैं, क्योंकि उनलोगों में शक्ति तो रहतीही नहीं इससे स्वस्तिकी कामनासे वहीं पड़े रहतेहैं जैसे जिन गाइयों के बछड़े घरोंमें बँधे हैं वे कहीं नहीं जासक्तीं । ४ । किन्तु जब अपना भाई बन्धु शोच करने लगता है तो वेभी शोच करते हैं, जैसे पति बान्धवों को लोग शोचतेहैं, भला तुम्हारे भी तो बहुतसे सुहृदहैं तुमने उन की सेवा शुश्रूषा आदरभाव कभी कियाहै या नहीं । ५ । व जिन लोगोंको राज्यमें ऐसा अभिमान रहताहै कि रक्षा करनेके लिये यह राज्य हमाराही है राजा केवल दुःखही के भागी हैं ऐसे सुहृदोंसे विगाड़ कभी न करा नहीं तो जब

CHAPTER CXXXVI

"A king should never lose heart in a difficulty," said the mother, "he should not let his enemy know that he is terrified. People become bold when they see the king terrified and seize on his lands in parts. Some of the ministers join the enemy, others leave him to go elsewhere. Those who were once badly treated by him try to regain strength. *Only the best of friends remain steady in the time of misery* and being powerless they donot leave the place like the cows whose calves are tied in the house. They are grieved at the misery of their kinsmen. You have many such friends and must have experienced a

त्वा दीर्ण प्रहासिषुः ॥ ६ । प्रभाव पौरुष बुद्धिं जिज्ञासन्त्या मया तव । विदधत्या स माश्वास मुक्त तेजो विवृद्धये ॥ ७ । यद्येतत् सविजानासि यदि सम्यग्ब्रवीम्यहम् । कृत्वा सौम्यमथात्मान जयायोत्तिष्ठ सञ्जय ॥८॥ अस्ति न कोष निचयो महान्हि विदितस्तव । तमहं वेद नान्यस्तमुपसम्पादयामि ते ॥ ९ ॥ सन्ति नैकशता भूयः सुहृदस्तव सञ्जय । सुख दुःख सहा वीर शतार्हा ह्यनुवर्त्तिनः ॥ १० ॥ तदृशा हि सहाया वै पुरुषस्यबुभूषत । इष्टं जिहीर्षत किञ्चित् सचिवा शत्रु कर्षन ॥११॥ तस्यास्त्वीदृशक वाक्यं श्रुत्वापिस्वल्पचेतस । तमस्त्वपागमत्तस्य सुचित्राथपदाक्षरम् ॥१२॥ पुत्रउवाच उदके भूरिय धार्या मर्त्तव्य प्रवणे मया । यस्य मे भवती नेत्री भविष्यद्भूति दर्शिनी

तुमको भयभीत देखेंगे तो वही तुम्हारा राज्य छीनलेंगे । ६ । हम सब तुम्हारा प्रभाव पौरुष बुद्धि जानना चाहती हैं, व ऐसी २ बातें कह २ तुम को धैर्य कराती हैं व जो कुछ कहा वह तेजबढ़ाने ही के लिये कहा है । ७ । जो यह जानते हो कि ये हमारे हितकी कहती हैं सो भी अच्छीही बात तो अब हम कहती हैं कि अपने को अच्छी तरह प्रसन्न कर जीतने के लिये उठो । ८ । व हमारे बड़ा भारी खजाना भी इकट्ठा है उसे तुम नहीं जानते, उसे तुम क्या हमारे सिवाय और कोई भी नहीं जानता पर वह सब कोष हम तुमको देंगी । ९ । हे संजय तुम्हारे बहुत से सुहृद हैं पर सब एक प्रकार के नहीं हैं जो बराबर सुख दुःख सहते हुये संग्रामसे न लौटें । १० । जिस पुरुष के ऐसे मन्त्र्यादि होते कि स्वामीके अनुकूल ही सब कार्य करते हैं वे लोग अपने स्वामीका इष्ट कहीं से लेकर भी पूरा करते हैं । ११ । तिस के ऐसे वचन सुन स्वल्प चित्त वालों को भी क्रोध आगया । १२ । इस से पुत्र बोला कि यह पृथ्वी जल में डूबी जातीथी इसका उद्धार मैं करूंगा, व युद्ध में मरूंगा निश्चय अब बैठा नहीं रहूंगा, क्योंकि जिस मेरे होनहार ऐश्वर्यके

---

similar treatment from them. Those who are proud of their power in the kingdom and have no respect for the king, will seize the kingdom whenever they see that you are afraid. I wished to know the extent of your prowess and wisdom and have said all these things to encourage you. Rise up for conquest if you believe me to be your well wisher I have a large treasury full of wealth which you donot know and which none but myself know of. I shall give you all that. You have many friends, my son, but all those are not so brave as not to turn back from the field of battle. 10 Faithful ministers perform the work of their master even though they have to risk their own credit.[1] These words were sufficient to enrage even low-minded

॥ १३ ॥ अहं हि वचनं त्वत्तः शुश्रूषुरपरापरम् । किञ्चित् किञ्चित् प्रतिवदं स्तूष्णीमासं मुहुर्मुहुः ॥ १४ ॥ अतृप्यन्नमृतस्येव कृच्छ्राल्लब्धस्य बान्धवात् । उद्यच्छाम्येष शत्रूणां नियमार्थं जयायच ॥ १५ ॥ कुन्त्युवाच । सदश्व इव स क्षिप्तः प्रणुन्नो वाक्यसायकैः तच्चकार तथा सर्वं यथावदनुशासनम् ॥ १६ ॥ इदमुद्धर्षणं भीमं तेजोवर्द्धमनुत्तमम् । राजानं श्रावयेन्मन्त्री सीदन्तं शत्रुपीडितम् ॥ १७ ॥ जयो नामेति हासोऽयं श्रोतव्यो विजिगीषुणा । महीं विजयते क्षिप्रं श्रुत्वा शत्रूंश्च मर्दति ॥ १८ ॥ इदं पुंसवनञ्चैव वी राजननमेवच । अभीक्ष्णं गर्भिणी श्रुत्वा ध्रुवं वीरं प्रजायते ॥ १९ ॥ विद्याशूरं तपःशूरं दानशूरं तपस्विनम् । ब्राह्मयाश्रिया दीप्यमानं साधुवादे च सम्मतम् ॥ २० ॥ अर्चिष्मन्तं बलोपेतं महाभागं महारथम् । धृतिमन्तमनाधृष्यं जेतारमपराजितम् ॥ २१ ॥ निय

देखनेवाली आप मेरकहैं । १३ । हम जो कुछ २ सुन २ थोड़ा कहीं २ बोले व बहुत चुपरहे उसका कारण यहहै कि आपके वचन सुननेकी हमको इच्छाथी कि देखें कैसी बातें सिखलाती हैं । १४ । सो तुम्हारे वचन हमको ऐसे मिथलगे कि जैसे कोई बड़े कष्टसे किसी अपने भाई बन्धुके द्वारा अमृत पावे इस से हम अभी शत्रुओंके नाशकरने व विजयकरने के लिये उद्यतहो वहां जातेहैं । १५ । कुन्तीजी कृष्णचन्द्रजीसे बोलीं कि जब वह विदुलाका पुत्र वाग्बाणों से इसप्रकार प्रेरित हुआ तो सिखानेवालकी ताड़नासे प्रेरित घोड़ेके समान चंचलहो वह चला व जैसी शिक्षा उसकी माता ने की थी सब उसीप्रकार उसने मानी व उसी के अनुकूल कार्य्य किया । १६ । इस भयंकर तेज बढ़ाने वाले इतिहासको सुनाने से राजा स्वतन्त्र होताहै यह जयनामवाला इतिहास उसको सुनना चाहिये जो विजयकी इच्छाकरताहै इसकेसुननेसे शत्रुओंकोमार करपृथ्वी कोजीतेगा इसकेसुननेसे गर्भिणी वीरपुत्रको उत्पन्न करेगी ।१९। विद्याशूर तपशूर और दानशूर ब्राह्मण श्रीविद्यासे

---

people and the son said on hearing them, "I shall save the earth from drowning and shall not lie down idle without fighting; for I have a leader to greatness like you. I wanted to learn from you a great deal and therefore had to interrupt you during your talk. Your words have proved to me useful like the water of life and I shall forthwith go to fight and conquer the enemy." Kunti said to Shree Krishn that Vidula's son acted upon her advice and was successful. This ancedote increases glory by leading to success. This history of conquest must be heard by him who wishes success. The hearer will conquer land, will beget brave sons and will improve his knowledge, asceticism and charity. The offspring of a Kshatrya who

न्तारमसाधूनां गोप्तारं धर्मचारिणाम् । ईदृशं क्षत्रिया सूते वीरं सत्यपराक्रमम् ॥ २२ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि विदुलापुत्रानुशासनसमाप्तौ षट्त्रिंशादधिकशततमोऽध्यायः १३६ ॥

कुन्त्युवाच । अर्जुनं केशव ब्रूयास्त्वयि जाते स्म सूतके । उपोपविष्टा नारीभिराश्रमे परिवारिता ॥ १ ॥ अथान्तरिक्षे वागासीद्दिव्यरूपमनोरमा । सहस्राक्षसमः कुन्ति भविष्यत्येष ते सुतः ॥ २ ॥ एष जेष्यति सङ्ग्रामे कुरून् सर्वान् समागतान् । भीमसेन द्वितीयश्च लोकमुद्वर्त्तयिष्यति ॥ ३ ॥ पुत्रस्ते पृथिवी जेता यशश्चास्य दिवं स्पृशेत् । हत्वा कुरूंश्च सङ्ग्रामे वासुदेवसहायवान् ॥ ४ ॥ पित्र्यमंशं प्रनष्टञ्च पुनरप्युद्धरिष्यति । भ्रातृभिः सहितः श्रीमांस्त्रीमेधानाहरिष्यति ॥ ५ ॥ सत्यसन्धो बीभत्सुः सव्यसाची यथा

दीपितहोगा। २० । प्रभावान बलवान अपराजित महारथी गुणवान, दुष्टोंके शिक्षक धर्मचारी सत्य पराक्रमी और बलवान क्षत्रियसूत होंगे २२ ॥

अध्याय ॥ १३७ ॥

कुन्तीजी बोलीं कि हे केशव अर्ज्जुन से यह कहना कि जब तुम उत्पन्न हुये थे तो उससमय हम सब स्त्रियोंके समीप बैठीथीं । १ । कि इतने में दिव्यरूप मनो रम आकाशवाणी हुई कि हे कुन्तीजी तुम्हारा यह पुत्र इन्द्र के समान पराक्रमी होगा । २ । व यह भीमसेनके साथ समरमें सब कौरवोंको जीतलेगा व शत्रुओंको व्याकुल करावेगा । ३ । व यह तुम्हारा पुत्र पृथ्वीभरको जीतेगा, व इसका यश स्वर्गतक पहुँचेगा व वासुदेवकी सहायतासे संग्राममें सबको कौरवोंमार । ४ । नष्ट होगयाहुआ अपने पिताका राज्य फिर अपने पास लावेगा, व अपने भाइयोंके संग तीन अश्वमेध यज्ञ करेगा ।५। वे सत्यप्रतिज्ञ, बीभत्सु, सव्यसाची

---

hears this, will be brave, glorious, inconquerable, virtuous and of true prowess.

CHAPTER CXXXVII

Kunti asked Keshav to repeat before Arjun the following words:—"I was sitting in the midst of women at the time when you were born. We all heard the words of the heavenly voice which ran thus:—'This son of yours, Kunti, will be like Indra in prowess. Bhim and he will conquer all the Kauravas in battle and will make the enemies ill at ease. This son of yours will conquer the whole earth; his fame will reach the heavens and having destroyed all the Kauravas with the help of Shree Krishn, he will regain the lost

च्युत । तथा त्वमेव जानासि बलवन्तं दुरासदम् ॥ ६ ॥ तथा तदस्तु दाशार्ह यथा वागभ्यभाषत । धर्मश्चेदस्ति वार्ष्णेय तथा सत्यं भविष्यति ॥ ७ ॥ त्वञ्चापि तत्तथा कृष्ण सर्वं सम्पादयिष्यसि । नाहंतदभ्यसूयामि यथा वागभ्यभाषत ॥ ८ ॥ नमोधर्माय महतेधर्मो धारयति प्रजाः । एतद्धनञ्जयो वाच्यो नित्योद्युक्तो वृकोदरः ॥९॥ यदर्थं क्षत्रियासूते तस्य कालोयमागतः । नहि वैरं समासाद्य सीदन्ति पुरुषर्षभाः ॥ १० ॥ विदिता ते सदा बुद्धिर्भीमस्य न स शाम्यति । यावदन्तं न कुरुते शत्रूणां शत्रुकर्शन ॥ ११ ॥ सर्वधर्मविशेषज्ञां स्नुषांपाण्डोर्महात्मनः । ब्रूया माधवकल्याणीं कृष्णां कृष्णांयशस्विनीम् ॥ १२ ॥ युक्तमेतन्महाभागे कुले जाते यशस्विनि । यन्मे पुत्रेषु सर्वेषु यथावत्त्वमवर्त्तिथाः ॥ १३ ॥ माद्रीपुत्रौ च वक्तव्यौ क्षत्रधर्मरतावुभौ । विक्रमेणार्जितान् भोगा

व अच्युत जैसे अर्ज्जुनहैं उनको केशव तुम्हीं जानतेहो कि कैसे दुःखसे मारहोने के योग्यहैं । ६ । हे कृष्ण इससे जैसा आकाशवाणी ने कहाथा वह वैसाही हो, व जो धर्म सत्य २ है तो वहभी सत्यही होगा । ७ । व हे कृष्ण तुमभी वैसाही करोगे जैसा कि आकाशवाणी ने कहाथा हम तुम्हारी कुछ निन्दा नहीं करतीं कि हमारे पुत्रके सहायक होओ । ८ । व महात्मा धर्म्मको नमस्कार है क्योंकि प्रजाओंको वही धारण कराता है, व अर्ज्जुन और भीमसेन से यह कहदेना कि । ९ । जिसकेलिये क्षत्रियकी स्त्री पुत्र करती है उसका यह काल आगया है वैरकरके पुरुषश्रेष्ठ कहीं फिर पीछे को नहीं पछरते । १० । व आप जानतेहैं कि जबतक शत्रुओंका नाश न करदेंगे तबतक भीमसेन शान्त न होंगे । ११ । हे कृष्ण सब धर्मों को अच्छेप्रकार जाननेवाली महात्मा पाण्डुजी की पुत्रवधू , यशस्विनी व कल्याण युक्त द्रौपदी से यह कहना कि । १२ । जो तुम हमारे सब पुत्रों में यथायोग्य वर्त्ताव वर्त्तती हो वह बड़े कुलीन कुल में उत्पन्न हुई यशकरनेवाली तुमको उचितही है । १३ । व क्षत्रिय के धर्म्मपर टिकेहुये नकुल सहदेवसे

kingdom of his father and that he and his brothers will perform the Ashwamedh sacrifice." You know, Keshav how brave, truthful and unconquerable in war Arjun is. *Let the words of the heavenly voice* prove true. I strongly hope that you will assist my son in verifying the divine words. *I bow to Dharm who supports all creatures.* Be pleased to tell Arjun and Bhim that the time has now come for them to show the prowess for which a kshatrya woman brings forth her sons and that brave people never turn back when they engage in a quarrel. You know that Bhimsen will not be pacified without destroying the enemies. Tell Draupadi, the glorious daughter-in-law of Pandu, that she is doing well in having equal regard, for all my sons and this is worthy of a glorious princess like her born in a

न्वृणीत जीवितादपि ॥ १४ ॥ विक्रमाधिगताह्यर्था क्षत्रधर्मेणजीवत । मनोमनुष्यस्य सदा प्रीणन्ति पुरुषोत्तम ॥ १५ ॥ यच्च व प्रेक्षमाणानां सर्वधर्मोपचायिनाम् । पाञ्चा लीपरुषाण्युक्ता को नु तत् क्षन्तुमर्हति ॥ १६ ॥ न राज्यहरणं दुःखं द्यूतेचापि पराजयः । प्रव्राजनं सुतानां वा न मे तद्दुःखकारणम् । १७॥ यत्र सा बृहती श्यामा सभायां रुदती तदा । अश्रौषीत् परुषा वाचस्तन्मे दुःखतरं महत् ॥ १८ ॥ स्त्रीधर्मिणी वरारोहा क्षत्र धर्मरता सदा । नाध्यगच्छत्तदा नाथं कृष्णा नाथवती सती ॥१९॥ तं वै ब्रूहि महाबाहो सर्वशस्त्रभृतां वरम् । अर्जुनं पुरुषव्याघ्रं द्रौपद्याः पदवीञ्चर ॥ २० ॥ विदितंहि तवात्य-

---

कहना कि चाहे प्राणभी जातेरहें तोभी अपने पराक्रमही से इकट्ठे कियेहुये भोगों को अंगीकार करें। १४। हे पुरुषोत्तम क्षत्रिय धर्म से जीविका करनेवाले मनुष्य के विक्रमही से इकट्ठे किये सब अर्थ उसको तृप्तकराते हैं । १५ । जो कि सब धर्म करने व जाननेवाले तुमलोगों के सामने दुश्शासनादिकोंने द्रौपदीको कठोर वचन कहे उनको कौन पुरुष क्षमाकरसक्ता है ।१६। न हमको राज्य हरजाने का दुःख है न जुआ खेलने में हारजाने का व हमारे पुत्र वनको निकाल दिये गये वहभी हमारे दुःखका कारण नहीं है। १७ । किन्तु जो केशखींचेजाने के समय सभामें अनाथों के समान रोदन करती द्रौपदी के कठोर वचन हमने सुने उनसे अधिक दुःख हमको है और कुछ नहीं है । १८ । क्योंकि पांचपति महा पराक्रमी नाथों के होनेमें भी अनाथके समान रजोधर्म को प्राप्त द्रौपदी ने किसी को नाथ न पाया। १९ । इससे हे भगवन् कृष्ण सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अर्ज्जुन से कहना कि हे पुरुष सिंह द्रौपदी के मार्गपर चलो जैसे उनकी दुर्दशा कौरवोंने की है वैसेही तुम शत्रुओं की स्त्रियोंके विधवा होनेका उपाय करो

---

noble family. Tell Nakul and Sahadev who are firm on the path of virtue, that they must at the risk of their own lives, enjoy such *things only as are acquired by their prowess* Things collected by prowess are sure to please a man who leads the life of a kshatrya. Who can pardon the harsh words which Dushasan and others spoke to Draupadi within hearing of the great and virtuous men I am neither grieved at the loss of the kingdom in gambling nor at the exile of my sons, but I heard the harsh words which were said to Draupadi, who was dragged by the hair and was weeping, and they rankle within my breast In spite of her having five brave husbands, Draupadi who was in her monthly course, did not find any one to help her in her distress Tell Arjun, the best of warriors to revenge the wrongs of Draupadi by making widows of the wives of the

न्तं क्रुद्धाविव यमान्तकौ । भीमार्जुनौ नयेतां हि देवानपिपरांगतिम् ॥ २१ ॥ तयोश्चैतद्यशानं यत् सा कृष्णा सभागता । दुःशासनश्च यञ्चेमिं कटुकान्यभ्यभापत ॥ २२ ॥ पश्यतां कुरुवीराणां तच संस्मारयेः पुनः । पाण्डवान् कुशलं पृच्छेः सपुत्रान् कृष्णया सह ॥ २३ ॥ माश्चकुशलिनों श्वास्तेषु भूयो जनार्दन । अरिष्टं गच्छ पन्थानं पुत्रान्मेप्रतिपालय ॥ २४ ॥ वैशम्पायन उवाच । अभिवाद्याथ तां कृष्णः कृत्वा चापिपर्यक्षिणम्। निश्चक्राम महावाहुः सिंहखेलगतिस्ततः ॥ २५ ॥ ततो विसर्जयामास भीष्मादीन्कुरुपुङ्गवान् । आरोप्याथ रथे कर्णं प्रायात् सात्यकिना सह ॥२६॥ ततःप्रयाते दाशार्हे कुरवः संगतामिथः । जजल्पुर्महदाश्चर्यं केशवेपरमाद्भुतम् ॥२७॥ प्रमूढापृथिवीसर्वा मृत्युपाश

। २० । आपको अच्छीतरह विदित है कि क्रोधकरने पर भीमसेन व अर्जुन यमराज व कालही के समान होजातेहैं इससे उससमय जो उनके सामने इन्द्रादि देवगणभी आवें तो उनको भी मरणता को पहुँचावें । २१ । द्रौपदी के सभामें लाये जानेसे भीम और अर्जुनकी बड़ी निन्दाहुई कुरुवीरों के देखते जो पांडवोंको कष्ट हुआ वह तुमको विदित है मेरी ओरसे पांडवों की कुशल पूछना अब तुम सुख पूर्वक यहांसे जाओ और पांडवों का हितकरो । २४ । वैशम्पायनजी बोले कि सिंहके खेलके समान चलनेवाले श्रीकृष्णचन्द्र आनन्द कन्द कुन्तीजी के प्रणाम व प्रदक्षिणाकर उनके स्थानसे विदाहुये । २५ । व भीष्मपितामहादि कौरव श्रेष्ठों को विदाकर कर्ण व सात्यकि सहित कृष्णचन्द्र रथपर चढ़कर चले । २६ । कृष्णचन्द्रजी के चलेजानेपर सब कौरवलोग आपसमें उनके विषयकी आश्चर्ययुक्त वार्ता करनेलगे । २७ । कि सब पृथ्वी मृत्युकी फांसी में बंधी है

Kauravas for the insults which they had offered to Draupadi. You know well that Bhim and Arjun when angry become like Yamraj and will kill Indra and other gods who would withstand them in their fury. Bhim and Arjun were much insulted by Dushasan when Draupadi was brought into court. You know the wrongs which the Pandavas suffered at the hands of the Kauravas. Seek the welfare of the Pandavas. Go, safe and sound from this place, Murari, and do good to the Pandavas." Vaishampayan says that Shree Krishn walked away like a lion after bowing to Kunti and going round her. And having taken leave of Bhishm the grandfather and other best of Kauravas he mounted his chariot along with Karan and Satyaki. After the departure of Shree Krishn the Kauravas talked of the wonderful deeds of Shree Krishn and remarked that

वशीकृता । दुर्योधनस्य बालिश्यान्नैतदस्तीति चाब्रुवन् ॥२८॥ ततो निर्याय नगरात् प्रययौ पुरुषोत्तमः। मन्त्रयामास च तदा कर्णेन सुचिरं सह ॥२९॥ विसर्जयित्वा राधेयं सर्वयादवनन्दनः। ततो जवेन महता तूर्णमश्वानचोदयत् ॥ ३० ॥ ते पिबन्त इवाकाशं दारुकेण प्रचोदिताः। हया जग्मुर्महावेगा मनोमारुतरंहसः ॥३१॥ ते व्यतीत्य महाध्वानं क्षिप्रं श्येना इवाशुगाः। उपप्लव्यमुपप्लव्यं शार्ङ्गधन्वानमावहन् ॥ ३२ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कुंतीवाक्ये सप्तत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः १३७ ॥

अब दुर्योधनकी मूर्खता के कारण यह राज्य नष्टहोजायगा । २८ । जब कृष्ण चन्द्रजी चलके हस्तिनापुरके बाहरगये तो कर्ण से इसी विषय में कुछ सम्मतिकिया । २९ । फिर कर्णको विदाकर बड़े शीघ्र चलनेवाले घोड़ोंको अतिवेग चलवा कर सब यादवों को आनन्दित कराते हुलसाते चले । ३० । दारुक से चलाये हुए उत्तम घोड़े मानो आकाश को पीते हुए चले और पवनके वेगके साथ विराट नगरको श्येनकी समान मार्ग को नांघते उपप्लव्य स्थानपर पहुँचे ॥ ३२ ॥

Duryodhan would bring *ruin* upon all the land by his own *folly*. When Shree *Krishn* was out of Hasthinapur he had some talk with Karan about the matter and having bid him farewell he drove in his chariot drawn by swift horses, making the hearts of the Yadavas joyful. The good horses guided by *Daruk the driver* seemed to touch the sky and flew like a hawk towards Viratnagar and reached a place known as *Upaplavya after crossing the long* way. 32.



वैशम्पायन उवाच । कुन्त्यास्तु वचनं श्रुत्वा भीष्मद्रोणौ महारथौ । दुर्योधनमिदं वाक्यमूचतुः शासनातिगम् ॥१॥ श्रुतं ते पुरुषव्याघ्र कुन्त्या कृष्णस्य सन्निधौ । वाक्य मर्थवदत्युग्रमुक्तं धर्म्यमनुत्तमम् ॥ २ ॥ तत् करिष्यन्ति कौन्तेया वासुदेवस्यसम्मतम् । न हि ते जातु शाम्येरन्नृते राज्येन कौरव ॥३॥ क्लेशिता हि त्वया पार्था धर्मपाशसितास्तदा । सभायां द्रौपदी चैव तैश्च तन्मर्षितं तव ॥ ४ ॥ कृतास्त्रं ह्यर्जुनं प्राप्यभीमञ्च कृतनिश्चयम् । गाण्डीवञ्चेषुधी चैव रथञ्च ध्वजमेवच ॥ ५ ॥ नकुलं सहदेवञ्च बलवीर्यसमन्वितौ । सहायं वासुदेवञ्च न क्षंस्यति युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ प्रत्यक्षन्ते महाबाहो

अध्याय ॥ १३८ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि हे महारथी भीष्म व द्रोणाचार्यजी कुन्ती के ऐसे वचन सुन आज्ञाभंगकारी दुर्योधन से यह वचन बोले कि । १ । हे पुरुष व्याघ्र कुन्ती ने कृष्णचन्द्रसे जो वचन कहे तुमने सुने जो कि सब धर्मयुक्त व अति उग्र थे । २ । सो वासुदेवकी सम्मति से पाण्डव लोग सब कुन्ती के कहनेही के अनुसार करेंगे, विना अपना आधा राज्य पाये किसी प्रकार शान्त न होंगे । ३ । व उस समय पाण्डव लोग सब धर्म की फांसी से बँधे थे इस से तुमने, उनको महा क्लेशदियाथा कि सभामें द्रौपदीके केश तुमने खिचवाये वहभी तुम्हारा अन्याय उन्हों ने सह लिया । ४ । परन्तु अब अस्त्रविद्या में कुशल अर्जुन, व अस्त्र शस्त्र में निश्चय किये भीमसेन, गाण्डीव धनुष, तरकस, रथ, ध्वज बलवीर्य युक्त नकुल सहदेव, व भगवान् वासुदेव को सहाय पाय युधिष्ठिर जी क्षमा न करेंगे । ६ ।

TCHAPER CXXXVIII

Vaishampayan says that having heard the words of Kunti, Bhishm and Dronacharya spoke thus to Duryodhan the disobedient:— " Tiger of men ! you have heard Kunti's words which she spoke to Shree Krishn and which were full of virtue and greatness. With the consent of Vasudev, the Pandavas will do as they are enjoined to do by Kunti and will not be pacified without getting the half of the kingdom. You were able to throw the Pandavas into misery because they were then bound by their religious vows and overlooked the wrongs done by you to Draupadi. But, now, Arjun the skilful warrior, Bhimsen the adept in the science of arms, the bow Gandiv, the quivers, the chariot, the banner, Nakul and Sahadev the possessors of strength and prowess, together with Bhagwan Vasudev, are on the side of Yudhishthir and he will not forgive you. You your-

यथापार्थेन धीमता । विराटनगरे पूर्वं सर्वेस्मयुधि निर्जिताः ॥ ७ ॥ दानवाघोरकर्माणो निवातकवचा युधि । रौद्रमस्त्रं समादाय दग्धा वानरकेतुना ॥ ८ ॥ कर्णप्रभृतयश्चेमे त्वञ्चापि कवचीरथी । मोक्षितो घोषयात्रायां पर्य्याप्त तान्निदर्शनम् । प्रशाम्य भरतश्रेष्ठ भ्रातृभिः सह पाण्डवैः ॥ ९ ॥ रक्षेमां पृथिवीं सर्वां मृत्योर्दंष्ट्रान्तरं गताम् । ज्येष्ठोभ्राता धर्मशीलो वत्सलः श्लक्ष्णवाक् कविः ॥ १० ॥ तं गच्छ पुरुषव्याघ्रं व्यपनीयेह किल्बिषम् । दृष्टश्च त्वं पाण्डवेन व्यपनीतशरासनः ॥ ११ ॥ प्रशान्तभ्रुकुटिः श्रीमान् कृता शान्तिः कुलस्य नः । तमभ्येत्य सहामात्यः परिष्वज्य नृपात्मजम् ॥ १२ ॥ अभिवादय राजानं यथापूर्वमरिन्दम । अभिवादयमानं त्वां पाणिभ्यां भीमपूर्वजः ॥ १३ ॥ प्रतिगृह्णातु सौहार्दात् कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिर । सिंहस्कन्धोरुबाहुस्त्वां वृत्तायतमहाभुजः ॥ १४ ॥ परिष्वजतु बाहुभ्यां भीमः प्रहरतांवरः । कम्बुग्रीवो गुडाकेशस्ततस्त्वां पुष्करे

है-दुर्योधन यहभी बात तुम्हारे प्रत्यक्षही में हुई है कि पूर्व समयमें विराट नगरमें धीमान् अर्जुनने इन सब लोगोंको जीत लियाथा ।७। वे अतिघोर कर्म करने वाले निवातकवच नाम दानव लोगोंको भयानक अस्त्र उठाय अर्जुनजीने भस्मकरदिया ।८। कर्णादि सहित तुमको पांडवों ने ही घोषयात्रामें बचाया इस लिये तुमको चाहिये कि अपने भाई पांडवों से मेलकरके मृत्यु के दांतों में फसीहुई पृथ्वी की रक्षाकरो । १० । धर्मशील, वत्सल और मधुर वचन वाले अपने ज्येष्ठ भ्राता के पास पाप त्यागकर तो सब बात बनजावे । ११ । जब धर्म पुत्र तुम को शरासन रहित देखेंगे तभी उनका क्रोध शान्तहो जायगा और तुम्हारा वंश बचजावेगा । १२ । मंत्रियों सहित वहां पहुँचकर उनसे भुजा पसारकर मिलो और प्रणामकरके उनके आगे शिर झुकादो तुम्हारे प्रणाम करतेही तुम्हारा बड़ाभाई भीमसेन तुमको मित्रता से ग्रहण करेगा।१४।सिंहकेसे कंधेवाला और बड़ीभुजा और छातीवाला भीमसेन तुमको अपने

---

self saw that skilful Arjun defeated us all at Viratnagar. It was he who burnt down the dreadful *danavas*, known as Nivat Kavachas, with the help of his weapons. In your journey to the cowherds you and Karan were released from captivity by the Pandavas. For these reasons, you must make peace with the Pandavas who are your brothers, and should protect the earth from falling into the jaws of death. 10. You can do this if you go candidly to your elder brother who is virtuous, kind and mild. - His anger will subside as soon, as he sees you coming unarmed and you will save your family from dying. You must go to him along with your ministers and should bow your head before him. Your elder brother, Bhim will receive you affectionately as soon as he sees you bowing down to him. Bhimsen of lion's shoulders and huge arms and breast will surely

क्षणः ॥ १५ ॥ अभिवादयतां पार्थः कुन्तीपुत्रो धनञ्जयः ॥ १६ ॥ आश्विनेयौ नरव्याघ्रौ रूपेणाप्रतिमौभुवि । तौ च त्वां गुरुवत् प्रेम्णापूजयाप्रत्युदीयताम् ॥१७॥मुञ्चन्त्वानन्दजा श्रूणि दाशार्हप्रमुखा नृपाः । समच्छभ्रातृभि- सार्द्धं मानं सन्त्यज्य पार्थिव ॥ १८ ॥ प्रशाधिपृथिवीं कृत्स्नांततस्त्वं भ्रातृभिः सह । समालिंग्यच हर्षेण नृपा यान्तु परस्परम् ॥ १९ ॥ अलं युद्धेन राजेन्द्र सुहृदां शृणु वारणम् । ध्रुवं विनाशो युद्धे हि क्षत्रियाणां प्रदृश्यते ॥२०॥ज्योतींषि प्रतिकूलानि दारुणा मृगपक्षिणः । उत्पाता विविधावीर दृश्यन्ते क्षत्रनाशनाः॥२१॥ विशेषतइहास्माकं निमित्तानि निवेशने उल्काभिर्हि प्रदीप्ताभिर्बाध्यते पृतना तव ॥ २२ ॥ वाहनान्यप्रहृष्टानि रुदन्तीव विशाम्पते । गृध्रास्ते पर्युपासन्तेसै-

पक्षका समक्ष तुमसे मिलेगा । कम्बुग्रीव, पुष्कर नयन गुणकेश कपिध्वज तुम्हें उठकर प्रणामकरेगा व अश्विनीकुमारके पुत्र नकुल सहदेव जिनकेसमान रूपमें पृथ्वीपर कोई भी नहीं है वे दोनों भाई प्रेमसे गुरुके समान तुम्हारी पूजाकरेंगे । १७। हे पार्थिव कृष्णचन्द्रादि सब राजालोग तुम्हारा मिलाप देख आनन्द के आंशु छोड़ेंगे, इस से मान छोड़ अपने भाई पाण्डवों से जामिलो । १८ । व भाइयों के संग मिल सम्पूर्ण पृथ्वीका राज्यकरो, ये राजालोग परस्पर मिल भेंट अपने २ स्थानों को चले जायँ । १९ युद्धकरने से कुछभी प्रयोजन सिद्ध न होगा सुहृदों का रोक न मानो, इस युद्ध में केवलक्षत्रियों का विनाशही दिखाईदेताहै और कुछ नहीं । २० । क्योंकि सब तारागण विपरीत दिखाई देते हैं मृग पक्षी भी दारुण बोली बोलते हैं व विविध प्रकारके उत्पात दिखाई देते हैं ये सब क्षत्रियों केही विनाशकारी हैं । २१ । व ये अशुभ निमित्त विशेष रीति से यहां तुम्हारेही पुर में दिखाई देते हैं सबओर से जलतीहुई उल्का तुम्हारी सेनाको बाधित करती हैं । २२ । व सबवाहन

receive you kindly. Arjun of long neck, lotus eyes and monkey's banner will rise up in reverence to you. Nakul and Sahadev, the sons of Ashwini Kumars, who are the most beautiful of all the people on the earth, will affectionately attend on you as on a preceptor. Krishn and other kings will shed tears of joy on seeing you at peace. Give up your pride and join your brothers the Pandavas to rule over the whole land. These kings will return with pleasure to their respective homes. You will gain nothing by war. We see only the destruction of kshatryas if you will not mind the words of your friends. 20. For the stars are unpropitious, animals and birds utter cries of distress and other ill omens which betoken the destruction of kshatryas are seen. These atrocities are visible only

ण्याणि च समन्ततः ॥ २३ ॥ नगरं न यथा पूर्वं तथा राजनिवेशनम् । शिवाश्चाशिव निर्घोषा दीप्तां सेवन्ति वै दिशम् ॥ २४ ॥ कुरु वाक्यं पितुर्मातुरस्माकं च हितैषिणाम् । त्वय्यायत्तो महाबाहो शमो व्यायाम एव च ॥ २५ ॥ नचेत् कारिष्यसि वचः सुहृदामरिकर्षण । तप्स्यसे वाहिनीं दृष्ट्वा पार्थ बाणप्रपीडिताम् ॥ २६ ॥ भीमस्य च महानादं नदतः शुष्मिणो रणे । श्रुत्वा स्मर्त्तासि मे वाक्यं गाण्डीवस्य च निस्वनम् । यद्येतदपसव्यन्ते वचो मम भविष्यति ॥ २७ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीष्मद्रोणवाक्ये अष्टत्रिंशदधिकशततमोऽध्यायः ११८ ॥

अप्रसन्न हो ठौर२ रोदन करतेहैं तुम्हारी सेनाके चारों ओर गीध मड़रातेहैं।२३। नगर व राजमन्दिर जैसा पूर्व समय में था वैसा अब नहीं रहा व सियारिनियां अमंगल शब्द करतीहैं व जलतीसी दिशाओं में दौड़तीहैं । २४ । मातापिता और हम सबके वचन मानकर शान्ति करो यदि तुम सुहृदोंके वचन न मानोगे तो अर्जुन के बाणों से मारे जाओगे और रण दुर्मद भीम और गांडीव धनुष तुमको मारडालेंगे. यदि तुम यह वचन प्रमाण न मानोगे तो तुम्हारी ओर के सबवीर मारे जायँगे २७॥

---

in your city. Burning flames fall on your soldiers; the beasts weep and are unhappy; vultures hover over your army; the city and palaces look different from what they did before and jackals utter ominous cries and run in all directions as if they were burning. 24. Give ear to the advice of your parents and ourselves and make peace. You will be killed by the arrows of Arjun, if you will not mind these words; Bhimsen the warlike as well as the bow Gandiv will bring about your ruin and none of your warriors will be left alive."27



वैशम्पायन उवाच। एवमुक्तस्तु विमनास्तिर्य्यग्दृष्टिरधोमुखः। संहृत्य च भ्रुवोर्मध्यं न किञ्चिद् व्याजहार ह ॥ १ ॥ तं वै विमनसं दृष्ट्वा सम्प्रेक्ष्यान्योन्यमन्तिकात्। पुनरेवोत्तरं वाक्यं मुक्तवन्तौ नरर्षभौ ॥ २ ॥ भीष्म उवाच। शुश्रूषुमनुसूयञ्च ब्रह्मण्यं सत्यवादिनम्। प्रतियोत्स्यामहे पार्थं मतो दुःखतरं नु किम् ॥३॥ द्रोण उवाच ॥ अश्वत्थाम्नि यथा पुत्रे भूयो मम धनंजये। बहुमानः परो राजन् सन्नतिश्च कपिध्वजे॥ ४ ॥ तमपुत्रात् प्रियतमं प्रतियोत्स्ये धनञ्जयम्। क्षात्रधर्म्ममनुष्ठाय धिगस्तु क्षत्रजीविकाम् ॥ ५ ॥ यस्य लोके समो नास्ति कश्चिदन्यो धनुर्द्धरः। मत्प्रसादात् स बीभत्सुः श्रेयानन्यैर्धनुर्द्धरैः ॥ ६ ॥ मित्रध्रुग् दुष्टभावश्च नास्तिकोथानृजुः शठः। नसत्सु लभते पूजां यज्ञे

अध्याय ॥ १३९ ॥

वैशम्पायनजी बोले जब भीष्म व द्रोणाचार्य्यजीने ऐसा कहा तो दुर्योधनने उदासहो नीचे को दृष्टिकरली, व भौहोंका बीच सिकोर कुछ उत्तर न दिया। १। तब दुर्योधनको उदासीन देख परस्पर महात्मा भीष्म व द्रोणाचार्य्यजी फिर बोले। २। भीष्मजी बोले कि हाय, शुश्रूषा करनेवाले, अनिन्दित, ब्रह्मण्य, सत्यवादी अर्जुनसे हमलोग युद्धकरेंगे अब इससे अधिक दुःख हमलोगोंको कौन होगा। ३। द्रोणाचार्य्यजी बोले कि हे राजन् जैसा हमारा मान अश्वत्थामा हमारा पुत्र करता है उससे अधिक अर्जुन करतेहैं व सन्नति भी अर्जुन में अधिक है। ४। तिन पुत्रसे भी अधिकप्रिय अर्जुनजीसे हम क्षत्रियके धर्म्मपर आरूढ़हो युद्ध करेंगे इससे क्षत्रिय की जीविका को धिक्कार है। ५। हमारे प्रसाद से अर्जुन के समान और दूसरा धनुर्द्धर कोई नहीं है क्योंकि वे सब श्रेष्ठहैं। ६। दुर्योधन इसबातको जानरक्खो कि जो पुरुष तुम्हारे समान मित्रद्रोही, दुष्टस्वभाव, नास्तिक, कुटिल, व शठ होता

CHAPTER CXXXIX

Vaishampayan says that on hearing the words of Bhishm and Dronacharya, Duryodhan looked down on earth with sorrow but gave them no reply. Seeing Yudhishthir in that state of dejection, Bhishm and Dronacharya thus talked with each other— "Alas !" said Bhishm, "What grief can be greater than that we shall have to fight with Arjun the respectful, blameless, Brahmanya and truthful." "Arjun pays me as much respect," said Dronacharya, as my son Ashwathama and more. The duties of a kshatrya are to be blamed; for, being firm on those duties we shall have to fight against Arjun who is dearer to me than my son. Arjun is unequalled in the art of war by my own teaching, for he is the best of archers. Know, Duryodhan, that an enemy of friends, ill-natured, ungodly, cruel

मूर्खं इवागत ॥ ७ ॥ वार्यमाणोपि पापेभ्य पापात्मा पापमिच्छति । चोद्यमानोपिपापेन शुभात्माशुभमिच्छति ॥८॥ मिथ्योपचरिता ह्येते वर्त्तमाना ह्यनुप्रिये । अहितत्वाय कल्पन्तेदोषा भरतसत्तम ॥ ९ ॥ त्वमुक्त. कुरुवृद्धेन मयाच विदुरेणच । वासुदेवेन च तथा श्रेयो नैवाभि मन्यसे ॥ १० ॥ अस्ति मे वलमित्येव सहसात्व तितीर्षसि । सग्राहनक्र मकर गगावेग मिवोष्णगे ॥ ११ ॥ वास सैव यथा ह्लित्व प्राप्नुवानोभ मन्यसे । स्रज त्यक्तामिव प्राप्य लोभाद्यौधिष्ठिरींश्रियम् ॥१२॥ द्रौपदीसहितपार्थ सायुधैर्भ्रातृभिर्वृतम् ।

है वह सज्जनों के बीचमें पूजा नहीं पाता जैसे यज्ञ में मूर्ख ब्राह्मण पूजित नहीं होता। ७। पापोंसे रोकाभी जाता है तोभी पापी पुरुष पापही करना चाहता है व पुण्यात्माको पापकरने कोभी कोई कहता तो भी वह पुण्यही करना चाहता। ८। देखो इन पांडवों को तुमने वृथा दुःखभी दिया तोभी ये तुम्हारा प्रियही किया चाहतेहैं, व तुम्हारे दोष वैरभावही को अवभी प्रकट करतेहैं। ९। देखो तुमसे कुरुवंशमें सब से वृद्ध भीष्मजीने कहा हमने व विदुर ने व भगवान वासुदेवजीने भी कहा पर तुम इन सबके वचन कल्याणकारक नहीं समझते। १०। तुम जानते हो कि हमारे बडी भारी सेना है इससे पांडव समुद्रको हम अवश्य उतर जावेंगे, जैसे घड़ियाल नाके मगर आदि जन्तुओं से भरेहुये समुद्रके पारको गङ्गाजी के वेगने जायाचाहा पर पार नहींगया। ११। तुम अपने घरमेंही बैठे ऐसा समझतेहो कि हमतो सबओरसे रक्षितहैं हमको कौन पराजित करसक्ताहै, जैसे कोई किसीकी उतारीहुई फूलोंकी माला पाय उसको अपनी समझे वैसेही तुम युधिष्ठिरजीकी राज्य श्री को पाय अब अपनी समझते हो। १२। यह नहीं जानते कि आयुध

---

and foolish man like you is never respected by good men as an illiterate Brahman at a sacrifice A sinner does not desist from sin however much he may be checked from so doing, while a virtuous man does good although he is allured to commit sin. 8. See, the Pandavas wish you well in spite of the wrongs they have suffered from you and still complain of your ill treatment. Bhishm the oldest of the Kauravas as well as Vidur, Vasudev and myself have give you advice in vain. 10 You think that you possess a large army which will enable you to cross the Pandava ocean, but your attempt will be a failure like that of the Ganges who wished with her violent waves to cross the Ocean full of crocodiles, alligators, gavials and such *other animals* While *at home, you think* that being protected on all sides none can defeat you, and like him who having picked up a garland dropped by another thinks himself to be the owner of

घनस्थमपि राज्यस्थः पाण्डवं को विजेष्यति ॥ १३ ॥ निदेशे यस्य राजानः सर्वे तिष्ठन्ति किङ्कराः। तमैलविलमासाद्य धर्मराजो व्यराजत ॥ १४ ॥ कुवेरसदनं प्राप्य ततो रत्नान्यवाप्य च। स्फीतमाक्रम्य ते राष्ट्रं राज्यमिच्छन्ति पाण्डवाः ॥ १५ ॥ दत्तं हुतमधीतञ्च ब्राह्मणास्तर्पिता धनैः। आवयोर्गतमायुश्चकृतं कृत्यौ विद्धिनौ ॥ १६ ॥ त्वन्तु हित्वा सुखं राज्यं मित्राणि च धनानिच। विग्रहं पाण्डवैः कृत्वा महद्व्यसनमाप्स्यसि ॥ १७ ॥ द्रौपदी यस्य चाशास्ते विजयं सत्यवादिनी। तपोघोरव्रता देवी कथं जेष्यसि पाण्डवम् ॥१८॥ मन्त्री जनार्दनो यस्य भ्राता यस्य धनञ्जयः। सर्वशस्त्रभृतांश्रेष्ठः

धारण किये भाइयों समेत व द्रौपदी सहित युधिष्ठिरजी को वनमें रहनेपरभी व आप राज्यपर टिकाहुआ भी कौन जीतेगा। १३। व जिसकी आज्ञामें सब राजा लोग किंकरों के समान टिकेहैं, उन कुवेरजीको रणमें पाय युधिष्ठिरजीही शोभित हुये। १४। व कुवेर के भवन में जाय वहां वहुत रत्नपाय फिर यहां आय पांडव लोग अपना रजापुँजा राज्य लिया चाहते हैं। १५। व हमलोगों को क्या है वहुतसा दान करचुके यज्ञभी वहुतकिया, वेद शास्त्रभी सव पढ़े धनादि से ब्राह्मणों को तृप्त किया, अव हम दोनों की आयुभी वनाय गतहोगई है कुछ करनावाकी नहीं रहा केवल मरनाही मरना है इससे अव हमलोगों को कृतकृत्य समझो। १६। व तुम सुखछोड़, राज्य मित्र व धन त्याग, पांडवों के संग विग्रहकर महादुःख पावोगे। १७। व सत्यवादिनी द्रौपदी जिन युधिष्ठिरजीकी विजय सदा सिखाशा करती हैं, जो कि तप घोरव्रत धारण किये रहतीहैं फिर उन पांडव युधिष्ठिर को कैसे जीतोगे। १८। जिसके वासुदेव मंत्री और अर्जुन भ्राताहो उससे तुम कैसे जीत

---

it, you regard the kingdom and wealth of Yudhishthir as your own. You donot know that having all the kingdom in your possession you cannot conquer Yudhishthir and his armed brother living in forest with Draupadi. Yudhishthir has on his side Kuver whom all kings obey and having got immence wealth from the palace of Kuver, the Pandavas will get back their kingdom from you. As for ourselves, we have performed many charitable deeds and sacrifices, have read the Vedas and Shastras, have gratified Brahmans with large donations, are at the verge of death and are therefore contented on our lot. You will fall into a great misery and will lose all your joys, kingdom and wealth by your engaging in war with the Pandavas. How can you gain conquest over Yudhishthir whose conquest is invariably predicted by truthful Draupadi who is engaged in difficult vows,? How can you win him who has Vasudev

कथ जेष्यसि पाण्डवम् ॥ १९ ॥ सहाया ब्राह्मणा यस्य धृतिमन्तो जितेन्द्रियाः । तमुग्र तपस वीरं कथं जेष्यसि पाण्डवम् ॥ २० ॥ पुनरुक्तञ्च वक्ष्यामि यत् कार्य्यं भूतिमिच्छता । सुहृदा मज्जमानेषु सुहृत्सु व्यसनार्णवे ॥ २१ ॥ अलं युद्धेनतैर्वीरैः शान्त्यर्थं कुरुवृद्धये । मा गम ससुतामात्य सपलश्च पराभवम् ॥ २२ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भीष्मद्रोणवाक्ये एकोनचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः ११९ ॥

धृतराष्ट्रउवाच । राजपुत्रैः परिवृतस्तथाभृत्यैश्च सञ्जय । उपारोप्य रथेकर्णं निर्यातो मधुसूदनः ॥ १ ॥ किमब्रवीदमेयात्मा राधेयं परवीरहा । कानि सान्त्वानि गोविन्दः सूतपुत्रे प्रयुक्तवान् ॥ २ ॥ उद्यन् मेघस्वन काले कृष्ण कर्णमथाब्रवीत् । मृदु वा यदि

सकोगे क्योंकि वे शस्त्रविद्या में निपुणहैं । १९ । जिनके सहायक इन्द्रिय जित और धृतिमान ब्राह्मण उग्र तपस्वी हैं उनको तुम कैसे जीतोगे । २० । सुहृद अपने मित्रको व्यसन में डूबा देखकर बार बार उपयोगी वार्त्ता कहता है वीर पांडवों से लड़कर तुम्हें कुछ लाभ नहोगा इस लिये मेरे कहनेसे कौरवों के हितके लिये शान्तहो सचिव सेना परिवार सहित पराभवयुक्त न हो । २२ ।

अध्याय ॥ १४० ॥

इसके पीछे धृतराष्ट्र जी सञ्जयसे बोले कि हे सञ्जय, सब राजपुत्रों समेत व भृत्यों समेत कृष्णचन्द्रजी थे परन्तु सबको छोड़ कर्णको रथपर चढ़ाय कुछदूर लेगये । १ । बताइये शत्रुनाशन व अपारपराक्रमी श्रीहरिने क्या २ बातें कर्णको समझाईं । २ । सो बड़ेउद्दण्ड बादरके समान गर्ज्जतेहुये कृष्ण भगवान् ने

---

for his adviser and Arjun for his brother; for they are matchless in the art of war! How can you conquer him who has great ascetic and wise Brahmans, having control over *their organs*, on his side! A true friend gives good advice again and again to one whom he sees drowning in wickedness. You will gain nothing in your war with the Pandavas. Take my advice and be peaceful for the good of the Kauravas and donot bring about your ruin by the loss of all your ministers, family and army." 22

CHAPTER CXL

Dhritrashtra then said to Sanjaya, "All the princes and officers were with Shree Krishn; but he took none but Karan with him on his chariot some distance. Pray let me know what Hari of *illimitable prowess and destroyer of enemies said to Karan.* Tell

वा तीक्ष्णं तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ३ ॥ सञ्जय उवाच । आनुपूर्व्येणवाक्यानि तीक्ष्णानि मृदूनिच । प्रियाणि धर्मयुक्तानि सत्यानि च हितानि च ॥ ४ ॥ हृदयग्रहणीयानि राधेयं मधुसूदनः । यान्यब्रवीदमेयात्मा तानि मे शृणु भारत ॥ ५ ॥ वासुदेव उवाच । उपासितास्ते राधेय ब्राह्मणा वेदपारगाः । तत्वार्थं परिपृष्टाश्च नियते नानसूयया ॥ ६ ॥ त्वमेव कर्ण जानासि वेदवादान् सनातनान् । त्वमेव धर्मशास्त्रेषु सूक्ष्मेषु परिनिष्ठितः ॥ ७ ॥ कानीनश्च सहोढश्च कन्यायांयश्च जायते । वोढारं पितरं तस्य माहुशास्त्र विदो जनाः ॥ ८ ॥ सोसिकर्ण तथा जातः पाण्डोः पुत्रोसि धर्मतः । निग्रहाद्धर्मशास्त्राणा

कर्णसे कोमल वचन व कड़े जो कुछ कहेहों हमसे सब बताओ । ३ । यहसुन सञ्जय बोले कि तीक्ष्ण व कोमल प्रिय व धर्म्मयुक्त, सत्य व हित जो वचन क्रमसे मधुसूदन जीने कर्ण से कहे व हृदयसे ग्रहण करने के योग्यथे वे सब अप्रमाणआत्मावाले हरिकी वार्त्ता के अनुसार तुमसे कहते हैं सुनो ।५। श्रीभगवान कृष्णचन्द्र रथपर चढ़ेहुये कर्णसे बोले कि हे कर्ण तुमने वेदपारगन्ता ब्राह्मणों की बड़ी उपासनाकी, व निन्दारहितहो तुमने उनलोगोंसे सकल धर्मोंका निश्चय अर्थभी पूंछा । ६ । व हे कर्ण तुम सनातन वेदवाद अच्छीतरह जानतेहो, व तुम सूक्ष्म अर्थयुक्त सब धर्म्म शास्त्र के पढ़ने में परिनिष्ठितहो । ७ । कानीन अर्थात् कन्याके पुत्र दोप्रकारके होते हैं एक वह जो विवाह होने के पहले कन्या में किसी पुरुषसे उत्पन्नहो, दूसरा वह जो विवाह होनेके पीछे जबतक कन्या पति के यहां न जाय पिताही के घरमें अन्य किसी से उत्पन्नहो, इन दोनों कानीन पुत्रोंका पिता वही कहाता है जिसकेसंग वह कन्या ब्याही जाती है । ८ । हे कर्ण सो तुमभी कानीनहीहो क्योंकि कुन्तीजीका जब विवाह नहीं हुआथा तभी तुम सूर्य्य से उनमें

---

us all the hard and soft words which Krishn said to Karan in his voice like the peel of thunder." "I shall tell you, in order," said Sanjaya, "the sharp, swift and acceptable words, full of dharm, truth and profit, which Krishn of immense soul said to him. Hear them: He said to Karan who was seated on the same chariot with him, "You have always reverenced the Brahmans learned in the Vedas and have, without prejudice, learnt from them the true meaning of all the shastras; you know the contents of the eternal Vedas and have perfectly learnt all the religious books: *Kanins* (sons of a maiden) are of two kinds; those born before marriage, and those born after marriage but before she has gone to her husband's house. The father of both sorts of sons is he who marries

मेहि राजा भविष्यसि ॥ ९ ॥ पितृपक्षे च ते पार्था मातृपक्षे च वृष्णयः । द्वौ पक्षावभि
जानीहि त्वमेतौ पुरुषर्षभ ॥ १० ॥ मया सार्द्धमितोयात मद्यत्वां तात पाण्डवाः । अ-
भिजानन्तु कौन्तेयं पूर्वजातं युधिष्ठिरात् ॥ ११ ॥ पादौ तव ग्रहीष्यन्ति भ्रातरः पञ्च पा
ण्डवाः । द्रौपदेयास्तथा पञ्च सौभद्रश्चापराजितः ॥ १२ ॥ राजानो राजपुत्राश्च पाण्ड
वार्थे समागताः । पादौ तव ग्रहीष्यन्ति सर्वे चान्धकवृष्णयः ॥ १३ ॥ हिरण्मयाश्च ते
कुम्भाराजतान् पार्थिवांस्तथा । ओषध्यः सर्ववीजानि सर्वरत्नानि वीरुधः ॥ १४ ॥
राजन्याराजकन्याश्चाप्यानयन्त्वाभिषेचनम् । षष्ठे त्वाञ्च तथा काले द्रौपद्युपगमिष्य
ति ॥ १५ ॥ अग्निं जुहोतु वै धौम्यः संशितात्मा द्विजोत्तमः । अद्य त्वा मभिषिंचन्तु

उत्पन्न हुयेहो इस से धर्म्मशास्त्रके अनुसार पाण्डुजीके पुत्रहो व धर्म्मशास्त्रोंकी आज्ञा
के अनुसार तुम हमारे संग आवो राजा होगे । ९ । तुम्हारे पिता के पक्ष में तो
पांडव लोगहैं, व मातृपक्ष में वृष्णिवंशी हमलोग हैं इससे हे पुरुष श्रेष्ठ इन दोनों
पक्षोंको अपनेजानो ।१०। हे तात जो आज तुम हमारे साथ चलोगे तो पांडवलोग
तुमको जानेंगे कि येभी कुन्तीजी ही के पुत्रहैं व युधिष्ठिरजीसे भी प्रथम उत्पन्न
हुयेहैं । ११ । इससे सब पांडव तुम्हारे छोटेभाई तुम्हारे चरण पकड़ेंगे व द्रौपदी के
पांच पुत्र तथा अभिमन्यु जोकि किसीसे हारतेहो नहीं ये सब प्रणाम करेंगे ।१२।
व पांडवोंके अर्थ जो राजा राजपुत्र लोग आयेहैं सब तुम्हारे पैरोंपर पड़ेंगे, व सब
अन्धक वृष्णिवंशीभी प्रणाम करेंगे । १३ । व तुम्हारे अभिषेकके लिये सोने
चांदी व मिट्टीके कुम्भों में भरके तीर्थोंका जल आवेगा, सब बीजोंकी औषधियां,
सबरत्न व सब होमकी लकड़िया आवेंगी । १४ । ये सब पदार्थ राजालोग व
राजकन्या लावेंगी व छठें समय में द्रौपदीभी तुम्हारे पास आवेंगी । १५ । धौम्य
नाम जितेन्द्रिय पुरोहित तुम्हारे अभिषेकके लिये आजही होम करेंगे व आजही

her. You are a *Kanin*, Karan; for you were born of Surya and Kunti while the latter was not yet married and therefore according to religeous books you are the son of Pandu and heir to half the kingdom. On the father's side you are a Pandava and on the mother's side you are Vrishni like myself. It is important that you should know this fact. Go with me and the Pandavas will know that you are a son of Kunti and older than Yudhishthir. All the Pandavas are younger than you and will fall at your feet like the five sons of Draupadi and Abhimanyu the unconquerable. All the kings who have come to help the Pandavas will fall at your feet and all the Andhaks and Vrishnis will pay you respect. Water of of holy rivers will be brought in vessels of gold, silver and earth for your installation and all sorts of seed-herbs, jewels and fire-wood will

चातुर्वेद्या द्विजातयः ॥ १६ ॥ पुरोहितः पाण्डवानां ब्रह्मकर्मण्यवस्थितः । तथैव भ्रातरः पञ्च पाण्डवाः पुरुषर्षभाः ॥ १७ । द्रौपदेयास्तथा पञ्च पञ्चालाश्चेदयस्तथा । अहंच त्वा भिषेक्ष्यामि राजानं पृथिवीं पतिम् ॥ १८ ॥ युवराजस्तु ते राजा धर्म पुत्रो युधिष्ठिरः । गृहीत्वा व्यजनं श्वेतं धर्मात्मा संशितव्रतः ॥ १९ ॥ उपान्वारोहतु रथं, कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः छत्रञ्च ते महाश्वेतं भीमसेनो महाबलः ॥ २० ॥ अभिषिक्तस्य कौन्तेयो धारयिष्यति मूर्द्धनि । किङ्किणी शत निर्घोषं वैयाघ्रपरिवारणम् ॥ २१ ॥ रथं श्वेतहयैर्युक्तमर्जुनो वाहयिष्यति । अभिमन्युश्च ते नित्यं प्रत्यासन्नो भविष्यति ॥ २२ ॥ नकुलः सहदेवश्च द्रौपदेयाश्च पञ्चये । पञ्चालाश्चानुयास्यन्ति शिखण्डीच महारथः ॥ २३ ॥

चारों वेदोंके पढ़नेवाले ब्राह्मणलोग तुम्हारा राज्याभिषेक करेंगे । १६ । ये धौम्य जी पांडवों के पुरोहितहैं व ब्रह्मकर्म्म में तत्परहैं, व पांचोंभाई पांडव लोगभी उसीप्रकार वेदकर्म्म में तत्परहैं । १७ । व द्रौपदीजी के पांचपुत्र व द्रुपदराज के सबपुत्र, व शिशुपालके पुत्रादि व हम तुमको आजही पृथ्वीभर के राजा बनावेंगे । १८ । व धर्म्मके पुत्र युधिष्ठिरजी तुम्हारी युवराज पदवी पर टिकेंगे व धर्म्मात्मा जितेन्द्रिय युधिष्ठिरजी श्वेतव्यजन हाथमेंले । १९ । तुम्हारे पीछे रथपरचढ़ पंखाकरते रहेंगे व बड़ाश्वेत छत्र महाबली भीमसेनजी तुम्हारे ऊपर लगावेंगे ।२०। जब तुम्हारा राज्याभिषेक होजायगा तब ये सब अपना २ कार्य्य करेंगे, व सैकड़ों किंकिणी लगेहुये दिव्य रथपर जिसके ऊपर व्याघ्रचर्म्म का पड़ाहोगा व उजले घोड़े नहेहोंगे उसे तुम्हारे आगे बैठ अर्जुन हांकेंगे व अभिमन्युभी सदा तुम्हारे समीपही विद्यमान रहेंगे । २१ । नकुल सहदेव, द्रौपदी के पांच पुत्र पांचाल देशके राजा शिखण्डी महारथादि सब पुत्र तुम्हारे पीछे २ चलेंगे । २२ ।

be brought for the sacrifice. Kings and princesses will bring these things to you and Draupadi will attend on you in her turn. Dhaumya the priest will forthwith begin the sacrifice for your installation which the Ved-knowing Brahmans will celebrate. Dhaumya, the the priest of the Pandavas knows all the religious rites and the five Pandavas are firm on their religion. The five sons of Draupadi, all the sons of king Drupad and the sons of Shishupal will instal you as king of the whole land without delay. Yudhishthir the son of dharm will be your Yuvraj and will be fanning you with a white fan from behind you on the chariot. Bhimsen will shelter you under the white umbrella. 20. After your installation each of them will do his duty: Arjun will drive your chariot, fitted with bells, covered with lion's skin and drawn by white horses; Abhimanyu will attend on you and Nakul, Sahdev, the five sons of Draupadi

अहमत्वानुयास्यामि सर्वेचांधकवृष्णयः। दाशार्हाः परिचारास्तेदशार्णाश्च विशाम्पते २४॥ भुंक्ष्व राज्यं महाबाहो भ्रातृभिः सह पाण्डवैः। जपैर्होमैश्च संयुक्तो मंगलैश्च पृथग्विधैः ॥ २५ ॥ पुरोगमाश्च ते सन्तु द्राविडा सह कुन्तलैः। अन्ध्रास्तालचराश्चैव चुचुपा वेणुपास्तथा ॥ २६ ॥ स्तुवन्तु त्वाञ्च बहुभिः स्तुतिभिः सूतमागधाः। विजयं वसुषेणस्य घोषयन्तु च पाण्डवाः ॥ २७ ॥ सत्वं परिवृतः पार्थैर्नक्षत्रैरिव चन्द्रमाः। प्रशाधि राज्यं कौन्तेय कुन्तीञ्च प्रतिनन्दय ॥ २८ ॥ मित्राणि ते प्रहृष्यन्तु व्यथन्तु रिपवस्तथा। सौभ्रात्रञ्चैव तेचास्तु भ्रातृभिः सह पाण्डवैः ॥ २९ ॥

इतिश्रीमहाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि श्रीकृष्णवाक्ये चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४० ॥

हमभी तुम्हारे पीछेही पीछे चलेंगे, व सब अन्धक वृष्णिवंशी दाशार्हवंशी व दशार्णवंशी सब तुम्हारे चारोंओर चलेंगे । २४ । हे महाबाहु कर्णजी अपने सब भाई पाण्डवों के साथ राज्य भोगो, व जप होम मङ्गल कर्म्मों से सदा संयुक्त रहो । २५ । द्रविड़देशनिवासी कुन्तलदेशवासी अन्ध्र ताल, चर, चूचुप, व वेणुप ये लोग तुम्हारे आगे चलेंगे । २६ । सूतमागध वन्दीगण विविध प्रकारकी स्तुतियोंसे तुम्हारी स्तुति करेंगे, व पाण्डवलोग व सुषेणकी विजय तुम्हारे पीछे २ गावेंगे । २७ । तुम पांडवों के मध्यमें शोभितहोकर पृथ्वी का पलन करो जिससे मित्र प्रसन्नहों और शत्रु व्यथितहों पांडवों के साथ भ्रातृभाव रखकर सुख भोगो ॥ २९ ॥

and Shikhandi and other brave princes of Panchal will follow you. I too will follow you and the Andhaks, the Vrishnis and the Dasharhas will go all round you. Enjoy the kingdom with your brothers, brave [illegible] and be always attended with *jap*, *hom* and other auspicious deeds. The people of Dravid, Kuntal, Andhra, Tal, Cher, Choochup and Venup will go in front of you. Bards will sing your praises and will sing of the victory of the Pandavas and Sushen. Rule the land in the midst of your brothers; please your friends and terrify your enemies by enjoying happiness and the fraternity of the Pandavas." 29.



कर्ण उवाच । असंशयं सौहृदान्मे प्रणयाच्चात्थ केशव । सख्येन चैव वार्ष्णेय श्रेयस्कामतयैव च ॥१॥ सर्वं चैवाभिजानामि पाण्डोः पुत्रोऽस्मि धर्मतः । निग्रहाद्धर्मशास्त्राणां यथा त्वं कृष्णमन्यसे ॥ २ ॥ कन्या गर्भं समाधत्त भास्करान्मां जनार्दन । आदित्यवचनाच्चैव जातं मां सा व्यसर्जयत् ॥३॥ सोऽस्मि कृष्ण तथा जातः पाण्डोः पुत्रोऽस्मि धर्मतः । कुन्त्या त्वहमपाकीर्णो यथा न कुशलं तथा ॥ ४ ॥ सूतो हि मामधिरथो दृष्ट्वैवाभ्यनयद् गृहान् । राधायाश्चैव मां प्रादात् सौहार्दान्मधुसूदन ॥५॥ मत्स्नेहाच्चैव राधायाः सद्यः क्षीरमवातरत् । सा मे मूत्रं पुरीषञ्च प्रतिजग्राह माधव ॥६॥ तस्याः पिण्डव्यपनयं कुर्यां

अध्याय १४१ ॥

इतना सुन कर्ण बोले कि इसमें कुछभी सन्देह नहीं कि आपने सौहृद से, प्रेमसे, सखपसे व कल्याणकी कामनाही से ऐसा हमसे कहा । १ । सत्य२ शास्त्रके अनुसार धर्म से हम पाण्डुजीही के पुत्रहैं जैसा आप मानतेहैं हमभी सब जानतेहैं क्योंकि कुन्तीजी तब कन्याहीथीं पर सूर्यनारायण से हमको उन्होंने गर्भ में धारण किया व जब हमारा जन्महुआ तो सूर्य के कहने से कुन्तीने हमको फेंक दिया । ३ । हमारी उत्पत्ति इसप्रकारहुई इससे धर्म्म से पांडुही के पुत्रहैं, परन्तु कुन्तीने तो हमको ऐसा फेंकदिया था कि कुशल रहनेका कोई यत्न न था । ४ । दैवयोगसे सूतवंश के राजा अधिरथजी ने हमको देखा फिर वे अपने घरको लाये व प्यार सौहार्द के अपनी स्त्री राधाको सौंपदिया । ५ । यद्यपि राधा बन्ध्याथीं कोई सन्तान उनके नथी पर हमारे स्नेहसे उनके तुरन्त दूध उतरआया पियानेलगीं व हमारा मलमूत्र सब उन्होंने उठाया धोया । ६ । इससे जो धर्म्मज्ञहो व धर्म्म

CHAPTER CXLI

"No doubt," said Karan on hearing this, "you have said all this to me out of friendship, love and good will. Surely, according to Shastras, I am the son of Pandu as you say and I know it; for Kunti, in her maidenhood had conceived me, and by the instigation of Surya, who was the author of my being, cast me away. Being born under such circumstances I may be said to be the son of Pandu; but Kunti had cast me away so as there was no hope for me. Fortunately, the prince of the Sut family happened to see me and brought me home. He took pity on me and gave me to his wife Radha who, although she was barren, felt so great an affection for me that milk oozed out from her breast. She suckled me and took care of me in every way. A virtuous man learned in the shastras

दस्मात्त्रिपः कथम् । धर्मविद्धर्मशास्त्राणां श्रवणे सतत रतः ॥ ७ ॥ तथा मामभिजानाति सूतश्चाधिरथः सुतम् । पितरञ्चाभिजानामि तमहं सौहृदात् सदा ॥ ८ ॥ सहि मे जातकर्मादि कारयामास माधव । शास्त्रदृष्टेन विधिना पुत्रप्रीत्या जनार्दन ॥ ९ ॥ नामचे वसुषेणेति कारयामास वै द्विजैः । भार्याश्चोढा ममप्राप्ते यौवने तत्परिग्रहात् ॥ १० ॥ तासु पुत्राश्च पौत्राश्च ममजाता जनार्दन । तासु मे हृदयंकृष्ण सञ्जातं कामबन्धनम् ॥ ११ ॥ न पृथिव्या सकलया न सुवर्णस्य राशिभिः । हर्षाद्भयाद्वा गोविन्द मिथ्या कर्तुं तदुत्सहे ॥ १२ ॥ धृतराष्ट्रकुले कृष्णदुर्योधनसमाश्रयात् । मया त्रयोदशसमा भुक्तं राज्यमकण्टकम् ॥ १३ ॥ इष्टञ्च बहुभिर्यज्ञैः सह सूतैर्मयाऽसकृत् । आवाहाश्च विवाहाश्च सह सूतैर्मयाकृताः ॥ १४ ॥ मांच कृष्ण समासाद्य कृतः शस्त्रसमुद्यमः । दुर्यो-

---

शास्त्रों के सुनने में रतहो वह हमारे समान पुरुष उन राधाजी के विपरीत कैसे छोड़े । ७ । व इसीप्रकार सूतराजा अधिरथभी हमको अपना पुत्र जानतेहैं व हम भी सौहृदसे उनको अपना पिता जानतेहैं । ८ । व हे जनार्दन उन्होंने पुत्रकी प्रीति से हमारे सब जातकर्म्म किये कराये ।९। ब्राह्मणों से हमारा सुषेण नाम धरवाया, व जब हमारी युवावस्था हुई तो बहुतसी स्त्रियोंके सङ्ग विवाहभी हुआ । १० । फिर उन स्त्रियों में हम से पुत्र उत्पन्न हुये पुत्रों से पौत्रहुये व उनस्त्रियोंमें हमारा चित्त कामके बन्धनसे बँधगया । ११ । अब इनसब स्त्री पुत्र पौत्र माता पिता आदिको न तो हम पृथ्वीभरके राज्यके लोभसे मिथ्या करसक्तेहैं, न सोनेकी राशियोंसे, न हर्ष से न भयसे । १२ । इसके विशेष धृतराष्ट्र के कुलमें दुर्योधनकी सहाय से हमने तेरह वर्षसे आजतक अकण्टक राज्य भोगाकिया । १३ ।व सूतोंके संग हमने बहुतसे यज्ञभी किये, व सूतोंकेही साथ कुलके धर्म्म व विवाहभी हमने किये

---

like me, cannot leave Radha or go against her. The *sut* also has been loving me like a father and I have a filial regard for him. It was he who performed my ceremony of birth with love and at his request the Brahmans gave me the name of Sushen. When I grew up to be a youth I got several wives in marriage. 10. Those wives have given me sons and grandsons and I am attached to them. I cannot forsake all these wives, sons, grandsons, mother and father *for the kingdom of the whole world nor for a mine of gold or for* pleasure or for fear. Besides, I have been fearlessly ruling the kingdom for thirteen years with the help of Duryodhan the son of Dhritrashtra. I have performed many sacrifices among *suts* and married among them. Duryodhan has raised all this quarrel and

धनेन वार्ष्णेय विग्रहश्चापि पाण्डवैः ॥ १५ ॥ तस्माद्रणे द्वैरथे मां प्रत्युद्यातारमच्युत । वृतवान् परमं कृष्णः प्रतीपं सव्यसाचिनः ॥ १६ ॥ वधाद्बन्धाद्भयाद्वापि लोभाद्वापि जनार्दन । अनृतं नोत्सहे कर्तुं धार्त्तराष्ट्रस्य धीमतः ॥ १७ ॥ यदि ह्यद्य न गच्छेयं द्वैरथं सव्यसाचिना । अकीर्तिः स्याद्धृषीकेश मम पार्थस्य चोभयोः ॥ १८ ॥ असंशयं हितार्थाय ब्रूयास्त्वं मधुसूदन । सर्वञ्च पाण्डवाः कुर्युस्त्वद्वशित्वान्न संशयः ॥ १९ ॥ मन्त्रस्य नियमं कुर्यास्त्वमत्र मधुसूदन । एतदत्र हितं मन्ये सर्वं यादवनन्दन ॥ २० ॥ यदि जानाति मां राजा धर्मात्मा संयतेन्द्रियः । कुन्त्याः प्रथमजं पुत्रं न स राज्यं ग्रहीष्यति ॥ २१ ॥ प्राप्य चापि महद्राज्यं तदहं मधुसूदन । स्फीतं दुर्य्योधनायैव सम्प्र

। १४ । व हे कृष्ण हमींको पाय दुर्योधनने सब शस्त्रका सचय किया, व पांडवों से विग्रहभी हमारेही भरोसे किया । १५ । व इसीसे द्वन्द्वयुद्धमें दुर्योधनने हमको अर्ज्जुनके संग लड़ने के लिये अंगीकार किया है व जानते हैं कि और कोई अर्जुन के संग लड़ने योग्य नहीहैं । १६ । इससे हे कृष्ण अब हम दुर्योधनके संग, बँधुआ होजाने व भय खाजानेमें चैयतहैं परन्तु धनादिके लोभसे झूँठाई नहीं करसक्ते । १७ । अब जो हम अर्ज्जुन से द्वन्द्व युक्त करनेको न जायँ तो हे कृष्ण हमारी व अर्ज्जुनकी भी बड़ीभारी अकीर्त्ति होगी क्योंकि उन्हों ने भी हमारे संग युद्धकरने की प्रतिज्ञाकीहै वरन हमने उनको मारडालनेकी व उन्होंने हमकोमारडालनेकी प्रतिज्ञाकीहै ।१८। व तुम सब पांडवोंसे कहदेना क्योंकि उनके प्रेरक तुम्हींहो, उनके हितकीही, सदा करतेहो, व वे लोग जैसा तुम कहोगे वैसाही करेंगे। १९ । एक बात हमारीभी कीजियेगा कि जो हमारी आपकी गुप्त वार्त्ता हुई है वह युधिष्ठिरजीसे न कहियेगा, हम इस में सबका हित मानतेहैं । २० । क्योंकि धर्म्मात्मा जितेन्द्रिय राजा युधिष्ठिरजी जो हमको जानेंगे कि ये कुन्तीके सबसे प्रथमके पुत्रहैं

---

is ready to fight with the Pandavas on my strength. *He has* selected me to fight a duel with Arjun; for he knows that none else can be a match for him. I am therefore ready to die, suffer captivity or fall *into any danger* with Duryodhan and cannot be false to him. Both Arjun and I will get a very bad name if I shall not fight with him; for both of us have made a vow to kill each other in fighting. You may tell this to the Pandavas as you are their instructor, well-wisher and chief adviser. But, for the good of parties I request you not to mention this secret of ours to Yudhishthir. 20. For, virtuous Yudhishthir who has control over his organs, will never accept the kingdom, if he comes to know

द्यामरिन्दम ॥ २२ ॥ स एव राजा धर्मात्मा शाश्वतोऽस्तु युधिष्ठिरः । नेता यस्य हृषीकेशो योद्धा यस्य धनञ्जयः ॥ २३ ॥ पृथिवी तस्य राष्ट्रञ्च यस्य भीमोमहारथः । नकुलः सहदेवश्च द्रौपदेयाश्च माधव ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्नश्च पाञ्चाल्य सात्यकिश्च महारथः । उत्तमौजा युधामन्यु सत्यधर्मा च सोमकिः ॥ २५ ॥ चैद्यश्च चेकितानश्चाशिखण्डी चापराजितः । इन्द्रगोपकवर्णाश्च केकयाभ्रातरस्तथा । इन्द्रायुधसवर्णश्च कुन्तिभोजो महामनाः ॥ २६ ॥ मातुलो भीमसेनस्य श्येनजिच्च महारथः । शंख पुत्रो विराटस्य निधिस्त्वञ्च जनार्दन ॥ २७ ॥ महानयं कृष्ण कृतः क्षत्रस्य समुदानयः । राज्यप्राप्तमिदं दीप्तं प्रथितं सर्वराजसु ॥ २८ ॥ धार्तराष्ट्रस्य वार्ष्णेय शस्त्रयज्ञो भविष्यति । अस्य

तो मैं राज्य न ग्रहण करूंगे । २१ । जो कहो सही तुम्हींको मैं राज्य देदेंगे तो उसमें भी न बनेगा क्योंकि हम सब धन धान्य युक्तभी राज्य पावेंगे तोभी दुर्योधनही को देदेंगे अपने आप न राज्य करेंगे । २२ । परन्तु ऐसाहोना महाअनुचित है क्योंकि धर्मात्मा युधिष्ठिरजीही निरन्तर राजाहोनेके योग्यहैं इससे हां क्योंकि जिसके प्रेरक तो कृष्णचन्द्रजी आपहो व योद्धा अर्जुनहैं । २३ । व उन्हींकी पृथ्वी उन्हींका सब देश है जिनके महारथ भीमसेन वीर महारणधीर महाबली हैं फिर नकुल सहदेव व द्रौपदीके पांच पुत्रहैं २४ व राजाद्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न व महारथ सात्यकिजी उत्तमौजा युधामन्यु, व सत्यधर्मा सोमदत्ति २५ चंदेलोंका राजाधृष्टकेतु,व चेकितान, अपराजित शिखण्डी, व वीरबहूटी के रंग के पांच भाई केकय राजकुमार । २६ । व इन्द्र धनुषके रंगका कुन्तिभोज नाम राजा, व सेनजितनाम महारथ भीमसेनजी का मामा, व राजा विराटका शंखनाम पुत्र, व सबकाम पूर्ण करनेवाले निधि रूप आप । २७ । हे कृष्ण यह राजाओंका बड़ा भारी झुंड इकट्ठा हुआ है व यह राज्य जिसपर आजकल कौरवराम राजाहैं अति प्रकाशित व सब राजाओं में विख्यात है । २८ । सो इस राज्यके लिये दुर्योधन के शस्त्रयज्ञ होगा, जनार्दन

---

me to be the eldest son of Kunti and it will not be proper for him to make it over to me; for, far from ruling the kingdom myself, I shall make over the whole of it to Duryodhan. *But it is quite improper;* for, virtuous Yudhishthir alone is worthy to rule the empire because he has you for his adviser and Arjun for his warrior. He is sure to possess the land who has the great warriors Bhimsen, Nakul, Sahadev, the five sons of Draupadi, Dhrishtadyumna the son of king *Drupad, brave Satyaki, Yudhamanyu, Saumdatti of true prowess,* Dhrishtaketu the king of Chandeli, Chekitan, Shikhandi the indefatigable, the five princes of Kaikaya of red colour, king Kunti bhoj of the colour of rainbow, brave Senjit, the maternal uncle of

यज्ञस्य वेत्तात्व भविष्य सि जनार्दन ॥ २९ ॥ आध्वर्यवञ्च ते कृष्ण क्रतावस्मिन्भविष्यति । होता चैवात्र बीभत्सुः सन्नद्धः स कपिध्वजः ॥ ३० ॥ गाण्डीवस्रुक् तथा चाज्य वीर्यं पुंसां भविष्यति । ऐन्द्रपाशुपतं ब्राह्मं स्थूणाकर्णञ्च माधव । मन्त्रास्तत्र भविष्यन्ति प्रयुक्ताः सव्यसाचिना ॥ ३१ ॥ अनुयातश्च पितरमधिको वा पराक्रमे । गीतस्तोत्रं स सौभद्रः सम्यक् तत्र भविष्यति ॥ ३२ ॥ उद्गाता तत्र पुनर्भीम प्रस्तोता सुमहाबलः । विनदन् स नरव्याघ्रो नागानीकान्तकृद्रणे ॥ ३३ ॥ सचैव तत्र धर्मात्मा शश्वद्राजा युधिष्ठिरः । जपैर्होमैश्च संयुक्तो ब्रह्मत्वं कारयिष्यति ॥३४॥ शङ्खशब्दाः समुरजा भेर्यश्च मधुसूदन । उत्कृष्ट सिंहनादश्च सुब्रह्मण्यो भविष्यति ॥ ३५ ॥ नकुलसहदेवश्च माद्रीपुत्रौ यशस्विनौ । शामित्रं तौ महावीर्यौ सम्यक्तत्र भविष्यत

जी इस यज्ञ के जानने वाले आपहींगे । २९ । व यज्ञ के प्रेरक भी आपही होंगे, व इस यज्ञ में आहुति देने वाले होता अर्जुन होंगे, जिनका कपिध्वज व बीभत्सुभी नाम है । ३० । व गाण्डीव धनुष इस यज्ञ में स्रुवहोगा, व पुरुषों का वीर्य घृत होगा, ऐन्द्र पशुपत, ब्राह्म स्थूणाकर्ण ये सब अर्जुनके प्रेरित मन्त्र होंगे । ३१ । व जो अपने पिताही के समानहैं वरन पराक्रम में अधिक हैं वे अभिमन्युजी गीत स्तुति जो उद्गाता के कर्म हैं होंगे । ३२ । व भीमसेनजीभी पीछसे उद्गाता हो जायेंगे व प्रस्तोताभी वही महाबली भीमही होंगे क्योंकि रण में नाद करतेही वे सब हाथियों के प्राण लेलेंगे । ३३ । व धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर जी जप होम युक्त ब्रह्मत्व करेंगे । ३४ । शङ्खनाद, मुरज, भेरी, व सिंहनाद यही ब्रह्म कर्म स्वाहित वाचनादि होगा । ३५ । माद्रीजी के पुत्र नकुल सहदेव क्षत्रियों को पशु बनाय

Bhimsen, Shankh the son of king Virat and yourself the treasure of all things like the ocean. The kings collected here in large numbers and the kingdom ruled over by the Kaurava king are very glorious and famous. Duryodhan will perform a sacrifice with weapons for this kingdom and will see it You will be the instigator of the sacrifice too, and Arjun known as *Biblatsu* the possessor of monkey's banner, will pour libations into the sacrifice 30. The bow Gandiv will be the pouring vessel in that sacrifice, the prowess of the people will be the clarified butter and the hymns will be Aindra, Pashupat, Brahm and Sthoonakarn, propelled by Arjun. Abhimanyu who is equal to his father Arjun, and more in prowess, will do the work of *Udgata* Bhimsen will do the same after him and will likewise be *Prastota*, for he will take the life of all elephants with his war cry. Yudhishthir the just will do the religious work of

॥ ३६ ॥ कल्माषदण्डा गोविन्द विमला रथपङ्क्तयः । यूपाः समुपकल्प्यन्तामस्मिन् यज्ञे जनार्दन ॥ ३७ ॥ कर्णिनालीकनाराचा वत्सदन्तोपबृंहणाः । तोमराः सोमकलशाः पात्राणि धनूंषि च ॥ ३८ ॥ असयोऽत्र कपालानि पुरोडाशाः शिरांसि च । हविस्तु रुधिरं कृष्ण अस्मिन् यज्ञे भविष्यति ॥ ३९ ॥ इध्माः परिधयश्चैव शक्तयो विमला गदाः । सदस्या द्रोणशिष्याश्च कृपश्च शरद्वतः ॥४०॥ इषवोऽत्र परिस्तोमा मुक्ता गाण्डीवधन्वना । महारथप्रयुक्ताश्च द्रोणद्रौणिप्रचोदिताः ॥ ४१ ॥ प्रातिप्रस्थानिकं कर्म सात्यकिस्तु करिष्यति । दीक्षितो धार्तराष्ट्रोऽत्र पत्नी चास्य महाचमूः ॥ ४२ ॥ घटोत्कचोऽत्र शामित्रं करिष्यति महाबलः । अतिरात्रे महाबाहो विततेयज्ञकर्मणि ॥ ४३ ॥ दक्षिणा

बलिप्रदान करेंगे इस कर्मको शामित्र कहतेहैं । ३६ । व हे गोविन्द चित्र विचित्र रथों की पंक्तियां इस यज्ञ में यज्ञस्तम्भ होंगी । ३७ । कर्णिनालीक, नाराच, वत्सदन्त, उपबृंहण, तोमर, व धनुष ये सब बाण विशेष सोम नाम यज्ञलता पीनेके पात्र होंगे, हे कृष्ण इस यज्ञ में खड्गही खीर बनाने के पात्र होंगे, व वीरों के शिर पुरोडाशनाम यज्ञकर्महोंगे व वीरों का रुधिरही खीर होगी जिसकी आहुति दीजायगी । ३९ । शक्तियां इन्धन, व गदा अग्निकी रक्षा के लिये सब ओरसे काष्ठ लगाना होंगी जिनको परिधि कहते हैं, व इस यज्ञ के सदस्य द्रोणाचार्य कृपाचार्य शरद्वत् के शिष्यहोंगे । ४० । व अर्जुनजीके चलाये नानाप्रकार के बाण सोमचमसादि यज्ञपात्र होंगे, व द्रोणाचार्य अश्वत्थामा के भी प्रेरित बाण परिस्तोमादि चमसादि यज्ञ भाजन होंगे । ४१ । व अध्वर्यु आप के सहायकका कर्म प्रातिप्रास्थानिक सात्यकि करेंगे, व दीक्षित हो यज्ञकर्ता इसमें दुर्योधन होंगे व उनकी स्त्री यह सब सेना होगी । ४२ । व महाराज आधीरात्रि में जब यह यज्ञकर्म होने लगेगा तो घटोत्कचनाम वीर शामित्र कर्म अर्थात् क्षत्रिय पशुओं का बलिप्रदान

---

jap and hom. The sounds of conch, bugles and other musical *instruments will take the place of propitiatory hymns.* Nakul and Sahadev, the sons of Madri, will sacrifice Kshatryas instead of beasts. The lines of various coloured chariots will be the pillars and the various sorts of arrows will be the vessels for drinking *som* juice at the sacrifice. Swords will be the vessels for cooking rice and milk and the heads of warriors will be offered there. And their blood will be poured as libation instead of rice and milk. Missiles will be firewood; maces will be the protectors of fire and the priests at the sacrifice will be Dronacharya and Kripacharya. 40. The arrows shot by Arjun will be the vessels of sacrifice and the same will be the case of the arrows shot by Dronacharya and Ashwathama.

त्वस्य यज्ञस्य धृष्टद्युम्नः प्रतापवान्। वैतानिके कर्ममुखे जातो यत्कृष्ण पावकात् ॥ ४४ ॥ यदब्रुवमहं कृष्ण कटुकानि स्म पाण्डवान् । प्रियार्थं धार्त्तराष्ट्रस्य तेन तप्येऽहकर्मणा ॥ ४५ ॥ यदाद्रक्ष्यसि मां कृष्ण निहतं सव्यसाचिना । पुनश्चित्तिस्तदा चास्ययज्ञस्याथ भविष्यति ॥ ४६ ॥ दुःशासनस्यरुधिरं यदा पास्यति पाण्डवः । आनर्दं नर्दतः सम्यक् तदासुत्यंभविष्यति ॥४७॥ यदाद्रोणञ्च भीष्मञ्च पांचाल्यौ पातयिष्यतः । तदा यज्ञावसानंतद्भविष्यति जनार्दन ॥ ४८ ॥ दुर्योधनं यदा हन्ता भीमसेनो महाबलः । तदा समाप्स्यते यज्ञो धार्त्तराष्ट्रस्य माधव ॥ ४९ ॥ स्नुषाश्चप्रस्नुषाश्चैव धृतराष्ट्रस्यसंगताः । हतेश्वरान्हतपुत्रा हतनाथाश्च केशव ॥ ५० ॥ रुदंत्यः सह गान्धार्या श्वगृध्रकु

करेगा । ४३ । व इस यज्ञ की दक्षिणा धृष्टद्युम्न नाम राजा होगा जो कि यज्ञहीमें अग्नि से उत्पन्न हुआ है । ४४ । हे कृष्ण दुर्योधन का प्रिय करने के लिये हमने जो पाण्डवों को कटु वचन कहेहैं उनसे हमें सन्ताप होताहै, कि हमने बड़ा अकर्म किया । ४५ । व हे कृष्ण जब हमको अर्जुन के बाणों से मरे हुए देखोगे तो फिर इस यज्ञकी चिति अर्थात् दूसरे यज्ञका आरम्भ होगा । ४६ । व जब महानाद करते दुश्शासन का रुधिर भीमसेन पान करेंगे, तो यज्ञान्त में मदिराका पान होगा । ४७ । व द्रुपद राज के पुत्र शिखण्डी व धृष्टद्युम्न भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य को मारेंगे तब उस यज्ञ के बीच में एक ठहरने के लिये अन्त होगा । ४८ । व जब दुर्योधन को बलवान् भीमसेन जी मारडालेंगे तब यज्ञकी समाप्ति पूर्णाहुति होजायगी, हे जनार्दन । ४९ । व राजा पतियों के मारेजाने पर धृतराष्ट्रकी पतोहूँ व उनकी पतोहूँ । ५० । गान्धारी सहित रोदन करेंगी वो इस दुर्योधन के यज्ञका

Satyaki will be the assistant priest at the sacrifice which will be performed by Duryodhan who will have the whole army in the place of his wife. . Brave Ghatotkach will offer kshatryas like beasts at the sacrifice. The fee of the sacrifice will be king Dhrishtadyumn who is born of the fire of sacrifice. The harsh words which I have said to the Pandavas, to please Duryodhan, rankle in my heart and I repent of that wickedness. One part of the sacrifice will be over when you will see me killed by Arjun's arrows and it will be like the drinking of wine at the end of a sacrifice when Bhimsen will drink the blood of Dushasan. There will be a pause in the sacrifice when Dhrishtadyumn and Shikhandi, the sons of king Drupad, will kill Dronacharya and Bhishm the grand father. All the sacrifice will be over when Bhim will have killed Duryodhan.

रराकुले। स यज्ञ स्मिन्नवभृथो भविष्यति जनार्दन ॥ ५१ ॥ विद्यावृद्धावयो वृद्धाः क्षत्रिया क्षत्रियर्षभ। वृथा मृत्युं न कुर्वीरंस्त्वत्कृते मधुसूदन ॥ ५२ ॥ शस्त्रेण निधनं गच्छेत् समृद्धं क्षत्रमण्डलम्। कुरुक्षेत्रे पुण्यतमे त्रैलोक्यस्यापि केशव ॥ ५३ ॥ तदत्र पुण्डरीकाक्ष विधत्स्व यदभीप्सितम्। यथा कात्स्न्र्येन वार्ष्णेय क्षत्रं स्वर्गमवाप्नुयात् ॥५४॥ ॥ यावत् स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च जनार्दन। तावत्कीर्त्तिभवः शब्दः शाश्वतोऽयं भविष्यति ॥ ५५ ॥ ब्राह्मणा कथयिष्यन्ति महाभारतमाहवम्। समागमेषु वार्ष्णेय क्षत्रियाणां यशोधनम् ॥ ५६ ॥ समुपानय कौन्तेय युद्धायममकेशव। मन्त्रसंवरणं कुर्वन्नित्यमेव परन्तप ॥ ५७ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कर्णोपनिवादे एकचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१ ॥

यज्ञान्त स्नान होगा। ५१। हे कृष्णचन्द्रजी अब ऐसा कीजिये जिस में विद्या से वृद्ध अवस्था से वृद्ध क्षत्रिय लोग, विन युद्ध किये मृत्युको न पावें युद्धही में मरें तो अच्छा है। ५२। ऐसा हो जिस में पुण्यभूमि कुरुक्षेत्र में सब क्षत्रियों का मंडल युद्धही में मरे। ५३। हे कृष्ण ऐसा कार्य करो कि यह क्षत्रिय समूह समर में मरकर अमरपुरको चला जावे जबतक पहाड और नदी इस जगत में हैं जब तक कीर्त्ति रहे क्षत्रिय वंशका यश और भारतवंशियों की लडाई पंडित लोग बखान करें हे कृष्ण मेरा अर्जुन का युद्ध कराइये और यह वार्त्ता गुप्त रखिये जिस से युद्ध में हानि न हो। ५७।

The daughters in law of Dhritrashtra will weep at the death of their husbands and Gandhari will weep with them, this will be the bathing ceremony after the sacrifice. You may be pleased so to contrive, Krishna, that Kshatryas who are old in years and knowledge, may not die without fighting It will be better for them to die thus. Let all the kshatryas die fighting at Kurukshetra Let all the kshatryas go to the region of Indra after their death in battle and let learned men sing the praises of kshatryas and the greatness of the sons of Bharat as long as the heaven and earth last Be pleased to let Arjun fight with me and keep this discourse secret so that there may be no hinderance in our fighting" 57.



* सञ्जय उवाच । कर्णस्य वचनं श्रुत्वा केशवः परवीरहा । उवाच प्रहसन् वाक्य स्मितपूर्वमिदं यथा ॥१॥ श्रीभगवानुवाच । अपि त्वां न लभेत् कर्ण राज्यलम्भोपपादनम् । मया दत्तां हि पृथिवीं न प्रशासितुमिच्छसि ॥ २ ॥ ध्रुवो जयः पांडवानामितीदं न संशयः कश्चन विद्यतेऽत्र । जयध्वजो दृश्यते पांडवस्य समुच्छ्रितो वानरराजउग्रः ॥ ३ ॥ दिव्या माया विहिता भौमनेन समुच्छ्रिता इन्द्रकेतुप्रकाशा । दिव्यानि भूतानि जयावहानि दृश्यन्ति चैवात्र भयानकानि ॥ ४ ॥ नसज्जतेशैलवनस्पतिभ्य ऊर्ध्वं तिर्यग् योजन मात्ररूप । श्रीमान्ध्वज कर्ण धनंजयस्य समुच्छ्रित पावक तुल्यरूप ॥ ५ ॥ यदाद्रक्ष्यसि संग्रामे श्वेताश्वं कृष्णसारथिम् । ऐन्द्रमस्त्रं विकुर्वाणं उभे चाग्न्य-

अध्याय ॥ १४२ ॥

सञ्जय बोले कि शत्रुवीरों के नाशक कृष्णचन्द्रजी कर्ण के वचन सुन कुछ हँसतेही से बोले कि । १ । हे कर्ण राज्य मिलने का उपाय तुमको न स्पर्शकरे, क्योंकि हमारी दीहुई पृथ्वीका राज्य करना तुम नहीं चाहते । २ । पांडवोंकी निश्चय विजयहोगी इसमें कुछभी सन्देहनहीं है क्योंकि कपिध्वज का जयध्वज आगे दिखाई देताहै । ३ । देखो विश्वकर्म्मा ने दिव्यमाया बहुतसी बनाई हैं वे सब इन्द्रध्वज के समान दिखाई देतीहैं, उनमें कुछ स्वर्ग में कुछ पृथ्वीपर दिखाईदेतीं पर सब जयकरने वालीहैं, व बहुत भयकारकहैं उनका फल तुम्हारी ओर होगा । ४ । हे कर्ण अर्ज्जुन के रथकी ध्वजा चारकोश की लम्बी इतनीही चौड़ी इतनी ही ऊंची है पर विश्वकर्म्माने ऐसी युक्तिसे बनाई है कि रथ पर्व्वतों व दृक्षों व मन्दिरों के बीचमेंभी चलाजाय पर ध्वजाकहीं भी न अड़े न उसमें से अग्नि के तुल्य ज्वाला सदा निकला करती है । ५ । जब संग्राम में श्वेत घोड़े जुते अर्ज्जुनके रथको देखोगे जिसपर कृष्णचन्द्र सारथि होंगे, व ऐन्द्रास्त्र आग्नेयास्त्र वायव्यास्त्र गांडीव

CHAPTER CXLII

Sanjaya continued that on hearing the words of Karan, Shree Krishna said to him smiling, " You may not care to accept the kingdom which I offer you; but the victory of the Pandavas is certain; for they will be led by monkey's banner which carries conquest with it. Vishwakarma has made many divine things which are conspicuous like the Indra's banner. Some of them are in heaven, others on the earth but all bring victory and are very dreadful and ruinous to your cause. The banner on Arjun's chariot is four miles in length, breadth and height, but it is so constructed by Vishwakarma that the chariot goes on without hinderance through hills, trees and houses and sheds a light like that of fire at all times. When you will see in battle the chariot of Arjun drawn by white horses

ग्निमारुते ॥ ६ ॥ गाण्डीवस्य च निर्घोषं विस्फूर्जित मिवाशनेः । न तदा भविताश्रेता न कृतं द्वापर नच ॥ ७ ॥ यदाद्रक्ष्यासि संग्रामे कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् जपहोमसमा युक्तं स्वांरक्षन्ते महाचमूम् ॥ ८ ॥ आदित्यमिव दुर्धर्ष तपन्तं शत्रु वाहिनीम् । न तदा भविता त्रेता न कृतं द्वापरं नच ॥ ९ ॥ यदा द्रक्ष्यसि संग्रामे भीमसेनं महाबलम् । दुःशासनस्यरुधिरं पीत्वा नृत्यन्तमाहवे ॥ १० ॥ प्रभिन्न मिव मातंगं प्रति द्विरद घातिनम् । न तदाभवति त्रेता न कृतं द्वापर नच ॥ ११ ॥ यदाद्रक्ष्यसिसंग्रामे द्रोणं शान्तनवं कृपम् । सुयोधनञ्च राजानं सैन्धवञ्जयद्रथम् ॥१२॥ युद्धायापततस्तूर्णं वारितान् सव्यसाचिना । न तदा भवति त्रेता न कृतं द्वापरं नच ॥१३॥ यदाद्रक्ष्यसि संग्रामे माद्री पुत्रौ महाबलौ । वाहिनीं धार्त्तराष्ट्राणां क्षोभयन्तौ गजाविव ॥ १४ ॥ विगा

धन्वा से चलाये देखोगे जिनका शब्द वज्रके शब्दसेभी अधिकहोगा, तब न त्रेता होगा न सत्ययुग न द्वापर, क्योंकि तुमलोग सब युद्धमें मारेजावोगे किसी बातकी सुधिही न आवेगी । ७ । व जब कुन्तीजी के पुत्र युधिष्ठिरजीको जपहोमसे अपनी सेनाकी रक्षाकरते देखोगे, व शत्रुकी सेनापर सूर्य्य के समान तपते देखोगे तब न त्रेता होगा न सत्ययुग न द्वापर । ९ । व जब समरमें दुश्शासनका रुधिर पीकर महाबली भीमसेन को नाचते देखोगे, जैसे कि दूसरे हाथीको मार मतवाला हाथी दिखाई देता है न तब सत्ययुग होगा न त्रेता न द्वापर । ११ । व जब संग्राममें द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य्य भीष्मपितामह राजादुर्योधन सिंधुदेशके राजाजयद्रथको युद्ध करने के लिये कूदते व अर्ज्जुन के रोकेहुये देखोगे, तब न सतयुग होगा न त्रेता न द्वापर । १३ । व जब संग्राममें धृतराष्ट्रके पुत्रोंकी सेनाको क्षोभित कराते हुये दोमतवाले हाथियों के समान माद्रीजीके पुत्र नकुल सहदेवजीको कठिन समर

and guided by Shree Krishn, and will see the weapons known as Indrastra and Agneyastra discharged from the Gandiv bow and more noisy than a peal of thunder, there will neither be Treta, Satyayug nor Dwapar; for you will be out of wits with the severe slaughter. There will be neither Treta nor Satyayug or Dwapar when you will see Yudhishthir protecting his army with *jap* and *hom* and shedding his heat like the sun, over the enemy's army. There will be neither Treta nor Satyayug or Dwapar when you will see Bhimsen dancing after drinking the blood of Dushasan like a mad elephant who has killed another elephant. 11. There will be neither Treta nor Satyayug or Dwapar when you will see Dronacharya, Kripacharya, Bhishm the *grandfather*, *king Duryodhan and Jayadrath* of Sindh, jumping in battle and checked by Arjun. There will be neither Treta nor Satyayug or Dwapar when you will see Nakul and Sahadev

दे दारुः सम्पाते परवीररथारुजौ । न तदा भविता त्रेता न कृतं द्वापरं नच ॥ १५ ॥ प्रयाः कर्ण इतो गत्वा द्रोणं शान्तनवंकृपम्। सौम्योय वर्त्तते मासः सुप्रापयवसेन्धनः१६ सर्वौषधिवनस्फीतः फलवानल्पमक्षिकः । निष्पंको रसवत्तोयो नात्युष्ण शिशिरः सुखः ॥ १७ ॥ सप्तमाच्चापि दिवसा दमावास्याभविष्यति । संग्रामो युज्यतांतस्यां तामाहुः शक्र देवताम् ॥ १८ ॥ तथा राज्ञो वदेः सर्वान् ये युद्धायाभ्युपागताः । यद्वो मनीषितं तद्वै सर्वं सम्पादयास्यहम् ॥ १९ ॥ राजानो राजपुत्राश्च दुर्योधनवशानुगाः । प्राप्यशस्त्रेण निधनं प्राप्स्यन्ति गतिमुत्तमाम् ॥ २० ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कर्णोपनिवादे
द्विचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४२ ॥

में वीरों के रथ तोड़ते फोड़ते मारते पाटन देखोगे तब न सत्ययुग होगा न त्रेता न द्वापर । १५ । हे कर्ण अब यहां से जाय द्रोणाचार्य्य कृपाचार्य व भीष्मपितामहसे कहना कि यह चांदनीयुक्त बड़ा सुन्दरमास आया है, ईंधन इत्यादि अभी से इकट्ठाकर रक्खें । १६ । इसमासमें सब अन्न तैयारहै माक्षी बहुतकमहैं जलमें अब कीचड़ नहीं दिखाई देता, जल सब रसयुक्त है न बहुत गर्म्मी है न जाड़ा इससे सुखदायी है । १७ । आज से सातवें अमावस होगी जिसका देवता इन्द्रहै उसी दिन लड़ाईका आरम्भ होगा जो राजे रण के लिये आयेहैं उनकी जो इच्छा हो हमकरें राजा और राजकुमार जो दुर्योधनके वशवर्तीहैं उनकी शस्त्रों से मारे जाकर श्रेष्ठ गति होगी । २० ।

the two sons of Madri breaking down the chariots of the warriors in battle like two mad elephants. Tell Bhishm and Dronacharya, when you go from here, Karan, that they should collect firewood against the next month which has bright moon light; that grain is ripe this month, flies are less and waters are clear of mud and dirt and that neither heat nor cold is very intense. Tell them that on the seventh day will occur *amawas* the day consecrated to Indra and the war shouldbegin on that day. Tell the kings who have collected for fighting, that I shall do for them what they desire. All the kings and princes who obey Duryodhan will die fighting and will have a good end." 20.



सञ्जय उवाच ॥ केशवस्यतु तद्वाक्यं कर्णः श्रुत्वा हितं शुभम्। अब्रवीदभिस पूज्य कृष्णं तं मधुसूदनम् ॥ १ ॥ जानन्मां किं महाबाहो सम्मोहयितु मिच्छसि। योप पृथिव्याः कात्स्न्येन विनाशः समुपस्थितः ॥ २ ॥ निमित्तं तत्र शकुनि रहं दुःशासनस्त था। दुर्योधनश्च नृपतिर्धृतराष्ट्र सुतोभवत् ॥ ३ ॥ असंशयमिदं कृष्ण महद्युद्धं मुपस्थित म्। पाण्डवानां कुरूणाञ्च घोरं रुधिरकर्दमम् ॥ ४ ॥ राजानो राज पुत्राश्च दुर्योधन वशानुगा। रणे शस्त्राग्निना दग्धा प्राप्स्यन्ति यमसादनम् ॥ ५ ॥ स्वप्ना हि बहवो घोरा दृश्यन्ते मधुसूदन। निमित्तानिच घोराणि तथोत्पाता सुदारुणा ॥ ६ ॥ पराजय धार्त्तराष्ट्रे विजयञ्च युधिष्ठिरे। शंसन्त इव वार्ष्णेय विविधा रोमहर्षणा ॥ ७ ॥ प्राजा पत्यंहि नक्षत्रं ग्रहस्तीक्ष्णो महाद्युतिः। शनैश्चरः पीडयति पीडयन् प्राणिनोधिकम् ॥८॥

अध्याय ॥ १४३ ॥

संजय बोले कि कृष्णचन्द्रके हित व शुभ वचन सुन कर्णवीर मधुसूदन भगवान् श्रीहरि की पूजाकर अति विनीतहो बोले। १। हे भगवान् जानबूझकर हम को क्यों मोहित किया चाहते हो सबप्रकार से जो यह पृथ्वी का विनाश प्राप्त हुआ है। २। इस पृथ्वी के विनाश करने के कारण शकुनि, शासन व राजा धृतराष्ट्र के पुत्र राजा दुर्योधनहैं, पांचवा कोई नहीं है। ३। इससे हे कृष्ण इसमें कुछभी सन्देह नहीं कौरवों पाण्डवों का महाघोर युद्धहोगा जिसमें रुधिरकी कीच मचजायगी। ४। व राजा व राजपुत्र जो दुर्योधनके वशमेंहैं व उनके ही अनुयायीहैं, वे सग्राममें शस्त्राग्नि से भस्महोकर यमपुरको जायँगे। ५। हे मधुसूदन बड़े घोर बहुतसे स्वप्न दिखाई देतेहैं, व बड़े २ घोर निमित्त वा अति दारुण उत्पात भी दिखाई देतेहैं। ६। व वे सब विविध प्रकार केहैं सबोंको देख रोम खड़ेहो जातेहैं व सब के सब दुर्योधनकी पराजय व युधिष्ठिरजी की विजयही मानों कहतेहैं। ७। देखो तीक्ष्ण महाद्युति शनैश्चर नामग्रह ब्रह्माके नक्षत्र रोहिणी में

CHAPTER CXLIII

Sanjaya said that on hearing the good words of Shree Krishn, brave Karan humbly said to him, "Why do you knowingly intimidate us Bhagwan! The destruction of the land is imminent and Shakuni as well as myself, Dushasan and Duryodhan the sons of king Dhritrashtra are the only cause of that destruction There is no doubt, Krishn, that there will be a severe fight between the Kauravas and the Pandavas, in which the ground will be covered with blood, the kings and princes who have come to Duryodhan's help will die and go to the region of Yam Dreadful dreams are dreamed and ominous signs appear. They are of different sorts. At the sight of them the hair of body stands on end and all portend Duryodhan's defeat and Yudhishthir's victory Saturn of great glory

कृत्वा चांगारको वक्रं ज्येष्ठायां मधुसूदन । अनुराधां प्रार्थयते मैत्रं संगमयन्निव ॥९॥ नूनं महद्भयं कृष्ण कुरूणां समुपस्थितम् । विशेषेणहि वार्ष्णेय चित्रां पीडयते ग्रहः १०॥ सोमस्य लक्ष्म व्यावृत्तं राहुरर्कमुपैतिच । दिवश्चोल्काः पतन्त्येताः सनिर्घाताः सकम्पनाः ॥ ११ ॥ निष्टनन्तिच मातंगा मुञ्चन्त्यश्रूणिवाजिनः । पानीयं यवसञ्चापिनाभिनन्दति माधव ॥ १२ ॥ प्रादुर्भूतेषु चैतेषु भयमाहुरुपस्थितम् । निमित्तेषुमहाबाहो दारुणं प्राणिनाशनम् ॥ १३ ॥ अल्पभुक्तं पुरीषञ्च प्रभूतमिह दृश्यते । वाजिनां वारणानाञ्च मनुष्याणाञ्च केशव ॥ १४ ॥ धार्त्तराष्ट्रस्य सैन्येषु सर्वेषु मधुसूदन ।

आयाहै इससे प्राणियों को अधिक पीड़ित करेगा व कररहा है । ८ । व हे जनार्दन ज्येष्ठानक्षत्रसे वक्री हो मंगल अनुराधा में आया है इसका फल यह है कि ज्येष्ठ राजाके मित्रलोगों का व राजाकाभी नाशकराता है । ९ । निश्चय है कि कौरवों को महाभय उपस्थित हुई है, क्योंकि महापात नाम ग्रह चित्रा नक्षत्र में आया है, इसके वेधसे राजाकी जातिवालों का नाश होताहै । १० । देखो अमावास्या निकट आई है इससे चन्द्रमा क्षीणहोने से पापग्रह होगया व उस तिथि में सूर्य्यभी आते हैं व उन दोनोंका वैरी राहुभी वक्रीहोकर वहीं आवेगा तब कर्त्तरी योगहोगा इस से सोमवंशी सूर्य्यवंशी दोनोंका नाशहोगा, व दिनही में उल्कापात दिखाई देतेहैं वज्रभी उन्हींके साथ गिरता भूकम्पभी होताहै ।११। हाथी घोड़े सब रोते हैं घास भूसा पानीकी इच्छा नहीं करते, व न प्रसन्नता किसीसमय उनकी दिखाई देती है । १२ । हे भगवान्, इन दारुण उत्पातों के प्रकट होनेसे प्राणियों का नाशक भय उपस्थित जान पड़ता है । १३ । व घोड़े हाथी मनुष्य आजकल थोड़ा भी भोजन करतेहैं तो मल बहुत करते हैं यहभी महाअनर्थ का मूल है । १४ । इन

has joined Rohini. He is sure to give all beings great trouble and is already doing so. The star named Mangal has deviated from Jyeshtha to join Anuradha and will cause the destruction of the elder king and his friends. Surely the Kauravas are in great danger; for the star Mahapat has come to Chitra and will cause the destruction of the king's kinsmen. 10. The *amavasya* (fifteenth day of the month) is approaching and the moon being on the wane has become unpropitious. The sun will approach the moon, and *Rahu*, too, who is their enemy will come to them in the Kartari yog. This will lead to the destruction of the solar and lunar dynasties. Ashes fall during the day together with vajra and earthquakes are common. Elephants and horses weep. They have no desire for fodder or water and seldom show any signs of pleasure. These bad omens

पराभवस्य तल्लिङ्ग मिति प्राहुर्मनीषिणः ॥ १५ ॥ प्रहृष्टं वाहनं कृष्ण पाण्डवानां प्रचक्षते । प्रदक्षिणा मृगाश्चैव तत्तेषांजयलक्षणम् ॥ १६ ॥ अपसव्या मृगाः सर्वे धार्त्त राष्ट्रस्य केशव । वाचश्चाप्यशरीरिण्यस्तत् पराभवलक्षणम् ॥ १७ ॥ मयूराः पुण्यशकुना हंससारसचातकाः । जीवञ्जीविकसंघाश्चाप्यनुगच्छन्ति पाण्डवान् ॥ १८ ॥ गृध्राः कङ्का बकाः श्येना यातुधानास्तथा वृकाः । मक्षिकाणाञ्च संघाताश्चनुधावन्तिकौर वान् ॥ १९ ॥ धार्त्तराष्ट्रस्य सैन्येषु भेरीणां नास्ति निःस्वनः । अनाहताः पाण्डवानां नदन्ति पटहाः किल ॥ २० ॥ उदपानाश्च नर्दन्ति यथा गोवृषभास्तथा । धार्त्तराष्ट्रस्य सैन्येषु तत्पराभवलक्षणम् ॥ २१ ॥ मांसशोणितवर्षञ्च वृष्टं देवेनमाधव । तथा

सब उत्पातों को देख पंडित लोग कहते हैं कि दुर्योधनकी सब सेनाओं की हार होगी । १५ । व पांडवों के सब वाहन हर्षित दिखाई देतेहैं व उनकी दाहिनी ओर मृगगण दिखाई देते यह सब उनकी विजयका लक्षण है । १६ । व दुर्योधन के सब मृगगण बाईओर दिखाई देतेहैं आकाशवाणी भी बार २ दुर्योधनकी पराजयके ही विषयमें होती है । १७ । मयूर व और भी पुण्यपक्षी हंस सारस चातक चकोर जीवजीवक आदि पाण्डवों के पीछे उड़ते दिखाईदेते यह उनकी जयका लक्षण है । १८ । व गीध उजली चील्ह, बगुला, बाज राक्षस, व भेड़िया, व मक्खियों के झुंड कौरवों के पीछे २ दौड़तेहैं, यह उनके मरणका लक्षणहै । १९ । दुर्योधन की सेनाओं में तुरुही बजाई जातीहै तोभी नहीं बजती, व पाण्डवोंकी ओर बिना बजाये डंका बजतेहैं । २० । कूपादि जलाशयों में अपने आप ऐसा शब्द होताहै जैसे बैल डकरातेहैं, ये सब दुर्य्योधनकी सैन्यों के निरादर के लक्षणहैं

---

portend evil and destruction. Elephants, horses and men eat little and drop much. This is a bad sign. Learned men ascribe all these ill omens to the defeat of Duryodhan's armies. The beasts of the Pandavas look pleased and flocks of deer pass to the right of them: this is the sign of victory to them. Duryodhan sees deer to his left and the divine voice has often proclaimed his defeat. Peacocks and other birds of good omen, such as the crane, the chatak, the partridge and jivjivak fly behind the Pandavas foretelling their victory. Vultures, white kites, herons, falcons, rakshases wolves and swarms of flies follow the Kauravas and this is a sign of their death. Bugles, when sounded, give out no notes in Duryodhan's army, while in the army of the Pandavas drums sound without being beaten. 20. Wells and other reservoirs of water give out a sound like the bellowing of bulls and this is a sign of the defeat of

गन्धर्वनगरं भानुमत् समुपस्थितम् ॥ २२ ॥ सप्राकारं सपरिखं सवप्रश्चारुतोरणम्। कृष्णस्य परिघस्तत्र भानुमावृत्य विष्ठति २३ उदयास्तमने सन्ध्ये वेदयन्ती महद्भयम्। शिवाचवाशतेघोरं तत्पराभवलक्षणम् ॥ २४ ॥ एकपक्षाक्षिचरणाः पक्षिणोमधुसूदन । उत्सृजंतिमहद्घोरंतत्पराभवलक्षणम् ॥ २५ ॥ कृष्णग्रीवाश्चशकुनारक्तपादाभयानकाः। संध्यामभिमुखायांति तत्पराभवलक्षणम् ॥ २६ ॥ ब्राह्मणान्प्रथमंद्वेष्टि गुरूंश्चमधुसूदन। भृत्यान्भक्तिमतश्चापि तत्पराभवलक्षणम् ॥ २७ ॥ पूर्वादिग्लोहिताकाराशस्त्र वर्णाच दक्षिणा । आमपात्रप्रतीकाशा पश्चिमामधुसूदन। उत्तरादीश्च वर्णाभा दिशां वर्णा उदाहृताः ॥ २८ ॥ प्रदीप्ताश्च दिशः सर्वा धार्तराष्ट्रस्यमाधव। महद्भयं वेदयन्ति

। २१ । हे माधव यहां मांस व रुधिरकी वर्षा भी देवता लोग करतेहैं व घेरा सहित आकाश में गन्धर्व नगर दिखाई देता सूर्य में मंडल पड़ता है । २२ । शहरपनाहकी दीवारके समान व खाई के समान खेतकी मड़के तुल्य फाटक परके बड़े उतरंग के आकार कालेरंगका घेरा सूर्यकी सब ओर दिखाई देताहै। २३ । फिर सूर्य के अस्त उदयके समय प्रतिदिन सियारी रोदन करती है उससे बड़ीभय होतीहै यहभी दुर्योधनकी हारका लक्षणहै । २४ । व जिन पक्षियोंके पक्ष नेत्र व चरण एकही होते जिन्हें महाराष्ट्र भाषामें पांकोली कहते वे बीभत्स दिशा पेशाव करतेहैं यहभी दुर्योधन के अनादर व पराजयका लक्षणहै । २५ । व जिन पक्षियों का गला तो काला होता व पैरलाल वे भयानक पक्षी सन्ध्या के समय कौरवों के सन्मुख दौड़ते हैं यहभी कौरवों के निरादरका लक्षणहै।२६। व दुर्योधन आजकल प्रथमतो ब्राह्मणों से अप्रीति करते हैं फिर गुरुसे व जो भक्तिमान नौकर चाकरहैं उनसे यहभी उनके निरादर होनेका लक्षणहै । २७ । यहां पूर्वदिशा सदालाल बनीरहती, दक्षिण दिशा शस्त्रके आकारकी, व पश्चिमदिशा कच्चे मिट्टी के बर्त्तनके आकार की

---

the Kaurava army. Gods send forth a shower of flesh and blood here; the city of Gandharvas together with its boundary is visible and there is seen round the sun a black cirle like the wall round the city or like the ridge of a field or gate sill. The female jackal cries at day break and at set of sun, causing great fear and betokening the defeat of Duryodhan. Birds with one wing, one eye and one leg drop urine: this also is a sign of Duryodhan's defeat. Dreadful birds with black necks and red feet run before the Kauravas in the evening; this is the sign of bad luck to them. Duryodhan has no repect for Brahmans and faithful servants; this will lead to his ruin. The East always looks red; the south looks like a weapon and

तस्मिन्नुत्पातदर्शने ॥ २९ ॥ सहस्रपादं प्रासादं स्वप्नान्ते स्म युधिष्ठिरः । अधिरोहन्मया दृष्टः सह भ्रातृभिरच्युत ॥ ३० ॥ श्वेतोष्णीषाश्च दृश्यन्ते सर्वे वै शुक्लवाससः । आसनानि च शुभ्राणि सर्वेषामुपलक्षये ॥ ३१ ॥ तव चापि मया कृष्ण स्वप्नान्ते रुधिरा विला । अन्त्रेण पृथिवी दृष्टा परिक्षिप्ता जनार्दन ।३२॥ अस्थिसञ्चयमारुह्य चामितौजा युधिष्ठिरः । सुवर्णपात्र्यां संहृष्टो भुक्तवान्घृतपायसम् ॥ ३३ ॥ युधिष्ठिरो मया दृष्टो ग्रसमानो वसुन्धराम् । त्वया दत्तामिमां व्यक्तं भोक्ष्यते स वसुन्धराम् ॥ ३४ ॥ उच्चं पर्वतमारूढो भीमकर्मा वृकोदरः । गदापाणिर्नरव्याघ्रो ग्रसन्निव महीमिमाम् ॥ ३५॥ क्षपयिष्यति नः सर्वान् ससुव्यक्तमहारणे । विदितं मे हृषीकेश यतो धर्मस्ततो जयः ॥ ३६ ॥

। २८ । और प्रकाशतो यहां सब दिशाओं में दिखाई देताहै इस उत्पातके देखने से दुर्योधनको बड़ीभारी भय लोग बताते हैं । २९ । हमने स्वप्न के अन्त में देखाहै कि युधिष्ठिरजी सहस्र खंभालगे घवरहर पर बैठे हैं व उनके भाई भी उन्हीं के संग हैं । ३० । सब के सब उजली पगड़ी बांधे हैं, व सब शुक्लही वस्त्र धारण किये हैं, आसन भी सबके श्वेतही हमने देखे । ३१ । व तुम्हारा शरीर भी हमने देखा मानों आंतसे बँधाहुआ है यहभी स्वप्नही के अंतमें हमने देखाहै । ३२ । व यहभी देखा कि जानों युधिष्ठिर हाड़ों के ढेरपर बैठ सोनेकी थारी में घृत मिलीहुई खीर खाते हैं । ३३ । यहभी हमने देखा कि युधिष्ठिर पृथ्वीही को लीलेजातेहैं, इससे आपकी दीहुई यह पृथ्वी अवश्य भोगेंगे ३४ यहभी देखा कि जानों भयंकर कर्मकारी भीमसेनजी बड़े ऊंचे पहाड़पर चढ़ हाथ में गदालिये इस पृथ्वीको लीलेलेते हैं । ३५ । इस से यह निश्चय है कि रण में वे हम सब लोगों को अवश्य मारडालेंगे, यह हमको विदित है क्योंकि जहां धर्म होताहै वहीं विजय होती है । ३६ । व यहभी

the west like a vessel made of unburnt clay. All the directions are bright and this ill omen is the cause of great fear to Duryodhan. I have seen at the end of a dream, Yudhishthir together with his brothers sitting in a house having a hundred columns. 30. I saw them wearing white turbans and white clothes and seated on white seats. At the end of a dream I have seen your body bound as if it were with intestines. I also saw Yudhisthir sitting on a heap of bones eating rice and milk mixed with butter out of a gold dish. He looked as if he would swallow the whole earth and therefore he is sure to enjoy the land granted by you. I also saw Bhimsen of dreadful visage on a very high hill, mace in hand looking as though he would gulp down all the earth. It is therefore certain that he is sure to kill us all in battle; for where there is virtue there is victory 36.

पाण्डुरं गजमारूढो गाण्डीवी स धनञ्जयः । त्वया सार्धं हृषीकेश श्रिया परमया ज्वलन् ॥ ३७ ॥ यूयं सर्वे वधिष्यध्वंतत्र मे नास्ति संशयः । पार्थिवान् समरे कृष्ण दुर्योधनपुरोगमान् ॥ ३८ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महारथः । शुक्लकेयूरकंठत्राः शुक्लमाल्याम्बरावृताः ॥ ३९ ॥ अधिरूढा नरव्याघ्रा नरवाहनमुत्तमम् । त्रय एते मया दृष्टाः पांडुरच्छत्रवाससः ॥ ४० ॥ श्वेतोष्णीषाश्च दृश्यन्ते त्रय एते जनार्दन । धार्त्तराष्ट्रेषु सैन्येषु तान् विजानीहि केशव ॥ ४१ ॥ अश्वत्थामा कृपश्चैव कृतवर्मा च सात्वतः । रक्तोष्णीषाश्च दृश्यन्ते सर्वे माधव पार्थिवाः ॥ ४२ ॥ उष्ट्रप्रयुक्तमारूढौ भीष्मद्रोणौ महारथौ । मया सार्धं महाबाहो धार्त्तराष्ट्रेण वा विभो ॥ ४३ ॥ अगस्त्यशास्तांच दिशं प्रयाताः स्म जनार्दन । अचिरेणैव कालेन प्राप्स्यामो यमसादनम् ॥ ४४ ॥ अहञ्चान्ये

देखा कि अर्जुन जी तुम्हारे साथ उजले हाथी पर चढ़े हैं, इस से परम शोभासे शोभित हैं । ३७ । इस से आप सबलोग दुर्योधनके वशीभूत अनुयायियोंको अवश्य मारडालेंगे इस में सन्देह नहीं है । ३८ । नकुल सहदेव व सात्यकि इन तीनों को हम ने देखा है कि सब शुक्लही बहूंटे गलबन्धन माला आदि धारण किये हैं ३९ व सबके सब पालकियोंपर सवार हैं, व तीनों के ऊपर श्वेतछाता लगाहै व सबश्वेतही वस्त्र धारण किये हैं । ४० । व सबश्वेतही पगड़ियां बांधे हैं, इस से इन तीनों को दुर्योधन की सेनाओंमें इधर उधर कूदते मारते पीटतेही जानिये । ४१ । व अश्वत्थामा, कृपाचार्य, सात्वतवंशी कृतवर्मा, इन सबों को हमने लाल पगड़ियां बांधेदेखाहै व इधर के सब राजाओंको भी लालही पगड़ियां बांधे देखा । ४२ । भीष्मपितामह व द्रोणाचार्यको अपने व दुर्योधनके साथ ऊंटों पर चढ़े हमने देखा है । ४३ । फिर ऊंटोंपर चढ़े दक्षिण दिशाको जाते देखाहै इससे थोड़ेही दिनों में हम सब अवश्य यमपुर को जायँगे । ४४ । बस हम व और सब राजा लोग

I also saw A jun sitting with you on a white elephant in great glory. Your party is therefore sure to destroy Duryodhan and his party. I have seen Nakul, Sahadev and Satyaki wearing white garlands, riding on palanquins, wearing white clothes and shaded by white umbrellas, 40. They wore white turbans and therefore they will make great havoc in the armies of Duryodhan. I have seen Ashwathama, Kripachrya, Kritvarma and all the kings on our side wearing red turbans. I saw Bhishm, Dronacharya, myself and Duryodhan riding on camels and going towards the south; we are therefore sure to have very shortly a journey towards the city of Yam. I as well as all the kings and kshatryas that have collected here, will be burnt in the fire of the Gandiv bow without a shadow

च राजानो यच तत् क्षत्रमण्डलम् । गाण्डीवाग्निं प्रवेक्ष्याम इति मे नास्ति संशयः ॥ ४५ ॥ कृष्ण उवाच । उपस्थितविनाशेयं नूनमद्य वसुन्धरा । यथा हि मे वचः कर्ण नोपैति हृदयं तव ॥ ४६ ॥ सर्वेषां तात भूतानां विनाशे प्रत्युपस्थिते । अनयो नयसङ्काशो हृदयान्नाप सर्पति ॥ ४७ ॥ कर्ण उवाच ॥ अपित्वां कृष्ण पश्याम-जीवन्तोऽस्मान् महारणात् । समुत्तीर्णा महाबाहो वीरक्षत्र विनाशनात् ॥ ४८ ॥ अथवासंगमः कृष्ण स्वर्गेनो भविता ध्रुवम् । तत्रेदानीं समेष्यामः पुनः सार्धं त्वयानघ ॥४९॥ सञ्जयउवाच इत्युक्त्वा माधवं कर्णः परिष्वज्यच पीडितम् । विसर्जितः केशवेन रथोपस्थादवातरत् ॥ ५० ॥ ततः स्वरथमास्थाय जांबूनदविभूषितम् । सहास्माभिर्न्निववृते राधेयो दीन मानसः ॥ ५१ ॥ ततः शीघ्रतरं प्रायात् केशवः सहसात्यकिः । पुनरुच्चारयन् वाणीं याहि याहीति सारथिम् ॥ ५२ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कर्णोपनिवादे कृष्णकर्णसंवादे त्रिचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४१ ॥

व जितने क्षत्रिय यहां इकट्ठे हुयेहैं सबके सब गांडीवधन्वा की आग में गिर भस्म होंगे इस में कुछ भी सन्देह नहीं है । ४५ । इतनासुन श्रीकृष्णचन्द्र जी बोले कि हेकर्ण हमारा वचन तुम्हारे हृदय में नहीं टिकता बस इस पृथ्वी भरका विनाश निकट आगयाहै ।४६। हेतात जब सब प्राणियों का नाश निकट आजाता है तो अन्याय न्यायके समान जानपड़ता व हृदय से नहीं हटता । ४७ । यह सुन कर्ण बोले कि जो क्षत्रिय नाशक युद्ध से बचेंगे तो आपके दर्शन करेंगे और परमानंद से हर्षित होंगे नहीं तो स्वर्ग में ही मिलेंगे युद्ध होनेतक संग रहेगा और मरण पश्चात् भी साथ होगा । ४९ । संजयने कहा बीर कर्ण श्रीकृष्ण से वार्ता कर मिल विदा हो रथ से उतरकर चला गया और हम लोगों के साथ रथ पर चढ़ कर उदास चित्तहो लौटा तब श्रीभगवान्ने सा[illegible] कहा कि शीघ्र चलो जिससे विलंब नहो यहसुनकर उस[illegible] चल[illegible] २ ॥

वैशम्पायन उवाच ॥ असिद्धानुनये कृष्णे कुरुभ्य पाण्डवान् गते । अभिगम्य पृथां क्षत्ता शनैः शोचन्निवा ब्रवीत् ॥ १ ॥ जानासि मे जीवपुत्रि भाव नित्यमविग्रहे। क्रोशतो नच गृह्णीते वचनं मे सुयोधन ॥ २ ॥ उपपन्नो ह्यसौ राजा चेदिपाचाल केकयै । भीमार्जुनाभ्या कृष्णेन युयुधानयमैरपि ॥ ३ ॥ उपप्लव्ये निविष्टोपि धर्म मेव युधिष्ठिर । काक्षते ज्ञाति सौहार्दाद् बलवान् दुर्बला यथा ॥ ४ ॥ राजातु धृतराष्ट्रोऽयं वयोवृद्धो न शाम्यति । मत्त पुत्रमदेनैव विधर्मे पथि वर्त्तते ॥ ५ ॥ जयद्रथस्य कर्ण स्य तथा दु शासनस्यच । सौबलस्यच दुर्बुध्या मिथो भेद प्रपत्स्यते ॥ ६ ॥ अधर्मेण

अध्याय १४४ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि जब श्रीकृष्णचन्द्रजी कौरवों से विफल विनय हो पाण्डवों के समीप को गये तब विदुरजी जाय कुन्तीजी से शोच करते हुये धीरेसे बोले । १ । कि हे कुन्तीजी जानतीहो कि हमारा अभिमाय विग्रह होनेका नहीं है इस से हम बार २ कहतेहैं ज ते हैं पर दुर्योधन हमारा वचन नहीं अंगीकार करता । २ । देखो राजा युधिष्ठिरजी चंदेली के राजा पांचाल देशके राजा केकय देशके महीपाल, भीमसेन अर्जुन कृष्णचन्द्र सात्यकि नकुल व सहदेवसे युक्तभीहै पर विराट् के नगर में बैठेहुये धर्मही की चिन्ता करतेहैं, व मारे सौहृदके इतने भारी बलवान् होकरभी दुर्बलके समान बैठेहैं जिसमें जाति बिरादरीवाले व नातवातोंका नाश न हो । ४ । परन्तु राजाधृतराष्ट्र वृद्धभी होगयेहैं पर शान्त नहीं होते पुत्रों के मद से ऐसे मतवाले होगये हैं कि अधर्महो के मार्ग पर चलते हैं । ५ । किन्तु जयद्रथ, कर्ण, दुश्शासन, व शकुनि की दुर्बुद्धि से पाण्डवों के विषय में भेदही देखतेहैं

CHAPTER CXLIV

Vaishampayan said that when Shree Krishn had returned to the Pandavas from his unsuccessful mission, Vidur went thoughtfully to Kunti and *gently said to her*, "You know, Kunti, that I am quite averse to fighting and have repeatedly been remonstrating with Duryodhan, but he does not hear me King Yudhishthir, though he has the kings of Chandeli and Kaikaya, Bhimsen, Arjun, Shree Krishn, Satyaki, Nakul and Sahadev, thinks of dharm at Viratnagar, and in spite of his great strength sits like a weakling in order that his kinsmen may not be destroyed. But Dhritrashtra in spite of his old age is not pacified He is so proud of his sons as to walk on the path of wickedness and by the bad advice of Jayadrath, Karan, Dushasan and Shakuni, bears ill will towards the Pandavas. He had promised to return them their kingdom after

द्वि धर्मिष्ठं कृतं चै कार्यमीदृशम्। येषां तेषामयं धर्मः सानुबन्धोभविष्यति ॥ ७ ॥ क्रिय माणे बलाद्धर्मे कुरुभिः कोन संज्वरेत्। असाम्ना केशवे याते समुद्योक्ष्यन्ति पांडवाः ८ ततः कुरूणामनयो भविता वीर नाशनः। चिन्त यन्न लभे निद्रां मह:सुच निशा सुच ॥ ९ ॥ श्रुत्वातु कुन्ती तद्वाक्य मर्थं कामेन भाषितम्। सा निःश्वसन्ती दुःखार्त्ता मनसा विममर्शह ॥ १० ॥ धिगस्त्वर्थं यत्कृतेयं महान्ज्ञाति वधःकृतः। वर्त्स्यते सुहृदांचैव युद्धे स्मिन् वै पराभवः ॥ ११ ॥ पांडवाश्चेदि पांचाला यादवाश्च समागताः। भारतैःसह योत्स्यन्ति किन्नु दुःख मतः परम् ॥ १२ ॥ पश्ये दोषं ध्रुवं युद्धे तथाऽयुद्धे पराभवम्।

। ६ । व जो प्रतिज्ञा कीथी कि चौदहें वर्ष में आप अपना राज्यलेना इस धर्म को जिन लोगों के कहने से अधर्मही समझते इस अधर्म काफल वंश भरका नाश है वही होगा कि परिवार नातवाते इष्ट मित्रों सहित मारे जायँगे । ७ । कौरवोंने जबरदस्ती धर्म का त्याग किया है इस से कौन पुरुष यह सुन उदास न होगा कृष्णचन्द्रजीका कहा उन्होंने नहीं माना वे ऐसे ही चले गये हैं अब पांडव लोग जरूर उद्योग करेंगे । ८ । तब कौरवों के अन्याय का यहफल होगा कि सब वीरों का नाश होगा इसबातकी चिंता करते २ हमको न दिनमें नींद आती है न रात्रि को । ९ । विदुरजी के ऐसे वचन सुन जो कि उन्होंने अर्थ की इच्छा से युक्त कहेथे, मारे दुःख के ऊर्धश्वासें लेतीहुई कुन्तीजीने अपने मनमें विचार किया । १० । कि इस युद्ध में सुहृदों का बड़ा भारी अनादर होगा इस से अर्थ को धिक्कार है जिस के अर्थ यह बडा भारी ज्ञाति वालों का वध होगा । ११ । पाण्डव चंदेली के राजा पांचाल देशके राजा व यदुवंशी सब इकठे हुये हैं ये भीष्मपिता महादि श्रेष्ठ लोगों से युद्ध करेंगे फिर इस से अधिक दुःख और क्या

the fourteen years; but now he thinks it right not to give them back their right. The result of this deviation from Dharm will be the destruction of the whole family together with friends and kinsmen. The Kauravas *are going astray from dharm;* who will not grieve to hear this ? They gave no ear to the advice of Shree Krishn and sent him back. The Pandavas are now sure to exert and the injustice *of the Kauravas will lead to the ruin of all the warriors.* I find no sleep with care during the day or night. Hearing the good words of Vidur, Kunti heaved deep sighs of distress and thought within herself, 10. " There will be a great loss of friends and kinsmen in this war for the sake of this accursed wealth. The Pandavas are united with the Panchals, the Yadavs ahd the king of Chandeli

अधनस्य मृतं श्रेयो नहि ज्ञातिक्षयोजयः॥१३॥इति मे चिन्तयन्त्या वै हृदि दुःखंप्रवर्त्तते। पितामहः शान्तव आचार्य्यश्च युधाम्पतिः ॥ १४ ॥ कर्णश्च धार्त्तराष्ट्रार्थं वर्धयन्तिभयं मम । नाचार्यः कामवान् शिष्यैर्द्रोणो युध्येतजातुचित् ॥ १५ ॥ पाण्डवेषु कथं हार्दंकुर्य्याच्च पितामहः । अयन्त्वेको वृथादृष्टिर्धार्त्तराष्ट्रस्यदुर्मतेः १६ मोहानुवर्त्ती सततं पापो द्वेष्टि च पाण्डवान् । महत्यनर्थे निर्बन्धी बलवांश्च विशेषतः ॥ १७ ॥ कर्णः सदा पाण्डवानां तन्मे दहति सम्प्रति । आशंशे त्वद्यकर्णस्य मनोहं पाण्डवान् प्रति ॥ १८ ॥ प्रसादयितुमासाद्य दर्शयन्ती यथातथम् । तोषितोभगवान् यत्र दुर्वासा मे वरं ददौ १९

होगा । १२ । अयुद्ध करने में अनादर होता है पर देखने में युद्ध में बड़ा भारी दोष है, इस से अधन होकर मरजाय वह तो कल्याण कारक है पर जाति वालों के नाश करने वाली जय कल्याण कारक नहीं है । १३ । इस बात को जब हम विचारती हैं तो हमारे हृदय में दुःख होता है, कि शन्तनुजी के पुत्र भीष्म जी व सब के आचार्य द्रोण भगवान् । १४ । व कर्ण ये सब दुर्योधनके अर्थ हमको भय बढ़ाते हैं, भला द्रोणाचार्यजी को अब शिष्यों से कुछ प्रयोजन नहीं जो अब युद्ध करेंगे । १५ । व पाण्डवों में भीष्मजी प्रेम कैसे न करेंगे, यह तो दुर्मति दुर्योधन की वृथा दृष्टि है । १६ । यह ऐसा मोही है कि पापी व्यर्थ पाण्डवों से वैर करता है बड़े भारी अनर्थ में इसका हठ है व बलवान् जानों विशेष हुई है ।१७। फिर औरोंको क्या कहें यह कर्ण पाण्डवों से वैरकरताहै यहबात और भी हमारे हृदय को जलाती है, हम तो जानतीहैं कि कर्णका मन पाण्डवों कीही ओर लगना चाहिये । १८ । क्योंकि हमने किसी प्रकारसेप्रसन्न करनेके लिये दुर्वासाजीको अपने पास बुलाया फिर प्रसन्न हो दुर्वासाजीने हमको वरदान दिया

---

and will certainly fight Bhishm the grandfather and other best of men. What misery can be greater than this ? There is some disgrace in abstaining from war, but the waging of war will lead to most disastrous cousequences. It is better to die penniless than to have to kill one's kinsmen. My heart grieves when I think of how Bhishm the son of Shantanu, Dronacharya the preceptor of all and Karan increase my fear for the sake of Duryodhan. Dronacharya is sure to have some regard for his disciples and Bhishm cannot forego his love for the Pandavas. Duryodhan has formed wrong views. He foolishly bears enmity towards the Pandavas for nothing as he is very vain of his power. Karan, too, bears enmity towards them and this burns my heart, though, naturally he should love the

आह्वानं मन्त्रसंयुक्तं वसन्त्याः पितृवेश्मनि । साहमन्तःपुरेराज्ञः कुन्तिभोजपुरस्कृता ॥ २० ॥ चिन्तयन्ती बहुविधं हृदयेन विदूयता । बलाबलञ्च मन्त्राणां ब्राह्मणस्य च वाग्बलम् ॥ २१ ॥ स्त्रीभावाद्बालभावाच्च चिन्तयन्तीपुनः पुनः । धात्र्या विश्रब्धया गुप्ता सखीजनवृता तदा ॥ २२ ॥ दोषं परिहरन्ती च पितुश्चारित्ररक्षिणी । कथन्नु सुकृतं मे स्यान्नापराधवती कथम् ॥ २३ ॥ भवेयामिति सञ्चिन्त्य ब्राह्मणतं नमस्यच । कौतूहलात्तुतं लब्ध्वा बालिश्यादाचरन्तदा । कन्या सती देवमर्क मासाद्य महन्ततः ॥ २४ ॥ योसौ कानीन गर्भो मे पुत्रवत् परिरक्षितः । कस्मान्नकुर्याद्वचनं पथ्यं भ्रातृहितं तथा ॥ २५ ॥ इति कुन्ती विनिश्चित्य कार्यं निश्चय मुत्तमम् । कार्यार्थमभि-

---

। १९ । वह वरदान ऐसाथा कि एक मंत्र हमको उन्हों ने बताया जिस से हम जिस देवताको चाहैं अपने पास बुलावें ऐसा वर पाय कुन्तिभोज नाम अपने पिताके घरमें हम बसती थीं ।२०। हमने अपनेमनमें विचारा कि ब्राह्मणोंके मंत्र बलवान् भी होतेहैं व निर्बल भी इस से इस मंत्र को परखना चाहिये पर ब्राह्मणके वचन का बलजान हमारा हृदय कांपताथा, परन्तु स्त्रीके भावसे व बालभाव से बार २ हमको चिन्ता लगी रहती कि मंत्रकी परीक्षा अवश्य लेनी चाहिये, परन्तु हम अकेली तो रहती न थीं सखियां व उपमाता भी हमारे संग सदा रहतीथीं । २२ । फिर यहभी विचारतीथीं कि जिसमें पिता के धर्म कीभी रक्षा हो व हमको दोष भी नहो व पुण्यभी हमको हो अपराधवतीभी हम न कहावें । २३ । एकदिन दुर्वासा जीके प्रणाम कर उस मंत्र से हमने अपने अनरपनसे सूर्य का आवाहन किया, सूर्य आये यद्यपि हम कन्याथीं पर हममें वे अपनावीर्य स्थापन करगये। २४। उस गर्भ को हमने रक्षा किया वह गर्भ अपने भाइयों का हितपथ्य क्यों न करेगा

Pandavas. For, when I had gratified Durvasa, he gave me a boon. He taught me an aphorism by virtue of which I could summon to me any god I liked. Having got that boon I continued to live in the house of my step-father, Kuntibhoj, 20. I knew that some aphorisms of Brahmans were powerful while others were weak and thought of testing its power, although my heart trembled with the fear of the Brahman. But womanish curiosity prompted me to try it. I lived with my playmates and step mother and found no time to try it. I, thought of my step father's honour, of my own fame and and of the propriety of the deed. One day, having bowed down to Durvasa, I summoned Surya who came to me and made me conceive in my maidenhood. I protected the child in my womb and he

निश्चित्य ययौ भागीरथीं प्रति ।२६। आत्मजस्य ततस्तस्य घृणिनः सत्यसंगिनः । गङ्गातीरे पृथाऽश्रौषीद् वेदाध्ययननिस्वनम् ॥२७॥ प्रांमुखस्योर्ध्वबाहोः सापर्य्य तिष्ठत पृष्ठतः । जप्यावसानं कार्यार्थं प्रतीक्षन्ती तपस्विनी ॥ २८ ॥ अतिष्ठत् सूर्य तापार्त्ता कर्णस्योत्तरवाससि । कौरव्यपत्नी वार्ष्णेयी पद्ममालेव शुष्यती ॥ २९ ॥ आपृष्ठतापाज्जप्त्वा स परिवृत्य यतव्रतः । दृष्ट्वा कुन्तीमुपातिष्ठ दभिवाद्य कृतांजलिः ॥ ३० ॥ यथान्यायंमहातेजा मानी धर्म भृतांवरः । उत्स्मयन प्रणतः प्राह कुन्तीं वैकर्त्तनो वृषः ॥ ३१ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कुन्तीकर्णसमागमे चतुश्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४४ ॥

। २५ । यह विचार कुन्ती आवश्यक कार्य के लिये गङ्गा तटपर गई । २६ । वह दयालु सत्यव्रत कर्ण वेदाध्ययन कररहाथा कुन्ती उसकी वाणी सुनकर गंगा तटपर गई और देखा कि कर्ण ऊर्ध्वबाहु पूर्व,मुख खड़ा हुआ जपकररहा है पृथ प्रेमसे उसके पीछे खड़ी होगई और धूपसे उसको ढकदिया वह कोमल पांडुनारी और वृष्णि सुता धूप में कुम्हलाई जाती थी जब दुपहर तक जप करके कर्णने अपना मुखफेरा और कुन्ती को खड़ा देखा तब पुत्रकी भांति उसके सामने हाथ जोड़ कर खड़ा होगया महा तेजस्वी धर्मात्मा साधु कर्ण ने कुछ हँसकर कुंती से कहा ॥ ३१ ॥

---

cannot but do good to his brothers. Having resolved upon what was necessary to do, Kunti went to the bank of the Ganges. She heard the sound of merciful and truthful Karan who was reciting the Vedic hymns, and went to him. She found him performing *jap* with upraised hands and with his face towards the East. She stood behind him out of love and shaded him from the heat of the sun, though the wife of Pandu and daughter of Vrishnis felt it on her delicate body. Karan continued in meditation till noon and then seeing Kunti behind his back, he turned towards her and stood before her with joined palms like a dutiful son. Glorious and virtuous Karan then said with a smile.



कर्ण उवाच । राधेयो ह्माधिरथि कर्णस्त्वामभिवादये। प्राप्ता किमर्थं भवती ब्रूहि किंकरवाणि ते ॥ १ ॥ कुन्त्युवाच । कौन्तेयस्त्वं नराधेयो न तवाधिरथ पिता । नासि सूत कुले जात कर्णतद्वुद्धि मे वच ॥ २ ॥ कानीनस्त्वं मया जात पूर्वज कुक्षिणाधृत । कुन्तिराजस्य भवने पार्थस्त्वमसि पुत्रक ॥३॥ प्रकाशकर्मा तपनो याय देवो विरोचन । अजीजनत्त्वा मय्येपकर्ण शस्त्रभृतावरम् ॥ ४ ॥ कुण्डली बद्धकवचो देवगर्भ श्रिया वृत । जातस्त्वमसि दुर्धर्ष मया पुत्र पितुर्गृहे ॥ ५ ॥ सत्व भ्रातृनसम्बुध्य मोहाच

अध्याय ॥ १४५ ॥

कर्ण कुन्तीजी से बोले कि हम राधा व अधिरथ के पुत्र कर्णहैं आप के प्रणाम करते हैं यहां आप कैसे आई कहिये आपका कौन कार्य हम करें । १ । इतना सुन कुन्तीजी बोलीं कि तुम कुन्ती के पुत्रहो राधाके पुत्र नहीं हो व अधिरथ तुम्हारे पिता नहीं हैं, व तुम सूत के कुल में नहीं उत्पन्न हुये, हे कर्ण हमारा वचन ठीक जानो । २ । सब से प्रथम अपनी कोखि से हमने तुम्हीं को धारण किया है, इससे तुम हमारे सब पुत्रों से बड़ हो, जब हम कुन्तिभोज नाम राजाके भवन में थीं व हमारा विवाह नहीं हुआ था तभी तुम वहां हम से उत्पन्न हुये थे । ३ । सो यह नहीं कि किसी ऐरे गैरे से तुम उत्पन्न हुयेहो किन्तु ये जो *प्रकाशकर्त्ता सूर्यनारायण* देव सर्वत्र तपते हैं व शोभित होते हैं इन्हींने हममें सर्वशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ तुमको उत्पन्न किया है । ४ । हे पुत्र जब हम पिताके घरमें थीं तभी तुम कुण्डल धारण किये कवच बखतर आदि पहिने देवताके वीर्य से उत्पन्न होनेके कारण परम शोभासे प्रकाशित उत्पन्न हुये व उसीसमय बड़े दुर्द्धर्षथे, इससे हमारे पुत्रहो । ५ ।

CHAPTER CXLV

Karan said to Kunti, "I am Karan the son of Radha and Adhirath and bow to you Why have you come here and what can I do for you?"—"You are Kunti's son and not Radha's," replied Kunti, "the *adhirath* is not your father and you were not born in the family of *suts*, believe me You are my first born child When I was living at the house of king Kuntibhoj and was yet a maiden, you were born from me. Your father was no common mortal, but Surya who is so gloriously shining yonder gave you birth I gave you birth, my son, when I was at my father's house and you were born in great glory with earrings and coat of mail on your body. You were very strong even then You are thus my son, but not knowing this fact you serve the sons of Dhritrashtra· this is not worthy of you, my son. The greatest aim of life to people must be

दुपसेवसे । धार्त्तराष्ट्रान्न तद्युक्तं त्वयि पुत्र विशेषतः ६ एतद्धर्मफलं पुत्र नराणां धर्मनिश्चये । यत्तुष्यन्त्यस्य पितरो माता चाप्येकदर्शिनी ॥७॥ अर्जुनेनार्जितां पूर्वं हृतां लोभादसाधुभिः । आच्छिद्य धार्त्तराष्ट्रेभ्यो भुंक्ष्व यौधिष्ठिरीं श्रियम् ॥ ८ ॥ अद्य पश्यन्ति कुरवः कर्णार्जुनसमागमम् । सौभ्रात्रेण समालक्ष्य सन्नमन्तामसाधवः ॥९॥ कर्णार्जुनौ वै भवेतां यथा रामजनार्द्दनौ । असाध्यं किन्नु लोके स्याद्युवयोः संहितात्मनोः ॥ १० ॥ कर्ण शोभिष्यसे नूनं पञ्चभिर्भ्रातृभिर्वृतः । देवैः परिवृतो ब्रह्मा वेदामिव महाध्वरे ॥११॥ उपपन्नो गुणैः सर्वैः ज्येष्ठः श्रेष्ठेषु बन्धुषु । सूतपुत्रेति मा शब्दः पार्थस्त्वमसि वीर्यवान् ॥१२॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कुन्तीकर्णसमागमे पञ्चचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४५ ॥

अज्ञान के मारे अपने भाई पाण्डवों को न जान जो तुम मोहसे धृतराष्ट्र के पुत्रों की सेवा करते हो हे पुत्र यह तुम को योग्य नहीं है । ६ । हे पुत्र मनुष्योंके धर्म के निश्चय में धर्म का फल यही है जो कि उसके जन्मसे उस पिता पितामहादिक सन्तुष्टहों व एक पुत्रही में स्नेह करने वाली उसकी माता भी सन्तुष्टहो । ७ । पूर्व समय में अर्जुन की इकट्ठीकी हुई राज्य थी जिसको इन असाधु दुर्योधनादिकों ने लोभसे हरलीहै उसे फिर तुम धृतराष्ट्र के पुत्रोंसे छीन युधिष्ठिरके संग भोग करो ।८। जिससे आज कौरव लोग कर्ण व अर्जुन का समागम देखें व तुम्हारे भायपन से ये दुष्टआय पैरोंपर पड़ें ।९। कर्ण और अर्जुन ऐसे शोभा को प्राप्त होंगे जैसे बलराम और कृष्ण तुम दोनों वीरों की एकता से कोई वस्तु लोक के असाध्य नहीं रहेगी पांचों भाइयों के साथ तुम ऐसी शोभाको प्राप्त होगे जैसे देवताओं सहित ब्रह्मा वा यज्ञ सहित वेदी तुम सब श्रेष्ठ गुणयुक्त होकर अब से अपने को सूतपुत्र न कहना क्योंकि तुमतो पृथा पुत्रहो । १२ ।

---

to please their parents and grand parents and especially the mother who loved them. The wealth, which was formerly collected by Arjun and which wicked Duryodhan and his followers have seized greedily, must be taken back from them to be enjoyed by you and Yudhishthir. Let the Kauravas see the meeting of Karan and Duryodhan and fall at your feet in fear. Karan and Arjun must love each other like Balram and Krishn. Nothing will be impossible in the world when two brave people like you are united together. You will look as glorious in the midst of your five brothers as Brahma among gods and altar with yagyas. Endowed will all good qualities, you are the eldest of brothers. Never call yourself again the son of a *sut*, because you are the son of Pratha." 12.

वैशम्पायन उवाच । ततः सूर्यान्निश्चरितां कर्णः शुश्राव भारतीम् । दुरत्ययां प्रणयिनीं पितृवद् भास्करेरिताम् ॥ १ ॥ सत्यमाह पृथावाक्यं कर्ण मातृवचः कुरु । श्रेयस्तेस्यान्नरव्याघ्र सर्वमाचरतस्तथा ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तस्य मात्रा च स्वयं पित्राच भानुना । चचाल नैव कर्णस्य मतिः सत्यधृतेस्तदा ॥ ३ ॥ कर्ण उवाच । नचैतच्छ्रद्दधे वाक्यं क्षत्रिये भाषितं त्वया । धर्म्मद्वारं ममैतत् स्यान्नियोगकरणं तव ॥ ४ ॥ अकरोन्मयि यत् पापं भवती सुमहात्ययम् । अपाकीर्णोस्मि यन्मात स्तद्यशः कीर्त्तिनाशनम् ॥ ५ ॥ अहञ्चेत् क्षत्रियो जातो न प्राप्तः क्षत्रसत्क्रियाम् । त्वत्

अध्याय ॥ १४६ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि इस के पीछे कर्णने सूर्य से निकली प्रेमसानी पिता के समान बखानी आकाशबानी सकल गुण खानी सुनी । १ । कि हे कर्ण कुन्ती सत्य कहती हैं माता के वचन करो, हेनरव्याघ्र ऐसा करने से तुम्हारा सब प्रकार कल्याण होगा । २ । वैशम्पायनजी बोले कि यद्यपि माता कुन्तीने ऐसा कहा व पिता सूर्यनारायण अपने आप आय ऐसा कहा परन्तु सत्यधारणाधारी कर्णकी मति न चली, इस से यों बोले । ३ । कि हे क्षत्रिय की स्त्री कुन्ती, तुम्हारे कहे हुये इस वचन का बिश्वास हम नहीं करते, क्योंकि तुम्हारी आज्ञा का पालन करना इस समय धर्म रहित होनेका द्वारहै । ४ । क्योंकि हमारे विषय में बड़ा भारी पाप किया है, जिस से कि उत्पन्न होतेही हमको फेंक दिया, इस से हमारा यश माहात्म्य कीर्त्ति का कीर्त्तन नाश होगया । ५ । जो कि हम क्षत्रिय तो उत्पन्न हुये परन्तु तुम्हारे कारण हमारी क्षत्रिय की कोई सत्क्रिया न हुई क्योंकि संस्कार तो कोई होनेही न पाये, व कन्या में जो गर्भ हुआ वह तुम्हारे सुख के लिये हुआ हमारे

CHAPTER CXLVI

Vaishampayan said that Karan then heard a voice coming from the sun. It was spoken in a fatherly tone and ran thus:— "Kunti speaks the truth, Karan. Follow her advice; for your welfare lies in doing so." Vaishampayan says that in spite of the words of his mother Kunti and his father Surya, truthful Karan did not alter his resolution and said, "I donot believe you, kshatrya woman; for I shall be deviating from my dharm in following your advice. You did me great wrong in as much you threw me away just after birth and destroyed all my fame and greatness. Born a kshatrya, I could not have advantage of any kshatrya rites. You conceived me for the sake of your pleasure in your unmarried state. You caused

कृते किन्तु पापीयः शत्रुकुर्य्यान्ममाहितम् ॥ ६ ॥ क्रियाकाले त्वनुक्रोशमकृत्वा त्वमिमं मम । हीनसंस्कारसमयमद्य मांसमचूचुदः ॥ ७ ॥ नवै मम हितं पूर्वं मातृवच्चेष्टितं त्वया । सा मां सम्बोधयस्यद्य केवलात्महितैषिणी ॥ ८ ॥ कृष्णेन सहितात् को वै न व्यथेत धनञ्जयात् । कोद्य भीतं न मां विद्यात् पार्थानां समितिं गतम् ॥ ९ ॥ अभ्राता विदितः पूर्वं युद्धकाले प्रकाशितः । पाण्डवान् यदि गच्छामि किं मां क्षत्रं वदिष्यति ॥ १० ॥ सर्वकामैः संविभक्तः पूजितश्च यथासुखम् । अहं वै धार्त्तराष्ट्राणां कुर्य्यां तदफलं कथम् ॥ ११ ॥ उपनह्य परैर्वैरं ये मां नित्यमुपासते । नमस्कुर्वन्ति च सदा

साथ तो ऐसा पाप किया जिस से हमारी जाति भ्रष्ट होगई शत्रुभी न करेगा। ६। जब संस्कार करने का समय था तबतो तुमने हमारे ऊपर ऐसी अदयाकी कि क्षत्रिय का संस्कार होनेही न दिया, अब संस्कार रहित हमको अपने कार्य के लिये प्रेरित करती हो। ७। तुमने पूर्व समय में माता के समान हमारा हित नहीं किया अब वही तुम केवल अपने हित की इच्छा से हमको समझाती व अपनी ओर मिलातीहो। ८। श्रीकृष्णचन्द्र सहित अर्जुन से ऐसा कौन है जो व्यथा न पावे, इस से इस समय जो हम पाण्डवों की ओर होरहें तो हमको कौन न कहेगा कि ये डर से उनकी ओर होगयेहैं। ९। अबतक तो हम पाण्डवों के भाई नहीं विदित थे अब युद्ध के समय में तुमने हमको पाण्डवों का भाई प्रकाशित किया, जो हम पाण्डवों के पास जाय मिलें तो क्षत्रिय लोग हमको क्या कहेंगे। १०। आजतक धृतराष्ट्र के पुत्रों ने सबकामों से हमको पृथक् नहीं किया व सुख पूर्वक हमारी पूजा उन लोगोंन की अब हम दुर्योधनादिकोंकी पूजादि निष्फल कैसे करें। ११। जो दुर्योधनादि शत्रुओं से बैर बांध हमारी उपासना नित्य करते हैं

---

the degradation in my caste and did me a wrong as no enemy would do. You deprived me of kshatrya rites at the time which was proper for such rites and now you would bring me round to perform my duty! You did not behave then like a mother and now you advise me for your interest. Who cannot suffer defeat from Arjun united with Shree Krishna? Will not people say that I have changed sides out of their fear? Until recently I was not known as a brother to the Pandavas; but now, when the war approaches, you would have me proclaimed as their brother. What will the kshatryas say, if I side with the Pandavas? 10. Upto this time I have shared in all the works of the sons of *Dhritrashtra* and they have been giving me respect; how can I leave their side? How can I

वसवो वासव यथा ॥ १२ ॥ मम प्राणेन ये शत्रून् शक्ताः प्रतिसमासितुम् । मन्यन्ते ते कथ तेषामह छिन्द्या मनोरथम् ॥ १३ ॥ मयाप्लवेन सग्राम तितीर्षन्ति दुरत्ययम् । अपारे पारकामाये त्यजेय तानह कथम् ॥ १४ ॥ अय हि काल सम्प्राप्तो धार्त्तराष्ट्रोप जीविनाम् । निर्वेष्टव्य मया तत्र प्राणान परिरक्षता ॥ १५ ॥ कृतार्था सुभृता ये हि कृत्यकाले ह्युपस्थिते । अनवेक्ष्य कृत पापा विकुर्वन्त्यनवस्थिता ॥ १६ ॥ राजकिल्विषिणा तेषा भर्तृ पिण्डापहारिणाम् । नेवाय न परो लोको विद्यते पापकर्मणाम् ॥ १७ ॥ धृतराष्ट्रस्य पुत्राणामर्थे योत्स्यामि ते सुते । बलञ्च शक्ति

व जैसे वसुलोग इन्द्रके नमस्कार करते वैसेही वे लोग हमारे प्रतिदिन नमस्कार करतेहैं । १२ । हमारेही प्राणों से जो लोग शत्रुओं के जीतनेमें समर्थ अपनाको मानते हैं, सो हम अब उनका मनोरथ कैसे काटें । १३ । इस अपार संग्राम सागरको जो लोग हमीं को जहाज बनाय उतरना चाहते हैं उनको हम इससमय कैसे छोड़ें । १४ । दुर्योधनादिकों के यहां जितने भोजनादि के आश्रयी उपजीवी हैं उन सबों के कालरूप हमीं हैं, इससे हम अब अपने प्राणोंकी रक्षाछोड़ जो कुछ अन्नादि उनका खाया है उससे अऋण होजायँगे । १५ । क्योंकि जिनका भरण पोषण जहां से होता समयपर उनका शरीर पोषकों के अर्थ लगजाय तो वे लोग कृतार्थ होजाते हैं, व जो बहुतदिनों से पालित पोषित होते पर समय पर काम नहीं आते वे पापी कहाते हैं । १६ । व वे लोग जो कि स्वामीका अन्न खाते हैं पर समयपर काम नहीं आते उन पापियों को न यही लोक मिलता न पर लोकही मिलता है । १७ । इससे हम अपने बल व शक्ति भर धृतराष्ट्र के पुत्रों के

---

disappoint Duryodhan and others who have always looked to me as the chastiser of their enemies who have been bowing to me as Vasus bow to Indra and who think themselves capable of defeating their enemies as long as I live? How can I leave them who hope to cross the boundless ocean of war, taking me to be their ship I regulate the motions of all those who eat Duryodhan's bread, I would therefore lose my life in gratitude of the bread which Duryodhan has been giving me. Happy are they who die in the cause of their benefactors, while those who deceive at the time of danger are sinful. Those who are not of use to their masters at the time when their services are required, donot get either this world or the next. I shall therefore fight with all my strength against your sons for the sake of the sons of Dhritrashtra as this is the bare truth Follow-

चास्थाय न वै त्वय्यनृतं वदे ॥ १८ ॥ आनृशंस्यमथो वृत्तं रक्षन् सत्पुरुषोचितम्। अतोऽर्थकरमप्येतन्न करोम्यद्य ते वचः ॥ १९ ॥ न च तेऽयं समारम्भो मयि मोघो भविष्यति। वध्यान् विषह्यान् संग्रामे न हनिष्यामि ते सुतान् ॥ २० ॥ युधिष्ठिरञ्च भीमञ्च यमौ चैवार्जुनादृते। अर्जुनेन समं युद्ध मपि यौधिष्ठिरे बले ॥ २१ ॥ अर्जुनं हि निहत्याजौ सम्प्राप्तं स्यात् फलं मया। यशसा चापि युज्येयं निहतः सव्यसाचिना ॥ २२ ॥ न ते जातु नशिष्यन्ति पुत्राः पञ्च यशस्विनि। निरर्जुनाः सकर्णा वा सार्जुना वा हते मयि ॥ २३ ॥ इति कर्णवचः श्रुत्वा कुन्ती दुःखात् प्रवेपती। उवाच पुत्रमाश्लिष्य कर्णं धैर्य्यादकम्पनम् ॥ २४ ॥ एवं वै भाव्यमेतेन क्षयं यास्यन्ति कौरवाः। यथात्थंभाषसे कर्ण दैवन्तु बलवत्तरम् ॥ २५ ॥ त्वया चतुर्णां भ्रातॄणामभयं शत्रुकर्षन। दत्तं

अर्थ तुम्हारे पुत्रों के साथ युद्ध करेंगे तुमसे झूंठ नहीं कहते ।१८। सत्पुरुषों के उचित अक्रूरता, व सदाचारताकी रक्षा करते हुये हम अर्थ युक्त भी तुम्हारा वचन इससमय नहीं करते । १९ । परन्तु तुमने जो हमारे विषय में विचार किया है वह मिथ्या न होगा क्योंकि मारने के योग्य व जिनको हम मारभी सकेंगे ऐसे तुम्हारे पुत्रोंको न मारेंगे । २० । न हम युधिष्ठिर को मारेंगे न भीमसेन को न नकुल न सहदेव को व न औरही किसीको युधिष्ठिरकी सेनाभर में केवल अर्जुनके संग हमारा युद्धहोगा । २१ । क्योंकि समरमें जो हम अर्जुनको मारें तो सब फल पायजायँ व यदि अर्जुनही हमको मारडालें तोभी हम यशही पावें ।२२। हे यशस्विनी तुम्हारे पांचपुत्र कभी न नष्टहोंगे, चाहे निरर्जुनहों तो सकर्ण पांच रहेंगे व हम मारजायँगे तो सार्जुन पांचरहेंगे, यह सुनकर पृथाने कम्पित देहके साथ कर्ण को चिपटा लिया और कहा कि हे कर्ण तुम कहते हो कि सब कौरवों का

---

ing the pratice of virtuous men and shunning from cruelty, I cannot do your bidding at present. Your expectation too, will receive due consideration *from me:* I shall not destroy your sons when it shall lie in my power to do so and in spite of their being worthy of death. 20. I shall kill neither Yudhishthir nor Bhim, Nakul, Sahadev *or any one else in Yudhishthir's army* with the exception of Arjun who will be my opponent in the battle. I shall have gained my purpose on killing Arjun and shall gain glory if I am killed by him. *Your five sons will yet live in either case, glorious* one, whether Arjun is killed or Karan." Having heard this from Karan, Kunti with a trembling body, embraced him. "You say," said Kunti to Karan, "that all the Kauravas will be destroyed. Fate must have its course. You have said that the four

तत् प्रतिजानीहि संगरप्रति मोचनम् ॥२६॥ अनामयं स्वस्तिचेति पृथाथो कर्णमब्रवीत्। तां कर्णोंथ तथेत्युक्त्वा ततस्तौ जग्मतु: पृथक् ॥ २७ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कुन्तीकर्णसमागमे षट्चत्वारिंशदधिकशततमोऽध्याय: १४६ ॥

वैशम्पायन उवाच । आगम्य हास्तिनपुरादुपप्लव्यमरिन्दमः । पाण्डवानां यथावृत्तं केशवः सर्वमुक्तवान् ॥ १ ॥ सम्भाष्य सुचिरं कालं मन्त्रयित्वा पुनः पुनः । स्वमेवभवनं शौरिर्विश्रामार्थं जगाम ह ॥ २ ॥ विसृज्य सर्वान्नृपतीन् विराटप्रमुखांस्तदा । पांडवाभ्रातरः पञ्च भानावस्तं गते सति ॥ ३ ॥ सन्ध्यामुपास्यध्यायन्तस्तमेव गतमानसाः । आनाय्य कृष्णं दाशार्हं पुनर्मन्त्र ममन्त्रयन् ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर उवाच । त्वयानाग

नाश होगा यहभावी बलवान् है तुमने चारों भाइयों को अभय दान दिया है इस लिये यह देखियो कि संग्राम में किसीका नाश न हो फिर कर्ण ने कुन्ती को प्रणाम किया और कुन्ती ने आशीर्वाद दिया और दोनों अपने अपने रस्तेको गये । २७ ।

अध्याय ॥ १४७ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि कृष्णचन्द्र जी हस्तिनापुर से उपप्लव्यनाम स्थान में जहां पांडवलोग थे आये और पांडवों के आगे वहांके सब वृत्तान्त उन्होंने कहे । १। व बड़ी देरतक कहसुन सम्मत कर भगवान विश्राम करने के लिये जहां आप टिके रहतेथे उस अपने भवन को गये । २ । जब सूर्य्य अस्ताचल को गये तो विराटादि सब राजाओं को अपने २ स्थानपर जानेके लिये विदाकर पांचोंभाई पांडव लोग । ३ । सायंकाल की सन्ध्या की उपासनाकर कृष्णचन्द्रही में मन लगाय उनको फिर बुलवाय एकान्त में सम्मत करनेलगे । ४ । युधिष्ठिरजी ने श्रीहरि

---

brothers have no cause of fear from you. Please see that none of them is killed in battle." Karan then said good bye to Kunti and with mutual greetings the two separated and went their respective ways. 27.

CHAPTER CXLVII

Vaishampayan says that from Hasthinapur Shree Krishn came to Upaplavya where the Pandavas were, and told them what had happened. After a long conversation he retired to the place where he was put up. At sunset the Pandavas dismissed king Virat and others for the night and having performed the evening worship the five brothers again called Shri Krishn to them in private and asked him to tell him in detail what he had seen and heard at Hasthinapur. "I" said Krishn, "reasond with Duryodhan in the open court,

पुरं गत्वा सभायां धृतराष्ट्रजः । किमुक्तः पुण्डरीकाक्ष तन्नः शंसितुमर्हसि ॥ ५ ॥ वासुदेव उवाच । मया नागपुरं गत्वा सभायां धृतराष्ट्रजः । तथ्यं पथ्य हितञ्चोक्तो न च गृह्णाति दुर्मतिः ॥ ६ ॥ युधिष्ठिर उवाच । तस्मिन्नुत्पथमापन्ने कुरुवृद्धः पितामहः । किमुक्तवान् हृषीकेश दुर्योधनममर्षणम् ॥७॥ आचार्योवामहाभाग भारद्वाजः किमब्रवीत् । पितरौधृतराष्ट्रस्तं गान्धारीवाकिमब्रवीत्८पितायवीयानस्माकंक्षत्ताधर्मविदांवरः । पुत्रशोकाभिसन्तप्तः किमाह धृतराष्ट्रजम् ॥ ९ ॥ किञ्च सर्वे नृपतयः सभायां ये समासते । उक्तवन्तो यथातत्वं तद्ब्रूहि त्वं जनार्दन ॥ १० ॥ उक्तवान् हि भवान् सर्वं वचनं कुरुमुख्ययोः । धार्तराष्ट्रस्य तेषां हि वचनं कुरुसंसदि ॥ ११ ॥ कामलोभाभि-भूतस्य मन्दस्य प्राज्ञमानिनः । अप्रियं हृदये मह्यं तन्न तिष्ठति केशव ॥ १२ ॥ तेषां वा-

---

से पूंछा कि हे पुंडरीकाक्ष आपने हस्तिनापुर में जाय दुर्योधन से क्या कहा वह हमसे कहने के योग्यहो कहिये । ५ । श्रीभगवान् बोले कि हमने हस्तिनापुर में जाय सभामें दुर्योधन से तथ्य पथ्य व हित वचन कहे पर उस दुष्टमतिने ग्रहण नहीं किये । ६ । युधिष्ठिरजी ने फिर पूंछा कि जब असहनशील दुर्योधन कुमार्गहीमें चला आपके कहनेपर आरूढ़ न हुआ तो कुरुवंशियों में सब से वृद्ध भीष्मपितामहजीने उससे क्या कहा । ७ । व महाभाग आचार्य द्रोणाचार्यजीने क्या कहा, व उसके पिता माता धृतराष्ट्र गान्धारी ने क्या कहा । ८ । व धर्म-धारियों में श्रेष्ठ हमलोग पुत्रों के शोकसे सन्तप्तहोकर दुर्योधनसे क्या कहा । ९ । व जो राजालोग सब सभामें बैठेथे उन लोगोंने क्या कहा सब हम से यथातथ्य कहिये । १० । व जो हमारे हितकेलिये आपने भीष्मजी व धृतराष्ट्रजीसे व सब राजाओंसे कहा व उन सबलोगोंने दुर्योधनसे कहा पर उसके मनमें कोई किसीकी बात नहीं टिकी । ११ । क्योंकि वह काम लोभयुक्तहै व मानीहोने के कारण अपने को प्राज्ञमानताहै इससे जो हमलोगों का प्रिय है वह उसको अप्रिय लगता

---

but the wretch would not listen to me." On hearing this Yudhishthir again said to him, "Please tell us the words of Bhishm, the grandfather of all the Kauravas, which he said to Duryodhan when the latter persisted in his wrong course and would not hear you. Also let us know the words of Dronacharya as well as of Dhritrashtra and Gandhari, his father and mother and of Vidur our loving uncle. Tell us also the words of the kings who were then present at the court. 10. Tell us what you said to Bhishm, Dhritrashtra and other kings for our benefit and how they remonstrated in vain with Duryodhan who is full of desires and avarice, who thinks himself wise on account of his vanity and therefore dislikes what is good to us. We wish to

कयानि गोविन्द श्रोतुमिच्छाम्यहं विभो । यथा च नाभिपद्येत कालस्तात तथा कुरु । भवान् हि नो गतिः कृष्ण भवान्नाथो भवान् गुरुः ॥ १३ ॥ वासुदेव उवाच । शृणु राजन् यथा वाक्यमुक्तो राजा सुयोधनः । मध्ये कुरूणां राजेन्द्र सभायां तन्निबोध मे ॥ १४ ॥ मया विश्राविते वाक्ये जहास धृतराष्ट्रजः । अथ भीष्मः सुसंक्रुद्ध इदं वचनमब्रवीत् ॥ १५ ॥ दुर्योधन निबोधेदं कुलार्थे यद्ब्रवीमि ते । तच्छ्रुत्वा राजशार्दूल स्वकुलस्य हितं कुरु ॥ १६ ॥ मम तात पिता राजन् शान्तनुर्लोकविश्रुतः । तस्याहमेक एवासं पुत्रः पुत्रवतां वरः ॥ १७ ॥ तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना द्वितीयः स्यात् कथं सुतः ॥ १८ ॥ एकं पुत्रमपुत्रं वै प्रवदन्ति मनीषिणः ॥ १८ ॥ न चोच्छेदं कुलं यायाद् विस्तीर्येच्च कथं यशः । तस्याहमीप्सितं बुद्ध्वा कालीं मातरमावहम् ॥ १९ ॥ प्रतिज्ञां दुष्करां

है । १२ । उनसबके वचन हमारे सुननेकी इच्छा है जिस में हमलोगों का काल वृथा न व्यतीत होवे सो कीजिये क्योंकि आपही हम लोगोंकी गति हैं आपही हमलोगों के नाथ व गुरु बन्धु सबकुछ हैं । १३ । श्री भगवान बोले कि हे राजन कौरवोंकी सभामें जो वचन हमने राजादुर्योधन से कहे वे सुनो । १४ । हमने जो वचन दुर्योधन को सुनाया उसके ऊपर वह मूढ़ बहुत हँसा तब अति क्रुद्धहो भीष्मजीने यहवचन कहा । १५ । हे दुर्योधन हम कुल के हितके लिये जो कहतेहैं उसे सुनो व वह सुनकर अपने कुलका हितकरो हे राजशार्दूल । १६ । हे तात, हे राजन, लोकभरमें विख्यात हमारे पिता शंतनुजीथे,वे पुत्रवानोंमें श्रेष्ठ उनके हम अकेलेही पुत्रहुये । १७ । उनके मनमें आया कि हमारे दूसरा पुत्र कैसेहो, क्योंकि पण्डितलोग एकपुत्र व अपुत्रको समान कहतेहैं । १८ । क्योंकि एकपुत्र से कुलकी उन्नति नहीं होती फिर यश कैसेहो उनका ऐसा ईप्सित जान हम सत्यवती नाम माता लाये । १९ । पिताकेअर्थ व कुलके अर्थ हम बड़ी

---

know their respective words so that we may not lose our time uselessly; for you are our refuge, our lord, elder and kinsman." "Hear the words which I said to Duryodhan in the court of the Kauravas," said Shree Krishn, "he laughed at my words and here is what Bhishm in great anger said to him, "*Hear, Duryodhan,* what I say to you for the good of the family: Shantanu my father was far famed throughout the world. I was his only son. He thought of how to beget another son. Learned men say that the father of one son is like one who has no son at all; for no family can be improved and *farfamed with only one son. So knowing* this desire of his I brought Satyavati to be my stepmother, I

कृत्वा पितुरर्थे कुलस्यच । अराजा चोर्ध्वरेताश्च यथा सुविदितं तव । प्रतीतो निवसाम्येष प्रतिज्ञामनुपालयम् ॥ २० ॥ तस्यां जज्ञे महाबाहुः श्रीमान् कुरुकुलोद्वहः । चित्रवीर्यो धर्मात्मा कनीयान्मम पार्थिव ॥ २१ ॥ स्वर्य्यातेहं पितरित स्वराज्ये संन्यवेशयम् । विचित्रवीर्यं राजानं भृत्योभूत्वा ह्यधश्चरः ॥ २२ ॥ तस्याहं सदृशान् दारान् राजेन्द्र समुपाहरम् । जित्वा पार्थिव संघात मपि ते बहुशः श्रुतम् ॥ २३ ॥ ततो रामेण समरे द्वन्द्वयुद्ध मुपागमम् । सहि राम भया देभिर्नागरैर्विप्रवासित ॥२४॥ दारेष्वप्यति सक्तश्च यक्ष्माण समपद्यत । तदात्वराज के राष्ट्रे नववर्ष सुरेश्वर । तदा भ्यधावन्मामेव प्रजाः क्षुद्भयपीडिताः ॥ २५ ॥ प्रजा ऊचु ॥ उपक्षीणा प्रजाः सर्वा

दुष्कर प्रतिज्ञा करके माता लाये सो तुम भी जानतेहो कि एकतो हमने राजा न होनेकी प्रतिज्ञाकी व दूसरे ऊर्ध्वरेता हुये इसलिये विवाहही अपना नहीं किया । २० । अबभी उस प्रतिज्ञाका पालनकरते यहां बसेहैं सदा संतुष्टरहतेहैं । २१ । उनसत्यवती नाम मातामें महाबाहु कुरुकुलमें श्रेष्ठ धर्मात्मा विचित्रवीर्यजी सबसे छोटे उत्पन्नहुये । २२ । जब हमारे पिताजी स्वर्गको गये तब हमने विचित्रवीर्य्य को राजगद्दी पर बैठाया, उनके सेवक बनकर हमनीचे रहनेलगे । २३ । फिर बहुत से राजाओं को जीत हमने उनके योग्य तीन स्त्रियां ले आये उनका विवाह कराया, यहबात तुमने बहुतलोगों से बहुतवार सुनी है । २४ । जब हम परशुरामजी से द्वन्द्वयुद्ध करने को गये तब रामके भयसे प्रजाओं सहित विचित्रवीर्य भागखड़ेहुये सेना निवेशस्थान शून्य होगया । २५ । फिर वे स्त्रियों के संग भोग विलास अत्यन्त करनेलगे इस से उनके क्षयीरोग हुआ उसमें मृतक

---

brought her for the good of my father and the family after making a dreadful vow which you know; viz, the loss of kingdom and perpetual celibacy. 20. I am still firm on that vow and am contented with my lot. From Satyavati was born Vichitravirya who was valliant, best of kurus, and virtuous. He was the youngest of my brothers After the death of my father, I installed him on the throne and served him faithfully. I then conquered many kings and brought three princesses to be his wives. You must have heard all this from many men. When I was fighting a duel with Parashuram, all the army together with Vichitravirya fled from the battle field and left me alone. Vichitravirya became very pleasure loving and was too much occupied with women. So he caught consumption and died. At his death there was anarchy in the kingdom, no rain

राजा भव भवायनः । ईती प्रणुदभद्रन्ते शांतनोः कुलवर्धन ॥ २६ ॥ पीड्यन्तेते प्रजाः सर्वा व्याधिभिर्भृश दारुणैः । अल्पावशिष्टा गांगेय ताः परित्रातु मर्हसि ॥ २७ ॥ व्याधीन् प्रणुद वीर त्व प्रजा धर्मेण पालय । त्वयि जीवति मा राष्ट्र विनाश मुपगच्छतु २८ भीष्म उवाच ॥ प्रजानांक्रोशवीनां वै नैवाक्षुभ्यत मे मन । प्रातज्ञां रक्षमाणस्य सद्वृत्त स्मरतस्तथा । ततः पौरा महाराज माता काली च मे शुभा ॥२९॥ भृत्या पुरोहिताचार्या ब्राह्मणाश्च बहुश्रुता । मामूचुर्भृशसन्तप्ता भव राजेति सन्ततम् ॥ ३० ॥ प्रतीपरक्षितं राष्ट्र त्वां प्राप्य विनाशप्यति । सत्वमस्मद्धितार्थं वै राजा भव महामते ॥ ३१ ॥ इत्युक्त प्राञ्जलिर्भूत्वा दु खितो भृशमातुर । तेभ्योन्यवेदयन्तत्र प्रतिज्ञां पितृ गौरवात् ३२

होगये, तब राज्य विनाराजाका होगया इन्द्रने वर्षाही बन्द करदी तब मारे भूख प्याससे पीड़ित प्रजा हमारे पास आय बोली । २६ । कि हे शान्तनु के कुल बढ़ाने वाले, सबप्रजा नष्ट हुईजातीहैं इससे आप हमलोगों के राजाहों, व अनावृष्टयादि सात ईतियों को नाशकीजिये । २७ । हे गाङ्गेय दारुण व्याधियों से तुम्हारी प्रजायें पीड़ित होरही हैं, अब थोड़ी रहगईहैं बहुत नष्टहोगईं, इससे आप प्रजाओं की रक्षाकरें । २८ । हे वीर हमलोगों के मनकी व्यथाको भी दूर कीजिये, धर्म से प्रजापालन कीजिये, तुम्हारे जीतेजी प्रजा नाशको न प्राप्तहो । २९ । भीष्म जी बोले कि सद्वृत्त की रक्षाकरते व प्रतिज्ञा की रक्षा करते हुये हमारा मन प्रजाओं के ऐसा रोदन करनेपर भी चलायमान न हुआ । ३० । हे महाराज, इसके पीछे सब पुरवासी व हमारी सत्यवती माता भृत्युलोग पुरोहित व बहुत शास्त्र वेदपढे हुये ब्राह्मण लोगों ने हमसे अतिसन्तप्त होकर बार बार कहा कि आप अब राजाहों । ३१ । बहुत दिनों का रक्षित राज्य अब आपको पाय नष्ट

---

fell and the people came to me and said, "Prop of the family of Shantanu! the people are dying out, be ruler over us and protect us from the seven calamities. The people are beset with severe calamities, son of Ganga. Many men have died and a small population only is left. Protect the people and remove our grief by your just rule. Let not the people die during your life time." In spite of the cries of the people my mind was unmoved on account of the great vow that I was observing. 30. After this all the citizens, servants, priests, learned Brahmans and my step mother Satyavati requested me in great consternation to become king, saying that the long standing rule of the Kauravas was becoming extinct in spite of me. To all their entreaties I replied by referring to the vow which

ऊर्ध्वरेता ह्यराजा च कुलस्यार्थे पुनः पुनः । विशेषतस्त्वदर्थेच धुरिमा मां नियोजय ३३
ततोऽहं प्रांजलिर्भूत्वा मातरं सम्प्रसादयम् । नांब शांतनुना जातः कौरवं वंशमुद्वहन् ३४
प्रतिज्ञां वितथां कुर्यामितिराजन् पुनः पुनः । विशेषतस्त्वदर्थेच प्रतिज्ञां कृतवानहम् ३५
अहं प्रेष्यश्च दासश्च तवाद्यसुत वत्सले । एवं तामनुनीयाहं मातरं जनमेवच ॥ ३६ ॥
अयाचं भ्रातृदारेषु तदा व्यासं महामुनिम् । सहमात्रा महाराज प्रसाद्य तमृषिं तदा३७
अपत्यार्थं महाराज प्रसादं कृतवांश्चसः । त्रीन् सपुत्रानजनयत् तदाभरत सत्तम ३८॥
अन्धः करणहीनत्वान्नवै राजा पिता तव।राजातु पाण्डुरभवन्महात्मालोक विश्रुतः ३९
स राजा तस्य ते पुत्राः पितुर्दायाद्य हारिण । मा तात कलहं कार्षी राज्यस्यार्थं प्रदी·

हुआ चाहता है इससे हमलोगों के हितके लिये आप राजाहों । ३२ । जब सबोंने ऐसा कहा तो हाथ जोड़ बहुत दुःखितहो पिता के गौरव से जो प्रतिज्ञा हमनेकी थी वह सबोंसे कही । ३३ । कि हमतो ऊर्ध्वरेता व अराजा कुलके अर्थ रहेंगे यह प्रतिज्ञा करचुके हैं, उसमेंभी विशेष तुम्हारेही अर्थ प्रतिज्ञा की है इससे आप हमको राजाहोने को न कहें । ३४ । यह कह हाथजोड़ हम ने माता को प्रसन्न किया कि अब शान्तनु से उत्पन्न हम कौरववंशके राजा नहीं होसक्ते । ३५ । क्योंकि हम अपनी प्रतिज्ञा को मिथ्या न करेंगे, आप अच्छीतरह जानतीहैं कि तुम्हारे विवाहहीके अर्थ हमने प्रतिज्ञाकीथी । ३६ । सो अबभी तुम्हारेआज्ञाकारी दास हम बनेहैं जो आज्ञाहोगी करतेरहेंगे इसप्रकार हम ने माता को समझाया ३७। व माता सहित हमने भाई विचित्रवीर्यकी स्त्रियों में पुत्र उत्पन्न करने के लिये महा मुनि व्यासजीसे बहुत प्रार्थनाकी वे नहीं मानते थे इस से बहुत समझाय बुझाय पांवपलटियाकी । ३८ । तब वे पुत्र उत्पन्न करने के लिये प्रसन्न हुये व तीनवर्ष में उन्हों ने आप तीन पुत्र उत्पन्न किये । ३९ । उन में यद्यपि सब से ज्येष्ठ तुम्हारे

I had made to please my father, that for the good of the family I had promised to live in perpetual celibacy and should never rule the kingdom. I asked Satyavati not to force me to become king; for it was for her sake that I had made the vow. Thus with joined palms I made my step mother understand that I could no longer be the king of the Kauravas; for I would not break my vow which she knew I had made for her sake and that in all other respects I would remain for ever her obedient servant as I was then. Thereupon, my stepmother and I called the great muni, Vyas, to produce offspring and with great difficulty prevailed upon him to do so. Well, he consented to bring forth sons and in three years he produced

यताम् । ४० ॥ मयि जीवति राज्य क समशासेत् पुमानिह । मावमस्था वचो मह्य शम मिच्छामि च सदा ॥ ४१ ॥ न विशेषारित मे पुत्र त्वयि तेपुच पार्थिव । मतमे तत् पितुस्तुभ्य गान्धार्या विदुरस्यच ॥ ४२ ॥ श्रोतव्य खलु वृद्धाना माभिशकीर्वचो मम । नाश दिष्यसि मा सर्व मात्मान पृथिवीं तथा ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि भगवद्वाक्ये सप्तचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४७ ॥

पिता धृतराष्ट्रही थे पर अन्ध बधिरहोने के कारण राजा नहीं होसके इस मे लोक में विश्रुत व महात्मा पाण्डुजी राजा हुये । ४० । फिर जब पांडुही राजा ठहरे तो पाण्डव उनके पुत्र हैं उनके सब राज्यादि के अधिकारी हैं इस से हे तात कलह न करो भला आधा राज्यतो उनको अवश्यही देदो । ४१ । जबतक हमजीते हैं तबतक हमारे विपरीतहोकर कौन राज्य करसक्ता है इस से हमारेवचनका निरादर न करो हम तुम लोगों का मेल चाहतेहैं युद्ध नहीं चाहतेहैं । ४२ । हम तुम में व पाण्डवों में विशेषता नहीं समझते समानही जानते हैं, सो हमीं नहीं तुम्हारे पिता माता व विदुरका भी यही मतहै कि आधाराज्य पाण्डवों को दियाजावे।४३। वृद्धके वचन माननीयहोते हैं मरेवचनों में शंका न करो और कुल पृथ्वीका नाश [illegible] करो ॥ ४४ ॥

---

three sons Of them although Dhritrashtra your father was the oldest, he could ho king on account *not* of his being blind and deaf and so famous Pandu was made king. 40 The Pandavas being his sons are entitled to all the kingdom You should not therefore raise a quarrel with them and should give them at least half the kingdom. No one can rule against my consent as long as I live Donot act against me I want peace and not war I have equal regard for you and the Pandavas This opinion is not exclusively mine but as well of your parents and Vidur who wish to give half the kingdom to the Pandavas. The advice of an old man is worthy of being acted upon Have no doubt in my words and do not cause the destruction of the whole land " 41



वासुदेव उवाच ॥ भीष्मे णोक्ते ततो द्रोणो दुर्योधन मभाषत । मध्ये नृपाणां भद्र न्ते वचन वचनक्षमः ॥ १ ॥ द्रोण उवाच ॥ प्रातीपः शान्तनुस्तात कुलस्यार्थे यथा स्थितः । यथा देवव्रतो भीष्मः कुलस्यार्थे स्थितो भवत् ॥ २ ॥ तथा पाण्डुर्नरपतिः सत्यसन्धो जितेन्द्रियः । राजा कुरूणां धर्मात्मा सुव्रत सुसमाहितः ॥ ३ ॥ ज्येष्ठाय राज्य मददद्धृतराष्ट्रायधीमते । यवीयसे तदाक्षत्रे कुरूणां वंशवर्द्धनः ॥ ४ ॥ ततः सिंहा सने राजन् स्थापयित्वैनमच्युतम् । वनं जगाम कौरव्यो भार्य्याभ्यां सहितो नृपः ॥५॥ नीचैः स्थित्वातु विदुर उपास्ते स्म विनीतवत् । प्रेष्यवत् पुरुषव्याघ्रो वालव्यज नमुत्क्षिपन् । ६ ॥ ततः सर्वाः प्रजास्तात धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् । अन्वपद्यन्त विधिवद्य

अध्याय १४८ ॥

श्रीभगवान् कृष्णचन्द्रजी बोले कि भीष्मजी के कहने के पीछे राजाओं के मध्यमें बैठेहुये दुर्योधनसे द्रोणाचार्यजी यहबोले कि । १ । हे तात जैसे इस कुलके स्थापन करने के लिये राजा शान्तनु मुख्य थे वैसेही इस कुलके अर्थ देवव्रत भीष्मजी भी हुये । २ । व इसी प्रकार सत्यप्रतिज्ञ जितेन्द्रिय धर्मात्मा सदाचार निष्ठ व एकाग्रचित्त महाराज पाण्डुजी राजाहुये । ३ । उन्होंने यद्यपि अन्ध बधिर होनेसे धृतराष्ट्रजी राजाहोनेके योग्य न थे व शूद्रीके गर्भ में जन्महोनेके कारण विदुरजी राज्यके अधिकारी न थे पर धरोहरकी रीति पर ज्येष्ठभाई धृतराष्ट्र व छोटेभाई विदुरजी को भी राज्यसौंप दिया क्योंकि कुरुओं के वंश के बढ़ानेकी इच्छा करते थे । ४ । इस से धृतराष्ट्र को सिंहासन पर बैठाय राजापाण्डु अपनी दोनोंस्त्रियोंको सङ्गले बनको चलेगये।५। इसकेपीछे विदुरजी नीचोंके समान धृतराष्ट्र जी की उपासना करते रहे जैसे सेवक लोग करते वैसेही ये चामर लिये डुलाया करते । ६ । तब से सबप्रजा जैसे राजा पाण्डु की सेवा व आज्ञा में रहती थी वैसे

CHAPTER CXLVIII

Shree Krishna continued that when Bhishm had spoken as mentioned above, Dronacharya said to Duryodhan who was seated among kings, " Devabrat Bhishm is the founder of this family like king Shantanu and king Pandu was as truthful, virtuous, good and endowed with control of organs and concentration of mind. Wishing to increase the family of Kurus, he entrusted the kingdom to Dhritrashtra and Vidur, although the former was incapable of ruling it on account of his blindness and the latter on account of his being born from a Shudra woman. Having installed Dhritrashtra on the throne, he went with his two wives to the forest. Vidur continued to obey Dhritrashtra like a humble servant and would raise

धापाण्डु जनाधिपम् ॥ ७ ॥ विसृज्य धृतराष्ट्राय राज्यं स विदुराय च । चचार पृथिवीं पाण्डुः सर्वां परपुरञ्जयः ॥८॥ कोशसंचनने दाने भृत्यानाञ्चान्ववेक्षणे । भरणे चैव सर्वस्य विदुरः सत्यसंगरः ॥ ९ ॥ सन्धिविग्रहसंयुक्तो राज्ञां संवाहनक्रियाः । अवैक्षतमहातेजा भीष्मः परपुरञ्जयः ॥ १० ॥ सिंहासनस्थो नृपतिर्धृतराष्ट्रो महाबलः । अन्वास्यमानः सततं विदुरेण महात्मना ॥ ११ ॥ कथं तस्य कुले जातः कुलभेदं व्यवस्यसि । सम्भूय भ्रातृभिः सार्धं भुंक्ष्व भोगान् जनाधिप ॥१२॥ ब्रवीम्यहंन कार्पण्यान् नार्थहेतोः कथञ्चन । भीष्मेण दत्तमिच्छामि न त्वया राजसत्तम ॥ १३ ॥ नाहं त्वत्तोऽभिकांक्षिष्ये वृत्त्युपायं जनाधिप । यतो भीष्मस्ततो द्रोणो यद्भीष्मस्त्वाह तत् कुरु ॥ १४ ॥ दीयतां

ही विधि पूर्वक राजा धृतराष्ट्र जीकी सेवा आदि में रहने लगी ७. इसप्रकार राज्य छोड़ धृतराष्ट्र व विदुर को सौंप राजा पाण्डु आप सब पृथ्वीपर घूमने लगे ।८। यहां फिर कोशका इकट्ठा करना व उसकी रक्षा देना लेना, भृत्योंका देखना भालना व सबका भरण पोषण इतने कार्य तो सत्य प्रतिज्ञ विदुर जी करते रहे । ९ । व शत्रुओंके जीतने वाले भीष्मपितामह महातेजस्वी कर्त्तव्या कर्त्तव्य का विचारना सन्धि विग्रहादि करना राजाओं को दान देना उन से उचित करादि लेना इस कार्य में रहे । १० । और विदुर भीष्मपितामह दोनों की निरन्तर शिक्षासे शिक्षित धृतराष्ट्र जी राज्यसिंहासन पर बैठे रहते । ११ । फिर तिसके कुल में उत्पन्नहो तुम कुल में भेद डालना कैसे चाहतेहो, हेराजन इकट्ठेहो सब भाइयों के साथ भोगो । १२ । यह बात नतो हम युद्ध के भय से कहतेहैं न धन के लोभ ॥ क्योंकि हमतो भीष्मका दिया हुआ जो कुछ पाते हैं उसीकी इच्छा करते हैं तुम्हारे दिये हुये की कुछभी नहीं करते । १३ । व न हम तुम से जीविका के उपाय की इच्छा करतेहैं, हे नराधिप जिधर भीष्म रहेंगे उधर द्रोण भी रहेंगे इस से भीष्मजी ने जो कहा है वही करो

chamar over him. From that time the subjects have been obeying Dhritrashtra as they did in the time of Pandu. Thus leaving the kingdom in the charge of Dhritrashtra and Vidur, Pandu roamed all over the land. The keeping of the treasury, the inspection of the work of office holders and the distribution of their pay was in the hands of Vidur, and Bhishm looked after the affairs of the state, peace and war, gifts to kings and realisation of tributes from them. 10. Dhritrashtra was invariably guided by Bhishm and Vidur in the affairs of the kingdom. Being born in such a family, you wish to raise quarrels in it. Be united, prince, and enjoy the kingdom together with your brothers. I donot say this out of fear or avarice; for I am contented with what Bhishm has fixed on me and expect

पाण्डुपुत्रेभ्यो राज्यार्धमरिकर्शन । सममाचार्य्यकं तात तव तेषाञ्च मे सदा ॥ १५ ॥ अश्वत्थामा यथा मह्यं तथा श्वेतहयो मम । बहुना किं प्रलापेन यतो धर्मस्ततोजयः १६ वासुदेव उवाच ॥ एवमुक्ते महाराज द्रोणेनामिततेजसा । व्याजहार ततो वाक्यं विदुरः सत्यसंगरः । पितुर्वदनमन्वीक्ष्य परिवृत्य च धर्मवित् ॥ १७ ॥ विदुर उवाच । देवव्रत निबोधेदं वचनं मम भाषतः । प्रनष्टःकौरवो वंशस्त्वयायं पुनरुद्धृतः ॥१८॥ तन्मे विलपमानस्य वचनं समुपेक्षसे । कोयं दुर्य्योधनो नाम कुलेस्मिन् कुलपांसनः ॥ १९ ॥ यस्य लोभाभिभूतस्य मतिं समनुवर्त्तसे । अनार्यस्याकृतज्ञस्य लोभेन हतचेतसः ॥ २० ॥ अतिक्रामति यः शास्त्रं पितुर्धर्मार्थदर्शिनः । एते नश्यन्ति कुरवो दुर्य्योधनकृतेन वै २१ यथा तेन प्रणश्येयुर्महाराजतथाकुरु । मांचैव धृतराष्ट्रञ्च पूर्वमेव महामते ॥ २१ ॥ चित्र

। १४ । पांडुजी के पुत्रों को आधाराज्य देदो, हम उन के तुम्हारे दोनों के आचार्य हैं व वे हमारे तुम्हारे सबके स्वामीहैं । १५ । हमको जैसे अश्वत्थामाहै वैसेही अर्जुन इस में कुछभी अन्तर नहीं है अब बहुत प्रलाप करने से क्या है जहां धर्म वहीं जय जानो ।१६। श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले कि हे महाराज जब द्रोणाचार्यजीने ऐसा दुर्योधन से कहा तो सत्यप्रतिज्ञ विदुर जी बोले । १७ । सो दुर्योधन से नहीं भीष्म जी की ओर देख उनको अपनी ओर चिताय बोले । १८ । हेभीष्म जी हमारे वचन सुनो यह कौरव वंश प्रणष्ट होगयाथा उसको तुमने फिर उद्धार किया ।१९। व आप रोरे कहतेहुये हमारे वचनोंकी ओर कान नहीं देते उपेक्षाही करते हैं कुलनाशक दुर्योधन इसकुलका कौन होताहै २०।जिस लोभीकी मति के पीछे आप चलतेहैं, इसका कौन ठीकहै यहतो अनार्य होगया है उपकार किसीका मानता नहीं, व लोभके मारे इसका चित्त हतहोगया है । २१ । देखो यह दुष्ट शास्त्रका उल्लंघनकरता व धर्मदर्शी अपने

nothing even from you. I shall take the side of Bhishm and therefore you must do what Bhishm says. Give the Pandavas half the kingdom. I have taught both you and them and they are the masters of you as well as of us. I have as much love for Arjun as for Ashwathama and surely the victory will remain on the side of dharm." Shree Krishn continued to say that when Dronacharya had spoken, as above, to Duryodhan, Vidur the truthful spoke out. He did not say anything to Duryodhan; but addressed Bhishm as follows:— "Hear me, Bhishm, The Kauravas had become extinct when you resuscitated it. You donot pay any attention to my entreaties and are neglecting your duty. Duryodhan the destroyer of family is nothing. 20. The avaricious man whom you are following has lost his senses, goodness and gratitude, and his power of

कार इवालेख्य कृत्वा स्थापितवानसि । प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा यथा संहरते तथा ॥२३॥ नोपेक्षस्व महाबाहो पश्यमानः कुलक्षयम् । अथ तेऽद्य मतिर्नष्टा विनाशे प्रत्युपस्थिते ॥२४॥ वनं गच्छ मया सार्धं धृतराष्ट्रेण चैव ह । बद्ध्वा वा निकृतिप्रज्ञं धार्तराष्ट्रं सुदुर्मतिम् ॥ २५ ॥ शाधीदं राज्यमद्याशु पाण्डवैरभिरक्षितम् । प्रसीद राजशार्दूल विनाशो दृश्यते महान् ॥ २६ ॥ पाण्डवानां कुरूणाञ्च राज्ञाममिततेजसाम् । विरराममेवमुक्त्वा तु विदुरो दीनमानसः । प्रध्यायमानः स तदा निःश्वसंश्च पुनः पुनः ॥ २७ ॥ ततोऽथ राज्ञः

पिताके वचनका उल्लंघन करता है इसका परिणाम यह होगा कि इस दुष्ट के कारण ये सब कौरव मारडाले जायँगे । २२ । इस से हे महाराज जिस में इन कौरवोंका नाश नहो वैसा कीजिये, हेराजन् हमको व धृतराष्ट्र को पूर्वसमय में आपने, जैसे चित्र बनानेवाला चित्र स्थापित करता है वैसेही स्थापित कियाहै, जैसे प्रजापति ब्रह्माजी सब प्रजाओं को बनाय फिर आपही संहारभी करते हैं, वैसेही आपकोभी कर्त्तव्य है । २३ । हे महाराज आप कुलको क्षय देखते हुये अब इसकी उपेक्षा न करें व जो इन कौरवों के नाशके निकट आजाने के कारण तुम्हारीभी मति नष्ट होगई होतो । २४ । हमको व धृतराष्ट्र को संग ले वनको चले चलो नहीं तो इस दुर्मति कृतघ्नी दुर्योधनको बँधुआकर पाण्डवों से अभिरक्षित इस राज्य का पालन कार्य कराइये । २५ । हे राजशार्दूल आप प्रसन्न हों इस में बड़ाभारी विनाश दिखाई देता है, सो पाण्डवों का व अमित तेजस्वी कौरवों का विनाश है ।२६। इतना कह कुछ मन में ध्यान करते व बारर ऊर्ध्वश्वासें लेतहुये विदुर दुःखित चित्त हो चुपहोरहे । २७ । इस के पीछे कुलनाश होने से डरती हुई राजा

---

understanding is destroyed by avarice He acts against the dictates of law and the advice of his virtuous father, and the result will be that he will destroy by his wickedness all the Kauravas. Do some thing to save the Kauravas from destruction. You have made Dhritrashtra and me, as we are, as a painter paints his pictures or as Brihma the lord of the world makes and *destroys his creatures* and so you must do your duty now. Donot overlook the destruction of the family and if your wisdom too is destroyed by the coming evil, take Dhritrashtra and me to forest You must take Duryodhan prisoner and bring the Pandavas to rule and protect the kingdom. Do your duty, lion among princes, for I see a great destruction imminent and the calamity will fall on the Pandavas as well as on the glorious Kauravas " Having said this, Vidur *meditated on something in his mind and having heaved deep sighs*

सुबलस्य पुत्री धर्मार्थयुक्तं कुलनाशभीता । दुर्य्योधनं पापमतिं नृशंसं राज्ञां समक्षं सुतमाह कोपात् ॥ २८ ॥ ये पार्थिवा राजसभां प्रविष्टा ब्रह्मर्षयो ये च सभासदोन्ये । शृण्वन्तु वक्ष्यामि तवापराधं पापस्य सामात्यपरिच्छदस्य ॥ २९ ॥ राज्यं कुरूणामनुपूर्वभोज्यं क्रमागतो नः कुलधर्म्म एषः । त्वं पाप बुद्धेऽतिनृशंसकर्मन् राज्यं कुरूणामन्यायाद्धिंस ॥ ३० ॥ राज्येस्थितो धृतराष्ट्रो मनीषी तस्यानुजो विदुरो दीर्घदर्शी । एतावतिक्रम्य कथं नृपत्वं दुर्योधन प्रार्थयसेऽद्य मोहात् ॥ ३१ ॥ राजा च क्षत्ता च महानुभावौ भीष्मे स्थिते परवन्तौ भवेताम् । अयन्तु धर्मज्ञतया महात्मा न कामयेयो नृवरो नदीजः ॥ ३२ ॥ राज्यन्तु पाण्डोरिदमप्रधृष्यं तस्याद्य पुत्रा प्रभवन्ति नान्ये ।

सुबलकी पुत्री गान्धारीजी सबराजाओंके सामने क्रूरस्वभाव पापी अपनेपुत्र दुर्योधनसे अतिकोपकर बोलीं । २८ । कि जो राजा लोग व ब्रह्मर्षि लोग इस राज सभा में बैठेहैं वे सब हमारे वचन सुनें इस दुष्ट दुर्योधन व इसके मन्त्रियों का अपराध कहती हूं । २९ । यह राज्य क्रम से पूर्व के राजा भोगते आयेहैं यही कुलधर्म बहुत काल से वर्तमान है अब तो इस राज्यको इसलिये चाहताहै जिस में कुलका नाशहो । ३० । मतिमान और धृतिमान राजा धृतराष्ट्र और उनके छोटे भाई बुद्धिमान विदुर भी बैसही हैं इन दोनों के सामने तुम राज्य कैसे पासकतेहो यह तुम्हारी भूल है । धृतराष्ट्र, विदुर और भीष्मके होते तुमको राज्य नहीं मिल सकता परन्तु धर्म वश भीष्मजी राज्य नहीं लेना चाहते हैं । ३२ । यह राज्य पाण्डुका जिन के पुत्र पांडव हैं इसलिये सब राज्य उन्हीं का है क्योंकि

---

of grief, became silent. After this, being afraid of the destruction of the whole family, Gandhari the daughter of king Suval spoke out in a rage, addressing her cruel and sinful son Duryodhan in the presence of all the kings. " Let all the kings and Brahmarshis, present in the court, hear what I say, I am exposing the faults of wicked Duryodhan and his ministers. From time immemorial this kingdom has been *ruled from* father to son and this has been the practice in this family; do you wish to rule over it to destroy the family? 30. Wise and forbearing Dhritrashtra and his younger brother Vidur *the wise cannot be surpassed by you. It is your* folly. You cannot get the kingdom as long as Dhritrashtra, Vidur and Bhishm live, though Bhishm has promised not to rule. The kingdom really belonged to Pandu whose sons the Pandavas are, and therefore all the kingdom devolves on them as inheritance from father

राज्यं तदेतन्निखिलं पाण्डवानां पैतामहं पुत्रपौत्रानुगामि ॥ ३३ ॥ यद्ब्रूते कुरुमुख्यो महात्मा देवव्रतः सत्यसन्धो मनीषी । सर्व तदस्माभिरहत्य कार्य्यं राज्यं स्वधर्मान् परिपालयद्भिः ॥ ३४ ॥ अनुज्ञयाचाथ महाव्रतस्य ब्रूयान्नृपोयं विदुरस्तथैव । कार्य्यं भवेत्तत् सुहृद्भिर्नियोज्यं धर्मं पुरस्कृत्य सुदीर्घकालम् ॥ ३५ ॥ न्यायागतं राज्यमिदं कुरूणां युधिष्ठिरः शास्तु वै धर्मपुत्रः । प्रचोदितो धृतराष्ट्रेण राज्ञा पुरस्कृतः शान्तनवेन चैव ॥ ३६ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कृष्णवाक्ये अष्टचत्वारिंशदधिकशततमोऽध्यायः १४८ ॥

क्रमसे राज्य पुत्र और पौत्र को मिलताहै जो बात सत्यवादी, मनीषिवर, कुरु मुख्य भीष्म कहैं हम सब के वहीं माननीय हैं जो वह धर्मयुक्त राज्य करना चाहैं तोभी हमको सिर झुकाना चाहिये जो विदुर और धृतराष्ट्र कहैं वह भी मानने योग्य है जो इनकी बात मानेंगे वे सुख पूर्वक दीर्घकालतक फलते हैं न्यायसे यह सब राज धर्म पुत्रका है वे भीष्म और धृतराष्ट्र की आज्ञा मानते हुये राज्य करैं और कोई राज्य के योग्य नहीं है ॥ ३६ ॥

---

to son. We must all obey Bhishm who is wise, truthful and chief of the Kauravas and should bow to his desire if he wishes to rule himself over the kingdom. Vidur and Dhritrashtra too must be obeyed. Whoever will act on their advice will live long in safety. The kingdom justly belongs to Yudhishthir the son of Dharm. Let him rule under the guidance of Bhishm and Dhritrashtra. None is more worthy to rule over the kingdom." 36.



वासुदेव उवाच ॥ एवमुक्तेतु गान्धार्या धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । दुर्योधनमुवाचेदं राज मध्ये जनाधिप ॥ १ ॥ दुर्योधन निबोधेदं यत् त्वां वक्ष्यामि पुत्रक । तथा तत् कुरु भद्रन्ते यद्यस्ति पितृ गौरवम् ॥ २ ॥ सोमः प्रजापतिः पूर्वं कुरूणां वंश वर्धनः । सोमाद्बभूव षष्ठोयं ययातिर्नहुषात्मजः ॥३॥ तस्य पुत्रा बभूवुर्हि पञ्च राजर्षिसत्तमाः । तेषां यदुर्महातेजा ज्येष्ठः समभवत् प्रभुः ॥ ४ ॥ पूरुर्यवीयांश्च ततो योस्माकं वंशवर्धनः । शर्मिष्ठया संप्रसूतो दुहित्रा वृषपर्वणः ॥ ५ ॥ यदुश्च भरतश्रेष्ठ देवयान्याः सुतो भवत् । दौहित्रस्तात शुक्रस्य काव्यस्यामित तेजसः ॥ ६ ॥ यादवानां कुलकरो बलवान्वीर्य सम्मतः । अवमेने सतु क्षत्रं दर्प पूर्णः सुमन्दधीः ॥ ७ ॥ नचातिष्ठत् पितुः

अध्याय ॥ १४९ ॥

श्री भगवान बोले कि हे महाराज, जब गान्धारीने ऐसा कहातो बीच सभा में दुर्योधनसे धृतराष्ट्र जीने यह कहा कि । १ । हे पुत्र दुर्योधन जो हम तुम से कहें गे वह सुनो और पिताका गौरव यत्न वही करो उस में तुम्हारा कल्याण होगा । २ । कौरवों के वंश के बढ़ानेवाले सबसे प्रथम सोमनाम प्रजापति हुये, सोम से छठी पुश्तिमें नहुषके पुत्र राजाययातिजीहुये । ३ । उनके राजर्षि सत्तम पांचपुत्रहुये, उन में सबसे ज्येष्ठ व श्रेष्ठ महा तेजस्वी यदुजी हुये ।४। व उन में सबसे छोटे पुरु जी हुये जो कि हम लोगों के वंश के बढ़ाने वाले हैं ये राजा वृषपर्वा दैत्यकी कन्या शर्मिष्ठा के पुत्रहैं । ५ । हे भरत श्रेष्ठ, यदुजी शुक्राचार्य की कन्या देवयानी के पुत्र हैं इस से अमित तेजस्वी शुक्रजी के दौहित्रहैं । ६ । ये यादवों के कुलके करने वाले बड़े बलवान वीर्यवान हुये परन्तु ऐसे अहङ्कारी व सुमन्द मति थे कि इन्होंने क्षत्रिय धर्म की निन्दा करडाली । ७ । बल्कि अहङ्कार से मोहितहो उन्होंने अपने पिता

CHAPTER CXLIX

" When Gandhari had spoken as above," said Shree Krishn, " Dhritrashtra said to Duryodhan in the midst of the court," "Hear, my son, Duryodhan," said he " and have respect for your father's words which will be beneficial for you to act upon: Yayati the son of Nahush was the sixth in descent from Som the first Prajapati or protector of the world. He had five sons, the eldest and best of whom was Yadu of g eat glory, and the youngest, the founder of our family was born of Sharmishtha the daughter of Vrishparva the Daitya. Yadu was the grandson of Shukracharya because he was the son of his daughter Devyani and was the founder of the family of the brave Yadavas. But he was so vain and slow of understanding that he degraded the Kshatrya dharm and out of

शास्त्रे वलदर्पे विमोहित । अवमेने च पितरं भ्रातृंश्चाप्य पराजितः ॥ ८ ॥ पृथिव्यांचतु रन्तायां यदुरेवाभवद्बली । वशे कृत्वा स नृपतीन् न्यवसन्नाग साह्वये ॥९॥ तं पिता परमक्रुद्धो ययातिर्नहुषात्मजः । शशाप पुत्रं गांधारे राज्याच्चापि व्यरोपयत् ॥ १० ॥ ये चैनमन्ववर्तन्त भ्रातरो वलदर्पिताः । शशाप तानभि क्रुद्धो ययातिस्तनयानथ ॥११॥ यवीयांसं ततः पूरुं पुत्रं स्ववश वर्त्तिनम्। राज्ये निवेशयामास विधेयं नृप सत्तमः १२ एवं ज्येष्ठो प्यथोत्सिक्तो न राज्य मभिजायते । यवीयांसोपि जायन्ते राज्यं वृद्धोपसेव या ॥ १३ ॥ तथैव सर्व धर्मज्ञः पितुर्मम पितामहः । प्रतीप पृथिवीपाल स्त्रिषुलोकेषु विश्रुतः ॥ १४ ॥ तस्य पार्थिव सिंहस्य राज्यं धर्मेण शासतः । त्रयः प्रजज्ञिरे पुत्रा देव कल्या यशस्विन. ॥ १५ ॥ देवापिरभवच्छ्रेष्ठो वाह्लीकस्तदनन्तरम् । तृतीयः शान्तनु-

की आज्ञा न की, व अपने पिता भाई सबों का निरादर किया । ८ । पर ऐसे बलवान थे कि चारयतेंद्र पर्यंत पृथ्वी क राजाहो सब छोटे राजाओंको अपने वश में कर हस्तिनापुर में बसे । ९ । हे दुर्योधन परन्तु नहुष के पुत्र राजाययाति उन के पिता ने परम क्रुद्धहो पुत्र यदुको शापदिया व राज्यसे उतार दिया । १० । व इन वलदर्पित यदुके अनुयायी तीनभाई और ये जिन्होंने भी पिताकी आज्ञा न मानीथी क्रुद्धहो ययातिजी ने उन पुत्रों को भी शाप देदिया । ११ । उसके पीछे उन नृपसत्तम ने, अपने वशवर्ती सबसे छोटे पुत्र पूरुको राजा बनाया । १२ । इस रीति से जो पिताकी आज्ञामें न चले व मदान्धहो तो ज्येष्ठ भी पुत्र राज्य नहीं पाता और वृद्धोंकी सेवाकरने से छोटे भी पुत्र राज्य पाजातेहैं । १३ । इसीप्रकार हमारे पिताजी के पितामह तीनोंलोकों में प्रसिद्ध सब धर्मशास्त्र जाननेवाले प्रतीप नाम महाराज हुये । १४ । धर्मसे राज्यका पालन करतेहुये उन राजसिंहके यशस्वी देव तुल्य तीनपुत्र उत्पन्नहुये । १५ । उनमें सबसे बड़े देवापि, उनसे छोटे बाह्लीक, व

pride disobeyed his father and insulted him as well as his brothers But he was very powerful and ruled over the *whole land, subduing* all the petty kings and settling at Hasthinapur. Nahush in great anger cursed his son Yadu and deprived him of the throne. 10. Yadu the proud had three brothers who, like him, disobeyed their father and like him were cursed by their father The king then installed his youngest and obedient son on the throne. Thus a son who does not obey his father, although the eldest, can not get the *throne, while younger ones get kingdom by attending to the wishes* of their elders. In this manner, Pratep the grandfather of our father, of great fame and learning, ruled over the land. In the course of time he had three sons; the eldest was Devapi, the younger

स्तात द्युतिमान् मे पितामह ॥ १६ ॥ देवापिस्तु महातेजः त्वग्दोषी राजसत्तम । धार्मिकः सत्यवादी च पितुः शुश्रूषणे रतः ॥ १७ ॥ पौरजानपदानाच सम्मतः साधु सत्कृतः । सर्वेषां बालवृद्धाना देवापिर्हृदयंगमः ॥ १८ ॥ वदान्यः सत्यसन्धश्च सर्वभूत हिते रतः । वर्त्तमानः पितुः शास्त्रे ब्राह्मणानां तथैवच ॥ १९ ॥ वाह्लीकस्य प्रियो भ्राता शान्तनोश्च महात्मनः । सौभ्रात्रञ्च परं तेषां सहितानां महात्मनाम् । २० ॥ अथ काल स्य पर्याये वृद्धो नृपति सत्तमः । सम्भारानभिषेकार्थं कारयामास शास्त्रतः ॥ २१ ॥ का रयामास सर्वाणि मंगलार्थानि चै विभुः । तं ब्राह्मणाश्च वृद्धाश्च पौरजानपदैः सह २२ सर्वे निवारयामासुर्देवापेरभिषेचनम् । सतच्छ्रुत्वातु नृपतिः राभिषेक निवारणम् । अश्रु कण्ठो भवद्राजा पर्यशोचत चात्मजम् ॥ २३ ॥ एव वदान्यो धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च सो

उनसे छोटे तीसरे बड़े द्युतिमान, हमलोगों के पितामह शन्तनुजी हुए । १६ । उनमें देवापिजी के कुष्ठरोगथा परन्तु वे महातेजस्वी, बड़े धर्मात्मा, सत्यवादी पिताकी सेवामें तत्पर । १७ । पुर नगर निवासी व देशनिवासी सबके सम्मत, सज्जनों से सत्कार पानेवाले, व क्या बाल क्या वृद्ध देवापिजी में सबका चित्त लगाहुआ ऐसे सबके प्रियथे । १८ । और बड़ेदानी, सत्यप्रतिज्ञ, सब प्राणियों के हित करने में तत्पर, पिताकी आज्ञामें सदा वर्त्तमान, व ब्राह्मणोंकी आज्ञामें युक्त । १९ । महा-त्मा वाह्लीक व शान्तनु दोनों अपने भाइयों के परमप्रिय क्योंकि उन तीनों महात्मा-ओंका परस्पर बड़ाही अच्छा भाईपन था । २० । हाते २ बहुतकाल बीतने से राजसत्तम प्रतीपजी वृद्धहुये उन्होंने पुत्रके अभिषेक के लिये शास्त्रके अनुसार सब सामग्री इकट्ठी कराई । २१ । व सब मंगलके अर्थ उन्होंने कराये, परन्तु पुर-वासी देशनिवासियों सहित ब्राह्मणों व वृद्धोंने । २२ । देवापि के राज्याभिषेक करने का निषेध किया, उस अभिषेक करनेका निषेध सुन राजा प्रतीपजी ने रोदन कर अपने बड़े पुत्रका बड़ा शोचकिया । २३ । इसरीति से यद्यपि देवापिजी महादानी

was Valhik and third and youngest was wise Shantanu our grand father Devapi caught the leprosy although he was very glorious, virtuous, truthful, obedient to his father, dear to the people of the country, respected by good men and loved by the old and young, charitable, truthful, doing good to all and obedient to his father and Brahmans The three good brothers loved one another dearly. 20, In time, Pratip became old and collected materials for the installation of his son on the throne and had all propi tious acts performed. But the elders and Brahmans of the kingdom objected to the installation of Devapi on the throne The king, when he heard the objections of his subjects, was grieved for his eldest son and wept. Thus, Devapi though he was so charitable,

भवत् । प्रियः प्रजानामपि संस्त्वग्दोषेण प्रदूषितः ॥ २४ ॥ हीनांगं पृथिवी पालं नाभि नन्दन्ति देवताः । इति कृत्वा नृपश्रेष्ठं प्रत्यषेधन् द्विजर्षभाः ॥ २५ ॥ ततःप्रव्यथितांगो सौ पुत्रशोकसमन्वितः । निवारितं नृपं दृष्ट्वा देवापिः संश्रितो वनम् ॥ २६ ॥ बाह्लीको मातुलकुलं त्यक्त्वा राज्यं समाश्रितः । पितृभ्रातृन्परित्यज्य प्राप्तवान् परमर्धिमत् ॥ २७ ॥ बाह्लीकेन त्वनुज्ञातः शान्तनुर्लोके विश्रुतः । पितर्युपरते राजन् राजा राज्य मकारयत् ॥ २८ ॥ तथैवाहं मतिमता परिचिन्त्येह पाण्डुना । ज्येष्ठः प्रभ्रंशितो राज्याद्धी नांग इति भारत ॥ २९ ॥ पाण्डुस्तुराज्यं सम्प्राप्तः कनीयानपि सन्नृपः । विनाशे तस्य पुत्राणा मिदं राज्यमरिन्दम ॥ ३० ॥ अराज्यभागिनि राज्याय कथं त्वं राज्य मिच्छसि ।

सत्यप्रतिज्ञ, धर्मज्ञ, व सब प्रजाओं तथा अपने पिता के प्रियथे पर कुष्ठी होनेसे दूषित होगये उनको राज्य न मिला । २४ । क्योंकि हीनांग पृथ्वीपाल को देवता लोग नहीं प्रसन्न करते इसीसे ब्राह्मण श्रेष्ठों ने राजाको वैसे पुत्रके अभिषेक करने से रोंकदिया । २५ । इससे राजाप्रतीपजो पुत्रके शोकसे बहुत व्यथितहुये, व जब देवापिने देखा कि राजाको ब्राह्मणों ने अभिषेक करनेको रोंकदिया तो देवापि वनको चलेगये । २६ । अब उनके पीछे बाह्लीकजी राज्य पिता भाई सबको छोड़ अपने मामाके यहां चलेगये क्योंकि वहांका राज्य कोश सब उनको मिलगया । २७ । जब पिता प्रतीपजी मृतकहुये तो अपने भाई बाह्लीककी सम्मति से लोकमें विश्रुत शान्तनुजी राजाहो राज्यकरनेलगे । २८ । इसीप्रकार हीनांगहोने के कारण हमको भी महामतिमान् पाण्डुजी ने ज्येष्ठ होनेपरभी राज्य पर नहीं बैठने दिया क्योंकि ब्राह्मणोंने उससमय भी रोकाथा । २९ । इससे हमसे छोटेभी थे पर अंगभङ्ग न थे पाण्डु जो राजाहुये, अब उनके न होनेपर उनके पुत्रोंकाही यह राज्य है हे शत्रुसूदन । ३० । फिर अन्ध बधिर होनेके कारण राज्यके लिये जब हम अ-

truthful, virtuous and dear to his father and subjects could not get the kingdom because he had the defect of leprosy. A deformed king is not liked by gods and so the Brahmans objected to instal him on the throne. 25. King Pratip was much afflicted for his son. When Devapi saw that the king was obstructed by Brahmans, he went out to forest. And Vahlik left the kingdom to his father and brother to go to his maternal uncle and there became the master of kingdom and wealth. At the death of Pratip, famous Shantnu became king with the consent of his brother. Thus being of defective body, although the elder of the two, I was not allowed by Brahmans to rule over the kingdom and Pandu the younger who was whole of body became king. After Pandu the kingdom belongs to his sons, 30. How can you aspire to be king when I was thought

अराजपुत्रो ह्यस्वामी परस्व हर्तुं मिच्छसि ॥ ३१ ॥ युधिष्ठिरो राजपुत्रो महात्मा न्यायागत राज्यमिदञ्चतस्य । स कौरवस्यास्य कुलस्य भर्त्ता प्रशासिता चैव महानुभाव· ॥ ३२ ॥ स सत्यसन्धः स तथाऽप्रमत्तः शास्त्रे स्थितो वन्धुजनस्य साधु । प्रिय· प्रजानां सुहृदानुकम्पी जितेन्द्रिय साधुजनस्य भर्ता ॥ ३३ ॥ क्षमा तितिक्षादम आर्जवञ्च सत्यव्रतत्व श्रुतमप्रमाद । भूतानुकम्पा ह्यनुशासनञ्च युधिष्ठिरे राजगुणा समस्ताः ॥ ३४ ॥ अराजपुत्रस्त्वमनार्य्यवृत्तो लुब्ध सदा वन्धुषु पापबुद्धि । क्रमागत राज्यमिदं परेषाहर्तुं कथ शक्ष्यसि दुर्विनीत ॥ ३५ ॥ प्रयच्छ राज्यार्धमपेतमोह सवाह नंच सपरिच्छदञ्च । ततोवशेषं तव जीवनस्य सहानुजस्यैव भवेन्नरेन्द्र ॥ ३६ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि धृतराष्ट्रवाक्यकथने
एकोनपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १४९ ॥

भागी ठहरे तो तुम कैसे राज्य लेनेकी इच्छा करतेहो, क्योंकि तुम अराजा के पुत्रहो इससे तुमभी आराजा रहोगे, तुम पराया धन क्यों हरा चाहतेहो । ११ । युधिष्ठिर राजपुत्र और धर्मात्मा हैं न्याय से यह राज्य उन्हींकाहै तुम्हारा नहीं वे कौरवों के स्वामी और परम सुन्दर हैं और सबके सीख देनेवालेहैं वह बुद्धिमान और साधुहैं शास्त्रज्ञ और प्रजावधुभीहैं सुहृद पालक जितेन्द्रिय और सबको हर्ष देनेवाले हैं दम नियम सयम क्षमा आर्जव सत्यव्रत अप्रमाद सहनशील दयावान हैं इससे उनमें सब राजाओं के गुणहैं तुम अनार्य अनृप कुमार लालची नित्य पाप बुद्धि कुबुद्धि दुष्टहो इसलिये हे मति मंद तू पछतावेगा अब मोहत्याग कर आधा राज्यतूले और आधा पाण्डवों को नहीं ता अधिक लोभ करने से तुझको आधा न मिलेगा ॥ १६ ॥

---

unfit to rule on account of my defective body. You can not be a king because your father was not so. Why do you wish to deprive others, of their wealth ? Yudhishthir is the son of a king and is virtuous, therefore the kingdom justly belongs to him and not to you. He is the lord of the Kauravas and is very beautiful, able to rule, wise and good, learned, friendly to his subjects, benefactor of his friends, having control over his organs and giver of happiness to all. He possesses all the virtues (*dam, niyam, samyam, ksnama, arjav*) and is truthful, free from pride, patient, merciful and possesses all other qualities which are required of a king. But you are wicked, not the son of a king, avaricious, foolish, of crooked understanding and sinful. It is therefore that you wish to deprive the Pandavas of their wealth and kingdom You will repent, fool. Give up your folly and give half the kingdom to the Pandavas or you will lose all." 36

वासुदेव उवाच। एवमुक्तं तु भीष्मेण द्रोणेन विदुरेण च। गान्धार्या धृतराष्ट्रेण नवै मन्दोन्वबुध्यत ॥१॥ अवधूयोत्थितो मन्दः क्रोधसंरक्तलोचनः। अन्वद्रवन्तं पश्चात् द्राजानस्त्यक्तजीविताः ॥ २ ॥ आज्ञापयच्च राज्ञस्तान् पार्थिवान् नष्टचेतसः। प्रयाध्वं वै कुरुक्षेत्रं पुष्योद्येति पुनः पुनः ॥३॥ ततस्ते पृथवीपालाः प्रययुः सहसैनिकाः। भीष्मं सेनापतिं कृत्वा संहृष्टाः कालचोदिताः ॥ ४ ॥ अक्षौहिण्यो दशैकाच कौरवाणांसमागताः। तासां प्रमुखतो भीष्मस्तालकेतुर्व्यरोचत ॥ ५ ॥ यदत्रयुक्तं प्राप्तंच तद्विधत्स्व विशाम्पते। उक्तं भीष्मेण यद्वाक्यं द्रोणेन विदुरेणच ॥ ६ ॥ गान्धार्या धृतराष्ट्रेण समक्ष

अध्याय ॥ १५० ॥

कृष्णचन्द्र जी युधिष्ठिरजी से बोले कि इसप्रकार भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, विदुरजी, गान्धारी, व धृतराष्ट्रने कहा परन्तु उस मन्दने कुछ न माना। १। क्रोध करिके नेत्र लालकर सबका तिरस्कार कर सभासे चलागया, उसके पीछे जो उसके संग प्राणदेनेको आयेहैं वे राजालोग भी उसीके संग चलेगये।२। व अपने स्थानपर पहुँच सब राजाओं को उसने आज्ञादी कि आज पुष्य नक्षत्र है तुम सबलोग युद्धकरनेके लिये कुरुक्षेत्रको चलो। ३। उसकी आज्ञापाय कालके प्रेरित वे राजालोग भीष्मजीको सेनापति बनाय बड़ी शीघ्रता के साथ कुरुक्षेत्र को चलेगये, अपनी २ सेनाभी संगलगये। ४। ग्यारह अक्षौहिणी सेना सब राजाओंकी मिल कौरवोंकी है उन सबों के मुखिया भीष्मजी हैं जिनकी पताकामें ताड़का चिह्न बनाहै। ५। हे राजन् अब इस विषयमें जो योग्य व प्राप्तहो वह करो जो वचन भीष्मने कहा व जो द्रोणाचार्य विदुरजी ने कहा। ६। गान्धारी धृतराष्ट्रजी ने कहा सब हमारे सामनेही कहा किसी और के मुखकी कही हमने नहीं

CHAPTER CL -

Shree Krishna said to Yudhishthir that for all the remonstrance of Bhishm, Dronacharya, Vidur, Gandhari and Dhritrashtra, the fool was obdurate and with eyes red in anger, went away from the court, insulting all by his conduct. The kings too who had come to fight his battles followed his example. He then ordered all the kings to start the very day to Kurukshetra as, he said, the time was propitious, it being *pushya nakshtra*. By his order all the kings led by Bhishm went the very same day towards Kurukshetra together with their armies. The Kauravas have collected eleven akshauhinis of army altogether and their leader is Bhishm who has a palm tree on his standard. Thus Shree Krishn told the Pandavas what he had heard from Bhishm, Dronacharya, Vidur, Gandhari

मम भारत। एतत्ते कथितं राजन् यद्वृत्तं कुरुसंसदि ॥ ७ ॥ साम्यमादौप्रयुक्तंमे राजन् सौभ्रात्रमिच्छता। अभेदायास्य वंशस्य प्रजानांच विवृद्धये ॥ ८ ॥ पुनर्भेदश्च मे युक्तो यदा सामनगृह्यते। कर्मानुकीर्त्तनञ्चैव देवमानुषसंहितम् ॥ ९ ॥ यदा नाद्रियतेवाक्यं सामपूर्वं सुयोधनः। तदामयासमानीय भेदिताः सर्वपार्थिवाः ॥१०॥ अद्भुतानिच घोराणि दारुणानिच भारत। अमानुषाणि कर्माणि दर्शितानि मया विभो ॥ ११ ॥ निर्भर्त्सयित्वा राज्ञस्तांस्तृणीकृत्य सुयोधनम्। राधेयं भीषयित्वाच सौबलञ्चपुनः पुनः ॥१२॥ द्यूततो धार्त्तराष्ट्राणां निन्दां कृत्वा तथा पुनः। भेदयित्वा नृपान् सर्वान् वाग्भिर्मन्त्रेण चासकृत् ॥ १३ ॥ पुनः सामाभिसंयुक्तं सम्प्रदानमथाब्रुवम्। अभेदात्कुरुवंशस्य कार्ययोगात्तथैवच ॥ १४ ॥ ते शूरा धृतराष्ट्रस्य भीष्मस्य विदुरस्यं च। तिष्ठेयुः पाण्डवाः

कहा, जो कुछ कौरवोंकी सभाका वृत्तान्तहै सब हमने आपसे कहा। ७। हे राजन जिसमें तुम्हारा उसका सौभ्रात्र बना रहै इससे हमने जाते के साथ पहिले उसे बहुतप्रकारसे समझाया, जिससे वंशमें भेद न पड़े व प्रजाओंकी वृद्धिहो। ८। जब उसने साम अर्थात् समझाना न माना तो हमने भेदका उपाय किया उस में देवताओं और मनुष्योंके कर्म हमने कहे। ९। जब समझाना दुर्योधन ने किसी प्रकार न माना तो राजाओं और उसके मन में भेदडाला। १०। उसमें अद्भुत घोर दारुण अमानुष कर्म हमने दिखाये। ११। उस में सब राजाओंको बहुत फटकार दिखाई, व दुर्योधन को एक तृण के बराबर भी न समझा, कर्ण व शकुनि को तो बार २ अपकार किया। १२। फिर जुआ खिलाने के निमित्त दुर्योधनादिकोंकी बड़ी भारी निन्दा कर वचनों से व एकान्तकी सम्मति से राजाओं के मनमें भेद अर्थात् फोर तोड़ कराया। १३। फिर साम समझाना सहित दान देनाभी सुनाया जिसमें कुरुवंश में भेद नहो व कार्य भी होजाय। १४। इस विषय में यह बात

and Dhritrashtra in the court of the Kauravas and enjoined what was necessary to do at that time, saying that he had done all he could to secure peace and safety of the family and the subjects and when his words were not attended to he had tried what he could do in the way of disunion by telling them the stories of the deeds of gods and men and causing disunion between *Duryodhan* and the kings. 10. He said that he had shown them dreadful superhuman deeds, reviling the kings and humiliating *Duryodhan*, Karan and Shakuni, again and again, by mentioning their deceitfulness at gambling and causing thus the hearts of the kings to be turned from him. That when *sam* (remonstrance) and *bhed* (disunion) were of no avail, he had tried *dan* (bribe) for securing peace between the two branches of the family, in as much as he said to the Kauravas

सर्वे हित्वा मानमधश्वराः ॥१५॥ प्रयच्छन्तु च ते राज्यमनीशास्ते भवन्तु च । यथाह राजा गांगेयो विदुरश्च हितं तव ॥ १६ ॥ सर्वं भवतु ते राज्यं पञ्च ग्रामान् विसर्जय । अवश्यं भरणीयाहि पितुस्ते राजसत्तम ॥ १७ ॥ एवमुक्तोपि दुष्टात्मा नैव भागव्यमुञ्चत । दण्डश्चतुर्थं पश्याम तेषु पापेषु नान्यथा ॥१८॥ निर्याताश्च विनाशाय कुरुक्षेत्रं नराधिपाः । एतत्ते कथितं राजन् यद्वृत्तं कुरुसंसदि ॥ १९ ॥ नते राज्यं प्रयच्छन्ति विनायुद्धेन पाण्डव । विनाशहेतवः सर्वे प्रत्युपस्थितमृत्यवः ॥ २० ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि भगवद्यानपर्वणि कृष्णवाक्ये
पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५० ॥
समाप्तश्च भगवद्यानपर्व ॥

हमने कही कि यद्यपि युधिष्ठिरादि बड़े शूरवीर हैं परन्तु सब धृतराष्ट्र विदुर व भीष्मकी सेवामें मान छोड़ नौकरकर रहेंगे । १५ । तुमको वे सब राज्यदेंगे आप असमर्थ होकर रहेंगे, जिसप्रकार धृतराष्ट्र भीष्म व विदुरजीने तुम्हारे हितकी बात कही है, वही सही । १६ । सब तुम्हारा राज्यहो केवल पांच ग्राम छोड़दो, क्योंकि तुम्हारे पिता धृतराष्ट्रको पांडवोंकाभी भरणपोषण करना बहुत आवश्यक है । १७ । ऐसा कहने परभी उस दुष्टात्माने भाग नहीं छोड़ा इससे उन पापियों को अब दण्डही देना उचित है । १८ । सब नृप मरने के लिये कुरुक्षेत्र गये अब विना युद्ध दुर्योधन तुमको कुछ न देगा उसकी मृत्यु निकटहै इस लिये सब सामान लड़ाई के तयार किये हैं । २० ।

---

that the Pandavas would obey the orders of Dhritrashtra, Vidur and Bhishm and would serve them like humble servants, leaving all the power in their hands; that the Pandavas would be content with only five villages as Bhishm, Vidur and Dhritrashtra had suggested because they thought it to be their duty to maintain the Pandavas. But the wicked man would not hear to anything and therefore deserved punishment. That the kings had gone to be killed to Kurukshetra, that Duryodhan would not give the least share of the kingdom without fighting and that he had made all those preparations for battle because his death was near. 20.



अथ सैन्यनिर्याणपर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । जनार्दनवचः श्रुत्वा धर्मराजो युधिष्ठिरः । भ्रातॄनुवाच धर्मात्मा समक्षं केशवस्यह ॥ १ ॥ श्रुतमवद्भिर्यद्वृत्तं सभायां कुरुसंसदि । केशवस्यापि यद्वाक्यं तत् सर्वमवधारितम् ॥ २ ॥ तस्मात् सेनाविभागं मे कुरुध्वं नरसत्तमा । अक्षौहिण्यश्च सप्तैताः समेता विजयाय वै ॥ ३ ॥ तासां ये पतयः सप्त विख्यातास्तान्निबोधत । द्रुपदश्च विराटश्च धृष्टद्युम्नशिखण्डिनौ ॥ ४ ॥ सात्यकिश्चेकितानश्च भीमसेनश्च वीर्यवान् । एते सेनाप्रणेतारो वीराः सर्वे तनुत्यजः ॥५॥ सर्वे वेदविदः शूराः सर्वे सुचरितव्रताः । ह्रीमन्तो नीतिमन्तश्च सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ६ ॥ इष्वस्त्रकुशलाः सर्वे तथा सर्वास्त्रयोधिनः । सप्तानामपि यो नेता सेनानां प्रविभागवित् ॥ ७ ॥ यः सहेत

अध्याय १५१ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि कृष्णचन्द्रजी के वचन सुन धर्मात्मा धर्मराज युधिष्ठिरजी कृष्णचन्द्रजी के सामनेही अपने सबभाइयों से बोले । १ । कि कौरवोंकी सभा में जो वृत्तहैं उन्हें आपलोगों ने सुना व कृष्णचन्द्रजी ने जो कहा वहभी अच्छीतरह विचारलिया । २ । इससे अब बहुतही शीघ्र सेनाका विभाग आप लोग करें, हमारी विजय के लिये सात अक्षौहिणी सेना इकट्ठी हुई हैं । ३ । उन सातों सेनाओं के जो सात पतिहैं उनको हम बताते हैं १द्रुपद २विराट ३धृष्टद्युम्न ४ शिखण्डी । ४ । ५सात्यकि ६ चेकितान ७ वीर्यवान् भीमसेन, ये सबसेनाओं के नायक वीरहैं व सब अपना २ शरीर छोड़नेपर उतारू हैं । ५ । सब वेद शास्त्र जानते हैं, सब शूरहैं, सबके आचरण ठीकहैं सब ह्रीमान नीतिमान व सब युद्धमें विशारदहैं । ६ । बाणादि अस्त्र चलाने में सब कुशल हैं व सब अस्त्र शस्त्रों से युद्धकरना जानते हैं परन्तु सातों सेनाओं का स्वामी मुख्य सेनापति जो कि

CHAPTER CLI

Vaishampayan said that having heard the words of Krishn, Yudhishthir the just and virtuous spoke out to all his brothers in the presence of Shree krishn. "You have heard," said he, "what has passed in the court of the Kauravas as well as the words of Shri Krishn. You must therefore form divisions of the army at once Seven *akshauhinis* are collected here for our conquest, and will be placed under seven leaders, namely, Drupad, Virat, Dhrishtadyumn, Shikhandi, Satyaki, Chekitan and valliant Bhimsen. All these, leaders of our army are exceedingly brave and are ready to lay down their lives for us All of them are learned, brave, virtuous and courteous Politicians, skilful in the art of war. They are very

रणे भीष्मं शरार्चिषः पावकोपमम् । तन्तावत् सहदेवाद्य प्रब्रूहि कुरुनन्दन । स्वमतं पुरुषव्याघ्र को नः सेनापतिः क्षमः ॥ ८ ॥ सहदेव उवाच । संयुक्त एकदुःखश्च वीर्यवांश्च महीपतिः । यं समाश्रित्य धर्मज्ञ स्वमंशमनुयुञ्ज्महे ॥ ९ ॥ मत्स्यो विराटो बलवान् कृतास्त्रो युद्धदुर्मदः । प्रसहिष्यति संग्रामे भीष्मं तांश्च महारथान् ॥१०॥ वैशम्पायन उवाच । तथोक्ते सहदेवेन वाक्ये वाक्यविशारदः । नकुलोऽनन्तरं तस्मादिदं वचनमाददे ॥ ११ ॥ वयसा शास्त्रतो धैर्यात् कुलेनाभिजनेन च । ह्रीमान् बलान्वितः श्रीमान्सर्वशास्त्रविशारदः ॥ १२ ॥ वेदचास्त्रं भरद्वाजाद्दुर्धर्षः सत्यस-

---

सबका विभाग जानै । ७ । वह होगा जो अग्निरूप बाणों को चिनगारी किये भीष्मजी को रणमें सहै, उसको पहिले सहदेव तुम बताओ कौन होगा, तुम्हारे मतसे इस समाजमें जो सेनापति होसके उसको बताओ तो । ८ । सहदेव बोले कि, हमारे विचार से महाराज विराटजी सेनापतिहों क्योंकि ये सम्बन्धी हैं, व सुख में सुखी दुःखमें दुःखी, अति वीर्यवान, व जिनके शरण में आप हमलोग अपना भाग पाने के भागीहुये । ९ । और ये मत्स्यदेशके राजा विराटजी बलवान धनुर्विद्या में निपुण युद्धकरने में महादुर्मदहैं, इससे भीष्मपितामह और सब राजाओं को रणमें अच्छीतरह सहसकेंगे । १० । वैशम्पायनजी बोले कि जब सहदेव ने ऐसा कहा तो बोलनेमें बड़े चतुर नकुल यहवचन बोले कि । ११ । वय शास्त्र धैर्य कुल परिवार सम्बन्धी, ह्रीवान्, बलवान, श्रीमान , सर्वशास्त्र में विशारद होनेसे, । १२ । भरद्वाजजी से शास्त्र पढ़ने से महा दुर्द्धर्ष होनेसे, सत्यप्रतिज्ञता से

---

dexterous in the use of arrows and other weapons and know how to fight, but the commander in chief of all these armies will be he who knows the divisions well and will withstand Bhishm the grandfather with his fiery arrows. Tell us, Sahadev, what man can answer well for this purpose. Name the person who, in your opinion, be fit to occupy the position of the commander in chief "— "I think," said Sahadev, " that Virat will be the best man for the purpose, for he is our kinsman, ready to share in our joys and sorrows, and so strong that under his protection we may hope to win back our share. Virat the king of Matsya is powerful, good archer and skilful in fighting, and can bear the fury of Bhishm and other kings well." 10. Vaishampayan said that on hearing the words of Sahadev, Nakul the good speaker, said, " Being learned, glorious and noble kinsman, possessing modesty, strength, wealth and knowledge of Shastras, having learnt the Shastras of Bharadwaj and being brave

गर । यो नित्य स्पर्धते द्रोण भीष्मश्चैव महाबलम् ॥ १३ ॥ श्लाघ्य पार्थिव वशस्य प्रमुखे वाहिनीपति । पुत्रपौत्रै परिवृत शतशाख इव द्रुम. ॥ १४ ॥ यस्तताप तपो घोर सदार पृथिवीपति । रोषाद्द्रोण विनाशाय वीर समितिशोभन. ॥ १५ ॥ पितेवास्मान् समाधत्ते य सदा पार्थिवर्षभ । श्वशुरो द्रुपदोस्माक सेनाग्र सप्रकर्षतु ॥ १६ ॥ स द्रोण भीष्मा वायातो सहेदिति मतर्मम । सहि दिव्यास्त्रविद्राजा सखा चांगिरसो नृप ॥ १७ ॥ माद्रीसुताभ्या मुक्ते तु स्वमते कुरुनन्दन । वास विर्वा सवसम. सव्यसाच्यब्रवीद्वच ॥ १८ ॥ योय तप प्रभावेन ऋषिसन्तोषणेनच । दिव्य. पुरुष उत्पन्नो ज्वालावर्णो महाभुज ॥१९॥ धनुष्मान् कवची खड्गी रथमारुह्यदंशित ।

व नित्यही भीष्मपितामह द्रोणाचार्य से स्पर्द्धारखने से । १३ । व सब राजाओं के वशमें प्रशंसित होनेसे अपने पुत्र पौत्र समेत सैकड़ों शाखा के वृक्षके समान विराजमान । १४ । व मारे रोपके जिन्होंने द्रोणाचार्य के नाशक लिये स्त्री सहित बड़ी घोर तपस्याकी है, वे वीर संग्राम में बड़े शोभित भी होते हैं । १५ । व जा पार्थिव श्रेष्ठ सदा हमलोगों का समाधान पिताक समान करतेहैं वे हमलोगों के श्वशुर महाराज द्रुपदजी सब सेनाके सेनापतिहों । १६ । क्योंकि जो भीष्म द्रोण दोनों एकही संग युद्ध करनेको आवें तो ये सहसकेंगे जिससे कि सब शस्त्रास्त्र के जाननेवालेहैं और द्रोणाचार्य के सखाभीहैं । १७ । अब सहदेव नकुल कहचुके तब उन दोनों से बडे इन्द्र के पुत्र इन्द्रही के समान पराक्रमी अर्जुनजी बोले कि । १८ । जो ये वीर तपस्याके प्रभाव से व ऋषियों क सतापकरनेसे ज्वाला के रगके महापुरुष उत्पन्न हुये हैं । १९ । जो धनुर्द्धारण कर कवच खड्ग धारणकर

---

truthful and enmical to Bhishm and Dronacharya, born in a very noble family of kings and spreading like a large tree with his sons and grandsons, Drupad who, with his wife, performed a severe asceticism to kill Dronacharya, who is so glorious in battle and who has a paternal affection for us and is our father in law, deserves to be the commander-in chief of our army. He will be able to resist both Bhishm and Drona at the same time, for he knows all the weapons and Shastras and was a playmate of Dronacharya.' When both Nakul and Sahadev had spoken, their elder brother, Arjun the son of Indra and glorious like Indra himself, spoke out as follows — "This great man born of the power of asceticism and the patience of rishis, who has the colour of fire and who came out of fire with bow, arrows and sword and with a chariot drawn by divine horses,

दिव्यैर्हयवरैर्युक्त मग्नि कुण्डात् समुत्थितः ॥ २० ॥ गर्जन्निव महामेघो रथघोषेणवीर्यवान्। सिंहसंहननो वीरः सिंहतुल्यपराक्रमः ॥ २१ ॥ सिंहोरस्कः सिंहभुजः सिंहवक्षा महाबलः। सिंहप्रगर्जनो वीरः सिंहस्कन्धो महाद्युतिः ॥ २२ ॥ सुभ्रः सुदंष्ट्रः सुहनुः सुबाहुः सुमुखोऽकृशः। सुजत्रुः सुविशालाक्षः सुपादः सुप्रतिष्ठितः ॥ २३ ॥ अभेद्यःसर्वशस्त्राणां प्रभिन्न इव वारणः। जज्ञे द्रोणविनाशाय सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ २४ ॥ धृष्टद्युम्न महं मन्ये सहेद्भीष्मस्य सायकान्। वज्राशनिसमस्पर्शान् दीप्तास्यानुरगानिव २५ यमदूतसमान् वेगे निपाते पावकोपमान्। रामेणाजौ विषहितान् वज्रनिष्पेषदारुणान् ॥ २६ ॥ पुरुषं तं न पश्यामि यः सहेत महाव्रतम्। धृष्टद्युम्नमृते राजन्निति मे धीयते

रथपरचढ़ दिव्यघोड़े जुतेहो रथपर चढ़े अग्निके कुण्डसे निकले हैं। २०। व उसी समय महाघोषयुक्त रथके समान गर्जतेहो से सिंहके समान पुष्टदेह व सिंहही के तुल्य पराक्रमी उत्पन्न हुयेहैं।२१। जिनकी सिंहकीसी चौड़ीछाती है, सिंहहीकीसी भुजा,सिंहहीकासा वक्षःस्थल, महाबली, सिंहहीकासागर्जना व सिंहहीकासा कन्धा ऐसे महाद्युतिमान्। २२। व जिनकी सुन्दर भौंहें, सुन्दरदांत, सुन्दरचौंड़, सुन्दर बाहु, सुन्दरमुख, बड़े मोटेताजे सुन्दरहंसिया,सुन्दर बड़ेनेत्र, सुन्दरपाद,सुन्दरबैठक है। २३। व जो सब शस्त्रों से अभेद्यहैं, मानो मदांध हाथी हैं जो कि द्रोणाचार्य के विनाश करनेही के लिये जन्मे हैं सत्यवादी व जितेन्द्रिय हैं। २४। ऐसे धृष्टद्युम्न को हम भीष्म के बाण सहने के लिये मानतेहैं क्योंकि जो बाण वज्र के तुल्य स्पर्श करने में कठोरहैं, मानो ज्वालामुख से निकलते हुये महाविषधर सर्प हैं। २५। वेग में यमदूतों के ही समान शीघ्र चलते भस्मकरने में प्रचंड अग्निही के समानहैं, जिनको संग्राम में परशुरामजीभी नहीं सहसके जिनका शब्द वज्रके शब्द सेभी दारुणहै।२६। इससे हेराजन् हमारी बुद्धि में तो आताहै कि धृष्टद्युम्नको छोड़

who roared like a lion just after his birth, whose body and prowess are like those of a lion, who has broad breast and shoulders of a lion, who possesses immense strength, roars like a lion, has shoulders like those of a lion, is of great glory, beautiful eyebrows, teeth, face and arms, is very robust with beautiful large eyes, beautiful feet and seat, who has a panoply impregnable by all weapons, is like a mad elephant and is born to destroy Dronacharya, is truthful and has control over his senses. Such is Dhrishtadyumn whom I think worthy of withstanding the fury of Bhishm's arrows which are hard to the touch like vajra or like venomous snakes cast out of fire, swift like the messengers of Yam, capable of burning like flaming fire, which Parashuram could not bear in battle and whose sound is more dreadful than the fall

मति । २७ ॥ क्षिप्रहस्तश्चित्रयोधी मत सेनापतिर्मम । अभेद्यकवच श्रीमान् मातङ्ग इव यूथप ॥ २८ ॥ भीमसेन उवाच । वधार्थं य समुत्पन्न शिखण्डी द्रुपदात्मज । वदन्ति सिद्धा राजेन्द्र ऋषयश्च समागता ॥ २९ ॥ यस्य संग्राम मध्यतु दिव्यमस्त्र प्रकुर्वत । रूप द्रक्ष्यन्ति पुरुषा रामस्येव महात्मन ॥ ३० ॥ न त युद्धे प्रपश्यामि यो भिन्द्यात्तु शिखण्डिनम् । शस्त्रेण समरे राजन् संनद्ध स्यन्दने स्थितम् ॥ ३१ । द्वैरथे समरे नान्यो भीष्म हन्यान्महाव्रतम् । शिखण्डिनमृते वीर स मे सेनापतिर्मत ॥ ३२ ॥ युधिष्ठिर उवाच । सर्वस्य जगतस्तात सारासार बलाबलम् । सर्वं जानाति धर्मात्मा मतमेषाञ्च केशव ॥ ३३ ॥ यमाह कृष्णो दाशार्ह सोऽस्तु

दूसरा पुरुष कोई भी ऐसा नहीं जो समरमें महाव्रतधारी भीष्मजी को सहसके । २७ । इससे यही सेनापति किये जायँ, क्योंकि ये बड़ी जल्दी के साथ हाथ चलाते हैं, व चित्र विचित्र युद्ध करते हैं इनका कवच भी सब शस्त्रास्त्रों से अभेद्य है व यूथप हाथी के समान श्रीमान् हैं । २८ । भीमसेनजी बोले कि हे राजेन्द्र सिद्ध ऋषि लोग जिसको कहते हैं कि भीष्मजी के वधही करने के लिये उत्पन्न हुये हैं ऐसे शिखण्डीजी जो महाराज द्रुपदजी के पुत्र हैं । २९ । संग्राममें अस्त्र प्रक्षेप करते हुये जिनका रूप सबपुरुष देखें। जैसे महात्मा परशुरामजीका देखते हैं ।३०। हे राजन् हम उस पुरुषको नहीं देखते जो संग्राममें रथपर बैठे हुये शिखण्डीजी को शस्त्रसे विदारण करसके । ३१ । द्वन्द्व युद्धमें शिखण्डी वीरको छोड़ ऐसा कोई पुरुषसिंह नहीं जो महाव्रत भीष्मजी को मारसके इससे यही शिखण्डीजी हमारे सेनापतिहों ।३२। यहसुन युधिष्ठिरजी बोले कि, धर्मात्मा केशव भगवान सब जगत्का सार असार बल अबल जानते हैं इससे इनलोगों का भी बलाबल जानतेही हैं, जिसको कृष्ण

---

of vajra I donot see any other person except Dhrishtadyumn capable of withstanding the arrows of Bhishm He must be made the commander in chief of the army because he is very quick of hand, fights in different ways, has a panoply impregnable by any weapon and is glorious like a young elephant." "King of kings !" said Bhimseen, "Shikhandi the son of king Drupad, who, as the sidhas and rishis say, is born to destroy Bhishm will look like Parashuram when using his weapons in battle 30 I donot find any one who can defeat Shikhandi sitting on his own chariot. No brave man, except valliant Shikhandi, can kill Bhishm of dreadful vows Let Shikhandi be our commander-in-chief" Yudhishthir, however, said on hearing all this, 'Keshav the virtuous knows the reality and falsehood, strength and weakness of these men like that of the

सेनापतिमिम । कृतास्त्रोऽप्यकृतास्त्रो वा वृद्धो वा यदि वा युवा ॥ ३४ ॥ एष नो विजये मूलमेष तात विपर्य्यये । अत्र प्राणाश्च राज्यञ्च भावाभावौसुखासुखे ॥ ३५ ॥ एषधाता विधाताच सिद्धिरत्र प्रतिष्ठिता । यमाह कृष्णोदाशार्हः सोऽस्तु नो वाहिनीपतिः ॥ ३६ ॥ ब्रवीतु वदतां श्रेष्ठो निशा समभिवर्त्तते । ततः सेनापतिं कृत्वा कृष्णस्य वशवर्त्तिनः ॥ ३७ ॥ रात्रेः शेषे व्यतिक्रान्ते प्रयास्यामो रणाजिरम् । अधिवासितशस्त्राश्च कृतकौतुकमङ्गलाः ॥ ३८ ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा धर्मराजस्य धीमतः । अब्रवीत् पुण्डरीकाक्षो धनञ्जयमवेक्ष्य ह ॥ ३९ ॥ ममाप्येते महाराज भवद्भिर्य उदाहृताः । नेतारस्तव सेनाया मता विक्रान्तयोधिनः ॥ ४० ॥ सर्व एव

भगवान कहें वह हमारा सेनापतिहो, चाहे वह अस्त्रविद्या अच्छीतरह जानताहो व न जानताहो चाहे बालहो व युवा व वृद्ध । ३४ । क्योंकि यही हमलोगों की विजय क मूल हैं और यही पराजय के भी मूल हैं, यहां यही सबों के प्राण राज्य भाव अभाव सुख दुःख सबकुछ हैं । ३५ । यही सबके धाता विधाता व सिद्धिरूप प्रतिष्ठित हैं, इससे जिसको कृष्ण भगवान् कहें वही हमारी सेनाका पतिहो । ३६ । इससे कहनेवालों में श्रेष्ठ कृष्णचन्द्रजी वाले अब रात्रि होगई है जिसको चाहें सेनापति बनावें जिसमें इनके वशवर्त्ती हमलोग । ३७ । रात्रिबीतनेपर संग्रामभूमि को चलें, सब अभीसे अपने २ शस्त्रास्त्र सँभालें व मंगलादि करें । ३८ । वैशम्पायन जी बोले कि धीमान् धर्म्मराजजी के ऐसे वचन सुन अर्ज्जुनजी की ओर देख श्रीकृष्णचन्द्रजी बाले कि । ३९ । हे महाराज जिनको आपलोगों ने कहा है हम भी उ हीं विक्रान्त योधा वीरों को आपकी सेनाके पति होना चाहते हैं । ४० ।

whole world We shall make that person the cammander of our army, whom Krishn points out to us, whether he be skilful or not in the art of war and whether he be a child, youth or an old man For Krishn has power overour victory or defeat He is the cause of life, kingdom, being, death, happiness and misery of all. He is the protector, maker and accomplisher of all desires and therefore we shall accept him as the commander in chief our of army, whom Krishn nominates " Having heard this, Shree Krishn the best of speakers said " The night has now come Make the commander in-chief whomsoever you will so that under him we may go out early in the morning to the field of battle In the mean time, let all the soldiers look to their weapons and perform propitious acts " 38. Vaishampayan said that on hearing the words of Yudhishthir, Shree Krishn looked towards Arjun and then said, I would like any of the warriors you have named to be the commander of the army 40

समर्था हि तव शत्रून् प्रबाधितुम् । इन्द्रस्यापि भयं ह्येते जनयेयुर्महाहवे ॥ ४१ ॥ किं पुनर्धार्त्तराष्ट्राणां लुब्धानां पापचेतसाम् । मयापिहि महाराज्ञो त्वत् प्रियार्थं महाहवे ॥ ४२ ॥ कृतो यत्नो महांस्तत्र शमः स्यादिति भारत । धर्मस्य गतमानृण्यं न स्म वाच्या विवक्षताम् ॥ ४३ ॥ कृतास्त्रं मन्यते बाल आत्मानमविचक्षण । धार्त्तराष्ट्रो बलस्थञ्च पश्यत्यात्मानमातुर ॥ ४४ ॥ युज्यतां वाहिनी साधु वधसाध्या हि मे मताः । न धार्त्तराष्ट्राः शक्ष्यन्ति स्थातुं दृष्ट्वा धनञ्जयम् ॥ ४५ ॥ भीमसेनञ्च सङ्क्रुद्धं यमौ चापि यमोपमौ । युयुधानद्वितीयञ्च धृष्टद्युम्नममर्षणम् ॥४६॥ अभिमन्युं द्रौपदेयान् विराटद्रुपदावपि । अक्षौहिणीपतींश्चान्यान्नरेन्द्रान् भीमविक्र-

ये सब लोग तुम्हारे शत्रुओं को बाधित करने में समर्थ हैं, जो ये लोग महारण में पड़ें तो मनुष्य की क्या गणना इन्द्रको भी भय उत्पन्न करादें । ४१ । फिर मनुष्यों में भी इन पापी लोभी धृतराष्ट्र के पुत्रादिकों की कौन गणना है वे तो अपने पापही से मरे बैठे हैं हमने भी आपलोगों के प्रियके लिये, बड़ाभारी यत्न किया जिसमें शान्त होजाय युद्ध नहो अब हम धर्म से उऋण होगये जिसमें कहनेवाले हमको न कहसकें कि कृष्णने भी नहीं रोका सब लड़मरे, । ४३ । देखो मूर्ख अनारी दुर्योधन ऐसा आतुर है कि अपनी सेनामें व तुम्हारी सेना में सबसे अधिक योधा अपनेको मानता है । ४४ । इससे अब सेना तैयारहो हमारे मतसे सब धृतराष्ट्र के पक्षी वधही करनेके योग्यहैं, अकेले अर्जुनहीं को देख कोई दुर्योधनादि समर में खड़े न होसकेंगे । ४५ । फिर जब भीमसेन क्रोधकर समर में खड़ेहोजायँगे तो कौन उधर ना सामने खड़ाहोगा फिर यमराज के समान महान् नकुल सहदेव, फिर सात्यकि और असहनशील धृष्टद्युम्न, जब खड़ेहोंगे, तो क्याबातहै । ४६ । फिर अभिमन्यु व सब पांच द्रौपदीजी के पुत्र,

Each of them is strong enough to destroy your enemies and can terrify even Indra in battle, nothing to say of men. The sinful and avaricous sons of Dhritrashtra are not to be reckoned even among men. Their sins are enough to destroy them. I tried much for your sake to secure peace and have now done my duty so that people may not say that I did not try to subdue the quarrel and the consequent bloodshed. Duryodhan is foolish enough to think himself the best of the warriors of his own army as well as that of yours. Let us arrange the army. All the partisans of Dhritrashtra are in my opinion worthy to be killed. Duryodhan and his warriors will not stay in battle at the mere sight of Arjan. Who, on their side, will withstand Bhim on standing to fight in anger? Then there are great Nakul and Sahadev like Yamraj, Satyaki and unbearable

मान् ॥ ४७ ॥ सात्त्वत्त्वलमस्माकं दुष्प्रधर्षं दुरासदम् । धार्त्तराष्ट्रबलं संख्येहनिष्य तिनसंशयः ॥ ४८ ॥ धृष्टद्युम्नमहं मन्ये सेनापतिमरिन्दम । वैशम्पायन उवाच । एवमुक्ते तु कृष्णेन सम्प्राहृष्यन्नरोत्तमाः ४९ तेषां प्रहृष्टमनसां नादः समभवन्महान् । योग इत्यथसैन्यानां त्वरतां सम्प्रधावताम् ॥ ५० ॥ हयवारणशब्दाश्च नेमिघोषाश्चसर्वतः । शंखदुन्दुभिघोषाश्च तुमुलाः सर्वतोभवन् ॥ ५१ ॥ तदुग्रं सागरनिभं क्षुब्धं बलसमागमम् । रथपत्तिगजोदग्रं महोर्मिभिरिवाकुलम् ॥ ५२ ॥ धावतामाह्वयानानां तनुत्राणिचबध्नताम् । प्रयास्यतांपाण्डवानां ससैन्यानांसमन्ततः ॥५३॥

विराट व राजाद्रुपद, इनके विशेष औरभी अक्षौहिणियों के पति जो बड़े भयङ्कर विक्रम राजालोग हैं । ४७ । प्रयोजन कि हमारी सबसेना जितनी है सब चुनीहुई सात्त्वती है इस से दुर्योधनादिकों की सेनाको मारही डालेगी इसमेंभी संदेह नहीं । ४८ । परन्तु हे मधुसूदन हमभी धृष्टद्युम्नही को सेनापति बनाना अच्छा मानतेहैं । ४९ । वैशम्पायनजी बोले कि जब श्रीकृष्णचन्द्रजी ने ऐसा कहा तो सब राजा लोग बड़े प्रसन्न हुये व हर्षपूर्वक उन लोगों का बड़ाभारी नाद हुआ । ५० । और सब लोग युद्ध करनेके लिये तैयारहोने लगे लोग इधर उधर दौड़२ अपनी अपनी युद्धकी सामग्री इकट्ठी करने लगे, घोड़े हाथी सब ठौर ठौर हिनाहिनाने चिग्धार मारने लगे, रथों का शब्द सब ओर से होनेलगा । ५१ । शंख नगारे आदि सब ओरसे बाजने लगे जिनका बड़ा रणसंकुल शब्द हुआ, वह सेनाका समागम उफलाये हुये चन्द्रायमान समुद्रके साथ समागम होने के समान हुआ । ५२ । जोकि रथ पैदल हाथियों के इधर उधर चलने से बड़ाभारी लहरियों से संयुक्त था व इधर उधर दौड़ते हुये कवच बखतरादि बांधते हुये वीरोंसे

Dhrishtadyumn, Abhimanyu and the five sons of Draupadi, kings Virat and Drupad and many others, leaders of great armies, the dreadful kings. In short, all our army consists of chosen and well-tried men who are sure to destroy the army of Duryodhan without doubt. But I, too, would like to have Dhrishtadyum for our leader." *Vaishampayan said that all the kings were much pleased to hear* the words of Shree Krishn and made a loud noise. 50. All men began making preparations for war and bustled to collect the implements of war. Elephants and horses began to shriek and neigh, the rumbling of chariot wheels was heard on all sides and conchs and drums sounded war music in loud tones. The noise at the gathering of the army was like that of the ocean in a storm. The chariots foot soldiers and elephants in motion looked like large waves

गङ्गेव पूर्णा दुर्धर्षा समदृश्यत वाहिनी । अग्रानीके भीमसेनो माद्रीपुत्रौ च दंशितौ ॥ ५४ ॥ सौभद्रो द्रौपदेयाश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । प्रभद्रकाश्च पञ्चाला भीमसेन मुखाययुः ॥ ५५ ॥ ततः शब्दः समभवत् समुद्रस्येव पर्वणि । हृष्टानां सम्प्रयातानां घोषोदिव मिवास्पृशत् ॥ ५६ ॥ प्रहृष्टदंशिता योधाः परानीक विदारणाः । तेषां मध्ये ययौ राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ ५७ ॥ शकटापणवेशाश्च यानयुग्यञ्च सर्वशः । कोशंयन्त्रायुधञ्चैव ये च वैद्याश्चिकित्सकाः ॥ ५८ ॥ फल्गुयच्च बलं किञ्चिद्यच्चापि कृशदुर्बलम् । तत् संगृह्य ययौ राजा ये चापि परिचारकाः ॥ ५९ ॥ उपप्लव्येतु

छोटी लहरोंसे संयुक्त था । ५३ । इस प्रकार तैयार हो चलेहुये पाण्डवोंकी सेना श्रावण भादोंकी गंगाजी के समान पूर्ण हो बड़े वेगसे चली । ५४ । उसमें आगे २ भीमसेन व नकुल सहदेव चले, फिर अभिमन्यु व द्रौपदीजीके सब पुत्र फिर महारथ धृष्टद्युम्न व पांचाल देशके प्रभद्रक नाम राजकुमार महसब भीमसेनादिकी सेना बड़े धूम धाम से चली। ५५। उससमय मारेहर्षके चलेजाते वीरोंका शब्द पूर्णमासी के समुद्रही का सा हुआ जानों स्वर्गहीतक पहुँचगयाथा । ५६ । सबयोधा महाप्रसन्न व सब कवचादि धारण किये शत्रुकी सेनाके नाशकरनेमें उद्यत, इन सब वीरोंके बीचमें महाराज कुंती जीके पुत्र युधिष्ठिरजी चले । ५७ । सेनाके साथहीं छकड़ोंपर लदीहुई बाजारकी सब सामग्री वेश्याओंके तम्बू कनात बहलों छकड़ोंपर लदे, सब प्रकारके वाहन, सवारी लेचलनेवाले अलग, भारलेजानेवाले अलग, खजाना लदाहुआ अलग, गोला आदि चलानेके यंत्रनाळ आदि, घावआदि सीनेवाले वैद्यलोग सहस्रों अलग । ५८ । जो सेना छटी थकी बगैर दुर्बल थी व अन्य कहार नापितादि बहुत से सेवक इन सबों को स्थानही पर रहने दिया । ५९ । उपप्लव्य स्थानमें जहां रहते थे जो

---

and the parties of soldiers, moving to and fro, in panoplies, looked like the smaller waves. The armies of the Pandavas moved in all its glory like the overflowing Ganges in the rains. Bhimsen, Nakul and Sahadev led the way and were followed by Abhimanyu and all the sons of Draupadi, brave Dhrishtadyumn, and prince Bhadrak of Panchal. The noise of the joyful warriors was like that of the Ocean on the day of the full moon and reached as it were to the sky. All the warriors were full of joy, armed with arms and armour and ready to destroy the army of the enemy. King Yudhishthir, the son of Kunti was in the middle of all these warriors. Following the army were the carts laden with the necessities, tents of courtesans and other things. Conveyances of all sorts, together with drivers, coolies, treasure carts, machines for

पाञ्चाली द्रौपदी सत्यवादिनी। सह स्त्रीभिर्निववृते दासीदाससमावृता ॥ ६० ॥ कृत्वा मूलप्रतीकारं गुल्मैः स्थावरजङ्गमैः । स्कन्धावारेण महता प्रययुः पाण्डुनन्दनाः ॥६१॥ ददतो गा हिरण्यञ्च ब्राह्मणैरभिसंवृताः । स्तूयमाना ययुराजन् रथैर्मणिविभूषितैः ॥ ६२ ॥ केकया धृष्टकेतुश्च पुत्रः काश्यस्य चाभिभुः । श्रेणिमान्वसुदानश्च शिखण्डी चापराजितः ॥ ६३ ॥ हृष्टास्तुष्टाः कवचिनः सशस्त्राः समलङ्कृताः । राजानमन्वयुः सर्वे परिवार्य युधिष्ठिरम् ॥ ६४ ॥ जघनार्धे विराटश्च याज्ञसेनिश्च सोमकिः । सुधर्मा कुन्तिभोजश्च धृष्टद्युम्नस्य चात्मजाः ॥ ६५ ॥ रथायुतानि चत्वारि हया

विराटनगरके समीप ही सब दास दासियों समेत सत्यवादिनी द्रौपदीजी रहगई। ६०। वहां स्त्री धनादि की रक्षा अच्छेप्रकार कराय वहां भी कुछ सेना दूर २ रक्षा के लिये नियुक्तकर बड़ीभारी दलबादल सेनाले पाण्डवलोगचले । ६१ । चलने के समयभी ब्राह्मणों को बहुतसा धन सोना चांदीदे धेनु आदिदे, व उनसे आशीर्वाद ले बहुतोंको संगलेकर, लोगोंसे मार्ग में स्तुति पातेहुये मणियों से भूषित रथोंपर चढ सब पाण्डवादि वीर चले । ६२ । केकयदेशके राजा पांचभाई द्रुपदजी के पुत्र धृष्टद्युम्न काश्य भूपति के पुत्र श्रेणिमान, वसुदान व अपराजित शिखण्डी । ६३ । ये सब हृष्ट सन्तुष्ट कवच बखतर धारण किये अस्त्र शस्त्र लिये वस्त्र भूषणादि धारण किये, राजा युधिष्ठिरजी को चारोंओरसे घेरे बीच में किये चले । ६४ । व पीछे की आधी सेनामें राजा विराट द्रुपद के अन्य पुत्र, सौमदत्ति, सुधर्मा, कुन्तिभोज, व धृष्टद्युम्न के सब पुत्र चले । ६५ । चालीस सहस्र रथ दो

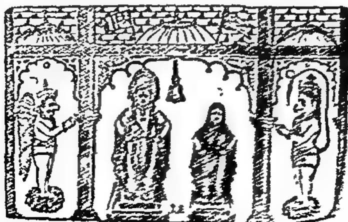
hurling balls, surgeons by hundreds and thousands, weak and infirm soldiers, attendants, barbers and other servants followed. Draupadi with male and female servants stayed at Upaplavya 60. The Pandavas left the women and treasure in the protection of a small army and having stationed some soldiers in the way, they led the great army like a flight of clouds At the time of departure they distributed much gold and silver and many cows among the Brahmans. Having received the blessings of Brahmans and having taken many a Brahman with them, the Pandavas mounted their gem bedecked chariots, receiving praises in the way. The princes of Kaikaya, five brothers, Dhrishatadyumn the son of Drupad, Shreniman the son of the raja of kashi, Vasudan and unconquerable Shikhandi, all these, with hearts full of joy and with coats of mail, weapons, missiles, fine clothes and ornaments over their persons,

पञ्चगुणास्तथा । पत्तिसैन्यं दशगुणं गजानामयुतानि षट् ॥ ६६ ॥ अनाधृष्टिश्चे कितानो धृष्टकेतुश्च सात्यकिः । परिवार्य ययुः सर्वे वासुदेवधनञ्जयौ ॥ ६७ ॥ आसाद्य तु कुरुक्षेत्रं व्यूढानीकाः प्रहारिणः । पाण्डवाः समदृश्यन्त नर्दन्तो वृषभा इव ॥ ६८ ॥ तेवगाह्य कुरुक्षेत्रं शङ्खान् दध्मुररिन्दमाः । तथैव दध्मतुः शंखं वासुदेवधनञ्जयौ ॥ ६९ ॥ पाञ्चजन्यस्य निर्घोषं विस्फूर्जितमिवाशनेः । निशम्य सर्वसैन्यानि समहृष्यन्त सर्वशः ॥ ७० ॥ शङ्खदुन्दुभिसंसृष्टः सिंहनादस्तरस्विनाम् । पृथिवीमान्तरिक्षञ्च सागरांश्चान्वनादयत् ॥ ७१ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि कुरुक्षेत्रप्रवेशे एकपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५१ ॥

लक्ष घोड़े, और बीस लक्ष पैदल उनके साथथे । ६६ । अनाधृष्टि, सात्यकि, धृष्टकेतु, चेकितान, वासुदेव, अर्जुन से रक्षित सेना सहित सब पांडव कुरुक्षेत्र पहुँचे और वासुदेव और अर्जुन ने शंख बजाये । ६९ । पांचजन्य शंखकी ध्वनि सुन सब कौरव राज समाज उस वज्र तुल्य शब्द को सुनकर रोमांचित होगये और वीरों की दुन्दुभिकी ध्वनि सुनकर अन्तरिक्ष और सागर सहित पृथ्वी पूरित होगई ॥ ७१ ॥

surrounded king Yudhishthir on all sides. In the rear half of the army were king Virat, other sons of Drupad, Saumdatti, Susharma, Kuntibhoj and all the sons of Dhrishtadyumn The number of chariots was forty thousand, of horses two hundred thousands and of foot soldiers two millions. Anadhrishti Satyaki, Dhrishtaketu, Chekitan, Vasudev and Arjun led the army of the Pandavas to Kurukshetra where Vasudev and Arjun sounded their conchs. On hearing the peal of the conch named Panchjanya, like the fall of Vajra, the hair of the Kauravas and their soldiers stood on end. The bugles of the warriors filled the earth, air and ocean. 71.



शुचिजलांशर्करापङ्कवर्जिताम् ॥७॥खानयामासपरिखां केशवस्तत्रभारत । गुप्त्यर्थमपि चादिश्य वलं तत्र न्यवेशयत् ॥ ८ ॥ विधिर्यः शिविरस्यासीत् पांडवानां महात्मनाम् । तद्विधानि नरेन्द्राणां कारयामास केशवः ॥ ९ ॥ प्रभूततरकाष्ठानि दुराधर्षतराणिच । भक्ष्यभोज्यान्नपानानि शतशोथसहस्रशः ॥ १० ॥ शिविराणिमहार्हाणि राज्ञांतत्र पृथक् पृथक् । विमानानीव राजेन्द्र निविष्टानि महीतले ॥ ११ ॥ तत्रासन् शिल्पिनः प्राज्ञाः शतशो दत्तवेतनाः । सर्वोपकरणैर्युक्ता वैद्याः शास्त्रविशारदाः ॥ १२ ॥ ज्याधनुर्वर्म-

वती नदीके तीरपै वनायागया जिसमें सुन्दर घाट वनेथे कहीं दलदलका नाम न था जल व ।स्वच्छ वहताथा कांकर सिटकी कीचड़का नामही नहीं सुनाई देताथा । ७ । सेनानिवास की चारों ओर केशवजीने वड़ाभारी पनियांसोते खावां खुद वाया जिसमें रक्षा रहे उसीके वीचमें सव सैन्य टिकाईगई । ८ । जिस प्रकारकी विधि पांडवोंके यहां सेना निवेशकीथी व जैसी और सव राजाओंके यहांथी उसीरीतिसे केशवजी ने सेनानिवेश कराया । ९ । सव सेनानिवेशोंके किनारे २ वहुत वड़े २ काठोंके ढेर लगादियेगये जिनके मारे फाटककी ओर विनाये दूसरे शिविरका मनुष्य भीतर न जासके सवों में जितने खाने पीने आदिके पदार्थ आवश्यकथे उन से सहस्र २ गुण अधिक स्थापित करादिये ।१०। इस प्रकार वड़े खावां के भीतरही सव राजाओं के शिविर सव वस्तुओंसे भरेपुरे अलग२ वनवा दिये जानों अलग २ विमानों केही समान दिखाई देतेथे । ११ । व क्यों न ऐसी शीघ्रता के साथ सेनानिवेश वने क्योंकि सैकड़ों हजारों राजकारीगर वनानेवाले थे जिनकी मजूरी पहिलेही चुकादी गईथी, व सव सामग्री उन के पास विद्यमान थी इसीप्रकार जर्राह वैद्यभी वहुतसे थे जो प्रत्येक शिविरके लिये अलग२नियुक्त

with beautiful watering places and free from swamp. The water was clear, having no gravel, mud and other impurities in it. Keshav got a deep ditch of water excavated all round the camp for the sake of protection of the army which was put up there. The camp was made according to the fashion which then prevailed among the Pandavas and other kings. Heaps of firewood were piled-up all round the camp and there was no room left for intruders to come in except by the gate. Articles of food and drink were kept there in great abundance. 10. In the midst of the camp the residences of the kings, full of provisions of all sorts, looked like celestial cars. There is no wonder that the camping ground was prepared in so short a time, because thousands of coolies were employed at the work. Their wages were given them in advance and they had everything

वैशम्पायन उवाच । ततोदेशे समे स्निग्धे प्रभूतयवसेन्धने । निवेशयामास तदा सेनांराजा युधिष्ठिरः ॥१॥ परिहृत्य श्मशानानि देवतायतनानिच । आश्रमांश्च महर्षीणां तीर्थान्यायतनानि च ॥ २ ॥ मधुरानूषरे देशे शुचौ पुण्ये महामतिः । निवेशं कारयामास कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः ॥३॥ ततश्चपुनरुत्थाय सुखीविश्रान्तवाहनः । प्रययौ पृथिवीपालैर्वृतःशतसहस्रशः ॥४॥ विद्राव्यशतशोगुल्मान् धार्त्तराष्ट्रस्यसैनिकान् । पर्य्यक्रामत् समन्ताच्च पार्थेनसहकेशवः॥५॥शिविरंमापयामास धृष्टद्युम्नश्चपार्षतः । सात्यकिश्चरथोदारो युयुधानश्च वीर्य्यवान् ॥६॥ आसाद्य सरितं पुण्यां कुरुक्षेत्रे हिरण्वतीम् । सूपतीर्थां

अध्याय ॥ १५२ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि तिसके पीछे राजायुधिष्ठिरजी ने कुरुक्षेत्र में जहां सम चीकनी भूमिथी व घास भूसा ईंधन जल आदि निकट मिलसक्ता था वहां अपनी सेना टिकाई ।१। व जहां श्मशानभूमि, देवताओंके स्थान, महर्षियोंके आश्रम, व तीर्थस्थान थे उन स्थानों को छोड़दिया वहां नहीं टिकाया । २ । जहांकी मिट्टी मीठीथी ऊसर भूमि न थी पवित्र व पुण्यस्थान था वहां उन महामति युधिष्ठिरजीने सेना निवासस्थान बनवाया । ३ । तिसके पीछे जब प्रथम सेना उतरी घोड़े हाथी आदि वाहन सुस्ताळिये तो फिर उठकर सैकड़ों हजारों राजाओंके संग सब पासके स्थान देखनेलगे । ४ । बहुत ठिकाने पहलेसे दुर्योधनकी सेना पड़चुकीथी उसको मारपीट भगाय अर्जुन व कृष्णचन्द्रजी जहांतक सेनाकी छावनी बनानी थी रथपर चढ़ घूम आये । ५ । धृष्टद्युम्न सात्यकि व युयुधानादिकों ने अपने बूते सबसेना निवासकीभूमि नापडारी कि यहां से यहांतक घोड़े हाथी आदि रहैं । ६ । यह सेना निवास कुरुक्षेत्रमें हिरण्य-

CHAPTER CLII

Vaishampayan said that after this, king Yudhishthir selected in Kurukshetra a level ground where grass, fodder, firewood and water were in abundance to put up *their army, avoiding carefully the* cremation ground, temples, cottages of ascetics and other places, where the ground did not contain salt and the place was free from dirt and other impurities. When the soldiers had put up and the elephants, horses and other beasts had taken rest, the Pandavas and other kings inspected the neighbouring plain. Many places already occupied by Duryodhan's army were cleared of the enemy by Shree Krishn and Arjun as far as they wished to occupy it for their own army. Dhrishtadyumn, Satyaki and Yuyudhan measured all the camping ground where horses and elephants were to be put up. Their camp lay in Kurukshetra at the bank of the Hiranyavati

शुचिजलाशर्करापङ्कवर्जिताम् ॥७॥खानयामासपरिखां केशवस्तत्रभारत । गुप्त्यर्थमपि चादिश्य बलं तत्र न्यवेशयत् ॥ ८ ॥ विधर्यं शिविरस्यासीत् पाण्डवानां महात्मनाम् । तद्विधानि नरेन्द्राणां कारयामास केशवः ॥ ९ ॥ प्रभूततरकाष्ठानि दुराधर्षतराणि च । भक्ष्यभोज्यान्नपानानि शतशोऽथसहस्रशः ॥ १० ॥ शिविराणिमहार्हाणि राज्ञांतत्र पृथक् पृथक् । विमानानीव राजेन्द्र निविष्टानि महीतले ॥ ११ ॥ तत्रासन् शिल्पिनः प्राज्ञाः शतशो दत्तवेतनाः । सर्वोपकरणैर्युक्ता वैद्याः शास्त्रविशारदाः ॥ १२ ॥ ज्याधनुर्वर्म

वती नदी के तीरपै बनायागया जिसमें सुन्दर घाट बनेथे कहीं दलदलका नाम न था जल व.।स्वच्छ बहताथा कांकर सिटकी कीचड़का नामही नहीं सुनाई देताथा । ७ । सेनानिवास की चारों ओर केशवजीने बड़ाभारी पनिपासोते खाईं खुदवाया जिसमें रक्षा रहे उसीके बीचमें सब सैन्य टिकाईगई । ८ । जिस प्रकारकी विधि पांडवोंके यहां सेना निवेशकीथी व जैसी और सब राजाओंके यहाथी उसीरीतिसे केशवजी ने सेनानिवेश कराया । ९ । सब सेनानिवेशोंके किनारे २ बहुत बड़े २ काठोंके ढेर लगादियेगये जिनके मारे फाटककी ओर बिनाआये दूसरे शिविरका मनुष्य भीतर न जासके सबों में जितने खान पीने आदिके पदार्थ आवश्यकपै उन से सहस्र २ गुण अधिक स्थापित करादिये ।१०। इस प्रकार बड़े खाइ के भीतरही सब राजाओं के शिविर सब वस्तुओंसे भरेपुरे अलग२ बनवा दिये जानों अलग २ विमानों केही समान दिखाई देतेथे । ११ । व क्यों न ऐसी शीघ्रता के साथ सेनानिवेश बनें क्योंकि सैकड़ों हजारों राज कारीगर बनानेवाले थे जिनकी मजूरी पहिलेही चुकादी गईथी, व सब सामग्री उन के पास विद्यमान थी इसीप्रकार जर्राह वैद्यभी बहुतसे थे जो प्रत्येक शिविरके लिये अलगरनियुक्त

---

with beautiful watering places and free from swamp. The water was clear, having no gravel, mud and other impurities in it. Keshav got a deep ditch of water excavated all round the camp for the sake of protection of the army which was put up there. The camp was made according to the fashion which then prevailed among the Pandavas and other kings Heaps of firewood were piled up all round the camp and there was no room left for intruders to come in except by the gate. Articles of food and drink were kept there in great abundance. 10 In the midst of the camp the residences of the kings, full of provisions of all sorts, looked like celestial cars. There is no wonder that the camping ground was prepared in so short a time, because thousands of coolies were employed at the work. Their wages were given them in advance and they had everything

शस्त्राणां तथैव मधुसर्पिषोः । ससर्ज्जरसपांशूनां राशयः पर्वतोपमाः ॥ १३ ॥ यद्द्रकं सुयवसं तुषाङ्गारसमन्वितम् । शिबिरे शिबिरे राजा सञ्चकार युधिष्ठिरः॥१४॥महायन्त्राणि नाराचास्तोमराणि परश्वधा । धनूंषि कवचादीनि ऋष्टयस्तूणसंयुताः ॥ १५ ॥ गजाः कंटकसन्नाहा लोहवर्मोत्तरच्छदाः । दृश्यन्ते तत्र गिर्य्याभाः सहस्रशतयोधिनः ॥ १६ ॥ निविष्टान् पाण्डवांस्तत्र ज्ञात्वा मित्राणि भारत । अभिसस्रुर्यथादेशं सबलाः सहवाहनाः ॥ १७ ॥ चरितब्रह्मचर्य्यास्ते सोमपा भूरिदक्षिणाः । जयाय पाण्डुपुत्राणां समाजग्मु र्महीक्षितः ॥ ॥१८ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि शिबिरादि निर्माणे द्विपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५२ ॥

थे । १२ । मत्यञ्चा, धनुष, कवच, शस्त्र, मिठाई, घी, राल आदि वस्तुओं के ढेर तो पर्वताकार लगाये गये थे । १३ । राजा युधिष्ठिरजीने बहुतर जल बहुत २ घास भूसा आदि पदार्थ प्रत्येक शिबिर में धरादिया । १४ । महायन्त्र, बड़े २ बाण, तोमर, परश्वध, धन्वा, कवच, अष्टि, तरकस आदि के ढेरकेढेर लगेथे ।१५। हाथी ऐसे कि जिनके ऊपर ऐसी कटीली झूलें पड़ीथीं जिनके स्पर्श मात्र से दूसरे गजों के प्राणही जाते रहें बहुतसे हाथी ऐसे थे कि पर्वताकार दिखाई देते थे । १६ । वहां पांडवों को अपना मित्र जानकर बल वाहन सहित पवित्र हृदयवाले ब्रह्मचारी दानी राजा पांडवों की विजय के अर्थ आये ॥ १८ ॥

---

ready for the work in hand. There were many surgeons and physicians in the camp allotted to every tent. There were bowstrings, bows, coats of mail, weapons, sweetmeats, clarified butter, resin and other things heaped up like hills. Yudhishthir had provided grass, fodder, water and other necessries and got them collected in each tent. Large machines, arrows and other arms and armour were placed separately in heaps. The elephants were provided with trappings having iron thorns over them to wound other elephants coming in contact with them and looked like mountains. And considering the Pandavas to be their friends, there came to help them many kings of pure mind and celibacy with their armies and carriages. 18.



जनमेजय उवाच । युधिष्ठिरं सहानीक सुपार्यान्तंयुयुत्सया । सन्निविष्टं कुरुक्षेत्रे वासुदेवेन पालितम् ॥ १ ॥ विराटद्रुपदाभ्यांच सपुत्राभ्यां समन्वितम् । केकयैर्वृष्णिभिश्चैव पार्थिवैः शतशो वृतम् ॥ २ ॥ महेन्द्रमिवचादित्यै रभिगुप्तंमहारथैः । श्रुत्वा दुर्योधनो राजा किं कार्यं प्रत्यपद्यत ॥ ३ ॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं विस्तरेण महामते । सम्भ्रमे तुमुले तस्मिन् यदासीत् कुरुजाङ्गले ॥ ४ ॥ व्यथयेयुरिमे देवान् सेन्द्रान पिसमागमे । पाण्डवा वासुदेवश्च विराटद्रुपदौ तथा ॥ ५ ॥ धृष्टद्युम्नश्चपाञ्चाल्यः शिखण्डीच महारथः । युधामन्युश्च विक्रान्तो देवैरपि दुरासदः ॥ ६ ॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं विस्तरेण तपोधन । कुरूणां पाण्डवानांच यद्यदासीद्विचेष्टितम् ॥ ७ ॥ वैशम्पायनउवाच । प्रतियातेतु दाशार्हे राजा दुर्य्योधनस्तदा । कर्णं दुःशा-

---

अध्याय ॥ १५३ ॥

इतनी कथासुन जनमेजयजीने वैशम्पायनजी से पूंछा कि राजा दुर्योधन ने युद्ध करनेकी इच्छा से वासुदेवजी से पालित, पुत्रसहित विराट व द्रुपदराज समेत केकयराज वृष्णिवंशियों सहित व औरभी बहुत से राजाओं के साथ राजा युधिष्ठिर जी को सेना सहित कुरुक्षेत्र में आये व वसुओं से सेवित इन्द्र के समान सेवित सुन कौन कार्य किया । ३ । हे तपोधन यह सब हमको विस्तार पूर्वक सुननेकी इच्छा है, उस बड़ेभारी युद्धमें जो कुरुजाङ्गल देश में हुआ हो हम से कहो । ४ । क्योंकि पाण्डव वासुदेव राजा विराट द्रुपद धृष्टद्युम्न धृष्टकेतु शिखण्डी युधामन्यु ये सब बड़े दुरासद थे और समर में जो इन के सामने इन्द्रादि देव भी आयजाते तो उनको भी व्यथित करदेते । ६ । हे तपोधन कौरवों व पाण्डवों का जो २ विचेष्टित हुआहो वह सब हम विस्तारपूर्वक सुना चाहतेहैं । ७ । वैशम्पायन

CHAPTER CLIII

Having heard the above, Janamejaya said to Vaishampayan "What steps had Duryodhan taken on hearing of the arrival of Yudhishthir together with Vasudev, Virat and his sons, the king of Kaikaya, Drupad, the Vrishnis and other kings and of their attendance upon Yudhishthir like that of Vasus on Indra. I wish to hear all about it in detail as well as about the great war which took place at Kuru-jungle. For, the Pandavas, Vasudev, king Virat, Drupad Dhrishtadyumna, Dhrishtaketu, Shikhandi and Yudhamanyu were all very brave people and could defeat Indra and other gods if they faced them in battle. I wish to hear all about the great deeds of the Kauravas and the Pandavas." Vaishampayan said that when Krishn

सान्चेव शकुनिश्चाब्रवीदिदम् ॥ ८ ॥ अकृतेनैव कार्य्येण गत पार्थानधोक्षज । स एनानन्युनाविष्टो ध्रुव धक्ष्यत्यसशयम् ॥ ९ ॥ इष्टो हि वासुदेवस्य पाण्डवैर्मम विग्रह. । भीमसेनार्जुनौ चैव दाशार्हस्य मते स्थितौ ॥ १० ॥ अजात शत्रु रत्यर्थं भीमसेन वशानुग. । निकृतश्च मया पूर्वं सह सर्वै सहोदरै ॥ ११ ॥ विराट द्रुपदौ चैव कृत वैरौ मया सह । तौ च सेना प्रणेतारौ वासुदेव वशानुगौ ॥ १२ ॥ भविता विग्रह सोऽयं तुमुलो लोमहर्षण । तस्मात् साङ्ग्रामिक सर्वं कारयध्वमतन्द्रिता. ॥ १३ ॥ शिविराणि कुरुक्षेत्रे क्रियन्ता वसुधा धिपा । सुपर्याप्ता वकाशानि दुरा देयानि शत्रुभि ॥ १४ ॥ आसन्नजल काष्ठानि शतशोथ सहस्रश । अच्छेद्याहार मार्गाणि वन्योच्छ्रयचितानि

जी बोले कि जब कृष्णचन्द्र जी हस्तिनापुर से चलेगये तो राजा दुर्योधन कर्ण दुश्शासन व शकुनि से यह बोला कि । ८ । कृष्णचन्द्र बिना कार्यही किये पांडवों के समीपको यहांसे चलेगये इस से वे इन कौरवोंको निश्चय है कि भस्मकरेंगे । ९ । क्योंकि वासुदेवको इष्टहै कि पाण्डवों का हमारा विग्रहहो, भीमसेन व अर्जुन ये दोनों वासुदेवही के मतपर स्थितहैं । १० । व युधिष्ठिर भीमसेनही के वशीभूत रहते हैं, और हमने पूर्वसमय में भाइयों समेत उनका निरादर भी बहुत कियाहै । ११ । इसीसे विराट व द्रुपदभी हमारे साथ बैर मानतेहैं, वे दोनों सेनापतिहैं व वासुदेवके वशीभूतहैं । १२ । इस से तुमुल लोमहर्षण बडाभारी यह विग्रह होनेवालाहै इस से सब सग्रामकी सामग्री निरालस होकर करो। १३ । हे राजा लोगो जाय २ कुरुक्षेत्र में अपने २ सैन्य निवासस्थान बनाओ, क्योंकि जितने में हम लोगों की सेना टिक सकेगी उतना अवकाश शत्रु लोग बडे कष्टसे देंगे । १४ । जहां सैकड़ों सहस्रों जलकाठ निकटहों वहां जाय शिविर बनावो मार्ग ऐसे बनावो

---

had gone from Hasthinapur, king Duryodhan, said to Karan, Dushasan and Shakuni, "Krishn has returned unsuccessful to the Pandavas and therefore he is sure to burn down the Kauravas, for he has set his heart to raise a quarrel between us and the Pandavas and Bhimsen and Arjun obey him 10. Yudhishthir is sure to do what Bhimsen will require of him and we have already much insulted him and his brothers. Virat and Drupad too are our enemies. They are the leaders of their armies and obey Krishn's orders A severe fighting is sure to take place and therefore we should collect all materials for war. Prepare your camps, kings, or the enemy will not give us sufficient room to put up Set up your tents where there be abundance of water and wood. Your roads should be made

च ॥ १५ ॥ विविधायुध पूर्णानि पताकाध्वज वन्तिच । समाश्च तेषां पन्थानः क्रियन्तां नगराद्वहिः ॥ १६ ॥ प्रयाणं घुष्यतामद्य श्वोभूत इति माचिरम् । ते तथेति प्रतिज्ञाय श्वो भूते चक्रिरे तथा ॥ १७ ॥ हृष्टरूपा महात्मानो निवासाय महीक्षिताम् । ततस्ते पार्थिवाः सर्वे तच्छ्रुत्वा राजशासनम् ॥ १८ ॥ आसनेभ्यो महार्हेभ्य उदतिष्ठन्नमर्षिताः । बाहून् परिघ सङ्काशान् संस्पृशन्तः शनैः शनैः ॥ १९ ॥ कांचनांगद दीप्तांश्च चन्दनागुरु भूषितान् । उष्णीषाणि नियच्छन्तः पुण्डरीक निभैः करैः । अन्तरीयोत्तरीयाणि भूषणानिच सर्वशः ॥ २० ॥ ते रथान् रथिनः श्रेष्ठा हयांश्च हयकोविदाः । सज्जयन्तिस्म नागांश्च नाग शिक्षास्वनुष्ठिताः ॥ २१ ॥ अथ वर्माणि चित्राणि कांचनानि बहूनिच ।

जिन्हें कोई न रोकसके न तोड़सके और पुष्ट ऊँचे बनाये जावें ।१५। सब शिविरों में विविध प्रकार के आयुध पताका ध्वजादि स्थापित कियेजायँ, व नगर से बाहर सब शिविरों के मार्ग बराबर किये जायँ खाला ऊंचा कहीं न रहे । १६ । प्रातःकाल होतेही यात्रा है यह आजही पुकार दिया जावे विलम्ब नहो, उन लोगों ने अंगीकार कर प्रातःकाल होतेही वैसाही किया । १७ । हर्षितहो राजाओं के निवास के लिये पुकार दिया उस राजाज्ञा को सुन बड़े २ मोल के आसनों पर से उठ खड़े हुये क्योंकि उस बात के असहनशील थे धीरे२ अपने२ परिघाकार बाहु सुहराने लगे । १९ । जिन बाहुओं में चन्दन लगाया व बहूटे बँधे थे, कमलाकार हाथों से फिर अपनी २ पाग सुधारने बांधने लगे, अँगौछा पटुकादि दूसरे वस्त्र व भूषण सब प्रकार के लेने लगे । २० । रथहांकने में जो लोग चतुर थे वे रथ तैयार करने लगे घोड़ों के विषयमें चतुर घोड़ोंकी व हाथियोंकी शिक्षामें चतुर लोग हाथियोंको सजाय २ तैयार करने लगे । २१ । फिर सब लोगों ने चित्र विचित्र सुवर्ण के

---

firm enough to resist attempts of the enemy to destroy them and should be raised higher up. Let there be weapons of sorts, banners and other articles collected in all tents. The ground should be made level outside the city and before setting the tent over it proclaimation should be made to day to the effect that the army will march out tomorrow." The orders of Duryodhan were carried out early the next morning. As soon as the proclamation was heard, the kings stood up from their precious seats and began to rub in great zeal their arms decked with sandal paste and ornaments. They began to smooth their turbans with their hands like the lotus, and put on their clothes and ornaments. 20. Those who were dexterous in driving chariots began to prepare their chariots, those dexterous in horsemanship looked after the horses and the best elephant drivers

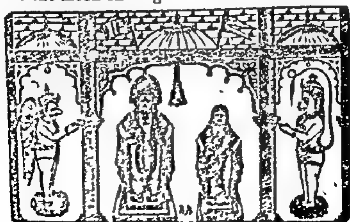
विविधानि च शस्त्राणि चक्रुः सर्वाणि सर्वशः ॥ २२ ॥ पदातयश्च पुरुषाः शस्त्राणि विविधानिच । उपाजह्रुः शरीरेषु हेमचित्राण्य नेकशः ॥ २३ ॥ तदुत्सव इवोदग्र सम्प्रहृष्ट नराश्रुतम् । नगरं धार्त्तराष्ट्रस्य भारतासीत् समाकुलम् ॥ २४ ॥ जनौघ सलिलावर्त्तो रथनागाश्वमीनवान् । शङ्ख दुन्दुभि निर्घोषः कोपसंचय रत्नवान् ॥ २५ ॥ चित्राभरण वर्मोर्मिः शस्त्र निर्मल फेनवान् । प्रासादमालाद्रिवृतो रथ्यापणमहाहृदः ॥ २६ ॥ योध चन्द्रो दयोद्भूतः कुरुराजमहार्णव । व्यदृश्यततदाराजंश्चन्द्रोदय इवोदधिः ॥ २७ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि दुर्योधनसैन्यसज्जकरणे त्रिपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः ॥ १५१ ॥

कवच बहुतसे धारण किये व विविध प्रकार के शस्त्रास्त्र इकट्ठे किये । २२ । वे सब शस्त्र और अस्त्रोंको अपने अंगोंपर धारण करके तैयारहुये जैसे उत्सव में नगर सजायाजाता है वैसेही वह रणक्षेत्र वीरपुरुषोंके समागमसे अच्छा लगताथा २४ उसरणक्षेत्र में जनसमूह लहरें और रथ घोड़े आदि मछली और दुन्दुभी आदि के रत्न सहित समुद्रकी भांति था उसमें विचित्र आभूषण ऊर्मि, निर्मल शस्त्र फेनथा योधाओं का उदय चन्द्रमाकी नाईं उस अपार समुद्र में दिखाई देताथा ॥ २७ ॥

---

prepared elephants. They then put on gloden armours of different sorts and equipped themselves with weapons. They armed themselves with weapons aud missiles of sorts and the battle field looked like a city at the time of festivity. It looked like an ocean having warriors for its waves, elephants and horses for its fish, and musical instruments for its jewels. It had ornaments for its waves and shining weapons for its foam. The Kaurava warriors were the waters of the boundless sea and looked like the moon shining on the vast ocean. 27.



वैशम्पायन उवाच ॥ वासुदेवस्य तद्वाक्यं मनुस्मृत्य युधिष्ठिरः । पुनःपप्रच्छ वार्ष्णेयं कथं मन्दो ब्रवीदिदम् ॥ १ ॥ अस्मिन्नभ्यागते काले किंचनः क्षम नच्युत । कथंच वर्त्तमाना वै स्वधर्मान्नच्यवेमहि ॥ २ ॥ दुर्योधनस्य कर्णस्य शकुनेः सौबलस्यच । वासुदेव मतज्ञोसि ममसभ्रातृकस्यच ॥ ३ ॥ विदुरस्यापि तद्वाक्यं श्रुतं भीष्मस्य चोभयोः । कुन्त्याश्च विपुलप्रज्ञ प्रज्ञा कार्त्स्न्येन ते श्रुता ॥ ४ ॥ सर्वमेतदतिक्रम्य विचार्य च पुनः पुनः । क्षमं यन्नो महाबाहो तद् ब्रवीह्य विचारयन् ॥ ५ ॥ श्रुत्वै तद् धर्मराजस्य धर्मार्थ सहितं वचः । मेघदुन्दुभि निर्घोषः कृष्णोवाक्य मथा ब्रवीत् ॥ ६ ॥ कृष्ण उवाच ॥ उक्तवानस्मि यद्वाक्यं धर्मार्थ सहितं हितम् । नतुतन्निकृतिप्रज्ञे कौरव्ये प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ नच भीष्मस्य दुर्मेधाः शृणोति विदुरस्यवा । मम वा भाषितं किं-

---

अध्याय ॥ १५४ ॥

वैशम्पायजी बोले कि राजा युधिष्ठिरजी ने वासुदेवजी के उस वचन का स्मरण कर फिर पूंछा कि मन्द दुर्योधन ने यह कैसे कहा । १ । हे अच्युत, इस समय में अब हमको क्या करना उचित है, व हमलोग कैसे विद्यमान रहैं जिससे अपने धर्म से न च्युतहों । २ । हे वासुदेव, आप दुर्योधन, कर्ण, शकुनि का मत जानते हो व भाइयों सहित हमारा भी जानतेहो । ३ । आपने विदुर भीष्मपितामह का भी वाक्य सुना व कुन्तीजी के वचन भी अच्छी बुद्धिमत्ता से सुनके विचारा । ४ । अब इन सब वचनोंका अतिक्रमण कर व फिर २ विचार कर, जो हमलोगों को विना विचारे करना हो वह कहो । ५ । कृष्णचन्द्रजी धर्म अर्थ सहित युधिष्ठिरजी का ऐसा वचन सुन मेघ नगाड़े के समान गर्जते हुये बोले । ६ । कि हमने धर्म अर्थ सहित व जो वचन कहा कृतघ्नी दुष्ट दुर्योधन में न टिका । ७ । वह दुर्बुद्धि न तो भीष्मही का वचन सुनै न विदुरहीका व हमारी

CHAPTER CIV

Vaishampayan said that having remembered the words of Shree Krishn, Yudhishthir again said "What did foolish Duryodhan say? Please let us know our duties at this time of trouble. How can we keep up our Dharm? You know the opinion of Duryodhan, Karn and Shakuni as well as of ourselves. You have heard the words of Vidur, Bhishm and Kunti. Be pleased to think over them carefully and advise us what to do without hesitation." Having heard the words of Yudhishthir, Shri Krishn spoke out in a voice like that of thunder or drum. "Sinful and ungrateful Duryodhan gave no heed to my words full of dharm and worldly profits. He had no regard for my words nor for those of Bhishm and Vidur. He does not

चित् सर्वमेवाति वर्त्तते ॥ ८ ॥ नैष कामयते धर्मं नैष कामयते यशः । जितं स मन्यते सर्वं दुरात्मा कर्णं माश्रितः ॥ ९ ॥ बन्धमाज्ञापयामास मम चापि सुयोधनः । नच तं लब्धवान् कामं दुरात्मा पाप निश्चयः ॥१०॥ नच भीष्मो नच द्रोणो युक्तं तत्राहतुर्वचः। सर्वे तमनु वर्त्तन्ते ऋते विदुरमच्युत ॥११॥ शकुनिः सौवलश्चैव कर्णं दुःशासनावपि । त्वय्ययुक्तान्यभाषन्त मूढामूढममर्षणम् ॥ १२ ॥ किंच तेन मयोक्तेन यान्य भाषत कौरवः । संक्षेपेण दुरात्मासौ न युक्त त्वयि वर्त्तते ॥ १३ ॥ पार्थिवेषु न सर्वेषु य इमे तव सैनिकाः । यत् पाप यन्न कल्याणं सर्वं तस्मिन् प्रतिष्ठितम् ॥ १४ ॥ न चापि वय मत्य र्थं परित्यागेन कर्हिचित् । कौरवैः शम मिच्छामस्तत्र युद्ध मनन्तरम् ॥ १५ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ तच्छ्रुत्वापार्थिवाः सर्वे वासुदेवस्य भाषितम् । अब्रुवन्तो मुखं राज्ञः समु

कहने को तो कुछ समझताही नहीं सब का उल्लंघनही करता है । ८ । न तो वह धर्मकी इच्छा करता न यशकी केवल दुरात्मा कर्ण के आश्रितहो सबको पराजितही मानता है । ९ । दुरात्मा पाप निश्चय दुर्योधनने हमको बँधुआ करना चाहाथा परन्तु उस दुष्टका यह काम सिद्धनहींहुआ । १० । भीष्म व द्रोण कोईभी ठीक २ उचित वचन नहीं कहते, विदुरजी को छोड़ सब उसी दुष्ट दुर्योधनही के अनुगामी हैं । ११ । सुवलका पुत्र शकुनि कर्ण दुश्शासन यम ये मूढ़ अमूढ़ आप के विषयमें अयोग्यही वचन कहते हैं । १२ । दुर्योधनने तुम्हारे विषयमें जो२ कहा उसके कहने से क्या है संक्षेप से यहबात कहीजाती है कि वह दुष्टात्मा तुम्हारे विषयमें उचित वर्ताव नहीं वर्तता । १३ । ये राजा लोग जो तुम्हारे यहां सैनिक हैं इनमें न पाप है न अकल्याण परन्तु उस दुष्टमें पाप अकल्याण सब टिके हैं । १४ । हमतो राज्यका परित्याग करके कभी भी कौरवों के साथ मेल नहीं चाहते व वह राज्य देना चाहताही नहीं तो अब युद्ध को करनाहीपरा यह कहा वचसक्ताहै ।१५। वैशम्पायनजी बोले कि सब राजालोग कृष्णचन्द्रजीके वचन सुन कुछ न बोले

---

care for dharm or fame, but thinks all others vanquished by the hand of wicked Karan. Duryodhan was wicked and sinful enough to think of capturing me but was not successful in his attempt. 10. Bhishm and Drona donot perform their duty and all, except Vidur, are partisans of Duryodhan. Shakuni the son of Suval, Karan and Dushasan speak ill of you. I need not repeat all the words of Duryodhan; it is enough to say that he speaks ill of you. Your warriors are free from sin and infamy, but Duryodhan has all these defects in him. We donot like to make peace with the Kauravas by renouncing the kingdom and shall have to fight for it." Vaishampayan said that all

देक्षन्त भारत ॥१६। युधिष्ठिरस्त्वभिप्राय मभिलक्ष्य महीक्षिताम् । योगमाज्ञापयामास भीमार्जुन यमै सह ॥ १७ ॥ तत किलकिलाभूत मनीक पाण्डवस्यह । आज्ञापिते तदा योगे रामहृष्यन्त सैनका ॥ १८ ॥ अवध्याना वध पश्यन् धर्मराजो युधिष्ठिर । नि श्वसन् भीमसेनञ्च विजयचेदमब्रवीत् ॥ १९ ॥ यदर्थं वनवासश्च प्राप्त दुःखञ्च यन् मया । सोय मस्मानु पैत्येव परानर्थ प्रयत्नत ॥ २० ॥ तस्मिन् यत्न कृतोऽस्माभि रनो हीन प्रयत्नत । अकृतेतु प्रयत्नेऽस्मा नुपावृत्त कलिर्महान् ॥ २१ ॥ कथम्ह्य वध्यै सग्राम कार्य सह भविष्यति । कथ हत्वा गुरून् वृद्धान् विजयो नो भविष्यति ॥ २२ ॥ तच्छ्

राजा युधिष्ठिर जी के मुखकी ओर देखने लगे । १६ । तब महाराज युधिष्ठिरजी ने सबराजाओंका अभिप्राय जान कि सब लड़ने पर उद्यतहैं इस से आज्ञादी कि अच्छा भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव के सग आप लोग भी युद्ध करनेका उद्योग करें । १७ । जब युद्धोद्योग करनेकी आज्ञा युधिष्ठिरजीने दी कि पाण्डवोंकी सेना में सब किलकिला शब्द हुआ व सैनिक लोग हर्षित हुये । १८ । परन्तु राजा युधिष्ठिरजी अवध्य भीष्मपितामह द्रोणाचार्यादिकों का वध देख ऊंचीसासें ले भीमसेन व अर्जुनसे यह बोले ।१९। कि जिसके न होनके अर्थ वनवास लिया गया जिन में हमने महादुःख पाया वह कुलक्षयका अनर्थ जबरदस्ती हम लोगों को प्राप्त हुआ । २० । इसी कुलक्षय के निवृत्त होनेके लिये हमने भीमसेन को जुआ खेलने के समय में रोका नहीं तो ये उसी समय सबको मार डालते पर वह हमारा कार्य व्यर्थ हुआ, क्योंकि उस यत्नके करने पर भी हम लोगों को फिर वही युद्ध करना पड़ा जिस में कुल का नाश होगा । २१ । अब हम यह कहतेहैं कि अवध्य श्रेष्ठ भीष्म द्रोणादिकों के सग कैसे युद्ध होगा व गुरुओं वृद्धों को मार

---

the kings remained silent on hearing the words of Krishn and looked at the face of Yudhisthir, who knowing their eagerness for fighting, allowed them to join Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev in the management of war At the permission given by Yudhishthir, the Pandava warriors raised a cry of joy. But foreseeing the slaughter of Bhishm and Dronacharya, Yudhishthir heaved deep sighs and said to Bhim and Arjun, " The destruction of the family, to avoid which we suffered the pangs of exile has been forced on us 20. I checked Bhimsen from shedding the blood of the family at the end of gambling, but all my efforts were useless, for we have been dragged into war and bloodshed which will result in the destruction of our fam-
How shall we fight against Bhishm and Dronacharya who are

त्वा धर्मराजस्य सव्यसाची परन्तपः । यदुक्तं वासुदेवेन श्रावयामास तद्वचः ॥ २३ ॥ उक्तवान् देवकी पुत्र. कुन्त्याश्च विदुरस्यच । वचनं तत्त्वयाराजन् निखिलेनावधारितम् ॥ २४ ॥ नच तौ वक्ष्यतोऽधर्म मिति मे नैष्ठिकी मतिः । नापि युक्तंच कौन्तेय निवर्त्तितु मयुध्यतः ॥ २५ ॥ तच्छ्रुत्वावासुदेवोपि सव्यसाचं वचस्तदा । स्मयमानो ब्रवीद्वाक्यं पार्थमेव मितिब्रुवन् ॥ २६ ॥ ततस्ते धृतसंकल्पा युद्धाय सहसैनिकाः । पाण्डवेयामहाराज तां रात्रिं सुखमावसन् ॥ २७ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि युधिष्ठिरार्जुनसंवादे चतुःपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५४ ॥

वैशम्पायन उवाच । व्युष्टायां वै राजन्यां हि राजा दुर्योधनस्ततः । व्यभजत्तान्यनीकानि दश चैकञ्च भारत ॥ १ ॥ नरहस्तिरथाश्वानां सारं मध्यञ्च फल्गु च । सर्वेष्वे तेष्वनीकेषु सन्दिदेश नराधिपः ॥ २ ॥ सानुकर्षाः सतूणीराः सवरूथाः सतोमराः ।

हमलोगोंकी विजय कैसे होगी ।२२। मधुसूदन अर्जुनने युधिष्ठिरजीका वचन सुन, कृष्णचन्द्रजीने जो कहाथा वह वचन सुनाया । २३ । जो उन्होंने विदुर और पृथा से कहाथा, पृथा और विदुर नेभी यह कहाथा कि बिना युद्धहुये अब काम नहीं चलेगा अर्जुनके वचन सुनकर कृपानिधान हरिने कहा कि, अर्जुन जो कहते हैं ठीक है यह सुनकर पांडवों ने लड़ाई का विचार निश्चयकरके वह रात्रि सुखयुक्त व्यतीत की ॥ २७ ॥

अध्याय ॥ १५५ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि जब रात्रि बीतगई तो राजा दुर्योधन ने अपनी ग्यारह अक्षौहिणी सेना का विभाग करदिया । १ । मनुष्य हाथी रथ घोड़ों का विभाग ऐसा किया कि इतने आगे चलें इतने मध्यमें इतने पीछे २ यह सब सैन्योंमें किया ।२। जितने रथ उनकी सेनाओंमें थे, सब में मजबूतीके लिये नीचे दोर लकड़ियां

---

of our respect? How shall we be able to conquer them?" On hearing this, Arjun the destroyer of enemies, quoted the words of Shree Krishn which the latter had said to Vidur and Kunti and on hearing which Vidur and Kunti had said that the war was unavoidable. Shri Krishn seconded Arjun's suggestions and having resolved on fighting, the Pandavas passed a happy night there. 27.

CHAPTER CLV

Vaishampayan said that at the close of the night Duryodhan divided his eleven akshauhinis of army and fixed the positions of men, elephants and horses. All the chariots had two sticks tied below for the sake of security; each chariot was provided with a large

सोपासङ्गाः सद्दाकीकाः सनिषङ्गाः सहर्ष्टयः ॥ ३ ॥ सध्वजाः सपताकाश्च सश रासनतोमराः । रज्जुभिश्च विचित्राभिः सपाशाः सपरिच्छदाः ॥ ४ ॥ सकचग्रह विक्षेपाः सतैलगुडवालुकाः । आशीविषघटाः सर्वे ससर्जरसपांसवः ॥ ५ ॥ सघण्टफलकाः सर्वे सायोगुडजलोपलाः । सशालभिन्दिपालश्च समधूच्छिष्टमुद्गराः ॥ ६ ॥ सकाण्डदण्डकाः सर्वे ससीरविषतोमराः । सशूर्पपिटकाः सर्वे सदात्रांकुशतोमराः ॥ ७ ॥ सकीलकवचाः सर्वे याशीवृताद्दनान्विताः । व्याघ्रचर्मपरी

और बँधीथीं, सब में रथ के बाहर बाण धरने को एक एक बड़ाभारी तरकस बँधाथा, गुम्मज सबों में था, भाला सबपर धरे थे, व्याघ्रादि चर्मसे बहार सबमें बढ़ाया गयाथा, घोड़े हाथी जोतने के जुआ सबमें लगे थे, लोहे के दंड सबपर धरे थे काष्ठके भी दंड सबपर थे ध्वजा पताका सराशन तोमर फांशी आदि विचित्ररस्सियों से बँधी सबपर धरीथीं । ४ । ऐसीकलें सबपरधरीथीं जिनको फेंक शत्रुके बालकपेट उसे अपनी ओर खींचलें, तेल गुड़ बालू थिकीहुई सब रथोंपरथीं जो शत्रुओं के ऊपर फेंकदी जातीथीं, सर्पोंसे भरेहुये घड़ेसबरथपर धरेथे, जो शत्रुओंके सामने खोल दिये जानेथे रालयुक्त धूलि सबरथपर धरीथी जिससे अग्नि अकस्मात् उत्पन्नहोजाताहै ।५।सबरथोंपर घंटा सहित ढालें धरीथीं लोहेके शस्त्र खड्ग छुरी कटार भाला आदि से युक्त, गुड़ जल तप्त कियाहुआ सबपर धराथा, पत्थर धनवासी आदिपर फेंकने के लिये धरेथे, शूल सहित धनवासी जिन्हें गोफनाभी कहते हैं वेभी धरीथीं गर्म्म किया हुआ मधु यहभी शत्रुओं के ऊपर फेंकाजाता है, मुद्गरभी सबपर धरेथे । ६ । कँटीले बाणोंके दण्ड हल, विषयुक्त तोमर, गर्म्म गुड़ादि फेंकनेके लिये शूप धरेथे, इनसब पदार्थों के धरनेकी पिटारियां भी धरीथीं, हंसिया अंकुश व दूसरे प्रकार के तोमर जिनमें टेढ़ेकांटे लगेहोते पेट के भीतर जायँ तो आँतें भी

---

quiver to keep arrows in. They were provided with domes and javelins and were covered with lion's skins. They were made to yoke horses and elephants. They were also provided with staffs of iron and wood, banners, arrows, nets, ropes and machines for dragging the enemy by the hair. They had balls made of oil, coarse sugar and sand to be thrown over the enemy, jars full of serpents, dust mixed with resin to produce sudden fire. All the chariots were provided with shades, shields, iron weapons such as swords, poniards, daggers, javelins and others. There was on each chariot a vessel containing hot water and sugar, stones and instruments for throwing stones, heated honey and clubs, swift arrows, poisoned barbs, vessels to hurl

चारा द्वीपिचर्मावृताश्च ते ॥ ८ ॥ सद्दंष्य सर्थृङ्गाश्च सप्रासचिविधायुधा । सकुटारा सकुद्दाला सतैलक्षौमसर्पिष ॥ ९ ॥ स्क्मजालप्रतिच्छन्ना नानामणिविभूषिता । चित्रानीका सुवपुषो ज्वलिता इव पावका ॥ १० ॥ तथा कवचिन शूरा शस्त्रेषु कृतनिश्चया । कुलीना हययोनिज्ञाः सारथ्ये विनिवेशिताः ॥ ११ ॥ बद्धा रिष्टा बद्धकक्षा बद्धध्वजपताकिन । बद्धाभरणनिर्यूहा बद्धचर्मासिपट्टिशा ॥ १२ ॥ चतुर्युजो रथा सर्वे सर्वे चोत्तमवाजिन । सप्रासऋष्टिकाः सर्वे सर्वे शतशरासना ॥ १३ ॥ धुर्ययोर्हययोरेकस्तथान्यो पार्ष्णिसारथी । तौ चापि रथिनां

बाहर खींचलावें वेभी । ७ । कील कवच अर्गलादि धरे, गुप्तियां बहुत प्रकार की धरीथीं वृक्षादि काटने की कुल्हाड़ी भी धरीथीं, व्याघ्र व चित्ता के चमड़े से सवरथ मढ़ेथे । ८ । दुधाराकृती भृङ्गी भाला दे बिविध आयुध फरसा फावड़ा तेलसे भीगे वस्त्र ऐसे वस्त्रों को जलाय घावोंपर राख डालनेके लिये रखतेहैं, पुराना घी घावपर लगाने के लिये । ९ । व सोनेकी झालर लगी व नानाप्रकारके मणियोंसे विभूषित ऐसे चित्र विचित्र रथ जलतेहुये अग्निके समान प्रकाशितथे । १० । इसी प्रकार सब शूरवीर कवच बख्तर आदि धारण किये, शस्त्रोंके चलानेमें निश्चय किये, सारथी सब रथोंपर कुलीन लोग व जो सबप्रकारके घोड़ोंको पहिचानते थे वही थे । ११ । सबके सब अशुभ मिटाने के लिये यन्त्र बांधे थे, काछें दोनों बांधे थे, ध्वजा पताकादि सब अपने २ रथोंपर बांधेथे सब भूषणादि भी धारण किये ढाल तलवारपट्टा आदि सबबांधेथे । १२ । चार २ घोड़े सब रथोंमें जुतेथे व सब उत्तम देशोंके, भालाकृती धनुषबाण तो एक २ योधाकेपास सौ २ से अधिकथे । १३ । धुरी के घोड़ों के हांकनेवाला और अगाड़ीवालोंको हांकनेवाला

---

hot water, scythes, goads and other weapons with hooked points, nails, coats of mail, swords and axes. The chariots were covered with lion's skin and were furnished with various sorts of weapons, rags soaked in oil to be applied to wounds, old ghee to be applied as ointment. The chariots with gold frills and studded with pearls shone like fire. 10. All the warriors were clad in coats of mail, ready to use their weapons. The drivers of chariots were men of noble families and were clever in driving horses. They bore charms on their persons to keep away evil from them, had banners over their chariots and ornaments, swords and shields on their persons. Every chariot was drawn by four horses of different countries and each warrior was furnished with many bows and arrows. Each chariot

श्रेष्ठो रथी च हयावित्तथा ॥ १४ ॥ नगराणीव गुप्तानि दुराधर्षाणि शत्रुभिः । आसन्रथसहस्राणि हेममालीनि सर्वशः ॥ १५ ॥ यथा रथास्तथा नागा बद्धकक्ष्याः स्वलंकृताः । बभूवुः सप्तपुरुषा रत्नवन्त इवाद्रयः ॥ १६ ॥ द्वावङ्कुशधरौ तत्र द्वावुत्तमधनुर्धरौ । द्वौ वरासिधरौ राजन्नेकः शक्तिपिनाकधृक् ॥ १७ ॥ गजैर्मत्तैः समाकीर्णं सर्वमायुधकोशकैः । तद्बभूव बलं राजन् कौरव्यस्य महात्मनः ॥ १८ ॥ आमुक्तकवचैर्युक्तैः सपताकैः स्वलंकृतैः । सादिभिश्चोपपन्नास्तु तथाचायुतशो हयाः ॥ १९ ॥ असंग्राह्याः सुसम्पन्ना हेमभाण्डपरिच्छदाः । अनेकशतसाहस्राः सर्वे सादिवशे स्थिताः ॥ २० ॥ नानारूपविकाराश्च नानाकवचशस्त्रिणः ।

और दोनों पहियों के पास दो और इस प्रकार सब रथों पर चार २ हांकनेवाले थे । १४ । जैसे नगर सब ओर से रक्षित रहते वैसेही सहस्रों रथ रक्षित होनेसे शत्रुओं को बड़े दुःख से डिठाई करने के योग्य थे सुवर्णादि की माला सब में टंगीथीं । १५ । जैसे रथों की पेटियां बँधीथीं वैसेही हाथियोंकी भी बँधीथीं, सातपुरुष रत्नयुक्त पर्व्वतोंके समान शोभित होतेथे । १६ । दो अङ्कुशधारी दो उत्तम धनुर्द्धर, दो अच्छे खड्ग लिये, व एक शक्ति पिनाक लिये । १७ । मतवाले हाथियों व सब कवच आयुधादिकोंसे कुरुराजकी सेना अतिभूषितहुईथी । १८ । व सवार सब कवच बखतर आदि धारण किये थे झण्डी अपने २ भाला पर सब लगाये थे, ऐसे सवारों के लाखों घोड़े थे । १९ । ऐसे सुशिक्षित घोड़े थे कि आगे के दो पैर उठाय हिनहिनाते हुये युद्ध में कोई न चलतेथे क्योंकि ऐसे चलने में सवारसे युद्ध नहीं करते बनताहै, कल आदि भूषण बहुत प्रकारके सब घोड़े पहिने थे जीन वार कसी के सब पर खिंचेथे ऐसे घोड़े हजारों थे पर सब सवारों के अधीन कट्टर कोई नहीं । २० । नाना प्रकारके रूपवाले व नानाप्रकार के कवच शस्त्रधारी सोने की

had four drivers, two to drive the front horses and two to remain near the wheels, The chariots were strong like fortified places, not easily to be broken by the enemy, and had gold garlands hanging over. The chariots, like elephants, had belts tied round. Each elephant had seven occupants shining like a gem bedecked mountain—two bearing goads, two good archers, two swordsmen and one javelin holder. The army of the Kauravas was very glorious to behold on account of its mad elephants, warriors clad in coats of mail, banners, Javelins and millions of horsemen The horses were well-trained did not rear their legs or neigh in walking, were decked with ornaments and golden trappings. 22 The footmen too, bore

पदातिनो नरास्तत्र बभूवुर्हेममालिनः ॥ २१ ॥ रथस्यासन् दश गजा गजस्यदश वाजिनः । नरा दश हयस्यासन् पादरक्षाः समन्ततः ॥ २२ ॥ रथस्य नागाः पञ्चाशन्नागस्यासन् शतं हयाः । हयस्य पुरुषाः सप्त भिन्नसन्धानकारिणः ॥ २३ ॥ सेना पञ्चशतं नागा रथास्तावन्त एव च । दशसेना च पृतना पृतना दशवाहिनी ॥२४॥ सेना च वाहिनीचैव पृतना ध्वजिनी चमूः । अक्षौहिणीति पर्य्यायैर्निरुक्ता च वरूथिनी ॥ २५ ॥ एवं व्यूढान्यनीकानि कौरवेयेण धीमता । अक्षौहिण्यो दशैका च संख्याताः सप्त चैव ह ॥ २६ ॥ अक्षौहिण्यस्तु सप्तैव पाण्डवानामभूद्वलम् । अक्षौहिण्यो दशैका च कौरवाणामभूद्बलम् ॥ २७ ॥ नराणां पञ्चपञ्चाशदेषा पत्तिर्विधीयते । सेनामुखञ्च तिस्रस्तागुल्मइत्यभिशब्दितम् ॥ २८ ॥ त्रयो गुल्मा गणस्त्वासीद् गणास्त्वयुतशोभवन् । दुर्य्योधनस्य सेनासु योत्स्यमानाः प्रहारिणः

माला पहिरे सब पैदरलोग भी थे । २१ । एक रथके सङ्ग दश हाथी, सौघोड़े व हजार पैदर मनुष्य अस्त्र शस्त्र धारण किये थे मनुष्यादि सवरथकी रक्षा के लिये रहते न कि शोभा के लिये । २२ । व कुछ रथों के सङ्ग एक एकरथ के साथ पचास२ हाथी, व ५००० घोड़े ३५००० पैदरथे ये सव एक रथ की रक्षा के लिये रहते १०५हाथी इतनेही रथ पचीससौ पैदल पन्द्रहसौ सवारको सेना दशसेनाको पृतना और दशपृतना को वाहिनीहोतीहै । सेना, पृतना, वाहिनी, और चमू यह सब अक्षौहिणी के विभाग हैं । २५ । इसीतरह दुर्योधनसे रक्षित ग्यारह अक्षौहिणियांथीं । २६ । और पांडवोंके सातही अक्षौहिणी सेनाथी, व कौरवों के जानों ग्यारह अक्षौहिणी बतायहीचुके । २७ । ५५मनुष्योंकी पत्तिहोतीहै, व तीन पत्तिका सेनामुख, इसीको गुल्मभी कहतेहैं । २८ । तीन गुल्मोंका गण होताहै, सो दुर्योधनकी

---

weapons of sorts and had gold garlands round their necks. For every chariot there were ten elephants, a hundred horses and a thousand foot soldiers armed with weapons to protect the chariot and not for show. Some chariots were protected by fifty elephants, five thousand horses and thirtyfive thousand footmen. 23. One hundred and five elephants, as many chariots, two thousand five hundred foot soldiers and fifteen hundred horse, taken together, are called a sena, ten such collections are called a Pritana and ten Pritanas are named a Vahini. Vahini, Chamu, sena and Pritana are subdivisions of an akshauhini. Duryodhan has eleven akshauhinis of army under him, while the Pandavas have only seven. Fifty men make one *Patti*, three *Pattis* make one *senamukh* or *gulm*, three *gulms* make one *gana*. Duryo-

॥ २९ ॥ तत्र दुर्योधनो राजा शूरान् बुद्धिमतो नरान्। प्रसमीक्ष्य महाबाहुश्चक्रे सेनापतींस्तदा ॥ ३० ॥ पृथगक्षौहिणीनाञ्च प्रणेतॄन्नरसत्तमान्। विधिवत् पूर्वं मानीय पार्थिवानभ्यभाषत ॥३१॥ कृप द्रोणञ्च शल्यञ्च सैन्धवञ्च जयद्रथम्। सुदक्षिणञ्च काम्बोज कृतवर्माणमेवच ॥ ३२ ॥ द्रोणपुत्रञ्च कर्णञ्च भूरिश्रवसमेवच। शकुनिं सौबलञ्चैव बाह्लीकञ्च महाबलम् ॥ ३३ ॥ दिवसे दिवसे तेषां प्रतिवेलञ्च भारत। चक्रे स विविधाः पूजा प्रत्यक्षञ्च पुनः पुनः ॥ ३४ ॥ तथा विनियताः सर्वे येचतेषामपदानुगाः। बभूवुः सैनिका राज्ञः प्रियं राज्ञश्चिकीर्षवः ॥ ३५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि-दुर्योधनसैन्यविभागे पञ्चपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५५ ॥

सेनामें असंख्य गण थे, जोकि लडने मरने मारनेपर उद्यतथे। २९। राजा दुर्योधनने इतनीभारी अपनी सेनामें देख विचार छांट २ सेनापति बनाये। ३०। ग्यारह अक्षौहिणियोंके ग्यारह सेनापति अलगर बनाये। ३१। बुद्धिमान दुर्योधन ने शल्य, जयद्रथ, द्रोण, कृप, कृतवर्म्मा, काम्बोज, अश्वत्थामा, कर्ण, शकुनि, भूरिश्रवा, बाह्लिक, महाबली सबवीर सेनापति बनाये उनकी पूजा भली प्रकार करता था और उनके साथ अच्छा बर्ताव करता था वे सब राजा लोग उसके अनुचर और प्रिय मित्रथे ॥ ३५ ॥

---

dhan's army contains numberless gans ready to kill and die. Duryodhan selected the best men to be the commanders of the army 30. He made eleven commanders for the eleven *akshauhinis* Shalya, Jayadrath, Drona, Krip, Kritvarma Kamboj, Ashwathama, Karan, Shakuni, Bhurishrava and Vahlik were made the commanders of Duryodhan's army. He treated them with great respect and behaved with them with great kindness. All those kings obeyed Duryodhan and had great love for him. 35.



वैशम्पायन उवाच ॥ ततः शान्तनवं भीष्मं प्रांजलिर्धृतराष्ट्रजः । सहसर्वैर्महीपालै रिदं वचनमब्रवीत् ॥ १ ॥ ऋतेसेनाप्रणेतारं पृतना सुमहत्यपि । दीर्यते युद्धमासाद्य पिपीलिकपुटं यथा ॥ २ ॥ नहि जातु द्वयोर्बुद्धिः समा भवति कर्हिचित् । शौर्यञ्चबलने तृणां स्पर्धते च परस्परम् ॥ ३ ॥ श्रूयतेच महाप्राज्ञ हैहयानमितौजसः । अभ्ययुर्ब्राह्मणाःसर्वे समुच्छ्रितकुशध्वजाः ॥ ४ ॥ तानभ्ययुस्तदा वैश्याः शूद्राश्चैव पितामह । एकतस्तु त्रयो वर्णा एकतः क्षत्रियर्षभाः ॥५॥ ततो युद्धेष्व भज्यन्त त्रयो वर्णाः पुनःपुनः । क्षत्रियाश्च जयन्त्येव बहुलञ्चैकतो बलम् ॥६॥ ततस्त क्षत्रियानेव पप्रच्छुर्द्विजसत्तमाः । तेभ्य शशंसुर्धर्मज्ञा याथातथ्यं पितामह ॥ ७ ॥ वयमेकस्य शृण्वाना महाबुद्धि मतो

अध्याय ॥ १५६ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन सब राजाओं सहित हाथजोड़ भीष्मजीसे बोले ।१। कि बिना मुख्य सेनापति के बड़ी भारी भी सेना च्यूंटियों के दल के समान इधर उधर डोली फिरती है । २ । सेनापति एकही होनाचाहिये क्योंकि बहुमतको कौन कहे दो जनों की भी बुद्धि कभी समान नहीं होती, व जहां बहुत बलवान् इकट्ठे होते वहां एक दूसरे के बल शूरता स्पर्द्धा करने लगते हैं । ३ । इस विषय में सुनते हैं कि हैहयवंश के अमित तेजस्वी राजाके ऊपर बड़े उद्दण्ड कुशवंशके पताका रूप बहुत से ब्राह्मण लोग चढ़ आये । ४ । उन के साथ बहुत से वैश्य व शूद्रभी चढ़ आये, इस प्रकार एक ओर तीन वर्ण के लोग हुये व एक ओर सब क्षत्रिय । ५ जब युद्ध हुआ तो बार २ तीनों वर्णों के लोग भगे यद्यपि क्षत्रिय थोड़े थे व उन तीनों वर्णों की सेना बड़ी थी पर क्षत्रिय जीते । ६ । तब उन ब्राह्मणों ने अपनी पराजय व क्षत्रियों की जय के विषयमें क्षत्रियों से कारण पूंछा उन्होंने धर्म के मारे यथातथ्य कह

CHAPTER CLVI

Vaishampayan said all the sons of Dhritrashtra then said to Bhishm with clasped hands, "Without a chief leader even a great army wavers like a line of ants. There should be only one commander-in-chief; for no two men are of the same understanding, not to say of more than two. Warriors coming together are proud of their strength and look down upon one another. In this connection we hear that many Brahmans of Kush race assailed the king of Haybay race of great glory. Many Vaishyas and Shudras joined the Brahmans. Thus there were people of three classes on one side and only Brahmans on the other. The people of the three classes turned back more than once from battle although the number of kshatryas

रणे । भवन्तस्तु पृथक् सर्वे स्वबुद्धि वशवर्त्तिनः ॥ ८ ॥ ततस्ते ब्राह्मणाश्चक्रु रेकं सेनापतिं द्विजम् । नयेसु कुशलं शूर मजयन् क्षत्रियांस्ततः ॥ ९ ॥ एवं ये कुशलं शूरं हितेप्सित मकल्मषम् । सेनापतिं प्रकुर्वन्ति ते जयन्ति रणे रिपून् ॥ १० ॥ भवानुशनसा तुल्यो हितैषीच सदा मम । असहार्यः स्थितो धर्मे सनः सेनापतिर्भव ॥ ११ ॥ रश्मिमतामिवादित्यो वीरुधामिव चन्द्रमाः । कुबेर इव यक्षाणां देवानामिववासवः ॥ १२ ॥ पर्वतानां यथा मेरुः सुपर्णः पक्षिणां यथा। कुमार इव देवानां वसूना मिव हव्यवाट् ॥ १३ ॥ भवता हि वयं गुप्ता शक्रेणेव दिवौकसः। अनाधृष्या भविष्यामस्त्रिदशानामपि ध्रुवम् ॥ १४ ॥ प्रयातुनो भवानग्रे देवानामिव पावकिः । वयं त्वामनुयास्यामः सौरभे-

---

दिया ।७। कि हम लोग तो रण में एकही बुद्धिमानकी बात सुनते रहे व आप लोग सब अलग अलग अपनी अपनी बुद्धि के अनुकूल कार्य करते थे । ८ । यह सुन उन ब्राह्मणों ने एक न्याय जानने वाले शूरवीर ब्राह्मणको सेनापति बनाय उसकी आज्ञासे सब कार्य कर सब क्षत्रियों को जीत लिया । ९ । ऐसेही जो लोग कुशल शूर हित चाहने वाले पाप रहित किसी एक पुरुष को सेनापति करते हैं वे समर में शत्रुओंको जीत लेतेहैं । १० । इस से नीति शास्त्र जानने में आप शुक्राचार्यके समान व हमारे सदा हितचाहने वाले हो, व किसी के नाश करने योग्य नहीं क्योंकि धर्म में टिके हो इस से हमारे सेनापति हूजिये । ११ । जैसे तेजस्वियों में सूर्य, वृक्ष औषधियों में चन्द्रमा, यक्षों में कुबेर, देवताओं में इन्द्र । १२ । पर्वतों में सुमेरु, पक्षियों में गरुड़, देवताओंके कुमार वसुओंके अग्नि । १३ । इसी प्रकार आपसे हम लोग रक्षित होकर ऐसेहोजायँगे कि देवता लोग भी हमारा कुछ नकरसकेंगे, जैसे इन्द्रसे रक्षित देवोंका कोई कुछ नहीं करसक्ता । १४ ।

---

was small in comparison with them. The Brahmans then asked the kshatryas the reason of their own defeat and the kshatryas gave them the true reason, saying, "We heard to only one wise man in the field of battle and you acted upon your own impulses.', At this the Brahomans made a brave Brahman their commander and with his assistance conquered the Kshatryas. Thus, those who have only one wise commander, free from sin, at the head their army, win the battle. 10. You are a great politician like Shukrachrya, our well wisher, indestructible by any one, firm on your duty and worthy of becoming the commander of our army. Protected by you we shall fear no god like Indra who is protected by gods; for you are like the sun among glorious beings, like the moon among herbs and trees,

या इवर्षभम् ॥ १५ ॥ भीष्म उवाच ॥ एवमेतन्महाबाहो यथा वदसि भारत । यथैवहि भवन्तोमे तथैव मम पांडवाः ॥ १६ ॥ अपि चैव मया श्रेयो वाच्यं तेषां नराधिप । संयोद्धव्यं तवार्थाय यथा मे समयः कृतः ॥ १७ ॥ नतु पश्यामि योद्धार मात्मनः सदृशं भुवि । ऋते तस्मात् नरव्याघ्रात् कुन्तीपुत्राद्धनञ्जयात् ॥ १८ ॥ साहि वेद महाबुद्धिर्दिव्यान्यस्त्राण्यनेकशः । नतुमां विवृतो युद्धे जातु युध्येत पांडवः ॥ १९ ॥ अहंचैव क्षणे नैव निर्मनुष्य मिदं जगत् । कुर्यां शस्त्रबले नैव निर्मनुष्यमिदं जगत । कुर्यांशस्त्रबलेनैव ससुरासुर राक्षसम् ॥ २० ॥ नत्वेवोत्सादनीया मे पांडोः पुत्रा जनाधिप । तस्माद्योधा न्हनिष्यामि प्रयोगेनायुत सदा ॥ २१ ॥ एवमेषांकरिष्यामि निधनं कुरुनन्दन । नर्चेत्ते

जैसे देवताओंके आगे सेनापतिहो स्कन्दजी चलेथें वैसेही हमलोगों के आगे आप, चलें व हम लोग आपके पीछे२ चलें जैसे सांडके पीछे सब गाइयां चलतीहैं।१५। भीष्मजी बोले कि, हे भारत जैसा तुम कहतेहो यह ऐसाही है, परन्तु जैसे हमारे आपलोग हैं वैसेही पांडवलोगभी हैं । १६ । इससे हमको पांडवों का कल्याण भी देखना चाहिये परन्तु तुमसे प्रतिज्ञा करचुके हैं इससे तुम्हारे अर्थ युद्ध करेंगे । १७ । हम कुन्ती के पुत्र नरव्याघ्र अर्जुनको छोड़ और किसी योधाको नहीं देखते जो हमसे युद्धकरे । १८ । व वह महाबुद्धि यद्यपि अनेक दिव्यास्त्र जानता है पर प्रकटहो हमारे गौरव से हमसे युद्ध न करेगा । १९ हममें इतनी शक्ति है कि एकक्षणमें असुर राक्षस देवगणसहित इस चराचर जगत्को नाश करदें ।२०। परन्तु हे राजन पांडु के पुत्रों को हम कभी न मारडालेंगे, पर प्रतिदिन बाण चलाय दशहजार योधा उनकी सेनाको मारतेरहेंगे । २१ । जो वे भेंट होतेही

---

like Kuver among yakshas, Indra among gods, Sumeru among hills, Garur among birds, Kumar among gods or Agni among Vasus. You will go before us as Skand did before gods and we shall follow you as cows do after a bull." "You are right, Bharat," said Bhishm, "but I have equal regard for you and the Pandavas. I am a well wisher of the Pandavas, but I have promised to fight for you. None except Arjun the son of Kunti can stand before me in battle and he too, though he knows the use of many celestial weapons will not fight against me out of respect for my years. I am strong enough to destroy all the earth with its moveables and immoveables, asurs, rakshases and gods. 20. But I shall never kill the sons of Pandu, although, I shall destroy daily with my arrows, ten thousand warriors of their army. Thus, in time, I shall extirpate all the warriors of

मां हनिष्यन्ति पूर्वमेव समागमे ॥ २२ ॥ सेनापतिस्त्वहं राजन् समयेनापरेणते । भवि ष्यामि यथाकामं तन्मे श्रोतु मिहार्हसि ॥२३॥ कर्णोवा युध्यतां पूर्व महं वा पृथिवीपते । स्पर्धतेहि सदात्यर्थं सूतपुत्रो मया रणे ॥ २४ ॥ कर्ण उवाच ॥ नाहं जीवति गांगेये राजन् योत्स्ये कथंचन । हते भीष्मेतु योत्स्यामि सह गांडीव धन्वना ॥ २५ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ततः सेनापतिंचक्रे विधिवद् भूरिदक्षिणम् । धृतराष्ट्रात्मजो भीष्मं सोभिषिक्तो व्यरोचत ॥ २६ ॥ ततोभेरीश्च शङ्खांश्च शतशोथ सहस्रशः । वादयामासुरव्यग्रा वादका राजशासनात् ॥ २७ ॥ सिंहनादाश्च विविधा वाह नानाञ्च निःस्वनाः । प्रादुरासन्ननभ्रेच वर्षं रुधिरकर्दमम् ॥ २८ ॥ निर्घाताः पृथिवी कम्पा गजबृंहितनिःस्वनाः । आसंश्च सर्वयोधानां पातयन्तो मनांस्युत २९॥

होते हमको प्रथम न मारडालेंगे तो इसप्रकार हम उनको मारडालेंगे क्योंकि प्रति दिन दशहजार योधा जब हम मारेंगे तो कहांतक योधा उनकी ओर आवेंगे ।२२। हम तुम्हारे सेनापति होंगे परन्तु एकबातकी प्रतिज्ञा करलेंगे उसे सुनो । २३ । चाहे पहले कर्ण युद्ध करें वा हम करें दोनोंजने सङ्ग न करेंगे क्योंकि कर्ण हमेशा हमसे युद्धमें स्पर्द्धा रखताहै । २४ । कर्ण बोले कि हे राजन् जबतक भीष्म जीते हैं तबतक हम युद्ध न करेंगे जब ये मारजायँगे तो केवल अर्जुनके सङ्ग हम लड़ेंगे । २५ । वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे दुर्योधन ने बहुत दक्षिणा दे भीष्मजी को अपनी सबसेनाका अधिप बनाया, व जब सेनापतित्व पर भीष्मका अभिषेक हुआ तो वे बहुत शोभित हुये । २६ । व राजाकी आज्ञा से बजानेवालों ने बहुतसे नगाड़े शङ्ख आदि बाजे बजाये । २७ । विविध प्रकार के सिंहनादभी हुये घोड़े सब जोर से हिनहिना उठे, बादल कहीं न था पर रुधिर की वर्षा होनेलगी । २८ । वज्रपातहुआ पृथ्वी कँपनेलगी, हाथी अकस्मात् सब चिंघड़नेलगे, यहांतक

their army, if I am not killed by the Pandavas. I shall lead your army on one condition: either Karan or I will fight first; both of us can not fight at the same time; for Karan bears enmity towards me." Karan, on hearing this, said, "I shall not take up arms as long as Bhishm lives, but shall fight with Arjun after Bhishm's death." Vaishampayan said that Duryodhan thereupon made Bhishm the commander of his armies and the latter filled the post in great glory and amidst the noise of drums which were beaten by the order of Duryodhan. Warriors roared like lions, the horses neighed and blood fell down in a shower, although there were no clouds to be seen. Lightning fell, the earth trembled, the elephants shrieked of a sudden, making the minds of the warriors ill at ease. A sudden

घाचश्चाप्यशरीरिण्यो दिवश्चोल्काः प्रपेदिरे। शिवाश्च भयवेदिन्यो नेदुर्दीततराश्रयम् ॥ ३० ॥ सेनापत्ये यदा राजा गाङ्गेयमभिषिक्तवान्। तदैतान्युग्ररूपाणि अभवन् शतशोनृप ॥ ३१ ॥ ततः सेनापतिं कृत्वा भीष्मं परबलार्दनम्। वाचयित्वा द्विजश्रेष्ठान् गोभिर्निष्कैश्च भूरिशः ॥ ३२ ॥ वर्धमानो जयाशीर्भिर्निर्ययौ सैनिकैर्वृतः। आपगेयं पुरस्कृत्य भ्रातृभिः सहितस्तदा ॥ ३३ ॥ स्कन्धावारेण महता कुरुक्षेत्रं जगामह ॥ ३४ ॥ परिक्रम्य कुरुक्षेत्रं कर्णेनसह कौरवः। शिबिरं मापयामास समे देशे जनाधिप ॥ ३५ ॥ मधुरानूषरे देशे प्रभूतयवसेन्धने। यथैव हास्तिनपुरं तद्वच्छिबिरमाबभौ ॥ ३६ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि भीष्मसैनापत्ये षट्पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५६ ॥

कि सबयोधों के मन मूर्च्छित होगये । २९ । आकाशसे अकस्मात शब्द होनेलगे, व स्वर्ग से उल्कापात होनेलगे, सियारिनियां रोनेलगीं इन बातों से लोगों को बड़ी भयहुई । ३० । जैसेही भीष्मको राजादुर्योधनने सेनापति बनायाहै कि वैसे ही ये सब उल्कापातादि अशुभ होनेलगे । ३१ । शत्रुकी सेनाके पीड़ित करनेवाले भीष्मजीको सेनापतिबनाय ब्राह्मणोंको बुलाय बहुत दक्षिणा दिलाय स्वस्त्ययन बँचवाय, ब्राह्मणोंका आशीर्वाद पाय भीष्मको आगेकर दुर्योधन बड़ी भारी सेनाले कुरुक्षेत्रको चले । ३४ । कुरुक्षेत्र में पहुँचकर कर्ण और दुर्योधन ने पड़ाओं की भूमिनय बाई और सब भूमिपर जहां घास फूस और इन्धन बहुत था और ऊषर भूमि नहीं थी पड़ाओ डलवाया गया ॥ ३६ ॥

---

noise was heard from the sky, cinders fell down from above and jackals howled, causing great consternation among the warriors. 30. All the above-mentioned ill omens occured at the time when Bhishm was made the commander of the army of Duryodhan. Having made Bhishm the commander of his armies, Duryodhan distributed much wealth among Brahmans, and having received blessings from them, his army, led by Bhishm, marched towards Kurukshetra. Duryodhan and Karan reached Kurukshetra and caused the leved ground to be mesured for encampment. The camp was laid over level ground, free from salt, where grass, fodder and firewood were to be had in abundance. 36.



जनमेजय उवाच । आपगेयं महात्मानं भीष्मं शस्त्र भृतांवरम् । पितामहं भारतानां ध्वजं सर्वमहीक्षिताम् ॥ १ ॥ बृहस्पतिसमं बुद्ध्या क्षमया पृथिवीसमम् । समुद्रमिव गाम्भीर्ये हिमवन्तमिवस्थिरम् ॥ २ ॥ प्रजापतिमिवौदार्य्ये तेजसा भास्करोपमम् । महेन्द्रमिव शत्रूणां ध्वंसनं शरवृष्टिभिः ॥ ३ ॥ रणयज्ञे प्रवितते सुभीमे लोमहर्षणे । दीक्षितंचिररात्राय श्रुत्वा तत्र युधिष्ठिरः ॥ ४ ॥ किमब्रवीन्महाबाहुः सर्वशस्त्रभृतांवरः । भीमसेनार्जुनौ वापि कृष्णो वा प्रत्यभाषत ॥५॥ वैशम्पायन उवाच ॥ आपद्धर्मार्थकुशलो महाबुद्धिर्युधिष्ठिरः । सर्वान् भ्रातॄन् समानीय वासुदेवञ्च शाश्वतम् ॥ ६ ॥ उवाच वदतांश्रेष्ठः सान्त्वपूर्वमिदं वचः । पर्य्याक्रामतसैन्यानि यत्तास्तिष्ठत दंशिताः॥७॥पितामहेन वो युद्धं पूर्वमेव भविष्यति ।

अध्याय ॥ १६७ ॥

इतनी कथा सुनकर जनमेजयजी बोले कि महात्मा और शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ, भारतों के पितामह, सब राजाओं के पताका रूप, बुद्धि से बृहस्पति के समान क्षमा से पृथिवी के तुल्य, गंभीरता में समुद्र के समान, स्थिरता में हिमवान् के समान, उदारता में ब्रह्मा के समान, तेज से सूर्य के समान, बाण वर्षा से शत्रुओं के नाश करने में इन्द्र के समान, भीष्मपितामह गंगाजी के पुत्रको बड़े भारी रणयज्ञ में बहुत दिनों के लिये दीक्षित सुन महाबाहु सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिरजी भीमसेन अर्जुन व श्रीकृष्णचन्द्र जी ने क्या कहा वह हम से वर्णन करो । ५ । वैशम्पायन जी बोले कि आपद्धर्म के अर्थ कुशल, महाबुद्धि, बोलने वालों में श्रेष्ठ महाराज युधिष्ठिर जी अपने सब भाइयों व कृष्णचन्द्र जी को इकट्ठे बैठाय सबों से समझाते हुये बोले कि तुम सब जने सैन्य तैयार करो व कवच बखतर आदि धारण किये उद्यत बैठे रहो क्योंकि भीष्मपितामहजी से तुम

CHAPTER CLVII

"Let us know," said Janmejaya to Vaishampayan, "what king Yudhishthir, the best of warriors, had said to Bhim, Arjun and Shree Krishn on hearing that the best of warriors, Bhishm the grandfather of the descendants of Bharat, leader of kings, wise like Vrihaspati, patient like the earth, deep as the ocean, firm as the Himalayas, charitable like Brahma, glorious like the sun, like Indra in shooting arrows and destroying the enemies, was engaged for long in the yagya of battle." To this Vaishampayan replied that Yudhishthir the just and wise seated Krishn and his brothers round him and spoke to them as follows, "Prepare your army and be

तस्मात् सप्तसु सेनासु प्रणेतन्मम पश्यत ॥ ८ ॥ कृष्ण उवाच । यथार्हति भवान् वक्तु मस्मिन् काले ह्युपस्थिते । तथेदमर्थवद्वाक्य मुक्तं ते भरतर्षभ ॥ ९ ॥ रोचते मे महाबाहो क्रियतां यदनन्तरम् । नायकास्तव सेनायां क्रियन्तामिह सप्त वै ॥ १० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततो द्रुपदमानाय्य विराटं शिनिपुङ्गवम् । धृष्टद्युम्नश्च पांचाल्य धृष्टकेतुंच पार्थिवं ॥ ११ ॥ शिखण्डिनंच पांचाल्य सहदेवच मागधम् । एतान् सप्त महाभागान् वीरान् युद्धाभिकाङ्क्षिण ॥ १२ ॥ सेनाप्रणेतृन् विधिवदभ्यपिंच युधिष्ठिर । सर्वसेनापतिंचात्र धृष्टद्युम्नञ्चकारह ॥ १३ ॥ द्रोणान्तहेतोरुत्पन्नो य इद्धाज्जातवेदस । सर्वेषामेव तेषान्तु समस्तानां महात्म-

लोगों का युद्ध होगा, इससे प्रथम हमारी सातों सेनाओं के सेनापतियों को देखो । ८ । यह सुन कृष्णचन्द्र जी बोले कि हे राजन इस समय जैसा आपको कहना चाहिये था वैसाही आपने कहा । ९ । यह बात हमकोभी रुचती है, इसके अनन्तर जो कर्तव्यहो कीजिये प्रथम तो आप अपनी सातों सेनाओं के सेनापति नियत करदें । १० । वैशम्पायनजी बोले कि इसके पीछे महाराज युधिष्ठिर जीने राजा द्रुपद को बुलाय, व राजा विराट, सात्यकि, धृष्टद्युम्न, धृष्टकेतु, शिखण्डी, व सहदेव को इन युद्धकी अभिलाषा किये सातों राजाओंको सेनापति बनाय अभिषेक किया, व सब सेनाओंके सेनापति धृष्टद्युम्न को बनाया इन में द्रुपद द्रुपद देशके राजा यज्ञ सेनका नाम है, व मत्स्यदेशके राजा का विराट, वृष्णिवंशियों के एक राजा सात्यकि जी हैं, धृष्टद्युम्न व शिखण्डी द्रुपद राजा के पुत्र, धृष्टकेतु शिशुपाल के पुत्र सहदेव जरासन्ध के पुत्रहैं । ११ । इन में धृष्टद्युम्न महारणधीर हैं जो प्रदीप्त अग्नि से द्रोणाचार्य जीके मारनेके लिये उत्पन्न हुयेहैं, सो सब सेनापतियों के

ready with your arms and armour, for you will have to encounter Bhishm the grandfather. Let us choose the seven leaders of our army." "You have spoken," said Krishn, " as you ought. I am of the same opinion with you Let us, first of all, appoint seven leaders to the seven akshauhinis of our army." 10 Vaishampayan said that Yudhishthir then called king Drupad, Satyaki, Dhrishtadumn, Dhrishtaketu, Shikhandi and Sahadev, who were very eager to fight, and made them the commanders of his army and installed Dhrishtadyumn as commander-in chief of all the forces. Drupad was Yagyasen the king of the country of that name, Virat was the king of Matsya, Satyaki was a prince of the Vrishni family, Dhrishtadyumn and Shikhandi were the sons of Drupad, Dhrishta-

नाम् ॥ १४ ॥ सेनापतिपतिंचक्रे गुडाकेशं धनञ्जयम् । अर्जुनस्यापि नेताचसंयन्ता चैव वाजिनाम् ॥ १५ ॥ संकर्षणानुजः श्रीमान्महाबुद्धिर्जनार्दनः । तद्दृष्ट्वोपस्थितं युद्धं समासन्नं महात्ययम् ॥ १६ ॥ प्राविशद्भवनं राजन् पांडवानांहलायुधः । सहाक्रूरप्रभृतिभिर्गदसाम्बोद्धवादिभिः ॥ १७ ॥ रौक्मिणेयाहुकसुतैश्चारुदेष्णपुरोगमैः । वृष्णिमुख्यैरधिगतैर्व्याघ्रैरिव बलोत्कटैः ॥ १८ ॥ अभिगुप्तो महाबाहुर्मरुद्भिरिव वासवः । नीलकौशेयवसनः कैलासशिखरोपमः ॥ १९ ॥ सिंहखेलगतिः श्रीमान् मदरक्तान्तलोचनः । तंदृष्ट्वाधर्मराजश्च केशवश्चमहाद्युतिः ॥२०॥ उदतिष्ठत्ततः पार्थो भीमकर्मा वृकोदरः । गाण्डीवधन्वा येचान्ये राजानस्तत्रकेचन ॥ २१ ॥ पूजयाञ्चक्रिरे तेवै समायान्तं हलायुधम् । ततस्तं पाण्डवो राजा करे

सेनापति तो धृष्टद्युम्न किये गये व इन सब महात्माओं के सेनापति पति अर्जुनजी किये गये, व अर्ज्जुनकेभी अधिपति कृष्णचन्द्र भगवान कियेगये जो कि अर्ज्जुनके प्रेरक व उनके घोड़ों का हांकना दो कार्य करते रहेंगे । १५ । ऐसे महाक्षयकारी युद्धको सन्निकट आयाजान, पाण्डवों के यहां बलदेव जी आये, उनके संग अक्रूर गद साम्ब उद्धवादि बहुत से यदुवंशी अंधक वृष्णिवंशी थे, प्रद्युम्न, आहुकसुत व चारुदेष्ण आदि बहुत वृष्णि मुख्यलोगों से घेरेहुये थे मानो महाउत्कट व्याघ्रों से घिरे थे, जैसे देवताओंसे इन्द्र रक्षित रहते वैसेही सब यदु वृष्णिवंशियों से बलदेवजी घिरे थे, जोकि नील रेशमी वस्त्र ओढ़े थे, व डील में कैलास के शिखर के समान थे, व सिंहके खेल के तुल्य जिनकी चालथी, व मारे मदके नेत्र अरुण हो रहेथे । १७ । तिन को देख राजा युधिष्ठिर व महाद्युति श्रीकृष्णचन्द्रजी, भीम कर्मकारी भीमसेन जी अर्जुन जी, व औरभी जो राजा लोग वहां थे सब के सब उठ खड़े हुये, व आये हुये बलभद्र जी की पूजा सबोंने की, और

---

ketu was the son of Shishupal, and Sahadev was the son of Jarasandh. Of these the great warrior Dhrishtadyumn was born of sacrificial fire to kill Dronacharya and was made the commander-in-chief of the whole army; Arjun was made the supervisor of armies and Shri Krishn was made the adviser of Arjun and the driver of his chariot. Knowing the war to be imminent, Baldev too came to the Pandavas and brought with him Akrur, Gad, Samv, Udhav and others of the races of Yadu, Andhak and Vrishni. Baldev was surrounded by Pradyumn, Ahuksut and Charudeshn as Indra by gods. He wore blue clothes, was huge of body like mount Kailas, walked like a lion and had red eyes as if in intoxication. Yudhishthir, Shri

परस्पर्शपाणिना ॥ २२ ॥ वासुदेवपुरोगास्तं सर्वं एवाभ्यवादयन् । विराटद्रुपदौ वृद्धावभिवाद्य हलायुधः ॥ २३ ॥ युधिष्ठिरेण सहित उपाविशदरिन्दमः । ततस्ते पूपविष्टेषु पार्थिवेषु समन्ततः । वासुदेवमभिप्रेक्ष्य रौहिणेयोऽभ्यभाषत ॥ २४ ॥ भवितायं महारौद्रो दारुणः पुरुषक्षयः । दिष्टमेतद्ध्रुवं मन्ये न शक्यमति वर्त्तितुम् ॥ २५ ॥ तस्माद् युद्धात् समुत्तीर्णा नपि वः ससुहृज्जनान् । अरोगानक्षतैर्देहैद्रष्टास्मीति मतिर्मम ॥ २६ ॥ समेतं पार्थिवं क्षत्रं कालपक्वमसंशयम् । विमर्दश्च महान् भावी मांसशोणितकर्दमः ॥२७॥ उक्तो मया वासुदेवः पुनः पुनरुपह्वरे । सम्बन्धिषु समां वृत्तिं वर्त्तस्व मधुसूदन ॥२८॥ पाण्डवाहि यथास्माकं तथा दुर्य्योधनो

राजा युधिष्ठिर जीने उनका हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया । २२ । व कृष्ण चन्द्रादि जितने थे सबों ने उन के प्रणाम किया, राजा विराट व राजा द्रुपद ये दोनों बड़े वृद्धथे इस से उन के बलदेव जी ने प्रणाम किया । २३ । व राजा युधिष्ठिर जी जिस आसन पर बैठे थे उसी पर बलभद्र जी को भी बैठाया, फिर अन्य लोग भी अपने २ आसन पर बैठ गये जब सब बैठे तो बलदेवजी कृष्णचन्द्रजी की ओर देख सब युधिष्ठिरादिकों से बोले । २४ । कि यह महारौद्र दारुण पुरुषोंकी क्षयहोगी, सो इसको हम प्रारब्धही समझते हैं इस से इसे रोंकनहीं सक्ते । २५ । इससे जो युद्ध से निवृत्त आप सबसुहृदों को अरोग व अस्त्रशस्त्रों के घावों से रहित आनन्दित देखें तो धन्यभाग्य समझें सो आप लोगों को तो अच्छेही देखेंगे इसमें सन्देह नहीं । २६ । पर यह जो सब क्षत्रियों की समाज इकट्ठी है सबको हम कालसे पकीहुई समझते हैं, क्योंकि इतना भारी युद्ध यह होगा कि मांस रुधिरकी कीच मचेगी । २७ । इन कृष्णचन्द्र से हमने एकान्तमें बारर कहा कि सम्बन्धियों के विषयमें समबृत्तिका बर्त्ताव करो । २८ । जैसे

Krishn of great glory, Bhim the dreadful, Arjun and other kings stood up out of respect for Baldev and with due respect, Yudhishthir held him by the hand. 22. Krishn and others bowed to him. Baldev saluted *Virat and Drupad the two old* kings. Yudhishthir seated him on the same seat with himself and when all the people had seated themselves on their respective seats, Baldev looked towards Shri Krishn and said to Yudhishthir, " A dreadful slaughter of warriors is expected to take place; but thinking it be the work of Fate, we donot dare to stop it. We shall think ourselves happy if we can see our kinsmen and friends safe and sound at the end of the war and I hope to see you safe. But the kshatryas collected here are, no doubt, brought here by Fate and the earth is sure to be coloured with

नृपः । तस्यापि क्रियतां साह्यं सपर्येति पुनः पुनः ॥ २९ ॥ तच्चमे नाकरोद्वाक्यं त्वदर्थे मधुसूदनः । निविष्टः सर्वभावेन धनञ्जयमवेक्ष्यह ॥ ३० ॥ ध्रुवोजयः पाण्डवाना मितिमे निश्चितामतिः । तथा ह्यभिनिवेशोयं वासुदेवस्यभारत ॥ ३१ ॥ न चाहमुत्सहेकृष्ण मृते लोकमुदीक्षितुम् । ततोहमनुवर्त्तामि केशवस्य चिकीर्षितम् ३२ उभौ शिष्यौहि मे वीरौ गदायुद्ध विशारदौ । तुल्यस्नेहोस्म्यतो भीमे तथा दुर्योधने नृपे ॥ ३३ ॥ तस्माद्यास्यामि तीर्थानि सरस्वत्या निषेवितुम् । नहि शक्ष्यामि कौरव्यान्नश्यमानानु पेक्षितुम् ॥ ३४ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहु रनुज्ञातश्च पाण्डवैः । तीर्थयात्रां ययौ रामो निवर्त्य मधुसूदनम् ॥ ३५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि बलरामतीर्थयात्रागमने सप्तपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५७ ॥

हमलोगों के पांडवलोगहैं वैसेही राजा दुर्योधन भी हैं, इससे दुर्योधनकीभी सहायता करो व पांडवों की भी व दोनों की पूजाकरो । २९ । परन्तु युधिष्ठिरजी तुम्हारे अर्थ कृष्णचन्द्र ने हमारा वचन नहीं किया, केवल सब भाव से अर्जुनही की ओर देख इन्हीं के साथ हुये । ३० । इसस यह हमारी निश्चित माति है कि निस्सन्देह पांडवोंकीही विजयहोगी, क्योंकि वासुदेवका इसीप्रकारका विचारही है । ३१ । श्री कृष्ण के विना देखे लोक नहीं देखसकता इसी लिये जो हरिचाहेंगे वही होगा गदायुद्ध और पटु दोनों मेरेशिष्यहैं दुर्योधन और अर्जुन दोनों मेरे स्नेह पात्रहैं इस लिये तीर्थ सेवाके लिये हम सरस्वतीके किनारे जायँगे जिससे हमको कुरुवंशका नाश न देखना पड़े यह कहकर पांडवों से बलदेव विदाहुए और हरिका ध्यानकर के तीर्थयात्रा को गये ॥ ३५ ॥

---

their blood. I have often told Shri Krishn to look with an equal regard at both the sides; for both Duryodhan and the *Pandavas* are equal to us and we should help *Duryodhan* and respect the Pandavas. But Krishn did not mind my words and has taken your side for the sake of Arjun. 30. I believe, without doubt that the Pandavas are sure to win as they have Vasudev on their side. The world cannot see without the help of Shri Krishn and therefore what Hari wants will come to pass. I am master of the use of mace and club and love Duryodhan and Arjun equally well. I shall go on the bank of the Saraswati to visit holy places so that I may not see the destruction of the Kauravas." Having said this Baldev took leave of Shree Krishn and the Pandavas and went to visit holy places with his mind intent on *Hari*. 35.

वैशम्पायन उवाच ॥ एतस्मिन्नेव कालेतु भीष्मकस्य महात्मन. । हिरण्यरोम्णो नृपते. साक्षादिन्द्रसखस्यवै ॥ १ ॥ आकृतीनामधिपतिर्भोजस्यातियशस्विन । दाक्षिणात्यपते पुत्रो दिक्षु रुक्मीति विश्रुत ॥ २ ॥ य किंपुरुष सिंहस्य गन्धमादन वासिन. । कृत्स्नं शिष्यो धनुर्वेद चतुष्पादमधीतवान् ॥ ३ ॥ यो माहेन्द्रं धनुर्लेभे तुल्य गाण्डीव तेजसा । शार्ङ्गेणच महाबाहु सम्मित दिव्यलक्षणम् ॥ ४ ॥ त्रीण्येवैतानि दिव्यानि धनूंषि दिविचारिणम् । वारुण गाण्डिव तत्र माहेन्द्र विजय धनु । शार्ङ्गंतु वैष्णव प्राहु र्दिव्य तेजोमय धनु ॥ ५ ॥ धारयामास तत्कृष्ण परसेनाभयावहम् । गाण्डीव पाव कालेभे खाण्डवे पाकशासनि ॥ ६ ॥ द्रुमाद्रुक्मी महातेजा विजय प्रत्यपद्यत । सछिद्य

अध्याय ॥ १५८ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि बलदेवजी के चले जाने पर महात्मा, हिरण्यरोमा, साक्षात् इन्द्रजी के सखा अति यशस्वी दक्षिण देश के राजा महाराज भीष्मकजीके पुत्र जिनका रुक्मी नामहै वहां आये । २ । जो कि किम्पुरुष सिंह गन्धमादन पर्वत पर रहने वाले हनुमान्जीके शिष्य थे व सत्यसंकल्प थे उन्हीं अपने गुरुसे सपूर्ण धनुर्वेद पढाथा । ३ । व जिन्हों ने माहेन्द्र नाम धनुष पाया जो कि गाण्डीव धनुषही के समान है, व शार्ङ्ग धनुष के भी समानही है । ४ । क्योंकि देवताओंके तीनही धनुष दिव्य हैं एक वरुण देवताका गाण्डीवनाम धनुष, दूसरा माहेन्द्र नाम विजयधनु, तीसरा विष्णु देवता का शार्ङ्गनाम धनु जो दिव्य तेजोमयहै । ५ । इस धनुकी सेना के भयदायक शार्ङ्गनाम धनुषको कृष्णचन्द्रजी धारण करते थे, व खाण्डव वन में अर्जुनजी ने अग्नि से गाण्डीव धनुषपाया । ६ । व रुक्मीने वृक्षस विजयरूप माहेन्द्र धनुषपाया, और मोर पाशोंको तोड़ पराक्रमसे मुरनाम

CHAPTER CLVIII

Vaishampayan said that after the departure of Baldev, Rukmi the son of king Bhishmak, king of the southern country, of great glory, and golden haired friend of Indra, came there He had learnt archery from Hanuman who lived on Gandhmadan hill, who had kimpurushes and lions for his pupils and was truthful He possessed the bow known as Mahendra which was like Gandiv or Sharang bow. There were three famous bows of gods, namely, Gandiv the bow *of Varun, Mahendra and Sharang the bow of Vishnu, of great glory.* Krishn had in his possession Sharang bow the terror of the armies of the enemy, Arjun got Gandiv bow from Agni at Khandav forest and Rukmi got from a tree Mahendra bow the giver of victory. Krishn broke the nooses, killed the Daitya Mur by his prowess, destroyed

मौरवान् पाशान् निहत्यसुरमोजसा ॥ ७ ॥ निर्जित्य नरकं भौमं माहृत्य मणिकुण्डले। षोडश स्त्रीसहस्राणि रत्नानि विविधानिच ॥ ८ ॥ प्रतिपेदे हृषीकेशः शार्ङ्गंच धनुरुत्तमम्। रुक्मीतु विजयं लब्ध्वा धनुर्मेघ निभस्वनम् ॥ ९ ॥ विभीषयन्निव जगत् पांडवानभ्य वर्तत। नामृष्यत पुरा योसौ स्ववाहुबल गर्वितः ॥ १० ॥ रुक्मिण्या हरणं वीरो वासुदेवेन धीमता। कृत्वा प्रतिज्ञां नाहत्वा निवर्तिष्ये जनार्दनम् ॥ ११ ॥ ततोन्वधाव द्वार्ष्णेयं सर्वशस्त्र भृतांवरः। सेनया चतुरंगिण्या महत्या दूरपातया ॥ १२ ॥ विचित्रा युधवर्मिण्या गंगयेव प्रवृद्धया। ससमासाद्यवार्ष्णेयं योगानामीश्वरं प्रभुम् ॥ १३ ॥ व्यंसितो व्रीडितो राजन् नाजगाम सकुण्डिनम्। यत्रैव कृष्णेन रणे निर्जितः परवीर-

---

दैत्य को मार, नरकनाम भौमासुरको जीत, अदिति के मणि कुण्डल छीन, सोलह सहस्र एकसौ कन्यारत्न उसके यहां थे, सब को कृष्णचन्द्र ने ग्रहण कर। ८। फिर शार्ङ्गधनुषभी वहीं पाया, व मेघ के समान शब्द करने वाला विजयनाम धनु माहेन्द्र प्रसिद्ध रुक्मी ने पाया। ९। उस को बांधे जगत् भरको भयभीतहीसा कराता रुक्मी पाण्डवों के पास आया, जो कि अपने बाहु के बलसे दर्पितहो अगाड़ी कृष्णचन्द्रजी को भी नहीं सहसका। १०। जब कि वासुदेव धीमान् ने रुक्मिणी जीको हराया, इसने प्रतिज्ञाकीथी कि बिना कृष्णचन्द्र को मारडाले हम लौट कर इस शहरको न आवेंगे। ११। ऐसा कह सब शस्त्रधारियों में बड़े कृष्णचन्द्रजीके पीछे दौड़े संग में बड़ीभारी चतुरंगिनी सेना उसके साथथी, व दूरतक फैलीथी। १२। उस में सब लोग चित्र विचित्र आयुध धारण किये थे इस से वह सेना गंगाजी की धारा के समान, रुक्मी के पीछे २ चली, परन्तु योगियों के ईश्वर परम पुरुष कृष्णचन्द्रजी को पाय। १३। हारगये इस से ऐसे लज्जित हुये कि कुंडिनपुरको

Narak, seized from him the jewelled earrings of Aditi as well as the bow known as Sharang and released from his captivity the sixteen thousand and one hundred maidens. Rukmi got Mahendra bow, the giver of victory, whose sound was like that of thunder. Terrifying the whole world with that bow and setting at defiance Shri Krishna's strength in the pride of his power, Rukmi came to the Pandavas. 10. At the time when Vasudev had seized Rukmini, Rukmi her brother made a vow that he would not return to his native city without killing Krishn. The soldiers armed with various sorts o weapons, followed Rukmi like the currents of the Ganges and the Jamna but were defeated by Shri Krishn the lord of *yogis* and never returned to Kundinpur out of shame. So they built a very beautiful

हा ॥ १४ ॥ तत्र भोजकटं नाम कृतं नगर मुत्तमम् । सैन्येन महता तेन प्रभूतगजवाजि ना ॥ १५ ॥ पुरं तद्भुवि विख्यातं नाम्ना भोजकटं नृप । सभोजराजः सैन्येन महता परिवारितः ॥ १६ ॥ अक्षौहिण्या महावीर्यः पाण्डवान् क्षिप्रमागमत् । ततः सकवची धन्वी तली खड्गी शरासनी ॥ १७ ॥ ध्वजेना दित्य वर्णेन प्रविवेश महाचमूम् । विदितः पाण्डवेयानां वासुदेव प्रियप्सया ॥ १८ ॥ युधिष्ठिरस्तु तं राजा प्रत्युद्गम्याभ्य पूजयत् । स पूजितः पांडुपुत्रैर्यथान्यायं सुसंस्तुतः ॥ १९ ॥ प्रतिगृह्यतु तान् सर्वान् विश्रान्तः सहसैनिकः । उवाच मध्ये वीराणां कुन्तीपुत्रं धनञ्जयम् ॥ २० ॥ सहायोस्मिन् स्थितो युद्धे यदि भीतोसि पांडव । करिष्यामि रणे साह्य मसह्यं तव शत्रुभिः ॥ २१ ॥ नहि मे विक्रमे तुल्यः पुमानस्तीह कश्चन । हनिष्यामि रणे भागं यन्मे दास्य-

---

फिर नहीं गये, जहां कृष्णचन्द्रसे हारे थे । १४ । वहीं भोजकटनाम नगर बड़ा उत्तम बसाया, उसमें हजारों घोड़े हाथी रथादि सहित सेना टिकादी । १५ । वह पुर पृथ्वीभर में भोजकटनाम से प्रसिद्ध है वह भोजराज रुक्मी बड़ीभारी सेनाले जो कि एक अक्षौहिणीथी पाण्डवों के यहां आया, व कवच बखतर धनुष खड्ग धारण किये । १७ । सूर्यवत् प्रकाशित ध्वजसहित रथपर चढ़ा पाण्डवोंकी बड़ी भारी सेना में आया पाण्डव लोग उसे पहिले से जानतेही थे इस से कृष्णचन्द्र जी का सम्बन्धी जान । १८ । महाराज युधिष्ठिर जीने उठ बड़ा आगत स्वागत कर उसकी बड़ी पूजाकी जब पाण्डुपुत्रोंने उसकी बड़ी पूजा स्तुतिकी तो । १९ । उस सब पूजादिको ग्रहणकर व सेना सहित विश्राम कर, सभा के मध्य में बैठ कुन्तीजी के पुत्र अर्जुनजी से बोला । २० । हेपाण्डव इस बड़े युद्ध में हम सहाय करने पर स्थितहैं जो तुम युद्ध करने से डरतेहोवो तो हम असह्य सहाय तुम्हारी करें । २१ । व सब तुम्हारे शत्रुओं से तुमको बचावें क्योंकि विक्रम में हमारे तुल्य

---

city at the place where they were vanquished and lived evre there with thousands of horses, elephants and chariots. Their city is known far and wide as Bhojkat. That same Rukmi came to the Pandavas with an *akshauhini* of army and entered the camp of the Pandavas on a chariot shining like the sun with a banner over it. The Pandavas knew him to be the kinsman of Shrikrishn and all the brothers received him with great respect. When his army was put up and he had rested awhile, he spoke to Arjun the son of Kunti at the court of the Pandavas, saying. "Pandav! I have come to help you in this great war and will help you if you are afraid of it. I shall protect you from all your enemies, for there is none equal to me in prowess. I shall, without, doubt, kill all those that you will assign to

सि पाण्डव ॥ २२ ॥ अपि द्रोण कृपौवीरौ भीष्मकर्ण वयो पुनः । अथवा सर्व एवैते तिष्ठन्तु वसुधा धिपाः । २३ ॥ निहत्य समरे शत्रूंस्तव दास्यामि मेदिनीम् । इत्युक्तो धर्मराजस्य केशवस्यच सान्निधौ ॥ २४ ॥ शृण्वतां पार्थिवेन्द्राणा मन्येषांचैव सर्वशः । वासुदेवमभिप्रेक्ष्य धर्मराजञ्च पाण्डवम् ॥ २५ ॥ उवाचधीमान् कौन्तेयः प्रहस्य सखि पूर्वकम् । कौरवाणां कुले जातः पाण्डोः पुत्रो विशेषतः ॥ २६ ॥ द्रोणं व्यपदिशन् शिष्यो वासुदेव सहायवान् । भीतोस्मीति कथं ब्रूयां दधानो गाण्डिवं धनुः ॥ २७ ॥ युध्यमानस्य मे वीर गन्धर्वैः सुमहाबलैः । सहायो घोषयात्रायां कस्तदासीत् सखामम ॥ २८ ॥ तथा प्रतिभये तस्मिन् देवदानव संकुले । खाण्डवे युध्यमानस्य कः सहायस्त

कोई पुरुष यहां नहीं है, जितना भाग हम को इस रण में देंगे उसको हम मारडालें गे इस में कुछभी सन्देह नहीं है। २२ । चाहे द्रोणाचार्य कृपाचार्य व भीष्म कर्ण वे अलग २ हम से लड़ें तो पराजित करदेंगे व सब राजा एकहीसङ्ग आवें तोभी इन सबोंसमेत उनको पराजित करडालें गे । २३ । इसप्रकार समर में शत्रुओं को मार सब पृथ्वी तुम को देदेंगे, यह बात युधिष्ठिर जी व कृष्णचन्द्रजीके सामने अर्जुनजी से रुक्मी ने कही । २४ । व औरभी जो बड़े २ महाराज उस में थे वेभी इस बात को सुनते थे, यहसुन वासुदेव भगवान् व युधिष्ठिर जीकी ओर देख, सख्यता की रीतिपर हँसकर अर्जुनजी बोले कि, कौरवों के कुल में उत्पन्नहैं, फिर महाप्रतापी पाण्डुजी के पुत्रहैं, व द्रोणाचार्य के शिष्यहैं, उस में भी भगवान् कृष्णचन्द्रजीको सहायकपाय फिर गाण्डीव धनुष बांधे हम यह कैसे कहें कि हम भयभीतहैं । २७ । इस के सिवाय जब घोषयात्रामें महाबली गन्धर्वोंसे हम से युद्ध हुआ था तो हमारा कौन सखा सहायक हुआ था । २८ । फिर जब खाण्डववन में देवता दानव सब एकओरथे और हम एकओर थे तब हमारा कौन सहायकहुआ

---

me. I shall vanquish Dronacharya, Kripacharya, Bhishm and Karan, whether they face me singly or together. Having destroyed your enemies I shall give you the whole kingdom" Rukmi said the above words to Arjun in the presence of Yudhishthir, Shri Krishn and other great kings. Having heard the above, Arjun looked at Yudhishthir and Shree Krishn and replied in a friendly way with a smile, saying, "Being born in the Kaurava family, being the son of great Pandu and disciple of Droncharya, having Shree Krishn as helper and equipped with Gandiv bow, I can not say that I am afraid. I was alone when I fought against powerful Gandharvas in the country of cowherds. I had none to help me when gods and

दाभवत् ॥ २९ ॥ निवातकवचैर्युद्धे कालकेयैश्च दानवैः तत्र मे युध्यमानस्य कःसहायस्तदाभवत् ॥ ३० ॥ तथा विराटनगरे कुरुभिः सह संगरे । युध्यतो बहुभिस्तत्र कः सहायोऽभवन्मम ॥ ३१ ॥ उपजीव्य रणे रुद्रं शक्रं वैश्रवणं यमम् । वरुणं पावकञ्चैव कृपं द्रोणञ्च माधवम् ॥ ३२ ॥ धारयन् गांडिवं दिव्यं धनुस्तेजोमयं दृढम् । अक्षय्यशर संयुक्तो दिव्यास्त्रपरिबृंहितः ॥३३॥ कथमस्मद्विधो ब्रूयाद्भीतोऽस्मीति यशोहरम् । वचनं नरशार्दूल वज्रायुधमपिस्वयम् ॥ ३४ ॥ नास्मिभीतो महाबाहो साहायार्थश्चनास्तिमे । यथाकामं यथायोगं गच्छ वान्यत्र तिष्ठवा ॥ ३५ ॥ विनिवर्त्य ततो रुक्मी सेनां सागर सन्निभाम् । दुर्योधन मुपागच्छत्तथैव भरतर्षभ ॥ ३६ ॥ तथैव चाभि गम्यैन मुवाच

था।२९। फिर जब निवातकवच और कालकेय दैत्यों से हमने युद्ध किया तब कौन हमारा सहायक हुआ। ३०। फिर विराट के नगरमें भीष्मपितामहादि सब कौरव एक ओर थे व हम अकेले एक ओर उस समर में हमारा कौन सहायक हुआ था। ३१। फिर युद्ध के निमित्त रण में महादेवजी, इन्द्र, वरुण, यमराज, कुबेर, अग्नि, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य व बलभद्रजीको आराधनाकर। ३२। और तेजोमय बड़ा दृढ गाण्डीव दिव्य धनुष धारण कर, अक्षयबाण संयुक्त और भी बहुत से अस्त्रशस्त्र से संयुक्तहो। ३३। हम सरीखे पुरुष यश हरनेवाला ऐसा वचन कौन कहे कि हम रणकरनेसे भीतहैं, कौरवोंकी कौन गणना जो वज्र लेकर इन्द्रभी युद्ध करने को हमारे सामने आवें तो उनसे भी हम ऐसा न कहें कि हम डरगयेहैं। ३४। हेवीर हम कुछभी भयभीत नहींहैं न हमको सहायककी आवश्यकता है, इससे आपको जी चाहे चले जाइये व हमारी सेना से बाहर कहीं टिकिये। ३५। यह सुन कर रुक्मी सेना सहित दुर्योधन के पास गया और उससेभी वही कहा

gandharvas united against me at the forest of Khandava. Who helped me when I fought against Nivat Kavach Daityas? 30. I had none to help me when at the city of Virat I encountered all the Kauravas including Bhishm the grandfather and others. Having, for the sake of this battle gratified mahadev, Indra, Varun, Yamraj, Kuver, Agni, Kripacharya, Dronacharya and Halbhadra, and having got the hard Gandiv bow of great glory, inexhaustible arrows and many other weapons, I cannot utter forth the inglorious word of fear. I can not say that I shall be afraid even if Indra attacks me; the kauravas are in no count. I am not afraid, brave man, nor am I in need of a helper; you may either go away or stay outside our camp." Having heard this, Rukmi went away with his army to Duryodhan

वसुधाधिपः । प्रत्याख्यातश्च तेनापि सतद् शूरमानिना ॥ ३७॥ द्वावेवतु महाराज तस्मात् युद्धा दपेयतुः । रौहिणेयश्चवार्ष्णेयो रुक्मी च वसुधाधिप ॥ ३८॥ गते रामे तीर्थयात्रां भीष्मकस्य सुते तथा । उपाविशन् पाण्डवेया मन्त्राय पुनरेवच ॥ ३९ ॥ समितिर्धर्मराजस्य सा पार्थिव समाकुला । शुशुभे तारकैश्चित्रा द्यौश्चन्द्रेणेव भारत ॥ ४० ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि रुक्मिप्रत्याख्याने अष्टपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १५८ ॥

जनमेजय उवाच ॥ तथा व्यूढेष्वनीकेषु कुरुक्षेत्रे द्विजर्षभ । किमकुर्वश्चकुरवः कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ १ ॥ वैशम्पायन उवाच । तथाव्यूढेष्वनीकेषु यत्तेषुभरतर्षभ । धृतराष्ट्रो महाराज सञ्जयं वाक्यमब्रवीत् ॥ २॥ एहि सञ्जयसर्वं मे आचक्ष्वानवशेषतः । सेनानिवेशे यद्वृत्तं कुरुपाण्डवसेनयोः ॥ ३ ॥ दिष्टमेव

जैसा अर्जुन से कहाथा दुर्योधन ने भी यही उत्तर दिया कि तुझको सहाय की आवश्यकता नहीं है यह सुनकर रणक्षेत्र से इकधरकी नाईं मन में पछताता हुआ चला गया, बलदेव तीर्थ यात्राको गये और रुक्मी अपने घर गया और पाण्डवों ने सलाह करने को फिर सभा जोड़ी जो कि ऐसी शोभायमान लगतीथी जैसे चन्द्रमा और तारे आकाश में चमकतेहैं । ४० ।

अध्याय ॥ १५९ ॥

जनमेजयजीने पूंछा कि जब सबसेना समूह बनाय इसप्रकार युद्ध करनेपर उद्यतहुये तब धृतराष्ट्र तथा और कौरवोंने क्या किया । १ । वैशम्पायनजी बोले जब उसप्रकार सबसेना युद्धकरनेको तैयारहुई तो हे महाराज राजाधृतराष्ट्र संजय से यहवचन बोले कि । २ । हे संजय तुम यहांआवो कौरवों पांडवोंके सेनानिवेश

But he too, did not like to humiliate himself before him and said that he had no need of his help. Thus the two warriors, Baldev and Rukmi went away without fighting with an unhappy mind. Baldev went to holy places and Rukmi went home. After their departure the Pandavas again assembled in council and the assembly looked a collection of the moon and stars. 40.

CHAPTER CLIX

Janmejaya asked of Vaishampayan as to what had *Dhritrashtra* and other Kauravas done when the armies were thus prepared for battle and Vaishampayn replied that when the armies were thus prepared, Dhritrashtra said to Sanjaya, "Come to me, Sanjaya, and tell me all about the camps of the Kauravas and the Pandavas.

पर मन्ये पौरुपञ्चाप्यनर्थकम् । यद्द युध्यमानोपि युद्धदोषान् क्षयोदयान् ॥ ४ ॥ तथापि निकृतप्रज्ञं पुत्रं दुर्यूतदेविनम् । न शक्नोमि नियन्तुं वा कर्तुं वा हित मात्मनः ॥ ५ ॥ भवत्येव हि मे सूत बुद्धिर्दोषानुदर्शिनी । दुर्योधनं समासाद्य पुन सा परिवर्त्तते ॥ ६ ॥ एव गते वै यद्भावि तद्भविष्यति सञ्जय । क्षत्रधर्म किल रणे तनुत्यागो हि पूजित ॥ ७ ॥ सञ्जय उवाच ॥ त्वद्युक्तोयमनुप्रश्नो महाराज यथेच्छसि । न तु दुर्योधने दोष मिममाधातुमर्हसि ॥ ८ ॥ शृणुष्वानव शेषेण वदतो मम पार्थिव । य आत्मनो दुश्चरितादशुभ प्राप्नुयान्नर न सकालं नवा देवा नेनंसागन्तु मर्हति ॥ ९ ॥ महाराज मनुष्येषु निन्द्यं य सर्वमाचरेत् । सवध्य सर्वलोकस्य निन्दितानि समाचरन् ॥ १० ॥ निकारा मनुजश्रेष्ठ पाण्डवैस्त्वत्

होनेपर जो वृत्तहोताहो वह संपूर्ण हमसे कहो । ३ । हम भाग्यहीको श्रेष्ठ मानतेहैं व पौरुषको निरर्थक, क्योंकि हम क्षयफल देनेवाले युद्धके दोषोंकोजानतेभी हैं, तिस परभी कपटी दुष्टजुआरी अपने पुत्रको न रोंकसक्ते हैं न अपनाहितकरसक्तेहैं । ५ । हे सजय हमारी बुद्धि इन सबदोषोंको देखती है परन्तु दुर्योधनकोपाय फिर लौट आती है फिर दोषोंको नहीं विचारती । ६ । इससे अब जो होनेवालाहै वहीहोगा रण में तो क्षत्रियकाही धर्म प्रसिद्धहै जोकि शरीरका त्याग हानाय वही ठीकहै ।७। इतनासुन संजयजी बोले कि हे महाराजजो तुम्हारा किया यह प्रश्न है व जो तुम चाहतेहो तो यहदोष दुर्योधनमें स्थापितकरने के योग्य नहींहो । ८ । हे राजन् अपने किये पापसे मनुष्य जो अशुभ पाता है वह हम कहते हैं एकाग्रचित्त होकर सुनो । ९ । हे महराज मनुष्यों में जो निन्द्यकर्म करता है यह भाग्य दैव किसी को कुछ नहीं कहसक्ता व जो निन्दित कर्म करता वह सबसे वध्यहोता व समस्त

I know Fate to be all powerful and think prowess to be a useless thing; for although I know the evil consequences of fighting, I cannot, to avoid destruction, check my sons who are wicked gamblers knowing all these evil consequences, my intellect forgets them when it comes in contact with that of Duryodhan. Let things have their course, for it is good for a kshatrya to die fighting." "You have asked me to speak, king, and therefore I say that to attribute all this fault to Duryodhan alone, is improper For," said Vaishampayn, "I shall tell you the consequences of one's own faults, if you will hear me attentively. The sins committed by human beings are no part of the working of fate, and he who commits them is liable to be killed by every one else. 10. The Pandavas have suffered many

प्रतीक्षया । अनुभूताः सहामात्यैर्निकृतैरधिदेवने ॥ ११ ॥ हयानाञ्च गजानाञ्च राज्ञाञ्चामिततेजसाम् । वैशसं समरे वृत्तं यत्तन्मे शृणु सर्वशः ॥ १२ ॥ स्थिरो भूत्वा महाप्राज्ञ सर्वलोकक्षयोदयम् । यथाभूतं महायुद्धे श्रुत्वा चैकमना भव ॥ १३ ॥ न ह्येव कर्त्ता पुरुषः कर्मणोः शुभपापयोः । अस्वतन्त्रोहिपुरुषः कार्यते दारुयन्त्रवत् ॥ १४ ॥ केचिदीश्वरनिर्दिष्टाः केचिदेव यदृच्छया । पूर्वकर्मभिरप्यन्येत्रैधमेतत् प्रदृश्यते । तस्मादनर्थमापन्नः स्थिरो भूत्वा निशामय ॥ १५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि सैन्यनिर्याणपर्वणि सञ्जयवाक्ये ऊनषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १५९ ॥

समाप्तञ्च सैन्यनिर्याणपर्व ॥

जाता है । १० । हे मनुज श्रेष्ठ पांडवोंने तुम्हारी मतीक्षासे बड़े निरादर भोगे जो कि तुमने जुआखेलवाय उनका निरादर कराया । ११ । जो इससमरके निमित्त हाथी घोड़े रथ व अमिततेजस्वी राजाओंका नाशहोगा वह हमवतातेहैं सुनो ।१२। अब स्थिरहो सब लोकके नाशकरनेवाले इस युद्धके समाचार एकाग्र मनकरके सुनो । १३ । शुभ व पापकर्मका कर्त्ता कोई पुरुष नहीं है, इनदोनोंके करनेमें यह पुरुष पराधीनहै क्योंकि कठपुतलीके समान जबरदस्ती प्रेरक इससे कार्य कराताहै । १४ । कोईर तो ईश्वरकी आज्ञासे शुभ व अशुभ करते हैं, व कोईर अपने मनसे करतेहैं, कोईर पूर्वजन्मके कर्मों के अनुकूल करतेहैं, तीनों धर्म लोगों में देखपड़ते हैं । १५ । तिससे अब माप्त अनर्थको स्थिर होकर सुनो, हम कहते हैं ॥ १६ ॥

wrongs from you, best of men: you instigated them to play at dice and then insulted them. Hear what destruction of elephants, horses, chariots and glorious kings is about to befall in the ensuing battle; hear attentively the results of this world-destroying war. People donot commit good and bad deeds by themselves; man is dependent on others for his actions, playing like a doll in the hands of others: some works are done by the order of God, others by order of the mind and the rest are done as a consequence of the deeds done in a former birth. All the three are seen every day among human beings. Hear the impending evil with attention." 16.



अथ उलूकदूतागमनपर्व ॥

सञ्जय उवाच ॥ हिरण्वत्यां निविष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु । न्यविशन्तमहाराज कौरवेयायथाविधि ॥ १ ॥ तत्र दुर्य्योधनो राजा निवेश्य बलमोजसा । संमान यित्वा नृपतीन् न्यस्य गुल्मांस्तथैवच ॥ २ ॥ आरक्षस्य विधिं कृत्वा योधानांतत्रभारत कर्णं दुःशासनञ्चैव शकुनिञ्चापि सौबलम् ॥ ३ ॥ आनाय्यनृपतिस्तत्र मन्त्रयामास भारत । तत्र दुर्योधनो राजा कर्णेन सह भारत ॥ ४ ॥ सम्भाषित्वाच कर्णेन भ्रातादुःशासनेनच । सौबलेनच राजेन्द्र मन्त्रयित्वा नरर्षभ ॥ ५ ॥ आहूयो पह्वरे राजन्नुलूकमिद मब्रवीत् । उलूक गच्छ कैतव्य पांडवान् सह सोमकान् ॥६॥ गत्वाममवचोब्रूहि वासुदेवस्यशृण्वतः । इदंतत्समनुप्राप्तं वर्षपूगाभिचिंतितम् ॥ ७ ॥ पाण्डवानांकुरूणांच

अध्याय ॥ १६० ॥

सञ्जय बोले कि महाराज जब पांडवलोग आय हिरण्यवती नदीके समीप सेनानिवास बनाय उतरे तो तब कौरवलोग भी विधि पूर्वक उसीके थोड़ी दूरपर बसे । १ । वहां राजा दुर्योधनने अपने पराक्रमसे सेना स्थापितकर राजाओं का बड़ाभारी मानकर फिर सैन्योंका विन्यास किया। २ । फिर उनकी रक्षाके लिये योधा नियतकर कर्ण दुश्शासन व सुबलके पुत्र शकुनिको । ३ । बुलाय व सब राजाओंको बुलाय बड़ीभारी सम्मतकी वहां कर्णसहित राजादुर्योधनने कर्ण दुश्शासन व शकुनिके साथ सम्मतकिया । ५ । फिर एकांत में उलूकको बुलाय उससे यह बोले कि हे कैतव्य उलूक तुम पांडव चन्द्रवंशी दोनोंके पास जावो । ६ । और जाय वासुदेव को सुनाय हमारी ओरसे यह कहो कि जो तुम बहुत दिनों से विचारतेथे उसका समय आगयाहै । ७ । पांडवों कौरवों का यह बड़ा भयङ्कर

CHAPTER CLX

"Maharaj," Continued Sanjaya, when the Pandavas had set up their camp at the bank of the Hiranyavati, the Kauravas were put at a short distance from them and having put the camp in order, Duryodhan looked after the comforts of the kings and the army with great care. Having stationed guards to protect the camp, he summoned Karan, Dushasan and Shakuni the son of the Suval to the great council room and setttled with their help the points of importance. After this he summoned Uluk to his presence and directed him to carry the following message to the court of the Pandavas and to render it in the presence of Shri Krishna:—"Tell them," said he, "that the time has now come for which they

युद्धलोकभयंकरम् । यदेतत् कत्थनावाक्य सञ्जयो महदब्रवीत् ॥८॥ वासुदेवसहायस्य गर्जतः सानुजस्यते । मध्ये कुरूणांकौन्तेय तस्य कालोयमागत ॥ ९ ॥ यथाव सम्प्रति ज्ञात तत् सर्वं क्रियतामिति । ज्येष्ठ तथैव कौन्तेय ब्रूयास्त्व वचनान्मम ॥ १० ॥ भ्रातृभि. सहित सर्वै सोमकैश्च सकेकयै । कथ वा धार्मिकोभूत्वा त्वमधर्मेमन.कृथा. ११ य इच्छसि जगत् सर्वं नश्यमान नृशसवत् । अभय सर्वभूतेभ्यो दाता त्वमिति मे मति ॥ १२ ॥ श्रूयते हि पुरा गीत श्लोकोय भरतर्षभ । प्रह्लादेनाथ भद्रन्ते हृते राज्येतु दैवतै ॥ १३ ॥ यस्य धर्मध्वजो नित्य सुराध्वज इवोच्छ्रित. । प्रच्छन्नानि च पापानि वैडाल नाम तद्व्रतम् ॥ १४ ॥ अत्रते वर्त्तयिष्यामि

युद्ध अब होगा, जिसके लिये तुमने अपनी बड़ी गर्जनाकी थी सब समाचार सञ्जय ने आप हम से कहा है । ८ । और अर्जुन से कहना कि वासुदेव को सहायपाय भाई सहित तुमने कौरवों के बीचमें जय गर्जनाकरके कहाथा उसका यह काल आगया है । ९ । जैसे तुमलोगों ने प्रतिज्ञा की है कि दुश्शासन का रुधिर पान करेंगे व दुर्योधनका पैर तोडडालेंगे अब वह सब करो सब से ज्येष्ठ कौन्तेय युधिष्ठिर से भी हमारी ओरसेऐसेकहना । १० । कि सब भाइयों सहित व सोमवंशियों समेत कृष्णचन्द्रजी व केकयवंशियों की सहायता पाय धर्मात्मा होकर तुम अधर्म करने में कैसे मन करतेहो । ११ । जो कि इस सबजगत्को नश्यमान करना चाहतेहो जैसे कोई क्रूर मनुष्य चाहे, हमतो जानतेथे कि तुम सब प्राणियों के अभयदाताहो । १२ । हे भरतर्षभ, इस विषय में प्रह्लादजी का गाया यह श्लोक सुनाई देताहै, जब देवताओंने उनका राज्य हरलिया था, तब उन्होंने गायाहै । १३ । कि हे देवताओ जिसका धर्म तो ध्वजाके समान ऊंचाहो सबकोई दूरसे देखतेहों और गुप्त पाप करताहो वह बैडालव्रत रहाताहै । १४ । इस विषयमें

---

have been expecting so long and that the great war between the Kauravas and the Pandavas of which they boasted before Sanjaya, will happen Tell Arjun that the time has now come to realise his hope which he, relying on Shri Krishn's assistance had thundered forth at the Kaurava court. Tell Yudhishthir, the eldest of the sons of Kunti, to remember the vows of the Pandavas, to drink the blood of Dushasan and to break the thigh of Duryodhan. Ask Yudhishthir the reason of his intending to act against dharm in spite of his having all his brothers and the descendants of Som together with Krishn on his side. 'We knew you to be the protector of the world, but you seem intent on destroying it.' Tell him the purport of the following verse which Prahlad said when his kingdom

ख्यान मिदमुत्तमम् । कथितं नारदेनेह पितुर्मम नराधिप ॥ १५ ॥ मार्जारः किल दुष्टात्मा निश्चेष्टःसर्व कर्मसु । ऊर्ध्वबाहुः स्थितो राजन् गङ्गातीरे कदाचन ॥ १६ ॥ स वै कृत्वा मनः शुद्धिं प्रत्ययार्थं शरीरिणाम् । करोमि धर्म मित्याह सर्वानेव शरीरिणः ॥ १७ ॥ तस्य कालेन महता विश्रम्भं जग्मुरण्डजाः। समेत्यच प्रशंसन्ति मार्जारं तं विशाम्पते ॥ १८ ॥ पूज्यमानस्तु तैःसर्वैः पक्षिभिः पक्षिभोजनः। आत्मकार्यं कृतं मेने चर्यायाश्च कृतंफलम् ॥१९॥ अथदीर्घस्यकालस्य तंदेशं मूषिकाययुः । ददृशुस्तञ्चते तत्र धार्मिकं व्रतचारिणम् ॥ २० ॥ कार्येण महता युक्तं दम्भयुक्तेन भारत। तेषां मतिरियं राजन्नासीत्तत्र विनिश्चये ॥ २१ ॥

यह इतिहास कहतेहैं, जो कि नारदजी ने हमारे पिताजी से कहाथा । १५ । गङ्गा जीके तीर एक दुष्टात्मा बिलार रहताथा जो कि कुछ भी कर्म नहीं करताथा केवल हाथपै हाथधरे बैठा रहताथा, व बहुधा ऊपरको दोनोंहाथ उठायेरहता।१६। उसने सब प्राणियोंकी प्रतीति के लिये मन शुद्धकर सब प्राणियों से कहा कि हम धर्म करते हैं । १७ । उस बिलारके विश्वासमें बहुतकालके पीछे कुछ पक्षीलोग आये, वे सब इकट्ठेहो उस बिलार की बड़ाई करनेलगे । १८ । व सब पक्षी उसकी पूजा करनेलगे वह पीचपाप पक्षियों को खानेलगा, अपने कार्यको उसने किया माना उनको पूजाकाफल उन्हें देनेलगा दो चारको रोज चखजाय । १९ । बहुत दिनों के पीछे वहां एक मूषों की समाज आई, उन्हों ने देखा कि भाई यह तो बड़ा धर्मात्मा बिलारहै देखो कैसा व्रतकरता है वह अपने बड़ेभारी कार्यको बड़े दम्भसे सिद्धकरता । २० । और उन मूषों ने विचारा कि हमलोगों के बहुत मित्र

---

was seized by gods:—"He who makes show of his virtue and practices sin in secret, is said to behave like a cat." Tell him also the following historical account which Narad said to my father. There lived at the bank of the Gamges a wicked cat who did nothing and sat with one hand over the other or with both hands raised high. To make others believe he feigned virtue. After some time a few birds believed him and praised his greatness. They worshipped him and thus he found time to eat them up. The result of their worshipping him was that he became successful in his attempt and would devour two or three of the them every day. After a time there came to the place an assembly of mice who witnessed the sanctity and observances of the cat as he worked with great cunningness. 20. The mice believed that they had many friends and that he was their

वहुमित्रावयं सर्वे तेषां नो मातुलो ह्ययम् । रक्षां करोतु सततं वृद्धवालस्य सर्वदा ॥ २२ ॥ उपगम्यतु ते सर्वे विडालमिदमब्रुवन् । भवत् प्रसादादिच्छामश्चर्तुञ्चैव यथासुखम् ॥ २३ ॥ भवान्नो गतिरव्यग्रा भवाधः परमः सुहृत् । ते वयं सहिताः सर्वे भवन्तं शरणङ्गताः ॥ २४ ॥ भवान् धर्मपरो नित्यं भवान् धर्मे व्यवस्थितः । सनो रक्ष महाप्रज्ञ त्रिदशानिव वज्रभृत् ॥ २५ ॥ एवमुक्तस्तु तैः सर्वैर्मूषिकैःस विशाम्पते । प्रत्युवाच ततः सर्वान्मूषिकान्मूषिकान्तकृत् ॥ २६ ॥ द्वयोर्योगं न पश्यामि तपसो रक्षणस्यच । अवश्यन्तु मया कार्य्यं वचनं भवतां हितम् ॥२७॥ युष्माभिरपि कर्त्तव्यं वचनं मम नित्यशः । तपसास्मि परिश्रान्तो दृढं नियममा

हैं यह हम सबोंका मामाहै । २१ । इससे हम लोगों में जो वृद्ध व बालहों उनसबों की रक्षा यह मामा कियाकरे, यह विचार विडालके पास जाय सबकेसब बोले, कि आपके प्रसादसे हमलोग सुखपूर्वक चराचाहते हैं । २२ । आपही हमलोगोंकी अव्यग्रगतिहैं, व आपही हमारे परमसुहृद्हैं इससे हमसब इकट्ठेहो आपके शरणमें आयेहैं । २३ । आपसदा धर्म में परहैं वआप धर्म में व्यवस्थितहैं अब हमलोगोंकी रक्षाकीजिये जैसे देवताओंकी इंद्ररक्षाकरतेहैं ।२४। जब इसप्रकार सबमूषोंने उससे आप ऐसा कहा तो वह उनका वैरी उन सब मूर्ख मूषोंसे बोला । २५ । कि यद्यपि तपस्या करना व मूषकोंकी रक्षाकरना दोनों काम एकसङ्ग नहीं होसक्ते पर क्या करें तुमलोगों के गौरवसे रक्षाकरेंगे चाहे तपस्याहो वा नहो । २६ । परन्तु हमतो तुमलोगों के वचनसे तुम्हारे बालवृद्धों की रक्षाकरते हैं तुमभी नित्य हमारेवचन करतेरहना क्योंकि वडादृढ़ नियम करते २ हम तपकरने से बनाय थकगयेहैं । २७। इससे अब चलने की कोई शक्ति अपने वूते नहीं देखते इससे हमको प्रतिदिन

---

maternal uncle. So they resolved to entrust to his care the protection of their families and with that view they went to him and said "We are desirous of living here in happiness. You are our leader and friend and we have come under your protection. You are virtuous and can protect us as Indra does gods." The enemy of mice said to them in reply, "It is very difficult for me to perform asceticism and to look after the mice at one and the same time, yet I feel it to be my duty to look after your comforts at the sacrifice of asceticism. I consent to protect your wives and children, but you in return are to obey my orders. I have become too weak on account of my observances and therefore your old and young people should carry me every day to the river side." The mice agreed at

स्थित ॥ २८ ॥ न चापि गमने शक्तिं काश्चित् पश्यामि चिन्तयन्। सोस्मि नेय सदा ताता नदीकूलमितः परम् ॥ २९ ॥ तथेति त प्रतिज्ञाय मूषिका भरतर्षभ। वृद्धवालमथो सर्वं मार्ज्जाराय न्यवेदयन् ॥ ३० ॥ तत स पापो दुष्टात्मा मूषिकानथ भक्षयन्। पीवरश्च सुवर्णश्च दृढवन्धश्च जायते ॥ ३१ ॥ मूषिकाणांगण श्चात्र भृश सक्षीयतेऽथसः। मार्जारो वर्धते चापि तेजोवलसमन्वितः ॥ ३२ ॥ ततस्ते मूषिकाः सर्वे समेत्यान्योन्यमब्रुवन्। मातुलो वर्धते नित्यं वयं क्षीयामहे भृशम् ॥ ३३ ॥ तत प्राज्ञतम कश्चिद् डिण्डिको नाम मूषिक। अब्रवीद्वचन राजन् मूषिकाणां महागणम् ॥ ३४ ॥ गच्छतावो नदीतीर सहितानां विशेषत। पृष्ठतोऽह गमिष्यामि सहैव मातुलेनतु ॥ ३५ ॥ साधुसाध्विति ते सर्वे पूजयाञ्च

यहांसे नदीके तीरतक तुमलोग व तुम्हारे वाल वृद्ध ये सब पहुँचादियाकरें। २८। उन सब मूषकों ने इसवातकी प्रतिज्ञाकर अपने वाल वृद्धों को काप विलाकके सौंपने किया। २९। तब यह पापी दुष्टात्मा मार्जार मूषकोंको खाताहुआ वहुतमोटा ताजा होगया रूप वनाय दगदगाय उठा और बड़ा पुष्टशरीर होगया। ३०। धीरे धीरे मूषकों का झुड तो न्यूनतापर पहुँचा और विलार तेज वल सहित वढ़ने लगा। ३१। तब सब मूषक आपसमें इकठेहो कहनेलगे कि मामातो नित्य वढते जाते हैं और हमलोग क्षीणहुयेजातेहैं। ३२। उन में एक डिण्डिक नाम मूषक वड़ा ज्ञानीथा वह सब मूषकोंके झुण्डसे वोला कि। ३३। तुम सवमने एकही साथ नदीके कूलार चलो और पीछेसे मामाके साथ हमभी आतेहैं। ३४। वहुत अच्छा अच्छा कह सबोंने डिण्डिक के वचनकी बड़ाई की, व अर्थयुक्त उसके वचन सबोंने किये। ३५। जब सब आगे चलेगये तो डिण्डिक अकेला रहगया

---

this proposal and entrusted their old and young folk to the keeping of the cat. The sinful and wicked cat fed upon the mice and became very fat and strong. 30. Gradually the number of mice diminished as the cat advanced in strength. Thereupon the mice held a consultation together and said to each other, "Our maternal uncle is becoming sleeker and sleeker every day and our number is getting thinner and thinner." Now there was among them a very wise rat, named Dindik, who addressed the assembly as follows:—"You should all go to the river side and I shall come with uncle after you." All praised Dindik's sagacity and applauded his words. When Dindik was left alone after them, the cat made a meal of him. Thereupon the mice held a council An old mouse, named Kokil,

क्रिरे तदा । चक्रुश्चव यथान्याय डिण्डिकस्य वचोर्थवत् ॥ ३६ ॥ अविज्ञानात्तत सोथ डिण्डिक ह्युपभुक्तवान् । ततस्ते सहिता सर्वे मन्त्रयामासुरञ्जसा ॥ ३७ ॥ तत्र वृद्धतमः कश्चित् कोलिको नाम मूषिक । अब्रवीद्वचन राजन् ज्ञातिमध्ये यथातथम् ॥ ३८ ॥ न मातुलो धर्मकामश्छद्ममात्र कृता शिखा । न मूलफलभक्षस्य विष्ठा भवति लोमशा ॥ ३९ ॥ अस्य गात्राणि वर्धन्ते गणश्च परिहीयते । अद्य सप्ताष्टदिवसान् डिण्डिकोपि न दृश्यते ॥ ४० ॥ एतच्छ्रुत्वा वच सर्वे मूषिका विप्रदुद्रुवु । बिडालोपि सदुष्टात्मा जगामैव यथागतम् ॥ ४१ ॥ तथा त्वमपि दुष्टात्मन् बैडाल व्रतमास्थित । चरसि ज्ञातिषु सदा बिडालो मूषिकेष्विव

बिडालने उसको भक्षण कर लिया तब सब इकट्ठेहो आपस में सम्मत करनेलगे उनमें एक सबोंसे बुड्ढा कोलिक नाम मूषकथा । ३६ । वह अपनी जातिवालोंके बीचमें यथातथ्य वचन बोला कि मामाने धर्मकी कामनासे तपस्वी का वेष नहीं धारणकिया किन्तु अपनी जीविका के लिये ऐसा कियाहै जिसमें लोग विश्वास मानें शत्रुभी विश्वस्तहो हमारे पास आवें हम उनको चबजावें । ३७ । जो मूल फल खाताहै उसकी विष्ठामें रोवां नहीं होते और मामाके अङ्ग बढजाते व मूषकों का गण कम होता चलाजाताहै । ३८ । आज सात आठदिन से डिण्डिक भी नहीं दिखाई देता, यह सुन सब मूषक भगखडे हुये । ३९ । और वह दुष्टात्मा बिडालभी जहा से आयाथा वहा चलागया उसीप्रकार हे दुष्टात्मन् तुम भी बैडालव्रतको धारणकियेहो । ४० । जैसे बिडाल मूषकों को खाता चलाजाताथा वैसेही तुमभी ज्ञातिवालोंके संग कियाचाहतेहो, क्योंकि तुम्हारे वचन तो और प्रकारके हैं, व कर्म्म और प्रकार के दिखाई देतेहैं । ४१ । लोकके दिखावके अर्थ तुमने वेद पढे, और इन्द्रियों को अपनी वशमें किया, पर अब वह सब छोड़

stood up and said, Our uncle has not become an ascetic for the sake of Dharm. He has taken all this trouble to fill his belly and *to decieve us. He who eats roots and fruits* cannot drop hair with his dung. Our uncle is increasing everyday in size and our number is decreasing We have not seen *Dindik for these seven or eight* days." At this speech there was a general flight among the mice and the cat went his own way. You, Sir, wish to do to your kinsmen as the cat *did to the mice, for your deeds* belie your words. You have read the Vedas and have a control over your organs of senses for mere show. You have now set aside all thought but that of fighting. Being a virtuous man you must do all things and should not hesitate to conquer the country with the strength of

राजन् रामाय समरायच ॥ ४९ ॥ तस्यायमागतः कालः समरस्य नराधिप । एतदर्थं मया सर्वं कृतमेतद्युधिष्ठिर ॥ ५० ॥ किन्नुयुद्धात् परं लाभं क्षत्रियो बहु मन्यते । किञ्चत्वं क्षत्रियकुले जातः सम्प्रथितो भुवि ॥ ५१ ॥ द्रोणादस्त्राणिसम्प्राप्य कृपाच्च भरतर्षभ । तुल्ययोनौ समबले वासुदेवं समाश्रितः ॥ ५२ ॥ ब्रूयास्त्वं वासुदेवश्च पाण्डवानां समीपतः । आत्मार्थं पाण्डवार्थंच यत्तोमांप्रतियोधय ॥ ५३ ॥ सभामध्ये च यद्रूपं मायया कृतवानसि । तत्तथैव पुनः कृत्वा सार्जुनो मामभिद्रव ॥ ५४ ॥ इन्द्रजालञ्च मायां वै कुहका चापि भीषणा । आत्तशस्त्रस्य संग्रामे वहन्ति प्रतिगर्ज्जनाः ॥ ५५ ॥ वयमप्युत्सहामद्यां खञ्च गच्छेममायया । रसातलं विशामोपि ऐन्द्रं वा पुरमेवतु ॥ ५६ ॥ दर्शयेमच रूपाणि स्वशरीरे बहु

लाभो युद्धही करें । ४९ । और तुमभी क्षत्रियकेही कुलमें उत्पन्न हो और पृथ्वीपर वीर करके प्रसिद्धहो । ५० । फिर द्रोणाचार्य कृपाचार्य से अस्त्रपाया तोभी बराबर जातिवाले व समपराक्रम वासुदेव के शरणमें जाय परचो । ५१ । पांडवों के समीप बैठेहुये कृष्णचन्द्रसे भी हमारी ओरसे कहना, कि अपने अर्थ व पांडवों के अर्थ तैयारहो हमारेसाथ पांडवों को लड़ावो । ५२ । सभाके मध्यमें मायासे जो रूप तुमने धारण कियाथा, वह वैसाही फिर कर अर्ज्जुनसहित हमारे ऊपर दौड़ो । ५३ । इन्द्र जाल व माया व भयंकर कृत्या ये सब शस्त्राञ्च धारणकिये युद्ध करनेवाले के सामने केवळ कोपही करातेहैं कुछ भय नहीं देसक्ते । ५४ । हमभी मायामे स्वर्ग को चलेजायसक्ते व आकाशको भी जासक्ते हैं रसातळमें भी प्रवेशकर जासक्ते हैं, व इन्द्रकीपुरी को भी जासक्तेहैं । ५५ । व हमभी अपने शरीर में बहुत से रूप दिखासक्तेहैं, परन्तु मनुष्यकी बुद्धि सदा सिद्धिहीको नहीं प्राप्तहोती । ५६ । मन

---

war above all things and therefore have taken all this trouble. Let us fight. You are born in a Kshatrya family and are a great warrior. 50. Having learnt the art of war from Dronacharya and Kripacharya you have taken refuge with Vasudev who is your brother Kshatrya of equal prowess with you! Tell Shree Krishn, whom you will find in the court of the Kauravas, that for his own sake and for the sake of the Pandavas, he should prepare the Pandavas to fight. Let him come upon us along with Arjun in the shape which he assumed at our court by jugglery. One practicing deceit, jugglery and tricks in fighting, causes anger and not fear among warriors. I, too can go to sky, beneath the earth and to the region of Indra to deceive others. I, too, can assume many shapes, but the wisdom of all

॥ ४२ ॥ अन्यथाकिल ते वाक्यमन्यथा कर्म दृश्यते । दंभनार्थाय लोकस्य वेदाथो पशमश्च ते ॥ ४३ ॥ त्यक्त्वाछद्म त्विदं राजन् क्षत्रधर्मं समाश्रितः । कुरुकार्याणि सर्वाणि धर्मिष्ठोसि नरर्षभ ॥ ४४ ॥ बाहुवीर्य्येण पृथिवीं लब्ध्वाभरतसत्तम । देहि दानं द्विजातिभ्य. पितृभ्यश्च यथोचितम् ॥ ४५ ॥ क्लिश्यमाना वर्षपूगांश्च मातुर्मातृाहते स्वतः । प्रमार्ज्जाश्रु रणे जित्वा संमानं परमावह ॥ ४६ ॥ पञ्च ग्रामा वृता यत्नाद्यास्माभिरपवर्जिताः । युध्यामहे कथं सङ्ख्ये कोपयेमच पाण्डवान् ॥ ४७ ॥ त्वत्कृते दुष्टभावस्य सन्त्यागो विदुरस्य च । जातवे च गृहे दाहं स्मरत पुरुषो भव ॥ ४८ ॥ यच्च कृष्णमवोचस्त्वमायान्तं कुरुसंसदि । अयमस्मिस्थितो

हे युधिष्ठिर छलसे आप क्षत्रधर्म्म करनेलगे । ४२ । तुमतो बड़े धर्म्मिष्ठहो सब कर्म्म करो, बाहुके वीर्य्य से पृथ्वी लो वश आगे पीछे करतेहो । ४३ । पृथ्वी कोपाय अब ब्राह्मणोंको दानदो, व पितरोंकी भी श्राद्धादि करो व बहुतदिनों से क्लेश में पड़ी हुई अपनी माताके हितपर टिको । ४४ । रणमें शत्रुओं को जीत माताके आंशुपोंछो व बड़े सम्मानको पावो यदाकरो यत्न से पांचग्राम मांगेथे उतने भी हमने न दिये । ४५ । विदुर कहतेथे कि पाण्डवों के संग हम कैसे लड़ेंगे और उन को कैसे कोपकरावेंगे, इस से तुम्हारेही लिये दुष्टभाव विदुर का हमने परित्याग कर दिया । ४६ । लाक्षाभवनमें जो तुमलोगों को हमने जलवाडालाथा उसका स्मरणकर पुरुष होवो और जब कृष्ण कौरवों की सभाको आनेलगेथे तब तुमने जो कहाथा कि । ४७ । हम शान्तहाने और संग्रामकरने दोनोंपर तैयारहैं हे राजन् उससमरका यहकाल आगयाहै । ४८ । हे युधिष्ठिर इसीलिये हमने भी सब किया है कि क्षत्रिय युद्धही को बहुत मानते हैं उससे पर कुछ लाभ मानतेही नहीं

---

your arms. Having conquered the land you should give it in charity to Brahmans; should please the manes of your ancestors and should look after the comforts of your mother whom you have forsaken so long. You must wipe away the tears of your mother by conquering the enemies and gain credrt in the world. You asked of me only five villages, but I was loath to give them to you. Vidur said that *it was difficult to fight with the Pandavas as well as to make* them fight with us. For your sake, we have given up wicked Vidur. Remember the house which we built with inflammable materials to burn you, and be men. At the time of the coming of Krishn to the court of the Kauravas you said that you were prepaired to fight as well as to make peace; the time has now come for fighting. We like

राजन् शमाय समरायच ॥ ४९ ॥ तस्यायमागतः कालः समरस्य नराधिप । एतदर्थं मया सर्वं कृतमेनद्युधिष्ठिर ॥ ५० ॥ किन्नुयुद्धात् परं लाभं क्षत्रियो बहु मन्यते । किंत्वं क्षात्रियकुले जातः सम्प्रथितो भुवि ॥ ५१ ॥ द्रोणादस्त्राणिस-म्प्राप्य कृपाच्च भरतर्षभ । तुल्ययोनौ समबले वासुदेव समाश्रितः ॥ ५२ ॥ ब्रूयास्त्वं वासुदेवश्च पाण्डवानां समीपतः । आत्मार्थं पाण्डवार्थंञ यत्तोमांप्रतियो धय ॥ ५३ ॥ सभामध्ये च यद्रूप मायया कृतवानसि । तत्तथैव पुन कृत्वा सार्ज्जुनो मामभिद्रव ॥ ५४ ॥ इन्द्रजालञ्च मायां वै कुहका वापि भीषणा । आत्तशस्त्रस्य संग्रामे वहन्ति प्रतिगर्ज्जनाः ॥ ५५ ॥ वयमप्युत्सहमद्यां खञ्च गच्छेममायया । रसातलं विशामोवा ऐन्द्र वा पुरमेवतु ॥ ५६ ॥ दर्शयेमच रूपाणि स्वशरीरे बहु

लाओ युद्धही करें । ४९ । और तुमभी क्षत्रियकेही कुलमें उत्पन्न हो और पृथ्वी पर वीर करके प्रसिद्ध हो । ५० । फिर द्रोणाचार्य कृपाचार्य से अस्त्रपाया तौभी बराबर जातिवाले व समपराक्रम वासुदेव के शरणमें जाय परचो । ५१ । पांडवों के समीप बैठेहुये कृष्णचन्द्रसे भी हमारी ओरसे कहेना, कि अपने अर्थ व पांडवों के अर्थ तैयारहो हमारेसाथ पांडवों को लड़ावो । ५२ । सभाके मध्यमें मायासे जो रूप तुमने धारण कियाथा, वह वैसाही फिर कर अर्ज्जुनसहित हमारे ऊपर दौड़ो । ५३ । इन्द्र जाल व माया व भयंकर कृत्या ये सब शस्त्रास्त्र धारणकिये युद्ध करनेवाले के सामने केवल कोपही करातेहैं कुछ भय नहीं देसके । ५४ । हमभी मायासे स्वर्ग को चलेजायसक्ते व आकाशको भी जासके हैं रसातलमें भी प्रवेशकर जासक्ते हैं, व इन्द्रकीपुरी को भी जासकेहैं । ५५ । व हमभी अपने शरीर में बहुत से रूप दिखासक्तेहैं, परन्तु मनुष्यकी बुद्धि सदा सिद्धिहीको नहीं प्राप्तिहोती । ५६ । मन

---

war above all things and therefore have taken all this trouble. Let us fight. You are born in a Kshatrya family and are a great warrior. 50. Having learnt the art of war from *Dronacharya* and *Kripacharya* you have taken refuge with Vasudev who is your brother Kshatrya of equal prowess with you! Tell Shree Krishn, whom you will find in the court of the Kauravas, that for his own sake and for the sake of the Pandavas, he should prepare the Pandavas to fight. Let him come upon us along with Arjun in the shape which he assumed at our court by jugglery. One practicing deceit, jugglery and tricks in fighting, causes anger and not fear among warriors. I, too can go to sky, beneath the earth and to the region of Indra to deceive others. I, too, can assume many shapes, but the wisdom of all

न्यपि । नतुपर्यायतः सिद्धिर्बुद्धिमाप्नोति मानुषीम् ॥ ५७ ॥ मनसैव हि भूतानि धातैव कुरुते वशे । यद् ब्रवीषि च वार्ष्णेय धार्त्तराष्ट्रानहं रणे ॥ ५८ ॥ घातयित्वा प्रदास्यामि पार्थेभ्यो राज्यमुत्तमम् । आचचक्षे च मे सर्वं सञ्जयस्तव भाषितम् ॥ ५९ ॥ मद्द्वितीयेन पार्थेन वैरं वः सव्यसाचिना । सत्यसङ्गरो भूत्वा पांडवार्थे पराक्रम ॥ ६० ॥ युध्यस्वाद्य रणे यत्तः पश्यामः पुरुषो भव । यस्तु शत्रुमभिज्ञाय शुद्धं पौरुषमास्थितः ॥ ६१ ॥ करोति द्विषतां शोकं स जीवति सुजीवितम् । अकस्माचैव ते कृष्ण ख्यातंलोके महद्यशः ॥ ६२ ॥ अद्येदानीं विजानीमः सन्ति षण्ढाःसशृङ्गकाः मद्विधो नापि नृपतिस्त्वयियुक्त कथञ्चन ॥६३॥ त्वन्नाहं सयुगे कर्तुं कंसभृत्येविशेषतः ।

से ही तो प्राणियों को विधाताही अपने वशमें करतेहैं, व हे कृष्ण जो तुम कहतेहो कि हम रणमें धृतराष्ट्रके पुत्रोंको मरवाय, पांडवोंको उत्तमराज्य दिलादेंगे, वह तुम्हारा वचन सब संजय ने हमसे कहा है । ५८ । कि हम द्वितीय सहित अर्ज्जुन के संग तुम सबों का युद्धहोगा अब सत्यप्रतिज्ञहो पांडवों के अर्थ पराक्रम करो । ५९ । आज आप सन्नद्धहो रणमें युद्ध करो पुरुषहोओ हमलोग तुम्हारा पुरुषार्थ देखतेहैं, जो पुरुष शत्रुकोजान शुद्ध पौरुष को प्राप्तहो वैरियों को शोककराता है वही अच्छे प्राणोंसे जीताहै । ६० । हे कृष्ण अकस्मात् लोकमें तुम्हारा बड़ाभारी यश प्रसिद्ध होगया है हम जानतेहैं कि पुरुषोंका चिह्न लगाये बहुत से नपुंसकलोग इस संसार में हैं जिनके सामने तुम्हाराभी शौर्य प्रसिद्ध होगयाहै । ६१ । परन्तु हमारेसदृश राजा तुम में शूरताका विश्वास कभी न करेगा, कि तुमभी समरमें कवच बखतर आदि धारण करसक्ते हो, क्योंकि तुम कंसके भृत्यहो । ६२ । व हे उलूक तुम बिना डाढ़ी मोछवाले उन भीमसेन से जाय हमारा सन्देश कहना जोकि बहुत भोजन करतेहैं बार २ उनसे कहना कि । ६३ । विराट

men is not perfect The creator controls all beings through the mind. Sanjaya has told us that you wish to destroy the sons of Dhritrashtra to give the kingdom to the Pandavas. You say that Arjun with your help will fight us. Now show your prowess and manliness in battle. He alone is said to lead a happy life, who gives trouble to his enemies by his bravery. 60. It is by chance that you have become famous for your prowess through the world, because there are many eunuchs in the world in the garb of men. A king like me cannot believe in your bravery or in your doing something in battle with coat of mail on your body, because you are the servant of Kans. Tell our message to Bhimsen who has no beard and moustaches and who eats much. Tell him that it was by our

तञ्चतूयरकंवाल यद्वाशिनमविथकम् ॥ ६४ ॥ उलूक मद्वचो ब्रूहि असकृद्भीमसेनकम् । विराटनगरे पार्थ यस्त्वं सूदो ह्यभूः पुरा ॥ ६५ ॥ वल्लवो नाम विख्यातस्तन्ममैवहि पौरुषम् । प्रतिज्ञातं सभामध्ये नतन्मिथ्यात्वया पुरा ॥ ६६ ॥ दुःशासनस्यरुधिरं पीयतां यदि शक्यते । यद्ब्रवीषिच कौन्तेय धार्तराष्ट्रानहं रणे ॥ ६७ ॥ निहनिष्यामि तरसा तस्य कालोय मागतः । त्वंहि भोज्ये पुरस्कार्यो भक्ष्ये पेयेच भारत ॥ ६८ ॥ क्व युद्धं क्वच भोक्तव्यं युध्यस्व पुरुषो भव । शयिष्यसे हतो भूमौ गदामालिंग्यभारत ॥ ६९ ॥ तद्वृथाच सभामध्ये वल्गितं ते वृकोदर । उलूक नकुलं ब्रूहि वचनान्मम भारत ॥ ७० ॥ युध्यस्वाच स्थिरो भूत्वा पश्यामस्तव पौरुषम् । युधिष्ठिरानुरागंच द्वेष ञ्चमयिभारत । कृष्णायाश्च परिक्लेशं स्मरेदानीं यथा तथम् ॥ ७१ ॥ ब्रूयास्त्वं सहदे-

---

नगरमें वल्लवनामसे प्रसिद्ध जो तुम भोजन बनानेवालोंमें थे वह हमाराही पौरुष है।६४। और सभाके मध्यमें जो तुमने प्रतिज्ञाकीथी उसको मिथ्या न करो जो शक्ति हो तो दुश्शासनका रुधिर पानकरो। ६५ । व जो तुमकहतेहो कि रणमें हम धृतराष्ट्र के पुत्रोंको मारडालेंगे उसका काल यह आगया है मारो । ६६ । तुम भोजन बनाना व नीका मीठा खाना पीना जानतेहो फिर कहां खानापीना कहां युद्धकरना इस में तो बड़ा अंतरहै पर शक्तिहो तो युद्धकरो पुरुषबनो, परंतु गदा हाथमें लिये पृथ्वी पर पड़े शयनकरोगे । ६८ । तब जो तुमने सभाके मध्यमें कहाथा वह तुम्हारा बकना मिथ्या होजायगा, हे उलूक नकुल से हमारा वचन कहना कि हे भारत । ६९ । खड़े होकर युद्धकरो तुम्हारा पौरुष हमलोग देखतेहैं व यहभी कि युधिष्ठिर में तुम्हारा अनुराग है और हमारे साथ वैरहै वह भी देखतेहैं । ७० । द्रौपदीके क्लेश का स्मरण इस समय खूब करलो, और राजाओं के बीचमें सहदेवसे

---

prowess that he had to serve as a cook to king Virat under the appellation of Ballav and that he should not farget the vow he made at our court and should drink the blood of Dushasan if he can. Tell him to kill the sons of Dhritrashtra, if he dare, and that it is now time to do as he had boasted. Tell Bhim that he knows well how to cook fine and delicious dishes, but there is a vast difference in cooking and fighting, for if he shows his manliness in fighting, his lifeless body will lie on the ground with his mace by his side and his vagary will come to nought. Tell Nakul that he must show his prowess in fighting, for we know that he bears great love towards Yudhishthir and enmity towards us. 70. Remember well the griefs of Draupadi. Say the following words to Sahadev in the

वश्च राजमध्ये वचो मम । युध्येदानीं रणे यत्तः क्लेशान् स्मरच पाण्डव ॥७२॥ विराट द्रुपदौ चोभौ प्रयास्त्वं वचनान्मम । नदृष्टपूर्वा भर्त्तारो भृत्यैरपि महागुणैः ॥७३॥ तथा-र्थपति भिर्भृत्या यतः सृष्टाः प्रजास्ततः । अश्लाघ्योयं नरपतिर्युवयोरिति चागतम् ७४॥ ते यूयं संहता भूत्वा तद्वधार्थे ममापिच । आत्मार्थे पांडवार्थेच प्रयुध्यध्वं मयासह । धृष्टद्युम्नश्च पांचाल्यं प्रयास्त्वं वचनान्मम ॥ ७५॥ ययते समयः प्राप्तो लब्धव्यश्च त्वयापिसः ॥ ७६ ॥ द्रोणमासाद्य समरे ज्ञास्यसे हितमुत्तमम् । युध्यस्व ससुहृत् पापं कुरु कर्म सुदुष्करम् ॥ ७७ ॥ शिखण्डिन मथो ब्रूहि उलूक वचनान्मम । स्त्रीति मत्वा महाबाहुर्नहनिष्यति कौरवः ॥ ७८ ॥ गांगेयो धन्विनांश्रेष्ठो युध्येदानीं सुनिर्भयः । कुरु

हमारा वचनकहना कि । ७१ । सब क्लेशोंका स्मरणकर इससमय युद्धकरो, हे पांडव और हमारे वचनसे विराटराज व राजाद्रुपदसेभी कहना । ७२ । जब से ब्रह्माने प्रजाबनाई हैं तबसे आजतक महागुणवान भृत्यों ने राजाभी नहीं देखे और राजा-ओं ने भृत्यभी नहींदेखे पर अब तुमको राजायुधिष्ठिर राजा अच्छे मिले और तुम दोनों भृत्य भी उनको अच्छे मिले । ७३ । जिससे तुम सबलोग हमारे बध के अर्थ और अपने तथा पांडवों के कल्याण के लिये अच्छीतरह हमसे लड़ो । ७४ । हमारे वचनसे द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नसे कहना कि यह तुम्हारा समय आगया है तुमभी इसका फल पावोगे । ७५ । जब समरमें द्रोणाचार्य को प्राप्त होंगे तो अपना उत्तम हित पावोगे, अच्छा युद्ध करो और दुष्कर कर्म करो । ७६ । हे उलूक हमारी जबानी शिखंडीसे कहना कि तुमको स्त्री मान महाबाहु गंगाजी के पुत्र भीष्मजी समरमें न मारेंगे । ७७ । इससे युद्धमें तुम निर्भय रहो रणमें सन्नद्धहो कर्मकरो तुम्हारा पौरुष हमलोग देखतेहैं । ७८ । इतना कह राजादुर्योधन हँसकर

---

midst of all the kings:— Remember your former wrongs and fight for them, Pandav. Say the following words to kings Drupad and Virat:— No one has seen from the time of the world's creation a king like Yudhisthir and attendants like you. Fight well to kill us for the sake of the Pandavas as well as yourself. Say the following words to Dhrishtadyumna the son of king Drupad:— Your time has come and you will reap the reward of it in fighting with Dronacharya. Fight and do brave deeds. Say the following words to Shikhandi:— Brave Bhishm will spare your life in battle as you are a woman. Fight therefore fearlessly and show us your prowess." Duryodhan then continued to say to Uluk with a smile: " Say to Arjun within hearing of Shree Krishn:— You will either conquer us

कर्म रणे यत्तः पश्यामः पौरुषं तव ॥ ७९ ॥ एवमुक्त्वा ततो राजा प्रहस्यो लूकमब्रवीत्। धनंजयं पुनर्ब्रूहि वासुदेवस्य शृण्वतः ॥ ८० ॥ अस्मान् वात्वं पराजित्य प्रशाधि पृथिवी मिमाम्। अथवा निर्जितो स्माभी रणेवीर शयिष्यसि ॥ ८१ ॥ राष्ट्राद्विवासन क्लेशं वनवासश्चपाण्डव। कृष्णायाश्च परिक्लेशं संस्मरन् पुरुषो भव ॥ ८२ ॥ यदर्थं क्षत्रिया सूते सर्वं तदिदमागतम्। बलंवीर्यञ्च शौर्यञ्च परञ्चाप्यस्त्रलाघवम् ॥ ८३ ॥ पौरुषं दर्शयन् युद्धे कोपस्य कुरुनिष्कृतिम्।' परिक्लिष्टस्यदीनस्य दीर्घकालोषि तस्य च। हृदयं कस्य नस्फोटे दैश्वर्याद् भ्रंशितस्यच ॥ ८४ ॥ कुले जातस्य शूरस्य परवित्तेष्वगृध्यतः। आस्थितं राज्यमाक्रम्य कोपं कस्य नदीपयेत् ॥८५॥ यत्तदुक्तंमहद्वाक्यं

उलूकसे बोले कि कृष्णचन्द्रके सुनतेमें अर्जुनसे कहना कि ।७९। कि यातो समरमें हमलोगोंको पराजितकर तुम्हीं इसपृथ्वीभरका राज्य करोगे अथवा हे वीर हम लोगोंसे निर्जितहो रणमें पृथ्वीपर शयनही करोगे। ८०। हे पांडव, राज्यसे निकालेजानेका क्लेश वनवासका दुःख व द्रौपदीके क्लेशका स्मरणकर पुरुष होओ। ८१। जिसलिये क्षत्रियोंकी स्त्री पुत्रउत्पन्न करतीहैं उसका समय यह आगया है बल, वीर्य, शूरता अस्त्रचलानेकी शीघ्रता, पौरुष, युद्धमें दिखाते हुये कोप करने का फल सिद्धकरो और जो तुमने कहाथा कि, क्लेशित, दीन, बहुत दिनोंतक विदेशमें परेरहने से क्लेशित किस पुरुषका हृदय नहीं फटजाता जो ऐश्वर्य से भ्रष्ट होगयाहो फिर कुलमें उत्पन्न उसमेंभी शूरहो पर धनकी इच्छाकरे, फिर जिसका राज्य जबरदस्ती छीनलियागयाहो उसका कोप कैसे सन्तापित न करावे, ऐसा जो महावचन तुमने कहाथा उसको कर्मकरके दिखाओ, क्योंकि जो बिना कर्म किये मिथ्या बकता है पण्डितलोग उसको कुपुरुष कहतेहैं अभिज्ञों के वशमें तुम्हारा

---

and rule over the land or you will lie vanquished on the ground. 80. The grief of being cast away from kingdom and that of exile as well as the recollection of Draupadi's insults must be enough to infuse manliness in you. The time has now come for which a kshatrya woman brings forth her sons. Reap the reward of your strength, prowess, bravery, dexterity in using arms, manliness and anger in battle. You said that poverty and long exile broke everyone's heart; that having been deprived of wealth, a brave man born in a noble family and desirous of greatness, who had lost his kingdom by stratagem, was sure to be angry. Now prove these words true by deeds; for he who indulges in idle talk without deeds, is not, well spoken by learned men. Your rank and your kingdom are both in

कर्मणातद्विभाव्यताम् । अकर्मणा कत्थितेन सन्त कुपुरुषं विदुः ॥८६॥ अमित्राणांवशे स्थानं राज्यञ्चपुनरुद्धर । द्वावर्थौयुद्धकामस्य तस्मात्तत्कुरुपौरुषम् ॥८७ पराजितोसि द्यूतेन कृष्णाचानायितासभाम् । शक्योमर्षोमनुष्येण कर्तुंपुरुषमानिना ॥८८॥द्वादशैवतु वर्षाणि वनेधिष्ण्याद्विवासितः । सम्वत्सरं विराटस्य दास्यमास्थायचोषितः॥८९॥राष्ट्रा न्निर्वासनक्लेशं वनवासञ्चपांडव । कृष्णायाश्चपरिक्लेशं संस्मरन्पुरुषोभव॥९०॥अप्रियाणांचवचन प्रब्रुवत्सुपुनःपुनः । अमर्षदर्शयस्वत्व ममर्षोह्येव पौरुषम् ॥ ९१ ॥ क्रोधो बलं तथावीर्यं ज्ञानयोगोस्त्र लाघवम् । इहतेदृश्यतांपार्थ युध्यस्व पुरुषो भव ॥ ९२ ॥ लोहाभिसारो निर्वृत्तः कुरुक्षेत्रमकर्दमम् । पुष्टास्तेऽश्वा भृता योधाः श्वो युध्यस्व

स्थान राज्य दोनों हैं उनको उनके पाससे अपने पास लावो ये दोनों अर्थ युद्ध करने केहैं तिससे पौरुषकरो । ८६ । जुआ खेलने में हारगये थे द्रौपदी बीच सभामें पकड़आई उसी समय में जो पुरुषमानी मनुष्य होता तो मर्षकरता अवश्य मारता पीटता । ८७ । फिर १२ वर्षतक राज्य से निकाल वनमें बसाये गये, एकवर्ष विराटराजाकी दासतामें रहे। ८८ । इससे अब राज्य से निकाले जानेका क्लेश, फिर बनवासका दुःख और द्रौपदी के कष्टोंका स्मरण करते हुये पुरुषहोओ । ८९ । जब निकालेगये थे तब अप्रिय हमलोगोंने बहुतसे अप्रिय वचन तुम लोगोंको कहेथे उनकी असहनशीलता आज दिखाओ क्योंकि असहन शीलताही पौरुष है । ९० । हे पार्थ क्रोध, बल, वीर्य, ज्ञान, योग, अस्त्रमें शीघ्रता, अब यहां तुम्हारी देखीजाय, युद्धकरो पुरुष होओ । ९१ । शस्त्रोंकी पूजा आदि करनेका समय आगया कुरुक्षेत्रकी भूमि में कीचड़नहीं है खूब युद्धकरने के योग्यहै, और तुम्हारे घोड़ेभी पुष्टहैं योधाओंको मासिकादि पहिलेहीसे देरक्खा है, सब युद्धकी सामग्री तैयारहै प्रातःकाल केशवसहित तुम युद्धकरो । ९२ । बिना

---

the hands of your enemies. Bring them back with fighting and show your prowess. Having been lost in gambling, Draupadi was brought into the court; a shameful man should have revenged such a wrong there and then. You remained twelve years in exile and served king Virat for a year. Remember the exile, the loss of kingdom and the insults of Draupadi and assert your manliness. We spoke many harsh words to you at the time of exile and you must revenge those wrongs to day by your prowess. Let us now see your anger, strength, prowess, wisdom, application and dexterity in the use of arms during the battle which ensues. It is now time that you worship the weapons: the ground of Kurukshetra is fit for battle; your horses are strong; you have paid the warriors in

सकेशवः ॥ ९३ ॥ असमागम्य भीष्मेण संयुगे किं विकत्थसे । आरुरुक्षुर्यथा मन्दः पर्वतं गन्धमादनम् ॥ ९४ ॥ एवं कत्थसि कौन्तेय अकत्थन् पुरुषोभव । सूतपुत्रं सुदुर्धर्षं शल्यञ्च बलिनां वरम् ॥ ९५ ॥ द्रोणञ्च बलिनांश्रेष्ठं शचीपतिसमं युधि । अजित्वा संयुगे पार्थ राज्यं कथमिहेच्छसि ॥ ९६ ॥ ब्राह्मेधनुषि चाचार्यं वेदयोरन्तगं द्वयोः । युधि धुर्य्यमविक्षोभ्यमनीकचरमच्युतम् ॥ ९७ ॥ द्रोणं महाद्युतिं पार्थ जेतुमिच्छसि तन्मृषा । नहि शुश्रुम वातेन मेरुमुन्मथितं गिरम् ॥ ९८ ॥ अनिलो वा वहेन्मेरुंद्यौर्वापि निपतेन्महीम् । युगं वा परिवर्तेत

भीष्मपितामह के साथ समरमें समागमहुये व्यर्थ क्या प्रलाप करतेहो जैसे कोई गन्धमादन पर्वतपर चढ़ा चाहे व शक्ति कुछभी न हो, वैसेही तुम्हारा बकना है । ९३ । हे कौन्तेय इसीतरह तुम भी बकते हो अब बिना बकतेहुये पुरुष होओ, हे पार्थ, समर में महाअसहनशील कर्ण व महाबली शल्यजी युद्ध में इन्द्र के समान बलवानों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य को बिना जीते कैसे राज्य लेने की इच्छा करते हो । ९५ । ब्रह्मविद्या व धनुर्विद्या दोनों के आचार्य, वेद व धनुर्वेद दोनों के पारगन्ता युद्धमें धुरन्धर क्षोभरहित, सेना में अचलहो स्थित, कभी भागते जानो हुई नहीं, ऐसे महाद्युति द्रोणाचार्यजी को अर्जुन तुम कैसे जीतना चाहते हो यह तो मिथ्याही है क्योंकि हमलोगों ने कभी सुनाही नहीं कि पवनने सुमेरुपर्वत को उखाड़डालाहो । ९७ । जैसा तुमने हम से कहा है कि हम सब कौरवों को जीतलेंगे जो ऐसाहो तो फिर पवन सुमेरुको भी उड़ालेगा, आकाश पृथ्वी पर गिरपड़ेगा, कालचक्र उलटजायगा । ९८ । चाहे पार्थहों वा औरहों कोईहो

advance and everything is ready for fighting. You must come out with Keshav tomorrow morning for fighting. Your talk without encountering Bhishm the grandfather is of no use like that of a weak man wishing to ascend Gandhman mountain. Cease your prattle, son of Kunti, and be a man; how can you wish to win your kingdom without conquering Karan the unbearable, Shalya of great strength and Dronacharya the best of warriors and of Indra like prowess? Dronacharya is the scholar of the knowledge of Brahm as well as of archery; he is as perfect in the knowledge of the Vedas as in archery and is a matchless warrior, immoveable in the field of battle and never turning back. How can you aspire to conquer him, Arjun? It is as impossible as the moving of Sumeru hill by a gust of wind. Your conquering all the Kauravas is as

यद्येवं स्याद्यथात्थमाम् ॥ ९९ ॥ कोह्यस्ति जीवितार्काङ्क्षी प्राप्येममरिमर्दनम् । पार्थो वा इतरो वापि कोन्यः स्वस्ति गृहान् व्रजेत् ॥ १०० ॥ कथमाभ्यामभिध्यातः संस्पृष्टो दारुणेन वा । रणे जीवन् प्रमुच्येत पदा भूमिमुपस्पृशन् ॥ १०१ ॥ किं दर्दुरः कूपशयो यथेमां न बुध्यसे राजचमूं समेताम् । दुराधर्षां देवचमूप्रकाशां गुप्तां नरेन्द्रैस्त्रिदशैरिव द्याम् ॥ १०२ ॥ प्राच्यैः प्रतीच्यैरथ दाक्षिणात्यैरुदीच्यकाम्बोजशकैः खशैश्च । शाल्वैः समत्स्यैः कुरुमध्यदेशैर्म्लेच्छैः पुलिन्दैर्द्रविडान्ध्रकाञ्च्यैः ॥ १०३ ॥ नानाजनौघं युधि सम्प्रवृद्धं गाङ्गं यथावेगमपारणीयम् । मां च

ऐसा कौन है जिसको जीनेकी इच्छाहो और इन द्रोणाचार्यजी के सामने समरमें आय फिर कल्याण सहित अपने घरको चलाजाय । ९९ । ऐसा कौन मनुष्य है जिसे भीष्मपितामह और द्रोणाचार्य मारडालनेके लिये निश्चय करलें, फिर वह रणसे जीताही बचजावे । १०० । जैसे कूपके भीतर पड़ाहुआ मेंढ़क वहां के सिवा अन्यत्र के वृत्त कुछ नहीं जानता, वैसेही तुम, अति दुराधर्ष इस कौरवराज महासेनाको नहीं जानते जोकि देवसेनाके समान प्रकाशितहै, जैसे देवताओंसे रक्षित अन्तरिक्षहै । १०१ । हे अल्पबुद्धिमन्द, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, उत्तरीय, काबुली, शकवंशवाले, खशदेशवाले, शाल्वकेवशके, मत्स्यदेशनिवासी कुरुदेशवासी, मध्यदेशवासी, म्लेच्छ, पुलिन्द, द्राविड़, व कांचीपुरीके निवासी इन सब नानादेश निवासियों का समूह जो भादोंकी गंगा के समान अपरणीयहै व हाथियों की सेनाके मध्यमें टिकेहुये हमसे युद्ध किया चाहतेहो । १०३ । हे अर्जुन अक्षय दो तरकस व अग्निका दियाहुआतुम्हारा रथ, व

---

absurd as the motion of Sumeru hill by the wind, the fall of the sky on the ground and the backward motion of the wheel of time. Whether he be the son of Kunti or anyone else, he who consults his own *safety* can not go back to his own house in safety. Is there any one who can escape with his life when Bhishm and Dronacharya have resolved to kill him ? 100. You are as ignorant of the greatness of the Kaurava army as a frog lying at the bottom of a well. Our army is like the region of air protected by gods. You are a fool to encounter the armies of East, West, South and North which are collected here *from Kabul from the families of Shak, from the countries of* Khas, Shalwaks, Matsyas, Kurus and central India, from Mlechas, Pulinds, Dravids, Andharas, and from the countries of Kanchi and other places and are, from the great number of elephants, impossible to

स्थित नागबलस्थमध्ये युयुत्ससे मन्द किमल्पबुद्धे ॥ १०४ ॥ अक्षय्याविषुधी चैव अग्नि दत्तश्च ते रथम् । जानीमोहि रणे पार्थ केतुं दिव्यञ्च भारत ॥ १०५ ॥ अकत्थमानो युध्यस्व कत्थसेऽर्जुन किंबहु । पर्यायात् सिद्धिरेतस्य नैतत् सिध्यति कत्थनात् ॥ १०६ ॥ यदीद कत्थनाल्लोके सिध्येत् कर्म धनञ्जय । सर्वे भवेयुः सिद्धार्थाः कत्थने कोहि दुर्गतः॥१०७ जानामिते वासुदेवं सहायं जानामिते गाण्डिवं तालमात्रम्। जानाम्यहं त्वादृशो नास्ति योद्धा जानानस्ते राज्यमेतद्धरामि ॥ १०८ ॥ नतु पर्यायधर्मेण सिद्धिंप्राप्नोति मानवः । मनसैवास्तु कूलानि धातेव कुरुते वशे ॥ १०९ ॥ त्रयोदश समा भुक्तं राज्यं विलपत-

---

दिव्यपताका हम जानतेहैं । १०४ । हे अर्ज्जुन बहुत वृथा न बकनेसे बगाहे बिना बकेहीहुये युद्धकरो युद्धकी सिद्धि शूरतासे होतीहै मिथ्या बकनेसे नहीं होती । १०५ । हे अर्ज्जुन जो यह युद्धका कर्म केवल मिथ्या बहुत बकनेहीसे सिद्धहो तो सब सिद्धार्थ होजायँ बकने में कौन बड़ी कठिनताहै । १०६ । हम जानते हैं कि तुम्हारे वासुदेव सहायकहैं और तुम्हारे ताड़के वृक्षके समान लम्बा गांडीव धनुष है उसेभी जानते हैं, व यहभी जानते हैं कि तुम्हारे समान और कोई योधा नहीं है, हम जानबूझकर तुम्हारा यह राज्य हरेलेते हैं भूलसे नहीं हरते । १०७ । मनुष्य सदा नहीं जीतता वह कभी हारताभी है, यह बात तो विधाताही में है कि सदा अपने मनसेही जगत् को अपने वशमें रखताहै । १०८ । तेरह वर्ष बीतगये तुम ऐसेही रोतेही रहे हमने राज्यका भोगही किया, और फिरभी भाई बन्धु सहित तुमको संग्राममें मार राज्यभोगेंगे । १०९ । हे अर्जुन तुम्हारा बल तब

---

cross like the Ganges in the month of Bhadon. We know of two quivers of inexhaustible arrows and the chariot and divine banner given to you by Agni. Fight without useless talk, Arjun; the perfection of fighting lies in bravery and not in idle talk. All men might become perfect in the art of war, if it could be accomplished by mere talk which is so easy to perform. We know that Vasudev is your helper and that you possess the Gandiv bow which is long like a palm tree. We know that you are a matchless warrior and yet we have deprived you of your kingdom. Victory does not always fall to the lot of the same man; none except the creator has eternal control over all beings. We have been enjoying the kingdom for thirteen years while you were complaining of your unhappy lot and yet we hope to enjoy it after killing you together with your brothers and friends. Where was your strength, Arjun, when you became a slave and were lost in

स्तव । भूयश्चैव प्रशासिष्ये त्वां निहत्य सबान्धवम् ॥ ११० ॥ क्व तदा गाण्डिवं ते भूयत्वं दासपणैर्जितः । क्व तदा भीमसेनस्य बलमासीच्च फाल्गुन ॥ १११ ॥ सग दाद् भीमसेनाद्वा फाल्गुनाद्वासगांडिवात् । नवै मोक्षस्तदा वोभूद्विनाकृष्णामनिंदिताम् ॥ ११२ ॥ सावो दास्ये समापन्नान् मोचयामास पार्षती । अमानुष्यं समापन्नान दास कर्मण्यवस्थितान् ॥ ११३ ॥ अवोचं यत् पण्ढ तिला नहं वास्तव्य मेवतत् । धृताहि वेणीपार्थेन विराटनगरे तदा ॥ ११४ ॥ सूदकर्मणिच श्रान्तं विराटस्य महानसे । भीम सेनेन कौन्तेय यत्तु तन्मम पौरुषम् ॥११५॥ एवमेव सदा दण्डं क्षत्रियाः क्षत्रिये बधुः ।

कहांगया था जब जुआंखेलने में हारकर दासहुये थे, और तब भीमसेनका महाबल कहांगयाथा । ११० । गदाधारी भीमसेन से व गाण्डीवधारी अर्जुनसे कहना तुम उस बँधोईसे नहींछूटे जब आय द्रौपदी ने छुड़वाया तभी छूटे । १११ । नीच मनुष्यत्व को प्राप्त, दासी कर्ममें टिके तुमको बचाने की इच्छासे द्रौपदीहीने छुड़वाया । ११२ । जोकि हम लोगोंको पण्ढ तिल तुम ने कहाथा कि इस के नाम तिल खांड़डालों अब जीते न समझो वह बात सत्य है जो जैसाहोताहै वह सबको वैसाही जानताहै अर्जुनने विराटनगरमें मांग सवांरीथी । ११३ । हे अर्जुन जिससे विराटके महानसमें भीमसेन जाय रसोई बनानेवाले होकरबचे वह हमाराही पौरुष है । ११४ । हे अर्ज्जुन तुम पाटीपार मांगसवांर नपुंसक का वेष बनाय विराटकी कन्याओंको नचातेथे और यद्यपि स्त्री न थे पर स्त्री का वेप धारण कियेथे इससे वहां के पुरुष तुम्हारा पश्चाद्भाग कांख व पाटी के नीचे माथा व मुख चूमते होंगे इससे तुम रति युद्धका हाल जानते हो इस महायुद्धमें भागही खड़ेहोगे यह बड़ नहीं है, इसीप्रकार क्षत्रियको क्षत्रियलोग सदा दण्ड देते चलेआये हैं । ११५ । हे

---

gambling and where was the strength of Bhimsen gone at that time! 110. Tell Bhimsen the wielder of mace and Arjun the wielder of Gandiv that they could not rescue themselves from the slavery without the help of Draupadi who freed them from doing the work of slaves and menial servants. 12. You said that you would consider us as already dead and would offer sesame and sugar to our manes: it is true that one considers others to be like self as Arjun dressed his hair at Viratnagar like a woman. It was by our prowess that Bhimsen saved his own life at Viratnagar in the kitchen of the king. Arjun dressed his hair like a woman and used to train the king's daughters in dancing. You know much about women and would surely turn away from the battle field. Thus one kshatrya

घेर्णा कृत्वा पण्डवेय कन्यां नत्ति वानासि ॥ ११६ ॥ नभयाद्वासुदेवस्य नचापि तव फाल्गुन । राज्यं प्रतिपदास्यामि युध्यस्वसह केशवः ॥ ११७ ॥ नमाया हीन्द्रजाल वा कुहकावाणि भीषणा । आचशस्त्रस्य सग्रामे वहन्ति प्रतिगर्जनाः ॥ ११८ ॥ वासुदेव सहस्रया फल्गुनानां शतानिवा । आसाद्य माममोघेषुं द्रविष्यन्ति दिशो दश ॥ ११९ ॥ सयुग गच्छ भीष्मेण भिंधि वा शिरसा गिरिम् । तरस्वैवामहागाघ य दुर्म्यां पुरुषो दधिम् ॥ १२० ॥ शारद्वतमहामीन विविंशती महोरगम् । बृहद्बलमहोद्वेल सोमदत्ति तिमिं गिलम् ॥ १२१ ॥ भीष्मवेग मपर्यन्तं द्रोणग्राह दुरासदम् । कर्णशल्यझषावर्त का म्बोज वडवामुखम् ॥१२२॥ दु शासनौघं शलशल्यमत्स्य सुषेण चित्रायुध नागनक्रम्। जयद्रथाद्रिं पुरुमित्रगाधं दुर्मर्षणोद शकुनिप्रपातम् ॥ १२३ ॥ शस्त्रौघमक्षय्यमभिप्रवृद्ध

अर्जुन हम वासुदेवके भयसे तुमको राज्यदेंगे न तुम्हारे भय से इस से अब केशवसहित तुम युद्धकरो । ११६ । न यहां मायासे काम चलेगा न इन्द्रजालसे न डरवानेवाली रूपटतासे, क्योंकि संग्राममें जो अस्त्र शस्त्र अच्छीतरह ग्रहण किये रहते हैं उन्हींका गर्जना सुनाई देता है उसी से काम चलताहै । ११७ । हरिके सहस्र बाण अर्जुन के सौ और इससे भी अधिक मेरे पास आकर दसों दिशाओं में फैल जायेंगे यातो भीष्म से लड़ो या अपना सिर पत्थर पर फोड़ो या अगाध पुरुष समुद्र को पार करो जिसमें शारद्वत मछलीहैं विविंशति उरग हैं भीष्म अनन्त वेग है द्रोण ग्राह है कर्ण और शल्य कुंडहैं बाह्लीक वड़वानलहैं बृहद्बल लहर सोम- दत्ति तिमि भगदत्त वायु हैं हार्दिक्य और श्रुतायु समुद्रहै दुश्शासन जलहैं शल और शल्य मत्स्यहैं चित्रायुध और सुषेण नागहैं । जयद्रथ गिरि पुरुमित्र जल दुर्मर्षण और शकुनि अगाध जलहैं जब अपने भाई बांधवों सहित अस्त्र शस्त्रों से मारेजा-

punishes another. We shall not give you the kingdom, either through fear of Vasudev or of you; you should therefore come out together with Shree Krishn. No trickery, jugglery or deceit will frighten us, for only those who are well armed, roar in the field of battle. Thousands of Krishnas and hundreds of Arjuns will be scattered in all directions when they come to us. Either fight with Bhishm, or break your head against stones or cross the deep ocean of our army which has Shardwat for fish, Vivinshati for Urag, Bhishm for velocity, Drona for a crocodile, Karan and Shalya for whirlpools, Vahlik as subterranean fire, Vrahadval for waves, Saumdatti for large fish, Bhagdatta for wind, Hardikya and Shrutayu with Dushasan for waters, Shal as water, Chitrayudh and Sushen for nagas, Jayadrath for a hillock,

यदावगाह्य श्रमनष्टचेताः । भविष्यसित्थ हतसर्वबान्धवस्तद्रामनस्ते परितापमेष्यति ॥ १२४ ॥ तद्रामनस्ते त्रिदिवादिवाशुचेर्निवर्त्तिता पार्थ महीप्रशासनात् । प्रशाम्यराज्य हि सुदुर्लभ त्वया बुभूषितः स्वर्ग इवातपस्विना ॥ १२५ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि उलूकदूतागमनपर्वणि दुर्योधनवाक्ये षष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६० ॥

सञ्जय उवाच । सेनानिवेशं संप्राप्तः कैतव्यः पाण्डवस्यह । समागतः पाण्डवैर्युधिष्ठिरमभाषत ॥ १ ॥ अभिज्ञो दूतवाक्यानां यथोक्त ब्रुवतो मम । दुर्योधनसमादेशं श्रुत्वान क्रोद्धुमर्हसि ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच । उलूक न भयन्तेऽस्ति ब्रूहित्वं विगतज्वरः । यन्मतं धार्त्तराष्ट्रस्य लुब्धस्यादीर्घदर्शिनः ॥ ३ ॥ ततो द्युतिमतां मध्ये पाण्डवानां महात्मनाम् । सृञ्जयानाञ्च मत्स्यानां कृष्णस्य च

आगे तब राज्यसे तुम्हारा मन ऐसा हट जायगा जैसा स्वर्गीय पुरुषों को होताहै और उसको अशुचि समझते हैं शान्त होना अब दुर्लभहै जैसे विना तपोबल कोई स्वर्ग नहीं पासकता ॥ १२५ ॥

अध्याय ॥ १६१ ॥

संजय धृतराष्ट्से बोले कि छली उलूक दुर्योधनका ऐसा सन्देश ले पांडवों के सेनानिवेश में पहुँच सब पांडवों से मिल युधिष्ठिरजी से बोला कि । १ । आप दूतवाक्यों के जानने में बड़े चतुरहैं इससे मैं यथातथ्य दुर्योधनका सन्देश कहताहूँ उसे सुन आप क्रोध करनेके योग्य नहीं हैं । २ । यहसुन युधिष्ठिरजी बोले कि हे उलूक जो मत अदूरदर्शी व महालोभी दुर्योधनकाहै उसे तुम निर्भय हो कहो तुमको कुछभी भय नहीं है । ३ । यहसुन सब तेजस्वी महात्मा पांडवों के मध्यमें

Purumitra as water and Durmarshan and Shakuni as deep water. You will have no longer any desire to rule when your brothers and friends are killed, like the men of paradise who think the worldly glory to be impure. It is now impossible to secure peace of mind as without the labours of asceticism no one can attain heaven. 121.

CHAPTER CLXI

Sanjaya said to Dhritrashtra that deceitful Uluk then went to the camp of the Pandavas and gave Yudhishthir, the message of Duryodhan as follows:- "You know well the ways of messengers and therefore I shall tell you, word for word, the message of Duryodhan; hoping you will subdue your anger on hearing it." "You are at liberty to repeat fearlessly the words of avaricious and short

यशस्विनः ॥ ४ ॥ द्रुपदस्य सपुत्रस्य विराटस्यच सन्निधौ । भूमिपानाञ्चसर्वेषां मध्ये वाक्यं जगादह ॥ ५ ॥ उलूक उवाच । इदं त्वामब्रवीद्राजा धार्त्तराष्ट्रो महामना । शृण्वतां कुरुवीराणां तन्निबोध युधिष्ठिर ॥ ६ ॥ पराजितोसिद्यूतेन कृष्णा चानायिता सभाम् । शक्योमर्षो मनुष्येण कर्त्तुं पुरुषमानिना ॥ ७ ॥ द्वादशैवतु वर्षाणि वने धिष्ण्याद्विवासिताः । सम्वत्सरं विराटस्य दास्यमास्थाय चोषित ॥ ८ ॥ अमर्षं राज्यहरणं वनवासञ्च पाण्डव । द्रौपद्याश्च परिक्लेशं संस्मरन् पुरुषो भव ॥ ९ ॥ अशक्तेनच यच्छप्तं भीमसेनेन पाण्डव । दुःशासनस्य रुधिरं पीयतां यदि शक्यते ॥ १० ॥ लोहाभिसारो निर्वृत्तः कुरुक्षेत्रमकर्द्दमम् । समः पन्था भृतास्तेश्वा श्वोयुध्यस्वसकेशवः ॥ ११ ॥ ससमागम्य

व, सृञ्जयवंशी मत्स्यदेश निवासी और परमयशस्वी श्रीकृष्णचन्द्रजी पुत्रोंसहित राजाद्रुपद राजाविराट व और सब राजाओं के समीप सबोंके मध्य में बैठ उलूक नाम दुर्योधन का दूत बोला । ५ । कि हे युधिष्ठिरजी सब कौरवों के सुनते में बड़े प्रसन्न चित्त राजादुर्योधन ने आपसे यह कहाहै कि । ६ । तुम जुआ खेलने में पराजितहुये इसलिये द्रौपदी सभामें उस दुर्दशा के साथ पकड़आई, पुरुष मानी पुरुषको उससमय असहनशील होनाचाहियेथा । ७ । राज्य से निकाल दियेगये बारहवर्षतक वनमें रहे व एकवर्ष गुप्तहो राजाविराटकी दासतामें रहे । ८ । हे पांडव, अमर्ष, राज्यहरण, वनवास, व द्रौपदी का परिक्लेश स्मरणकर पुरुष हो वो । ९ । असमर्थ भीमसेनने जो प्रतिज्ञाकीथी कि दुश्शासनका रुधिर पानकरेंगे यदि शक्तिहो तो अब पान करें । १० । अब युद्ध करने के योग्य कुरुक्षेत्र की भूमि कीचड़रहितहै मार्ग सबसमानहै घोड़े तुम्हारे खाये पिये पुष्टहैं इससे केशव सहित

sighted Duryodhan." said Yudhishthir. At this, Uluk the messenger of Duryodhan, thus spoke out in the midst of the glorious Pandavas, the descendants of Sanjaya, the residents of Matsya, glorious Shree Krishn with king Drupad and his sons, king Virat and other kings. "King Duryodhan, sitting cheerfully in the midst of the Kauravas, says to you. You lost the gambling match and therefore Draupadi was dragged into the court and insulted One having a sense of honour could not bear such indignity. You were one year in the service of king Virat. Remember Pandava, the insults, loss of kingdom, exile and insult to Draupadi, and be a man. Bhimsen the weakling, made a vow to drink the blood of Dushasan, let him do so, if he has strength. 10. The ground of Kurukshetra is fit for fighting and free from mud, the roads are level and your horses are well fed and

भीष्मेण संयुगे किं विकत्थसे। आरुरुक्षुर्यथा मन्दः पर्वतं गन्धमादनम् ॥ १२ ॥ एव कत्थसि कौन्तेय अकत्थन् पुरुषो भव । सूतपुत्रं सुदुर्धर्षं शल्यञ्च बलिनां वरम्। द्रोणंच बलिनां श्रेष्ठं शचीपतिसमं युधि। अजित्वा संयुगे पार्थराज्यं कथ मिहेच्छसि ॥ १४ ॥ ब्राह्मे धनुषि चाचार्य्यं वेदयोरन्तगं द्वयोः । युधि धुर्य्य मविक्षोभ्यमनीकचरमच्युतम् ॥ १५ ॥ द्रोणं महाद्युतिं पार्थ जेतुमिच्छसि तन्मृषा। नहि शुश्रुम वातेन मेरुमुन्मथितं गिरिम् ॥ १६ ॥ अनिलो वा वहेन्मेरुं द्यौर्वापि निपतेन्महीम्। युगंवापरिवर्त्तेत यद्येवं स्याद्यथात्थमाम् ॥ १७ ॥ कोऽस्ति जीवि ताकांक्षी प्राप्येममरिमर्दनम्। गजोवाजीरथो वापि पुन स्वस्ति गृहान् व्रजेत् ॥ १८ ॥

भातःकाल युद्धकरो । ११ । बिना भीष्मपितामहके समरमें आये क्या बकतेहो जैसे कोई मन्दपुरुष गन्धमादनपर्वतपर चढ़नेकी इच्छाकरे। १२ । हे कौन्तेय ऐसा बकते हो बिना बके पुरुष होओ बड़े दुःखसे सहने के योग्य कर्ण बलवानों में बलवान शल्य । १३ । व समरमें इन्द्रके समान बलवानों में बलवान द्रोणाचार्य को संग्राममें बिना जीते कैसे राज्य लेना चाहतेहो। १४ । ब्रह्मविद्या व धनुर्विद्या दोनोंके आ- चार्य और वेद धनुर्वेद दोनों के पारगन्ता समरमें धुरन्धर क्षोभरहित, सेनामें वि- चरनेवाले कभी भी सैन्य से न हटनेवाले । १५ । महाद्युति द्रोणाचार्यको अर्जुन मिथ्याही जीतना चाहतेहो क्योंकि हमने कभी सुनाहीं नहीं कि पवन पर्वतको भी उड़ालेजाय। १६ । जैसा तुमने हमसे कहा है कि भीष्म द्रोणाचार्य कर्णादि सब कौरवों को हम जीतलेंगे यदि ऐसाहो तो, पवन पर्वतकोभी उड़ालेजाय, अन्तरिक्ष पृथ्वी पर गिरपड़े कालचक्र उलटाचले। १७ । चाहे हाथीहो व घोड़ा व रथ व कोई और प्राणी जिसे जीनेकी इच्छाहो वह इन शत्रुमर्दन करनेवाले द्रो-

strong; you must therefore come out with Keshav for fighting. Your idle talk without encountering Bhishm, is like the wish of a weak man to ascend Gandhmadan. Donot talk nonsense, be serious; how can you desire to win your kingdom without conquering Karan, Shalya the strongest of the strong, and Dronacharya the bravest of warriors, teacher of the knowlege of Brahm and war, perfect in the knowledge of the Vedas and archery strongest in battle, fearless, rover in the midst of armies and never turning back. Arjun's desire to conquer Dronacharya is futile; his talk of conquering Bhishm, Dronacharya, Karan and other Kauravas makes possible the motion a mountain by the wind, the falling of the sky on the ground and the reversed motion of the wheel of Time. Elephants, horses chariots and

कथमाश्वामाभिध्वातः संसृष्टो दारुणेनवा । रणे जीवन् विमुच्येत पदाभूमिमुपस्पृशन् ॥ १९ ॥ किंदर्दुर॰ कूपशयो यथेमां न बुध्यसे राजचमूं समेताम् । दुराधर्षां देवचमूप्रकाशां गुप्ता नरेन्द्रैस्त्रिदशैरिव द्याम् ॥ २० ॥ प्राच्यैः प्रतीच्यैरथ दाक्षिणात्यैरुदीच्यकाम्बोजशकैः खशैश्च । शाल्वैः समत्स्यैः कुरुमध्यदेशैर्म्लेच्छैः पुलिन्दैर्द्रविडान्ध्रकाञ्च्यैः ॥ २१ ॥ नानाजनौघं युधि सम्प्रवृद्धं गाङ्गं यथा वेगमपारणीयम् । माञ्च स्थितं नागबलस्य मध्ये युयुत्ससे मन्द किमल्पबुद्धे ॥ २२ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् । अभ्यावृत्य पुनर्जिष्णुमुलूकः प्रत्यभाषत ॥ २३ ॥ अकत्थमानो युध्यस्व कत्थसेऽर्जुन किंबहु । पर्य्यायात् सिद्धिरेतस्यनैतत्

णाचार्यके सामने युद्धमें आय फिर कल्याणसहित घरको न जाय । १८ । भला ऐसा कौन मनुष्य है जिसे भीष्म व द्रोणाचार्य मारडालने की प्रतिज्ञा करें फिर रणमें जीता बचै । १९ । जैसे कूपके भीतर पड़ाहुआ मेंडक, वहां के सिवाय अन्यत्रकेकुछ वृत्त नहीं जानता, वैसेही तुम, अतिदुराधर्ष इस कौरवराज महासेनाको नहींजानते, जो कि देवसेनाके समान प्रकाशितहै, जैसे देवताओं से रक्षित अन्तरिक्ष है । २० । अल्पबुद्धि मन्द, पूर्वी, पश्चिमी, दक्षिणी, उत्तरीय, काबुली, शकवंशवाले, खशदेशवाले, शाल्वक वंशके, मत्स्यदेश निवासी, कुरुदेशवासी, मध्यदेशनिवासी, म्लेच्छ, पुलिन्द, द्राविड़, अन्ध्रवंशी, व काञ्चीपुरी के निवासी, इनसब नानादेश निवासियोंका समूह, जो भादोंकी गङ्गा के समान अपारणीयहै, व हाथियोंकी सेनाके मध्यमें टिके हुये हमसे युद्ध कियाचाहते हो । २२ । धर्मके पुत्र राजा युधिष्ठिरजीसे ऐसाकह, लौट अर्जुनकी ओर मुखकर उलूक बोला । २३ । हे अर्जुन बिना व्यर्थबके हुये युद्धकरो बहुत क्यों बकतेहो, युद्धकरने

other beings, desirous of living longer, cannot go back with life when they have once encountered Dronacharya the destroyer of enemies. How can he whom Bhishm and Dronacharya have resolved to kill, escape with his life ! You donot know the extent of the Kaurava army like a frog at the bottom of a well. The Kaurava army is vast like the region of air protected by gods. 20. You foolishly wish to oppose us surrounded as we are with the armies of East, West, South and North, and the countries of Kabul, Shak Khash, Shalwa, Matsya Kuru, central India, mlechas, Pulind, Dravid, Andhra, Kanchi and other countries, rising like the waves of the Ganges in the month of Bhadon and surrounded by elephants Having spoken as above to Yudhishthir, Uluk turned towadsr

सिध्यति कत्थनात् ॥ २४ ॥ यदीदं कत्थनाल्लोके सिध्येत् कर्म धनञ्जय । सर्वे भवेयुः सिद्धार्था कत्थने कोहि दुर्गतः ॥ २५ ॥ जानामि ते वासुदेवं सहायंजाना मितेगाण्डव तालमात्रम् । जानाम्येतत् त्वादृशो नास्ति योद्धा जानानस्ते राज्य मेतद्धरामि ॥ २६ ॥ नतु पर्यायधर्मेण राज्यं प्राप्नोति मानुषः । मनसैवानुकूलानि विधाता कुरुते वशे ॥ २७ ॥ त्रयोदशसमा भुक्तं राज्यं विलपतस्तव । भूयश्चैव प्रश सिष्ये निहत्य त्वां सबान्धवम् ॥ २८ ॥ क्वतद्गाण्डिवं तेभूत्तदं दासपणेर्जितः । क्वतद्भीमसेनस्य बलमासीच फाल्गुन ॥ २९ ॥ सगदाद्भीमसेनाद्वा पार्थाद्वापि सगाण्डिवात् । नवै मोक्षस्तदा भूद्विना कृष्णामनिन्दिताम् ॥ ३० ॥ सायो दास्ये समाप

से इसकी सिद्धिहोती है बकनेसे कार्य सिद्ध नहींहोता । २४ । हे धनंजय, यदि लोकमें इसप्रकार बकनेही से कार्यकी सिद्धिहो तो सब सिद्धार्थही होजायँ क्योंकि बकने में कौन कठिनता है । २५ । हम जानतेहैं कि तुम्हारे सहायक वासुदेव हैं, व ताड़के वृक्षके समान ऊंचा तुम्हारा गाण्डीव धनुष है, और यहभी जानते हैं कि तुम्हारे समान और योधा नहीं है, यह सब जानतेही हुये हमने तुम्हारा राज्य हरलिया है । २६ । परन्तु मनुष्य सदा पर्याय धर्म से राज्य नहींपाता, यह शक्ति तो विधाताही को है कि अपने मनसेही सब अनुकूल पदार्थों को अपने वशमें रखते हैं । २७ । तुम रोतेही रहे हमने तेरहवर्षतक राज्यभोगा, व फिरभी बान्धववर्ग सहित तुमको मार राज्यभोगेंगे । २८ । तब तुम्हारा गांडीव धनुष कहां गयाथा जबतुम दासहोनेकी बाजीलगाय हारेथे, व हे अर्जुन, तब भीमसेन का बल कहांगयाथा । २९ । गदा सहित भीमसेन से व गाण्डीव सहित अर्जुन से तुम दासहोनेकी बँधोई से नहींछूटे जबतक निन्दारहित द्रौपदीने आप तुमको नहीं छुड़वाया । ३० । उन द्रौपदीने, नीच मनुष्यों के दास्यकर्ममें युक्त

Arjun and said, " Fight, Arjun, without useless talk. Mere talk is useless and you will gain nothing without fighting. All men might gain their desires if these could be had by useless talk. We know that you have Vasudev for your helper and your bow, known as Gandiv, is tall as a palm tree. We also know that you are a matchless warrior; but in spite of all this we have seized your kingdom. *For men donot always get kingdoms by fair means; only the creator can, at His will, direct the minds of all beings.* We ruled for thirteen years while you were bewailing your lot and again we hope to retain the kingdom after killing you and your brothers. Where was your Gandiv when you staked yourself and became a slave ? Where was the strength of Bhimsen then ? In spite of the mace and Gandiv,

मान् मोक्षयामास पार्षती । अमानुष्यं समापन्नान् दासकर्मण्यवस्थितान् ॥ ३१ ॥ अवोचं यत् षंढतिलानहं वस्तथ्यमेवतत् । धृतावै वेणीपार्थेन विराटनगरे तदा ॥३२॥ सूदकर्मणि च श्रान्ते विराटस्य महानसे । भीमसेनेन कौन्तेय यच्चतन्ममपौरुषम् ॥३३॥ एवमेतत् सदा दण्डं क्षत्रियाः क्षत्रियेदधुः । वेणीं कृत्वा षण्ढवेषः कन्यानर्त्तित वानसि ॥ ३४ ॥ न भयाद्वासुदेवस्य न चापि तव फाल्गुन । राज्यं प्रतिप्रदास्यामि युध्यस्वसहकेशवः ॥ ३५ ॥ न माया ह्यिन्द्रजालं वा कुहका वा विभीषणा । आत्तशस्त्रस्य मे युद्धे वहन्ति प्रतिगर्जनाः ॥ ३६ ॥ वासुदेवसहस्रं वा फाल्गुनानां शतानिवा । आसाद्य माम मोघेषुं द्रविष्यन्ति दिशोदश ॥ ३७ ॥ संयुगं गच्छ

दास्यभाव को प्राप्त तुमलोगों को आग छुड़वाया । ३१ । जो हमने तुम लोगों को कहाथा कि तुम्हारे नाम हमलोगों ने तिल खोंटडाला हमारे लेखे मरगये वह सत्यही ठहरा क्योंकि जब पुरुषहोकर विराट नगरमें अर्जुन ने पाटीपारी मांगसवांरी तो फिर मरनेमें कौन सन्देहरहा । ३२ । हे कौन्तेय, विराटनगर में जो भीमसेन ने जाय रसोईंवरदारी की वह हमाराही पौरुष है । ३३ । इसी प्रकार के दण्ड क्षत्रियलोग सदा क्षत्रियोंको देतेरहते हैं, जिससे कि तुम ऐसे बीरकोभी पाटीपार मांगसवांर नपुंसकका वेष बनाय विराटकी कन्या को नाचना गाना सिखलाना पड़ा । ३४ । हे अर्जुन न हम वासुदेव के भयसे तुमको राज्य देंगे न तुम्हारे ही भयसे, इस से सहित केशव आय युद्धकरो । ३५ । शस्त्रग्रहणकिये युद्ध करते समर में हम गर्जेंगे इसमें न माया चलेगी न इन्द्रजाल, न कपटताकी बिभीषिका । ३६ । चाहे एक नहीं सहस्र वासुदेव हों व सैकड़ों अर्जुनहों पर अमोघ बाणधारी हमको पाय अवश्य दशों दिशों को भगेंगे । ३७ ।

Bhim and Arjun could not free themselves from slavery, till blameless Drupadi came to their rescue. 30. She released you from slavery and saved you from the ignominy of doing menial work. Our words to the effect that you were dead and that we should offer sesame and sugar to your manes, have proved true; for there could be no doubt in your death when you dressed your hair like women at Viratnagar. It was through us that Bhimsen served king Virat as a cook. Such is the punishment that a kshatrya gives to a kshatrya; for you had to assume the garb of a woman and to train girls in singing. We shall neither give back the kingdom through your fear or through the fear of Vasudev; both should therefore come out to fight. We shall roar in the battle field and shall not care for your jugglery or deceitfulness. Thousands of Vasudevas and hundreds of Arjuns will be

भीष्मेण मिन्धि वा शिरसा गिरिम् । तरेमंघा महागाधं वाहुभ्यां पुरुषोदधिम् ॥३८॥ शारद्वतमहामीनं विविंशतिमहोरगम् । बृहद्बलमहोद्वेल सौमदत्तितिमिङ्गिलम् ॥ ३९ ॥ भीष्मवेगमपर्यन्तं द्रोणग्राहदुरासदम् । कर्णशल्यझपावर्त्तं काम्बोजवडवामुखम् ॥ ४० ॥ दु शासनौघशल शल्यमत्स्यं सुषेण चित्रायुध नागनक्रम् । जयद्रथाद्रिं पुरुमित्रगाध दुर्मर्षणोद शकुनिप्रपातम् ॥ ४१ ॥ अस्त्रौघमक्षय्यमति प्रवृद्ध यदावगाह्य श्रमनष्टचेता । भविष्यसि त्व हतसर्वबान्धवस्तदा मनस्ते परिताप मेष्यति ॥ ४२ ॥ तदा मनस्ते त्रिदिवादिवाशुचेर्निवर्तिता पार्थ महीप्रशासनात् । प्रशाम्यराज्य हि सुदुर्लभं त्वयाबुभूषितः स्वर्गइवातपस्विना ॥ ४३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि उलूकदूतागमनपर्वणि उलूकवाक्ये एकषष्ट्युत्तरशततमोऽध्यायः १६१ ॥

चाहे भीष्मसे लडो चाहे पहाड़ से सिर फोड़ो अथवा अगाध और अपार पुरुष समुद्रको पार करो जिसमें शारद्वत मच्छली है विविंशति उरग भीष्मवेग और द्रोण ग्राह हैं जिसमें वायु भगदत्तहै हार्दिक और श्रुतायु समुद्र दुश्शासन जल, शल और शल्य अतिरुद्र मत्स्यहै कर्ण और शल्य कुंड वाल्हिक वडवाग्नि, चित्रायुध और सुषेन घोडे हाथी आदि जिसमें विषदाग्नि हैं जिसमें जयद्रथ गिरि पुरुमित्र अगाध जल दुर्मर्षण और शकुनि जलहै । शर शस्त्र अक्षय तूणीर निष्फलकर जब तुम मारेजाओगे तब तुमको सन्तापहोगा तब राज्यसे ऐसे विमुख होजाओगे जैसे स्वर्गवासी पृथ्वी के राजको अशुचि समझतेहै अबशान्त होना दुर्लभहै जैसे कोई विनातपके स्वर्ग नहीं पासकता उलूकने इसप्रकार अर्जुन से कुरुराजके वचन कहे । ४१ ।

scattered before our sharp arrows and will flee in all directions Either fight with Bhishm or break your head on stone or cross the boundless ocean of human beings, having Shardwat for fish, Vivinshti for Urags, Bhishm for velocity, Drona for its crocodile, Bhagdatta for wind, Hardik and Shrutayu for the sea, Dushasan for water, Shal and Shalya for dreadful fishes, Karan and Shalya for whirlpools, Vahlik for subterranean fire, Chitrayudh and Sushen for venomous fire, Jayadrath for hillocks and Purumitra, Durmarshan and Shakuni the deep waters. When your weapons and enexhaustible quivers of arrows will be of no avail you will repent and will have no longer any desire to rule the earth like the residents of paradise It is now very difficult to have peace as paradise can not be obtained without the sufferings the hardships of asceticism." Uluk thus rendered the message of Duryodhan to Arjun 41.

सञ्जय उवाच । उलूकस्त्वर्जुनं भूयो यथोक्तं वाक्यमब्रवीत् । आशीविष मिव क्रुद्धं तुदन् वाक्यशलाकया ॥ १ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा रुषिताः पाण्डवा भृशम् । प्रागव भृशसंक्रुद्धाः कैतव्येनापि धर्षिताः ॥ २ ॥ आसनेभ्यः दतिष्ठन्तयाहूंश्चैव प्रचिक्षिपुः । आशीविषा इव क्रुद्धा वीक्षाञ्चक्रुः परस्परम् ॥ ३ ॥ अवाक् शिरा भीमसेनः समुदैक्षत केशवम् । नेत्राभ्यां लोहितान्ताभ्यां माशीविष इवश्वसन् ४ आर्तं वातात्मजं दृष्ट्वा क्रोधेना भिहतं भृशम् । उत्स्मयन्निव दाशार्हः कैतव्यं प्रत्य भाषत ॥ ५ ॥ प्रयाहि शीघ्रं कैतव्य ब्रूयाश्चैव सुयोधनम् । श्रुतं वाक्यं गृहीतोर्थो मतं यत्ते तथास्तु तत् ॥ ६ ॥ एवमुक्त्वा महाबाहुः केशवो राजसत्तम । पुनरेव महाप्राज्ञं

अध्याय ॥ १६२ ॥

संजय धृतराष्ट्रजी से बोले कि विषधर सर्प के समान क्रोध किये अर्ज्जुन से वाक्यदण्डसे व्यथितकरताहुआ सो उलूक फिर दुर्य्योधन के वचन यथातथ्य बोला । १ । तिसके वचन सुन पाण्डवों ने अत्यन्त कोपकिया, क्योंकि वे तोप्रथमही से क्रुद्ध थे पर उलूकने औरभी क्रुद्ध करादिया । २ । सब पाण्डलोग अपने२ आसनों पर से उठखड़ेहुये और अपने हाथ पटकने लगे विषधर सर्प्पों के समान क्रुद्धहो आपस में एक दूसरेकी ओर देखनेलगे । ३ । और विषधर सर्प्प के समान श्वासें लेतहुये भीमसेन ने लालनेत्रों से कृष्णचन्द्रजी की ओर निहारा व फिर नीचेको शिरकरलिया । ४ । क्रोधसे अत्यन्त पीड़ित व दुःखित भीमसेनजी को देख भगवान् कृष्णचन्द्रजी हँसतेहुए उलूक से बोले । ५ । हे उलूक अब शीघ्रही यहां से जावो दुर्य्योधनसे जाय कहो कि तुम्हारेवचन सुने व उनका अर्थ ग्रहण किया व जो तुम्हारा मतहै कि प्रातःकाल आप युद्धकरें वैसाही होगा । ६ । हे राजन् इस

CHAPTER CLXII

Sanjaya said to Dhritrashtra that on *hearing* the *message* of Duryodhan through Uluk, Arjun was much enraged. Uluk enraged him as well as the other Pandavas who were already burning with anger. All the Pandavas stood up from their seats, clapped their hands and looked at one another like venomous serpents. And *hissing like* a venomous serpent, *Bhimsen*, with red *eyes looked* towards Shree Krishn and again hung down his head. Seeing Bhimsen much distressed with anger, Shri Krishn said to Uluk with a smile, " You may return at once, Uluk, and tell Duryodhan that we have heard you and understood his purpose, namely, we shall come out in the morning to fight." Having thus spoken to *Uluk*, *Shree*

युधिष्ठिर मुदैक्षत ॥ ७ ॥ सृञ्जयानाञ्चसर्वेषां कृष्णस्यच यशस्विनः । द्रुपदस्य सपुत्रस्य विराटस्यच सन्निधौ ॥८॥ भूमिपानांच सर्वेषा मध्ये वाक्य जगादह । उलूकः पयर्जुन भूयो यथोक्त वाक्यमब्रवीत् ॥ ९ ॥ आशी विष मिवक्रुद्ध तुदन् वाक्य शलाकया । कृष्णादींश्चैव तान् सर्वान यथोक्त वाक्य मब्रवीत् ॥ १० ॥ उलूकस्यतु तद्वाक्य पाप दारुणमीरितम् । श्रुत्वा विचुक्षुभे पार्थो ललाटञ्चाप्यमार्जयत् ॥ ११ ॥ तदवस्थ तदा दृष्ट्वा पार्थ सा समितिर्नृप । नामृष्यन्त महाराज पाण्डवाना महारथा ॥ १२ ॥ अधिक्षेपेण कृष्णस्य पार्थस्यच महात्मन । श्रुत्वाते पुरुषव्याघ्रा क्रोधाज्जज्वलुरच्युत॥१३॥ धृष्टद्युम्न शिखण्डीच सात्यकिश्चमहारथः । केकया भ्रातर पञ्च राक्षसश्च घटोत्कच ॥ १४ ॥ द्रौपदेयाभिमन्युश्च धृष्टकेतुश्च पार्थिवः । भीमसेनश्च विक्रान्तो यमजो च

मकार महाबाहु केशवजी उलूकसे कह फिर युधिष्ठिरजीकी ओर देखने लगे । ७ । तब फिर सब संजयों के व यशस्वी कृष्णचन्द्रजी के व पुत्र सहित राजाद्रुपद क व विराटके समीप, व सब राजाओं के मध्यमें उलूक फिर दुर्योधनके कहे वचन क्रुद्ध अर्जुनजी से कहने लगा । ९ । फिर जैसा जिससे कहनेको दुर्योधन ने कहाया कृष्णचन्द्रादि प्रत्येक से उसने यथातथ्य कहा । १० । पाप दारुण रूप उलूक के वचन सुन अर्जुन ने बडाक्रोधकिया इससे उनका मस्तक फरकने लगा उसे वे सुहरानेलगे । ११ । अर्जुनको उस अवस्थामें मास देख वह पांडवों की सभा व पांडवों के महारथ वीर लोग उन वचनों को न सहसके।१२। कृष्णचन्द्रजी व महात्मा पार्थोंकी निन्दा सुन सब पुरुषसिंह मार क्रोधके वलउठे । १३ । उनमें धृष्टद्युम्न, शिखण्डी महारथ सात्यकि, केकयदेश के पांचभाई राजा, व घटोत्कच नाम राक्षस । १४ । द्रौपदीजी के पांच पुत्र, अभिमन्यु, धृष्टकेतु राजा,

---

Krishn looked towards Yudhishthir Uluk again repeated the words of Duryodhan to Arjun, who was already much enraged and who was surrounded by the Srinjayas, Shree Krishn, king Drupad, his sons and king Virat He then told Krishn and others separately the words of Duryodhan 10. Arjun was much enraged on hearing the words of sinful Uluk, his forehead throbbed with the excess of anger and he began to pass his hand gently over it, Seeing Arjun in that state, the Pandavas and the warriors present could not control themselves and burned within themselves on hearing Krishn and the Pandavas blamed by him Dhrishtadyumn, Shikhandi, great Satyaki, the five princes of Kaikaya, Ghatotkach the demon, the five sons of Draupadi Abhimanyu, king Dhrishtaketu, Bhimsen of great valour

महारथौ ॥१५॥ उत्पेतु रासनात् सर्वे क्रोधसरक्तलोचना । बाहून्प्रगृह्यरुचिरान् रक्त चन्दनरूषितान् । अङ्गदैः परिहार्यैश्च केयूरैश्च विभूषितान् ॥१६॥ दन्तान् दन्तेषु निष्पिष्य सृक्किणी परिलेलिहन् । तेषामाकारभावज्ञः कुन्तीपुत्रो वृकोदरः ॥ १७ ॥ उदतिष्ठत् सवेगेन क्रोधेन प्रज्वलन्निव । उद्वृत्य सहसा नेत्रे दन्तान् कटकटाय्यच ॥१८॥ हस्तं हस्तेन निष्पिष्य उलूकं वाक्यमब्रवीत् । अशक्तानामिवास्माकं प्रोत्साहननिमित्तकम् ॥१९॥ श्रुतंते वचनमूर्ख यत्वां दुर्योधनोऽब्रवीत् । तन्मे कथयतो मन्द श्रृणु वाक्य दुरासदम् ॥ २० ॥ सर्वक्षत्रस्य मध्येत्वं यद्वक्ष्यसि सुयोधनम । शृण्वतः सूतपुत्रस्य पितुश्चत्वं दुरात्मन ॥ २१ ॥ अस्माभि प्रीतिकामैस्तु भ्रातुर्ज्येष्ठस्य नित्यशः । मर्षितं

महाविक्रमी भीमसेनजी, व महारथ नकुल सहदेव । १५ । ये सब अपने अपने हाथउठाय अपने २ आसनों से मारे क्रोधके रक्तचन्दन के सदृश नेत्र लालकर उठखड़े हुये ।१६। और बहूंटा कङ्कणादि धारण किये हाथों को बार बार ऊपरको उठाय दांत से दांत कटकटाय जीभ से ओठों के अन्त बार बार चाटने लगे । १७। इन सब लोगोंके आकार के भाव के जाननेवाले भीमसेन जी क्रोध से प्रज्वलितही से हो बड़े वेगसे उठखड़े हुये । १८ । एकाएकी नेत्र निकाल दांत कटकटाय, हाथ से हाथ बार २ मींज उलूक से बोले । १९ । हे मूर्ख, हमलोगों को अशक्तही से समझ हमारे प्रोत्साहन करने के निमित्त जो वचन दुर्योधन ने तुझ से कहा हमने अच्छीतरह सुना, अब हमारा भी बड़े दुःख से सहने के योग्य वचन तू सुने । २० । जो वचन सब क्षत्रियोंके सुनतेमें व दुराचारी कर्ण शकुनिके भी सुनतेमें उस दुष्टदुर्योधनसे तू कहेगा ।२१। कि हे दुष्ट हमलोगों ने नित्य अपने ज्येष्ठ भाईकी प्रीतिकी कामनासे जो तुम्हारे दुराचारों को सहा उसको तुम बहुत न

and brave Nakul and Sahadev raised their hands and with eyes red in anger, rose *from* their seats. They raised their hands decked with ornaments, again and again, gnashed their teeth and licked again and again their lips with their tongues. Knowing the state of the minds of those men, Bhimsen stood up as if burning in anger. Suddenly looking hard, gnashing his teeth and rubbing both his hands, he said to Uluk, " O fool ! I have heard well the words which Duryodhan has sent through you to enrage us; now let him hear our words which he will hardly be able to bear. 20. You will tell him the following words within hearing of all the kshatryas as well as of wicked Karan and Shakuni.—Don't be proud, wicked man, of the wrongs you did us and we suffered for the love of our elder

ते दुराचार तत्त्वं न बहु मन्यसे ॥ २२ ॥ प्रेषितश्च हृषीकेशः शमाकांक्षी कुरून् प्रति । कुलस्य हितकामेन धर्मराजेन धीमता ॥ २३ ॥ त्वंकालचोदितो नूनं गन्तुकामो यमक्षयम् । गच्छस्वाहवमस्माभिस्तच्च श्वो भविताध्रुवम् ॥ २४ ॥ मयापिच प्रतिज्ञातो वधः सभ्रातृकस्यते । स तथा भविता पापनात्र कार्य्या विचारणा ॥२५॥ वेलामतिक्रमेत् सद्यः सागरो वरुणालयः । पर्वताश्च विशीर्य्येयुर्मयोक्तं न मृषाभवत् ॥ २६ ॥ सहायस्ते यदि यमः कुबेरो रुद्र एववा । यथाप्रतिज्ञं दुर्बुद्धे प्रकरिष्यन्ति पाण्डवाः । दुःशासनस्य रुधिरं पाता चास्मि यथेप्सितम् ॥ २७ ॥ यश्चेह प्रतिसंरब्धः क्षत्रियो माभियास्यति । अपि भीष्मंपुरस्कृत्य तं नेष्यामि यमक्षयम् ॥ २८ ॥ यच्चैतदुक्तं वचनं मया क्षत्रस्य संसदि तथैतद्भविता सत्यं तथैवात्मानमालभे ॥ २९ ॥

मानो । २२ । और कुलके हितकी कामनोसे धीमान् धर्मराजजी ने शान्तकराने के लिये कौरवोंके समीप भगवान् वासुदेवजीको भेजा । २३ । परन्तु तुझको तो काल की प्रेरणाहै इससे यमपुरको जाया चाहताहै भगवान् केभी वचन तूने नहीं माने अच्छा अब,जा हमलोगों के सग प्रातःकाल निश्चय युद्धहोगा । २४ । हे महापाप हमनेभी जो सब भाइयों समेत तेरे मारडालने की प्रतिज्ञाकी है वह वैसीही होगी इसमें कुछ विचार करने की आवश्यकता नहीं है । २५ । क्योंकि चाहे समुद्र बढ़कर जगको डुबोदे चाहे पर्वतफटजाय परन्तु मेरावचन झूठानहीं होसकताहै यदि यम रुद्र वा कुबेर तेरेसहायकहों परन्तु पांडव अपने वचनको पालेंगे । २७ । मैं निस्संदेह दुश्शासन का रुधिर पियूंगा जो वचन हमने नृपोंकी सभामें प्रतिज्ञा पूर्वक कहे थे वही अब हम शपथकरके कहतेहैं कि सत्य करेंगे । २८ । भीमसेनजी के ऐसे वचन सुन असहनशील सहदेवजी भी मारे क्रोध के लालनेत्रकर

---

brother. Wise Yudhishthir the just sent Bhagwan Vasudev to the Kaurav court for the good of the family; but because the time of your death has drawn near, you did not hear him and so we are sure to fight early tomorrow. I shall fufil my promise by killing you and your brothers without hesitation; for whether the Ocean burst his bounds and drown all the world or mountains may break into pieces, my words will not p ove untrue. The Pandavas will do as they have promised whether Yam, Kuver or Varun protect you. I must drink the blood of Dushasan. I swear to perform what I promised to do before the assembly of kings." On hearing the words of Bhimsen, Sahadev too spoke out with his eyes red in anger. 30. "Hear, sinful wretch," said he, "the words which

भीमसेनवचः श्रुत्वा सहदेवोप्यमर्षणः । क्रोधसंरक्तनयनस्ततो वाक्यमुवाचह ॥३०॥ शौटीरशूरसहशमनीकजनसंसदि । शृणु पाप वचो मह्यं यद्वाच्यो हि पिता त्वया ॥ ३१ ॥ नास्माकं भविता भेदः कदाचित् कुरुभिःसह । धृतराष्ट्रस्य सम्बन्धो यदि नस्यात्त्वया सह ॥ ३२ ॥ त्वन्तु लोकविनाशाय धृतराष्ट्रकुलस्यच । उत्पन्नो वैरपुरुषः स्वकुलघ्नश्च पापकृत् ॥ ३३ ॥ जन्मप्रभृति चास्माकं पिता ते पापपूरुषः । अहितानि नृशंसानि नित्यशःकर्तुमिच्छति॥३४॥ तस्य वैरानुषङ्गस्य गन्तास्म्यन्तं सुदुर्गमम् । अहमादौ निहत्यत्वां शकुनेः सम्प्रपश्यतः ॥ ३५ ॥ ततोस्मि शकुनिं हन्ता मिषतां सर्वधन्विनाम्। भीमस्य वचनं श्रुत्वा सहदेवस्य चोभयोः ॥ ३६ ॥ उवाच फाल्गुनो वाक्यं भीमसेनं स्मयन्निव। भीमसेननतेसन्ति येषां वैरं त्वयासह ॥ ३७ ॥ मन्दा गृहेषु सुखिनो मृत्युपा

यह वचन बोले कि । ३० । हे पापी उलूक जो हमारी रणधीर वीरोंकी व सैनिकजनों की सभामें तुझको तेरेपिता दुर्य्योधन से कहने के योग्य वचन है उसे सुन । ३१ । यदि बाल्यावस्थाहीं में धृतराष्ट्र तुझ पापी अपने पुत्र दुर्योधन को त्यागदेते तो हमलोगों का कौरवोंके संग कभी भेद न होता । ३२ । हेपापी तू धृतराष्ट्र के कुलका और अपनेभी पुत्रादिकों का विनाशक उत्पन्न हुआहै क्योंकि वैर सब तेरेही कारण उत्पन्न हुआहै । ३३ । और पापीपुरुष तेरेपिताने जब से हमलोगों का जन्म हुआहै तभी से हमलोगों का अहित व अतिक्रूरही कर्म नित्य करनाचाहाहै व अबभी चाहताहै । ३४ । सो अब उस वैरानुषंगके अन्तको तू अवश्य पहुँचगा, क्योंकि हम शकुनि दुष्टके देखतेही देखते पहिले तुझे मारेंगे फिर सब धनुर्द्धरों के सामने शकुनि कोभी मारेंगे । ३६ । इसप्रकार भीमसेन व सहदेव दोनोंके वचनसुन हँसतेहुये अर्जुनजी भीमसेनजी से बोले हे भीमसेन जिनदुष्टोंका वैर तुम्हारे साथहै वे अब नहींहैं परेहीसमझो । ३७ । यद्यपि

---

you will say to your father, Duryodhan, and which I say before the assembly of our brave warriors and soldiers: We should never have raised a quarrel with the Kauravas, if Dhritrashtra had cast away, in childhood, his sinful son Duryodhan. He will cause the destruction of his family and his sons as he has set up this quarrel. Your father has been cruel to us and been thinking ill of us from our childhood and we are bound to end this quarrel by killing Duryodhan in the presence of Shakuni and then killing Shakuni too in the presence of other warriors." On hearing the words of Bhimsen and Sahadev Arjun said to Bhimsen with a smile, "Think your enemies as if they are already dead, Bhimsen; for, although they are yet alive,

शवशङ्कताः। उलूकश्चनते वाच्यः परुषं पुरुषोत्तम ॥ ३८ ॥ दूताः किमपराध्यन्ते यथो कस्यानुभाषिणः । एवमुक्त्वा महाबाहुर्भीमं भीमपराक्रमम् ॥ ३९ ॥ धृष्टद्युम्नमुखान् वीरान् सुहृदः समभाषत । श्रुतं वस्तस्य पापस्य धार्त्तराष्ट्रस्य भाषितम् ॥ ४० ॥ कुत्स नंवासुदेवस्य मम चैव विशेषतः । श्रुत्वा भवन्तः संरब्धा अस्माकं हितकाम्यया ॥ ४१ ॥ प्रभावाद्वासुदेवस्य भवतां च प्रयत्नतः । समग्रं पार्थिवं क्षत्रं सर्वं न गणयाम्यहम् ॥ ४२॥ भवद्भिः समनुज्ञातो वाक्यमस्य यदुत्तरम् । उलूके प्रापयिष्यामि यद्वक्ष्यति सुयोधनम् ॥ ४३ ॥ श्वो भूते कत्थितस्यास्य प्रतिवाक्यं चमूमुखे । गाण्डीवेनाभिधास्यामि क्लीबा हि वचनोत्तराः ॥ ४४ ॥ ततस्ते पार्थिवाः सर्वे प्रशशंसुर्धनञ्जयम् । तेनवाक्योपचारेणवि-

अभी वे मन्द सुखी हो अपने घरमें बैठहैं पर कालकी फांसी में बँधहुयेहैं, व हे पुरुषोत्तम आप उलूक बेचारेको कठोर वचन न कहें । ३८ । क्योंकि दूत तो अपने स्वामिका सन्देश ज्योंका त्यों कहतेहैं उसमें उनका कौन अपराध, महाबाहु अर्जुनजी भीमपराक्रम भीमसेनजीसे ऐसा कह धृष्टद्युम्नादि वीर अपने सुहृदों से बोले कि आप लोगोंने उसपापी दुर्योधन के वचन सुने । ४० । जो कि उसने वासुदेवजी की निन्दाकी और हमारी तो विशेषही निन्दाकी जिसे सुन हमलोगोंके हितकी कामनासे आपलोग क्रोधयुक्तहुये ।-४१ । परन्तु वासुदेव भगवान् के प्रभावसे व आपलोगोंके प्रयत्न से सम्पूर्ण राजगण व सब क्षत्रियगणों को हम कुछ नहीं गिनते । ४२ । आपलोगों ने कुछ विचारा जो इसके वचनका उत्तरदियाजाय जोकि उलूकसे कहें फिर वह जाय दुर्योधन से कहे । ४३ । हमने तो विचारा है कि यही उत्तर है कि प्रातःकाल होनेपर सेनाओं के सम्मुख इस उसके बकने के नपुंसकताके उत्तर गांडीवधन्वाके मुखसे कहवावेंगे और ऐसे अपने मुखसे क्या कहें । ४४ । यह सुनतेही अब राजालोगोंने अर्जुनजी की बड़ी

they are bound in the snare of Time. Donot say harsh words to poor Uluk, best of men; for messengers commit no sin in rendering the messages of their principals" Having said these words to brave Bhimsen, Arjun turned towards Dhrishtadyumn and other warriors and said to them, "You have heard the words of wicked Duryodhan, 40. He has spoken ill of Vasudev and specially of me, on hearing which our well-wishers have been so much enraged. But relying on the greatness of Vasudev and on your help, I disregard all the kings and kshatryas. Have you thought of the reply which we should give to Uluk and which he will carry to Duryodhan? In my opinion, we should give a reply to his idle and cowardly talk tomorrow, in the field of battle from the mouth of our Gandiv bow

रिमताराजसत्तमाः ॥ ४५ ॥ अनुनीय च तान् सर्वान् यथान्यायं यथावयः । धर्मराजंतदा वाक्यं तत् प्राप्यं प्रत्यभाषत ॥ ४६ ॥ आत्मानमवमन्वानो नहि स्यात् पार्थिवोत्तमः । तत्रोत्तरं प्रवक्ष्यामि तव शुश्रूषणे रतः ॥ ४७ ॥ उलूकं भरतश्रेष्ठ सामपूर्वं मथोर्जितम् । दुर्योधनस्य तद्वाक्यं निशम्यभरतर्षभः ॥ ४८ ॥ अति लोहितनेत्राभ्या माशीविष इवश्वसन् । स्मयमान इवकोपात् सृक्किणी परिसलिहन् ॥ ४९ ॥ जनार्दन मभिप्रेक्ष्य भ्रातृश्चैवेद मब्रवीत् । अभ्यभाषत कैतव्य प्रगृह्य विपुलं भुजम् ५०॥ उलूक गच्छ कैतव्य ब्रूहि तात सुयोधनम् । कृतघ्नं वैरपुरुषं दुर्मतिं कुलपांसनम् ॥ ५१ ॥ पाण्डवेषु सदापाप नित्यं जिह्मं प्रवर्तसे । स्ववीर्याद्य- पराक्रम्य पाप आह्वय ते परान् ।

प्रशंसा की व सब राजसत्तम इस वचनसे बड़े विस्मितहुये । ४५ । तब धर्मराजजी ने जैसा न्यायथा व जैसी जिसकी अवस्थाथी उसके अनुकूल सबको समझाय समयानुसार यह वचनकहा । ४६ । कि अपनी निन्दासुन उत्तम राजाको चाहिये कि किसी के दूतको मारने न लगे हम उसका उत्तर कहेंगे, और अभी तो हम उसके सुननेहीमें रतथे । ४७ । इतना कह उलूकके मुखसे फिरभी कुछ दुर्योधन के वचन सुन जोकि उसने बड़े जोरसे कहा । ४८ । तब अतिलालनेत्रकर विषधर सर्प के समान ऊँची श्वासें भर मारे क्रोधके कुछ गर्वितसे हो जीभसे दोनों ओठों के किनारे चाटतेहुये, वासुदेव भगवान तथा अपने सब भाइयों की ओर देख उलूकका हाथ अपने लम्बे हाथसे पकड़ बोले । ५० । हे तात उलूक अब तुम जाव, कृतघ्न, वैर पुरुष, दुर्मति व कुलदोषी दुर्योधन से कहो । ५१ । कि हे पापी तुम सदा पांडवोंके विषयमें नित्य कुटिलताही करतेहो परन्तु हे पापी जो अपने

---

and not by word of our mouth" All the kings praised Arjun and were much distressed. Yudhishthir the just pacified all the kings by fair words and then said. "A good king should not punish the messenger for the harshness of the message brought by him I have heard him with patience and shall now give a reply." At this, Uluk said some more words with great force and Yudhishthir with red eyes, heaving deep sighs like a venomous snake, with a touch of pride, licking the tips of his lips with his tongue and looking at Vasudev and then at his brothers, held Uluk's hand in his long hand and said. 50. "Go Uluk and say to Duryodhhn the ungrateful, ill natured and the pest of his family the following words:— You have always done ill to the Pandavas, sinful man. He who relies on his own strength and prowess, challenges his enemies to fight and

अभीतः पूरयन् वाक्य मेष वै क्षत्रियः पुमान् ॥ ५२ ॥ स पापः क्षत्रियो भूत्वा अस्माना-हूय संयुगे । मान्यामान्यान् पुरस्कृत्य युद्धं मागाः कुलाधम ॥ ५३ ॥ आत्मवीर्यं समाश्रित्य भृत्यवीर्यञ्च कौरव । आह्वयस्व रणे पार्थान् सर्वथा क्षत्रियो भव ॥ ५४ ॥ परवीर्यं समाश्रित्य यः समाह्वयते परान् । अशक्तः स्वयमादातु मेतदेव नपुंसकम् ५५ ॥ त्वं परेषां वीर्येण आत्मानं बहुमन्यसे । कथमेवमशक्तस्त्व मस्मान्समभिगर्जसि ५६ कृष्ण उवाच ॥ मद्वचश्चापि भूयस्ते वक्तव्यः स सुयोधनः । श्वइदानीं प्रपद्येथाः पुरुषो भव दुर्मते ॥ ५७ ॥ मन्यसे यच्च मूढत्वं न योत्स्यति जनार्दनः । सारथ्येन वृतः पार्थैरितित्वं न बिभेषिच्च ॥ ५८ ॥ जघन्य काल मप्येतन् न भवेत् सर्वपार्थिवान् । निर्दहेय

वीर्य से पराक्रम कर शत्रुओंको स्पर्द्धा पूर्वक बुलाताहै । ५२ । और निर्भयहो वाक्यों को पूरा करताहै वह क्षत्रिय पुरुष कहलाताहै, व वह पापीहै जो क्षत्रियहो हम लोगोंको स्पर्द्धा पूर्वक युद्धकरने को बुलाय मान्य अमान्यों को आगे खड़ाकरदे व आप अलग होरहे इससे हे कुलाधम, मान्य भीष्मादि के साथ युद्ध न कर । ५४ । हे कौरव अपने और अपने भृत्यों के बलसे रणमें पार्थों को स्पर्द्धा पूर्वक बुलाव तो सबप्रकारसे क्षत्रिय हो । ५५ । क्योंकि जो पुरुष पराये वीर्य के भरोसे शत्रुओंको युद्ध करनेको बुलाताहै वह अशक्त कहाता व नपुंसकताही ग्रहण करने को ऐसा काम करताहै । ५६ । जो तुम दूसरों के वीर्य से अपनेको बहुत मानते हो ऐसे अशक्त तुम कैसे हमलोगों के सामने गर्जते हो । ५७ । इस-के पीछे कृष्णचन्द्रजी बोले कि, हे उलूक हमाराभी यह वचन दुर्योधन से क-हना कि हे दुर्बुद्धिवाले अब पुरुषहो, प्रातःकाल अभी होगया समझले । ५८ । हे मूढ़ जो तू यह मानता है कि जनार्दन तो युद्ध करेंहीगे नहीं क्योंकि पार्थोंने

---

fearlessly fulfils his words, is a true kshatrya; but he who boastfully challenges us to fight and then leaves us to encounter Bhishm and other elders, is the plague of his own family. You are a kshatrya, if you challenge us on your own strength and that of your paid soldiers; but he who challenges an enemy on the strength of others, is weak and coward. How can you boast before us when you yourself are powerless and rely on the strength of others!" Krishan then spoke out and said to Uluk, "Repeat the following words before Duryodhan:— "Be a man, fool, and consider this time as if it were the morning. You think that Janardan will not fight, because the Pandavas have accepted him only for driving the chariot and this is the reason why you are not afraid of me. But it is not so; for in the end, you will see

महं क्रोधात् तृणानीव हुताशनः ॥ ५९ ॥ युधिष्ठिर नियोगात्तु फाल्गुनस्य महात्मनः । कारिष्ये युध्यमानस्य सारथ्यं विजितात्मनः ॥ ६० ॥ यद्युत्पतसि लोकांस्त्रीन् यदा विशसि भूतलम् । तत्र तत्रार्जुन रथं प्रभाते द्रक्ष्यसे पुनः ॥ ६१ ॥ यच्चापि भीमसेनस्य मन्यसे मोघमाषितम् । दुःशासनस्य रुधिरं पीतमित्यवधारय ॥ ६२ ॥ न त्वां समीक्षते पार्थो नापि राजा युधिष्ठिरः । न भीमसेनो न यमौ प्रतिकूलप्रभाषिणम् ॥ ६३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि उलूकदूतागमनपर्वणि कृष्णादिवाक्ये द्विषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६२ ॥

सञ्जय उवाच । दुर्योधनस्य तद्वाक्यं निशम्य भरतर्षभ । नेत्राभ्यामतिताम्राभ्यां कैतव्यं समुदैक्षत ॥ १ ॥ सकेशव मभिप्रेक्ष्य गुडाकेशो महायशाः । अभ्यभाषतकैत-

---

केवल सारथ्यही कर्म करने के लिये उनको ग्रहणकियाहै इसीसे तू नहीं डरता । ५९ । परन्तु अन्तकाल में यह बात न होगी, अन्त में तो सब राजाओं को हम ऐसा भस्म करेंगे जैसे शुष्क तृणोंको प्रचण्ड अग्नि जलाता है । ६० । हां अभी तो युधिष्ठिरजी की आज्ञासे युद्ध करते हुये महात्मा अर्जुन का सारथ्यकर्म उनकी प्रीति के लिये हम करेंगे । ६१ । परन्तु कल चाहे तीनों लोक में जहां जाओ अथवा पाताल में पहुंचो जहां तुम जाओगे अर्जुन के रथको भी वहीं देखोगे भीमसेन के वचन को तुम अपनी मूर्खता से झूठा समझते हो परन्तु वह दुश्शासन का रुधिर अवश्य पियेगा युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम सहदेव, और नकुल झूठ नहीं बोलते ॥ ६४ ॥

अध्याय ॥ १६३ ॥

संजय फिर धृतराष्ट्रजीसे बोले कि महायशस्वी भरतश्रेष्ठ अर्जुनजी दुर्योधनके वचन सुन अतिलालनेत्रों से उलूककी ओर जोर से घोर दृष्टिकर फिर केशव

---

that I will burn all the kings as Agni does the dry straw, though at present I shall drive the chariot of great Arjun to the field of battle. Tomorrow you will see Arjun's chariot standing before you wherever you go in the three regions or to the nether regions. You do not believe Bhimsen's words, but he is sure to drink the blood of Dushasan. Arjun, Yudhishthir, Bhim, Sahadev and Nakul donot tell lies." 64.

CHAPTER CLXIII

Sanjaya then said to Dhritrashtra that having heard the message of Duryodhan, Arjun the best of Bharats, stared long with his red eyes towards Uluk; then looking mildly towards Keshav and raising

र्थं प्रगृह्य विपुलं भुजम् ॥ २ ॥ स्ववीर्यं य समाश्रित्य समाह्वयति वै परान् । अभीतो युध्यते शत्रून् सवै पुरुष उच्यते ॥ ३ ॥ परवीर्यं समाश्रित्य यः समाह्वयते परान् । क्षत्रबन्धुरशक्तत्वाल्लोके स पुरुषाधम ॥४॥ सत्वं परेषां वीर्येण मन्यसे वीर्य्यमात्मनः । स्वय कापुरुषो मूढ परांश्च क्षेप्तुमिच्छसि ॥ ५ ॥ यस्तु वृद्धं सर्वराज्ञां हितबुद्धि जितेन्द्रिय । मरणायमहाप्राज्ञं दीक्षायत्वा विकत्थसे ॥ ६ ॥ भावस्ते विदितोस्माभिर्दुर्बुद्धे कुलपांसन । नहानिष्यन्ति गाङ्गेयं पाण्डवो घृणयेतिह ॥ ७ ॥ यस्यवीर्यं समाश्रित्य धार्त्तराष्ट्रविकत्थसे । हन्तास्मि प्रथमं भीष्म मिषतां सर्वधान्विनाम् ॥ ८ ॥ कैतव्य गत्वा भरतान् समेत्य सुयोधन धार्त्तराष्ट्रं वदस्व ।

भगवान्की ओर सुख पूर्वक देख अपना बडाभारी भुजउठाय उलूक से बोले कि । २ । जो पुरुष अपने वीर्यको पाय शत्रुओंको युद्धकरनेके लिये स्पर्द्धा सहित बुलाताहै फिर उनसे निर्भयहोकर युद्धकरताहै वह निश्चय पुरुष कहाता है । ३ । और जो पराये वीर्यको पाय, स्पर्द्धा सहित युद्धकरनेको शत्रुओंको बुलाता है, व आप युद्धकरने में अशक्तहै वह केवल क्षत्रियों का नीचबन्धु कहाता है पर कर्म से वह पुरुषाधम कहाता है क्षत्रिय नहीं कहाता । ४ । सो तुम अन्य कर्णादिकों के वीर्य से अपना वीर्य मानतेहो और आप खुद कुत्सित पुरुष हो औरों को कुत्सित बचन कह मचारणा चाहतेहो । ५ । हे मूढ जो तुमने सब राजाओंमें वृद्ध हितकारी जितेन्द्रिय महाप्राज्ञ भीष्मजीको मरनेकेलिये सबका सेनापति बनाय बकनेका प्रारम्भ किया है । ६ । सो हे दुर्बुद्धि कुलकलंक वह तुम्हारा अभिप्राय हमने जाना कि पाण्डवलोग मारेदयाके वृद्ध भीष्मजीको न मारेंगे । ७ । सो यह बात न होगी, दुर्योधन जिसके वीर्य्यका पाय तुम बकतेहो सब धनुर्द्धरों के देखतेही देखते पहिले हम भीष्महीको मारेंगे । ८ । हे उलूक वहां जाय तनकौरवों

his long arm, he said to Uluk, "He who bravely challenges his enemies and then fights with them fearlessly, is surely a man, while he who challenges them on the strength of others, himself being powerless, is only the worst of kshatryas and is the worst of men for his deeds. You think yourself strong on the strength of Karan and others and being yourself a wicked man, think others to be so You were a fool to make Bhishm the oldest of kings, wisest, having control over his organs and well-wisher of all, the commander in chief of your armies, thinking that the Pandavas would not kill him out of mercy; but you will not be able thus to accomplish your object, plague of the family ! We shall, first of all, kill Bhishm of whose strength you are so proud. we shall kill him before all archers. You will, when you reach there, say to Duryodhan in the presence of

तथेत्युवाचार्जुनः सव्यसाची निशाव्यपाये भविता विमर्दः ॥ ९ ॥ यद्याब्रवीद्वाक्यमदीनसत्त्वो मध्ये कुरून् हर्षयन् सत्यसन्धः । अहं हन्ता सृञ्जयानामनीकं शाल्वेयकांश्चेति ममैषभारः ॥ १० ॥ हन्यामहं द्रोणमृतेपि लोकं न ते भयं विद्यते पाण्डवेभ्यः । ततो हि ते लब्धतमं च राज्य मापद्गताः पाण्डवाश्चेति भावः ॥ ११ ॥ स दर्पपूर्णो न समीक्षसेत्व मनर्थमात्मन्यपि वर्त्तमानम् । तस्मादहं ते प्रथमं समूहे हन्ता समक्षं कुरुवृद्धमेव ॥ १२ ॥ सूर्योदये युक्तसेनः प्रतीक्ष्य ध्वजी रथी रक्षत सत्यसन्धम् । अहं हि वः पश्यतां द्वीपमेनं भीष्मं रथात् पातयिष्यामि बाणैः ॥ १३ ॥ श्वोभूते कत्थनावाक्यं विज्ञास्यति सुयोधनः । आचितं शरजालेन मया दृष्ट्वा पिता

के सामने दुर्योधन से कहना कि सव्यसाची अर्ज्जुनने कहाहै कि बहुत अच्छा रात्रि बीतजानेपर युद्धहोगा इसमें अन्तर न होगा । ९ । सत्यप्रतिज्ञ भीष्मजी जो कि अदीन पराक्रमी हैं उन्हों ने जो तुमलोगों से कौरवों के मध्य में सबको हर्षित करातेहुये कहा है कि हम सृञ्जयोंकी सेनाको व शाल्ववंशियोंकी सेनाको मार डारेंगे यह भार हमारे ऊपर आया, और बिना द्रोणाचार्य्यही के हम अकेलेही लोकभरको मारसक्तेहैं इससे तुमको पाण्डवोंसे कुछ भय नहींहै इस से तुम्हींको राज्य मिलेगा पाण्डव आपद्ग्रस्तही बनेरहेंगे इस से तुम अहङ्कारसे पूर्णहो अपना अनर्थ अपनेमें टिका नहीं देखते न उसको कुछ गिनतेहो, इस से हम तुम्हारे समूह में सबसे पहिले सबके सामने कुरुवृद्ध भीष्महीको मारेंगे । १२ । इससे सूर्योदय होनेपर सेनायुक्त, ध्वजी, रथी, कवची, सत्यसन्ध, भीष्मकी रक्षा तुम सब लोग कियेरहना, क्योंकि तुमलोगों के देखते में डूबते हुये कौरवों के आधार भीष्मजीको हम रथ से भूमिपर बाणोंसे मारगिरावेंगे । १३ । प्रातःकाल

all the Kauravas, that Arjun the truthful will come without fail to the field of battle early tomorrow. 9. Truthful Bhishm of true prowess cheered you by saying in the midst of the Kauravas that he would destroy all the armies of Srinjayas and Shalwas without the help of Dronacharya. He made you fearless of the Pandavas, saying that the Pandavas would remain as ever in misery and you would remain in possession of the kingdom. Bhishm has thus made you believe that you would suffer no punishment for your wrong doings. You feel yourself secure and are full of pride; we shall therefore kill Bhishm the eldest of the Kauravas first of all. You may be sure to protect Bhishm tomorrow with all your army, chariots and armour; for we shall bring down old Bhishm, the prop of the falling Kauravas, with our arrows from the chariot. The king of Kurus will tomorrow see Bhishm surrounded with the network

महम् ॥ १४ ॥ यदुक्तश्च सभामध्ये पुरुषो ह्रस्वदर्शनः । क्रुद्धेन भीमसेनेन भ्राता दुःशासनस्तवं ॥ १५ ॥ अधर्मज्ञो नित्यवैरी पापबुद्धिर्नृशंसवत् । सत्यांप्रतिज्ञामाचराद्द्रक्ष्यसे तां सुयोधन ॥ १६ ॥ अभिमानस्य दर्पस्य क्रोधपारुष्ययोस्तथा । नैष्ठुर्यस्यावलेपस्य आत्मसम्भावनस्य च ॥ १७ ॥ नृशंसतायास्तैक्ष्णयस्य धर्मविद्वेषणस्यच । अधर्मस्यातिवादस्य वृद्धातिक्रमणस्यच ॥ १८ ॥ दर्शनस्यच चक्रस्य कृत्स्नस्यापनयस्य च । द्रक्ष्यासित्वं फलं तीव्रमचिरेण सुयोधन ॥ १९ ॥ वासु

कुरुराज देखेंगे कि मेरे बाणजाल में पितामहजी फँसेहुयेहैं । १४ । और क्रुद्ध भीमसेनजी ने जो सभाके मध्य में नीचपुरुष दुश्शासन तुम्हारे भाईको कहाहै कि । १५ । अधर्मज्ञ नित्यवैरी, दुर्बुद्धि व क्रूरकर्मकारी दुश्शासन का रुधिर हम पानकरेंगे, हे दुर्य्योधन भीमकी उस सत्यप्रतिज्ञा को बहुतहीशीघ्र तुम देखोगे । १६ । हे दुर्य्योधन हमी श्रेष्ठहैं, इसका जो तुमको अभिमानहै, व हम शत्रुओं का अनादर करसक्तेहैं इसका जो दर्प है, क्रोधसे जो जलाकरतेहो, व जो निष्ठुर वाक्य सदा बोलाकरतेहो और स्नेह किसीका रखतेहो नहीं इसकी निष्ठुरता तुममेंहै, औरोंका अपमान करते यह घमण्ड तुममेंहै, व हमीं ज्ञाता शूरवीरहैं यह आत्मसम्भावनाहै । १७ । निर्दयत्व होनेकी नृशंसता, व जो हम लोगों को विषदानादि किया उसकी तीक्ष्णता कपटसे जुआ खेलाय जो विद्वेषण किया, जर राज्यदेने की प्रतिज्ञाको पर नहीं दिया यह अधर्म धर्म्मिष्ठ युधिष्ठिरजी में अधर्मिष्ठत्वका आरोपणकरना कि तुममें वैडालव्रतहै यह अपवाद, विदुरादिकोंका अपमान यह वृद्धातिक्रमण । १८ । कर्णादिकों में जयकी निश्चय यह दर्शन, सेनाकी अधिकता यहचक्र, हम लोगोंको दूरकरदेना यह अपनय इतने सब दोष तुममेंहैं इनका फल बहुतही शीघ्र देखोगे । १९ । हे मूढ नराधम वासुदेवको सहा-

of my arrows You will soon see Bhimsen fulfilling his promise, made in the midst of the Kauravas, by drinking the blood of your brother Dushasan the irreligious, unwise and cruel. Out of pride you think yourself the best of all men, you boast of your ability to crush your enemies, you always burn with anger, you always say harsh language and are cruel enough to have no love for any one. You insult others out of pride and are self conceited You are cruel and have attempted to destroy us by poisoning and other means. You deceived us in gambling, broke your promise of restoring to us our kingdom and blamed Yudhishthir the just of acting like a cat. You have insulted Vidur and other elders and believe that Karan will win you victory. You are proud of your great army and have driven us away. But you will soon suffer the punishment. What hope have you,

देवद्वितीये हि मयि क्रुद्धे नराधम । आशाते जीविते मूढराज्ये वा केन हेतुना ॥ २० ॥ शान्ते भीष्मे तथा द्रोणे सूतपुत्रेच पातिते । निराशो जीविते राज्ये पुत्रेषुच भविष्यासि ॥ २१ ॥ भ्रातृणां निधनं श्रुत्वा पुत्राणाञ्च सुयोधन । भीमसेनेन निहतो दुष्कृतानि स्मरिष्यसि ॥ २२ ॥ न द्वितीयां प्रतिज्ञां हि प्रतिजानामि कैतव । सत्यमेतत्ब्रवीम्यहं होतत् सर्वं सत्यं भविष्यति ॥ २३ ॥ युधिष्ठिरोपि कैतव्यमुलूकमिदमब्रवीत् । उलूक मद्वचो ब्रूहि गत्वा तात सुयोधनम् ॥ २४ ॥ स्वेन वृत्तेन मे वृत्तं नाधिगन्तु त्वमर्हसि । उभयोरन्तरं वेद सूनृतानृतयोरपि ॥ २५ ॥ न चाहं कामये पापमपि कीटपिपीलयोः । किं पुनर्ज्ञातिषु वधं कामयेयं कथञ्चन ॥ २६ ॥ एतदर्थं मया तात पञ्च ग्रामा वृताः पुरा । कथं तव सुदुर्बुद्धे न प्रेक्षेयं व्यसनं महत् ॥ २७ ॥ स त्वं कामपरीतात्मा मूढभावाच्च

पक्ष पाप हमारे क्रोध करनेपर जीने में न राज्यपाने में तुमको किसहेतुसे आशाहै ।२०।भीष्म और द्रोणके मारेजानेपर कर्णकी मृत्युहोगी और तब तुमकोप्राण राज्य और पुत्रोंमें निराशा और ग्लानिहोगी अपने भाइयों और पुत्रोंकी कठोर मृत्यु सुनकरजानोगे कि वे सब भीमसेन से मारेगये । २२ । हे उलूक हम और दूसरी प्रतिज्ञा नहीं जानते बस यह सत्यकहतेहैं "इस से सब यह सत्यही" होगा । २३ । इसके पीछे युधिष्ठिरजीभी उलूक से यह वचन बोले कि हे तात दुर्योधनसे जाय हमारा यहवचन कहना कि । २४ । अपनेआचरणके समान हमारा आचरण तुम न जानो क्योंकि हम सत्य मिथ्या दोनोंका अन्तरजानते हैं । २५ । इससे हम कीड़े च्यूंटी आदिकाभी पापकरना नहीं चाहते फिर भाई सम्बन्धियोंका वध कैसे चाहें । २६ । हे तात इसीसे हमने पहिले पांचहीग्राम मांगे कि किसीप्रकार तुम निर्बुद्धिका मरण हम अपने नेत्रोंसे न देखें । २७ । सो तुम कामसे परीता-

wretch, of getting the kingdom, when you have enraged us and we have Vasudev for our helper ? 20. Karan will be killed after Bhishm and Drona, and you will be hopeless of your life, kingdom and sons. You will hear the death of your brothers and sons at the hands of Bhimsen and then will repent of your folly. I shall prove these words true; I know of no other vow." Yudhisthir then spoke out and said to Uluk, "Go to Duryodhan and say to him that he should not think our conduct to be like his own; for we know the difference between truth and falsehood. We donot wish to harm even insects; how can we do harm to our brothers and kinsmen ? We asked only five villages so that we may not see with our own eyes the death of an unwise man like you You are blind with avarice and have lost your senses. Vasudev showed you the right path; but you did not mind his words. It is now useless to talk more, be

फत्पसे । तथैव वासुदेवस्य न गृह्णासि हितवचः ॥ २८ ॥ किञ्चेदानीं बहुकेन युध्यस्व सह बान्धवैः । मम विप्रियकर्तारं कैतव्य ब्रूहि कौरवम् ॥ २९ ॥ श्रुतं वाक्यं गृहीतोर्थो मत यत्ते तथास्तु तत् । भीमसेनस्ततो वाक्यं भूय आह नृपात्मजम् ॥ ३० ॥ उलूक मद्वचो ब्रूहि दुर्मतिं पापपूरुषम् । शठं नैकृतिकं पापं दुराचारं सुयोधनम् ॥ ३१ ॥ गृध्रोदरे वा वस्तव्यं पुरे वा नागसाह्वये । प्रतिज्ञातं मया यच्च सभामध्ये नराधम ॥ ३२ ॥ कर्त्ताहं तद्वचः सत्यं सत्येनैव शपामि ते । दुःशासनस्य रुधिरं हत्वा पास्याम्यहं मृधे ॥ ३३ ॥ सक्थिनी तव भङ्क्त्वैव हत्वा हि तव सोदरान् । सर्वेषां धार्त्तराष्ट्राणामहं मृत्युः सुयोधन ॥ ३४ ॥ सर्वेषां राजपुत्राणामभिमन्युरसंशयम् ।

हमारो मूढभाव से बकतेहो, और तुम्हारे हितकरवचन वासुदेवजी ने कहे उनकाभी तुम ग्रहण नहीं करते । २८ । इससे अब बहुत कहनसे क्याहै अपने भाई बन्धुओं समेत युद्धकरो, हे उलूक यह हमारा वचन हमसे बैर करनेवाले दुर्योधनसे जायकहना।२९। कि हमने तुम्हारावचनसुना व उसका अर्थग्रहणकिया जातुम्हारा मतहै वैसाही हो अच्छा युद्धही करो, इसके पीछे भीमसेनजी फिर उलूकसे बोले कि हे उलूक दुर्मति पापपुरुष दुर्योधन से हमारा यहभी वचन कहना । ३० । जोकि बड़ाशठ, मिथ्यावादी, पापीसुयोधनहै हमने यह प्रतिज्ञाकीथी कि किंवा हम गृध्रके पेटही में बसेंगे या हस्तिनापुरही में बसेंगे इसवातकी भतिज्ञा हमने सभा के मध्यमें कीथी । ३२ । सो उसको हम सत्यही करेंगे यह शपथ करके तुमसे कहतेहैं कि दुश्शासनका रुधिर उसे मार जरूर पियेंगे । ३३ । हे दुर्योधन तुम्हारी जाँघहीतोड़ व तुम्हारे सब सौभाइयोंको मार तब कलकरेंगे क्योंकि धृतराष्ट्र के सबपुत्रोंको मृत्युरूप हमहैं । ३४ । व तुम्हारे तथा तुम्हारे सब भाइयों के पुत्रों के मृत्यु अभिमन्युहैं इसमें कुछभी सन्देह नहीं है, हम अपने कर्म से तुमको

prepared with your brothers to fight Tell Duryodhan, our enemy, that we have carefully heard his message and will do as he desires Let him fight if he will Bhim then said to Ulak, 'Tell sinful, untruthful and wicked Duryodhan the following words of mine — I made a vow to the effect that we shall either live in the stomach of vultures or in Hasthinapur. I made this vow in the court and mean to prove it true. I swear that I shall kill Dushasan and will drink his blood. I shall rest after breaking Duryodhans thigh and killing his hundred brothers, for I am the death of all the sons of Dhritrashtra as Abhimanyu is undoubtedly the death of the sons of Duryodhan as well as of his brothers. I shall please you by my deeds, yet hear me a little longer. I shall kill Duryodhan and all brothers and shall crush them under my feet in the presence of

कर्मणा तोषयिष्यामि भूयश्चैव वचः शृणु ॥ ३५ ॥ हत्वा सुयोधन त्वां वै सहितं सर्व सोदरैः । आक्रमिष्ये पदा मूर्ध्नि धर्मराजस्य पश्यतः ॥ ३६ ॥ नकुलस्तु ततो वाक्य मिदमाह महीपते । उलूक ब्रूहि कौरव्यं धार्तराष्ट्रं सुयोधनम् ॥ ३७ ॥ श्रुतं ते गदतो वाक्यं सर्व मेव यथातथम् । तथा कर्त्तास्मि कौरव्य यथा त्वमनुशासि माम् ॥ ३८ ॥ सहदेवोपि नृपते इदमाह वचोर्थवत् । सुयोधन मातर्याते वृथैषा ते भविष्यति ॥ ३९ ॥ शोचिष्यसे महाराज सपुत्रज्ञातिवान्धवः । इमश्च क्लेशमस्माकं हृष्टो यत् त्व विकत्थसे ॥ ४० ॥ विराटद्रुपदौ वृद्धा वुलूकमिदमूचतुः । दासभाव नियच्छेव साधोरिति मतिः सदा । तौ च दासावदासौ वा पौरुषं यस्य यादृशम् ॥ ४१ ॥ शिखण्डी तु

भस्मकरदेंगे अभी औरभी हमारावचन सुनो । ३५ । हे दुर्योधन, सबभाइयों समेत तुमको समरमें मार महाराज युधिष्ठिरजी के देखतेही देखते तुम सबोंके शिरोंपर अपने पैर धरेंगे । ३६ । इसके पीछे नकुलजी उलूकसे यह बचन बोले कि हे उलूक धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन से हमारे बचन ऐसे कहना कि । ३७ । हे कौरव्य तुम्हारे सबवचन हमने यथातथ्यसुने इस से जैसा तुमने हमको कहलाभेजाहै सब वैसा ही करेंगे अन्तर न पड़ेगा । ३८ । फिर सहदेवजी ने कहा कि हमारा यहवचन कहना कि हे दुर्योधन तुम्हारी जो मति है वह मिथ्या होजायगी । ३९ । हे महाराज हम लोगोंका यह क्लेश जो तुम बड़ेहर्ष के साथ बार २ बकतेहो उससे ज्ञाति बन्धु भाइयों समेत शोचकरोगे । ४० । तब वृद्ध राजाविराट और द्रुपद दोनों संगही बोले कि हे उलूक दुर्योधन से कहना कि जो इनदोनों को उन्होंने कहा है कि तुम दोनों बूढ़े अच्छे दासहो सो हम दोनों साधु युधिष्ठिरजी के दासभावकी प्रार्थना करतेहैं कि इनके दासहों, परन्तु तुम्हारे लिये दास अदास जो कुछ होंगे उस का पौरुष प्रातःकाल उसी रणभूमि में दिखावेंगे । ४१ । इसके पीछे शिखण्डी ने

Yudhishthir." Nakul was the next to speak to Uluk, "Communicate the following message to Duryodhan the son of *Dhritrashtra*: we have heard your message word for word and will act accordingly." Sahadev then said, "Repeat the following words before Duryodhan: Your hopes will prove false. You and your kinsmen and brothers will repent of the wrongs done to us of which you boast so often." 40. Old kings Virat and Drupad then spoke together, Tell Duryodhan," said they. "Duryodhan says we are good servants and, no doubt, we aspire to serve Yudhishthir the saint; but as for Duryodhan, we shall show him tomorrow, in the field of battle, whether we are slaves or freemen!" After them spoke out Shikhandi, saying, "Tell the following words, Uluk, to the ever sinful Duryodhan:– You will see me doing havoc in the field of battle.

ततो वाक्यमुलूकमिदमब्रवीत् । वक्तव्यो भवता राजा पापेष्वभिरतः सदा ॥ ४२ ॥ पश्य त्वं मां रणे राजन् कुर्वाणं कर्म दारुणम् । यस्य वीर्यं समासाद्य मन्यसे विजयं युधि ॥ ४३ ॥ तमहं पातयिष्यामि रथात्तव पितामहम् । अहं भीष्मवधात् सृष्टो नूनं धात्रा महात्मना ॥ ४४ ॥ सोऽहं भीष्मं हनिष्यामि मिषतां सर्वधन्विनाम् । धृष्टद्युम्नोऽपि कौन्तेयमुलूकमिदमब्रवीत ॥ ४५ ॥ सुयोधनो मम वचो वक्तव्यो नृपतेः सुतः । अहं द्रोणं हनिष्यामि सगणं सहबान्धवम् ॥ ४६ ॥ अवश्यञ्च मया कार्यं पूर्वेषां चरितं महत् । कर्त्ता चाहं तथा कर्म यथा नान्यः करिष्यति ॥ ४७ ॥ तमब्रवीद्धर्मराजः कारुण्यार्थं वचो महत् । नाहं ज्ञातिवधं राजन् कामयेयं कथञ्चन ॥ ४८ ॥ तवैव दोषाद्दुर्बुद्धे सर्वमेतत्त्वनावृतम् । स गच्छ मा चिरं तात उलूक यदि मन्यसे ॥ ४९ ॥ इह वा तिष्ठ भद्र

उलूक से यह वचन कहा कि हे उलूक सदा पापमें रत राजा दुर्योधन से आप हमारा यह सन्देश कहना कि । ४२ । हे राजन् रणमें दारुणकर्म करते हमको तुम देखना, कि जिसके वीर्यको पाय तुम समर में अपनी विजय मानते हो, उन तुम्हारे पितामह भीष्मको हम रणमें रथपर से गिरावेंगे क्योंकि हमको ब्रह्माने भीष्म के वधही के लिये उत्पन्न कियाहै. यह निश्चय जानो इससे सब धनुर्द्धरोंके सामने हम भीष्मको मारही डालेंगे इसमें कुछ भी अन्तर न पड़गा । ४४ । इस के पीछे धृष्टद्युम्न उलूक से यह बोले कि, धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन से हमारी ओरसे कहना कि हम समरमें भाई बन्धु समेत द्रोणाचार्य को मारडालेंगे । ४६ । जैसा हम कर्मकरेंगे वैसा और कोई न करेगा बस इतनेही में जानलो, फिर कारुण्यके अर्थ उलूक से धर्मराजजी बोले । ४७ । हे राजन हम नातवांत भाइयों का वध किसीप्रकार नहीं चाहते परन्तु हे दुर्बुद्धि दुर्योधन यह सब तुम्हारेही दोषसे हुआ व होगा सो स्पष्टही है । ४८ । इससे अब अवश्यही अपने पूर्वज पांडुजीका चरित जो कि द्रोणने उनसे वैर कियाथा अब उनको मार उसको समाप्त करेंगे, इससे हे उलूक तात यदि इच्छाहो तो अब जाओ । ४९ । नहीं तो

Bhishm the grandfather, by whose help you aspire to conquer, will fall from his chariot through me; for Brahma has produced me to kill Bhishm. I am sure to kill Bhishm in the presence of all the warriors." Dhrishtadumna was the next to speak and he said to Uluk, "Tell Duryodhan the son of Dhritrashtra the following words— I shall kill in battle Dronacharya and his relations. None will be able to do brave deeds like me." Yudhishthir then said to Uluk out of pity, "We do donot like to destroy our brothers and kinsmen; but Duryodhan the unwise is sure to bring about the ruin. I shall end the quarrel by killing Dronacharya for the enmity which he once cherished for Pandu our father. You may depart,

ते वयंहि तव बान्धवाः। उलूकस्तु ततो राजन् धर्मपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ ५० ॥ आमन्त्र्य प्रययौ तत्र यत्र राजा सुयोधनः । उलूकस्तत्र आगम्य दुर्योधन ममर्षणम् ॥ ५१ ॥ अर्जुनस्य समादेशं यथोक्त सर्वं मब्रवीत् । वासुदेवस्य भीमस्य धर्मराजस्य पौरुषम् ॥ ५२ ॥ नकुलस्य विराटस्य द्रुपदस्यच भारत । सहदेवस्य च वचो धृष्टद्युम्न शिखण्डिनोः । केशवार्जुनयोर्वाक्यं यथोक्तं सर्वमब्रवीत् ॥ ५३ ॥ कैतव्यस्यतु तद्वाक्यं निशम्य भरतर्षभः । दुःशासनञ्च कर्णंच शकुनिं चापि भारत ॥ ५४ ॥ आज्ञापयत राज्ञश्च बलं मित्रबलं तथा । यथा प्रागुदयात् सर्वे युक्तास्तिष्ठन्त्यनीकिनः ॥ ५५ ॥ ततः कर्ण समादिष्टा दूता संत्वरिता रथैः । उष्ट्रवामीभिरप्यन्ये सदश्वैश्च महाजवैः ॥ ५६ ॥ तूर्णं परिययुः सेनां कृत्स्नां कर्णस्य शासनात् । आज्ञापयन्तो राज्ञस्य योगं प्रागुदयादिति ५७

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि उलूकदूतागमनपर्वणि उलूकापयाने षट्पञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १६१ ॥

यहीं रहो हमभी तुम्हारे बान्धवहैं, यहसुन उलूक धर्मके पुत्र युधिष्ठिरजी के। ५० । प्रणामकर व उनसे बिदाहो राजा दुर्योधन के समीपको चलागया, व आय असहनशील दुर्योधनसे अर्ज्जुनका सब सन्देश अक्षर अक्षर ज्योंकात्यों उसने वर्णन किया और वासुदेव भीमसेन युधिष्ठिरका भी पौरुष वचन वर्णनकिया। ५२। नकुल विराट द्रुपद सहदेव शिखण्डी धृष्टद्युम्नके वचनभी यथातथ्य उसने कहे । ५३ । उलूकने केशव और अर्जुन के भी सब वचन कहे उनको सुनकर दुर्योधन दुःशासन करण और शकुनि से जो कहना था कहदिया जिससे सूर्योदय से पहले सब चतुरंगिनी सेना समर करने को उद्यत होजावे तब करन की आज्ञासे सबदूत अति वेगवान ऊंट घोड़ों आदि पर चढ़कर सेनामें गये और आज्ञादी कि अरुणोदय से पहले युद्धके लिये सब योद्धा तयार रहें ॥ ५७ ॥

Uluk, if you like, or may stay with us your kinsmen." At this, Uluk bowed down to Yudhishthir. He went away to Duryodhan the unbearable and told him word for word the messages of Arjun, Vasudev, Bhimsen, Yudhishthir, Nakul, Virat, Drupad, Sahadev, Shikhandi and Dhrishtadyumn. 53. He repeated the words of Keshav and Arjun and on hearing them, Duryodhan gave Dushasan, Karan and Shakuni the needful directions, so that before morning, all the army might be ready for battle. Then by the order of Karan mounted messengers went all through the army and informed them that the battle would take place early the next morning and that all should be ready in the field of battle at the proper time. 57.

सञ्जय उवाच । उलूकस्य वचः श्रुत्वा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । सेनां निर्यापयामास धृष्टद्युम्नपुरोगमाम् ॥ १ ॥ पदातिनीं नागवतीं रथिनीमश्ववृन्दिनीम् । चतुर्विधबलां भीमामकम्प्यां पृथिवीमिव ॥ २ ॥ भीमसेनादिभिर्गुप्तां सार्जुनैश्च महारथैः । धृष्टद्युम्नवशां दुर्गां सागरस्तिमितोपमाम् ॥ ३ ॥ तस्यास्त्वग्रे महेष्वासः पाञ्चाल्यो युद्धदुर्मदः । द्रोणप्रेप्सुरनीकानि धृष्टद्युम्नो व्यकर्षत ॥ ४ ॥ यथाबलं यथोत्साहं रथिनः समुपादिशत् । अर्जुनं सूतपुत्राय भीमं दुर्य्योधनायच ॥ ५ ॥ धृष्टकेतुं शल्यायगौतमायोत्तमौजसम् । अश्वत्थाम्ने च नकुलं शैब्यञ्च कृतवर्मणे ॥ ६ ॥ सैन्धवायच वार्ष्णेयं युयुधानं समादिशत् । शिखण्डिनञ्च भीष्मायप्रमुखे

अध्याय ॥ १६४ ॥

सञ्जय बोले कि कुन्तीजीके पुत्र राजा युधिष्ठिरजी ने उलूकके वचन सुन धृष्टद्युम्न आदि संयुक्त सेनाको युद्धकरनेके लिये भेजा । १ । वह सेना पैदर, हाथी, रथ व घोड़ों से युक्त होनेसे चतुरङ्गिनीथी व पृथ्वी के समान किसीके कँपाने के योग्य नहींथी । २ । भीमसेन अर्जुनादि महारथों से रक्षित व धृष्टद्युम्नके अधीन और उमड़ेहुये समुद्रके समान भयङ्कर दिखाईदेती । ३ । उस सेनाके आगे महाधनुर्धर, युद्धमें दुर्म्मद द्रुपदराज के पुत्र धृष्टद्युम्न द्रोणाचार्य्य के वधकी इच्छाकिये सैन्य को आगेबढ़ाते चलेजाते । ४ । उन्हों ने जिसमें जैसा बलथा उसके अनुसार रथियोंके भाग लगादिये, जैसे कि अर्ज्जुनके भागमें कर्णको किया, व भीमसेन के भागमें दुर्य्योधनको । ५ । धृष्टकेतुके भागमें राजाशल्य को, उत्तमौजाके भागमें गौतमको, नकुलके भागमें अश्वत्थामाको, सात्यकिकेमें कृतवर्म्माको । ६ । युयुधान नाम वृष्णिवंशी के भागमें जयद्रथ को शिखण्डीके में भीष्मको, इसप्रकार कल्पना

CHAPTER CLXIV

Sanjaya said that having heard the words of Uluk, Yudhishthir the son of Kunti sent the army to the field of battle under Dhrishtadyumn and others. The army consisting of footsoldiers, elephants, chariots and horses was of four sorts and like the earth was impossible to be shaken by any one. Protected by Bhimsen, Arjun and others, and led by Dhrishtadyumn, the army was dreadful to behold like the Ocean in a storm. The dreadful warrior Dhrishtadyumn, the son of king Drupad, desirous of killing Dronacharya, led the army. He assigned to the different warriors of the army, according to their respective strength, all the warriors of the enemy: Karan came to the lot of Arjun, Duryodhan to the lot of Bhimsen, Shalya to

समकल्पयत् ॥ ७ ॥ सहदेवं शकुनये चेकितानं शलायवै । द्रौपदेयांस्तथापञ्च त्रिगर्त्तेभ्यः समादिशत् ॥ ८ ॥ वृषसेनाय सौभद्रं शेषाणाञ्च महीक्षिताम् । ससमर्थं हि तं मेने पार्थादभ्याधिकं रणे ॥ ९ ॥ एवं विभज्य योधांस्तान् पृथक्च सह चैवह । ज्वाला वर्णो महेष्वासो द्रोणमंशमकल्पयत् ॥ १० ॥ धृष्टद्युम्नो महेष्वासः सेनापतिपतिस्ततः । विधिवद् व्यूह्य मेधावी युद्धाय धृतमानसः ॥ ११ ॥ यथोद्दिष्टानि सैन्यानि पाण्डवानामयोजयत् । जयाय पाण्डुपुत्राणां यत्तस्तस्थौ रणाजिरे ॥ १२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि उलूकदूतागमनपर्वणि सेनापति नियोगे चतुःपञ्चाशदधिकशततमोऽध्यायः १६४ ॥
समाप्तश्चोलूकदूतागमनपर्व ॥

को । ७ । सहदेव के भागमें शकुनिको नियत किया, चेकितानके में शलको, द्रौपदी के पांचों पुत्रों के भागमें त्रिगर्तोंको सौंपा । ८ । अभिमन्युके भागमें वृषसेनको, और सब बाकी राजाओं को भी अभिमन्यु के इसी भागमें रक्खा क्योंकि अभिमन्यु अर्जुनसे कुछ कम नहीं समझे गये । ९ । इन सबों के भागसे प्रयोजन यहहै कि ये इनसे लड़ें, इस प्रकार सबके भाग लगाय महासेनापति धृष्टद्युम्नने अपने भागमें द्रोणाचार्य्य को कल्पित किया । १० । सेनापतियों के पति महाधनुर्द्धर धृष्टद्युम्न, विधिपूर्वक सैन्यव्यूह बनाय युद्धकरने में मन लगाय, जैसा चाहिये पाण्डवों की सातों अक्षौहिणी सेनाको यथायोग्य भाग बांट आप पाण्डवोंकी जयके लिये, समरभूमि में सेनाके रात्रिहीसे जाय उपस्थित हुये ॥ १२ ॥

Dhrishtketu, Gotam to Uttamauja, Ashwathama to Nakul, Kritvarma to Satyaki, Jayadrath to Yuyudhan of the Vrishni family, Shakuni to Sahadev and Shal to Chekitan. The Trigarts came to the Share of the five sons of Draupadi; Vrishsen and other kings to Abhimanyu who was considered as good a warrior as Arjun. Having thus made vrious matches, Dhrishtadyumn, the commander-in-chief of the armies, secured Drona to his own share. Having formed the army into a phalanx he put them in the most favourable attitude for resisting the army of the enemy, and having made a distribution of the army before day break, he stood ready for battle with his heart set on the victory of the Pandabas. 12.



अथ रथातिरथसंख्यानपर्व ॥

धृतराष्ट्र उवाच । प्रतिज्ञाते फाल्गुनेन वधे भीष्मस्य संयुगे । किमकुर्वत मे मन्दा पुत्रा दुर्य्योधनादय. ॥ १ ॥ हतमेवाहि पश्यामि गाङ्गेयं पितरं रणे । वासुदेवसहायेन पार्थेन दृढधन्वना ॥ २ ॥ स चापरिमितप्रज्ञस्तच्छ्रुत्वा पार्थभाषितम् । किमुक्तवान् महेष्वासो भीष्म. प्रहरता वर ॥ ३ ॥ सैनापत्यञ्च सम्प्राप्य कौरवाणां धुरन्धर. । किमचेष्टत गाङ्गेयो महाबुद्धि पराक्रम. ॥४॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ततस्तत्सञ्जयस्तस्मै सर्वमेव न्यवेदयत् । यथोक्त कुरुवृद्धेन भीष्मेणामिततेजसा ॥ ५ ॥ सञ्जय उवाच ॥ सेनापत्यमनुप्राप्य भीष्म शान्तनवो नृप । दुर्योधनमुवाचेद वचन हर्षयन्निव ॥ ६ ॥ नमस्कृत्य कुमाराय सेनान्ये शक्तिपाणये । अह सेनापति

अध्याय ॥ १६५ ॥

धृतराष्ट्रजी ने कहा कि सञ्जय जब अर्ज्जुनने भीष्मजीके मारडालनेकी प्रतिज्ञा करली तब मन्द हमारे पुत्र दुर्य्योधनादिकोंने क्या किया । १ । हम अब वासुदेवकीसहाय सहित अर्ज्जुन से मारेहीहुये रण में भीष्मपितामहको देखतेहैं किसी प्रकार नहीं बचसक्ते । २ । फिर अपरिमितप्रज्ञ महाधनुर्द्धर वीरोंके वीर अतिधीर भीष्मजीने अर्ज्जुनके वचनसुन क्याकहा । ३ । और कौरवों क धुरन्धर, महाबुद्धि पराक्रम भीष्मजीने सेनापत्यपाय क्याकिया सब हम से बताओ । ४ । वैशम्पायनजी जनमेजयजीसे बोले कि जिसप्रकार कुरुवृद्ध भीष्मजीने कहा सञ्जयने धृतराष्ट्रसे सबबताया । ५ । सञ्जय बोले कि शान्तनुजी के पुत्र भीष्मजी सेनापत्यको पाय दुर्य्योधन को हर्षितकरातेहुये यह बोले । ६ । कि शक्ति हाथमें लिये देवताओंके सेनापति षडाननजी के नमस्कारकर दुर्योधन हम तुम्हारे सेनापतिहोंगे इसमें

CHAPTER CLXV

"*What step did our unwise son* Duryodhan take on hearing the resolution of Arjun to destroy Bhishm ?" said Dhritrashtra to Sanjaya, "I think that Bhishm cannot but meet his death at the hands of Arjun assisted by Vasudev What did Bhishm the greatest of warriors and best of archers say on hearing the words of Arjun ? Let me know all that Bhishm the wisest and bravest of the Kauravas did on being installed as commander in chief of the armies." Vaishampayan said to Janmejaya that Sanjaya told Dhritrashtra what Bhishm had said and done. Sanjaya said that having been appointed the commander in chief of the army, Bhishm, the son of Shantanu, pleased Duryodhan by saying, "Having bowed

स्तेध भविष्यामि न सशय. ॥ ७ ॥ सेनाकर्मण्यभिज्ञोस्मि व्यूहेषु वि विधेषुच । कर्मकार यितुश्चैव भृतानप्यभृतांस्तथा ॥ ८ ॥ यात्रायानेच युद्धेच तथा प्रशमने पुच । भृश वेद महाराज यथा वेद वृहस्पति. ॥ ९ ॥ व्यूहानाच समारम्भान् दैवगान्धर्व मानुषान् । तै रह मोहयिष्यामि पाण्डवान् व्येतु ते ज्वर. ॥ १० ॥ सोह योत्स्यामि तत्वेन पालयस्तव वाहिनीम् । यथावच्छास्त्रतो राजन् व्येतु ते म नसो ज्वर ॥ ११ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ विद्यते मे न गागेय भय देवासुरेष्वपि । समस्तेषु महाबाहो सत्य मेतद् ब्रवीमिते ॥१२॥ किं पुनस्त्वयि दुर्धर्षे सेनापत्ये व्यवस्थिते । द्रोणे च पुरुषव्याघ्रे स्थिते युद्धाभिनन्दिनि

कुछ सन्देह नहीं है । ७। क्योंकि हम सेनाकर्म्ममें बड़े अभिज्ञहैं व विविधप्रकारकी व्यूहरचनामेंभी कुशलहैं, व नौकरों चाकरों तथा मित्रतासे युद्धमें आये हुये लोगों से हमको कार्य्य अच्छीतरह कराआताहै ।८। हे महाराज, शत्रुके ऊपर यात्राकरने में युद्ध करने में, व मिलापकर शान्तहोजाने में जो उपायहोतेहैं वे सब हम ऐसे जानतेहैं जैसे वृहस्पतिजी जानतेहैं । ९ । फिर देवता मनुष्य गन्धर्व्वोंके व्यूहों के आरम्भ हम सब जानते हैं उनसे पांडवों को मोहित करदेंगे अब इस विषय में तुम कुछ शोच न करो । १० । हे राजन्, सो हम तुम्हारी सेनाका पालन करते हुये शत्रुओं की सेनासे युद्धकरेंगे, सो भी ऐसा नहीं सब शास्त्रानुसारही करेंगे अब तुम्हारे मनका ज्वर दूरहो । ११ । इतनासुन दुर्योधनने कहा कि हे गांगेय हम आपसे यह सत्यही कहतेहैं कि हमको देवताओं व दैत्योंसे भी युद्ध में कुछ भय नहीं है । १२ । फिर जब कि महादुर्द्धर्ष आप सेनापत्य पर स्थितहैं और युद्ध करने में सदा प्रसन्न चित्त पुरुष सिंह द्रोणाचार्य विद्यमानहैं तो कैसे भय

down to the six-headed leader of gods, the bearer of Shakti, I accept the charge of your armies. I am undoubtedly, well acquainted with the work relating to armies I can form different sorts of phalanxes and am very skilful in taking work from paid soldiers as well as allies. I know like Vrihaspati, how to lead on attacks over enemies and to make treaties of peace. I know the origin of the phalaxes of men and Gandharvas and will no doubt make the Pandavas insensible. 10 I shall protect your army while fighting with the enemy in the manner mentioned in the shastras, let your mind's fever vanish" "I tell you truly, son of Ganga," said Duryodhan, 'that I have no fear to fight with the gods and danavas, how can I be afraid while you are the commander of our armies and Dronacharya is present? We are sure to win while you two are with us, we can win even the

॥१३॥ भवद्भ्यां पुरुषाग्र्याभ्यां स्थिताभ्यां विजयो मम । नदुर्लभं कुरुश्रेष्ठ देवराज्यमपि ध्रुवम् ॥ १४ ॥ रथसंख्यान्तुकात्स्न्येन परेषामात्मनस्तथा । तथैवातिरथानांच वेत्तु मिच्छामि कौरव ॥१५॥ पितामहोहि कुशलः परेषामात्मनस्तथा । श्रोतुमिच्छाम्यहं सर्वैः सहैभिर्वसुधाधिपैः ॥ १६ ॥ भीष्म उवाच ॥ गांधारे नृपशार्दूल रथसंख्यां स्वकेवले । ये रथाः पृथिवीपाल तथैवातिरथाश्चये ॥ १७ ॥ बहूनीह सहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच । रथानांतवसेनायां यथामुख्यन्तु मे शृणु ॥ १८ ॥ भवानग्रे रथोदारः सहसर्वैः सहोदरैः । दुःशासनप्रभृतिभिर्भ्रातृभिः शतसम्मितैः ॥ १९ ॥ सर्वेकृतप्रहरणाश्छेद भेद विशारदाः । रथोपस्थे गजस्कन्धे गदाप्रासासि चर्मणि ॥ २० ॥ संयन्तारः प्रहर्तारः कृतास्त्रा

होसक्ती है । १३ । हे कुरुश्रेष्ठ, जब पुरुषश्रेष्ठ आप दोनों टिके हैं तो निश्चय हमारी ही विजयहोगी, ऐसे अवसर में हमको देवताओं का भी राज्य मिलना दुर्लभ नहीं है । १४ । हे कौरव अब इससमय हम अपनी ओर व शत्रुओंकी ओरके रथ, अतिरथ महारथादिकी संख्या जानना चाहतेहैं । १५ । अपने व परायोंकी संख्या जानने में पितामहही कुशलहैं इससे वन्दन सब राजाओं सहित हम रथादिकों की संख्या सुना चाहतेहैं । १६ । यह सुन भीष्मजी बोले कि, हे दुर्योधन राजेन्द्र प्रथम अपनी सेनाके रथोंकी संख्या सुनो, जो कोई रथहै व जो अतिरथहैं सबकी संख्या बताते हैं । १७ । तुम्हारी इस सेनामें बहुतसे सहस्रों अर्बुदों रथहैं उनकी संख्या हमसे सुनो । १८ । प्रथम तो आप सौ भाई दुश्शासनादि समेत आप रथोंमें उदारहैं पर महारथोंमें नहीं । १९ । ये तुम सबप्रकार करने में कुशलहो, और छेदन भेदन करने में चतुर, रथपर चढ़ हाथीपर चढ़ गदा भाला खड्ग ढाल बांध चलानेमें निपुणहो । २० । सारथ्य कर्ममें, प्रहारकरने में अस्त्रोंकी कुशलतामें

kingdom of gods under such circumstances I wish to know the number of different kinds of charioteers in our army as well as in the army of the enemy. Our grandfather is very skilful in ascertaining the numbers of both the sides; we shall hear from him the number of kings and warriors." Hear from me, king of kings," replied Bhishm, " the number of warriors in your own army. I shall tell you of the charioteers of all ranks. You have millions of charioteers in your army, but I shall give you a detailed account of them. First of all there are your hundred brothers, all charioteers of renown; but none of them is a *maharath* (a warrior that can fight with ten thousand men at the same time.) You are all adept in the use of weapons and in cutting and killing. All of you can use maces, javelins, swords and shields from chariots and elephants. 20. You are skilful

भारसाधनाः । इष्वस्त्रे द्रोण शिष्याश्च कृपस्यच शरद्वतः ॥ २१ ॥ एतेहनिष्यन्ति रणे पञ्चालान् युद्धदुर्मदान् । कृतकिल्बिषाः पाण्डवेयैर्धार्तराष्ट्रामनस्विनः ॥ २२ ॥ तथाहं भरतश्रेष्ठ सर्वसेनापतिस्तव । शत्रूनुविध्वंस यिष्यामि कदर्थीकृत्य पाण्डवम् ॥ २३ ॥ न त्वात्मनोगुणान् वक्तु मर्हामि त्वद्वितोस्मते । कृतवर्मा त्वतिरथो भोजःशस्त्र भृतांवरः ॥ २४ ॥ अर्थ सिद्धिं तवरणे करिष्यति न संशयः । शस्त्रावद्भिरनाधृ'यो दूरपाती दृढा युधः ॥ २५ ॥ हनिष्याति चमूं तेषां महेन्द्रो दानवानिव । मद्रराजो महेष्वासः शल्यो मे ति रथो मतः ॥२६॥ स्पर्धते वासुदेवेन नित्यं यो वै रणे रणे । भागिनेयान्निजांस्त्यक्त्वा

व भारसाधन करने में निपुणहें, और बाणास्त्र में द्रोणाचार्य कृपाचार्य शरद्वतके शिष्यहें । २१ । ये सब युद्धमें बड़ दुर्म्मद पाञ्चाल देशवालों को रणमें मारडालेंगे क्योंकि ये सब धृतराष्ट्रके महामनस्वी पुत्र पांडवों के सङ्ग अपकार करतेहैं तो पाञ्चालोंकी कौन गणना । २२ । और हमतो अपने गुण अपने मुखसे कह नहीं सक्ते परन्तु तुमको हमारे गुण विदितहीहैं कहनेकी आवश्यकताही नहीं, और शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कृतवर्म्मा भोजवंशी, अलवत्ता अतिरथहैं । २३ । ये रणमें तुम्हारे अर्थ की सिद्धि करेंगे इसमें संशय नहीं है, क्योंकि इनको कोई, शस्त्रविद्या अच्छीतरह जाननेवाले भी कुछ नहीं करसक्ते, क्योंकि ये बड़ी दूरसे ही शत्रुओं को नाशतेहैं व इनके आयुधभी बड़े पुष्टहैं । २४ । और मद्रदेशके राजा महा धनुर्द्धर शल्यजी हमारे मतसे अतिरथहैं ये पांडवों की सेना को ऐसे मारेंगे जैसे इन्द्रजी दानवों को मारते हैं । २५ । ये प्रत्येक रणमें वासुदेव भगवान की स्पर्द्धा करतेहैं, अपनी बहिनके पुत्र पांडवों से नहीं युद्ध कियाचाहते पर औरों को तो मारहीडालेंगे, ये अतिरथहैं इसमें भी सन्देह नहीं है । २६ । फिर ये पांडवों

in chariot driving, use of weapons and missiles and in lifting the weight. You are pupils of Dronacharya and Kripacharya in archery and the use of other weapons. All these warriors will destroy the Panchals in battle; for all the sons of Dhritrashtra are enemies of the Pandavas and cousequently of the Panchals. I need not tell all my qualities with my own mouth; you already know them. Kritvarma, the best of warriors, of Bhoj dynasty, is an *atirath* and is sure to be of great help to you in battle; for no warrior can do him any harm as he hurls his weapons from a great distance and possesses powerful weapons to destroy enemies. Shalya the great archer, king of Madra, is also an *atirath* and will destroy the army of the Pandavs as Indra does demons. He has often encountered Vasudev. He will destroy all others with the exception of the Pandavas. Out

शल्यस्तेति रथोमत । एषयोत्स्यति सङ्ग्रामे पांडवांश्च महारथान् ॥ २७ ॥ सागरोर्मिसमैर्बाणैः प्लावयन्निवशात्रवान् । भूरिश्रवाः कृतास्त्रश्च तव चापि हितः सुहृत् ॥ २८ ॥ सौमदत्तिर्महेष्वासो रथयूथपयूथपः । बलक्षय ममित्राणां सुमहान्तं करिष्यति ॥ २९ ॥ सिंधुराजो महाराज मतो मे द्विगुणो रथ । योत्स्यते समरे राजन् विक्रांतो रथसत्तम ॥ ३० ॥ द्रौपदीहरणे राजन् परिक्लृष्टश्चपांडवैः । सस्मरंस्त परिक्लेशं योत्स्यते परवीरहा ॥ ३१ ॥ एते नहि तदाराजस्तप आस्थाय दारुणम् । सुदुर्लभो वरो लब्ध पांडवान् योद्धु माहवे ॥ ३२ ॥ सएषरथशार्दूलस्तद्वैरं संस्मरन् रणे । योत्स्यते पाण्डवैस्तात प्राणांस्त्यक्त्वा सुदुस्त्यजान् ॥ ३३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि
पंचषष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६५ ॥

मैं अपने भागिनेय नकुल सहदेवही के सङ्ग न लड़ेंगे अन्य तीन महारथ पांडवों से भी युद्धकरेंगे समुद्रभी लहरोंके समान बाणों से शत्रुओंकी सेनाको डुबाते ही से लड़ेंगे, और अस्त्र विद्यामें बड़े चतुर भूरिश्रवाभी जोकि तुम्हारे हितकारी व सुहृद्हैं, वेभी अतिरथहैं । २७ । और रथ यूथप महारथ लोगोंके भी यूथप अति रथ सोमदत्ति जो, शत्रुओं की सेनाका बड़ा भारी नाशकरेंगे । २८ । जयद्रथ निस्सदेह द्विरथ है और आपके हितके लिये बड़ा संग्राम करेंगे । इन्होंने द्रौपदीका हरकर बड़ा दुःख पायाथा और ये पांडवों से नित्यलड़ना चाहते हैं तपकरके इसने महादुर्लभ वर पायाहै इसलिये पांडवोंसे अवश्य लड़ेगा ये सबरथी पांडवोंके साथ अवश्यही बड़ा युद्ध करेंगे ॥ ३२ ॥

---

of the Pandavas, he will not fight with Nakul and Sahadev who are his sister's sons, but will have no hesitation in fighting with the other three. He will drown the army of the enemy in the shower of arrows. Bhurishrava, your friend and wellwisher is very clever in the use of weapons and is also an atirath. Saumdatti the best of *maharaths* will spread destruction throughout the army of the enemy. Jayadrath is *dwirath* and will fight heartily for your sake. He absconded with Draupadi and was much harassed by the Pandavas. He is always thinking of fighting with the Pandavas. He is sure to fight with them, because he has got a very good boon by performing a severe asceticism. All these warriors will fight against the Pandavas and are sure to make a great slaughter." 32.

भीष्म उवाच ॥ सुदक्षिणस्तु काम्बोजो रथ एकगुणो मतः । तवार्थ सिद्धि माकांक्षन् योत्स्यते समरे परैः ॥ १ ॥ एतस्य रथ सिंहस्य तवार्थे राजसत्तम । पराक्रमं यथेन्द्रस्य द्रक्ष्यन्ति कुरवो युधि ॥२॥ एतस्य रथवंशोहि तिग्मवेगप्रहारिणः । काम्बोजानांमहाराज शलभाना मिवायतिः ॥ ३ ॥ नीलोमाहिष्मती वासी नीलवर्मा रथस्तव । रथवंशेनकदनं शत्रूणां वै करिष्यति ॥ ४ ॥ कृतवैरः पुरा चैव सहदेवेन मारिष । योत्स्यते सततं राजंस्तवार्थे कुरुनन्दन ॥ ५ ॥ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ संमतौ रथसत्तमौ । कृतिनौ समरे तात दृढवीर्यपराक्रमौ ॥ ६ ॥ एतौतौ पुरुषव्याघ्रौ रिपुसैन्यं प्रधक्ष्यतः । गदाप्रासासिनाराचैस्तोमरैश्च करच्युतैः ॥ ७ ॥ युद्धाभिकामौ समरे

अध्याय ॥ १६६ ॥

भीष्मजी बोले कि काम्बोज देशका राजा सुदक्षिण एकरथ है, वह तुम्हारी अर्थसिद्धिके लिये, समरमें शत्रुओंके सङ्ग युद्ध करेगा । १ । हे राजसत्तम, इस रथ सिंहका पराक्रम जो तुम्हारे अर्थ वह करेगा, कुरुलोग इन्द्रके पराक्रमके समान देखेंगे । २ । महाराज, रथसमूहमेंतीक्ष्णवेगसे प्रहार करनेवाले इसराजाकी काम्बोजदेशके रहनेवालों की पांति टीड़ियों के झुण्डके समान है । ३ । व माहिष्मती नाम पुरीका वासी नीलरङ्ग के कवच बखतर आदि धारण किये नीलनाम वीर रथसमूह सहित शत्रुओंका नाशकरेगा । ४ । इससे बहुतदिनों से सहदेवके साथ वैरहै इससे वह तुम्हारे अर्थ अवश्य पाण्डवों से युद्धकरेगा । ५ । हे तात अवन्ती पुरीके राजा विन्द व अनुविन्द ये दोनों भी रथहैं समर में बड़े कुशल व दृढ़ वीर्य्य पराक्रमहैं । ६ । येदोनों पुरुष सिंह तुम्हारे शत्रुओंकी सेनाका नाश करेंगे क्योंकि गदा भाला खड्ग बाण तोमरआदि शस्त्र सदा धारण किये रहते हैं । ७ । ये

CHAPTER CLXVI

"Sudakshin the king of Camboj" continued Bhishm. "is an *ekrath.* He will fight your enemies for your sake. The Kauravas will find his prowess, which he will do for your sake, to be like that of Indra. His army of Camboj, consisting of archers who make a haove among charioteers with their swift arrows, is numerous like a swarm of locusts. Nil, the great warrior king of Mahishmati, who puts on an armour of blue colour, will destroy the enemy with a great number of his chariots. He bears a long standing enmity against Sahadev and is therefore sure to fight well against the Pandavas. Bind and Anubind, the two warrior princes of Avantipuri, are very skilful in war and full of prowess. These two lions of men will destroy the army of the enemy; for they are constant wielders of mace

क्रीडन्ताविव गूथपौ । यूथमध्ये महाराज विचरन्तौ कृतान्तवत् ॥ ८ ॥ त्रिगर्त्ता भ्रातरः पञ्च रथोदारामतामम । कृतवैराश्च पार्थैस्ते विराटनगरे तदा ॥ ९ ॥ मकरा इव राजेन्द्र समुद्धततरङ्गिणीम् । गङ्गा विक्षोभयिष्यन्ति पार्थानां युधिवाहिनीम् ॥ १० ॥ ते रथाः पञ्च राजेन्द्र येषां सत्यरथो मुखम् । एते योत्स्यन्तिसंग्रामे संस्मरन्तः पुराकृतम् ॥ ११ ॥ व्यलीकं पाण्डवेयेन भीमसेनानुजेनह । दिशोविजयता राजन् श्वेतवाहेन भारत ॥ १२ ॥ ते हनिष्यन्ति पार्थानां तानासाद्यमहा रथान् । वरान् वरान् महेष्वासान् क्षत्रियाणां धुरन्धरान् ॥ १३ ॥ लक्ष्मणस्तव पुत्रश्च तथा दुःशासनश्च । उभौ तौ पुरुषव्याघ्रौ संग्रामेष्वपलायिनौ ॥ १४ ॥ तरुणौ सुकुमारौ च राजपुत्रौ तरस्विनौ । युद्धानाञ्च विशेषज्ञौ प्रणेतारौ च सर्वशः ॥ १५ ॥ रथौ तौ कुरुशार्दूल

क्रीड़ा करतेहुये दोहाथियों के समान सदा समरमें युद्धकी कामना कियेरहतेहैं, और यूथके मध्यमें यमराजही के समान विचरते हैं । ८ । व त्रिगर्त्तदेशके राजा पांचों भाई रथों में उदारहैं, विराटके नगरमें गोहरणके समय इससे भी पाण्डवोंसे वैरहुआहै । ९ । येलोग समरमें पाण्डवोंकी सेनाको ऐसेविदीर्ण करदेंगे, जैसे महा मचरा वेगवाली गङ्गाजीको मगर लोग विदीर्ण करदेतेहैं । १० । येपांचोंरथहैं इनमें पहिले का नाम सत्यरथहै, ये पूर्व के वैरका स्मरण करतेहुये अवश्य पाण्डवों से युद्ध करेंगे। ११ । क्योंकि भीमसेनके छोटेभाई अर्ज्जुन ने जब दिग्विजयकीहै तो इनका बड़ा अप्रिय कियाहै । १२ । इससे ये लोग पाण्डवोंकी सेना में जितने श्रेष्ठ होंगे सबोंको ढूंढ़ २ मारडालेंगे ।१३। हे राजन तुम्हारा पुत्र लक्ष्मण व दुश्शासनका भी लक्ष्मणनाम पुत्र, ये दोनों पुरुषव्याघ्र संग्राम से कभी भगेनहीं । १४ । ये दोनों राजकुमार, तरुणअवस्था को प्राप्त, अतिसुकुमार अतिवेगवान्, युद्धोंकी विशेषता जानने वाले, व सबप्रकार युद्धोंके मेरुहैं । १५ । ये भी दोनों हमारे विचारसे रथ

मतौ मे रथसत्तमौ । क्षत्रधर्मरतौ वीरौ महत्कर्म करिष्यतः ॥ १६ ॥ दण्डधारो महाराज रथ एको नरर्षभ । योत्स्यते तव संग्रामे स्वेन सैन्येन पालितः ॥ १७ ॥ बृहद्बलस्तथा राजा कौसल्यो रथसत्तमः । रथो मम मतस्तात महावेगपराक्रमः ॥ १८ ॥ एष योत्स्यति संग्रामे स्वान् बन्धून सम्प्रहर्षयन् । उग्रायुधो महेष्वासो धार्त्तराष्ट्रहिते रतः ॥१९॥ कृपः शारद्वतो राजन् रथयूथपयूथपः । प्रियान् प्राणान् परित्यज्य प्रधक्ष्यति रिपूं स्तव २० गौतमस्य महर्षेर्य आचार्यस्य शरद्वतः । कार्त्तिकेय इवाजेयः शरस्तंबात् सुतोभवत् ॥ २१ ॥ एष सेनाः सुबहुला विविध युधकार्मुकाः । अग्निवत् समरे तात चरिष्यति विनिर्दहन् ॥ २२ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्व्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि षट्पञ्चषष्ठ्यधिकशततमोऽध्यायः १६६ ॥

हे वरन, रथसत्तम हैं, व क्षत्रियके धर्म में दोनों रथहैं इस से बड़ाभारी कर्म करेंगे । १६ । हे महाराज तुम्हारी सेनामें एक दण्डधारभी रथहै वह अपनी सेनाही से रक्षित तुम्हारे शत्रुओं से युद्धकरेगा । १७ । हे तात दक्षिणकौशलका राजा बृहद्बलभी रथहै जो कि महापराक्रमी है । १८ । वह बृहद्बलभी धृतराष्ट्र के पुत्रों के हितमें तत्परहो अपने बन्धुओंको हर्षित कराता हुआ, पांडवों से अवश्य युद्ध करेगा । १९ । हे राजन् शारद्वत कृपाचार्यजी अतिरथहैं, वे अपने प्रिय पुत्रादि व प्राणछोड़ तुम्हारे शत्रुओं को भस्मकरेंगे । २० । ये शरद्वान् महर्षि गौतमजी के शिष्य हैं, और षडाननहींके समान जीतने के योग्य नहींहैं, क्योंकि ये भी पतावरके धूहासे मुनिके वीर्यसे उत्पन्न हुये हैं । २१ । तुम्हारी चतुरंगिणी सेना विविध आयुध धारण कियेहुये अग्निकी नाईं युद्धस्थल को जलावेंगे ॥ २२ ॥

---

are delicate, vigorous and expert in warfare. They are both good warriors and firm on the practice of kshatryas. They are sure to perform brave deeds. Danddhar is a good warrior in your army, and the surrounded by his army he will fight your enemies. Vrahadval the king of southern Kosal is also a good warrior of prowess. He is a well wisher of the sons of Dhritrashtra and will please his friends by his fighting against the Pandavas. Kripacharya is a warrior of renown; he will burn your enemies down, caring nothing for his own life and sons. 20. He is a disciple of the great rishi Gautam and is unconquerable like the six headed god as he too, was born of a rishi who lived on inhaling smoke Your warriors of the four denominations, armed with various sorts of weapons, will burn like fire the field of battle. 22.

भीष्म उवाच । शकुनिर्मातुलस्तेसौ रथ एको नराधिप । प्रयुज्य पाण्डवैर्वैरं योत्स्यते नात्र संशयः ॥ १ ॥ एतस्य सेना दुर्धर्षा समरे प्रतियायिनः । विकृतायुधभूयिष्ठा वायुवेगसमाजवे ॥ २ ॥ द्रोणपुत्रो महेष्वासः सर्वानेवातिधन्विनः । समरे चित्रयोधी च दृढास्त्रश्च महारथ ॥ ३ ॥ एतस्य हि महाराज यथा गाण्डीवधन्वनः । शरासनविनिर्मुक्ताः संसक्ता यान्ति सायकाः ॥ ४ ॥ नैष शक्यो मया वीर संख्यातुं रथसत्तमः । निर्दहेदपि लोकांस्त्रीनिच्छन्नेष महारथ ॥ ५ ॥ क्रोधस्तेजश्च तपसा संभृतोश्रमवासिनाम् । द्रोणेनानुगृहीतश्च दिव्यैरस्त्रैरुदारधीः ॥ ६ ॥ दोषस्त्वस्य महानेको येनैव भरतर्षभ । न मे रथो नातिरथो मत पार्थिवसत्तम ॥७॥

अध्याय ॥ १६७ ॥

भीष्मजी बोले कि, हे राजन् तुम्हारे मामा शकुनि भी एकरथहैं, ये भी पाण्डवों से वैरकर युद्धकरेंगे । १ । समरमें पहुँचे पर इनकी सेना बड़ी दुर्द्धर्ष होजाती है क्योंकि वेगमें तो पवनही के समान चलती और नानाप्रकारके विकृत आयुध धारणकिये है । २ । व ये द्रोणाचार्य्य के पुत्र महाधनुर्द्धर, समरमें चित्रविचित्र युद्ध करनेवाले दृढ़ अस्त्रसंयुक्त अश्वत्थामा महारथहैं इससे सब धनुर्द्धरोंसे चित्रविचित्र युद्धकरेंगे । ३ । हे महाराज जैसे अर्ज्जुन के चलाये बाण बड़ा विकराल चलते हैं वैसेही इन अश्वत्थामाके भी धनुषसे छूटेहुये बाण एकही में मिलेहुये चलते हैं । ४ । व इन महावीर रथसत्तमकी संख्या हम नहीं करसक्ते क्योंकि ये महारथ जो इच्छाकरें तो तीनों लोकोंकोभी भस्म करडालें ।५। क्रोध तेज तो इन्हों ने तपस्या से इकट्ठा किया है, फिर आश्रम में रहनेवाले द्रोणाचार्य जी ने दिव्यअस्त्र पढ़ाय अनुग्रह कियाहै इस से इनकी बड़ी उदार मतिहै । ६ । परन्तु हे महाराज इनमें एक बड़ाभारी दोषभी है जिससे हमारे मतसे ये न रथही हैं न

CHAPTER CLXVII

"Your maternal uncle, Shakuni, too, is an ekrath," said Bhishm, "he bears enmity to the Pandavas and will fight them. His army is very dreadful in fighting, because it moves like the wind and bears curious sorts of weapons. Ashwathama the son of Dronacharya, is very skilful in fighting, possesses powerful weapons and is a *maharath*. The arrows shot by Ashwathama are as dreadful as those of Arjun and fly incessantly. I cannot form a correct estimate of his prowess, for he can burn down the three worlds by his anger. He has amassed a glorious anger by means of asceticism. Being constantly with Dronacharya, he found special favour with him and learnt the use of celestial weapons very successfully. He has, however, one great defect which makes him low in the scale of

जीवितं प्रियमत्यर्थं मायुष्कामः सदा द्विजः । न ह्यस्य सदृशः कश्चिदुभयोः सेनयोरपि ॥ ८ ॥ हन्यादेकरथेनैव देवानामपि वाहिनीम् । वपुष्मांस्तलघोषेण स्फोटयेदपि पर्वतान् ॥ ९ ॥ असंख्येयगुणो वीरः प्रहन्ता दारुणद्युतिः । दण्डपाणिरिवासह्यः कालवत् प्रचरिष्यति ॥ १० ॥ युगान्ताग्निसमः क्रोधात् सिंहग्रीवो महाद्युतिः । एष भारतयुद्धस्य पृष्ठं संशमयिष्यति ॥ ११ ॥ पिता त्वस्य महातेजा वृद्धोऽपि युवभिर्वरः । रणे कर्म महत् कर्त्ता अत्र मे नास्ति संशयः ॥ १२ ॥ अस्त्रवेगानिलोद्धूतः सेनाकक्षेन्धनोत्थितः । पाण्डुपुत्रस्य सैन्यानि प्रधक्ष्यति रणे धृतः ॥ १३ ॥ रथयूथपयूथानां यूथपोऽयं नरर्षभः । भारद्वाजात्मजः कर्त्ता कर्म तीव्रं हितं

महारथी । ७ । पर दोष यह है कि इनको अपने प्राण बहुतही प्रिय हैं इससे ये ब्राह्मण सदा आयुर्वृद्धि की कामना कियेरहतेहैं, नहीं तो इनके समान दोनों सेनाओंमें कोई भी नहीं है । ८ । सामर्थ्य तो इनमें ऐसी है कि अकेलेही देवताओंकीभी सेनाको मारडालेंगे व अपनेहाथ पटकने के शब्दसे पर्वतोंकोभी फाड़डारें । ९ । कहांतक कहें इनवीरके गुण तो असंख्येय हैं, शत्रुओंके वध करने में तो इनकी महादारुण दीप्ति होजाती है, ये तो दूसरे यमराजही हैं मानों हाथमें दंडलिये प्रजा नाशके लिये फिरतेहैं इससे ये शत्रुसेना में कालही के समान अपनाप्रचार करेंगे । १० । क्रोधकरनेपर तो ये प्रलयके अग्निही के समान होजाते हैं, इनकी ग्रीवा सिंहकीसी है व महातेजस्वीहैं, हमको ऐसा जानपड़ता है कि युद्धमें जोकुछ बचरहेगा सबका नाश यही करेंगे । ११ । व इनके पिताजी तो वृद्ध भी हैं तोभी लक्षों जवान वीरों से श्रेष्ठ हैं, वे रणमें महाकर्म करेंगे इसमें हमको कुछभी संदेह नहीं है । १२ । ये तो अस्त्र वेग पवनसे प्रेरितहो, सेना शुष्क तृणके ईंधनसे प्रचण्डहो रणमें अग्नि के समान पांडवोंकी सेनाओंको भस्म करदेंगे । १३ । ये तो यूथोंके यूथपोंके यूथोंकेभी यूथप नरश्रेष्ठहैं, क्योंकि भरद्वाजजी के पुत्रहैं

warriors. The defect is that he loves his life to excess and is always thinking of how to prolong his life. But for this defect, he would have no equal in both the armies. He has strength enough to destroy alone the army of gods and can break mountains with a shake of his hand. He has qualities beyond number. He is very glorious to behold while destroying the enemies and roams like a second Yamraj with the staff in his hand. He will enter like death in the army of the enemy. 10. In anger he becomes like the fire of Pralaya. He has a lion's neck and is very glorious. I think he will leave none of the enemies alive. His father, though old, is preferable to thousands of youthful warriors and will, I doubt not, do great deeds in the field of battle. His weapons, hurled in the air, will burn the enemy's army as fire

तर ॥ १४ ॥ सर्वमूर्धाभिषिक्तानामाचार्य्यः स्थविरो गुरुः । गच्छेदन्तं सृञ्जयानां प्रियस्त्वस्य धनञ्जयः ॥ १५ ॥ नैष जातु महेष्वासः पार्थमक्लिष्टकारिणम् । हन्यादाचार्य्यकं दीप्तं संस्मृत्य गुणनिर्जितम् ॥ १६ ॥ श्लाघतेयं सदावीर पार्थस्य गुणविस्तरैः । पुत्रादभ्यधिकञ्चैनं भारद्वाजोनुपश्यति ॥ १७ ॥ हन्यादेकरथेनैव देवगन्धर्वमानुषान् । एकीभूतानपि रणे दिव्यै रस्त्रैः प्रतापवान् ॥ १८ ॥ पौरवो राजशार्दूलस्तव राजन् महारथः । मतो मम रथोदारः परवीररथारुजः ॥ १९ ॥ स्वेन सैन्येन महता प्रतपन् शत्रुवाहिनीम् । प्रधक्ष्यति स पञ्चालान् कक्षमग्निगतिर्यथा ॥२०॥ सत्यश्रवा रथस्त्वेको राजपुत्रो बृहद्बलः । तवराजनरिपुबले कालवत् प्रचरिष्यति ॥ २१ ॥ एतस्य योधा राजेन्द्र विचित्रकवचायुधाः । विचरिष्यन्ति संग्रामे निघ्नन्तः

इससे तुम्हारा पूराहित करनेके लिये अतितीव्र कर्म करेंगे । १४ । ये वृद्ध द्रोणाचार्यजी सब क्षत्रियों के गुरु व आचार्यहैं, इससे सब संजय वंशियोंका अन्त कर देंगे परन्तु इनको अर्जुन सबसे अधिक मित्रहैं । १५ । इससे ये महाधनुर्द्धरजी, सरलतासेही सब रणकर्म करनेवाले अर्जुनको कभी न मारेंगे चाहे जो हो, क्योंकि उनके गुणों से ये ऐसे जीतलियेगये हैं कि अर्जुनकोही अपनाअति प्रकाशित आचार्य समझतेहैं । १६ । व इसीसे सदा विस्तार सहित गुणों से सदा अर्जुनहीकी प्रशंसाकरते हैं, बहुत कौन कहै ये अर्जुनको अपने पुत्र अश्वत्थामा सेभी अधिक समझने देखतेहैं । १७ । येतो ऐसे हैं कि जो इनके सामने देवता गंधर्व मनुष्य सब एकत्रहो एकही साथ आवें तो अकेलेही उनसबोंको मारडालेंगे ऐसे प्रतापवानहैं । १८ । हे राजन राजशार्दूल पौरव धृतराष्ट्रजी भी महारथहैं इस से शत्रु की ओर के वीरोंके रथों के तोड़ने वालेहैं । १९ । और अपनी बड़ीभारी सेना सेही तपते हुये शत्रुकी सेनाको भस्मकरेंगे व पांचालदेशके वीरोंको तो ऐसे जलावेंगे जैसे अग्नि सूखे तृणको भस्मकरताहै । २० । व अतिबलवान् सत्यश्रवा भी एकरथहैं वहभी तुम्हारे शत्रुकी सेनामें कालसमान सबको भस्मकरेगा । २१ । हे

does the dry straw of a forest. Being the son of Bharadwaj, he is the best of warriors and will do your work faithfully. Old Dronacharya is the preceptor of all the kshatryas. He will destroy all the Srinjayas; but he holds Arjun very dear and will never kill that great archer for he is so taken with his good qualities as to regard him to be his own glorious preceptor. He is ever warm in Arjun's praises and holds him dearer than his own son Ashwama. He is powerful enough to destroy all the gods, gandharvas and men that could come together to face him. Dhritarashtra the lion among kings of Puru family is also a maharath and can break down the chariots of warriors He will destroy, by means of his glorious army the army of the enemy and will destroy the army of the Panchals as fire does dry straw.

शात्रवांस्तव ॥ २१ ॥ वृषसेनो रथस्तेऽग्र्यः कर्णपुत्रो महारथः । प्रधक्ष्यति रिपूणान्तेबलन्तु बलिनावरः ॥ २३ ॥ जलसन्धो महातेजा राजन्रथवरस्तव। त्यक्ष्यते समरे प्राणान्माधवः परवीरहा ॥ २४ ॥ एष योत्स्यति संग्रामे गजस्कन्धविशारदः। रथेन वा महाबाहुः क्षपयन् शत्रुवाहिनीम् ॥२५॥ रथ एष महाराज मतो मे राजसत्तम। त्वदर्थे त्यक्ष्यते प्राणान् सहसैन्यो महारणे ॥ २६ ॥ एष विक्रान्तयोधी च चित्रयोधीच संगरे । वीतभीश्चापि ते राजन् शत्रुभिः सह योत्स्यते ॥ २७ ॥ बाह्लीको विरथश्चैव समरे चानिवर्त्तनः । मम राजन्मतो युद्धे शूरो वैवस्वतोपमः ॥ २८ ॥ नह्येष समरं प्राप्य निवर्त्तेत कथञ्चन । यथा सततगो राजन् साहः हन्यात् परान्रणे ॥ २९ ॥ सेनापतिर्महाराज सत्यवांस्ते महारथः । रणेष्वद्भुतकर्मा च रथी पररथारुजः ॥ ३० ॥ एतस्य समरं दृष्ट्वा न व्यथास्ति कथञ्चन । उत्स्मयन्नुत्पतत्येष

राजेंद्र इनके योधा चित्रविचित्र रथ आयुधादि रखते हैं इससे वे संग्राम में तुम्हारे बैरियों की सेनाको मारतेहुये विचरेंगे । २२ । कर्ण का पुत्र वृषसेनभी महारथ है यहभी बलवानों में बलवान है व तुम्हारे रिपुओं की सेना को भस्म करेगा ।२३। हे राजन जलसन्धनाम वीरभी रथवरहै ये भी समर में तुम्हारे लिये अपने प्राण छोड़ेंगे । २४ । यह योधा हाथी पर व रथपर सवार होकर शत्रु की सेना को नाश करता हुआ संग्राम में युद्ध करेगा । २५ । हे राजसत्तम, यहभी हमारे मतसे रथहै, महारण में तुम्हारे अर्थ सेना सहित प्राण छोड़नेपर उद्यतहै । २६ । यह विक्रान्त योधी व चित्रविचित्र युद्ध करनेवाला भी है और संग्राम में जानो किसी को डरता तो हई नहीं, इससे तुम्हारे शत्रुओं के संग युद्ध करेगा। २७ । व हे राजन, हमारे मतसे समरोंसे कभी न लौटनेवाले राजा बाह्लीकजी अतिरथहैं युद्धमें ऐसे शूर हैं कि मानो दूसरे यमराजही हैं । २८ । हे राजन ये समर में पहुँच फिर खाली नहीं लौटते, जैसे पहुँचे कि रणमें शत्रुओं को मारा । २९ । हे महाराज सत्यवान् नाम तुम्हारे सेनापति महारथहैं रणों में अद्भुतकर्म करते व आप रथपरचढ़ पर

20. Powerful Satyashrava is also a good warrior and will devour the army of your enemy like Death. His soldiers possess different sorts of weapons and will destroy your enemies. Vrishsen, the son of Karan is a *maharath* of great strength and will burn down the army of your enemy. Jalsandh is a great warrior who will lay down his life for you in battle. He will ride an elephant or a chariot to destroy your enemies. He is a good warrior and will be ready with his army to die for you in the great war. His mode of fighting is peculiar and dreadful; he is afraid of none and will therefore fight your enemies. King Vahlik who never turns back from battle, is an *atirath*, brave like a second Yamraj. He never returns from the field of battle without destroying enemies. The leader of your army Satyavan is a

परान्रथपथे स्थितान् ॥ ३१ ॥ एष चारिषु विक्रान्तः कर्म सत्पुरुषो चितम् । कर्त्ताविमर्दं सुमहत्त्वदर्थे पुरुषोत्तमः ॥ ३२ ॥ अलम्बुषो राक्षसेन्द्रः क्रूरकर्मा महारथः । हनिष्यति परान् राजन् पूर्ववैरमनुस्मरन् ॥ ३३ ॥ एष राक्षससैन्यानां सर्वेषां रथसत्तमः । मायावी दृढवैरश्च समरे विचरिष्यति ॥ ३४ ॥ प्राग्ज्योतिषाधिपो वीरो भगदत्तः प्रतापवान् । गजांकुशधरश्रेष्ठो रथे चैव विशारदः ॥ ३५ ॥ एतेन युद्धमभवत् पुरा गाण्डीवधन्वनः । दिवसान् सुबहून् राजन्नुभयोर्जयगृद्धिनोः ॥३६॥ ततः सखायं गान्धारे मानयन् पाकशासनम् । अकरोत् सन्धिं तेन पाण्डवेन महात्मना ॥ ३७ ॥ एष योत्स्यति संग्रामे गजस्कन्धविशारदः । ऐरावतगतो राजा देवानामिव वासवः ॥ ३८ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि सप्तषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६७ ॥

रथोंको भंजनकरतेहैं । ३० । इनको समरसेस कभी व्यथा होतीही नहीं, ये शत्रुओं को रथोंपर चढ़े देख बड़े हर्षसे उछल उन्हीं के पास पहुँच जाते हैं । ३१ । ये शत्रुओं के ऊपर बड़ा विक्रम करते, और सत्कर्म सत्पुरुषोंके योग्यही करते, इस से तुम्हारे अर्थ संग्राममें महाकर्म करेंगे । ३२ । और यह अलम्बुस नाम राक्षसेन्द्र बड़ाक्रूर कर्मकारी है यहभी हमारे मतसे महारथहै, इससे हे राजन पूर्व के वैर का स्मरण करताहुआ रणमें शत्रुओं को मारेगा । ३३ । यहराक्षसोंकी सब सैन्यों का रथसत्तमहै मायावी और दृढ़वैरहै, इस से समरमें विचरेगा । ३४ । व प्राग्ज्योतिष देशका राजा भगदत्तवीर बड़ाप्रतापी है, यहभी रथों में विशारदहै व गज अंकुश धरनेवालों में श्रेष्ठहै । ३५ । इसभगदत्तसे बहुत दिनोंतक एकसमय अर्ज्जुन से युद्ध भी हुआहै, दोनों परस्पर अपनी २ विजय चाहतेथे । ३६ । तिसके पीछे अर्ज्जुन को इन्होंने अपना सखा मान उनके संग मैत्री करलीहै । ३७ । गजपर सवार होकर यह घोर युद्ध करेंगे जैसे इन्द्र ऐरावत पर चढ़कर युद्ध करता है ॥ ३८ ॥

maharath and will destroy the chariots of the enemy from his own. 30. He is never afraid of a field of battle. He does dreadful deeds worthy of good men and will destroy your enemies. Alambush the lord of rakshases is a very brave *maharath* and will detroy the enemy for former enmity. He is the leader of the army of rakshases and is very deceitful. He will destroy your enemies. Bhagdatt the king of Pragjyotish is very glorious and skilful in driving elephants. Bhagdatt once fought for many days with Arjun and each vied with the other; but in the end he formed a friendship with Arjun and made peace with him. Riding on an elephant he will fight very bravely like Indra fighting from the back of Airavat." 38.

भीष्म उवाच । अचलो वृषकश्चैव सहितौ भ्रातरावुभौ । रथौ तव दुराधर्षौ शत्रून् विध्वंसयिष्यतः ॥ १ ॥ बलवन्तौ नरव्याघ्रौ दृढक्रोधौ प्रहारिणौ । गान्धारमुख्यौ तरणौ दर्शनीयौ महाबलौ ॥ २ ॥ सखा ते दयितो नित्यं य एष रणकर्कशः । उत्साहयति राजंस्त्वां विग्रहे पाण्डवैः सह ॥ ३ ॥ परुषः कत्थनो नीचः कर्णो वैकर्त्तनस्तव । मन्त्री नेता च बन्धुश्च मानी चात्यन्तमुच्छ्रितः ॥ ४ ॥ एष नैव रथः कर्णो नचाप्यतिरथो रणे । वियुक्तः कवचेनैष सहजेन विचेतनः ॥ ५ ॥ कुण्डलाभ्यां च दिव्याभ्यां वियुक्तः सततं घृणी । अभिशापाच्च रामस्य ब्राह्मणस्य च भाषणात् ॥ ६ ॥ करणानां वियोगाच्च तेनमेऽर्धरथोमतः । नैष फाल्गुनमासाद्य पुनर्जीवन् विमो·

अध्याय ॥ १६८ ॥

भीष्मजी बोले कि अचल वृषक ये दोनों भाई तुम्हारी सेना में रथ हैं, और दोनों बड़े दुराधर्ष हैं, इस से शत्रुओं का विध्वंस करेंगे । १ । क्योंकि ये दोनों नर व्याघ्र, बलवान, दृढ़वान, दृढ़क्रोधी, प्रहारी, तरुण अवस्थाको प्राप्त दर्शनीय रूप व महाबली हैं । २ । हे राजन, और यह तुम्हारा सखा नित्यप्रिय, रणमें बड़ाकर्कश, कर्ण है जो कि तुमको सदा पाण्डवों के साथ वैर करने के लिये प्रचारा करताहै और उत्साहित करातीहै ।३। यह नीचपुरुष केवल बकनाही बकना जानता है, परन्तु तुम्हारा तो यही मन्त्री व प्रेरक भाई बन्धु है पर बड़ामानी उन्नतहै । ४ । यह सूर्यकासा पुत्र कर्ण न रथहै न महारथ, क्योंकि इसका जब जन्महुआथा तो कवचादि धारणकिये था पर पीछे से उन कवचादिकों से रहित होगयाथा, व बड़ा भारी मूर्खहै ।५। जब जन्म हुआथा तो गर्भही से कुण्डलभी पहिने था परन्तु कुंडल हीन होगया, और सबकी सदा निन्दाही कियाकरताहै, और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ परशुरामजी के शाप से, व जन्मके साथके कवच कुण्डलादि कर्णोंसे रहित होने

CYAPTER CLXVIII

"here are in your army", continued Bhishm "two brave brothers, named Achal and Vrishak who are great warriors that will destroy the enemies, for the two lions among men are strong, hot tempered, skilful in the use of weapons, youthful, beautiful and powerful. Your dear friend Karan fights very hard. He is always instigating you to fight with the Pandavas. This mean fellow talks much, yet he is your adviser, instigator and kinsman full of pride and madness. This son of Surya is neither a *rath* nor *maharath*; for, he had armour on his body when he was born; but he was fool enough to lose it afterwards. He lost also the ear-rings born with him. He is always

क्ष्यते ॥ ७ ॥ ततोऽब्रवीत् पुनर्द्रोणः सर्वशस्त्रभृतांवरः । एवमेतद्यथात्थत्वं नमिथ्याऽस्ति कदाचन ॥ ८ ॥ रणे रणेऽभिमानी च विमुखश्चापि दृश्यते । घृणीकर्णः प्रमादी च तेन मेऽर्धरथो मतः ॥ ९ ॥ एतच्छ्रुत्वातु राधेयः क्रोधादुत्फाल्य लोचने । उवाच भीष्मं राधेयस्तुदन्वाग्भिः प्रतोदवत् ॥ १० ॥ पितामह यथेष्टमां वाक्शरैरवकृन्तसि । अनागसं सदा द्वेषाद्धेवमेव पदे पदे ॥ ११ ॥ मर्षयामिच तत्सर्वं दुर्योधनकृतेनवै । त्वन्तुमां मन्यसे मन्दं यथाकापुरुषं तथा ॥ १२ ॥ भवानर्धरथोऽस्मांमतोऽधै नात्रसंशयः । सर्वस्य जगतश्चैव गाङ्गेयो न मृषा वदेत् ॥ १३ ॥ कुरूणाम

से यह अर्धरथ अलपचो होसक्ताहै, इससे जब यह अर्ज्जुनके सामने जायगा तो फिर जीता न छूटेगा । ७ । यहसुन द्रोणाचार्यजी ने भी जो सबशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हैं, कहा यह ऐसाही है जैसा कि आप कहतेहो इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । ८ । यह रणमें तो अभिमान करता, और विजयी कहीं नहीं होता, निन्दा मानो सबकी करताही है, व जिसबात को कहनेलगता कुछ न कुछ भूल जरूरजाताहै, इत्यादि बातों से हमारे मतसेभी कर्ण अर्द्धरथही है इसमें कुछभी अन्तर नहीं है । ९ । यहवचन सुन कर्ण गैरेक्रोधके नेत्रनिकाल वचनोंसे व्यथित करताहुआ भीष्मजी से बोला । १० । हे पितामह, यथेष्ट वचनबाणों से सदा हम निरपराधी को काटतेरहतेहो, सो वैरही से बारबार ऐसा करतेहो कुछ विचारसे नहीं । ११ । हम तुम्हारी सब बातें दुर्योधन के लिये सहाकरते हैं, और तुमतो सदा मन्दही समझतेहो जैसे कोई कुत्सित नीच पुरुषको समझे । १२ । आप हम को अर्द्धरथ बतातेहैं तो अब सब जगत्भर अर्द्धरथही मानेगा क्योंकि सब यही कहेंगे कि भीष्मजी मिथ्या न कहेंगे जो उनके विचारमें आया वही ठीकहै । १३ । देखो

---

blaming others and having lost by the curse of Parashuram the armour and ear-rings born with his body, he can be reckoned only as half a warrior and will not return alive when he faces Arjun," On hearing this, Dronachrya the best of warriors said, "You are right, Sir. He boasts much of his strentgh and never wins He blames others, but himself commits mistakes again and again. Under these circumstances I, too, cannot but reckon him as a half warrior." At this Karan stared long at Bhishm in great anger and said. 10. You always cut me with your harsh words grandfather. You have done this hundreds of times thoughtlessly, without any fault on my part. I bear all your taunts for the sake of Duryodhan, though you are always looking down on me. You call me a half warrior and all the world will follow

द्दतो नित्य न च राजावबुध्यत । को हि नाम समानेषु राजसूदारकर्मसु ॥ १४ ॥ तेजोवधमिदं कुर्यात् विभेदयितुमाहवे । यथा त्वं गुणविद्वेषा दपरागं चिकीर्षसि ॥ १५ ॥ नहायनैर्न पलितैर्न वित्तैर्नच बन्धुभि । महारथत्वं संख्यातुं शक्यं क्षत्रस्य कौरव । १६ ॥ बलज्येष्ठं स्मृतं क्षत्रं मन्त्रज्येष्ठा द्विजातयः । धनज्येष्ठाः स्मृता वैश्याः शूद्रास्तुवयसाधिकाः ॥ १७ ॥ यथेच्छकं स्वयं वृथा रथानतिरथांस्तथा । काम द्वेषसमायुक्तो मोहात् प्रकुरुते भवान् ॥ १८ ॥ दुर्य्योधन महाबाहो साधुसम्यग वेक्ष्यताम् । त्यज्यतां दुष्टभावोयं भीष्म किल्विषकृत्तव ॥ १९ ॥ भिन्नाहि सेना

आपही के कहने से अभी द्रोणाचर्य्यजीने भी हमको अर्द्धरथी कहा, पर राजा आपको यह नहीं जानते कि ये कौरवोंके अहितहैं, यदि आप दोनोंजने कौरवोंके अहित न होते तो भला उदारकर्म करनेवाले समान राजाओं में ऐसा तेजो-वध क्योंकरते जो समर में भेद कराने की इच्छा न होती ।१४ । जैसा तुम गुणके विद्वेष से अप्रीति करना चाहतेहो, परन्तु हे कौरव क्षत्रियों में महारथ न बहुत वर्षों के होजानेसे होताहै, न बालपकने वा दांत आदि गिरने से वृद्ध होजानेपर न बहुत धनसे न बहुत नातेदार होनेसे । १५ । किन्तु क्षत्रिय बलसे ज्येष्ठ कहाताहै, व ब्राह्मणलोग वेदशास्त्र पढने से ज्येष्ठ होते हैं । १६ । वैश्यलोग धन से ज्येष्ठ माने जाते, और शूद्रलोग अवस्था में ज्येष्ठ मानेजातेहैं, और ये भीष्म तो अपने मनमाना जिसको चाहते रथ कहदेतेहैं जिनको चाहते अतिरथ कहदेते हैं । १७ । आप काम व द्वेषसे संयुक्तहो मोहसे भेद करतेहैं इससे हे महाबाहु दुर्योधन आप अच्छीतरह देखभाल विचारकरें । १८। दुष्टभाव भीष्मको तुम त्यागो क्योंकि ये तुम्हारा पापही करतेहैं, जब सेना भिन्न होजाती है तो बड़े दुःखसे फिर इकट्ठी

your example, because they will say that Bhishm does not tell a lie and has formed a true judgement. See, Dronacharya just followed your example and called me a 'half warrior' But the king does not think you an ill wisher of the Kauravas. Had you too not been the ill wishers of the Kauravas, you would not thus destroy my glory in the midst of so many great kings. You wish to produce discontent by dispraising me, but one does not become a *maharath* by old age, grey hair, fall of teeth, long life or possession or wealth and kinsmen. A kshatrya becomes great by his strength, a Brahman by learning the Vedas and shastras, Vaishyas by wealth and Shudras by age. Bhishm calls *raths* and *atiraths* whom soever he likes and makes distinctions according to his likings and dislikings. You must think well, Duryodhan, before accepting his words. Drive wicked Bhishm away, for

नृपते दु सन्धेया भवत्युत । गोलादि पुरुषव्याघ्र किमुनानासमुत्थिता ॥ २० ॥ एषाद्वेध समुत्पन्न योधानां युधि भारत । नेजोवधो न क्रियते प्रत्यक्षेणविशेषत २१॥ रथानां क्वचविज्ञान क्वचभीष्मोऽल्पचेतन । अहमावारयिष्यामि पाण्डवानामनीकिनाम् ॥ २२ ॥ आसाद्यमाममोघेषु गमिष्यन्ति दिशोदश । पाण्डवा· सहपञ्चाला शार्दूल वृषभा इव ॥ २३ ॥ क्वचयुद्ध विमर्दो वा मन्त्रे सुव्याहृतानिच । क्वच भीष्मोगतवया मन्दात्मा कालचोदित ॥ २४ ॥ एकाकीस्पर्धतेनित्य सर्वेणजगता सह । न चान्यं पुरुष कश्चिन् मन्यते मोघदर्शन ॥ २५ ॥ श्रोतव्य खलु वृद्धाना मिति

होती है । १९ । जो परम्परासे एकमें चलेआतेहैं वे जब किसी कारणसे भिन्न होजाते हैं तो बड़े दुःखसे फिर इकट्ठेहोतेहैं, व जो पृथक् २ कार्य किया चाहतेहैं उन को क्या कहना उनका इकट्ठा करना तो बहुतही कठिन होजाताहै । २० । हे भारत इस युद्धमें योधाओं में द्विविधा होगया, क्योंकि देखो हमारे तेजका नाश ये भीष्म प्रत्यक्षहीमें करते हैं । २१ । कहा रथोंका जानना कहां अल्पप्राणी भीष्म ! यह क्याजानें, हम अकेले पांडवों की सेनाओं को रोकेंगे । २२ । पांचालदेश निवासियों सहित पांडवलोग हमको रणमें पाय दशोंदिशाओंको ऐसे भागेंगे जैसे सिंहको देखके बैल भागतेहैं । २३ । कहां युद्ध व घमासानकी लड़ाई और कहा सलाहमें अच्छे विचार पूर्व्वक वचनों का कहना महाजर्ज्जर जिनकी आयु पुरागई है मन्दात्मा कालप्रेरित भीष्म भला ये इस विषयको क्या जानें । २४ । जो कि अकेलेही सब जगत्भरसे वैरकरना चाहतेहैं व और किसी को पुरुष मानतेही नहीं व अपना दर्शन विफल है उसे नहीं जानते ऐसे मिथ्याभिमानीहैं । २५ । शास्त्रकी आज्ञा है कि बूढ़ों के वचन सुननेचाहियें, परन्तु अतिवृद्धों के न सुनने

---

he wishes you ill An army once scattered is very difficult to collect Those who are long united are difficult to unite when once separated but those who wish to work separately are more difficult to work together 20 Bhishm is attempting to create disunion among warriors by speaking ill of me. A weak person like Bhishm can know nothing of warriors. Alone I shall check the army of the Pandavas. The Pandavas and the Panchals will run from my presence as bulls from a lion A vigorous war is very different from a peaceful council, what does Bhishm know of these things who is on the point of death from excess of age ? Yet he is falsely proud and wishes to raise enemies throughout the world by his contempt of others. The shastras enjoin respect of the council of old men, but

शास्त्रनिदर्शनम् । नत्वे वह्यतिवृद्धानां पुनर्बालाहिते मता ॥ २६ ॥ अहमेकोऽद्य निष्यामि पाण्डवानामनीकिनीम् । सुयुद्धे राजशार्दूल यशो भीष्म गमिष्यति २७। कृत सेनापतिस्त्वेष त्वया भीष्मोनराधिप । सेनापतौ यशो गन्ता न तु योधान्कथञ्चन ॥ २८ ॥ नाहं जीवति गाङ्गेये योत्स्ये राजन् कथञ्चन । हते भीष्मेतुयोद्धास्मि सर्वैरेव महारथैः ॥ २९ ॥ भीष्म उवाच । समुद्यतोऽयं भारो मे सुमहान्सागरोपम । धार्त्तराष्ट्रस्य संग्रामे वर्षपूगाभिचिन्तित ॥ ३० ॥ तस्मिन्नभ्यागतेकाले प्रतप्ते लोमहर्षणे । मिथोभेदोन मे कार्यस्तेन जीवसि सूतज ॥ ३१ ॥ नह्यहंत्वद्य विक्रम्य स्थविरोपि शिशोस्तव । युद्धश्रद्धामहं छिन्द्यां जीवितस्यच्चसूतज ॥३२॥ जामदग्न्येनरामेण महास्त्राणि विमुञ्चता । न मे व्यथाऽकृता काचित् त्वन्तुमे किं

मानने चाहियें क्योंकि अतिवृद्धों की बुद्धि फिर बालकों कीसी होजातीहै । २६ । हे राजशार्दूल हम अकेले तो पाण्डवों की सेनाको मारेंगे और यश भीष्मको होगा क्योंकि महासेनापति तुमने इन्हीं को बनायाहै । २७ । इस रीति यश सेनापति हीका होताहै योधोंका किसी प्रकार नहीं होता । २८ । इसलिये जबतक भीष्मजीते रहेंगे तबतक हम किसीप्रकारसे युद्ध न करेंगे, जब भीष्म मारडालेजायँगे तो फिर अलबत्ता सब महारथों के सङ्ग युद्धकरेंगे । २९ । यह सुन भीष्म पितामह बोले कि, हे सूतपुत्र कर्ण दुर्योधनके युद्धका यह सागर के समान बडाभारी भार जो बहुतवर्षों से हमारे माथे विचारागयाहै अब उस लोमहर्षण युद्धका समय निकट आगयाहै उसमें हमको आपस में भेद डालना चाहिये इससे तू जीता बचताहै । ३१ । नहीं तो हम जर्जर वृद्धभी होगये हैं तौभी तुझ छोकरेकी युद्ध करनेकी श्रद्धा व प्राणरखने भी श्रद्धा अभी काटडालें इसमें कुछभी अन्तर न पड़े । ३२ । क्योंकि महाअस्त्र चलातेहुये परशुरामजी हमारे शरीरमें कुछ

the words of those who are too old must not be minded because at the decline of age their wisdom goes down again to the state of childhood Bhishm will get the credit of my destroying the army of the Pandavas, because you have made him commander in chief of the armies I shall, therefore abstain from fighting as long as Bhishm lives, but shall do so when he is killed." Having heard this, Bhishm, the grandfather said, "I spare your life, son of a Sut, because the great war of which I have long taken the burden on my shoulders is at hand and I donot like to raise quarrel at such a critical moment, otherwise in spite of my excessive old age, I should have cut off your hope of life. 32 For you can do no harm when

करिष्यसि ॥ ३३ ॥ काम नैतत् प्रशंसन्ति सन्तः स्वबलसंस्तवम् । वक्ष्यामि तु त्वां संतप्तो निहीनकुलपांसन ॥ ३४ ॥ समेतं पार्थिवं क्षत्रं काशिराजस्वयंवरे । निर्जित्यैकरथेनैव याः कन्यास्तरसा हृता ॥ ३५ ॥ ईदृशानां सहस्राणि विशिष्टानामथो पुनः । मयैकेन निरस्तानि ससैन्यानि रणाजिरे ॥ ३६ ॥ त्वांप्राप्य वैर पुरुषं कुरूणामनयो महान् । उपस्थितो विनाशाय यतस्व पुरुषो भव ॥ ३७ ॥ युध्यस्व समरे पार्थं येन विस्पर्धसे सह । द्रक्ष्यामि त्वां विनिर्मुक्तमस्माद्युद्धात् सुदुर्मते ॥ ३८ तमवाच ततो राजा धार्त्तराष्ट्रः प्रतापवान् । मांसमीक्षस्व गाङ्गेय कार्यं हि महदुद्यतम् ॥ ३९ ॥ चिन्त्यतामद्यमेकाग्रं मम निःश्रेयसं परम् । उभावपिभवन्तौ

व्यथा न करसके तो तू हमारा क्या करसक्ता है । ३३ । यद्यपि पण्डितलोग अपने बलकी प्रशंसा अपनेही मुखसे करनेको बड़ाई नहीं करते परन्तु हे कुल नाशक दुराचारी नीच क्याकरें अब सन्तप्त होकर तुझको अपने बलके समाचार कहनेही पड़े इससे कहेंहींगे । ३४ । सुन पृथ्वीमण्डलभरके सब बड़े २ क्षत्रिय काशिराजके स्वयम्वरमें विद्यमानथे उनसबोंको हम अकेलेही जीत कन्या हरलाये । ३५ । ऐसे सहस्रों वीरोंको व इनसे विशेष सैकड़ोंको समरभूमि में जहां कहीं हुआ है हमनें अकेलेही ध्वस्तकर दिया है । ३६। और तेरेही कारण कौरवोंके ऊपर यह बड़ाभारी अन्याय व विपत्ति आयपड़ी है जो कि नाशकिया चाहताहै अब जो कुछ पुरुषार्थ हो तो इसके मिटानेमें यत्नकर । ३७ । हे दुष्ट जिन अर्जुन से प्रतिदिन स्पर्द्धा करताहै उनसे समरमें युद्धकर हम तुझको इस युद्धसे भगाहुआ व प्राणत्यागेहुआ देखेंगे । ३८ । इतनासुन प्रतापी राजा दुर्योधन बोले कि हे पिता-महजी आप हमारी ओर दृष्टिकरें क्योंकि बड़ाभारी कार्य आनपड़ाहै । ३९ । इससे एकाग्रहो दोनोंजने आप हमारे परम कल्याण की चिन्तना कीजिये, क्योंकि

Parashuram with his celestial weapons could not wound me. Wise men donot praise their own strength; but you force me to do so, wicked man, destroyer of family! All the great kings of the world were present in the swayamvar of the daughters of the king of Kashi; but I defeated them all and won the three princesses. I have defeated thousands of warriors on different occasions. You have brought this great calamity over the Kauravas. You will bring about general; try if you can, to mitigate it. I shall see you flying and beaten from before Arjun of whom you are so envious." Glorious Duryodhan interfered on hearing this, "Look at me, grandfather; I am in a great difficulty. May both of you unite together for my welfare. It is

गे महत् कर्म करिष्यत. ॥ ४० ॥ भूयश्च श्रोतुमिच्छामि परेषांरथसत्तमान् । ये चैवातिरथास्तत्र ये चैवरथयूथपाः ॥ ४१ ॥ बलाबलममित्राणां श्रोतुमिच्छामिकौरव । प्रभातायां रजन्यां वै इदं युद्धं भविष्यति ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि भीष्मकर्णसंवादे अष्टषष्ट्यधिकशततमोऽध्यायः १६८ ॥

भीष्म उवाच । एते रथास्तवाख्यातास्तथैवातिरथा नृप । येचाप्यर्धरथा राजन् पाण्डवानामतः शृणु ॥ १ ॥ यदि कौतूहलं तेद्य पांडवानांबले नृप । रथसंख्यां शृणुष्वत्वं सहैभिर्वसुधाधिपैः ॥ २ ॥ स्वयं राजारथोदारः पाण्डवः कुन्तिनन्दनः । अग्निवत् समरे तात चरिष्यति न संशयः ॥ ३ ॥ भीमसेनस्तु राजेन्द्र रथोष्ट

आपही दोनों हमारा बड़ाकाम करेंगे । ४० । अब हम फिर यह सुना चाहते हैं कि हमारे शत्रुओंकी सेनाओं में कौन २ रथसत्तमहैं, व कौन २ अतिरथहैं व कौन२ रथयूथप के यूथप हैं अर्थात् महारथ आदियों से भी अधिक हैं । ४१ । प्रातःकालही रिपुकी सेना से घोर युद्ध होगा.उससे पहले में बल अबल सब सुना चाहता हूं ॥ ४२ ॥

अध्याय ॥ १६९ ॥

भीष्मजी बोले कि हे राजन तुम्हारी सेना के इतने रथ अतिरथ व अर्द्धरथ जो हैं सब तुमसे बताये अब पांडवों की सेनाके रथादि सुनिये । १ । हे राजन् जो सुनने की तुमको इच्छा है तो इन राजाओं सहित तुम रथोंकी संख्या पहिले सुनो । २ । प्रथम तो राजा युधिष्ठिर आपही रथों में उदारहैं, इससे समर में अग्नि के समान भक्षण करेंगे इसमें कुछ सन्देहही नहीं और हे राजन भीमसेन तो अठगुने रथ हैं क्योंकि इनके समान दूसरा न गदायुद्धही में कोई है न बाणयुद्ध

---

only you two that can do me good. I wish to hear which of the men in our enemy's army are *atirath*, *rath-sattam* and *rath-yuthap*. We have to fight early in the morning tomorrow with the enemy and therefore I wish to know first the strength and weakness of both the sides." 42.

CHAPTER CLXIX

"I have told you king," said Bhishm, "the names of warriors of various ranks in your army; now hear from me the names of those in the army of the Pandavas. Hear the names of *raths*, if you and these kings wish to know them. First of all, king Yudhishthir himself is the best of warriors and will surely consume like fire in the field of battle. Bhimsen is an eightfold warrior; for he has no

गुणसमितः । नतस्यास्ति समो युद्धे गदयासायकैरपि ॥ ४ ॥ नागायुतबलो मानी तेजस्वी न स मानुषः । माद्रीपुत्रौ च रथिनौ द्वावेव पुरुषर्षभौ ॥ ५ ॥ अश्विनाविवरूपेण तेजसा च समन्वितौ । एते चमूमुखगताः स्मरन्तः क्लेशमुत्तमम् ॥ ६ ॥ रुद्रवत् प्रचारष्यन्ति तत्र मे नास्ति संशयः । सर्वे एव महात्मानः शाल स्तम्भा इवोद्गताः ॥ ७ ॥ प्रादेशेनाधिकाः पुंभिरन्यैस्ते च प्रमाणतः । सिंहसंहननाः सर्वे पाण्डुपुत्रामहाबलाः ॥ ८ ॥ चरितब्रह्मचर्य्याश्च सर्वे तात तपस्विनः । ह्रीमन्तः पुरुषव्याघ्रा व्याघ्रा इव बलोत्कटाः ॥ ९ ॥ जवे प्रहारे संमर्दे सर्व एवाति मानुषा । सर्वैर्जिता महीपाला दिग्जये भरतर्षभ ॥ १० ॥ न चैषां पुरुषाः केचिदायुधानि गदाः शरान् । विषहन्ति सदा कर्त्तु मधिज्यान्यपि कौरव॥११॥

ही में । ४ । दशसहस्र हाथियों का तो जानों उनके मुख्य बलही ठहरा फिर मानी जानों यवेही हैं इससे वे तेजसे मनुष्य नहीं हैं, और माद्री के दोनों पुत्र पुरुष श्रेष्ठ रथी हैं । ५ । रूप व तेज में दोनों अश्विनीकुमारही के समान हैं ये जब सेनाके सामने आवेंगे तो जो जो क्लेश उनको हुये हैं उनको स्मरण करते हुये । ६ । तुम्हारी सेनामें सब पांडवलोग रुद्र के समान भक्षण करते हुये विचरेंगे, सबके सब महात्मा हैं सब सांखू के खम्भा के समान हैं । ७ । और पुरुषों से ऊँचाई में बीताभर लम्बे अधिकहैं व सबपांडुपुत्रों की देह सिंहोंकी देहों के समान पुष्टहै महाबली सबके सबही हैं । ८ । आचारसे सबके सब ब्रह्मचारी ही हैं, व सब तपस्वी हैं, लज्जावान सबके सबहैं और व्याघ्रोंके ही समान बल में उत्कट हैं । ९ । वेगमें प्रहार करने में व सम्मर्दन करने में सबके सब अति मानुष ही हैं, और दिग्विजय में उन्हों ने सब राजाओं की पूजा शस्त्रों को पुष्पाक्षत बनाय अच्छीतरह से की है । १० । इन पांडवों के आयुध गदा व बाणों को

equal in the use of mace and arrow. He has the strength of ten thousand elephants and is very sensitive. He is therefore superhuman in glory. The two sons of Madri are among the best warriors. They are like the Ashwinikumars in beauty and glory. All the Pandavas will remember the old wrongs done to them and will roam like Rudra devouring your army. They are all great men, tall as oak trees, taller by a span than other men; they have bodies like a lion's and are all excessively strong. They pass their life in celibacy and asceticism, are modest, strong like lions and superhuman in velocity, use of weapons and battle. In their conquest they have worshipped all the kings with weapons for flowers. 10. None can wield the weapons of the Pandavas, draw their bows or bear their

भीष्म उवाच । रोचमानो महाराज पाण्डवानां महारथः । योत्स्यतेऽमरवत् संख्ये परसैन्येषु भारत ॥ १ ॥ पुरुजित् कुन्तिभोजश्च महेष्वासो महाबलः । मातुलो भीमसेनस्य सच मेतिरथो मतः ॥ २ ॥ एष वीरो महेष्वासः कृती च निपुणश्च ह । चित्रयोधी च शक्तश्च मतो मे रथपुङ्गवः ॥ ३ ॥ स योत्स्यति हि विक्रम्य मघवानिव दानवैः । योधा ये चास्य विख्याताः सर्वे युद्धविशारदाः ॥ ४ ॥ भागिनेयकृते वीरः स करिष्यति सङ्गरे । सुमहत् कर्म पाण्डूनां स्थितः प्रियहितेरतः ॥ ५ ॥ भैमसेनिर्महाराज हैडिम्बो राक्षसेश्वरः । मतो मे बहुमायावी रथयूथपयूथपः ॥ ६ ॥ योत्स्यते समरे तात मायावी समरप्रियः । ये चास्य राक्षसा वीराः सचिवा वशवर्त्तिनः ॥ ७ ॥ एते चान्ये च बहवो नानाजनपदे-

अध्याय १७२ ॥

भीष्मजी बोले कि हे महाराज पाण्डवोंका महारथ रोचमान समरमें तुम्हारी सेनाओंके संग देवताओं केही समान युद्धकरेगा । १ । पुरुजित् व कुन्तिभोज ये दोनों भीमसेन के मामा बड़ेधनुर्द्धर व महावीर्य्य हैं इससे दोनों महारथहैं । २ । उनमें कुन्तिभोज महाधनुर्द्धर युद्धमें कुशल व निपुण, चित्रविचित्र युद्धकारी, शक्तिमान होनेसे हमारे मत से रथसत्तमहै । ३ । यह विक्रमकर तुम्हारी सेनासे ऐसा युद्धकरेगा जैसे इन्द्र दानवों से करतेहैं, इसके जितने योधाहैं सब युद्धकरने में विशारद हैं । ४ । यह वीर अपने भानजे पांडवोंके लिये युद्धमें बड़ाभारी कर्म करेगा क्योंकि पांडवों के हितही में सदा लगारहताहै । ५ । हे महाराज भीमसेन व हिडिम्बा नाम राक्षसी से उत्पन्न जो पुत्र राक्षसों का ईश्वर है यह बहुतमाया जानताहै इससे हमारी जान रथ यूथपोंका भी यूथपहै । ६ । इससे यह समरमें मायायुक्त युद्ध करेगा क्योंकि उसको माया बहुत प्रियहै इसके मन्त्री जो राक्षसलोग हैं वे सब इसके वशमें हैं । ७ । इन्हें आदि औरभी नानादेशों के निवासी राजालोग वासु-

CHAPTER CLXXII

"Rochman the *maharath*," said Bhishm to Maharaj Duryodhan, "will fight your armies like gods. Purujit and Kuntibhoj the two maternal uncles of Bhimsen are very brave archers and are maharaths. Kuntibhoj among them is a great archer, skilful in battle, and is therefore in my opinion one of the best warriors and will destroy your army as Indra does the danavas. All his soldiers are expert in fighting. He will do great deeds of valour for his sister's sons the Pandvas; for he is ever devoted to them. The lord of rakshases, born of Bhimsen and the demoness Hidimva, knows much of magic and is therefore, in my opinion, the prince of warriors. He loves tricks and will therefore fight very artfully as he has full control over his

श्वरा । समेताः पाण्डवस्यार्थे वासुदेवपुरोगमाः ॥ ८ ॥ एते प्राधान्यतो राजन् पाण्डवस्य महात्मनः । रथाश्चातिरथाश्चैव ये चान्ये रथान्नृप ॥ ९ ॥ नेष्यन्ति समरे सेनां भीमां यौधिष्ठिरीं नृप । महेन्द्रेणेव वीरेण पाल्यमानां किरीटिना ॥ १० ॥ तैरहं समरे वीर मायाविद्भिर्जयैषिभिः । योत्स्यामि जयमाकाङ्क्षन्नथ वा निधनं रणे ॥ ११ ॥ वासुदेवश्च पार्थश्च चक्रगाण्डीवधारिणौ । सन्ध्यागताविवार्केन्दू समेष्येते रथोत्तमौ ॥ १२ ॥ ये चैव ते रथोदाराः पाण्डुपुत्रस्य सैनिकाः । सहसैन्यानहं तांश्च प्रतीयां रणमूर्धनि ॥ १३ ॥ एते रथाश्चातिरथाश्च तुभ्यं यथाप्रधानं नृप कीर्तिता मया । तथा परे येऽर्धरथाश्च केचित्तथैव तेषामपि कौरवेन्द्र ॥ १४ ॥ अर्जुनं वासुदेवञ्च ये चान्ये तत्र पार्थिवाः । सर्वांस्तान् वारयिष्यामि यावद्द्रक्ष्यामि भारत १५ पाञ्चाल्यन्तु महाबाहो नाहं हन्यां शिखण्डिनम् । उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा प्रतियुध्यन्त·

देवादि पांडवों के अर्थ इकट्ठे हैं । ८ । हे राजन् महात्मा पांडवों के राजा के इतने रथ आतिरथ व अर्द्धरथ महारथादि हैं । ९ । ये लोग इन्द्रवीरसे पालित देवसेनाके समान अर्ज्जुनवीरकी पालित युधिष्ठिरजीकी सेनाको समरमें उद्यत करावेंगे ।१०। इन सब मायावियों व अन्य महारथादिकोंसे समरमें जय व मरणकी इच्छा से हम युद्धकरेंगे इसमें अन्तर न पड़ेगा । ११ । और चक्र गांडीव धारण किये वासुदेवजी व अर्ज्जुनसे भी युद्धकरेंगे जो सन्ध्यासमयके सूर्य चंद्रमा के समान एक ही रथपर चढ़ेहुये हमारे सामने प्राप्त होंवे । १२ । युधिष्ठिरजी की सेनामें जितने सेनापति व योधा हैं उन सबोंसे हम युद्धकरेंगे अन्तर न पड़ेगा । १३ । हे राजन् ये जितने पांडवों की सेना के रथ अतिरथ महारथ अर्द्धरथ व औरभी वीर हमने गिनाये व जिनको नहीं गिनाये वे सबवीर वैसेही हैं । १४ । इन सबोंको व अर्ज्जुन और वासुदेवजी को भी जबतक हम जीतेरहेंगे रोकेरहेंगे और किसीको मारने न पावेंगे । १५ । इसबातको लोकभर जानताहै कि हमने राज्य पाय अपने पिता

---

brother demons. Besides these there are other kings of different countries- Vasudev and others- come to help the Pandvas. These are the warriors of different denominations in the army of the Pandavas. The whole army led by the great warrior Arjun, like the army of gods led by Indra, will encounter your army in the field of battle.- 10 I shall fight in the midst of all these warriors. I shall fight as well with Vasudev the wielder of discus and Arjun the weilder of Gandiv, who will come against us in the field like the sun and the moon together at an evening. I shall have no hesitation to fight with every warrior and commander in the army of the Pandavas. The Pandav army possesses all these warriors and others like them which I have not named. I shall check all these as

माहवे ॥ १६ ॥ लोकस्तद्वेद यदहं पितुः प्रियचिकीर्षया । प्राप्तं राज्यं परित्यज्य ब्रह्मचर्यव्रते स्थितः ॥ १७ ॥ चित्राङ्गदं कौरवाणामाधिपत्येऽभ्यषेचयम् । विचित्रवीर्यञ्च शिशुं यौवराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ १८ ॥ देवव्रतत्वं विज्ञाप्य पृथिव्यां सर्वराजसु । नैव हन्यां स्त्रियं जातु न स्त्रीपूर्वं कदाचन ॥ १९ ॥ स हि स्त्रीपूर्वकोराजन् शिखण्डी यदि ते श्रुतः । कन्याभूत्वा पुमान् जातो न योत्स्ये तेन भारत ॥ २० ॥ सर्वांस्त्वन्यान् हनिष्यामि पार्थिवान् भरतर्षभ । यान् समेष्यामि समरे न तु कुन्तीसुतान्नृप ॥ २१ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि
द्विसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७२ ॥

रथातिरथसंख्यानपर्व ॥

के प्रियकरनेकी इच्छासे फिर राज्यछोड़ ब्रह्मचर्यव्रत धारणकियाहै जिसमें मैथुन करनेका निषेधहै । १७। इससे फिर जब हमारी दूसरीमाताके पुत्र चित्रांगद व विचित्रवीर्य्य हुये तो पिताजी के पीछे हमने उन दोनों में बड़े चित्रांगदको कौरवों के राज्य पर अभिषेक किया, व छोटे विचित्रवीर्य्य को युवराज पदवीपर स्थापितकिया।१८।इससे पृथ्वीपरके सबराजाओंके बीचमें ब्रह्मचारिव्रतको जनाय अब न तो कभी स्त्रीहीको मारेंगे न जो पहिले स्त्री उत्पन्नहुआहो फिर पुरुषहोगया हो उसीको।१९। इससे तुमनेभी सुनाहोगा कि यह द्रुपदका पुत्र प्रथम कन्याहुआ फिर पुत्र होगयाहै इससे इसकेसंग हम युद्ध न करेंगे।२०। रणमें मेरेसम्मुख जितने राजा आवेंगे सबोंको सिवाय शिखंडि और कुन्तिपुत्रोंके हम बधकरेंगे । २१ ।

well as Krishn and Arjun as long as I live. The world knows that I left the kingdom, which I had got. to please my father and have observed the vow of celibacy. Two sons, named Chitrangad and Vichitravirya were born to my second mother and I installed the elder of them, named Chitrangad, on the throne, after the death of my father, and made the younger Vichitravirya the yuvraj. But being famous through the world for my vow of celibacy, I shall neither kill a woman nor one who was formerly a woman: the son of Drupad was born a woman, but subsequently the girl was transformed into a boy and I shall not fight with him. I shall kill all those who will face me on the field of battle, with the exception of Shikhandi and the sons of Kunti. 21

अथांबोपाख्यानपर्व ॥

दुर्योधन उवाच ॥ किमर्थं भरतश्रेष्ठ नैव हन्याः शिखण्डिनम्। उद्यतेषु मयो दृष्ट्वा समरेष्वाततायिनम् ॥ १ ॥ पूर्वमुक्त्वा महाबाहो पांचालान् सह सोमकैः। हनिष्यामीति गांगेय तन्मे ब्रूहि पितामह ॥ २ ॥ भीष्म उवाच ॥ शृणु दुर्योधन कथां सहै भिर्वसुधाधिपैः। यदर्थं युधि सम्प्रेक्ष्य नाहं हन्यां शिखण्डिनम् ॥ ३ ॥ महाराजो मम पिता शान्तनुर्लोक विश्रुतः। दिष्टान्तमाप धर्मात्मा समये भरतर्षभ ॥ ४ ॥ ततोहं भरतश्रेष्ठ प्रतिज्ञां परिपालयन्। चित्रांगद भ्रातरं वै महाराज्येऽभ्यषेचयम् ॥ ५ ॥ तस्मिंश्च निधनं प्राप्ते सत्यवत्या मते स्थितः। विचित्रवीर्यं राजानं मभ्य पिंचं यथा विधि ॥ ६ ॥ मयाभिषिक्तो राजेंद्र यवीयानपि धर्मतः। विचित्रवीर्यो धर्मात्मा मामेव समुदैक्षत ॥ ७ ॥ तस्य

अध्याय १७३ ॥

इतनी बात के सुनतेही राजा दुर्योधन भीष्मपितामहजी से पूंछने लगे कि हे भरतश्रेष्ठ, जब समर में आयुध के उद्यत हो शिखण्डी आततायी आप के सामने युद्धकरने को उपस्थित होगा तो आप उसे क्यों न मारेंगे। १। क्योंकि पूर्वकाल में आप प्रतिज्ञा करचुके हैं कि पांचालवंशी व सोमवंशी सबों को समर में मारडालेंगे पर अब पांचालवंशी शिखण्डी को नहीं मारना चाहते इस का हेतु हमसे बताइये। २। यह सुन भीष्मजी बोले कि हे दुर्योधन इन सबराजाओं सहित कथा सुनो जिसके लिये हम शिखंडी को न मारेंगे। ३। लोकमें विश्रुत हमारे पिता महाराजा शान्तनु जी जोकि बड़े महात्मा भरतवंश में श्रेष्ठ थे जब वे समयपर स्वर्गवासी हुये। ४। तो हे महाराज हमने अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर चित्रांगद नाम अपने भाई को महाराज्यपर अभिषेक कर स्थापितकिया। ५। जब चित्रांगदभी मृतक होगये तो अपनी माता सत्यवती के सम्मतसे हमने विचित्रवीर्य्य को राज्यपर अभिषेक किया। ६। हे राजेन्द्र जब हमने विचि-

CHAPTER CLXXIII

On hearing this Duryodhan said to Bhishm, "Why will you not kill Shikhandi when he will be ready to fight with you? You have promised to kill the Panchals and the descendants of Som, now tell me the reason of your desisting from killing him." "Hear the reason of my so doing," said Bhishm, "famous king Shantanu was my father. He was the best of the Bharat family. When he died, I installed Chitrasen my brother on the throne, according to my promise At the death of Chitrangad I installed Vichitravirya on the throne. When Vichitravirya became king, he was so good in spite of his young age that he did nothing without my advice. I, then intended to have him married to a girl worthy of our family.

दार क्रियान्तात चिकीर्षुरहमप्युत । अनुरूपादिव कुला दित्येवच मनोदध ॥ ८ ॥ तथा श्रोप महाबाहो तिस्र कन्या स्वयम्वरा । रूपेणाप्रतिमा सर्वा काशिराजसुतास्तदा । अम्बाचेवाम्बिकाचैव तथैवाम्बालिकामपि ॥ ९ ॥ राजानश्च समाहूता पृथिव्या भरत र्षभ । अम्बा ज्येष्ठाभवत्तासा मम्बिका त्वथ मध्यमा । १०॥ अम्बालिकाच राजेंद्र राज कन्या यवीयसी । सोऽहमेक रथनैव गत काशिपते पुरीम् ॥ ११ ॥ अपश्य तामहं वाहो तिस्र• कन्या स्वलकृता । राज्ञश्चैव समाहूतान् पार्थिवान् पृथिवीपत ॥ १२ ॥ ततोऽह न्तान्नृपान्सर्वा नाहूय समर स्थितान् । रथमारोपयाञ्चक्र कन्यास्ता भरतर्षभ ॥ १३ ॥ वीर्यशुल्काश्चताज्ञात्वा समारोप्य रथ तदा । अवोच पार्थिवान् सर्वा नंह तत्र समागता

त्रवीर्य का अभिषेक किया तो यद्यपि वे छोटपे पर ऐसे धर्मात्मा थे कि हमारेही मुख की ओर निहारा करें जो कुछ हम करें वही करें । ७ । तब हमारे मनमें आया कि अब इनका कहीं विवाह करना चाहिये पर ऐसे वंशकी कन्याहो जो हमार कुल के अनुरूप हो । ८ । यह विचारतेही थे कि हमने सुना कि काशी के राजा की तीन कन्याहैं उनका स्वयम्वर होनेवालाहै, व सबकी सब रूपमें अद्वितीयहैं । ९ । उन में एकका अम्बा दूसरीका अम्बिका तीसरीका अम्बालिका नाम था उन तीनों के लिये पृथ्वीभर क राजालोग बुलायेगये । १० । उन में सब से ज्येष्ठ कन्या अम्बाथी अम्बिका मध्यमथी व अम्बालिका सबसे छोटीथी, यह जान हम अकेलेही रथपरचढ़ काशीपुरीकोगये । ११ । वहां सबप्रकार से भूषित तीनों कन्याओं को हमने देखा व जो सब राजालोग बुलायेगये थे उन्हें भी देखा । १२ । तिसके पीछे समरमें टिके हुये उन सब राजाओंको पुकार तीनों कन्याओं को हमने रथपरचढा लिया । १३ । क्योंकि सबोंने हमसे कहा कि इन कन्याओंका मोल वीर्यही है जो जीते सबोंको लेजाय इसीसे हमने उनको रथ

While I was thinking of this I heard the proclamation of the swayamvar of the three daughters of the king of Kashi I heard that they were all beautiful. They were named Amva, Amvika and Amvalika respectively and all the kings of the land were summoned to attend the swayamvar 10 The eldest of them was named Umba, the middle one was Ambica and the youngest was Ambalika. Having heard the news of the swayamvar, I went there alone and saw the three princesses well decked as well as all the kings that were summoned to Kashi, and having warned all the kings I took up the three girls on my chariot I said to the assembly of the kings that as prowess was the price of them and that any one who won, could take them away, I would take them in spite of

न् । भीष्मः शांतनवः कन्या हरतीति पुनः पुनः ॥ २४ ॥ ते यतध्वं परं शक्त्या सर्वेमोक्षाय पार्थिवाः । प्रसह्य हि हराम्येष मिषतांवो नरर्षभाः ॥ २५ ॥ ततस्ते पृथिवीपालाः समुत्पेतुरुदायुधाः । योगो योग इतिक्रुद्धाः सारथीं नश्यचोदयन् ॥ २६ ॥ ते रथैर्गजसंकाशैर्गजैश्च गजयोधिनः । पृष्ठैश्चाश्वैर्महीपालाः समुत्पेतुरुदायुधाः ॥ २७ ॥ ततस्ते मां महीपालाः सर्व एव विशाम्पते । रथव्रातेन महता सर्वतः पर्यवारयन् ॥ २८ ॥ तानहं शरवर्षेण समन्तात् पर्यवारयम् । सर्वान्नृपांश्चाप्यजयं देवराडिव दानवान् ॥ २९ ॥ अपातयं शरैर्दीप्तैः प्रहसन्भरतर्षभ । तेषमापततां चित्रान् ध्वजान्हेमपरिष्कृतान् २० ॥ एकैकेनहि बाणेन भूमौ पातितवानहम् । हयांस्तेषांगजांश्चैव सारथींश्चाप्यहं रणे ॥ २१ ॥

परचढ़ाय जितने राजा वहां आयेथे सबोंसे बड़े जोरसे पुकारकर कहा कि । १४ । महाराज शान्तनुजी के पुत्र हम भीष्म कन्या लियेजाते हैं लियेजातेहैं हे सब राजा लोगो अपनी २ शक्तिभर तुम सब यत्न करो तुम सबजनोंके सामने जबरदस्ती हरेलियेजातेहैं कुछ चोरीसि नहीं इससे जिससे जो बने सो करे हम अभी खड़ेहैं । १५ । इस बातको बार २ सुन सब राजा अपने २ अस्त्रशस्त्र धारणकर व ऊपर को चढाय अपने २ सारथियोंसे कहनेलगे रथ चलाओ चलाओ । १६ । ऐसा कहतेहुये वे राजालोग हाथियों के समान ऊंचे रथों पर सवारहो व जो हाथियोंपरसे युद्धकरना जानतेथे वे हाथियोंपर सवारहो, बाकी सब बड़ेपुष्ट घोड़ोंपर चढ़ २ ऊपरको आयुध चढाय मारो पीटो बांधो ऐसा कहतेहुये एकाएकी आटूटे । १७ । व हे राजन सबके सब राजाओं ने अपने रथ समूहोंसे चारोंओरसे हमारे रथको घेरलिया । १८ । हमने जो उन सबों के ऊपर लगातार बाणोंकी बर्षाकी तो उनको ऐसा जीता जैसे इन्द्र दानवोंको जीतते हैं । १९ । हमने एक हँसीके साथ बड़े दीप्त बाणोंसे दौड़ते आते उनकी रथों की ध्वजा प्रथम काटडाली । २० । सो एकही एक बाण ऐसामारा कि ध्वजा पृथ्वी पर गिरपड़ीं, व एक २ बाणसे

all of them. I told them that I the son of king Shantanu, had seized the girls by force and that they were at liberty to do what they pleased. I told them this again and again and having heard those words they one and all raised their weapons and called on their chariot drivers to go on. At this they rode on chariots as high as elephants; those who knew how to ride on elephants, rode on the back of elephants and the rest rode on horses, attacking me with their arrows and raising cries of war. All those kings surounded mine with their own chariots. I sent forth on them a shower of arrows thick as rain and with my swift, bright arrows cut down all their banners which fell down on the earth. With a second set of arrows, I killed their drivers and horses. Seeing the dexterity of my

ते निवृत्ताश्च भग्नाश्च दृष्ट्वा तल्लाघवं मम । अथाहं हास्तिनपुरं मायां जित्वा महीक्षितः ॥ २२ ॥ ततोऽहं ताश्च कन्या वै भ्रातुरर्थाय भारत । तच कर्म महाबाहो सत्यवत्यै न्यवेदयम् ॥ २३ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि कन्याहरणे त्रिसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७३ ॥

भीष्म उवाच । ततोऽहं भरतश्रेष्ठ मातरं वीरमातरम् । अभिगम्योपसंगृह्य दाशेयी मिदमब्रुवम् ॥ १ ॥ इमाः काशिपतेः कन्या मया निर्जित्य पार्थिवान् । विचित्रवीर्यस्य कृते वीर्यशुल्का हृता इति ॥ २ ॥ ततो मूर्धन्युपाघ्राय पर्यश्रुनयना नृप । आह सत्यवती हृष्टा दिष्ट्या पुत्र जितं त्वया ॥ ३ ॥ सत्यवत्यास्त्वनुमते विवाहे समुपस्थिते ।

सबके घोड़े हाथी व सारथी भी मारगिराये । २१ । मेरे हाथकी शीघ्रता देखकर कुछ नृप लौटे कुछ भागगये तब हम राजाओं को जीतकर हस्तिनापुर को लौटे और भाई के लिये कन्याओंको लाकर माता सत्यवती से सब वृत्तान्त कहा २३॥

अध्याय १७४ ॥

भीष्मजी बोले कि तब वीर चित्राङ्गद विचित्रवीर्यकी माता कैवर्तक की कन्या सत्यवतीजी के चरण छू उनसे हमने यह कहा कि ये काशी के राजा की तीनों कन्या हैं इनका मोल केवल वीर्य्य था इसलिये इनके अर्थ आये हुये सब राजाओं को जीत विचित्रवीर्य्य के लिये इनको लायेहैं । २ । तब हमारा शिर सूंघ नेत्रोंसे आनन्द के आंशू छोड़तीहुई सत्यवतीजी ने हर्षितहो हमसे कहा कि पुत्र बड़े भाग्यकी बात है जो तुम जीतआये । ३ । जब सत्यवती जीकी

---

hand they turned back and having thus defeated all the kings, I returned to Hasthinapur, I brought those girls for the sake of my brother and having entrusted them to my step mother Satyavati I told her all that had happened. 23.

CHAPTER CLXXIV

Bhishm continued, "Having touched the feet of Sa[illegible] the daughter of Kaivartak and mother of brave Chitrangad [illegible] Vichitravirya, I said to her, "these are the daughters of the [illegible] Kashi. The price being prowess, I defeated all the kings [illegible] had come there for their sake and brought them for Vichi[illegible] Thereupon, Satyavati smelt my head and with tearful eyes, she said, "Happy am I at your victorious [illegible] preparations for marriage ceremony was being made

उवाच वाक्य सव्रीडा ज्येष्ठा काशिपतेः सुता ॥ ४ ॥ भीष्म त्वमसि धर्मज्ञ सर्वशास्त्र विशारद । श्रुत्वाचवचनं धर्म्यं मह्यं कर्त्तुमिहार्हसि ॥५॥ मयाशाल्वपति पूर्वं मनसाभिवृतोवर । तेन चास्मि वृता पूर्वं रहस्यविदितः पितुः ।६॥ कथं मामन्यकामां त्वं राजधर्ममतीत्यवै । वासयेथा गृहे भीष्म कौरवः सन् विशांपते ॥७॥ एतद्बुध्या विनिश्चित्य मनसा भरतर्षभ । यत् क्षमन्ते महाबाहो तदिहारब्धुमर्हसि ॥ ८ ॥ स मां प्रतीक्षते व्यक्तं शाल्व राजा विशांपते । तस्मान्मां त्वं कुरुश्रेष्ठ समनुज्ञातुमर्हसि ॥ ९ ॥ कृपां कुरु महाबाहो मयि धर्मभृतां वर । त्वंहि सत्यव्रतो वीर पृथिव्यामिति नः श्रुतम् ।१०॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि अम्बावाक्ये पञ्च सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७४ ॥

सम्मति से विवाह होनेकी तैयारी हुई तो काशिराजकी ज्येष्ठ कन्या लज्जित होकर बोली कि । ४ । हे भीष्म तुम धर्म्मज्ञहो क्योंकि सब शास्त्रों के जानने में विशारद हो इससे हमारे धर्म्मयुक्त वचन सुन आप करने के योग्यहैं । ५ । हम ने अपने मन से बहुत दिनहुये कि शाल्वदेश के राजाको अपना पति बनाया था, इससे हमारे पिता नहीं जानते पर एकान्तमें हमको शाल्वपति ने अङ्गीकार कर लिया । ६ । इससे हे राजन दूसरे पुरुषकी इच्छा कियेहुई हमको धर्म्मका अतिक्रमणकर कौरववंशीहो कैसे अपने घरमें बसायाचाहतेहो । ७ । यह अपने बुद्धि से निश्चयकर व मनसे भी सोच विचार जो तुमको उचित जानपड़े वैसा करो । ८ । हे महानाथ राजाशाल्व हमारी राह परखतेहोंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं इससे हेकुरुश्रेष्ठ तुम हमको वहां जानेके लिये आज्ञा देनेके योग्यहो । ९ । हेमहाबाहु कृपाकीजिये आपधर्मात्मा और सत्यव्रतहैं यहबात पृथ्वीमें सबजानतेहैं । १० ।

---

daughter of the king of Kashi blushingly said, 'Bhishm, you know dharm because you have read all the shastras and are fit to hear and comply with my religious wish, it is for many days that I have cherished the desire of being married to the ruler of the country of Shalwa. My father did not know this and he secretly consented to become my husband. Will you not be infringing the laws of religion by forcing me to remain in your house when I have set my mind on another person? Weigh the matter well within your mind and do what you think proper King Shalya will no doubt be waiting for me, you may therefore be pleased to give me permission to go there best of kings. Be kind to me, brave warrior, you are known throughout the world as a virtuous man of true vows. 10

उद्यतावागदा गुर्वी शरान् चाक्षेप्तुमाहव । जवे लक्ष्यस्य हरणे भोज्ये पासुविकर्षणे ॥ १२ ॥ बालैरपि भवन्तस्तै सर्व एव विशेषिता । एतत् सैन्य समासाद्य सर्व एवत्ततोत्कटा ॥ १३ ॥ विध्वंस यिष्यन्ति रणे मास्म तै सह सङ्गम । एकैकशस्ते समर्दे हन्यु सर्वान् महीक्षित. ॥ १४ ॥ प्रत्यक्ष तव राजेन्द्र राजसूये यथाभवत् । द्रौपद्याश्च परिक्लेश श्रुते च परुषा गिर ॥ १५ ॥ तेस्मरन्तश्च सग्रामे चरिष्यन्ति च रुद्रवत् । लोहिताक्षो गुडाकेशो नारायणसहायवान् ॥ १६ ॥ उभयो सेनयोर्वीरो रथोनास्तीति तादृश । नहि देवेषु वा पूर्व मनुष्येपूरगषुच

कोई पुरुष उठा नहीं सक्ते न धनुष आदि की मल्लशाही•चलासक्ते हैं, न उनका वेगही सहसक्ते हैं फिर जब वे लोग बालकपे सभी गदा उछालने वाणों को चलात, जलके भीतरकी वस्तुमें निशानामारते, कुटिलताका युद्धकरते मुक्कों से मार कूटडालते । १२ । तुम लोगों से विशेष वो बालावस्थाही में थे थे, फिर इससेना में जब आवैंगे तो सब अपनी उत्कटता दिखावैंगे । १३ । और तुमलोगों को तो देखतेही देखते विध्वंस करदेंगे इससे देखना उनके सङ्ग युद्ध न करना, वे पांचो अकेले २ तुम्हारे सब राजाओं को मारसकेंगे । १४ । सोक्या यह बात छिपी नहीं राजसूय यज्ञमें तुम्हारे सामनेही सब हुआहै कि जो जिसदिशाको गया जीतही कर लौटा, फिर अवतो द्रौपदी के परिक्लेश जुआ खेलने के समय के तुमलोगों के कठोर वचनों का स्मरण करतेहुये । १५ । तुम्हारी सेनामें प्रलयके रुद्रही के समान भक्षण करतेहुये विचरेंगे, फिर उनमें अरुणनयन अर्जुनजी जिनके सहाय नारायण श्रीकृष्णचन्द्रजी हैं । १६ । उनके समान वीरतो दोनों सेनाओं में कोई हैही नहीं फिर यह नहीं कि इन्हीं दोनों सेनाओंमेंही कोई उनके तुल्य नहीं किंतु आगे देवता गन्धर्व मनुष्योंमेंभी कोई, इनके समान नथा न अवहै । १७ । फिर

velocity In their childhood they used to hurl maces, shoot arrows, hit marks within water and box with their fists. They were superior to you in childhood and are sure to show their greatness in the field of battle. They will destroy you in an instant you should therefore not attempt to fight with them. The five brothers can singly destroy all your kings. You yourself have seen how in Rajsuya each of them did not return without conquering all the kings in the direction which he marched towards. They will now remember the insult to Draupadi and the harsh words uttered by you at the occasion of gambling and will enter your armies like Rudra at the time of *pralaya*. None of the two armies possesses a warrior like Arjun who has red eyes and who has Shree Krishna or Narayan to help him. Not only these two armies but all the world through there has been no warrior nor will be

॥ १७ ॥ राक्षसेष्वथ यक्षेषु नरेषु कुत एव तु । भूतोऽथवाभविष्यो वा रथः कश्चिन्मया श्रुतः ॥ १८ ॥ समायुक्तो महाराज रथः पार्थस्यधीमतः । वासुदेवश्च यन्ता योद्धा चैव धनञ्जयः ॥ १९ ॥ गाण्डीवञ्च धनुर्दिव्यं ते चाश्वा वातरंहसः । अभेद्यं कवचं दिव्यमक्षय्यौ च महेषुधी ॥ २० ॥ अस्त्रग्रामश्च माहेन्द्रो रौद्रः कौवेरएवच । याम्यश्च वारुणश्चैव गदाश्चोग्रप्रदर्शनाः ॥ २१ ॥ वज्रादीनि च मुख्यानि नानाप्रहरणानि च । दानवानां सहस्राणि हिरण्यपुरवासिनाम् ॥ २२ ॥ हतान्येकेन येनाजौ कस्तस्यसदृशो रथः । एष हन्याद्धि संरम्भी बलवान् सत्यविक्रमः ॥ २३॥ तव सेनां महाबाहुं स्वाञ्चैव परिपालयन् । अहञ्चैन प्रत्युद्यियामाचार्यो वा धनञ्जयम् ॥ २४ ॥ न तृतीयोऽस्ति राजेन्द्र सेनयोरुभयोरपि । य एनं शरवर्षाणि

राक्षस यक्ष नागोंमें भी नहीं है वो मनुष्यों में उनके समान कहांसे कोई आवे, हमने तो अर्ज्जुनके समान भूत वर्त्तमान भविष्यत् कोई शूर सुनाही नहीं । १८ । हे महाराज धीमान् पार्थकी सब सामग्रीभी, वैसीही इकट्ठी होगई है कि रथ उस प्रकारका अद्भुत वासुदेव भगवान् सारथि व अर्ज्जुन वीर योधा । १९ । दिव्य गाण्डीव धनुष, वायुवेग चारों घोड़े, अभेद्य दिव्य कवच बाणसे सदा भरेहुये दो तरकस ।२०। फिर अस्त्रोंकातो जानो समूहही वहां विद्यमान है जैसे माहेन्द्र रौद्र, कौवेर, याम्य, वरुण इत्यादि फिर गदायें जानों उग्रही दिखाई देती हैं । २१ । वज्रादि मुख्य २ नानाप्रकारके आयुध व हिरण्यपुरवासी हजारों दानवोंको जिन अर्ज्जुनजी ने अकेलेही जाय मारा तिनके सामने कौन वीर होगा ।२२। ये तो जो कोपकरें तो तुम्हारी तो सब सेनाको मारडालें और अपनी सेनाका पालनभी किये रहैं सौबातकी एकबात यहहै कि यातो हम अर्ज्जुन के सामने कुछ२ समर में जाय सक्तेहैं वा द्रोणाचार्य्य । २३ । और तीसरा दोनों सेनाओं में ऐसा कोई नहीं जो सामने एकवारभी अर्ज्जुनके समरमें खड़ाहो जो समरमें बाणोंकी वर्षाकरते

among gods, gandharvas and men, like Arjun He has no equal among *rakshases, yakshes and nagas, how can there be one among human beings?* I have heard no warrior in any age to be like Arjun He has collected materials of war worthy of himself—that wonderful chariot, Vasudev for the driver, brave Arjun for warrior, divine Gandiv bow, the four horses like the wind in swiftness, impregnable armour and the inexhaustible quivers full of arrows. 20 He has a large stock of weapons given to him by Mahendra, Rudra, Kuver, Yam, Varun and other gods He possesses heavy maces and other weapons of sorts. Arjun alone destroyed thousands of Danavas at Hiranyapur and cannot therefore be matched by any other warrior. When angry he can alone destroy all your armies With the exception of myself and Dronacharya none

वर्पन्तमुदियाद्रथी ॥ २५ ॥ जीमूतइवघर्मान्ते महावातसमीरित । समायुक्तस्तु कौन्तेयो वासुदेवसहायवान् । तरुणश्च कृती चैव जीर्णावावामुभावपि ॥ २६ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतच्छ्रुत्वातु भीष्मस्य राज्ञा दध्वासिरे तदा । काञ्चनाङ्गदिन पीना भुजाश्चन्दनरूषिता ॥ २७ ॥ मनोभि सह सवेगे. प्रस्मृत्य च पुरातनम् । सामर्थ्यं पाण्डवेयानां यथाप्रत्यक्षदर्शनात् ॥ २८ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसख्यानपर्वणि पाडवरथातिरथसख्याया ऊनसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १६९ ॥

भीष्म उवाच । द्रौपदेया महाराज सर्वे पञ्च महारथा ।। वैराटिरुत्तरश्चैव रथोदारो मतोमम ॥ १ ॥ अभिमन्युर्महावाहुरथयूथपयूथप । सम पार्थेन समरे वासुदेवेन चारिहा ॥ २ ॥ लब्धलक्षश्चित्रयोधी च मनस्वी च दृढव्रत । संस्मरन्वै

हुयेअर्जुनके सामने ठहरसके ; पर बड़ेशोचकी बातयहहै कि प्रचण्डपवन से प्रेरित बादलके समान गर्जतेवर्षते तरुणावस्थाको प्राप्त वासुदेवजीकी सहायता पावे अर्जुनहैं, और हम व द्रोणाचार्य्य महावृद्धहैं । २६ । वैशम्पायनजी बोले कि भीष्मके ऐसे वचन सुनकर सब राजालोग जो चंदनादिसे सुशोभित अगवाले थे कांपगये । २७ । उनके पूर्व पराक्रम को स्मरण करके और जो प्रत्यक्ष देखाथा उसको जानकर सबनृप थरथर कांपनेलगे । २८ ।

अध्याय ॥ १७० ॥

भीष्मजी बोले कि हे महाराज द्रौपदीके पांचोंपुत्र महारथहैं व राजा विराटके पुत्र उत्तरभी हमारे मतसे रथों में उदारहैं । १ । और महाबाहु अभिमन्यु तो रथों के यूथपोंके यूथपहैं वेतो समरमें अर्जुन और वासुदेव दोनोंके समानहैं । २ । एकतो बहुतवेगसे इनके हाथ चलतेहैं फिर चित्रविचित्र युद्धकरतेहैं मनस्वी जानो सं-

---

can withstand, even for a short time, the shower of Arjun's arrows. It is however a matter of great regret that Arjun is youthful and violent like clouds roaring in a storm of wind and Dronachary and myself are very old" Vaishampayan said that on hearing these words all the kings with their bodies decked with sandal paste and ornaments trembled with fear They remembered the former deeds of the Pandavas which they had heard and seen themselves and their bodies shook with fear 28

CHAPTER CLXX

"The five sons of Draupadi, said Bhishm ... are *maharaths* and Uttar the son of king Virat is also in my opinion, one of the best warriors. Brave Abhimanyu is the prince of *maharaths* and like Arjun or Vasudev in battle. He is very swift of hand fights in

परिक्लेश स्वपितुर्विक्रमिष्यति ॥ ३ ॥ सात्यकिर्माधव शूरो रथयूथपयूथप. । एष वृष्णिप्रवीराणामर्षी जितसाध्वस' ॥ ४ ॥ उत्तमौजास्तथा राजन्रथोदारो मतो मम । युधामन्युश्च विक्रान्तो रथोदारो मतो मम ॥ ५ ॥ एतेषां बहुसाहस्रारथा नागा हयास्तथा । योत्स्यन्ते ते तनूस्त्यक्त्वा कुन्तीपुत्रप्रियेप्सया, ॥ ६ ॥ पाण्डवै सह राजेन्द्र तव सेनासु भारत । अग्निमारुतवद्राजन्नाह्वयन्त' परस्परम् ॥ ७ ॥ अजेयौ समरे वृद्धौ विराटद्रुपदौ तथा । महारथौ महावीर्यौ मतौ मे पुरुषर्षभौ ॥ ८ ॥ वयोवृद्धावपि हि तौ क्षत्रधर्मपरायणौ । यतिष्येते परं शक्त्यास्थितौ वीर गते पथि ॥ ९ ॥, सम्बन्धकेन राजेन्द्रतौ तु वीर्यबलान्वयात् । आर्यवृत्तौ महे

इही के समानहैं व दृढ़ प्रतिज्ञ हैं इससे अपने पिताके क्लेशोंका स्मरण करते हुये अवश्य विक्रम करेंगे । ३ । मधुवंशी सात्यकिभी रथोंके यूथोंके यूथपों के भी यूथप हैं ये कृतवर्मादि वृष्णिवंशी जो तुम्हारी ओरहैं उन सबों के असहनशीलहैं और भयको तो जाना जीतेही हैं । ४ । उत्तमौजा नाम वीर भी हमारी जान रथों में उदार हैं और बड़ेविक्रमी युधामन्युभी हमारे मतसे रथोदारहैं । ५ । इन सबलोगों के बहुत सहस्ररथ हाथी घोड़े पैदल हैं वे सब युधिष्ठिरजीका प्रियकरने के लिये अपनेप्राण छोड़करभी युद्ध करेंगे । ६ । हे राजेन्द्र ये लोग पाण्डवों के साथ तुम्हारी सेनाओं में अग्नि व पवनके समान परस्पर स्पर्द्धा करेंगे । ७ । विराट व राजाद्रुपद जो कि अतिवृद्धहैं ये दोनों महारथहैं और महावीर्य पराक्रमी होनेके कारण अजेय हैं । ८ । यद्यपि ये दोनों वृद्धहैं तथापि क्षत्रियोंके धर्म में ऐसे परायण हैं कि वीरमार्ग में टिक अपनी शक्तिपर बड़ा यत्नकरेंगे । ९ । एकतो ये दोनों महाराज युधिष्ठिरजी के सम्बन्धी हैं फिर वीर्य बल दोनोंसे श्रेष्ठव्रत धारण किये हैं और

different ways, is brave like a lion and firm on his word He will do brave deeds of prowess on remembering the wrongs done to his father Satyaki of Madhu family is also a prince among *maharaths* and can not be withstood by Kritvarma and others of the Vrishni family on your side. He knows no fear Uttamauja is also a good warrior and likewise Yudhamanyu They possess myriads of elephants horse and foot and will lay down their lives for the sake of Yudhishthir They will struggle with your army like fire and wind Virat and king Drupad though very old are both *maharaths* and being possessed of great strength and prowess are inconquerable. In spite of their old age they are firm on the ways of Kshatriya and will try their best in fighting Both are kinsmen of Yudhishthir, are possessors of strength prowess and firm vows and are bound by the ties

ष्वासौ स्नेहवीर्यसिताबुभौ ॥ १० ॥ कारणं प्राप्यतुनराः सर्व एव महाभुजाः । शूरा वा कातरावापि भवन्ति कुरुपुङ्गव ॥ ११ ॥ एकायनगतावेतौ पार्थिवौ दृढबान्विनौ । प्राणांस्त्यक्त्वा परं शक्त्याघटितारौ परन्तप ॥ १२ ॥ पृथगक्षौहिणी भ्यान्तावुभौ संयति दारुणौ । सम्बन्धिभावं रक्षन्तौ महत् कर्म करिष्यत. ॥१३॥ लोकवीरौ महेष्वासौ त्यक्तात्मानौ च भारत । प्रत्ययं परिरक्षन्तौ मदत्कर्म करिष्यतः ॥ १४ ॥

इतिश्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि

सप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७० ॥

भीष्म उवाच । पञ्चालराजस्य सुतो राजन् परपुरञ्जयः । शिखण्डी रथ मुख्यो मे मतः पार्थस्य भारत ॥ १ ॥ एष योत्स्यति संग्रामे नाशयन् पूर्वसंस्थितम् । परं यशो विप्रथयंस्तव सेनासु भारत ॥ २ ॥ एतस्य बहुलाः सेनाः पाञ्चालाश्च प्रभद्रकाः । तेनासौ रथवंशेन महत्कर्म करिष्यति ॥ ३ ॥ धृष्टद्युम्न सेनानाः सर्व-

स्नेहवीर्य में दोनों बँधे हैं । १० । हे कुरुपुङ्गव महाभुज व शूरवीर पुरुष कारणपाय सब लोग शूर व कातर होजातेहैं । ११ । ये दोनों दृढ़विक्रमी राजा अपने प्राण त्याग करके भी चेष्टाकरतेहैं । १२ । ये दोनों एक २ अक्षौहिणी सेना से सम्बन्धी के भावकी रक्षा करतेहुये, महाकर्म करेंगे । १३ । लोकमें बड़ेधनुर्धर ये दोनों वीर भी विश्वासकी रक्षा करते हैं ॥ १४ ॥

अध्याय ॥ १७१ ॥

भीष्मजी बोले कि हे भारत पांचालदेश के राजाके पुत्र शत्रुपुर जीतनेवाले शिखण्डी हमारे मतसे पाण्डवों के रथ मुख्यहैं ।१। ये तुम्हारी सेनाको विद्रावित करातेहुये व परमयश प्रकाशित कराते अवश्य संग्राम में युद्धकरेंगे । २ । इनके पांचाल प्रभद्रक आदि बड़ीभारी सेनाहै, उस अपनी सैन्यसे ये बड़ाभारी कर्म

of love. 10. Brave warriors are courageous or coward as occasion requires, but the two powerful kings will do deeds of prowess at the expense of their life. Each being the owner of an akshauhini of army, they will both protect the ties of kinship while doing brave deeds. Those two great archers of world wide renown are very trustworthy" 14.

CHAPTER CLXXI

"Shikhandi the *conqueror of enemies* and son *of the king of* Panchal," said Bhishm "is to my mind the chief warrior of the Pandavas. He is sure to gain great fame by destroying your enemies. He has a large army of Panchals and Prabhadraks and will do great deeds of valour by its help. Dhirshtadyumn the commander-in-chief of

सेनासुभारत । मतो मे तरथो राजन् द्रोणशिष्यो महारथ ॥ ४ । एष योत्स्यात संग्रामे सूदयन् वै परान्रणे । भगवानिवसंक्रुद्ध ःपिनाकी युगसंक्षये ॥ ५ ॥ एतस्य तद्रथानीक कथयन्ति रणप्रिया । बहुत्वात् सागरप्रख्य देवानामिव सयुगे ॥ ६ ॥ क्षत्रधर्मा तु राजेन्द्र मतो मेऽर्धरथो नृप । धृष्टद्युम्नस्य तनयो बाल्यान्नातिकृतश्रम ॥७॥ शिशुपालसुतोवीरश्चेदिराजो महारथ । धृष्टकेतुर्महेष्वास सम्बन्धी पाण्डवस्यह ॥ ८ ॥ एष चेदिपात शूर सह पुत्रेण भारत । महारथाना सुकर महत् कर्म करिष्यति ॥ ९ ॥ क्षत्रधर्मरतो मह्य मत परपुरजय । क्षत्र देवस्तु राजेंद्र पाण्डवेषुरथो त्तम ॥ १० ॥ जयन्तश्चामितोजाश्च सत्यजिच्च महारथ । महारथा महात्मान सर्वे पाचाल सत्तमा ॥ ११ ॥ योत्स्यन्ते समरे तात संरब्धा इव कुञ्जरा । अजो भोजश्च वि

करेंगे । ३ । और जो सब पांडवों की सेनाभरके सेनानी धृष्टद्युम्न हैं जोकि द्रोणाचार्यजी के शिष्यहैं वे तो हमारे मतसे अतिरथहैं । ४ । ये रणमें शत्रुओंको नाशते हुये ऐसा युद्धकरेंगे जैसे भगवान् महादेवजी प्रलयके समय प्रजाओंका संहार करतेहैं । ५ । रणके प्रिय लोग कहतेहैं कि इनकी सेनाका समूह बहुत होनेके कारण महासागरही के समान है जैसे देवासुर संग्राममें देवताओंकी सेनाथी । ६ । व धृष्टद्युम्नका पुत्र क्षत्रधर्मा हमारे मतसे अर्द्धरथ है क्योंकि बाल्यावस्था के कारण उसने बहुत श्रम धनुर्विद्या सीखनेमें नहीं किया । ७ । व पांडवों के सम्बन्धी चंदेली के राजा शिशुपालका पुत्र धृष्टकेतु हमारे मतसे महारथहै इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । ८ । यह चंदेलीका राजा अपने पुत्र सहित महारथ लोगों के करनेके योग्यही कर्म करेगा । ९ । क्षत्रधर्मा तो हमारे मतसे शत्रुओं के पुरोंके जीतने वालाहै, व क्षत्रदेव तो पांडवोंमें रथोत्तम है । १० । जयन्त, अमितौजा, व सत्यजित् , ये तीनों पांचलराजकुमार बड़ेमहारथहैं । ११ । ये समयमें क्रोधकिये

---

the Pandava army, is a disciple of Dronacharya and an *atirath* He will destroy your armies as Mahadev destroys all creatures at the time of *pralaya* Lovers of war say that he has an army like the ocean or like the army of gods in the war of gods and asurs. Kshatradharma the son Dhrishtadyumn is an *ardhrath*, for being of tender age he has not yet learnt archery well. Dhrishtaketu the son of Shishupal and kinsman of the Pandavas is undoubtedly a maharath. That king of Chandeli will do together with his son, acts worthy of great warriors. Kshatradharma can win the cities of enemies and Kshatradev is one of the best warriors of the Pandavas. 10 Jayant, Amatauja and Satyajit are the three great *maharath* princes of Panchal They will fight like angry elephants when the occasion comes. Aj and Bhoj are the two *maharaths* of great prowess and will fight hard for the Pandavas.

कांतौ पांडयार्थे महारथौ ॥ १२ ॥ योत्स्येते बलिनौ शूरौ परं शक्त्या क्षयिष्यतः । शीघ्रा स्त्राश्चित्रयोद्धारः कृतिनो दृढविक्रमौ ॥ १३ ॥ केकयाः पञ्चराजेन्द्र भ्रातरो दृढ विक्रमाः । सर्वैचैव रथोदाराः सर्वे लोहितकध्वजाः ॥ १४ ॥ काशिकः सुकुमारश्च नीलो यश्चापरो नृप । सूर्यदत्तश्च शंखश्च मदिराश्वश्चनामतः ॥ १५ ॥ सर्वं एव रथोदाराः सर्वे चाहव लक्षणाः । सर्वास्त्र विदुषः सर्वे महात्मानो मनामम ॥ १६ ॥ वार्धक्षेमिर्महाराज मतो मम महारथः । चित्रायुधश्चनृपतिर्मतो मे रथसत्तमः ॥ १७ ॥ सहिसंग्रामशोभीच भक्त श्चापि किरीटिनः । चेकितानः सत्यधृतिः पांडवानां महारथौ । द्वाविमौ पुरुषव्याघ्रौ रथोदारौ मतौ मम ॥ १८ ॥ व्याघ्रदत्तश्चराजेन्द्र चन्द्रसेनश्चभारत । मतौ मम रथोदारौ पांडवानां न संशयः ॥ १९ ॥ सेनाबिंदुश्चराजेंद्र क्रोधहन्ताच नामतः । यःसमो वासुदेवेन भीमसेनेन वा विभो ॥ २० ॥ सयोत्स्यतिहि विक्रम्य समरे तवसैनिकैः । मांच

हाथियोंके ही समान युद्धकरेंगे, व अज, भोज ये दोनों बड़ेपराक्रमी महारथ । १२ । पांडवों के अर्थ बड़ायुद्ध करेंगे, व अपनी शक्तिभर बड़ी सामर्थ्य दिखावेंगे क्योंकि ये दोनों बड़े जल्दबाज, चित्रविचित्र, युद्धकरनेवाले कुशल व दृढ़विक्रम हैं । १३ । व केकयदेशके राजा के पांचोंपुत्र बड़े दृढ़विक्रम व सब लालचन्दन लगाये रथोत्तम हैं । १४ । व काशिक, सुकुमार, नील, सूर्यदत्त, शङ्ख, मंदिराश्व के नामसे प्रसिद्धहैं । १५ । व सब रथोदारहैं, व सबोंके संग्रामके लक्षणहैं, व सब अस्त्र विद्याओंके विद्वानहैं सब महात्मा हैं । १६ । हे महाराज वार्द्धक्षेमि राजाभी हमारे मतसे महारथहै, व चित्रायुध नाम राजा हमारे मतसे रथसत्तमहै, १७ । यह राजा संग्राम में शोभितहोता व अर्जुन का बड़ाभारी भक्तभी है, चेकितान व सत्यधृति पाण्डवोंके महारथ हैं ये दोनों पुरुषसिंह हमारे मत से रथोत्तम हैं । १८ । व्याघ्रदत्त व चन्द्रसेन ये दोनों राजा पाण्डवों के रथोदार हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं । १९ । सेनाविन्दु व क्रोधहन्ता येदोनों राजा वासुदेव व भीमसेनही के समान हैं । २० ।

They will try their best to gain fame, because they are very dexterous hard fighters and of great prowess. The five princes of Kaikaya are valliant warriors and put on red sandal on their bodies. Kashik, Sukumar, Nil, Suryadatta Shankh and famous Madirashwa are great warriors of renown and very skilful in the use of weapons. King Vardhakshemi is also a maharath according to my opinion and king Chitrayudh is a still better warrior. The last named looks very glorious in battle and is devoted to Arjun. Chekitan and Satyadhriti are maharaths of the Pandvas and I think them to be , very good warriors. Vyaghradatta and Chandrasen are undoubtedly two great warriors in the army of the Pandvas. The two kings, Senavindu and Krodhahanta are surely like Vasudev and Bhim in prowess. 20.

द्रोणं कृपंचैव यथा संमन्यते भवान् ॥ २१ ॥ तथा स समरश्लाघी मन्तव्योरथसत्तमः । काश्य परमशीघ्रास्त्र श्लाघनीयो नरोत्तमः ॥ २२ ॥ रथ एकगुणो मह्यं ज्ञेयः परपुरंजयः अयंच युधि विक्रान्तो मन्तव्योऽष्टगुणो रथः ॥ २३ ॥ सत्यजित् समरश्लाघी द्रुपदस्यात्मजो युवा । गतः सोतिरथत्वंहि धृष्टद्युम्नेन सम्मितः ॥ २४ ॥ पांडवानां यशस्कामः परं कर्म करिष्यति । अनुरक्तश्च शूरश्च रथोयमपरो महान् ॥ २५ ॥ पांड्यराजो महावीर्यः पांडवानां धुरन्धरः । दृढधन्वा महेष्वासः पांडवानां महारथः ॥ २६ ॥ श्रेणिमान् कौरवश्रेष्ठ वसुदानश्च पार्थिवः । उभावेतावतिरथौ मतौ परपुरंजयौ ॥ २७ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि रथातिरथसंख्यानपर्वणि
एकसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः १७१ ॥

वे विक्रमकर तुम्हारे सैनिकों से युद्धकरेंगे जैसे आप हमको द्रोणाचार्य को व कृपाचार्य्य को मानतेहो, ऐसेही उनसमरमें प्रशंसनीयको जानो, वैसाही राजा काश्यभी समरमें प्रशंसाकरने के योग्यहै । २२ । ये काश्य एकगुण रथहै, व समरमें प्रशंसा करने के योग्य राजाद्रुपद के पुत्र सत्यजित् अष्टगुण रथहै, इस से अतिरथत्वको प्राप्त हैं और धृष्टद्युम्नही के तुल्य हैं । २४ । व पांडवों के यश की कामनासे उत्कृष्ट कर्मकरेंगे पांडवोंमें इनका अनुरागभी है व शूरभी हैं। २५ । और पांड्देशका राजा पांड्य यह बड़ाही वीर्यवान् है व पांडवोंका धुरन्धर है, व इसका धनुष बड़ाही दृढ़है यहभी पांडवोंकी सभाजमें महारथहै। २६ । श्रेणिवान् और वसुदान ये दोनों नृपति सिंह बलवान् हैं और अतिरथ होनेसे शत्रुओं को मारने वाले हैं ॥ २७ ॥

They will show their bravery by fighting your army. They are like myself, Dronachrya or Kripacharya in prowess. King Kashya too is praiseworthy like them. He is an ekrath and Satyajit the son of king Drupad is eight times as able a warrior as king Kashya and therefore may be called an atirath like Dhrishtadyumn. He will do brave deeds of prowess out of the love of the Pandvas. He loves the Pandvas and is a brave man. Pandya the ruler of the country of Pandu has a very hard bow and is a Maharath of the army of the Pandvas. Shrenivan and Vasudan the two lions among kings are very powerful and being atiraths; they are capable of destroying the foes. 27.



भीष्म उवाच ॥ ततोहं समनुज्ञाप्य कालीं गन्धवतीं तदा । मन्त्रिणश्चर्त्विजश्चैव तथैवच पुरोहितान् ॥ १ ॥ समनुज्ञासिषं कन्या मंबांज्येष्ठांनराधिप । अनुज्ञाता ययौ सातु कन्या शाल्वपतेः पुरम् ॥ २ ॥ वृद्धैर्द्विजाति भिर्गुप्ता धात्र्याचानु गतातदा। अतीत्यच तमध्वान मासाद्य नृपतिं तथा ॥ ३ ॥ सात मासाद्य राजानं शाल्वं वचन मब्रवीत्। आगताहं महाबाहो त्वामु द्दिश्य महामते ॥ ४ ॥ तामब्रवीच्छाल्वपतिः स्मयन्निव विशाम्पते। त्वयान्यपूर्वयानाहं भार्यार्थी वरवर्णिनि ॥ ५ ॥ गच्छभद्रेपु नस्तत्र सकाशे भीष्मकस्यवै। नाहमिच्छामि भीष्मेण गृहीतांत्वांप्रसह्यवै ॥ ६ ॥ त्वंहि भीष्मेण निर्जित्य नीताप्रीति मती तदा। परामृश्यमहायुद्धे निर्जित्य पृथिवी पतीन् ॥ ७ ॥

अध्याय १७५ ॥

भीष्मजी बोले कि उसके ऐसे वचन सुन हमने अपनी सौतेली माता योजनगन्धा सत्यवती से कह मंत्रियों ऋत्विजों और पुरोहितों से सम्मतले । १ । उस ज्येष्ठ अम्बानाम कन्या से कहा कि अच्छाजाव, इसप्रकार हमारी आज्ञापाय वह कन्या शाल्वपति के नगरको गई । २ । उसके संग हमने कई वृद्धब्राह्मण करदिये थे व एक टहलुई भी करदी कि उन सबोंसे वह रक्षित चलीगई जाते जाते जाय राजाशाल्वके समीप पहुँची । ३ । वे शाल्वराजको पाय वसेसे बोली कि, हे महाबाहुजी हम तुम्हारे उद्देश से यहां आई हैं । ४ । हे राजन तब हँसताहँसा शाल्वपति उससे बोला कि हे वरवर्णिनि, तुम प्रथम और के यहां गई हो इससे तुम को हम अपनी भार्या न बनावेंगे । ५ । इससे हे भद्रे तुम फिर भीष्मही के समीप चलीजावो जबरदस्ती भीष्मकी लेगईहुई तुमको हम नहीं चाहते । ६ । क्योंकि उस समय तुम प्रसन्न होवोगी तब भीष्म जीतकर तुमको लेगये होंगे, फिर वे तो युद्ध में राजाओं को जीतकर तुमको लेगये थे तो तुम्हारा हाथ अवश्य उन्होंने पकड़ कर रथपर बैठाया होगा व लड़ने के समय भी पकड़े रहेहोंगे । ७ ।

CHAPTER CLXXV

Bhishm continued, "Having heard those words of the princess I referred the matter to my stepmother Satyavati the Yojangandha and having taken the advice of the ministers, ritwijes and priests, I allowed her to depart. And with my permission she went to the country of Shalwa. I sent with her a few old Brahmans and maidservants and under that escort she reached Shalwa in time. She then went to the king and said,"I have come here for your sake, brave man." The king said to her with a smile," Beautiful woman, I cannot make you my wife as you have been with another man. You may return to Bhishm as I donot like to have a woman who was seized by him. He must have taken you away with your

नाहं त्वय्यन्य पूर्वायां भार्यार्थी वरवर्णिनि । कथमस्मद्विधोराजा परपूर्वां प्रवेशयेत् ८॥ नारीं विदित विज्ञान परेषा धर्म मादिशन् । यथेष्ट गम्यतांभद्रे मातवांकालोत्यगादयम् ॥ ९ ॥ अम्बातमब्रवीद्राजन् ननंगशरपीडिता । नैव वद महीपाल नैत देव कथचन । ॥ १० ॥ नास्मिप्रीति मतीनीता भीष्मेणामित्र कर्शन । वलान्नीतास्मि रुदती विद्राव्य पृथिवीपतीन् ॥ ११ ॥ भजस्वमां शाल्वपते भक्तांबाला मनागसम् । भक्तानांहि परित्यागो नधर्मेषुप्रशस्यते ॥ १२ ॥ साहमामन्त्र्य गांगेय समरेष्वनिवर्त्तिनम् । अनुज्ञाताच ते नैव ततोहमृशमागता ॥ १३ ॥ नसभीष्मो महाबाहुर्मामिच्छति विशांपते । भ्रातृहेतोः समारम्भो भीष्मस्येति श्रुत मया ॥ १४ ॥ भगिन्यौममयेनीते अम्बिकांबालिकेनृप ।

इससे अब तुम्हारा विवाह उनके संग होचुका अब हम तुमको अपनी भार्या नहीं बनाना चाहते क्योंकि हमारे समान राजाहो पराई स्त्रीको अपने घरमें कैसे घुसनेदें । ८ । फिर उसमें जिसका ज्ञानहो और दूसरों को धर्म सिखलाताहो वह पराई स्त्री को अपने घरमें कैसे डालले, इससे हे भद्रे तुम यथेष्ट चलीजाओ तुम्हारा यह समय व्यर्थ न बीते । ९ । हे राजन् तब कामवाण से पीड़ित अम्बा शाल्वराज से बोली कि हे महीपाल ऐसा न कहो ऐसा किसीप्रकार से नहींहै । १० । हे शत्रुसूदन जब भीष्म हमको लेगयेहैं तब हम प्रसन्न नहीं थीं, सब राजाओं को जीत रोती हुई हमको वे बल से लेगये । ११ । हे शाल्वपते निरपराधिनी बाला व तुम्हारी सेवकी हमको भजो क्योंकि भक्तों का परित्याग धर्मों में प्रशंसित नहीं होता । १२ । समर से बिना जीते न लौटनेवाले भीष्मजी से हम पूँछ उनकी आज्ञा से आपके पास आई हैं । १३ । महाबाहु भीष्मजी हमारी इच्छा नहीं करते उन्हों ने तो अपने भाई के लिये ऐसे काम का प्रारम्भ कियाथा यह हमने सुनाहै । १४ । वरन जो हमारी अम्बिका अम्बालिका दो भगिनियां हैं उन दोनों को अपने

consent. He could not lift you up to his chariot without holding your hand and could not let you go out of his grasp while he was *fighting with the kings You are therefore lawfully married to* him and I cannot make you my wife , for how can a king like me keep in his house a woman belonging to another How can one who possesses wisdom and teaches dharm to others, keep a woman belonging to another? You may go where you like as I do not like to waste your time." Then Amba, wounded by the arrow of love spoke to the king, saying, "Donot say so, ruler of earth. 10 Bhishm did not seize me with my consent. I went weeping when he took me away after conquering all the kings. I am innocent and devoted to you, it is not well to leave one devoted like me. I have come to you with the permission of Bhishm who does not return

प्रादाद्विचित्रवीर्याय गांगेयो हियवीयसे ॥ १५ ॥ यथा शाल्वपतेनान्य वरस्यान्निकथंचन । त्वामृते पुरुषव्याघ्र तथा मूर्धा नमालभे ॥ १६ ॥ नचान्यपूर्वा राजेन्द्र त्वामहसमुपस्थिता । सत्य ब्रवीमि शाल्वैतत्सत्येनात्मानमालभे ॥ १७ ॥ भजस्वमाविशालाक्ष स्वय कन्यामुपास्थिताम् । अनन्यपूर्वा राजेंद्र त्वत्प्रसादाभिकांक्षिणीम् ॥ १८ ॥ तामेवमाप माणांतु शाल्व काशिपते सुताम् । अत्यजद्भरतश्रेष्ठ जीर्णत्वचं मिवोरगः ॥ १९ ॥ एव बहुविधैर्वाक्यैर्याच्यमानस्तयानृप । नाश्रद्दधच्छाल्वपतिः कन्यायाभरतर्षभ ॥२०॥ तत सामन्युनाविष्टा ज्येष्ठाकाशिपते सुता । अब्रवीत्साश्रुनयना वाष्पविप्लुतयागिरा २१ त्वया त्यक्ता गमिष्यामि यत्र तत्र विशाम्पते । तत्र मे गतयः सन्तु सन्तः सत्य यथा

छोटे भाई विचित्रवीर्य को देदिया । १५ । हे शाल्वपतिजी, हे पुरुष व्याघ्र हम जैसे तुमको छोड़ और किसी को अपना वर बनाना नहीं चाहती वैसेही अपना शिर छूकर शपथ करतीहैं । १६ । हे राजेन्द्र हम प्रथम अन्य किसी की स्त्री होकर आपके पास नहीं आई, हे शाल्व सत्यही कहतीहैं व इस सत्य की सौगन्द खाय अपने शरीरको छूती हैं । १७ । हे विशालनयन, तुम्हारे प्रसाद की वाञ्छाकिये और किसी को पूर्वसमय में न जानती अपने आप आई हुई इस कन्याको भजो हे राजेन्द्र । १८ । हे भरत श्रेष्ठ, शाल्व देशके राजाने ऐसा कहती हुई उस कन्याको ऐसे त्यागा जैसे पुरानी खाल को सर्प त्यागता है । १९ । हे भरतर्षभ, इसप्रकार विविधप्रकार के वचनों से उस काशिराजकी कन्या ने शाल्वराजकी बार बार प्रार्थनाकी पर उन्हों ने उस कन्या के कन्यात्व में विश्वास न किया । २० । तब वह काशिराजकी कन्या मारेक्रोध के व्याकुलहो रोदन करतीहुई बड़ी शिथिलवाणी से बोली कि । २१ । हे प्रजानाथ तुम्हारी त्यागीहुई हम जहां

without conquering Brave Bhishm does not want me; for as they say, he did all this for the sake of his brother and has married Ambika and Ambalika, my two younger sisters to Vichitraviryа Shalva, Lord among men, I swear by my head I do not wish to make another my lord. I was not made wife to another before I came to you, I tell you the truth and touch my head as a token of my veracity, large-eyed one! Wishing to please you and not knowing any personal connection with another, I have come to you, do not turn me back." But in spite of all her entreaties, King Shalwa cast her away as a serpent casts its old skin. She reasoned with him in various ways but he did not believe in her maidenhood. 20 Thus depressed and weeping in the excess of anger, she said very slowly, "Saints only will care for me wherever I will go; I have spoken the truth and [illegible]

ध्रुवम् ॥ २२ ॥ एवं तां भाषमाणान्तु कन्यां शाल्वपतिस्तदा । परितत्याज कौरव्य करुण परिदेवतीम् ॥ २३ ॥ गच्छ गच्छेति तां शाल्व पुनः पुनरभाषत । बिभेमि भीष्मात् सुश्रोणि त्वञ्च भीष्मपरिग्रहः ॥ २४ ॥ एवमुक्त्वातु सा तेन शाल्वेनादीर्घदर्शिना । निश्चक्राम पुराद्दीना रुदती कुररी यथा ॥ २५ ॥ भीष्म उवाच ॥ निष्क्रामन्तीतुनगराच्चिन्तयामास दुःखिता । पृथिव्यांनास्ति युवतिर्विषमस्थ तरामया ॥ २६ ॥ बन्धुभिर्विप्रहीनास्मि शाल्वेनच निराकृता । नच शक्यं पुनर्गन्तुं मया वारण साह्वयम् ॥ २७ ॥ अनुज्ञाता तु भीष्मेण शाल्वमुद्दिश्य कारणम् । किंनुगर्हाम्यथात्मान मथ भीष्मं दुरासदम् ॥ २८ ॥ अथवा पितरं मूढं यो मेकार्षीत् स्वयम्वरम् । मयायं स्वकृतो दोषो याहं भीष्मरथात्त-

कहाँ जायेगी वहां साधुलोगही अब हमारे रक्षक होंगे क्योंकि हमने सत्यही कहा है अब ऐसी दशामें और कौन रक्षक होगा । २२ । हे कुरुराज इसप्रकार दीन वचन कहतीहुई व शोचतीहुई उस ज्येष्ठ काशिराजकी कन्याको शाल्वराज ने परित्यागही किया । २३ । व बार २ शाल्वने कहा कि तू अब यहांसे चलीजा हम भीष्मको डरते हैं क्योंकि तू उनकी स्त्री होचुकी । २४ । जब उस अदूरदर्शी शाल्व ने ऐसा कहा तो वह कन्या कराकुल पक्षी के समान बार २ रोतीहुई उस पुरसे दीनहो निकली २५। भीष्मजी बोले कि जब नगरसे वह निकली तो उसने अपने मनमें चिन्तना की कि पृथ्वी पर मेरे समान अभागिनी स्त्री कोई नहीं है । २६ । क्योंकि भाईबन्धुओं से हीनहो शाल्वके पास आई फिर अब इसनेभी परित्याग किया इससे अब फिर हस्तिनापुरको भी मैं नहीं जासक्ती । २७ । भीष्म ने मुझे शाल्व के उद्देश से आज्ञादी कि अच्छा वहांजा, अब मैं अपनी निन्दा करूं कि महादुरासद भीष्म की करूं । २८ । अथवा अपने मूढ़ पिताकी निन्दाकरूं कि जिसने मेरा स्वयम्बर किया हां हमने यह अपने कृतदोषाकया जो युद्ध होनेलगाथा

Thus weeping bitterly and humbly entreating, the eldest daughter of the king of Kashi was deserted by Shalwa who said to her again and again "Go away from me. I am afraid of Bhishm, for you have become his wife." Thus deserted the princess went out of the town crying like a bird. When she was out of the precincts of the town, she said to herself, "I am the unhappiest of women on the face of the earth; for, I left my kinsmen for Shalwa who has deserted me and I cannot return to Hasthinapur. Bhishm allowed me to come here for the sake of Shalwa and I know not whether I should blame him, myself or my father who presented me in Swayamvar. I must blame myself the most; for I might have leapt from the chariot of Bhishm when the war was raging. I sat like a fool on the chariot and am now suffering the

दा ॥ २९ ॥ प्रवृत्ते दारुणे युद्धे शाल्वार्थं नापतं पुरा । तस्येयं फलनिर्वृत्तिर्यदापन्नास्मि मूढवत् ॥ ३० ॥ धिग् भीष्मं धिक् च मे मन्दं पितरं मूढचेतसम् । येनाहं वीर्यशुल्केन पण्यस्त्रीव प्रचोदिता ॥ ३१ ॥ धिङ्मां धिक् शाल्वराजं च धिग्धातारमथापि वा । येषां दुर्नीतभावेन प्राप्तास्म्यापदमुत्तमाम् ॥ ३२ ॥ सर्वथा भागधेयानि स्वानि प्राप्नोति मानवः । अनयस्यास्य तु मुखं भीष्मः शान्तनवो मम ॥ ३३ ॥ सा भीष्मे प्रतिकर्तव्यमहं पश्यामि साम्प्रतम् । तपसा वा युधा वापि दुःखहेतुः स मे मतः ॥३४॥ को नु भीष्मं युधा जेतुमुत्सहेत महीपतिः । एवं सा परिनिश्चित्य जगाम नगराद्बहिः ॥ ३५ ॥ आश्रमं पुण्यशीलानां तापसानां महात्मनाम् । ततस्तामवसद्रात्रिं तापसैः परिवारिता ॥ ३६ ॥ आचख्यौ च यथावृत्तं सर्वमात्मनि भारत । विस्तरेण महाबाहो निखिलेन शुचिस्मिता । हरणञ्च विसर्गञ्च शाल्वेन च विसर्जनम् ३७॥

तब भीष्मके रथसे शाल्वके अर्थ पृथ्वीपर कूद न परी उसीका यह फल हुआ कि जो मैं मूढ़के समान उनके रथपर चुपचाप बैठी रहगई । ३० । भीष्म को धिक्कार है व मन्दमूढ़ मेरे पिताको भी धिक्कार है जिसने कि वीर्य के मोलपर बाजारकी स्त्रियों के समान मुझको बेंचडाला । ३१ । मुझको शाल्वको और मेरे पिताको धिक्कार है जिसके कारण मुझपर यह आपदआई और अब मुझको कुछ नहीं सुहाता निस्संदेह पुरुष अपने प्रारब्ध का फल पाता है परन्तु मेरे दुःख के मूल भीष्म और शाल्व हैं । ३३ । तपसे और रणसे अनेक मत्युपकार होते हैं परन्तु भीष्म ने मुझको यह दुःख दिया है भीष्म समझता है कि कोई भूपति रणमें उस को जीतनहीं सकता इसी कारण मैं इसपुरसे अकेली निकली हूं यह सोचती हुई वह एक महान मुनि के आश्रम में पहुँची और वहां रात्रि को वास किया । ३६ । वहां जाकर उसने सब अपना वृत्तान्त विस्तार पूर्वक कहा और कुछ नहीं पाया

---

consequence of it. I blame Bhishm and my father who sold me like a market woman fixing as my price the greatest strength. 31. I blame myself, Shalva and my father who has brought this calamity on me and nothing can please me now. No doubt, a person reaps the rewards of his former deeds; but the root of my calamity are Bhishm and Shalwa. Asceticism and war are beneficial in some cases but Bhishm has brought me nothing but sorrow. He thinks there is none mightier than him and the result is that I am here a solitary wanderer." With these thoughts she reached a hermitage and sought rest there for the night. There she told of all her, troubles without reserve. There lived at that hermitage a Brahman named Shaikhavatya, learned in the Vedas, Shastras and

ततस्तत्र महानासीद् ब्राह्मण संशितव्रत । शैखावत्यस्तपोवृद्ध शास्त्रे चारण्यके गुरु ॥ ३८ ॥ आर्तान्तामाह स मुनि शैखावत्यो महातपा । नि श्वसन्तीं सतीं बाला दु खशोकपरायणाम् ॥ ३९ ॥ एवंगतेतु किं भद्र शक्यं कर्तुं तपस्विभि । आश्रमस्थैर्महाभाग तपोयुक्तैर्महात्माभ॰ ॥ ४० ॥ सा त्वेनमब्रवाद्राजन् क्रियतां मदनुग्रह॰ । प्राव्राज्यमहमिच्छामि तपःतप्स्यामि दुश्चरम् ॥ ४१ ॥ मयैवयानि कर्माणि पूर्वदेहे तु मूढया । कृतानि नून पापानि तेषामेतत्फलं ध्रुवम् ॥ ४२ ॥ नोत्सहेतुपुनर्गन्तु स्वजन प्रति तापसा । प्रत्याख्याता निरानन्दाशाल्वेन च निराकृता ॥ ४३ ॥ उपदिष्टमिहेच्छामि तापस्य वीतकल्मषा । युष्माभिर्देवसकाशी कृपाभवतु वो मयि ॥ ४४ ॥ स तांम श्वासयत् कन्या दृष्टान्तागमहेतुभि । सान्त्वयामासकार्यञ्च प्रतिजज्ञे द्विजै सह ॥ ४५ ॥

इति श्री महाभारतते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि शैखावत्यांशसवादे पंचसप्तत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७५ ॥

। ३७ । वहां एक जितेन्द्रिय द्विज शैखावत्यनामवाले उपनिषद वेद और शास्त्रोंके जानने वाले रहते थे उस शोकातुर दु खित और सांसलेती हुई का समाचार सुन कर शैखावत्यन करुणा पूर्वक उससे कहा कि हे भद्र बतलाओ तेरेलिये सब तपस्वी कौन उपाय करें यह तपस्वी बहुत कुछकर सकते हैं । ४० । यह सुनकर फिर उसने मुनि से कहा कि आप कृपाकरके मुझसेभी जप तप कराइये जिस से मेरे पाप जाने रहें पूर्वजन्म में मैंने जो पाप कये किंयेहैं उन्हींका यह फलहै अब मैं किसी भांति अपने बांधवों में नहीं जासकती और शाल्व ने मेरा बड़ा निरादर और अपमान किया है। ४३ । मुझे सदोप देखकरके आप सबलोग मेरा पाप हरें और वेदोक्त दृष्टान्त कहकर मुझको समझावें और मैं सब तपस्वियों के साथ तप करती रहूं ॥ ४५ ॥

Upanishads and having control over his organs. He heard of the troubles of the grieved weeping and sighing princess, and feeling pity on her, he said, "Say, damsel what all the ascetics should do for you. They can do much." 40 Permit me to share with you in the toils of asceticism," replied she, "so that all my sins may be removed. The calamities come on me are the results of my former sins. I cannot go back to my kinsmen and Shalwa has treated me with insult and unkindness. Remove my sins by teaching me the path of right and the Vedic precepts that I may ever be performing asceticism." 45.

भीष्म उवाच। ततस्तेतापसा सर्वे कार्य्यवन्तो भवंस्तदा। ताकन्यां चिन्तयन्तस्ते किङ्कार्य्यमिति धर्मिणः ॥ १ ॥ केचिदाहुः पितुर्वेश्म नीयतामिति तापसाः। केचिदस्मदुपालम्भे मतिञ्चक्रुर्द्दितापसाः ॥ २ ॥ केचिच्छाल्वपतिं गत्वा नियोज्यमिति मेनिरे। नेतिकेचिद्व्यवस्यन्ति प्रत्याख्याताहितेनसा ॥ ३ ॥ एवंगतेतुकिंशक्यं भद्रे कर्त्तुंमनीषिभिः। पुनरूचुश्चतांसर्वे तापसाः संशितव्रताः ॥ ४ ॥ अलंप्रव्रजितेनेह भद्रे शृणुहितंवचः। इतोगच्छस्वभद्रंते पितुरेवनिवेशनम् ॥ ५ ॥ प्रतिपत्स्यतिराजा स पितातेयदनन्तरम्। तत्रवत्स्यसि कल्याणिसुखं सर्वगुणान्विता ॥ ६ ॥ नचतेन्या गतिर्न्याय्या भवेत् भद्रे यथा पिता। पतिर्वापिगतिर्नार्य्याः पितावावरवर्णिनि ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १७६ ॥

भीष्मजी बोले कि उस कन्याके वैसे वचन सुन उसके विषय में चिन्तना करते वे तपस्वी लोग आपसमें कहने लगे कि इसके लिये हमलोगों को क्याकरना चाहिये। १। किसी २ तपस्वियोंने कहा कि इसे इसके पिताके घरमें भेज आना चाहिये, किसी २ तापसों ने हमारे पास भेजनेको कहा। २। किसी २ ने कहा कि इसे शाल्वपतिके पास सौंप आना चाहिये, किसी २ ने कहा कि शाल्वराजाने तो इसको ग्रहणही नहीं किया उनके पास अब न लेजाना चाहिये तब सबों ने फिर उसी कन्यासे पूछा कि हे भद्रे अब तपस्वी लोगोंको तेरे लिये क्या करना चाहिये, फिर सब तापसलोग जो बड़े व्रत नियम में तत्पर थे बोले कि। ४। हे कल्याणिनि सन्यासिनी होनेसे कुछभी काम नहीं हमलोग जो कहते हैं, सुनो अब तुम सीधी अपने पिताकेही स्थानको चली जाओ। ५। जिसको तुम्हारा पिता तुम्हें देगा वहां जाय रहना व अपने सवगुणों से उसको प्रसन्न रखना। ६। हे भद्रे स्त्रीकी गति जैसा पिता होता है वैसा और कोई नहीं होता, क्योंकि स्त्रीकी

CHAPTER CXXLVI

Bhishm continued that having heard the words of that girl, the rishis considered about her case and remarked as follows:— some said that she should be sent to her father's house, some said that she should be sent to Bhishm and some thought it prudent to send her to Shalwa, while others said that as Shalwa had rejected her it was imprudent to send her to him. Again and again they asked her what they should do for her and those who were firm on their religious vows said to her, "Your becoming a recluse is of no use; do as we say: go direct to your father's house. Your father will give you whomsoever he likes and you will please him by your virtues. A father is the best guide to a woman and no other. The husband can guide her only so long as she attends on him and obeys his

गति पति समस्थाया विपत्रोच पितागात । प्रव्रज्यादि सुदु खेय सुकुमार्या विशेषत ॥ ८ ॥ राजपुत्र्या प्रकृत्या च कुमार्यास्तथ भामिनि । भद्रे दोषाहिविद्यन्ते यद्वनोचरवर्णिनि ॥ ९ ॥ आश्रमे चेवसन्त्यास्तेन भवेयु पितुर्गृहे । ततस्ते तु पुनराहुस्तापसास्तातपस्विनीम् ॥ १० ॥ त्वामिहैकाकिनीं दृष्ट्वानिर्जने गहनवने । प्रार्थयिष्यन्तिराजा नस्तस्मान्मैवमन कृथा ॥ ११ ॥ अम्बोवाच । नशक्य काशिनगर पुनर्गन्तु पितुर्गृहान् । अवज्ञाताभविष्यामि बान्धव नानसशय ॥ १२ ॥ उषितास्मितथा बाल्ये पितुर्वेद नितापसा । नाहृगामिष्येभद्र यत्रत्रयत्रपितामम । तपस्तप्तुमभीप्स्याभे तापसे परिरक्षिता ॥१३। यथापरेणिमलोके न स्यादिवमहात्यय ।

गभि पति होता वा पिता दाको छ तीसरा नहीं । ७ । उसमेंभी जबतक सब भावसे सेवादि करतीहुई पतिकी आज्ञाकारिणी रहती तभीतक उसकी गति पति होता है, पर विपत्यावस्था पिताही गति होताहै, सन्यास धारणकरना सब को दु खदायी होता है पर कुमारी कन्याको तो विशेषता से । ८ । उसमेंभी राजपुत्रीको जो सदासे सुकुमारी रहती है, इसस हे भद्रे इस मुनियों के आश्रमपर रहने से बहुतसे दोष हैं व पिता क घर में रहने से वे दोष न होंगे क्योंकि यहां तुमको देख कदाचित् कोई मुनिलोगही मोहित होजावे वा तुम्हाराही चित्त कभी चलायमान होजाता अनर्थही है ये बातें पिताके यहा न होंगी, इस के पीछे उस तपस्विनी से और तपस्वीलोग बोले । १० । कि मको तपस्वियोंका भय तो जैसाही कैसा पर इस निर्जन गहनवनमें अकेली तुमको देख राजालोग ग्रहण करनेकी इच्छाकरेंगे इस से यहां तुम्हारा रहना किसी प्रकार योग्यनहीं । ११ । यह सुन अम्बा बोली कि हम काशिनगर में अपने पिताके घरको फिर नहीजासक्ती, क्योंकि वहां सब भाईबन्धु हमारा अनादर करेंगे इस में कुछ सन्देह नहीं है । १२ । हे तपस्वियो हम पिता क घरमें बाल्यावस्था से उसलाड प्यारके साथ

o ders, but the father can do so at all times of trouble. Asceticism is a difficult task to all and especially to an unmarried girl and more so to a young princess who is so delicate There are many defects in residing at a hermitage which cannot touch at your father's some muni may be enamoured of your beauty or your mind may change." After this the rishis again said 10. You may entertain no cause of misapprehension from the ascetics, but kshatriyas are sure to covet you on seeing you alone here Your residence in this thick jungle is not therfore advisable " To this Amba replied, "I cannot return to my father's house at Kashi, for there all the kinsmen of mine will all treat me Having lived in such respect from my infancy at my father's house I cannot return there I

दौर्भाग्यंतापस श्रेष्ठारतस्मात्तप्स्याम्यहं तपः ॥ १४ ॥ भीष्मउवाच । इत्येवंतेषुविप्रेषु चिन्तयत्सु यथातथम् । राजर्षिस्तद्वनं प्राप्तस्तपस्वी होत्रवाहन ॥ १५ ॥ ततस्ते तापसा सर्वे पूजयन्तिस्मतंनृपम् । पूजाभि स्वागताद्याभि रासनेनोदकेनच ॥ १६ ॥ तस्योपविष्टस्य सतो विश्रान्तस्योपशृण्वतः । पुनरेव कथाञ्चक्रु कन्यांप्रतिवनौकसः ॥१७। अम्बायास्तां कथांश्रुत्वा काशिराज्ञश्च भारत । राजर्षि स महातेजा बभूवोद्विग्नमानस ॥ १८ ॥ तां तथावादिनीं श्रुत्वादृष्ट्वाच स महातपा । राजर्षि कृपया विष्टो महात्मा होत्रवाहन ॥ १९ ॥ सवेपमानउत्थाय मातुस्तस्याः पितातदा । तां कन्यामंकमारोप्य पर्य्याश्वासयत प्रभो ॥ २० ॥ स तामपृच्छत् कार्त्स्नेन व्यस-

रहीं अब वहां इस दशामें हम न जावगी कि जहां हमारे पिताजी रहते हैं ।१३। अब हम तपस्वियों संही रक्षितहो तपकरना चाहती हैं, कि जिसमें अब दूसरे जन्ममें भी सुखका नाश न हो, व यह अभाग्यता भी न हो कि कोई हम का ग्रहणही नहीं करता इससे हे तापसलोगो अब हम तपस्याही करेंगी । १४ । भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि इस प्रकार वे महात्मा तपस्वी लोग विचारही कर रहे थे कि महातपस्वी राजर्षि होत्रवाहनजी वहां आये । १५ । तब उन सबतपस्वियों ने आगत स्वागतादि पूजाओं से व आसन जलादि देनेसे राजाकी बड़ी पूजाकी । १६ । जब राजा बैठकर थकाव सुस्ताये तो उनके सुनतेहोते तपस्वियों ने उस अम्बाकी कथा नीचे से सुनाई । १७ । तब अम्बाकी कथा सुन व काशिराजकी कथा श्रवण कर महा तेजस्वी राजर्षि होत्रवाहनजी बहुतही उद्विग्न चित्त हुये । १८ । व उस कन्या को वैसाकहती सुन व देख महातपस्वी राजर्षि महात्मा होत्रवाहनजी अतिकृपायुक्त हुये । १९ । व थरथराय कँपनेलगे, क्योंकि वे महाराज उस कन्याकी माता के पिताथे इससे उठ उस कन्याको गोदमें बैठाय समझाने बुझाने व उसके समाचार पूंछनेलगे । २० । जब सब आदिसे दुःख

wish to lead a life of asceticism among the ascetics so that I may secure happiness during the next birth and not to be so unluck as at present when no one wishes to keep me For these reasons I am resolved on performing asceticism" Bhishm said to Duryodhan that while the ascetics were thus discussing the matter, here came to the place Hotravahan the great royal sage. He was wellcomed with great respect among the rishis who offered him water and seat and when he had rested from the fatigue of the journey they gave him an account of Amba from the beginning Hotravahan was much afflicted on hearing her ill luck and the work of the king of Kashi and felt much pity on her. His body trembled, for he was the father of her mother He took her on his lap and kindly

नोत्पत्तिमादित । साचतस्मै यथावृत्त विस्तरेण न्यवेदयत् ॥ २१ ॥ सत ख राजर्षिरभूद् दु खशोकसमन्वित । कार्यञ्च प्रतिपदेनमनसा सुमहातपा ॥ २२ ॥ अब्रवीद्वेपमानश्च कन्यामार्त्तां सुदु खिताम् । मागा पितुर्गृहं भद्रमातुस्ते जनकोह्यहम् ॥ २३ ॥ दु खाच्छेत्स्यामहं तेवैमयि वर्त्तस्वपुत्रिक । पर्य्याप्त ते मनोवत्से यदेवपरिशुष्यसि ॥ २४ ॥ गच्छ मद्वचनाद्राम जामदग्न्य तपस्विनम् । रामस्तेसुमहद्दु ख शोकञ्चेवापनेष्यति ॥ २५ ॥ हनिष्यति रणे भीष्म न करिष्यति चेद्वच । ॥ गच्छ भार्गवश्रेष्ठ कालाग्निसमतेजसम् ॥ २६ ॥ प्रतिष्ठापयिता स त्वां समे पथि महातपा । ततस्तु सुस्वर चाष्पमुत्सृज ती पुन पुन ॥ २७ ॥ अब्रवीत् पितरमातु सा तदा होत्रवाहनम् । अभिवादयित्वा शिरसा गमिष्येतव शासनात् ॥ २८ ॥ अपि नामाद्य पश्येयमार्य्यंत लोकविश्रुतम् । कथञ्चतीव्र दु खमे नाशयिष्यति

का कारण राजाने पूछा तो उसने सब विस्तारपूर्वक अपना वृत्तान्त वर्णनकिया । २१ । वृत्तान्तसुन महाराज होत्रवाहन जीने दुःखशोक से युक्तहो जो कार्य उस समय करने के योग्यथे मनसे उनके करनेका उपाय ठीककर लिया । २२ । बनाय दु खितहो कंपतेहुवे अतिपीडित उसी कन्यासे बोले कि हे भद्रे अब तुम अपने पिताके घरको नजावो, हम तुम्हारी माताके पिताहैं । २३ । हे पुत्रि अब हमारेही सङ्ग रहो हम तुम्हारे दुःखको काटेंगे हेवत्स बस इतनाही बहुतहुआ जो तुमने अपने सब अङ्गोंको सुखादिया । २४ । अब हमारे कहनेसे तुम जमदग्निजीके पुत्र महातपस्वी परशुरामजीके निकट जाओ वे तुम्हारे सब दु ख शोक हरेंगे । २५ । यदि भीष्म परशुरामजीके वचन का निरादर करेंगे तो परशुरामजी रण में उनको मारडालेंगे इसलिये रामके पासचलो जो कालाग्निकी समान तेजस्वी और भृगुवंश के मणीहैं महातपस्वी राम तुमको ठीकरास्तेपर लगावेंगे । यहसुनकरवह बहुत रोती हुई अपने मातामह होत्रवाहन जीसे बोली कि मैंआपको प्रणामकरके वहां जाऊंगी जहां परशुरामजी हैं मेरवह भाग्यहै जो मैं उनको देखूं और उन मुनिराज से

sol iced her 20 He questioned out from her the cause of all her troubles and she mentioned in detail all her griefs. Being much grieved and full of sorrow, Hotravahan settled in his mind what course to pursue and how to redress her wrongs and with much grief and with a shaking body, he said to her, "You need not return to your father's house, for in me you will find both your parents. Live with me and I will redress your grievances. You have suffered much child, to have dried up all the organs of your body. I advise you to go to Purshuram the son of Jamadagni and he will remove all your griefs. He will destroy Bhishm in battle if the latter does not hear his proposal. Let us then go to him who glows like the fire of the last conflagration and the

भार्गवः । एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं यथा यास्यामि तत्रवै ॥ २९ ॥ होत्रवाहन उवाच । रामं द्रक्ष्यसि भद्रेत्वं जामदग्न्यं महावने । उग्रे तपसि वर्तन्तं सत्यसन्धं महाबलम् ॥ ३० ॥ महेन्द्रेवै गिरिश्रेष्ठं रामो नित्यमुपास्तिह । ऋषयो वेदविद्वांसो गन्धर्वाप्सरसस्तथा ॥ ३१ ॥ तत्र गच्छस्व भद्रन्ते ब्रयाश्चैनं वचोमम । अभिवाद्य चतं मूर्ध्ना तपोवृद्धं दृढव्रतम् ॥ ३२ ॥ ब्रयाश्चैनं पुनर्भद्रे यत्ते कार्यं मनीषितम् । मयि संकीर्त्तिते रामः सर्वं तत्ते करिष्यति ॥ ३३ ॥ मम रामः सखा वत्से प्रीतियुक्तःसुहृच्च मे । जमदग्निसुतो वीरः सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ ३४ ॥ एवं ब्रुवति कन्यान्तु पार्थिवे होत्रवाहने । अकृतव्रणः प्रादुरासीद्रामस्यानुचरः प्रियः ॥ ३५ ॥ ततस्ते मुनयः सर्वे समुत्तस्थुः सहस्रशः । स च राजा वयोवृद्धः सृञ्जयो होत्रवाहनः ॥ ३६ ॥

बातचीत करूं मैं आपसे यह पूछतीहूं कि क्या वह मेरे महान दुःखका नाश कर देंगे । २९ । अपनी नातिन अम्बाके वचनसुन सृञ्जयदेशके राजा होत्रवाहन बोले, हेभद्रे उग्रतपकरते, सत्यप्रतिज्ञ, महाबली परशुरामजीको महावन में तू देखेगी ।३०। वे महेन्द्राचलपर नित्य तप किया करते हैं सो अकेले वहीं नहीं उसपर वेदविद्याके विद्वान्लोग गन्धर्व अप्सराओग भी तप करती हैं । ३१ । इससे अब वहां जाय उन तपोवृद्ध महादृढ ब्रह्मचर्यव्रतधारी परशुरामजी को शिरझुकाय प्रणाम कर हमारीओर से कहना कि । ३२ । होत्रवाहनने आपको प्रणाम कहा है फिर अपना इष्ट उनसे विधिपूर्वक निवेदन करना हमारा नाम लेनेसे परशुरामजी तेरा सब कार्य करेंगे । ३३ । क्योंकि परशुरामजी हमारे तो सखा सुहृद व मित्रहैं और जमदग्निजी के पुत्रहोन से सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठहैं । ३४ । राजा होत्रवाहन वस कन्यासे ऐसा कहीरहेथे कि परशुरामजी के अनुचर प्रियकारी अकृतव्रण नाम मुनि वहां आये । ३५ । उनको देख वे सब सहस्रों मुनिलोग अवस्था से वृद्ध

jewel of the family of Bhrigu. He will surely bring you to the right path." At this she said with tears in her eye to her grandfather Hotravahan, "I shall go to Parashuram. I shall see father whether *he will be able to ramove my great grief.*" 29.
Having heard the words of his grand-daughter Amba, Hotravahan the king of Srinjayas said, "You will see Parashuram doing severe penances in the forest. He is ever engaged in performing asceticism on Mahendra hill in company with Gandharvas and apsaras learned in the Vedas. You must go to Parashuram the observer of severe vows and old in asceticism and say to him after obeisance. Convey him my respect and disclose to him your grievances. Parashuram will help you for my sake; for he is a friend and playmate of mine and being the son of Jamadagni he is the best of warriors." While

ततो दृष्ट्वा कृताविथ्य मन्योन्यं ते वनौकसः । सहिता भरतश्रेष्ठ निषेदुः परिवार्य्य तम् ॥ ३७ ॥ ततस्ते कथयामासुः कथास्तास्ता मनोरमाः । धन्यां दिव्याश्च राजेन्द्र प्रीतिहर्षमुदा युता ॥ ३८ ॥ ततः कथान्ते राजर्षिर्महात्मा होत्रवाहनः । रामं श्रेष्ठं महर्षीणा मपृच्छदकृतव्रणम् ॥ ३९ ॥ क्वसम्प्रति महाबाहो जामदग्न्यः प्रतापवान् । अकृतव्रणशक्यो वै द्रष्टुं वेदविदांवरः ॥ ४० ॥ अकृतव्रण उवाच । भवन्तमेवसततं राम कीर्त्तयतिप्रभो । सृञ्जयोमेप्रियसखो राजर्षिरितिपार्थिव ॥ ४१ ॥ इहरामः प्रभातेश्वो भवितेति मतिर्मम । द्रष्टास्येनमिहायान्तं तवदर्शनकांक्षया ॥ ४२ ॥ इयञ्चकन्याराजर्षे किमर्थंवनमागता । कस्यचेयं तव च का भवतीच्छामि वेदितुम् ॥ ४३ ॥ होत्रवाहन उवाच । दौहित्रीयं ममाविभो काशिराजसुता प्रिया । ज्येष्ठास्वयम्वरेतस्यौ भगिनीभ्यां

राजा होत्रवाहन समेत उठखड़ेहुये । ३६ । फिर मुनिको देख अच्छीतरह उनका आतिथ्य सत्कारकर चारोंओरसे मुनिको घर सबतपस्वीलोग उनको आसनदे आपभी बैठे । ३७ । फिर सब मुनिलोग आपसमें प्रीतियुक्तहो धन्य दिव्य मनकेहर नेवाली नाना प्रकारकी उत्तम २ कथायें कहनेलगे ।३८। जबसबकथाकह सुनचुके तो राजाहोत्रवाहनने अकृतव्रणजीसे महर्षियों में श्रेष्ठ परशुरामजीको पूछा । ३९ । कि हे महाबाहु अकृतव्रण महाप्रतापी भगवान परशुरामजी आजकाल कहां विराजमानहैं भला हमलोगोंसे मुलाकात होसक्ती है: । ४० । यहसुन अकृतव्रणमुनि बोले कि हेराजन् परशुरामजी निरन्तर आपकी बातें कियाकरतेहैं कि संजयवंशी राजर्षि होत्रवाहन हमारे बड़ेप्यारे सखाहैं । ४१ । हम जानते हैं कि कल प्रातःकाल परशुरामजी आपके देखनेकी इच्छासे यहां आवेंगे इससे यहीं आप उनको देखोगे । ४२ । हे राजर्षि सत्तम, यह कन्या किसलिये वनमें आईहै और किसकीहै आपसे क्या सम्बन्ध रखतीहै यह हम आपसे जाननाचाहते हैं ।४३। तब राजा होत्रवाहन बोले कि, हे मुनिराज, यह हमारी दौहित्रीहै व काशिराजकी ज्येष्ठ कन्याहै इसके दो

he was thus speaking to the girl, Akritvran the muni and faithful follower of Parashuram came there. All the ascetics together with king Hotravahan stood up on seeing him and after seating him with great respect sat round him on their respective seats. They began to tell charming myths among themselves and when their talk was over, Hotravahan asked of Akritvran about Parashuram the best of Maharshis. 40. "Where is Parashuram of great glory now a days?" said Hotravahan. "He is always talking of you Hotravahan and says that you are his intimate friend. I think he will himself come here early tomorrow to see you and you will see him at this very place. I wish to know why this girl has come here at the forest, whose daughter she is and what connection she

सद्दानघ ॥ ४४ ॥ इयमम्बेति विख्याता ज्येष्ठा काशिपते सुता । अम्बिकाम्बालिके कन्ये कनीयस्यौ तपोधन ॥ ४५ ॥ समेतंपार्थिवं क्षत्रं काशिपुर्यां ततोभवत् । कन्यानिमित्तं विप्रर्षे तत्रासीदुत्सवो महान् ॥ ४६ ॥ ततः किल महावीर्य्यो भीष्मः शान्तनवो नृपान् । अधिक्षिप्य महातेजास्तिस्रः कन्या जहार ताः ॥ ४७ ॥ निर्जित्य पृथिवीपालानथ भीष्मो गजाह्वयम् । आजगाम विशुद्धात्मा कन्याभिः सह भारत ॥४८॥ सत्यवत्यै निवेद्याथ विवाहं समनन्तरम् । भ्रातुर्विचित्रवीर्य्यस्य समाज्ञापयतप्रभुः ॥४९॥ तन्तु वैवाहिकं दृष्ट्वा कन्येयं समुपार्जितम् । अब्रवीत्तत्र गांगेयं मन्त्रिमध्ये द्विजर्षभ ५० मया शाल्वपतिर्वीरो मनसाभिवृतः पतिः । नमामर्हसिधर्मज्ञ दातुं भ्रात्रेऽन्यमानसाम्

भगिनियां औरहैं उन सहित यह स्वयम्वरमें स्थितहुई ।४४। इसज्येष्ठ काशिराजकी कन्याका अम्बा नाम है इससे छोटी जो दोनों एकका अम्बिका दूसरीका अम्बालिका नाम है । ४५ । इन सब कन्याओं के लिये काशीपुरी में भरतखण्डके सब क्षत्रियलोग इकट्ठे हुये इससे वहां एक बड़ाभारी धूमधामी उत्सव हुआ । ४६ । तब बड़े प्रसिद्ध शान्तनुजी के पुत्र महावीर्य भीष्मजीने वहां जाय सब राजाओं का महातिरस्कार कर उन महातेजस्वीने तीनों कन्याओं को हरलिया । ४७ । इस प्रकार सब राजाओं को जीत विशुद्धात्मा भीष्मजी उन कन्याओं को अपने सङ्गके हस्तिनापुरको आये । ४८ । वहां अपनी माता सत्यवती से सब वृत्तान्त कह इन कन्याओं को उनको सौंप अपने भाई विचित्रवीर्य का विवाह इन कन्याओं के सङ्ग कराने के लिये वैवाहिक नेगचार करानेलगे । ४९ । वह मङ्गल कौतुक बंधन उबटन आदि लगाना देख यह कन्या मन्त्रियों के बीचमें बैठे भीष्मजी से यह वचन बोली कि । ५० । हे धर्मज्ञ हमने अपने मन से शाल्वराजाको अपनापति अङ्गीकार कियाहै इससे अन्य पुरुषमें मन लगाई हुई हमको अपने भाईको देनेके

---

has with you," said Akritvran. "She is my grand-daughter," replied Hotravahan, "and the eldest daughter of the King of Kashi. She has two more sisters and with them she appeared in the Swayamvara. Her name is Amba; her younger sister is known as Ambika and the youngest is Ambalika. All the Kshatryas of Bharatvarsh (upper India) came to Kashi for their sake. There was a great gathering and festivety held there. Bhishm the great warrior, son of famous King Shantanu, defeated all the kings and seized the three princesses. Having defeated the kings he returned with the princesses to Hastnapur. Having told his stepmother all that had happened he entrusted them to her and began to make preparations for their wedding with his brother, Vichitraviirya.

॥ ५१ ॥ तच्छ्रुत्वावचनंभीष्म सम्मन्त्र्यसहमन्त्रिभि । निश्चित्य विससर्जैमां सत्यवत्या मते स्थित ॥ ५२ ॥ अनुज्ञाता तु भीष्मेण शाल्व सौभपतिं तत । कन्येयंमुदितातत्र कालेवचनमब्रवीत् ॥ ५३ ॥ विसर्जितास्मिभीष्मेण धर्म्मांप्रतिपादय । मनसाभिवृत एवं मयात्व पार्थिवर्षभ ॥ ५४ ॥ प्रत्याचख्यौ च शाल्वोस्याश्चारित्रस्याभिशङ्कित । सेयंतपोवन प्राप्ता तापस्येभिरता भृशम् ॥ ५५ ॥ मयाँ च प्रत्यभिज्ञाता वंशस्य परिकीर्त्तनात् । अस्यदुःखस्य चोत्पत्तिं भीष्ममेवहृ मन्यते ॥ ५६ ॥ अम्बोवाच । भगवन्नेवमेवेह यथाह पृथिवीपति । शरीरकर्त्ता मातुर्मे सृञ्जयो होत्रवाहन ॥ ५७ ॥ नह्युत्सहे स्वनगरं प्रतियातु तपोधन । अपमानभयाचैव व्रीडयाच महामुने ॥ ५८ ॥

योग्य आप नहीं हैं । ५१ । इसके वचन सुन अपने मन्त्रियों से सम्मतले सत्यवती का भी मत ले उन्होंने इस कन्याको कहदिया कि अच्छा,जावो । ५२ । तब भीष्म की आज्ञा पाय यह कन्या आनन्दितहो सौभपति शाल्वराजके समीप जाय समय पर बोली । ५३ । हे महाराज भीष्मपितामहने हमको छोडदिया,अब आप हमारे धर्मको सिद्धकरें क्योंकि हमने प्रथम अपने मनमें आपही को पति बनाने की प्रतिज्ञा की थी । ५४ । इसके वचन सुन इसे परपुरुषरता होनेकीशङ्कासे शाल्वराजने अङ्गीकार न किया, तब तपस्या करनेके विचार,से यह तपोवनको चली आई । ५५ । यहां जब इसने अपना वंश बताया तो हमने भी जाना कि हमारी कन्या की कन्या है, इसके दुःखके कारण हमारी जान भीष्मही हैं । ५६ । यह सुन अम्बा बोली कि हे भगवन् यह ऐसाही है जैसा कि हमारी माताके पिता संजयवंशी महाराज होत्रवाहनजीने कहाहै । ५७ । अब हे मुनिराज अपमान के भयसे व लज्जाके मारे अपने नगरको हम नहीं जासक्तीं । ५८ । इससे हे द्विजसत्तम,

52 While those preparations and rites were in progress this girl told Bhishm in the midst of his ministers that she loved Shalwa and therefore he ought not give her to his brother At this Bhishm, with the advice of his ministers gave her permission to go away Accordingly She went to the court of Shalwa the king of Sambh and said to her, "Bhishm has allowed me to come to you, king, as I had set my mind on marrying you" But Shalwa had his suspicions about her virginity and would not accept her for his wife So she came to the forest to perform asceticism and when she disclosed her lineage in my presence, I know her to be my daughter's daughter I think Bhishm is the root of all her misfortune" On hearing this, Amba said, "My grandfather is right. I cannot return home for the fear of disgrace and for shame

यत्तु मां भगवान्रामो वक्ष्यति द्विजसत्तम । तन्मे कार्य्यतमं कार्य्यमिति मे भगवन्मतिः ॥३०॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि होत्रवाहनाम्बा संवादे षट्सप्तत्याधिकशततमोऽध्याय ॥ १७६ ॥

अकृतव्रण उवाच । दुःखद्वयमिदं भद्रे कतरस्य चिकीर्षसि । प्रतिकर्त्तव्यमबले तत्त्व वत्से वदस्व मे ॥ १ ॥ यदि सौभपतिर्भद्रे नियोक्तव्यो मतस्तव । नियोक्ष्यति महात्मा स रामस्त्वद्धितकाम्यया ॥ २ ॥ अथापगेयं भीष्मं त्वं रामेणेच्छसि धीमता । रणे विनिर्जितं द्रष्टुं कुर्य्यात्तदपि भार्गव ॥ ३ ॥ सृञ्जयस्य वचः श्रुत्वा तव चैव शुचिस्मिते । यदत्रतेऽभृश कार्य्यं तदद्यैव विचिन्त्यताम् ॥ ४ ॥ अम्बोवाच । अपनीतास्मि भीष्मेण भगवन्नविजानता । नाभिजानाति मे भीष्मो ब्रह्मन् शाल्वगतं मनः ॥ ५ ॥ एतद्विचार्य्य मनसा भवाने तद्विनिश्चयम् । विचिनोतु यथान्याय

अब जो भगवान महान परशुरामजी कहेंगे उसी कार्य्यका हम अपने करनेके योग्य समझेंगी। बस यही हमारी मतिमें आताहे ॥ ५९ ॥

अध्याय ॥ १७७ ॥

अम्बाके वचन सुन अकृतव्रण जी बोले कि हे भद्रे इस दुःख के कारण दो हैं उनमें तुम किसका प्रतीकार चाहतीहो उसका निश्चय कर हमसे कहो १। हे भद्रे जो तुम सौभपतिके संग अपना संयोग चाहतीहो तो महात्मा परशुरामजी तुम्हारे हितकी कामना से उस के संग तुम्हारा संयोगभी करादेंगे । २ । अथवा तुम रणमें धीमान भगवान् महान् परशुरामजी से भीष्मको पराजित देखा चाहती होतो वे यह त्या भृगुनाथ वहभी करसक्तेहें । ३ । राजाहोत्रवाहन व तुम्हारे वचन सुन दोनों कार्य्य कामकेो इन से इनदोनों में जो तुम्हें अत्यन्त करना अंगीकारहो उसका विचार अभी करलो । ४ । अम्बा बोली कि हे भगवन भीष्मजी हमको विनाजाने अपने यहां लाय क्योंकि व यह नहीं जानतथे कि इसका मन शाल्व

and I have made up my mind to act upon the advice of Parashuram." 59

CHAPTER CLXXVII

Having heard the words of Amba, Akritvarn said, "Tell me which of the two wrong doers of yours you would like to be punished. Parashuram will cause your union with the Sambh king, if you so desire, and he can defeat Bhishm too if you would see the latter overthrown by him. He will grant your request for the sake of Hotrwahan, you must therefore make up your mind before his arrival here." Bhishm when he seized me, did not know," replied Amba, "that I had set my mind on king Shalwa. Knowing this fact, you will be pleased to settle for me what would be just to do

विधान क्रियतांतथा ॥ ६ ॥ भीष्मेवा कुरुशार्दूले शाल्वराजेथ च पुनः । उभयोरेव वा ब्रह्मन्युक्तं यत् तत् समाचर ॥ ७ ॥ निवेदितं मया ह्येतद्दुःखमूलं यथातथम् । विधानं तत्र भगवन् कर्त्तुमर्हसि युक्तितः ॥ ८ ॥ अकृतव्रण उवाच । उपपन्नमिदं भद्रे यदेवं वरवर्णिनि । धर्मप्रतिवचो भूया शृणु चेदंवचोमम ॥ ९ ॥ यदित्वामापगेयो वै न नयेद्गजसाह्वयम् । शाल्वस्त्वां शिरसाभीरु गृह्णीयाद्रामचोदितः ॥ १० ॥ तेनत्वं निर्जिता भद्रे यस्मान्नीतासि भाविनि । संशयः शाल्वराजस्य तेन त्वयि सुमध्यमे ॥ ११ ॥ भीष्म पुरुषमानी च जितकाशी तथैव च । तस्मात् प्रतिक्रिया युक्ताभीष्मे कारयितुं तव ॥१२॥ अम्बोवाच । ममाप्येष सदाब्रह्मन् हृदि कामोभिवर्त्तते । घातयेयं यदि रणे भीष्ममित्येव नित्यदा ॥ १३ ॥ भीष्मं वा शाल्वराजं वा यंवा दोषेण गच्छसि । प्रशाधि तं महाबाहो

राजामें लगाई । ५ । इससे आपही अपने मनसे इसका विनिश्चय विचारें जैसा न्यायहो वैसा विधान करें । ६ । कुरुशार्दूल भीष्मजी में व शाल्वराजा में व दोनों में जैसा उचित हो वैसा किजिये । ७ । हमने अपने दुःखका मूल जैसा का तैसा कहदिया इसका विधान युक्तिसे आप करने के योग्य हैं । ८ । यह सुन अकृतव्रणजी बोले कि हे भद्रे जैसा चाहिये तुमने वैसाही कहा सब धर्मकी की बातोंकी अब हमारा वचन सुनो । ९ । जो तुमको भीष्मजी हस्तिनापुरको न लेजाते तो परशुरामजीके कहने से शाल्व तुमको शिरकेबल ग्रहण करता । १० । हे भद्रे जिससे तुमको भीष्म लेगये इसीसे अब तुम हारगई और इसीसे शाल्वराजा को तुम्हारे विषयमें सन्देहहुआ । ११ । भीष्मने काशीको जीता और वे पुरुषमानी हैं इससे तुम्हारे लिये जो कुछ कियाजाय वह भीष्मही के संग कियाजाय और किसीसे कुछ प्रयोजन नहीं । १२ । यह सुन अम्बा बोली कि हे ब्रह्मन् हमारे हृदय में भी यही बात नित्य रहतीहै कि जो रणमें किसी यत्नसे भीष्मको मारपावें तो अच्छाहै । १३ । फिर यह भी नहीं कहतीं चाहे भीष्मको व शाल्वराजाको

in this case. Behave as you like with Shalva or Bhishm the lion among kurus." "You have spoken what was right, fortunate one," said Akritvran, "Now hear my opinion Shalw would receive you with respect, if Bhishm had not taken you to Hastnapur 10 You are defeated in your purpose on account of Bhishm who gave Shalwa cause for suspicion on you Bhishm conquered Kashi and is very vain of his power, he should be vanquished and none else." I am invariably thinking of this and I think it would be better if Bhishm were slain in battle. You may however contrive the fall of him whom you think to be the more concerned of the two in causing me this grief" Bhishm continued that they talked on the matter all day long till the night came on with pleasent

यत्कृतेहं सुदु खिता । १४ ॥ भीष्मउवाच । एवं कथयतामेव तेषां स दिवसो गतः । रात्रिश्च भरतश्रेष्ठ सुखशीतोष्णमारुता ॥ १५ ॥ ततो रामः प्रादुरासीत् प्रज्वलन्निव तेजसा । शिष्यैः परिवृतोराजन् जटाचीरधरो मुनिः ॥ १६ ॥ धनुष्पाणि रदीनात्मा खड्गं बिभ्रत्परश्वधी । विरजा राजशार्दूल सृंजयंसोभ्ययान्नृपम् ॥ १७ ॥ ततस्त तापसा दृष्ट्वा स च राजा महातपाः । तस्थुः प्राञ्जलयो राजन् सा च कन्या तपस्विनी ॥ १८ ॥ पूजयामासुरव्यग्रा मधुपर्केण भार्गवम् । अर्चितश्च यथान्यायं निषसाद सहैवतैः ॥ १९ ॥ ततः पूर्वव्यतीतानि कथयन्तौस्मतावुभौ । आसातां जामदग्न्यश्च सृञ्जयश्चैव भारत ॥ २० ॥ तथा कथान्ते राजर्षिर्भृगुश्रेष्ठं महाबलम् । उवाच मधुरं काले राम वचनमर्थवत् ॥२१॥ रामेयं मम दौहित्री काशिराजसुताप्रभो । अस्याः श्रृणु यथातत्व कार्यं कार्यविशारद ॥ २२ ॥ परमं कथ्यतांश्चेति तां रामः

जिसको इस विषय में विशेषदर्शी समझो कि जिसके लिये हम दु खित फिरती हैं उसीके मारने का उपाय कीजिये । १४ । भीष्मजी बोले कि ईसप्रकार उन सबोंकेवार्ता करते दिन बीतगया रात्रि आगई जिसमें सुखदाथी शीतोष्ण पवन चलने लगा । १५ । तिसके पीछे जब फिर प्रातःकाल हुआ तो जटारखाये तपस्वियों के वस्त्र धारण किये धनुष हाथमें लिये प्रसन्न चित खड्ग परशु हाथमें लिये स्वच्छ शरीर परशुरामजी तेजसे प्रज्वलित अपने बहुत से शिष्यों के संग राजा सृञ्जय के पास आये । १७ । तिनको देख सब तपस्वी महातपस्वी राजा व वह तपस्विनी कन्या सबकी सब हाथजोड़ उठ खड़ी हुई । १८ । मधुपर्क अर्घ्य पाद्यादि से सबोंने पूजाकी जब न्याय पूर्वक मुनिराम पूजितहुये तो फिर उनसबोंके संग बैठे । १९ । फिर परशुरामजी तथा राजा होत्रवाहन दोनोंजन पूर्वकालकी बीतीहुई बातें करनेलगे । २० । फिर जब पुरानी कथा समाप्त हुई तो राजा होत्रवाहन महा बलवान भगवान् परशुरामजी से मधुरवचन बोले । २१ । हे राम यह हमारी दौहित्री व काशिराजकी कन्याहै हे कार्य विशारद इसके कार्य का निश्चय सुनो

---

breezes and was followed by morning when Parashuram with long locks, bow and arrows, dagger and battle axe, attended by many disciples, came there in great glory to see king Srinjaya. All the ascetics with the king and the princess in the garb of an ascetic stood up with clasped hands and worshipped him with an offering of *madhupark* (a mixture of honey and other articles) and water to wash his feet. The great muni, after receiving their homage, sat among them and began to talk of former days with Hotravahan. 20. When their talk of old days was over, Hotravahan said to him in gentle words, " This is my grand child and the daughter of the king

प्रत्यभाषत । ततः साऽभ्यवदद्रामं ज्वलन्तमिव पावकम् ॥ २३ ॥ ततोऽभिवाद्य चरणौ रामस्य शिरसो शुभौ । स्पृष्ट्वा पद्मदलाभाभ्यां पाणिभ्यामग्रतः स्थिता ॥ २४ ॥ रुरोद सा शोकवती बाष्पव्याकुललोचना । प्रपेदे शरणञ्चैव शरण्यं भृगुनन्दनम् २५ राम उवाच । यथासि सृञ्जयस्यास्य तथा मे त्वं नृपात्मजे । ब्रूहि यत्ते मनोदुःखं करिष्ये वचनं तव ॥ २६ ॥ अम्बोवाच । भगवञ्शरणं त्वाद्य प्रपन्नास्मि महाव्रतम् । शोकपङ्कार्णवान्मग्नां घोरादुद्धर मां विभो ॥ २७ ॥ भीष्म उवाच । तस्याश्च दृष्ट्वा रूपञ्च वपुश्चाभिनवं पुनः । सौकुमार्यं परञ्चैव रामश्चिन्तापरोऽभवत् ॥ २८ ॥ किमियं वक्ष्यतीत्येवं विममर्श भृगूद्वहः । इति दध्यौ चिरं रामः कृपयाभिपरिप्लुतः ॥ २९ ॥ कथ्यतामिति सा भूयो रामेणोक्ता शुचिस्मिता । सर्वमेव यथातत्त्वं कथ-

---

। २२ । रामजीने कहा कि अच्छा तुम अपना कार्य कहो, तब अग्नि समान प्रकाशित रामजीसे अम्बा बोली । २३ । बोलने के समय रामजीके शुभचरणारविन्द अपने करकमलों से पकड आगे बैठ शोकयुक्त नेत्रोंसे आंसुओं की धारा छाडती रोदनकर कहनेलगी कि हे भृगुनाथ मैं आपके शरणमें हूं । २५ । यह सुन परशुरामजी बोले कि हे नृपकन्या जैसी तू हैन राजासृञ्जय की दौहित्री है वैसीही हमारीभी है इससे तेरे मनको जो दुःखहो हम से कह हम तेरा वचन करेंगे । २६ । यहसुन अम्बा बोली, हे भगवन् मैं महाव्रत आपके शरणमें प्राप्तहू इससे इस शोक कर्दम सागर से मेरा उद्धार कीजिये । २७ । भीष्मजी बाले कि उसका रूप शरीर नवीन अवस्था सुकुमारता देख परशुरामजी बड़ी शंकाको प्राप्तहुये कि । २८ । यह क्या कहेगी इसके विचारने के लिये बडी देर तक ध्यान किया फिर कृपायुक्त हो । २९ । कहा जो कहनाहो कहती क्यों नहीं जब रामजी ने ऐसा कहा तो कुछ

---

of Kashi, hear the story of her grief, wise man" At this Ram' asked her to speak out her business which she said to Ram who was glorious like fire. She held the sacred feet of Ram' in both her lotus like hands and shedding tears of grief from her eyes she said, "I seek your refuge, prince of Bhrigus." To this Parashuram replied, "You are my grandchild as well as of king Srinjay. I shall remove your griefs, if you will disclose them to me." Thereupon Amba said, "I seek your protection, observer of great vows; save me from falling into the ocean of grief." Bhishm continued that on seeing her youthfulness and beauty Parashuram wondered what she would say. He thought a great deal on the matter; but, at last, he felt pity on her and said, "Why do you not say your say?" She then told him

यामास भार्गवे ॥ ३० ॥ तच्छ्रुत्वा जामदग्न्यस्तु राजपुत्र्यावचस्तदा। उवाचतां वरारोहां निश्चित्यार्थविनिश्चयम् ॥ ३१ ॥ राम उवाच । प्रेषयिष्यामि भीष्मायकुरुश्रेष्ठाय भाविनि । करिष्यति वचो मह्यं श्रुत्वा च स नराधिपः ॥ ३२ ॥ नचेत् करिष्यति वचो मयोक्तं जाह्नवीसुतः। धक्ष्याम्यहंरणे भद्रे सामात्यं शस्त्रतेजसा॥३३॥ अथवाते मतिस्तत्र राजपुत्रि निवर्त्तते । यावच्छाल्वपतिं वीर योजयाम्यत्रकर्मणि ॥ ३४ ॥ अम्बोवाच। विसर्जिता हं भीष्मेण श्रुत्वैव भृगुनन्दन। शाल्व राजगतंभावं मम पूर्वं मनीषितम् ॥ ३५ ॥ सौभराजमुपेत्याहमवोचं दुर्वचं वचः। नचमां प्रत्यगृह्णात् स चारित्र्यपरिशङ्कित ॥ ३६॥ एतत् सर्वं विनिश्चित्य स्वबुद्ध्या भृगुनन्दन। यदत्रौपयिकं कार्यं तच्चिन्तयितुमर्हसि ॥ ३७ ॥ ममतुव्यसनस्यास्य भीष्मो मूलं महाव्रतः । येनाहंवशमानीता समुत्क्षिप्यबलात् तदा ॥ ३८ ॥ भीष्मजहि

हँसकर सब अपना वृत्तान्त आद्योपान्त उसने कहा। ३०। तब उस राजकन्या का वचन सुन परशुरामजी अपने मनमें उसका निश्चयकर उससे बोले। ३१। कि हे राजकन्ये यदि ऐसाहै कुरुश्रेष्ठ भीष्मके समीप तुझे हम भेज देंगे, वे हमारा वचन सुन अंगीकार करेंगे। ३२। जो कदाचित् गंगासुत हमारा वचन न करेंगे तो हम अपने अस्त्रके तेजसे मन्त्रादि सहित भीष्मको भस्मकरदेंगे। ३३। अथवा तेराचित्त वहां रहनेको नहो तो फिर हम शाल्वराजहीको इसकर्ममें नियुक्तकरें।३४। यह सुन फिर अम्बा बोली कि हे भृगुनन्दन, भीष्मने तो जैसेही जाना कि इसका मन प्रथम से शाल्वराज में लगाहै वैसेही हमको त्याग करदिया। ३५। तब हमनेजाय शाल्वराज से बहुत प्रकार से कहा परन्तु परपुरुषरता होने की शंका से उन्होंने हमें न ग्रहणकिया। ३६। अब हे भृगुनन्दन यहसब आप अपनी बुद्धिसे निश्चयकर जो करनेके योग्य समझें वही करें। ३७। परन्तु मेरे इस दुःखके मूल महाव्रतधारी भीष्मही हैं क्योंकि उन्हों ने बलसे सब राजाओं को जीत मुझको अपनी

---

of all her griefs with a smiling face. 30. Parashuram pondered on her words for some time and then said, "If this is so I shall send you to Bhishm and he will act upon my word, and if he dares to disobey me, I shall burn him down with the fire of my weapons. But if you do not want to live there I shall make Shalwa do the work." On hearing those words Amba said, "Bhishm released me as soon as he knew that I had set my mind on king Shalwa. I went forthwith to Shalva, but my mission was unsuccessful and he did not keep me as he suspected me of intercourse with another person. Think of all this, joy of Bhrigus, and do as you think proper. But the cause of all my misfortunes is Bhishm of severe vows, for he conquered

महाबाहो यत्कृते दुःखमीदृशम् । प्राप्ताहं भृगुशार्दूल चराम्यप्रियमुत्तमम् ॥ ३९ ॥ सहि लुब्धश्च नीचश्च जितकाशी च भार्गव । तस्मात् प्रतिक्रियां कर्त्तुं युक्तास्मै त्वयानघ ॥ ४० ॥ एषमे क्रियमाणाय भारतेन तदाविभो । अभवद् हृदि सङ्कल्पो घातयेयं महाव्रतम् ॥ ४१ ॥ तस्मात् कामं ममाद्येमं रामसम्पादयानघ । जहि भीष्मं महाबाहो यथावृत्रं पुरन्दरः ॥ ४२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि रामाम्बा संवादे सप्तसप्तत्यधिकशततमोऽध्याय ॥ १७७ ॥

भीष्म उवाच । एवमुक्तस्तदा रामो जहि भीष्मेति प्रभो । उवाच रुदतीं कन्यां चोदयन्तीं पुनः पुनः ॥ १ ॥ काश्ये न कामं गृह्णामि शस्त्रं वै वरवर्णिनि । ऋते ब्रह्म विदां हेतोः किमन्यत् करवाणिते ॥ २ ॥ वाचा भीष्मश्चशाल्वश्च समरात्रि

वशमें करलियाथा । ३८ । इससे भीष्म कोही मारिये जिनके कारण मुझको दुःख हुआहै और मैं दुःख से व्याकुल फिररही हूं । ३९ । हे भृगुनाथ उस नीच लोभी भीष्म ने काशीको जीतकर मुझको दुःख दिया इससे उसीको मारिये । ४० । भीष्म के कार्य से ही मुझको क्लेश हुआ है इसी लिये मैंने अपने मनमें यह संकल्प किया है कि वह मारा जावे । ४१ । हे भृगुवर मेरा यह कार्य सिद्ध कीजिये और भीष्म को समर में इस प्रकार मारिये जैसे इन्द्र ने वृत्रासुर को मारा था ॥ ४२ ॥

अध्याय ॥ १७८ ॥

भीष्मजी बोले कि भीष्मको मारो ऐसा बार २ कहती रोती प्रेरणा करतीहुई उस कन्यासे परशुरामजी बोले कि । १ । हे कन्ये, ब्राह्मण के हेतु विना अब हम शस्त्र ग्रहणही नहीं करते इससे और जो कुछ कामहो करदो कियाजावे ।२। वचनसे

---

all the kings and seized me by force. Destroy Bhishm the cause of my grief and wanderings. Bhishm the mean and avaricious conquered Kashi and gave me grief. Be pleased to kill him. 40. Bhishm has caused me grief and I have therefore resolved to get him killed. Do me this favour, best of Bhrigus; kill Bhishm in battle as Indra killed Vritrasur." 42.

CHAPTER CLXXVIII

Bhishm continued: "The girl instigated Parashuram again and again to kill me and the latter thus replied to her bewailings. "I shall no longer take up arms except for the cause of Brahmans; but I am ready to do any other thing you like. Both Bhishm and

वशानुगौ । भविष्यते नवद्यांगि तत् करिष्यामि मा शुचः ॥ ३ ॥ ननु शस्त्रं ग्रहीष्यामि कथञ्चिदपि भाविनि । ऋते नियोगाद्विप्राणा मेषमे समयः कृतः ॥ ४ ॥ अम्बोवाच ॥ मम दुःखं भगवता व्यपनेयं यतस्ततः । तच्च भीष्मप्रसूतं मे तं जहीश्वर मा चिरम् ॥५॥ रामउवाच ॥ काशिकन्ये पुनर्ब्रूहि भीष्मस्ते चरणावुभौ । शिरसा वन्दनार्होऽपि ग्रहीष्यति गिरा मम ॥ ६ ॥ अम्बोवाच ॥ जहि भीष्मं रणे राम गर्जन्तमसुरं यथा । समाहूतो रणे राम मम चेदिच्छसि प्रियम् । प्रतिश्रुतञ्चयदपि तत् सत्यं कर्तुं मर्हसि ॥ ७ ॥ भीष्म उवाच ॥ तयोः संवदतो रेवं राजन्रामाम्बयोस्तदा । ऋषिः परमधर्मात्मा इदं वचन मब्रवीत् ॥ ८ ॥ शरणागतां महाबाहो कन्यां न त्यक्तु मर्हसि । यदि भीष्मो रणे

भीष्म शाल्व दोनों हमारे वशमें हैं, इससे हम तेरा काम करादेंगे तूं कुछ शोच न कर । ३ । परन्तु अब हम शस्त्र किसी भी तरह से न ग्रहणकरेंगे क्योंकि हमने प्रतिज्ञा करली है कि ब्राह्मणके कार्य को छोड़ और किसी के लिये हम अब कभी अस्त्र न गहेंगे । ४ । अम्बा फिर बोली कि हे भगवन जैसे बने मेरा दुःख अवश्य आपको मिटाना चाहिये, पर हमारे दुःखकी• उत्पत्ति के कारण भीष्मही हैं इससे हे समर्थ अब भीष्मको मारही डालिये विलम्ब न कीजिये । ५ । परशुरामजी बोले कि, हे काशिकन्ये फिर विचारकर कह यद्यपि भीष्म तेरे शिरसे वन्दना करनेके योग्यहैं तोभी हमारे कहने से वे तरे चरणोंपर गिरेंगे । ६ । अम्बा बोली कि हे राम हाथीके समान रणमें गर्जते भीष्मको मारही डालिये जो हमारा प्रियकरना आप चाहतेहों तो जैसेही भीष्म युद्धके लिये आपको स्पर्द्धा सहित बुलावें मारडालिये आपने प्रतिज्ञाभी की है जो भीष्म हमारा वचन न करेंगे तो हम रणमें मारडालेंगे वह अपनावचन कीजिये । ७ । भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि हे राजन परशुराम अम्बा दोनों ऐसा बतलारहे थे कि परम धर्मात्मा अकृतव्रणजी बोले । ८ । हे महाबाहु राम शरणागत इस कन्याको

Shalwa will do my bidding and you need not be anxious for the fulfilment of your desires. But I shall not take up arms as I have made a vow to the effect that I shall never fight except for the cause of Brahmans." At this Amba said again, "Remove my grief as best you can. The cause of all my misery is Bhishm. Kill him without delay." To this Parashuram replied. "Think again before you say so princess of Kashi; for Bhishm, although he is worthy of respect from you, will fall at your feet by my order." But Amba continued to say. "Kill Bhishm who roars like an elephant at the time of battle, if you care to please me. Kill him as soon as he boastfully challenges you to fight. You have promised to the effect that you would kill him, if he does not mind

राम समाहूतस्त्वयामृधे ॥ ९ ॥ निर्जिते स्मीति चा ब्रूयात् कुर्याद्वा वचनं तव। कृतमस्या भवेत् कार्यं कन्यया भृगुनन्दन ॥ १० ॥ वाक्यं सत्यञ्च ते वीर भविष्यति कृतं विभो। इयचापि प्रतिज्ञाते तदाराम महामुने ॥ ११ ॥ जित्वा वै क्षत्रियान् सर्वान् ब्राह्मणेषु प्रतिश्रुता। ब्राह्मण क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव रणे यदि ॥ १२ ॥ ब्रह्मद्विड्भविता तं वै हनिष्यामीति भार्गव। शरणार्थं प्रपन्नानां भीतानांशरणार्थिनाम् ॥ १३ ॥ नशक्ष्यामि परित्याग कर्त्तुं जीवन् कथञ्चन। यश्चकृत्स्नं रणे क्षत्र विजेष्यति समागतम् ॥ १४ ॥ दीप्तात्मानमहं तञ्च हनिष्यामीति भार्गव। स एवं विजयी राम भीष्मः कुरुकुलोद्वहः। तेन युध्यस्व सग्रामे समेत्य भृगुनन्दन ॥ १५ ॥ राम उवाच ॥ स्मराम्यहं पूर्वकृतां प्रति

परित्याग करने योग्य आप नहीं हैं अब ऐसा कीजिये कि जो समरकरने के लिये बुलानेपर या तो भीष्म यह कहदें कि हम आपसे हारगये वा आपके वचन करेंगे तो हे भृगुनन्दन इस कन्याका कार्य सिद्धहोजाय। १०। और आपका वचनभी सत्यहोजाय, और तुम्हारी एक यहभी तो प्रतिज्ञाहै। ११। जोकि सब क्षत्रियों को जीत आपने ब्राह्मणों के सामने रणमें प्रतिज्ञाकी थी, कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चाहे कोईहो पर समरमें हमारे सामने आवे तो हम उसको अवश्य मारडालें, परन्तु शरणके अर्थ पैरोंपर गिरतेहुये शरणार्थियोंको हम परित्याग न करसकेंगे जबतक कि हमारा जीवन रहेगा, व जो पुरुष सबक्षत्रियोंको रणमें जीतलेगा, उस तेजस्वी पुरुषको हम मारडालेंगे, फिर भीष्मभीतो ऐसी प्रकारकाविजयीहैं कि रणमें सबक्षत्रियोंको जीतलियाहै इससे हेभृगुनन्दन अब उस के पास जाय युद्धकीजिये।१५। यहसुन परशुरामफिर बोले हेब्रह्मर्षिसत्तम हम उस

---

your word." Bhishm said to Duryodhan that while Parashuram and Amba were thus talking together, Akritvran the virtuous thus spoke out, saying, "You should not forsake, Ram, this girl who has sought your refuge. Do so contrive the matter that Bhishm be either defeated by you or forced to do your bidding. She will thus be successful in her enterprise. 10. Your word too will thus be true: once when you had conquered all the kashtryas, you made a vow in the presence of Brahmans, in the field of battle, that whoso ever of the Brahmans, kshatryas, Vaishyas or Shudras came before you in the field of battle would be slain by you; that you would never forsake a refugee as long as you *lived* and that you would kill the man who defeated all the kshatryas. Now Bhishm is such a conqueror, he has conquered all the kshatryas in battle and therefore

श्चाम्रपि सत्तम । तथैवच करिष्यामि यथा स स्यैव लप्स्यते ॥ १६ ॥ कार्यं मेतन्महद्ब्रह्मन् काशिकन्यामनोगतम् । गमिष्यामि स्वयं तत्र कन्यामादाय यत्र स. ॥ १७ ॥ यदि भीष्मो रणश्लाघी न करिष्यति मे वचः । हनिष्याम्येन मुद्रिक मिति मे निश्चितामति. ॥ १८ ॥ नहि बाणा मयोत् सृष्टा. सज्जन्तीह शरीरिणाम् । कायेषु विदितं तुभ्यं पुरा क्षत्रियसगरे ॥ १९ ॥ एवमुक्त्वा ततो राम. सह तैर्ब्रह्मवादिभि । प्रयाणाय मतिं कृत्वा समुत्तस्थौ महातपा ॥ २० ॥ ततस्ते तामुषित्वातु रजनीं तत्र तापसा । हुताग्नयोजप्तजप्याः प्रतस्थुर्मज्जिघासया ॥२१॥ अभ्यगच्छत्ततो राम सहतैर्ब्रह्मवादिभि । कुरुक्षेत्रं महाराज कन्यया सह भारत ॥ २२ ॥ न्यविशन्ततत सर्वे परिगृह्य सरस्वतीम् । तपसास्ते महात्मानो भृगुश्रेष्ठपुरस्कृताः ॥ २३ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि. रामकुरुक्षेत्रयात्रा अष्टसप्तत्यधिकशततमोऽध्याय. ॥ १७८ ॥

प्रतिज्ञाका स्मरण करतेहैं परन्तु जहांतक समझाने से कार्य चले तो बहुत अच्छाहै । १६ । हेब्रह्मन यह काशीके राजाकी कन्याके मनकी बात बहुत कठिनहै इस से कन्याको ले जहां भीष्महोंगे वहां हम जायेंगे १७ यदि भीष्महमारे वचन नमानेंगे तो निश्चय में रणों में उनको मारडालूंगा । १८ । मेरफेंकहुए बाणकिसी शरीर में लगाकर प्राण नहीं रहसक्ते तु । मेरेबलको जानतेहो । १९ । यह विचार करके सब ऋषियों सहित बुद्धिमान परशुराम जानेकेलिये खडेहुए । २० । उस रात्रिको ऋषियों सहित अग्नों मेरेमारनेके लिये आहुती दी और मंत्र जपे और सब ब्रह्मचारी काशिराजकी कन्याका साथ लिये युद्ध करने के लिये कुरुक्षेत्रगये और परशुराम आदि सब तपस्वी सरस्वती के किनारे आसनों पर बैठे । २१ ।

---

you must fight him." "I remember that vow of mine," said Parashuram, "but I would try remonstrance first The girl desires an impossible thing, I shall therefore take her myself to Bhishm and shall kill him, if he does not mind my words. Life cannot last when my arrows pierce a body, you know my strength." Having thus resolved, wise Parashuram was ready to depart in company with all the rishis and during all that night they poured libations to fire and chanted hymns prepatory to kill me. All the Brahmcharis went with the princess of Kashi to fight at Kurukshetra, and Parashuram with other ascetics sat at the bank of the Saraswati." 23



भीष्म उवाच । ततस्तृतीये दिवसे सान्दिदेश व्यवस्थितः । कुरु प्रियं स मे राजन् प्राप्तोस्मीति महाव्रत ॥ १ ॥ तमागतमहं श्रुत्वा विषयान्तं महाबलम् । अभ्यगच्छं जवेनाशु प्रीत्या तेजोनिधिं प्रभुम् ॥ २ ॥ गां पुरस्कृत्य राजेन्द्र ब्राह्मणैः परिवारितः । ऋत्विग्भिर्देवकल्पैश्च तथैव च पुरोहितैः ॥ ३ ॥ स मामभिगतं दृष्ट्वा जामदग्न्यः प्रतापवान् । प्रतिजग्राह तां पूजां वचनं चेदमब्रवीत् ॥ [illegible] ॥ राम उवाच । भीष्म कां बुद्धिमास्थाय काशिराजसुता तदा । अकामेन त्वयानीता पुनश्चैव विसर्जिता ॥ ५ ॥ विभ्रंशिता त्वयाह्येषा धर्मात्कस्ते यशस्विनी । परामृष्टां त्वया हीमां को हि गन्तुमिहार्हति ॥ ६ ॥ प्रत्याख्याता हि शाल्वेन त्वयानीतेति भारत । तस्मादिमां मन्नियोगात् प्रतिगृह्णीष्व भारत ॥ ७ ॥ स्वधर्मं पुरुषव्याघ्र राजपुत्री

अध्याय ॥ १७९ ॥

भीष्मजी बोले कि तीसरे दिन वहां से हमारे नगर के समीप आय हमको सन्देश भेजा कि हम तुम्हारेयहां आये हैं हमारा प्रियकरो । १ । हमने जैसेही सुना कि हमारे नगर के समीप तेजोनिधि महाप्रतापी परशुरामजी आये हैं प्रीति पूर्वक अतिवेगसे उनके समीपको चले । २ । आगे एकगाय कर ब्राह्मणों से संग के औरभी ऋत्विक पुरोहित आदि सहित जापहुँचे । ३ । तब प्रतापी जामदग्न्य जी हमको आय देख बड़ी प्रसन्नता से पूजा ग्रहणकर हम से यह वचन बोले कि । ४ । हे भीष्म तुमने किस विचार से बिना इच्छाकीहुई काशिराज की कन्या को अपने यहां लाय फिर परित्यागकिया । ५ । तुमने इसको धर्म से भ्रष्ट कर दिया यह यशस्विनी बेचारी बैठीहै और तुम्हारी स्पर्श कीहुई इसको कौन ग्रहणकर सक्ताहै ॥ ६ ॥ तुम्हारे ले आने के कारण शाल्वने भी इसको ग्रहण न किया इससे अब हमारे कहने से इसको तुम ग्रहणकरो । ७ । हे पुरुषव्याघ्र जिस में

CHAPTER CLXXV

Bhishm continued On the third day they came near our town and sent me word As soon as I heard that valliant Parashuram of great glory was in your vicinity, I made haste to go to him with the love that I have towards him Preceded by a cow and accompanied by Brahmans, ritwiks and priests, I arrived there. Valliant Jamadagnya recieved us very kindly and accepted our homage with pleasure. He then said to me, "Bhishm, how was it that you seized the unwilling princess of Kashi and then cast her away? You caused the loss of her virtue and here she is sitting distressed because no one would accept for a wife the woman touched by you Even Shalwa has refused to marry her and therefore you must accept her by my order You must restore her to her former

त्यमतिवयम्। न युक्तस्त्ववमानो यं राज्ञां कर्त्तुं त्वयानघ ॥ ८ ॥ ततस्तं वै विमनसमुदीक्ष्याहमथाब्रुवम्। नाहमेनां पुनर्दद्यां ब्रह्मन् भ्रात्रे कथञ्चन ॥ ९ ॥ शाल्वस्याहमिति प्राह पुरा मामिव भार्गव। मया चैवाप्यनुज्ञाता गतेयं नगरं प्रति ॥ १० ॥ न भयान्नाप्यनुक्रोशान्नार्थलोभान्न काम्यया। क्षात्रं धर्ममहं जह्यामिति मे व्रतमाहितम् ॥ ११ ॥ अथ मामब्रवीद्रामः क्रोधपर्य्याकुलेक्षणः। न करिष्यसि चेदेतद्वाक्यं मे नरपुङ्गव ॥ १२ ॥ हनिष्यामि सहामात्यं त्वामद्येति पुनः पुनः। संरम्भादब्रवीद्रामः क्रोधपर्य्याकुलेक्षणः ॥ १३ ॥ तमहं गीर्भिरिष्टाभिः पुनः पुनररिन्दम। अयाचं भृगुशार्दूलं नचैव प्रशशाम सः ॥ १४ ॥ प्रणम्य तमहं मूर्ध्ना भूयो ब्राह्मणसत्तम।

यह राजपुत्री अपना धर्म्मपाते हे राजन् तुमको इसका अपमान करना योग्य नहीं है। ८। फिर परशुरामजी को क्रोधयुक्त उदास देख हमने उन से कहा कि हम अब इसे अपने भाई को फिर किसीप्रकार से भी न देंगे। ९। क्योंकि इसने हमसे अपने मुख से कहाया कि मैं शाल्वकी स्त्री हूं, तब हमने कहा कि अच्छा यदि तू शाल्वकी स्त्री है तो शाल्वके पास जा तब यह शाल्वराजके नगरको चलीगई। १०। और हमने यह प्रतिज्ञा कररक्खी है कि हम कभी अपना क्षत्रिय धर्म न कभी भयसे छोड़ेंगे न निन्दासे न धनके लोभसे न कामसे। ११। जब हमने ऐसा कहा तो मारेक्रोधके अरुणनेत्रकर रामजी ने हमसे कहा कि हे नरपुंगव जो हमारा यह वचन न करोगे तो। १२। अमात्यादि सहित तुमको आजही हम मारडालेंगे यह बात कईबार उन्हों ने कही मारेक्रोधके मुनिराजके नेत्र घूमनेलगे और बड़ी भयावनी मूर्त्ति उन्हों ने अपनी करली। १३। हे राजन् तब हमने बार बार बड़ी नम्रवाणी से भृगुनाथ की प्रार्थना की बहुत कुछ कहा पर वे किसीप्रकार शान्त न हुये। १४। तो फिर ब्राह्मणसत्तम उन महात्मा को प्रणामकर हमने

---

virtue and not to offer her any insult." Seeing Parashuram angry and dejected, I told him that I would not give her to my brother, for she had informed me that she would be wife to Shalwa and thereupon I had allowed her to go to the country of Shalwa and she had actually gone there. 10. I also told him that I had made a vow to the effect that I would never give up my dharm for fear, avarice, hope of gain or desire. Hearing this from me the eyes of Ram became red in anger and he said, "I shall kill you and your attendants at once if you do not obey me." He repeated this threat several times, rolled his eyes in a rage and his visage was dreadful to behold. At this I entreated him in gentle words to appease his

अशुभं कारण किन्तद्यत्त्वं युद्ध ममेच्छसि ॥ १५ ॥ इष्वस्त्र मम बालस्य भवतैव चतुर्विधम् । उपदिष्टं महाबाहो शिष्योऽस्मि तव भार्गव ॥ १६ ॥ ततो मामब्रवीद्राम: क्रोधसंरक्तलोचन । जानीषे मां गुरुं भीष्म गृह्णासीमां न चैव ह ॥ १७ ॥ सुतां काश्यस्य कौरव्य मत्प्रियार्थं महामते । नहिते विद्यते शान्तिरन्यथा कुरुनन्दन ॥ १८ ॥ गृहाणेमां महाबाहो रक्षस्व कुलमात्मन । त्वयाविभ्रंशिता हीयं भर्तारं नाधिगच्छति ॥ १९ ॥ तथा ब्रुवन्तं तमहं रामं परपुरञ्जयम् । नैतदेवं पुनर्भाविब्रह्मर्षे किं श्रमेण ते ॥ २० ॥ गुरुत्वं त्वयि सम्प्रेक्ष्य जामदग्न्य पुरातनम् । प्रसादये त्वा भगवंस्त्यक्तैषा तु पुरा मया ॥ २१ ॥ कोजातु परभावां हि नारीं व्यली

कहा कि क्या कारण है आज हमको आप युद्ध करनेकी आज्ञा देते हैं । १५ । हम तो आपही के शिष्य हैं क्योंकि चारप्रकारकी सब धनुर्विद्या आपही ने हमको पढ़ाई है । १६ । तब महाक्रोधकर परशुरामजी ने हमसे कहा हे भीष्म तुम हमको गुरुभी जानतेहो तौभी हमारे कहने से इस कन्याको ग्रहण नहीं करते । १७ । हे कुरुनन्दन जबतक काशिराजकी कन्याको तुम ग्रहण न करोगे चाहे जैसी प्रार्थना करो पर हमारी शान्ति तबतक अन्य किसी उपायसे न होगी । १८ । हे महाबाहु भीष्म इसका ग्रहण कर अपने कुलकी रक्षा करो क्योंकि यह तुम्हारेही भ्रष्ट करने से अब पति नहीं पाती । १९ । ऐसा कहते शत्रुओं के पुर जीतनेवाले रामने हमने कहा कि यहबात अब फिर होनकी नहीं है इस विषयमें आपके श्रम करने से कुछकार्य न होगा । २० । हे जामदग्न्यजी हम आपमें पुराना गुरुत्व देख वारर प्रार्थना करतेहैं इसका तो हमने पूर्वकालही में त्यागदिया । २१ । भला ऐसा कौन पुरुष है जो स्त्रियोंके महानाशक दोषों को जान फिर दूसरे पुरुषों चित्त

anger, but he would not be pacified. I bowed to that best of Brahmans and asked the reasons of his ordering me to fight I told him that I was his old pupil as he had taught me the four kinds of archery "You own me to be your preceptor," said he, "and yet you refuse to accept this girl by my order, My anger will not be pacified, however much you may entreat as long as you refuse to accept this girl. Protect your family from destruction, brave Bhishm, for she cannot get a husband on account of being polluted by your touch." On hearing this from Ram I said, "It is impossible. Your efforts in this matter are useless 20. I entreat you again and again because you are my old teacher. I have already forsaken her. No one will keep in his house a woman who loves another

मिव स्थिताम् । वासयेतगृहे जानन् स्त्रीणां दोषो महात्ययः ॥ २२ ॥ न भयाद्वासव स्यापि धर्मं जह्यां महाव्रत । प्रसीद मावा यद्वा ते कार्य्यं तत् कुरुमा चिरम् ॥ २३ ॥ अयश्चापि विशुद्धात्मन् पुराणे श्रूयते विभो । मरुत्तेन महाराजे गीतः श्लोकोमहात्मना ॥ २४ ॥ गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः । उत्पथप्रतिपन्नस्य परित्यागोविधीयते ॥ २५ ॥ स त्वं गुरुरिति प्रेम्णामया सम्मानितो भृशम् । गुरुवृत्तिं न जानीषेतस्माद्योत्स्यामि वैत्वया ॥२६॥ गुरुं न हन्यां समरे ब्राह्मणञ्चविशेषतः। विशेषस्तपोवृद्ध मेवंक्षान्तं मया तव ॥२७॥ उद्यतेषुमथो दृष्ट्वा ब्राह्मणं क्षत्रबन्धुवत् । यो हन्यात् समरे क्रुद्धं युध्यन्तमपलायिनम् ॥२८॥ ब्रह्महत्या न तस्यस्या दितिधर्मेषुनिश्चयः। क्षत्रियाणांस्थितोधर्मे क्षत्रियोस्मितपोधन॥२९॥योयथावर्त्ततेयस्मिंस्तस्मिन्नेव प्रवर्त्तयन् । नाधर्मं समवाप्नोति

लगाये हुई सर्पिणीके समान स्त्री को अपने घरमें वसावे कोई कभी नहीं रहनेदेगा । २२ । हे महाव्रत हम इन्द्रके भयसेभी धर्म्म नहीं छोड़सक्ते इस से चाहे प्रसन्न हूजिये व और जो करनाहो कीजिये परं देर न कीजिये । २३ । हे विशुद्धात्मा रामजी महाराज मरुत्त ने एक श्लोक गायाहै वह पुराण में सुनाई देताहै सुनिये । २४ । गर्वित पुरुष कार्य अकार्य को न जानकर कुमार्ग चलताहै शुभग्रन्थ कहतेहैं एसे गुरुका त्यागनाहै।उसमहै हम समरमें गुरुको न मारें ।फिर गुरु ब्राह्मणहो तो उसे विशेषतासे न मारें फिर जो तपोवृद्ध हो उसे तोऔर भी न मारें इस विचारसे आपकी बातें हमने सहीं । २६ । सो आप हमारे गुरु हैं इसी से प्रेम के साथ हम ने अत्यन्त मानकिया परन्तु आप गुरुकी वृत्ति जानतेही नहीं इससे अब तुम्हारे सङ्ग युद्ध करेंगे । २७ । क्योंकि लिखा है कि क्षत्रिय के समान आयुध हाथ में लिये युद्ध करने पर उतारू ब्राह्मणको क्रोध किये समर से न भागतेहुये को देख जो मारे उसको ब्रह्महत्या न लगै यह धर्म्मों में निश्चय है, यही क्षत्रियका धर्म्म है सो हम क्षत्रिय हैं और क्षत्रियों के धर्म्म में टिकेहैं । २९ । जो जिसके साथ

---

and is on that account dangerous like a serpent. I cannot forsake my dharm for the fear of Indra whether you like it or not. There is a verse composed by Marutta which is found in the *Purans* and which runs thus: "A self conceited man does not know the merits and demerits of his deeds and goes the wrong way." I would not kill a preceptor, and moreover if he be a Brahman and still more if he be old in asceticism. With this view I have borne your harsh words. You have been my teacher and I respect you as such, but as you donot behave like a teacher, I shall have no hesitation to fight. For the Shastras say that no sin attaches to him who kills an armed Brahman, ready to fight in a rage and not turning back

न चाश्रेयश्च विंदति ॥ ३० ॥ अर्थेवा यदिवा धर्मे समर्थो देशकाल वित्। अर्थ संशय मापन्नः श्रेयान्निः संशयो नरः ॥ ३१ ॥ यस्मात्संशयितेप्यर्थे ऽयथान्यायं प्रवर्त्तसे । तस्माद्योत्स्यामि सहितस्त्वयाराममहाहवे ॥ ३२ ॥ पश्यमे बाहुवीर्यंच विक्रमंचाति मानुषम् । एवं गते पितु मया यच्छक्य भृगुनन्दन ॥ ३३ ॥ तत् करिष्ये कुरुक्षेत्रे योत्स्येविप्र त्वयासह । द्वन्द्वे राम यथेष्टंमे सज्जीभव महाद्युते ॥ ३४ ॥ तत्रत्वं निहतोराम मया शरशतार्द्दितः । प्राप्स्यसे निर्ज्जितांल्लोकान्शस्त्रपूतो महारणे ॥ ३५ ॥ स गच्छ विनिवर्त्तस्व कुरुक्षेत्रं रणप्रियम् । तत्रैष्यामि महाबाहो युद्धायत्वां तपोधन ॥ ३६ ॥ अपि यत्र त्वयाराम कृतं शौचं पुरा पितुः । तत्राहमपि हत्वा त्वां शौचं

जैसा करे वह उसके साथ वैसाकरनेसे न अधर्म्महीको पाताहै न अकल्याणही को पाता ।३०। अर्थ में व धर्म्म देशकालके अनुसार समर्थ देशकालमें कुशल मनुष्य जब धर्म्मका लोपदेखे तो उसे चाहिये कि अर्थका छोड़दे उसमें फिर संशय न करै । ३१ । जिससे कि आप संशययुक्तभी हैं तोभी अर्थही में प्रवृत्तहैं इससे अब हम आपके साथ महारणमें युद्धकरेंगे कुछभी अन्तर न पड़ेगा । ३२ । हमारी बाहोंका वीर्य्य व अतिमानुष विक्रम आप देखें ऐसा होनेपरभी हमसे होसकेगा, वह कुरु- क्षेत्र में करेंगे अर्थात् आपके संग वहीं चलकर युद्धकरेंगे सोभी द्वन्द्वयुद्ध होगा आप तैयार हों । ३४ । वहां हमारे सैकड़ों बाणोंसे पीडितहो पवित्रतासहित प्राण त्यागकर अपराजित लोकोंको प्राप्तहोंगे । ३५ । इससे अब कुरुक्षेत्र को चलो इस कार्य्य से निवृत्तहोवो वह स्थान रण करने के योग्यहै हे तपोधन हम युद्धकरने के लिये वहीं आवेंगे । ३६ । क्योंकि तुमने भी पूर्व्वसमयमें उसी कुरुक्षेत्रमें क्षत्रियोंके रुधिरसे अपने पिताका तर्पणकियाहै व दशरात्रिमें अशौचसे शुद्धिपाईहै हमभी

from the field af battle. This is the duty of a kshatrya and I am firm on that duty. One replying tit for tat is not to be accused of adharm and cannot be liable to punishment. 30. He who is master of wealth and Dharm in consonance with time and place, should forsake wealth for dharm without hesitation. I shall fight with you because you lead me towards wordly matters (marriage) and advise me to forsake dharm (the vow of celibacy). You will see the strength of my arms and superhuman valour. I shall show you what I can at the field of Kurukshetra. There wounded with my numerous arrows you will give up your ghost in purity to depart to inconquerable world. Let us go to Kurukshetra to perform the work. That place is fit for a battle field and we shall

कर्त्तासि भार्गव ॥ ३७ ॥ तत्र राम समागच्छ त्वरितं युद्धदुर्मद । व्यपनेष्यामि ते दर्पं पौराणं ब्राह्मणब्रुवम् ॥ ३८ ॥ यच्चापि कत्थसे राम बहुशः परिवत्सर । निर्जिताः क्षत्रियालोके मयैकेनेति तच्छृणु ॥ ३९ ॥ न तदा जातवान् भीष्मः क्षत्रियो वापि मद्विधः । पश्चाज्जातानि तेजांसि तृणेषु ज्वलितं त्वया ॥ ४० ॥ यस्ते युद्धमयं दर्पं कामञ्च व्यपनाशयेत् । सोऽहं जातो महाबाहो भीष्मः परपुरञ्जयः । व्यपनेष्यामि ते दर्पं युद्धे राम न संशय. ॥ ४१ ॥ भीष्म उवाच ॥ ततो मामब्रवीद्रामः प्रहसन्निव भारत । दिष्ट्या भीष्म मया सार्धं योद्धुमिच्छसि सङ्गरे

गुरु आपको मार उसी रुधिरसे आपकेलिये तर्पणकर दशरात्रिमें शुद्ध होंगे क्योंकि पिता व गुरुके मरणमें दशरात्रिमें शुद्धि होती है । ३७ । हे युद्धकरने में दुर्मद राम अब तुरन्त वहांचलो अपनेको ब्राह्मणोंमें बड़े वीर मानतेहो तुम्हारा अहंकार हम दूरकरदेंगे । ३८ । हेराम जो तुम बकाकरते हो कि हमने बहुत वर्षोंतक इस पृथ्वीको क्षत्रियहीन कर दियाहै व हम अकेलेहीथे दूसरेकी सहाय हमनहींली उसका अभिप्राय सुनो । ३९ । तब भीष्म क्षत्रिय नहीं उत्पन्न हुआथा न भीष्मके तुल्य औरही कोई क्षत्रिय उत्पन्न था, तेज तो पीछेसे उत्पन्नहुये हैं तुमने कहीं सूखे तिनकोंमें अग्नि लगा दियाहोगा बलने लगेहोंगे । ४० । जो तुम्हारा युद्धमय अहंकार और काम नाश करेगा शत्रुओंके पुर जीतनेवाले वे भीष्म तो हम अब उत्पन्न हुयेहैं इससे हे राम तुम्हारा घमण्ड हम दूरकरदेंगे इसमें कुछभी सन्देह नहीं है । ४१ । भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि यह सुन हँसतेसे परशुरामजी हमसे बोले

---

meet there. Formerly you gratified the manes of your predecessors with the blood of the Kshatryas slain in that very field and purified yourself after ten nights. I shall gratify your mane with your own blood, after you are slain, and shall be purified after ten days, the same number of days being required for purity at the death of father and preceptor. Let us go there at once; I shall crush there your pride as you think yourself the most valliant of Brahmans. You often praise yourslf by saying that unaided and alone you cleared the earth of Kshattryas. But I say that no kshatrya like Bhishm was then in existence; you perhaps set fire to a heap of straw because no glory was born up to that time. 40. Bhishm the destroyer of the towns of enemies and subduer of your power is now on earth and will no doubt kiss the ground. "Happy am I,", said Parashuram on hearing this, " be-

॥ ४२ ॥ अथ गच्छामि कौरव्य कुरुक्षेत्रं त्वयासह । भाषितं ते करिष्यामितथा गच्छ परन्तप ॥ ४३ ॥ तत्र त्वां निहतं माता मया शरशताचितम् । जाह्नवी पश्यतां भीष्म गृध्रकङ्कबलाशनम् ॥ ४४ ॥ कृपणं त्वामभिप्रेक्ष्य सिद्धचारण सेविता । मया विनिहतं देवी रोदतामद्य पार्थिव ॥ ४५ ॥ अतदर्हा महाभागा भगीरथसुतानघा । या त्वामजीजनन्मन्दं युद्धकामुकमातुरम् ॥ ४६ ॥ एहिगच्छ मया भीष्म युद्धकामुक दुर्मद । गृहाणसर्वं कौरव्य रथादिभरतर्षभ ॥ ४७ ॥ इति ब्रुवाणं तमहं रामं परपुरञ्जयम् । प्रणम्य शिरसा रामं मेवमस्त्वित्यथाब्रुवम् ॥४८॥ एवमुक्त्वा, ययौरामः कुरुक्षेत्रं युयुत्सया । प्रविश्यनगरं चाहं सत्यवत्यै न्यवेदयम्

कि अहोभाग्य है जो कि भीष्म तुम हमारे साथ युद्ध करना चाहतेहो । ४२ । हे कौरव्य तुम्हारेसाथ अभी कुरुक्षेत्र को चलते हैं तुम्हारा कहाकरेंगे हे परन्तप लव- लिये । ४३ । वहां हमारे सैकडोंबाणों से हतेहुये तुमको तुम्हारी माता गंगा देखेगी जब सबरमें तुम्हारा मांस गीध चील्ह काग नोचर२ खायँगे । ४४ । व हमारे बाणों से वध कृपण. तुमको देख सिद्ध चारण गन्धर्व्वादि से सेवित गगाजी आजही तुमको देखेंगी । ४५ । यद्यपि बड़े भाग्यवाली पापरहित राजाभगीरथकी कन्या गङ्गाजी इस दुःख के देखने के योग्य नहीं हैं पर क्याकरें जब युद्धकरनेकी सबसे इच्छाकिये आतुर व मन्दबुद्धि तुम ऐसे पुत्रको उन्होंने उत्पन्न किया तो अब ऐसा महादुःख देखनाही पड़ेगा । ४६ । हे युद्धकामुक दुर्म्मद भीष्म यहां आ हमारे संग चल, अपने सब रथ हाथी घोड़े पैदलभी संगलेतेचल । ४७ । शत्रुओं के पुरोंके जीतनेवाले ऐसा कहते रामजी से हमने शिर झुकाय प्रणामकर कहा कि बहुत अच्छा ऐसाही हो । ४८ । ऐसा कह युद्ध करने की इच्छा से परशुरामजी तो कुरुक्षेत्र को चलेगये व नगर में आय हमने सब वृत्तान्त सत्यवतीजीसे कहा

caused you are prepared to fight with me. I shall go with you to Kurukshetra to do what you say. Let us go Your mother, Ganga will see you slain there by hundreds of my arrows and your body will become the food of vultures and kites. Ganga who in attended by Sidhas, Charans, Gandharvas and others, will see your fall to-day by my arrows. Ganga the fortunate daughter of raja Bhagirath though she does not merit the sight of such a weful scene, will have to bear it because she has produced a stubborn and foolish son like you. Come with me, proud Bhishm and take with you all your chariots horse and foot." At this point I bowed my head to Parashuram as a token of consent to his proposal. So when Parashuram had

॥ ४९ ॥ ततः कृतस्वस्त्ययनो मात्रा च प्रतिनन्दितः । द्विजातीन्वाच्य पुण्याहं स्वस्ति चैव महाद्युते ॥ ५० ॥ रथमास्थाय रुचिरं राजतं पाण्डुरैर्हयैः । सूपस्करं स्वधिष्ठानं वैयाघ्रपरिवारणम् ॥ ५१ ॥ उपपन्नं महाशस्त्रैः सर्वोपकरणान्वितम् । तत्कुलीनेन वीरेण हयशास्त्रविदा रणे ॥ ५२ ॥ यत्त सूतेन शिष्टेन बहुशोदृष्ट कर्मणा । दंशितः पाण्डुरेणाहं कवचेन वपुष्मता ॥ ५३ ॥ पाण्डुरं कार्मुकं गृह्य प्रायां भरतसत्तम । पाण्डुरेणातपत्रेण ध्रियमाणेन मूर्द्धनि ॥ ५४ ॥ पाण्डुरैश्चापि व्यजनैर्वीज्यमानो नराधिप । शुक्लवासाः सितोष्णीषः सर्वशुक्लविभूषणः ॥ ५५ ॥ स्तूयमानो जयाशीर्भिर्निष्क्रम्य गजसाह्वयात् । कुरुक्षेत्रं रणक्षेत्रमुपायां भरतर्षभ ॥ ५६ ॥ ते हयाश्चोदितास्तेन सूतेन परमाहवे । अवहन्मां भृशं राजन् मनोमारुतरंहसः ॥ ५७ ॥ गत्वाहन्तत् कुरुक्षेत्रं स च रामः प्रतापवान् । युद्धाय सहसा

। ४९ । तिसके पीछे माताकी आज्ञा पाय ब्राह्मणों से स्वस्त्ययन पढ़वाय, स्वस्ति वाचन पुण्याहवाचनभी द्विजेन्द्रों से कराय सुन्दर सब युद्धसामग्री समेत व्याघ्रचर्म्म से आच्छादित श्वेत घोड़े जुते, चांदीके बने महा अस्त्रों से भरे, अन्य सब सामग्री से पूरे, कुलीन, वीर वाजिविद्यामें निपुण रणमें कुशल, अतिशिष्ट, बहुततरहके कर्म्म करनेवाले सारथिसे युक्त, रथपर चढ़ कवच बखतर आदि धारणकर श्वेतही धनुष ले श्वेतछत्र लगाय, हम नगरसे बाहर निकले ।५३ व्यजनभी श्वेतही हमारे ऊपर होते, शुक्लही सब वस्त्र शुक्लही पगड़ी, सब भूषणभी शुक्लही धारण किये थे । ५५ । ब्राह्मणलोगोंसे जय के आशीर्वाद ले हस्तिनापुरसे निकल रणक्षेत्र में जा पहुँचे ।५६। उन घोड़ोंको उस रथ के सूतने ऐसा हांका कि वे हमको ले मन पवनके वेगसे चले । ५७। हे राजन इसप्रकार हम और प्रतापी परशुरामजी कुरुक्षेत्रमें जाय पर

---

gone towards Kurukshetra, I returned to Hasthinapur and told Satyavati what had happened. 49 Having obtained her permission with benedictions from Brahmans, I equipped myself with all the materials of war and rode in a chariot covered with lion's hide, drawn by white horses, inlaid with silver, full of all sorts of weapons and other materials and having for its driver a man of noble family and adept in war I put on my coat of mail and with a white bow and a white umbrella came out of the city White fans were waved over me, I wore white garments, white turban and white ornaments. With benedictions of Brahmans and prayers of victory, I came out of Hasthinapur and reached in time the field of Kurukshetra. The horses driven by my skilful chariot driver ran with the swiftness

राजन् पराक्रान्तौ परस्परम् ॥ ५८ ॥ ततः सम्दर्शने विप्रग्रामस्यातितपस्विनः । प्रगृह्य शंखप्रवरं ततः प्राधममुत्तमम् ॥ ५९ ॥ ततस्तत्र द्विजा राजंस्तापसाश्च वनौकसः । अपश्यन्त रणं दिव्यं देवाः सेन्द्रगणास्तदा ॥ ६० ॥ ततो दिव्यानिमाल्यानि प्रादुरासंस्ततस्ततः । वादित्राणि च दिव्यानि मेघवृन्दानि चैवह ॥ ६१ ॥ ततस्ते तापसाः सर्वे भार्गवस्यानुयायिनः । प्रेक्षकाः समपद्यन्त परिवार्य्य रणाजिरम् ॥६२॥ ततो मामब्रवीद्देवी सर्वभूतहितैषिणा । मातास्वरूपिणी राजन् किमिदं ते चिकीर्षितम् ॥ ६३ ॥ गत्वाहं जामदग्न्यन्तु प्रयाचिष्ये कुरुद्वह । भीष्मेण सह मा योत्सो शिष्येणेति पुनः पुनः ॥ ६४ ॥ मा मैवं पुत्र निर्बन्धं कुरु विप्रेण पार्थिव । जामदग्न्येनसमरे योद्धुमित्यवभर्त्सयत् ॥ ६५ ॥ किन्न वै क्षत्रियहणो हरतुल्यपराक्रमः । विदितः पुत्र

स्पर युद्धके लिये पराक्रम करने लगे । ५८ । फिर अति तपस्वी रामजीके सम्मुख खडेहो बडासुन्दर शंखले हम ने जोरसे बजाया । ५९ । हेराजन् उससमय वह युद्ध देखनेके लिये सब वनेवासी तपस्वी ब्राह्मणलोग आये व इन्द्रादि सब देवगण आय युद्ध देखनेलगे । ६० । देवताओं ने स्वर्ग से दिव्य पुष्पों की वर्षाकी बाजे भी आकाश में बाजे मेघों के वुन्दभी बजे । ६१ । जो तपस्वी परशुरामजीके संग थे वे समरभूमि में खडेहो चारोंओर से घेर देखनेलगे । ६२। उससमय हमारीमाता गंगा जीने दिव्य स्त्रीका स्वरूप धारणकर आय हम से कहा कि तुमने यह क्या विचारकिया है । ६३ । हे कुरूद्वह हम जाय परशुरामजी से प्रार्थना करेंगी कि अपने शिष्य भीष्मसे आप युद्ध न करें। ६४ । व हम से फिर यह कहा कि हेपुत्र ब्राह्मण के संग ऐसा हठ न करो, ब्राह्मणों मेंभी फिर जामदग्न्य के साथ, ऐसा कह हमको बहुत से प्रकार वचन कहे । ६५ । क्या हे पुत्र तुम नहीं जानते कि हर के

of wind. Thus glorious Parashuram and I went to the battle field of Kurukshetra to show our skill in the art of war. 58. Then I *stood in front of great glory and blew my beautiful conch with great* force. All the ascetics and Brahmans of the forest as well as Indra and other gods came there to witness the fight. 60. The gods sprinkled divine flowers from heaven and played musical tones and the clouds thundered forth their peals. The ascetics stood round Parashuram in the field of battle. In the meantime, my mother Ganga came to me in the shape of a divine woman and said to me, " What is this resolution of yours ? I shall go to Parashuram and entreat him not to fight with his disciple Bhishm." She again said to me, " Donot be rude with a Brahman like Jamadagnya, my son ! Do you not know that he is as strong as Har and the destroyer of

रामस्ते यतसत्वं योद्धुमिच्छसि ॥ ६६ । ततोऽहमब्रुवं देवीं मामभिवाद्य कृताञ्जलिः। सर्वं तद्भरतश्रेष्ठ यथावृत्तं स्वयम्वरे ॥ ६७ ॥ यथा च रामो राजेन्द्र मया पूर्वं प्रचोदितः । काशिराजसुतायाश्च यथा कर्म पुरातनम् ॥ ६८ ॥ ततः सा राम-मभ्येत्य जननी मे महानदी । मदर्थे तमृषिं वीक्ष्य क्षमयामास भार्गवम् ॥ ६९ ॥ भीष्मेण सह मायोत्सीः शिष्येणेति वचोऽब्रवीत् । स च तामाह याचन्तीं भीष्ममेव निवर्तय । नच मे कुरुते काम मित्यहन्तमुपागमम् ॥ ७० ॥ वैशम्पायन उवाच । ततो गङ्गा सुतस्नेहाद् भीष्मं पुनरुपागमत् । न चास्याश्चाकरोद्वाक्यं क्रोधपर्याकुलेक्षणः ॥ ७१ ॥ अथादृश्यत धर्मात्मा भृगुश्रेष्ठो महातपाः आह्वयामास च तदा युद्धाय द्विजसत्तमः ॥ ७२ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि गङ्गावाक्ये एकोनाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १७९ ॥

समान क्षत्रियों का विनाश करने वाले परशुराम से तुम लड़ाई किया चाहतेहो । ६६ । तब हमने हाथ जोड़कर माताासे सब स्वयम्वर का वृत्तांत कहा । ६७ । जैसा हमने भृगुनाथ से कहा था वा जैसा हमसे उनसे कहा था सब काशिराज की कन्या का समाचार हमने कहा तब मेरी माता जान्हवी भृगुनाथ के पासगई और मेरे हितके लिये उन विप्रकुल दीपसे क्षमा मांगकर कहा कि हे मुनीश अपने शिष्य भीष्मसे युद्ध न कीजिये यह सुनकर मेरी माता से परशुरामजीने कहा । ६९ । कि वह मेरा वचन नहीं मानता इसी कारण हम उससे युद्ध करना चाहते हैं । ७० । वैशम्पायन ने कहा कि तब सुत स्नेह से गंगा फिर भीष्म के पास गई परन्तु क्रोध वश भीष्मने उसका कहना न माना तब धर्मात्मा तपस्वी राम युद्धके लिये भीष्म को ललकारते हुए दिखाई दिये ॥ ७२ ॥

---

kshatryas, yet you wish to fight with him." At this with clasped hansd I told my mother what had happened from the time of Swayamvar as well as of the conversation that had occurred between Parashurâm and me about the princess of Kashi. My mother thereupon went to Parashuram and for my sake asked his forgiveness, saying, "Donot fight with your pupil, best of munis!" To her entreaties he gave the following reply, "Your son does not mind my word and therefore I shall fight with him." Vaishampayan says that out of filial love Ganga again came to Bhishm, but the latter angrily refused to obey her and then that great ascetic Parashuram was seen to challenge Bhishm to fight. 72.

भीष्म उवाच तमहं स्मयन्निव रणे प्रतिभाष्य व्यवस्थितम् । भूमिष्ठ नोत्सहे योद्धुं भवन्तं रथमास्थितः ॥ १ ॥ आरोह स्यन्दनं वीर कवचञ्च महाभुजम् । बधान समरे राम यदि योद्धुमयेच्छसि ॥ २ ॥ ततो मामब्रवीद्रामः स्मयमानो रणाजिरे । रथो मे मेदिनी भीष्म वाहा वेदाः सदश्ववत् ॥ ३ ॥ सूतश्च मातरिश्वा वै कवचं वेदमातरः । सुसंवीतो रणे ताभिर्योत्स्येऽहं कुरुनन्दन ॥ ४ ॥ एवं ब्रुवाणो गान्धारे रामो मां सत्यविक्रमः । शरव्रातेन महता सर्वतः प्रत्यवारयत् ॥ ५ ॥ ततोऽपश्यं जामदग्न्यं रथमध्ये व्यवस्थितम् । सर्वायुधवरे श्रीमत्यद्भुतोपमदर्शने ॥ ६ ॥ मनसा विहिते पुण्ये विस्तीर्णे नगरोपमे । दिव्याश्वयुजि सन्नद्धे काञ्चनेन विभूषिते ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १८० ॥

भीष्मजी बोले कि हम कुछ हँसतेसे रणमें खड़े परशुरामजी से बोले कि हम रथपरचढ़ भूमिपर पैदरखड़े आपसे युद्ध नहीं करसक्ते । १ । इस से हे वीर जो हमारे साथ युद्ध किया चाहतेहो तो रथपर सवारहो कवचादि बांधो । २ । यह सुनरामजी हम से हँसतेही से बोले कि भीष्म हमारे पृथ्वीही रथ है व वेदही अच्छे घोड़ों के समान वाहन हैं । ३ । सारथी पवनदेवहैं, कवच अन्तरिक्ष है, इन सबों से युक्त हम रण में युद्धकरेंगे हे कुरुनन्दन तुम इसका शोच न करो । ४ । हे दुर्योधन एसा कहते हुये रामने हमारे चारों ओर बाणों की वर्षा करदी । ५ । तिसके पीछे हम ने जो रामको देखा तो धनुर्बाण तरकस लिये अङ्गुलियों में घनघसे न कटने के लिये लोहेकी अँगूठी धारण किये, सर्वआयुध भरपुर, अति शोभित अद्भुतरूप मनसे बनाये, पुण्यरूप नगरके समान लम्बे चौड़े, दिव्य घोड़े जुते सब प्रकार युद्धता सहित बँधे सुवर्ण भूषित कवचसे युक्त होनेसे चन्द्र सूर्य के समान

CHAPTER CLXXX

Bhishm continued "I stood smiling before Parashuram in the field of battle and said to him, "How can I fight with you while you are on foot and I am riding a chariot? Ride on your chariot and put on your coat of mail if you wish to fight with me" At this Ram said to me with a smile, "I have the earth for my chariot, the Vedas for my horses, the wind for chariot driver and space for my panoply, thus armed, I shall fight in the field of battle. You need not feel any anxiety for me, Bhishm." With these words he showered his arrows all round me. When next I looked at him, I saw him armed with bow and arrows, iron rings to protect his fingers from being cut, equipped with other weapons, transforming himself

कवचेन महाबाहो सोमार्ककृतलक्षणा । धनुर्द्धरो बद्धतूणो बद्धगोधांगुलित्रवान् ॥८॥ सारथ्यं कृतवांस्तत्र युयुत्सोरकृतव्रणः । सखा वेदविदत्यन्त दयितो भार्गवस्य ह ॥९॥ आह्वयानः स मां युद्धे मनो हर्षयतीव मे । पुनः पुनरभिक्रोशन्नभियाहीति भार्गवः १०॥ तमादित्यमिवोद्यन्तमनाधृष्यं महाबलम् । क्षत्रियान्तकरं राममेकमेकः समासदम् ॥११॥ ततोऽहं बाणपातेषु त्रिषु वाहान्निगृह्य वै । अवतीर्य धनुर्न्यस्य पदातिर्ऋषिसत्तमम् ॥ १२ ॥ अभ्यागच्छं तदा राममर्चिष्यन् द्विजसत्तमम् । अभिवाद्य चैनं विधिवदब्रुवं वाक्यमुत्तमम् ॥ १३ ॥ योत्स्ये त्वया रणे राम सदृशेनाधिकेनवा । गुरुणा धर्मशीलेन जयमाशास्व मे विभो ॥ १४ ॥ राम उवाच । एवमेतत् कुरुश्रेष्ठ कर्त्तव्यं

प्रकाशित, रथपर चढ़हुये दिखाई दिये । ७ । युद्धकी इच्छा किये परशुरामजी का सारथ्य कर्म धनुर्वेद जाननेवाले अत्यन्त प्रिय, व भार्गवजी के सखा अकृतव्रण जी ने किया । ९ । तब भृगुनाथजी युद्ध में हमारे मनको हर्षितही से करते बारर पुकार सामने आवो सामने आवो ऐसा कहने लगे । १० । जब उन्हों ने ऐसा पुकार कहा तो सूर्यसमान उदित, ढिठाई करनेके अयोग्य, महाबल पराक्रमी क्षत्रियों के नाशक अकेले परशुरामजी को हमी अकेले मालहुये । ११ । तब हमने अपने घोड़ोंको उनके बाण चलाये हुये स्थानपर खड़ेकर, रथसे उतर धनुष भूमिपर रख पैदरही ऋषिसत्तम द्विजश्रेष्ठ रामकी पूजाकरते हुये उनके म॰ ।मकर विधिपूर्वक यह बचन कहा । १३ । कि हे राम अब चाहे आप हमारे समानहैं व अधिक हैं, पर हमारे गुरुहैं और धर्मशीलहैं आपसे हम युद्ध करेंगे पर हे स्वामिन् हमको आशीर्वाद दीजिये कि तुम्हारी जय हो । १४ । रामजी बोले कि हे महाबाहु भीष्म जो लोग अपने बड़ों के सङ्ग लड़ते हैं उनको ऐसाही करना चाहिये जैसा

---

at will in a wonderful form, and riding a chariot vast as a flourishing city which was strong, shining like the sun and the moon, inlaid with gold and drawn by divine horses. The driver of his chariot was his dear friend Akritvran skilful in archery. Then the Prince of Bhrigus cheered me by his repeated cry of "Come before me." 10 At these words of his, I alone faced Parashuram who is like the rising sun, invulnerable, of great prowess and strength and destroyer of Kshatryas. I checked my horses where his arrows had fallen and dismounting from it on foot, I put down on earth my bow and arrows. I bowed down to Ram and respectfully said. "Whether you be my equal or superior to me, Ram, you are my preceptor and are virtuous. I shall fight with you, but before doing so, I request you to bless me

भूतिमिच्छता । धर्मो ह्येष महाबाहो विशिष्टैः सह युध्यताम् ॥ १५ ॥ शपेयं त्वांन चेदेवमागच्छेथा विशाम्पते । युध्यस्वत्वं रणे यत्तो धैर्यमालम्ब्य कौरव ॥ १६ ॥ नतुते जयमाशासे त्वां विजेतुमहं स्थितः । गच्छ युद्धस्व धर्मेण प्रीतोस्मि चरितेनते ॥१७। ततोहं तं नमस्कृत्य रथमारुह्य सत्वरः । प्राध्मापयं रणे शंखंपुनर्हेमपरिष्कृतम् ॥१८॥ ततो युद्धं समभवन्मम तस्यच भारत । दिवसान् सुबहून् राजन् परस्परजिगीषया ॥ १९ ॥ स मे तस्मिन्रणे पूर्वं प्राहरत् कङ्कपत्रिभिः । षष्ट्या शतैश्च नवभिः शराणां नतपर्वणाम् ॥२०॥ चत्वारस्तेन मे वाहाः सूतश्चैव विशाम्पते । प्रतिरुद्धास्तथैवाहं समरे दंशितः स्थितः ॥ २१ ॥ नमस्कृत्यच देवेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विशेषतः । तमहं स्मयन्निवरणे प्रत्यभाषं व्यवस्थितम् ॥ २२ ॥ आचार्यता मानिता मेनिर्मर्यादे ह्यापि

तुमने किया ऐसाही धर्मभी है । १५ । हे राजन् जो अब हमसे ऐसाही युद्ध न करो तो तुमको सौगन्द धरातेहैं अब तैयारहो अवश्य रणमें हमसे युद्धकरो । १६ । हम अब तुम्हारी जयहोने को आशीर्वाद नहीं देसक्ते क्योंकि हम तुमको जीतने के लिये उपस्थितहैं अब जाओ धर्मसे युद्धकरो तुम्हारे आचरणसे हम बहुत प्रसन्न हुये । १७ । तब हमने मुनिराज को नमस्कार कर रथपर चढ़ सुवर्ण से भूषित शङ्ख हाथमें ले जोरसे बजाया । १८ । फिर हमारा उनका युद्ध बहुत दिनोंतक हुआ दोनों जने आपसमें अपनी २ जय एक दूसरेकी पराजय चाहतेरहे । १९ । अब प्रथम दिन के युद्धमें प्रथम उन्होंने हमारे ऊपर एकसै उनहत्तरबाण चलाये । २० । उनसे हमारे चारों घोड़े व सारथिकोभी आच्छादित करदिया, और सब कवचादि धारण किये हमकोभी आच्छादित किया । २१ । तबहम देवताओंको नमस्कारकर व विशेषरीति से ब्राह्मणोंको प्रणामकर हँसतेही से मुनिराजसे बोले

---

by saying that victory will be my lot." To this Ram replied "Those who fight with their elders, must say as you have said and it is right; but if you are unwilling to fight with me, I order you to prepare for it at once. I cannot give you a boon of victory as I have come to defeat you. Fight in accordance with Dharm, I am much pleased with your conduct." At this I bowed down to the muni and having mounted my chariot, blew my gold; filled conch very loudly. We both fought long and tried to defeat each other. In the first day's fight he discharged at me one hundred and sixtynine arrows. 20. His arrows covered my horses, the driver and myself having my armour on. I bowed down to the gods and the Brahmans especially and said to the muni with a smile, "I own you to be my

त्वयि । भूयश्च शृणु मे ब्रह्मन् सम्पद् धर्म संग्रहे ॥ २३ ॥ येते वेदाः शरीरस्था ॥ ब्राह्मण्यं यच्चते महत् । तपश्च तेमहत्तप्तं न तेभ्यः प्रहराम्यहम् ॥ २४ ॥ प्रहारे क्षत्र धर्मस्य यं त्वं राम समाश्रितः । ब्राह्मणः क्षत्रियत्वंहि याति शस्त्रसमुद्यमात् ॥ २५ ॥ पश्य मे धनुषोवीर्यं पश्य बाह्वोर्बलं मम । एष ते कार्मुकंवीर छिनद्मि निशितेषुणा ॥ २६ ॥ तस्याह निशितं भल्लं चिक्षेपभरतर्षभ । तेनास्य धनुषः कोटिं छित्वा भूमावपातयम् ॥ २७ ॥ तथैवच पृषत्कानां शतानि नतपर्वणाम् । चिक्षेप कंकपत्राणां जामदग्न्य रथं प्रति ॥२८॥ काये विषक्तास्तुतदा वायुनासमुदीरिताः । चेलुः क्षरन्तो रुधिरं नागाइवच ते शराः ॥ २९ ॥ क्षतजो क्षितसर्वांगः क्षरन् स रुधिरं रणे । बभौ रामस्तदा राजन् मेरुर्धातु मि

। २३ । कि यद्यपि आप मर्यादाहीन हैं, तथापि हमने आपको आचार्यता मानी अब धर्म संग्रह करने में हमारा औरभी वचन आपसुनें, । २३ । जो वेद आपके शरीर में टिके हैं व जो आप का बड़ाभारी ब्रह्मकर्म है और जो आपने बड़ाभारी तप किया है हम तुम्हारे इन सबोंके ऊपर प्रहार नहींकरते । २४ । किन्तु तुम्हारे क्षत्रिय धर्म के ऊपर प्रहार करतेहैं, जिसपर तुम सवाररहो, क्योंकि शस्त्रधारण करनेसे ब्राह्मण क्षत्रियत्वको प्राप्त होजाताहै । २५ । अब हमारे धनुषका वीर्य देखो और हमारे बाहोंकाभी बलदेखो, अभी तीक्ष्णबाणसे तुम्हारा धनुष काट डालतेहैं । २६ । यहकह हमने उनके ऊपर तीक्ष्णबाण चलाया, उससे उनके धनुषकी कोटि काट भूमिपर गिरादिया ।२७। फिर सौ बाण बड़ेतीव हमने कानतक प्रत्यञ्चा खींच उनके रथ के ऊपर छोड़े । २८ । वे सब जाय परशुरामजी के शरीरमें लगे और घुसगये, फिर सर्पों के समान घुसकर निकलभी आये उनके घावों से रुधिर बहनेलगा । २९ । हे राजन् सर्वाङ्गोंसे रुधिर बहाते परशुरामजी ऐसे शोभितहुये कि मानों गेरु बहा-

---

preceptor, although you are lawless. Hear what I say about dharma. I donot attack the Vedas staying in your body, your great religious deeds and your asceticism, but on your warlike character in which you are now standing; for a Brahman becomes virtually a kshatrya when he takes up arms. See the strength of my bow and arms; I shall cut your bow down with my sharp arrow." Having said this I discharged a sharp arrow at him and cut down his bowstring. I then shot a hundred arrows at his chariot, drawing my bowstring up to my ear. The arrows pierced the body of Parashuram right through till blood oozed out from his wounds and he looked like a hill whose

घोतृसृजन् ॥ ३० ॥ हेमन्तान्तेऽशोक इव रक्तस्तबकमण्डितः । बभौ रामस्तथा राजन् प्रफुल्ल इव किंशुकः ॥ ३१ ॥ ततो न्यद्धनुरादाय रामः क्रोध समन्वितः । हेम पुंखान् सुनिशितान् शरांस्तान् हि ववर्षसः ॥ ३२ ॥ ते समासाद्य मां घोरा बहुधा मर्म भेदिनः अकम्पयन् महावेगाः सर्पानल विषोपमाः ॥ ३३ ॥ तमहं समवष्टभ्य पुनरात्मानमाहवे शत संख्यैः शरैः क्रुद्धस्तदा राममवाकिरम् ॥ ३४ ॥ सतैरग्न्यर्कसंकाशैः शरैराशी विषोपमैः । शितैरभ्यर्दितो रामो मन्दचेता इवा भवत् ॥ ३५ ॥ ततोहं कृपयाविष्टो विष्टभ्यात्मा नम स्वना । धिग्युं धिगत्यब्रुवं युद्धं क्षत्रधर्मंच भारत ॥ ३६ ॥ असकृच्च ब्रुवं राजन् शोकवेग परिप्लुतः । अहोवत कृतं पापं मयेदं क्षत्र धर्मणा ॥ ३७ ॥ गुरुर्द्विजातिर्धर्मात्मायदेवं पीडितः शरैः । ततो न प्राहरम्भूयो जामदग्न्याय भारत ॥ ३८ ॥

ताहुआ पर्वत शोभितहो । ३० । और लाल पल्लवयुक्त अशोक जैसे शिशिरऋतु में शोभितहोता है व वसन्त में जैसे पलाश शोभित होता वैसे ही रामजी रुधिर बहने के हेतु शोभितहुये । ३१ । तब दूसरा धनुषहाथमें लेकर अति क्रुद्धहो बाण वर्षाकी वे मर्मभेदी बाण मेरे शरीर में लगे और विषधर सर्प के काटनेकीभांति हमारे शरीर को कम्पा दिया । ३३ । उनको सहकर हम ने भी सैकड़ों बाण हर्ष सहित बलपूर्वक उनपर चलाये । ३४ । अग्निकी समान तेजवाले और विषधर सर्पकी समान उनतीरों से बाधितहोकर मुनीश पीड़ा से अचेतहोगये । ३५ । तब हम ने करुणासे मन में अति शोच किया और रणकर्म तथा क्षत्रिय धर्मको धिक्कार कहा बार बार शोकसे अधीरहोकर हम ने कहा कि हाय क्षत्रियके धर्म से हम ने यह पाप किया गुरु ब्राह्मण और धर्मात्माको हम ने बाण से पीड़ितकरके निंदितकर्म किया यह समझकर हम ने राम के अधिक बाण न मारे और सन्ध्या

---

red stone is washed away with water. 30. He looked like an Asok tree in winter or like a Palas tree in spring. Then he took up another bow in his hand and in great anger showered at me sharp arrows which made my body tremble like a venomous snake. I bore all those arrows and cheerfully shot at him hundreds of mine with great force. With those arrows, glorious like fire or like venomous snakes, the Muni was wounded and fell into a swoon with pain. I was greatly moved at the sight and blamed my warlike work, saying impatiently, "Alas! I have committed this sin in the midst of fight. I have done a wicked deed by wounding a virtious Brahman!" With those thoughts I shot no more arrows at Parashuram; but at

अथावतीर्य पृथिवीं पुनः दिवससंक्षये । जगामास्तं सहस्रांशुस्ततो युद्धमुपारमत् ३९ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि भीष्मरामयुद्धे भीष्मपश्चात्तापे अशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८० ॥

भीष्म उवाच ॥ आत्मनस्तु ततः सूतो हयानांच विशाम्पते । मम चापनयामास शल्यान्कुशल सम्मतः ॥ १ ॥ स्नातोपवृत्तैस्तुरगैर्लब्धतोयैरविह्वलैः । प्रभाते चोदिते सूर्ये ततो युद्ध मवर्तत ॥ २ ॥ दृष्ट्वामां तूर्णमायान्तं दंशित स्यन्दने स्थितम् । अकरोद्रथमत्यर्थं रामः सज्जं प्रतापवान् ॥ ३ ॥ ततोहं राम मायान्तं दृष्ट्वासमरकांक्षिणम् । धनुःश्रेष्ठं समुत्सृज्य सहसावतरं रथात् ॥ ४ ॥ अभिवाद्य तथैवाहं रथमारुह्यभारत

के समय जब सूर्य अस्तहुये तो हम युद्धस्थलसे चले गये १९ ॥ * * *

अध्याय १८१ ॥

भीष्म जी दुर्योधनसे बोले कि फिर हमारेसारथि ने अपने अंगों में सबघोड़ों के अंगों में व हमारशरीर में जितनवाण गड़े थे सब निकाले, क्योंकि वह बड़ा कुशल सूतथा । १ । घोड़े रथ से छूटते पहिले तो अच्छीतरह लोटे फिर खूबधोये गये उसके पीछे पानी पिलाय बांधेगये सब उनकी थकावट जातीरही, रात्रि में दाना चारा खाय फिर ज्योंके त्योंहुये इतनेमें सूर्योदयहुआ फिर युद्धहोनेलगा २ हमको कवच बख्तर आदि धारण किये रथपर चढ़े शीघ्रआते देख प्रतापवान परशुराम जीने भी अपना एकरथ तैयार किया ।३। तब हम युद्धकरनेकी इच्छासे जामदग्नि जीको आते देख अपना श्रेष्ठ धनुष रथहीपर छोड़ झटपट रथ से उतर

---

the close of the day, when the sun was about to set, I returned from the field of battle. 39.

CHAPTER CLXXXI

Bhishm continued to say to Duryodhan, "The driver of my chariot who was a very skilful man, drew out arrows from his own body, from mine and from those of horses. The horses, as soon as they were released from the chariot, rolled on the ground and after being washed well they were supplied with food and drink with great care. They were then tied and given rest for the night. Their fatigue had all disappeared when the day dawned and fight was renewed. Seeing me riding my chariot in haste with my armour on, glorious Parashuram ordered his own chariot to be prepared and seeing

युयुत्सुर्जामदग्न्यस्य प्रमुखे वीतभीः स्थितः ॥ ५ ॥ ततोऽहं शरवर्षेण महता समवाकिरम्। स च मां शरवर्षेण वर्षन्तं समवाकिरम् ॥ ६ ॥ संक्रुद्धो जामदग्न्यस्तु पुनरेवसुतेजितान्। सं प्रैषीन्मे शरान् घोरान् दीप्तास्यानुरगानिव ॥ ७ ॥ ततोऽहं निशितैर्भल्लैः शतशोथ सहस्रशः। अच्छिदं सहसा राजन् नन्तरिक्षे पुनः पुनः ॥ ८ ॥ ततस्त्वस्त्राणि दिव्यानि जामदग्न्यः प्रतापवान्। मयि प्रयोजयामास तान्यहं प्रत्यषेधयम् ॥ ९ ॥ अस्त्रैरेव महाबाहो चिकीर्षन्नधिकां क्रियाम्। ततो दिवि महानादः प्रादुरासीत्समन्ततः ॥ १० ॥ ततोऽहमस्त्रं वायव्यं जामदग्न्ये प्रयुक्तवान्। प्रत्याजघ्ने च तद्रामो गुह्यकास्त्रेण भारत ॥ ११ ॥ ततोऽहमस्त्रमाग्नेयमनुमन्त्र्य प्रयुक्तवान्। वारुणेनैव

पर। ४। व परशुरामजी को प्रणाम कर फिर युद्धकरनेकी इच्छासे झट अपनेरथ परचढ उनके सन्मुख निर्भयहो खडेहोगये। ५। फिर हम ने उनके ऊपर बडीभारी बाणों की वर्षाकी हमको शर वर्षाते देख उन्होंने भी हमारे ऊपर तीरों की झड़ी लगादी। ६। फिर क्रोधकर जामदग्निजीने बडेतीक्ष्ण अतिघोर बाण महा विषधर सर्पोंके समान फुफकार करतेहुये चलाये। ७। हे राजन् परन्तु हमने बार २ उनके चलाये उन सब बाणोंका सैकडों हमारों अतितीखे शरोंसे अन्तरिक्षही में काटडाला। ८। फिर महामनापी परशुरामजीने हमारे ऊपर दिव्य अस्त्र चलाये उनको हमने अपने दिव्यास्त्रोंसे काटडाला। ९। जब इसप्रकार उनकी हमारी ओरसे अति विकराल बाणावर्षाहुई तो आकाशमें सबओरसे बडाभारी हल्लाहुआ। १०। हे भारत तब हमने भृगुनाथजी के ऊपर वायव्यास्त्र चलाया, उसे उन्होंने गुह्यकास्त्रसे काटडाला। ११। तब हमने मन्त्रसे अभिमन्त्रितकर अग्न्यास्त्र चलाया

---

him coming to fight, I put my bow over the chariot and made haste to dismount from it. I saluted Parashuram and forthwith mounting my chariot, I stood before him fearlessly. I sent forth a shower of arrows at him and he replied me by a thicker shower. In great anger he discharged very sharp arrows hissing like venomous serpents but I cut them down in the air with thousands of mine own. Parashuram of great glory then discharged divine weapons at me and I cut them down with mine. As we were thus sending forth showers of arrows on each other there was a tremendous noise in the air. 10. I discharged my air missile at him and he cut it down with his Guhyak missile. I then discharged at him a fire missile, but he checked it by a water one. Thus Ram and I checked the weapons of each other; for he is exceedingly glorious

तद्रामो वारयामासमे विभुः॥१२॥एवमस्त्राणि दिव्यानि रामस्याहमवारयम्। रामश्चमम तेजस्वी दिव्यास्त्रविदरिन्दमः ॥ १३ ॥ ततो मां सव्यतो राजन् रामः कुर्वन् द्विजोत्तमः । उरस्यविध्यत् संक्रुद्धो जामदग्न्यः प्रतापवान् ॥ १४ ॥ ततोऽहंभरत श्रेष्ठ सन्न्यपीदं रथोत्तमे । ततो मां कश्मलाविष्टं सूतस्तूर्णमुदावहत् ॥ १५ ॥ ग्लायन्तं भरतश्रेष्ठ रामबाणप्रपीडितम् । ततो मामपयान्तं वै भृशंविद्धमचेतसम् ॥ १६ ॥ रामस्यानुचरा हृष्टाः सर्वे दृष्ट्वा विचुक्रुशुः । अकृतव्रणप्रभृतय काशिकन्या च भारत ॥ १७ ॥ ततस्तु लब्धसंज्ञोऽहं ज्ञात्वा सूतमथाब्रुवम् । याहि सूत यतो रामः सज्जोऽहं गतवेदनः ॥ १८ ॥ ततो मामवहत् सूतो हयैः परमशोभितैः । नृत्य

वसे उन्होंने बँरुणास्त्रसे रोकलिया । १२ । इसीप्रकार हमने रामजीके दिव्यास्त्रों को रोका व उन्हों ने हमारे दिव्यास्त्रोंको रोका क्योंकि वे तो बड़े तेजस्वी व शत्रुओं के नाशक हैं क्योंकर रोकें । १३ । तब हे राजन् हमको बाईंओर कर आप भट दाहिनी ओर से अति क्रोधकर महाप्रतापी उन्हों ने हमारी छाती में बाण मारे । १४ । कि हमको मूर्च्छा आगई रथपर गिरगये तब हमें मूर्च्छित जान हमारा सारथि रथ थोड़ीदूर हटा लेगया व हमको उठाय गोदमें बैठाय रथपर बैठ रहा । १५ । तब हे भरत श्रेष्ठ रामबाणों से पीड़ित, अत्यन्त मरणतुल्य अचेत रण से कुछदूर अलग रथपर सूतकी गोदमें पड़े देख, अकृत ब्रणादि रामजी के शिष्य व काशिराजकी कन्या अम्बा ये सब बड़े प्रसन्नहुये व बड़े जोरसे हल्ला करनेलगे । १७ । तब जब हमारी मूर्च्छा जगी सूतके मुखसे मूर्च्छित समयके समाचार जान सारथि से कहा कि अब हमारी व्यथा जातीरही जहां रामजी हैं अतिवेगसे वहीं पहुँचावो । १८ । तब हमारा सूत हमको चालमें पवनकेसमान नाचतेहुये परमशो-

---

and a great destroyer of foes. Then the glorious one coming of a sudden to my right hand and aiming his arrows at my breast, I swooned and fell down within my chariot. Seeing me in this state, the driver drove my chariot to some distance and there sat with my head on his lap. Seeing me wounded with the arrows of Ram, senseless like one dead and lying on the chariot in the lap of the driver at a distance from the field of battle, Akritvran as well as the disciples of Ram and Amba the princess of Kashi were much overjoyed and cried for joy. Again, when my consciousness was restored and I had heard all that had passed during my unconsciousness, I told the driver that I was in a fit state to go to war again and that he should drive the chariot to the field of battle. The driver drove the

द्विरिव कौरव्य मारुतप्रतिमैर्गतौ ॥ १९ ॥ ततोऽहं राममासाद्य बाणवर्षैश्च कौरव। अवाकिरं सुसंरब्ध-संरब्धञ्च जिगीषया ॥ २० ॥ तानापतत एवासौ रामो बाणानजिह्मगान्। बाणैरेवाच्छिनत्तूर्णमेकैकं त्रिभिराहवे ॥ २१ ॥ ततस्ते मुदिताः सर्वे मम बाणाः सुसंशिताः। रामबाणैर्द्विधाच्छिन्नाः शतशोथ सहस्रशः ॥ २२ ॥ ततःपुनः शरंदीप्तं सुभद्रं कालसम्मितम्। असृजं जामदग्न्याय रामायाहंजिघांसया ॥ २३ ॥ तेन त्वभिहतो गाढ बाणवेगवशङ्गतः। मुमोह समरे रामो भूमौ च निपपातह ॥२४॥ ततो हाहाकृतं सर्वं रामे भूतलमाश्रिते। जगत् भारत सम्विग्नं यथार्कपतने भवेत् ॥ २५ ॥ तत एनं समुद्विग्नाः सर्वे एवाभिदुद्रुवुः। तपोधनास्ते सहसा काश्याच कुरुनन्दन ॥ २६ ॥ ततं एनं परिष्वज्य शनैराश्वासयंस्तदा। पाणिभिर्जलशीतैश्च जयाशीर्भिश्च कौरव ॥ २७ ॥ ततः स विह्वलं वाक्यं रामउत्थाय चाब्रवीत्। तिष्ठ

भिव घोड़ेजुते रथको चलाय रणभूमि में लेगया । १९ । तब हमने अतिक्रोधकर अतिहीक्रुद्ध परशुरामजी के जीतनेकी इच्छा से उनके ऊपर बाणों की बड़ीभारी वर्षाकी । २० । सीधे चले जातेहुये उन हमारे प्रत्येक बाणोंको रामजी ने तीन २ बाणोंसे बड़ी शीघ्रता के साथ काटडाला० । २१ । इससे जितने हमारे बाण थे रामके बाणोंसे कट २ दो २ खण्डहो पृथ्वीपर गिरपड़े । २२ । तब हमने कालसमान महान एकबाण ले मारही डालनेके विचारसे परशुरामजी के ऊपर चलाया । २३ । उस बाणके लगनेसे महाप्रतापी रामजी समरमें अतिव्याकुलहो मूर्च्छित हो रथसे पृथ्वीपर गिरपड़े । २४ । जबराम भूमिपर गिरेतो हाहाकरके सब लोग व्याकुल होगये जैसे रविके गिरने पर सबजगत् व्याकुलहोजावे तबसबतपस्वी और काशिपुत्री अति व्याकुल होकर रोनेलगे । २६ । तबराम सबको लिपट गये और उनको पैर्यदेकर जल को स्पर्श किया और जयकी आशिषपाई । २७ । तब रामने

---

horses who were dancing like the wind and brought me again in the field. Then in anger, in order to subdue Ram of exceedingly hot temper, sent forth on him a thick shower of my arrows. 20. But Ram cut down all my arrows, going straight towards him, with his own, and their pieces fell down on earth. Then I discharged an arrow, like Death, to kill Parashuram who fell down from his chariot, losing his consciousness with the pain, as soon as it pierced through his body. All the people began to cry in grief, when he fell on the ground and were distressed as if the world was falling off on account of the sun leaving his place. All the ascetics with the princess of Kashi wept for him. At that time Ram stood up and consoled them

भीष्मद्दतोसीति वाणं सन्धायकार्मुके ॥ २८ ॥ स मुक्तो न्यपतत्तूर्णं सव्ये पार्श्वे महाहवे । येनाहं भृशमुद्विग्नो व्याघूर्णित इव द्रुमः ॥ २९ ॥ हत्वा हयांस्ततोरामः शीघ्रास्त्रेण महाहवे। अवाकिरन्मां विश्रब्धो वाणैस्तैर्लोमवाहिभिः ॥ ३० ॥ ततोहमपि शीघ्रास्त्रं समरप्रतिवारणम् । अवासृजं महावाहो तेन्तराधिष्ठिताः शराः ॥ ३१ ॥ रामस्यमम चैवाशु व्योमावृत्यसमन्ततः । न स्म सूर्य्यः प्रतपति शरजालसमावृतः ॥ ३२ ॥ मातरिश्वा ततस्तस्मिन् मेघरुद्ध इवाभवत् । ततो वायोः प्रकम्पाच्चसूर्यस्यच गभस्तिभिः ॥ ३३ ॥ अभिघातप्रभावाच्च पावकः समजायत । ते शराः स्वसमुत्थेन प्रदीप्ताश्चित्रभानुना ॥ ३४ ॥ भूमौ सर्वे तदा राजन् भस्मभूताः प्रपेदिरे । तदा शतसहस्राणि प्रयुतान्यर्बुदानिच ॥ ३५ ॥ अयुतान्यथ खर्वाणि निखर्वाणि च कौरव। रामः शराणां संक्रुद्धो मयि तूर्णं न्यपातयत् ॥ ३६ ॥ ततोहं तानपिरणे

विह्वलहोकरमुझसे कहा कि हेभीष्म धनुषलेकर मेरे सम्मुख आओ और मरनेकी तयारी करो यह कहकर रामने वाण चलाया जो कि मेरे वांयेपार्श्व में छिदगया और मैं व्याकुल होगया । २९ । फिर तीक्ष्ण वाणों से मेरे घोड़ोंको रामने घायल किया और मेरे वहुत से वाण मारे । ३० । तव हमने भी वहुतसे शीघ्रगामी वाण मारे मेरे और परशुराम के वाणोंसे आकाश पूरित होगया और सूर्यका प्रकाशकमहो गया वादलोंकी समान वह वाण आकाश में फैलगये और सूर्य की शोभायुक्त किरणोंको ढकालिया । ३१ । तव वायु में एक ओर अग्नि प्रकट हुआ और सव वाणोंको एकदम जला दिया सववाण भस्महोकर पृथ्वीपर गिरपड़े तव क्रोधकरके मेरे ऊपर राम सहस्रों वाण छोड़े और हमनेभी सर्पोंकीसमान अपने वाणोंसे उन के

---

by clasping them in his arms. Then he touched water and prayed for victory. Having done this, Ram, with a troubled mind asked me to face him with my bow and to prepare myself for death. Having said this, he shot me with a hard arrow on my left side and made me uneasy by the wound. He then wounded my horses with sharp arrows and discharged many more at me. 30. I too shot him with many swift arrows. The sky was overcast with our arrows and the light of the sun gave way. They spread themselves in the air and hid the rays of the sun. Then they took fire in the air and were burnt down into ashes. At this Ram was very angry and discharged at me thousands of his arrows which I cut down with my serpent like arrows. Amid such hard fighting the day closed and as

शरैराशीविषोपमैः । सांछिद्यभूमौ नृपते पातयेयं नगानिव ॥ ३७ ॥ एवं तदभवद्युद्धंतदा भरतसत्तम । सन्ध्याकाले व्यतीतेतु व्यपायात्सचमे गुरुः ॥ ३८ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि भीष्मरामयुद्धे एकोनाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८१ ॥

भीष्मउवाच ॥ समागतस्य रामेण पुनरेवाति दारुणम् । अन्येद्युस्तुमुलं युद्धं तदाभरत सत्तम ॥ १ ॥ ततो दिव्यास्त्र विच्छूरो दिव्यान्यस्त्राण्य नेकशः । अयोजयत् स धर्मात्मा दिवसे दिवसे विभुः ॥ २ ॥ तान्यहं तत् प्रतीघातै रस्त्रैरस्त्राणि भारत । व्यधमन्तुमुले युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा सुदुस्त्यजान् ॥ ३ ॥ अस्त्रै रस्त्रेषु बहुधा हतेष्वेवच भारत । अक्रुध्यतमहातेजास्त्यक्तप्राणः ससंयुगे ॥ ४ ॥ ततः शक्तिंप्राहिणोद्घोररूपा मस्त्रे रुद्धे जामदग्न्यो महात्मा । कालोत्सृष्टां प्रज्वलिता मिवोल्कां सन्दीप्ताग्रां तेजसा

वाण काटडाले जब इसप्रकार कठोर युद्ध हुआ तब सन्ध्या समय होने पर मेरे गुरु अपने स्थानको गये और मैं अपने स्थानको लौटा ३८ ॥

अध्याय ॥ १८२ ॥

भीष्मजी दुर्योधनजीसे बोले कि प्रातःकाल होतेही और दिन फिर परशुराम जीसे अतिदारुण रणसंकुल युद्धहुआ ।१। प्रतिदिन दिव्यास्त्र जाननेवाले महाशूर वीर परशुरामजी अनेक शस्त्रास्त्र चलातेथे इसमें रोज २ नयाही युद्ध विदित होता था ।२। हे भारत उनबाणोंको जिनसे वे कटने के योग्य थे वैसे बाणों से हमने काटडाले, हमने प्राणोंकी आशा उस महाभयानक युद्धमें छोड़दीथी । ३ । जब इस प्रकार अस्त्रों से अस्त्र काटेगये तो उन महात्मा ने भी अपने प्राणोंकी आशा छोड़ युद्धकरनेका प्रारम्भकिया । ४ । जब उनके सब अस्त्र रुकगये, तो महात्मा परशुराम जी ने हमारे ऊपर अतिघोररूप, कालकी छोड़ी उल्काके समान प्रकाशित आगे

the approach of evening both my preceptor and myself returned to our respective camps." 38.

CHAPTER CLXXXII

Bhishm continued the naration thus to Duryodhan. "Early the next morning I fought another hard contested fight with Parashuram. Everyday he discharged various sorts of weapons and missiles, because he was exceedingly brave and knew the use of divine weapons. Each day he fought in a new way. I used to cut his arrows with mine own of similar quality. I had no hope of escape with my life from that dreadful fight. When thus weapons were being cut by weapons, that great man too lost all hope of his own life and continued the war. When he had all his weapons checked, he discharged at

चाप्य लोकम् ॥ ५ ॥ ततोहन्तामिपुभिर्दीप्यमानां समायान्तीमन्तकालार्कदीप्ताम् । छित्वा त्रिधा पातयामास भूमौ ततो ववौ पवनः पुण्यगन्धिः ॥ ६ ॥ तस्यां छिन्नायां क्रोधदीप्तोथ रामः शक्तीर्घोराः प्राहिणोद् द्वादशान्याः । तासां रूपं भारत नोत शक्यं तेजस्वित्वाल्लाघवाच्चैव वक्तुम् ॥ ७ ॥ किन्त्वेवाहं विह्वलः सम्प्रदृश्य दिग्भ्यः स- र्वोस्ता महोल्का इवाग्नेः । नानारूपास्तेजसोग्रेण दीप्ता यथा दित्याद्वादश लोक संक्षये ॥ ८ ॥ ततो जालं बाणमयं विवृत्तं सन्दृश्य भित्वाशरजालेन राजन् । द्वादशेषून्प्राह णयं रणेहं ततः शक्ती रध्यधमं घोर रूपाः ॥९॥ ततो राजन् जामदग्न्यो महात्मा शक्ती

चद्राकार वरती तेजसे लोकभर में प्रकाशित शक्ति चलाई । ५ । तब हमने सूर्य सत्प्रकाशित सम्मुख चलीआती कालसमयके प्रचण्ड के तुल्य प्रज्वलित उस शक्ति को अपने बाणोंसे काट तीनखण्डकर पृथ्वीपर गिरादिया उससमय सुगन्धित पवन बहनेलगा । ६ । हे भारत जब वह शक्ति काटडाली गई तो अतिक्रोधकर महात्मा परशुरामजीने उससे अतिघोररूप बारहशक्तियां एकही संग हमारे ऊपर चलाई, हे भारत उन शक्तियोंका रूप अतितेजहोने व अतिचंचल होनेके कारण वर्णन नहीं करसक्ते ।७। किन्तु सब दिशाओंसे अग्निकी महाउल्काओंकेसमान आती हुई उनशक्तियोंको देख हम बड़ेव्याकुलहुये उन बारहोंके नानाप्रकारके भिन्नभिन्न रूपथे व उग्रतेजसे महाप्रलय के बारहों सूर्यों के समान प्रकाशितथीं । ८ । उन्हीं शक्तियों के चारोंओर बाणों का कराल जालभी मुनिपालने छोड़ाथा उसको फैला देख हमने प्रथम बाणजालसे काट डाला, फिर बारह अति भिकरालबाण उन बारह शक्तियों के ऊपर एकही संग चलाये कि वे सब जहां की तहां नष्ट होगई

घोरा ह्याक्षिपद्धेमदण्डाः । विचित्रिताः कांचनपट्टनद्धा यथा महोल्का ज्वलितास्तथा ताः ॥ १० ॥ ताश्चाप्युग्राश्चर्मणा वारयित्वा खड्गेनाजौ पातयित्वा नरेन्द्र । बाणैर्दिव्यैर्जामदग्न्यस्य संख्ये दिव्यानश्वानभ्यवर्षं समन्तात् ॥ ११ ॥ निर्मुक्तानां पन्नगानां सरूपा दृष्ट्वा शक्तीर्हेम चित्रा निकृत्ताः । प्रादुश्चक्रे दिव्यमस्त्रं महात्मा क्रोधाविष्टो हैहयेशप्रमाथी ॥ १२ ॥ ततः श्रेण्यः शलभानामिवोग्राः समापेतुर्विशिखानां प्रदीप्ताः । समाचिनोच्चापि भृशं शरीरं हयान् सूतं सरथञ्चापि मह्यम् ॥ १३ ॥ रथः शरैर्मे निचितः सर्वतो भूत्तथा हयाः सारथिश्चैव राजन् । युगं रथेषाञ्च तथैव चक्रे तथैवाक्षः शरकृत्तोऽथ भग्नः ॥ १४ ॥ ततस्तस्मिन्बाणवर्षे व्यतीते शरौघेण प्रत्यवर्षं गुरुन्तम् । सविक्षतो मार्गणैर्ब्रह्मराशिर्देहाद्धस्रं मुमुचे भूरि रक्तम् ॥ १५ ॥ यथा रामो बाणजालाभितप्तस्तथै

। ९ । तब जामदग्न्य जी ने महान क्रोध करके अति घोररूप मनुष्यकी मारनेवाली विचित्र शक्ति छोड़ी जिससे मार्ग उल्कापात होतीथी । १० । वह अति घोर शक्ति चर्मसे मढ़ीहुई तीक्ष्णधारवाली जिसमें बहुत से बाण लगे हुए थे रामने मेरे ऊपर छोड़ी उसको मैंने अपने बाणोंसे काटकर एक ओर गिरादिया और वह बड़े शब्दसे भूमिपर गिरी । ११ । उस सर्प रूप अनूप शक्तिको कटा हुआ देख कर बहुत विशाल आयुध चलाये और अपने शरों से अति प्रकाशवान् मुनिराज ने मेरे शरीर, सूत, घोड़ों और रथको घायल किया । १२ । उनके बाणों से रथके टुकड़े होकर भूमिपर जापरे और इस अद्भुत कार्य को देखकर सब लोग चकित हुए उनकी बाणवर्षा के पश्चात मैंने अपने बाण बर्षाये जिनसे गुरुजी के शरीर से रुधिरकी धारा बह निकली मेरे बाण जाल से रामका वही हाल हुआ जो

where they were. 9. Then Parashuram, in great anger, discharged a dreadful man-destroying missile which shed flames of fire in the way. It was covered with hide and having a *sharp edge was* provided with many sharp arrows. I cut it down with mine own arrows, so that it fell down on earth with a tremendous noise. Seeing that wonderful serpent like missile cut down by my arrows, he discharged many a dreadful weapon at me, and with his arrows the glorious muni wounded me as well as my horses, the driver and the chariot. The chariot broke into fragments by the blows of the arrows and the people wondered at this strange deed of prowess. When the shower of his arrows had ended, I sent forth a shower of mine own arrows which made his body bleed like a torrent. The network of my arrows did the same with the preceptor's as his

वाहं सुभृशं गाढविद्धः । ततो युद्धं व्यरमच्चापराह्णे भानावस्तं प्रतियाते महीध्रम् १६ ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि रामभीष्मयुद्धे शक्तिमक्षेपे द्व्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८२ ॥

भीष्म उवाच ॥ ततः प्रभाते राजेंद्र सूर्ये विमलतांगते । भार्गवस्य मया सार्धं पुनर्युद्धमवर्तत ॥ १ ॥ ततोभ्रान्ते रथे तिष्ठन् रामः प्रहरतांवरः । ववर्ष शरजालानि मयि मेघ इवाचले ॥ २ ॥ ततः सूतो मम सुहृच्छरवर्षेण ताडितः । अपयातो रथोपस्थान् मनो मम विषादयन् ॥ ३ ॥ ततः सूतं ममात्यर्थं कश्मलं प्राविशन्महत् । पृथिव्यांचशराघातान् निपपात मुमोहच ॥ ४ ॥ ततः सूतो जहात् प्राणान् रामबाणप्रपीडितः । मुहूर्ता दिव राजेन्द्र मांच भीरा विशत्तदा ॥ ५ ॥ ततः सूते हते तस्मिन् क्षिपतस्तस्यमेशरान्

मेरा हुआथा उसीसमय सन्ध्याकाळ होजानेपर घोररण बन्दकर दिया गया १६ ॥

अध्याय ॥ १८३ ॥

भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि हे राजेन्द्र अब मातःकाळ हुआ सूर्य प्रकाशित हुये तो हमारा और भृगुनाथजी का फिर संग्राम होनेलगा । १ । मेघके समीप टिके रथपर से परशुरामजी ने हमारे ऊपर ऐसी बाणोंकी वर्षाकी जैसी बादल पहाड़पर जलकी झारलगाते हैं । २ । तिसके पीछे रामजीने और अधिक शर मारलगाई कि अतिप्रिय मित्र हमारा सूत अति पीड़ित हो हमको विषाद कराता रथपरसे नीचे गिरपरा ।३। व अत्यन्त कष्टपाय पृथ्वीपर जाय बाणघातसे पीड़ित अतिमूर्छित हुआ ।४। यहांतक कि रामबाणसे ऐसा पीड़ितहुआ कि उस बेचारे हमारेप्यारे के प्राणही निकळगये, उससे एकमुहूर्तभर एक हमभी अतिभयभीत रहे ।५। जब हम सूतके मारजानेके कारण प्रमत्त से होगये युद्ध करनाही भूळगये

---

own had done with mine. In the meantime the day closed and the battle was stopped for the time." 16.

CHAPTER CLXXXIII

Bhishm said to Duryodhan, "The next morning when the sun had risen, Parashuram and I began to fight again. From his chariot standing under the clouds, he sent forth on me a shower of arrows like that of clouds sending forth torrents of rain over a hill. He sent yet a severer shower and my friend the chariot driver caused me much grief by falling down from the chariot. He fell on earth insensible with the excess of wounds he had received And at last the poor friend of mine died of the wounds. I was terrified for the time being. I became mad with grief and gave up fighting, while

प्रमत्तमनसो रामः प्राहिणोन्मृत्युसम्मितम् ॥ ६ ॥ ततः सूतव्यसनिनं विप्लुतं मां स भार्गवः । शरेणाभ्यहनत् गाढं विकृष्य बलवद्धनुः ॥ ७ ॥ स मे भुजान्तरे राजन् निपत्य रुधिराशनः । मयैव सह राजेन्द्र जगाम वसुधातलम् ॥ ८ ॥ गत्वा तु निहतं रामस्ततो मां भरतर्षभ । मेघवद्विननादोच्चैर्जहृषे च पुनः पुनः ॥ ९ ॥ तथा तु पतिते राजन् मयि रामो मुदा युतः । उदक्रोशन्महानादं सह तै रनुयायिभिः ॥ १० ॥ मम तत्राभवन् ये तु कुरवः पार्श्वतः स्थिताः । आगता ये पि युद्धं तज्जनास्तत्र दिदृक्षवः । आर्तिं परमिकां जग्मुस्ते तदा पतिते मयि ॥ ११ ॥ ततो पश्यं पतितो राजसिंह द्विजानष्टौ सूर्यहुताशनाभान् । ते मां समन्तात् परिवार्य तस्थुः स्वबाहुभिः परिवार्याजिमध्ये ॥ १२ ॥

तब तो गुरूजी ने मृत्युसमान बाण हमारे ऊपर बरसाये । ६ । फिर उसपर भी जो हमको बाणचलाने की रुचि न हुई तो हमें सूतके दुःखसे अतिदुःखी जान भगवान् परशुरामजीनें बड़ेजोरशोर से कठोर धनुष खींच अतिघोर बाण हमारेऊपर मारा । ७ । वह बाण हमारी मारीछाती में लग अतिविघातीहो हमेंसमेत आप हहाय पृथ्वीपर गिरा । ८ । तब हे भरतर्षभ हमको मृतकजान यद्यपि कृपानिधानथे पर अज्ञानके समान भगवान् गुरूजीने बड़ा नादकिया व बार २ अतिहर्ष पाया । ९ । हे राजन् जब हम इसप्रकार निहतहो पृथ्वीपर गिरपरे तो रामजी अत्यानन्दित हो अपने साथियों समेत बड़ेवेग से गर्जनेलगे । १० । व इधर जो कौरवलोग हमार संगथे जोकि युद्ध देखनेकी इच्छासे वहांगयेथे हमारी वह दशा देखि सबके सब बहुत पीड़ितहुवे । ११ । हे राजसिंह तिसके पीछे हमने पृथ्वीपर पड़ेहीपड़े सूर्य अग्निके समान प्रकाशित ब्राह्मणोंकारूप धारण किये आठवसुओंको देखा जो कि समरके मध्यमें अपनी बाहोंके बीचमें हमको कर आठों ओरसे घेरे खड़ेथे । १२ ।

---

my preceptor sent forth arrows like death over me. When he found me so lost in the grief of the death of my driver he shot me with a hard arrow which struck me on the breast and carried me with it to the ground. Taking me for dead, Parashuram though otherwise kind hearted, cried for joy like a stranger. When he saw me thus fallen down on earth, he exulted with pleasure amidst his friends, and made a great noise. 10. On my side the Kauravas who had come to witness the fight were much grieved for me. While I was lying on the ground I saw the eight Vasus in the disguise of Brahmans glorious like the sun or fire. They surrounded me on all sides and kept me back from falling on earth and protected me like one's own relations. Seeing that my breath was not

रक्ष्यमाणश्च तैर्विप्रैर्नाहं भूमिमुपास्पृशम् । अन्तरिक्षे धृतो ह्यस्मि तैर्विप्रैर्बान्धवैरिव ॥ १३ ॥ श्वसन्निवान्तरिक्षे च जलबिन्दुभिरुक्षितः । ततस्ते ब्राह्मणाराजन्नुवन् परिगृह्यमाम् ॥ १४ ॥ माभैरिति समं सर्वे स्वस्तितेऽस्त्विति चासकृत् । ततस्तेषामहं वाग्भिस्तर्पितः सहसोत्थितः । मातरं सरितां श्रेष्ठामपश्यं रथमास्थितः ॥ १५ ॥ हयाश्च मे संगृहीतास्तयासन् महानद्या संयति कौरवेन्द्र । पादौ जनन्याः प्रतिगृह्य चाहं तथा पितॄणां रथमभ्यरोहम् ॥ १६ ॥ ररक्ष सा मां सरथं हयांश्चोपस्करााणि च । तामहं प्राञ्जलिर्भूत्वा पुनरेव व्यसर्जयम् ॥ १७ ॥ ततोऽहं स्वयमुद्यम्य हयांस्तान् वातरंहसः । अयुध्यं जामदग्न्येन निवृत्तेऽहनि भारत ॥ १८ ॥ ततोऽहं भरतश्रेष्ठ

उन ब्राह्मणरूप वसुओं ने हमारी ऐसी रक्षाकी कि हम मूर्च्छित तो अवश्यहुये पर पृथ्वीतक न पहुँचनेपाये बीचहीमें उन्होंने आड़लिया, जैसे किसीकी भाई बन्धु रक्षा करते हैं वैसेही हमारी रक्षा उन ब्राह्मणोंने की ।१३। तब उन ब्राह्मणोंने कुछ हमको श्वास लेते जान जलके छिर्पे ऊपरमारे जब हमको और भी कुछ चेतहुआ तो हमें गोदमें किये वे सब हम से बोले । १४ । कि तुम न डरो न डरो तुम्हारा कल्याणहो कल्याणहो ऐसा वार २ उन्होंने कहा तब उनके वचनोंसे तृप्तहो हम एकाएकी उठबैठे देखा तो नदियों में श्रेष्ठ हमारीमाता गङ्गाजी स्त्रीकावेष धारण किये दिव्यरथपरचढ़ी आगे खड़ी हैं । १५ । और हमारे रथके घोड़ों को अपने हाथों से पकड़े हैं, तब हमने माता के चरणों में और अपने पितर उन ब्राह्मण रूप वसुओं के अभिवादन कर रथपर चढ़ अति प्रसन्नता प्रकट की । १६ । उन माताजीने रथ घोड़े सहित हमारी रक्षाकी व सबरथकी सामग्री कीभी रक्षाकरती रहीं, तब हमने फिर उनके हाथजोड़ विनयकर । १७ । इसप्रकार अब थोड़ाही दिन बाकीरहा तो हमने उन वायुवेग अपने घोड़ोंको अपनेही आपहांका व आय परशुरामजीसे युद्धकरनेका प्रारम्भ करदिया । १८ । व पहुँचतेही एक

extinct in me, they sprinkled water over my face and then taking me upon their laps said to me "Have no fear, blessed one." They uttered these words again and again and cheered by them I rose up and saw my mother Ganga the best of rivers, standing before me in the disguise of a woman in a divine chariot, and holding my horses with her own hands. I bowed to my mother and to my pitars the Vasus in the garb of Brahmans and mounted on my chariot in great joy. My mother protected me as well as the horses of my chariot and the implements of war within the chariot. With clasped hands I humbly bade her good bye. The day was on the close when I myself drove my chariot to the battle field and fought again with Parashuram. I discharged a dreadful heart-piercing

वेगवन्तं महाबलम् । असृजं समरे बाणं रामाय हृदयच्छिदम् ॥ १९ ॥ ततो जगाम वसुधां मम बाणप्रपीडितः । जानुभ्यां धनुरुत्सृज्य रामो मोहवशंगतः ॥ २० ॥ ततस्तस्मिन्निपतिते रामे भूरिसहस्रदे । आववुर्जलदा व्योम क्षरन्तो रुधिरं बहु ॥ २१ ॥ उल्काश्च शतशः पेतुः सनिर्घाता सकम्पनाः । अर्कश्च सहसादीप्तं स्वर्भानुरभिसंवृणोत् ॥ २२ ॥ ववुश्चवाताः परुषाश्चालिताच वसुन्धरा । गृध्रा बलाश्च कङ्काश्च परिपेतुर्मुदायुताः ॥ २३ ॥ दीप्तायां दिशि गोमायुर्दारुणं सुहुरुन्नदत् । अनाहता दुन्दुभयो विनेदुर्भृशनिःस्वनाः ॥ २४ ॥ एतदौत्पातिकं सर्वं घोरमासीद्भयंकरम् । विसंज्ञकल्पे धरणीं गते रामे महात्मनि ॥ २५ ॥ ततो वै सहसोत्थाय रामो मामभ्यवर्त्तत । पुनर्युद्धाय कौरव्य विह्वलः क्रोधमूर्च्छितः ॥ २६ ॥ आददानो महाबाहुः

महाबल बाण, हृदयभेदन करनेवाला रामजी के ऊपर छोड़ा कि । १९ । उसके लगतेही अति पीड़ितहो रामजी टिहुनियों के बल पृथ्वीपर गिरपड़े, व धनुष हाथ से अलग गिरगया आप मूच्छित होगये । २० । जब सहस्रमुहर प्रतिदिन दान करनेवाले रामजी हमारे बाणसे निहतहो पृथ्वीपर गिरपड़े तो आकाशमें मेघ गर्जने लगे और रुधिरकी वर्षा होनेलगी । २१ । व सैकरों उल्कापातहुये, बिजुली सहित वज्रपात हुआ, प्रकाशित सूर्यको एकाएकी राहुने आ घेरलिया । २२ । पवन बड़े कर्कश बहने लगे, पृथ्वी चलउठी, गीध, काक, चील्ह आनन्दितहो चारों ओर मड़रानेलगे । २३ । दिशाओंमें अग्निकी ज्वाला निकलनेलगी सृगाल दिनही में भयँकर उठ, बिना बजायही नगाड़ बाजउठे । २४ । ये सब उत्पात भयङ्कर घोर उसी समय हुये जब अतिमूर्च्छितहो परशुरामजी पृथ्वीपर गिरे । २५ । इतने में जो गुरुजीकी मूर्च्छाजगी कि झटपट उठ हम से फिर युद्धकरने को उद्यतहुये व भारे क्रोधके विह्वलहो मूर्च्छित होगये । २६ । तब अतिक्रुद्धहोकर जबहीं राम अपने

arrow at Parashuram as soon as I reached there and struck by it he fell down on earth. He let go his bow from his grasp and became insensible. 20. When shot by arrow, Ram who used to give in charity a thousand gold mohurs daily, was shot by the arrow, the clouds made a rumbling noise in the sky and dropped blood. Flames of fire fell down as well as lightning with thunderbolt. The bright sun was suddenly attacked by Rahu; the wind blew hard; the earth trembled, vultures, ravens and kites hovered on all sides uttering forth cries of joy. Flames of blazing fire were seen on all sides; jackals howled even in daylight and drums sounded without beating. All these ill omens occured when Parashuram was lying on earth in a death like swoon; but as soon as he regained conciousness he prepared himself to fight again in the excess of anger. When in great anger

कार्मुकं वलसन्निभम् । ततोमध्यादददानन्तं राममेव न्यवारयन् ॥ २७ ॥ महर्षयः कृपायुक्ताः क्रोधाविष्टोथ भार्गवः । समेऽहरदमेयात्मा शरं कालानलोपमम् ॥ २८ ॥ ततो रावभिन्नमरीचिमण्डलो जगामास्तं पांशुपुञ्जावगूढः । निशा व्यगाहत् सुखशीतमारुता ततो युद्धं प्रत्यवहारयाव ॥ २९ ॥ एवं राजन्नवहारो बभूव ततः पुनर्विमलेऽभूत् सुघोरम् । कल्यं कल्यं विंशतिंवै दिनानि तथैव चान्यानि दिनानि त्रीणि ३० ॥

इति महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि रामभीष्मयुद्धे गंगाह्वयसंग्रहे त्र्यशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८३ ॥

भीष्म उवाच ॥ ततोहं निशि राजेन्द्र प्रणम्य शिरसा तदा । ब्राह्मणानां पितॄणां च देवतानां च सर्वशः ॥ १ ॥ नक्तञ्चराणां भूतानां राजन्यानां विशांपते । शयनं प्राप्य रहिते मनसा सम चिन्तयम् ॥ २ ॥ जामदग्न्येन मे युद्ध मिदं परम दारुणम् । अहानिच

हाथमें बाण उठाया तभी कृपायुक्त ऋषियों ने रामको रोका परन्तु रामने न माना । २८ । तब सूर्यकी प्रभाकम होजानेपर रण बंद होगया और सब अपने अपने स्थानको गये । २९ । इसीप्रकार प्रति दिन सन्ध्यासमय रण बंद होजाताथा और प्रातःकाल फिर होता था तेईस दिनतक रणहोता रहा और प्रतिदिन अधिक होता गया ॥ ३० ॥

अध्याय ॥ १८४ ॥

भीष्मजी दुर्योधन से बोले कि, हे राजेन्द्र उस तेईसईं रात्रि में हम शिर झुकाय सबब्राह्मणों, पितरों, सबदेवताओं के, रात्रिमें चलनेवाले राक्षसादिकों के, राजाओं के, प्रणाम कर एकान्तमें शयनकर मनसे यह चिन्तना करने लगे कि । २ । परशुरामके सङ्ग दारुण युद्ध करते २ हमको बहुत दिन बीतगये, अब महा

---

he took up an arrow in his hand, some rishis appeared before him, and requested him to desist from fighting; but he gave no heed to their entreaties. In the meantime the night set in and all went to their respective places. Thus, for twentythree days, the fight began in the morning and was put a stop to in the evening. The fighting grew more and more furious each day." 30.

CHAPTER BLXXXIV

Bhishm said to Duryodhan: "On the twentythird night when I was lying down in a lonely place after having bowed down to Brhmans, gods, pitars and the chiefs of the night-roving rakshases, my thoughts ran thus: "Parashuram and I have been fighting together for so many days and I see nothing but destruction before

वहुग्यद्य वर्त्तते सुमहात्ययम् ॥ ३ ॥ नच रामं महावीर्यं शक्नोमि रणमूर्द्धनि । विजेतुं समरे विप्र जामदग्न्यं महाबलम् ॥ ४ ॥ यदि शक्यो मयाजेतु जामदग्न्य प्रतापवान्। दैवतानि प्रसन्नानि दर्शयन्तु निशांमम ॥ ५ ॥ ततो निशिच राजेंद्र प्रसुप्तः शरविक्षतः। दक्षिणेनेह पार्श्वेन प्रभात समये तदा ॥ ६ ॥ ततोह विप्रमुख्यैस्तैर्यैरस्मिपतितोरथात्। उत्थापितो धृतश्चैव माभैरितिच सान्त्वितः ॥ ७ ॥ त एव मां महाराज स्वप्ने दर्शनमेत्य वै। परिवार्य ब्रुवन् वाक्यं तन्निबोध कुरूद्वह ॥ ८ ॥ उत्तिष्ठ माभैर्गांगेय न भय तेऽस्तिकिञ्चन। रक्षामहे त्वा कौरव्य स्वशरीर हिना भवान् ॥ ९ ॥ नत्वां रामो रणे जेता जामदग्न्यः कथञ्चन। त्वमेव समरे राम विजेता भरतर्षभ ॥ १० ॥ इदमस्त्र सुदयितं सुदयितं प्रत्यभिज्ञास्यते भवान्। विदित हि तवाप्येतत् पूर्वस्मिन्देहधारणे ॥ ११ ॥ प्राजापत्य विश्वकृत प्रस्वाप नाम भारत। नहीदं वेद रामोऽपि पृथिव्यां वा पुमान् क्वचित्॥ १२ ॥

नाश दिखाई देता है । ३ । इससे इस संग्राममें महावीर्य पराक्रमी, महा बलवान महान भगवान् विप्रराज महाराज् रामजीको न जीतसकेंगे । ४ । जो इस प्रताप वान् रामको रणमें जीतसकें तो इसरात्रि में देवगण प्रसन्न हो हमको दर्शन दें । ५ । हे राजेन्द्र इतना कह हम दाहिनी करवट लेट सोरहे, जब रात्रि बीतगई प्रातःकाल होनेलगा तो । ६ । जिन ब्राह्मणों ने मूर्च्छा आने के समय रथसे गिरते हुये हमको उठाय समझाया था व कहाथा कि न डरो । ७ । वेही सब आठों ब्राह्मण लोग स्वप्न में हमको दर्शन दे चारों ओर से घेर जो कुछ बोले हे राजन तुम से कहते हैं सुनो । ८ । वह कहते कि हे गाङ्गेय उठो न डरो तुमको कुछभी भय नहीं है हे कौरव्य हमलोग तुम्हारी रक्षा करते हैं क्योंकि तुम हमीं लोगों के शरीरहो । ९ । जामदग्न्य राम रण में तुम को किसी प्रकार न जीतसकेंगे हे भरतर्षभ रण में तुम्हीं रामको जीतोगे । १० । इस प्रियअस्त्रको आप अच्छीतरह पहिचानेंगे तो होगा क्योंकि पूर्वजन्ममें तो अच्छीतरह पहिचानतेही थे । ११ । यह विश्वकर्माका बनाया प्राजापत्य नाम प्रस्वाप सञ्ज्ञक अस्त्र है, इसको रामभी

me I shall never be able to conquer valiant Ram the prince of Brahmans. May the gods appear to me this night, if I have a chance of conquering him" Having said so, I slept with my head on my right arm At the close of the night when the morning was about to dawn, the eight Brahmans, who had protected me on my fainting and had encouraged me by saying, "Have no fear," appeared round me in a dream and said, "Rise, son of Ganga, and have no fear. You have no cause for anxiety, for we protect you as you are our own body. Ram the son of Jamadagni can never conquer you in battle, it is you who will defeat him. 10 You know this favourite weapon. Why not? You know it once. This weapon

तत् स्मरस्व महाबाहो भृशं सयोजयस्व च । उपस्थास्यति राजेंद्र स्वयमेव तवानघ ॥ १३ ॥ येन सर्वान् महावीर्यान् प्रशाशिष्यसि कौरव । नच रामः क्षयं गन्ता तेनास्त्रेण नराधिप ॥ १४ ॥ एनसा नतु सयोगं प्राप्स्यसे जातु मानद । स्वप्स्यते जामदग्न्योसौ तद्बाण बलपीडित. ॥ १५ ॥ ततो जित्वा त्वमेवैन पुनरुत्थाप यिष्यास । अस्त्रेण दयिते नाजौ भीष्मसम्बोधने नवै ॥ १६ ॥ एवं कुरुष्व कौरव्य प्रभाते रथमास्थित. । प्रसुप्तं वा मृत वेति तुल्य मन्यामहे वयम् ॥ १७ ॥ नच रामेण मर्तव्यं कदाचिदपि पार्थिव । तत. समुत्पन्नमिदं प्रस्वाप युज्यता मिति ॥ १८ ॥ इत्युक्त्वान्तर्हिता राजन् सर्वं एव द्विजोत्तमाः । अष्टौ सदृशरूपास्ते सर्वे भास्वरमूर्तय ॥ १९ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि भीष्मरामयुद्धे स्वप्नदर्शने चतुरशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८४ ॥

नहीं जानते न औरही कोई पुरुष पृथ्वीपर जानता है । १२ । हे वीर उसका तुम स्मरण करो, व अत्यन्त उसका संयोग करो, वह अपने आप तुम्हारे समीप स्मरण करतेही आजायगा । १३ । उससे तुम सब महावीरों को शिक्षादोगे, और परशुरामभी उससे मरेंगे नहीं । १४ । इससे तुमको ब्रह्महत्याका पाप भी न लगेगा, किन्तु इसबाणके लगने से पीड़ितहो परशुरामजी सोयजायँगे युद्ध करने का स्मरणही उनको न रहेगा । १५ । तब उनको जीत तुम्हीं फिर उनको उठावोगे, फिर समझावो बुझावोगे तो समझेंगे ऐसे शयन से मच होजायँगे । १६ । हे कौरव्य प्रभात होतेही रथपर चढ़ ऐसाही करो, हमलोग मरेको व अत्यन्त सोये को तुल्यही मानते हैं प्रयोजन तो विजय होनेसे है । १७ । हे पार्थिव रामके हाथों कभी न मरोगे, इससे अत्यन्त प्रस्वापसे उनको युक्तकरो । १८ । हे राजन् यह कह प्रकाशितमूर्त्ति सब वे आठों महात्मा एकही रूपके अन्तर्द्धान होगये ॥ १९ ॥

named Praswap was made by Vishwakarma, it is unknown to Ram, or any other person on earth. Remember it and it will come to you of itself whenever you will call it. You will teach a lesson to all the warriors with the help of it and yet Parashuram will not die at your hand. No sin of Brahmicide will therefore attach to you. Struck with this weapon, he will sleep and will retain no recollection of the events of war. He will not rise again without your help. Do this the first thing in the morning when you mount your chariot. We regard excessive sleep and death to be equal so long as it brings you victory. You will never die at Ram's hand; but donot forget to shoot him with Praswap." Having said this, all the eight glorious figures disappeared all of a sudden" 19

भीष्म उवाच । ततो रात्र्यां व्यतीतायां प्रतिबुद्धोस्मि भारत । ततः सञ्चिन्त्यवै स्वप्नन्तं अवाप्य हर्षमुत्तमम् ॥ १ ॥ ततः समभवद्युद्धं मम तस्य च भारत । तुमुलं सर्व भूतानां लोमहर्षणमद्भुतम् ॥ २ ॥ ततो बाणमयं वर्षं ववर्ष मयि भार्गवः । न्यवारयं सह तच्च शरजालेन भारत ॥ ३ ॥ ततः परमसंक्रुद्धः पुनरेव महातपा । ह्यस्तनेनच कोपेन शक्तिं वै प्राहिणोन्मयि ॥ ४ ॥ इन्द्राशनिसमस्पर्शां यमदण्डसमप्रभाम् । ज्वलन्तीमग्निवत् सङ्ख्ये लेलिहानां समन्ततः ॥ ५ ॥ ततो भरतशार्दूल धिष्ण्यमाकाशगं यथा । सा मामभ्यवधींतूर्णं जत्रुदेशे कुरुद्वह ॥ ६ ॥ अथासृग् प्रवद् घोर गिरेर्गैरिकधातुवत् । रामेण सुमहाबाहो क्षतस्य क्षतजेक्षण ॥ ७ ॥ ततोऽहं जामदग्न्याय भृश क्रोधसमन्वितः । चिक्षेप मृत्युसंकाशं बाणं सर्पविषोपमम् ॥ ८ ॥ सतेनाभि

अध्याय ॥ १८५ ॥

भीष्मजी दुर्योधनसे बोले कि हे भारत जब रात्रिबीती प्रातःकाल हुआ तब हम जागकर स्वप्न का स्मरणकर बहुतहर्षयुक्त हुये । १ । फिर हमसे उनसे तुमुल रोमहर्षण अद्भुत युद्धहुआ । २ । प्रथम भार्गवजीने हमारे ऊपर बाणोंकी वर्षाकी, तसे हमने शरोंके जाल से निवारण किया । ३ । तब परमक्रोध कर व पूर्वदिन के कोपको स्मरणकर महातपस्वी रामजीने हमारेऊपर शक्तिचलाई । ४ । उसकास्पर्श तो इन्द्रके वज्रके समान, दीप्ति यमदण्डके तुल्य, प्रकाश अग्निके सदृश समर भरको लीलन की इच्छा कियेहुईथी । ५ । वह आय हमारे गले और कांधके बीच हँसिगयर लगी । ६ । उसके लगतही हमारे अंगसे वैसा रुधिर बहा जैसे पर्व्वत से गेरूकी धाराबहती है ।७ तब हमने भी बड़े क्रोधसे परशुराम जीके ऊपर मृत्युसम विषधर सर्प के तुल्य बाणचलाया । ८ । हे महाराज वह

CHAPTER CLXXXV

Bhishm said to Duryodhan: "At the close of the night, when the day had dawned, I was much pleased to recollect the facts of the previous night's dream. Again there was a dreadful fighting between us, first Ram showered his arrows over me and I removed them by a network of mine own arrows; then, in great anger remembering the score of the previous day, he hurled at me a missile the touch of which was like that of the vajra of Indra and like that of the staff of Yam or fire, wishing to swallow the whole battle field. It struck fire, wishing to swallow the whole battle field. It struck my collarbone between the neck and the side, and a stream of blood flowed from the wound like that of water mixed with red stone from a hill. I

हतो वीरो ललाटे द्विजसत्तमः । अशोभत महाराज सशृङ्ग इव पर्वतः ॥ ९ ॥ स संरब्धः समावृत्य शरं कालान्तकोपमम् । संदधे बलवत् कृत्यघोरं शत्रुनिबर्हणम् १०॥ स वक्षसि पपातोग्रः शरोव्याल इव श्वसन् । महीं राजस्ततश्चाहमगमं रुधिराविलः ॥ ११ ॥ संप्राप्यतु पुनः संज्ञां जामदग्न्याय धीमते । प्राहिण्व विमलां शक्तिं ज्वलन्तीं मशनीमिव ॥ १२ ॥ सा तस्य द्विजमुख्यस्य निपपात भुजान्तरे । विह्वलश्चाभवद्राजन् वेपथुश्चैनमाविशत् ॥ १३ ॥ तत एनं परिष्वज्य सखा विप्रो महातपाः । अकृतव्रणः शुभैर्वाक्यैराश्वासयदनेकधा ॥ १४ ॥ समाश्वस्तस्ततो रामः क्रोध मर्ष समन्वितः । प्रादुश्चक्रे तदा ब्राह्मं परमास्त्रं महाव्रतः ॥ १५ ॥ ततस्तत् प्रतिघातार्थं

हमारावाण मुनिराजजीके मस्तकमें लगा, उससे वे महात्मा द्विजराज महाराज ऐसे शोभितहुये जैसे शृङ्ग सहित पर्वत शोभितहोताहै । ९ । उसके लगने के पीछे अति कोपकर हमारी ओर घूमकर उन्होंने कालाग्नि के समान शत्रुनाशकबाण बड़ेबलसे खींच चलाया । १० । वह महाउग्र वाण आय हमारी छातीमें लगनेके समय विषधर सर्पही के समान फुफकार छोड़ताथा, लगतही हम पृथ्वीपर गिरे रुधिरकीधारा चलनेलगी । ११ । कुछदेर मूर्च्छितहुये तुरन्तही जैसे मूर्च्छा जगी कि बड़ाक्रोध कर वज्रके समान एकशक्ति हमनेभी गुरुदेवजी के मारी । १२ । वह शक्ति उन द्विजमुख्यकी बीच छाती में लगी, उसके लगनेसे विह्वलहो मुनिराज थरथराय कँपनेलगे । १३ । तब महातपस्वी उनके सखा अकृतव्रणजी ने उनको छाती से लगाय सुन्दर वचनोंसे बहुत समझाया । १४ । जब अकृतव्रणजीके झारने पोंछने समझाने बुझाने से स्वस्थचित्त हुये तो अति क्रुद्ध हो महाव्रतधारी रामजीने हमारे ऊपर परमास्त्र ब्रह्मास्त्र चलाया ।१५। तब उसके विदारण करने के लिये हमने भी

---

too shot a deadly arrow like a serpent at him. It struck the forehead of the muni who looked as grand with it as a horned hill. Being thus wounded he turned towards me in great anger and shot at me with great force a foe destroying arrow. 10. It struck at my breast hissing like a venomous serpent. I fell down on the ground, a stream of blood oozed out from the wound and became unconcious, When I came to my senses, I hurled in great anger at him a missile like the vajra. It struck the great Brahman in the middle of the breast which made him tremble with pain. His friend Akritvran embraced him and cheered him with sweet words. When he was again in a fit state with the care of Akritvarn, he in great anger, hurled at me his Brahmastra the best of missilies. I too hurled my

ब्राह्ममेवास्त्रमुत्तमम् । मया प्रयुक्तं जज्वाल युगान्तामिव दर्शयत् ॥ १६ ॥ तयोर्ब्रह्मास्त्रयोरासीदन्तरा वै समागमः । असम्प्राप्यैव रामञ्चमाञ्च भारतसत्तम ॥ १७ ॥ ततो व्योम्नि प्रादुरभूत्तेज एवाहि केवलम् । भूतानि चैव सर्वाणि जग्मुरार्त्तिं विशाम्पते ॥ १८ ॥ ऋषयश्च सगन्धर्वा देवताश्चैव भारत । सन्तापं परमं जग्मुरस्त्रतेजोभिपीडिताः ॥ १९ ॥ ततश्चचाल पृथिवी सपर्वतवनद्रुमा । सन्तप्तानि च भूतानि विषादं जग्मुरुत्तमम् ॥ २० ॥ प्रजज्वाल नभो राजन् धूमायन्ते दिशो दश । न स्थातुमन्तरिक्षे च शेकुराकाशगास्तदा ॥ २१ ॥ ततो हाहाकृते लोके सदेवासुरराक्षसे । इदमन्तरमित्येवं मोक्तुकामोस्मि भारत ॥ २२ ॥ प्रस्वापमस्त्रं त्वरिता वचनाद् ब्रह्मवादिनाम् । विचित्रञ्च तदस्त्रं मे मनसि प्रत्यभात्तदा ॥ २३ ॥

इति श्री महाभारते अम्बोपाख्यानपर्वाणि रामभीष्मयुद्धे ब्रह्मास्त्रप्रयोगे पञ्चाशीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८५ ॥

उत्तम ब्रह्मास्त्रही चलाया जो किमुलय समय की ज्वाला के समान दिखाई दिया ।१६ हेभारतसत्तम उन दोनों ब्रह्मास्त्रों से हमारे परशुरामजी के बीचही में भेंट हुई न उनका हमतक पहुँचा न हमारा उनतक ॥ १७ । केवल दोनों के मिलने से आकाश में तेजही तेज होगया उसके कारण सब प्राणी बहुत दुःखित हुये । १८ । उन अस्त्रों के तेजसे पीड़ित ऋषि गन्धर्व देवता सबके सब अतिव्याकुल हुये । १९ । और बडे सन्तापित हुये तिसके पीछे पर्वत वन वृक्षादि समेत सब पृथ्वी चलउठी, सब प्राणी बहुत सन्तापित हुये, और अति विषादको पहुँचे । २० । तब आकाश प्रकाश युक्त होगया दिशामें धुंधली होगई और आकाश गामी पुरुष दीखने लगे तब देवता असुर और मनुष्यों में हाहाकार होनेलगी इसी अन्तरमें मैंने प्रस्वाप अस्त्र छोड़ना चाहा और चित्र विचित्र अस्त्र मेरे मनमें ब्रह्मवादियों के वचन की समान आगया । २१ ।

---

own Brahmastra to destroy the effect of his weapon and it shone like fire of *pralay*. The two weapons met in mid air and diffused great light, causing much uneasiness to all beings, as well as the rishis, Gandharvas and gods and made the earth tremble with its hills forests and trees. It caused much anxiety and trouble to the people of the world. 20. The sky looked illumined in all directions and exposed the living beings in the air. Gods, asurs and men began to cry with fear. In the mean time I intended to discharge the weapon named Praswap and the great weapon came into my mind like the words of the godly men." 23

भीष्म उवाच ततो हलहलाशब्दो दिवि राजन् महानभूत्। प्रस्वाप भीष्म मा स्राक्षीरिति कौरवनन्दन ॥ १ ॥ अयुञ्जमेव चैवाहं तदस्त्रं भृगुनन्दने। प्रस्वापं मांप्रयुञ्जानं नारदो वाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥ एते वियति कौरव्य दिवि देवगणाः स्थिताः। तत्वां निवारयन्त्यद्य प्रस्वापं मा प्रयोजय ॥ ३ ॥ रामस्तपस्वी ब्रह्मण्यो ब्राह्मणश्च गुरुश्चते। तस्यावमानं कौरव्य मास्म कार्षीः कथञ्चन ॥ ४ ॥ ततोपश्यं दिविष्ठान् वै तानष्टौ ब्रह्मवादिनः। ते मां स्मयन्तो राजेन्द्र शनकैरिदमब्रुवन्, ॥ ५ ॥ यथाह भरतश्रेष्ठ नारदस्तत्तथा कुरु। एतद्धि परमं श्रेयो लोकानां भरतर्षभ ॥ ६ ॥ ततश्च प्रतिसंहृत्य तदस्त्रं स्वापनं महत्। ब्रह्मास्त्रं दीपयाञ्चक्रे तस्मिन् युधि,यथाविधि ॥ ७ ॥

अध्याय ॥ १८६ ॥

भीष्मजी ने कहा कि हे दुर्योधन जैसेही हमने प्रस्वापास्त्र चलाने का मन किया कि देवताओं ने स्वर्ग में बड़ाभारी हल्ला किया कि भीष्म खबरदार प्रस्वापास्त्र न छोड़ना। १। परन्तु हमने नहीं माना परशुरामजी के ऊपर चलाने के लिये धनुष पर प्रस्वापास्त्र चढ़ायही दिया तब वह अस्त्र चलातेहुये हम से आय नारदजी बोले। २। कि हे कौरव आकाशमें टिके ये देवगण तुमको रोकते हैं कि हे भीष्म प्रस्वापास्त्र न चलाओ। ३। क्योंकि परशुरामजी तपस्वी ब्राह्मण सो भी ब्रह्मण्य और तुम्हारे गुरुहैं इनका नाश तुम किसी प्रकार से न करो।४। तिसके पीछे हमने देखा तो स्वर्ग में वे आठ ब्रह्मवादी ब्राह्मणभी खड़े थे जिन्हों ने स्वप्न में हमको प्रस्वापास्त्र छोड़ने को कहाथा, वे लोगभी धीरेसे हमसे यह बोले कि। ५। हे भरत श्रेष्ठ जैसा नारदजी ने तुमसे कहाहै वही करो क्योंकि लोकमें यह बड़ेकल्याण की बात है जो महात्माओं का कहा माने। ६। तब हमने उस महाप्रस्वापास्त्र को धनुष परसे उतार परशुरामजी के ऊपर चलाने के लिये

CHAPTER CLXXXVII

Bhishm said to Duryodhan, 'The gods made a great noise in heaven as soon as I made up my mind to discharge the sleep producing weapon and warned me against dichaiging it. But I disregarded them and put it on my bow ready for use against Viswamitra. In the meantime Narad came to me and said, "See the gods in the sky warn you against using this weapon, for Parashuram is an ascetic Brahman and Brahm-knowing as well as your preceptor. Donot kill him." I looked thereupon towards the sky and saw the eight Brahmans who had directed me to discharge the weapon They too said to me slowly, "Do as Narad says, for his advice is very salutary." At this I put off the sleep producing weapon and

ततो रामो हृषितो राजसिंह दृष्ट्वा तदस्त्रं विनिवर्त्तितं वै। जितोऽस्मि भीष्मेणसुमन्दबुद्धिरित्येव वाक्यं सहसाभ्यमुञ्चत् ॥ ८ ॥ ततोऽपश्यत् पितरं जामदग्न्यः पितुस्तथा पितरञ्चास्य मान्यम् । ते तत्रचैनं परिवार्य्य तस्थुरूचुश्चैनं सान्त्वपूर्वं तदानीम् ॥ ९ ॥ पितर ऊचुः । मास्मैवं साहसं तात पुनःकार्षीः कथञ्चन। भीष्मेण संयुगे गन्तुं क्षत्रियेण विशेषतः ॥ १० ॥ क्षत्रियस्य तु धर्मोयं यद्युद्धं भृगुनन्दन। स्वाध्यायो व्रतचर्य्याथ ब्राह्मणानां परं धनम् ॥ ११ ॥ इदं निमित्ते कस्मिंश्चिदस्माभिःप्रागुदाहृतम् । शस्त्रधारणमत्युग्रं तच्चाकार्य्यं कृतं त्वया ॥ १२ ॥ वत्सपर्य्याप्तमेतावद् भीष्मेण सह संयुगे । विमर्दस्ते महाबाहो व्यपयाहि रणादितः ॥ १३ ॥ पर्य्याप्तमेतत् भद्रन्ते तव कार्मुकधारणम् । विसर्जयैतद्दुर्धर्ष तपस्तप्यस्व भार्गव

ब्रह्मास्त्रको मकांक्षित किया । ७ । तब हे राजसिंह क्रोधकर मन्दबुद्धि परशुरामने उस अस्त्रको निवृत्तदेख बड़े जोर से कहा कि हे भीष्म बस अब हम तुमसे जीतगये । ८ । तब परशुरामजी ने अपने पिता पितामहजी को स्वर्ग से आयेहुये देखा जोकि उनके मान्य थे वे लोग आतेही के साथ रामजी को चारों ओर से घेरकर खड़ेहोगये व सपझाते हुये उस समय में बोले कि । ९ । हे तात ऐसा साहस अब कभी न करना जैसा कि तुमने भीष्मके संग कियाहै फिर क्षत्रियजाति उसमें भी भीष्म इनसे युद्धकरना सर्वथा तुमको अनुचित है। १० । हे भृगुनन्दन युद्धकरना क्षत्रियकाही धर्म है व वेद पढ़ना ब्रह्मचर्य से रहना ब्राह्मणों का परमधनहै । ११ । यहबात हम लोगों ने किसी कारणसे पूर्वकाल में कही है कि शस्त्रका धारण बड़ा उग्रकार्य है पर उसका उल्लंघन कर फिरभी तुमने शस्त्र धारणकी किया । १२ । हे वत्स बस होचुका भीष्मके संग इतनाही युद्ध बहुतहै इसमें तुम्हारा बड़ाभारी मानमर्दनहोगा इस से इस युद्धसे निवृत्तहोवो ।१३। तुम्हारा कल्याणहो बस धनुर्धारण

---

adjusted the Brahmastra to my bow to shoot Parashuram with. But, foolish Parashuram, seeing that I had put off my former weapon, cried out, "I have got a victory over you" At the same time he saw his venerable pitars who had come to him from heaven. They stood all round him and intending to keep him back from his purpose said, "Never do such a rash deed again as you have done with a kshatriya like Bhishm. Your attempt to fight with him is improper. 10 Fighting is the work of a kshatriya, while the duty of a Brahman is to study the Vedas and to observe the vow of celibacy. In former days we said purposely that the use of weapons was a great thing, but in contravention of that advice you have again put on weapons. Have done with it. Your fighting

॥ १४ ॥ एष भीष्मः शान्तनवो देवैः सर्वैर्निवारितः । निवर्त्तस्व रणादस्मादिति चैव प्रसादितः ॥ १५ ॥ रामेण सह मा योत्सीर्गुरुणेति पुनः पुनः । नहि रामो रणे जेतुं त्वया नाय्यः कुरूद्वह ॥ १६ ॥ मानं कुरुष्व गांगेय ब्राह्मणस्यरणाजिरे । वयन्तु गुरुवस्तुभ्यं तस्मात् त्वां वारया महे ॥१७॥ भीष्मो वसूना मन्यतमो दिष्ट्याजीवसिपुत्रक । गांगेयः शांतनोः पुत्रो वसुरेष महायशाः ॥ १८ ॥ कथं शक्यस्त्वयाजेतुं निवर्त्तस्वेह भार्गव । अर्जुनः पाण्डव श्रेष्ठः पुरन्दर सुतो बली ॥ १९ ॥ नरः प्रजापतिर्वीरः पूर्वदेवः

करना इतनाही बहुत है इससे इस दुर्धर्ष कर्म से निवृत्त हो अपना तप करो । १४ । ये सब देवता लोग भी कहतेहैं कि रण न करो इससे तुमको चाहिये कि इस कर्म से निवृत्त होजावो हम लोगोंको प्रसन्नकरो ये राजा शान्तनु के पुत्र भीष्म हैं इनसे रणकरना अब अधिक ठीक नहीं है । १५ । इतना रामजी से कह फिर उनलोगों ने हमसे कहा कि राम अपने गुरूके साथ भीष्म युद्ध न करो हे कुरुश्रेष्ठ उनको समरमें जीतलेना तुमको उचित नहीं है वरन इनसे हारजाने में प्रतिष्ठा है । १६ । हे गाङ्गेय अब इस संग्रामभूमि में ब्राह्मणहीका मान करो हम लोग तुम्हारे भी गुरूहैं इससे तुमको रोकते हैं । १७ । इतना हमसे कह फिर परशुरामजी से कहनेलगे कि भीष्म आठ वसुओं में से एकहैं इससे बड़े भाग्यकी बातहै जो तुम अबतक जीतेहो ये महायशस्वी गंगा व शान्तनुजी के पुत्रहैं । १८ । इससे तुम इनको कैसे जीतसक्तेहो बस अब लौट अपने स्थानपर चलेचलो, इनके मरणके लिये इन्द्रके पुत्र महा बली पांडवों में श्रेष्ठ अर्जुनजी उत्पन्न हुये हैं । १९ । उनका नरजीका अवतारहै और पूर्वसमय के वे सनातनदेव सब प्रजाओं के पतिहैं अब

with Bhishm was severe enough; you will lose your prestige by carrying it on any further Give up fighting, if you want your welfare You have fought sufficiently long; pray desist from it and perform asceticism. All these gods too enjoin you to desist from fighting, you must therefore give up the work to please us. This is Bhishm the son of king Shantanu, your fighting with him is improper." Having said this much to Ram, they turned towards me, "Donot fight with Ram your preceptor. It is improper for you to defeat him, though it is an honor for you to be defeated by him. Keep the prestige of a Brahman in the field of battle, son of Ganga. We are your elders and have a right to check you." Having said this to me, they turned towards Parashuram and said to him. "Bhishm is one of the eight Vasus. You must regard yourself fortunate if you are not killed by him. This glorious man is the son of Ganga and king Shantanu You cannot defeat

सनातनः । सव्यसाचीति विख्यात स्त्रिषुलोकेषु वीर्यवान् । भीष्ममृत्युर्यथाकालं विहितोवै स्वयम्भुवा ॥ २० ॥ भीष्म उवाच ॥ एवमुक्तः सपितृभिः पितृन्रामो ब्रवीदिदम् । नाहं युधि निवर्तेय मिति मे व्रतमाहितम् ॥२१॥ न निवर्त्तित पूर्वश्च कदाचिद्रणमूर्धनि । निवर्त्यतामापगेयः कामं युद्धात् पितामहाः ॥ २२ ॥ नत्वहं विनवर्त्तिष्ये युद्धादस्मात् कथञ्चन । ततस्ते मुनयो राजन् ऋचीक प्रमुखस्तदा ॥ २३ ॥ नारदेनैव सहिताः समागम्येद मब्रुवन् । निवर्त्तस्व रणात्तात मानयस्व द्विजोत्तमम् ॥ २४ ॥ इत्यवोच महन्तांश्च क्षत्रधर्म व्यपेक्षया । मम व्रत मिदं लोके नाहं युद्धात् कदाचन ॥ २५ ॥ विमुखो विनिवर्तेयं पृष्ठतोऽभ्याहतः शरैः । नाहं लोभान्न कार्पण्यान्नभयान्नार्थ कारणात् ॥ २६ ॥ त्व

सव्यसाची के नाम से तीनों लोकों में महावीर्यवान करके प्रसिद्ध हैं बस ब्रह्माजीने भीष्मकी मृत्यु समयप्राप्त उन्हीं को बनाया है इससे और कोई उनको नहींमारसक्ता । २० । भीष्मजी दुर्योधनजी से बोले कि जब रामजी के पितरों ने ऐसा कहा तो वे अपने पितरों से बोले कि हमतो युद्धसे न लौटेंगे क्योंकि हमने तो प्रतिज्ञा करली है कि चाहै जैसा हो युद्धसे कभी लौटहींगे नहीं । २१ । व आजतक हम कभी कहींभी संग्राम से विना जीते लौटहीं नहीं, हे पितामहलोगो अब आपलोग भीष्महीको समझाय बुझाय लौटालेजायँ । २२ । हमतो इसयुद्धसे किसी प्रकार न लौटेंगे, हे राजन इसबातको सुन सब ऋचीकादि ऋषिलोग नारदजी सहित हमारे समीप आय हम से यह बोले कि, हे तात अब इस रण से तुम्हीं लौटजाओ इन द्विजोत्तम परशुरामजीकाही मान करो । २४ । हमनेभी क्षत्रिय धर्मकी ओर विचारकर कहदिया कि हमभी न लौटेंगे क्योंकि लोक में हमाराभी यही व्रत है कि कभी युद्ध से विमुखहो पीछे से पीठमें बाणोंका प्रहार सहते न लौटें, क्योंकि

---

him. Go back to your camp; Brahma has produced Indra's son Arjun of great strength to kill Bhishm. Arjun in an incarnation of Nara and is the eteral god of old, the lord of all beings. He is known throughout the three worlds as Savyasachi. Brahma has ordained that he should cause the death of Bhishm and no one else can kill him. 20." Bhishm said to Duryodhan that to all the words of his pitars Parashuram replied, "I shall never turn back from the field of battle; for I have taken a vow to this effect. Up to this time I have never returned from a battle field without conquering; you must induce Bhishm to return; for I cannot turn back." On hearing this Richik and other rishis turned to me and said, "Keep the prestige of Parashuram and turn back from the battle

जेयं शाश्वत धर्म मिति मे निश्चिता मतिः । ततस्ते मुनयः सर्वे नारदप्रमुखानृप ॥२७॥ भागीरथी च मे माता रणमध्यं प्रपेदिरे । तथैवात्तशरो धन्वी तथैवदृढ निश्चय । स्थ- रोह माहवे योद्धुं ततस्ते राममब्रुवन् ॥ २८ ॥ समेत्य सहिताभूय समरे भृगुनन्दनम् । नाविनीतं हि हृदयं विप्राणांशाम्य भार्गव ॥ २९ ॥ राम राम निवर्तस्व युद्धादस्माद् द्विजोत्तम । अवध्यो वै त्वयाभीष्मस्त्वंच भीष्मस्य भार्गव ॥ ३० ॥ एवं ब्रुवं तस्ते सर्वे प्रतिरुध्य रणाजिरम् । न्यासयांचक्रिरे शस्त्रं पितरो भृगुनन्दनम् ॥ ३१ ॥ ततोहं पुनरेवा थ तानष्टौ ब्रह्मवादिनः । अद्राक्षंदीप्यमानान् वै ग्रहानष्टा विवोदितान् ॥ ३२ ॥ ते मां सप्रणयं वाक्य मब्रुवन् समरे स्थितम् । प्रैहि रामं महाबाहो गुरुलोंक हितं कुरु ॥ ३३ ॥

न इसलोभसे न कृपणतासे न भयसे न धनके कारणसे निरन्तर क्षत्रियोंका धर्म छोड़ूँ यह हमने अपनी बुद्धि में निश्चय करलिया है । २७ । हेराजन, तब नारदादि सब मुनि लोग व हमारीमाता गङ्गाजी सबकेसब इकट्ठेहो समरमें आय प्राप्तहुये,हम उनलोगों के सामनेभी उसी प्रकार धनुषपर, बाणचढ़ाये दृढ़ निश्चय किये युद्ध करने को समरमें तैयार खड़े रहे, तब वे सब इकट्ठे हो फिर रामजीसे बोले कि, हे भृगुनंदन ब्राह्मणोंका हृदय ऐसा कठोर न होना चाहिये इससे अबतुम्हीं शांत हो रहो क्योंकि शान्तहोना ब्राह्मणोंकाही धर्म है, हे राम हेराम हे द्विजोत्तम. अब इस रणसे निवृत्तही होजाइये, क्योंकि भीष्म भी तुम्हारे मारे नहीं मरसक्ते न तुम्हीं भीष्मके मारे मरसक्ते हो । ३० । ऐसा कहते हुये ऋचीक जमदग्न्यादि मुनियों ने रण को बन्द कराय परशुरामजी के हाथोंसे शस्त्र धरवादिया । ३१ । तब हमने फिर आठों द्विजों को एक साथ देखा जो कि आठोंग्रहों की समान एकत्रित थे । ३२ । समर भूमि में आकर उन्होंने मुझसे अति प्रमसे कहा कि अपने गुरु महा

---

field." I thought of the duties of a kshatriya and told them plainly that I would never suffer the ignominy of turning back from battle to have arrows shot at my back and that I had made up my mind never to forsake my dharm for fear, avarice or wealth. There upon Narad and other rishis with my mother Ganga came there, but I stood firmly with my arrow adjusted to the bow. Then they all said collectively to Ram, "The heart of Brahmans should not be so hard. Be pacified; for forgiveness is the nature of Brahmans, Ram! O Ram! keep back from war; for you cannot kill Bhishm nor he can kill you." 30 Thus Richik and other Munis put a stop to battle and and made Parashuram put down his weapons. Again I saw the eight Brahmans like the eight stars of a constellation together. They came to the field of battle and very affectionately told me to go to

इत्युक्तो निवर्तितं राम सुहृद्वाक्येन ते नये। लोकानांच हितं कुर्वन्नहमप्यादहे,वच. ॥३४॥ ततोऽहं राममासाद्य ववन्दे भृश विक्षतः। रामश्चाभ्युत्स्मयन् प्रेम्णा मामुवाच महातपाः ॥ ३५ ॥ त्वत् समो नास्ति लोके स्मिन् क्षत्रियः पृथिवी चर.। गम्यतां भीष्मयुद्धेऽस्मि स्तोषितोऽहं भृश त्वया ॥ ३६ ॥ मम चैव समक्षन्ता कन्यामाहूय भार्गवः। उक्तवान्दीन याच्या मध्ये तेषां महात्मनाम् ॥ ३७ ॥

इति श्री महाभारते उद्योगपर्वणि अम्बोपाख्यानपर्वणि रामभीष्मयुद्ध निवृत्तौ षड्शीत्यधिकशततमोऽध्यायः ॥ १८६ ॥

राम उवाच। प्रत्यक्षमेतल्लोकानां सर्वेषामेव भाविनि। यथाशक्त्या मया युद्धंकृतं वै पौरुष परम् ॥ १ ॥ न चैवमपि शक्नोमि भीष्मं शस्त्रभृतांवरम्। विशेषयितु

वाहु परशुराम के पास जाओ तब हमने सुहृदों के वचनसुनकर लोक हित के लिये उनके वाक्य ग्रहण किये और गुरुके पास जा हाथ जोड़कर खड़े हुवे रामभी प्रेम युक्त होकर हंसे और अपनी अमृत वाणी से बोले कि भूमिमें तेरे समान कोई क्षत्रिय नहीं है अब अपने घर जाओ तुमने समरमें अपने कार्य से मुझको प्रसन्न किया है तब मेरे सम्मुख रामने उस कन्याको बुला लिया और सब महात्माओं के सामने दीन वचन बोले ॥ ३७ ॥

अध्याय ॥ १८७ ॥

परशुरामजी अम्बासे बोले कि, हे भामिनि यहबात सबलोगों को व सब लोकोंको विदितहै कि हमने अपनी शक्तिभर पौरुषकर युद्धकिया। १। परन्तु अब इससे अधिक शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ भीष्मको अब हम अपनी शक्ति शस्त्र दिखा-

---

my warrior preceptor Parashuram Acting upon the words of my friends and wishing to do good to the world, I went to Ram and stood before him with clasped hands. He looked at me with love and dropped these ambrosia like words from his mouth with a smile; "There is no kshatriya like you in the world By your brave deeds you have pleased me in battle and now may return home." Then he called the princess to my presence and spoke to her in gentle tones." 37.

CHAPTER CLXXXVII

Parashuram said to Amba, "It is known to all that I have tried my best for your sake and can no longer assert my superiority in arms over Bhisham the best of warriors. I have applied my strength and prowess to the utmost. You may go fortunate woman,

मत्यर्थमुत्तमास्त्राणि दर्शयन् ॥ २ ॥ एषा मे परमा शक्तिरेतन्मे परम बलम्। यथेष्ट गम्यतां भद्रे किमन्यद्वा करोमि ते ॥ ३ ॥ भीष्ममेव प्रपद्यस्व न तेन्या विद्यते गति। निर्जितो ह्यस्मि भीष्मेण महास्त्राणि प्रमुञ्चता ॥ ४ ॥ एवमुक्त्वा ततो रामो विनिःश्वस्य महामना। तूष्णीमासीत्ततः कन्या प्रोवाच भृगुनन्दनम् ॥ ५ ॥ भगवन्नेवमेवैतद्यथाह भगवांस्तथा। अजेयो युधि भीष्मोयमपि देवैरुदारधीः ॥ ६ ॥ यथाशक्ति यथोत्साह मम कार्य्यं कृत त्वया। अनिवार्य्यं रणे वीर्यमस्त्राणि विविधानि च ॥ ७ ॥ नचैव शक्यते युद्धे विशेषयितुमन्ततः। न चाहमेन यास्यामि पुन भीष्म कथञ्चन ॥ ८ ॥ गमिष्यामि तु तत्राह यत्र भीष्म तपोधन। समरे पातयिष्यामि स्वयमेव भृगूद्वह ॥ ९ ॥ एवमुक्त्वा ययौ कन्या रोषव्याकुललोचना। तापस्ये

तेहुये नहीं दिखासक्ते। २। बस हमारी परमशक्तिहै व यही हमारा परमबलहै, हे भद्रे अब तू यथेष्ट चलीजा व और कुछ कार्य्य बतावे तो वह करें। ३। हमारी जान अब तू भीष्महीके शरणमें जा क्योंकि और दूसरी तेरी गति नहीं है, और हमतो महा अस्त्र शस्त्र छोडतेहुये भीष्मसे हारगये ४ ऐसा कह महामनस्वी परशुराम जी ऊर्ध्वश्वासमेंभर मौनहोगये तब वह कन्या भृगुनन्दनजीसे बोली कि। ५। हे भगवन् जैसा आप कहतेहो वह ऐसाही है ये उदारमति भीष्मजी समरमें देवताओं के भी जीतने योग्य नहीं हैं। ६। आपने यथाशक्ति यथावीर्य्य मेरा कार्य्य किया जो कि विविधप्रकारके अस्त्र शस्त्र चलाय रणमें अनिवार्य्य कार्य किया। ७। पर क्या करो अब युद्ध में भीष्मको मार तो सक्तेही नहीं बस और सब तो करी चुके, पर मैं भी अब भीष्म की शरण में कभी किसी प्रकार न जाऊँगी। ८। किन्तु हे तपोधन अब मैं वहां जाऊँगी जहां समर में अपने आप भीष्म को मैंही पतन कराऊँगी, किसी की सहायता की आवश्यकता न रहे गी। ९। ऐसा कह मारे

---

wherever you like or give me something else to do It would be better, I think, for you to seek refuge of Bhishm, for no one else can give you shelter As for myself, I have laid down my arms and weapons before Bhishm." Having said this, Parashuram heaved deep sighs and then became silent The girl then said to him, "It is true what you say, this wise Bhishm is unconquerable even by gods in battle. You have tried to your utmost strength and prowess in my cause and done unrivalled work with your weapons. It is no fault of yours if you could not kill Bhishm in battle, but for all this I shall never seek refuge with Bhishm. I shall go to the place where, with my own prowess, I can cause the destruction of Bhishm without help from any one else." Having said this in a rage and